RPSC 2026

राजस्थान प्रशासनिक सेवा प्रारंभिक परीक्षा

राजस्थान का इतिहास
HISTORY OF RAJASTHAN

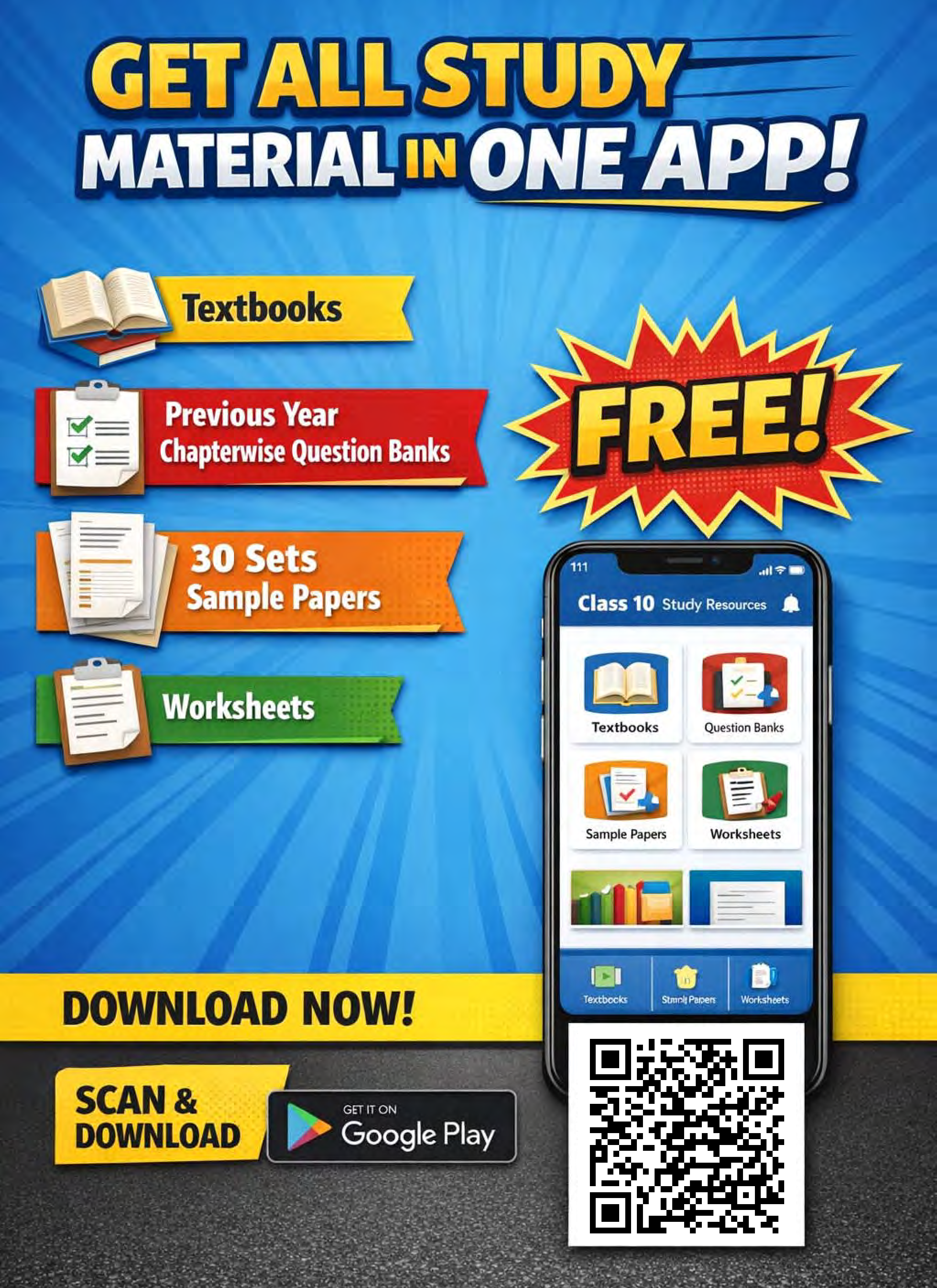
खंड-1

इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एंव विरासत

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR for Demo PDF



राजस्थान लोक सेवा आयोग

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

प्रारंभिक परीक्षा 2026

सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान

खंड 1

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत

अध्यायवार वस्तुनिष्ठ प्रश्न बैंक

आयोग द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

RPSC प्रारंभिक परीक्षा खंड 1
Edition April 2026
Published by :NODIA
An Imprint of NODIA EDITIONS LLP

MRP ₹480.00

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9001005245
email : mail@nodia.in

विषय-सूची

****

राजस्थान लोक सेवा आयोग, अजमेर

राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएँ संयुक्त प्रतियोगी (प्रारम्भिक) परीक्षा

—:परीक्षा योजना एवं पाठ्यक्रम:—
दिनांक 09.01.2026

प्रारम्भिक परीक्षा में नीचे विनिर्दिष्ट विषय पर एक प्रश्न—पत्र होगा, जो वस्तुनिष्ठ प्रकार का होगा और अधिकतम 200 अंको का होगा।

परीक्षा का उद्देश्य केवल स्क्रीनिंग परीक्षण करना है। प्रश्नपत्र का स्तरमान स्नातक डिग्री स्तर का होगा। ऐसे अभ्यर्थियों द्वारा, जो मुख्य परीक्षा में प्रवेश के लिए अर्हित घोषित किये गये हो, प्रारम्भिक परीक्षा में प्राप्त अंको को उनका अंतिम योग्यता क्रम अवधारित करने के लिए संगणित नहीं किया जायेगा।

विषय	अधिकतम अंक	समय
सामान्य ज्ञान और सामान्य विज्ञान	200	तीन घण्टे

नोट:—

1. प्रश्न पत्र में बहुविकल्पीय प्रकार के 150 प्रश्न होंगे व सभी प्रश्न समान अंक के होंगे।
2. मूल्यांकन में ऋणात्मक अंकन किया जाएगा, जिसमें प्रत्येक गलत उत्तर के लिए 1/3 अंक काटे जाएंगे।

राजस्थान का इतिहास, कला, संस्कृति, साहित्य, परम्परा एवं विरासत

- राजस्थान के प्रागैतिहासिक स्थल – पुरापाषाण काल से लेकर ताम्रपाषाण काल तक और कांस्य युग, प्राचीन राजस्थान का समाज और संस्कृति
- राजस्थान इतिहास के स्रोतः पुरातात्विक, अभिलेखीय, साहित्यिक और मुद्राशास्त्रीय
- राजस्थान के मुख्य राजवंशों के प्रमुख शासकों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियाँ, केंद्रीय सत्ता के साथ सहयोग एवं प्रतिरोध, मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था
- 18वीं–19वीं शताब्दी में राजनीतिक और सामाजिक स्थिति, 20वीं शताब्दी में किसान और आदिवासी आंदोलन, प्रजा मंडल आंदोलन और जन जागृति, राजस्थान का एकीकरण
- राजस्थान की स्थापत्य परंपराएँ – मंदिर, किले, महल, स्मारक,मानव निर्मित जलाशय, चित्रकला और हस्तशिल्प की विभिन्न शैलियाँः प्रदर्शन कलाएँः लोक नृत्य और नाटक, संगीत (शास्त्रीय और लोक) और वाद्ययंत्र
- भाषा एवं साहित्यः राजस्थानी भाषा की बोलियाँ, राजस्थानी भाषा का साहित्य और लोक साहित्य, धार्मिक जीवनः राजस्थान में धार्मिक समुदाय, संत और संप्रदाय, राजस्थान के लोक देवता और धार्मिक प्रथाएँ
- राजस्थान में सामाजिक जीवनः मेले और त्यौहार; सामाजिक रीति–रिवाज और परंपराएँ, वेशभूषा और आभूषण
- राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व

भारत का इतिहास

प्राचीनकाल एवं मध्यकाल :–

- भारत के सांस्कृतिक आधार – सिंधु और वैदिक युगः छठी शताब्दी ईसा पूर्व के धार्मिक विचार – आजीवक, बौद्ध और जैन धर्म।
- मुख्य राजवंशों के प्रमुख शासकों की उपलब्धियाँः मौर्य, कुषाण, सातवाहन, गुप्त, चालुक्य, पल्लव और चोल।
- प्राचीन भारत में कला एवं स्थापत्य कला एवं वैज्ञानिक विकास
- भारतीय ज्ञान एवं मूल्य व्यवस्थाः वर्णाश्रम, पुरुषार्थ, संस्कार, दर्शन एवं शिक्षा व्यवस्था।
- सल्तनत कालः प्रमुख राजवंशों की उपलब्धियाँ, विजयनगर साम्राज्य की राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धियाँ।
- मुगल कालः प्रशासन एवं विभिन्न नीतियांः मराठा
- मध्यकाल में कला एवं वास्तुकला, साहित्य, चित्रकला और संगीत का विकास।
- धार्मिक आंदोलन और भक्ति एवं सूफी आंदोलन का योगदान।

आधुनिक काल (प्रारम्भिक 19वीं शताब्दी से 2000 तक) :–

- ब्रिटिश साम्राज्यवाद और प्रतिरोध – मराठा, मैसूर, सिख।
  1857 का विद्रोह।
  ब्रिटिश राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक नीतियाँ। राष्ट्रवाद का उदय, सामाजिक–धार्मिक आंदोलन।
- स्वतंत्रता संग्राम और भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन– विकास, चरण और प्रमुख घटनाएँ। क्रांतिकारी और विभिन्न क्षेत्रीय आंदोलन। स्वतंत्रता और विभाजन की ओर।
- स्वातंत्रोत्तर राष्ट्र निर्माण (2000 तक), राज्य पुनर्गठन, नेहरू युग में सांस्थानिक निर्माण, योजना एवं आर्थिक सुधार, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का विकास

विश्व एवं भारत का भूगोल

विश्व का भूगोल :–

- भौतिक स्वरूपः– पर्वत, पठार, मैदान एवं मरूस्थल
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- प्राकृतिक वनस्पति
- कृषि : प्रकार, वितरण तथा प्रमुख फसलें
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश तथा प्रमुख उद्योग
- परिवहन तन्त्र
- पर्यावरणीय मुद्दे – मरूस्थलीकरण, वनोन्मूलन, जलवायु परिवर्तन एवं ग्लोबल वार्मिंग (वैश्विक तापन), ओजन अवक्षय

भारत का भूगोलः–

- भौतिक विभाग
- जलवायु
- प्रमुख नदियाँ एवं झीलें
- सिंचाई
- कृषि : प्रमुख फसलें
- खनिजः धात्विक और अधात्विक
- प्रमुख औद्योगिक प्रदेश तथा प्रमुख उद्योग

राजस्थान का भूगोल

- राजस्थानः– अवस्थिति, विस्तार तथा भौतिक विभाग
- नदियाँ एवं झीलें
- जलवायु की विशेषताएं
- प्राकृतिक वनस्पति, जैव विविधता तथा संरक्षण
- मृदा
- कृषि
- पशुधन
- सिंचाई
- जनसंख्या– वृद्वि, घनत्व, साक्षरता, लिंगानुपात
- नगरीकरण
- जनजातियाँ
- खनिज– धात्विक एवं अधात्विक
- पर्यटन

भारतीय संविधान, राजनीतिक व्यवस्था और शासन

- संविधान का निर्माण, उद्देशिका, नागरिकता, मौलिक अधिकार, राज्य की नीति के निदेशक तत्व और मौलिक कर्तव्य
- संघीय सरकार– कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका
- संघ राज्य संबंध, आपातकालीन प्रावधान
- शहरी और ग्रामीण स्थानीय सरकार
- निर्वाचन आयोग, संघ लोक सेवा आयोग, राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय महिला आयोग, राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग और नीति आयोग
- लोक नीति, नागरिक चार्टर, सामाजिक अंकेक्षण और शिकायत निवारण प्रणाली
- लोकपाल, केंद्रीय सतर्कता आयोग, केंद्रीय सूचना आयोग

राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था
• राज्यपाल, मुख्यमंत्री एवं मंत्रिपरिषद, राजस्थान विधान सभा, राजस्थान उच्च न्यायालय, अधीनस्थ न्यायालय एवं अन्य न्यायिक निकाय, महाधिवक्ता • मुख्य सचिव, राज्य सचिवालय, विभिन्न विभागों के निदेशालय, संभागीय आयुक्त, जिला कलेक्टर / जिला मजिस्ट्रेट, पुलिस अधीक्षक, उप–खण्ड अधिकारी, तहसीलदार • राजस्थान लोक सेवा आयोग, राजस्थान राज्य निर्वाचन आयोग, राजस्थान सूचना आयोग, राजस्थान राज्य महिला आयोग, राजस्व मंडल, लोकायुक्त • राजस्थान में पंचायती राज एवं नगर पालिकाओं का प्रशासन
आर्थिक अवधारणाएँ एवं भारतीय अर्थव्यवस्था
• आर्थिक संवृद्धि और विकास। पर्यावरण क्षरण और सतत् विकास। • विकास के मापक– पारंपरिक माप, मानव विकास सूचकांक और अन्य संबंधित सूचकांक। • आर्थिक विकास में मौद्रिक और राजकोषीय नीति की भूमिका। भारत सरकार का नवीनतम बजट और संसाधन संग्रहण। • राजकोषीय संघवाद– केन्द्र– राज्य वित्तीय संबंध और वित्त आयोग। • कृषिगत विकास– संस्थागत और तकनीकी पहलू। भारतीय कृषि में सुधार–चुनौतियां और सरकारी पहल। • औद्योगिक वृद्धि, स्वरूप, नीति और औद्योगिक सुधार– उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण। • आर्थिक वृद्धि में सेवा क्षेत्र की भूमिका– चुनौतियां और अवसर। ऊर्जा, परिवहन और संचार। • कौशल विकास और रोजगार संवर्द्धन– कार्यक्रम और नीतियां। सामाजिक न्याय और सशक्तिकरण
राजस्थान की अर्थव्यवस्था
• अर्थव्यवस्था का वृहत् परिदृश्य और राज्य बजट। • कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्र की मौजूदा स्थिति, मुद्दे और सरकारी पहल। • आधारभूत संरचना का विकासः ऊर्जा, परिवहन और संचार। • ग्रामीण विकास, पंचायती राज और राज्य वित्त आयोग। • मूलभूत सामाजिक सेवाएं– शिक्षा और स्वास्थ्य। • राजस्थान सरकार की मुख्य कल्याणकारी योजनाएं।
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
• दैनिक जीवन में विज्ञान के मूलभूत तत्व। • कम्प्यूटर्स; सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी। • रक्षा एवं अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी भारत के विशेष संदर्भ में। • वंशागति एवं विभिन्नता; अनुवांशिक–अभियांत्रिकी; जैव–प्रौद्योगिकी एवं नैनो–प्रौद्योगिकी। • मानव स्वास्थ्य देखभाल; आहार एवं पोषण; रोग एवं सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यक्रम। • पर्यावरणीय तथा पारिस्थितिकीय परिवर्तन एवं उनका प्रभाव मूल्यांकन। • जैव–विविधता; प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण एवं संतत् विकास। • राजस्थान के विशेष संदर्भ में कृषि–विज्ञान, उद्यान–विज्ञान, वानिकी एवं पशुपालन। • राजस्थान तथा भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी से संबंधित प्रमुख सरकारी कार्यक्रम एवं नीतियां। • अभिनव वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी प्रगति; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में भारतीयों का योगदान; विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का स्वदेशीकरण।

तार्किक विवेचन एवं मानसिक योग्यता

तार्किक दक्षता (निगमनात्मक, आगमनात्मक, अपवर्तनात्मक):–

- कथन एवं मान्यताएं
- कथन एवं तर्क
- कथन एवं निष्कर्ष
- कथन–कार्यवाही
- विश्लेषणात्मक तर्कक्षमता / विवेचनात्मक तर्कक्षमता

मानसिक योग्यता :–

- संख्या / अक्षर अनुक्रम
- कूटवाचन (कोडिंग–डीकोडिंग)
- संबंधों से संबंधित समस्याएं
- दिशा ज्ञान परीक्षण
- तार्किक वेन आरेख
- रैंकिंग एवं बैठक व्यवस्था
- आकार और उनके उपविभाजन

आधारभूत संख्यात्मक दक्षता :–

- अनुपात–समानुपात तथा साझा, लाभ एवं हानि
- प्रतिशत
- साधारण एवं चक्रवृद्धि ब्याज
- समतलीय चित्रों के परिमाप एवं क्षेत्र
- आंकडों का विश्लेषण (सारणी, दण्ड–आरेख, रेखीय आलेख, पाई–चार्ट)
- माध्य (समांतर, गुणोत्तर एवं हरात्मक), माध्यिका एवं बहुलक
- क्रमचय एवं संचय
- प्रायिकता (सरल समस्याएं)

समसामयिक घटनाएँ एवं मुद्दे (राजस्थान के विशेष संदर्भ में)

- महत्वपूर्ण व्यक्तित्व, स्थान और प्रासंगिक समकालीन मुद्दे
- कल्याण और विकास से संबंधित नई योजनाएँ, कार्यक्रम और पहल
- प्रमुख आर्थिक और राजनीतिक घटनाक्रम
- खेल और क्रीड़ा से संबंधित महत्वपूर्ण घटनाएँ एवं उपलब्धियाँ
- प्रमुख पुरस्कार, प्रकाशन और प्रतिष्ठित लेखक
- राजस्थान सार्वजनिक परीक्षा (भर्ती में अनुचित साधनों की रोकथाम के अध्युपाय) अधिनियम, 2022

अजमेर — **मुख्य परीक्षा नियंत्रक**

दिनांक 09.01.2026

अध्याय 01

प्रागैतिहासिक राजस्थान : पुरापाषाण काल से कांस्य युग तक

1. राजस्थान के इतिहास के संदर्भ में प्रागैतिहासिक काल को मुख्य रूप से किस प्रकार परिभाषित किया जाता है?
(1) वह युग जिसके लिए पठनीय लिखित अभिलेख और शिलालेख प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं
(2) वह युग जिसका पुनर्निर्माण लिखित अभिलेखों के अभाव में पुरातात्विक साक्ष्यों के माध्यम से किया गया है
(3) वह युग जिसकी विशेषता प्रारंभिक संरचनात्मक पाषाण मंदिरों की स्थापना और विकास है
(4) वह युग जो मौर्य साम्राज्य के शासनकाल और प्रशासनिक विस्तार के समकालीन है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. राजस्थान में प्रागैतिहासिक संस्कृतियों को कालक्रम में विभाजित करने के लिए पुरातत्वविदों द्वारा सामान्यतः किस मानदंड का उपयोग किया जाता है?
(1) पाषाण उपकरण तकनीकों का विकास और धातुओं का आगमन
(2) प्रमुख क्षेत्रीय राजवंशों का राजनीतिक उत्तराधिकार
(3) भव्य मंदिर वास्तुकला में शैलीगत परिवर्तन और नवीनता
(4) क्षेत्र में विभिन्न बोलियों का कालानुक्रमिक संक्रमण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. किस प्रमुख पुरातत्वविद् ने राजस्थान के डीडवाना और बागोर जैसे प्रागैतिहासिक स्थलों का व्यापक उत्खनन किया था?
(1) ए. घोष
(2) बी.बी. लाल
(3) वी.एन. मिश्र
(4) एच.डी. सांकलिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. राजस्थान के भौगोलिक विभाजनों और उनकी प्रागैतिहासिक प्रासंगिकता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अरावली श्रेणी ने पुरापाषाणकालीन मानवों के लिए प्रचुर मात्रा में पाषाण कच्चा माल उपलब्ध कराया।
II. थार के पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र में प्रागैतिहासिक मानव अधिवास का पूर्ण अभाव मिलता है।
III. दक्षिण-पूर्वी राजस्थान की नदी घाटियों ने प्रारंभिक ताम्रपाषाणिक कृषि समुदायों को पोषित किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. राजस्थान के निम्नलिखित में से किस आधुनिक जिले में निम्न पुरापाषाणकालीन स्थल 'डीडवाना' स्थित है?
(1) उदयपुर
(2) भीलवाड़ा
(3) नागौर
(4) सीकर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. राजस्थान में प्रागैतिहासिक चरणों और उपकरण परंपराओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (प्रागैतिहासिक चरण)
A. निम्न पुरापाषाण
B. मध्य पुरापाषाण
C. उच्च पुरापाषाण
D. मध्यपाषाण
सूची II: (विशिष्ट उपकरण परंपरा)
i. सूक्ष्म पाषाण उपकरण
ii. हस्तकुठार और विदारक
iii. शल्कों पर बनी खुरचनी और बेधक
iv. फलक और ब्यूरिन
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. राजस्थान में निम्न पुरापाषाणकालीन स्थलों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा भिन्न है?
(1) सिंगी तालाब
(2) अमरपुरा
(3) 16R रेत के टीले
(4) कालीबंगन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): राजस्थान में प्रारंभिक पुरापाषाणकालीन मानव प्रायः अरावली की तलहटी और नदी घाटियों के निकट निवास करते थे।
कारण (R): इन भौगोलिक क्षेत्रों में जल और उपकरण बनाने के लिए उपयुक्त क्वार्टजाइट पत्थरों की निरंतर उपलब्धता थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. निम्नलिखित विद्वानों में से कौन सिंगी तालाब के विस्तृत स्तरशास्त्रीय अध्ययन और उत्खनन से संबद्ध था?
(1) एस.आर. राव
(2) आर.एस. बिष्ट
(3) वी.एन. मिश्र
(4) आर.सी. अग्रवाल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. डीडवाना क्षेत्र में 'अमरपुरा संरचना' मुख्य रूप से प्रागितिहास के किस चरण से संबंधित है?
(1) निम्न पुरापाषाण
(2) नवपाषाण
(3) परिपक्व हड़प्पा
(4) लौह युग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. नागौर जिले में स्थित 'जायल बजरी कटक' का प्राथमिक पुरातात्विक महत्व क्या है?
(1) इसमें भारत में ताम्र प्रगलन के प्राचीनतम प्रमाण मिलते हैं
(2) यह राजस्थान में प्राचीनतम ज्ञात शैल चित्र प्रदर्शित करता है
(3) यह हड़प्पा के सबसे बड़े अन्नागार का स्थल है
(4) इसने निम्न पुरापाषाणकालीन आदिमानवों के लिए एक विशाल पाषाण खदान स्थल के रूप में कार्य किया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. डीडवाना प्रागैतिहासिक संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने निम्न पुरापाषाण से लेकर मध्यपाषाण काल तक का निरंतर अनुक्रम प्रदान किया।
II. 16R रेत के टीले के उत्खनन से महत्वपूर्ण कालानुक्रमिक आंकड़े प्राप्त हुए।
III. इस क्षेत्र में हस्तकुठार जैसे एश्यूलियन उपकरण पूर्णतः अनुपस्थित थे।
IV. प्रारंभिक उपकरणों के लिए क्वार्टजाइट और क्वार्टज यहाँ प्राथमिक कच्चा माल थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. निम्नलिखित में से कौन सा उपकरण प्रकार राजस्थान की निम्न पुरापाषाण संस्कृति से संबंधित नहीं है?
(1) हस्तकुठार
(2) विदारक
(3) ज्यामितीय सूक्ष्म पाषाण उपकरण
(4) गंडासा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. वर्तमान अर्ध-शुष्क जलवायु के उपरांत भी डीडवाना क्षेत्र में व्यापक निम्न पुरापाषाणकालीन अधिवास की सर्वोत्तम व्याख्या निम्नलिखित में से कौन सी है?
(1) आदिमानवों ने उन्नत जल-भंडारण और परिवहन तकनीक का उपयोग किया
(2) वे पूरी तरह से सिंधु घाटी समुदायों के साथ व्यापार पर निर्भर थे
(3) अत्यधिक घने उष्णकटिबंधीय वर्षावनों ने अत्यधिक नमी प्रदान की
(4) प्लीस्टोसीन युग के दौरान इस क्षेत्र में बारहमासी जल स्रोत और उच्च वर्षा होती थी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. सिंगी तालाब के प्रारंभिक निक्षेपों में पाया जाने वाला सबसे प्रमुख उपकरण प्रकार कौन सा है?
(1) एश्यूलियन हस्तकुठार और गंडासे
(2) निर्मित ताम्र बाणाग्र
(3) परिष्कृत पाषाण सेल्ट
(4) अस्थि निर्मित हारपून
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. डीडवाना क्षेत्र में पुरापाषाणकालीन संदर्भों के लिए अध्ययन की गई भूगर्भीय संरचनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम (प्राचीनतम से नवीनतम) क्या है?
I. अमरपुरा संरचना
II. जायल संरचना
III. डीडवाना संरचना
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) III, I, II
(4) II, III, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. राजस्थान में मध्य पुरापाषाणकालीन संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले "लूनी उद्योग" की अवधारणा किस विद्वान ने प्रस्तुत की थी?
(1) एच.डी. सांकलिया
(2) वी.एन. मिश्र
(3) बी.बी. लाल
(4) डी.पी. अग्रवाल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. राजस्थान में प्रागैतिहासिक स्थलों और उनसे संबंधित नदी घाटियों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (प्रागैतिहासिक स्थल/क्षेत्र)
A. बागोर
B. गणेश्वर
C. कालीबंगन
D. लूनी उद्योग स्थल
सूची II: (संबंधित नदी घाटी)
i. घग्गर
ii. कोठारी
iii. कांतली
iv. लूनी
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. राजस्थान में मध्य पुरापाषाणकालीन संस्कृति के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) प्रमुख सामग्री शुद्ध प्रगलित तांबा थी
(2) इस चरण का प्रमुख पुरातात्विक स्थल कालीबंगन है
(3) प्राथमिक उपकरण निर्माण तकनीक - लेवालोइस तकनीक
(4) विशिष्ट पुरावशेष परिष्कृत पाषाण निर्मित स्कंधित कुल्हाड़ा था
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. राजस्थान में मध्य पुरापाषाण काल के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी विशेषता शल्क आधारित उपकरण हैं।
II. लूनी बेसिन में इस काल के महत्वपूर्ण स्थल स्थित हैं।
III. खुरचनी और बेधक सबसे सामान्य उपकरण प्रकार हैं।
IV. यह मध्य प्लीस्टोसीन जलवायु चरण के अनुरूप है।
V. मोटे पत्थरों की तुलना में चर्ट, जैस्पर और महीन क्वार्टजाइट को प्राथमिकता दी गई।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. राजस्थान के मध्य पुरापाषाणकालीन स्थलों में प्रचुरता में पाई जाने वाली 'खुरचनी' की क्या विशेषता है?
(1) एक लघु पाषाण जिसका उपयोग वस्तुओं को तौलने के लिए किया जाता था
(2) एक भारी कोर उपकरण जिसे वृक्षों को काटने के लिए बनाया गया था
(3) एक शल्क उपकरण जिसका किनारा लकड़ी या चर्म पर कार्य करने हेतु पुनः परिष्कृत किया गया था
(4) एक तीक्ष्ण धात्विक फलक जिसका उपयोग क्षौर कर्म के लिए किया जाता था
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान में वागन नदी घाटी की पुरातात्विक विशेषताओं का सही वर्णन करता है?
(1) इसमें प्रारंभिक पुरापाषाणकालीन उपकरणों का अभाव है
(2) इसने एश्यूलियन और मध्य पुरापाषाणकालीन पुरावशेषों का एक समृद्ध अनुक्रम प्रदान किया है
(3) यह अपने अद्वितीय लौह युगीन महापाषाणिक शवाधानों के लिए प्रसिद्ध है
(4) यह राजस्थान में प्राचीनतम ज्ञात समुद्री पत्तन का स्थल है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. पश्चिमी राजस्थान में निम्न से मध्य पुरापाषाण काल तक कच्चे माल के प्रयोग में क्या मुख्य परिवर्तन आया था?
(1) पाषाण के स्थान पर अस्थि उपकरणों का पूर्ण प्रयोग
(2) आयातित ज्वालामुखी ओब्सीडियन पर पूर्ण निर्भरता
(3) उपकरण निर्माण के लिए लौह अयस्कों का प्रयोग
(4) मोटे क्वार्टजाइट से चर्ट और जैस्पर जैसे महीन सिलिकामय पत्थरों की ओर संक्रमण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. राजस्थान में पुरापाषाण काल के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए, जिसकी विशेषता उपकरण के आकार में क्रमिक कमी है:
(1) उच्च पुरापाषाण → मध्य पुरापाषाण → निम्न पुरापाषाण
(2) मध्य पुरापाषाण → निम्न पुरापाषाण → उच्च पुरापाषाण
(3) निम्न पुरापाषाण → मध्य पुरापाषाण → उच्च पुरापाषाण
(4) निम्न पुरापाषाण → उच्च पुरापाषाण → मध्य पुरापाषाण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. राजस्थान में उच्च पुरापाषाणकालीन संस्कृति के प्रमाण मुख्य रूप से किस बेसिन में पहचाने गए हैं?
(1) सांभर बेसिन
(2) कांतली बेसिन
(3) पुष्कर बेसिन
(4) माही बेसिन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. बूढ़ा पुष्कर में उत्खनन, जिसने मध्य से उच्च पुरापाषाणकालीन संक्रमण की जानकारी प्रदान की, किसके द्वारा किया गया था?
(1) बी. ऑलचिन
(2) मॉर्टिमर व्हीलर
(3) आर.डी. बनर्जी
(4) दयाराम साहनी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में उच्च पुरापाषाण संस्कृति की विशेषता नहीं है?
(1) फलक और ब्यूरिन उपकरण तकनीक
(2) मनकों और नक्काशी के लिए शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलकों का उपयोग
(3) भीषण शुष्क जलवायु चरण का सामना करना
(4) परिष्कृत ताम्र उपकरणों का व्यापक उपयोग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. राजस्थान में उच्च पुरापाषाण काल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पश्चिमी राजस्थान में इस चरण के दौरान जलवायु अत्यधिक आर्द्र थी।
II. ब्यूरिन और परिष्कृत फलक इस युग के विशिष्ट उपकरण हैं।
III. कुछ स्थलों पर शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके मिले हैं जो तत्कालीन पर्यावरणीय परिस्थितियों का संकेत देते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. थार क्षेत्र के उच्च पुरापाषाण/मध्यपाषाण स्थलों में कौन सा एक भिन्न है?
(1) बूढ़ा पुष्कर
(2) होकरा
(3) गिलुंड
(4) जायल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. प्रागैतिहासिक विशेषताओं और सांस्कृतिक चरणों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (प्रागैतिहासिक विशेषता)
A. शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके के मनके
B. हस्तकुठार
C. लेवालोइस शल्क
D. ज्यामितीय सूक्ष्म पाषाण उपकरण
सूची II: (विशिष्ट सांस्कृतिक चरण)
i. निम्न पुरापाषाण
ii. मध्य पुरापाषाण
iii. उच्च पुरापाषाण
iv. मध्यपाषाण
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. राजस्थान के प्रागितिहास में शुतुरमुर्ग के अंडे के छिलके के साक्ष्यों के संबंध में कौन सा कथन गलत है?
(1) वे विशेष रूप से नवपाषाणकालीन परिष्कृत पाषाण संदर्भों में पाए जाते हैं
(2) वे उच्च पुरापाषाण काल के दौरान अत्यधिक शुष्क परिस्थितियों का प्रमाण देते हैं
(3) कुछ अंडे के छिलकों पर नक्काशी की गई है या उन्हें मनकों के रूप में बनाया गया है
(4) चंद्रावती क्षेत्र के स्थलों से ऐसे अवशेष प्राप्त हुए हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): मध्य पुरापाषाणकालीन स्थलों की तुलना में पश्चिमी राजस्थान में उच्च पुरापाषाणकालीन स्थल अपेक्षाकृत कम हैं।
कारण (R): अंतिम हिमयुग के दौरान अत्यधिक शुष्कता ने क्षेत्र को काफी हद तक रहने के अयोग्य बना दिया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. मध्यपाषाण काल का प्रमुख स्थल 'बागोर' किस नदी के तट पर स्थित है?
(1) लूनी
(2) कोठारी
(3) बनास
(4) चंबल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. 1960 के दशक में भीलवाड़ा जिले के बागोर में व्यापक पुरातात्विक उत्खनन का नेतृत्व किस विद्वान ने किया था?
(1) वी.एन. मिश्र
(2) वी.एस. वाकणकर
(3) एच. सांकलिया
(4) बी.बी. लाल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. बागोर के प्रथम चरण (प्राचीनतम चरण) के दौरान निवासियों का प्राथमिक आर्थिक आधार क्या था?
(1) उन्नत लौह धातुकर्म और व्यापार
(2) गहन हल-आधारित स्थायी कृषि
(3) पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्यों के साथ शिकार और संग्रहण
(4) फारस की खाड़ी के साथ समुद्री व्यापार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. बागोर स्थल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रथम चरण की विशेषता मृदभांड रहित सूक्ष्म पाषाण उपकरण उद्योग है।
II. द्वितीय चरण ताम्र उपकरणों और हस्तनिर्मित मृदभांडों की शुरुआत को दर्शाता है।
III. तृतीय चरण में लौह उपकरण और चाक-निर्मित मृदभांड शामिल हैं।
IV. यह स्थल किसी भी चरण में पशुपालन का साक्ष्य नहीं देता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. बागोर के प्रारंभिक मध्यपाषाण चरण में प्रमाणित पशुओं में से कौन सी पालतू या शिकार की जाने वाली प्रजाति नहीं थी?
(1) भेड़
(2) बकरी
(3) घोड़ा
(4) गाय-बैल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. बागोर में आर्थिक परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: बागोर भारतीय उपमहाद्वीप में पशुपालन के प्राचीनतम प्रमाणों में से एक प्रदान करता है।
कथन II: बागोर के पशु अवशेष शिकार पर निर्भरता के बिना विशुद्ध कृषि अर्थव्यवस्था की ओर परिवर्तन का संकेत देते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. स्थानीय रूप से 'महासतियों का टीला' के रूप में विख्यात टीला किस प्रागैतिहासिक स्थल से संबंधित है?
(1) तिलवाड़ा
(2) बालाथल
(3) आहड़
(4) बागोर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. बागोर में पाए गए सूक्ष्म पाषाण उपकरणों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) वे त्रिकोण और ट्रेपेज़ जैसे ज्यामितीय आकारों की विशेषता रखते हैं।
(2) वे आकार में विशेष रूप से गैर-ज्यामितीय हैं।
(3) वे मुख्य रूप से मोटे क्वार्टजाइट से निर्मित थे।
(4) वे असामान्य रूप से बड़े हैं, प्रायः 15 सेमी से अधिक लंबे हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. राजस्थान के मध्यपाषाण काल के संदर्भ में 'ज्यामितीय सूक्ष्म पाषाण उपकरण' को क्या परिभाषित करता है?
(1) विशाल पाषाण खंड जिनका उपयोग आवास की नींव के रूप में किया जाता था
(2) आभूषणों में सजावटी उपयोग के लिए ज्यामितीय ताम्र मनके
(3) त्रिकोण, अर्धचंद्राकार और ट्रेपेज़ जैसे ज्यामितीय रूपों में निर्मित लघु पाषाण उपकरण
(4) भूमि मापन के लिए उपयोग किए जाने वाले अस्थि निर्मित उपकरण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. बागोर के सांस्कृतिक चरणों और विशेषताओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (सांस्कृतिक चरण)
A. चरण I
B. चरण II
C. चरण III
D. उत्तर ऐतिहासिक अधिवास
सूची II: (विशिष्ट विशेषता)
i. लौह उपकरण और चाक-निर्मित मृदभांड
ii. कांच के मनके और आधुनिक पुरावशेष
iii. सूक्ष्म पाषाण उपकरण और पशु अस्थियाँ (मृदभांड रहित)
iv. ताम्र उपकरण और हस्तनिर्मित मृदभांडों के साथ सूक्ष्म पाषाण उपकरण
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. बागोर स्थल पर निरंतर प्रागैतिहासिक अधिवास का प्राथमिक पर्यावरणीय कारक क्या माना जाता है?
(1) ताम्र खदानों से निकटता
(2) आक्रमणों के विरुद्ध प्राकृतिक सुरक्षा
(3) प्राकृतिक चट्टानी गुफाओं की उपलब्धता
(4) कोठारी नदी के निकट अनुकूल पारिस्थितिकी जो जल

और शिकार सुलभ कराती थी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. बागोर में शवाधान प्रथाओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बस्तियों के भीतर ही शवाधान पाए गए थे।
II. चरण I में, मानव कंकालों को पूर्व-पश्चिम दिशा में विस्तारित स्थिति में रखा गया था।
III. चरण II में, शवों को आकुंचित (मुड़ी हुई) स्थिति में रखा गया था।
IV. मृतकों के साथ मांस का अर्पण और ताम्र आभूषण जैसी सामग्री रखी जाती थी।
V. यह स्थल आवास के बाहर पृथक कब्रिस्तानों को प्रकट करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. बागोर उत्खनन के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) चरण I - मृदभांड रहित मध्यपाषाण
(2) चरण II - ताम्रपाषाणिक प्रभाव
(3) वास्तुकला - पकी ईंटों के बहुमंजिला घर
(4) चरण III - लौह युग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. बागोर के आवासीय ढांचों में किस प्रकार के फर्श का पता चला था?
(1) संगमरमर के स्लैब
(2) लकड़ी के तख्ते
(3) टेराकोटा टाइलें
(4) शिस्ट स्लैब और कंकड़ से बने पत्थर के पक्के फर्श
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बागोर संस्कृति का गलत वर्णन करता है?
(1) यह प्रारंभ से ही केवल एक कृषि प्रधान समुदाय था, जो शिकार से पृथक था
(2) यह पांच सहस्राब्दियों से अधिक का निरंतर मानव अधिवास अनुक्रम प्रस्तुत करता है
(3) यह शिकार-संग्रहण से पशुपालन वाली अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण दर्शाता है
(4) इसमें भारत के सबसे समृद्ध सूक्ष्म पाषाण उद्योगों में से एक मिलता है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. बागोर के सांस्कृतिक चरणों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. सूक्ष्म पाषाण उपकरण + लौह उपकरण
II. केवल सूक्ष्म पाषाण उपकरण
III. सूक्ष्म पाषाण उपकरण + ताम्र उपकरण
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III
(2) II, III, I
(3) III, II, I
(4) II, I, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. दक्षिण भारत की तुलना में राजस्थान में एक स्पष्ट "नवपाषाण" चरण को विरल क्यों माना जाता है?
(1) क्योंकि इस अवधि में यह क्षेत्र निर्जन था
(2) क्योंकि धातु के शीघ्र प्रयोग के कारण यहाँ मध्यपाषाण से सीधे ताम्रपाषाण काल में संक्रमण हुआ
(3) क्योंकि ज्वालामुखी विस्फोटों ने बस्तियों को नष्ट कर दिया
(4) क्योंकि राजस्थान की संस्कृतियों ने कृषि को दरकिनार कर दिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. राजस्थान में प्रारंभिक कृषि के प्रमाण, जो नवपाषाण संक्रमण से संबंधित हैं, किस प्रकार की खोजों से प्रमाणित होते हैं?
(1) वन सफाई के लिए उपयोग किए गए घिसे हुए और परिष्कृत पाषाण कुल्हाड़े
(2) थार मरुस्थल में व्यापक सिंचाई नहर नेटवर्क
(3) गहरी जुताई के लिए जटिल लौह हल
(4) क्षेत्रीय कपड़ा व्यापार के लिए रेशम निर्माण केंद्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. नवपाषाण चरण के दौरान पाषाण उपकरण निर्माण की विशिष्ट तकनीक क्या थी?
(1) केवल प्रत्यक्ष कठोर-हथौड़ा शल्कन तकनीक
(2) पत्थर को पिघलाने के लिए अत्यधिक तापमान पर गर्म करना
(3) चिकनी सतह और तीक्ष्ण धार हेतु पॉलिश करना और घिसना
(4) केवल जटिल लेवालोइस शल्क निर्माण तकनीक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. राजस्थान में खाद्य उत्पादन की ओर संक्रमण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थान के सभी क्षेत्रों में एक साथ समान रूप से हुआ।
II. दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में नदी परिवेश के कारण स्थायी कृषि की ओर पहले संक्रमण हुआ।
III. कृषि के उपरांत भी शुष्क पश्चिमी क्षेत्रों में पशुपालन एक प्रमुख आर्थिक रणनीति बनी रही।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III

(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन सा स्थल विशुद्ध रूप से नवपाषाणकालीन श्रेणी में नहीं आता है?
(1) आहड़
(2) बागोर (चरण I)
(3) डीडवाना
(4) उपरोक्त सभी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. प्रागैतिहासिक स्थलों और उनके आर्थिक संक्रमणों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (क्षेत्र/स्थल)
A. डीडवाना
B. बागोर (चरण I)
C. बागोर (चरण II)
D. आहड़
सूची II: (प्रमुख आर्थिक संक्रमण)
i. परिपक्व ताम्रपाषाणिक कृषि
ii. निम्न पुरापाषाणकालीन खाद्य संग्रहण
iii. मध्यपाषाणकालीन शिकार-संग्रहण
iv. धातु और पशुपालन की शुरुआत
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. निम्नलिखित विशेषताओं में से कौन सी एक नवपाषाण क्रांति की विशेषता नहीं है?
(1) पादप घरेलूकरण (कृषि)
(2) स्थायी ग्रामीण जीवन
(3) परिष्कृत पाषाण सेल्ट
(4) व्यापक लौह प्रगलन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): राजस्थान में दक्षिण भारत के समान एक प्रमुख नवपाषाण चरण का अभाव है।
कारण (R): अरावली में प्रचुर ताम्र निक्षेपों ने उत्तर मध्यपाषाण से सीधे ताम्रपाषाण संस्कृतियों में संक्रमण को सुगम बनाया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. "ताम्रपाषाणिक" शब्द अनिवार्य रूप से किसके संयुक्त उपयोग वाले काल को परिभाषित करता है?
(1) पाषाण और लोहा
(2) कांसा और लोहा
(3) पाषाण और तांबा
(4) तांबा और लोहा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. दक्षिण-पूर्वी राजस्थान की ताम्रपाषाण संस्कृतियों का प्राथमिक केंद्र कौन सा नदी तंत्र था?
(1) बनास नदी तंत्र
(2) लूनी नदी तंत्र
(3) कांतली नदी तंत्र
(4) घग्गर-हकरा नदी तंत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. राजस्थान की ताम्रपाषाण संस्कृतियों के संबंध में सही कथन चुनिए:
(1) तांबे की खोज के बाद उन्होंने पाषाण उपकरणों का उपयोग बंद कर दिया।
(2) वे पूर्णतः खानाबदोश थे।
(3) उन्होंने मुख्य रूप से विशाल पाषाण मंदिरों का निर्माण किया।
(4) उनकी विशेषता सूक्ष्म पाषाण और ताम्र उपकरणों का सह-अस्तित्व है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. राजस्थान में ताम्रपाषाणिक मृदभांड शैलियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. लाल और काले मृदभांड की पहचान आहड़ संस्कृति से की जाती है।
II. गैरिक मृदभांड प्रमुख रूप से गणेश्वर संस्कृति से संबद्ध है।
III. चित्रित धूसर मृदभांड प्रारंभिक ताम्रपाषाण काल का विशिष्ट मृदभांड है।
IV. प्रारंभिक चरणों में मृदभांड हस्तनिर्मित थे जो धीरे-धीरे चाक-निर्मित की ओर बढ़े।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. राजस्थान में ताम्रपाषाण संस्कृति और संबंधित क्षेत्र का सही सुमेलित युग्म है:
(1) गणेश्वर संस्कृति - मारवाड़ क्षेत्र
(2) सोथी संस्कृति - हाड़ौती क्षेत्र
(3) आहड़ संस्कृति - मेवाड़ क्षेत्र
(4) कुराड़ा संस्कृति - वागड़ क्षेत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. ताम्रपाषाणिक अर्थव्यवस्थाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: राजस्थान की ताम्रपाषाणिक अर्थव्यवस्थाएं मुख्य रूप से कृषि-पशुपालक थीं।
कथन II: बालाथल जैसे स्थलों से गेहूं और जौ की खेती के साक्ष्य मिलते हैं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. हड़प्पा सभ्यता की तुलना में बनासियन (आहड़) ताम्रपाषाण संस्कृति की विशिष्ट विशेषता क्या है?
(1) बनासियन संस्कृति ने पत्थर और मिट्टी के ग्रामीण वास्तुकला का उपयोग किया, जहाँ नगर नियोजन का अभाव था।
(2) बनासियन संस्कृति की एक जटिल लिपि थी
(3) बनासियन संस्कृति ने निर्माण के लिए व्यापक रूप से पकी ईंटों का उपयोग किया
(4) बनासियन संस्कृति विशेष रूप से लौह उपकरणों पर निर्भर थी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. राजस्थान में गैरिक मृदभांड परंपरा किस धातु के निष्कर्षण से निकटता से जुड़ी है?
(1) जस्ता
(2) तांबा
(3) लोहा
(4) सीसा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. आहड़ में बनास संस्कृति का प्रारंभिक उत्खनन 1953 में किसके द्वारा किया गया था?
(1) आर.सी. अग्रवाल
(2) अक्षय कीर्ति व्यास
(3) एच.डी. सांकलिया
(4) वी.एन. मिश्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. आहड़ संस्कृति के स्थलों और उनके जिलों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (आहड़ संस्कृति स्थल)
A. आहड़
B. गिलुंड
C. बालाथल
D. ओझियाना
सूची II: (आधुनिक जिला)
i. राजसमंद
ii. उदयपुर
iii. भीलवाड़ा
iv. उदयपुर (वल्लभनगर)
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. आहड़ के प्राचीन स्थल को शिलालेखों और साहित्य में किस नाम से जाना जाता है?
(1) धूलकोट
(2) ताम्बवती
(3) आघाटपुर
(4) 2 और 3 दोनों
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. आहड़ संस्कृति की वास्तुकला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. घर स्थानीय शिस्ट पाषाण के चबूतरे पर बनाए गए थे।
II. ऊपरी संरचना के लिए कच्ची ईंटों का उपयोग किया गया था।
III. सभी घरों में प्रारंभ से ही पकी ईंटों का समान उपयोग किया गया था।
IV. बहु-कक्षीय घर सामान्य थे।
V. कई चूल्हों वाले साक्ष्य संयुक्त परिवारों का सुझाव देते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. आहड़ स्थल के सामान्य आवासीय ढांचों में कौन सी वास्तुशिल्प विशेषता अनुपस्थित है?
(1) मिट्टी की दीवारें
(2) पत्थर की नींव
(3) पकी हुई ईंटें
(4) बांस और फूस की छतें
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. आहड़ के लोगों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) उन्होंने विशिष्ट लाल और काले मृदभांड निर्मित किए।
(2) वे ताम्र प्रगलन से अनजान थे और उपकरणों का आयात करते थे।
(3) उन्होंने आहार के रूप में चावल की खेती की।
(4) उन्होंने नक्काशीदार डिजाइनों वाले टेराकोटा मनकों का उपयोग किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. आहड़ के विशिष्ट लाल और काले मृदभांडों पर मुख्य रूप से किस रंग के चित्र बने हैं?

(1) पीला
(2) नीला
(3) हरा
(4) सफेद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. मेवाड़ क्षेत्र के ताम्रपाषाणकालीन स्थलों के उत्खनन का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(1) आहड़ → गिलुंड → बालाथल
(2) गिलुंड → आहड़ → बालाथल
(3) बालाथल → आहड़ → गिलुंड
(4) आहड़ → बालाथल → गिलुंड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. ताम्रपाषाणकालीन स्थल गिलुंड का प्रथम उत्खनन 1959-60 में किसके द्वारा किया गया था?
(1) एच.डी. सांकलिया
(2) वी.एस. शिंदे
(3) बी.बी. लाल
(4) आर.एस. बिष्ट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. बनास संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र गिलुंड किस नदी के तट पर स्थित है?
(1) बनास
(2) लूनी
(3) कांतली
(4) घग्गर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. आहड़ और गिलुंड के बीच एक प्रमुख वास्तुशिल्प अंतर क्या है?
(1) गिलुंड में पाषाण वास्तुकला का अभाव है।
(2) गिलुंड के घर केवल लकड़ी से बने थे।
(3) गिलुंड में मोहनजोदड़ो के समान भूमिगत जल निकासी है।
(4) गिलुंड, आहड़ के विपरीत, कुछ विशाल संरचनाओं में पकी ईंटों का उपयोग दर्शाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. गिलुंड के संरचनात्मक अवशेषों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उत्खनन में समानांतर कच्ची ईंटों की दीवारों के एक परिसर का पता चला।
II. बड़े गोलाकार गड्ढों का उपयोग संभवतः अनाज भंडारण के लिए किया जाता था।
III. स्थल पर सरकंडे और मिट्टी के लेप (वैटल-एंड-डॉब) के निर्माण का अभाव है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. निम्नलिखित में से कौन सी सामग्री आहड़-गिलुंड संस्कृति के पुरावशेषों में नहीं पाई जाती है?
(1) ताम्र कुल्हाड़ियाँ
(2) सेलखड़ी के मनके
(3) लौह तलवारें
(4) टेराकोटा वृषभ मूर्तियाँ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. विशिष्ट पुरातात्विक खोजों और उनसे संबंधित स्थलों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (खोज/विशेषता)
A. व्यापक पकी ईंटों की संरचनाएं
B. बहु-मुखी चूल्हे
C. कुष्ठ रोग का प्राचीनतम प्रमाण
D. विशाल कच्ची ईंटों की किलेबंदी
सूची II: (ताम्रपाषाणकालीन स्थल)
i. आहड़
ii. गिलुंड
iii. बालाथल
iv. बागोर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. गिलुंड के मृदभांडों के संबंध में कौन सा मृदभांड प्रकार भिन्न है?
(1) उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड
(2) लाल और काले मृदभांड
(3) सादे लाल मृदभांड
(4) चित्रित धूसर मृदभांड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): गिलुंड को आहड़ संस्कृति का एक प्रमुख क्षेत्रीय केंद्र माना जाता है।
कारण (R): इसमें समानांतर दीवारों वाले संरचनात्मक परिसर और महत्वपूर्ण भंडारण सुविधाएं मिलती हैं जो एक जटिल अर्थव्यवस्था का संकेत देती हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. गणेश्वर सभ्यता किस मौसमी नदी के तट पर स्थित है?
(1) बनास
(2) कांतली
(3) साबरमती
(4) लूनी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. गणेश्वर-जोधपुरा सांस्कृतिक परिसर से मुख्य रूप से कौन से मृदभांड जुड़े हैं?
(1) कपि-वर्णी मृदभांड (गैरिक मृदभांड)
(2) उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड
(3) चित्रित धूसर मृदभांड
(4) राउलेटेड मृदभांड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. गणेश्वर सभ्यता के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) यह खेतड़ी ताम्र बेल्ट के निकट फली-फूली।
(2) यहाँ प्राप्त ताम्र उपकरणों में शुद्धता का स्तर अत्यंत उच्च है।
(3) यह प्राचीन भारत में लौह प्रगलन का प्राथमिक केंद्र था।
(4) स्थल पर ताम्र वस्तुओं के साथ सूक्ष्म पाषाण उपकरण भी मिले हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. गणेश्वर की कलाकृतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यहाँ ताम्र बाणाग्र प्रचुर मात्रा में मिले हैं।
II. ताम्र निर्मित मछली पकड़ने के कांटे यहाँ से प्राप्त हुए हैं।
III. ताम्र वस्तुओं में 99% तक शुद्धता है।
IV. लौह कृषि उपकरण यहाँ की प्रमुख खोज थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. गणेश्वर में ताम्र निर्मित मछली पकड़ने के कांटों की उपस्थिति क्या दर्शाती है?
(1) निवासी मुख्य रूप से समुद्री व्यापार में लगे थे
(2) इन्हें अनुष्ठानिक गहनों के रूप में आयात किया गया था
(3) कांतली नदी में उस समय पर्याप्त जल था जो जलीय जीवन का पोषण करता था
(4) इनका उपयोग कपड़ा बुनाई के लिए किया जाता था
(5) अनुत्तरित प्रश्न

86. गणेश्वर के धातुकर्म महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: गणेश्वर संस्कृति ने हड़प्पा सभ्यता को कच्चे तांबे और ताम्र वस्तुओं की आपूर्ति की थी।
कथन II: गणेश्वर भौगोलिक रूप से खेतड़ी ताम्र निक्षेपों के निकट है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. सिंधु घाटी सभ्यता के संदर्भ में गणेश्वर संस्कृति की कालानुक्रमिक स्थिति क्या है?
(1) यह केवल उत्तर-हड़प्पा चरण का प्रतिनिधित्व करती है
(2) यह मौर्य काल के दौरान फली-फूली
(3) यह मध्यपाषाण काल से पहले का चरण है
(4) यह पूर्व-हड़प्पा और प्रारंभिक हड़प्पा चरणों के समकालीन थी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. गणेश्वर की पुरातात्विक क्षमता किस पुरातत्वविद् के प्रयासों से प्रकाश में आई?
(1) आर.सी. अग्रवाल
(2) दयाराम साहनी
(3) अमलानंद घोष
(4) मॉर्टिमर व्हीलर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. 'कालीबंगन' नाम का स्थानीय भाषा में क्या अर्थ है?
(1) मृतकों का टीला
(2) तांबे का शहर
(3) काली चूड़ियाँ
(4) विशाल अन्नागार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. कालीबंगन के पूर्व-हड़प्पा मृदभांड फैब्रिक के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पूर्व-हड़प्पा मृदभांड फैब्रिक)
A. फैब्रिक A
B. फैब्रिक B
C. फैब्रिक C
D. फैब्रिक D
सूची II: (विशेषता)
i. आंतरिक भाग पर नक्काशी के साथ मजबूत लाल मृदभांड
ii. हल्के और काले-सफेद रंग में रंगे मृदभांड
iii. मोटा, मजबूत मृदभांड जिसका निचला हिस्सा खुरदरा है
iv. काले चित्रों के साथ बैंगनी/लाल लेप
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. कालीबंगन में जुते हुए खेत के साक्ष्य अत्यंत महत्वपूर्ण क्यों हैं?
(1) यह ट्रैक्टर के निशान वाला एकमात्र स्थल है
(2) यह ताम्र स्लैग की परतों से ढका पाया गया था
(3) यह कपास की खेती न होने का प्रमाण देता है
(4) यह विश्व में कृषि के लिए जुते हुए खेत का प्राचीनतम पुरातात्विक प्रमाण है
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. कालीबंगन के पूर्व-हड़प्पा चरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बस्ती की कच्ची ईंटों की दीवारों से किलेबंदी की गई थी।
II. घरों का निर्माण मुख्य रूप से मानक पकी ईंटों से किया गया था।
III. इस चरण को समाप्त करने वाले भूकंप के स्तरशास्त्रीय साक्ष्य हैं।
IV. जुते हुए खेत में खांचों का ग्रिड मिश्रित खेती का संकेत देता है।
V. इस चरण के मृदभांड परिपक्व हड़प्पा मृदभांडों से भिन्न हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, III, IV और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. कालीबंगन के पूर्व-हड़प्पा स्तरों में कौन सा पुरावशेष नहीं मिला था?
(1) कार्यात्मक ताम्र कुल्हाड़ियाँ
(2) सेलखड़ी के सूक्ष्म मनके
(3) एकश्रृंगी मृग के चित्रों वाली परिपक्व हड़प्पा मुहरें
(4) पाषाण निर्मित चक्की और मूसल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. कालीबंगन में पूर्व-हड़प्पा बस्ती किस प्राकृतिक आपदा के प्राचीनतम पुरातात्विक साक्ष्य प्रदान करती है?
(1) ज्वालामुखी विस्फोट
(2) सुनामी
(3) उल्कापात
(4) भूकंप
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. कौन सा फसल युग्म कालीबंगन के पूर्व-हड़प्पा जुते हुए खेत के मिश्रित पैटर्न से मेल नहीं खाता है?
(1) चावल और गन्ना
(2) सरसों और चना
(3) तिल और जौ
(4) गेहूं और चना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. कालीबंगन के स्तरशास्त्रीय चरणों का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
I. परिपक्व हड़प्पा चरण
II. पूर्व-हड़प्पा चरण
III. विवर्तनिक गतिविधि के कारण परित्याग की अवधि
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III
(2) II, III, I
(3) III, I, II
(4) II, I, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. कालीबंगन में परिपक्व हड़प्पा चरण के नगर नियोजन की क्या विशेषता है?
(1) गोलाकार सड़कों का पैटर्न
(2) ग्रिड पैटर्न जिसमें सड़कें उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम में संरेखित हैं
(3) बिना सड़कों के अनियोजित घर
(4) विशाल केंद्रीय पिरामिड संरचना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. कालीबंगन में पाई जाने वाली विशिष्ट धार्मिक विशेषता क्या है, जो अन्य हड़प्पा स्थलों में प्रायः अनुपस्थित है?
(1) ईंटों के चबूतरे पर बनी अग्नि वेदिकाएं
(2) विशाल स्नानागार
(3) चट्टानों को काटकर बनाए गए गुफा मंदिर
(4) देवताओं की आदमकद कांस्य मूर्तियाँ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. परिपक्व हड़प्पा चरण के दौरान कालीबंगन की आवासीय वास्तुकला के संबंध में गलत कथन है:
(1) घरों का निर्माण मुख्य रूप से मानक धूप में सुखाई गई मिट्टी की ईंटों से किया गया था
(2) अधिकांश घरों में केंद्रीय आँगन होता था
(3) घरों का प्रवेश मुख्य सड़कों की ओर से होता था
(4) कुछ घरों में निजी कुएँ थे
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. कालीबंगन में जल निकासी व्यवस्था के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह सड़कों की नालियों के लिए पकी ईंटों पर निर्भर था।
II. कुछ स्थानों पर लकड़ी के लट्ठों को खोखला कर नालियों के रूप में उपयोग किया गया था।
III. अपशिष्ट जल हेतु सड़कों में सोखने वाले जार गाड़े जाते थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

101. कालीबंगन की कलाकृतियों और उनके महत्व के संबंध में सही युग्म है:
(1) टेराकोटा खिलौना गाड़ी - लौह पहियों का उपयोग
(2) नर्तकी की कांस्य मूर्ति - निचले शहर में मिली
(3) बेलनाकार मुहर - मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क
(4) पुरोहित राजा की पाषाण प्रतिमा - गढ़ में मिली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

102. पुरातात्विक खोजों और हड़प्पा स्थलों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विशेषता/खोज)
A. अग्नि वेदिकाएं और जुता हुआ खेत
B. पकी ईंटों का पर्याप्त उपयोग
C. ताम्र केंद्रित उत्तर हड़प्पा औद्योगिक स्थल
D. आसीन देवता की मुहर
सूची II: (हड़प्पा स्थल)
i. कालीबंगन
ii. बरोर
iii. करणपुरा
iv. बिंजौर
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

103. कालीबंगन में बेलनाकार मुहर की खोज किस सभ्यता के प्रभाव को दर्शाती है?
(1) मिस्र
(2) चीनी
(3) मिनोअन
(4) मेसोपोटामिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

104. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, अभिकथन (A) और कारण (R) दिए गए हैं। नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): कालीबंगन की जल निकासी व्यवस्था मोहनजोदड़ो की तुलना में कम परिष्कृत मानी जाती है।
कारण (R): कालीबंगन में पकी ईंटों की नालियों के स्थान पर सोखने वाले गड्ढों और लकड़ी के लट्ठों का उपयोग किया गया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

105. कांस्य युगीन उपकरण मुख्य रुप से तांबे और किसके मिश्र धातु से बने होते हैं?
(1) लोहा
(2) जस्ता
(3) टिन
(4) चांदी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

106. कालीबंगन कब्रिस्तान में खोजी गई विशिष्ट शवाधान प्रथा कौन सी है?
(1) आयताकार गड्ढों में विस्तारित शवाधान
(2) ममीकरण
(3) शव को खुला छोड़ना
(4) नदियों में राख का विसर्जन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

107. कालीबंगन में एक बच्चे की खोपड़ी में किस चिकित्सा साक्ष्य की पहचान की गई थी?
(1) दंत चिकित्सा के प्रमाण
(2) चेहरे की सर्जरी
(3) बोन ग्राफ्टिंग
(4) कपाल भेदन (खोपड़ी में शल्य क्रिया द्वारा छेद)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

108. कालीबंगन में शवाधान प्रथाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आयताकार गड्ढों में विस्तारित शवाधान सामान्य थे।
II. कलश युक्त गोलाकार गड्ढे (कलश शवाधान) पाए गए।
III. कुछ कलश शवाधानों में केवल सामग्री थी, कंकाल नहीं।
IV. शवाधानों में स्वर्ण आभूषणों का विशाल भंडार मिला।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

109. कालीबंगन कब्रिस्तान में कौन सी शवाधान प्रथा नहीं देखी गई थी?
(1) कंकाल अवशेषों के साथ आयताकार गड्ढे
(2) कलशों के साथ गोलाकार गड्ढे
(3) दखमा (शव को खुला छोड़ना)
(4) बिना कंकाल अवशेष के आयताकार गड्ढे
(5) अनुत्तरित प्रश्न

110. कालीबंगन शवाधानों में मृतकों के साथ रखे गए मृदभांड क्या दर्शाते हैं?
(1) मृतक का पेशेवर दर्जा
(2) मृत्युदंड की एक विधि
(3) भुगतान के लिए मुद्रा

(4) परलोक में विश्वास जहाँ इन वस्तुओं का उपयोग होगा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

111. कालीबंगन शवाधान रीति-रिवाजों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़कर सही विकल्प चुनें:
कथन I: कंकाल अवशेषों के बिना कलश शवाधान उन व्यक्तियों के लिए प्रतीकात्मक शवाधान का सुझाव देते हैं जिनकी मृत्यु अन्यत्र हुई थी।
कथन II: कालीबंगन समाज में प्रत्येक कब्र में मृदभांडों की संख्या समान थी।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

112. कालीबंगन की कब्रों में ताम्र दर्पणों की उपस्थिति क्या दर्शाती है?
(1) उन्नत ऑप्टिकल ज्ञान
(2) व्यक्तिगत साज-सज्जा हेतु परावर्तक सतह बनाने का धातुकर्म कौशल
(3) सौर ऊर्जा तकनीक
(4) मुद्रा ढलाई
(5) अनुत्तरित प्रश्न

113. पश्चिमी राजस्थान में पुरापाषाण और मध्यपाषाण स्थलों की उच्चतम सांद्रता किस नदी बेसिन में पाई जाती है?
(1) चंबल
(2) लूनी
(3) माही
(4) साबरमती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

114. भौगोलिक क्षेत्रों और उनसे जुड़े प्रमुख स्थलों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (भौगोलिक क्षेत्र)
A. मेवाड़ क्षेत्र
B. शेखावाटी क्षेत्र
C. घग्गर क्षेत्र
D. मारवाड़ क्षेत्र
सूची II: (प्रागैतिहासिक/आद्य-ऐतिहासिक स्थल)
i. कालीबंगन
ii. डीडवाना
iii. गणेश्वर
iv. आहड़
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

115. राजस्थान में प्रागैतिहासिक स्थलों के भौगोलिक विस्तार के संबंध में गलत कथन है:
(1) अरावली की पहाड़ियाँ संसाधन क्षेत्र के रूप में कार्य करती थीं।
(2) दक्षिण-पूर्वी नदी घाटियों ने प्रारंभिक कृषि समुदायों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान किया।
(3) थार के मुख्य मरुस्थलीय क्षेत्र में प्रागैतिहासिक मानव साक्ष्यों का पूर्ण अभाव है।
(4) घग्गर-हकरा बेल्ट ने हड़प्पा काल के दौरान सघन बस्तियों का पोषण किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

116. राजस्थान के भूगोल के अनुसार संस्कृतियों के मानचित्रण वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बनास बेसिन ताम्रपाषाणिक कृषि संस्कृतियों से संबद्ध है।
II. कांतली नदी बेसिन ताम्र उत्पादक स्थलों से संबद्ध है।
III. घग्गर घाटी में महत्वपूर्ण पूर्व-हड़प्पा और हड़प्पा स्थल हैं।
IV. लूनी बेसिन मध्य पुरापाषाणकालीन उपकरण उद्योगों के साक्ष्य दिखाता है।
V. चंबल घाटी चित्रित शैल आश्रयों से पूर्णतः रहित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

117. किस भौगोलिक कारक के कारण ताम्रपाषाणिक बस्तियाँ मेवाड़ क्षेत्र में केंद्रित थीं?
(1) यह क्षेत्र विदेशी व्यापार का केंद्र था
(2) यह क्षेत्र अत्यंत शुष्क था जिसने संरचनाओं को सुरक्षित रखा
(3) इस क्षेत्र में उपजाऊ नदी घाटियाँ थीं और अरावली के ताम्र निक्षेपों से निकटता थी
(4) यहाँ वनों का अभाव था जिससे कृषि सरल हो गई
(5) अनुत्तरित प्रश्न

118. राजस्थान में प्रागैतिहासिक चित्रित शैल आश्रय मुख्य रूप से किस नदी घाटी में केंद्रित हैं?
(1) लूनी घाटी
(2) चंबल घाटी (कोटा, बूंदी)
(3) घग्गर घाटी
(4) कांतली घाटी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

119. पुरापाषाण से ताम्रपाषाण युग तक विकास का पथ सामान्यतः किसकी ओर गति दर्शाता है?
(1) अत्यधिक शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र
(2) उच्च ऊँचाई वाली हिमालय की तलहटी

(3) पृथक द्वीप समूह
(4) दक्षिण और पूर्व की उपजाऊ नदी घाटियाँ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

120. प्राचीन स्थल और उनके जिले का कौन सा युग्म गलत है?
(1) आहड़ - बीकानेर
(2) कालीबंगन - हनुमानगढ़
(3) बागोर - भीलवाड़ा
(4) गणेश्वर - नीम का थाना (सीकर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) वह युग जिसका पुनर्निर्माण लिखित अभिलेखों के अभाव में पुरातात्विक साक्ष्यों के माध्यम से किया गया है
राजस्थान के इतिहास में प्रागैतिहासिक काल उस युग को दर्शाता है जब मानव लेखन कला से पूर्णतः अनभिज्ञ था। इस काल की जानकारी मुख्य रूप से पाषाण उपकरणों, मृदभांडों और भौतिक अवशेषों के वैज्ञानिक विश्लेषण पर आधारित है। लिखित साक्ष्यों के अभाव में पुरातात्विक उत्खनन से प्राप्त वस्तुएँ ही तत्कालीन जीवन को समझने का एकमात्र साधन हैं। यह मानव विकास के प्रारंभिक चरणों का प्रतीक है।

2. (1) पाषाण उपकरण तकनीकों का विकास और धातुओं का आगमन
पुरातत्वविदों ने राजस्थान की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों को वर्गीकृत करने हेतु तकनीकी प्रगति को मुख्य आधार बनाया है। इसमें पाषाण उपकरणों के आकार, प्रकार और उनके निर्माण की विशिष्ट तकनीक में आए परिवर्तनों का सूक्ष्म अध्ययन किया जाता है। इसके अतिरिक्त तांबे और लोहे जैसी धातुओं के क्रमिक प्रयोग ने सांस्कृतिक चरणों के विभाजन में निर्णायक भूमिका निभाई है। यह वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकासक्रम को स्पष्ट करता है।

3. (3) वी.एन. मिश्र
वीरेंद्र नाथ मिश्र एक प्रतिष्ठित भारतीय पुरातत्वविद् थे जिन्होंने राजस्थान के प्रागैतिहासिक इतिहास को उजागर करने में महती भूमिका निभाई। उन्होंने भीलवाड़ा के बागोर और नागौर के डीडवाना जैसे स्थलों पर गहन शोध एवं उत्खनन किया। उनके कार्यों ने मध्यपाषाण और पुरापाषाण काल के मानव जीवन तथा प्रारंभिक पशुपालन के साक्ष्यों को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया। उनका योगदान पुरातात्विक कालक्रम हेतु अत्यंत मूल्यवान माना जाता है।

4. (3) केवल I और III
अरावली पर्वत श्रेणी ने प्रागैतिहासिक मानव को उपकरण निर्माण हेतु क्वार्टजाइट पत्थर प्रचुरता में उपलब्ध कराया। वहीं दक्षिण-पूर्वी राजस्थान की नदी घाटियों ने प्रारंभिक ताम्रपाषाणिक समुदायों की कृषि को पोषण प्रदान किया। यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि थार मरुस्थल में मानव अधिवास का अभाव था, क्योंकि लूनी नदी के तट पर पुरापाषाणिक बस्तियों के स्पष्ट साक्ष्य मिले हैं। अतः भौगोलिक विविधताओं ने संस्कृतियों के विकास में सहायक भूमिका निभाई।

5. (3) नागौर
डीडवाना राजस्थान के नागौर जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है। यह स्थल मुख्य रूप से अपने निम्न पुरापाषाणकालीन निक्षेपों और एश्यूलियन उपकरण परंपरा हेतु विख्यात है। यहाँ के उत्खनन से मानव सभ्यता के लाखों वर्ष पुराने क्रमिक विकास की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। भूगर्भीय दृष्टि से यह क्षेत्र प्राचीन लवणीय झीलों और बालू के टीलों के अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण है। यह थार मरुस्थल की प्रमुख पहचान है।

6. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान के प्रागैतिहासिक काल में उपकरणों का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया थी। निम्न पुरापाषाण काल में भारी हस्तकुठार और विदारक प्रमुख थे, जबकि मध्य पुरापाषाण काल में शल्कों से निर्मित खुरचनी और बेधक प्रचलित हुए। उच्च पुरापाषाण काल की पहचान परिष्कृत फलक और ब्यूरिन से होती है जो तकनीकी सुधार के परिचायक हैं। अंततः मध्यपाषाण काल में सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का व्यापक प्रयोग होने लगा जो मानवीय कौशल को दर्शाता है।

7. (4) कालीबंगन
सिंगी तालाब, अमरपुरा और 16R टीला राजस्थान में निम्न पुरापाषाणकालीन संस्कृति से संबंधित स्थल हैं जहाँ प्रारंभिक पाषाण उपकरण प्राप्त हुए हैं। इसके विपरीत, कालीबंगन एक प्रसिद्ध आद्य-ऐतिहासिक स्थल है जो सिंधु घाटी सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है। कालीबंगन में विकसित नगर नियोजन और कृषि के साक्ष्य मिलते हैं, जो पुरापाषाणकालीन शिकार-संग्रहण जीवन शैली से पूर्णतः भिन्न हैं। अतः कालीबंगन अन्य विकल्पों से भिन्न श्रेणी में आता है।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के प्रारंभिक पुरापाषाणकालीन मानवों ने अरावली की तलहटी और नदी घाटियों में निवास को प्राथमिकता दी। इसका मुख्य कारण इन क्षेत्रों में जल संसाधनों की निरंतर उपलब्धता थी। इसके अतिरिक्त अरावली श्रेणियों में कठोर क्वार्टजाइट पत्थर प्रचुर मात्रा में सुलभ थे, जो शिकार हेतु सुदृढ़ औजार बनाने के लिए सर्वोत्तम थे। अतः भौगोलिक और भूगर्भीय अनुकूलता ने ही इस क्षेत्र में प्रारंभिक मानव बस्तियों के घनत्व को निर्धारित किया।

9. (3) वी.एन. मिश्र
सिंगी तालाब नागौर के डीडवाना क्षेत्र में स्थित एक महत्वपूर्ण निम्न पुरापाषाणकालीन स्थल है। इस स्थल का विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन और उत्खनन प्रसिद्ध पुरातत्वविद् वी.एन. मिश्र द्वारा संपन्न किया गया था। उनके शोध ने यह सिद्ध किया कि एश्यूलियन संस्कृति के मानव यहाँ दीर्घकाल तक निवास करते थे। उनके स्तरशास्त्रीय अध्ययन ने राजस्थान में मानव सभ्यता के प्राचीनतम कालक्रम को निर्धारित करने में आधारभूत भूमिका निभाई। यह कार्य भारतीय प्रागितिहास में मील का पत्थर है।

10. (1) निम्न पुरापाषाण
डीडवाना क्षेत्र की भूगर्भीय संरचनाओं में अमरपुरा संरचना का विशेष महत्व है क्योंकि यह राजस्थान में निम्न पुरापाषाण काल के मानव अधिवास को दर्शाती है। इस संरचना के निक्षेपों से एश्यूलियन तकनीक के भारी पाषाण उपकरण जैसे हस्तकुठार और विदारक प्राप्त हुए हैं। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध करता है कि मध्य प्लीस्टोसीन काल के दौरान यहाँ अनुकूल जलवायु परिस्थितियाँ विद्यमान थीं। यह संरचना मरुस्थलीय क्षेत्र के प्राचीनतम इतिहास का आधार है।

11. (4) इसने निम्न पुरापाषाणकालीन आदिमानवों के लिए एक विशाल पाषाण खदान स्थल के रूप में कार्य किया
नागौर जिले में स्थित जायल बजरी कटक एक विशिष्ट पुरातात्विक स्थल है। यह स्थल निम्न पुरापाषाणकालीन आदिमानवों के लिए कच्चे माल के प्रमुख स्रोत के रूप में महत्वपूर्ण था। यहाँ से प्राप्त प्रचुर पाषाण खंडों और अपूर्ण औजारों से संकेत मिलता है कि यह एक विशाल खदान स्थल था। यहाँ आदिमानव क्वार्टजाइट पत्थरों से हस्तकुठार जैसे उपकरण निर्मित करते थे। यह स्थल तत्कालीन विनिर्माण गतिविधियों और संसाधन प्रबंधन के प्रारंभिक साक्ष्य प्रस्तुत करता है।

12. (2) केवल III
डीडवाना क्षेत्र राजस्थान के प्रागितिहास में अद्वितीय है क्योंकि यहाँ निम्न पुरापाषाण से मध्यपाषाण काल तक का निरंतर सांस्कृतिक अनुक्रम मिलता है। 16R टीले के उत्खनन से महत्वपूर्ण कालानुक्रमिक आँकड़े प्राप्त हुए हैं जो जलवायु परिवर्तन समझने में सहायक हैं। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यहाँ एश्यूलियन उपकरण अनुपस्थित थे, क्योंकि वे यहाँ प्रचुरता में मिले हैं। यहाँ के प्रारंभिक मानवों ने उपकरण निर्माण हेतु स्थानीय क्वार्टजाइट का कुशलतापूर्वक उपयोग किया था।

13. (3) ज्यामितीय सूक्ष्म पाषाण उपकरण
राजस्थान की निम्न पुरापाषाण संस्कृति मुख्य रूप से भारी पाषाण उपकरणों जैसे हस्तकुठार, विदारक और गंडासे द्वारा पहचानी जाती है। ये उपकरण शिकार करने हेतु पत्थरों को तोड़कर बनाए जाते थे। इसके विपरीत, ज्यामितीय सूक्ष्म पाषाण उपकरण आकार में अत्यंत लघु होते हैं और इनका संबंध मध्यपाषाण काल से है। निम्न पुरापाषाण काल की तकनीक में सूक्ष्मता का अभाव था और निर्माण प्रक्रिया सरल थी। अतः सूक्ष्म उपकरण इस प्रारंभिक चरण की विशेषता नहीं हैं।

14. (4) प्लीस्टोसीन युग के दौरान इस क्षेत्र में बारहमासी जल स्रोत और उच्च वर्षा होती थी
वर्तमान में शुष्क दिखने वाला डीडवाना क्षेत्र निम्न पुरापाषाण काल में पूर्णतः भिन्न था। प्लीस्टोसीन भूगर्भीय युग के दौरान यहाँ की जलवायु आर्द्र थी और बारहमासी नदियाँ प्रवाहित होती थीं। उच्च वर्षा और प्रचुर जल स्रोतों ने वनस्पति तथा वन्यजीवों के विकास में सहायता की, जिससे आदिमानव हेतु भोजन और जल सुलभ था। इसी पर्यावरणीय अनुकूलता के कारण यहाँ दीर्घकाल तक मानव बस्तियाँ विकसित रहीं। यह क्षेत्र प्राचीन पारिस्थितिकी तंत्र का उत्कृष्ट उदाहरण है।

15. (1) एश्यूलियन हस्तकुठार और गंडासे
सिंगी तालाब के प्रारंभिक पुरातात्विक निक्षेपों में सबसे महत्वपूर्ण खोज एश्यूलियन उपकरण परंपरा के औजार हैं। इनमें पाषाण से निर्मित परिष्कृत हस्तकुठार और गंडासे प्रमुखता से मिले हैं जो तत्कालीन तकनीकी कौशल को दर्शाते हैं। उस समय धातुओं का अस्तित्व नहीं था और अस्थि उपकरणों का प्रयोग बाद में प्रारंभ हुआ। ये पाषाण औजार आदिमानवों द्वारा शिकार और मांस काटने हेतु प्रयुक्त होते थे। यह स्थल एश्यूलियन संस्कृति के विस्तार को समझने में सहायक है।

16. (2) II, I, III
डीडवाना क्षेत्र में भूगर्भीय संरचनाओं का कालानुक्रमिक अध्ययन मानव विकास को समझने हेतु आवश्यक है। प्राचीनतम जायल संरचना है जो निम्न पुरापाषाण काल के प्रारंभिक चरणों से संबंधित है। इसके पश्चात अमरपुरा संरचना का स्थान है जिसमें एश्यूलियन उपकरण पाए गए हैं। सबसे नवीन डीडवाना संरचना है जिसमें मध्यपाषाण काल तक के अवशेष मिलते हैं। यह क्रम पत्थरों के जमाव के साथ-साथ जलवायु परिवर्तनों और मानवीय तकनीकी प्रगति का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है।

17. (2) वी.एन. मिश्र
राजस्थान में मध्य पुरापाषाणकालीन संस्कृति के अध्ययन में वी.एन. मिश्र का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने लूनी नदी बेसिन में प्राप्त विशिष्ट पाषाण उपकरणों के आधार पर 'लूनी उद्योग' की अवधारणा प्रस्तुत की। इस उद्योग की मुख्य विशेषता शल्कों से निर्मित लघु और तीक्ष्ण उपकरण जैसे खुरचनी एवं बेधक हैं। मिश्र के गहन अनुसंधान ने पश्चिमी राजस्थान में आदिमानव के तकनीकी संक्रमण और उनकी जीवन रक्षा रणनीतियों को वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। यह नामकरण पुरातात्विक साहित्य में आज भी सर्वमान्य है।

18. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान के विभिन्न प्रागैतिहासिक स्थल विशिष्ट नदी घाटियों में विकसित हुए जिन्होंने वहां के जनजीवन को आधार प्रदान किया। बागोर भीलवाड़ा में कोठारी नदी के तट पर स्थित प्रसिद्ध मध्यपाषाणकालीन स्थल है। गणेश्वर संस्कृति का विकास सीकर की कांतली नदी के तट पर हुआ जो ताम्र निष्कर्षण हेतु प्रसिद्ध थी। कालीबंगन प्राचीन सरस्वती नदी की घाटी में स्थित एक विकसित हड़प्पा केंद्र था। वहीं लूनी उद्योग के साक्ष्य पश्चिमी राजस्थान की लूनी नदी बेसिन में पाए जाते हैं।

19. (3) प्राथमिक उपकरण निर्माण तकनीक - लेवालोइस तकनीक
राजस्थान में मध्य पुरापाषाण काल की प्रमुख विशेषता लेवालोइस तकनीक का प्रयोग है। इस विधि में पाषाण के मुख्य पिंड को पूर्व-नियोजित रूप से तैयार कर उससे वांछित आकार के शल्क निकाले जाते थे। यह तकनीक अधिक परिष्कृत थी जो मानव के बौद्धिक विकास को दर्शाती है। इस काल में धातुओं का प्रयोग नहीं होता था और न ही कालीबंगन

जैसा नगरीय ढांचा विद्यमान था। यह काल मुख्यतः पाषाण की खुरचनी और बेधक जैसे औजारों के उत्पादन पर केंद्रित था।

20. (3) केवल I, II, III और V
मध्य पुरापाषाण काल की पहचान शल्क आधारित उपकरणों से होती है जहाँ पत्थरों की बाहरी परत निकालकर औजार बनाए जाते थे। लूनी बेसिन इस काल का मुख्य केंद्र था और यहाँ खुरचनी एवं बेधक प्रचुर संख्या में मिले हैं। इस युग में मानव ने मोटे क्वार्टजाइट के स्थान पर चर्ट और जैस्पर जैसे महीन पत्थरों का उपयोग प्रारंभ किया। यह काल मुख्य रूप से ऊपरी प्लीस्टोसीन जलवायु चरण से संबंधित माना जाता है। यह तकनीकी परिवर्तन शिकार की दक्षता बढ़ाने हेतु किया गया था।

21. (3) एक शल्क उपकरण जिसका किनारा लकड़ी या चर्म पर कार्य करने हेतु पुनः परिष्कृत किया गया था
मध्य पुरापाषाण काल की खुरचनी एक विशिष्ट पाषाण औजार है जिसे शल्क निकालकर बनाया जाता था। इसके किनारों को घिसकर इतना तीक्ष्ण बनाया जाता था कि उससे पशुओं की खाल स्वच्छ की जा सके या काष्ठ को छीला जा सके। यह आदिमानव की दैनिक आवश्यकताओं जैसे वस्त्र निर्माण या शिकार के प्रसंस्करण हेतु अनिवार्य था। यह उपकरण तत्कालीन मानव के सूक्ष्म हस्तकौशल और औजारों के विशिष्टीकरण की दिशा में बढ़ते कदमों का प्रतीक है।

22. (2) इसने एश्यूलियन और मध्य पुरापाषाणकालीन पुरावशेषों का एक समृद्ध अनुक्रम प्रदान किया है
वागन नदी घाटी राजस्थान के पुरातात्विक मानचित्र पर महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यहाँ के अनुसंधानों ने निम्न पुरापाषाणकालीन एश्यूलियन उपकरणों और उत्तरवर्ती मध्य पुरापाषाणकालीन औजारों का निरंतर एवं समृद्ध अनुक्रम उजागर किया है। यह घाटी प्राचीन मानव बस्तियों हेतु जल और कच्चे माल की सुलभ उपलब्धता सुनिश्चित करती थी। यहाँ से प्राप्त अवशेष मानव सभ्यता के क्रमिक विकास और तकनीकी परिवर्तनों को समझने में सहायता करते हैं। यह क्षेत्र अपनी भूगर्भीय निरंतरता के कारण शोध का केंद्र है।

23. (4) मोटे क्वार्टजाइट से चर्ट और जैस्पर जैसे महीन सिलिकामय पत्थरों की ओर संक्रमण
पश्चिमी राजस्थान में निम्न से मध्य पुरापाषाण काल की ओर कच्चे माल के चयन में स्पष्ट परिवर्तन देखा गया। जहाँ निम्न पुरापाषाण में भारी हस्तकुठार हेतु मोटे क्वार्टजाइट का उपयोग होता था, वहीं मध्य पुरापाषाण में चर्ट, जैस्पर और अगेट जैसे महीन कणों वाले पत्थरों को प्राथमिकता दी गई। ये सिलिकामय पत्थर अधिक तीक्ष्ण धार वाले और लघु औजार बनाने हेतु उपयुक्त थे। यह तकनीकी विकास मानव की सूक्ष्म औजार निर्माण क्षमता और बेहतर संसाधन पहचान को दर्शाता है।

24. (3) निम्न पुरापाषाण → मध्य पुरापाषाण → उच्च पुरापाषाण
राजस्थान में पुरापाषाण काल के दौरान औजारों के आकार में निरंतर कमी आई जो तकनीकी उन्नति का सूचक है। निम्न पुरापाषाण काल में पत्थर के भारी औजार जैसे हस्तकुठार प्रचलित थे। मध्य पुरापाषाण काल में शल्क आधारित अपेक्षाकृत लघु और पतले औजारों का निर्माण प्रारंभ हुआ। अंततः उच्च पुरापाषाण काल में अत्यंत महीन फलक और ब्यूरिन जैसे सूक्ष्म औजार बनाए जाने लगे। यह विकासक्रम शिकार की विधियों में सुधार और पत्थर तराशने की मानवीय निपुणता को प्रदर्शित करता है।

25. (3) पुष्कर बेसिन
राजस्थान में उच्च पुरापाषाणकालीन संस्कृति के प्रमाण मुख्य रूप से पुष्कर बेसिन और समीपवर्ती क्षेत्रों में पाए गए हैं। इस क्षेत्र में भूगर्भीय परिवर्तनों के मध्य मानव बस्तियों के साक्ष्य मिलते हैं जो परिष्कृत फलक तकनीक का प्रयोग करते थे। अजमेर के निकट स्थित यह बेसिन तत्कालीन मानव समूहों हेतु अनुकूल निवास स्थान था जहाँ जल और शिकार के अवसर उपलब्ध थे। यहाँ के निक्षेपों ने राजस्थान के प्रागैतिहासिक कालक्रम के इस अल्पज्ञात चरण को समझने में महत्वपूर्ण तथ्य प्रदान किए हैं।

26. (1) बी. ऑलचिन
बूढ़ा पुष्कर के निकट स्थित स्थलों पर महत्वपूर्ण पुरातात्विक अन्वेषण और उत्खनन ब्रिजेट ऑलचिन द्वारा संपन्न किया गया था। उनके कार्यों ने इस क्षेत्र में मध्य पुरापाषाण से उच्च पुरापाषाण काल की ओर हुए सांस्कृतिक संक्रमण को प्रकाश में लाया। ऑलचिन के शोध ने थार मरुस्थल के पूर्वी भाग पर प्राचीन मानवों की पर्यावरणीय अनुकूलता और तकनीकी प्रगति के साक्ष्य प्रस्तुत किए। उनके द्वारा संकलित आंकड़े राजस्थान के प्रागितिहास के वैज्ञानिक पुनर्निर्माण में आज भी अत्यंत विश्वसनीय माने जाते हैं।

27. (4) परिष्कृत ताम्र उपकरणों का व्यापक उपयोग
उच्च पुरापाषाण काल पूर्णतः एक पाषाण युग था जिसमें धातुओं का उपयोग अज्ञात था। इस चरण की मुख्य विशेषता फलक और ब्यूरिन जैसी परिष्कृत पाषाण तकनीक तथा शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलकों से मनके बनाना था। उस समय की जलवायु अत्यधिक शुष्क थी जिसके कारण मानव समूहों को कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। ताम्र उपकरणों का आगमन हजारों वर्षों पश्चात ताम्रपाषाण युग में हुआ था। अतः उच्च पुरापाषाण काल में धातु के औजारों की कल्पना करना ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है।

28. (2) केवल II और III
उच्च पुरापाषाण काल के दौरान राजस्थान में तकनीकी और कलात्मक विकास के नए आयाम देखे गए। इस युग के विशिष्ट उपकरणों में ब्यूरिन और लंबे फलक सम्मिलित थे जो अस्थियों और काष्ठ पर नक्काशी हेतु उपयोगी थे। कई स्थलों से शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलके प्राप्त हुए हैं जो तत्कालीन शुष्क जलवायु का संकेत देते हैं। यह धारणा गलत है कि इस समय जलवायु आर्द्र थी; वास्तव में यह अंतिम हिमयुग के कारण तीव्र शुष्कता का काल था जिसने मानव अधिवास को प्रभावित किया।

29. (3) गिलुंड
बूढ़ा पुष्कर, होकरा और जायल थार क्षेत्र के ऐसे स्थल हैं जहाँ पुरापाषाण और मध्यपाषाण काल के अवशेष प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत, गिलुंड राजसमंद जिले में स्थित एक महत्वपूर्ण ताम्रपाषाणकालीन स्थल है जो बनास संस्कृति का केंद्र रहा है। गिलुंड में विकसित कृषि, मृदभांड और तांबे के उपयोग के साक्ष्य मिलते हैं जो पुरापाषाणकालीन शिकार-संग्रहण संस्कृति से हजारों वर्ष बाद के हैं। अतः अपनी कालानुक्रमिक स्थिति और सांस्कृतिक विशेषताओं के कारण गिलुंड इस समूह में पूर्णतः भिन्न स्थल है।

30. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के प्रागैतिहासिक चरणों की पहचान उनके विशिष्ट पुरावशेषों से होती है। शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलकों से निर्मित मनके उच्च पुरापाषाण काल की कलात्मकता को दर्शाते हैं। भारी हस्तकुठार निम्न पुरापाषाण काल की प्राथमिक विशेषता हैं। लेवालोइस तकनीक से बने शल्क मध्य पुरापाषाण काल की तकनीकी उन्नति के प्रतीक हैं। अंततः ज्यामितीय सूक्ष्म पाषाण उपकरण मध्यपाषाण काल में प्रचलित हुए जो लघु और अत्यंत तीक्ष्ण थे। यह वर्गीकरण मानव सभ्यता के क्रमिक विकास की कहानी स्पष्ट करता है।

31. (1) वे विशेष रूप से नवपाषाणकालीन परिष्कृत पाषाण संदर्भों में पाए जाते हैं
राजस्थान में शुतुरमुर्ग के अंडों के छिलकों की खोज महत्वपूर्ण है, किंतु इनका संबंध नवपाषाण काल से नहीं अपितु उच्च पुरापाषाण काल से है। ये अवशेष उस समय की अत्यधिक शुष्क जलवायु की पुष्टि करते हैं जब थार मरुस्थल का विस्तार अधिक था। चंद्रावती और अन्य स्थलों से प्राप्त इन छिलकों पर कलात्मक नक्काशी और मनके बनाने के प्रमाण मिलते हैं जो प्रारंभिक मानव की रचनात्मकता दर्शाते हैं। अतः इन्हें नवपाषाण काल से जोड़ना वैज्ञानिक और कालानुक्रमिक दृष्टि से पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है।

32. (1) A and R both correct and R explains A.
पश्चिमी राजस्थान में उच्च पुरापाषाणकालीन स्थलों की संख्या मध्य पुरापाषाणकालीन स्थलों की तुलना में अत्यंत न्यून पाई गई है। इसका मुख्य कारण अंतिम हिमयुग के दौरान होने वाला तीव्र जलवायु परिवर्तन था, जिससे संपूर्ण क्षेत्र शुष्क और जल रहित हो गया था। इस भीषण शुष्कता ने भोजन और जल के स्रोतों को समाप्त कर दिया, जिससे मानव समूहों हेतु यहाँ रहना अत्यंत दुष्कर हो गया। इसी कारण इस काल की बस्तियाँ केवल कुछ सीमित और अनुकूल स्थानों तक ही सिमट गई थीं।

33. (2) कोठारी
भीलवाड़ा जिले में स्थित प्रसिद्ध मध्यपाषाणकालीन स्थल बागोर कोठारी नदी के बाएं तट पर स्थित है। यह नदी बनास तंत्र का भाग है और प्राचीन काल में इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। नदी के समीप होने के कारण यहाँ के निवासियों को जल, मत्स्य और शिकार हेतु वन्य जीव सुलभ थे। इसी अनुकूल परिवेश के कारण बागोर में मानव बस्तियाँ हजारों वर्षों तक निरंतर विकसित होती रहीं। यह स्थल राजस्थान के प्रागैतिहासिक भूगोल का उत्कृष्ट उदाहरण है।

34. (1) वी.एन. मिश्र
बागोर में वर्ष 1967 से 1970 के मध्य हुए महत्वपूर्ण पुरातात्विक उत्खनन का नेतृत्व प्रोफेसर वी.एन. मिश्र ने किया था। उनके मार्गदर्शन में हुए इस कार्य ने बागोर को भारतीय उपमहाद्वीप के विशालतम और महत्वपूर्ण मध्यपाषाणकालीन स्थल के रूप में प्रतिष्ठित किया। मिश्र ने यहाँ से प्राप्त सूक्ष्म पाषाण उपकरणों और पशु अवशेषों का गहन वैज्ञानिक विश्लेषण किया जिससे प्राचीन अर्थव्यवस्था के रहस्यों का उद्घाटन हुआ। उनके प्रयासों ने राजस्थान के प्रागितिहास को वैश्विक स्तर पर अकादमिक मान्यता प्रदान की।

35. (3) पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्यों के साथ शिकार और संग्रहण
बागोर के प्रथम चरण की प्रमुख विशेषता शिकार और संग्रहण के साथ पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिलना है। यहाँ के निवासी जंगली जानवरों का शिकार करने के साथ भेड़, बकरी और गौ-वंश जैसे पशुओं को पालने लगे थे। यह संक्रमण काल शिकार पर निर्भर समाज से उत्पादक समाज की ओर बढ़ते कदम को दर्शाता है। इस प्रारंभिक चरण में स्थायी कृषि और धातुकर्म का अभाव था तथा सूक्ष्म पाषाण उपकरण ही दैनिक कार्यों के मुख्य साधन थे। यह सभ्यता के विकास का महत्वपूर्ण मोड़ था।

36. (3) केवल I, II और III
बागोर का सांस्कृतिक इतिहास तीन चरणों में विभाजित है जो मानवीय विकास के विभिन्न स्तरों को दर्शाते हैं। प्रथम चरण में मृदभांड रहित सूक्ष्म पाषाण उद्योग और पशुपालन के साक्ष्य मिलते हैं। द्वितीय चरण में ताम्र उपकरणों और हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तनों का प्रवेश होता है। तृतीय चरण में लौह उपकरणों और चाक-निर्मित मृदभांडों के साथ बस्तियाँ अधिक विकसित हुईं। यह कहना गलत है कि यहाँ पशुपालन का अभाव था, क्योंकि बागोर पशुपालन के प्राचीनतम केंद्रों में से एक है।

37. (3) घोड़ा
बागोर के प्रारंभिक मध्यपाषाणकालीन अवशेषों में भेड़, बकरी, सूअर और गौ-वंश जैसे विभिन्न पालतू तथा जंगली पशुओं की अस्थियाँ प्रचुर मात्रा में मिली हैं। ये साक्ष्य तत्कालीन पशुपालन आधारित अर्थव्यवस्था की पुष्टि करते हैं। किंतु इस प्रारंभिक काल में घोड़े के कोई विश्वसनीय साक्ष्य प्राप्त नहीं हुए हैं। भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में घोड़े का व्यापक प्रवेश बहुत बाद के चरणों में देखा जाता है। अतः बागोर के मध्यपाषाणकालीन समाज में घोड़े की उपस्थिति का कोई पुरातात्विक आधार नहीं है।

38. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
बागोर भारतीय उपमहाद्वीप में पशुपालन के सर्वाधिक प्राचीन और प्रामाणिक साक्ष्य प्रदान करने वाला अद्वितीय पुरातात्विक स्थल है। यहाँ से प्राप्त पशु अवशेष यह सिद्ध करते हैं कि निवासी शिकार के साथ घरेलू पशुओं पर भी निर्भर थे। किंतु यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि उन्होंने शिकार पूर्णतः त्याग दिया था या वे विशुद्ध रूप से कृषि आधारित समाज बन गए थे। वास्तव

में उनकी अर्थव्यवस्था शिकार, संग्रहण और पशुपालन का एक मिश्रित स्वरूप थी। शिकार उनके जीवन का अभिन्न अंग बना रहा।

39. (4) बागोर
बागोर के पुरातात्विक स्थल को स्थानीय स्तर पर 'महासतियों का टीला' के नाम से जाना जाता है। यह विशाल टीला कोठारी नदी के तट पर स्थित है और इसमें मानव सभ्यता के पांच हजार वर्षों का इतिहास सुरक्षित है। इस टीले के उत्खनन से ही मध्यपाषाण काल से ऐतिहासिक काल तक के महत्वपूर्ण अवशेष प्राप्त हुए हैं। यह नाम इस स्थान के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को रेखांकित करता है। वर्तमान में यह स्थल शोधकर्ताओं हेतु ज्ञान का एक समृद्ध स्रोत बना हुआ है।

40. (1) वे त्रिकोण और ट्रेपेज़ जैसे ज्यामितीय आकारों की विशेषता रखते हैं।
बागोर से प्राप्त सूक्ष्म पाषाण उपकरण अपनी सूक्ष्मता और विशिष्ट ज्यामितीय आकृतियों हेतु प्रसिद्ध हैं। इनमें त्रिकोण, अर्धचंद्राकार और ट्रेपेज़ जैसे आकार प्रमुख हैं जिन्हें कुशलता से चर्ट और क्वार्टज जैसे पत्थरों से निर्मित किया गया था। ये लघु औजार काष्ठ या अस्थि के हत्थों में फंसाकर बाणाग्र या भाले के रूप में प्रयुक्त होते थे। इनका आकार प्रायः 1 से 5 सेंटीमीटर के मध्य होता था। यह तकनीकी दक्षता मध्यपाषाणकालीन मानव के उन्नत उपकरण निर्माण कौशल को प्रदर्शित करती है।

41. (3) त्रिकोण, अर्धचंद्राकार और ट्रेपेज़ जैसे ज्यामितीय रूपों में निर्मित लघु पाषाण उपकरण
ज्यामितीय सूक्ष्म पाषाण उपकरण मध्यपाषाण काल की सर्वाधिक महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धि हैं। ये पत्थर के अत्यंत लघु और तीक्ष्ण खंड होते हैं जिन्हें निश्चित ज्यामितीय आकारों में ढालकर बनाया जाता था। इन्हें अस्थि या लकड़ी के दंडों में प्राकृतिक गोंद की सहायता से जोड़कर जटिल उपकरण तैयार किए जाते थे। इनका उपयोग मुख्य रूप से शिकार में सटीकता लाने और कंद-मूल काटने हेतु किया जाता था। यह नवाचार प्राचीन मानव की बढ़ती बौद्धिक और तकनीकी क्षमता का प्रमाण है।

42. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
बागोर का स्तरविन्यास मानवीय सभ्यता के क्रमिक विकास का व्यवस्थित दस्तावेज़ प्रस्तुत करता है। चरण I में केवल सूक्ष्म पाषाण उपकरण और पशु अस्थियाँ मिलती हैं जहाँ मृदभांडों का अभाव था। चरण II में ताम्र औजारों और हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तनों का आगमन हुआ जो धातु युग के प्रभाव को दर्शाता है। चरण III लौह उपकरणों और चाक-निर्मित मृदभांडों की उन्नत अवस्था को प्रदर्शित करता है। अंतिम चरण उत्तर ऐतिहासिक काल के कांच के मनकों और आधुनिक पुरावशेषों से संबंधित है।

43. (4) कोठारी नदी के निकट अनुकूल पारिस्थितिकी जो जल और शिकार सुलभ कराती थी
बागोर में हजारों वर्षों तक निरंतर मानव अधिवास का मुख्य कारण इसकी अनुकूल भौगोलिक स्थिति थी। कोठारी नदी के समीप होने के कारण यहाँ जल की निरंतर आपूर्ति और मत्स्य भंडार सुलभ था। नदी के आसपास के मैदानों और वनों में शिकार हेतु पर्याप्त वन्य जीव और कंद-मूल उपलब्ध थे। इस समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र ने आदिमानव को एक सुरक्षित और स्थिर जीवन जीने हेतु आवश्यक संसाधन प्रदान किए, जिससे यह स्थल प्रागितिहास का एक प्रमुख केंद्र बन गया।

44. (1) केवल I, II, III और IV
बागोर में शवाधान की परंपरा विशिष्ट थी जहाँ बस्तियों के भीतर घरों के फर्श के नीचे शवों को दफनाने के साक्ष्य मिले हैं। प्रथम चरण में शवों को पूर्व-पश्चिम दिशा में सीधा लिटाया जाता था, जबकि द्वितीय चरण में उन्हें मोड़कर रखने की प्रथा थी। मृतकों के साथ भविष्य की आवश्यकताओं हेतु भोजन और आभूषण रखने की परंपरा भी प्रचलित थी। किंतु यहाँ आवास के बाहर किसी पृथक कब्रिस्तान के प्रमाण नहीं मिले हैं, जो इसे अन्य स्थलों से अद्वितीय बनाता है।

45. (3) वास्तुकला - पकी ईंटों के बहुमंजिला घर
बागोर एक प्रागैतिहासिक ग्रामीण और पशुपालक बस्ती थी जहाँ की वास्तुकला अत्यंत सरल एवं प्राकृतिक थी। यहाँ के निवासी पाषाण के फर्श, मिट्टी की दीवारों और घास-फूस की छतों वाले घरों में निवास करते थे। हड़प्पा जैसी विकसित नगरीय सभ्यता के विपरीत यहाँ पकी ईंटों के बहुमंजिला घरों का पूर्णतः अभाव था। यहाँ की संरचनाएँ मुख्य रूप से स्थानीय पत्थरों और कंकड़ों से निर्मित थीं। अतः पकी ईंटों के शहरी निर्माण की कल्पना बागोर के संदर्भ में ऐतिहासिक रूप से निराधार है।

46. (4) शिस्ट स्लैब और कंकड़ से बने पत्थर के पक्के फर्श
बागोर के निवासियों ने अपने आवासों को नमी से सुरक्षित रखने और सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु फर्श निर्माण की अनूठी तकनीक विकसित की थी। वे स्थानीय रूप से उपलब्ध शिस्ट पत्थर के स्लैब और नदी के गोल कंकड़ों को बिछाकर फर्श को पक्का करते थे। यह वास्तुकला दर्शाती है कि मध्यपाषाण काल के दौरान भी मानव ने स्थायी निवास की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति कर ली थी। ये पत्थर के फर्श आज भी उत्खनन में अच्छी स्थिति में पाए गए हैं जो तत्कालीन कौशल की पुष्टि करते हैं।

47. (1) यह प्रारंभ से ही केवल एक कृषि प्रधान समुदाय था, जो शिकार से पृथक था
बागोर के विषय में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि यह प्रारंभ से केवल कृषि प्रधान समाज था। वास्तव में बागोर की पहचान एक शिकार-संग्रहणकर्ता समाज के रूप में हुई जिसने क्रमिक रूप से पशुपालन को अपनाया। यहाँ के निवासी शिकार पर अपनी निर्भरता बनाए रखते हुए पशुओं को पालने लगे थे जो मिश्रित अर्थव्यवस्था का सूचक है। कृषि के साक्ष्य यहाँ बहुत बाद में और सीमित रूप में मिले हैं। यह स्थल मुख्यतः मध्यपाषाणकालीन जीवन शैली और पशुपालन के विकास का केंद्र है।

48. (2) II, III, I
बागोर का कालानुक्रमिक विकास तकनीकी प्रगति के क्रम को स्पष्ट करता है। प्राचीनतम अवस्था चरण II (पुरातात्विक संदर्भ में प्रथम) है जहाँ केवल सूक्ष्म पाषाण उपकरणों का प्रयोग होता था। इसके पश्चात के चरण III में पाषाण औजारों के साथ ताम्र उपकरणों का प्रवेश हुआ जो ताम्रपाषाणिक प्रभाव को प्रदर्शित करता है। अंत में चरण I (नवीनतम) आता है जहाँ पत्थर और तांबे के स्थान पर लौह उपकरणों का वर्चस्व स्थापित हुआ। यह क्रम राजस्थान में धातु युग के क्रमिक उदय का प्रामाणिक साक्ष्य है।

49. (2) क्योंकि धातु के शीघ्र प्रयोग के कारण यहाँ मध्यपाषाण से सीधे ताम्रपाषाण काल में संक्रमण हुआ
राजस्थान में दक्षिण भारत की भाँति एक पृथक नवपाषाण चरण नहीं देखा जाता है। इसका मुख्य कारण अरावली श्रेणियों में तांबे के प्रचुर निक्षेपों की उपलब्धता थी। यहाँ के मध्यपाषाणकालीन समुदायों ने पाषाण औजारों के साथ तांबे का उपयोग शीघ्र ही प्रारंभ कर दिया था, जिससे वे सीधे ताम्रपाषाण युग में प्रविष्ट हो गए। इस त्वरित तकनीकी विकास ने एक स्वतंत्र नवपाषाण काल की आवश्यकता को समाप्त कर दिया। इसी कारण राजस्थान की प्रागैतिहासिक संस्कृतियों में धातु और पत्थर का सह-अस्तित्व प्रमुख है।

50. (1) वन सफाई के लिए उपयोग किए गए घिसे हुए और परिष्कृत पाषाण कुल्हाड़े
राजस्थान में खाद्य उत्पादन और प्रारंभिक कृषि की ओर बढ़ते चरणों के प्रमाण घिसे हुए एवं पॉलिश किए गए पत्थर के कुल्हाड़ों से मिलते हैं। इन परिष्कृत औजारों का उपयोग कृषि हेतु भूमि तैयार करने के लिए वनों की कटाई और सफाई में किया जाता था। यद्यपि राजस्थान में यह चरण संक्षिप्त रहा है, किंतु ये पाषाण औजार मानव के शिकारी से उत्पादक बनने के महत्वपूर्ण संक्रमण को दर्शाते हैं। ये खोजें सिद्ध करती हैं कि प्राचीन समुदायों ने पर्यावरण को अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप ढालना प्रारंभ कर दिया था।

51. (3) चिकनी सतह और तीक्ष्ण धार हेतु पॉलिश करना और घिसना
नवपाषाण काल के दौरान पाषाण औजार निर्माण की तकनीक में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। अब औजारों को केवल तोड़कर नहीं बनाया जाता था, अपितु उन्हें पत्थरों पर घिसकर अत्यधिक चिकना और तीक्ष्ण बनाया जाने लगा था। इस तकनीक से निर्मित औजार अधिक टिकाऊ और प्रभावी होते थे, जिनका उपयोग काष्ठ कर्तन और कृषि कार्यों में कुशलता से किया जा सकता था। यह तकनीकी सुधार मानव के श्रम कौशल और औजारों के प्रति उनकी बढ़ती वैज्ञानिक समझ का परिचायक है।

52. (2) केवल II और III
राजस्थान में खाद्य उत्पादन की शुरुआत क्षेत्रीय विविधताओं के साथ हुई। दक्षिण-पूर्वी राजस्थान की समृद्ध नदी घाटियों ने अपने अनुकूल परिवेश के कारण स्थायी कृषि की ओर संक्रमण को सुगम बनाया। इसके विपरीत, पश्चिमी राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में कठिन जलवायु परिस्थितियों के कारण पशुपालन एक प्रमुख आर्थिक रणनीति बनी रही। यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि पूरे राजस्थान में यह परिवर्तन एक साथ हुआ, क्योंकि भौगोलिक विषमता ने संस्कृतियों के विकास की गति और स्वरूप को भिन्न रूप से प्रभावित किया।

53. (4) उपरोक्त सभी
राजस्थान के पुरातात्विक मानचित्र पर आहड़, बागोर और डीडवाना जैसे स्थल पृथक सांस्कृतिक चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आहड़ एक ताम्रपाषाणिक संस्कृति है जहाँ तांबे का प्रयोग प्रधान था। बागोर का प्रथम चरण मध्यपाषाण काल से संबंधित है जो पशुपालन और सूक्ष्म उपकरणों पर केंद्रित है। डीडवाना पुरापाषाण काल का केंद्र है। इनमें से कोई भी स्थल विशुद्ध रूप से 'नवपाषाण' श्रेणी में नहीं आता जैसा कि दक्षिण भारत में देखा जाता है। अतः ये सभी स्थल अपनी अलग पहचान रखते हैं।

54. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान के विभिन्न स्थल मानव सभ्यता के पृथक आर्थिक और तकनीकी मील के पत्थरों को दर्शाते हैं। डीडवाना निम्न पुरापाषाणकालीन खाद्य संग्रहण की अवस्था का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ आदिमानव प्रकृति पर निर्भर थे। बागोर का प्रथम चरण मध्यपाषाणकालीन शिकार-संग्रहण जीवन शैली को उजागर करता है। बागोर के द्वितीय चरण में धातु के प्रयोग और व्यवस्थित पशुपालन की शुरुआत देखी जा सकती है। अंततः आहड़ एक परिपक्व ताम्रपाषाणिक कृषि संस्कृति के रूप में उभरा जहाँ स्थायी ग्रामीण जीवन पूर्ण विकसित था।

55. (4) व्यापक लौह प्रगलन
नवपाषाण क्रांति को मानवीय इतिहास में कृषि के प्रारंभ, पशुओं के घरेलूकरण तथा स्थायी ग्रामीण जीवन की स्थापना हेतु जाना जाता है। इस दौरान पॉलिश किए गए पाषाण औजारों का उपयोग बढ़ा और मानव आत्मनिर्भर बनने लगा। किंतु व्यापक लौह प्रगलन इस युग की विशेषता नहीं है, क्योंकि लोहे का उपयोग इसके हजारों वर्षों पश्चात लौह युग में प्रारंभ हुआ था। नवपाषाण काल मुख्य रूप से पत्थर और मिट्टी के बर्तनों के विकास तक ही सीमित था जहाँ धातुओं का ज्ञान प्रारंभिक अवस्था में था।

56. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान में दक्षिण भारत की तुलना में विस्तृत नवपाषाण चरण का अभाव मिलता है, जिसका मुख्य कारण भौगोलिक परिस्थितियाँ थीं। अरावली पर्वतमाला में तांबे के विशाल भंडार विद्यमान थे जिसने यहाँ के निवासियों को पत्थर से सीधे धातु प्रयोग की ओर आकर्षित किया। जैसे ही मध्यपाषाणकालीन समुदायों ने तांबे का उपयोग सीखा, वे बिना किसी लंबे नवपाषाण संक्रमण के सीधे ताम्रपाषाण संस्कृति का भाग बन गए। इस तकनीकी छलांग ने राजस्थान की पुरातात्विक पहचान को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया है।

57. (3) पाषाण और तांबा
ताम्रपाषाणिक काल मानव सभ्यता के उस महत्वपूर्ण संक्रमण कालीन युग को कहा जाता है जिसमें पत्थर के साथ तांबे के उपकरणों का संयुक्त रूप से प्रयोग किया जाता था। यह काल पाषाण युग के अंत और धातु युग की वास्तविक शुरुआत के मध्य की कड़ी है। इस समय तांबा दुर्लभ और मूल्यवान था, इसलिए भारी कार्यों हेतु पाषाण औजारों का उपयोग जारी रहा। राजस्थान में आहड़ और गणेश्वर जैसी संस्कृतियाँ इस युग के उत्कृष्ट उदाहरण हैं जहाँ ताम्र उत्पादन और पाषाण उपकरणों का संतुलन देखा जाता है।

58. (1) बनास नदी तंत्र
दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में ताम्रपाषाण संस्कृतियों के विकास का मुख्य आधार बनास नदी और उसकी सहायक नदियों का तंत्र था। इस उपजाऊ मैदान के कारण ही यहाँ आहड़, गिलुंड और बालाथल जैसी महत्वपूर्ण बस्तियाँ विकसित हुईं। इसी कारण इस संपूर्ण सांस्कृतिक क्षेत्र को पुरातात्विक शब्दावली में 'बनास संस्कृति' के नाम से जाना जाता है। नदियों ने न केवल कृषि हेतु जल उपलब्ध कराया, अपितु परिवहन और व्यापार के मार्ग के रूप में भी कार्य किया जिससे एक समृद्ध ग्रामीण सभ्यता का उदय संभव हो सका।

59. (4) उनकी विशेषता सूक्ष्म पाषाण और ताम्र उपकरणों का सह-अस्तित्व है।
राजस्थान की ताम्रपाषाण संस्कृतियों की विशिष्ट पहचान पाषाण के सूक्ष्म उपकरणों और तांबे के औजारों का संयुक्त उपयोग है। यद्यपि तांबे का ज्ञान प्राप्त हो चुका था, किंतु यह पूर्णतः पत्थर का स्थान नहीं ले पाया था। ये समुदाय स्थायी बस्तियों में निवास करते थे और कृषि तथा पशुपालन पर निर्भर थे। वे यायावर नहीं थे और न ही उन्होंने विशाल मंदिरों का निर्माण किया था। उनका जीवन मुख्य रूप से मिट्टी के घरों और प्रगत धातुकर्म कौशल के चारों ओर केंद्रित था।

60. (2) केवल III
राजस्थान की ताम्रपाषाण संस्कृतियों में मृदभांडों की विविधता देखी जाती है जहाँ आहड़ के लाल और काले मृदभांड तथा गणेश्वर के गैरिक मृदभांड अपनी अलग पहचान रखते हैं। प्रारंभिक चरणों में मिट्टी के बर्तन हस्तनिर्मित थे, जो बाद में चाक के प्रयोग से अधिक परिष्कृत हो गए। चित्रित धूसर मृदभांड इस युग की विशेषता नहीं है क्योंकि इसका संबंध उत्तरवर्ती लौह युग से माना जाता है। ताम्रपाषाणिक काल मुख्य रूप से रंगीन लेप और उन पर सफेद या काले चित्रों वाले बर्तनों हेतु विख्यात है।

61. (3) आहड़ संस्कृति - मेवाड़ क्षेत्र
राजस्थान में ताम्रपाषाण संस्कृतियों का क्षेत्रीय वितरण अत्यंत स्पष्ट है। आहड़ संस्कृति का मुख्य केंद्र मेवाड़ क्षेत्र रहा है जहाँ उदयपुर और चित्तौड़गढ़ के निकट कई महत्वपूर्ण स्थल मिले हैं। गणेश्वर संस्कृति मारवाड़ में नहीं अपितु शेखावाटी क्षेत्र में कांतली नदी के निकट विकसित हुई थी। सोथी संस्कृति बीकानेर क्षेत्र से संबंधित है। कुराड़ा नागौर में स्थित है जो अपने ताम्र भंडारों हेतु प्रसिद्ध है। अतः आहड़ और मेवाड़ का युग्म ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से पूर्णतः सत्य और सटीक है।

62. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
राजस्थान की ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों ने एक सुदृढ़ कृषि-पशुपालक अर्थव्यवस्था का आधार निर्मित किया था। बालाथल जैसे महत्वपूर्ण स्थलों के उत्खनन से गेहूं, जौ और विभिन्न दालों की खेती के स्पष्ट साक्ष्य मिले हैं जो उनकी उन्नत कृषि तकनीकों को प्रमाणित करते हैं। इसके साथ ही वे गौ-वंश, भैंस और भेड़-बकरी जैसे पशुओं का पालन दुग्ध और मांस हेतु करते थे। यह आत्मनिर्भर आर्थिक ढांचा नदियों के किनारे उपजाऊ भूमि की उपलब्धता के कारण संभव हो पाया जिसने इन प्राचीन बस्तियों को स्थिरता प्रदान की।

63. (1) बनासियन संस्कृति ने पत्थर और मिट्टी के ग्रामीण वास्तुकला का उपयोग किया, जहाँ नगर नियोजन का अभाव था।
बनासियन या आहड़ संस्कृति सिंधु घाटी सभ्यता की तुलना में एक ग्रामीण और कृषक सभ्यता थी। जहाँ हड़प्पा के नगरों में ग्रिड पैटर्न आधारित सड़कें और व्यवस्थित जल निकासी थी, वहीं बनासियन बस्तियाँ अनियोजित थीं और यहाँ घर स्थानीय पत्थरों एवं मिट्टी से बनाए जाते थे। यहाँ मोहनजोदड़ो जैसी पकी ईंटों की विशाल संरचनाओं का अभाव था। बनासियन लोगों का मुख्य ध्यान ताम्र प्रगलन और कृषि पर था जबकि हड़प्पा सभ्यता नगरीय विशेषताओं से युक्त थी। यह दोनों के मध्य एक मौलिक अंतर है।

64. (2) तांबा
राजस्थान में गैरिक मृदभांड परंपरा का घनिष्ठ संबंध तांबे के निष्कर्षण और उसके व्यापार से रहा है। गणेश्वर जैसी संस्कृतियों में पाए जाने वाले ये मृदभांड उन क्षेत्रों में केंद्रित हैं जहाँ तांबे के प्राकृतिक भंडार प्रचुरता में उपलब्ध थे। यहाँ के निवासी तांबा गलाने और उससे विभिन्न प्रकार के उपकरण एवं आभूषण बनाने में निपुण थे। यह मृदभांड शैली ताम्रपाषाण युग के उन समुदायों की पहचान है जिन्होंने प्राचीन भारत में धातु विज्ञान की नींव रखी और अन्य विकसित सभ्यताओं को तांबे की आपूर्ति सुनिश्चित की।

65. (2) अक्षय कीर्ति व्यास
आहड़ में बनास संस्कृति के पुरातात्विक महत्व को सर्वप्रथम पहचानने और वर्ष 1953 में इसका प्रारंभिक उत्खनन करने का श्रेय अक्षय कीर्ति व्यास को जाता है। उनके इस महत्वपूर्ण कार्य ने ही मेवाड़ क्षेत्र की इस प्राचीन ताम्रपाषाणिक सभ्यता को ऐतिहासिक पहचान दिलाई। व्यास के अन्वेषणों के पश्चात ही रतन चंद्र अग्रवाल और हसमुख धीरजलाल सांकलिया जैसे विद्वानों ने यहाँ व्यापक शोध किया। अक्षय कीर्ति व्यास का योगदान राजस्थान के आद्य-इतिहास के व्यवस्थित अध्ययन की शुरुआत हेतु सदैव स्मरणीय रहेगा।

66. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
आहड़ संस्कृति के विभिन्न स्थल आधुनिक राजस्थान के कई जिलों में विस्तृत हैं जो इसकी व्यापकता को दर्शाते हैं। मुख्य स्थल आहड़ उदयपुर में स्थित है, जबकि गिलुंड राजसमंद जिले

में एक महत्वपूर्ण क्षेत्रीय केंद्र के रूप में पहचाना जाता है। बालाथल उदयपुर जिले की वल्लभनगर तहसील में स्थित है जहाँ से किलेबंदी के साक्ष्य मिले हैं। ओझियाना भीलवाड़ा जिले में स्थित एक अन्य ताम्रपाषाणिक स्थल है जो इस संस्कृति के उत्तरी विस्तार को प्रदर्शित करता है। यह भौगोलिक वितरण बनास बेसिन के महत्व को पुष्ट करता है।

67. (4) 2 और 3 दोनों
आहड़ का प्राचीन स्थल अपने समृद्ध इतिहास के कारण विभिन्न नामों से जाना जाता रहा है। तांबे के प्रचुर उत्पादन और प्रगलन केंद्रों की उपस्थिति के कारण इसे प्राचीन काल में 'ताम्बवती' नगरी कहा जाता था। 10वीं और 11वीं शताब्दी के शिलालेखों में इसे 'आघाटपुर' के नाम से संबोधित किया गया है जो इसकी व्यापारिक और राजनीतिक महत्ता को दर्शाता है। स्थानीय लोग इसे 'धूलकोट' भी कहते हैं जिसका अर्थ मिट्टी का टीला है। अतः ताम्बवती और आघाटपुर दोनों ही इसके ऐतिहासिक नाम माने जाते हैं।

68. (2) केवल I, II, IV और V
आहड़ की वास्तुकला स्थानीय संसाधनों के कुशल उपयोग का उदाहरण है। यहाँ के आवास शिस्ट पत्थर के चबूतरे पर बनाए जाते थे ताकि वर्षा जल से सुरक्षा मिल सके और ऊपरी दीवारों हेतु कच्ची ईंटों का प्रयोग होता था। उत्खनन में कई कक्षों वाले घर मिले हैं जिनमें अनेक चूल्हे संयुक्त परिवार प्रणाली की ओर संकेत करते हैं। यहाँ सामान्य घरों के निर्माण में पकी ईंटों का व्यापक उपयोग नहीं देखा गया है। यह ग्रामीण जीवन शैली की सादगी और व्यावहारिकता को प्रदर्शित करता है।

69. (3) पकी हुई ईंटें
आहड़ के आवासीय ढांचों का निर्माण मुख्य रूप से स्थानीय सामग्रियों से किया गया था। यहाँ की दीवारों में मिट्टी और पत्थर की नींव का प्रयोग सामान्य था, जबकि छतों को बांस और घास-फूस से आच्छादित किया जाता था। सिंधु घाटी सभ्यता के विपरीत आहड़ में पकी हुई ईंटों का उपयोग भवनों के निर्माण में नगण्य था। यहाँ के लोग धूप में सुखाई गई ईंटों को प्राथमिकता देते थे। यह नगरीकरण के स्थान पर एक सुदृढ़ ग्रामीण और तकनीकी रूप से सक्षम कृषक समाज की पहचान को उजागर करता है।

70. (2) वे ताम्र प्रगलन से अनजान थे और उपकरणों का आयात करते थे।
आहड़ संस्कृति के विषय में यह कहना ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है कि वे ताम्र प्रगलन से अनभिज्ञ थे। वास्तव में आहड़ प्राचीन भारत में तांबा गलाने का एक प्रमुख केंद्र था। उत्खनन में तांबा गलाने वाली भट्टियाँ, ताम्र भस्म और सांचे प्राप्त हुए हैं जो उनकी आत्मनिर्भरता सिद्ध करते हैं। उन्होंने स्वयं के परिष्कृत ताम्र औजार निर्मित किए और अन्य क्षेत्रों को आपूर्ति की। इसके अतिरिक्त वे उन्नत मृदभांड कला और चावल की खेती में भी निपुण थे। अतः तांबे के आयात का तर्क निराधार है।

71. (4) सफेद
आहड़ संस्कृति के मृदभांडों की सबसे आकर्षक विशेषता उनका रंग और चित्रकारी है। यहाँ के 'लाल और काले मृदभांडों' पर मुख्य रूप से सफेद रंग के सुंदर ज्यामितीय और रैखिक डिजाइन बनाए गए हैं। इन चित्रों में लहरदार रेखाएँ, बिंदु और फूल-पत्तियों जैसे स्वरूप मिलते हैं जो तत्कालीन कारीगरों की कलात्मक रुचि दर्शाते हैं। सफेद रंग का प्रयोग काले और लाल आधार पर अत्यंत स्पष्ट उभरकर आता था। यह विशिष्ट शैली आहड़ संस्कृति की एक प्रमुख पुरातात्विक पहचान बन गई है।

72. (1) आहड़ → गिलुंड → बालाथल
मेवाड़ के ताम्रपाषाणकालीन स्थलों के उत्खनन का क्रम राजस्थान के पुरातात्विक इतिहास के विभिन्न चरणों को उजागर करता है। सर्वप्रथम 1953 में आहड़ का अन्वेषण किया गया जिसने बनास संस्कृति की नींव रखी। इसके पश्चात 1959-60 में बी.बी. लाल के नेतृत्व में गिलुंड का उत्खनन हुआ जो सांस्कृतिक विस्तार समझने हेतु महत्वपूर्ण था। अंततः 1990 के दशक में वी.एन. मिश्र द्वारा बालाथल का उत्खनन किया गया जिसने किलेबंदी और कृषि संबंधी नए आयामों को प्रस्तुत किया।

73. (3) बी.बी. लाल
राजसमंद जिले में स्थित गिलुंड का प्रथम व्यवस्थित पुरातात्विक उत्खनन वर्ष 1959-60 में बी.बी. लाल द्वारा किया गया था। उनके इस कार्य ने सिद्ध किया कि गिलुंड बनास संस्कृति का एक अत्यंत विस्तृत केंद्र था। उन्होंने यहाँ से प्राप्त मृदभांडों और संरचनाओं का विश्लेषण कर आहड़ संस्कृति के साथ इसके संबंधों को स्पष्ट किया। लाल के प्रयासों ने राजस्थान के ताम्रपाषाण युग के कालक्रम और सांस्कृतिक विस्तार को समझने हेतु एक सुदृढ़ वैज्ञानिक आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

74. (1) बनास
गिलुंड ताम्रपाषाणकालीन सभ्यता का प्रमुख केंद्र है जो राजसमंद जिले में बनास नदी के तट पर स्थित है। इस नदी ने इस प्राचीन बस्ती को जीवनदायी जल और उपजाऊ मिट्टी उपलब्ध कराई, जिसने यहाँ कृषि के विकास को सुगम बनाया। बनास नदी के कारण ही इस संपूर्ण क्षेत्र की संस्कृति को 'बनास संस्कृति' कहा जाता है। नदी की निकटता ने तत्कालीन व्यापार और संचार में भी सहायक की भूमिका निभाई। यह स्थल आज भी बनास घाटी की प्राचीन सभ्यता का जीवंत प्रमाण है।

75. (4) गिलुंड, आहड़ के विपरीत, कुछ विशाल संरचनाओं में पकी ईंटों का उपयोग दर्शाता है।
आहड़ और गिलुंड एक ही संस्कृति का भाग होने के बावजूद वास्तुकला में महत्वपूर्ण अंतर रखते हैं। आहड़ में जहाँ पकी ईंटों का उपयोग नगण्य था, वहीं गिलुंड में कुछ विशिष्ट और विशाल संरचनाओं के निर्माण में पकी हुई ईंटों के प्रमाण मिले हैं। यह गिलुंड की अपेक्षाकृत अधिक विकसित संरचनात्मक क्षमता या किसी विशेष सामुदायिक भवन की उपस्थिति का संकेत देता है। यद्यपि सामान्य घर अभी भी कच्ची मिट्टी और

पत्थर से ही निर्मित होते थे। यह अंतर क्षेत्रीय विविधताओं को उजागर करता है।

76. (1) केवल I और II
गिलुंड के उत्खनन में रोचक संरचनात्मक अवशेष प्राप्त हुए हैं जिनमें समानांतर कच्ची ईंटों की दीवारों वाला एक विशाल परिसर सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त भूमि में खोदे गए बड़े गोलाकार गर्त मिले हैं जिनका उपयोग अनाज के दीर्घकालिक भंडारण हेतु किया जाता था। यह एक संगठित समाज और संसाधन प्रबंधन की उनकी क्षमता को दर्शाता है। यहाँ सरकंडे और मिट्टी के लेप से निर्मित दीवारों के साक्ष्य भी प्रचुर मात्रा में पाए गए हैं जो तत्कालीन ग्रामीण निर्माण शैली की प्रमुख विशेषता थी।

77. (3) लौह तलवारें
आहड़-गिलुंड संस्कृति एक ताम्रपाषाणिक काल की सभ्यता है जहाँ तांबे का प्रयोग चरमोत्कर्ष पर था। यहाँ से तांबे की कुल्हाड़ियाँ, सेलखड़ी के मनके और मृण्मय वृषभ मूर्तियाँ प्रचुर मात्रा में मिली हैं जो उनकी धार्मिक और आर्थिक गतिविधियों का भाग थीं। किंतु लौह तलवारें इस संस्कृति के पुरावशेषों में सम्मिलित नहीं हैं क्योंकि लोहे का ज्ञान इस सभ्यता के पतन के हजारों वर्षों पश्चात प्रारंभ हुआ था। उस समय तांबा ही एकमात्र प्रमुख धातु थी जिसका उपयोग औजार निर्माण में होता था।

78. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के विभिन्न ताम्रपाषाणकालीन स्थलों की अद्वितीय विशेषताएँ हैं। गिलुंड अपनी विशिष्ट पकी ईंटों की संरचनाओं हेतु जाना जाता है जो अन्य समकालीन स्थलों पर दुर्लभ हैं। आहड़ में बहु-मुखी चूल्हे मिले हैं जो संयुक्त परिवार प्रणाली का संकेत देते हैं। बालाथल एक असाधारण स्थल है जहाँ से कुष्ठ रोग का भारत में प्राचीनतम प्रमाण मिला है और यहाँ एक विशाल किलेबंदी वाला ढांचा भी प्राप्त हुआ है। यह विविधता बनास संस्कृति के सामाजिक और तकनीकी विकास के स्तरों को प्रमाणित करती है।

79. (1) उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड
गिलुंड से प्राप्त मृदभांडों में लाल और काले मृदभांड, सादे लाल मृदभांड और चित्रित धूसर मृदभांड सम्मिलित हैं जो ताम्रपाषाणिक और प्रारंभिक ऐतिहासिक संक्रमण को दर्शाते हैं। किंतु 'उत्तरी काली पॉलिश वाले मृदभांड' गिलुंड की मूल संस्कृति का भाग नहीं हैं। इस शैली का विकास मौर्य काल के दौरान गंगा घाटी में हुआ था और यह नगरीकरण के द्वितीय चरण का प्रतीक है। गिलुंड मुख्य रूप से अपनी ताम्रपाषाणिक मृदभांड परंपरा हेतु प्रसिद्ध है जो स्थानीय मिट्टी और रंगों के उपयोग पर आधारित थी।

80. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गिलुंड को निर्विवाद रूप से आहड़ संस्कृति का एक प्रमुख क्षेत्रीय और प्रशासनिक केंद्र माना जाता है। यहाँ से प्राप्त विशाल संरचनात्मक परिसर और अनाज भंडारण हेतु बड़े गर्त इसकी जटिल सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था को प्रमाणित करते हैं। ऐसी सुविधाएँ केवल एक सुव्यवस्थित क्षेत्रीय केंद्र में ही संभव थीं जहाँ संसाधनों का एकत्रीकरण और वितरण नियंत्रित होता था। ये पुरातात्विक साक्ष्य गिलुंड को बनास नदी घाटी की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में स्थापित करते हैं।

81. (2) कांतली
गणेश्वर सभ्यता राजस्थान के सीकर जिले (वर्तमान नीम का थाना) में कांतली नदी के उद्गम के समीप स्थित है। यह एक मौसमी नदी है जो शेखावाटी क्षेत्र की जीवनरेखा मानी जाती थी। प्राचीन काल में यह घाटी तांबे के प्राकृतिक भंडारों से संपन्न थी जिसने गणेश्वर में एक विशाल ताम्र उद्योग के उदय को संभव बनाया। नदी के तट पर होने के कारण यहाँ के निवासियों को जल और व्यापारिक मार्ग सुलभ थे। इसी भौगोलिक अनुकूलता ने गणेश्वर को भारत की प्राचीनतम ताम्रपाषाणिक संस्कृतियों में से एक बना दिया।

82. (1) कपि-वर्णी मृदभांड (गैरिक मृदभांड)
गणेश्वर-जोधपुरा सांस्कृतिक परिसर की प्रमुख पुरातात्विक पहचान 'कपि-वर्णी' या गैरिक मृदभांड शैली है। इन पात्रों का रंग गेरुआ या हल्का लाल होता था। ये मृदभांड ताम्रपाषाण काल के उन समुदायों द्वारा निर्मित किए जाते थे जो तांबा खनन और धातुकर्म में निपुण थे। सिंधु घाटी सभ्यता के पूर्वगामी के रूप में ये मृदभांड राजस्थान के उत्तरी भाग और गंगा-यमुना दोआब के मध्य के सांस्कृतिक संबंधों और तकनीकी आदान-प्रदान को समझने में अत्यंत सहायक सिद्ध हुए हैं।

83. (3) यह प्राचीन भारत में लौह प्रगलन का प्राथमिक केंद्र था।
गणेश्वर सभ्यता को 'ताम्रयुगीन सभ्याताओं की जननी' कहा जाता है क्योंकि यह तांबे के उत्पादन और उपयोग का प्राचीनतम केंद्र था। यह खेतड़ी ताम्र बेल्ट के निकट स्थित था और यहाँ से प्राप्त तांबे के औजारों में शुद्धता का स्तर 99% तक पाया गया है। यह कहना पूर्णतः असत्य है कि यह लौह प्रगलन का केंद्र था। गणेश्वर एक विशुद्ध ताम्रपाषाणिक स्थल है जहाँ लोहे का कोई उपयोग नहीं होता था। लोहे का आविष्कार इस सभ्यता के सदियों बाद हुआ था।

84. (3) केवल IV
गणेश्वर से प्राप्त कलाकृतियों में तांबे के बाणाग्र, छैनी, कंगन और मछली पकड़ने के कांटे प्रचुर मात्रा में मिले हैं जो उनके धातुकर्म कौशल को दर्शाते हैं। यहाँ के तांबे में शुद्धता का स्तर आश्चर्यजनक रूप से उच्च है जो उन्नत प्रगलन तकनीकों का प्रमाण है। यह कहना सर्वथा असत्य है कि यहाँ से लौह कृषि उपकरण प्राप्त हुए थे क्योंकि यह सभ्यता लौह युग के आगमन से बहुत पहले ही विकसित हो चुकी थी। गणेश्वर के निवासी केवल तांबे और पाषाण उपकरणों पर ही निर्भर थे।

85. (3) कांतली नदी में उस समय पर्याप्त जल था जो जलीय जीवन का पोषण करता था
गणेश्वर सभ्यता से प्राप्त तांबे के मछली पकड़ने के कांटे तत्कालीन पर्यावरणीय परिस्थितियों पर प्रकाश डालते हैं। ये स्पष्ट करते हैं कि वर्तमान में मौसमी रहने वाली कांतली नदी उस समय एक बारहमासी जल स्रोत थी जिसमें प्रचुर मछलियाँ उपलब्ध थीं। निवासियों की अर्थव्यवस्था में मत्स्य

पालन और शिकार का महत्वपूर्ण स्थान था। यह साक्ष्य प्राचीन पारिस्थितिकी और मानवीय अनुकूलन को प्रमाणित करता है। यह उस युग की आर्द्र जलवायु का सूचक है।

86. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
गणेश्वर का भौगोलिक स्थान खेतड़ी की तांबे की खानों के अत्यंत निकट था जिसने इसे प्राचीन भारत का एक प्रमुख धातुकर्म केंद्र बना दिया। पुरातात्विक साक्ष्य संकेत देते हैं कि गणेश्वर के लोगों ने न केवल स्थानीय आवश्यकताओं को पूर्ण किया अपितु हड़प्पा और मोहनजोदड़ो जैसे विकसित सिंधु नगरों को भी कच्चे तांबे की आपूर्ति की। इस अंतर-क्षेत्रीय व्यापार ने गणेश्वर की अर्थव्यवस्था को समृद्ध किया। यह गणेश्वर और सिंधु सभ्यता के मध्य गहरे आर्थिक संबंधों को पुष्ट करता है।

87. (4) यह पूर्व-हड़प्पा और प्रारंभिक हड़प्पा चरणों के समकालीन थी
कालानुक्रमिक दृष्टि से गणेश्वर सभ्यता सिंधु घाटी सभ्यता के विकसित चरण से भी प्राचीन मानी जाती है। रेडियोकार्बन तिथियाँ इसे पूर्व-हड़प्पा और प्रारंभिक हड़प्पा काल के समकालीन स्थापित करती हैं। जब हड़प्पा के नगर अपनी प्रारंभिक अवस्था में थे, तब गणेश्वर में ताम्र प्रगलन तकनीक पूर्ण विकसित हो चुकी थी। इसी कारण इसे हड़प्पा सभ्यता को धातु आपूर्ति करने वाला प्रमुख आधार माना जाता है। यह राजस्थान की ऐसी सभ्यता थी जिसने प्राचीन नगरीकरण को तकनीकी शक्ति प्रदान की।

88. (1) आर.सी. अग्रवाल
गणेश्वर की विशाल पुरातात्विक क्षमता और इसके ऐतिहासिक महत्व को विश्व के सम्मुख लाने का श्रेय पुरातत्वविद् रतन चंद्र अग्रवाल को जाता है। 1970 के दशक में उनके नेतृत्व में हुए उत्खनन ने इस स्थल से ताम्र औजारों का विशाल भंडार उजागर किया। उन्होंने ही गणेश्वर को 'ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी' के रूप में परिभाषित किया और इसके सिंधु घाटी सभ्यता के साथ व्यापारिक संबंधों की स्थापना की। अग्रवाल के शोध ने राजस्थान के आद्य-इतिहास के अध्ययन में क्रांतिकारी बदलाव लाया।

89. (3) काली चूड़ियाँ
'कालीबंगन' शब्द का उद्भव 'काली' और 'बंगन' (चूड़ियाँ) से हुआ है जिसका शाब्दिक अर्थ 'काली चूड़ियाँ' है। यह नाम इस स्थल के उत्खनन के दौरान टीलों की सतह पर प्रचुर मात्रा में मिलीं पकी हुई मिट्टी और पाषाण की काली चूड़ियों के कारण पड़ा। यह स्थल हनुमानगढ़ जिले में घग्गर नदी के तट पर स्थित है। यह नाम न केवल इस स्थान की पहचान है अपितु तत्कालीन समाज में प्रचलित आभूषण निर्माण कला और सौंदर्य बोध का भी एक प्रतीकात्मक सूचक है।

90. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
कालीबंगन के पूर्व-हड़प्पा मृदभांडों का वर्गीकरण उनकी बनावट और सजावट के आधार पर किया गया है। फैब्रिक A नाजुक और लाल-सफेद चित्रों वाले बर्तनों को दर्शाता है। फैब्रिक B का निचला भाग खुरदरा और मोटा होता था जो उनकी मजबूती बढ़ाता था। फैब्रिक C में लाल लेप पर काले चित्रों वाली सुंदर नक्काशी मिलती है। फैब्रिक D सुदृढ़ लाल मृदभांडों का प्रतिनिधित्व करता है जिनके आंतरिक भाग पर गहरी नक्काशी थी। यह तकनीकी विविधता कुम्हारों की उच्च श्रेणी की निपुणता को प्रदर्शित करती है।

91. (4) यह विश्व में कृषि के लिए जुते हुए खेत का प्राचीनतम पुरातात्विक प्रमाण है
कालीबंगन के पूर्व-हड़प्पा स्तर से प्राप्त जुता हुआ खेत मानवीय इतिहास की अत्यंत महत्वपूर्ण खोज है। यह विश्व के किसी भी पुरातात्विक स्थल से प्राप्त कृषि कार्य हेतु खेत जोतने का प्राचीनतम प्रमाण माना जाता है। इस खेत में हल की लकीरें एक-दूसरे को समकोण पर काटती मिली हैं जो मिश्रित खेती की उन्नत तकनीक का संकेत देती हैं। यह खोज सिद्ध करती है कि सिंधु सभ्यता के पूर्वज कृषि विज्ञान और भूमि प्रबंधन के क्षेत्र में अत्यंत दक्ष और आधुनिक थे।

92. (1) केवल I, III, IV और V
कालीबंगन का पूर्व-हड़प्पा चरण कई अनूठी विशेषताओं से युक्त था। संपूर्ण बस्ती को सुरक्षा हेतु कच्ची ईंटों की दीवारों से घेरा गया था जो प्रारंभिक किलेबंदी का प्रमाण है। यहाँ जुते हुए खेत के साक्ष्य मिश्रित कृषि पद्धति को दर्शाते हैं। मृदभांडों की शैली बाद के हड़प्पा काल से सर्वथा विशिष्ट थी। पुरातात्विक साक्ष्य यह भी बताते हैं कि इस बस्ती का अंत एक विनाशकारी भूकंप से हुआ था। इस चरण में आवास निर्माण हेतु मुख्य रूप से कच्ची ईंटों का प्रयोग किया गया था।

93. (3) एकश्रृंगी मृग के चित्रों वाली परिपक्व हड़प्पा मुहरें
कालीबंगन के पूर्व-हड़प्पा काल में ताम्र कुल्हाड़ियाँ, सेलखड़ी के सूक्ष्म मनके और पाषाण चक्की-मूसल जैसे उपकरण प्रचुरता में मिले हैं जो स्थिर ग्रामीण जीवन की पुष्टि करते हैं। किंतु एकश्रृंगी मृग के चित्रों वाली विशिष्ट मुहरें इस चरण में अनुपस्थित हैं क्योंकि वे परिपक्व हड़प्पा काल की नगरीय पहचान हैं। पूर्व-हड़प्पा चरण मुख्य रूप से क्षेत्रीय विकास और प्रारंभिक कृषि पर केंद्रित था जहाँ अभी मुहरों जैसी जटिल प्रशासनिक व्यवस्था का उदय नहीं हुआ था।

94. (4) भूकंप
कालीबंगन की खुदाई में प्राप्त पुरातात्विक साक्ष्य प्राचीन भारत में एक शक्तिशाली भूकंप की घटना को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित करते हैं। पूर्व-हड़प्पा बस्ती के स्तरों में दीवारों में आई गहरी दरारें और संरचनाओं का गिरना विवर्तनिक हलचल की ओर संकेत करते हैं। यह विश्व के पुरातात्विक इतिहास में भूकंप द्वारा हुई तबाही का प्राचीनतम ज्ञात प्रमाण है। इस आपदा के कारण ही प्रारंभिक बस्ती का परित्याग करना पड़ा जिसके पश्चात वहाँ परिपक्व हड़प्पा काल की नियोजित बस्ती बसाई गई।

95. (1) चावल और गन्ना
कालीबंगन के जुते हुए खेत में हल की लकीरों का जो प्रारूप मिला है, वह एक साथ दो फसलें उगाने की तकनीक दर्शाता है। इसमें गेहूं और चने जैसी फसलों को एक साथ बोने के स्पष्ट

संकेत मिलते हैं जो शुष्क खेती के अनुकूल हैं। सरसों और तिल भी इस कृषि व्यवस्था का भाग रहे हैं। किंतु चावल और गन्ना जैसी अत्यधिक जल की आवश्यकता वाली फसलों के उगाने का कोई ठोस साक्ष्य यहाँ प्राप्त नहीं हुआ है। यह उनकी बुद्धिमत्तापूर्ण कृषि रणनीति का परिचायक है।

96. (2) II, III, I
कालीबंगन का पुरातात्विक कालक्रम मानवीय प्रगति और प्राकृतिक चुनौतियों के मध्य संघर्ष को दर्शाता है। सर्वप्रथम यहाँ पूर्व-हड़प्पा संस्कृति विकसित हुई जिसने कृषि की नींव रखी। इसके पश्चात भीषण भूकंप के कारण बस्तियों को भारी क्षति हुई और मानव अधिवास कुछ समय हेतु अवरुद्ध हो गया। अंततः उसी स्थान पर सिंधु सभ्यता के परिपक्व हड़प्पा चरण का उदय हुआ जिसने एक व्यवस्थित नगरीय ढांचे को जन्म दिया। यह स्तरविन्यास राजस्थान के आद्य-इतिहास के क्रमिक विकास को समझने का विश्वसनीय माध्यम है।

97. (2) ग्रिड पैटर्न जिसमें सड़कें उत्तर-दक्षिण और पूर्व-पश्चिम में संरेखित हैं
कालीबंगन में परिपक्व हड़प्पा चरण का नगर नियोजन इसकी विशालतम विशेषता है। संपूर्ण नगर एक पूर्व-निर्धारित योजना के अनुसार ग्रिड पैटर्न पर बसाया गया था। मुख्य सड़कें एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं और उत्तर-दक्षिण तथा पूर्व-पश्चिम दिशाओं में संरेखित थीं ताकि वायु से नगर की प्राकृतिक स्वच्छता होती रहे। यह व्यवस्थित रूपरेखा दर्शाती है कि यहाँ के निवासी ज्यामिति और नागरिक प्रबंधन के सिद्धांतों से पूर्णतः परिचित थे। यह उच्च स्तरीय शहरी सभ्यता का प्रमाण है।

98. (1) ईंटों के चबूतरे पर बनी अग्नि वेदिकाएं
कालीबंगन में प्राप्त अग्नि वेदिकाएं इसे अन्य हड़प्पा स्थलों से पृथक एक विशिष्ट धार्मिक पहचान प्रदान करती हैं। यहाँ के दक्षिण भाग में ऊंचे चबूतरे पर सात आयताकार अग्नि कुंड एक पंक्ति में स्थित मिले हैं जिनमें भस्म और अस्थि अवशेष पाए गए हैं। यह सामूहिक अनुष्ठानों या बलि प्रथा के अस्तित्व की ओर संकेत करते हैं। ऐसी वेदिकाएं घरों के भीतर भी प्राप्त हुई हैं जो दर्शाती हैं कि अग्नि की पूजा उनके आध्यात्मिक जीवन का अनिवार्य भाग थी।

99. (3) घरों का प्रवेश मुख्य सड़कों की ओर से होता था
कालीबंगन की आवासीय वास्तुकला अत्यंत वैज्ञानिक थी। यहाँ के घर धूप में सुखाई गई मिट्टी की ईंटों से निर्मित थे और प्रत्येक घर में एक केंद्रीय आँगन होता था जो प्रकाश और वायु हेतु अनिवार्य था। नगरीय स्वच्छता और निजता बनाए रखने हेतु घरों के प्रवेश द्वार मुख्य सड़कों की ओर न होकर पीछे की गलियों की ओर खुलते थे। यह नियोजन की ऐसी कला थी जो आधुनिक शहरी विकास में भी महत्वपूर्ण मानी जाती है। मुख्य सड़कें केवल सुचारू आवागमन हेतु सुरक्षित थीं।

100. (2) केवल II और III
कालीबंगन की जल निकासी व्यवस्था मोहनजोदड़ो जैसी पकी ईंटों की नालियों वाली नहीं थी। यहाँ के लोगों ने उपलब्ध संसाधनों से वैकल्पिक समाधान खोजे थे। घरों के अपशिष्ट जल निकास हेतु सड़क के किनारे मिट्टी के बड़े पात्र या सोखते गड्ढे भूमि में गाड़े जाते थे। कुछ स्थानों पर काष्ठ के मोटे लट्ठों को खोखला कर नालियों के रूप में उपयोग करने का अनूठा साक्ष्य मिला है। यद्यपि पकी ईंटों की ढकी नालियों का अभाव था, किंतु यह उनकी व्यावहारिक अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है।

101. (3) बेलनाकार मुहर - मेसोपोटामिया के साथ व्यापारिक संपर्क
कालीबंगन से प्राप्त एक बेलनाकार मुहर पुरातात्विक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस प्रकार की मुहरें मेसोपोटामिया (आधुनिक इराक) में प्रचलित थीं। इसकी उपस्थिति पुष्ट करती है कि कालीबंगन के व्यापारी खाड़ी देशों के साथ सक्रिय व्यापारिक संबंध रखते थे। यह अंतरराष्ट्रीय विनिमय का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इसके विपरीत यहाँ नर्तकी की मूर्ति जैसे अवशेष नहीं मिले हैं जो मुख्य रूप से सिंधु घाटी के अन्य बड़े नगरों की पहचान रहे हैं। यह स्थल व्यापारिक संपर्क का प्रतीक है।

102. (1) A-i, B-ii, C-iv, D-i
घग्गर-हकरा क्षेत्र के विभिन्न हड़प्पा स्थलों की अपनी विशिष्ट पहचान है। कालीबंगन अग्नि वेदिकाओं और प्राचीनतम जुते हुए खेत के साक्ष्यों हेतु सुविख्यात है। बरोर एक ऐसा स्थल है जहाँ पकी ईंटों का प्रचुर उपयोग भवन निर्माण में देखा गया है। बिंजौर एक औद्योगिक केंद्र के रूप में उभरा है जहाँ ताम्र निष्कर्षण और निर्माण गतिविधियों के प्रमाण मिले हैं। करणपुरा से आसीन देवता वाली एक महत्वपूर्ण मुहर प्राप्त हुई है जो उनके धार्मिक विश्वासों को दर्शाती है।

103. (4) मेसोपोटामिया
कालीबंगन में एक विशिष्ट बेलनाकार मुहर की खोज ने प्राचीन विश्व के व्यापारिक मानचित्र पर राजस्थान की स्थिति स्पष्ट कर दी है। बेलनाकार मुहरें मेसोपोटामिया सभ्यता की अनिवार्य विशेषता थीं और कालीबंगन में इनका मिलना सिद्ध करता है कि यहाँ के व्यापारियों का सुमेरियन सभ्यता के साथ घनिष्ठ संपर्क था। वस्तुओं के साथ विचारों और प्रतीकों का भी आदान-प्रदान होता था। यह खोज कालीबंगन को एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक केंद्र के रूप में स्थापित करती है जहाँ सुदूर संस्कृतियों का संगम होता था।

104. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
कालीबंगन की जल निकासी व्यवस्था को मोहनजोदड़ो की तुलना में कम परिष्कृत माना जाता है क्योंकि यहाँ पकी हुई ईंटों से बनी ढकी हुई सार्वजनिक नालियों का अभाव था। इसके स्थान पर यहाँ के निवासियों ने अपशिष्ट जल प्रबंधन हेतु सोखने वाले गर्तों और काष्ठ के खोखले लट्ठों जैसी स्थानीय तकनीकों का सहारा लिया। यद्यपि यह व्यवस्था प्रभावी थी, किंतु इसमें वह इंजीनियरिंग सूक्ष्मता नहीं थी जो अन्य प्रमुख शहरी केंद्रों में मिलती है। यह अंतर स्थानीय निर्माण सामग्री के कारण था।

105. (3) टिन
कांस्य युग मानवीय इतिहास का वह चरण है जब तांबे में टिन को मिलाकर एक नई सुदृढ़ धातु 'कांसा' बनाई जाने लगी थी। टिन मिलाने से तांबे की कठोरता और स्थायित्व बढ़ जाता था, जिससे अधिक प्रभावी औजार और हथियार निर्मित करना संभव

हुआ। कालीबंगन जैसी सभ्यताओं में कांसे का प्रयोग तकनीकी उन्नति का प्रतीक था। टिन एक दुर्लभ धातु थी जिसे लंबी दूरी के व्यापार से मंगाया जाता था। तांबे और टिन के इस सटीक मिश्रण ने ही प्राचीन नगरीय सभ्यताओं के निर्माण में आधारभूत भूमिका निभाई।

106. (1) आयताकार गड्ढों में विस्तारित शवाधान
कालीबंगन के कब्रिस्तान में खोजी गई प्रमुख शवाधान पद्धति आयताकार गड्ढों में शवों को सीधा लिटाकर दफनाने की थी। इसमें मृतक का सिर उत्तर की ओर और पैर दक्षिण की ओर रखे जाते थे, जिसे 'विस्तारित शवाधान' कहते हैं। गड्ढे में शव के साथ मिट्टी के बर्तन और कभी-कभी आभूषण भी रखे जाते थे जो उनकी धार्मिक मान्यताओं का भाग थे। यह पद्धति हड़प्पा सभ्यता की सामान्य परंपराओं के अनुरूप है और उस समय के समाज के मृत्यु संबंधी संस्कारों को प्रदर्शित करती है।

107. (4) कपाल भेदन (खोपड़ी में शल्य क्रिया द्वारा छेद)
कालीबंगन में उत्खनन के दौरान एक बालक की खोपड़ी प्राप्त हुई है जिसमें छह छेद पाए गए हैं। पुरातात्विक विश्लेषण के अनुसार यह कपाल भेदन या हाइड्रोसेफली जैसी व्याधि के उपचार हेतु की गई प्रारंभिक शल्य क्रिया का उदाहरण है। यह साक्ष्य दर्शाता है कि हड़प्पा सभ्यता के लोग चिकित्सा विज्ञान और मस्तिष्क की जटिलताओं के उपचार से परिचित थे। यह प्राचीन भारत में शल्य चिकित्सा के विकास की दिशा में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और दुर्लभ पुरातात्विक प्रमाण माना जाता है।

108. (2) केवल I, II और III
कालीबंगन में शवाधान की विविध प्रथाएं प्रचलित थीं जो समाज की सांस्कृतिक जटिलता दर्शाती हैं। यहाँ आयताकार गड्ढों में सीधे शव दफनाने के साथ गोलाकार गड्ढों में कलशों को दफनाने के भी साक्ष्य मिले हैं। कुछ आयताकार गड्ढों में मानव अवशेष नहीं मिले हैं जो संभवतः किसी प्रतीकात्मक शवाधान का संकेत देते हैं। किंतु कालीबंगन की कब्रों में स्वर्ण आभूषणों का कोई विशाल भंडार नहीं मिला है; वहाँ मुख्य रूप से मृदभांड ही पाए गए हैं। यह सादगी उनके सामाजिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करती है।

109. (3) दखमा (शव को खुला छोड़ना)
कालीबंगन में शवाधान हेतु मुख्य रूप से तीन विधियाँ देखी गई हैं: आयताकार गड्ढों में पूर्ण शवाधान, गोलाकार गड्ढों में कलश शवाधान और बिना कंकाल के केवल सामग्री वाले प्रतीकात्मक शवाधान। यहाँ 'दखमा' जैसी कोई प्रथा नहीं देखी गई जिसमें शव को वन्य जीवों हेतु खुला छोड़ दिया जाता है। यह अंतिम संस्कार की एक भिन्न परंपरा है जो पारसी धर्म से संबंधित है और हड़प्पा सभ्यता की मान्यताओं से पृथक है। कालीबंगन के लोग अपने मृतकों का सम्मानजनक तरीके से भूमि विसर्जन करते थे।

110. (4) परलोक में विश्वास जहाँ इन वस्तुओं का उपयोग होगा
कालीबंगन की कब्रों में मृतकों के समीप रखे गए मिट्टी के बर्तन तत्कालीन समाज की आध्यात्मिक मान्यताओं को उजागर करते हैं। यह प्रथा स्पष्ट रूप से 'परलोक' या मृत्यु के पश्चात के जीवन में उनके अटूट विश्वास को दर्शाती है। उनका मानना था कि मृतक को अगली दुनिया की यात्रा हेतु भोजन, जल और दैनिक उपयोग के पात्रों की आवश्यकता होगी। यह धार्मिक विचार न केवल हड़प्पा सभ्यता अपितु विश्व की कई अन्य प्राचीन संस्कृतियों में भी समान रूप से व्याप्त था।

111. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
कालीबंगन में बिना कंकाल के केवल कलशों और बर्तनों वाले शवाधान उन व्यक्तियों हेतु प्रतीकात्मक रूप से किए जाते थे जिनकी मृत्यु कहीं दूर हुई हो। यह समाज की संवेदनशीलता को दर्शाता है। किंतु यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि सभी कब्रों में बर्तनों की संख्या समान थी। उत्खनन से स्पष्ट है कि कब्र में रखी गई सामग्रियों की संख्या मृतक की सामाजिक स्थिति या परिवार की सामर्थ्य के अनुसार भिन्न होती थी। यह समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता का एक मूक प्रमाण है।

112. (2) व्यक्तिगत साज-सज्जा हेतु परावर्तक सतह बनाने का धातुकर्म कौशल
कालीबंगन की कब्रों से प्राप्त ताम्र दर्पण उस समय के लोगों के उच्च स्तरीय सौंदर्य बोध और तकनीकी निपुणता का प्रमाण हैं। तांबे की सतह को इतना रगड़कर चमकाया जाता था कि वह एक स्पष्ट प्रतिबिंब दिखा सके। यह दर्शाता है कि हड़प्पावासी व्यक्तिगत साज-सज्जा के प्रति अत्यंत सचेत थे। इसके निर्माण में प्रयुक्त धातुकर्म कौशल सिद्ध करता है कि वे धातुओं के भौतिक गुणों को भली-भांति समझते थे। ये दर्पण केवल आभूषण नहीं अपितु उनके परिष्कृत जीवन स्तर का हिस्सा थे।

113. (2) लूनी
पश्चिमी राजस्थान में पुरापाषाण और मध्यपाषाणकालीन स्थलों का सर्वाधिक घनत्व लूनी नदी बेसिन में पाया जाता है। इस मरुस्थलीय क्षेत्र में लूनी और उसकी सहायक नदियाँ ही जल का मुख्य स्रोत थीं, जिन्होंने प्राचीन मानव समूहों को जीवन का आधार प्रदान किया। लूनी बेसिन के पाषाण उद्योगों को 'लूनी उद्योग' कहा जाता है जहाँ से चर्ट और जैस्पर जैसे पत्थरों से निर्मित प्रचुर औजार प्राप्त हुए हैं। यह क्षेत्र राजस्थान के प्रागैतिहासिक मानचित्र पर मानवीय अनुकूलन और तकनीकी विकास का प्रमुख केंद्र है।

114. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
राजस्थान के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्र विशिष्ट ऐतिहासिक संस्कृतियों के आधार रहे हैं। मेवाड़ क्षेत्र में बनास नदी के तट पर आहड़ जैसी समृद्ध ताम्रपाषाणिक सभ्यता विकसित हुई। शेखावाटी में कांतली नदी की घाटी गणेश्वर संस्कृति का केंद्र बनी जो ताम्र भंडार हेतु प्रसिद्ध थी। घग्गर नदी के मैदानों में कालीबंगन जैसी उन्नत हड़प्पा कालीन बस्तियाँ बसीं। मारवाड़ के मरुस्थलीय क्षेत्रों में डीडवाना जैसे पुरापाषाणकालीन स्थल मिले हैं जो मानवीय सभ्यता के प्राचीनतम चरणों को रेखांकित करते हैं।

115. (3) थार के मुख्य मरुस्थलीय क्षेत्र में प्रागैतिहासिक मानव साक्ष्यों का पूर्ण अभाव है।
राजस्थान के प्रागैतिहासिक विस्तार के विषय में यह धारणा पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि थार मरुस्थल में मानव साक्ष्यों का अभाव है। वास्तव में लूनी नदी घाटी और जायल-डीडवाना जैसे क्षेत्रों ने पुरापाषाण काल से ही मानव बस्तियों को आधार दिया है। अरावली की पहाड़ियाँ औजारों हेतु कच्चा माल प्रदान करती थीं, जबकि दक्षिण-पूर्वी घाटियों में कृषि विकसित हुई। थार मरुस्थल उस समय आज की तुलना में कम शुष्क था और वहां की नदियों ने आदिमानव को भोजन एवं सुरक्षा प्रदान की थी।

116. (1) केवल I, II, III और IV
राजस्थान का भौगोलिक मानचित्र प्रागैतिहासिक कालक्रम का स्पष्ट खाका प्रस्तुत करता है। बनास बेसिन उपजाऊ भूमि के कारण ताम्रपाषाणिक कृषि समुदायों का केंद्र रहा है। कांतली घाटी ने गणेश्वर जैसे ताम्र उत्पादक स्थलों को जन्म दिया। घग्गर घाटी में कालीबंगन जैसी परिष्कृत हड़प्पा सभ्यता विकसित हुई और लूनी बेसिन मध्य पुरापाषाणकालीन औजारों हेतु विख्यात रहा। यह कहना गलत है कि चंबल घाटी शैल चित्रों से रहित है, क्योंकि कोटा और बूंदी क्षेत्रों में प्रागैतिहासिक शैल चित्र प्रचुरता में पाए गए हैं।

117. (3) इस क्षेत्र में उपजाऊ नदी घाटियाँ थीं और अरावली के ताम्र निक्षेपों से निकटता थी
मेवाड़ क्षेत्र में ताम्रपाषाणिक बस्तियों के सघन विस्तार का मुख्य कारण यहाँ की अद्वितीय भौगोलिक और खनिज संपन्नता थी। बनास और उसकी सहायक नदियों की उपजाऊ घाटियों ने स्थायी कृषि हेतु आदर्श परिस्थितियाँ प्रदान कीं। साथ ही अरावली पर्वतमाला में स्थित तांबे के समृद्ध निक्षेपों ने प्रगलन और औजार निर्माण हेतु कच्चा माल सुलभ कराया। इस कृषि और खनिज के दुर्लभ मेल ने ही मेवाड़ को प्राचीन भारत में एक शक्तिशाली और आत्मनिर्भर ग्रामीण सभ्यता के रूप में विकसित किया।

118. (2) चंबल घाटी (कोटा, बूंदी)
राजस्थान में प्रागैतिहासिक काल के अद्भुत शैल चित्र मुख्य रूप से चंबल नदी की घाटी में स्थित कोटा और बूंदी के क्षेत्रों में केंद्रित हैं। यहाँ की बलुआ पत्थर की गुफाओं में आदिमानव द्वारा निर्मित चित्रों के विशाल भंडार मिले हैं। इन चित्रों में शिकार के दृश्य, सामूहिक नृत्य और विभिन्न वन्य जीवों का सजीव चित्रण किया गया है जो तत्कालीन मानव के कलात्मक बोध को उजागर करते हैं। यह क्षेत्र अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक धरोहर के कारण प्रागैतिहासिक कला का वैश्विक केंद्र है।

119. (4) दक्षिण और पूर्व की उपजाऊ नदी घाटियाँ
पुरापाषाण काल से ताम्रपाषाण युग तक का विकास पथ मानव के शिकारी जीवन से स्थायी उत्पादक जीवन की ओर बढ़ने की कहानी है। जैसे-जैसे मानव ने कृषि और धातु विज्ञान सीखा, वह शुष्क क्षेत्रों से निकलकर दक्षिण और पूर्वी राजस्थान की उपजाऊ नदी घाटियों की ओर आकर्षित हुआ। बनास, चंबल और साबरमती जैसी नदियों ने निरंतर जल और उपजाऊ भूमि प्रदान की जिसने बस्तियों को स्थिरता और समृद्धि दी। यह स्थानांतरण तकनीकी प्रगति और बढ़ती जनसंख्या की आवश्यकताओं हेतु अनिवार्य था।

120. (1) आहड़ - बीकानेर
आहड़ सभ्यता मुख्य रूप से दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के उदयपुर जिले में बनास की सहायक आहड़ नदी के तट पर विकसित हुई थी। इसे बनास संस्कृति का प्रमुख केंद्र माना जाता है और यह ताम्रपाषाणिक काल से संबंधित है। दूसरी ओर, बीकानेर क्षेत्र में कालीबंगन जैसी घग्गर-हकरा तंत्र की संस्कृतियों के अवशेष मिलते हैं। आहड़ का बीकानेर से कोई भौगोलिक संबंध नहीं है क्योंकि यह पूर्णतः मेवाड़ क्षेत्र की पहचान है। यह स्थल ताम्र प्रगलन की गतिविधियों हेतु इतिहास में विख्यात था।

अध्याय 02
राजस्थान के इतिहास के स्रोत

1. राजस्थान के इतिहास को समझने में क्षेत्रीय वृत्तांतों (ख्यातों) के प्राथमिक महत्व का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा कथन करता है?
   (1) वे सभी क्षेत्रीय ऐतिहासिक घटनाओं का एक वस्तुनिष्ठ और पूर्णतः निष्पक्ष विवरण प्रदान करते हैं।
   (2) वे स्थानीय स्तर पर राजपूत राज्यों की वंशावली, प्रशासनिक व्यवस्था और सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को दर्ज करते हैं।
   (3) वे ब्रिटिश रेजिडेंट्स द्वारा प्रारंभ किए गए आर्थिक सुधारों और व्यापार नीतियों का दस्तावेजीकरण करते हैं।
   (4) वे विशुद्ध रूप से पौराणिक ग्रंथ हैं जिनका स्थानीय पुरालेखों से कोई पुष्टिकारक प्रमाण नहीं मिलता है।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

2. ऐतिहासिक स्रोतों के संदर्भ में, 'बही' शब्द विशेष रूप से किसे संदर्भित करता है?
   (1) राजपूत राज्यों के प्रशासन द्वारा संधारित एक दैनिक खाता बही।
   (2) ब्राह्मणों को भूमि दान करने वाला एक उत्कीर्ण ताम्रपत्र।
   (3) मुगल सम्राट द्वारा राजपूत राजा को जारी किया गया एक शाही आदेश।
   (4) प्राचीन काल का एक सिक्का जो मुख्य रूप से मौर्य काल के दौरान उपयोग किया जाता था।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

3. गणेश्वर स्थल के पुरातात्विक उत्खनन से महत्वपूर्ण ताम्र कलाकृतियां प्राप्त हुई हैं। यह स्थल किस नदी के तट पर स्थित है?
   (1) बनास
   (2) लूणी
   (3) कांतली
   (4) घग्गर
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

4. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन सा पुरातात्विक स्थल मध्यपाषाण काल से संबंधित प्रारंभिक कृषि और पशुपालन पर आधारित मिश्रित अर्थव्यवस्था के प्रमाण प्रकट करने के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है?
   (1) कालीबंगा
   (2) बैराठ
   (3) सुनारी
   (4) बागोर
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

5. पुरातात्विक स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: आहड़ स्थल तांबा गलाने वाली संस्कृति का प्रमाण प्रदान करता है, जिससे इसका प्राचीन नाम 'ताम्रवती' पड़ा।
   कथन II: बालाथल के उत्खनन से ताम्रपाषाण काल की एक बड़ी बहु-कक्षीय दुर्गनुमा संरचना और बुना हुआ कपड़ा प्राप्त हुआ है।
   निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
   (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
   (2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
   (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
   (4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

6. कालीबंगा के उत्खनन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
   (1) यह पूर्व-हड़प्पा चरण से जुते हुए खेत की सतह का प्रमाण प्रदान करता है।
   (2) यहाँ से राजस्थान में गुप्त काल के सोने के सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार प्राप्त हुआ है।
   (3) खोजों में अग्नि वेदिकाएं सम्मिलित हैं, जो विशिष्ट अनुष्ठानिक प्रथाओं का सुझाव देती हैं।
   (4) यहाँ प्राचीन काल में भूकंप से हुई क्षति के प्रमाण दर्ज किए गए हैं।
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

7. बैराठ (प्राचीन विराटनगर) का पुरातात्विक स्थल एक गोलाकार बौद्ध मंदिर के अवशेष प्राप्त होने के कारण ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है। इस स्थल पर किस मौर्य शासक का शिलालेख खोजा गया था?
   (1) चन्द्रगुप्त मौर्य
   (2) बिन्दुसार
   (3) दशरथ
   (4) अशोक
   (5) प्रश्न अनुत्तरित है

8. निम्नलिखित पुरातात्विक स्थलों और उनके संबंधित जिलों के बीच सही युग्म की पहचान कीजिए:
   (1) गिलुण्ड - राजसमंद
   (2) ओझियाना - उदयपुर
   (3) कुराड़ा - जयपुर
   (4) नोहा - अलवर

(5) प्रश्न अनुत्तरित है

9. निम्नलिखित में से कौन सा प्राचीन स्थल प्रारंभिक ऐतिहासिक काल की लौह गलाने की भट्टियों की खोज के लिए प्रसिद्ध है?
(1) आहड़
(2) गणेश्वर
(3) जोधपुरा (जयपुर)
(4) रंगमहल
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

10. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पुरातात्विक स्थल)
A. कालीबंगा
B. बागोर
C. आहड़
D. बैराठ
सूची II: (संबद्ध नदी)
i. कोठारी
ii. बनास / आयड़
iii. बाणगंगा
iv. घग्गर
सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

11. ताम्रपाषाण संस्कृतियों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) आहड़
(2) बालाथल
(3) गिलुण्ड
(4) कालीबंगा
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

12. राजस्थान के पुरालेखीय स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रशस्तियां शासकों की उपलब्धियों की प्रशंसा करने वाले स्तुतिपूर्ण शिलालेख हैं।
II. ताम्रपत्रों का उपयोग मुख्य रूप से भूमि अनुदान और धार्मिक दान दर्ज करने के लिए किया जाता था।
III. 10वीं शताब्दी ईस्वी से पूर्व राजस्थान के सभी शिलालेख विशेष रूप से अपभ्रंश भाषा में लिखे गए थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

13. घोसुण्डी शिलालेख प्राचीन इतिहास के लिए एक महत्वपूर्ण पुरालेखीय स्रोत है। यह इस क्षेत्र में किस देवता की पूजा का सबसे प्राचीन पुरालेखीय प्रमाण प्रदान करता है?
(1) शिव (विशेष रूप से प्राचीन पाशुपत संप्रदाय)
(2) सूर्य (सूर्य पूजा का पारंपरिक प्रारंभिक रूप)
(3) संकर्षण और वासुदेव (भागवत संप्रदाय)
(4) महावीर (प्रथम तीर्थंकर को समर्पित)
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

14. घोसुण्डी शिलालेख किस ऐतिहासिक युग का है?
(1) दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व
(2) पहली शताब्दी ईस्वी
(3) चौथी शताब्दी ईस्वी
(4) छठी शताब्दी ईस्वी
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): पुरालेखशास्त्र (अभिलेख शास्त्र) को प्राचीन और प्रारंभिक मध्यकालीन इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए सबसे विश्वसनीय स्रोतों में से एक माना जाता है।
कारण (R): शिलालेख सामान्यतः उन घटनाओं के समकालीन होते हैं जिनका वे वर्णन करते हैं और साहित्यिक पांडुलिपियों की तुलना में उनमें छेड़छाड़ की संभावना बहुत कम होती है।
उपरोक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

16. जयपुर क्षेत्र में पाए गए बरनाला यूप शिलालेख बहुमूल्य ऐतिहासिक आंकड़े प्रदान करते हैं। ये यूप स्तंभ मुख्य रूप से किसकी स्मृति में बनवाए गए थे?
(1) विदेशी आक्रमणकारियों पर एक स्थानीय शासक की विजय।
(2) वैदिक यज्ञों का अनुष्ठान (जैसे त्रिरात्र)।
(3) एक नए व्यापार संघ (श्रेणी) की स्थापना।
(4) कच्छवाहा राजवंश की वंशावली।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

17. निम्नलिखित में से कौन सा शिलालेख रेशम बुनकरों की एक श्रेणी और सूर्य मंदिर के निर्माण के बारे में जानकारी प्रदान करता है?
(1) बिजोलिया शिलालेख
(2) मंदसौर शिलालेख
(3) कुंभलगढ़ शिलालेख
(4) चीरवा शिलालेख
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

18. मंदसौर शिलालेख (436 ईस्वी) में किस गुप्त सम्राट के शासनकाल का उल्लेख है, जिसके समय रेशम-बुनकरों की श्रेणी लाट प्रदेश से प्रवास कर आई थी?

(1) कुमारगुप्त I
(2) चन्द्रगुप्त II
(3) स्कन्दगुप्त
(4) समुद्रगुप्त
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

19. राजस्थान में पाए गए प्राचीनतम शिलालेखों में से एक माने जाने वाले बरली शिलालेख का मुख्य विषय क्या है?

(1) यह प्रतिहारों के सैन्य अभियानों का विवरण देता है।
(2) यह मेवाड़ और मालवा के बीच व्यापार समझौतों को दर्ज करता है।
(3) यह एक जैन मंदिर के समर्पण को चिह्नित करता है और जैन संवत का उल्लेख करता है।
(4) यह हल्दीघाटी के युद्ध का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

20. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (शिलालेख)
A. घोसुण्डी शिलालेख
B. मंदसौर शिलालेख
C. बिजोलिया शिलालेख
D. चीरवा शिलालेख

सूची II: (भाषा/लिपि संदर्भ)
i. संस्कृत, ब्राह्मी लिपि
ii. संस्कृत, गुहिल राजवंश का विवरण
iii. संस्कृत, चौहान राजवंश का विवरण
iv. संस्कृत, रेशम बुनकरों का उल्लेख

सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

21. निम्नलिखित में से कौन सा शिलालेख प्रसिद्ध रूप से चौहान राजवंश की उत्पत्ति 'वत्स गोत्र' के ब्राह्मणों से बताता है?

(1) समिधेश्वर शिलालेख
(2) कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति
(3) बिजोलिया शिलालेख
(4) रणकपुर प्रशस्ति
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

22. बिजोलिया शिलालेख के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह 1170 ईस्वी में उत्कीर्ण किया गया था।
II. यह कई स्थानों के प्राचीन नाम प्रदान करता है, जैसे जालोर के लिए जाबालिपुर।
III. इसकी रचना गुणभद्र द्वारा की गई थी।
IV. यह मेवाड़ के गुहिलों की वंशावली का दस्तावेजीकरण करता है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

23. कुंभलगढ़ शिलालेख (1460 ईस्वी) गुहिल शासकों के इतिहास का विवरण देने वाला एक विस्तृत अभिलेख है। इसके रचयिता कौन थे?

(1) अत्रि
(2) कान्हा व्यास
(3) मण्डन
(4) महेश
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

24. कौन सा ऐतिहासिक ग्रंथ या शिलालेख महाराणा कुंभा को स्पष्ट रूप से 'दान-गुरु', 'चाप-गुरु' और 'राज-गुरु' के रूप में वर्णित करता है?

(1) कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति
(2) कुंभलगढ़ प्रशस्ति
(3) श्रृंगी ऋषि शिलालेख
(4) एकलिंग माहात्म्य
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

25. चित्तौड़गढ़ का समिधेश्वर मंदिर शिलालेख किस शासक द्वारा मंदिर के जीर्णोद्धार से संबंधित है?

(1) महाराणा प्रताप
(2) महाराणा सांगा
(3) महाराणा मोकल
(4) रावल रतन सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

26. मध्यकालीन इतिहास के संदर्भ में 'ताम्रपत्र' का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?

(1) भूमि या विशेषाधिकारों के अनुदान को दर्ज करने वाला एक ताम्र पट्टिका का दस्तावेज।
(2) राजज्योतिषी द्वारा संधारित एक दैनिक डायरी।
(3) रानियों के सौंदर्य की प्रशंसा करने वाली एक काव्य रचना।
(4) युद्धक्षेत्र की संरचनाओं का विवरण देने वाला एक सैन्य मार्गदर्शिका।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

27. श्रृंगी ऋषि शिलालेख (1428 ईस्वी) के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) यह महाराणा मोकल के शासनकाल के दौरान जारी किया गया था।

(2) यह हम्मीर, क्षेत्र सिंह और लाखा की उपलब्धियों के बारे में विवरण प्रदान करता है।
(3) यह मोकल द्वारा एक बावड़ी के निर्माण को दर्ज करता है।
(4) इसकी खोज मारवाड़ क्षेत्र में हुई थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

28. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान के शिलालेखों का प्राचीनतम से नवीनतम के क्रम में सही कालानुक्रमिक अनुक्रम है?
(1) बरली शिलालेख, घोसुण्डी शिलालेख, बिजोलिया शिलालेख, कुंभलगढ़ शिलालेख
(2) घोसुण्डी शिलालेख, बरली शिलालेख, कुंभलगढ़ शिलालेख, बिजोलिया शिलालेख
(3) बरली शिलालेख, बिजोलिया शिलालेख, घोसुण्डी शिलालेख, कुंभलगढ़ शिलालेख
(4) घोसुण्डी शिलालेख, कुंभलगढ़ शिलालेख, बरली शिलालेख, बिजोलिया शिलालेख
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

29. राजपूत राज्यों के पुरालेखीय अभिलेखों में, 'तोजी' अभिलेखों में मुख्य रूप से क्या जानकारी होती थी?
(1) राज्य की दैनिक आय और व्यय का दस्तावेजीकरण करने वाले अभिलेख।
(2) दो अलग-अलग संप्रभु शासकों के बीच औपचारिक राजनयिक पत्राचार।
(3) भू-राजस्व और कृषि उत्पादन के संबंध में सांख्यिकीय आंकड़े।
(4) शासक परिवार के सदस्यों की विस्तृत वंशावली तालिकाएँ।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

30. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पुरालेखीय शब्द)
A. फरमान
B. निशान
C. मंसूर
D. अखबारात
सूची II: (अर्थ)
i. अदालती बुलेटिन या समाचार पत्र
ii. सम्राट द्वारा जारी शाही आदेश
iii. शाही परिवार के किसी सदस्य (राजकुमार/राजकुमारी) द्वारा जारी आदेश
iv. सम्राट द्वारा जारी विशेष आदेश
सही कूट चुनिए:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

31. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): वकील रिपोर्ट मुगल काल के दौरान राजपूताना के राजनीतिक इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए महत्वपूर्ण स्रोत हैं।
कारण (R): ये रिपोर्टें मुगल दरबार में नियुक्त राजपूत दूतों द्वारा अपने संबंधित राजाओं को भेजे गए गोपनीय संचार थे, जिनमें दरबारी राजनीति और सम्राट की मनोदशा का विवरण होता था।
उपरोक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

32. फारसी पुरालेखीय स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'अखबारात-ए-दरबार-ए-मुअल्ला' मुगल दरबार की दैनिक कार्यवाही प्रदान करता है।
II. 'रुक्का' एक प्रकार का अनौपचारिक पत्र या टिप्पणी थी।
III. 'सनद' एक आधिकारिक दस्तावेज को संदर्भित करता है जो कुछ अधिकार या विशेषाधिकार प्रदान करता है।
IV. 'खास-रुक्का' राजपूत शासक द्वारा स्वयं के हस्तलेख में लिखा गया पत्र था।
V. 'अर्जी' (अर्ज़दाश्त) एक मुगल सामंत द्वारा अधीनस्थ को जारी किया गया आदेश था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

33. ऐतिहासिक ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो', जो पृथ्वीराज चौहान के जीवन और युद्धों का विवरण देता है, किसके द्वारा रचा गया था?
(1) जयानक
(2) चन्द बरदाई
(3) नैणसी
(4) सूर्यमल्ल मिश्रण
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

34. 'पृथ्वीराज रासो' और 'पृथ्वीराज विजय' के बीच ऐतिहासिक संदर्भ में मौलिक अंतर क्या है?
(1) जयानक द्वारा रचित पृथ्वीराज विजय को रासो की तुलना में अधिक ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय माना जाता है।
(2) पृथ्वीराज रासो संस्कृत में लिखा गया है, जबकि

पृथ्वीराज विजय डिंगल में रचित है।
(3) पृथ्वीराज रासो राज्य प्रशासन पर केंद्रित है, जबकि पृथ्वीराज विजय प्रेम प्रसंग पर केंद्रित है।
(4) दोनों ग्रंथों की रचना 17वीं शताब्दी के दौरान पेशेवर चारण दरबारी कवियों द्वारा की गई थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

35. साहित्यिक स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'हम्मीर महाकाव्य' नयनचन्द्र सूरी द्वारा लिखा गया था।
कथन II: यह रणथंभौर के चौहानों और अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध उनके संघर्ष का विस्तृत विवरण प्रदान करता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

36. जीवा धर द्वारा रचित कौन सा प्रसिद्ध संस्कृत ग्रंथ प्रारंभिक मध्यकालीन राजस्थान की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों पर प्रकाश डालता है और मुख्य रूप से छंदशास्त्र और व्याकरण पर आधारित कृति है?
(1) कुवलयमाला (उद्योतन सूरी द्वारा)
(2) वंश भास्कर (सूर्यमल्ल मिश्रण द्वारा)
(3) अमर काव्य वंशावली (रणछोड़ भट्ट द्वारा)
(4) उपरोक्त में से कोई नहीं (क्योंकि कुवलयमाला उद्योतन सूरी द्वारा रचित थी)
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

37. प्रसिद्ध प्राचीन ग्रंथ 'कुवलयमाला' की रचना 778 ईस्वी में उद्योतन सूरी द्वारा की गई थी। इस ग्रंथ की रचना मुख्य रूप से राजस्थान के किस नगर में की गई थी?
(1) चित्तौड़गढ़
(2) अजमेर
(3) जालोर
(4) मण्डोर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

38. मध्यकालीन इतिहास को समझने के लिए 'कान्हड़दे प्रबन्ध' एक आवश्यक साहित्यिक स्रोत है। इसका मुख्य विषय क्या है?
(1) मेवाड़ में गुहिल राजवंश की आधिकारिक स्थापना।
(2) कान्हड़देव चौहान और अलाउद्दीन खिलजी के बीच जालोर का युद्ध।
(3) ढोला और मारु की पारंपरिक लोक प्रेम कथा।
(4) महाराणा कुंभा के विस्तृत प्रशासनिक सुधार।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

39. 'कान्हड़दे प्रबन्ध' के लेखक की पहचान कीजिए।
(1) जयानक
(2) सोमदेव
(3) हेमचन्द्र सूरी
(4) पद्मनाभ
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

40. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (साहित्यिक कृति)
A. एकलिंग माहात्म्य
B. वेलि क्रिसन रुकमणी री
C. वंश भास्कर
D. नैणसी री ख्यात
सूची II: (लेखक)
i. मुहणोत नैणसी
ii. सूर्यमल्ल मिश्रण
iii. पृथ्वीराज राठौड़
iv. कान्हा व्यास
सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

41. निम्नलिखित में से 'ग्रंथ - लेखक' का कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) अचलदास खींची री वचनिका - शिवदास गाडण
(2) पाथल और पीथल - कन्हैयालाल सेठिया
(3) राज रुपक - बांकीदास
(4) हम्मीर रासो - जोधराज
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

42. 'मुहणोत नैणसी री ख्यात' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे राजस्थान की प्रथम ख्यात माना जाता है।
II. यह डिंगल भाषा में लिखी गई थी।
III. मुहणोत नैणसी जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के दरबार में मंत्री थे।
IV. यह ग्रंथ केवल मारवाड़ के इतिहास पर केंद्रित है और अन्य राजपूत राज्यों की उपेक्षा करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

43. मुहणोत नैणसी एक अन्य कालजयी कृति की रचना के लिए भी प्रसिद्ध हैं जो एक राजपत्रक (गजेटियर) के रूप में कार्य करती है। उसका नाम क्या है?
(1) दयालदास री ख्यात

(2) बांकीदास री ख्यात
(3) जोधपुर राज्य की तवारीख
(4) मारवाड़ रा परगना री विगत
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

44. किस इतिहासकार ने मुहणोत नैणसी को "राजपूताना का अबुल फजल" कहा था?
(1) कर्नल जेम्स टॉड
(2) मुंशी देवी प्रसाद
(3) जी. एच. ओझा
(4) एल. पी. टेसिटोरी
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): 'बांकीदास री ख्यात' पारंपरिक ख्यातों से भिन्न है क्योंकि यह निरंतर कथा प्रारूप में नहीं बल्कि स्वतंत्र संक्षिप्त टिप्पणियों के रूप में लिखी गई है।
कारण (R): बांकीदास जोधपुर के महाराजा मान सिंह के दरबार में एक प्रमुख कवि और इतिहासकार थे।
उपरोक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

46. 'दयालदास री ख्यात' मुख्य रूप से किस राजपूत राज्य के इतिहास के लिए एक प्रामाणिक स्रोत के रूप में पहचानी जाती है?
(1) मेवाड़
(2) मारवाड़
(3) आमेर
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

47. 'मुण्डियार री ख्यात' मुख्य रूप से किस शासक राजवंश के बारे में विस्तृत ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करती है?
(1) मारवाड़ के राठौड़
(2) मेवाड़ के सिसोदिया
(3) अजमेर के चौहान
(4) आमेर के कच्छवाहा
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

48. निम्नलिखित ऐतिहासिक वृत्तांतकारों/लेखकों पर विचार कीजिए:
I. चन्द बरदाई
II. मुहणोत नैणसी
III. सूर्यमल्ल मिश्रण
IV. बांकीदास
निम्नलिखित में से उनके समय का सही कालानुक्रमिक क्रम कौन सा है?
(1) I, II, IV, III
(2) I, IV, II, III
(3) II, I, III, IV
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

49. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'चारण' और 'भाट' की परंपरा का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) वे राज्य-बद्ध श्रमिक थे जो विभिन्न कृषि और छोटे-मोटे कार्य करते थे।
(2) वे पारंपरिक चारण और कवि थे जिन्होंने राजपूत कुलों के ऐतिहासिक कारनामों को सुरक्षित रखा।
(3) वे राजपूत राजाओं द्वारा तोपखाने युद्ध के लिए नियुक्त पेशेवर विदेशी सैनिक थे।
(4) वे स्थानीय पुजारी थे जो शाही परिवारों के लिए दैनिक मंदिर अनुष्ठान करते थे।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

50. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (साहित्यिक शैली/प्रारूप)
A. वचनिका
B. विगत
C. वेलि
D. मरसिया
सूची II: (विवरण)
i. एक काव्य रूप जो प्रायः किसी महान योद्धा की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने के लिए लिखा जाता है।
ii. एक व्यापक सांख्यिकीय और भौगोलिक विवरण।
iii. लयबद्ध तुकबंदी शैली में लिखा गया गद्य-पद्य मिश्रण।
iv. पौराणिक या ऐतिहासिक कथाओं को समर्पित एक छंदबद्ध रचना।
सही कूट चुनिए:
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

51. कालजयी कृति 'वंश भास्कर', जो अधूरी छोड़ दी गई थी किंतु बाद में मुरारीदान द्वारा पूर्ण की गई, किस राज्य के इतिहास का विवरण देती है?
(1) कोटा
(2) झालावाड़
(3) बूंदी
(4) सिरोही
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

52. 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसकी रचना बीकानेर के पृथ्वीराज राठौड़ ने की थी।
II. यह उत्तरी मारवाड़ी बोली (डिंगल) में लिखी गई थी।
III. एल. पी. टेसिटोरी ने इसकी साहित्यिक योग्यता की अत्यधिक प्रशंसा की।
IV. यह राव जोधा के सैन्य अभियानों का विवरण देती है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

53. राजस्थान में खोजे गए निम्नलिखित प्राचीन सिक्कों में से किसे क्षेत्र में प्राचीनतम मुद्राशास्त्रीय प्रमाण माना जाता है, जिन पर सामान्यतः केवल प्रतीक होते हैं और कोई लिखित लेख नहीं होता है?
(1) मध्यकाल के गधिया सिक्के।
(2) लेख वाले इंडो-ग्रीक ड्रेचम।
(3) आहत सिक्के (पंच-मार्क सिक्के)।
(4) भंडार से प्राप्त गुप्तकालीन सोने के दीनार।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

54. मालव जनपद से संबंधित प्राचीन सिक्कों का एक महत्वपूर्ण भंडार किस पुरातात्विक स्थल पर खोजा गया था?
(1) नगरी (चित्तौड़गढ़)
(2) नगर (टोंक)
(3) बैराठ (जयपुर)
(4) रंगमहल (हनुमानगढ़)
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): बैराठ के उत्खनन से 36 चांदी के सिक्कों का एक भंडार प्राप्त हुआ, जिनमें से 28 इंडो-ग्रीक शासकों के हैं।
कारण (R): यह मुद्राशास्त्रीय प्रमाण दर्शाता है कि बैराठ का क्षेत्र मिनांडर जैसे इंडो-ग्रीक राजाओं के राजनीतिक प्रभाव अथवा सक्रिय व्यापार तंत्र के अधीन था।
उपरोक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

56. प्राचीन इतिहास के मुद्राशास्त्रीय स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शिबि जनपद के सिक्के मुख्य रूप से नगरी (मध्यमिका) में पाए गए हैं।
II. यौधेय सिक्के मुख्य रूप से राजस्थान के उत्तरी भागों (गंगानगर-हनुमानगढ़) में पाए जाते हैं।
III. बयाना (भरतपुर) में गुप्तकालीन सोने के सिक्कों की खोज भारत में अपनी तरह का सबसे बड़ा भंडार है।
IV. आहत सिक्के (पंच-मार्क सिक्के) आमतौर पर सोने के बने होते थे।
V. राजस्थान में इंडो-ग्रीक सिक्कों पर प्रायः द्विभाषी लेख मिलते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

57. भरतपुर में खोजा गया 'बयाना भंडार' ऐतिहासिक रूप से किस प्राचीन भारतीय राजवंश के सहस्रों सिक्कों के लिए प्रसिद्ध है?
(1) मौर्य
(2) कुषाण
(3) गुप्त
(4) वर्धन
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

58. मध्यकालीन राजपूत राज्यों के सिक्कों और उनके संबंधित जारीकर्ता राज्यों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) गजशाही - मेवाड़
(2) अखैशाही - जैसलमेर
(3) झाड़शाही - जयपुर
(4) विजयशाही - जोधपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

59. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (सिक्के का नाम)
A. स्वरूपशाही
B. डब्बूशाही
C. तमंचा शाही
D. झाड़शाही

सूची II: (रियासत)
i. धौलपुर
ii. मेवाड़
iii. मारवाड़
iv. जयपुर

सही कूट चुनिए:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

60. 'मदन शाही' सिक्के किस पूर्व रियासत की प्राथमिक मुद्रा थे?
(1) कोटा
(2) झालावाड़
(3) बांसवाड़ा

(4) करौली
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

61. निम्नलिखित में से किस रियासत ने 'राव शाही' सिक्के जारी किए थे?
(1) बीकानेर
(2) डूंगरपुर
(3) अलवर
(4) जैसलमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

62. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. सिक्के ढालने के अधिकार को राजपूत राज्यों द्वारा संप्रभुता का प्रतीक माना जाता था।
II. 1818 की संधियों के पश्चात, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने तुरंत राजस्थान की सभी स्थानीय टकसालों को समाप्त कर दिया।
III. 'कलदार' राजपूताना में प्रचलित ब्रिटिश भारतीय रुपये के लिए उपयोग किया जाने वाला स्थानीय शब्द था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I और II
(2) I और III
(3) II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

63. किस चीनी यात्री ने 7वीं शताब्दी ईस्वी में भीनमाल और बैराठ की यात्रा की और अपने वृत्तांतों में इन स्थानों का विवरण छोड़ा?
(1) ह्वेनसांग
(2) फाह्यान
(3) इत्सिंग
(4) सुंग युन
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

64. ह्वेनसांग ने अपने यात्रा वृत्तांत 'सी-यू-की' में गुर्जर साम्राज्य और उसकी राजधानी भीनमाल को निम्नलिखित में से किस नाम से संबोधित किया?
(1) कु-चे-लो
(2) पी-लो-मो-लो
(3) पो-ली-ये-तो-लो
(4) मो-तु-लो
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

65. विदेशी यात्रियों के वृत्तांतों के आधार पर, सर थॉमस रो की राजस्थान यात्रा के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने व्यापारिक अधिकार सुरक्षित करने के लिए चित्तौड़गढ़ में सम्राट अकबर से भेंट की।
(2) उन्होंने 1616 में अजमेर के मैगजीन दुर्ग में सम्राट जहांगीर से भेंट की।
(3) वे फ्रांसीसी राजा लुई XIV के दूत थे।
(4) उन्होंने 'ट्रैवल्स इन द मुगल एम्पायर' पुस्तक लिखी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

66. एक फ्रांसीसी चिकित्सक और यात्री फ्रांसवा बर्नियर ने एक प्रमुख राजनीतिक घटना का विस्तृत विवरण लिखा, जिसमें जोधपुर के जसवंत सिंह जैसे राजपूत राजाओं की महत्वपूर्ण भूमिका थी। वह घटना क्या थी?
(1) शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध।
(2) अकबर द्वारा चित्तौड़गढ़ की घेराबंदी।
(3) राजपूताना पर मराठा आक्रमण।
(4) अंग्रेजों के साथ सहायक संधियों पर हस्ताक्षर।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

67. ऐतिहासिक प्रासंगिकता के पहलुओं का दस्तावेजीकरण करने वाले विदेशी यात्रियों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर
(2) निकोलो मनुची
(3) चन्द बरदाई
(4) फ्रांसवा बर्नियर
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

68. निम्नलिखित में से कौन सा उन विदेशी यात्रियों की यात्राओं का सही कालानुक्रमिक क्रम है जिन्होंने इस क्षेत्र से संबंधित टिप्पणियां दर्ज की थीं?
(1) ह्वेनसांग, थॉमस रो, फ्रांसवा बर्नियर
(2) थॉमस रो, ह्वेनसांग, फ्रांसवा बर्नियर
(3) ह्वेनसांग, फ्रांसवा बर्नियर, थॉमस रो
(4) फ्रांसवा बर्नियर, थॉमस रो, ह्वेनसांग
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

69. कर्नल जेम्स टॉड की मौलिक कृति 'एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' प्रथम बार किस वर्ष प्रकाशित हुई थी?
(1) 1818
(2) 1829
(3) 1857
(4) 1899
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

70. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (लेखक/अधिकारी)
A. कर्नल जेम्स टॉड
B. विलियम फ्रैंकलिन
C. के. डी. एर्स्किन
D. एल. पी. टेसिटोरी
सूची II: (योगदान/कार्य)
i. राजपूताना गजेटियर्स
ii. मिलिट्री मेमोयर्स ऑफ मिस्टर जॉर्ज थॉमस
iii. एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान
iv. बार्डिक एंड हिस्टोरिकल सर्वे ऑफ राजपूताना
सही कूट चुनिए:

(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

71. 'एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह कर्नल टॉड के गुरु, यति ज्ञानचन्द्र को समर्पित थी।
II. इसका प्रथम खंड मुख्य रूप से मेवाड़ के इतिहास को समाहित करता है।
III. टॉड ने स्थानीय ख्यातों, वंशावलियों और चारण साहित्य पर अत्यधिक भरोसा किया।
IV. आधुनिक इतिहासकार टॉड की सभी ऐतिहासिक तिथियों और वंशावली दावों को पूर्णतः त्रुटिहीन मानते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

72. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा संकलित औपनिवेशिक अभिलेख और राजपत्रक राजस्थान के 19वीं शताब्दी के इतिहास के अध्ययन के लिए अपरिहार्य हैं।
कारण (R): वे व्यवस्थित जनसांख्यिकीय, आर्थिक और प्रशासनिक आंकड़े प्रदान करते हैं जो पारंपरिक चारण साहित्य में विरले ही दर्ज किए गए थे।
उपरोक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

73. कर्नल जेम्स टॉड ने एक अन्य महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी जो 1839 में उनकी मृत्यु के पश्चात उनकी पत्नी द्वारा प्रकाशित की गई थी। इसका शीर्षक क्या है?
(1) द सेंट्रल एंड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया
(2) द हिस्ट्री ऑफ राजपूताना
(3) ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया
(4) मिथ्स एंड लीजेंड्स ऑफ द राजपुत्स
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

74. निम्नलिखित में से कौन सा राजपूत शासक अपने राज्य के पुरालेखीय अभिलेखों को 'महकमा खास' के अंतर्गत व्यवस्थित रूप से संगठित करने के लिए जाना जाता है?
(1) बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह
(2) मेवाड़ के महाराणा प्रताप
(3) जयपुर के सवाई जय सिंह
(4) मारवाड़ के राव जोधा
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

75. ऐतिहासिक स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राजपूत शासकों द्वारा जारी किए गए 'पट्टे' कुलीनों को दिए गए भूमि अनुदान या जागीर को मान्यता देने वाले आधिकारिक दस्तावेज थे।
कथन II: 'परवाना' एक अधीनस्थ अधिकारी द्वारा राजा को जारी किया गया आदेश था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

76. ऐतिहासिक ग्रंथ 'नैणसी री ख्यात' किस शासक के शासनकाल के दौरान लिखा गया था?
(1) महाराणा राज सिंह
(2) महाराजा जसवंत सिंह प्रथम
(3) सवाई राम सिंह
(4) राव मालदेव
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

77. कौन सा प्राचीन मुद्राशास्त्रीय स्रोत इंगित करता है कि नगरी (चित्तौड़गढ़) का क्षेत्र एक विशिष्ट जनपद के नियंत्रण में था?
(1) यौधेय जनपद के सिक्के
(2) मालव जनपद के सिक्के
(3) शिबि जनपद के सिक्के
(4) अर्जुनायन जनपद के सिक्के
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

78. राजस्थान में पुरातात्विक उत्खनन से संबंधित निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बागोर कोठारी नदी पर स्थित है और एक प्रमुख मध्यपाषाण कालीन स्थल है।
II. ओझियाना भीलवाड़ा में स्थित एक ताम्रपाषाण कालीन स्थल है।
III. झुंझुनू में सुनारी से प्राचीन लोहे को गलाने के प्रमाण मिले हैं।
IV. नागौर में कुराड़ा को 'ताम्र उपकरणों का भंडार' के रूप में जाना जाता है।
V. भरतपुर में नोहा से चित्रित धूसर मृदभांड (PGW) प्राप्त हुए हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III, IV और V
(2) I, III, IV और V

(3) II, III और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

79. निम्नलिखित में से कौन सा स्थल अपनी प्रमुख पुरातात्विक संस्कृति के साथ सही सुमेलित नहीं है?
(1) बैराठ - पुरापाषाण संस्कृति
(2) कालीबंगा - हड़प्पा संस्कृति
(3) आहड़ - ताम्रपाषाण संस्कृति
(4) बागोर - मध्यपाषाण संस्कृति
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

80. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (ग्रंथ)
A. हम्मीर रासौ
B. खुमाण रासो
C. बीसलदेव रासो
D. सगत रासो
सूची II: (लेखक)
i. दलपत विजय
ii. नरपति नाल्ह
iii. गिरधर आसिया
iv. जोधराज
सही कूट चुनिए:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

81. निम्नलिखित प्राचीन शिलालेखों पर विचार कीजिए:
I. बरली शिलालेख
II. घोसुण्डी शिलालेख
III. मंदसौर शिलालेख
IV. बिजोलिया शिलालेख
निम्नलिखित में से कौन सा उनकी जारी तिथियों का सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

82. निम्नलिखित में से कौन सा 'चोपड़ा' की ऐतिहासिक उपयोगिता का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) व्यापारियों और राज्य अधिकारियों द्वारा लेखांकन के लिए उपयोग की जाने वाली एक पारंपरिक बही।
(2) विजयी सेनापतियों को पारंपरिक रूप से भेंट की जाने वाली एक विशेष औपचारिक तलवार।
(3) विशेष रूप से मध्यकालीन मुगल फरमानों पर लगाई जाने वाली एक औपचारिक शाही मुहर।
(4) अलंकृत बावड़ियों के निर्माण के लिए एक वास्तुशिल्प खाका।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

83. 'अखबारात' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे मुगल काल के फारसी अदालती बुलेटिन हैं।
II. वे मुगल सम्राटों और राजपूत राज्यों के बीच राजनयिक संबंधों के बारे में बहुमूल्य विवरण प्रदान करते हैं।
III. वे विशेष रूप से 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश रेजिडेंट्स द्वारा लिखे गए थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

84. कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति मुख्य रूप से किस राजपूत शासक की उपलब्धियों पर प्रकाश डालती है?
(1) महाराणा सांगा
(2) महाराणा प्रताप
(3) रावल बप्पा
(4) महाराणा कुंभा
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

85. मध्यकालीन राजस्थान के सिक्कों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गजशाही सिक्के बीकानेर में प्रचलित थे।
II. लल्लुशाही सिक्के मेवाड़ में चलन में थे।
III. चांदोड़ी सिक्के मेवाड़ में उपयोग किए जाते थे।
IV. अखैशाही सिक्के जैसलमेर में ढाले जाते थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

86. निम्नलिखित साहित्यिक स्रोतों में से कौन सा नाडोल और जालोर के चौहानों के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है, और पद्मनाभ द्वारा रचित था?
(1) पृथ्वीराज विजय
(2) कान्हड़दे प्रबन्ध
(3) हम्मीर महाकाव्य
(4) नैणसी री ख्यात
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

87. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): राजस्थान का चारण साहित्य, साहित्यिक मूल्य

में समृद्ध होने के साथ-साथ, ऐतिहासिक सटीकता के लिए पुरालेखीय और पुरातात्विक अभिलेखों के साथ प्रति-सत्यापित किया जाना चाहिए।
कारण (R): चारण और भाट अक्सर अतिशयोक्ति का प्रयोग करते थे और अपने संरक्षकों की स्तुति करते थे, जिससे कभी-कभी वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक तथ्यों के साथ समझौता हो जाता था।
उपरोक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

88. निम्नलिखित सिक्कों पर विचार कीजिए:
I. अखैशाही (जैसलमेर)
II. विजयशाही (जोधपुर)
III. झाड़शाही (जयपुर)
IV. मदनशाही (झालावाड़)
निम्नलिखित में से भौगोलिक रूप से पश्चिम से पूर्व की ओर उनके संबंधित जारीकर्ता राज्यों का सही क्रम कौन सा है?
(1) I, II, III, IV
(2) I, II, IV, III
(3) II, I, III, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

89. निम्नलिखित में से कौन सा शिलालेख राव सीहा तक मारवाड़ के राठौड़ों की वंशावली प्रदान करता है?
(1) चीरवा शिलालेख
(2) रणकपुर प्रशस्ति
(3) बीठू शिलालेख
(4) कुंभलगढ़ प्रशस्ति
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

90. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शिलालेख)
A. रसिया की छतरी शिलालेख
B. श्रृंगी ऋषि शिलालेख
C. बिजोलिया शिलालेख
D. बीठू शिलालेख
सूची II: (संबद्ध राजवंश)
i. चौहान
ii. राठौड़
iii. गुहिल/सिसोदिया (मेवाड़) - नरवर्मा काल
iv. गुहिल/सिसोदिया (मेवाड़) - मोकल काल
सही कूट चुनिए:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

91. पुरालेखीय स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'खास रुक्का' शासक द्वारा लिखा गया एक आधिकारिक पत्र था।
II. 'अर्ज़दाश्त' एक अधीनस्थ द्वारा शासक को भेजी गई याचिका थी।
III. 'मंसूर' मुगल सम्राट का आदेश था।
IV. 'खरीता' एक शासक द्वारा दूसरे शासक को भेजा गया पत्र था।
V. 'बही' अभिलेखों में दैनिक खाते और वंशावली विवरण सम्मिलित थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) I, II, III, IV और V
(4) II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

92. ऐतिहासिक वृत्तांतों के संदर्भ में, 'पाबूजी री बात' ग्रंथ का प्राथमिक ध्यान क्या था?
(1) मारवाड़ राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था।
(2) पाबूजी के वीरतापूर्ण कार्य और लोक देवता का स्वरुप।
(3) मध्यकालीन राजपूताना में कृषि कर प्रणाली।
(4) कच्छवाहों का वंशावली वृक्ष।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

93. 'राजपूताना गजेटियर्स' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे के. डी. एर्स्किन जैसे ब्रिटिश प्रशासकों की देखरेख में संकलित किए गए थे।
II. उनमें जनसंख्या और भू-राजस्व के संबंध में सांख्यिकीय आंकड़ों की कमी है।
III. वे राजस्थान की विभिन्न जनजातियों और जातियों पर मानवशास्त्रीय टिप्पणियां प्रदान करते हैं।
IV. वे औपनिवेशिक काल के दौरान राजपूताना राज्यों के संक्रमण को समझने के लिए आवश्यक हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

94. ब्राह्मी लेख 'भद्रपवासा' वाली मुहरों की खोज किस पुरातात्विक स्थल से संबंधित है?
(1) रेड (टोंक)
(2) नोह
(3) आहड़

(4) बैराठ
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

95. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शब्द)
A. यूप
B. प्रशस्ति
C. सती स्तंभ
D. ताम्रपत्र
सूची II: (अर्थ/संदर्भ)
i. स्वयं को अग्नि को समर्पित करने वाली महिला का स्मारक पत्थर
ii. भूमि अनुदान का दस्तावेजीकरण करने वाली ताम्र पट्टिका
iii. यज्ञ स्तंभ शिलालेख
iv. राजा की प्रशंसा करने वाला स्तुतिपूर्ण शिलालेख
सही कूट चुनिए:
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

96. कौन सा प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ अलाउद्दीन खिलजी द्वारा रणथंभौर के घेरे और रानी रंगदेवी द्वारा अंतिम बलिदान (जौहर) का विवरण देता है?
(1) कान्हड़दे प्रबन्ध
(2) हम्मीर महाकाव्य
(3) पृथ्वीराज रासो
(4) खुमाण रासो
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

97. साहित्यिक स्रोतों के संदर्भ में 'डिंगल' शब्द का अर्थ है:
(1) पुरालेखशास्त्र में प्रयुक्त संस्कृत का एक शास्त्रीय रुप।
(2) पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) भाषा की काव्य शैली।
(3) मुगल अखबारातों में प्रयुक्त एक गुप्त सांकेतिक भाषा।
(4) आहत सिक्कों पर प्रयुक्त एक लिपि।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

98. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): राजस्थान के विभिन्न भागों में इंडो-ससानियन सिक्कों (गधिया) की खोज प्रारंभिक मध्यकालीन काल के दौरान व्यापक व्यापार तंत्र का संकेत देती है।
कारण (R): गधिया सिक्के पूर्णतः स्वदेशी हैं और उन पर विदेशी सिक्का शैलियों का कोई प्रभाव नहीं है।
उपरोक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

99. पुरालेख अभिलेखों में 'बहीदास' को निम्नलिखित में से कौन सबसे अच्छा परिभाषित करता है?
(1) राजपूत राजाओं के पेशेवर शाही अंगरक्षक।
(2) राज्य की टकसालों की देखरेख के लिए अंग्रेजों द्वारा नियुक्त अधिकारी।
(3) बहियों के रखरखाव के लिए उत्तरदायी राज्य अधिकारी या लिपिक।
(4) विशेष रूप से मध्यकालीन मुगल दरबार में भेजे गए औपचारिक दूत।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

100. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (यात्री/लेखक)
A. ह्वेनसांग
B. विलियम फ्रैंकलिन
C. जेम्स टॉड
D. एल. पी. टेसिटोरी
सूची II: (संबद्धता/कार्य)
i. एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान
ii. बैराठ को 'पो-ली-ये-तो-लो' के रूप में दर्ज किया
iii. बीकानेर में चारण साहित्य का सर्वेक्षण किया
iv. लिखित रूप में 'राजपूताना' शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया (1805)
सही कूट चुनिए:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

101. चीरवा के शिलालेख (1273 ईस्वी) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह संस्कृत में लिखा गया है।
II. यह गुहिल शासकों जैत्र सिंह, तेज सिंह और समर सिंह के बारे में जानकारी प्रदान करता है।
III. यह सती प्रथा और मेवाड़ में पाशुपत संप्रदाय की उपस्थिति का उल्लेख करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I और II
(2) II और III
(3) I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

102. वृत्तांतों (ख्यातों) और उनके विषयों के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) नैणसी री ख्यात - विशेष रूप से मेवाड़ का इतिहास
(2) दयालदास री ख्यात - बीकानेर राज्य का इतिहास

(3) बांकीदास री ख्यात - जयपुर राज्य का इतिहास
(4) मुण्डियार री ख्यात - चौहान राजवंश
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

103. 'रेड' (टोंक) के पुरातात्विक स्थल से प्राचीन सिक्कों का एक विशाल भंडार प्राप्त हुआ है। इसे प्रायः प्राचीन भारत का 'टाटा नगर' कहा जाता है। इस भंडार में किस विशिष्ट प्रकार के सिक्कों की बहुलता है?
(1) गुप्तकालीन सोने के सिक्के
(2) इंडो-ग्रीक चांदी के सिक्के
(3) मुगलकालीन तांबे के दाम
(4) आहत सिक्के (पंच-मार्क सिक्के)
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

104. 'चारण' साहित्य के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) यह अपने संरक्षकों की वंशावलियों का विवरण देने से पूर्णतः बचता है।
(2) यह वीर रस की कविता पर अत्यधिक निर्भर है।
(3) चारण कवियों द्वारा डिंगल मुख्य रूप से उपयोग की जाने वाली भाषा थी।
(4) सूर्यमल्ल मिश्रण 19वीं शताब्दी के सर्वाधिक प्रसिद्ध चारण कवियों में से एक थे।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

105. ऐतिहासिक कृतियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'अमर काव्य वंशावली' रणछोड़ भट्ट द्वारा रचित थी।
II. 'राज रत्नाकर' सदाशिव द्वारा लिखी गई थी।
III. 'अजितोदय' जगजीवन भट्ट द्वारा रचित थी।
IV. 'खुमाण रासो' दलपत विजय द्वारा रचित थी।
V. 'राज रूपक' वीर भान द्वारा लिखी गई थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II, III, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

106. मुगल-राजपूत संबंधों के संदर्भ में 'फरमान' क्या था?
(1) मुगल सम्राट की मुहर वाला एक शाही आदेश।
(2) विशेष रूप से राजपूत अधिकारियों द्वारा संधारित एक दैनिक अदालती डायरी।
(3) कृषि भूमि से वार्षिक रूप से एकत्रित किया जाने वाला एक विशिष्ट कर।
(4) अंग्रेजों के साथ औपचारिक रूप से हस्ताक्षरित एक सहायक संधि।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

107. किस ब्रिटिश अधिकारी ने 1805 में 'द मेमोयर्स ऑफ जॉर्ज थॉमस' लिखी थी, जो इस क्षेत्र के लिए 'राजपूताना' शब्द के सर्वप्रथम दर्ज प्रयोग के लिए महत्वपूर्ण है?
(1) स्वयं जॉर्ज थॉमस
(2) कर्नल जेम्स टॉड
(3) जॉन मैल्कम
(4) विलियम फ्रैंकलिन
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

108. निम्नलिखित ऐतिहासिक लेखकों/कवियों पर विचार कीजिए:
I. चन्द बरदाई
II. पद्मनाभ
III. मुहणोत नैणसी
IV. सूर्यमल्ल मिश्रण
उनके समय के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक अनुक्रम है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

109. यह स्थापित करने के लिए कौन सा शिलालेख महत्वपूर्ण है कि जालोर का प्राचीन नाम जाबालिपुर और सांभर का नाम शाकंभरी था?
(1) कुंभलगढ़ शिलालेख
(2) रसिया की छतरी शिलालेख
(3) बिजोलिया शिलालेख
(4) चीरवा शिलालेख
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

110. 'राजपूताना एजेंसी रिकॉर्ड्स' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे मुख्य रूप से भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार और राजस्थान राज्य अभिलेखागार में सुरक्षित हैं।
II. उनमें एजेंट टू द गवर्नर-जनरल (AGG) और रियासतों के बीच पत्राचार सम्मिलित है।
III. वे सती और ठगी जैसी प्रथाओं के दमन से विस्तृत रूप से संबंधित हैं।
IV. वे पूर्णतः डिंगल भाषा में लिखे गए हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

111. बैराठ में अशोक के शिलालेख (भाब्रू शिलालेख) की खोज का निम्नलिखित में से क्या महत्व है?
(1) इसने बौद्ध त्रिरत्न सिद्धांतों में अशोक की प्रगाढ़ आस्था की पुष्टि की।

(2) इसने प्रमाणित किया कि अशोक ने अपने अंतिम वर्षों में जैन धर्म अपना लिया था।
(3) इसने स्थापित किया कि बैराठ ने मौर्य साम्राज्य की राजधानी के रूप में कार्य किया।
(4) इसने दर्शाया कि अशोक क्षेत्रीय राजपूत शासकों द्वारा पराजित हुआ था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

112. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शासक)
A. महाराणा कुंभा
B. पृथ्वीराज चौहान III
C. महाराजा जसवंत सिंह प्रथम
D. राव मालदेव
सूची II: (संबद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ/विवरण)
i. कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति
ii. पृथ्वीराज रासो
iii. मुहणोत नैणसी के संरक्षक
iv. फारसी इतिहासकारों द्वारा 'हशमत वाला राजा' के रूप में वर्णित
सही कूट चुनिए:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

113. निम्नलिखित शिलालेखों पर विचार कीजिए:
I. समिधेश्वर मंदिर शिलालेख
II. मंदसौर शिलालेख
III. घोसुण्डी शिलालेख
IV. कुंभलगढ़ प्रशस्ति
निम्नलिखित में से कौन सा प्राचीनतम से नवीनतम का सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) III, II, I, IV
(2) III, I, II, IV
(3) II, III, I, IV
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

114. 'भाट' परंपरा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भाट राजस्थान के विभिन्न समुदायों के पारंपरिक वंशावली लेखक थे।
II. वे 'बहियां' रखते थे जिनमें उनके संरक्षकों के वंशावली वृक्ष दर्ज होते थे।
III. चारणों के विपरीत, जो मुख्य रूप से राजपूत वीरता पर ध्यान केंद्रित करते थे, भाटों ने जातियों की एक विस्तृत विविधता के लिए अभिलेख सुरक्षित रखे।
IV. अंग्रेजों ने 1818 के तुरंत पश्चात भाट परंपरा को अवैध घोषित कर दिया था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

115. डिंगल साहित्य की उत्कृष्ट कृति माना जाने वाला कौन सा ग्रंथ कवि दुरसा आढ़ा द्वारा "दस सहस्र अश्वों" की शक्ति के समान बताया गया था?
(1) पृथ्वीराज रासो
(2) वंश भास्कर
(3) वेलि क्रिसन रुकमणी री
(4) कान्हड़दे प्रबन्ध
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

116. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
कथन (A): मध्यकालीन राजपूताना का मुद्राशास्त्रीय इतिहास एक स्थानीयकृत अर्थव्यवस्था को प्रकट करता है जहाँ लगभग प्रत्येक प्रमुख रियासत की अपनी स्वतंत्र मुद्रा थी।
कारण (R): मुगल सम्राटों ने अपने आधिपत्य के दौरान सभी राजपूत राज्यों को कोई भी स्थानीय सिक्का ढालने से पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया था, जिससे राज्यों को केवल मुगलों के पतन के पश्चात ही सिक्के ढालने के लिए विवश होना पड़ा।
उपरोक्त के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

117. ऐतिहासिक साहित्य के संदर्भ में 'ख्यात' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(1) एक शाही आदेश
(2) एक भू-राजस्व अभिलेख
(3) प्रसिद्धि या कीर्ति (ऐतिहासिक वृत्तांत)
(4) एक धार्मिक भजन
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

118. मध्यकालीन मारवाड़ की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों, भूमि अधिकार प्रणाली (जागीरदारी) और कराधान के अध्ययन के लिए निम्नलिखित में से कौन सा स्रोत सर्वाधिक प्रामाणिक माना जाता है?
(1) पृथ्वीराज रासो
(2) मारवाड़ रा परगना री विगत
(3) हम्मीर महाकाव्य
(4) कुवलयमाला
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

119. ऐतिहासिक स्रोतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. पुरालेखशास्त्र शिलालेखों का अध्ययन है।
II. मुद्राशास्त्र सिक्कों का अध्ययन है।
III. 'वकील रिपोर्ट' मुगल सम्राटों द्वारा राजपूत राजाओं को भेजी जाती थी।
IV. 'ख्यात' सामान्यतः गद्य में लिखी जाती थीं और क्षेत्रीय राजवंशों के इतिहास का दस्तावेजीकरण करती थीं।
V. बर्नियर जैसे विदेशी यात्री मुगल राजनीति में राजपूतों की सहभागिता पर एक बाह्य दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) I, II, IV और V
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

120. सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (ऐतिहासिक ग्रंथ)

A. पद्मावत
B. राज रत्नाकर
C. नैणसी री ख्यात
D. बीकानेर री ख्यात

सूची II: (लेखक)

i. मलिक मोहम्मद जायसी
ii. सदाशिव
iii. मुहणोत नैणसी
iv. दयालदास

सही कूट चुनिए:

(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित है

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) वे स्थानीय स्तर पर राजपूत राज्यों की वंशावली, प्रशासनिक व्यवस्था और सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को दर्ज करते हैं।
राजस्थान के इतिहास लेखन में क्षेत्रीय वृत्तांतों का विशेष महत्व है। ये स्थानीय स्तर पर राजपूत राज्यों की वंशावली, प्रशासनिक व्यवस्था और तत्कालीन सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों का विवरण देते हैं। इनके माध्यम से शासकों की उपलब्धियों, सुधारों और समाज के विभिन्न वर्गों की विश्वसनीय जानकारी मिलती है। ये ऐतिहासिक तथ्यों को समझने और विश्लेषण करने हेतु अनिवार्य प्राथमिक स्रोत माने जाते हैं।

2. (1) राजपूत राज्यों के प्रशासन द्वारा संधारित एक दैनिक खाता बही।
मध्यकालीन राजस्थान के प्रशासनिक ढांचे में 'बही' का प्रयोग मुख्य रूप से लेखांकन और अभिलेख प्रबंधन हेतु होता था। ये राजपूत राज्यों के प्रशासन द्वारा संधारित दैनिक खाता बहियां थीं, जिनमें आय, व्यय, भू-राजस्व और अन्य वित्तीय गतिविधियों का विवरण दर्ज किया जाता था। ये दस्तावेज तत्कालीन आर्थिक स्थिति, कर प्रणाली और प्रशासनिक कार्यप्रणाली को समझने के लिए अत्यंत प्रामाणिक स्रोत हैं।

3. (3) कांतली
गणेश्वर पुरातात्विक स्थल सीकर जिले में कांतली नदी के तट पर स्थित है। यह ताम्रयुगीन सभ्यता का एक महत्वपूर्ण केंद्र है। उत्खनन में यहाँ से प्रचुर मात्रा में तांबे के उपकरण और कलाकृतियां प्राप्त हुई हैं, जो उन्नत धातु विज्ञान को दर्शाती हैं। इसी कारण गणेश्वर को भारत में ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी कहा जाता है, जो तत्कालीन क्षेत्रीय व्यापार की स्पष्ट झलक देता है।

4. (4) बागोर
भीलवाड़ा जिले में कोठारी नदी के किनारे स्थित बागोर एक प्रमुख मध्यपाषाण कालीन पुरातात्विक स्थल है। यह स्थल प्रारंभिक कृषि और पशुपालन के प्राचीनतम प्रमाणों के लिए विश्व प्रसिद्ध है। यहाँ से मिश्रित अर्थव्यवस्था के संकेत मिलते हैं, जहाँ मानव शिकार के साथ पशुपालन और आदिम कृषि करता था। यह स्थल प्राचीन निवासियों के जीवन स्तर और क्रमिक विकास को समझने में सहायक है।

5. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
आहड़ सभ्यता अपनी तांबा गलाने की विशिष्ट भट्टी और तकनीक के कारण 'ताम्रवती' नगरी कहलाती थी। यहाँ से प्राप्त अवशेष प्राचीन धातु विज्ञान के विकास की पुष्टि करते हैं। वहीं, उदयपुर के बालाथल स्थल से ताम्रपाषाण कालीन विशाल दुर्गनुमा संरचना और बुने हुए कपड़े के दुर्लभ टुकड़े मिले हैं। ये दोनों स्थल राजस्थान की समृद्ध प्रागैतिहासिक विरासत और तकनीकी कौशल के जीवंत प्रमाण हैं।

6. (2) यहाँ से राजस्थान में गुप्त काल के सोने के सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार प्राप्त हुआ है।
कालीबंगा एक सुव्यवस्थित हड़प्पा कालीन स्थल है, जहाँ से जुते हुए खेतों के प्राचीन साक्ष्य मिले हैं। यहाँ अग्नि वेदिकाएं धार्मिक महत्व दर्शाती हैं, जबकि भवनों की दरारें प्राचीन भूकंप के प्रमाण देती हैं। राजस्थान में गुप्तकालीन सोने के सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार भरतपुर के बयाना से प्राप्त हुआ है, न कि कालीबंगा से। कालीबंगा का संबंध मुख्य रूप से सैंधव सभ्यता से है।

7. (4) अशोक
जयपुर का बैराठ मौर्यकालीन इतिहास का प्रमुख केंद्र रहा है। इस स्थल पर सम्राट अशोक का प्रसिद्ध भाब्रू शिलालेख खोजा गया था, जो बौद्ध धर्म के प्रति उनकी प्रगाढ़ श्रद्धा को प्रमाणित करता है। यहाँ से प्राप्त गोलाकार बौद्ध मंदिर के अवशेष भारत में मंदिर स्थापत्य के प्रारंभिक रूप को दर्शाते हैं। यह स्थल मौर्य साम्राज्य के विस्तार और बौद्ध धर्म के प्रचार की कड़ियाँ जोड़ता है।

8. (1) गिलुण्ड - राजसमंद
राजस्थान के पुरातात्विक स्थल राज्य के इतिहास की गवाही देते हैं। गिलुण्ड एक महत्वपूर्ण बनास संस्कृति का स्थल है, जो राजसमंद जिले में स्थित है। इसके विपरीत, ओझियाना भीलवाड़ा में, कुराड़ा नागौर में और नोहा भरतपुर जिले में स्थित है। गिलुण्ड के उत्खनन से ताम्रपाषाण कालीन जीवन शैली और मृदभांड निर्माण कला की जानकारी मिलती है, जो इसे ऐतिहासिक अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण बनाती है।

9. (3) जोधपुरा (जयपुर)
जयपुर जिले में साबी नदी के तट पर स्थित जोधपुरा स्थल लोहे के प्राचीन इतिहास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहाँ से प्रारंभिक ऐतिहासिक काल की लोहे को गलाने वाली भट्टियों के अवशेष मिले हैं, जो उन्नत धातु कर्म कौशल को प्रमाणित करते हैं। यह स्थल लोहे के उपयोग, तत्कालीन सामाजिक-आर्थिक गतिविधियों और तकनीकी विकास को समझने के लिए एक अनिवार्य एवं विश्वसनीय ऐतिहासिक स्रोत है।

10. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल प्राचीन नदियों के तटों पर विकसित हुए। कालीबंगा घग्गर नदी के किनारे स्थित है, जहाँ सरस्वती सभ्यता के अवशेष मिलते हैं। बागोर सभ्यता कोठारी नदी के किनारे विकसित हुई, जबकि आहड़ सभ्यता बनास नदी तंत्र का हिस्सा है। बैराठ सभ्यता का विकास बाणगंगा नदी के

किनारे हुआ था। इन नदियों ने तत्कालीन बस्तियों के विकास में आधारभूत भूमिका निभाई थी।

11. (4) कालीबंगा
आहड़, बालाथल और गिलुण्ड बनास संस्कृति का हिस्सा हैं और ताम्रपाषाण कालीन ग्रामीण संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। यहाँ तांबे के उपकरणों का व्यापक उपयोग होता था। इसके विपरीत, कालीबंगा एक प्रमुख कांस्ययुगीन नगरीय सभ्यता है, जिसका संबंध सिंधु घाटी सभ्यता के विकसित चरणों से है। कालीबंगा की नगर नियोजन प्रणाली अन्य तीनों ग्रामीण बस्तियों से पूर्णतः भिन्न है, जो इसे विषम बनाती है।

12. (1) I और II
राजस्थान के पुरालेखीय स्रोतों में प्रशस्तियां शासकों की विजयों और उपलब्धियों की प्रशंसा में लिखे गए अभिलेख हैं। ताम्रपत्रों का उपयोग मुख्य रूप से धार्मिक दान और भूमि अनुदानों को दर्ज करने हेतु किया जाता था। प्राचीन शिलालेखों में संस्कृत, प्राकृत और स्थानीय भाषाओं का मिश्रण मिलता है। यह कहना गलत है कि 10वीं शताब्दी पूर्व के सभी शिलालेख केवल अपभ्रंश में थे, क्योंकि संस्कृत निरंतर प्रयुक्त थी।

13. (3) संकर्षण और वासुदेव (भागवत संप्रदाय)
चित्तौड़गढ़ में स्थित घोसुण्डी शिलालेख राजस्थान के धार्मिक इतिहास का अनमोल दस्तावेज है। यह भागवत संप्रदाय के प्रसार और भगवान संकर्षण एवं वासुदेव की पूजा का प्राचीनतम प्रामाणिक प्रमाण देता है। इससे स्पष्ट होता है कि प्राचीन काल में यहाँ अश्वमेध यज्ञ जैसे अनुष्ठान आयोजित होते थे। वैष्णव धर्म की जड़ें इस क्षेत्र में अत्यंत गहरी और प्राचीन काल से ही व्यापक रूप से स्थापित थीं।

14. (1) दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व
घोसुण्डी शिलालेख ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि इसकी रचना दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में हुई थी। यह ब्राह्मी लिपि और संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण है, जो इसे प्राचीनतम लिखित अभिलेखों की श्रेणी में रखता है। यह मौर्योत्तर काल के दौरान क्षेत्र की धार्मिक गतिविधियों और भागवत धर्म के उत्थान का प्रमुख स्रोत है। इसकी प्राचीनता इसे भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के अध्ययन का आधार बनाती है।

15. (1) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या है।
पुरालेखशास्त्र को इतिहास निर्माण हेतु सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत माना जाता है क्योंकि शिलालेख प्रायः उन घटनाओं के समकालीन होते हैं। पांडुलिपियों के विपरीत, पत्थरों या धातु पर उकेरे गए शिलालेखों में बाद में छेड़छाड़ की संभावना बहुत कम होती है। इसलिए, शिलालेखों से प्राप्त जानकारी को ऐतिहासिक तथ्यों के सत्यापन के लिए अत्यंत सटीक, प्रामाणिक और वस्तुनिष्ठ आधार माना जाता है।

16. (2) वैदिक यज्ञों का अनुष्ठान (जैसे त्रिरात्र)।
जयपुर के बरनाला में पाए गए यूप स्तंभ प्राचीन राजस्थान में वैदिक धर्म और कर्मकाण्डों के व्यापक प्रभाव के प्रमाण हैं। ये मुख्य रूप से वैदिक यज्ञों, जैसे त्रिरात्र यज्ञ, के संपन्न होने की स्मृति में स्थापित किए गए थे। इन शिलालेखों से तत्कालीन शासकों की धार्मिक आस्था और समाज में ब्राह्मणवादी कर्मकाण्डों की प्रधानता की जानकारी प्राप्त होती है। ये स्तंभ प्राचीन यज्ञ परंपरा के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

17. (2) मंदसौर शिलालेख
मंदसौर शिलालेख रेशम बुनकरों की एक संगठित श्रेणी के बारे में दुर्लभ जानकारी प्रदान करता है। यह उल्लेख करता है कि बुनकरों का समूह लाट प्रदेश से आया था और उन्होंने यहाँ भव्य सूर्य मंदिर का निर्माण करवाया था। यह शिलालेख तत्कालीन समाज में व्यापारिक संगठनों की शक्ति, आर्थिक योगदान और धार्मिक गतिविधियों में उनकी सहभागिता के साथ स्थापत्य कला की प्रगति पर भी विस्तृत प्रकाश डालता है।

18. (1) कुमारगुप्त I
436 ईस्वी का मंदसौर शिलालेख गुप्त सम्राट कुमारगुप्त प्रथम के शासनकाल में उत्कीर्ण किया गया था। इसमें समृद्ध व्यापारिक परिदृश्य और सामाजिक गतिशीलता का वर्णन मिलता है, जब रेशम बुनकर लाट प्रदेश से मंदसौर में आकर बस गए थे। यह अभिलेख कुमारगुप्त के काल की राजनीतिक स्थिरता और सांस्कृतिक उन्नति को दर्शाता है। यह स्पष्ट करता है कि गुप्त काल में कला और व्यापार को शाही संरक्षण प्राप्त था।

19. (3) यह एक जैन मंदिर के समर्पण को चिह्नित करता है और जैन संवत का उल्लेख करता है।
अजमेर के निकट पाया गया बरली शिलालेख राजस्थान के प्राचीनतम पुरालेखीय साक्ष्यों में से एक है। इसका मुख्य विषय एक प्राचीन जैन मंदिर का समर्पण है और यह जैन संवत के उपयोग का उल्लेख करता है। यह अभिलेख इस क्षेत्र में जैन धर्म की प्राचीनता और प्रभाव को समझने में सहायक है। ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्ण यह शिलालेख मौर्य काल की भाषाई और धार्मिक परंपराओं का मूल्यवान स्रोत है।

20. (4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
राजस्थान के शिलालेख विभिन्न ऐतिहासिक तथ्यों को उजागर करते हैं। घोसुण्डी शिलालेख भागवत धर्म के प्राचीन साक्ष्य देता है। मंदसौर शिलालेख रेशम बुनकरों और सूर्य मंदिर निर्माण का उल्लेख करता है। बिजोलिया शिलालेख चौहान वंशावली और प्राचीन भौगोलिक नामों का महत्वपूर्ण स्रोत है। वहीं, चीरवा शिलालेख मेवाड़ के गुहिल शासकों की उपलब्धियों का विवरण प्रदान करता है, जो क्षेत्रीय इतिहास लेखन हेतु अत्यंत आवश्यक है।

21. (3) बिजोलिया शिलालेख
1170 ईस्वी का बिजोलिया शिलालेख चौहानों के इतिहास का महत्वपूर्ण स्रोत है। यह स्पष्ट उल्लेख करता है कि चौहान शासक 'वत्स गोत्र' के ब्राह्मणों के वंशज थे। इसके अलावा, यह सांभर और अजमेर के चौहानों की वंशावली के साथ राजस्थान के कई नगरों के प्राचीन नामों की जानकारी देता है। यह अभिलेख चौहानों की उत्पत्ति और प्रारंभिक विस्तार के अध्ययन हेतु एक प्रामाणिक आधार प्रदान करता है।

22. (1) I, II और III
बिजोलिया शिलालेख 1170 ईस्वी का प्रमुख ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसकी रचना गुणभद्र ने की थी। यह राजस्थान के प्राचीन नगरों, जैसे जालोर हेतु जाबालिपुर और नागौर हेतु अहिच्छत्रपुर की जानकारी देता है। यह मुख्य रूप से सांभर और अजमेर के चौहानों की वंशावली हेतु समर्पित है, न कि मेवाड़ के गुहिल शासकों हेतु। चौहान इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु यह एक अनिवार्य और विश्वसनीय पुरालेखीय स्रोत है।

23. (4) महेश
1460 ईस्वी का कुंभलगढ़ शिलालेख मेवाड़ के इतिहास का विस्तृत अभिलेख है। इसकी रचना कवि महेश द्वारा की गई थी, जिन्होंने महाराणा कुंभा की उपलब्धियों और गुहिल शासकों की वंशावली को उकेरा है। यह शिलालेख राजनीतिक घटनाओं के साथ सामाजिक संरचना और धार्मिक विश्वासों पर भी प्रकाश डालता है। कवि महेश का यह कार्य मेवाड़ के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक गौरव को अक्षुण्ण रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

24. (1) कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति
चित्तौड़गढ़ दुर्ग की कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति महाराणा कुंभा की बहुमुखी प्रतिभा और महान उपलब्धियों का जीवंत गुणगान है। इसमें कुंभा को उनकी वीरता और विद्वत्ता हेतु 'दान-गुरु' एवं 'राज-गुरु' जैसी उपाधियों से विभूषित किया गया है। यह अभिलेख उनके द्वारा विजित क्षेत्रों, रचित ग्रंथों और शासनकाल की सांस्कृतिक उन्नति का विवरण देता है, जो उन्हें मध्यकालीन भारत के अद्वितीय शासक के रूप में स्थापित करता है।

25. (3) महाराणा मोकल
चित्तौड़गढ़ स्थित समिधेश्वर मंदिर का शिलालेख महाराणा मोकल के शासनकाल से संबंधित है। यह मंदिर के जीर्णोद्धार और मोकल द्वारा कला एवं धर्म को दिए गए संरक्षण का विवरण देता है। यद्यपि मूल निर्माण राजा भोज परमार ने करवाया था, परंतु मोकल ने इसका पुनरुद्धार कर अपनी धार्मिक आस्था प्रकट की। यह शिलालेख मोकल की सांस्कृतिक उपलब्धियों और मेवाड़ के धार्मिक स्थापत्य के इतिहास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है।

26. (1) भूमि या विशेषाधिकारों के अनुदान को दर्ज करने वाला एक ताम्र पट्टिका का दस्तावेज।
मध्यकालीन राजस्थान में 'ताम्रपत्र' एक कानूनी रूप से मान्य दस्तावेज था। ये तांबे की पट्टिकाओं पर उत्कीर्ण होते थे और इनका उपयोग शासकों द्वारा धार्मिक संस्थानों या कुलीनों को दिए गए भूमि अनुदानों को दर्ज करने हेतु किया जाता था। ताम्रपत्रों पर प्रायः अनुदान देने वाले राजा का नाम, तिथि और भूमि का विवरण होता था, जिससे तत्कालीन राजस्व प्रणाली और दान परंपरा की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।

27. (4) इसकी खोज मारवाड़ क्षेत्र में हुई थी।
1428 ईस्वी का श्रृंगी ऋषि शिलालेख महाराणा मोकल के शासनकाल का महत्वपूर्ण अभिलेख है, जो मेवाड़ के उदयपुर जिले में पाया गया था। यह मेवाड़ के महान शासकों, जैसे हम्मीर और लाखा की वीरता का विवरण देता है। इसके अतिरिक्त, यह मोकल द्वारा जनहित में किए गए बावड़ी निर्माण कार्यों का आधिकारिक उल्लेख करता है। यह अभिलेख 15वीं शताब्दी के मेवाड़ के राजनीतिक और सामाजिक इतिहास का मील का पत्थर है।

28. (1) बरली शिलालेख, घोसुण्डी शिलालेख, बिजोलिया शिलालेख, कुंभलगढ़ शिलालेख
राजस्थान के शिलालेखों का कालानुक्रमिक क्रम उनकी ऐतिहासिक प्राचीनता दर्शाता है। बरली शिलालेख प्राचीनतम है, जो मौर्य काल का है। इसके पश्चात दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का घोसुण्डी शिलालेख आता है। मध्यकाल में 1170 ईस्वी का बिजोलिया शिलालेख चौहानों की जानकारी देता है और अंत में 1460 ईस्वी का कुंभलगढ़ शिलालेख मेवाड़ का विवरण देता है। यह क्रम राज्य के निरंतर विकसित होते ऐतिहासिक ढांचे को दर्शाता है।

29. (3) भू-राजस्व और कृषि उत्पादन के संबंध में सांख्यिकीय आंकड़े।
राजपूत राज्यों के प्रशासनिक अभिलेखों में 'तोजी' का विशिष्ट स्थान है। इनमें मुख्य रूप से राज्य के भू-राजस्व, कृषि उत्पादन और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से संबंधित महत्वपूर्ण सांख्यिकीय आंकड़े संग्रहित होते थे। तोजी अभिलेखों के माध्यम से इतिहासकारों को तत्कालीन कर प्रणालियों, फसलों के प्रकार और किसानों की आर्थिक स्थिति की सटीक जानकारी मिलती है। ये दस्तावेज मध्यकालीन राजस्थान की ग्रामीण संरचना को समझने हेतु अनिवार्य सांख्यिकीय स्रोत हैं।

30. (4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
मुगल काल में विभिन्न आधिकारिक दस्तावेजों का प्रचलन था। 'फरमान' सम्राट द्वारा जारी सर्वोच्च शाही आदेश होता था। 'निशान' शाही परिवार के राजकुमार द्वारा जारी आदेश था। 'मंशूर' सम्राट द्वारा जारी एक विशेष श्रेणी का आदेश था, जबकि 'अखबारात' मुगल दरबार की दैनिक घटनाओं को दर्ज करने वाले समाचार पत्र थे। ये सभी स्रोत मुगल-राजपूत संबंधों और तत्कालीन शासन व्यवस्था को समझने हेतु अत्यंत विश्वसनीय हैं।

31. (1) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या है।
वकील प्रतिवेदन मुगल काल के दौरान राजपूताना के राजनीतिक इतिहास को समझने हेतु विश्वसनीय प्राथमिक स्रोत हैं। ये प्रतिवेदन उन राजपूत दूतों द्वारा तैयार किए जाते थे, जो मुगल दरबार में प्रतिनिधि थे। इनमें सम्राट की मनोदशा, दरबार की आंतरिक राजनीति और महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णयों का तत्कालीन विवरण होता था। इस प्रकार, ये प्रतिवेदन मुगल-राजपूत संबंधों की जटिलताओं और तत्कालीन कूटनीतिक गतिविधियों का जीवंत साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं।

32. (1) I, II, III और IV
मुगल काल में 'अखबारात' दैनिक गतिविधियों के दर्पण थे, जबकि 'रुक्का' व्यक्तिगत पत्रों हेतु प्रयुक्त होते थे। 'सनद' के

माध्यम से राज्य द्वारा विशिष्ट अधिकार या जागीरें प्रदान की जाती थीं। 'खास-रुक्का' स्वयं शासक अपने हाथ से लिखता था, जो इसकी महत्ता को दर्शाता है। 'अर्जी' वास्तव में अधीनस्थ द्वारा अपने वरिष्ठ को भेजा गया औपचारिक प्रार्थना पत्र होता था। ये सभी दस्तावेज प्रशासनिक कार्यप्रणाली के प्रमुख अंग थे।

33. (2) चन्द बरदाई
'पृथ्वीराज रासो' हिंदी साहित्य और राजस्थान के इतिहास की कालजयी कृति है, जिसकी रचना चन्द बरदाई ने की थी। यह महाकाव्य पृथ्वीराज चौहान के जीवन, वीरता और मुहम्मद गोरी के साथ उनके युद्धों का विस्तृत विवरण प्रदान करता है। यद्यपि इसकी ऐतिहासिक सटीकता पर बहस होती है, फिर भी यह ग्रंथ राजपूत वीरता की परंपरा और मध्यकालीन सांस्कृतिक परिवेश को समझने के लिए एक अपरिहार्य ऐतिहासिक स्रोत है।

34. (1) जयानक द्वारा रचित पृथ्वीराज विजय को रासो की तुलना में अधिक ऐतिहासिक रुप से विश्वसनीय माना जाता है।
'पृथ्वीराज रासो' और 'पृथ्वीराज विजय' दोनों का महत्व है, परंतु जयानक रचित संस्कृत ग्रंथ 'पृथ्वीराज विजय' तथ्यों की सटीकता में अधिक विश्वसनीय माना जाता है। रासो में काव्यगत अतिशयोक्ति और बाद के प्रक्षेप अधिक मिलते हैं, जबकि पृथ्वीराज विजय समकालीन घटनाओं और तिथियों के अधिक निकट है। जयानक ने विजयों का सजीव वर्णन किया है, जो पुरालेखीय साक्ष्यों के साथ मेल खाता है और ऐतिहासिक पुनर्निर्माण में सहायक है।

35. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
'हम्मीर महाकाव्य' नयनचन्द्र सूरी द्वारा रचित महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ है। यह रणथंभौर के प्रतापी चौहान शासक हम्मीर देव की वीरता और बलिदानों का विस्तृत विवरण देता है। इसमें अलाउद्दीन खिलजी की घेराबंदी और हम्मीर के संघर्षों का सजीव चित्रण है। यह महाकाव्य युद्धों की जानकारी के साथ तत्कालीन राजनीतिक अस्थिरता और राजपूतों के नैतिक मूल्यों एवं शरणागत की रक्षा के सिद्धांतों पर व्यापक प्रकाश डालता है।

36. (4) उपरोक्त में से कोई नहीं (क्योंकि कुवलयमाला उद्योतन सूरी द्वारा रचित थी)
प्रश्न में दिए गए विकल्पों में से कोई भी जीवा धर द्वारा रचित ग्रंथ नहीं है। 'कुवलयमाला' की रचना उद्योतन सूरी ने की थी, जबकि 'वंश भास्कर' सूर्यमल्ल मिश्रण की कृति है। ऐतिहासिक ग्रंथों के लेखकों का सही ज्ञान होना इतिहास के वस्तुनिष्ठ अध्ययन हेतु आवश्यक है। जीवा धर जैसे विद्वानों ने व्याकरण पर कार्य किया, परंतु यहाँ दी गई प्रसिद्ध कृतियां अन्य प्रमुख लेखकों से संबंधित हैं जो महत्वपूर्ण आधार स्तंभ हैं।

37. (3) जालोर
'कुवलयमाला' प्राकृत भाषा का प्रसिद्ध ग्रंथ है, जिसकी रचना 778 ईस्वी में जैन आचार्य उद्योतन सूरी ने की थी। इसकी रचना राजस्थान के जालोर नगर में हुई थी, जिसे तब 'जाबालिपुर' कहा जाता था। यह ग्रंथ तत्कालीन समाज, व्यापार, भाषाओं और धार्मिक स्थितियों की बहुमूल्य जानकारी देता है। जालोर तब शिक्षा और संस्कृति का बड़ा केंद्र था। कुवलयमाला की रचना इस क्षेत्र की प्राचीन बौद्धिक समृद्धि को रेखांकित करती है।

38. (2) कान्हड़देव चौहान और अलाउद्दीन खिलजी के बीच जालोर का युद्ध।
'कान्हड़दे प्रबन्ध' राजस्थान के मध्यकालीन इतिहास का गौरवशाली ग्रंथ है। इसका मुख्य विषय जालोर के शासक कान्हड़देव चौहान और अलाउद्दीन खिलजी के बीच हुआ भीषण युद्ध है। इसमें खिलजी के आक्रमण, राजपूतों का अदम्य साहस और वीरों के बलिदान का सजीव वर्णन है। यह ग्रंथ तत्कालीन सैन्य रणनीति, स्वाभिमान की रक्षा के मूल्यों और क्षेत्रीय संघर्षों को समझने के लिए एक अनिवार्य एवं प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोत माना जाता है।

39. (4) पद्मनाभ
'कान्हड़दे प्रबन्ध' की रचना प्रसिद्ध कवि पद्मनाभ द्वारा की गई थी। उन्होंने इस महाकाव्य के माध्यम से जालोर के चौहान शासकों की वीरता और अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध उनके संघर्ष को अमर बनाया। पद्मनाभ ने युद्ध की घटनाओं, बलिदानों और तत्कालीन सामाजिक परिवेश का सजीव चित्रण किया है। यह ग्रंथ न केवल ऐतिहासिक दस्तावेज है, बल्कि राजस्थानी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। इसमें क्षेत्रीय इतिहास के प्रति गौरव स्पष्ट झलकता है।

40. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान का साहित्य महान लेखकों और अमर कृतियों से समृद्ध है। 'एकलिंग माहात्म्य' की रचना कान्हा व्यास ने की थी, जो मेवाड़ की महत्ता दर्शाता है। 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' पृथ्वीराज राठौड़ की अद्भुत काव्य रचना है। 'वंश भास्कर' सूर्यमल्ल मिश्रण की कालजयी कृति है। वहीं, 'नैणसी री ख्यात' मुहणोत नैणसी द्वारा रचित है, जिसे प्रथम व्यवस्थित ख्यात माना जाता है। ये सभी ग्रंथ राज्य के इतिहास के प्रमुख आधार स्तंभ हैं।

41. (3) राज रुपक - बांकीदास
'राज रुपक' ग्रंथ के वास्तविक लेखक वीर भान रतनू हैं, न कि बांकीदास। बांकीदास अपनी प्रसिद्ध कृति 'बांकीदास री ख्यात' हेतु जाने जाते हैं। अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं: 'अचलदास खींची री वचनिका' शिवदास गाडण की रचना है, 'पाथल और पीथल' कन्हैयालाल सेठिया की प्रसिद्ध कविता है और 'हम्मीर रासो' जोधराज ने लिखी थी। ऐतिहासिक ग्रंथों और लेखकों की पहचान करना तत्कालीन घटनाओं के सही संदर्भ हेतु आवश्यक है।

42. (1) I, II और III
'मुहणोत नैणसी री ख्यात' राजस्थान की प्रथम महत्वपूर्ण ख्यात है, जिसकी रचना डिंगल भाषा में हुई थी। यह ग्रंथ केवल मारवाड़ तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें मेवाड़, बीकानेर और जैसलमेर का भी विस्तृत ऐतिहासिक विवरण मिलता है।

नैणसी ने साक्ष्यों के संकलन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया था, जो इसे तत्कालीन अन्य साहित्यिक स्रोतों की तुलना में अधिक व्यापक, विश्वसनीय और ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाता है।

43. (4) मारवाड़ रा परगना री विगत
मुहणोत नैणसी द्वारा रचित 'मारवाड़ रा परगना री विगत' राजस्थान के इतिहास का अद्वितीय ग्रंथ है। विस्तृत सांख्यिकीय जानकारी के कारण इसे 'राजस्थान का गजेटियर' कहा जाता है। इसमें मारवाड़ के परगनों की जनसंख्या, कृषि भूमि, सिंचाई के साधनों और राजस्व आंकड़ों का सूक्ष्म विवरण मिलता है। नैणसी का यह कार्य उनकी गहन प्रशासनिक समझ को दर्शाता है, जो मध्यकालीन आर्थिक इतिहास के पुनर्निर्माण हेतु एक अनिवार्य दस्तावेज है।

44. (2) मुंशी देवी प्रसाद
मुंशी देवी प्रसाद ने ही मुहणोत नैणसी की विलक्षण प्रतिभा और विस्तृत आंकड़ों को देखते हुए उन्हें "राजपूताना का अबुल फजल" कहा था। जिस प्रकार अबुल फजल ने 'आईन-ए-अकबरी' लिखी, उसी प्रकार नैणसी ने राजस्थान के इतिहास और प्रशासन का व्यवस्थित दस्तावेजीकरण किया। यह तुलना नैणसी के ऐतिहासिक योगदान की महत्ता और जानकारियों की सूक्ष्मता को रेखांकित करती है, जो आज भी शोधकर्ताओं हेतु प्रेरणास्रोत और प्रामाणिक आधार है।

45. (2) कथन और कारण दोनों सत्य हैं परंतु कारण, कथन की सही व्याख्या नहीं है।
'बांकीदास री ख्यात' अनूठी शैली हेतु प्रसिद्ध है क्योंकि इसमें घटनाओं को निरंतर कहानी के बजाय स्वतंत्र टिप्पणियों के रूप में दर्ज किया गया है। यह संरचना इसे पारंपरिक ख्यातों से अलग बनाती है। बांकीदास जोधपुर के महाराजा मान सिंह के दरबारी कवि और निष्पक्ष इतिहासकार थे। हालाँकि दोनों कथन सत्य हैं, परंतु महाराजा का दरबारी होना उसकी विशिष्ट संक्षिप्त लेखन शैली का एकमात्र कारण या व्याख्या नहीं माना जा सकता।

46. (4) बीकानेर
'दयालदास री ख्यात' बीकानेर राज्य के इतिहास को समझने हेतु प्रामाणिक स्रोत है। इसके लेखक दयालदास सिंधायच बीकानेर के महाराजा रतन सिंह के दरबारी थे। इस ख्यात में बीकानेर के राठौड़ राजवंश की स्थापना से लेकर महाराजा रतन सिंह के शासनकाल तक की घटनाओं का विवरण मिलता है। इसमें युद्धों, वंशावली के साथ प्रशासनिक व्यवस्था पर भी प्रकाश डाला गया है। यह ग्रंथ बीकानेर के क्षेत्रीय इतिहास पुनर्निर्माण में सहायक है।

47. (1) मारवाड़ के राठौड़
'मुण्डियार री ख्यात' मुख्य रूप से मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के इतिहास का दस्तावेजीकरण करने वाली महत्वपूर्ण कृति है। मुण्डियार के चारणों द्वारा रचित होने के कारण इसका यह नाम पड़ा। इसमें राव सीहा से लेकर मारवाड़ के उत्तरवर्ती शासकों तक की वंशावली और युद्धों का विवरण मिलता है। यह ग्रंथ राठौड़ों के उत्थान और मारवाड़ में उनके राजनीतिक प्रभुत्व को समझने के लिए ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत मूल्यवान स्रोत है।

48. (1) I, II, IV, III
राजस्थान के प्रमुख लेखकों का कालानुक्रमिक क्रम उनके युग को दर्शाता है। चन्द बरदाई 12वीं शताब्दी में पृथ्वीराज चौहान के समकालीन थे। मुहणोत नैणसी 17वीं शताब्दी में महाराजा जसवंत सिंह के मंत्री थे। बांकीदास 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में दरबारी कवि थे, जबकि सूर्यमल्ल मिश्रण 19वीं शताब्दी के मध्य में बूंदी के प्रसिद्ध कवि रहे। यह क्रम प्राचीन वीरता महाकाव्यों से आधुनिक राष्ट्रवादी लेखन के विकास को स्पष्ट करता है।

49. (2) वे पारंपरिक चारण और कवि थे जिन्होंने राजपूत कुलों के ऐतिहासिक कारनामों को सुरक्षित रखा।
'चारण' और 'भाट' राजस्थान की अनूठी सांस्कृतिक परंपरा के संरक्षक रहे हैं। ये समुदाय पारंपरिक रूप से दरबारी कवि और वंशावली लेखक थे। इनका मुख्य कार्य राजपूत राजवंशों की वंशावली और शौर्यपूर्ण कार्यों को सुरक्षित रखना था। उनके द्वारा रचित काव्य और ख्यातें आज भी राजस्थान के इतिहास पुनर्निर्माण हेतु आधारभूत स्रोत हैं। उन्होंने अपनी लेखनी से क्षेत्र की वीरतापूर्ण संस्कृति को पीढ़ियों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

50. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
राजस्थानी साहित्य की शैलियां घटनाओं को अनूठे ढंग से प्रस्तुत करती हैं। 'वचनिका' गद्य और पद्य का मिश्रण है, जैसे 'अचलदास खींची री वचनिका'। 'विगत' एक विस्तृत सांख्यिकीय विवरण है। 'वेलि' एक छंदबद्ध रचना है, जो पौराणिक या ऐतिहासिक कथाओं पर आधारित होती है। 'मरसिया' एक शोकगीत है, जो किसी महान योद्धा की मृत्यु पर उनके गुणों और वीरता का स्मरण करने हेतु सम्मानपूर्वक लिखा जाता है।

51. (3) बूंदी
'वंश भास्कर' राजस्थान के साहित्यिक इतिहास की कालजयी कृति है, जो मुख्य रूप से बूंदी राज्य के इतिहास का विवरण देती है। इसकी रचना प्रसिद्ध कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने की थी। यद्यपि वे इसे पूर्ण नहीं कर सके, परंतु उनके दत्तक पुत्र मुरारीदान ने इसे पूरा किया। यह ग्रंथ न केवल बूंदी के हाड़ा चौहानों की वीरता का वर्णन करता है, बल्कि भारतीय राजनीति और सामाजिक ढांचे पर भी गहन टिप्पणियाँ देता है।

52. (1) I, II और III
'वेलि क्रिसन रुकमणी री' डिंगल साहित्य की उत्कृष्ट कृति है, जिसकी रचना बीकानेर के पृथ्वीराज राठौड़ ने की थी। यह ग्रंथ उत्तरी मारवाड़ी बोली में लिखा गया है। विद्वान एल. पी. टेसिटोरी ने इसकी काव्यगत योग्यता की प्रशंसा की थी। इस ग्रंथ का मुख्य विषय भगवान श्री कृष्ण और रुक्मणी के विवाह की पौराणिक कथा है, न कि राव जोधा के सैन्य अभियानों का कोई ऐतिहासिक विवरण। यह साहित्यिक दृष्टि से अमूल्य है।

53. (3) आहत सिक्के (पंच-मार्क सिक्के)।
राजस्थान में पाए गए 'आहत सिक्के' क्षेत्र के प्राचीनतम मुद्राशास्त्रीय प्रमाण हैं। ये सिक्के प्रायः चांदी या तांबे के बने होते थे और इन पर प्रतीकों, जैसे सूर्य, पेड़ या मछली की छाप लगाई जाती थी। इन पर कोई लिखित लेख नहीं होता, जो इनकी प्राचीनता का परिचायक है। राजस्थान के रेड और बैराठ जैसे स्थलों से ये बड़ी संख्या में मिले हैं, जो प्राचीन समृद्ध व्यापार और विकसित अर्थव्यवस्था को दर्शाते हैं।

54. (2) नगर (टोंक)
टोंक जिले में स्थित 'नगर' पुरातात्विक दृष्टि से महत्वपूर्ण है क्योंकि यहाँ से मालव जनपद के हजारों तांबे के सिक्के मिले हैं। यह प्राचीन राजस्थान में मालवों के राजनीतिक प्रभाव और आर्थिक व्यवस्था को प्रमाणित करता है। इन सिक्कों पर 'मालवानां जयः' जैसे लेख मिलते हैं, जो उनकी विजयों को दर्शाते हैं। यह स्थल मौर्योत्तर काल के दौरान महत्वपूर्ण गणतांत्रिक केंद्र रहा था, और ये साक्ष्य क्षेत्रीय इतिहास पुनर्निर्माण में सहायक हैं।

55. (1) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या है।
बैराठ से प्राप्त 36 चांदी के सिक्कों में से 28 इंडो-ग्रीक शासकों के हैं, जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। इनमें 16 सिक्के राजा मिनांडर के हैं, जो इस क्षेत्र पर यूनानी प्रभाव या समृद्ध व्यापारिक तंत्र की उपस्थिति को सिद्ध करते हैं। यह मुद्राशास्त्रीय साक्ष्य स्पष्ट करता है कि प्राचीन बैराठ न केवल मौर्यों का केंद्र था, बल्कि बाद में विदेशी व्यापारिक संबंधों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी प्रमुख स्थल रहा।

56. (1) I, II, III और V
राजस्थान का मुद्राशास्त्रीय इतिहास समृद्ध है। चित्तौड़गढ़ के नगरी में शिबि जनपद के सिक्के मिले हैं, जबकि उत्तरी राजस्थान में यौधेय सिक्के पाए जाते हैं। भरतपुर का बयाना भंडार गुप्तकालीन सोने के सिक्कों का विशाल संग्रह है। इंडो-ग्रीक सिक्कों पर अक्सर द्विभाषी लेख मिलते हैं। यह कहना गलत है कि आहत सिक्के सोने के होते थे, क्योंकि ये मुख्य रूप से चांदी और तांबे की धातुओं से निर्मित किए जाते थे।

57. (3) गुप्त
भरतपुर का 'बयाना भंडार' भारत के मुद्राशास्त्रीय इतिहास का मील का पत्थर है। यहाँ से गुप्त राजवंश के हजारों सोने के सिक्के मिले हैं, जो गुप्त सम्राटों की आर्थिक समृद्धि और सुदृढ़ शासन को प्रमाणित करते हैं। इसमें चन्द्रगुप्त, समुद्रगुप्त और कुमारगुप्त जैसे शासकों द्वारा जारी मुद्राएं सम्मिलित हैं। यह खोज न केवल गुप्तकालीन कला मानकों को दर्शाती है, बल्कि तत्कालीन राजस्थान में गुप्त साम्राज्य के व्यापक विस्तार की पुष्टि भी करती है।

58. (1) गजशाही - मेवाड़
मध्यकालीन राजस्थान की रियासतों में विशिष्ट मुद्राएं जारी करने की परंपरा थी। गजशाही सिक्के बीकानेर रियासत की प्रसिद्ध मुद्रा थे, न कि मेवाड़ की। मेवाड़ में मुख्य रूप से स्वरुपशाही और चांदोड़ी सिक्के प्रचलित थे। इसके विपरीत, जैसलमेर में अखैशाही, जयपुर में झाड़शाही और जोधपुर में विजयशाही सिक्कों का प्रचलन था। ये सिक्के प्रायः जारी करने वाले शासकों के नाम पर होते थे, जो रियासत की स्वतंत्र आर्थिक पहचान दर्शाते थे।

59. (4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान की विभिन्न रियासतों की अपनी मुद्राएं पहचान का प्रतीक थीं। मेवाड़ में 'स्वरूपशाही' सिक्कों का प्रचलन था। मारवाड़ में 'डब्बूशाही' सिक्कों का उपयोग होता था। धौलपुर रियासत 'तमंचा शाही' मुद्राओं हेतु प्रसिद्ध थी, जिन पर पिस्तौल का चिन्ह था। वहीं, जयपुर रियासत में 'झाड़शाही' सिक्के चलते थे, जिन पर झाड़ का चिन्ह अंकित था। ये सिक्के तत्कालीन क्षेत्रीय व्यापार और राज्य की आर्थिक स्थिति के महत्वपूर्ण सूचक माने जाते हैं।

60. (2) झालावाड़
'मदन शाही' सिक्के झालावाड़ रियासत की आधिकारिक मुद्रा थे। झालावाड़ राज्य की स्थापना 1838 में हुई और शासकों ने अपनी स्वतंत्र पहचान हेतु इन सिक्कों का प्रचलन शुरु किया। इनके माध्यम से राज्य के प्रशासनिक नियंत्रण और आर्थिक गतिविधियों का संचालन होता था। मुद्राशास्त्र के अध्ययन में ये सिक्के झालावाड़ के इतिहास, स्थापना और ब्रिटिश काल के दौरान हुए क्षेत्रीय राजनैतिक परिवर्तनों को समझने हेतु एक महत्वपूर्ण कड़ी प्रदान करते हैं।

61. (3) अलवर
राजस्थान की रियासतों के मुद्राशास्त्रीय इतिहास में 'राव शाही' सिक्के अलवर रियासत से संबंधित हैं। अलवर के शासकों ने अपनी संप्रभुता के प्रतीक के रूप में इन सिक्कों को जारी किया था। ये सिक्के तत्कालीन व्यापारिक लेनदेन और राज्य के राजस्व प्रबंधन का मुख्य आधार थे। अलवर रियासत के इतिहास पुनर्निर्माण में ये महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, क्योंकि ये आर्थिक स्थिति के साथ तत्कालीन कला और सिक्का ढालने की तकनीक पर प्रकाश डालते हैं।

62. (2) I और III
राजपूत राज्यों हेतु सिक्के ढालना सर्वोच्च संप्रभुता का प्रतीक था। 1818 की संधियों के बाद भी अंग्रेजों ने स्थानीय टकसालों को तुरंत समाप्त नहीं किया था। 'कलदार' शब्द राजपूताना में उन ब्रिटिश भारतीय रुपयों हेतु प्रयुक्त होता था, जो चांदी के थे और धीरे-धीरे स्थानीय मुद्राओं का स्थान लेने लगे। यह संक्रमण काल राजस्थान की पारंपरिक अर्थव्यवस्था के ब्रिटिश औपनिवेशिक ढांचे में विलीन होने की महत्वपूर्ण कहानी बयां करता है।

63. (1) ह्वेनसांग
चीनी बौद्ध यात्री ह्वेनसांग ने 7वीं शताब्दी में हर्षवर्धन के शासनकाल में भारत की यात्रा की थी। इस क्रम में उन्होंने भीनमाल और बैराठ जैसे महत्वपूर्ण नगरों का भ्रमण किया। उन्होंने अपने यात्रा वृत्तांत में इन स्थानों की भौगोलिक स्थिति, निवासियों के आचार-व्यवहार और तत्कालीन राजनीतिक

व्यवस्था का सूक्ष्म विवरण दिया है। उनके लेख राजस्थान के प्रारंभिक मध्यकालीन इतिहास और सांस्कृतिक परिदृश्य को समझने के लिए एक बहुमूल्य विदेशी स्रोत प्रदान करते हैं।

64. (2) पी-लो-मो-लो
चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने वृत्तांत 'सी-यू-की' में राजस्थान के तत्कालीन गुर्जर साम्राज्य और उसकी राजधानी भीनमाल का उल्लेख किया है। उन्होंने भीनमाल हेतु 'पी-लो-मो-लो' शब्द का प्रयोग किया, जो इस प्राचीन नगर की महत्ता दर्शाता है। ह्वेनसांग के अनुसार, भीनमाल तब शिक्षा, संस्कृति और व्यापार का विशाल केंद्र था। उनका विवरण भीनमाल की पहचान सुनिश्चित करने और गुर्जर-प्रतिहारों के प्रारंभिक उत्थान को समझने में इतिहासकारों की बहुत सहायता करता है।

65. (2) उन्होंने 1616 में अजमेर के मैगजीन दुर्ग में सम्राट जहांगीर से भेंट की।
सर थॉमस रो ब्रिटिश राजा जेम्स प्रथम के दूत के रूप में जहांगीर के दरबार में आए थे। ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है कि उन्होंने 1616 में अजमेर के मैगजीन दुर्ग में जहांगीर से भेंट की थी। इसका मुख्य उद्देश्य व्यापारिक रियायतें प्राप्त करना था। थॉमस रो के विवरण अजमेर की महत्ता, मुगल दरबार की भव्यता और राजपूत राजाओं के साथ मुगलों के संबंधों पर एक निष्पक्ष यूरोपीय दृष्टिकोण प्रदान करते हैं।

66. (1) शाहजहाँ के पुत्रों के बीच उत्तराधिकार का युद्ध।
फ्रांसवा बर्नियर फ्रांसीसी चिकित्सक थे, जिन्होंने शाहजहाँ के अंतिम वर्षों और पुत्रों के बीच उत्तराधिकार युद्ध का सजीव विवरण दिया है। इस संघर्ष में मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह ने धर्मत युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बर्नियर ने अपनी पुस्तक में राजपूत वीरता और दरबारी षड्यंत्रों का जो विवरण दिया है, वह मुगल-राजपूत संबंधों और आंतरिक राजनीतिक अस्थिरता को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत माना जाता है।

67. (3) चन्द बरदाई
टैवर्नियर, मनुची और बर्नियर विदेशी यात्री थे, जिन्होंने मुगल काल में भारत का भ्रमण किया और वृत्तांत लिखे। इसके विपरीत, चन्द बरदाई एक भारतीय विद्वान और पृथ्वीराज चौहान के दरबारी थे। उन्होंने 'पृथ्वीराज रासो' नामक स्वदेशी महाकाव्य की रचना की थी। अतः विदेशी यात्रियों की श्रेणी में चन्द बरदाई विषम हैं, क्योंकि उनका दृष्टिकोण स्थानीय, दरबारी और विशिष्ट राजपूत शासक के प्रति समर्पित वीरतापूर्ण साहित्य पर आधारित था।

68. (1) ह्वेनसांग, थॉमस रो, फ्रांसवा बर्नियर
राजस्थान पर टिप्पणी करने वाले विदेशी यात्रियों का कालानुक्रमिक क्रम उनके आगमन को दर्शाता है। चीनी यात्री ह्वेनसांग 7वीं शताब्दी में आए थे। ब्रिटिश दूत सर थॉमस रो 17वीं शताब्दी के प्रारंभ में जहांगीर के समय आए। फ्रांसीसी यात्री फ्रांसवा बर्नियर 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शाहजहाँ और औरंगजेब के काल में आए थे। यह क्रम न केवल आगमन समय स्पष्ट करता है, बल्कि तत्कालीन बदलते राजनीतिक परिदृश्यों की जानकारी भी देता है।

69. (2) 1829
कर्नल जेम्स टॉड की कृति 'एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' का प्रथम खंड 1829 में लंदन में प्रकाशित हुआ था। टॉड ने इस पुस्तक में राजपूत राज्यों के इतिहास, परंपराओं और भौगोलिक स्थिति का व्यापक संकलन किया। उन्होंने स्थानीय स्रोतों, चारण साहित्य और शिलालेखों का उपयोग कर इतिहास को व्यवस्थित स्वरुप दिया। यह पुस्तक आज भी राजस्थान के इतिहास अध्ययन का आधार है और टॉड को 'राजस्थान के इतिहास का पिता' कहा जाता है।

70. (2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान इतिहास लेखन में विभिन्न विद्वानों का अद्वितीय योगदान है। जेम्स टॉड ने 'एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान' लिखी, जो ऐतिहासिक तथ्यों का संग्रह है। विलियम फ्रैंकलिन ने जॉर्ज थॉमस के संस्मरण लिखकर 'राजपूताना' शब्द को पहचान दी। के. डी. एर्स्किन ने 'राजपूताना गजेटियर्स' का संकलन किया। वहीं, एल. पी. टेसिटोरी ने चारण साहित्य और स्थानीय बोलियों के संरक्षण एवं अध्ययन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो इतिहास हेतु अत्यंत आवश्यक है।

71. (2) I, II और III
कर्नल जेम्स टॉड की पुस्तक उनके गुरु यति ज्ञानचन्द्र को समर्पित थी, जिन्होंने स्थानीय स्रोतों को समझने में उनका मार्गदर्शन किया। इसका प्रथम खंड मुख्य रूप से मेवाड़ के इतिहास को समर्पित है। उन्होंने स्थानीय ख्यातों और चारण साहित्य पर भरोसा किया। हालाँकि, आधुनिक इतिहासकार टॉड द्वारा दी गई सभी तिथियों को पूर्णतः त्रुटिहीन नहीं मानते, क्योंकि उनमें कई स्थानों पर काव्यगत अतिशयोक्ति और तथ्यात्मक विसंगतियाँ पाई गई हैं जिन्हें बाद में संशोधित किया गया।

72. (1) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या है।
19वीं शताब्दी के राजस्थान अध्ययन हेतु ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा संकलित राजपत्रक और अभिलेख अपरिहार्य हैं। ये स्रोत जनसंख्या, कृषि और राजस्व के व्यवस्थित सांख्यिकीय आंकड़े देते हैं, जिनका पारंपरिक चारण साहित्य में अभाव था। चारण साहित्य वीरता गाथाओं पर केंद्रित था, जबकि ब्रिटिश अभिलेखों ने प्रशासनिक दृष्टिकोण से डेटा संकलित किया। ये अभिलेख मध्यकालीन वीरता और आधुनिक प्रशासनिक युग के संक्रमण काल को समझने हेतु ठोस तथ्यात्मक आधार प्रदान करते हैं।

73. (3) ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया
कर्नल जेम्स टॉड ने 'एनल्स' के अलावा 'ट्रेवल्स इन वेस्टर्न इण्डिया' नामक महत्वपूर्ण पुस्तक लिखी। यह उनकी मृत्यु के पश्चात 1839 में प्रकाशित हुई। इसमें टॉड ने राजस्थान और गुजरात की यात्राओं, प्राचीन मंदिरों, शिलालेखों और स्थानीय रीति-रिवाजों का विस्तृत वर्णन किया है। यह पुस्तक न केवल

ऐतिहासिक बल्कि सांस्कृतिक और भौगोलिक दृष्टि से बहुमूल्य दस्तावेज है, जो तत्कालीन ग्रामीण समाज और स्थापत्य कला की गहरी समझ एवं जानकारी प्रदान करती है।

74. (1) बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह
महाराजा गंगा सिंह दूरदर्शी शासक थे, जिन्होंने ऐतिहासिक अभिलेखों को सुरक्षित रखने हेतु 'महकमा खास' के अंतर्गत व्यवस्थित प्रणाली विकसित की। उन्होंने अभिलेखागार के महत्व को पहचानते हुए राजकीय दस्तावेजों, आदेशों और बहियों के वैज्ञानिक संरक्षण पर बल दिया। उनके प्रयासों से ही बीकानेर में दस्तावेजों का विशाल भंडार सुरक्षित रह सका, जो आज राजस्थान राज्य अभिलेखागार की निधि है। यह उनकी ऐतिहासिक चेतना और प्रशासनिक उत्कृष्टता का परिचायक माना जाता है।

75. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
मध्यकालीन व्यवस्था में 'पट्टे' वे आधिकारिक दस्तावेज थे, जिनके माध्यम से शासक सामंतों को भूमि अनुदान और जागीर प्रदान करते थे। यह मालिकाना हक का कानूनी प्रमाण था। इसके विपरीत, 'परवाना' का प्रयोग वरिष्ठ अधिकारी द्वारा अधीनस्थ को जारी आधिकारिक आदेश हेतु होता था, न कि अधीनस्थ द्वारा राजा को। अतः परवाना शासन व्यवस्था में ऊपर से नीचे की ओर जाने वाला महत्वपूर्ण संचार माध्यम था, जो प्रशासनिक अनुशासन और कार्यप्रणाली सुनिश्चित करता था।

76. (2) महाराजा जसवंत सिंह प्रथम
'नैणसी री ख्यात' की रचना मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के शासनकाल में हुई थी। इसके रचयिता मुहणोत नैणसी महाराजा के अत्यंत विश्वसनीय दीवान थे। नैणसी ने विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा कर व्यापक ऐतिहासिक एवं भौगोलिक डेटा एकत्र किया। यह ख्यात तत्कालीन मारवाड़ की राजनीतिक शक्ति और प्रशासनिक विस्तार के कालखंड में रची गई थी। जसवंत सिंह के काल की स्थिरता ने नैणसी को इस विशाल और व्यवस्थित ऐतिहासिक कार्य को संपन्न करने का अवसर दिया।

77. (3) शिबि जनपद के सिक्के
चित्तौड़गढ़ के पास नगरी से प्राप्त 'शिबि जनपद के सिक्के' ठोस पुरालेखीय प्रमाण हैं कि प्राचीन काल में यह क्षेत्र शिबि जनजाति के नियंत्रण में था। इन सिक्कों पर ब्राह्मी लिपि में 'मध्यमिका का शिबि जनपद' अंकित मिलता है। ये सिक्के मौर्योत्तर काल में इस क्षेत्र की राजनीतिक स्वायत्तता और विकसित मुद्रा प्रणाली को दर्शाते हैं। यह साक्ष्य प्राचीन राजस्थान के जनपदों की स्थिति और भौगोलिक विस्तार को समझने के लिए अत्यंत विश्वसनीय एवं प्राथमिक स्रोत है।

78. (1) I, II, III, IV और V
राजस्थान के पुरातात्विक स्थल विभिन्न युगों की संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हैं। बागोर मध्यपाषाण काल का महत्वपूर्ण स्थल है। ओझियाना ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति को दर्शाता है, जबकि सुनारी लोहे को गलाने की प्राचीन तकनीक हेतु प्रसिद्ध है। नागौर का कुराड़ा 'ताम्र औजारों की नगरी' कहलाता है। वहीं, नोहा से चित्रित धूसर मृदभांड प्राप्त हुए हैं, जो उत्तर वैदिक काल के परिचायक हैं। ये सभी स्थल मानव सभ्यता के क्रमिक विकास की समग्र तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

79. (1) बैराठ - पुरापाषाण संस्कृति
बैराठ का संबंध पुरापाषाण संस्कृति से नहीं है, बल्कि यह मौर्यकालीन और बौद्ध संस्कृति का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यहाँ से अशोक के शिलालेख और बौद्ध मठों के अवशेष मिले हैं। अन्य युग्म सही हैं: कालीबंगा हड़प्पा कालीन नगरीय स्थल है, आहड़ बनास घाटी की ताम्रपाषाण कालीन ग्रामीण संस्कृति है, और बागोर कोठारी नदी के किनारे स्थित मध्यपाषाण कालीन स्थल है। बैराठ की महत्ता महाजनपद और मौर्य काल के दौरान राजनीतिक एवं धार्मिक केंद्र होने में है।

80. (2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थानी रासो साहित्य वीरता और ऐतिहासिक घटनाओं का संगम है। 'हम्मीर रासौ' की रचना जोधराज ने की थी। 'खुमाण रासो' दलपत विजय की कृति है, जिसमें मेवाड़ के शासकों की वीरता का गुणगान है। 'बीसलदेव रासो' नरपति नाल्ह द्वारा रचित है, जिसमें विग्रहराज चतुर्थ की प्रेम गाथा है। वहीं, 'सगत रासो' गिरधर आसिया द्वारा लिखा गया था। ये ग्रंथ तत्कालीन समाज की चारण परंपरा और दरबारी संस्कृति के गौरवशाली ऐतिहासिक एवं साहित्यिक साक्ष्य प्रदान करते हैं।

81. (1) I, II, III, IV
राजस्थान के शिलालेखों का कालानुक्रमिक क्रम उनकी ऐतिहासिक प्राचीनता के अनुसार है। बरली शिलालेख को प्राचीनतम माना जाता है। इसके बाद दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का घोसुण्डी शिलालेख आता है। चौथी-पांचवीं शताब्दी का मंदसौर शिलालेख गुप्त काल और रेशम बुनकरों की जानकारी देता है। अंत में, 1170 ईस्वी का बिजोलिया शिलालेख मध्यकालीन चौहान राजवंश के इतिहास को स्पष्ट करता है। यह क्रम राजस्थान में लेखन कला के विकास और सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों को समझने का व्यवस्थित आधार है।

82. (1) व्यापारियों और राज्य अधिकारियों द्वारा लेखांकन के लिए उपयोग की जाने वाली एक पारंपरिक बही।
'चोपड़ा' राजस्थान में प्रचलित एक विशिष्ट प्रकार की पारंपरिक बही या लेखा पुस्तिका है। इसका उपयोग मुख्य रूप से व्यापारियों और वित्तीय अधिकारियों द्वारा आय-व्यय के विवरण, ऋण लेनदेन और व्यावसायिक गतिविधियों को दर्ज करने हेतु किया जाता था। ये चोपड़ा बहियां न केवल तत्कालीन आर्थिक व्यवहारों की जानकारी देती हैं, बल्कि इनसे सामाजिक संबंधों, ब्याज दरों और क्षेत्रीय व्यापारिक तंत्र की कार्यप्रणाली के बारे में भी अत्यंत महत्वपूर्ण और वस्तुनिष्ठ ऐतिहासिक आंकड़े प्राप्त होते हैं।

83. (1) I और II
'अखबारात' मुगल काल के महत्वपूर्ण फारसी दस्तावेज हैं, जो दरबार की दैनिक कार्यवाहियों और शाही आदेशों का विवरण देते हैं। ये अभिलेख मुगल सम्राटों और राजपूत राज्यों के बीच पत्राचार, कूटनीतिक वार्ताओं और राजनीतिक संबंधों

को समझने हेतु प्राथमिक स्रोत हैं। यह कहना गलत है कि इन्हें 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश रेजिडेंट्स ने लिखा था, क्योंकि ये विशुद्ध रूप से मुगल प्रशासनिक प्रणाली का हिस्सा थे। ये दस्तावेज राजपूताना के राजनीतिक परिदृश्य पर विस्तृत प्रकाश डालते हैं।

84. (4) महाराणा कुंभा
चित्तौड़गढ़ की कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति महाराणा कुंभा की उपलब्धियों और विजय अभियानों का विस्तृत वर्णन करती है। इसमें कुंभा को कुशल योद्धा, महान निर्माता और विद्वान शासक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसमें उनके द्वारा विजित किलों, रचित संगीत ग्रंथों और शासनकाल के दौरान हुई स्थापत्य कला की उन्नति का गौरवशाली उल्लेख है। यह अभिलेख कुंभा के काल को मेवाड़ का स्वर्ण युग सिद्ध करने के लिए एक अत्यंत प्रामाणिक और महत्वपूर्ण ऐतिहासिक दस्तावेज माना जाता है।

85. (2) I, III और IV
मध्यकालीन राजस्थान में विभिन्न रियासतों की अपनी मुद्राएं थीं। बीकानेर में गजशाही सिक्के और जैसलमेर में अखैशाही सिक्के प्रचलित थे। मेवाड़ रियासत में चांदोड़ी और स्वरूपशाही सिक्के चलते थे। हालाँकि, लल्लुशाही सिक्के सोजत की टकसाल से संबंधित थे, न कि मेवाड़ से। ये सिक्के क्षेत्रीय व्यापार और आर्थिक संप्रभुता के प्रतीक थे। मुद्राओं का अध्ययन रियासतों के आर्थिक अंतर्संबंधों और प्रशासनिक नियंत्रण को समझने में सहायक होता है, जो उस युग की प्रमुख विशेषता थी।

86. (2) कान्हड़दे प्रबन्ध
'कान्हड़दे प्रबन्ध' की रचना महाकवि पद्मनाभ ने की थी। यह ग्रंथ नाडोल और जालोर के चौहान राजवंश के इतिहास को जानने का मूल्यवान स्रोत है। इसमें कान्हड़देव और उनके पुत्र वीरमदेव के शौर्य के साथ अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ तत्कालीन युद्ध नीति, सामाजिक मूल्यों और राजपूतों के अदम्य साहस को रेखांकित करता है। पद्मनाभ की यह कृति क्षेत्रीय गौरव और वीरता की अमर गाथा के रूप में ऐतिहासिक साक्ष्य है।

87. (1) कथन और कारण दोनों सत्य हैं तथा कारण, कथन की सही व्याख्या है।
राजस्थान का चारण साहित्य साहित्यिक भव्यता हेतु प्रसिद्ध है, परंतु ऐतिहासिक सटीकता हेतु इसे पुरालेखीय साक्ष्यों के साथ जांचना आवश्यक है। इसका कारण यह है कि चारण कवि प्रायः अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में काव्य लिखते थे, जिससे वीरता का वर्णन करते समय कई बार अतिशयोक्तिपूर्ण भाषा प्रयुक्त हो जाती थी। इस प्रवृत्ति के कारण कभी-कभी वस्तुनिष्ठ तथ्य और तिथियां गौण हो जाती थीं। अतः संतुलित निष्कर्ष हेतु अन्य स्वतंत्र स्रोतों से सत्यापन अनिवार्य है।

88. (1) I, II, III, IV
राजस्थान की रियासतों और सिक्कों का पश्चिम से पूर्व की ओर क्रम भौगोलिक स्थिति पर आधारित है। जैसलमेर सबसे पश्चिम में है जहाँ अखैशाही सिक्के चलते थे। इसके पूर्व में जोधपुर है जहाँ विजयशाही सिक्के प्रचलित थे। और पूर्व में जयपुर रियासत आती है, जिसके झाड़शाही सिक्के प्रसिद्ध थे। सबसे पूर्व की ओर झालावाड़ रियासत है जहाँ मदनशाही मुद्रा का प्रचलन था। यह क्रम राजस्थान के क्षेत्रीय विस्तार और तत्कालीन आर्थिक मंडलों के भौगोलिक वितरण को स्पष्ट करता है।

89. (3) बीठू शिलालेख
पाली जिले के बीठू गाँव का शिलालेख मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के प्रारंभिक इतिहास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह राठौड़ संस्थापक राव सीहा की मृत्यु की तिथि और जानकारी देता है, जिससे मारवाड़ में राठौड़ों के आगमन की पुष्टि होती है। यह अभिलेख राठौड़ वंशावली की ऐतिहासिकता को राव सीहा तक ले जाने वाला ठोस पुरालेखीय साक्ष्य है। इसके माध्यम से इतिहासकारों को राठौड़ों के प्रारंभिक संघर्षों और क्षेत्र में उनकी राजनीतिक पैठ को समझने में अपार सहायता मिलती है।

90. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान के शिलालेख विशिष्ट राजवंशों के इतिहास को उजागर करते हैं। रसिया की छतरी शिलालेख मेवाड़ के गुहिल शासकों की जानकारी देता है। श्रृंगी ऋषि शिलालेख महाराणा मोकल के समय का है। बिजोलिया शिलालेख चौहान वंशावली और उनकी उत्पत्ति का प्रमुख आधार है। वहीं, बीठू शिलालेख मारवाड़ के राठौड़ संस्थापक राव सीहा के बारे में प्रामाणिक तथ्य प्रस्तुत करता है। ये सभी अभिलेख संबंधित क्षेत्रों की वंशावली और घटनाओं के सत्यापन हेतु अनिवार्य स्रोत माने जाते हैं।

91. (3) I, II, III, IV और V
मध्यकालीन प्रशासनिक शब्दावली शासन व्यवस्था की सूक्ष्मताओं को प्रकट करती है। 'खास रुक्का' राजा द्वारा हस्ताक्षरित पत्र था, जबकि 'अर्ज़दाश्त' विनम्र याचिका थी। 'मंसूर' सम्राट के आदेशों हेतु प्रयुक्त होता था और 'खरीता' समान स्तर के शासकों के बीच होने वाला पत्राचार था। 'बहियां' दैनिक खातों के स्थायी अभिलेख थे। ये सभी दस्तावेज मिलकर राजस्थान के प्रशासनिक, कूटनीतिक और सामाजिक-आर्थिक इतिहास को समझने के लिए एक व्यापक एवं विश्वसनीय ढांचा प्रदान करते हैं।

92. (2) पाबूजी के वीरतापूर्ण कार्य और लोक देवता का स्वरूप।
'पाबूजी री बात' राजस्थानी साहित्यिक ग्रंथ है, जो लोक देवता पाबूजी राठौड़ के जीवन और वीरतापूर्ण कार्यों पर केंद्रित है। पाबूजी को राजस्थान में ऊंटों के देवता और गौ-रक्षक के रूप में पूजा जाता है। इस ग्रंथ में शरणागत की रक्षा हेतु उनके संघर्षों और लोक कल्याणकारी स्वरूप का वर्णन मिलता है। यह साहित्य न केवल ऐतिहासिक व्यक्तित्व की जानकारी देता है, बल्कि लोक संस्कृति, नैतिकता के आदर्शों और आम जनमानस की धार्मिक मान्यताओं को समझने का माध्यम भी है।

93. (2) I, III और IV
के. डी. एर्स्किन द्वारा संकलित 'राजपूताना गजेटियर्स' 19वीं शताब्दी के राजस्थान अध्ययन हेतु महत्वपूर्ण हैं। इनमें जनसंख्या, भू-राजस्व और जातियों पर विस्तृत मानवशास्त्रीय

टिप्पणियाँ दर्ज हैं। यह कहना कि उनमें सांख्यिकीय आंकड़ों की कमी है, गलत है क्योंकि ये अपने सटीक डेटा हेतु ही जाने जाते हैं। ये अभिलेख रियासतों के पारंपरिक ढांचे से आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन और संक्रमण को समझने के लिए एक अनिवार्य एवं प्रामाणिक ऐतिहासिक आधार प्रदान करते हैं।

94. (1) रेड (टोंक)
टोंक के रेड पुरातात्विक स्थल से 'भद्रपवासा' लेख वाली महत्वपूर्ण मुहरें मिली हैं। रेड को संपन्नता और सिक्कों के भंडार के कारण 'प्राचीन भारत का टाटा नगर' कहा जाता है। यहाँ से प्राप्त मुहरें और सिक्के प्राचीन प्रशासनिक व्यवस्था और सक्रिय व्यापारिक गतिविधियों को प्रमाणित करते हैं। ये पुरातात्विक साक्ष्य मौर्य और मौर्योत्तर काल के दौरान राजस्थान के इस महत्वपूर्ण केंद्र की आर्थिक स्थिति और वहाँ रहने वाली व्यावसायिक श्रेणियों के बारे में अमूल्य ऐतिहासिक जानकारी प्रदान करते हैं।

95. (3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास में विभिन्न स्मारकों का विशेष महत्व है। 'यूप' उन स्तंभों को कहा जाता है, जो वैदिक यज्ञों की स्मृति में स्थापित किए जाते थे। 'प्रशस्ति' शासक की उपलब्धियों का गुणगान करने वाला शिलालेख है। 'सती स्तंभ' उन महिलाओं के स्मारक हैं, जिन्होंने स्वयं को समर्पित किया, जो सामाजिक रीति-रिवाजों को दर्शाते हैं। 'ताम्रपत्र' तांबे की पट्टियां हैं, जिन पर राजाओं द्वारा दिए गए भूमि दान का आधिकारिक और स्थायी विवरण उत्कीर्ण होता था।

96. (2) हम्मीर महाकाव्य
नयनचन्द्र सूरी रचित 'हम्मीर महाकाव्य' महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ है। यह 1301 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा रणथंभौर दुर्ग की घेराबंदी का सजीव वर्णन देता है। इसमें हम्मीर देव की वीरता, शरणागत रक्षा के अडिग प्रण और रानी रंगदेवी के नेतृत्व में हुए प्रथम ऐतिहासिक जौहर का हृदयस्पर्शी विवरण मिलता है। यह महाकाव्य न केवल युद्धों की जानकारी देता है, बल्कि तत्कालीन राजस्थान के अदम्य साहस और बलिदान की परंपरा का सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक प्रतीक भी माना जाता है।

97. (2) पश्चिमी राजस्थानी (मारवाड़ी) भाषा की काव्य शैली।
'डिंगल' राजस्थानी साहित्य की विशिष्ट काव्य शैली है। यह मुख्य रूप से मारवाड़ी भाषा का साहित्यिक रूप है, जिसका उपयोग चारण कवियों द्वारा वीरता गाथाओं और ऐतिहासिक वृत्तांतों हेतु किया जाता था। डिंगल अपनी ओजस्वी शब्दावली और वीर रस की प्रधानता हेतु जानी जाती है। राजस्थान के अधिकांश मध्यकालीन ऐतिहासिक ग्रंथ और वीर काव्य इसी शैली में लिखे गए हैं, जो क्षेत्र की शौर्य परंपरा और सांस्कृतिक अस्मिता को एक अत्यंत सशक्त एवं गौरवशाली अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं।

98. (3) कथन सत्य है लेकिन कारण असत्य है।
राजस्थान में इंडो-ससानियन सिक्कों, जिन्हें 'गधिया' कहा जाता है, की खोज प्रारंभिक मध्यकालीन काल में सुदृढ़ व्यापार तंत्र की उपस्थिति प्रमाणित करती है। ये सिक्के दर्शाते हैं कि आर्थिक संबंध स्थानीय स्तर तक सीमित नहीं थे। हालाँकि, यह कहना गलत है कि ये सिक्के पूरी तरह स्वदेशी हैं, क्योंकि गधिया सिक्कों पर विदेशी ससानियन परंपराओं का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार, ये सिक्के तत्कालीन समय के विदेशी सांस्कृतिक एवं आर्थिक आदान-प्रदान के महत्वपूर्ण साक्ष्य हैं।

99. (3) बहियों के रखरखाव के लिए उत्तरदायी राज्य अधिकारी या लिपिक।
राजपूत राज्यों की प्रशासनिक प्रणाली में 'बहीदास' महत्वपूर्ण पद था। यह वह अधिकारी या लिपिक होता था, जिसकी जिम्मेदारी राज्य की विभिन्न बहियों, जैसे आय-व्यय और जागीर विवरण का व्यवस्थित रखरखाव करना था। बहियों में दर्ज डेटा की सटीकता और उन्हें सुरक्षित रखने का कार्य बहीदास के अधीन होता था। ऐतिहासिक शोध की दृष्टि से ये अभिलेख अत्यंत विश्वसनीय हैं, क्योंकि इनमें प्रशासन की आंतरिक कार्यप्रणाली और वित्तीय स्थितियों का वास्तविक एवं विस्तृत विवरण सुरक्षित रहता था।

100. (4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान इतिहास को समझने में विद्वानों का योगदान अमूल्य है। ह्वेनसांग ने बैराठ को 'पो-ली-ये-तो-लो' नाम से संबोधित किया। विलियम फ्रैंकलिन ने 1805 में जॉर्ज थॉमस के संस्मरण लिखकर 'राजपूताना' शब्द का सर्वप्रथम लिखित प्रयोग किया। कर्नल जेम्स टॉड ने 'एनल्स' के माध्यम से इतिहास को व्यवस्थित रूप दिया। वहीं, एल. पी. टेसिटोरी ने चारण साहित्य का सर्वेक्षण कर पुरानी राजस्थानी भाषा और संस्कृति के संरक्षण में महान योगदान दिया, जो ऐतिहासिक अध्ययन हेतु अनिवार्य है।

101. (4) I, II और III
1273 ईस्वी का चीरवा शिलालेख मेवाड़ के इतिहास का महत्वपूर्ण संस्कृत अभिलेख है। यह गुहिल वंश के शासकों, जैसे जैत्र सिंह और समर सिंह की उपलब्धियों का वर्णन करता है। इसके अलावा, यह तत्कालीन सामाजिक जीवन, सती प्रथा के प्रचलन और पाशुपत संप्रदाय की उपस्थिति का स्पष्ट उल्लेख करता है। यह अभिलेख 13वीं शताब्दी के मेवाड़ की राजनीतिक स्थिरता और सांस्कृतिक परिवेश को समझने के लिए एक अत्यंत प्रामाणिक और विश्वसनीय ऐतिहासिक आधार प्रदान करता है।

102. (2) दयालदास री ख्यात - बीकानेर राज्य का इतिहास
'दयालदास री ख्यात' बीकानेर रियासत के इतिहास हेतु सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत है, जिसमें बीकानेर के राठौड़ शासकों की उपलब्धियों का विवरण है। अन्य विकल्पों में विसंगतियाँ हैं: 'नैणसी री ख्यात' में मारवाड़ के साथ अन्य राज्यों का व्यापक इतिहास है। 'बांकीदास री ख्यात' जोधपुर के महाराजा मान सिंह के काल से संबंधित है। 'मुण्डियार री ख्यात' का संबंध भी मारवाड़ के राठौड़ राजवंश से है, न कि चौहानों से। अतः दयालदास की कृति बीकानेर हेतु विशिष्ट है।

103. (4) आहत सिक्के (पंच-मार्क सिक्के)
टोंक का 'रेड' पुरातात्विक स्थल विशाल सिक्का भंडार हेतु प्रसिद्ध है, जिसके कारण इसे 'प्राचीन भारत का टाटा नगर' कहा जाता है। यहाँ से हजारों की संख्या में चांदी के 'आहत सिक्के' प्राप्त हुए हैं। ये सिक्के प्रतीकों की छाप वाले होते थे। रेड से प्राप्त यह भंडार राजस्थान में आहत सिक्कों के सबसे बड़े संग्रहों में से एक है, जो मौर्य और मौर्योत्तर काल के दौरान इस क्षेत्र की असाधारण आर्थिक समृद्धि और व्यापारिक महत्ता को निर्विवाद रूप से सिद्ध करता है।

104. (1) यह अपने संरक्षकों की वंशावलियों का विवरण देने से पूर्णतः बचता है।
'चारण' साहित्य राजस्थान इतिहास का आधार स्तंभ है। इसकी मुख्य विशेषता ही अपने संरक्षकों की वंशावलियों और शौर्यपूर्ण कार्यों का दस्तावेजीकरण करना था। यह कहना कि यह वंशावलियों से बचता है, पूर्णतः गलत है। चारण साहित्य मुख्य रूप से डिंगल भाषा में रचित है और इसमें वीर रस की प्रधानता है। सूर्यमल्ल मिश्रण जैसे कवियों ने इस परंपरा को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया। इन ग्रंथों से ही हमें तत्कालीन राज्यों की वंशावली और वीरता की अमूल्य जानकारी मिलती है।

105. (1) I, II, III, IV और V
राजस्थान का ऐतिहासिक साहित्य महत्वपूर्ण घटनाओं को समेटे हुए है। रणछोड़ भट्ट की 'अमर काव्य वंशावली' मेवाड़ का प्रमुख संस्कृत स्रोत है। सदाशिव की 'राज रत्नाकर' और जगजीवन भट्ट की 'अजितोदय' क्रमशः मेवाड़ और मारवाड़ के इतिहास पर प्रकाश डालती हैं। दलपत विजय की 'खुमाण रासो' मेवाड़ के आरंभिक शासकों की वीरता दर्शाती है, जबकि 'राज रूपक' जोधपुर के महाराजा अभय सिंह के शासनकाल का वर्णन करती है। ये सभी ग्रंथ राज्य के राजनीतिक इतिहास के स्तंभ हैं।

106. (1) मुगल सम्राट की मुहर वाला एक शाही आदेश।
मुगल-राजपूत संबंधों में 'फरमान' अत्यंत शक्तिशाली और आधिकारिक दस्तावेज था। यह स्वयं मुगल सम्राट द्वारा जारी शाही आदेश होता था, जिस पर सम्राट की विशेष मुहर लगी होती थी। फरमान के माध्यम से निर्देश दिए जाते थे, नियुक्तियाँ होती थीं या जागीरें प्रदान की जाती थीं। राजस्थान के अभिलेखागारों में सुरक्षित ये फरमान तत्कालीन कूटनीति, सम्राट की सर्वोच्चता और राजपूत शासकों की मुगल साम्राज्य में भूमिका को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत माने जाते हैं।

107. (4) विलियम फ्रैंकलिन
वर्ष 1805 में विलियम फ्रैंकलिन ने 'द मिलिट्री मेमोयर्स ऑफ मिस्टर जॉर्ज थॉमस' पुस्तक प्रकाशित की थी। यह ग्रंथ ऐतिहासिक रूप से इसलिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें इस क्षेत्र के लिए 'राजपूताना' शब्द का सबसे पहला लिखित और आधिकारिक प्रयोग मिलता है। जॉर्ज थॉमस एक आयरिश साहसी व्यक्ति था, जिसने 18वीं शताब्दी के अंत में प्रभाव स्थापित किया था। फ्रैंकलिन द्वारा संकलित यह विवरण ब्रिटिश प्रभाव के बढ़ने से पहले के क्षेत्रीय परिदृश्य को समझने हेतु अनमोल दस्तावेज है।

108. (1) I, II, III, IV
लेखकों का कालानुक्रमिक क्रम साहित्यिक विकास के चरणों को दर्शाता है। चन्द बरदाई 12वीं शताब्दी में पृथ्वीराज चौहान के मित्र थे। पद्मनाभ ने 15वीं शताब्दी में 'कान्हड़दे प्रबन्ध' लिखी। मुहणोत नैणसी 17वीं शताब्दी में मारवाड़ के विख्यात इतिहासकार रहे। अंत में सूर्यमल्ल मिश्रण 19वीं शताब्दी के महान राष्ट्रवादी कवि थे। यह अनुक्रम मध्यकालीन वीरता महाकाव्यों से शुरू होकर व्यवस्थित ख्यातों और आधुनिक काल के राष्ट्रवादी लेखन तक की गौरवशाली साहित्यिक यात्रा को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

109. (3) बिजोलिया शिलालेख
1170 ईस्वी का बिजोलिया शिलालेख राजस्थान के प्राचीन भूगोल को समझने हेतु महत्वपूर्ण दस्तावेज है। यह न केवल चौहान वंशावली प्रदान करता है, बल्कि प्रमुख नगरों के प्राचीन नामों को भी सुरक्षित रखता है। इसके माध्यम से स्थापित होता है कि जालोर का प्राचीन नाम 'जाबालिपुर' और सांभर का नाम 'शाकंभरी' था। इसी तरह इसमें भीनमाल हेतु 'श्रीमाल' और नागौर हेतु 'अहिच्छत्रपुर' जैसे नामों का उल्लेख मिलता है, जो तत्कालीन क्षेत्रीय पहचान को समझने में सहायक है।

110. (1) I, II और III
'राजपूताना एजेंसी रिकॉर्ड्स' 19वीं शताब्दी के राजस्थान अध्ययन हेतु सर्वाधिक विश्वसनीय सरकारी दस्तावेज हैं। ये अभिलेख मुख्य रूप से राष्ट्रीय और राज्य अभिलेखागार में सुरक्षित हैं। इनमें एजेंट टू द गवर्नर जनरल और रियासतों के बीच प्रशासनिक पत्राचार का विवरण है। ये रिकॉर्ड सती प्रथा के उन्मूलन और राज्यों में होने वाले आधुनिक सुधारों की विस्तृत जानकारी देते हैं। चूँकि ये अंग्रेजों द्वारा तैयार किए गए थे, इसलिए ये मुख्य रूप से अंग्रेजी और फारसी भाषाओं में उपलब्ध हैं।

111. (1) इसने बौद्ध त्रिरत्न सिद्धांतों में अशोक की प्रगाढ़ आस्था की पुष्टि की।
बैराठ में खोजा गया सम्राट अशोक का भाब्रू शिलालेख धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें अशोक स्पष्ट रूप से बौद्ध धर्म के त्रिरत्न—बुद्ध, धम्म और संघ के प्रति अपनी गहरी आस्था प्रकट करते हैं। यह शिलालेख ठोस प्रमाण है कि अशोक ने बौद्ध धर्म को न केवल व्यक्तिगत रूप से अपनाया, बल्कि उसके सिद्धांतों के प्रचार में भी सक्रिय भूमिका निभाई। यह बैराठ में मौर्य प्रभाव और बौद्ध धर्म की प्राचीन जड़ों को निर्विवाद रूप से स्थापित करता है।

112. (2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान के शासक विभिन्न ऐतिहासिक वृत्तांतों से जुड़े हैं। महाराणा कुंभा की उपलब्धियों का वर्णन 'कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति' में है। पृथ्वीराज चौहान III की गाथा 'पृथ्वीराज रासो' में अमर की गई है। मुहणोत नैणसी महाराजा जसवंत सिंह के दरबार में इतिहासकार थे। वहीं, राव मालदेव को उनकी अदम्य

वीरता के कारण फारसी इतिहासकारों ने 'हशमत वाला राजा' कहकर संबोधित किया है। ये संबंध मध्यकालीन राजस्थान की राजनीतिक और साहित्यिक संपन्नता को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

113. (1) III, II, I, IV
राजस्थान के शिलालेखों का कालानुक्रमिक क्रम रचना की प्राचीनता पर आधारित है। घोसुण्डी शिलालेख प्राचीनतम (दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व) है। इसके बाद मंदसौर शिलालेख (5वीं शताब्दी ईस्वी) आता है, जो गुप्त काल का है। समिधेश्वर मंदिर शिलालेख महाराणा मोकल के समय (1428 ईस्वी) का है, और अंत में 1460 ईस्वी की कुंभलगढ़ प्रशस्ति आती है। यह क्रम स्पष्ट करता है कि कैसे विभिन्न युगों के साक्ष्य राजस्थान के सामाजिक और राजनीतिक विकास की कहानी को पत्थरों पर उकेरते रहे हैं।

114. (1) I, II और III
'भाट' परंपरा राजस्थान की अत्यंत व्यवस्थित वंशावली लेखन प्रणाली है। भाट समुदाय विभिन्न जातियों के पारंपरिक वंशावली लेखक थे, जो पीढ़ियों से वंशावली वृक्षों को 'बहियों' में सावधानीपूर्वक दर्ज करते आ रहे हैं। चारणों का ध्यान जहाँ वीरतापूर्ण कार्यों पर था, वहीं भाट समाज के लगभग सभी वर्गों का रिकॉर्ड रखते थे। अंग्रेजों द्वारा इस परंपरा को कभी अवैध घोषित नहीं किया गया था; बल्कि यह आज भी ग्रामीण राजस्थान में एक जीवंत सामाजिक और ऐतिहासिक कड़ी के रूप में मौजूद है।

115. (3) वेलि क्रिसन रुकमणी री
'वेलि क्रिसन रुकमणी री' डिंगल भाषा की अद्वितीय काव्य रचना है, जिसे पृथ्वीराज राठौड़ ने लिखा था। इसकी अद्भुत साहित्यिक शक्ति के कारण कवि दुरसा आढ़ा ने इसकी तुलना "दस सहस्त्र अश्वों" की शक्ति से की थी। उन्होंने इसे 'पांचवां वेद' और 'उन्नीसवां पुराण' भी कहा, जो इस कृति की महानता और सांस्कृतिक महत्ता को दर्शाता है। यह ग्रंथ न केवल भक्ति को प्रदर्शित करता है, बल्कि तत्कालीन डिंगल साहित्य के भाषाई सौंदर्य और गौरव का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण माना जाता है।

116. (3) कथन सत्य है लेकिन कारण असत्य है।
मध्यकालीन राजपूताना का मुद्राशास्त्रीय इतिहास स्पष्ट करता है कि यहाँ एक स्थानीयकृत अर्थव्यवस्था मौजूद थी, जहाँ लगभग हर प्रमुख रियासत की अपनी स्वतंत्र मुद्रा और टकसाल थी। यह कथन पूर्णतः सत्य है। हालाँकि, यह कहना गलत है कि मुगल सम्राटों ने राजपूतों को सिक्के ढालने से पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया था। वास्तव में, मुगल आधिपत्य के दौरान भी कई राजपूत राज्यों ने मुगलों की स्वीकृति से या उनके नाम के सिक्के ढालने की अनुमति प्राप्त कर रखी थी।

117. (3) प्रसिद्धि या कीर्ति (ऐतिहासिक वृत्तांत)
'ख्यात' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'प्रसिद्धि' या 'कीर्ति' होता है। ऐतिहासिक संदर्भ में, ख्यातें वे वृत्तांत हैं जो किसी राजवंश के गौरवपूर्ण कार्यों और उनके महान इतिहास को अमर बनाने हेतु लिखे जाते थे। ये ख्यातें प्रायः गद्य शैली में लिखी जाती थीं और इनमें वंशावली के साथ तत्कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक घटनाओं का समावेश होता था। 'नैणसी री ख्यात' इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये वृत्तांत आज मध्यकालीन इतिहास पुनर्निर्माण हेतु सबसे महत्वपूर्ण साहित्यिक स्रोतों में से एक माने जाते हैं।

118. (2) मारवाड़ रा परगना री विगत
मुहणोत नैणसी द्वारा रचित 'मारवाड़ रा परगना री विगत' मध्यकालीन मारवाड़ की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों को समझने हेतु सर्वाधिक प्रामाणिक स्रोत है। इसमें प्रत्येक परगने की कृषि, जागीरदारी, सिंचाई और करों के सूक्ष्म आंकड़ों का समावेश है। इसकी डेटा संबंधी शुद्धता के कारण इसे 'राजस्थान का गजेटियर' कहा जाता है। यह ग्रंथ न केवल राजनीतिक इतिहास, बल्कि तत्कालीन जनजीवन और आर्थिक प्रबंधन के अध्ययन के लिए शोधकर्ताओं हेतु एक अपरिहार्य और अद्वितीय ऐतिहासिक दस्तावेज प्रदान करता है।

119. (1) I, II, IV और V
इतिहास अध्ययन में पुरालेखशास्त्र और मुद्राशास्त्र बुनियादी विज्ञान हैं। 'ख्यात' साहित्य गद्य में क्षेत्रीय इतिहास और वंशावलियों का विश्वसनीय विवरण प्रदान करता है, जबकि विदेशी यात्री मुगल-राजपूत संबंधों पर मूल्यवान दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। वकील प्रतिवेदनों के बारे में यह कहना गलत है कि वे मुगल सम्राटों द्वारा भेजे जाते थे; वास्तव में ये रिपोर्टें मुगल दरबार में नियुक्त राजपूत दूतों द्वारा अपने स्वयं के राजाओं को भेजी जाती थीं, जिनमें दरबारी राजनीति का गोपनीय विवरण होता था।

120. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान इतिहास को समझने में इन लेखकों का योगदान अमूल्य है। जायसी की 'पद्मावत' चित्तौड़गढ़ के घेरे और रानी पद्मिनी की कथा का प्रसिद्ध काव्य है। सदाशिव की 'राज रत्नाकर' मेवाड़ के इतिहास का स्रोत है। मुहणोत नैणसी ने 'नैणसी री ख्यात' के माध्यम से इतिहास लेखन की नींव रखी। वहीं, 'बीकानेर री ख्यात' के रचयिता दयालदास सिंधायच हैं, जिन्होंने बीकानेर के राठौड़ वंश के गौरवशाली इतिहास का सविस्तार वर्णन किया है। ये सभी कृतियाँ राज्य की सांस्कृतिक विरासत हैं।

अध्याय 03

प्राचीन राजस्थान का समाज एवं संस्कृति

1. प्राचीन राजस्थान के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन मत्स्य जनपद के संबंध में प्रारंभिक वैदिक काल की सामाजिक संरचना का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) बिना किसी व्यावसायिक गतिशीलता के, विशेष रूप से जन्म पर आधारित एक अत्यंत कठोर जाति व्यवस्था
(2) कठोर जन्मसिद्ध अधिकार के बजाय मुख्य रूप से व्यवसाय और कार्य पर आधारित एक वर्ण व्यवस्था
(3) बिना किसी कार्यात्मक स्तरीकरण या विशिष्ट वर्गों वाला एक पूर्णतः समतावादी समाज
(4) स्थानीय जनजातियों पर शासन करने वाले व्यापारिक समुदायों के प्रभुत्व वाला एक सामंती समाज
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. प्राचीन ग्रंथों और महाकाव्यों में अरावली क्षेत्र के मूल निवासियों के रूप में किस जनजातीय समुदाय का व्यापक संदर्भ मिलता है, जिसने राजस्थान के प्रारंभिक सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी?
(1) भील
(2) गोंड
(3) संथाल
(4) टोडा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. प्राचीन काल से पूर्व-मध्यकाल में संक्रमण के दौरान महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन को दर्शाने वाले, राजस्थान में सती प्रथा के प्राचीनतम पुरालेखीय साक्ष्य निम्नलिखित में से किस अभिलेख में मिलते हैं?
(1) बड़वा यूप अभिलेख
(2) नांदसा यूप अभिलेख
(3) घटियाला अभिलेख
(4) बिजोलिया अभिलेख
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्राचीन ग्रंथों में विवाह के प्रकार)
A. ब्रह्म
B. दैव
C. असुर
D. राक्षस
सूची II: (प्रमुख विशेषता)
i. वधु का अपहरण करके किया गया विवाह
ii. पिता को कन्या शुल्क या धन देकर किया गया विवाह
iii. यज्ञ के दौरान किसी पुरोहित को पुत्री देना
iv. किसी विद्वान व्यक्ति को उचित रीति से पुत्री देना
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. प्राचीन राजस्थान के आर्थिक जीवन में 'श्रेणी' शब्द निम्नलिखित में से किसे संदर्भित करता है?
(1) कृषि उपज पर लगाया जाने वाला एक विशिष्ट कर
(2) बहुमूल्य धातुओं के व्यापार हेतु उपयोग किया जाने वाला एक मानक भार
(3) व्यापारियों और शिल्पकारों का एक संघ या संगठन
(4) शैक्षणिक संस्थानों को दिया जाने वाला एक प्रकार का भूमि अनुदान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. राजस्थान से गुजरने वाले प्राचीन व्यापारिक मार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्राचीन दक्षिणापथ मार्ग प्रमुख उत्तरी नगरों को दक्षिण से जोड़ता था, जो पूर्वी राजस्थान के कुछ हिस्सों से होकर गुजरता था।
II. मथुरा को उज्जैन से जोड़ने वाला मार्ग बैराठ और माध्यमिका से होकर गुजरता था।
III. पश्चिमी राजस्थान के मरुस्थलीय क्षेत्रों को सभी प्राचीन कारवां मार्गों द्वारा पूर्णतः त्याग दिया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. माध्यमिका का प्राचीन नगरीय केंद्र, जो अपने महत्वपूर्ण पुरातात्विक अवशेषों और संरचनात्मक विकास के लिए जाना जाता है, राजस्थान के किस आधुनिक स्थान से पहचाना जाता है?
(1) बैराठ
(2) रैढ़
(3) नगर
(4) नगरी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
अभिकथन (A): मौर्योत्तर काल के दौरान प्राचीन राजस्थान में वैदिक यज्ञों की परंपरा प्रचलित थी।
कारण (R): घोसुंडी शिलालेख में राजा सर्वतात द्वारा अश्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान का उल्लेख है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. प्राचीन राजस्थान में बौद्ध धर्म के उद्भव के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) मौर्य काल के दौरान बैराठ बौद्ध धर्म का एक प्रमुख केंद्र था।
(2) अशोक का भाब्रू शिलालेख बौद्ध त्रिरत्न में उनके विश्वास को सिद्ध करता है।
(3) मौर्य काल के व्यापक संरचनात्मक शैलकृत बौद्ध चैत्य जैसलमेर में पाए जाते हैं।
(4) बैराठ में एक गोलाकार बौद्ध मंदिर के खंडहरों की खुदाई की गई है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. प्राचीन राजस्थान की प्रमुख मृण्मय कला, विशेष रूप से लौकिक और धार्मिक विषयों को चित्रित करने वाली विशिष्ट ढली हुई पट्टिकाएं, मुख्य रूप से किस स्थल पर खोजी गई थीं?
(1) रंगमहल
(2) कालीबंगा
(3) बालाथल
(4) गणेश्वर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. प्राचीन राजस्थान में शिक्षा और अधिगम के केंद्र के रूप में भीनमाल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्राचीन काल में यह गुर्जर देश की राजधानी थी।
II. प्रसिद्ध गणितज्ञ और खगोलशास्त्री ब्रह्मगुप्त यहाँ निवास करते थे।
III. 'शिशुपाल वध' के रचयिता संस्कृत कवि माघ इसी नगर से जुड़े थे।
IV. यह विशेष रूप से बौद्ध शिक्षा का केंद्र था जहाँ वैदिक या जैन विद्वानों की कोई उपस्थिति नहीं थी।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. राजस्थान में विभिन्न ताम्रपाषाणिक स्थलों जैसे आहड़ और बालाथल में पुरातात्विक उत्खनन से संकेत मिलता है कि प्राचीन निवासियों के आहार में मुख्य रूप से शामिल था:
(1) कृषि के किसी प्रमाण के बिना केवल पालतू पशुओं का मांस
(2) चावल, गेहूं, जौ और पालतू पशु उत्पाद
(3) विशेष रूप से समुद्री मछली और आयातित मसाले
(4) प्राचीन व्यापार के माध्यम से लाए गए मक्का और आलू
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. प्राचीन शिल्प समुदायों के संदर्भ में गणेश्वर स्थल के ऐतिहासिक महत्व का सबसे अच्छा वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) यह मुख्य रूप से मेसोपोटामिया को निर्यात करने वाला एक प्राचीन वस्त्र निर्माण केंद्र था।
(2) यह मौर्य साम्राज्य में मनके बनाने वाला सबसे बड़ा नगरीय केंद्र था।
(3) यह हड़प्पा सभ्यता को तांबे की आपूर्ति करने वाला एक प्रमुख केंद्र था।
(4) यह विशेष रूप से अपने अत्यधिक चमकीले 'उत्तरी काली चमकीली मृदभांड' के लिए जाना जाता था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्राचीन जनपद/जनजातीय गणराज्य)
A. शिबि जनपद
B. मालव गणराज्य
C. यौधेय गणराज्य
D. अर्जुनायन गणराज्य
सूची II: (राजस्थान में संबंधित क्षेत्र)
i. उत्तरी राजस्थान (गंगानगर-हनुमानगढ़)
ii. मेवाड़ क्षेत्र (चित्तौड़गढ़)
iii. अलवर-भरतपुर क्षेत्र
iv. जयपुर-टोंक क्षेत्र (नगर)
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: इस काल में केंद्रीकृत व्यापार में ह्रास देखा गया और भूमि अनुदान के माध्यम से कृषि विस्तार में वृद्धि हुई।
कथन II: इस संक्रमण काल के दौरान सामंत व्यवस्था का उदय प्रमुख हो गया।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं

(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. प्राचीन राजस्थान में सामाजिक संरचना और वर्ण व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. शिलालेख ब्राह्मणों की उपस्थिति का संकेत देते हैं जिन्होंने न केवल पुरोहिती कर्तव्यों का पालन किया बल्कि मंत्रियों और योद्धाओं के रूप में भी कार्य किया।

II. क्षत्रिय विशेष रूप से कृषि श्रम के लिए उत्तरदायी थे।

III. वैश्य प्रभावशाली व्यापारिक श्रेणियों में संगठित थे जिन्होंने नागरिक प्रशासन में भूमिका निभाई।

IV. शूद्रों ने कठोर व्यावसायिक सीमाओं का अनुभव किया जिसने उन्हें कभी भी कृषि या शिल्प में संलग्न होने की अनुमति नहीं दी।

V. गुप्तोत्तर काल के शिलालेखों में मिश्रित जातियों (वर्णसंकर) की अवधारणा उभरने लगी थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और V
(3) केवल II, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. निम्नलिखित में से कौन सा प्राचीन ग्रंथ मत्स्य क्षेत्र (जो आधुनिक राजस्थान के कुछ हिस्सों के अनुरूप है) को महाकाव्य काल के दौरान एक प्रमुख राज्य के रूप में संदर्भित करता है?

(1) अथर्ववेद और रामायण
(2) ऋग्वेद और महाभारत
(3) जेंद अवेस्ता और उपनिषद
(4) त्रिपिटक और जातक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. प्राचीन राजस्थान में महिलाओं की स्थिति के संबंध में, ऐतिहासिक और पुरालेखीय साक्ष्यों द्वारा निम्नलिखित सभी कथनों का समर्थन किया जाता है, सिवाय:

(1) मौर्य युग के दौरान पर्दा प्रथा को कठोरता से और सार्वभौमिक रूप से लागू किया गया था।
(2) कुलीन परिवारों की महिलाएं प्रायः मंदिरों को धार्मिक दान देती थीं।
(3) प्रारंभिक जनजातीय समाजों में, महिलाओं ने विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में व्यापक रूप से भाग लिया।
(4) संयुक्त परिवार एक मानक संरचना थी, जिसमें वरिष्ठ पुरुष के पास अधिकार होता था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. प्राचीन विवाह परंपराओं के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:

(1) प्रतिलोम विवाह — उच्च वर्ण के पुरुष का निम्न वर्ण की स्त्री के साथ विवाह
(2) प्रजापत्य विवाह — जोड़े के गुप्त रूप से पलायन वाला विवाह
(3) अनुलोम विवाह — उच्च वर्ण के पुरुष का निम्न वर्ण की स्त्री के साथ विवाह
(4) गंधर्व विवाह — जोड़े की सहमति के बिना पुरोहितों द्वारा तय किया गया विवाह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. प्राचीन आर्थिक जीवन के संदर्भ में, उदयपुर में स्थित आहड़ स्थल ऐतिहासिक रूप से किस पर अत्यधिक निर्भर अर्थव्यवस्था के लिए प्रसिद्ध है?

(1) व्यापक समुद्री व्यापार
(2) लौह प्रगलन और इस्पात उत्पादन
(3) नील जैसी व्यावसायिक नकदी फसलों की खेती
(4) ताम्र धातु कर्म और उपकरण निर्माण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. राजस्थान से गुजरने वाले प्राचीन व्यापारिक मार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. माध्यमिका नगर पूर्णतः पृथक था और इसका प्रमुख उज्जैन-मथुरा व्यापार मार्ग से कोई संबंध नहीं था।

II. प्राचीन राजस्थान के व्यापारिक मार्गों ने अरावली से भारत के अन्य हिस्सों में तांबे के विनिमय को सुगम बनाया।

III. पुष्कर प्राचीन यात्रा मार्गों पर एक महत्वपूर्ण धार्मिक और व्यावसायिक केंद्र के रूप में कार्य करता था।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) केवल I
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) केवल III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. प्राचीन नगरीय केंद्र कालीबंगा के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:

(1) यह जूते हुए खेत के साक्ष्य प्रदान करता है, जो प्रारंभिक कृषि पद्धतियों को दर्शाता है।
(2) यह अशोक के शासनकाल के दौरान मौर्य साम्राज्य की राजधानी के रूप में कार्य करता था।
(3) यह प्राचीन सरस्वती (घग्गर) नदी के तट पर स्थित था।
(4) यह परिपक्व हड़प्पा चरण की विशिष्ट एक सुनियोजित जल निकासी व्यवस्था को प्रदर्शित करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. राजस्थान में प्राचीन शिलालेखों (जैसे कि बड़वा और नांदसा में) में प्रायः पाए जाने वाले 'यूप' शब्द का वैदिक परंपराओं के संदर्भ में क्या अर्थ है?

(1) बौद्ध भिक्षुओं द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक विशिष्ट प्रकार का विश्राम स्थल।
(2) स्थानीय कृषि भूमि के लिए विशिष्ट कराधान कानूनों को रेखांकित करने वाला एक राजकीय आदेश।
(3) विभिन्न धार्मिक दानों में प्रायः उपयोग किया जाने वाला एक विशिष्ट प्रकार का प्राचीन सिक्का।
(4) वैदिक यज्ञ के सफल अनुष्ठान की स्मृति में स्थापित एक यज्ञ स्तंभ।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्राचीन धार्मिक स्थल)
A. बैराठ (बौद्ध स्थल)
B. कोलवी गुफाएं (बौद्ध स्थल)
C. नगरी (वैष्णव स्थल)
D. बरली शिलालेख (जैन संदर्भ)
सूची II: (राजस्थान के आधुनिक जिले)
i. झालावाड़
ii. चित्तौड़गढ़
iii. अजमेर
iv. जयपुर (कोटपूतली-बहरोड़ / जयपुर ग्रामीण)
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: बैराठ स्तूप भारत में ईंट और लकड़ी से बने प्राचीनतम ज्ञात संरचनात्मक स्तूपों में से एक है।
कथन II: राजस्थान की भौगोलिक सीमाओं के भीतर अशोक के स्तंभों या शिलालेखों का कोई प्रमाण कभी नहीं मिला है।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. मध्यकाल के आगमन से पूर्व प्राचीन राजस्थान में शिक्षा प्रणाली का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) यह मुख्य रूप से गुरुकुल प्रणाली और भूमि अनुदान द्वारा समर्थित अग्रहारों के माध्यम से प्रदान की जाती थी।
(2) शिक्षा पूर्णतः केंद्रीकृत थी और सीधे राजा के राजकोष द्वारा प्रबंधित की जाती थी।
(3) सीखने का कोई औपचारिक केंद्र नहीं था, और शिक्षा केवल सैन्य प्रशिक्षण तक सीमित थी।
(4) प्रत्येक जिले में हजारों अंतरराष्ट्रीय विद्वानों को समायोजित करने वाले प्राचीन विश्वविद्यालय स्थापित किए गए थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. राजस्थान के प्राचीन स्थलों में पाए गए 'दोहरे समाधान' के पुरातात्विक साक्ष्य, जो संभावित रूप से पारिवारिक संरचनाओं और सामाजिक रीति-रिवाजों पर प्रकाश डालते हैं, मुख्य रूप से किस स्थल से जुड़े हैं?
(1) बागोर
(2) गणेश्वर
(3) सुनारी
(4) कालीबंगा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
अभिकथन (A): आहड़ के प्राचीन स्थल को क्षेत्रीय परंपराओं में 'ताम्रवती' के नाम से भी जाना जाता है।
कारण (R): आहड़ पुरातात्विक स्थल पर तांबा गलाने की भट्टियों और तांबे के औजारों के व्यापक प्रमाण मिले हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. टोंक जिले के प्राचीन स्थल रैढ़ को प्रायः 'राजस्थान का प्राचीन टाटा नगर' कहा जाता है, जिसका मुख्य कारण किसकी खोज है?
(1) मौर्य काल की विशाल लौह अयस्क खदानें
(2) प्राचीन इस्पात निर्माण कारखानों के व्यापक खंडहर
(3) भारत में प्राचीन आहत सिक्कों का विशालतम भंडार
(4) बड़ी संख्या में प्राचीन युद्ध रथ और हथियार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में पाई जाने वाली प्राचीन संस्कृतियों के सही कालानुक्रमिक क्रम को दर्शाता है?
(1) ताम्रपाषाण युग (आहड़) → पुरापाषाण युग (डीडवाना) → मध्यपाषाण युग (बागोर) → लौह युग (नोह)
(2) पुरापाषाण युग (डीडवाना) → मध्यपाषाण युग (बागोर) → ताम्रपाषाण युग (आहड़) → लौह युग (नोह)
(3) मध्यपाषाण युग (बागोर) → ताम्रपाषाण युग (आहड़) → लौह युग (नोह) → पुरापाषाण युग (डीडवाना)
(4) पुरापाषाण युग (डीडवाना) → लौह युग (नोह) → मध्यपाषाण युग (बागोर) → ताम्रपाषाण युग (आहड़)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. प्राचीन राजस्थान की सामाजिक संरचना के संदर्भ में, पारंपरिक चार वर्णों की व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) चांडाल
(2) ब्राह्मण
(3) क्षत्रिय
(4) वैश्य
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. भीलवाड़ा जिले का प्राचीन स्थल बागोर प्रारंभिक सामाजिक संरचनाओं के संबंध में महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रदान करता है। यह मुख्य रूप से किस रूप में जाना जाता है?

(1) मौर्यकालीन प्रशासनिक और न्यायिक गतिविधियों के एक नगरीय केंद्र के रूप में।
(2) पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्यों वाला एक मध्यपाषाण कालीन स्थल।
(3) लौह युग की धातु विज्ञान की उन्नत तकनीकों को प्रदर्शित करने वाला स्थल।
(4) बौद्ध मठ और शैलकृत स्थापत्य अवशेषों का स्थान।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. कालीबंगा और आहड़ जैसे प्राचीन स्थलों पर विभिन्न मृण्मय स्त्री मूर्तियों की खोज राजस्थान में प्राचीन मान्यताओं के किस पहलू का सबसे प्रबल संकेत है?
(1) विशेष रूप से पुरुष सौर देवताओं की पूजा और वंदना।
(2) मातृ देवी की पूजा और उर्वरता पंथों का प्रचलन।
(3) उस क्षेत्र की महिला शासकों का यथार्थवादी चित्रण।
(4) राजनीतिक प्रशासन की एक जटिल मातृसत्तात्मक प्रणाली।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राजस्थान के प्राचीन स्थल)
A. कालीबंगा
B. बालाथल
C. गणेश्वर
D. बैराठ
सूची II: (प्रमुख पुरातात्विक खोज / विशेषता)
i. प्राचीन बुने हुए कपड़े के प्रमाण
ii. प्राचीनतम भूकंप के प्रमाण
iii. अशोक का शिलालेख
iv. प्राक-हड़प्पा ताम्र वस्तुएं
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. निम्नलिखित में से कौन सा कथन ताम्रपाषाण काल के दौरान प्राचीन राजस्थान में कृषि पद्धतियों का सही वर्णन करता है?
(1) कृषि पूर्णतः अज्ञात थी क्योंकि समाज पूर्णतः शिकारी-संग्रहकर्ता था।
(2) तंबाकू और मक्का जैसी नकदी फसलें प्राथमिक क्षेत्रीय निर्यात थीं।
(3) नदी घाटियों के किनारे जौ, गेहूं और बाजरे की खेती की जाती थी।
(4) कृषि पूर्णतः गहरे नलकूप सिंचाई पर निर्भर थी।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. राजस्थान में प्राचीन व्यापार और आर्थिक जीवन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कालीबंगा जैसे स्थलों पर मुहरों और मुद्रांकनों की खोज स्थापित लंबी दूरी के व्यापारिक नेटवर्क का संकेत देती है।
II. 'गधिया' नामक सिक्कों का उपयोग राजस्थान में मौर्य काल के दौरान व्यापक रूप से किया जाता था।
III. स्थानीय लेन-देन में धात्विक मुद्रा के उपयोग के साथ वस्तु विनिमय प्रणाली भी सह-अस्तित्व में थी।
IV. राजस्थान में रोमन एम्फोरा की उपस्थिति राजस्थान और रोम के बीच सीधे समुद्री व्यापार को सिद्ध करती है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. प्राचीन राजस्थान के नगरीय केंद्रों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) नगरी (माध्यमिका) शिबि जनपद का एक महत्वपूर्ण नगरीय केंद्र था।
(2) टोंक जिले का नगर मालव गणराज्य के युग के दौरान प्रमुख था।
(3) ओसियां दक्षिणी राजस्थान में मौर्य साम्राज्य की राजधानी थी।
(4) भीनमल पश्चिमी राजस्थान में एक प्रमुख नगरीय और व्यावसायिक केंद्र के रूप में विकसित हुआ।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: घोसुंडी शिलालेख संकर्षण और वासुदेव की पूजा का उल्लेख करने वाला एक प्रारंभिक पुरालेखीय स्रोत है।
कथन II: प्राचीन राजस्थान में भागवत धर्म के उद्भव को वैदिक यज्ञ अनुष्ठानों के व्यापक प्रभुत्व द्वारा पूर्णतः दबा दिया गया था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. निम्नलिखित में से कौन सी खोज राजस्थान में जैन धर्म की प्राचीनता को सबसे उपयुक्त रूप से स्थापित करती है?
(1) बैराठ में भाब्रू शिलालेख
(2) कोटा जिले से बड़वा यूप अभिलेख
(3) भीलवाड़ा जिले से नांदसा यूप अभिलेख
(4) अजमेर जिले से बरली अभिलेख
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. राजस्थान की निम्नलिखित प्राचीन संरचनाओं/पुरालेखों को प्राचीनतम से नवीनतम के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

I. कालीबंगा का जुता हुआ खेत
II. अशोक का भाब्रू शिलालेख
III. घोसुंडी शिलालेख
IV. बड़वा यूप अभिलेख
(1) I, II, III, IV
(2) I, III, II, IV
(3) II, I, III, IV
(4) I, II, IV, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. भीनमल का प्राचीन स्थल, जो अपनी शैक्षिक और सांस्कृतिक विरासत के लिए प्रसिद्ध है, ऐतिहासिक रूप से किस प्रमुख विदेशी यात्री द्वारा देखा गया था?
(1) मेगास्थनीज
(2) फाह्यान
(3) ह्वेन त्सांग
(4) अल-बिरूनी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. प्राचीन राजस्थान में भोजन, वेशभूषा और सामाजिक रीति-रिवाजों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किस पुरातात्विक खोज को छोड़कर अन्य सभी वस्त्र उपयोग के प्रत्यक्ष प्रमाण प्रदान करते हैं?
(1) बागोर में रेशमी कपड़ों के शैल चित्र
(2) बैराठ में मिले बुने हुए कपड़े के अवशेष
(3) बालाथल में खोजे गए बुने हुए सूती कपड़े के टुकड़े
(4) कालीबंगा में मिट्टी के बर्तनों पर कपड़े के निशान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्राचीन राजस्थान के व्यावसायिक समुदायों की सही विशेषता बताता है?
(1) समाज ने स्थानीय व्यावसायिक श्रेणियों के गठन पर कठोरता से प्रतिबंध लगा दिया था।
(2) सभी शिल्पों और व्यापारों का प्रबंधन निजी शिल्पकारों के बिना राज्य की नौकरशाही द्वारा किया जाता था।
(3) शिल्पकार अत्यधिक घुमंतू थे और नगरी या नगर जैसे नगरीय केंद्रों में कभी नहीं बसे।
(4) शिल्पकारों ने अपने हितों की रक्षा के लिए स्वयं को 'श्रेणी' नामक स्थानीय संघों में संगठित किया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्राचीन सिक्कों के प्रकार/भंडार)
A. मालवगण के सिक्के
B. शिबि जनपद के सिक्के
C. इंडो-ग्रीक सिक्के (अपोलोडोटस)
D. आहत सिक्के (विशाल भंडार)
सूची II: (राजस्थान में संबंधित सत्ता/क्षेत्र)
i. माध्यमिका (नगरी)
ii. बैराठ
iii. नगर (टोंक)
iv. रैढ़
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. प्राचीन से पूर्व-मध्यकालीन राजस्थान में संक्रमण के संदर्भ में, 'अग्रहार' शब्द का अर्थ है:
(1) क्षेत्रीय रक्षा के लिए सामंतों द्वारा स्थापित एक विशिष्ट सैन्य शिविर।
(2) विशिष्ट घोड़ों के व्यापार के लिए विशेष रूप से उपयोग किया जाने वाला एक केंद्रीकृत बाजार।
(3) शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ब्राह्मणों या मंदिरों को दी गई कर-मुक्त भूमि।
(4) नई कराधान और राजस्व प्रणाली लागू करने के लिए जारी किया गया एक औपचारिक राज्यादेश।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. प्राचीन राजस्थान में वर्ण और सामाजिक संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पुरालेखीय साक्ष्य बताते हैं कि प्राचीन राजस्थान में सामाजिक गतिशीलता पूर्णतः असंभव थी।
II. सामोली शिलालेख महाजन समुदाय की आर्थिक गतिविधियों पर प्रकाश डालता है।
III. स्वदेशी जनजातियों को शताब्दियों के दौरान व्यापक वर्ण ढांचे में धीरे-धीरे एकीकृत किया गया था।
IV. बौद्धिक और धार्मिक यज्ञों पर क्षत्रियों का एकाधिकार था।
V. छुआछूत का अस्तित्व नहीं था और नगरीय केंद्रों में सभी सामाजिक समूहों का स्तर समान था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, IV और V
(3) II, III और V
(4) III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. प्राचीन जनजातियों और राजस्थान में उनके ऐतिहासिक क्षेत्र के संबंध में सही युग्म की पहचान कीजिए:
(1) मत्स्य — पूर्वी राजस्थान (जयपुर, अलवर, भरतपुर)
(2) मालव — पश्चिमी मरुस्थलीय क्षेत्र (जैसलमेर, बाड़मेर)
(3) शिबि — उत्तरी राजस्थान (हनुमानगढ़, गंगानगर)
(4) यौधेय — दक्षिणी राजस्थान (उदयपुर, डूंगरपुर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. ऐतिहासिक और पुरालेखीय स्रोत संकेत देते हैं कि प्राचीन राजस्थान में महिलाओं के संपत्ति अधिकार (स्त्रीधन):
(1) किसी भी स्थानीय कानून या परंपराओं द्वारा पूर्णतः अपरिचित थे।

(2) विवाह अनुष्ठानों के दौरान प्राप्त विशिष्ट उपहारों और धन पर मान्यता प्राप्त अधिकार थे।
(3) परिवार के वरिष्ठ पुरुष मुखिया के संपत्ति अधिकारों के समान थे।
(4) कठोरता से केवल कुछ कृषि भूमि के स्वामित्व तक सीमित थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. प्राचीन राजस्थान में पारिवारिक संरचना और विवाह रीति-रिवाजों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) नियोग
(2) वर्ण-संकर
(3) स्वयंवर
(4) सती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. राजस्थान में स्थित हड़प्पा स्थलों (जैसे कालीबंगा) की कृषि अर्थव्यवस्था का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) गेहूं और सरसों जैसी बहु-फसली खेती के लिए हल का उपयोग करने वाली एक स्थिर प्रणाली।
(2) चावल की फसलों की स्थानांतरित कृषि पर अत्यधिक निर्भर अर्थव्यवस्था।
(3) फसल की खेती के किसी भी प्रमाण के बिना पशुचारी खानाबदोश पर आधारित अर्थव्यवस्था।
(4) राज्य द्वारा निर्मित व्यापक नहर तंत्र पर आधारित एक कृषि प्रणाली।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: अरावली से गंगा घाटी तक तांबे के परिवहन के लिए राजस्थान के आंतरिक व्यापारिक मार्ग आवश्यक थे।
कथन II: नगर और रैढ़ जैसे नगरीय केंद्रों का उद्भव व्यापारिक मार्ग तंत्र से पूर्णतः स्वतंत्र था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. नगरी (प्राचीन माध्यमिका) में विशाल ईंटों के किलेबंदी और संरचनात्मक अवशेषों की उपस्थिति बताती है कि राजस्थान में प्राचीन नगरीय केंद्र मुख्य रूप से किस रूप में कार्य करते थे?
(1) केवल अस्थाई मौसमी बाजार
(2) जनता से अलग-थलग निर्जन धार्मिक स्थल
(3) विदेशी व्यापारियों के लिए विशिष्ट आवासीय क्षेत्र
(4) रक्षा में सक्षम किलेबंद राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. राजस्थान में वैष्णव धर्म का प्राचीनतम प्रमाण किस स्थान पर एक पत्थर के शिलालेख के रूप में मिलता है?
(1) बैराठ
(2) बिजोलिया
(3) घोसुंडी
(4) रणकपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (विद्वान/ग्रंथ)
A. ब्रह्मगुप्त
B. माघ
C. हरिभद्र सूरी
D. चंदबरदाई
सूची II: (प्राचीन/पूर्व-मध्यकालीन राजस्थान से प्रासंगिकता)
i. भीनमल में 'शिशुपाल वध' की रचना की
ii. भीनमल में 'ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त' की रचना की
iii. चित्तौड़/राजस्थान में जैन साहित्य से जुड़े
iv. 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता (मध्यकाल में संक्रमण)
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. निम्नलिखित में से कौन सा कथन प्राचीन राजस्थान की प्रारंभिक कला और स्थापत्य का सटीक वर्णन करता है?
(1) यह क्षेत्र मौर्य काल के एकाश्म शैलकृत हिंदू मंदिरों की प्रचुरता के लिए जाना जाता है।
(2) प्राचीन नगरीय केंद्रों में निर्माण के लिए केवल संगमरमर ही एकमात्र सामग्री थी।
(3) राजस्थान में प्राचीन कला पूर्णतः लौकिक विषयों से रहित थी, जो केवल देवताओं पर केंद्रित थी।
(4) प्रारंभिक स्थापत्य अवशेषों में मुख्य रूप से ईंट संरचनाएं, मृण्मय पट्टिकाएं और पाषाण स्तंभ शामिल हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. प्राचीन राजस्थान में शिक्षा के केंद्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अग्रहार अनुदान का उद्देश्य शिक्षित ब्राह्मणों को अध्यापन हेतु सहायता देना था।
II. बैराठ में बौद्ध विहारों ने प्रारंभिक मठवासी शिक्षा के केंद्रों के रूप में कार्य किया।
III. भीनमल खगोल विज्ञान और गणित के एक प्रमुख केंद्र के रूप में उभरा।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III

(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. आहड़ और गिलुंड जैसे राजस्थान के प्राचीन स्थलों पर पुरातात्विक निष्कर्षों के आधार पर, भोजन पकाने और भंडारण के लिए उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक बर्तन मुख्य रूप से किसके बने थे?
(1) कांच
(2) शुद्ध स्वर्ण और रजत
(3) काले और लाल मृदभांड
(4) ढलवां लोहा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
अभिकथन (A): राजस्थान में सुनारी और जोधपुरा स्थल प्राचीन धातु विज्ञान में महत्वपूर्ण प्रगति प्रदर्शित करते हैं।
कारण (R): इन स्थलों पर उत्खनन से प्राचीन लौह प्रगलन भट्टियों के प्रमाण मिले हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में महत्वपूर्ण भंडारों में पाया जाने वाला मान्यता प्राप्त प्राचीन सिक्के का प्रकार नहीं था?
(1) रजत आहत सिक्के
(2) मालव गणराज्य के ताम्र सिक्के
(3) इंडो-ग्रीक ड्रेचमा
(4) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की मुहरें
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. प्राचीन से पूर्व-मध्यकालीन राजस्थान में संक्रमण शक्तिशाली केंद्रीकृत साम्राज्यों के पतन द्वारा चिह्नित था। इस क्षेत्र में इस पतन का प्राथमिक राजनीतिक प्रभाव क्या था?
(1) सभी प्रमुख नगरीय बस्तियों का पूर्ण और स्थायी परित्याग।
(2) क्षेत्रीय राजपूत वंशों का उदय और सामंत व्यवस्था का प्रसार।
(3) पूरे क्षेत्र में प्रत्यक्ष लोकतांत्रिक गणराज्यों की स्थापना।
(4) केंद्रीकृत दिल्ली सल्तनत द्वारा क्षेत्र की तत्काल विजय।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. प्राचीन राजस्थान में जनजातियों की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. भीलों का उल्लेख प्राचीन संस्कृत साहित्य में कुशल धनुर्धर और वनवासी के रूप में मिलता है।
II. मीणाओं को पारंपरिक रूप से पूर्वी राजस्थान के प्राचीनतम स्वदेशी जनजातीय समूहों में से एक माना जाता है।
III. प्राचीन जनजातीय प्रमुख प्रायः वैवाहिक और राजनीतिक गठबंधनों के माध्यम से समय के साथ राजपूत वर्ण में एकीकृत हो गए।
IV. प्राचीन काल में जनजातीय समाज पूर्णतः खानाबदोश थे और कृषि से पूर्णतः अनभिज्ञ थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. प्रारंभिक ऐतिहासिक काल के दौरान प्राचीन राजस्थान में वर्ण व्यवस्था के भीतर सामाजिक गतिशीलता का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) प्रारंभिक वैदिक काल से पूर्ण कठोरता के साथ जन्म से कड़ाई से निश्चित।
(2) पूर्णतः अनुपस्थित और धन पर आधारित एक आधुनिक वर्ग प्रणाली द्वारा प्रतिस्थापित।
(3) विशेष रूप से ब्राह्मण वर्ण के सदस्यों तक सीमित।
(4) विदेशी जनजातियों और स्थानीय प्रमुखों को क्षत्रिय वर्ण में सम्मिलित करने हेतु पर्याप्त लचीला
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. प्राचीन राजस्थान में महिलाओं की स्थिति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) इस क्षेत्र से संबंधित प्राचीन ग्रंथों और शिलालेखों में स्त्री शिक्षा के संदर्भ पूर्णतः अनुपस्थित हैं।
(2) महिलाओं का सामान्यतः बहुत सम्मान किया जाता था, यद्यपि पितृसत्तात्मक पारिवारिक संरचनाएं हावी थीं।
(3) शाही महिलाएं प्रायः धार्मिक समारोहों में भाग लेती थीं और भूमि दान करती थीं।
(4) सती और कठोर पर्दा प्रथा जैसी परंपराएं प्रारंभिक प्राचीन काल में सार्वभौमिक रूप से मानक नहीं थीं, किंतु बाद में प्रमुखता से उभरीं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राजस्थान में प्राचीन स्थल)
A. नोह
B. सुनारी
C. कुराड़ा
D. गिलुंड
सूची II: (संबंधित जिला)
i. भरतपुर
ii. झुंझुनू
iii. नागौर
iv. राजसमंद
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii

(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. नोह (भरतपुर) और जोधपुरा (जयपुर) में प्राचीन लौह प्रगलन स्थलों की उपस्थिति प्राचीन राजस्थान के आर्थिक जीवन के संबंध में किस अवधारणा का सर्वाधिक समर्थन करती है?
(1) यह क्षेत्र पूर्णतः दक्षिण भारत से आयातित लोहे पर निर्भर था।
(2) स्थानीय व्यावसायिक समुदायों के पास स्थानीय अयस्क निक्षेपों का दोहन करने के लिए उन्नत धातु विज्ञान ज्ञान था।
(3) प्राचीन राजस्थान में लोहे का उपयोग केवल सजावटी उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
(4) मौर्य काल के दौरान अर्थव्यवस्था कृषि से पूर्णतः भारी उद्योग की ओर परिवर्तित हो गई थी।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. गंगा के मैदानों को पश्चिमी बंदरगाहों से जोड़ने वाला प्राचीन व्यापारिक मार्ग राजस्थान से होकर गुजरता था। निम्नलिखित में से कौन सा नगरीय केंद्र इस मार्ग पर एक महत्वपूर्ण पारगमन केंद्र के रूप में कार्य करता था?
(1) माध्यमिका (नगरी)
(2) कालीबंगा
(3) गणेश्वर
(4) कोलवी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: बैराठ में उत्खनन से एक गोलाकार बौद्ध मंदिर और एक मठ के अवशेष मिले हैं।
कथन II: बैराठ एक महत्वपूर्ण नगरीय केंद्र था जो केवल अरब सागर के पार समुद्री व्यापार के कारण समृद्ध हुआ।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. प्राचीन राजस्थान में धार्मिक मान्यताओं के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) अश्वमेध
(2) वाजपेय
(3) अग्निष्टोम
(4) संलेखना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. प्राचीन राजस्थान में जैन धर्म के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) मौर्य काल के दौरान राजस्थान से जैन धर्म पूर्णतः विलुप्त हो गया था।
(2) मरुस्थल की कठोर परिस्थितियों के कारण जैन भिक्षुओं को पश्चिमी राजस्थान जाने की मनाही थी।
(3) बरली शिलालेख राजस्थान में जैन धर्म के प्राचीनतम पुरालेखीय संदर्भों में से एक प्रदान करता है।
(4) राजस्थान में जैन धर्म को विशेष रूप से शूद्र वर्ण द्वारा संरक्षण दिया गया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. राजस्थान की कला और स्थापत्य में निम्नलिखित विकासों को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. ओसियां में प्रारंभिक संरचनात्मक मंदिर
II. कालीबंगा में हड़प्पाकालीन नगर नियोजन
III. बैराठ में मौर्यकालीन गोलाकार ईंट मंदिर
IV. अलनिया में शैल चित्र
(1) IV, II, III, I
(2) II, IV, I, III
(3) IV, III, II, I
(4) II, III, IV, I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. प्राचीन राजस्थान में शिक्षा और शिक्षण केंद्रों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रारंभिक वैदिक और उत्तर-वैदिक काल में शिक्षा मुख्य रूप से मौखिक रूप से प्रसारित की जाती थी।
II. शिलालेखों में ब्राह्मणों को ग्राम अनुदान का उल्लेख है, जो वैदिक शिक्षा के केंद्रों के रूप में कार्य करते थे।
III. जैन उपाश्रय बाद में पांडुलिपि संरक्षण और शिक्षा के महत्वपूर्ण केंद्रों के रूप में विकसित हुए।
IV. तकनीकी शिक्षा, जैसे धातु विज्ञान और स्थापत्य, वंशानुगत व्यावसायिक श्रेणियों के माध्यम से दी जाती थी।
V. राज्य ने नगरीय केंद्रों में खगोल विज्ञान और गणित के शिक्षण पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. राजस्थान में प्राचीन सामाजिक रीति-रिवाजों के संदर्भ में, 'नियोग' शब्द का अर्थ है:
(1) वंश को आगे बढ़ाने हेतु एक विधवा द्वारा अपने देवर से संतानोत्पत्ति करना।
(2) केंद्र सरकार द्वारा कृषि भूमि पर लगाया जाने वाला एक विशिष्ट कर।
(3) स्वेच्छा से प्राण त्यागने हेतु किया जाने वाला एक धार्मिक उपवास अनुष्ठान।
(4) नए जनजातीय प्रमुख के लिए किया जाने वाला पारंपरिक राज्याभिषेक समारोह।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. कालीबंगा में प्रचुर मात्रा में मिली शंख की चूड़ियाँ, मृण्मय मनके और अर्ध-बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण किसकी उपस्थिति को रेखांकित करते हैं?
(1) एक ऐसा समाज जिसने धार्मिक कारणों से व्यक्तिगत श्रृंगार का त्याग कर दिया था
(2) विशेष रूप से रोमन साम्राज्य से आयातित वस्तुएं
(3) आभूषणों की स्थानीय और क्षेत्रीय मांग को पूर्ण करने वाले विशिष्ट शिल्प समुदाय
(4) कृषि वस्तुओं के वस्तु विनिमय पर पूर्णतः निर्भर अर्थव्यवस्था
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्राचीन आर्थिक तत्व)
A. श्रेणी
B. निष्क
C. वार्ता
D. कार्षापण
सूची II: (विवरण)
i. कृषि, पशुपालन और व्यापार के लिए पारंपरिक शब्द
ii. एक प्राचीन सिक्का या मुद्रा की इकाई
iii. शिल्पकारों/व्यापारियों का एक संघ या निगम
iv. एक स्वर्ण आभूषण या प्राचीन मुद्रा इकाई
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. निम्नलिखित में से कौन प्राचीन से पूर्व-मध्यकालीन राजस्थान में संक्रमण की एक प्रमुख विशेषता की पहचान करता है?
(1) जाति व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन
(2) बड़े पैमाने पर औद्योगिक निर्माण की शुरुआत
(3) एकल राजस्थानी शासक के तहत पूरे भारतीय उपमहाद्वीप का एकीकरण
(4) भूमि अनुदान प्रणाली और विकेंद्रीकृत राजनीतिक सत्ता का व्यापक उदय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: समय के साथ, हूणों और गुर्जरों जैसे विदेशी समूहों के आत्मसात होने से राजस्थान में पारंपरिक वर्ण व्यवस्था में जटिलताएं उत्पन्न हुईं।
कथन II: पूर्व-मध्यकालीन राजपूत वंश अपनी उत्पत्ति इन्हीं जटिल आत्मसातीकरणों और पारंपरिक क्षत्रिय वंशों से जोड़ते हैं।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. प्राचीन राजस्थान में जनजातीय समाजों की भूमिका के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) भीलों का महाकाव्यों में बार-बार उल्लेख मिलता है, जो इस क्षेत्र में उनकी गहरी ऐतिहासिक जड़ों को दर्शाता है।
(2) जनजातियाँ प्रायः वन संसाधनों और अरावली श्रेणियों में रणनीतिक दर्रों को नियंत्रित करती थीं।
(3) जनजातीय समाज पूर्ण पृथकता में रहते थे और कभी भी नगरीय या कृषि केंद्रों के साथ संपर्क नहीं करते थे।
(4) शताब्दियों के दौरान, कुछ जनजातीय देवताओं और प्रथाओं को मुख्यधारा के हिंदू देवकुल में सम्मिलित कर लिया गया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
अभिकथन (A): राजस्थान में प्राचीन काल के दौरान, पूर्व-मध्यकाल में संक्रमण के समय महिलाओं की स्थिति में ह्रास हुआ।
कारण (R): पूर्व-मध्यकाल के पुरालेखीय स्रोतों में सती प्रथा और महिलाओं की गतिशीलता पर कठोर पितृसत्तात्मक नियंत्रण के संदर्भ बढ़ रहे हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. राजस्थान पर लागू प्राचीन सामाजिक ग्रंथों में 'अनुलोम' और 'प्रतिलोम' का उल्लेख किसके संबंध में नियमों को संदर्भित करता है?
(1) अंतर्-वर्ण विवाह परंपराएं और उनकी संतानों की विशिष्ट स्थिति
(2) विभिन्न कृषि भूमि अनुदानों का पदानुक्रमित वितरण।
(3) आंतरिक और बाह्य व्यापार दोनों पर लागू कराधान प्रणाली।
(4) सांप्रदायिक बावड़ियों के निर्माण हेतु उपयोग की जाने वाली स्थापत्य शैली।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. कालीबंगा जैसे प्राचीन नगरीय स्थलों पर बड़ी संख्या में बाट और माप की खोज क्या दर्शाती है?
(1) धार्मिक अनुष्ठानों के लिए ऐसे बाटों का प्राथमिक उपयोग
(2) आर्थिक लेनदेन और व्यापार की एक मानकीकृत प्रणाली
(3) यह कि समाज पूर्णतः गैर-मात्रात्मक वस्तु विनिमय

प्रणाली पर संचालित होता था
(4) स्थानीय प्रशासनिक प्राधिकरण की पूर्ण अनुपस्थिति
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. राजस्थान में प्राचीन व्यापार और मार्गों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान की रणनीतिक स्थिति ने उत्तरी मैदानों और पश्चिमी तट के बीच सांस्कृतिक और व्यावसायिक विनिमय को सुगम बनाया।
II. तांबा, अर्ध-बहुमूल्य पत्थर और वस्त्र जैसे सामान संभवतः प्राचीन राजस्थान से निर्यात किए जाते थे।
III. राजस्थान के भीतर विभिन्न ताम्रपाषाणिक स्थलों के बीच आंतरिक व्यापारिक नेटवर्क का कोई भी पुरातात्विक प्रमाण नहीं है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. राजस्थान के प्राचीन नगरीय और पुरातात्विक केंद्रों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) कालीबंगा
(2) आहड़
(3) बालाथल
(4) गिलुंड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. राजस्थान में तृतीय शताब्दी ईस्वी के यूपों की उपस्थिति को सबसे उपयुक्त रूप से किसके प्रमाण के रूप में व्याख्यायित किया जाता है?
(1) क्षेत्र में बौद्ध धर्म का पूर्ण प्रभुत्व
(2) स्थानीय स्मारकों पर ग्रीक स्थापत्य शैली का प्रभाव
(3) स्थानीय शासकों द्वारा वैदिक यज्ञ परंपराओं का पुनरुद्धार या सुदृढ़ निरंतरता
(4) राजनीतिक परिदृश्य को नियंत्रित करने वाले जैन तपस्वियों का उदय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्राचीन ग्रंथ/शिलालेख)
A. महाभारत
B. भाब्रू शिलालेख
C. घोसुंडी शिलालेख
D. बिजोलिया शिलालेख
सूची II: (राजस्थान के लिए महत्व)
i. भागवत धर्म (वैष्णव धर्म) का प्रारंभिक प्रमाण
ii. मत्स्य जनपद का उल्लेख करता है
iii. बौद्ध धर्म के प्रति अशोक की भक्ति पर प्रकाश डालता है
iv. चौहानों की उत्पत्ति के बारे में जानकारी प्रदान करता है (मध्यकालीन संक्रमण)
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. कोलवी की प्राचीन बौद्ध गुफाएं, जो शैलकृत स्थापत्य की विशेषता रखती हैं, राजस्थान के किस वर्तमान जिले में स्थित हैं?
(1) बांसवाड़ा
(2) उदयपुर
(3) झालावाड़
(4) अलवर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

86. प्राचीन राजस्थान में कला और स्थापत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. रंगमहल की मृण्मय कला गांधार कला शैली की विशिष्ट विशेषताओं को दर्शाती है।
II. राजस्थान में प्रारंभिक मंदिरों का निर्माण पाषाण की ओर जाने से पूर्व मुख्य रूप से काष्ठ का उपयोग करके किया गया था।
III. 'उत्तरी काली चमकीली मृदभांड' की खोज गंगा घाटी की संस्कृतियों के साथ संपर्क का संकेत देती है।
IV. प्राचीन काल में पूरे थार मरुस्थल में विशाल एकाश्म शैलकृत कैलाश मंदिर निर्मित किए गए थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और IV
(4) केवल I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. प्राचीन राजस्थान में शिक्षा और अधिगम के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) जनसाधारण के बीच संचार और व्यापार के सभी रूपों के लिए संस्कृत एकमात्र भाषा थी।
(2) शिक्षा प्रणाली पूर्णतः लौकिक थी, जिसमें किसी भी धार्मिक शिक्षा की अनुमति नहीं थी।
(3) महिलाओं को बिना किसी सामाजिक प्रतिबंध के पुरुषों के समान सभी प्राचीन विश्वविद्यालयों में औपचारिक रूप से नामांकित किया जाता था।
(4) शिलालेख दर्शाते हैं कि राजाओं और सामंतों ने शास्त्र और व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा देने हेतु अग्रहारों के माध्यम से ब्राह्मणों को संरक्षण दिया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. पुरातात्विक और साहित्यिक स्रोतों के आधार पर प्राचीन राजस्थान के भोजन, वेशभूषा और सामाजिक रीति-रिवाजों की विशिष्ट विशेषताएं निम्नलिखित में से कौन सी नहीं थीं?
(1) समाज के सभी वर्गों के बीच सिले हुए रेशमी वस्त्रों का व्यापक उपयोग
(2) सामान्य लोगों द्वारा ताम्र और मृण्मय आभूषणों का उपयोग
(3) मांस, जौ और डेयरी उत्पादों सहित विविध आहार का सेवन
(4) जीवन के महत्वपूर्ण परिवर्तनों को चिह्नित करने हेतु अनुष्ठानों और यज्ञों का संपादन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: मनका निर्माण और धातु विज्ञान जैसे विशिष्ट शिल्पों के स्थानीयकरण ने प्राचीन राजस्थान में विशेष व्यावसायिक समूहों के गठन को बढ़ावा दिया।
कथन II: इन व्यावसायिक समूहों ने अंततः जाति व्यवस्था को कठोर बनाने में योगदान दिया क्योंकि उनके पेशे वंशानुगत हो गए।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. निम्नलिखित में से कौन सा अनुक्रम प्राचीन राजस्थान में सिक्कों के उपयोग के सही कालानुक्रमिक विकास को दर्शाता है?
(1) आहत सिक्के → इंडो-ग्रीक सिक्के → जनजातीय गणराज्य के सिक्के (मालव/शिबि)
(2) जनजातीय गणराज्य के सिक्के (मालव/शिबि) → आहत सिक्के → इंडो-ग्रीक सिक्के
(3) इंडो-ग्रीक सिक्के → आहत सिक्के → जनजातीय गणराज्य के सिक्के (मालव/शिबि)
(4) आहत सिक्के → जनजातीय गणराज्य के सिक्के (मालव/शिबि) → इंडो-ग्रीक सिक्के
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. प्राचीन समाज के संदर्भ में, 'वर्णसंकर' शब्द का अर्थ है:
(1) युद्ध में सम्मिलित होने से पूर्व राजा का औपचारिक अनुष्ठानिक शुद्धिकरण।
(2) विलासिता के वस्त्रों का व्यापार करने वाला एक प्राचीन व्यापारिक संघ।
(3) राजकीय या कुलीन दरबारों में आयोजित एक औपचारिक दार्शनिक शास्त्रार्थ।
(4) अंतर्विवाह के माध्यम से वर्णों का मिश्रण, जिससे नवीन जातियों का उदय हुआ।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: ऐतिहासिक साक्ष्य दर्शाते हैं कि भील जैसी जनजातियों ने अरावली क्षेत्रों में स्वायत्तता का प्रयोग किया और प्रायः गुजरने वाले कारवां से कर या पथ-कर वसूला।
कथन II: मुख्यधारा के प्राचीन साम्राज्यों ने गुप्त काल तक राजस्थान की समस्त जनजातीय जनसंख्या को पूर्णतः समाप्त कर दिया था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. प्राचीन राजस्थान में विवाह रीति-रिवाजों और पारिवारिक संरचना के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार समाज की मूलभूत इकाई था।
(2) इस क्षेत्र में लागू प्राचीन धर्मशास्त्रों में विवाह के आठ रूपों को सैद्धांतिक रूप से मान्यता प्राप्त थी।
(3) वंश की शुद्धता बनाए रखने हेतु एक ही गोत्र के भीतर विवाह को कड़ाई से प्रोत्साहित किया जाता था।
(4) विवाह को सामान्यतः एक पवित्र और अटूट संस्कार माना जाता था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. प्राचीन राजस्थान की कृषि अर्थव्यवस्था सिंचाई पर बहुत अधिक निर्भर थी। निम्नलिखित में से कौन इस क्षेत्र में जल प्रबंधन के प्रारंभिक पुरातात्विक प्रमाणों का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(1) थार मरुस्थल में हड़प्पावासियों द्वारा खोदी गई बारहमासी नहरों का विशाल नेटवर्क
(2) मौर्य काल के दौरान लूणी नदी पर बड़े पैमाने पर बांधों का निर्माण
(3) कृत्रिम जल भंडारण के शून्य प्रमाण के साथ पूर्णतः वर्षा पर निर्भरता
(4) कालीबंगा जैसे स्थलों पर कुओं, तालाबों और बाढ़ के विरुद्ध सुरक्षात्मक दीवारों के साक्ष्य
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. प्राचीन राजस्थान में आर्थिक लेनदेन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) विहार
(2) कार्षापण
(3) पण
(4) शतमान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. प्राचीन राजस्थान के व्यापारिक मार्गों और अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह क्षेत्र समृद्ध गंगा घाटी और गुजरात के बंदरगाहों के

बीच एक भू-सेतु के रूप में कार्य करता था।
II. माध्यमिका (नगरी) व्यापारिक मार्ग पर एक प्रमुख व्यावसायिक केंद्र था।
III. व्यापार पूर्णतः विदेशी व्यापारियों द्वारा नियंत्रित था, जिसमें स्थानीय भागीदारी नहीं थी।
IV. कृषि अधिशेष ने शिल्प और व्यापार के विकास में सहायता की।
V. ऊंट और बैलगाड़ी माल परिवहन के सामान्य साधन थे।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) I, II और III
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. बैराठ (विराटनगर) का प्राचीन नगरीय केंद्र अत्यधिक ऐतिहासिक महत्व रखता है क्योंकि यह किसका प्रमाण प्रदर्शित करता है:
(1) प्राचीन भारतीय साम्राज्यों हेतु प्राथमिक नौसैनिक अड्डे के रूप में सेवा करना
(2) महाभारत काल से मौर्य काल तक निरंतर निवास का होना
(3) भारत में इस्लामी स्थापत्य का प्रथम स्थल होना
(4) गुप्त साम्राज्य की एकमात्र राजधानी होना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. प्राचीन राजस्थान में वैदिक धार्मिक प्रथाओं के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) कई यूपों की खोज शासक वर्ग के बीच श्रौत यज्ञों की लोकप्रियता को दर्शाती है।
(2) शुंग और कुषाण काल के दौरान वैदिक अनुष्ठानों को पूर्णतः त्याग दिया गया था।
(3) ऋग्वेद में पुष्कर का उल्लेख वैदिक परंपरा के बजाय बौद्ध शिक्षा के केंद्र के रूप में मिलता है।
(4) प्राचीन राजस्थान के राजाओं द्वारा अश्वमेध यज्ञ का संपादन कठोरता से निषिद्ध था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. पश्चिमी राजस्थान जैसे क्षेत्रों में (जैसे संक्रमण काल के दौरान ओसियां क्षेत्र) महत्वपूर्ण जैन कांस्य प्रतिमाओं और प्रारंभिक जैन संरचनात्मक अवशेषों की उपस्थिति सबसे उपयुक्त रूप से क्या दर्शाती है?
(1) वैदिक राजाओं द्वारा जैन धर्म का हिंसक दमन
(2) योद्धा जातियों द्वारा जैन धर्म को विशेष रूप से अपनाना
(3) क्षेत्र के समृद्ध व्यापारिक समुदायों (महाजनों) द्वारा जैन धर्म को संरक्षण देना
(4) मौर्य सम्राटों द्वारा समस्त प्रजा को जैन धर्म में परिवर्तित करने का आदेश
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. राजस्थान में पाए गए निम्नलिखित प्राचीन सिक्कों के भंडारों/प्रकारों को उनकी प्राचीनता के अवरोही क्रम (प्राचीनतम से नवीनतम) में व्यवस्थित करें:
I. रैढ़ के आहत सिक्के
II. नगर के मालव सिक्के
III. बैराठ के इंडो-ग्रीक सिक्के
(1) I, III, II
(2) II, I, III
(3) III, II, I
(4) I, II, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

101. राजस्थान पर लागू प्राचीन भारतीय समाज के संदर्भ में, 'ब्रह्मस्तेय' शब्द का अर्थ है:
(1) विभिन्न शिक्षण संस्थानों के रखरखाव हेतु एकत्र किया गया कर।
(2) वैदिक यज्ञ के दौरान आयोजित एक भव्य भोज।
(3) ब्राह्मण की संपत्ति की चोरी, जो उनकी संरक्षित स्थिति को दर्शाता है।
(4) गुरुकुल पूर्ण करने वाले छात्रों हेतु औपचारिक दीक्षांत समारोह।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

102. बागोर और तिलवाड़ा जैसे प्राचीन स्थलों के पुरातात्विक साक्ष्य बताते हैं कि स्थायी कृषि को व्यापक रूप से अपनाने से पूर्व, प्रारंभिक राजस्थान की अर्थव्यवस्था और खान-पान की आदतें मुख्य रूप से किस पर आधारित थीं?
(1) गहरे समुद्र में मत्स्य पालन
(2) पशुपालन और पशुचारी जीवन
(3) उन्नत नकदी फसल कृषि
(4) औद्योगिक निर्माण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

103. आहड़ स्थल पर प्रचुर मात्रा में ताम्र धातु-मल और विशिष्ट ताम्र उपकरणों की खोज प्राचीन राजस्थान में निम्नलिखित में से किस व्यावसायिक समुदाय के अस्तित्व की पुष्टि करती है?
(1) अत्यधिक कुशल और विशिष्ट वस्त्र बुनकरों का समुदाय।
(2) अंतरराष्ट्रीय व्यापार में संलग्न समुद्री व्यापारियों का एक समूह।
(3) विभिन्न धार्मिक मूर्तियों का उत्पादन करने वाले पाषाण मूर्तिकारों का एक वर्ग।
(4) विशिष्ट ताम्र-शिल्पियों और प्राचीन धातु वैज्ञानिकों का एक समूह।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

104. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्राचीन क्षेत्र/जनपद)
A. मत्स्य जनपद
B. शूरसेन जनपद (प्रभाव)
C. जांगलदेश

D. शिबि जनपद
सूची II: (राजस्थान में आधुनिक मूल क्षेत्र)
i. बीकानेर-नागौर क्षेत्र
ii. जयपुर-अलवर क्षेत्र
iii. भरतपुर-धौलपुर क्षेत्र
iv. चित्तौड़गढ़-उदयपुर क्षेत्र
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

105. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: संक्रमण काल ने राजपूत पहचान के सुदृढ़ीकरण और कई क्षेत्रीय रियासतों के गठन को देखा।
कथन II: यह काल अत्यधिक केंद्रीकृत अखिल भारतीय साम्राज्यों के पुनरुत्थान की विशेषता थी जो सीधे राजस्थान पर शासन कर रहे थे।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

106. प्राचीन राजस्थान में वर्ण व्यवस्था और सामाजिक गतिशीलता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वर्ण व्यवस्था की कठोर सीमाएं कभी-कभी राजनीतिक रूप से शक्तिशाली जनजातीय और विदेशी समूहों के उदय से धुंधली हो जाती थीं।
II. ब्राह्मणों को भूमि अनुदान ने उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति को महत्वपूर्ण रूप से संवर्धित किया।
III. मौर्य काल के दौरान वैश्यों ने बड़े पैमाने पर व्यापार छोड़ दिया और प्राथमिक योद्धा वर्ग बन गए।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

107. प्राचीन राजस्थान में मुख्यधारा के ब्राह्मणवादी देवकुल में क्षेत्रीय मातृ देवी जैसे जनजातीय देवताओं का ऐतिहासिक समावेश किसका एक प्रमुख उदाहरण है:
(1) सांस्कृतिक पृथकतावाद
(2) हिंसक धार्मिक दमन
(3) प्रवासी आर्यों द्वारा स्थानीय परंपराओं का पूर्ण अस्वीकार
(4) सामाजिक-धार्मिक आत्मसातीकरण और समन्वयवाद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

108. निम्नलिखित अभिकथन (A) और कारण (R) पर विचार करें और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनें:
अभिकथन (A): राजस्थान में प्राचीन काल के दौरान, संयुक्त परिवार प्रणाली मानक थी, और वरिष्ठ पुरुष सदस्य के पास सर्वोच्च अधिकार होता था।
कारण (R): प्राचीन विधिक ग्रंथों और सामाजिक मानदंडों ने एक पितृसत्तात्मक संरचना निर्धारित की थी जहाँ संपत्ति और वंश पुरुष वंश के माध्यम से चलते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

109. प्राचीन विवाह परंपराओं के संदर्भ में 'स्वयंवर' की प्रथा के बारे में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) आर्थिक गठजोड़ हेतु शूद्र वर्ण के बीच प्रचलित एक प्रथा।
(2) क्षेत्रीय युद्ध के पश्चात पकड़ी गई महिलाओं का बलपूर्वक विवाह।
(3) एक महिला द्वारा सुयोग्य वर के समूह में से अपने पति का चुनाव करना।
(4) एक आर्थिक लेनदेन जहाँ दूल्हे के परिवार द्वारा वधू शुल्क का भुगतान किया जाता था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

110. प्राचीन आर्थिक जीवन और कृषि के संदर्भ में, राजस्थान के ताम्रपाषाण/हड़प्पा स्थलों में उगाई जाने वाली फसलों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विषम है?
(1) जौ
(2) गेहूं
(3) सरसों
(4) चाय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

111. प्राचीन राजस्थान के व्यापार और अर्थव्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पुष्कर और अजमेर क्षेत्र उत्तर को पश्चिमी तट से जोड़ने वाले व्यापारिक मार्गों हेतु भौगोलिक रूप से महत्वपूर्ण थे।
II. पड़ोसी क्षेत्रों में रोमन सिक्कों और कलाकृतियों की खोज इंगित करती है कि राजस्थान के व्यापारिक मार्ग व्यापक अंतरराष्ट्रीय नेटवर्क का भाग थे।
III. राजस्थान के भीतर आंतरिक व्यापार में पूरे वर्ष लूणी नदी पर नौकायन का भारी उपयोग किया जाता था।
IV. मालव जैसे जनजातीय गणराज्यों द्वारा जारी स्थानीय सिक्कों ने क्षेत्रीय बाजार लेनदेन को सुगम बनाया।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, III और IV

(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

112. राजस्थान के प्राचीन नगरीय केंद्रों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) रैढ़ ने विशाल सिक्कों के भंडार के साथ-साथ लौह धातु विज्ञान के महत्वपूर्ण प्रमाण दिए।
(2) कालीबंगा के नगर नियोजन में किसी भी सुरक्षात्मक किलेबंदी की दीवारों का पूर्णतः अभाव था।
(3) मौर्य और मौर्योत्तर काल के दौरान बैराठ एक महत्वपूर्ण केंद्र था।
(4) नगरी (माध्यमिका) में प्रारंभिक वैष्णव संरचनाओं के प्रमाण मिलते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

113. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर चुनिए:
कथन I: रुढ़िवादी वैदिक परंपराओं के साथ-साथ जनसामान्य के बीच यक्षों और नागों की पूजा प्रचलित थी।
कथन II: इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के प्रसार से लोक पंथ और स्थानीय देवता पूर्णतः समाप्त हो गए थे।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(2) कथन II सही है लेकिन कथन I गलत है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

114. बैराठ में ईंट और लकड़ी से बने एक गोलाकार स्तूप और मठ के संरचनात्मक अवशेषों की खोज किस प्राचीन भारतीय शासक से जुड़ी है?
(1) अशोक
(2) चंद्रगुप्त मौर्य
(3) कनिष्क
(4) समुद्रगुप्त
(5) अनुत्तरित प्रश्न

115. उत्तरी राजस्थान में रंगमहल संस्कृति विशेष रूप से अपनी उत्कृष्ट मृण्मय कलाकृतियों हेतु प्रसिद्ध है। ये कलाकृतियाँ मुख्य रूप से किस शैली के कलात्मक प्रभाव को दर्शाती हैं?
(1) अमरावती शैली
(2) द्रविड़ शैली
(3) मथुरा और गांधार शैली
(4) पाल शैली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

116. प्राचीन राजस्थान के शैक्षिक और सांस्कृतिक वातावरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शिक्षा मुख्य रूप से एक धार्मिक और आध्यात्मिक प्रयास था जो वर्ण व्यवस्था से निकटता से जुड़ा था।
II. गुरुकुल सघन नगरीय केंद्रों से दूर प्राकृतिक परिवेश में स्थित थे।
III. उच्च बौद्धिक और दार्शनिक शिक्षा का माध्यम मुख्य रूप से संस्कृत था।
IV. भीनमल ने गुप्तोत्तर काल में शिक्षा के केंद्र के रूप में प्रमुखता प्राप्त की।
V. राज्य सैन्य अभियानों के वित्तपोषण हेतु शैक्षणिक संस्थानों पर भारी कर लगाता था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

117. कालीबंगा के प्राचीन निवासियों की खान-पान की आदतों के बारे में जूते हुए खेतों और अग्नि वेदियों की खोज के आधार पर सबसे उपयुक्त निष्कर्ष क्या है?
(1) वे केवल शिकार किए गए मांस का सेवन करते थे और कोई कृषि अनुष्ठान नहीं करते थे।
(2) वे पूर्णतः दूरस्थ मेसोपोटामिया से आयातित अनाज पर निर्भर थे।
(3) वे कृषि करते थे और संभवतः अग्नि यज्ञों में उपज की आहुति देते थे।
(4) वे केंद्रीय राज्य के आदेश द्वारा अनिवार्य कठोर शाकाहारी आहार का पालन करते थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

118. प्राचीन शिल्प समुदायों के संदर्भ में, 'कर्मकार' शब्द सामान्यतः किसे संदर्भित करता है?
(1) धनी व्यापारी जो व्यापारिक कारवां का वित्तपोषण करते थे।
(2) भाड़े के मजदूर, कारीगर या शिल्पकार जो मजदूरी पर कार्य करते थे।
(3) शाही पुरोहित जो राजकीय यज्ञ करने में विशेषज्ञ थे।
(4) जनजातीय प्रमुख जो पहाड़ी दर्रों की रक्षा करते थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

119. प्राचीन राजस्थान में आर्थिक लेनदेन और सिक्कों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) राजस्थान में पाए गए आहत सिक्के विशेष रूप से शुद्ध स्वर्ण के बने थे।
(2) प्रारंभिक वैदिक काल तक वस्तु विनिमय प्रणाली को पूर्णतः सिक्कों द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया था।
(3) कालीबंगा में इंडो-ग्रीक सिक्के स्थानीय रूप से ढाले गए थे।
(4) मालव गणराज्य के सिक्कों पर अनिवार्य रूप से 'मालवानाम जय' उत्कीर्ण था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

120. प्राचीन से पूर्व-मध्यकालीन राजस्थान में संक्रमण 'सामंतवाद' की अवधारणा द्वारा चिह्नित है। इस प्रणाली की एक प्रमुख विशेषता थी:

(1) सेवाओं के बदले भूमि प्रदान करना, जिससे विकेंद्रीकृत सत्ता को बढ़ावा मिला।
(2) एक सुदृढ़ स्थायी राष्ट्रीय सेना जिसे कड़ाई से नकद भुगतान किया जाता था।
(3) जनजातीय गणराज्यों हेतु राजशाही का पूर्ण उन्मूलन।
(4) समस्त वाणिज्यिक व्यापार श्रेणियों पर पूर्ण राजकीय स्वामित्व।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) कठोर जन्मसिद्ध अधिकार के बजाय मुख्य रूप से व्यवसाय और कार्य पर आधारित एक वर्ण व्यवस्था
प्राचीन राजस्थान के मत्स्य जनपद में प्रारंभिक वैदिक काल के दौरान सामाजिक संरचना लचीली थी। समाज वर्ण व्यवस्था पर आधारित था, जहाँ व्यक्ति का सामाजिक स्तर जन्म के बजाय कर्म और व्यवसाय से निर्धारित होता था। यह व्यवस्था दक्षता के अनुसार सामाजिक भूमिका निभाने की अनुमति देती थी, जिससे समाज में कार्यात्मक गतिशीलता बनी रहती थी।

2. (1) भील
भील जनजाति राजस्थान के सबसे प्राचीन और प्रमुख स्वदेशी समुदायों में से एक है। प्राचीन ग्रंथों और महाकाव्यों में इनका विस्तृत उल्लेख मिलता है। ऐतिहासिक रूप से कुशल धनुर्धर और वन रक्षक रहे इस समुदाय ने राज्य के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को आकार दिया। इन्होंने विभिन्न राजपूत शासकों के सैन्य अभियानों में भी अपना सक्रिय और महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया था।

3. (3) घटियाला अभिलेख
राजस्थान में सती प्रथा का प्राचीनतम पुरालेखीय साक्ष्य 861 ईस्वी के घटियाला अभिलेख से प्राप्त होता है। जोधपुर में स्थित यह अभिलेख प्रतिहार शासक कक्कुका के समय का है। इसमें राणुक चाहमान की पत्नी संपल देवी के सती होने का स्पष्ट उल्लेख है। यह साक्ष्य तत्कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति और प्रचलित कुप्रथाओं को समझने में सहायक है।

4. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
प्राचीन भारतीय ग्रंथों में वर्णित विवाहों की विशिष्ट विशेषताएँ थीं। ब्रह्म विवाह में पिता विद्वान वर को कन्या दान करता था, जबकि दैव विवाह में यज्ञकर्ता पुरोहित को पुत्री सौंपी जाती थी। असुर विवाह में वर पक्ष द्वारा धन देकर विवाह संपन्न होता था। वहीं, राक्षस विवाह में कन्या का बलपूर्वक अपहरण करके विवाह करने की परंपरा प्रचलित थी।

5. (3) व्यापारियों और शिल्पकारों का एक संघ या संगठन
प्राचीन राजस्थान के आर्थिक जीवन में 'श्रेणी' शब्द का प्रयोग व्यापारियों और शिल्पकारों के व्यावसायिक संगठनों के लिए किया जाता था। ये संगठन सदस्यों के हितों की रक्षा, गुणवत्ता नियंत्रण और व्यापारिक नियम बनाने का कार्य करते थे। इनके पास स्वतंत्र कार्यप्रणाली और स्वयं की मुद्रा जारी करने की शक्ति थी। नगरों के आर्थिक प्रशासन में इनका अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान था।

6. (1) केवल I और II
प्राचीन काल में राजस्थान व्यापारिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र था। उत्तर को दक्षिण से जोड़ने वाला दक्षिणापथ मार्ग पूर्वी राजस्थान से गुजरता था। मथुरा को उज्जैन से जोड़ने वाला प्रसिद्ध मार्ग बैराठ और माध्यमिका जैसे केंद्रों से होकर जाता था। यह धारणा गलत है कि मरुस्थलीय मार्ग त्यागे गए थे, क्योंकि कारवाँ अक्सर इन दुर्गम क्षेत्रों का उपयोग करते थे।

7. (4) नगरी
प्राचीन माध्यमिका वर्तमान चित्तौड़गढ़ जिले में 'नगरी' के रूप में पहचानी जाती है। यह शिबि जनपद की राजधानी थी और अपने पुरातात्विक अवशेषों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ खुदाई में मौर्यकालीन और गुप्तकालीन कला के महत्वपूर्ण साक्ष्य मिले हैं। अपने ऐतिहासिक महत्व के कारण यह क्षेत्र राजस्थान के प्रारंभिक शहरीकरण और सांस्कृतिक इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मौर्योत्तर काल में राजस्थान में वैदिक यज्ञों की गौरवशाली परंपरा प्रचलित थी। चित्तौड़गढ़ के निकट स्थित घोसुंडी शिलालेख इस तथ्य की पुष्टि करता है, जिसमें राजा सर्वतात द्वारा अश्वमेध यज्ञ के अनुष्ठान का विवरण मिलता है। यह अभिलेख न केवल यज्ञों के प्रचलन बल्कि इस क्षेत्र में भागवत धर्म और संकर्षण-वासुदेव की प्रारंभिक पूजा के प्रसार की ऐतिहासिक जानकारी भी प्रदान करता है।

9. (3) मौर्य काल के व्यापक संरचनात्मक शैलकृत बौद्ध चैत्य जैसलमेर में पाए जाते हैं।
मौर्य काल में बैराठ बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था, जहाँ से अशोक का भाब्रू शिलालेख प्राप्त हुआ है। इसमें बौद्ध त्रिरत्न में उनके विश्वास का उल्लेख है। खुदाई में यहाँ एक अद्वितीय गोलाकार बौद्ध मंदिर के अवशेष मिले हैं। हालाँकि, जैसलमेर क्षेत्र में मौर्यकालीन शैलकृत बौद्ध चैत्यों की उपस्थिति का कोई प्रमाण नहीं मिला है, जो इस संदर्भ में गलत है।

10. (1) रंगमहल
प्राचीन राजस्थान की मृण्मय कला के अवशेष श्रीगंगानगर के रंगमहल स्थल पर पाए गए हैं। यहाँ से प्राप्त मिट्टी की पट्टिकाओं पर धार्मिक और लौकिक विषयों का कलात्मक चित्रण है। इन कलाकृतियों पर गांधार शैली का स्पष्ट प्रभाव दिखता है, जो तत्कालीन शिल्पकारों के कौशल और सांस्कृतिक आदान-प्रदान को दर्शाता है। ये पट्टिकाएँ तत्कालीन समाज, वेशभूषा और आभूषणों का सजीव विवरण देती हैं।

11. (1) केवल I, II और III
प्राचीन भीनमल गुर्जर देश की राजधानी और शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। यहाँ महान गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने निवास कर अपनी प्रसिद्ध रचनाएँ लिखी थीं। साथ ही, 'शिशुपाल वध' के रचयिता महाकवि माघ भी इसी नगर से संबंधित थे। यह कहना गलत होगा कि यहाँ केवल बौद्ध शिक्षा दी जाती थी, क्योंकि यहाँ वैदिक और जैन विद्वानों की भी सक्रिय उपस्थिति रही थी।

12. (2) चावल, गेहूं, जौ और पालतू पशु उत्पाद
आहड़ और बालाथल जैसे ताम्रपाषाणिक स्थलों के उत्खनन से प्राचीन निवासियों के विविध आहार की जानकारी मिलती है। यहाँ के लोग कृषि में दक्ष थे और मुख्य रूप से चावल, गेहूं और जौ का उत्पादन करते थे। इसके अतिरिक्त, उनके भोजन में पशुपालन से प्राप्त दूध और मांस का भी प्रचुर उपयोग होता था। यह तत्कालीन समाज की विकसित कृषि व्यवस्था का परिचायक है।

13. (3) यह मुख्य रूप से हड़प्पा सभ्यता को तांबे की आपूर्ति करने वाला एक प्रमुख केंद्र था।
सीकर जिले में स्थित गणेश्वर को 'ताम्रयुगीन संस्कृतियों की जननी' कहा जाता है। यह हड़प्पा सभ्यता के प्रमुख नगरों को तांबे की आपूर्ति करने वाला एक सबसे बड़ा केंद्र था। यहाँ से बड़ी संख्या में तांबे के तीर और उपकरण प्राप्त हुए हैं। यह साक्ष्य उस समय की उन्नत धातु विज्ञान तकनीक और सुदृढ़ अंतर-क्षेत्रीय व्यापारिक संबंधों का ठोस ऐतिहासिक प्रमाण प्रस्तुत करता है।

14. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
प्राचीन राजस्थान के जनजातीय गणराज्य विशिष्ट क्षेत्रों से जुड़े थे। शिबि जनपद चित्तौड़गढ़ (मेवाड़) क्षेत्र में स्थित था। मालव गणराज्य जयपुर और टोंक के निकटवर्ती क्षेत्रों में केंद्रित था। यौधेय गणराज्य उत्तरी राजस्थान के गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में शासन करता था। अर्जुनायन गणराज्य का प्रभाव मुख्य रूप से अलवर और भरतपुर के क्षेत्रों में था, जो उस समय की राजनीतिक सीमाएँ थीं।

15. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
प्राचीन काल से पूर्व-मध्यकाल के दौरान राजस्थान में महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन हुए। इस समय व्यापार में गिरावट आई और भूमि अनुदान की प्रथा बढ़ने से कृषि का विस्तार हुआ। इसके परिणामस्वरूप समाज में एक नई सामंती व्यवस्था का उदय हुआ और सत्ता का विकेंद्रीकरण हुआ। इन प्रक्रियाओं ने क्षेत्रीय राजवंशों की स्थापना और नई राजनीतिक संरचना के विकास का मार्ग प्रशस्त किया।

16. (2) केवल I, III और V
प्राचीन शिलालेखों के अनुसार ब्राह्मणों ने धार्मिक अनुष्ठान के साथ मंत्रियों और योद्धाओं के रूप में भी भूमिका निभाई। वैश्य समुदाय प्रभावशाली श्रेणियों में संगठित होकर नागरिक प्रशासन में योगदान देते थे। गुप्तोत्तर काल में विभिन्न वर्णों के संपर्क से मिश्रित जातियाँ उभरने लगी थीं। यह कहना गलत है कि क्षत्रिय केवल कृषि श्रम करते थे या शूद्रों को शिल्प गतिविधियों में अनुमति नहीं थी।

17. (2) ऋग्वेद और महाभारत
प्राचीन राजस्थान के मत्स्य क्षेत्र का उल्लेख ऋग्वेद और महाभारत में मिलता है। महाभारत के अनुसार, मत्स्य जनपद की राजधानी विराटनगर थी, जहाँ पांडवों ने अपना अज्ञातवास व्यतीत किया था। यह क्षेत्र आधुनिक जयपुर, अलवर और भरतपुर के कुछ हिस्सों में विस्तृत था। इन धार्मिक ग्रंथों में मत्स्य क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति और राजाओं की वीरता का वर्णन इसकी प्राचीन महत्ता को प्रमाणित करता है।

18. (1) मौर्य युग के दौरान पर्दा प्रथा को कठोरता से और सार्वभौमिक रूप से लागू किया गया था।
प्राचीन राजस्थान में कुलीन परिवारों की महिलाएँ स्वतंत्र रूप से धार्मिक कार्यों में भाग लेती थीं और मंदिरों को दान देती थीं। जनजातीय समुदायों में महिलाओं की आर्थिक भागीदारी व्यापक थी। समाज में संयुक्त परिवार की प्रधानता थी जिसमें वरिष्ठ पुरुष का निर्णय सर्वोपरि होता था। हालाँकि, यह ऐतिहासिक रूप से गलत है कि मौर्य युग के दौरान पर्दा प्रथा को कठोरता और सार्वभौमिक रूप से लागू किया गया था।

19. (3) अनुलोम विवाह — उच्च वर्ण के पुरुष का निम्न वर्ण की स्त्री के साथ विवाह
प्राचीन सामाजिक व्यवस्था में विवाह के स्वरूप वर्णों पर आधारित थे। अनुलोम विवाह वह प्रथा थी जिसमें उच्च वर्ण का पुरुष निम्न वर्ण की स्त्री से विवाह करता था। इसके विपरीत, प्रतिलोम विवाह में उच्च वर्ण की स्त्री का विवाह निम्न वर्ण के पुरुष से होता था। गंधर्व विवाह आपसी सहमति पर आधारित था, जबकि प्रजापत्य विवाह में पिता रीति-रिवाज के साथ कन्या दान करता था।

20. (4) ताम्र धातु कर्म और उपकरण निर्माण
उदयपुर का आहड़ स्थल अपनी उन्नत ताम्र धातु कर्म तकनीक और उपकरण निर्माण के लिए प्रसिद्ध है। इस सभ्यता की अर्थव्यवस्था तांबा गलाने और उससे औजार एवं आभूषण बनाने पर निर्भर थी। यहाँ बड़ी संख्या में तांबा गलाने की भट्टियाँ मिली हैं, जिसके कारण इसे ऐतिहासिक रूप से 'ताम्रवती नगरी' भी कहा जाता है। यह स्थल ताम्रपाषाण कालीन संस्कृति के तकनीकी कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण है।

21. (1) केवल I
प्राचीन राजस्थान में माध्यमिका नगरी उज्जैन और मथुरा को जोड़ने वाले प्रमुख व्यापारिक मार्ग पर स्थित एक सक्रिय केंद्र थी। व्यापारिक मार्गों ने अरावली क्षेत्र के तांबे के वितरण और अन्य क्षेत्रों के साथ विनिमय को सुगम बनाया। पुष्कर भी प्राचीन यात्रा मार्गों पर एक प्रमुख धार्मिक स्थल होने के साथ व्यावसायिक केंद्र था, जहाँ व्यापारियों और तीर्थयात्रियों का निरंतर आवागमन बना रहता था।

22. (2) यह अशोक के शासनकाल के दौरान मौर्य साम्राज्य की राजधानी के रूप में कार्य करता था।
कालीबंगा हनुमानगढ़ जिले में प्राचीन सरस्वती नदी के तट पर स्थित एक महत्वपूर्ण हड़प्पाकालीन स्थल है। यहाँ से विश्व के सबसे प्राचीन जूते हुए खेत के साक्ष्य मिले हैं, जो उन्नत कृषि पद्धति को दर्शाते हैं। यहाँ की जल निकासी व्यवस्था भी अत्यंत सुनियोजित थी। हालाँकि, यह कहना असत्य है कि कालीबंगा ने अशोक के शासनकाल के दौरान मौर्य साम्राज्य की राजधानी के रूप में कार्य किया था।

23. (4) वैदिक यज्ञ के सफल अनुष्ठान की स्मृति में स्थापित एक यज्ञ स्तंभ।
राजस्थान के बड़वा और नांदसा जैसे स्थलों से प्राप्त शिलालेखों में प्रयुक्त 'यूप' शब्द का अर्थ 'यज्ञ स्तंभ' है। यह पत्थर या लकड़ी का बना स्तंभ होता था जिसे वैदिक यज्ञों के सफल समापन की स्मृति में स्थापित किया जाता था। ये स्तंभ तत्कालीन शासकों द्वारा वैदिक धर्म के पुनरुत्थान और राजकीय गौरव को प्रदर्शित करने के लिए बनाए गए थे, जो क्षेत्र की धार्मिक स्थिति को दर्शाते हैं।

24. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान के प्राचीन धार्मिक स्थल आधुनिक जिलों से इस प्रकार जुड़े हैं। बैराठ (जयपुर) एक महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल है। कोलवी की प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएँ झालावाड़ जिले में स्थित हैं। नगरी (चित्तौड़गढ़) भागवत धर्म का प्रमुख केंद्र था। बरली शिलालेख, जो प्राचीन जैन संदर्भों से संबंधित है, अजमेर जिले से प्राप्त हुआ है। ये स्थल राजस्थान की विविध धार्मिक विरासत और स्थापत्य कौशल के परिचायक हैं।

25. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
बैराठ का बौद्ध स्तूप ईंट और लकड़ी से निर्मित प्राचीनतम संरचनाओं में से एक है, जो मौर्यकालीन वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। यह कहना गलत है कि राजस्थान की भौगोलिक सीमा में अशोक के शिलालेख नहीं मिले। वास्तव में, बैराठ से ही अशोक का प्रसिद्ध भाब्रू शिलालेख प्राप्त हुआ है, जो बौद्ध धर्म के प्रति उनकी निष्ठा और राजस्थान में मौर्यों के प्रभाव को प्रमाणित करता है।

26. (1) यह मुख्य रूप से गुरुकुल प्रणाली और भूमि अनुदान द्वारा समर्थित अग्रहारों के माध्यम से प्रदान की जाती थी।
प्राचीन राजस्थान में शिक्षा की सुव्यवस्थित प्रणाली विद्यमान थी। यह मुख्य रूप से गुरुकुलों के माध्यम से संचालित होती थी जहाँ शिष्य गुरु के सानिध्य में ज्ञान प्राप्त करते थे। राजाओं द्वारा विद्वानों को दिए जाने वाले कर-मुक्त भूमि अनुदान 'अग्रहार' कहलाते थे, जो शिक्षा और धर्म के प्रमुख केंद्र बने। यह प्रणाली समाज के समृद्ध वर्गों और राजसी संरक्षण द्वारा निरंतर पोषित की जाती रही।

27. (4) कालीबंगा
हनुमानगढ़ जिले के कालीबंगा स्थल से 'दोहरे समाधान' के साक्ष्य मिले हैं, जहाँ एक ही कब्र में दो व्यक्तियों को दफनाया गया था। यह खोज प्राचीन समाज की पारिवारिक संरचना और अंत्येष्टि से जुड़े विशेष सामाजिक रीति-रिवाजों पर प्रकाश डालती है। ऐसे साक्ष्य हड़प्पा कालीन लोगों की मान्यताओं को समझने में सहायक हैं। यह स्थल सिंधु घाटी सभ्यता के दौरान विकसित जटिल शहरी समाज का केंद्र था।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उदयपुर स्थित आहड़ को क्षेत्रीय परंपराओं में 'ताम्रवती नगरी' कहा जाता है, जो इसकी धातु विज्ञान संबंधी महत्ता को दर्शाता है। पुरातात्विक उत्खनन में यहाँ तांबा गलाने की विशाल भट्टियों और तांबे के उपकरणों के प्रचुर प्रमाण मिले हैं। यह स्पष्ट रूप से सिद्ध करता है कि आहड़ एक प्रमुख ताम्र प्रगलन केंद्र था जहाँ से दूर-दराज के क्षेत्रों को तांबे के उत्पादों की आपूर्ति की जाती थी।

29. (3) भारत में प्राचीन आहत सिक्कों का विशालतम भंडार
टोंक जिले के प्राचीन स्थल रैढ़ को 'राजस्थान का प्राचीन टाटा नगर' कहा जाता है। यहाँ से भारत में प्राचीन आहत (पंचमार्क) सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार प्राप्त हुआ है। खुदाई में बड़ी संख्या में लोहे के उपकरण भी मिले हैं, जो क्षेत्र की औद्योगिक समृद्धि को दर्शाते हैं। सिक्कों की इतनी अधिक मात्रा यह संकेत देती है कि यह प्राचीन काल का प्रमुख वाणिज्यिक और टकसाल केंद्र था।

30. (2) पुरापाषाण युग (डीडवाना) → मध्यपाषाण युग (बागोर) → ताम्रपाषाण युग (आहड़) → लौह युग (नोह)
राजस्थान में प्राचीन संस्कृतियों का विकास एक निश्चित क्रम में हुआ। पुरापाषाण युग के साक्ष्य डीडवाना से मिलते हैं। इसके पश्चात भीलवाड़ा का बागोर मध्यपाषाण युग का प्रतिनिधित्व करता है। फिर ताम्रपाषाण युग आया जिसमें आहड़ संस्कृति प्रमुखता से उभरी। अंत में लौह युग का प्रारंभ हुआ जिसके अवशेष भरतपुर के नोह स्थल पर प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। यह कालक्रम तकनीकी प्रगति को दर्शाता है।

31. (1) चांडाल
प्राचीन भारतीय सामाजिक संरचना मुख्य रूप से चार वर्णों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभाजित थी। इन वर्णों को समाज की मुख्यधारा माना जाता था और इनके विशिष्ट कार्य निर्धारित थे। इसके विपरीत, 'चांडाल' शब्द उन लोगों के लिए प्रयुक्त होता था जो इस चतुर्वर्ण व्यवस्था से बाहर थे। अतः ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य के समूह में चांडाल एक विषम विकल्प है क्योंकि यह मूल वर्ण व्यवस्था का अंग नहीं था।

32. (2) पशुपालन के प्रारंभिक साक्ष्यों वाला एक मध्यपाषाण कालीन स्थल।
भीलवाड़ा में कोठारी नदी के तट पर स्थित बागोर राजस्थान के सामाजिक इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह एक मध्यपाषाण कालीन स्थल है जहाँ से भारत में पशुपालन के सबसे प्राचीन साक्ष्य मिले हैं। खुदाई से पता चलता है कि यहाँ के निवासी शिकार के साथ पशुओं को पालने की कला में दक्ष थे। यह अवस्था मानव समाज के शिकारी जीवन से उत्पादक जीवन की ओर बढ़ने को दर्शाती है।

33. (2) मातृ देवी की पूजा और उर्वरता पंथों का प्रचलन।
कालीबंगा और आहड़ जैसे प्राचीन स्थलों पर खुदाई के दौरान मिट्टी की स्त्री मूर्तियाँ प्रचुर मात्रा में मिली हैं। ये मूर्तियाँ संकेत देती हैं कि प्राचीन काल में यहाँ मातृ देवी की पूजा प्रचलित थी और लोग उर्वरता के प्रतीक के रूप में देवी की वंदना करते थे। यह पंथ न केवल धार्मिक मान्यताओं बल्कि समाज में महिलाओं के आध्यात्मिक महत्व और प्रकृति के साथ उनके संबंधों को भी रेखांकित करता है।

34. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के प्राचीन स्थलों की विशिष्ट पुरातात्विक विशेषताएँ हैं। कालीबंगा विश्व में प्राचीनतम भूकंप के साक्ष्य प्रदान करने वाला अनूठा स्थल है। बालाथल में उत्खनन के दौरान प्राचीन बुने हुए कपड़े के टुकड़े प्राप्त हुए हैं। गणेश्वर अपनी प्राक-हड़प्पा ताम्र वस्तुओं के लिए प्रसिद्ध है, जिनका अन्य सभ्यताओं को निर्यात किया जाता था। बैराठ से सम्राट अशोक का ऐतिहासिक शिलालेख मिला है, जो मौर्य शासन का प्रमाण है।

35. (3) नदी घाटियों के किनारे जौ, गेहूं और बाजरे की खेती की जाती थी।
ताम्रपाषाण काल के दौरान राजस्थान में कृषि विकसित अवस्था में थी। यहाँ के निवासी नदी घाटियों के उपजाऊ क्षेत्रों में जौ, गेहूं और बाजरे जैसी फसलों की खेती करते थे। सिंचाई के लिए वे नदियों और वर्षा जल पर निर्भर रहते थे। यह कहना गलत है कि उन्हें कृषि का ज्ञान नहीं था। अनाज के अवशेष तत्कालीन समाज की खाद्य सुरक्षा और एक स्थिर ग्रामीण जीवन शैली की पुष्टि करते हैं।

36. (2) केवल II और IV
कालीबंगा में मुहरों की खोज लंबी दूरी के व्यापारिक नेटवर्क को सिद्ध करती है। स्थानीय स्तर पर वस्तु विनिमय के साथ धात्विक मुद्रा का भी उपयोग होता था। हालाँकि, 'गधिया' सिक्के मौर्य काल के नहीं बल्कि काफी बाद के हैं। साथ ही, राजस्थान में रोमन एम्फोरा की प्राप्ति सीधे समुद्री व्यापार को सिद्ध नहीं करती, क्योंकि भू-आबद्ध होने के कारण यह व्यापार मध्यस्थों या थल मार्गों से होता था।

37. (3) ओसियां दक्षिणी राजस्थान में मौर्य साम्राज्य की राजधानी थी।
प्राचीन काल में नगरी (माध्यमिका) और टोंक का नगर प्रमुख केंद्र थे। भीनमल भी पश्चिमी राजस्थान का समृद्ध व्यावसायिक केंद्र था। हालाँकि, यह कहना गलत है कि ओसियां दक्षिणी राजस्थान में मौर्य साम्राज्य की राजधानी थी। ओसियां अपने सुंदर मध्यकालीन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है और इसका राजनीतिक उत्कर्ष प्रतिहार काल में हुआ था। मौर्यों की राजधानी के रूप में ओसियां का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता है।

38. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
चित्तौड़गढ़ का घोसुंडी शिलालेख राजस्थान में भागवत धर्म के उद्भव का सबसे प्रारंभिक पुरालेखीय प्रमाण है। इसमें संकर्षण और वासुदेव की पूजा के लिए पत्थर की चहारदीवारी बनाने का उल्लेख है। यह तथ्य इस मिथक को तोड़ता है कि प्राचीन राजस्थान में केवल वैदिक यज्ञों का ही बोलबाला था। वास्तव में, वैदिक परंपराओं के साथ भागवत धर्म जैसी नई भक्ति शाखाएँ भी समाज में समांतर रूप से विकसित हो रही थीं।

39. (4) अजमेर जिले से बरली अभिलेख
राजस्थान में जैन धर्म की प्राचीनता को सिद्ध करने वाला सबसे महत्वपूर्ण साक्ष्य अजमेर का बरली शिलालेख है। इसे राजस्थान का सबसे प्राचीन शिलालेख माना जाता है, जो लगभग 443 ईसा पूर्व का है। इसकी शब्दावली इस क्षेत्र में जैन धर्म के प्रारंभिक प्रसार की पुष्टि करती है। जबकि बैराठ का शिलालेख बौद्ध धर्म से संबंधित है, बरली अभिलेख स्पष्ट रूप से जैन परंपरा के ऐतिहासिक पदचिह्नों को स्थापित करता है।

40. (1) I, II, III, IV
राजस्थान के ऐतिहासिक साक्ष्यों का सही कालानुक्रमिक क्रम उनके समय पर आधारित है। कालीबंगा का जुता हुआ खेत हड़प्पा काल का है, जो सबसे प्राचीन है। इसके बाद अशोक का भाब्रू शिलालेख (तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व) आता है। तत्पश्चात दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का घोसुंडी शिलालेख आता है जो वैष्णव धर्म को दर्शाता है। अंत में तीसरी शताब्दी ईस्वी का बड़वा यूप अभिलेख आता है, जो क्रमिक विकास को दर्शाता है।

41. (3) ह्वेन त्सांग
प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने सातवीं शताब्दी ईस्वी में भीनमल की यात्रा की और इसे 'पि-लो-मो-लो' के नाम से संबोधित किया। उन्होंने भीनमल को अत्यंत समृद्ध शैक्षिक और सांस्कृतिक विरासत वाले नगर के रूप में वर्णित किया। उनकी यात्रा के समय यह क्षेत्र गुर्जर-प्रतिहारों के अधीन था। ह्वेन त्सांग के विवरण तत्कालीन राजस्थान की सामाजिक और प्रशासनिक स्थिति को समझने के लिए एक मूल्यवान ऐतिहासिक स्रोत हैं।

42. (1) बागोर में रेशमी कपड़ों के शैल चित्र
प्राचीन राजस्थान के बैराठ और बालाथल जैसे स्थलों से बुने हुए सूती कपड़े के अवशेष प्राप्त हुए हैं। कालीबंगा में बर्तनों पर कपड़ों के निशान मिले हैं, जो सिद्ध करते हैं कि यहाँ के निवासी कताई और बुनाई में निपुण थे। हालाँकि, भीलवाड़ा के बागोर स्थल से रेशमी कपड़ों के किसी भी शैल चित्र के प्रमाण नहीं मिले हैं। शैल चित्रों में सामान्यतः मानव आकृतियों और पशुओं का चित्रण मिलता है।

43. (4) शिल्पकारों ने अपने हितों की रक्षा के लिए स्वयं को 'श्रेणी' नामक स्थानीय संघों में संगठित किया था।
प्राचीन राजस्थान में व्यावसायिक समुदायों के कारीगरों ने अपने हितों की रक्षा हेतु 'श्रेणी' नामक शक्तिशाली संघों का गठन किया था। ये श्रेणियाँ न केवल उत्पादन की गुणवत्ता और कीमतों को नियंत्रित करती थीं, बल्कि बैंकिंग संस्थान के रूप में भी कार्य करती थीं। इनका अपना आंतरिक प्रशासन होता था जो राज्य के हस्तक्षेप से स्वतंत्र था। इससे व्यापारिक स्थिरता बनी रहती थी और ये धर्मार्थ कार्यों में भी योगदान देती थीं।

44. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के प्राचीन सिक्के तत्कालीन राजनीतिक सत्ता के विस्तार को दर्शाते हैं। मालव गणराज्य के सिक्के टोंक के 'नगर' स्थल से बड़ी संख्या में मिले हैं। शिबि जनपद के सिक्कों का मुख्य स्रोत चित्तौड़गढ़ के पास स्थित 'माध्यमिका' है। इंडो-ग्रीक राजा अपोलोडोटस के सिक्के बैराठ से प्राप्त हुए हैं। वहीं, भारत में प्राचीन आहत सिक्कों का सबसे बड़ा भंडार टोंक के 'रैढ़' स्थल से मिला है, जो आर्थिक समृद्धि का प्रमाण है।

45. (3) शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ब्राह्मणों या मंदिरों को दी गई कर-मुक्त भूमि।
प्राचीन और पूर्व-मध्यकालीन राजस्थान में 'अग्रहार' उस कृषि भूमि को कहा जाता था जिसे राजाओं द्वारा विद्वान ब्राह्मणों या मंदिरों को दान दिया जाता था। यह भूमि पूर्णतः कर-मुक्त होती थी और इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा एवं धार्मिक अनुष्ठानों को प्रोत्साहन देना था। अग्रहार प्राप्त करने वाले विद्वान प्रायः स्थानीय स्तर पर शिक्षा के केंद्र स्थापित करते थे, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में ज्ञान का प्रसार होता था।

46. (2) I, IV और V
प्राचीन राजस्थान में सामाजिक गतिशीलता संभव थी, क्योंकि कई विदेशी और स्थानीय समूहों को वर्ण व्यवस्था में स्थान मिला। क्षत्रियों के पास बौद्धिक और धार्मिक यज्ञों का एकाधिकार नहीं था, क्योंकि यह कार्य ब्राह्मणों का था। नगरीय केंद्रों में धीरे-धीरे सामाजिक असमानता बढ़ने लगी थी। सामोली शिलालेख और जनजातीय एकीकरण के तथ्य सही हैं, जबकि क्षत्रियों द्वारा केवल कृषि श्रम करने की बात ऐतिहासिक रूप से गलत है।

47. (1) मत्स्य — पूर्वी राजस्थान (जयपुर, अलवर, भरतपुर)
प्राचीन राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों के संबंध में 'मत्स्य' जनपद का युग्म सही है, जो जयपुर, अलवर और भरतपुर के पूर्वी हिस्सों में था। मालव गणराज्य टोंक और जयपुर के दक्षिणी क्षेत्रों में केंद्रित था। शिबि जनपद का संबंध मेवाड़ (चित्तौड़गढ़) से था, जो दक्षिणी राजस्थान में आता है। यौधेय गणराज्य उत्तरी राजस्थान में सक्रिय था। ये जनजातियाँ अपनी स्वतंत्रता और विशिष्ट वीरतापूर्ण संस्कृति के लिए प्रसिद्ध थीं।

48. (2) विवाह अनुष्ठानों के दौरान प्राप्त विशिष्ट उपहारों और धन पर मान्यता प्राप्त अधिकार थे।
पुरालेखीय साक्ष्य स्पष्ट करते हैं कि प्राचीन राजस्थान में महिलाओं के पास 'स्त्रीधन' के रूप में विशिष्ट संपत्ति अधिकार सुरक्षित थे। इसमें मुख्य रूप से वे आभूषण और उपहार शामिल थे जो महिला को विवाह के समय प्राप्त होते थे। हालांकि भूमि पर अधिकार सामान्यतः पुरुषों तक सीमित था, लेकिन स्त्रीधन पर महिला का पूर्ण नियंत्रण माना जाता था। यह परंपरा महिलाओं की आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करने का एक प्रारंभिक साधन थी।

49. (2) वर्ण-संकर
प्राचीन राजस्थान में 'नियोग', 'स्वयंवर' और 'सती' शब्द पारिवारिक संरचनाओं, वैवाहिक पद्धतियों या अनुष्ठानिक रीति-रिवाजों को संदर्भित करते हैं। नियोग वंश वृद्धि की पद्धति थी और स्वयंवर वर चुनने की स्वतंत्रता। इसके विपरीत, 'वर्ण-संकर' शब्द का उपयोग विभिन्न वर्णों के मिश्रण से उत्पन्न नई जातियों को दर्शाने के लिए किया जाता था। यह एक सामाजिक श्रेणीबद्ध अवधारणा है, न कि कोई विशिष्ट विवाह अनुष्ठान या पारिवारिक प्रथा।

50. (1) गेहूं और सरसों जैसी बहु-फसली खेती के लिए हल का उपयोग करने वाली एक स्थिर प्रणाली।
कालीबंगा जैसे हड़प्पा कालीन स्थलों की कृषि अर्थव्यवस्था एक स्थिर और विकसित प्रणाली थी। यहाँ के लोग लकड़ी के हलों का उपयोग करके खेतों की जुताई करते थे, जिसके साक्ष्य मिले हैं। वे एक साथ दो फसलें, जैसे गेहूं और सरसों, उगाने की तकनीक से परिचित थे। उनकी खेती मुख्य रूप से प्राकृतिक जल प्रबंधन पर आधारित थी। यह उन्नत कृषि प्रणाली ही इन नगरीय केंद्रों के आर्थिक आधार का कारण थी।

51. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
राजस्थान के आंतरिक व्यापारिक मार्ग प्राचीन काल में अरावली क्षेत्र से तांबे को गंगा घाटी तक पहुँचाने के लिए अत्यंत आवश्यक कड़ी थे। ये मार्ग न केवल व्यापार बल्कि सांस्कृतिक विनिमय के भी वाहक थे। यह कहना गलत है कि नगर और रैढ़ जैसे केंद्रों का उदय व्यापारिक मार्गों से स्वतंत्र था। वास्तव में, इन नगरों की समृद्धि इन्हीं प्रमुख मार्गों पर उनकी रणनीतिक स्थिति के कारण संभव हुई थी।

52. (4) रक्षा में सक्षम किलेबंद राजनीतिक और प्रशासनिक केंद्र
चित्तौड़गढ़ के निकट प्राचीन माध्यमिका में मिली ईंटों की किलेबंदी से स्पष्ट होता है कि राजस्थान के प्राचीन नगरीय केंद्र केवल व्यापारिक स्थल नहीं थे। वे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण और रक्षात्मक दृष्टि से सक्षम राजनीतिक एवं प्रशासनिक केंद्र थे। इन केंद्रों का निर्माण बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा और क्षेत्रीय शासन के संचालन हेतु किया गया था। यहाँ की वास्तुकला तत्कालीन समाज की प्रशासनिक दक्षता और सुरक्षात्मक सोच को प्रदर्शित करती है।

53. (3) घोसुंडी
राजस्थान में वैष्णव धर्म का सबसे प्राचीन पुरालेखीय प्रमाण चित्तौड़गढ़ के घोसुंडी नामक स्थान से प्राप्त शिलालेख के रूप में मिलता है। यह दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व का है और इसमें संकर्षण (बलराम) और वासुदेव (कृष्ण) की पूजा के संदर्भ में चहारदीवारी के निर्माण का उल्लेख है। यह ऐतिहासिक साक्ष्य न केवल राजस्थान बल्कि उत्तर भारत में भागवत धर्म के प्रारंभिक प्रसार और लोकप्रियता को सिद्ध करने वाला महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

54. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
प्राचीन और मध्यकालीन राजस्थान के विद्वानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त ने भीनमल में 'ब्राह्मस्फुटसिद्धान्त' की रचना की थी। महाकवि माघ ने इसी नगर में प्रसिद्ध 'शिशुपाल वध' लिखा था। हरिभद्र सूरी चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में जैन साहित्य के संरक्षण से जुड़े थे। चंदबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' की रचना की, जो राजपूत काल की वीरता और सामाजिक-राजनीतिक स्थिति को दर्शाने वाला प्रमुख ऐतिहासिक काव्य ग्रंथ है।

55. (4) प्रारंभिक स्थापत्य अवशेषों में मुख्य रूप से ईंट संरचनाएं, मृण्मय पट्टिकाएं और पाषाण स्तंभ शामिल हैं।
राजस्थान की प्रारंभिक कला और स्थापत्य का स्वरूप यहाँ के पुरातात्विक अवशेषों में स्पष्ट दिखाई देता है। प्राचीन केंद्रों में मुख्य रूप से पकी ईंटों की संरचनाएं, मिट्टी की पट्टिकाएं और भव्य पाषाण स्तंभ पाए गए हैं। मौर्य काल में बैराठ में ईंटों के उपयोग के प्रमाण मिलते हैं, जबकि रंगमहल में मृण्मय कला का विकास हुआ। यह कहना गलत है कि यहाँ केवल संगमरमर का उपयोग होता था या कला धार्मिक विषयों से रहित थी।

56. (4) I, II और III
प्राचीन राजस्थान में शिक्षा के केंद्र अपनी विशिष्ट पहचान रखते थे। अग्रहार अनुदानों ने ब्राह्मणों को आर्थिक चिंता के बिना अध्यापन के लिए प्रोत्साहित किया। बैराठ जैसे स्थलों पर स्थित बौद्ध विहारों ने भिक्षुओं और जनसामान्य के लिए मठवासी शिक्षा के केंद्रों के रूप में सेवा की। भीनमल खगोल विज्ञान और संस्कृत साहित्य का प्रतिष्ठित केंद्र बना, जहाँ देश-विदेश से जिज्ञासु ज्ञान प्राप्त करने आते थे। ये तीनों तथ्य ऐतिहासिक हैं।

57. (3) काले और लाल मृदभांड
आहड़ और गिलुंड जैसे ताम्रपाषाण कालीन स्थलों से प्रचुर मात्रा में 'काले और लाल मृदभांड' प्राप्त हुए हैं। ये बर्तन भोजन पकाने और अनाज भंडारण के प्राथमिक साधन थे। इनकी विशिष्टता यह थी कि इनका भीतरी भाग काला और बाहरी भाग लाल होता था, जो विशेष तकनीक का परिणाम था। तत्कालीन जीवन में इन बर्तनों का अत्यंत महत्व था और ये कुम्हारों की विकसित कलात्मक और तकनीकी दक्षता को दर्शाते हैं।

58. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
झुंझुनू का सुनारी और जयपुर का जोधपुरा स्थल प्राचीन भारतीय धातु विज्ञान के इतिहास में महत्वपूर्ण हैं। यहाँ किए गए उत्खनन से प्राचीन लौह प्रगलन भट्टियों के प्रत्यक्ष प्रमाण मिले हैं। ये साक्ष्य सिद्ध करते हैं कि यहाँ के निवासियों को लौह अयस्क से लोहा निकालने और उसे विभिन्न उपकरणों में ढालने का उन्नत ज्ञान था। यह तकनीकी विकास प्राचीन राजस्थान की आर्थिक आत्मनिर्भरता और औद्योगिक कुशलता की पुष्टि करता है।

59. (4) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की मुहरें
प्राचीन राजस्थान के स्थलों से कई प्रकार की मुद्राएं प्राप्त हुई हैं, जैसे चांदी के आहत सिक्के, मालव गणराज्य के तांबे के सिक्के और इंडो-ग्रीक ड्रेचमा। ये सिक्के तत्कालीन व्यापार और विनिमय प्रणाली का हिस्सा थे। हालाँकि, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की मुहरें प्राचीन काल की श्रेणी में नहीं आतीं। ये आधुनिक औपनिवेशिक विरासत का हिस्सा हैं और इनका प्राचीन पुरातात्विक भंडारों से कोई संबंध नहीं है, जो इन्हें विषम बनाता है।

60. (2) क्षेत्रीय राजपूत वंशों का उदय और सामंत व्यवस्था का प्रसार।
प्राचीन काल के अंत में गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद राजस्थान के राजनीतिक परिदृश्य में बड़ा बदलाव आया। इसका प्राथमिक प्रभाव यह हुआ कि क्षेत्र में स्वतंत्र राजपूत राजवंशों का उदय हुआ और विकेंद्रीकृत सामंती व्यवस्था फैल गई। राजाओं ने सत्ता बनाए रखने के लिए स्थानीय सामंतों को भूमि अनुदान देना शुरू किया। इससे क्षेत्रीय गौरव और स्वायत्त सत्ताओं का नया युग प्रारंभ हुआ जो आगे कई शताब्दियों तक चला।

61. (1) केवल I, II और III
भीलों का उल्लेख प्राचीन ग्रंथों में कुशल धनुर्धर के रूप में है, जबकि मीणा समुदाय को पूर्वी राजस्थान के पुराने निवासियों में गिना जाता है। समय के साथ, कई शक्तिशाली जनजातीय प्रमुखों को उनके पराक्रम के कारण राजपूत वर्ण में एकीकृत कर लिया गया। यह कहना गलत है कि ये जनजातियाँ पूरी तरह खानाबदोश थीं और उन्हें कृषि का ज्ञान नहीं था, क्योंकि वे सीमित खेती और वन प्रबंधन में संलग्न थे।

62. (4) विदेशी जनजातियों और स्थानीय प्रमुखों को क्षत्रिय वर्ण में सम्मिलित करने हेतु पर्याप्त लचीला
प्रारंभिक ऐतिहासिक काल में राजस्थान में वर्ण व्यवस्था स्थिर नहीं थी। इसमें पर्याप्त लचीलापन था, जिसने विदेशी जनजातियों (हूण, गुर्जर) और पराक्रमी स्थानीय जनजातीय प्रमुखों को क्षत्रिय वर्ण में सम्मिलित होने का अवसर दिया। यह सामाजिक आत्मसातीकरण का उदाहरण है, जहाँ वीरता को जन्म आधारित पहचान पर वरीयता दी गई। इस गतिशीलता ने समाज को नए नेतृत्व और ऊर्जा के साथ निरंतर पुनर्गठित करने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की।

63. (1) इस क्षेत्र से संबंधित प्राचीन ग्रंथों और शिलालेखों में स्त्री शिक्षा के संदर्भ पूर्णतः अनुपस्थित हैं।
प्राचीन राजस्थान में महिलाओं की स्थिति के संबंध में यह कहना गलत है कि शिक्षा के संदर्भ अनुपस्थित हैं। ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं जहाँ महिलाओं को विदुषी बताया गया है और उन्होंने साहित्य एवं धर्म में योगदान दिया। यद्यपि समाज पितृसत्तात्मक था, लेकिन महिलाओं का सम्मान होता था और वे धार्मिक कार्यों एवं दान में सक्रिय रहती थीं। सती और कठोर पर्दा प्रथा जैसी बुराइयाँ प्रारंभिक प्राचीन काल में व्यापक नहीं थीं।

64. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान के प्राचीन पुरातात्विक स्थल जिलों के साथ इस प्रकार सुमेलित हैं। नोह (भरतपुर) लौह युग के प्रमाण देता है। सुनारी (झुंझुनू) में प्राचीन लौह भट्टियां मिली हैं। कुराड़ा (नागौर) को 'औजारों की नगरी' कहा जाता है। गिलुंड (राजसमंद) आहड़ संस्कृति का विस्तार है। ये स्थल सामूहिक रूप से राजस्थान की समृद्ध प्रागैतिहासिक और ऐतिहासिक विकास यात्रा का सजीव चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

65. (2) स्थानीय व्यावसायिक समुदायों के पास स्थानीय अयस्क निक्षेपों का दोहन करने के लिए उन्नत धातु विज्ञान ज्ञान था।
नोह और जोधपुरा जैसे स्थलों पर प्राचीन लौह प्रगलन भट्टियों की खोज राजस्थान के आर्थिक जीवन के महत्वपूर्ण तथ्य को रेखांकित करती है। यह सिद्ध करता है कि स्थानीय समुदायों के पास क्षेत्रीय अयस्क के उपयोग के लिए उन्नत धातु विज्ञान का ज्ञान था। वे लोहे को पिघलाने और उससे कृषि यंत्र एवं अस्त्र-शस्त्र बनाने में माहिर थे। इस तकनीकी स्वावलंबन ने कृषि उत्पादन और समाज की सैन्य शक्ति को मजबूती प्रदान की थी।

66. (1) माध्यमिका (नगरी)
प्राचीन काल में गंगा के मैदानों को पश्चिमी बंदरगाहों से जोड़ने वाला व्यापारिक मार्ग राजस्थान के बीच से गुजरता था। इस रणनीतिक मार्ग पर चित्तौड़गढ़ के निकट स्थित माध्यमिका एक अत्यंत महत्वपूर्ण पारगमन और व्यावसायिक केंद्र थी। यहाँ व्यापारियों और कारवां का निरंतर आवागमन रहता था, जिससे यह नगर आर्थिक रूप से समृद्ध हुआ। इसकी भौगोलिक स्थिति ने इसे उत्तर और पश्चिम भारत के बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक विनिमय का सेतु बनाया।

67. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
बैराठ के पुरातात्विक उत्खनन से अद्वितीय गोलाकार बौद्ध मंदिर और मठ के अवशेष मिले हैं, जो मौर्यकालीन वास्तुकला की महानता दर्शाते हैं। ये साक्ष्य बौद्ध धर्म के गहरे प्रभाव की पुष्टि करते हैं। हालाँकि, यह कहना गलत है कि बैराठ की समृद्धि केवल समुद्री व्यापार पर निर्भर थी। इसकी आर्थिक संपन्नता का मुख्य आधार उपजाऊ भूमि, स्थानीय शिल्प और प्रमुख थल व्यापारिक मार्गों पर इसकी रणनीतिक स्थिति थी, न कि प्रत्यक्ष समुद्री वाणिज्य।

68. (4) संलेखना
प्राचीन धार्मिक परंपराओं में 'अश्वमेध', 'वाजपेय' और 'अग्निष्टोम' महत्वपूर्ण वैदिक यज्ञों के प्रकार हैं, जिन्हें शासक वर्ग अपनी शक्ति प्रदर्शित करने के लिए संपन्न करता था। इसके विपरीत, 'संलेखना' जैन धर्म की एक विशिष्ट आध्यात्मिक पद्धति है जिसमें साधक स्वेच्छा से उपवास के माध्यम से प्राण त्यागता है। चूँकि पहले तीन विकल्प वैदिक यज्ञों से संबंधित हैं और चौथा जैन धर्म की तपस्या है, इसलिए संलेखना इस समूह में विषम है।

69. (3) बरली शिलालेख राजस्थान में जैन धर्म के प्राचीनतम पुरालेखीय संदर्भों में से एक प्रदान करता है।
राजस्थान में जैन धर्म का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और अजमेर का बरली शिलालेख इस तथ्य का सबसे प्रबल प्रमाण है। यह ईसा पूर्व काल का है और दर्शाता है कि उस समय तक जैन सिद्धांतों का प्रसार हो चुका था। यह कहना गलत है कि मौर्य काल में जैन धर्म विलुप्त हो गया था। वास्तव में, राजस्थान के व्यापारिक समुदायों ने जैन धर्म को हमेशा संरक्षण दिया और इसे फलने-फूलने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की।

70. (1) IV, II, III, I
राजस्थान की कला और स्थापत्य का विकास क्रम इस प्रकार है। सर्वप्रथम कोटा की अलनिया नदी के किनारे मिले पाषाण कालीन शैल चित्र आते हैं। इसके पश्चात कालीबंगा का सुनियोजित हड़प्पाकालीन नगर नियोजन आता है। फिर मौर्य काल में बैराठ का गोलाकार ईंटों का मंदिर निर्मित हुआ। अंत में 8वीं-9वीं शताब्दी के ओसियां के संरचनात्मक हिंदू और जैन मंदिर आते हैं। यह अनुक्रम मानव की कलात्मक और वास्तुशिल्प यात्रा को स्पष्ट करता है।

71. (1) केवल I, II, III और IV
प्राचीन राजस्थान में शिक्षा प्रणाली बहुआयामी थी। मौखिक परंपरा से वेदों का ज्ञान दिया जाता था और राजाओं द्वारा दिए गए 'अग्रहार' ग्रामों से ग्रामीण शिक्षण केंद्रों का विकास हुआ। जैन उपाश्रय भी पांडुलिपियों के संरक्षण और ज्ञान प्रसार के महत्वपूर्ण स्थल बने। साथ ही, धातु विज्ञान जैसे तकनीकी विषयों की शिक्षा श्रेणियों के माध्यम से दी जाती थी। यह कहना गलत है कि राज्य ने खगोल विज्ञान या गणित के शिक्षण पर प्रतिबंध लगाया था।

72. (1) वंश को आगे बढ़ाने हेतु एक विधवा द्वारा अपने देवर से संतानोत्पत्ति करना।
प्राचीन राजस्थान में 'नियोग' एक विशिष्ट प्रथा थी जिसका उल्लेख धर्मशास्त्रों में मिलता है। इसके अंतर्गत, यदि किसी महिला का पति संतानहीन मर जाता था, तो वह वंश बढ़ाने के लिए अपने देवर या निकट संबंधी के माध्यम से संतानोत्पत्ति कर सकती थी। इसका मुख्य उद्देश्य परिवार की संपत्ति और नाम सुरक्षित रखना था। यह प्रथा तत्कालीन समाज के व्यावहारिक दृष्टिकोण और उत्तराधिकार के प्रति उनकी चिंता को दर्शाती है, जिसे सामाजिक मान्यता प्राप्त थी।

73. (3) आभूषणों की स्थानीय और क्षेत्रीय मांग को पूर्ण करने वाले विशिष्ट शिल्प समुदाय
कालीबंगा में खुदाई के दौरान मिली शंख की चूड़ियाँ और मिट्टी के मनके एक विकसित समाज की ओर संकेत करते हैं। इन वस्तुओं की प्रचुरता सिद्ध करती है कि वहाँ विशिष्ट शिल्प समुदायों का अस्तित्व था जो आभूषण निर्माण में कुशल थे। ये समुदाय न केवल स्थानीय आवश्यकताओं को पूर्ण करते थे, बल्कि संभवतः इन वस्तुओं का अन्य क्षेत्रों के साथ व्यापार भी करते थे। यह प्राचीन राजस्थान की एक जटिल और सुविकसित आर्थिक संरचना का ठोस प्रमाण है।

74. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
प्राचीन आर्थिक शब्दावली में 'श्रेणी' व्यापारियों के संघ को कहा जाता था। 'निष्क' वैदिक काल में स्वर्ण आभूषण या मुद्रा की इकाई थी। 'वार्ता' एक सामूहिक शब्द था जिसमें कृषि, पशुपालन और वाणिज्यिक व्यापार को सम्मिलित किया गया था। 'कार्षापण' प्राचीन भारत में प्रचलित मानक चांदी या तांबे का सिक्का था। ये शब्द तत्कालीन समाज की सुसंगठित और विविध आर्थिक गतिविधियों का दर्पण हैं।

75. (4) भूमि अनुदान प्रणाली और विकेंद्रीकृत राजनीतिक सत्ता का व्यापक उदय
प्राचीन से पूर्व-मध्यकालीन राजस्थान में संक्रमण की प्रमुख विशेषता भूमि अनुदान प्रणाली का विस्तार और सत्ता का विकेंद्रीकरण था। केंद्रीकृत साम्राज्यों का प्रभाव कम होने पर स्थानीय शासकों ने वेतन के बदले भूमि दान करना शुरू किया। इस प्रक्रिया ने मजबूत सामंती ढांचे को जन्म दिया, जहाँ स्थानीय सामंत अपने क्षेत्रों में शक्तिशाली हो गए। इसी व्यवस्था ने आगे चलकर राजस्थान में स्वायत्त राजपूत राज्यों के उदय के लिए ठोस आधार तैयार किया।

76. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
हूण और गुर्जर जैसे विदेशी समूहों के आगमन और भारतीय समाज में घुलने-मिलने से राजस्थान की वर्ण व्यवस्था अधिक जटिल हो गई। इन समूहों के प्रभावशाली वर्गों ने वीरता के बल पर समाज में उच्च स्थान प्राप्त किया। पूर्व-मध्यकाल में उभरने वाले कई प्रमुख राजपूत वंश अपनी उत्पत्ति को इन्हीं सामाजिक प्रक्रियाओं और प्राचीन क्षत्रिय परंपराओं के साथ जोड़कर देखते हैं। यह आत्मसातीकरण की अनूठी प्रक्रिया थी जिसने राजस्थान की नई राजनैतिक पहचान गढ़ी।

77. (3) जनजातीय समाज पूर्ण पृथकता में रहते थे और कभी भी नगरीय या कृषि केंद्रों के साथ संपर्क नहीं करते थे।
प्राचीन राजस्थान के इतिहास में भील और अन्य समुदायों की भूमिका सक्रिय रही है। वे अरावली की पहाड़ियों और वन संसाधनों पर नियंत्रण रखते थे तथा व्यापारिक मार्गों की रक्षा करते थे। यह कहना गलत है कि जनजातीय समाज पूरी तरह अलग-थलग रहते थे। वास्तव में, वे नगरों को वन उत्पाद उपलब्ध कराते थे और समय-समय पर राजनैतिक एवं सैन्य गतिविधियों में मुख्यधारा के शासकों के साथ मिलकर कार्य करते थे।

78. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्राचीन काल के अंत में राजस्थान में महिलाओं की सामाजिक स्थिति में धीरे-धीरे गिरावट आने लगी थी। अभिलेखों से स्पष्ट होता है कि इस काल में सती प्रथा के उदाहरण अधिक मिलने लगे थे। पितृसत्तात्मक व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के कारण महिलाओं की गतिशीलता और सार्वजनिक जीवन पर समाज द्वारा कठोर प्रतिबंध लगाए गए। यह परिवर्तन युद्धों की बढ़ती आवृत्ति और बदलती सामंती परिस्थितियों का परिणाम था, जो तत्कालीन ऐतिहासिक दस्तावेजों में परिलक्षित होता है।

79. (1) अंतर्-वर्ण विवाह परंपराएं और उनकी संतानों की विशिष्ट स्थिति
प्राचीन ग्रंथों में 'अनुलोम' और 'प्रतिलोम' शब्दों का प्रयोग वर्णों के बीच होने वाले विवाहों के लिए किया गया है। अनुलोम विवाह में उच्च वर्ण का पुरुष निम्न वर्ण की कन्या से विवाह करता था, जिसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त थी। इसके विपरीत, प्रतिलोम विवाह में कन्या उच्च वर्ण की और पुरुष निम्न वर्ण का होता था, जिसे सामान्यतः हतोत्साहित किया जाता था। इन नियमों का उद्देश्य वर्ण व्यवस्था की शुद्धता और समाज के पदानुक्रमित ढांचे को व्यवस्थित रखना था।

80. (2) आर्थिक लेनदेन और व्यापार की एक मानकीकृत प्रणाली
कालीबंगा जैसे स्थलों पर मिले पत्थरों के बाट और माप के उपकरण एक विकसित आर्थिक जीवन के प्रमाण हैं। इन उपकरणों की प्राप्ति दर्शाती है कि समाज में वस्तुओं के विनिमय के लिए एक अत्यंत मानकीकृत और सटीक प्रणाली प्रचलित थी। व्यापार केवल अनुमान पर नहीं बल्कि मापतोल पर आधारित था, जो सुदृढ़ प्रशासनिक नियंत्रण और जटिल वाणिज्यिक नेटवर्क की उपस्थिति को प्रमाणित करता है। यह व्यवस्था नगरीय अर्थव्यवस्था को सुचारु रुप से चलाने के लिए अनिवार्य थी।

81. (1) केवल I और II
राजस्थान की भौगोलिक स्थिति ने प्राचीन काल में उत्तर भारत और पश्चिमी तट के बंदरगाहों के बीच वाणिज्यिक सेतु का कार्य किया। यहाँ से तांबा, कीमती पत्थर और उत्कृष्ट वस्त्रों का निर्यात किया जाता था। यह कहना गलत है कि आंतरिक व्यापारिक नेटवर्क का प्रमाण नहीं है। विभिन्न ताम्रपाषाणिक और हड़प्पा कालीन स्थलों के बीच कच्चे माल के आदान-प्रदान के ठोस साक्ष्य मिले हैं, जो एक जीवंत आंतरिक बाजार की उपस्थिति को पुख्ता करते हैं।

82. (1) कालीबंगा
इन पुरातात्विक स्थलों में कालीबंगा एक विषम विकल्प है क्योंकि यह एक 'नगरीय' सिंधु घाटी सभ्यता का प्रतिनिधित्व करता है जो ईंटों के उपयोग और नगर नियोजन के लिए प्रसिद्ध है। इसके विपरीत, आहड़, बालाथल और गिलुंड 'ताम्रपाषाण कालीन' आहड़-बनास संस्कृति के अंग हैं, जो ग्रामीण आधार वाली संस्कृति थी। कालक्रम और सांस्कृतिक विशेषताओं दोनों ही दृष्टियों से कालीबंगा इन अन्य तीन स्थलों के समूह से भिन्न और विशिष्ट पहचान रखता है।

83. (3) स्थानीय शासकों द्वारा वैदिक यज्ञ परंपराओं का पुनरुद्धार या सुदृढ़ निरंतरता
राजस्थान में तीसरी शताब्दी के यूप स्तंभों की उपस्थिति संकेत देती है कि स्थानीय शासकों ने प्राचीन वैदिक यज्ञ परंपराओं को जीवित रखा था। ये स्तंभ मौर्योत्तर काल के बाद ब्राह्मणवादी धर्म के पुनः शक्तिशाली होने के प्रतीक हैं। यह दर्शाता है कि विदेशी आक्रमणों के बावजूद स्थानीय सत्ताओं ने अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक जड़ों को मजबूती से थामे रखा था। इन यूपों पर अंकित विवरण तत्कालीन समाज की धार्मिक निष्ठा और राजकीय गौरव की गाथा प्रस्तुत करते हैं।

84. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
महाभारत ग्रंथ मत्स्य जनपद की ऐतिहासिकता और विराटनगर का उल्लेख करता है। सम्राट अशोक का भाब्रू शिलालेख बौद्ध धर्म के प्रति श्रद्धा और राजस्थान में मौर्य प्रभाव को दर्शाता है। घोसुंडी शिलालेख भागवत धर्म के प्रारंभिक साक्ष्यों में से एक है, जिसमें वासुदेव की पूजा का वर्णन है। बिजोलिया शिलालेख चौहान वंश की वंशावली और उनकी उत्पत्ति के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देता है। ये सभी स्रोत राजस्थान के गौरवशाली इतिहास को समझने के प्रमुख आधार स्तंभ हैं।

85. (3) झालावाड़
कोलवी की प्रसिद्ध बौद्ध गुफाएं राजस्थान के झालावाड़ जिले में स्थित हैं। ये अपने अद्वितीय शैलकृत (पहाड़ों को काटकर बनाई गई) स्थापत्य के लिए जानी जाती हैं। इन गुफाओं में बौद्ध स्तूप और विहारों के अवशेष मिलते हैं, जो इस क्षेत्र में बौद्ध धर्म के विस्तार के प्रमाण हैं। इन्हें राजस्थान के 'अजंता-एलोरा' की संज्ञा दी जाती है। यह स्थल प्राचीन भारतीय वास्तुकला की तकनीकी कुशलता और पहाड़ों को कलाकृतियों में बदलने की मानवीय क्षमता का अद्भुत उदाहरण है।

86. (2) केवल IV
रंगमहल की मृण्मय कला पर गांधार शैली का प्रभाव और बैराठ में लकड़ी-ईंट संरचनाओं के उपयोग के तथ्य सही हैं। साथ ही, उत्तरी काली चमकीली मृदभांड का मिलना गंगा घाटी के साथ संबंधों को पुख्ता करता है। हालाँकि, यह कथन कि पूरे थार मरुस्थल में विशाल एकाश्म शैलकृत कैलाश मंदिर बनाए गए थे, पूर्णतः गलत है। राजस्थान में इस प्रकार के बड़े एकाश्म मंदिरों का अभाव है; ऐसे मंदिर मुख्य रूप से महाराष्ट्र के एलोरा में ही पाए जाते हैं।

87. (4) शिलालेख दर्शाते हैं कि राजाओं और सामंतों ने शास्त्र और व्यावहारिक ज्ञान को बढ़ावा देने हेतु अग्रहारों के माध्यम से ब्राह्मणों को संरक्षण दिया था।
राजस्थान के शिलालेख प्रमाणित करते हैं कि राजाओं और सामंतों ने शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विद्वान ब्राह्मणों को 'अग्रहार' भूमि दान देकर राजकीय संरक्षण प्रदान किया था। इन अनुदानों का उद्देश्य यह था कि विद्वान आर्थिक रूप से निश्चिंत होकर शास्त्र और व्यावहारिक ज्ञान का प्रसार कर सकें। यह प्रणाली समाज में उच्च कोटि की विद्वत्ता बनाए रखने के लिए आवश्यक थी। यद्यपि संस्कृत उच्च शिक्षा की भाषा थी, लेकिन जनसामान्य में स्थानीय भाषाएं भी प्रचलित थीं।

88. (1) समाज के सभी वर्गों के बीच सिले हुए रेशमी वस्त्रों का व्यापक उपयोग
प्राचीन राजस्थान के समाज में ताम्र और मिट्टी के आभूषणों का उपयोग सामान्य था। लोगों का आहार मुख्य रूप से जौ, दूध के उत्पादों और मांस पर आधारित था। सामाजिक जीवन में यज्ञ और अनुष्ठान अत्यंत महत्वपूर्ण थे। हालाँकि, यह कहना गलत है कि समाज के सभी वर्गों के बीच सिले हुए रेशमी वस्त्रों का व्यापक उपयोग होता था। रेशम एक दुर्लभ वस्तु थी जो केवल राजसी वर्ग तक सीमित थी। अधिकांश सामान्य लोग सूती वस्त्रों का ही उपयोग करते थे।

89. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
प्राचीन राजस्थान में मनका निर्माण और तांबा गलाने जैसे शिल्पों के स्थानीयकरण ने विशेष व्यावसायिक समूहों के उदय को प्रेरित किया। जब ये शिल्पकार एक क्षेत्र में बसे, तो उन्होंने अपने हितों के लिए संघ बनाए। धीरे-धीरे ये पेशे वंशानुगत हो गए और पिता से पुत्र को हस्तांतरित होने लगे। समय बीतने के साथ इस प्रणाली ने जातियों की दीवारों को अधिक कठोर बना दिया और व्यवसायों का सामाजिक विभाजन गहरा हुआ। ये दोनों प्रक्रियाएं प्राचीन समाज के आर्थिक विकास की महत्वपूर्ण कड़ियाँ थीं।

90. (1) आहत सिक्के → इंडो-ग्रीक सिक्के → जनजातीय गणराज्य के सिक्के (मालव/शिबि)
राजस्थान में मुद्राओं का विकास एक निश्चित क्रम में हुआ है। सबसे पहले 'आहत' या पंचमार्क सिक्के (5वीं-6वीं शताब्दी ईसा पूर्व) आए। इसके बाद मौर्योत्तर काल में इंडो-ग्रीक राजाओं के विशिष्ट सिक्के प्रसारित हुए। अंत में, मालव, शिबि और यौधेय जैसे स्थानीय जनजातीय गणराज्यों ने अपनी विजय और स्वायत्तता को दर्शाने के लिए अपने स्वयं के सिक्के जारी किए। यह अनुक्रम क्षेत्र की राजनीतिक अस्थिरता और व्यापारिक विकास की बदलती परिस्थितियों का परिचायक है।

91. (4) अंतर्विवाह के माध्यम से वर्णों का मिश्रण, जिससे नवीन जातियों का उदय हुआ।
प्राचीन भारतीय समाज के संदर्भ में 'वर्णसंकर' एक सामाजिक प्रक्रिया है जहाँ विभिन्न वर्णों के बीच अंतर्विवाह के कारण वर्णों का आपसी मिश्रण होता था। जब किसी एक वर्ण का व्यक्ति दूसरे वर्ण से विवाह करता था, तो उनसे उत्पन्न संतान को वर्णसंकर कहा जाता था। इसी प्रक्रिया के परिणामस्वरूप समाज में अनेक नवीन उपजातियों का उदय हुआ। यह शब्द समाज के प्रारंभिक चार वर्णों के ढांचे में आने वाली जटिलता और बढ़ती सामाजिक विविधता को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता था।

92. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
ऐतिहासिक साक्ष्य दर्शाते हैं कि भील और मीणा जैसी जनजातियों ने अरावली के क्षेत्रों में अपनी स्वायत्तता बनाए रखी थी। वे व्यापारिक कारवां की सुरक्षा के बदले 'बोलवा' नामक पथ-कर वसूलते थे, जो उनके आर्थिक जीवन का प्रमुख हिस्सा था। यह कहना गलत है कि गुप्त काल तक इन जनजातियों को समाप्त कर दिया गया था। वास्तव में, ये जनजातियाँ पूरे प्राचीन और मध्यकाल के दौरान राजस्थान की व्यवस्था का अभिन्न हिस्सा बनी रहीं और कभी भी पूर्णतः विस्थापित नहीं हुईं।

93. (3) वंश की शुद्धता बनाए रखने हेतु एक ही गोत्र के भीतर विवाह को कड़ाई से प्रोत्साहित किया जाता था।
प्राचीन राजस्थान का समाज पितृसत्तात्मक था जहाँ संयुक्त परिवार की प्रधानता थी और विवाह को एक पवित्र संस्कार माना जाता था। यहाँ विवाह के आठ स्वरूपों को मान्यता प्राप्त थी। हालाँकि, यह कहना गलत है कि वंश की शुद्धता के लिए एक ही गोत्र के भीतर विवाह को प्रोत्साहित किया जाता था। वास्तव में, हिंदू सामाजिक व्यवस्था में सगोत्र विवाह को कड़ाई से वर्जित माना गया था और बहिर्विवाह की परंपरा का पालन पूरी निष्ठा के साथ किया जाता था।

94. (4) कालीबंगा जैसे स्थलों पर कुओं, तालाबों और बाढ़ के विरुद्ध सुरक्षात्मक दीवारों के साक्ष्य
प्राचीन राजस्थान के शुष्क परिवेश में जल प्रबंधन का अत्यधिक महत्व था। कालीबंगा में खुदाई के दौरान ईंटों से बने कुओं, कुंडों और बस्तियों को बाढ़ से बचाने के लिए बनाई गई सुरक्षात्मक

दीवारों के अवशेष मिले हैं। यह दर्शाता है कि यहाँ के निवासी जल संरक्षण की उन्नत तकनीकों से परिचित थे। यह कहना गलत है कि मौर्य काल में लूणी नदी पर विशाल आधुनिक बांध थे या हड़प्पावासी केवल वर्षा जल पर ही निर्भर रहते थे।

95. (1) विहार
प्राचीन भारतीय आर्थिक जीवन में 'कार्षापण', 'पण' और 'शतमान' शब्द मुद्राओं या विनिमय की इकाइयों के लिए उपयोग किए जाते थे। कार्षापण और पण तांबे या चांदी के सिक्के थे, जबकि शतमान भी एक प्राचीन मुद्रा थी। इसके विपरीत, 'विहार' शब्द का संबंध आर्थिक लेनदेन से नहीं बल्कि बौद्ध धर्म से है। विहार उन मठों को कहा जाता था जहाँ बौद्ध भिक्षु निवास करते और अध्ययन करते थे। अतः आर्थिक शब्दावली के संदर्भ में विहार एक विषम विकल्प है।

96. (2) केवल III
राजस्थान प्राचीन काल में उत्तर भारत और पश्चिमी गुजरात के बंदरगाहों के बीच महत्वपूर्ण मार्ग था, जहाँ माध्यमिका जैसे नगर फल-फूल रहे थे। कृषि अधिशेष ने शिल्प कला में सहायता की और परिवहन के लिए ऊंटों का उपयोग होता था। हालाँकि, यह कहना गलत है कि व्यापार पूरी तरह विदेशी व्यापारियों के नियंत्रण में था। वास्तव में, स्थानीय वैश्य समुदायों और श्रेणियों ने राजस्थान की आंतरिक और बाह्य व्यापारिक गतिविधियों में नेतृत्वकारी भूमिका निभाई थी, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था समृद्ध हुई।

97. (2) महाभारत काल से मौर्य काल तक निरंतर निवास का होना
जयपुर के निकट स्थित बैराठ (विराटनगर) का ऐतिहासिक महत्व इस तथ्य में निहित है कि यहाँ महाभारत काल से मौर्य काल तक मानव निवास के निरंतर प्रमाण मिलते हैं। यह मत्स्य जनपद की राजधानी थी और मौर्य सम्राट अशोक का प्रमुख केंद्र भी रहा। यहाँ से प्राप्त बौद्ध मंदिर और शिलालेख इसकी सांस्कृतिक निरंतरता को सिद्ध करते हैं। यह स्थल न केवल राजनीतिक केंद्र था, बल्कि धार्मिक और सामाजिक विकास के चरणों का साक्षी भी रहा है, जो राजस्थान के इतिहास की तस्वीर पेश करता है।

98. (1) कई यूपों की खोज शासक वर्ग के बीच श्रौत यज्ञों की लोकप्रियता को दर्शाती है।
राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से कई 'यूप' स्तंभों की प्राप्ति सिद्ध करती है कि प्राचीन काल में यहाँ के शासकों के बीच श्रौत यज्ञों की परंपरा लोकप्रिय थी। ये स्तंभ अश्वमेध और वाजपेय जैसे भव्य यज्ञों की स्मृति में स्थापित किए गए थे। यह कहना गलत है कि शुंग या कुषाण काल में इन परंपराओं को त्याग दिया गया था। वास्तव में, इन यज्ञों ने शासकों की धार्मिक निष्ठा और उनके राजनैतिक प्रभुत्व को समाज के बीच स्थापित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

99. (3) क्षेत्र के समृद्ध व्यापारिक समुदायों (महाजनों) द्वारा जैन धर्म को संरक्षण देना
पश्चिमी राजस्थान के ओसियां जैसे क्षेत्रों में प्राचीन जैन प्रतिमाओं की प्रचुरता दर्शाती है कि इस धर्म को समृद्ध व्यापारिक समुदायों (महाजनों) का व्यापक समर्थन प्राप्त था। राजस्थान के व्यापारियों ने अपनी आर्थिक संपन्नता का बड़ा हिस्सा भव्य जैन मंदिरों के निर्माण और धर्म के प्रचार में दान किया। यह कहना गलत है कि योद्धाओं ने इसे मुख्य रूप से अपनाया था। जैन धर्म की अहिंसा और नैतिकता की शिक्षाओं ने व्यापारिक मूल्यों के साथ गहरा सामंजस्य स्थापित किया था, जिससे यह फला-फूला।

100. (1) I, III, II
राजस्थान में प्राप्त सिक्कों के भंडारों का सही क्रम उनके कालखंड पर आधारित है। रैढ़ से प्राप्त चांदी के आहत सिक्के सबसे प्राचीन (ईसा पूर्व 5वीं-6वीं सदी) हैं। इसके पश्चात बैराठ से मिले इंडो-ग्रीक सिक्के (दूसरी-पहली शताब्दी ईसा पूर्व) आते हैं। अंत में टोंक के नगर स्थल से मिले मालव गणराज्य के सिक्के (पहली शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी) का स्थान है। यह कालक्रम क्षेत्र की बदलती राजनैतिक सत्ताओं और आर्थिक प्रवृत्तियों को भली-भांति उजागर करता है।

101. (3) ब्राह्मण की संपत्ति की चोरी, जो उनकी संरक्षित स्थिति को दर्शाता है।
प्राचीन सामाजिक-कानूनी संदर्भ में 'ब्रह्मस्तेय' का अर्थ है किसी ब्राह्मण की संपत्ति की चोरी करना। धर्मशास्त्रों और स्थानीय परंपराओं में इसे अत्यंत गंभीर अपराध माना जाता था। यह शब्द तत्कालीन समाज में ब्राह्मणों की उच्च और संरक्षित सामाजिक स्थिति को रेखांकित करता है। उनकी संपत्ति की रक्षा के लिए समाज और राज्य द्वारा विशेष कड़े दंड निर्धारित किए गए थे। यह अवधारणा वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत विभिन्न समूहों को प्राप्त विधिक सुरक्षा और उनके सामाजिक पदानुक्रम को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती है।

102. (2) पशुपालन और पशुचारी जीवन
बागोर और तिलवाड़ा जैसे प्राचीन स्थलों से प्राप्त साक्ष्य स्पष्ट करते हैं कि स्थायी कृषि से पहले राजस्थान की प्रारंभिक अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से पशुपालन और पशुचारी जीवन पर आधारित थी। यहाँ के निवासी भेड़, बकरी और गाय पालते थे, जो उनकी आजीविका का मुख्य स्रोत थे। इन स्थलों से मिली पशुओं की हड्डियों की भारी मात्रा इस तथ्य की पुष्टि करती है। यह जीवन शैली मानव समाज के शिकार से उत्पादक अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने के महत्वपूर्ण चरण को दर्शाती है।

103. (4) विशिष्ट ताम्र-शिल्पियों और प्राचीन धातु वैज्ञानिकों का एक समूह।
आहड़ स्थल पर उत्खनन के दौरान प्रचुर मात्रा में मिला तांबा गलाने का कचरा (धातु-मल) प्राचीन राजस्थान के एक विशेष व्यावसायिक समुदाय की उपस्थिति को प्रमाणित करता है। यह सिद्ध करता है कि यहाँ कुशल ताम्र-शिल्पियों और धातु वैज्ञानिकों का समूह निवास करता था जिन्हें धातु शोधन की गहरी समझ थी। इन कारीगरों ने न केवल स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा किया बल्कि तांबे की वस्तुओं के व्यापार के माध्यम से इस सभ्यता को समृद्ध बनाया, जिससे इसे 'ताम्रवती नगरी' कहा गया।

104. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
प्राचीन राजस्थान के प्रमुख जनपद आधुनिक भौगोलिक क्षेत्रों के साथ इस प्रकार जुड़े थे। मत्स्य जनपद का विस्तार जयपुर और अलवर में था। शूरसेन जनपद का प्रभाव भरतपुर और धौलपुर के पूर्वी हिस्सों तक फैला हुआ था। जांगलदेश ऐतिहासिक रूप से बीकानेर और नागौर के मरुस्थलीय क्षेत्रों को कहा जाता था। शिबि जनपद का संबंध मेवाड़ के चित्तौड़गढ़ और उदयपुर क्षेत्रों से था। यह विभाजन प्राचीन राजस्थान की प्रशासनिक सीमाओं और जनजातियों की भौगोलिक स्थिति को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

105. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
प्राचीन से पूर्व-मध्यकाल के दौरान राजस्थान में राजपूत पहचान सुदृढ़ हुई और शक्तिशाली क्षेत्रीय रियासतों का गठन हुआ। यह काल विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया का गवाह था जहाँ छोटे राज्यों ने अपनी स्वायत्तता स्थापित की। यह कहना गलत है कि यह काल केंद्रीकृत अखिल भारतीय साम्राज्यों के पुनरुत्थान की विशेषता थी। वास्तव में, गुप्तों के पतन के बाद कोई भी एक शक्ति पूरे भारत पर नियंत्रण नहीं रख सकी, जिससे राजस्थान में क्षेत्रीय राजवंशों को स्वतंत्र रूप से फलने-फूलने का अवसर मिला।

106. (1) केवल I और II
प्राचीन राजस्थान में वर्ण व्यवस्था पूरी तरह बंद नहीं थी; शक्तिशाली विदेशी और स्थानीय जनजातीय समूहों ने वीरता के बल पर उच्च सामाजिक स्तर प्राप्त किया। साथ ही, राजाओं द्वारा दिए गए भूमि अनुदानों (अग्रहार) ने ब्राह्मणों की सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ उनकी आर्थिक शक्ति को भी काफी बढ़ा दिया था। यह कहना गलत है कि मौर्य काल में वैश्यों ने व्यापार छोड़कर योद्धा का रूप ले लिया था, क्योंकि वे निरंतर एक मजबूत वाणिज्यिक वर्ग के रूप में समाज का आर्थिक आधार बने रहे।

107. (4) सामाजिक-धार्मिक आत्मसातीकरण और समन्वयवाद
राजस्थान के धार्मिक इतिहास की अनूठी विशेषता यह रही है कि ब्राह्मणवादी देवकुल ने समय के साथ क्षेत्रीय मातृ देवियों और जनजातीय देवताओं को अपने भीतर समाहित कर लिया। यह प्रक्रिया सामाजिक-धार्मिक आत्मसातीकरण और समन्वयवाद का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ स्थानीय आस्थाओं को दबाने के बजाय उन्हें व्यापक हिंदू धर्म का हिस्सा बनाया गया। इस समन्वय ने विभिन्न वर्गों के बीच धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा दिया। यह जनजातियों को मुख्यधारा के समाज से जोड़ने का एक अत्यंत प्रभावी और शांतिपूर्ण माध्यम सिद्ध हुआ।

108. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्राचीन राजस्थान में संयुक्त परिवार प्रणाली समाज की एक मूलभूत इकाई थी, जहाँ सदस्य एक ही छत के नीचे रहते थे और वरिष्ठ पुरुष के पास सर्वोच्च निर्णय लेने का अधिकार था। इस व्यवस्था का आधार तत्कालीन सामाजिक और विधिक मानदंड थे, जिन्होंने एक स्पष्ट पितृसत्तात्मक संरचना निर्धारित की थी। नियमों के अनुसार, परिवार की संपत्ति और वंश परंपरा मुख्य रूप से पुरुष उत्तराधिकारियों के माध्यम से ही चलती थी। यह व्यवस्था पारिवारिक स्थिरता सुनिश्चित करने और कृषि श्रम को प्रबंधित करने के लिए अनुकूल थी।

109. (3) एक महिला द्वारा सुयोग्य वर के समूह में से अपने पति का चुनाव करना।
प्राचीन राजस्थान के कुलीन परिवारों, विशेषकर क्षत्रिय वर्ण में 'स्वयंवर' की प्रथा अत्यंत प्रचलित थी। इस परंपरा के अंतर्गत विवाह योग्य महिला को यह अधिकार दिया जाता था कि वह सुयोग्य वरों की सभा में से अपनी इच्छा और विवेक के आधार पर पति का चुनाव कर सके। यह प्रथा न केवल महिला की व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पसंद को सम्मान देती थी, बल्कि तत्कालीन समाज के उदार और प्रगतिशील दृष्टिकोण को भी दर्शाती थी। महाकाव्यों में इसके कई उदाहरण मिलते हैं जो इसकी महत्ता को प्रमाणित करते हैं।

110. (4) चाय
राजस्थान के प्राचीन स्थलों, जैसे कालीबंगा और आहड़, की खुदाई से तत्कालीन कृषि के बारे में जानकारी मिलती है। यहाँ के निवासी मुख्य रूप से जौ, गेहूं और सरसों जैसी फसलों का उत्पादन करते थे, जिनके अवशेष पाए गए हैं। इसके विपरीत, 'चाय' इस समूह में एक विषम विकल्प है क्योंकि चाय की खेती भारत में बहुत बाद में आधुनिक काल में शुरु हुई थी। प्राचीन काल में राजस्थान की जलवायु चाय उत्पादन के लिए अनुकूल नहीं थी और न ही इसका कोई ऐतिहासिक साक्ष्य यहाँ मिलता है।

111. (1) केवल I, II और IV
पुष्कर और अजमेर अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण उत्तर भारत और पश्चिमी तट को जोड़ने वाले व्यापारिक मार्गों के प्रमुख पड़ाव थे। अन्य क्षेत्रों में मिले रोमन सिक्के प्रमाण हैं कि राजस्थान अंतरराष्ट्रीय व्यापार नेटवर्क से जुड़ा था। साथ ही, मालव जैसे गणराज्यों के स्थानीय सिक्कों ने क्षेत्रीय विनिमय को सुगम बनाया था। यह कहना गलत है कि लूणी नदी पूरे वर्ष नौकायन योग्य थी, क्योंकि यह एक मरुस्थलीय नदी है जिसका व्यापारिक जलमार्ग के रूप में उपयोग संभव नहीं था।

112. (2) कालीबंगा के नगर नियोजन में किसी भी सुरक्षात्मक किलेबंदी की दीवारों का पूर्णतः अभाव था।
राजस्थान के प्राचीन नगरीय केंद्रों के पुरातात्विक साक्ष्य विस्तृत हैं। रैढ़ अपने सिक्कों के लिए और माध्यमिका प्रारंभिक वैष्णव साक्ष्यों के लिए प्रसिद्ध है। बैराठ भी मौर्यकाल का प्रमुख केंद्र था। हालाँकि, कालीबंगा के बारे में यह कहना कि वहाँ सुरक्षात्मक किलेबंदी का अभाव था, पूर्णतः गलत है। कालीबंगा अपने दोहरे परकोटे या सुदृढ़ किलेबंदी के लिए जाना जाता है, जो इसे बाहरी खतरों से सुरक्षित रखता था। यह रक्षात्मक दीवार हड़प्पा कालीन नगर नियोजन की एक अनिवार्य और प्रमुख विशेषता रही थी।

113. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
प्राचीन राजस्थान में रूढ़िवादी वैदिक परंपराओं के समांतर जनसामान्य के बीच यक्षों, नागों और प्रकृति देवताओं की पूजा प्रचलित थी, जो लोक आस्थाओं को दर्शाती थी। ये लोक पंथ

समाज की सांस्कृतिक जड़ों में गहराई से बसे हुए थे। यह कहना गलत है कि बौद्ध धर्म के प्रसार ने इन स्थानीय देवताओं को समाप्त कर दिया था। वास्तव में, बौद्ध और जैन धर्म ने कई लोक देवताओं और प्रथाओं को अपने में समाहित कर लिया, जिससे एक मिश्रित धार्मिक संस्कृति का विकास हुआ जो राजस्थान की विशेषता है।

114. (1) अशोक
जयपुर के बैराठ में ईंटों और लकड़ी से निर्मित भव्य गोलाकार बौद्ध मंदिर (स्तूप) के अवशेषों का सीधा संबंध सम्राट अशोक से है। अशोक के शासनकाल में बैराठ बौद्ध शिक्षा और प्रचार का महत्वपूर्ण केंद्र बन गया था। यहाँ से प्राप्त शिलालेख और बौद्ध संरचनाएं न केवल सम्राट की धार्मिक सहिष्णुता और बौद्ध धर्म के प्रति उनकी निष्ठा को दर्शाती हैं, बल्कि राजस्थान के प्राचीन इतिहास में मौर्यों के सुदृढ़ प्रशासनिक और सांस्कृतिक प्रभाव को भी मजबूती से प्रमाणित करती हैं।

115. (3) मथुरा और गांधार शैली
उत्तरी राजस्थान के रंगमहल स्थल से प्राप्त मृण्मय कलाकृतियाँ और मूर्तियाँ अपनी विशेष निर्माण शैली के लिए विख्यात हैं। इन पर तत्कालीन मथुरा और गांधार कला शैलियों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। गांधार शैली के कारण मूर्तियों की शारीरिक बनावट और वस्त्रों के चित्रण में विशिष्ट यथार्थवाद झलकता है। यह सांस्कृतिक मिश्रण प्रमाण है कि प्राचीन राजस्थान अन्य क्षेत्रों के साथ कलात्मक रूप से गहराई से जुड़ा था, जिससे यहाँ एक उन्नत और मिश्रित कला परंपरा का विकास संभव हो सका था।

116. (1) केवल I, II, III और IV
प्राचीन राजस्थान में शिक्षा का स्वरूप धार्मिक था और यह वर्ण व्यवस्था से जुड़ी थी, जहाँ गुरुकुल प्राकृतिक परिवेश में स्थित होते थे। उच्च शिक्षा का मुख्य माध्यम संस्कृत भाषा थी। गुप्तोत्तर काल में भीनमल शिक्षा और गणित के अंतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। यह कहना निराधार है कि राज्य शैक्षणिक संस्थानों पर भारी कर लगाता था। इसके विपरीत, राजा और सामंत इन संस्थानों को कर-मुक्त भूमि अनुदान और आर्थिक सहायता देकर उनके विकास में सक्रिय योगदान देते थे।

117. (3) वे कृषि करते थे और संभवतः अग्नि यज्ञों में उपज की आहुति देते थे।
कालीबंगा में जूते हुए खेतों और अग्नि वेदियों की खोज निवासियों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण तथ्य प्रदान करती है। जूते हुए खेत सिद्ध करते हैं कि वे कृषि में उन्नत थे और अनाज का उत्पादन करते थे। वहीं, अग्नि वेदियों की उपस्थिति दर्शाती है कि वे धार्मिक अनुष्ठान करते थे और संभवतः अपनी कृषि उपज का एक हिस्सा आहुति के रूप में अर्पित करते थे। यह जीवन शैली कृषि उत्पादन और आध्यात्मिक विश्वासों के समन्वय को दर्शाती है, जहाँ भोजन और भक्ति आपस में गहराई से जुड़े हुए थे।

118. (2) भाड़े के मजदूर, कारीगर या शिल्पकार जो मजदूरी पर कार्य करते थे।
प्राचीन शिल्प समुदायों के संदर्भ में 'कर्मकार' शब्द का प्रयोग उन व्यक्तियों के लिए किया जाता था जो दूसरों के अधीन मजदूरी पर कार्य करते थे। इनमें भाड़े के मजदूर, विभिन्न शिल्पों के कारीगर और वे श्रमिक शामिल थे जो शारीरिक मेहनत के बदले आजीविका अर्जित करते थे। श्रेणियों और धनी व्यापारियों के अधीन काम करने वाले इन लोगों का समाज के उत्पादन कार्यों में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान था। यह वर्ग प्राचीन राजस्थान की श्रम आधारित आर्थिक संरचना का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता था।

119. (4) मालव गणराज्य के सिक्कों पर अनिवार्य रूप से 'मालवानाम जय' उत्कीर्ण था।
प्राचीन राजस्थान में मालव गणराज्य के सिक्कों की विशिष्ट विशेषता यह थी कि उन पर 'मालवानाम जय' उत्कीर्ण होता था, जो उनकी विजय और स्वायत्तता का प्रतीक था। यह कहना गलत है कि राजस्थान के आहत सिक्के शुद्ध सोने के थे, क्योंकि वे अधिकांशतः चांदी और तांबे के बने होते थे। साथ ही, वस्तु विनिमय प्रणाली सिक्कों के आने के बाद भी ग्रामीण क्षेत्रों में बनी रही। बैराठ में मिले इंडो-ग्रीक सिक्के विदेशी राजाओं द्वारा ढाले गए थे, जो व्यापार के माध्यम से यहाँ पहुँचे थे।

120. (1) सेवाओं के बदले भूमि प्रदान करना, जिससे विकेंद्रीकृत सत्ता को बढ़ावा मिला।
प्राचीन से पूर्व-मध्यकालीन राजस्थान में संक्रमण के दौरान उभरी सामंतवाद व्यवस्था की प्रमुख विशेषता सेवाओं के बदले भूमि अनुदान देना था। राजा अपनी सैन्य और प्रशासनिक आवश्यकताओं के लिए अधिकारियों को नकद वेतन के बजाय कृषि भूमि प्रदान करते थे। इसके परिणामस्वरूप भूमि धारकों की शक्ति बढ़ी और सत्ता का विकेंद्रीकरण हुआ। इस प्रणाली ने समाज में नया पदानुक्रम बनाया जहाँ सामंत शक्तिशाली हो गए। इससे क्षेत्रीय राजपूत सत्ताओं को मजबूती मिली और विकेंद्रीकृत शासन का युग शुरु हुआ।

अध्याय 04

प्रमुख राजवंशों की राजनीतिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धियां

1. निम्नलिखित में से किस ऐतिहासिक ग्रंथ में पहली बार राजपूतों की उत्पत्ति के लिए 'अग्निकुंड सिद्धांत' का प्रतिपादन किया गया था?
(1) हम्मीर महाकाव्य
(2) पृथ्वीराज रासो
(3) नैणसी री ख्यात
(4) सूरज प्रकाश
(5) प्रश्न अनुत्तरित

2. वह गुर्जर-प्रतिहार शासक, जिसने 8वीं शताब्दी में अरबों के आक्रमण को सफलतापूर्वक रोका और जिसका उल्लेख ग्वालियर प्रशस्ति में मिलता है:
(1) नागभट्ट प्रथम
(2) वत्सराज
(3) मिहिर भोज
(4) महेंद्रपाल प्रथम
(5) प्रश्न अनुत्तरित

3. परमार राजवंश के निम्नलिखित शासकों पर विचार कीजिए:
I. उपेंद्र
II. मुंज
III. सिंधुराज
IV. भोज
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प उनके शासनकाल का सही कालानुक्रम है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) I, III, II, IV
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

4. वह चाहमान शासक, जिसने अजयमेरु (अजमेर) नगर की स्थापना की और अपनी राजधानी शाकंभरी से वहाँ स्थानांतरित की थी:
(1) अर्णोराज
(2) विग्रहराज चतुर्थ
(3) वासुदेव
(4) अजयराज द्वितीय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

5. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: पृथ्वीराज तृतीय के युद्ध
A. महोबा का युद्ध
B. तराइन का प्रथम युद्ध
C. तराइन का द्वितीय युद्ध
D. भदानकों के विरुद्ध युद्ध
सूची II: विरोधी शासक/सेनापति
i. मुहम्मद गोरी (पराजित)
ii. मुहम्मद गोरी (विजयी)
iii. परमर्दि देव
iv. एक विद्रोही पड़ोसी जनजाति
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

6. मेवाड़ के गुहिल राजवंश के प्रारंभिक शासक बप्पा रावल ने निम्नलिखित में से किस शासक से चित्तौड़ का दुर्ग जीता था?
(1) सामंत सिंह
(2) मान मोरी
(3) कुमारपाल
(4) नागभट्ट
(5) प्रश्न अनुत्तरित

7. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रंथ राणा कुंभा द्वारा रचित नहीं था?
(1) रसिक प्रिया
(2) सुधा प्रबंध
(3) संगीत राज
(4) राजवल्लभ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. राणा सांगा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने गागरोन के युद्ध में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय को पराजित किया था।
II. उन्होंने खातोली के युद्ध में इब्राहिम लोदी को हराया था।
III. वे बाबर की सेनाओं से बयाना का युद्ध हार गए थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. राव जोधा ने निम्नलिखित में से किस वर्ष मेहरानगढ़ दुर्ग और जोधपुर नगर की नींव रखी थी?
(1) 1438 ईस्वी
(2) 1459 ईस्वी
(3) 1488 ईस्वी
(4) 1515 ईस्वी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. आमेर के मान सिंह प्रथम ने अकबर के शासनकाल के दौरान निम्नलिखित में से किन प्रांतों के मुगल सूबेदार के रूप में कार्य किया था?
(1) बंगाल, बिहार और काबुल
(2) गुजरात, मालवा और बंगाल
(3) काबुल, दक्कन और अवध
(4) पंजाब, सिंध और गुजरात
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): बूंदी के सुरजन हाड़ा ने 1569 ईस्वी में रणथंभौर का दुर्ग अकबर को सौंप दिया था।
कारण (R): हाड़ाओं को मुगलों के सैन्य दबाव के साथ-साथ भगवंत दास और मान सिंह के राजनयिक प्रयासों का सामना करना पड़ा था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. जंतर-मंतर वेधशालाओं के निर्माण और जयपुर की स्थापना का श्रेय किस कच्छवाहा शासक को दिया जाता है?
(1) मिर्जा राजा जय सिंह
(2) सवाई जय सिंह द्वितीय
(3) सवाई माधो सिंह
(4) सवाई प्रताप सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. प्रसिद्ध ग्रंथ "काव्य मीमांसा" के रचयिता राजशेखर किस प्रमुख राजपूत राजवंश के दरबारी कवि थे?
(1) मालवा के परमार
(2) शाकंभरी के चाहमान
(3) गुर्जर-प्रतिहार
(4) मेवाड़ के गुहिल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. माउंट आबू के देलवाड़ा मंदिर, जो जैन मंदिर स्थापत्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, मुख्य रूप से किस राजवंश के मंत्रियों के संरक्षण में निर्मित किए गए थे?
(1) माउंट आबू के परमार
(2) नाडोल के चाहमान
(3) मेवाड़ के गुहिल
(4) गुजरात के सोलंकी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. 12वीं शताब्दी के अंत और 13वीं शताब्दी के आरंभ में प्रमुख राजपूत राजवंशों के पतन का मुख्य कारण क्या था?
(1) एक केंद्रीकृत स्थायी सेना का अभाव और निरंतर आंतरिक संघर्ष।
(2) भीषण अकाल जिसने राजस्थान के कृषि आधार को नष्ट कर दिया।
(3) धार्मिक गतिविधियों के कारण युद्ध परंपराओं का पूर्ण त्याग।
(4) राजपूत कुलों का दक्कन की ओर बड़े पैमाने पर पलायन।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. राजपूतों की उत्पत्ति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जी.एच. ओझा सूर्यवंशी और चंद्रवंशी उत्पत्ति सिद्धांत का समर्थन करते हैं।
II. वी.ए. स्मिथ ने विदेशी मूल का सिद्धांत प्रस्तावित किया, जिसमें उन्हें हूणों और शकों से जोड़ा गया।
III. डी.आर. भंडारकर ने गुर्जर मूल का सिद्धांत प्रस्तावित किया।
IV. कर्नल जेम्स टॉड ने विदेशी मूल के सिद्धांत को पूरी तरह से खारिज कर दिया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. कन्नौज पर नियंत्रण के लिए प्रसिद्ध 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में गुर्जर-प्रतिहार, पाल और _______ शामिल थे:
(1) चोल
(2) राष्ट्रकूट
(3) चालुक्य
(4) परमार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: परमार शासक

A. वाक्पति मुंज
B. सिंधुराज
C. भोज
D. उदयादित्य

सूची II: प्रमुख उपलब्धियाँ/उपाधियाँ
i. समरांगण सूत्रधार की रचना की
ii. तैलप द्वितीय द्वारा पराजित
iii. उदयेश्वर मंदिर का निर्माण कराया
iv. नवसाहसांक की उपाधि धारण की

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. बिजोलिया शिलालेख, जो चाहमानों के वंशावली संबंधी जानकारी प्रदान करता है, किस वर्ष का है?
(1) 1170 ईस्वी
(2) 1192 ईस्वी
(3) 1205 ईस्वी
(4) 1150 ईस्वी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. 1182 ईस्वी में महोबा के चंदेलों के विरुद्ध पृथ्वीराज तृतीय के अभियान के परिणामस्वरुप किन प्रसिद्ध चंदेल सेनापतियों की मृत्यु हुई थी?
(1) जयमल और फत्ता
(2) गोरा और बादल
(3) दुर्गादास और मुकुंद
(4) आल्हा और उदल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. प्रारंभिक गुहिलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. गुहादत्त को इस राजवंश का संस्थापक माना जाता है।
II. बप्पा रावल का मूल नाम कालभोज था।
III. जैत्र सिंह ने इल्तुतमिश के विरुद्ध मेवाड़ की सफलतापूर्वक रक्षा की थी।
IV. रावल रतन सिंह, रावल शाखा के अंतिम शासक थे।
V. गुहिलों ने चंद्रवंशी होने का दावा किया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. राणा कुंभा ने चित्तौड़गढ़ में विजय स्तंभ का निर्माण किस विजय के उपलक्ष्य में करवाया था?
(1) गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन
(2) मालवा के महमूद खिलजी
(3) दिल्ली के फिरोज शाह तुगलक
(4) दिल्ली के अलाउद्दीन खिलजी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. राणा सांगा के निम्नलिखित सैन्य अभियानों पर विचार कीजिए:
I. खातोली का युद्ध
II. गागरोन का युद्ध
III. बयाना का युद्ध
IV. खानवा का युद्ध

निम्नलिखित में से कौन सा इन युद्धों के सही कालानुक्रमिक अनुक्रम को दर्शाता है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) III, I, II, IV
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. मारवाड़ के राव मालदेव को 1544 ईस्वी में शेरशाह सूरी ने निम्नलिखित में से किस युद्ध में पराजित किया था?
(1) सम्मेल का युद्ध (गिरि-सुमेल)
(2) मेड़ता का युद्ध
(3) जैतारण का युद्ध
(4) पाहोबा का युद्ध
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. आमेर के मान सिंह प्रथम, शिला देवी की प्रसिद्ध मूर्ति किस क्षेत्र से आमेर लाए थे?
(1) मालवा
(2) गुजरात
(3) बंगाल (जसौर)
(4) काबुल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. 1631 ईस्वी में किस मुगल सम्राट के आदेश से बूंदी से अलग कर कोटा के स्वतंत्र राज्य का गठन किया गया था?
(1) शाहजहाँ
(2) जहाँगीर
(3) अकबर
(4) औरंगजेब
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. वह कच्छवाहा शासक जिसने 1818 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अधीनस्थ गठबंधन की संधि पर हस्ताक्षर किए थे:
(1) सवाई जय सिंह द्वितीय
(2) सवाई माधो सिंह द्वितीय
(3) सवाई राम सिंह द्वितीय
(4) सवाई जगत सिंह द्वितीय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. प्रसिद्ध ग्रंथ "कान्हड़दे प्रबंध", जो अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध जालौर के चौहानों के प्रतिरोध का विवरण देता है, किसके द्वारा लिखा गया था?
(1) नैणसी
(2) पद्मनाभ
(3) चंदबरदाई
(4) जयानक
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. किराडू का प्रसिद्ध सोमेश्वर मंदिर, जो मारु-गुर्जर स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करता है, किस राजवंश के शासनकाल में निर्मित किया गया था?
(1) शाकंभरी के चाहमान
(2) मालवा के परमार
(3) गुजरात के सोलंकी
(4) गुर्जर-प्रतिहार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्राथमिक राजनीतिक कारक था जिसके कारण 16वीं-17वीं शताब्दी में स्वतंत्र राजपूत राज्यों का प्रभुत्व कम हुआ?
(1) विकेंद्रीकृत मराठा सैन्य संघ का उदय
(2) हूण जनजातियों द्वारा बार-बार होने वाले आक्रमण
(3) व्यापक मंदिर निर्माण के कारण आर्थिक संकट
(4) वैवाहिक और सैन्य गठबंधनों के माध्यम से मुगल अधीनता स्वीकार करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: राजपूतों की उत्पत्ति प्रस्तावित करने वाले विद्वान
A. सी.वी. वैद्य
B. कर्नल जेम्स टॉड
C. डी.आर. भंडारकर
D. चंदबरदाई
सूची II: विशिष्ट सिद्धांत
i. अग्निकुंड सिद्धांत
ii. वैदिक आर्यों के वंशज
iii. सिथियन/विदेशी मूल
iv. गुर्जर/ब्राह्मण मूल
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. गुर्जर-प्रतिहार राजवंश का वह शासक कौन था, जिसकी राजधानी कन्नौज पर 1018 ईस्वी में महमूद गजनवी ने आक्रमण किया था?
(1) त्रिलोचनपाल
(2) राज्यपाल
(3) महीपाल प्रथम
(4) यशपाल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. परमार राजा भोज ने निम्नलिखित में से किस स्थान पर 'सरस्वती कंठाभरण' विद्यापीठ की स्थापना की थी?
(1) उज्जैन
(2) धार
(3) मांडू
(4) आबू
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) के काल को शाकंभरी चाहमानों का स्वर्ण युग माना जाता है।
कारण (R): उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार दिल्ली तक किया और संस्कृत नाटक 'हरिकेलि' की रचना की।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. तराइन के द्वितीय युद्ध (1192 ईस्वी) में पृथ्वीराज तृतीय की पराजय का तात्कालिक राजनीतिक परिणाम क्या था?
(1) संपूर्ण राजस्थान में चौहान शासन का अंत
(2) दिल्ली में गुहिलों का उत्कर्ष
(3) दिल्ली और अजमेर पर तुर्की शासन की स्थापना
(4) अग्निकुंड कुलों का पूर्ण विनाश
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. प्रारंभिक गुहिल राजवंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. बप्पा रावल ने 115 ग्रेन भार के स्वर्ण सिक्के जारी किए थे।
II. अल्लट ने आहड़ में द्वितीय राजधानी स्थापित की और प्रशासनिक व्यवस्था शुरु की।
III. जैत्र सिंह ने राजधानी को चित्तौड़ स्थानांतरित कर दिया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. कुंभलगढ़ दुर्ग से जुड़ा वास्तुशिल्प ग्रंथ "मंडन", एक ऐसे वास्तुकार द्वारा लिखा गया था जिसने किसके अधीन सेवा की थी?
(1) राणा सांगा
(2) राणा प्रताप
(3) राणा कुंभा
(4) राणा राज सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. हसन खान मेवाती और महमूद लोदी ने बाबर के विरुद्ध किस राजपूत शासक का सहयोग किया था?
(1) राणा कुंभा
(2) राणा सांगा
(3) राव मालदेव
(4) महाराणा प्रताप
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. मारवाड़ के राठौड़ों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राव चूंडा ने दहेज में प्राप्त करने के बाद मंडोर को अपनी राजधानी बनाया।
II. राव जोधा ने मारवाड़ की स्वतंत्रता सुरक्षित करने के लिए महाराणा कुंभा को हराया था।
III. फारसी इतिहासकारों ने राव मालदेव को 'हशमत वाला राजा' कहा है।
IV. मोटा राजा उदय सिंह अकबर के साथ वैवाहिक गठबंधन करने वाले प्रथम राठौड़ शासक थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल II
(3) केवल III और IV
(4) केवल IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. आमेर के शासक के रूप में कार्यभार संभालने से पूर्व, मान सिंह प्रथम ने 1576 में किस प्रमुख युद्ध में मुगल सेनापति के रूप में कार्य किया था?
(1) हल्दीघाटी का युद्ध
(2) तुकारोई का युद्ध
(3) पानीपत का द्वितीय युद्ध
(4) दिवेर का युद्ध
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. चौरासी खंभों की छतरी बूंदी में स्थित है, इसका निर्माण किसके सम्मान में किया गया था?
(1) राव सुरजन हाड़ा
(2) देवा हाड़ा
(3) देवा, जो राव अनिरुद्ध सिंह की धाय माँ के पुत्र थे
(4) राव छत्रसाल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. आमेर के किस कच्छवाहा शासक ने शिवाजी को आगरा के मुगल दरबार में उपस्थित होने के समय सुरक्षा का वचन दिया था?
(1) राम सिंह प्रथम
(2) मिर्जा राजा जय सिंह
(3) बिशन सिंह
(4) सवाई जय सिंह द्वितीय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. राजपूत संरक्षण में लिखे गए ऐतिहासिक ग्रंथों पर विचार कीजिए। निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सुमेलित नहीं है?
(1) नैणसी री ख्यात - मुहणोत नैणसी
(2) पृथ्वीराज विजय - जयानक
(3) हम्मीर महाकाव्य - नयनचंद्र सूरी
(4) वंश भास्कर - दयालदास
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. राजपूत राजवंशों के अधीन मंदिर स्थापत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ओसियां के मंदिर मुख्य रूप से महा-मारु शैली में निर्मित हैं।
II. नागदा का सास-बहू मंदिर गुहिल राजवंश से संबंधित है।
III. पुष्कर के ब्रह्मा मंदिर का वर्तमान स्वरूप राणा कुंभा द्वारा निर्मित माना जाता है।
IV. उदयपुर का जगदीश मंदिर पंचायतन शैली का एक उदाहरण है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. 18वीं शताब्दी में राजपूत शक्तियों के संदर्भ में, "चौथ" शब्द का तात्पर्य है:
(1) मुगलों को दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क
(2) ब्रिटिश कंपनी द्वारा लिया जाने वाला भू-राजस्व
(3) मराठों द्वारा सुरक्षा के बदले वसूला जाने वाला कर
(4) मंदिरों के रखरखाव हेतु लिया जाने वाला कर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: उत्पत्ति के सिद्धांत
A. ब्राह्मण मूल का सिद्धांत
B. सूर्यवंशी/चंद्रवंशी उत्पत्ति का सिद्धांत
C. विदेशी मूल का सिद्धांत
D. अग्निकुंड सिद्धांत
सूची II: प्रमुख प्रस्तावक/ग्रंथ
i. जी.एच. ओझा
ii. मुहणोत नैणसी

iii. डी.आर. भंडारकर
iv. विलियम क्रुक
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. किस गुर्जर-प्रतिहार शासक ने "आदिवराह" और "प्रभास" की उपाधियाँ धारण की थीं?
(1) मिहिर भोज
(2) वत्सराज
(3) नागभट्ट द्वितीय
(4) रामभद्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. आबू के परमारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने गुजरात के चालुक्यों (सोलंकियों) के सामंतों के रूप में कार्य किया।
II. विमल शाह ने उनके काल में माउंट आबू में 'विमल वसही' मंदिर का निर्माण करवाया था।
III. उनकी राजधानी मुख्य रूप से चंद्रावती में स्थित थी।
IV. धारावर्ष इस शाखा के सबसे शक्तिशाली शासकों में से एक थे।
V. उन्होंने अंततः चालुक्यों को हटाकर स्वतंत्र रूप से शासन किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III और V
(4) I, II और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. वह चौहान शासक जिसने तोमरों को पराजित कर दिल्ली पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया था:
(1) अर्णोराज
(2) विग्रहराज चतुर्थ
(3) पृथ्वीराज प्रथम
(4) सोमेश्वर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. निम्नलिखित चाहमान (चौहान) शासकों पर विचार कीजिए:
I. अजयराज द्वितीय
II. पृथ्वीराज तृतीय
III. अर्णोराज
IV. विग्रहराज चतुर्थ
निम्नलिखित में से कौन सा उनके शासनकाल का सही कालानुक्रमिक अनुक्रम है?
(1) I, III, IV, II
(2) III, I, IV, II
(3) I, IV, III, II
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. "हिंदू सुरत्राण" की उपाधि ऐतिहासिक रूप से गुहिल राजवंश के किस शासक से जुड़ी है?
(1) बप्पा रावल
(2) महाराणा प्रताप
(3) राणा कुंभा
(4) राणा सांगा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: गुहिल शासक
A. रावल रतन सिंह
B. राणा हम्मीर
C. राणा लाखा
D. राणा मोकल
सूची II: प्रमुख घटनाएँ
i. जावर में चांदी की खानों की खोज
ii. तुगलकों से चित्तौड़ को पुनः जीतना
iii. चित्तौड़ का प्रथम साका (1303)
iv. चाचा और मेरा द्वारा हत्या
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. चांपानेर की संधि (1456 ईस्वी) मालवा और गुजरात के सुल्तानों के बीच किस राजपूत शासक को हराने हेतु की गई थी?
(1) राणा सांगा
(2) राव जोधा
(3) राणा कुंभा
(4) पृथ्वीराज चौहान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. राणा सांगा के लिए निर्णायक सिद्ध हुआ 'खानवा का युद्ध' किस वर्ष लड़ा गया था?
(1) 1526 ईस्वी
(2) 1527 ईस्वी
(3) 1528 ईस्वी
(4) 1530 ईस्वी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. बीकानेर का वह राठौड़ शासक, जिसने 1570 ईस्वी में नागौर दरबार में अकबर की अधीनता स्वीकार की थी:
(1) राव बीका
(2) राव लूणकरण

(3) राय सिंह
(4) राव कल्याणमल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. मान सिंह प्रथम को अकबर द्वारा कितनी श्रेणी (जात) का मनसबदार नियुक्त किया गया था, जो उस समय किसी राजपूत शासक हेतु सर्वोच्च था?
(1) 4000
(2) 5000
(3) 6000
(4) 7000
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. कोटा के हाड़ा शासक चित्रकला की कोटा शैली के विकास से जुड़े थे। कौन सा विषय इस शैली की प्रमुख विशेषता है?
(1) राधा-कृष्ण लीला
(2) दरबारी विलासिता
(3) शिकार के दृश्य
(4) मुगल सम्राटों के चित्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. जयपुर में प्रसिद्ध "हवा महल" का निर्माण 1799 ईस्वी में किस कच्छवाहा शासक द्वारा करवाया गया था?
(1) सवाई प्रताप सिंह
(2) सवाई माधो सिंह प्रथम
(3) सवाई जय सिंह द्वितीय
(4) सवाई राम सिंह द्वितीय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. चित्तौड़गढ़ में स्थित "कीर्ति स्तंभ" किसे समर्पित है?
(1) भगवान शिव
(2) भगवान विष्णु
(3) भगवान महावीर
(4) आदिनाथ (ऋषभनाथ)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. 1734 ईस्वी का 'हुरड़ा सम्मेलन' मुख्य रूप से किस उद्देश्य हेतु बुलाया गया था?
(1) मुगल साम्राज्य के विरुद्ध राजपूतों को एकजुट करने हेतु
(2) राजस्थान में मराठों के बढ़ते प्रभाव को रोकने हेतु
(3) राजपूत कुलों के सीमा विवादों को सुलझाने हेतु
(4) अंग्रेजों के साथ व्यापारिक संधि करने हेतु
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. "राजपुत्र" की अवधारणा एक विशिष्ट योद्धा समुदाय के रूप में मुख्य रूप से किस काल के दौरान स्थापित हुई?
(1) मौर्य काल
(2) गुप्त काल
(3) उत्तर-हर्षवर्धन काल (7वीं-12वीं शताब्दी)
(4) सल्तनत काल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): गुर्जर-प्रतिहारों ने महा-मारु शैली में भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया।
कारण (R): यह स्थापत्य कला विशेष रूप से अरब आक्रमणकारियों को प्रसन्न करने हेतु विकसित हुई थी।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. मध्य भारत में परमार राजवंश का मुख्य क्षेत्रीय आधार किस नाम से जाना जाता था?
(1) मालवा
(2) सपादलक्ष
(3) मेवाड़
(4) मारवाड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. शाकंभरी के चाहमानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वासुदेव को लगभग 551 ईस्वी में इस राजवंश का संस्थापक माना जाता है।
II. उन्होंने मूल रूप से गुर्जर-प्रतिहारों के सामंतों के रूप में शासन किया।
III. पुष्कर झील का निर्माण पूर्णतः अर्णोराज द्वारा करवाया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. पृथ्वीराज तृतीय चौहानों की किस विशिष्ट शाखा से संबंधित थे?
(1) नाडोल चौहान
(2) शाकंभरी (अजमेर) चौहान
(3) जालौर चौहान
(4) हाड़ा चौहान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. गुहिलों की 'सिसोदिया' शाखा, जिसने चित्तौड़ के पतन के बाद मेवाड़ की शक्ति को पुनर्जीवित किया, किसके द्वारा स्थापित की गई थी?
(1) राणा हम्मीर
(2) रावल रतन सिंह
(3) राणा लाखा

(4) राणा कुंभा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. राणा कुंभा के शासनकाल के दौरान रचित निम्नलिखित ग्रंथों पर विचार कीजिए:
I. एकलिंग माहात्म्य
II. रसिक प्रिया
III. संगीत रत्नाकर
IV. संगीत मीमांसा
उपरोक्त में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. राजपूत परंपरा में 'साका' के अंतर्गत कौन सी दो क्रियाएँ सम्मिलित हैं?
(1) कर भुगतान और दुर्ग समर्पण
(2) सामूहिक पलायन और छापामार युद्ध
(3) वैवाहिक संबंध और सैन्य गठबंधन
(4) स्त्रियों द्वारा जौहर और पुरुषों द्वारा केसरिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: राठौड़ शासक
A. राव जोधा
B. राव मालदेव
C. चंद्रसेन
D. मोटा राजा उदय सिंह
सूची II: प्रमुख घटनाएँ/उपाधियाँ
i. मुगल अधीनता स्वीकार की
ii. जोधपुर की स्थापना की
iii. पोकरण दुर्ग का निर्माण करवाया
iv. "मारवाड़ का भूला-बिसरा नायक" के रूप में विख्यात
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. काबुल का वह सैन्य अभियान, जिसमें मान सिंह प्रथम ने रोशनीयाओं को पराजित किया था, किस वर्ष हुआ था?
(1) 1576 ईस्वी
(2) 1581 ईस्वी
(3) 1585 ईस्वी
(4) 1592 ईस्वी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. बूंदी का प्रसिद्ध 'तारागढ़' दुर्ग किस हाड़ा शासक द्वारा बनवाया गया था?
(1) राव देवा
(2) राव बैरसाल
(3) राव सुरजन
(4) राव बर सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. किस कच्छवाहा शासक के काल में चित्रकला की 'जयपुर शैली' अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जिसमें मुगल और स्थानीय शैलियों का मिश्रण था?
(1) सवाई प्रताप सिंह
(2) सवाई जय सिंह द्वितीय
(3) सवाई राम सिंह द्वितीय
(4) मिर्जा राजा जय सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. निम्नलिखित में से कौन सा साहित्य राठौड़ राजवंश की वंशावली और उपलब्धियों का विस्तृत विवरण देता है?
(1) दयालदास री ख्यात
(2) हम्मीर रासो
(3) मुंडियाड़ री ख्यात
(4) पाथल और पीथल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. रणकपुर का जैन मंदिर, जो अपने 1444 नक्काशीदार स्तंभों हेतु प्रसिद्ध है, धरणा शाह द्वारा किसके शासनकाल में निर्मित करवाया गया था?
(1) राणा कुंभा
(2) राणा सांगा
(3) राणा प्रताप
(4) राणा राज सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. 18वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में राजपूत शक्तियों के राजनीतिक पतन का एक प्रमुख आंतरिक कारक क्या था?
(1) मुगलों द्वारा नकदी फसलों के कारण कृषि का विनाश
(2) अधिकांश शासकों द्वारा जैन धर्म अपनाना
(3) दुर्ग प्रणालियों की पूर्ण अनुपस्थिति
(4) राम सिंह और बखत सिंह के मध्य जोधपुर उत्तराधिकार का संघर्ष
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. राजपूत उत्पत्ति सिद्धांतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अग्निकुंड सिद्धांत के अनुसार चौहान, चालुक्य, परमार और प्रतिहार वे चार कुल हैं जिनका जन्म अग्निकुंड से हुआ।
II. जी.एच. ओझा के अनुसार राजपूत प्राचीन वैदिक क्षत्रियों के वंशज हैं।
III. अलेक्जेंडर कनिंघम ने राजपूतों को कुषाणों से संबंधित

बताया।

IV. विदेशी मूल का सिद्धांत पूर्णतः अग्नि और शस्त्रों की पूजा पर आधारित है।

V. कर्नल टॉड के सिद्धांत का कई भारतीय राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने विरोध किया।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. अरब यात्री अल-मसूदी ने किस गुर्जर-प्रतिहार शासक के दरबार की यात्रा की थी और उसके राज्य को "अल-जुज्र" कहा था?

(1) वत्सराज
(2) नागभट्ट द्वितीय
(3) महीपाल प्रथम
(4) राज्यपाल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. मालवा क्षेत्र पर शासन करने वाली निम्नलिखित शक्तियों पर विचार कीजिए:

I. परमार
II. मालवा के खिलजी सुल्तान
III. मुगल

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प इस क्षेत्र पर उनके नियंत्रण का सही कालानुक्रम दर्शाता है?

(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) III, I, II
(4) I, III, II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. किस चौहान शासक ने तोमरों को पराजित कर 'ढिल्लिका' (दिल्ली) नगर पर अधिकार कर लिया था?

(1) विग्रहराज चतुर्थ
(2) पृथ्वीराज द्वितीय
(3) सोमेश्वर
(4) पृथ्वीराज तृतीय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I: पृथ्वीराज तृतीय संबंधी ग्रंथ

A. पृथ्वीराज रासो
B. पृथ्वीराज विजय
C. हम्मीर महाकाव्य
D. सुरजन चरित्र

सूची II: लेखक

i. नयनचंद्र सूरी
ii. जयानक
iii. चंदबरदाई
iv. चंद्रशेखर

(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. राणा लाखा के शासनकाल के दौरान उदयपुर में पिछोला झील के निर्माण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) इसका निर्माण स्वयं राणा लाखा ने करवाया था
(2) इसका निर्माण एक बंजारे द्वारा करवाया गया था
(3) इसका निर्माण महाराणा उदय सिंह ने करवाया था
(4) इसका निर्माण राणा मोकल ने करवाया था
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. राणा कुंभा रचित ग्रंथ "संगीत राज" कितने भागों (रत्नकोषों) में विभाजित है?

(1) तीन
(2) चार
(3) पाँच
(4) सात
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): खानवा के युद्ध में राणा सांगा की पराजय ने उत्तर भारत में शक्ति का संतुलन मुगलों के पक्ष में कर दिया।

कारण (R): इस युद्ध ने राजपूतों की पारंपरिक युद्ध पद्धति की तुलना में बाबर के तोपखाने और 'तुलुगमा' पद्धति की तकनीकी श्रेष्ठता सिद्ध कर दी।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. "दल थम्मन" (या गज सिंह को दी गई उपाधि) किस मुगल सम्राट द्वारा मारवाड़ के राठौड़ शासक को प्रदान की गई थी?

(1) अकबर
(2) शाहजहाँ
(3) औरंगजेब
(4) जहाँगीर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. निम्नलिखित में से कौन मान सिंह प्रथम के दरबारी कवि थे जिन्होंने "मान चरित्र" की रचना की थी?

(1) पुंडरीक विट्ठल
(2) जगन्नाथ
(3) मुरारीदास
(4) अमृत राय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

86. बूंदी का वह हाड़ा शासक, जो धर्मत के युद्ध (1658 ईस्वी) में औरंगजेब के विरुद्ध वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ:
(1) राव रतन सिंह
(2) राव छत्रसाल
(3) राव भाओ सिंह
(4) राव अनिरुद्ध सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. प्रसिद्ध कवि बिहारी, जिन्होंने "बिहारी सतसई" की रचना की, को किस कच्छवाहा शासक का संरक्षण प्राप्त था?
(1) मान सिंह प्रथम
(2) सवाई जय सिंह द्वितीय
(3) सवाई ईश्वरी सिंह
(4) मिर्जा राजा जय सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. राजस्थान की 'फड़' चित्रकला परंपरा मुख्य रुप से किस चित्रकला शैली से संबंधित है?
(1) मेवाड़ शैली
(2) मारवाड़ शैली
(3) हाड़ौती शैली
(4) ढूँढाड़ शैली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. आभानेरी के 'हर्षत माता मंदिर' की स्थापत्य शैली किस राजवंश के प्रभाव को दर्शाती है?
(1) गुहिल
(2) परमार
(3) गुर्जर-प्रतिहार
(4) चौहान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. सहायक संधि प्रणाली, जिसने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रति राजपूत राज्यों की अधीनता को औपचारिक बनाया, किसके कार्यकाल में व्यापक रुप से क्रियान्वित की गई?
(1) लॉर्ड हेस्टिंग्स
(2) लॉर्ड वेलेज़ली
(3) लॉर्ड कॉर्नवालिस
(4) लॉर्ड डलहौजी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

91. "नैणसी री ख्यात" में गुहिल राजवंश की कितनी शाखाओं का उल्लेख मिलता है?
(1) 24
(2) 36
(3) 12
(4) 18
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नागभट्ट प्रथम ने भीनमाल को अपनी राजधानी बनाया।
II. वत्सराज को प्रतिहार साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
III. राजशेखर वत्सराज के दरबारी कवि थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. कौन सा परमार शासक अपने विद्वत्तापूर्ण योगदान हेतु प्रसिद्ध है और जिसे चिकित्सा, स्थापत्य तथा व्याकरण पर ग्रंथ लिखने का श्रेय दिया जाता है?
(1) वाक्पति मुंज
(2) सिंधुराज
(3) राजा भोज
(4) उदयादित्य
(5) प्रश्न अनुत्तरित

94. चाहमानों से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. अजयमेरु (अजमेर) की स्थापना।
II. अढाई दिन का झोंपड़ा (संस्कृत पाठशाला) का निर्माण।
III. महोबा का युद्ध।
IV. तराइन का प्रथम युद्ध।
निम्नलिखित में से कौन सा इन घटनाओं का सही कालानुक्रम दर्शाता है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, II, IV, III
(4) II, I, IV, III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. पृथ्वीराज तृतीय का वह घोड़ा जो लोककथाओं में अपनी विशेष भूमिका हेतु प्रसिद्ध है, उसका नाम था:
(1) नट्यारंभा
(2) चेतक
(3) हीरा
(4) पवन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: मेवाड़ के गुहिल शासक

A. जैत्र सिंह
B. राणा हम्मीर
C. राणा कुंभा
D. महाराणा प्रताप

सूची II: प्रमुख युद्ध/घटनाएँ
i. सिंगोली का युद्ध
ii. भूताला का युद्ध
iii. हल्दीघाटी का युद्ध
iv. सारंगपुर का युद्ध

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. वास्तुकार मंडन द्वारा अभिकल्पित 'कुंभलगढ़ दुर्ग' राजस्थान के किस वर्तमान जिले में स्थित है?
(1) उदयपुर
(2) राजसमंद
(3) चित्तौड़गढ़
(4) भीलवाड़ा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

98. राणा सांगा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्हें "हिंदूपति" की उपाधि से विभूषित किया गया था।
II. युद्धों में लगने वाले घावों के कारण उन्होंने एक आँख और एक हाथ खो दिया था तथा एक पैर से दिव्यांग हो गए थे।
III. खानवा के युद्ध से पूर्व उनके नेतृत्व में राजपूत संघ संगठित हुआ था।
IV. खानवा के युद्ध में रायसेन के सलहदी तंवर ने उनके साथ विश्वासघात किया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. प्रसिद्ध भक्त कवयित्री मीराबाई का विवाह किस राजपरिवार में हुआ था?
(1) मारवाड़ के राठौड़
(2) आमेर के कच्छवाहा
(3) मेवाड़ के गुहिल (सिसोदिया)
(4) बूंदी के हाड़ा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. मुगल सम्राट औरंगजेब के विरुद्ध मारवाड़ की रक्षा करने और अजीत सिंह को सिंहासन दिलाने में किस राठौड़ वीर की मुख्य भूमिका रही?
(1) जसवंत सिंह
(2) चंद्रसेन
(3) मोटा राजा उदय सिंह
(4) दुर्गादास राठौड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

101. मान सिंह प्रथम ने अपने मुगल सेवाकाल के दौरान किस स्थान पर प्रसिद्ध 'गोविंद देव जी' मंदिर का निर्माण करवाया था?
(1) आमेर
(2) वाराणसी
(3) वृंदावन
(4) मथुरा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

102. हाड़ौती क्षेत्र, जिस पर हाड़ा चौहानों का शासन रहा, में मुख्य रूप से कौन से जिले सम्मिलित हैं?
(1) उदयपुर, राजसमंद, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़
(2) कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़
(3) जोधपुर, पाली, नागौर, बाड़मेर
(4) जयपुर, दौसा, टोंक, अलवर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

103. किस कच्छवाहा शासक ने अश्वमेध यज्ञ का आयोजन किया था, जिसे किसी हिंदू राजा द्वारा किया गया अंतिम ऐसा अनुष्ठान माना जाता है?
(1) मिर्जा राजा जय सिंह
(2) सवाई माधो सिंह
(3) सवाई ईश्वरी सिंह
(4) सवाई जय सिंह द्वितीय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

104. निम्नलिखित ऐतिहासिक ग्रंथों पर विचार कीजिए:
I. पृथ्वीराज रासो
II. पद्मावत
III. नैणसी री ख्यात
IV. वंश भास्कर

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प उनकी रचना का सही कालानुक्रम दर्शाता है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

105. राजस्थान में प्रचलित 'छतरी' स्थापत्य कला किन शैलियों का समन्वित रूप है?
(1) प्राचीन बौद्ध स्तूप और इस्लामी गुंबद
(2) द्रविड़ गोपुरम और मारु-गुर्जर शिखर
(3) राजपूत मंडप स्थापत्य और मुगल गुंबद
(4) फारसी मीनार और जैन मंडप
(5) प्रश्न अनुत्तरित

106. प्रमुख राजपूत राजवंशों के पतन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विकेंद्रीकृत कुल संरचना ने एक एकीकृत राजपूत साम्राज्य के गठन में बाधा उत्पन्न की।
II. निरंतर युद्धों के कारण राज्यों के आर्थिक संसाधन समाप्त हो गए।
III. आंतरिक उत्तराधिकार विवादों का बाहरी शक्तियों ने लाभ उठाया।
IV. दुर्गों पर अत्यधिक निर्भरता मुगल तोपखाने के विरुद्ध निष्प्रभावी रही।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) I, II, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

107. कौन सा राजपूत कुल भगवान राम के भ्राता लक्ष्मण से अपनी उत्पत्ति का दावा करता है?
(1) गुहिल
(2) राठौड़
(3) चौहान
(4) गुर्जर-प्रतिहार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

108. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:
सूची I: राजपूत राजवंश
A. गुहिल
B. चौहान
C. राठौड़
D. कच्छवाहा
सूची II: प्राचीन राजधानियाँ
i. शाकंभरी
ii. नागदा
iii. दौसा
iv. मंडोर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

109. वह शिलालेख जो चौहानों को "वत्स गोत्रीय ब्राह्मण" बताता है:
(1) चीरवा का शिलालेख
(2) कुंभलगढ़ का शिलालेख
(3) बिजोलिया का शिलालेख
(4) श्रृंगी ऋषि का शिलालेख
(5) प्रश्न अनुत्तरित

110. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पृथ्वीराज तृतीय तराइन के प्रथम युद्ध की विजय का पूर्ण लाभ नहीं उठा सके।
कारण (R): उन्होंने पीछे हटती हुई मुहम्मद गोरी की सेना का पीछा करने के स्थान पर उन्हें जाने दिया।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

111. वह गुहिल शासक जिसने गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन अहमद शाह के आक्रमण का प्रतिरोध किया और जो एक महान निर्माता के रूप में विख्यात था:
(1) राणा कुंभा
(2) राणा मोकल
(3) राणा लाखा
(4) राणा सांगा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

112. निम्नलिखित ग्रंथों पर विचार कीजिए:
I. कामराज रतिसार
II. सुधा प्रबंध
III. राज रत्नाकर
उपरोक्त में से कौन सा/से ग्रंथ राणा कुंभा द्वारा रचित माना जाता है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

113. राणा सांगा के शासनकाल में कौन सी नदी मेवाड़ साम्राज्य की पूर्वी सीमा निर्धारित करती थी?
(1) नर्मदा
(2) चंबल
(3) यमुना
(4) सिंध
(5) प्रश्न अनुत्तरित

114. मारवाड़ के राव चंद्रसेन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने 1570 ईस्वी के नागौर दरबार में भाग लिया था किंतु अकबर की अधीनता अस्वीकार कर दी।
II. उन्हें मुगल प्रतिरोध में महाराणा प्रताप का अग्रगामी माना जाता है।
III. उन्होंने सफलतापूर्वक जोधपुर पर पुनः अधिकार किया और अंत तक वहाँ शासन किया।

IV. उन्हें अपने भाइयों, राम सिंह और उदय सिंह के विरोध का सामना करना पड़ा।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

115. मान सिंह प्रथम आमेर में किस विशिष्ट कला रुप के संरक्षण हेतु जाने जाते हैं, जो मूलतः लाहौर के मार्ग से फारस से भारत आई थी?

(1) थेवा कला
(2) उस्ता कला
(3) मीनाकारी और ब्लू पॉटरी
(4) पिछवाई चित्रण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

116. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची I: बूंदी/कोटा के शासक

A. राव सुरजन हाड़ा
B. माधो सिंह
C. उम्मेद सिंह
D. जालिम सिंह (दीवान)

सूची II: प्रमुख घटनाएँ/योगदान

i. कोटा के प्रथम स्वतंत्र शासक
ii. अंग्रेजों के साथ संधि पर हस्ताक्षर किए
iii. रणथंभौर दुर्ग अकबर को सौंपा
iv. बूंदी में चित्रशाला का निर्माण करवाया

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

117. किस कच्छवाहा शासक ने 1750 ईस्वी में मराठा दबाव और आंतरिक गृहयुद्ध के कारण आत्महत्या कर ली थी?

(1) सवाई माधो सिंह प्रथम
(2) सवाई प्रताप सिंह
(3) सवाई ईश्वरी सिंह
(4) सवाई जगत सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

118. राजपूत शासकों के सांस्कृतिक संरक्षण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. महाराणा जगत सिंह प्रथम ने उदयपुर में 'चितेरों की ओवरी' की स्थापना की।
II. जयपुर के सवाई प्रताप सिंह ने विद्वानों के समूह 'गुणिजन खाना' को संरक्षण दिया।
III. किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह 'बनी-ठणी' चित्रकला के संरक्षक थे।
IV. डिंगल साहित्य चारण काव्य का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे पश्चिमी राजस्थान में संरक्षण मिला।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) I, II, III और IV
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

119. झालरापाटन का 'सूर्य मंदिर' अपनी स्थापत्य शैली के तत्वों हेतु किस क्षेत्रीय शैली का ऋणी है?

(1) कलिंग शैली
(2) द्रविड़ शैली
(3) भारत-इस्लामी शैली
(4) मारु-गुर्जर शैली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

120. किस घटना ने स्वतंत्र राजपूत राज्यों की राजनीतिक शक्ति के क्षय को चिह्नित किया, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने अंग्रेजों के साथ अधीनस्थ संधियाँ कीं?

(1) मेड़ता के युद्ध में मराठों द्वारा राजपूत संघ की पराजय
(2) 1857 के विद्रोह की विफलता
(3) औरंगजेब की मृत्यु के उपरांत निरंतर उत्तराधिकार संघर्ष
(4) 1739 में नादिर शाह का आक्रमण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) पृथ्वीराज रासो
'पृथ्वीराज रासो' चंदबरदाई द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथ है। इसमें राजपूतों की उत्पत्ति के संदर्भ में आबू पर्वत पर मुनि वशिष्ठ द्वारा किए गए यज्ञ का वर्णन मिलता है। इस सिद्धांत के अनुसार, यज्ञ की अग्नि से चार राजपूत कुलों— प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहान की उत्पत्ति हुई थी। यह सिद्धांत राजपूतों की पवित्रता और वीरता को सिद्ध करने हेतु प्रतिपादित किया गया था।

2. (1) नागभट्ट प्रथम
नागभट्ट प्रथम गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के वास्तविक संस्थापक माने जाते हैं। उन्होंने 8वीं शताब्दी के दौरान भारत पर होने वाले अरबों के आक्रमणों का डटकर सामना किया और उन्हें सिंध से आगे बढ़ने से रोका। ग्वालियर प्रशस्ति में उन्हें 'नारायण का अवतार' और 'म्लेच्छों का नाशक' कहा गया है। उनकी सैन्य कुशलता ने पश्चिमी भारत में प्रतिहार सत्ता को एक सुदृढ़ आधार प्रदान किया और साम्राज्य विस्तार किया।

3. (1) I, II, III, IV
मालवा के परमार राजवंश के शासकों का ऐतिहासिक क्रम इनके शासन काल के आधार पर निर्धारित है। इस वंश की स्थापना 9वीं शताब्दी के आरंभ में उपेंद्र द्वारा की गई थी। इसके पश्चात वाक्पति मुंज ने साम्राज्य का विस्तार किया और विद्या को संरक्षण दिया। मुंज के बाद सिंधुराज ने शासन संभाला और उनके उत्तराधिकारी राजा भोज हुए। राजा भोज को परमार वंश का सबसे प्रतापी और विद्वान शासक माना जाता है।

4. (4) अजयराज द्वितीय
अजयराज द्वितीय शाकंभरी के चौहान वंश के एक अत्यंत प्रतापी शासक थे। उन्होंने 1113 ईस्वी के आसपास 'अजयमेरु' नामक नगर बसाया जिसे वर्तमान में अजमेर के नाम से जाना जाता है। सुरक्षा और सामरिक दृष्टिकोण से उन्होंने अपनी राजधानी को शाकंभरी से हटाकर इस नए दुर्ग में स्थानांतरित किया था। उन्होंने अपने नाम के चांदी और तांबे के सिक्के भी जारी किए जिन्हें 'अजयप्रिय द्रम्म' कहा जाता था।

5. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
पृथ्वीराज तृतीय के शासनकाल में हुए विभिन्न संघर्षों का क्षेत्रीय राजनीति पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने 1182 ईस्वी में महोबा के चंदेल शासक परमर्दि देव को पराजित किया था। 1191 ईस्वी में तराइन के प्रथम युद्ध में उन्होंने मुहम्मद गोरी को बुरी तरह हराया। हालांकि, 1192 ईस्वी के द्वितीय युद्ध में गोरी विजयी रहा। इसके अतिरिक्त, उन्होंने पड़ोसी भदानक जनजाति के विद्रोह का भी सफलतापूर्वक दमन किया और सीमा सुरक्षित की।

6. (2) मान मोरी
मेवाड़ के गुहिल राजवंश के प्रतापी शासक बप्पा रावल ने 8वीं शताब्दी में चित्तौड़गढ़ पर अधिकार किया था। उन्होंने मौर्य वंश के अंतिम शासक मान मोरी को युद्ध में पराजित कर इस अभेद्य दुर्ग को अपने नियंत्रण में लिया। बप्पा रावल ने ही मेवाड़ में एकलिंग जी के मंदिर का निर्माण करवाया और हिंदू धर्म की रक्षा हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहीं से चित्तौड़ मेवाड़ की राजनीतिक शक्ति का प्रमुख केंद्र बना।

7. (4) राजवल्लभ
राणा कुंभा एक महान विजेता के साथ-साथ साहित्य और कला के महान संरक्षक थे। उन्होंने संगीतराज, संगीत मीमांसा और सूड प्रबंध जैसे प्रसिद्ध ग्रंथों की रचना की थी। साथ ही उन्होंने जयदेव की गीत गोविंद पर रसिक प्रिया नामक टीका भी लिखी। जबकि राजवल्लभ नामक ग्रंथ उनके प्रसिद्ध वास्तुकार मंडन द्वारा लिखा गया था। मंडन ने स्थापत्य कला पर कई महत्वपूर्ण पुस्तकें लिखी थीं, जो कुंभा के काल की हैं।

8. (1) केवल I और II
मेवाड़ के राणा सांगा ने अपने सैन्य अभियानों के माध्यम से उत्तरी भारत में वर्चस्व स्थापित किया था। उन्होंने 1517 ईस्वी में खातोली के युद्ध में दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी को पराजित किया। इसके बाद 1519 ईस्वी में गागरोन के युद्ध में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय को बंदी बनाया। बयाना के युद्ध में भी सांगा ने बाबर की सेना को हराया था, किंतु खानवा के युद्ध में उनकी पराजय हुई थी।

9. (2) 1459 ईस्वी
मारवाड़ के राठौड़ शासक राव जोधा ने अपनी सुरक्षा और प्रशासनिक सुविधा हेतु 15वीं शताब्दी में एक नई राजधानी की योजना बनाई थी। उन्होंने 12 मई, 1459 ईस्वी को चिड़ियाटूँक पहाड़ी पर मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव रखी। इसी के साथ उन्होंने जोधपुर नगर को बसाया जो मारवाड़ राज्य का प्रमुख सांस्कृतिक और राजनीतिक केंद्र बना। यह दुर्ग अपनी विशालता और सुदृढ़ बनावट के कारण राजस्थान के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है।

10. (1) बंगाल, बिहार और काबुल
आमेर के मान सिंह प्रथम मुगल सम्राट अकबर के सबसे विश्वसनीय और प्रभावशाली सेनापतियों में से एक थे। अकबर ने उनकी सैन्य प्रतिभा और प्रशासनिक क्षमता को देखते हुए उन्हें विभिन्न महत्वपूर्ण प्रांतों का सूबेदार नियुक्त किया था। उन्होंने काबुल में विद्रोहियों का दमन किया, बिहार में शांति व्यवस्था स्थापित की और बंगाल में मुगल साम्राज्य का विस्तार किया। इन क्षेत्रों में उनके सफल अभियानों ने मुगल सत्ता को अत्यधिक मजबूती प्रदान की थी।

11. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1569 ईस्वी में अकबर ने रणथंभौर दुर्ग पर अधिकार करने हेतु घेराबंदी की थी। उस समय दुर्ग की कमान बूंदी के शासक सुरजन हाड़ा के हाथों में थी। मुगलों के भीषण सैन्य दबाव और आमेर के भगवंत दास तथा मान सिंह के कूटनीतिक मध्यस्थता के कारण सुरजन हाड़ा ने अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली। इस समझौते के परिणामस्वरूप हाड़ाओं को मुगलों के साथ सम्मानजनक शर्तों पर सेवा करने का अवसर प्राप्त हुआ था।

12. (2) सवाई जय सिंह द्वितीय
सवाई जय सिंह द्वितीय को जयपुर नगर की स्थापना और खगोल विज्ञान में उनके असाधारण योगदान के लिए जाना जाता है। उन्होंने 18 नवंबर, 1727 ईस्वी को वास्तुशिल्प के सिद्धांतों के आधार पर जयपुर शहर की नींव रखी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सटीक काल गणना और ग्रहों की स्थिति का अध्ययन करने हेतु जयपुर, दिल्ली, उज्जैन, मथुरा और वाराणसी में पाँच भव्य वेधशालाओं का निर्माण करवाया। इन वेधशालाओं को सामूहिक रूप से जंतर-मंतर कहा जाता है।

13. (3) गुर्जर-प्रतिहार
प्रसिद्ध विद्वान और कवि राजशेखर गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के दरबार की शोभा बढ़ाते थे। वे विशेष रूप से प्रतिहार शासक महेंद्रपाल प्रथम और उनके पुत्र महीपाल प्रथम के गुरु तथा दरबारी कवि थे। उन्होंने 'काव्य मीमांसा', 'कर्पूरमंजरी' और 'विद्धशालभंजिका' जैसे श्रेष्ठ ग्रंथों की रचना की थी। उनके साहित्य से तत्कालीन समाज, राजनीति और भूगोल के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। वे संस्कृत और प्राकृत भाषाओं के प्रकांड विद्वान थे।

14. (4) गुजरात के सोलंकी
माउंट आबू के देलवाड़ा स्थित जैन मंदिर अपनी सूक्ष्म नक्काशी और श्वेत संगमरमर के उत्कृष्ट कार्यों के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। इन मंदिरों का निर्माण मुख्य रूप से गुजरात के चालुक्य या सोलंकी राजवंश के मंत्रियों और सामंतों के संरक्षण में हुआ था। प्रथम मंदिर 'विमल वसही' का निर्माण 1031 ईस्वी में विमल शाह द्वारा कराया गया। इसके बाद 1230 ईस्वी में वस्तुपाल और तेजपाल नामक दो भाइयों ने लूण वसही मंदिर का निर्माण करवाया।

15. (1) एक केंद्रीकृत स्थायी सेना का अभाव और निरंतर आंतरिक संघर्ष।
12वीं और 13वीं शताब्दी के दौरान भारत में राजपूत शक्तियों के पतन के पीछे कई राजनीतिक और सैन्य कारण उत्तरदायी थे। राजपूत शासकों के मध्य आपसी प्रतिद्वंद्विता और निरंतर आंतरिक संघर्षों ने उनकी सामूहिक शक्ति को क्षीण कर दिया था। इसके अतिरिक्त, एक केंद्रीकृत स्थायी सेना के स्थान पर सामंती सेना पर निर्भरता एक बड़ी कमजोरी सिद्ध हुई। तुर्की आक्रमणकारियों की आधुनिक युद्ध तकनीक और गतिशीलता के सामने राजपूतों की पारंपरिक युद्ध प्रणालियाँ प्रभावी नहीं रही थीं।

16. (3) केवल IV
राजपूतों की उत्पत्ति के संबंध में इतिहासकारों के भिन्न मत हैं। कर्नल जेम्स टॉड ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक में राजपूतों को विदेशी मूल का बताया है और उन्हें शक तथा सिथियन जातियों से जोड़ा है। उन्होंने इस सिद्धांत को खारिज नहीं किया था, बल्कि इसका समर्थन किया था। इसके विपरीत, जी.एच. ओझा उन्हें प्राचीन क्षत्रियों का वंशज मानते हैं। डी.आर. भंडारकर ने उनके गुर्जर मूल और ब्राह्मण मूल से संबंधित होने का तर्क प्रस्तुत किया है।

17. (2) राष्ट्रकूट
आठवीं से दसवीं शताब्दी के मध्य कन्नौज पर नियंत्रण स्थापित करने हेतु भारत की तीन प्रमुख शक्तियों के बीच दीर्घकालिक संघर्ष हुआ। इस 'त्रिपक्षीय संघर्ष' में पश्चिम और उत्तर भारत के गुर्जर-प्रतिहार, बंगाल के पाल और दक्षिण भारत के राष्ट्रकूट शामिल थे। यह संघर्ष लगभग दो सौ वर्षों तक चला था। अंततः गुर्जर-प्रतिहार इस संघर्ष में विजयी रहे और उन्होंने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाकर उत्तर भारत में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त की।

18. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
मालवा के परमार शासकों ने साहित्य और स्थापत्य में अतुलनीय योगदान दिया। वाक्पति मुंज को चालुक्य राजा तैलप द्वितीय ने युद्ध में पराजित और बंदी बनाया था। उनके उत्तराधिकारी सिंधुराज ने 'नवसाहसांक' की उपाधि धारण की थी। राजा भोज एक बहुमुखी प्रतिभा के धनी शासक थे जिन्होंने 'समरांगण सूत्रधार' नामक ग्रंथ की रचना की। वहीं, उदयादित्य ने विदिशा के निकट उदयेश्वर मंदिर का निर्माण करवाया, जो भूमिज शैली के मंदिरों का एक श्रेष्ठ और सुंदर उदाहरण माना जाता है।

19. (1) 1170 ईस्वी
बिजोलिया का शिलालेख राजस्थान के भीलवाड़ा जिले में स्थित है, जो 1170 ईस्वी का माना जाता है। यह शिलालेख चौहान राजवंश के इतिहास और उनकी वंशावली के अध्ययन हेतु एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत है। इसमें चौहानों को 'वत्स गोत्रीय ब्राह्मण' बताया गया है और उनके प्रारंभिक क्षेत्रों के नाम जैसे 'सपादलक्ष' का उल्लेख मिलता है। जैन श्रावक लोलाक द्वारा उत्कीर्ण कराए गए इस लेख से तत्कालीन भौगोलिक और प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी मिलती है।

20. (4) आल्हा और उदल
1182 ईस्वी में पृथ्वीराज तृतीय ने महोबा के चंदेल शासक परमर्दि देव पर आक्रमण किया था। इस युद्ध के दौरान चंदेल सेना के दो वीर सेनापति आल्हा और उदल ने अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु अद्भुत साहस का परिचय दिया। यद्यपि इस युद्ध में चौहानों की विजय हुई, किंतु आल्हा और उदल लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी वीरता आज भी बुंदेलखंड की लोककथाओं और गीतों में 'आल्हा-खंड' के माध्यम से बड़े गर्व के साथ गाई जाती है।

21. (1) I, II, III और IV
मेवाड़ के गुहिल राजवंश की स्थापना छठी शताब्दी में गुहादत्त ने की थी। इस वंश के प्रतापी शासक बप्पा रावल का वास्तविक नाम कालभोज था। 13वीं शताब्दी में जैत्र सिंह ने इल्तुतमिश के आक्रमण का सामना कर मेवाड़ की प्रतिष्ठा बढ़ाई। रावल रतन सिंह इस शाखा के अंतिम शासक थे, जिनके समय 1303 ईस्वी में चित्तौड़ का प्रथम साका हुआ। ऐतिहासिक रूप से गुहिल स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं न कि चंद्रवंशी, जो इनकी वंशावली की विशिष्ट पहचान है।

22. (2) मालवा के महमूद खिलजी
चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित भव्य विजय स्तंभ का निर्माण महाराणा कुंभा ने करवाया था। उन्होंने 1437 ईस्वी में सारंगपुर के युद्ध में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को बुरी तरह पराजित किया था। इसी ऐतिहासिक विजय की स्मृति को चिरस्थायी बनाने हेतु उन्होंने इस नौ मंजिला स्तंभ का निर्माण करवाया। इसे 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष' भी कहा जाता है। यह स्तंभ भगवान विष्णु को समर्पित है और मेवाड़ की सैन्य शक्ति तथा स्थापत्य वैभव का प्रतीक माना जाता है।

23. (1) I, II, III, IV
राणा सांगा के सैन्य अभियानों का क्रम उनके साम्राज्य विस्तार की कहानी कहता है। सबसे पहले 1517 ईस्वी में उन्होंने खातोली के युद्ध में इब्राहिम लोदी को हराया। इसके पश्चात 1519 ईस्वी में गागरोन के युद्ध में मालवा की सेना पर विजय प्राप्त की। 1527 ईस्वी के आरंभ में बयाना के युद्ध में उन्होंने मुगल सेना को पीछे हटने पर मजबूर किया। अंततः मार्च 1527 में खानवा का ऐतिहासिक युद्ध लड़ा गया, जिसने भारत के राजनीतिक भविष्य को पूरी तरह बदल दिया।

24. (1) सम्मेल का युद्ध (गिरि-सुमेल)
1544 ईस्वी में मारवाड़ के राव मालदेव और दिल्ली के सुल्तान शेरशाह सूरी के मध्य गिरि-सुमेल का भीषण युद्ध हुआ था। इस युद्ध में मालदेव के सेनापतियों, जैता और कूंपा ने अदम्य साहस का परिचय दिया और सूरी की विशाल सेना को संकट में डाल दिया था। हालांकि, कूटनीति और छल के कारण शेरशाह अंततः विजयी हुआ। विजय के पश्चात शेरशाह ने कहा था कि "मैंने एक मुट्ठी भर बाजरे के लिए हिंदुस्तान की सत्ता खो दी होती।"

25. (3) बंगाल (जसौर)
आमेर के राजा मान सिंह प्रथम अपनी सैन्य विजयों के दौरान कई सांस्कृतिक वस्तुएं राजस्थान लेकर आए थे। 16वीं शताब्दी के अंत में बंगाल अभियान के दौरान उन्होंने जैसोर के राजा प्रतापादित्य को पराजित किया था। वहाँ से वे माता शिला देवी की अष्टभुजी प्रतिमा को आमेर लाए और उसे अपने राजप्रासाद में प्रतिष्ठित किया। आज भी शिला देवी आमेर के कच्छवाहा राजवंश की कुलदेवी के रूप में पूजी जाती हैं और यह मंदिर भक्तों की श्रद्धा का केंद्र है।

26. (1) शाहजहाँ
ऐतिहासिक रुप से कोटा का क्षेत्र बूंदी राज्य का ही एक भाग था। 1631 ईस्वी में मुगल सम्राट शाहजहाँ ने प्रशासनिक सुविधा और हाड़ा शासकों के मध्य संतुलन बनाए रखने हेतु एक आदेश जारी किया। इस आदेश के द्वारा कोटा को बूंदी से अलग कर एक स्वतंत्र राज्य का दर्जा दिया गया। शाहजहाँ ने राव रतन सिंह के पुत्र माधो सिंह को कोटा का प्रथम स्वतंत्र शासक नियुक्त किया। उनकी बहादुरी और मुगल सेवा के बदले में उन्हें यह सम्मान प्रदान किया गया था।

27. (4) सवाई जगत सिंह द्वितीय
19वीं शताब्दी के आरंभ में मराठों और पिंडारियों के लूटपाट से राजस्थान के राज्य अत्यंत त्रस्त थे। आमेर (जयपुर) के शासक सवाई जगत सिंह द्वितीय ने अपने राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करने हेतु अंग्रेजों के साथ हाथ मिलाया। उन्होंने 2 अप्रैल, 1818 ईस्वी को ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ 'अधीनस्थ गठबंधन' की संधि पर हस्ताक्षर किए। इस संधि के माध्यम से जयपुर राज्य को बाहरी शत्रुओं से सुरक्षा प्राप्त हुई, किंतु इसके बदले में उन्हें अपनी संप्रभुता का कुछ हिस्सा खोना पड़ा।

28. (2) पद्मनाभ
'कान्हड़दे प्रबंध' मध्यकालीन राजस्थान के इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ है, जिसकी रचना कवि पद्मनाभ ने की थी। इस ग्रंथ में जालौर के चौहान शासक कान्हड़दे और उनके पुत्र वीरमदेव के शौर्य का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसमें 1311 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा जालौर पर किए गए आक्रमण और राजपूतों के कड़े प्रतिरोध का जीवंत चित्रण किया गया है। यह रचना ऐतिहासिक घटनाओं के साथ-साथ तत्कालीन सामाजिक और वीर रस की परंपरा को भी बखूबी दर्शाती है।

29. (3) गुजरात के सोलंकी
बाड़मेर जिले में स्थित किराडू के मंदिर अपनी अद्वितीय स्थापत्य कला के लिए 'राजस्थान के खजुराहो' कहे जाते हैं। यहाँ का प्रमुख सोमेश्वर मंदिर 11वीं-12वीं शताब्दी में निर्मित किया गया था। यह मंदिर मूल रूप से मारु-गुर्जर स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करता है, जो गुजरात के सोलंकी राजवंश के शासनकाल में फली-फूली थी। इस मंदिर की बाहरी दीवारों पर की गई सूक्ष्म नक्काशी और मूर्तियाँ तत्कालीन शिल्पकारों की दक्षता को दर्शाती हैं। यह मंदिर हिंदू देवों और पौराणिक कथाओं को समर्पित है।

30. (4) वैवाहिक और सैन्य गठबंधनों के माध्यम से मुगल अधीनता स्वीकार करना
16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान स्वतंत्र राजपूत राज्यों के प्रभुत्व में कमी आने का मुख्य कारण मुगलों की विस्तारवादी नीति थी। सम्राट अकबर ने वैवाहिक संबंधों और सैन्य गठबंधनों के माध्यम से अधिकांश राजपूत राज्यों को मुगल अधीनता स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया। इसके परिणामस्वरूप, राजपूत शासक अब स्वतंत्र संप्रभु राजाओं के स्थान पर मुगल साम्राज्य के महत्वपूर्ण मनसबदार और सेनापति बन गए। यद्यपि उन्हें आंतरिक स्वायत्तता प्राप्त थी, किंतु उनकी सर्वोच्च

राजनीतिक शक्ति अब मुगल सम्राट के अधीन केंद्रित हो गई थी।

31. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजपूतों की उत्पत्ति के विषय में विभिन्न विद्वानों ने अपने शोध के आधार पर अलग-अलग सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। सी.वी. वैद्य उन्हें प्राचीन वैदिक आर्यों की संतान मानते हैं। कर्नल जेम्स टॉड ने उनके रीति-रिवाजों की तुलना सिथियन जातियों से करते हुए उन्हें विदेशी मूल का बताया है। डी.आर. भंडारकर ने उनके गुर्जर और ब्राह्मण मूल होने के साक्ष्य प्रस्तुत किए हैं। वहीं, चंदबरदाई ने अपने महाकाव्य में अग्निकुंड सिद्धांत का प्रतिपादन किया है, जो लोक परंपराओं में अत्यधिक प्रचलित और प्रसिद्ध है।

32. (2) राज्यपाल
1018 ईस्वी में जब महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया, तब वहाँ का शासक गुर्जर-प्रतिहार वंश का राज्यपाल था। गजनवी की विशाल सेना और भीषण आक्रमण के सामने राज्यपाल ने कड़ा प्रतिरोध करने के स्थान पर अपनी राजधानी छोड़कर पलायन कर लिया। इस घटना से प्रतिहार साम्राज्य की प्रतिष्ठा को भारी आघात पहुँचा। राज्यपाल की इस कायरतापूर्ण नीति के कारण चंदेल शासक गंडदेव के नेतृत्व में अन्य राजपूत राजाओं ने संगठित होकर बाद में राज्यपाल की हत्या कर दी थी।

33. (2) धार
परमार राजा भोज न केवल एक महान विजेता थे, बल्कि वे विद्या और कला के अनन्य उपासक भी थे। उन्होंने अपनी राजधानी धार (मध्य प्रदेश) में 'सरस्वती कंठाभरण' नामक एक भव्य विद्यापीठ या संस्कृत पाठशाला की स्थापना की थी। यह केंद्र तत्कालीन समय में शिक्षा और दर्शन का एक प्रमुख केंद्र बन गया था। यहाँ वाग्देवी की एक सुंदर प्रतिमा भी स्थापित की गई थी। राजा भोज ने स्वयं विभिन्न विषयों पर अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना कर साहित्य जगत में योगदान दिया।

34. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विग्रहराज चतुर्थ, जिन्हें बीसलदेव के नाम से भी जाना जाता है, शाकंभरी के चौहानों के सबसे प्रभावशाली शासक थे। उनका शासनकाल चौहान साम्राज्य का स्वर्ण युग कहलाता है क्योंकि उन्होंने तोमरों को हराकर दिल्ली पर अधिकार किया और साम्राज्य की सीमाएं बढ़ाईं। वे स्वयं एक उच्च कोटि के विद्वान थे और उन्होंने 'हरिकेलि' नामक संस्कृत नाटक की रचना की थी। उनके काल में कला, साहित्य और स्थापत्य का चहुंमुखी विकास हुआ, जिसने अजमेर को एक सांस्कृतिक केंद्र बना दिया।

35. (3) दिल्ली और अजमेर पर तुर्की शासन की स्थापना
1192 ईस्वी में लड़ा गया तराइन का द्वितीय युद्ध भारत के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। इस युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय की पराजय के साथ ही उत्तर भारत में हिंदू साम्राज्य की शक्ति कमजोर हो गई। इसका तात्कालिक परिणाम दिल्ली और अजमेर पर तुर्की सत्ता का प्रभावी नियंत्रण स्थापित होना था। मुहम्मद गोरी ने कुतुबुद्दीन ऐबक को इन क्षेत्रों का प्रशासक नियुक्त किया, जिसने कालांतर में दिल्ली सल्तनत की नींव रखी। इस पराजय ने राजपूतों के राजनीतिक वर्चस्व को गंभीर रूप से प्रभावित किया।

36. (4) I, II और III
मेवाड़ के प्रारंभिक गुहिल शासकों ने राज्य को सुदृढ़ बनाने हेतु महत्वपूर्ण कदम उठाए थे। बप्पा रावल ने 115 ग्रेन भार के सोने के सिक्के चलाए, जो उनकी आर्थिक समृद्धि को दर्शाते हैं। राजा अल्लट ने आहड़ को अपनी दूसरी राजधानी बनाया और वहां नौकरशाही व्यवस्था की शुरुआत की। 13वीं शताब्दी के दौरान जैत्र सिंह ने सुरक्षा कारणों से राजधानी को नागदा से चित्तौड़ स्थानांतरित किया था। इन शासकों के प्रयासों ने मेवाड़ को राजस्थान की एक प्रमुख सैन्य और राजनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित किया।

37. (3) राणा कुंभा
मंडन 15वीं शताब्दी के राजस्थान के एक अत्यंत प्रसिद्ध वास्तुकार और शिल्पशास्त्री थे। उन्होंने मेवाड़ के महान शासक महाराणा कुंभा की सेवा की और उनके संरक्षण में कई महत्वपूर्ण कार्य किए। मंडन ने ही कुंभलगढ़ दुर्ग की रूपरेखा तैयार की थी, जो अपनी सुदृढ़ प्राचीरों के लिए जाना जाता है। उन्होंने स्थापत्य कला पर 'राजवल्लभ', 'रूपमंडन' और 'प्रसाद मंडन' जैसे कई प्रामाणिक ग्रंथों की रचना भी की। कुंभा के काल में हुए विशाल निर्माण कार्यों में मंडन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और मार्गदर्शक रही थी।

38. (2) राणा सांगा
1527 ईस्वी के खानवा युद्ध में विदेशी आक्रमणकारी बाबर के विरुद्ध भारतीय शक्तियों ने एक संयुक्त मोर्चा बनाया था। मेवाड़ के राणा सांगा ने इस राजपूत संघ का नेतृत्व किया। सांगा की सहायता हेतु मेवात के मुस्लिम शासक हसन खान मेवाती और इब्राहिम लोदी के भाई महमूद लोदी ने अपनी सेनाओं के साथ सहयोग किया था। यह गठबंधन इस तथ्य को रेखांकित करता है कि उस समय क्षेत्रीय शासकों ने धर्म से ऊपर उठकर अपनी मातृभूमि की रक्षा हेतु एकजुटता का प्रदर्शन किया था।

39. (2) केवल II
मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के इतिहास में राव जोधा का महत्वपूर्ण स्थान है, किंतु उन्होंने महाराणा कुंभा को पराजित नहीं किया था। इसके विपरीत, लंबे संघर्ष के बाद मेवाड़ और मारवाड़ के बीच 'आंवळ-बांवळ की संधि' हुई थी, जिससे दोनों राज्यों की सीमाएं तय हुईं। राव चूंडा ने मंडोर को दहेज में प्राप्त कर अपनी राजधानी बनाया था। राव मालदेव को उनकी वीरता के कारण इतिहासकारों ने 'हशमत वाला राजा' कहा और मोटा राजा उदय सिंह ने मुगलों से वैवाहिक संबंध स्थापित किए थे।

40. (1) हल्दीघाटी का युद्ध
1576 ईस्वी में लड़ा गया हल्दीघाटी का युद्ध भारतीय इतिहास की एक अत्यंत प्रसिद्ध सैन्य घटना है। इस युद्ध में मुगल सम्राट अकबर की सेना का नेतृत्व आमेर के कुंवर मान सिंह प्रथम ने किया था। यह पहली बार था जब किसी गैर-मुस्लिम सेनापति को मुगलों की मुख्य सेना की कमान सौंपी गई थी। मान सिंह ने

महाराणा प्रताप की सेना के विरुद्ध आमेर और मुगल सैनिकों का कुशलतापूर्वक संचालन किया। यद्यपि युद्ध का परिणाम अनिर्णायक रहा, किंतु मान सिंह के सैन्य कौशल की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका रही थी।

41. (3) देवा, जो राव अनिरुद्ध सिंह की धाय माँ के पुत्र थे
बूंदी में स्थित चौरासी खंभों की छतरी अपनी भव्यता और वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। इस स्मारक का निर्माण 1683 ईस्वी में बूंदी के शासक राव अनिरुद्ध सिंह के शासनकाल में किया गया था। यह छतरी उनके धाय भाई देवा के सम्मान में बनवाई गई थी, जिन्होंने राज्य के प्रति अपनी निष्ठा और सेवा का परिचय दिया था। यह दो मंजिला संरचना अपनी बारीकी से उकेरी गई नक्काशी, देवी-देवताओं की मूर्तियों और हाथियों के चित्रण के लिए जानी जाती है, जो हाड़ौती स्थापत्य कला का सुंदर उदाहरण है।

42. (1) राम सिंह प्रथम
1666 ईस्वी में जब मराठा शासक छत्रपति शिवाजी महाराज आगरा के मुगल दरबार में उपस्थित हुए, तब उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी आमेर के कुंवर राम सिंह प्रथम को सौंपी गई थी। राम सिंह ने सम्राट औरंगजेब के समक्ष शिवाजी की व्यक्तिगत सुरक्षा का वचन दिया था। जब औरंगजेब ने शिवाजी को बंदी बना लिया, तब राम सिंह ने अपनी मर्यादा और वचन का पालन करने का प्रयास किया। उनके इसी संरक्षण और कूटनीतिक सहयोग के कारण ही शिवाजी को बाद में सुरक्षित निकलने में कुछ गुप्त सहायता प्राप्त हो सकी थी।

43. (4) वंश भास्कर - दयालदास
राजस्थान के चारण साहित्य में ऐतिहासिक ग्रंथों का विशेष महत्व है। 'नैणसी री ख्यात' मुँहणोत नैणसी द्वारा लिखी गई है और 'पृथ्वीराज विजय' जयानक की रचना है। नयनचंद्र सूरी ने 'हम्मीर महाकाव्य' में रणथंभौर के चौहानों का वर्णन किया है। हालांकि, 'वंश भास्कर' के रचयिता महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण हैं, न कि दयालदास। दयालदास ने 'बीकानेर रा राठौड़ां री ख्यात' की रचना की थी। यह विकल्प साहित्य और उनके लेखकों के मिलान की दृष्टि से असत्य है, जो ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है।

44. (1) I, II और IV
राजस्थान में राजपूतों के शासनकाल में मंदिर स्थापत्य की विभिन्न शैलियों का विकास हुआ। ओसियां के मंदिर गुर्जर-प्रतिहार कालीन महा-मारु शैली के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। नागदा में स्थित 10वीं शताब्दी का सास-बहू मंदिर गुहिल राजवंश के स्थापत्य गौरव को दर्शाता है। वहीं, उदयपुर का प्रसिद्ध जगदीश मंदिर पंचायतन शैली में निर्मित है, जिसका निर्माण महाराणा जगत सिंह ने करवाया था। पुष्कर के ब्रह्मा मंदिर का प्राचीन इतिहास है और उसका वर्तमान स्वरूप समय-समय पर हुए जीर्णोद्धार का परिणाम माना जाता है।

45. (3) मराठों द्वारा सुरक्षा के बदले वसूला जाने वाला कर
18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भारत में मराठा शक्ति का उदय हुआ। राजस्थान के राजपूत राज्यों पर मराठों का राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव बढ़ गया था। 'चौथ' एक प्रकार का सैन्य कर था जो मराठों द्वारा पड़ोसी राज्यों से वसूला जाता था। यह कर कुल राजस्व का 25 प्रतिशत होता था। इसके बदले में मराठा उन राज्यों को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षा प्रदान करने और स्वयं आक्रमण न करने का वचन देते थे। इस कर ने राजपूतों की अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ डाला।

46. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजपूतों की उत्पत्ति के विभिन्न सिद्धांतों को विद्वानों ने अपने तर्कों के साथ प्रस्तुत किया है। डी.आर. भंडारकर शिलालेखों के आधार पर उन्हें ब्राह्मण या गुर्जर मूल का मानते हैं। जी.एच. ओझा ने उन्हें प्राचीन सूर्यवंशी और चंद्रवंशी क्षत्रियों के वंशज के रूप में स्थापित किया। विलियम क्रुक जैसे विदेशी विद्वान उन्हें बाहरी जातियों का वंशज बताते हैं। वहीं, मुँहणोत नैणसी ने अपनी ख्यात में चंदबरदाई द्वारा प्रतिपादित 'अग्निकुंड' के मत को स्वीकार किया है। ये सभी सिद्धांत राजपूतों के इतिहास को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं।

47. (1) मिहिर भोज
मिहिर भोज गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के सबसे शक्तिशाली सम्राट माने जाते हैं। उन्होंने 9वीं शताब्दी में एक विशाल साम्राज्य का विस्तार किया और इस्लाम के प्रसार को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे भगवान विष्णु के अनन्य भक्त थे, इसलिए उन्होंने अपने चांदी के सिक्कों पर 'आदिवराह' की उपाधि अंकित करवाई थी। इसके अतिरिक्त, उन्हें उनके अभिलेखों में 'प्रभास' की उपाधि से भी विभूषित किया गया है। उनके शासनकाल में प्रतिहार साम्राज्य अपनी सैन्य शक्ति और सांस्कृतिक समृद्धि के चरमोत्कर्ष पर पहुँचा था।

48. (1) I, II, III और IV
आबू के परमार शासकों ने मध्यकालीन राजस्थान के इतिहास में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। उन्होंने अधिकांश समय गुजरात के सोलंकी राजाओं के वफादार सामंतों के रूप में शासन किया। उनकी राजधानी चंद्रावती स्थापत्य और व्यापार का एक प्रमुख केंद्र थी। धारावर्ष इस शाखा के सर्वाधिक प्रतापी शासक थे, जिनकी सैन्य कुशलता प्रसिद्ध थी। इन्हीं के काल में सोलंकी मंत्री विमल शाह ने आबू पर्वत पर प्रसिद्ध जैन मंदिरों का निर्माण करवाया था। हालांकि, वे पूर्णतः स्वतंत्र होकर चालुक्यों को हटाने में सफल नहीं हो पाए थे।

49. (2) विग्रहराज चतुर्थ
शाकंभरी के चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ, जिन्हें बीसलदेव भी कहा जाता है, ने अपने राज्य का अभूतपूर्व विस्तार किया था। उन्होंने दिल्ली के तोमर शासकों को युद्ध में पराजित कर 'ढिल्लिका' (दिल्ली) पर अपना अधिकार स्थापित किया। इस विजय के साथ ही चौहान साम्राज्य उत्तर भारत की एक प्रमुख शक्ति बन गया। उनके शासनकाल के दौरान दिल्ली और अजमेर के बीच के क्षेत्र में सुरक्षा और शांति स्थापित हुई। विग्रहराज चतुर्थ की इस उपलब्धि ने उनके उत्तराधिकारी पृथ्वीराज तृतीय के लिए एक सुदृढ़ साम्राज्य की आधारशिला रखी थी।

50. (1) I, III, IV, II
अजमेर के चौहान शासकों का कालक्रम उनके साम्राज्य के उत्थान की क्रमिक प्रक्रिया को प्रदर्शित करता है। अजयराज द्वितीय ने 12वीं शताब्दी के आरंभ में अजमेर नगर बसाया और उसे अपनी राजधानी बनाया। उनके पश्चात अर्णोराज शासक बने जिन्होंने आनासागर झील का निर्माण करवाया। फिर विग्रहराज चतुर्थ का शासनकाल आया जो अपनी सैन्य विजयों और साहित्य प्रेम के लिए प्रसिद्ध थे। अंततः पृथ्वीराज तृतीय इस वंश के अंतिम महान शासक हुए जिन्होंने तराइन के प्रसिद्ध युद्ध लड़े और उत्तर भारतीय राजनीति को गहराई से प्रभावित किया।

51. (3) राणा कुंभा
मेवाड़ के महाराणा कुंभा को उनकी वीरता और मुस्लिम शासकों पर उनकी विजयों के कारण 'हिंदू सुरत्राण' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। इस शब्द का अर्थ 'हिंदू सुल्तानों में श्रेष्ठ' या 'हिंदुओं का रक्षक' माना जाता है। कुंभा ने न केवल अपने राज्य की सीमाओं की रक्षा की, बल्कि मालवा और गुजरात के सुल्तानों के संयुक्त हमलों को भी विफल किया। उनकी यह उपाधि तत्कालीन समय में हिंदू धर्म और संस्कृति के प्रति उनके समर्पण तथा उनकी सर्वोच्च सैन्य स्थिति को गौरवपूर्ण ढंग से प्रतिपादित करती है।

52. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
मेवाड़ के गुहिल और सिसोदिया शासकों के काल की घटनाएं ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। रावल रतन सिंह के समय 1303 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के दौरान चित्तौड़ का प्रथम साका हुआ। इसके बाद राणा हम्मीर ने तुगलकों को हराकर चित्तौड़ पर पुनः अधिकार किया और सिसोदिया शाखा की नींव रखी। राणा लाखा के शासनकाल में जावर में चांदी की खानों का पता चला, जिससे राज्य की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई। राणा मोकल की उनके अपने ही रिश्तेदारों द्वारा हत्या कर दी गई थी।

53. (3) राणा कुंभा
1456 ईस्वी में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी और गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन अहमद शाह के बीच 'चांपानेर की संधि' हुई थी। इस संधि का मुख्य उद्देश्य मेवाड़ के बढ़ते प्रभाव को रोकना और महाराणा कुंभा को युद्ध में पराजित कर उनके राज्य को आपस में विभाजित करना था। हालांकि, राणा कुंभा ने अपनी अद्भुत सैन्य कुशलता और कूटनीति से इन दोनों सुल्तानों के संयुक्त आक्रमण को विफल कर दिया। यह घटना कुंभा की अजेय सैन्य शक्ति और उनके शासनकाल की रणनीतिक सफलता का एक अनुपम उदाहरण मानी जाती है।

54. (2) 1527 ईस्वी
खानवा का युद्ध भारतीय इतिहास की सबसे महत्वपूर्ण सैन्य मुठभेड़ों में से एक है, जो 17 मार्च, 1527 ईस्वी को लड़ा गया था। यह युद्ध मेवाड़ के महाराणा सांगा और मुगल आक्रांता बाबर के मध्य हुआ था। इस युद्ध में सांगा ने अनेक राजपूत राजाओं के साथ मिलकर एक शक्तिशाली संघ बनाया था। यद्यपि राजपूतों ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया, किंतु बाबर के आधुनिक तोपखाने और विशिष्ट सैन्य व्यूहरचना के कारण सांगा की पराजय हुई। इस युद्ध ने भारत में मुगल साम्राज्य की नींव को निर्णायक रूप से सुदृढ़ कर दिया था।

55. (4) राव कल्याणमल
1570 ईस्वी में मुगल सम्राट अकबर ने राजस्थान के शासकों को अपनी अधीनता में लाने के लिए नागौर में एक विशाल दरबार का आयोजन किया था। इस अवसर पर बीकानेर के राठौड़ शासक राव कल्याणमल ने अपने पुत्रों, राय सिंह और पृथ्वीराज राठौड़ के साथ अकबर की सेवा में उपस्थिति दर्ज कराई। उन्होंने स्वेच्छा से मुगलों की अधीनता स्वीकार की और वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए। यह बीकानेर राज्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण राजनीतिक मोड़ था, जिसके बाद बीकानेर के शासकों को मुगल दरबार में उच्च पद और मान प्राप्त हुए।

56. (4) 7000
आमेर के राजा मान सिंह प्रथम मुगल सम्राट अकबर के सबसे विशिष्ट और विश्वसनीय सेनापतियों में अग्रणी थे। अकबर ने उनकी अटूट स्वामीभक्ति और अनेक सफल सैन्य अभियानों के पुरस्कार स्वरुप उन्हें 7000 का 'जात' और 'सवार' मनसब प्रदान किया था। उस समय किसी भी राजपूत शासक के लिए यह सर्वोच्च सम्मान था। मान सिंह को 'फरजंद' की उपाधि भी दी गई थी। उनकी यह उच्च स्थिति मुगल साम्राज्य के प्रशासनिक और सैन्य ढांचे में राजपूतों के बढ़ते प्रभाव और सम्राट के साथ उनके घनिष्ठ संबंधों को दर्शाती है।

57. (3) शिकार के दृश्य
कोटा की चित्रकला शैली हाड़ौती क्षेत्र की एक विशिष्ट और जीवंत कला परंपरा है, जो 17वीं-18वीं शताब्दी में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची। इस शैली की सबसे प्रमुख विशेषता 'शिकार के दृश्यों' का सजीव चित्रण है। इनमें घने जंगलों के बीच जंगली जानवरों का शिकार करते हुए शासकों और महिलाओं को भी दिखाया गया है। इन चित्रों में प्रकृति का सुंदर चित्रण और गतिशीलता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। कोटा के हाड़ा शासकों के वन्यजीव प्रेम और उनके साहसी जीवन का प्रतिबिंब इन चित्रों में बखूबी निखरकर आता है।

58. (1) सवाई प्रताप सिंह
जयपुर का विश्व प्रसिद्ध 'हवा महल' स्थापत्य कला का एक अद्भुत चमत्कार है, जिसका निर्माण 1799 ईस्वी में सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था। इस पाँच मंजिला इमारत की रूपरेखा वास्तुकार लालचंद उस्ता ने तैयार की थी। इसे विशेष रूप से राजपरिवार की महिलाओं के लिए बनाया गया था ताकि वे बिना किसी की दृष्टि में आए बाहर के उत्सवों और गलियों के दृश्यों को देख सकें। इसकी 953 छोटी खिड़कियाँ और जालीदार झरोखे वैज्ञानिक रूप से ठंडी हवा के प्रवाह को सुनिश्चित करते हैं, जिसके कारण इसे 'हवा महल' कहा जाता है।

59. (4) आदिनाथ (ऋषभनाथ)
चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित 'कीर्ति स्तंभ' एक भव्य सात मंजिला स्मारक है, जो जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को समर्पित है। इसका निर्माण 12वीं-13वीं शताब्दी के दौरान एक धनी जैन व्यापारी जीजा बघेरवाल द्वारा करवाया गया था। यह

स्तंभ जैन वास्तुकला की दिगंबर शैली का एक उत्कृष्ट नमूना है। इसकी दीवारों पर विभिन्न तीर्थंकरों की मूर्तियाँ और सूक्ष्म नक्काशी की गई है। विजय स्तंभ से भिन्न होने के कारण इसे अक्सर 'जैन कीर्ति स्तंभ' के नाम से पुकारा जाता है, जो मेवाड़ में जैन धर्म के प्रभाव को दर्शाता है।

60. (2) राजस्थान में मराठों के बढ़ते प्रभाव को रोकने हेतु
18वीं शताब्दी में राजस्थान के राजपूत राज्यों को मराठों के निरंतर हस्तक्षेप और लूटपाट का सामना करना पड़ रहा था। इस गंभीर स्थिति से निपटने हेतु मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह द्वितीय की अध्यक्षता और सवाई जय सिंह के प्रयासों से 17 जुलाई, 1734 ईस्वी को 'हुरड़ा' में एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य आपसी मतभेदों को भुलाकर मराठों के विरुद्ध एक संयुक्त सैन्य मोर्चा बनाना था। हालांकि, आपसी अविश्वास और स्पष्ट कार्ययोजना के अभाव में यह सम्मेलन अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में असफल रहा था।

61. (3) उत्तर-हर्षवर्धन काल (7वीं-12वीं शताब्दी)
प्राचीन भारत के इतिहास में 'राजपुत्र' शब्द का उल्लेख मिलता है, किंतु एक विशिष्ट योद्धा और शासक वर्ग के रूप में इनकी पहचान उत्तर-हर्षवर्धन काल में सुदृढ़ हुई। 7वीं से 12वीं शताब्दी के मध्य के काल को भारतीय इतिहास में 'राजपूत काल' के नाम से जाना जाता है। इस दौरान हर्षवर्धन के साम्राज्य के पतन के बाद देश में अनेक छोटे-बड़े राजपूत राज्यों का उदय हुआ। इन राज्यों ने अपनी वीरता, कुल परंपरा और रक्षात्मक युद्धों के माध्यम से भारतीय राजनीति और समाज में अपना एक विशिष्ट और स्थायी स्थान बना लिया था।

62. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के शासक महान निर्माता थे जिन्होंने उत्तर और पश्चिमी भारत में 'महा-मारु' नामक विशिष्ट स्थापत्य शैली को विकसित किया। इस शैली के मंदिरों में ऊंचे अधिष्ठान, सुसज्जित शिखर और भव्य नक्काशी का उपयोग किया गया था, जैसा कि ओसियां के मंदिरों में देखा जा सकता है। हालांकि, यह कला शैली अरब आक्रमणकारियों को प्रसन्न करने के लिए नहीं, बल्कि स्थानीय सांस्कृतिक और धार्मिक गौरव को प्रदर्शित करने हेतु विकसित की गई थी। इसके विपरीत, प्रतिहारों ने तो अरबों के आक्रमण का डटकर मुकाबला किया और उन्हें परास्त किया था।

63. (1) मालवा
मध्य भारत में परमार राजवंश का मुख्य क्षेत्रीय आधार 'मालवा' का क्षेत्र था, जिसकी राजधानी धार और उज्जैन रही थी। 9वीं शताब्दी में राष्ट्रकूटों के प्रभाव से मुक्त होने के बाद परमारों ने इस उपजाऊ और रणनीतिक क्षेत्र में एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। राजा भोज जैसे महान शासकों के नेतृत्व में मालवा न केवल एक सैन्य शक्ति बना, बल्कि यह शिक्षा, साहित्य और स्थापत्य कला का प्रमुख केंद्र भी बन गया। यहाँ का समृद्ध कृषि आधार और व्यापारिक मार्ग परमारों की आर्थिक समृद्धि और राजनीतिक स्थायित्व के मुख्य कारण थे।

64. (3) केवल III
शाकंभरी के चौहान राजवंश की नींव छठी शताब्दी के मध्य में वासुदेव द्वारा रखी गई थी। प्रारंभिक काल में चौहानों ने शक्तिशाली गुर्जर-प्रतिहारों के सामंतों के रूप में अपनी सेवाएं दीं और कालांतर में स्वयं को स्वतंत्र घोषित किया। जहाँ तक पुष्कर झील का प्रश्न है, यह एक अत्यंत प्राचीन और प्राकृतिक पवित्र स्थल माना जाता है, जिसकी उत्पत्ति पौराणिक कथाओं से जुड़ी है। अर्णोराज ने अजमेर में आनासागर झील का निर्माण करवाया था और पुष्कर क्षेत्र का जीर्णोद्धार किया था, किंतु वे झील के मूल निर्माता नहीं थे।

65. (2) शाकंभरी (अजमेर) चौहान
पृथ्वीराज तृतीय, जो इतिहास में 'राय पिथौरा' के नाम से प्रसिद्ध हैं, चौहानों की मुख्य 'शाकंभरी' या अजमेर शाखा से संबंधित थे। इस शाखा ने सपादलक्ष के क्षेत्र से शासन आरंभ किया था और कालांतर में अजयराज द्वितीय द्वारा स्थापित अजमेर को अपना केंद्र बनाया। पृथ्वीराज तृतीय इस राजवंश के अंतिम और सबसे महान सम्राट हुए, जिन्होंने तराइन के युद्धों में अपना पराक्रम दिखाया। उनकी शक्ति का विस्तार दिल्ली तक था, किंतु उनका मूल आधार और गौरवशाली वंशावली अजमेर के चौहानों की इसी शाकंभरी शाखा से गहराई से जुड़ी हुई थी।

66. (1) राणा हम्मीर
1303 ईस्वी में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़ के विध्वंस और रावल शाखा के अंत के बाद मेवाड़ का भविष्य अंधकारमय हो गया था। ऐसी विकट परिस्थिति में सिसोदा ग्राम के सामंत राणा हम्मीर ने अदम्य साहस का परिचय दिया। उन्होंने रणनीतिक सूझबूझ से चित्तौड़ पर आक्रमण कर मुस्लिम सूबेदार को खदेड़ा और मेवाड़ की सत्ता को पुनः प्राप्त किया। राणा हम्मीर ने ही गुहिलों की 'सिसोदिया' शाखा की नींव रखी, जिसने सदियों तक मेवाड़ पर शासन किया। उन्हें मेवाड़ का 'उद्धारक' और 'विषम घाटी पंचानन' जैसी उपाधियों से सम्मानित किया जाता है।

67. (2) I, II और IV
महाराणा कुंभा एक विद्वान शासक थे जिन्होंने संगीत और साहित्य में अमूल्य योगदान दिया। उनके द्वारा रचित 'रसिक प्रिया' जयदेव की गीत गोविंद पर एक प्रसिद्ध टीका है। उन्होंने संगीत के शास्त्रीय पक्षों पर 'संगीत मीमांसा' और 'संगीतराज' जैसे वृहद ग्रंथों की रचना की। यद्यपि 'एकलिंग माहात्म्य' का प्रथम भाग कुंभा द्वारा लिखा गया माना जाता है, शेष भाग उनके दरबारी कवि कान्हा व्यास ने पूर्ण किया था। इन ग्रंथों के माध्यम से कुंभा ने तत्कालीन कला और संस्कृति को एक नई दिशा और सुदृढ़ दार्शनिक आधार प्रदान किया था।

68. (4) स्त्रियों द्वारा जौहर और पुरुषों द्वारा केसरिया
राजपूत युद्ध परंपरा में 'साका' सर्वोच्च बलिदान और शौर्य का प्रतीक माना जाता है। जब दुर्ग के भीतर रसद समाप्त हो जाती थी और पराजय निश्चित लगती थी, तब दो विशिष्ट क्रियाएं संपन्न की जाती थीं। स्त्रियाँ अपनी मर्यादा और सम्मान की रक्षा हेतु धधकती अग्नि में कूदकर 'जौहर' करती थीं। इसके पश्चात पुरुष योद्धा 'केसरिया' बाना पहनकर, हाथों में तलवार लेकर

अंतिम युद्ध हेतु बाहर निकल पड़ते थे ताकि वे लड़ते हुए वीरगति प्राप्त कर सकें। इन दोनों क्रियाओं के सामूहिक मिलन को ही ऐतिहासिक रूप से 'साका' कहा जाता है।

69. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
मारवाड़ के राठौड़ शासकों का इतिहास विविधतापूर्ण घटनाओं से भरा है। राव जोधा ने जोधपुर नगर बसाकर उसे अपनी शक्तिशाली राजधानी बनाया। राव मालदेव ने अपने काल में मारवाड़ की सीमाओं का विस्तार किया और सामरिक महत्व के पोकरण दुर्ग का निर्माण करवाया। राव चंद्रसेन ने अकबर के विरुद्ध आजीवन संघर्ष किया, जिसके कारण उन्हें 'मारवाड़ का भूला-बिसरा नायक' और 'प्रताप का अग्रगामी' कहा जाता है। वहीं, मोटा राजा उदय सिंह ने बदलती राजनीतिक परिस्थितियों को देखते हुए मुगलों के साथ वैवाहिक गठबंधन कर उनकी अधीनता स्वीकार की थी।

70. (3) 1585 ईस्वी
1585 ईस्वी में मुगल सम्राट अकबर ने आमेर के राजा मान सिंह प्रथम को उत्तर-पश्चिमी सीमा के अशांत क्षेत्रों को नियंत्रित करने हेतु काबुल भेजा था। उस समय वहाँ रोशनीया संप्रदाय के विद्रोहियों ने मुगल सत्ता को कड़ी चुनौती दी थी। मान सिंह ने अपनी असाधारण सैन्य प्रतिभा और युद्ध कौशल का प्रदर्शन करते हुए इन विद्रोहियों को बुरी तरह पराजित किया और क्षेत्र में शांति स्थापित की। उनकी इस सफलता से प्रभावित होकर अकबर ने उन्हें काबुल का सूबेदार नियुक्त किया। यह अभियान मान सिंह के गौरवशाली सैन्य जीवन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाती है।

71. (4) राव बर सिंह
बूंदी में स्थित 'तारागढ़' दुर्ग राजस्थान के सबसे प्रभावशाली किलों में से एक है। इस अभेद्य दुर्ग का निर्माण 1354 ईस्वी में हाड़ा शासक राव बर सिंह ने करवाया था। यह किला पर्वत की ऊंची चोटी पर स्थित है, जिसके कारण इसे 'तारागढ़' कहा जाता है। दुर्ग के भीतर स्थित भीम बुर्ज और तोपें इसकी सैन्य शक्ति का प्रमाण हैं। अपनी अनूठी स्थापत्य शैली और जटिल गलियारों के लिए प्रसिद्ध यह दुर्ग हाड़ा चौहानों के शौर्य और उनकी स्थापत्य कला के प्रति रुचि का प्रतीक माना जाता है।

72. (1) सवाई प्रताप सिंह
चित्रकला की जयपुर शैली अपने विकास के चरमोत्कर्ष पर सवाई प्रताप सिंह के शासनकाल में पहुँची। उनके काल में चित्रकला में नवीन प्रयोग हुए और मुगलों के प्रभाव के साथ स्थानीय राजस्थानी संस्कृति का सुंदर समन्वय देखने को मिला। सवाई प्रताप सिंह स्वयं एक कलाकार थे, जिन्होंने 'गुणिजन खाना' के माध्यम से सैकड़ों कलाकारों को संरक्षण प्रदान किया। उनके समय में बने चित्रों में रंगों की विविधता, सूक्ष्म विवरण और धार्मिक विषयों जैसे राधा-कृष्ण की लीलाओं का प्रधानता से चित्रण किया गया, जो इस शैली की विशिष्टता है।

73. (3) मुंडियाड़ री ख्यात
'मुंडियाड़ री ख्यात' मारवाड़ के राठौड़ राजवंश के इतिहास और उनकी वंशावली के अध्ययन हेतु एक अत्यंत प्रामाणिक ऐतिहासिक स्रोत है। इस ग्रंथ में राव सीहा से लेकर बाद के राठौड़ शासकों की उपलब्धियों, उनके द्वारा लड़े गए युद्धों और प्रशासनिक कार्यों का क्रमबद्ध विवरण मिलता है। मुंडियाड़ गाँव के चारणों द्वारा रचित होने के कारण इसका नाम 'मुंडियाड़ री ख्यात' पड़ा। यह रचना न केवल राजनीतिक इतिहास की जानकारी देती है, बल्कि तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश और राजपूतों की वीरतापूर्ण परंपराओं पर भी महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है।

74. (1) राणा कुंभा
पाली जिले में स्थित रणकपुर के प्रसिद्ध जैन मंदिर स्थापत्य कला का एक बेजोड़ उदाहरण हैं। इन मंदिरों का निर्माण 15वीं शताब्दी में महाराणा कुंभा के शासनकाल के दौरान उनके एक धनी मंत्री धरणा शाह द्वारा करवाया गया था। यह मुख्य मंदिर भगवान आदिनाथ को समर्पित है और अपनी चतुर्मुखी संरचना के लिए जाना जाता है। इस मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता इसके 1444 कलात्मक स्तंभ हैं, जिनमें से कोई भी दो स्तंभ एक जैसे नहीं हैं। महाराणा कुंभा ने इस धार्मिक निर्माण हेतु भूमि और पूर्ण संरक्षण प्रदान किया था।

75. (4) राम सिंह और बखत सिंह के मध्य जोधपुर उत्तराधिकार का संघर्ष
18वीं शताब्दी में राजपूत शक्तियों के राजनीतिक पतन के पीछे आंतरिक कलह और उत्तराधिकार के युद्ध एक प्रमुख कारक थे। मारवाड़ में राम सिंह और बखत सिंह के बीच सत्ता के लिए हुए दीर्घकालिक संघर्ष ने राज्य की सैन्य और आर्थिक शक्ति को भीतर से खोखला कर दिया। इस गृहयुद्ध का लाभ उठाते हुए मराठों ने राजस्थान की राजनीति में सक्रिय हस्तक्षेप करना शुरू कर दिया। आपसी फूट के कारण राजपूत शासक किसी एक सामान्य शत्रु के विरुद्ध संगठित होने में विफल रहे, जिससे कालांतर में उन्हें अपनी स्वतंत्रता खोनी पड़ी।

76. (1) I, II, III और V
राजपूतों की उत्पत्ति का विषय अत्यंत जटिल है जिस पर विद्वान एकमत नहीं हैं। चंदबरदाई का 'अग्निकुंड सिद्धांत' प्रतिहार, परमार, चालुक्य और चौहानों की उत्पत्ति यज्ञ की अग्नि से बताता है। जी.एच. ओझा जैसे भारतीय विद्वान उन्हें प्राचीन आर्य क्षत्रियों के वंशज मानते हैं। अलेक्जेंडर कनिंघम ने उन्हें कुषाणों के समान विदेशी मूल का बताया है। कर्नल जेम्स टॉड के विदेशी मूल के सिद्धांत का कई राष्ट्रवादी इतिहासकारों ने विरोध किया और इसे औपनिवेशिक प्रयास माना, जिससे राजपूतों के गौरवशाली अतीत को कमतर दिखाया जा सके।

77. (3) महीपाल प्रथम
10वीं शताब्दी के आरंभ में प्रसिद्ध अरब भूगोलवेत्ता और यात्री अल-मसूदी ने भारत की यात्रा की थी। वह गुर्जर-प्रतिहार सम्राट महीपाल प्रथम के दरबार में उपस्थित हुआ था। उसने अपने यात्रा वृत्तांत में प्रतिहार साम्राज्य की विशालता, सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था और शक्तिशाली सेना की प्रशंसा की है। अल-मसूदी ने प्रतिहारों के राज्य को 'अल-जुज्र' और उनके शासक को 'बौरा' कहकर संबोधित किया है। उसके विवरण से तत्कालीन भारत

की राजनीतिक स्थिति और प्रतिहारों के अरबों के साथ संबंधों के विषय में अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक साक्ष्य प्राप्त होते हैं।

78. (1) I, II, III
मालवा क्षेत्र पर शासन करने वाली विभिन्न शक्तियों का कालक्रम भारत के राजनीतिक संक्रमण को दर्शाता है। 10वीं से 13वीं शताब्दी के मध्य यहाँ परमार राजवंश का वर्चस्व रहा, जिन्होंने धार को अपनी कलात्मक राजधानी बनाया। इसके पश्चात 14वीं शताब्दी में यह क्षेत्र दिल्ली सल्तनत के अधीन हुआ और बाद में मालवा के खिलजी सुल्तानों ने यहाँ एक स्वतंत्र सल्तनत की स्थापना की। 16वीं शताब्दी में सम्राट अकबर के अभियानों के बाद मालवा पूर्णतः मुगल साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण प्रांत बन गया, जिससे यहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था में बड़ा परिवर्तन आया।

79. (1) विग्रहराज चतुर्थ
चौहान राजवंश के गौरव को नई ऊंचाइयों पर ले जाने का श्रेय विग्रहराज चतुर्थ को जाता है। उन्होंने 12वीं शताब्दी के मध्य में दिल्ली के तोमर शासकों को एक निर्णायक युद्ध में पराजित और दिल्ली नगर पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। इस विजय के साथ ही चौहानों का प्रभाव राजस्थान से बढ़कर उत्तर भारत के प्रमुख केंद्रों तक फैल गया। विग्रहराज चतुर्थ की इस सफलता ने अजमेर और दिल्ली के बीच एक मजबूत राजनीतिक सेतु का निर्माण किया, जिसने आगे चलकर पृथ्वीराज तृतीय के शासनकाल के दौरान चौहान साम्राज्य को सर्वोच्च शक्ति बना दिया था।

80. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
पृथ्वीराज तृतीय और चौहान वंश के इतिहास को जानने हेतु अनेक साहित्यिक कृतियां उपलब्ध हैं। चंदबरदाई द्वारा रचित 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी साहित्य का प्रथम महाकाव्य माना जाता है। जयानक ने 'पृथ्वीराज विजय' की रचना संस्कृत में की, जिसमें उनकी विजयों का वर्णन है। नयनचंद्र सूरी ने 'हम्मीर महाकाव्य' के माध्यम से रणथंभौर के चौहानों की गौरवगाथा प्रस्तुत की। वहीं, कवि चंद्रशेखर ने 'सुरजन चरित्र' में बूंदी के हाड़ा चौहानों के इतिहास का विस्तृत वर्णन किया है। ये ग्रंथ ऐतिहासिक तथ्यों के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

81. (2) इसका निर्माण एक बंजारे द्वारा करवाया गया था
उदयपुर की प्रसिद्ध पिछोला झील का निर्माण 14वीं शताब्दी के अंत में महाराणा लाखा के शासनकाल के दौरान हुआ था। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार, इस मनोरम झील का निर्माण किसी शासक ने नहीं, बल्कि एक बंजारे ने अपने बैलों की स्मृति में करवाया था। महाराणा उदय सिंह ने बाद में 16वीं शताब्दी में उदयपुर नगर बसाते समय इस झील का विस्तार किया और इसके तटों को सुदृढ़ बनवाया। आज यह झील अपने जल महलों, जैसे जग निवास और जग मंदिर के लिए विश्व भर के पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है।

82. (3) पाँच
महाराणा कुंभा द्वारा रचित 'संगीतराज' संगीत शास्त्र का एक अत्यंत विशाल और महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। यह ग्रंथ पाँच मुख्य भागों में विभाजित है, जिन्हें 'रत्नकोष' कहा जाता है। इन पाँच भागों में पाठ्य रत्नकोष, गीत रत्नकोष, वाद्य रत्नकोष, नृत्य रत्नकोष और रस रत्नकोष शामिल हैं। प्रत्येक भाग संगीत और नाट्य कला के विशिष्ट पहलुओं का गहराई से विवेचन करता है। यह रचना न केवल कुंभा की विद्वत्ता को सिद्ध करती है, बल्कि तत्कालीन समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत के उच्च स्तर और उसके व्यवस्थित वर्गीकरण को भी प्रदर्शित करती है।

83. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
खानवा का युद्ध 1527 ईस्वी में राणा सांगा और बाबर के बीच लड़ा गया था, जिसके दूरगामी परिणाम हुए। इस युद्ध में राजपूतों की पराजय ने उत्तर भारत में उनकी सर्वोच्चता को समाप्त कर दिया और मुगलों के पक्ष में शक्ति का संतुलन बना दिया। बाबर की विजय का मुख्य कारण उसका आधुनिक तोपखाना और 'तुलुगमा' नामक विशेष युद्ध पद्धति थी, जिसका मुकाबला राजपूतों की पारंपरिक वीरता नहीं कर सकी। इस युद्ध ने यह सिद्ध कर दिया कि आधुनिक तकनीक और कुशल युद्ध रणनीति के सामने केवल साहस पर्याप्त नहीं होता है।

84. (4) जहाँगीर
मारवाड़ के राठौड़ शासक गज सिंह प्रथम को मुगल सम्राट जहाँगीर ने उनकी असाधारण वीरता और निष्ठा के लिए 'दल थम्मन' की उपाधि प्रदान की थी। इस उपाधि का शाब्दिक अर्थ 'सेना को रोकने वाला' या 'शत्रु की सेना का स्तंभक' होता है। गज सिंह ने मुगल साम्राज्य के कई कठिन अभियानों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, जिससे प्रभावित होकर जहाँगीर ने उन्हें यह सम्मानजनक पदवी दी। यह सम्मान न केवल गज सिंह की व्यक्तिगत उपलब्धि थी, बल्कि यह मुगल दरबार में मारवाड़ राज्य के बढ़ते प्रभाव और प्रतिष्ठा का भी सूचक था।

85. (4) अमृत राय
आमेर के राजा मान सिंह प्रथम विद्या के महान संरक्षक थे और उनके दरबार में अनेक विद्वान कवि निवास करते थे। 'मान चरित्र' नामक ऐतिहासिक ग्रंथ की रचना कवि अमृत राय ने की थी। इस ग्रंथ में मान सिंह के जीवन, उनके शौर्यपूर्ण युद्धों और मुगल साम्राज्य के प्रति उनकी सेवाओं का काव्यात्मक वर्णन मिलता है। अमृत राय ने अपनी रचना के माध्यम से आमेर के कच्छवाहा राजवंश की गौरवशाली परंपरा और मान सिंह के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है। यह ग्रंथ तत्कालीन राजस्थानी और ब्रज भाषा के साहित्यिक संगम का सुंदर उदाहरण है।

86. (2) राव छत्रसाल
1658 ईस्वी में मुगल उत्तराधिकार के लिए सामूगढ़ का भीषण युद्ध लड़ा गया था। इस युद्ध में बूंदी के हाड़ा शासक राव छत्रसाल ने शाहजहाँ के बड़े पुत्र दारा शिकोह का समर्थन किया था। उन्होंने औरंगजेब की विद्रोही सेना के विरुद्ध अदम्य साहस और वीरता का परिचय दिया। युद्धभूमि में लड़ते हुए राव छत्रसाल ने अपनी स्वामीभक्ति का पालन किया और अंततः वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी मृत्यु हाड़ा चौहानों के त्याग और मुगल राजघराने के प्रति उनकी निष्ठा की एक महान मिसाल के रूप में इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित है।

87. (4) मिर्जा राजा जय सिंह
हिंदी साहित्य के रीतिकाल के महान कवि बिहारी को आमेर के प्रसिद्ध शासक मिर्जा राजा जय सिंह का संरक्षण प्राप्त था। बिहारी ने अपनी कालजयी रचना 'बिहारी सतसई' की रचना इन्हीं के दरबार में की थी। एक प्रसिद्ध लोककथा के अनुसार, जब राजा राजकाज में अरुचि लेने लगे थे, तब बिहारी ने एक दोहे के माध्यम से उन्हें सचेत किया था। इससे प्रभावित होकर राजा ने उन्हें प्रत्येक दोहे पर एक स्वर्ण मुद्रा देने का वचन दिया। बिहारी के दोहे अपनी संक्षिप्तता और गहरे अर्थ के लिए आज भी अत्यंत लोकप्रिय हैं।

88. (1) मेवाड़ शैली
राजस्थान की 'फड़' चित्रकला एक अत्यंत प्राचीन और अनूठी लोक कला परंपरा है, जिसका मूल संबंध मेवाड़ की चित्रकला शैली से है। इस शैली में लंबी कपड़े की पटियों पर लोक देवताओं, जैसे पाबूजी और देवनारायण जी के जीवन और उनके चमत्कारों का विस्तृत चित्रण किया जाता है। भीलवाड़ा जिले का शाहपुरा क्षेत्र इस कला का मुख्य केंद्र है। फड़ चित्रों का उपयोग 'भोपा' समुदाय द्वारा रावणहत्था जैसे वाद्ययंत्रों के साथ लोक कथाओं के गायन और वाचन में किया जाता है। यह कला मेवाड़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का एक जीवंत हिस्सा है।

89. (3) गुर्जर-प्रतिहार
दौसा जिले के आभानेरी में स्थित 'हर्षत माता मंदिर' अपनी अद्भुत वास्तुकला और मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है। इस मंदिर का निर्माण 8वीं-9वीं शताब्दी के दौरान गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के शासनकाल में हुआ था। यह मंदिर मूल रूप से 'महा-मारु' स्थापत्य शैली का प्रतिनिधित्व करता है, जो प्रतिहारों के काल में विकसित हुई थी। यद्यपि विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा इसे काफी क्षति पहुँचाई गई, फिर भी इसके अवशेषों पर उकेरी गई धार्मिक मूर्तियाँ तत्कालीन शिल्पकारों की सूक्ष्म दृष्टि और उच्च कोटि की कलात्मकता को दर्शाती हैं। यह मंदिर राजस्थान की समृद्ध विरासत का प्रमाण है।

90. (1) लॉर्ड हेस्टिंग्स
19वीं शताब्दी के आरंभ में राजस्थान के राजपूत राज्यों की राजनीतिक स्थिति अत्यंत अस्थिर थी। 1817-18 ईस्वी के दौरान तत्कालीन गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स के कार्यकाल में अधिकांश राजपूत राज्यों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ 'अधीनस्थ गठबंधन' की संधियों पर हस्ताक्षर किए। यद्यपि सहायक संधि की मूल अवधारणा लॉर्ड वेलेज़ली ने शुरु की थी, किंतु राजस्थान के संदर्भ में इसे व्यापक रूप से हेस्टिंग्स ने ही क्रियान्वित किया। इन संधियों के बाद राजपूत राज्यों ने मराठों के आतंक से मुक्ति पाई, किंतु वे अंग्रेजों के राजनीतिक नियंत्रण में आ गए।

91. (1) 24
मुँहणोत नैणसी ने अपनी प्रसिद्ध रचना 'नैणसी री ख्यात' में राजपूतों के विभिन्न कुलों का विस्तृत विवरण दिया है। उनके अनुसार, मेवाड़ के गुहिल राजवंश की कुल 24 शाखाएं थीं। इन शाखाओं में चित्तौड़, कल्याणपुर, चाकसू और सिसोदा जैसी महत्वपूर्ण शाखाएं शामिल थीं, जिन्होंने समय-समय पर राजस्थान और उसके बाहर के विभिन्न क्षेत्रों पर शासन किया। नैणसी का यह वर्गीकरण मध्यकालीन राजपूत वंशावलियों और उनके भौगोलिक विस्तार को समझने के लिए इतिहासकारों हेतु एक अत्यंत विश्वसनीय और प्राथमिक आधार प्रदान करता है।

92. (1) केवल I और II
गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के आरंभिक उत्थान में नागभट्ट प्रथम की भूमिका महत्वपूर्ण रही, जिन्होंने भीनमाल को अपनी शक्ति का केंद्र बनाया और अरबों को खदेड़ा। वत्सराज को इस साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है क्योंकि उन्होंने कन्नौज पर नियंत्रण हेतु त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत की और अपनी स्थिति सुदृढ़ की। यद्यपि कवि राजशेखर प्रतिहारों से जुड़े थे, वे वत्सराज के नहीं बल्कि बाद के शासकों, महेंद्रपाल प्रथम और महीपाल प्रथम के दरबारी कवि और गुरु थे। इन शासकों ने प्रतिहारों को उत्तर भारत की एक सर्वोच्च शक्ति के रूप में स्थापित किया था।

93. (3) राजा भोज
परमार राजवंश के राजा भोज एक ऐसे विलक्षण शासक थे जिनकी ख्याति उनकी तलवार से अधिक उनकी कलम के कारण थी। उन्हें एक महान विद्वान और बहुमुखी प्रतिभा का धनी माना जाता है। राजा भोज ने व्याकरण पर 'शब्दानुशासन', स्थापत्य कला पर 'समरांगण सूत्रधार' और चिकित्सा विज्ञान पर 'आयुर्वेद सर्वस्व' जैसे अनेक महत्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की। उनके शासनकाल में धार नगरी विद्वानों और कलाकारों का सबसे समृद्ध आश्रय स्थल बन गई थी। राजा भोज की विद्वत्ता के कारण ही उन्हें 'कविराज' की सम्मानजनक उपाधि से विभूषित किया गया था।

94. (1) I, II, III, IV
चौहान राजवंश के ऐतिहासिक उत्कर्ष की घटनाओं का क्रम राजस्थान के इतिहास की महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं। सबसे पहले 1113 ईस्वी में अजयराज द्वितीय ने अजयमेरु की स्थापना की। इसके पश्चात विग्रहराज चतुर्थ ने एक भव्य संस्कृत पाठशाला बनवाई, जिसे बाद में अढाई दिन का झोंपड़ा में परिवर्तित कर दिया गया। पृथ्वीराज तृतीय के शासनकाल में 1182 ईस्वी में महोबा का युद्ध लड़ा गया, जिसमें उन्होंने चंदेलों को पराजित किया। अंततः 1191 ईस्वी में तराइन का प्रथम युद्ध हुआ, जहाँ पृथ्वीराज ने मुहम्मद गोरी की सेना को पराजित कर अपनी विजय पताका फहराई थी।

95. (1) नट्यारंभा
पृथ्वीराज तृतीय की वीरता के किस्से भारतीय लोककथाओं और वीर गाथाओं में अत्यंत प्रचलित हैं। ऐतिहासिक उल्लेखों और स्थानीय किंवदंतियों के अनुसार, उनके प्रिय और विशेष घोड़े का नाम 'नट्यारंभा' था। कहा जाता है कि यह घोड़ा युद्ध के मैदान में संगीत और वाद्ययंत्रों की थाप पर नृत्य करने की अद्भुत क्षमता रखता था। तराइन के द्वितीय युद्ध के संदर्भ में यह लोककथा प्रसिद्ध है कि शत्रु ने पृथ्वीराज को भ्रमित करने हेतु संगीत का उपयोग किया, जिससे नट्यारंभा नृत्य करने लगा और सम्राट की एकाग्रता भंग हो गई।

96. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
मेवाड़ के गौरवशाली शासकों ने विभिन्न युद्धों के माध्यम से अपनी स्वतंत्रता की रक्षा की। 13वीं शताब्दी में जैत्र सिंह ने भूताला के युद्ध में इल्तुतमिश की सेना को पराजित किया था। 14वीं शताब्दी में राणा हम्मीर ने सिंगोली के युद्ध में मुहम्मद बिन तुगलक की सेना पर विजय प्राप्त कर मेवाड़ का उद्धार किया। राणा कुंभा ने 1437 ईस्वी में सारंगपुर के युद्ध में मालवा के सुल्तान को हराकर विजय स्तंभ का निर्माण करवाया। वहीं, 1576 ईस्वी में महाराणा प्रताप ने हल्दीघाटी के प्रसिद्ध युद्ध में मुगल साम्राज्य के विशाल सैन्य बल का वीरतापूर्वक सामना किया था।

97. (2) राजसमंद
विश्व विरासत सूची में शामिल भव्य 'कुंभलगढ़ दुर्ग' राजस्थान के राजसमंद जिले में स्थित है। अरावली की पहाड़ियों पर निर्मित इस दुर्ग की रुपरेखा महाराणा कुंभा के प्रमुख वास्तुकार मंडन ने तैयार की थी। यह दुर्ग अपनी 36 किलोमीटर लंबी और विशाल प्राचीर के लिए प्रसिद्ध है, जिसे 'भारत की महान दीवार' कहा जाता है। इस किले के भीतर 'कटारगढ़' नामक एक लघु दुर्ग भी है, जो राणा कुंभा का व्यक्तिगत निवास स्थान था। कुंभलगढ़ न केवल एक सैन्य गढ़ था, बल्कि यह मेवाड़ के शासकों के लिए संकटकालीन आश्रय स्थल भी रहा था।

98. (4) I, II, III और IV
महाराणा सांगा राजस्थान के इतिहास के एक अप्रतिम योद्धा थे, जिन्हें उनकी वीरता के कारण 'हिंदूपति' कहा जाता था। उन्होंने अस्सी युद्ध लड़े थे, जिसके कारण उनके शरीर पर अस्सी घाव थे और वे अपनी एक आँख, एक हाथ और एक पैर खो चुके थे। खानवा के युद्ध से पूर्व उन्होंने 'पाती पेरवण' परंपरा के माध्यम से लगभग सभी राजपूत राजाओं को मुगलों के विरुद्ध एकजुट किया था। हालांकि, युद्ध के निर्णायक क्षण में रायसेन के शासक सलहदी तंवर के विश्वासघात और बाबर के तोपखाने ने सांगा की सुनिश्चित विजय को पराजय में बदल दिया था।

99. (4) दुर्गादास राठौड़
वीर दुर्गादास राठौड़ को मारवाड़ के इतिहास में 'अणबिंध्या मोती' और 'राठौड़ का यूलिसेस' कहा जाता है। महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु के पश्चात जब औरंगजेब ने मारवाड़ को मुगल साम्राज्य में मिलाने का प्रयास किया, तब दुर्गादास ने राजकुमार अजीत सिंह की रक्षा का संकल्प लिया। उन्होंने लगभग तीस वर्षों तक मुगलों के विरुद्ध संघर्ष किया और अंततः अजीत सिंह को जोधपुर के सिंहासन पर बैठाया। उनकी कूटनीतिक सूझबूझ और अदम्य साहस ने औरंगजेब को चुनौती दी। दुर्गादास का त्याग और स्वामीभक्ति आज भी राजस्थान में एक आदर्श के रूप में पूजी जाती है।

100. दुर्गादास राठौड़
दुर्गादास राठौड़ मारवाड़ के महान वीर और स्वामिभक्त सेनापति थे। उन्होंने Aurangzeb के विरुद्ध संघर्ष करते हुए Ajit Singh को सुरक्षित रखा और उन्हें जोधपुर के सिंहासन पर बैठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी वीरता, कूटनीति और निष्ठा ने मारवाड़ की स्वतंत्रता को बचाए रखा और वे इतिहास में अमर हो गए।

101. (3) वृंदावन
आमेर के राजा मान सिंह प्रथम न केवल एक महान सेनापति थे, बल्कि कला और धर्म के भी परम संरक्षक थे। 1590 ईस्वी के आसपास उन्होंने उत्तर प्रदेश के वृंदावन में भगवान श्री कृष्ण को समर्पित भव्य 'गोविंद देव जी' मंदिर का निर्माण करवाया था। लाल बलुआ पत्थर से निर्मित यह मंदिर सात मंजिला था और अपनी हिंदू-इस्लामी मिश्रित स्थापत्य शैली के लिए विख्यात था। कालांतर में औरंगजेब के शासनकाल में इस मंदिर को क्षति पहुँचाई गई, जिसके बाद भगवान की मूर्ति को आमेर और फिर वर्तमान जयपुर के सिटी पैलेस परिसर में लाया गया।

102. (2) कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़
राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी भाग को ऐतिहासिक और भौगोलिक रूप से 'हाड़ौती' के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र पर मध्यकाल में चौहानों की हाड़ा शाखा का शासन रहा, जिसके कारण इसे यह नाम प्राप्त हुआ। वर्तमान प्रशासनिक ढांचे में हाड़ौती क्षेत्र के अंतर्गत मुख्य रूप से चार जिले—कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र अपनी उपजाऊ काली मिट्टी, घने जंगलों, चंबल नदी के प्रवाह और विशिष्ट स्थापत्य कला के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की सांस्कृतिक परंपराएं और बोलियां राजस्थान की विविधता में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

103. (4) सवाई जय सिंह द्वितीय
सवाई जय सिंह द्वितीय को एक महान निर्माता, खगोलशास्त्री और हिंदू धर्म की प्राचीन परंपराओं को पुनर्जीवित करने वाले शासक के रूप में जाना जाता है। उन्होंने 1740 ईस्वी के आसपास जयपुर में भव्य 'अश्वमेध यज्ञ' का आयोजन किया था। इसे किसी हिंदू राजा द्वारा संपन्न किया गया मध्यकालीन भारत का अंतिम अश्वमेध यज्ञ माना जाता है। इस अवसर पर उन्होंने देशभर से प्रतिष्ठित विद्वानों और ब्राह्मणों को आमंत्रित किया था। यह यज्ञ उनकी राजनीतिक प्रतिष्ठा, धार्मिक निष्ठा और एक शक्तिशाली हिंदू सम्राट के रूप में उनके प्रभाव को प्रदर्शित करने का एक माध्यम था।

104. (1) I, II, III, IV
राजस्थान के ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना का कालक्रम तत्कालीन साहित्यिक प्रवृत्तियों के क्रमिक विकास को दर्शाता है। चंदबरदाई की 'पृथ्वीराज रासो' 12वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिखी गई, जो सबसे प्राचीन है। मलिक मुहम्मद जायसी ने 1540 ईस्वी में सूफी काव्य 'पद्मावत' की रचना की। 17वीं शताब्दी में मुँहणोत नैणसी ने 'नैणसी री ख्यात' लिखी, जो गद्य ऐतिहासिक विवरण का श्रेष्ठ उदाहरण है। अंततः 19वीं शताब्दी में सूर्यमल्ल मिश्रण ने बूंदी के इतिहास पर 'वंश भास्कर' जैसा वृहद ग्रंथ लिखा। यह क्रम राजस्थान के साहित्य की समृद्ध परंपरा को रेखांकित करता है।

105. (3) राजपूत मंडप स्थापत्य और मुगल गुंबद
राजस्थान में प्रचलित 'छतरी' स्थापत्य कला पूर्वजों और शासकों की स्मृति में निर्मित किए गए भव्य स्मारक हैं। यह स्थापत्य शैली पारंपरिक राजपूत मंडप वास्तुकला और मुगलकालीन गुंबद कला का एक अत्यंत सुंदर और कलात्मक समन्वय है। इन छतरियों में प्रायः ऊंचे चबूतरे पर अलंकृत खंभों के सहारे एक विशाल गुंबद या छज्जा बनाया जाता था। इनके निर्माण में स्थानीय पत्थरों का उपयोग और उन पर उकेरी गई सूक्ष्म नक्काशी राजपूतों के सौंदर्य बोध को प्रदर्शित करती है। यह शैली राजस्थान की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान का एक प्रमुख अंग है।

106. (2) I, II, III और IV
राजपूत राजवंशों के पतन के पीछे कई जटिल राजनीतिक और सैन्य कारण विद्यमान थे। राजपूतों की विकेंद्रीकृत कुल संरचना और आपसी प्रतिस्पर्धा ने उन्हें एक एकीकृत साम्राज्य बनाने से रोका। निरंतर युद्धों के कारण राज्य के आर्थिक संसाधन धीरे-धीरे समाप्त हो गए, जिससे सेना का आधुनिकीकरण नहीं हो सका। उत्तराधिकार के आंतरिक विवादों ने बाहरी शत्रुओं को हस्तक्षेप का अवसर दिया। इसके अतिरिक्त, राजपूतों की परंपरागत रक्षा प्रणाली मुगलों के आधुनिक तोपखाने और गतिशील युद्ध प्रणालियों के सामने अप्रभावी सिद्ध हुई, जिससे उनके राजनीतिक वर्चस्व का अंत हो गया।

107. (4) गुर्जर-प्रतिहार
भारत के प्रसिद्ध गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के शासक अपनी उत्पत्ति के संबंध में एक विशिष्ट गौरवपूर्ण दावा करते हैं। वे स्वयं को रामायण काल के मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के अनुज लक्ष्मण का वंशज मानते हैं। उनके अनुसार, जिस प्रकार लक्ष्मण ने भगवान राम के द्वारपाल या 'प्रतिहार' की भूमिका निभाई थी, उसी प्रकार इस वंश ने विदेशी आक्रांताओं से भारत की रक्षा करने हेतु देश के द्वारपाल के रूप में कार्य किया। इसीलिए उन्होंने 'प्रतिहार' नाम धारण किया। यह दावा उनकी वंशावली को सौर मूल और पवित्र क्षत्रिय परंपरा से जोड़ने का एक प्रयास है।

108. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के प्रमुख राजवंशों ने अपनी शक्ति के उदय के साथ ही विभिन्न स्थानों को अपनी प्रारंभिक राजधानी बनाया था। गुहिल राजवंश की सबसे प्राचीन राजधानी नागदा थी, जिसे बप्पा रावल के काल में प्रमुखता मिली। चौहानों ने सपादलक्ष क्षेत्र में शाकंभरी को अपना प्रथम राजनीतिक केंद्र स्थापित किया। राठौड़ राजवंश के राव चूंडा ने मंडोर को अपनी पहली बड़ी राजधानी बनाया। वहीं, कच्छवाहा राजवंश के दूल्हे राय ने 12वीं शताब्दी में दौसा को जीतकर अपनी सत्ता की नींव रखी थी। इन राजधानियों के माध्यम से ही इन राज्यों का कालांतर में विस्तार हुआ।

109. (3) बिजोलिया का शिलालेख
भीलवाड़ा जिले में स्थित 1170 ईस्वी का 'बिजोलिया शिलालेख' चौहान राजवंश के इतिहास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इस शिलालेख में चौहानों की उत्पत्ति के संबंध में उन्हें 'वत्स गोत्रीय ब्राह्मण' बताया गया है, जो इस वंश के धार्मिक और सामाजिक मूल पर एक नया दृष्टिकोण प्रदान करता है। इसमें चौहानों की प्रारंभिक वंशावली, उनके द्वारा जीते गए क्षेत्रों और तत्कालीन प्रशासनिक शब्दावली का भी उल्लेख मिलता है। यह लेख चौहानों के प्रारंभिक इतिहास और उनकी वंशावली की शुद्धता को प्रमाणित करने वाला एक विश्वसनीय ऐतिहासिक साक्ष्य माना जाता है।

110. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1191 ईस्वी में तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज तृतीय ने मुहम्मद गोरी की सेना को बुरी तरह परास्त किया था। ऐतिहासिक विश्लेषण के अनुसार, पृथ्वीराज इस महान विजय का पूर्ण राजनीतिक और सैन्य लाभ उठाने में विफल रहे। युद्ध में विजयी होने के बाद उन्होंने भागती हुई तुर्की सेना का पीछा कर उसे नष्ट करने के स्थान पर, उदारता दिखाते हुए उन्हें वापस जाने का अवसर दिया। पृथ्वीराज की इस पारंपरिक युद्ध नैतिकता ने मुहम्मद गोरी को पुनः संगठित होने और एक वर्ष बाद पूरी तैयारी के साथ आक्रमण करने का समय दे दिया, जिसका परिणाम अंततः विनाशकारी सिद्ध हुआ।

111. (1) राणा कुंभा
मेवाड़ के महाराणा कुंभा 15वीं शताब्दी के राजस्थान के सर्वाधिक प्रभावशाली शासक थे। उन्होंने न केवल मालवा बल्कि गुजरात के सुल्तान कुतुबुद्दीन अहमद शाह के बार-बार होने वाले आक्रमणों का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया और उन्हें पीछे हटने पर मजबूर किया। कुंभा को उनकी सैन्य विजयों के साथ-साथ एक महान निर्माता के रूप में भी याद किया जाता है। उन्होंने मेवाड़ में बत्तीस दुर्गों का निर्माण करवाया, जिनमें कुंभलगढ़ दुर्ग सर्वाधिक प्रसिद्ध है। उनके काल में स्थापत्य कला और साहित्य का ऐसा संगम हुआ कि उसे मेवाड़ के इतिहास का 'सांस्कृतिक स्वर्ण युग' कहा जाता है।

112. (1) केवल I और II
महाराणा कुंभा एक विद्वान रचनाकार थे जिन्होंने युद्ध कला के साथ-साथ संगीत और प्रेम शास्त्र पर भी अपनी लेखनी चलाई थी। 'कामराज रतिसार' उनकी सात अंगों वाली एक प्रसिद्ध रचना है, जो प्रेम और गृहस्थ जीवन के दर्शन पर आधारित है। इसी प्रकार 'सुधा प्रबंध' संगीत पर रचित उनकी एक महत्वपूर्ण कृति है। हालांकि, 'राज रत्नाकर' नामक ग्रंथ की रचना उनके दरबारी कवि सदाशिव भट्ट द्वारा की गई थी। कुंभा की इन रचनाओं से यह स्पष्ट होता है कि वे केवल एक योद्धा ही नहीं, बल्कि विभिन्न विषयों के गहन ज्ञाता और उच्च कोटि के दार्शनिक भी थे।

113. (4) सिंध
16वीं शताब्दी के आरंभ में महाराणा सांगा के नेतृत्व में मेवाड़ का साम्राज्य अपने भौगोलिक विस्तार के चरमोत्कर्ष पर था। अपनी अनेक सैन्य विजयों के माध्यम से सांगा ने मेवाड़ की सीमाओं को मध्य भारत तक फैला दिया था। ऐतिहासिक विवरणों के अनुसार, उस समय मालवा की ओर बढ़ते हुए 'सिंध नदी' मेवाड़ साम्राज्य की पूर्वी सीमा निर्धारित करती थी। यह विस्तार सांगा की अजेय सैन्य शक्ति और उत्तर भारतीय राजनीति

में उनके बढ़ते प्रभुत्व का परिचायक था। इस सुदृढ़ सीमा ने उन्हें दिल्ली और मालवा के सुल्तानों के विरुद्ध एक मजबूत रणनीतिक स्थिति और सुरक्षा कवच प्रदान किया था।

114. (2) I, II और IV
मारवाड़ के राव चंद्रसेन ने मुगल सम्राट अकबर की विस्तारवादी नीतियों का कड़ा विरोध किया था। 1570 ईस्वी के नागौर दरबार में वे उपस्थित तो हुए, किंतु मुगलों की अपमानजनक शर्तों को देखकर वे वहां से चले गए और संघर्ष का मार्ग चुना। उन्हें 'महाराणा प्रताप का अग्रगामी' कहा जाता है क्योंकि उन्होंने प्रताप से पूर्व ही पहाड़ों में रहकर छापामार युद्ध पद्धति अपनाई थी। हालांकि, वे अपने जीवनकाल में जोधपुर पर पुनः अधिकार करने में सफल नहीं हो सके। उन्हें अपने ही भाइयों के विरोध और मुगलों के निरंतर दबाव का सामना करना पड़ा था।

115. (3) मीनाकारी और ब्लू पॉटरी
आमेर के राजा मान सिंह प्रथम को राजस्थान में नवीन कला रूपों को प्रोत्साहित करने का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने लाहौर के मार्ग से फारस की प्रसिद्ध 'मीनाकारी' और 'ब्लू पॉटरी' कलाओं को आमेर के स्थानीय कलाकारों से परिचित करवाया। मीनाकारी में सोने और चांदी के आभूषणों पर रंगों की सूक्ष्म जड़ाई की जाती है, जबकि ब्लू पॉटरी में चीनी मिट्टी के बर्तनों पर नीले रंगों से सुंदर चित्रांकन किया जाता है। मान सिंह के प्रयासों से ये कलाएं जयपुर की पहचान बन गईं। आज ये कला रूप विश्व भर में राजस्थान की शिल्प कौशल और सांस्कृतिक समृद्धि के गौरवपूर्ण प्रतीक माने जाते हैं।

116. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
हाड़ौती के इतिहास में शासकों और प्रशासकों का योगदान अत्यंत विशिष्ट रहा है। राव सुरजन हाड़ा ने 1569 ईस्वी में कूटनीतिक कारणों से रणथंभौर का दुर्ग अकबर को सौंपकर मुगलों से संधि की। माधो सिंह शाहजहाँ के आदेश से कोटा के प्रथम स्वतंत्र शासक बने, जिससे हाड़ा वंश की नई शाखा का उदय हुआ। महाराव उम्मेद सिंह प्रथम के काल में बूंदी दुर्ग के भीतर भव्य 'चित्रशाला' का निर्माण हुआ, जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है। कोटा के शक्तिशाली दीवान जालिम सिंह ने 1817 ईस्वी में अंग्रेजों के साथ संधि कर राज्य की सुरक्षा और राजनीतिक भविष्य को सुनिश्चित किया था।

117. (3) सवाई ईश्वरी सिंह
1750 ईस्वी में जयपुर के शासक सवाई ईश्वरी सिंह को एक अत्यंत दुखद और विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ा। अपने सौतेले भाई माधो सिंह के साथ चल रहे लंबे उत्तराधिकार युद्ध और मराठों के भारी सैन्य दबाव तथा धन की निरंतर मांग के कारण वे मानसिक रूप से टूट गए थे। जब मराठा सेना जयपुर की ओर बढ़ी और सुरक्षा के कोई अन्य उपाय शेष नहीं रहे, तब उन्होंने विवश होकर जहर पीकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। उनकी मृत्यु जयपुर राज्य के इतिहास में मराठा हस्तक्षेप के काले दौर और एक राजपूत शासक की बेबसी को हृदयविदारक ढंग से दर्शाती है।

118. (1) I, II, III और IV
राजस्थान के राजपूत शासकों ने कला और साहित्य के विकास में अतुलनीय योगदान दिया। महाराणा जगत सिंह प्रथम ने उदयपुर में 'चितेरों की ओवरी' नामक कला विद्यालय की स्थापना की, जिसे 'तस्वीरों का कारखाना' भी कहा जाता है। सवाई प्रताप सिंह ने विद्वानों के समूह 'गुणिजन खाना' को संरक्षण दिया, जिससे जयपुर शैली समृद्ध हुई। किशनगढ़ के राजा सावंत सिंह के काल में विश्व प्रसिद्ध 'बनी-ठणी' पेंटिंग बनी। वहीं, चारण कवियों द्वारा रचित डिंगल साहित्य ने पश्चिमी राजस्थान की वीरगाथाओं को अमर बनाया। इन सभी प्रयासों ने मिलकर राजस्थान को एक अनूठी सांस्कृतिक विरासत प्रदान की है।

119. (4) मारु-गुर्जर शैली
झालावाड़ जिले के झालरापाटन में स्थित 10वीं शताब्दी का प्राचीन सूर्य मंदिर स्थापत्य कला की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह मंदिर मुख्य रूप से 'मारु-गुर्जर' स्थापत्य शैली के तत्वों का प्रतिनिधित्व करता है, जो मध्यकालीन राजस्थान और गुजरात के क्षेत्रों में विकसित हुई थी। मंदिर का भव्य शिखर, बारीक नक्काशीदार खंभे और बाहरी दीवारों पर उकेरी गई मूर्तियाँ इस क्षेत्रीय शैली की विशिष्टताओं को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करती हैं। इस मंदिर की बनावट में स्थानीय कला परंपराओं और शास्त्रीय स्थापत्य नियमों का सुंदर समावेश दिखाई देता है, जो इसे महत्वपूर्ण धार्मिक स्मारकों की श्रेणी में स्थापित करता है।

120. (1) मेड़ता के युद्ध में मराठों द्वारा राजपूत संघ की पराजय
18वीं शताब्दी के अंत तक मराठों ने राजस्थान के राजपूत राज्यों पर अपना कड़ा सैन्य और आर्थिक नियंत्रण स्थापित कर लिया था। 1790 ईस्वी में लड़ा गया 'मेड़ता का युद्ध' इस दृष्टि से निर्णायक सिद्ध हुआ, जिसमें मराठा सेना ने संगठित राजपूत संघ को करारी शिकस्त दी। इस पराजय ने राजपूतों की सैन्य शक्ति की कमर तोड़ दी और वे पूरी तरह से मराठों के कर-दाता बन गए। निरंतर लूटपाट और राजनीतिक अस्थिरता से तंग आकर अंततः राजपूत शासकों ने अपनी सुरक्षा और राज्य की रक्षा हेतु अंग्रेजों के साथ अधीनस्थ संधियाँ करना ही एकमात्र विकल्प समझा।

अध्याय 05
केंद्रीय सत्ता के साथ सहयोग एवं प्रतिरोध

1. आठवीं शताब्दी के दौरान राजस्थान और मालवा में अरब सेनाओं के बढ़ते कदम को रोकने का मुख्य श्रेय निम्नलिखित में से किस गुर्जर-प्रतिहार शासक को दिया जाता है?
(1) वत्सराज
(2) नागभट्ट प्रथम
(3) मिहिर भोज
(4) महेंद्रपाल प्रथम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. सूची I (आक्रमणकारी/शासक) को सूची II (संबद्ध युद्ध/घटना) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (आक्रमणकारी/शासक)
A. महमूद गजनवी
B. मोहम्मद गौरी
C. अर्णोराज
D. बप्पा रावल
सूची II: (संबद्ध युद्ध/घटना)
i. अजमेर के निकट गजनवी सेना की पराजय
ii. अरब सेनापति जुनैद के विरुद्ध प्रतिरोध
iii. सोमनाथ मंदिर की लूट
iv. पृथ्वीराज चौहान की पराजय
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. तराइन के प्रथम युद्ध (1191) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह युद्ध पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी के बीच लड़ा गया था।
II. दिल्ली के गोविंद राय ने राजपूत सेना के हरावल (अग्रिम टुकड़ी) का नेतृत्व किया था।
III. मोहम्मद गौरी ने निर्णायक विजय प्राप्त की और अजमेर पर अधिकार कर लिया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. उत्तर भारत के राजनीतिक परिदृश्य पर तराइन के द्वितीय युद्ध (1192) का सबसे महत्वपूर्ण प्रत्यक्ष परिणाम क्या था?
(1) इसके कारण बाबर के नेतृत्व में तत्काल मुगल साम्राज्य की स्थापना हुई।
(2) इसने 12वीं शताब्दी के दौरान मध्य भारत में चंदेल वंश के शासन को प्रभावी ढंग से समाप्त कर दिया।
(3) इसके परिणामस्वरूप राजपूत संघ और घोरियों के बीच एक स्थायी शांति संधि हुई।
(4) इसने चौहान शक्ति को समाप्त कर तुर्की शासन की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. अलाउद्दीन खिलजी के राजस्थान अभियानों के दौरान निम्नलिखित में से कौन सा राजपूत दुर्ग उसकी घेराबंदी और विजय का शिकार नहीं हुआ था?
(1) रणथंभौर
(2) चित्तौड़गढ़
(3) आमेर
(4) जालौर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राणा हम्मीर को 'मेवाड़ का उद्धारक' माना जाता है।
कारण (R): उन्होंने तुगलक सेना से चित्तौड़ वापस ले लिया और मेवाड़ पर गुहिल वंश का नियंत्रण पुनः स्थापित किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. राणा कुंभा के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) उन्होंने मालवा पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़ में विजय स्तंभ का निर्माण कराया।
(2) उन्होंने संगीत राज और संगीत मीमांसा सहित संगीत पर कई ग्रंथों की रचना की।
(3) उन्होंने कुंभलगढ़ सहित कई दुर्गों का निर्माण करके मेवाड़ की किलेबंदी की।
(4) उन्हें चंपानेर की संधि के तहत मालवा और गुजरात की

संयुक्त सेनाओं ने हराया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. राणा सांगा और बाबर के बीच संघर्ष से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. खानवा का युद्ध
II. बयाना का युद्ध
III. बाबर द्वारा जिहाद की घोषणा
इन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
(1) II, III, I
(2) I, II, III
(3) III, II, I
(4) II, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. अकबर की राजपूत नीति मूलतः निम्नलिखित में से किस प्राथमिक उद्देश्य से प्रेरित थी?
(1) राजपूत शासकों को सामूहिक रूप से इस्लाम में धर्म परिवर्तन के लिए विवश करना।
(2) राजपूत योद्धा वर्ग का पूर्णतः विनाश करना।
(3) मुगल साम्राज्य के विस्तार के लिए निष्ठावान सहयोगियों को सुरक्षित करना।
(4) सभी राजपूत राज्यों को सीधे आगरा के नियंत्रण में मिलाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. हल्दीघाटी के युद्ध के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) झाला बीदा - महाराणा प्रताप की प्राण रक्षा के लिए उनके राजचिह्न धारण किए
(2) हकीम खां सूरी - महाराणा प्रताप के तोपखाने के सेनापति
(3) आसफ खां - भील धनुर्धारियों के सेनापति
(4) मान सिंह - मेवाड़ के शासक जिन्होंने अकबर से वार्ता की
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. हल्दीघाटी के युद्ध के बाद छापामार युद्ध की ओर महाराणा प्रताप का रणनीतिक झुकाव मुख्य रूप से किस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति पर निर्भर था?
(1) मारवाड़ क्षेत्र के रेतीले मैदान।
(2) चंबल घाटी के उपजाऊ मैदान।
(3) हाड़ौती क्षेत्र का पठारी भाग।
(4) दक्षिणी मेवाड़ की अरावली पहाड़ियाँ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. मुगलों के साथ आमेर और मारवाड़ के सहयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आमेर के राजा भारमल अकबर के साथ वैवाहिक गठबंधन करने वाले पहले राजपूत शासक थे।
II. मिर्जा राजा जय सिंह ने शिवाजी के विरुद्ध औरंगजेब के अधीन एक प्रमुख सैन्य सेनापति के रूप में कार्य किया।
III. मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह ने मुगल उत्तराधिकार युद्ध के दौरान औरंगजेब का निरंतर समर्थन किया।
IV. आमेर के कच्छवाहों को मुगल दरबार में उच्च मनसब प्रदान किए गए थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और IV
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: 1679 में औरंगजेब द्वारा जजिया कर लगाने को सभी राजपूत राज्यों ने शांतिपूर्वक स्वीकार कर लिया था।
कथन II: मेवाड़ के महाराणा राज सिंह ने औरंगजेब को पत्र लिखकर जजिया को पुनः लागू करने का प्रखर विरोध किया था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. सूची I (राजपूत शासक) को सूची II (मराठा आक्रमण के दौरान भूमिका/घटना) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (राजपूत शासक)
A. सवाई जय सिंह
B. ईश्वरी सिंह
C. माधो सिंह प्रथम
D. जगत सिंह द्वितीय
सूची II: (मराठा आक्रमण के दौरान भूमिका/घटना)
i. हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता की
ii. मराठों द्वारा पराजित होने पर आत्महत्या कर ली
iii. हुरड़ा सम्मेलन के प्रस्तावक
iv. जयपुर नगर में मराठों का नरसंहार किया
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. 1823 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ सहायक संधि पर हस्ताक्षर करने वाला अंतिम राजपूत राज्य निम्नलिखित में से कौन सा था?
(1) सिरोही
(2) करौली
(3) कोटा
(4) मेवाड़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. अरब आक्रमणों के प्रारंभिक प्रतिरोध के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए:
(1) बप्पा रावल - मेवाड़
(2) दद्दा III - बीकानेर के राठौड़ शासक
(3) नागभट्ट प्रथम - अवंती (उज्जैन)
(4) पुलकेशिन II - दक्षिण गुजरात में चालुक्य प्रतिरोध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: राजस्थान से गुजरने सहित भारतीय क्षेत्रों पर आक्रमण करने में महमूद गजनवी का प्राथमिक उद्देश्य क्षेत्रीय विस्तार था।
कथन II: 1025 ईस्वी में महमूद गजनवी द्वारा सोमनाथ की लूट ने व्यापक विनाश किया, किंतु इसके परिणामस्वरुप राजपूताना में स्थायी गजनवी शासन स्थापित नहीं हुआ।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. 12वीं शताब्दी के दौरान लड़े गए निम्नलिखित युद्धों का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(1) तराइन का प्रथम युद्ध, तराइन का द्वितीय युद्ध, चंदावर का युद्ध
(2) चंदावर का युद्ध, तराइन का प्रथम युद्ध, तराइन का द्वितीय युद्ध
(3) तराइन का द्वितीय युद्ध, तराइन का प्रथम युद्ध, चंदावर का युद्ध
(4) तराइन का प्रथम युद्ध, चंदावर का युद्ध, तराइन का द्वितीय युद्ध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को पराजित करने में मोहम्मद गौरी को जो रणनीतिक लाभ मिला, वह मुख्य रुप से किसके उपयोग के कारण था?
(1) भारी तोपखाना और मैचलॉक।
(2) बंगाल से आयातित लड़ाकू हाथी।
(3) पीछे हटने का छलावा करने वाली हल्की घुड़सवार सेना।
(4) यमुना नदी की नौसैनिक नाकाबंदी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. अलाउद्दीन खिलजी के राजस्थान अभियानों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उसने रणथंभौर पर इसलिए आक्रमण किया क्योंकि हम्मीर देव ने मंगोल विद्रोहियों को शरण दी थी।
II. चित्तौड़ की घेराबंदी 1303 में हुई थी।
III. खिलजी के आक्रमण के समय जालौर पर कान्हड़ देव सोनगरा का शासन था।
IV. सिंवाना को जीतकर उसका नाम खैराबाद कर दिया गया था।
V. विजय के बाद खिज्र खान को चित्तौड़ का प्रशासक नियुक्त किया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह को निम्नलिखित में से किस ऐतिहासिक स्रोत में "विषम घाटी पंचानन" (विकट परिस्थितियों में सिंह के समान) की उपाधि से विभूषित किया गया है?
(1) एकलिंग माहात्म्य
(2) हम्मीर महाकाव्य
(3) कुंभलगढ़ प्रशस्ति
(4) राज प्रशस्ति
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. सूची I (ग्रंथ/स्थापत्य) को सूची II (राणा कुंभा से संबंधित) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (ग्रंथ/स्थापत्य)
A. रसिक प्रिया
B. कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति
C. अचलगढ़ दुर्ग
D. संगीत रत्नाकर
सूची II: (राणा कुंभा से संबंधित)
i. माउंट आबू में कुंभा द्वारा पुनर्निर्मित
ii. गीत गोविंद पर कुंभा द्वारा लिखित टीका
iii. कुंभा की विजयों का विवरण देने वाला शिलालेख
iv. कुंभा ने इस संगीत ग्रंथ पर एक टीका लिखी थी
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 1527 में खानवा के युद्ध में राणा सांगा को बाबर ने पराजित किया था।
कारण (R): बाबर के पास एक श्रेष्ठ घुड़सवार सेना थी और उसने प्रभावी ढंग से तुलुगमा पद्धति के साथ तोपखाने का प्रयोग किया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. निम्नलिखित में से कौन अकबर की राजपूत नीति में लागू "सुलह-ए-कुल" के सिद्धांत का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) राजनीतिक एकीकरण की ओर ले जाने वाली सार्वभौमिक शांति और धार्मिक सहिष्णुता।
(2) सभी प्रतिरोधी शक्तियों का पूर्ण सैन्य दमन।
(3) पराजित हिंदू राजाओं से अधिकतम खिराज (कर) वसूलना।
(4) धार्मिक स्वतंत्रता के बिना विवश वैवाहिक गठबंधन।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. हल्दीघाटी के युद्ध के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) यह 18 जून 1576 को लड़ा गया था।
(2) मुगल सेना का नेतृत्व आमेर के कुंवर मान सिंह ने किया था।
(3) युद्ध के अंत में महाराणा प्रताप को मुगल सेना ने जीवित बंदी बना लिया था।
(4) महाराणा प्रताप का प्रसिद्ध अश्व चेतक इस युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुआ था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. हल्दीघाटी के युद्ध के बाद महाराणा प्रताप की गतिविधियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने 1582 में दिवेर में मुगल चौकी को सफलतापूर्वक पराजित किया।
II. उन्होंने चावंड को अपनी नई राजधानी बनाया।
III. उन्होंने थकावट के कारण 1597 में अकबर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. 1678 में जमरुद में मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु के परिणामस्वरूप सीधे तौर पर निम्नलिखित में से कौन सी घटना हुई?
(1) औरंगजेब द्वारा मेवाड़ का तत्काल विलय।
(2) मराठों और मुगलों के बीच शांति संधि पर हस्ताक्षर।
(3) मुगल साम्राज्य से काबुल का स्थायी विच्छेद।
(4) मुगल साम्राज्य के विरुद्ध 30 वर्षीय राठौड़ विद्रोह का प्रारंभ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. औरंगजेब के विरुद्ध राठौड़ प्रतिरोध से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु
II. दुर्गादास राठौड़ की सहायता से अजीत सिंह का दिल्ली से पलायन
III. औरंगजेब द्वारा जजिया लगाना
इन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
(1) I, II, III
(2) I, III, II
(3) II, I, III
(4) III, I, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. हुरड़ा सम्मेलन (1734) मुख्य रूप से किस उद्देश्य से आहूत किया गया था?
(1) राजपूताना से अंग्रेजों को बाहर निकालने के लिए एक संयुक्त राजपूत मोर्चा बनाना।
(2) मेवाड़ और मारवाड़ के बीच सीमा विवाद को सुलझाना।
(3) बढ़ते मराठा आक्रमणों को रोकने के लिए राजपूत शासकों को एकजुट करना।
(4) नादिर शाह के आक्रमण के विरुद्ध मुगल सम्राट का समर्थन करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. सूची I (ब्रिटिश अधिकारी/गवर्नर जनरल) को सूची II (राजस्थान में नीति/घटना) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (ब्रिटिश अधिकारी/गवर्नर जनरल)
A. लॉर्ड वेलेजली
B. चार्ल्स मेटकाफ
C. लॉर्ड हेस्टिंग्स
D. कर्नल जेम्स टॉड
सूची II: (राजस्थान में नीति/घटना)
i. 1817-18 में राजपूत राज्यों के साथ सहायक संधियों की वार्ता की
ii. पश्चिमी राजपूत राज्यों के प्रथम 'पॉलिटिकल एजेंट'
iii. 'अधीनस्थ पृथक्करण' की नीति प्रारंभ की
iv. अलवर और भरतपुर के साथ प्रारंभिक संधियों का प्रयास किया
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. अरब आक्रमणों के विरुद्ध गुर्जर-प्रतिहारों के प्रतिरोध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नागभट्ट प्रथम ने जुनैद द्वारा भेजी गई एक विशाल अरब सेना को पराजित किया था।
II. ग्वालियर प्रशस्ति 'म्लेच्छों' पर नागभट्ट की विजय का विवरण प्रदान करती है।
III. मिहिर भोज को सिंध के अरबों ने सुगमता से पराजित कर दिया था।
IV. शक्तिशाली प्रतिहार साम्राज्य ने लगभग 300 वर्षों तक भारत में इस्लामी विस्तार के विरुद्ध एक सुदृढ़ दीवार के रूप में कार्य किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित में से कौन घोरी वंश का वह महत्वाकांक्षी शासक था जिसने भारत में अपने साम्राज्य का विस्तार करने का प्रयास किया और अंततः चौहानों से टकराया?
(1) सुबुक्तगीन
(2) मुइज़ुद्दीन मोहम्मद गौरी
(3) महमूद गजनवी
(4) कुतुबुद्दीन ऐबक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): तराइन के प्रथम युद्ध के बाद की गतिविधियों के लिए इतिहासकारों द्वारा प्रायः पृथ्वीराज चौहान की आलोचना की जाती है।
कारण (R): उन्होंने मोहम्मद गौरी की पराजित सेना को सुरक्षित वापस जाने दिया और अपनी सीमा सुरक्षा को सुदृढ़ नहीं किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. "तुलुगमा" युद्ध पद्धति की सैन्य अवधारणा, जो राजपूत सेनाओं के लिए विनाशकारी सिद्ध हुई, का सर्वोत्तम वर्णन है:
(1) एक ऐसी चाल जहाँ सेना की टुकड़ियाँ शत्रु को पीछे से घेर लेती हैं।
(2) पैदल सेना की पंक्तियों को तोड़ने के लिए भारी कवचयुक्त हाथियों का प्रयोग करना।
(3) गुप्त रूप से नदियों को पार करने के लिए तीव्र गति से तैरते हुए पुल बनाना।
(4) घेराबंदी किए गए दुर्ग की जल आपूर्ति में विष मिलाना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची I (राजपूत दुर्ग) को सूची II (अलाउद्दीन खिलजी द्वारा दिया गया नया नाम) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (राजपूत दुर्ग)
A. चित्तौड़गढ़
B. सिवाना
C. जालौर
D. रणथंभौर
सूची II: (अलाउद्दीन खिलजी द्वारा दिया गया नया नाम)
i. खैराबाद
ii. खिज्राबाद
iii. जलालाबाद
iv. नाम नहीं बदला गया
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. मेवाड़ के राणा हम्मीर के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) वे गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा से संबंधित थे।
(2) उन्होंने सिंगोली के युद्ध में दिल्ली सल्तनत की सेना को पराजित किया था।
(3) उन्होंने चित्तौड़गढ़ में अन्नपूर्णा माता मंदिर का निर्माण कराया था।
(4) उन्हें अलाउद्दीन खिलजी ने निर्णायक रूप से पराजित किया था और चित्तौड़ की रक्षा करते हुए उनकी मृत्यु हो गई थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. राणा कुंभा के शासनकाल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने मालवा के महमूद खिलजी को पराजित किया था।
II. उन्होंने अपने भ्राता खेमकरण के विद्रोह का दमन किया।
III. उन्होंने चंपानेर की संधि के तहत मालवा और गुजरात द्वारा किए गए संयुक्त आक्रमण से मेवाड़ की सफलतापूर्वक रक्षा की।
IV. वे एक कुशल वीणा वादक थे।
V. उनकी हत्या उनके अपने पुत्र उदा ने की थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. निम्नलिखित में से कौन सा नेता खानवा के युद्ध में राणा सांगा के नेतृत्व वाले संघ का भाग नहीं था?
(1) हसन खां मेवाती
(2) सिकंदर लोदी
(3) महमूद लोदी
(4) चंदेरी के मेदिनी राय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: आमेर के शासक भारमल ने 1562 में सांगानेर में स्वेच्छा से अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली थी।
कथन II: इस अधीनता की अन्य सभी राजपूत राज्यों द्वारा

प्रखर आलोचना की गई, जिससे आमेर के विरुद्ध तत्काल एकजुट राजपूत युद्ध प्रारंभ हो गया।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप द्वारा तैनात पारंपरिक राजपूत सैन्य संरचना का सही क्रम (अग्र भाग से पृष्ठ भाग की ओर) चुनिए:
(1) हरावल, चंद्रावल, वाम पाश्र्व
(2) हरावल, ढोलम, चंद्रावल
(3) अग्रिम टुकड़ी (हरावल), मध्य दल (घोल), पिछला दस्ता (चंद्रावल)
(4) मध्य दल (घोल), हरावल, चंद्रावल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. महाराणा प्रताप के सहयोगियों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) भामाशाह - प्रधान जिन्होंने प्रताप के साथ विश्वासघात कर उन्हें अकबर को सौंप दिया
(2) राव चंद्रसेन - मारवाड़ के शासक जिन्होंने प्रताप के विरुद्ध युद्ध किया
(3) पुंजा भील - हल्दीघाटी में भील सेना के सेनापति
(4) ताराचंद - प्रताप के दरबार में मुगल गुप्तचर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. सूची I (राजपूत सरदार) को सूची II (मुगल सम्राट द्वारा प्रदान किया गया उच्चतम मनसब) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (राजपूत सरदार)
A. आमेर के राजा मान सिंह
B. मिर्जा राजा जय सिंह
C. महाराजा जसवंत सिंह
D. सवाई जय सिंह
सूची II: (मुगल सम्राट द्वारा प्रदान किया गया उच्चतम मनसब)
i. 7000 जात और 7000 सवार
ii. 'सवाई' की उपाधि प्रदान की गई
iii. शिवाजी के विरुद्ध दक्कन में मुगल सेना के सेनापति
iv. पृथक-पृथक समय पर काबुल, मालवा और गुजरात के सूबेदार नियुक्त
(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. दुर्गादास राठौड़ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने औरंगजेब के कारावास से शिशु अजीत सिंह को सफलतापूर्वक बचाया।
II. उन्होंने मुगलों के विरुद्ध मेवाड़ के महाराणा राज सिंह के साथ गठबंधन किया।
III. उन्होंने महाराजा अजीत सिंह के विरुद्ध विद्रोह किया और अंततः मुगल दरबार में सम्मिलित हो गए।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रुप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 18वीं शताब्दी के मध्य में, राजपूताना की आंतरिक राजनीति में मराठा हस्तक्षेप अत्यधिक बढ़ गया था।
कारण (R): राजपूत राज्य प्रायः उत्तराधिकार के विवादों में उलझे रहते थे और अपने प्रतिद्वंद्वियों के विरुद्ध सैन्य सहायता के लिए सक्रिय रूप से मराठा सेनापतियों को आमंत्रित करते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. राजपूत राज्यों की आंतरिक गतिशीलता पर सहायक संधियों (1817-1818) का सबसे प्रत्यक्ष दुष्प्रभाव क्या था?
(1) शासकों ने अपने आंतरिक प्रशासन पर पूर्ण नियंत्रण मराठों के हाथों खो दिया।
(2) अंग्रेजों ने राजकीय दरबारों में हिंदू धर्म के उन्मूलन को अनिवार्य कर दिया।
(3) पारंपरिक सामंती नियंत्रण और संतुलन की व्यवस्था का विखंडन।
(4) तीव्र औद्योगिकीकरण के कारण गंभीर कृषक विद्रोह हुए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. 738 ईस्वी में प्रसिद्ध "राजस्थान का युद्ध", जिसने अरब विस्तार को रोक दिया था, अरब सेनाओं और मुख्य रूप से किसके नेतृत्व वाले संघ के बीच लड़ा गया था?
(1) पृथ्वीराज चौहान और जय चंद्र
(2) राणा सांगा और मेदिनी राय
(3) दुर्गादास राठौड़ और अजीत सिंह
(4) बप्पा रावल और नागभट्ट प्रथम
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. राजस्थान में गजनवी के आक्रमणों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) सोमनाथ की लूट के दौरान वह थार मरुस्थल से होकर

गुज़रा था।
(2) राजस्थान के शासकों ने एक एकीकृत राष्ट्रीय सेना बनाई जिसने सफलतापूर्वक महमूद गजनवी का वध किया।
(3) महमूद गजनवी ने राजस्थान के नाडोल में एक स्थायी राजधानी स्थापित की थी।
(4) शाकंभरी के चौहानों ने बिना युद्ध किए स्वेच्छा से गजनवी की अधीनता स्वीकार कर ली थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. सूची I (पृथ्वीराज चौहान के समकालीन) को सूची II (उनके साम्राज्य) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (पृथ्वीराज चौहान के समकालीन)
A. जय चंद्र
B. परमर्दी देव
C. भीम II
D. मोहम्मद गौरी
सूची II: (उनके साम्राज्य)
i. गुजरात के चालुक्य
ii. कन्नौज के गहड़वाल
iii. जेजाकभुक्ति के चंदेल
iv. घोरी साम्राज्य
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. तराइन के युद्धों के दौरान गोविंद राय के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वह दिल्ली का तोमर शासक और पृथ्वीराज चौहान का सामंत था।
II. तराइन के प्रथम युद्ध में उसने मोहम्मद गौरी को भाले से घायल कर दिया था।
III. तराइन के द्वितीय युद्ध में वह युद्ध के दौरान वीरगति को प्राप्त हुआ था।
IV. चौहानों की पराजय के बाद वह सफलतापूर्वक गुजरात भाग गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और IV
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. अलाउद्दीन खिलजी द्वारा राजस्थान में की गई निम्नलिखित विजयों पर विचार कीजिए:
I. चित्तौड़ की विजय
II. जालौर की विजय
III. रणथंभौर की विजय
IV. सिवाना की विजय
इन्हें कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए।
(1) III, I, IV, II
(2) I, III, II, IV
(3) III, I, II, IV
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. सिंगोली के युद्ध में राणा हम्मीर ने किस दिल्ली सुल्तान की सेना को निर्णायक रूप से पराजित किया था?
(1) गयासुद्दीन तुगलक
(2) फिरोज शाह तुगलक
(3) मोहम्मद बिन तुगलक
(4) अलाउद्दीन खिलजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: सारंगपुर का युद्ध (1437) राणा कुंभा और मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी के बीच लड़ा गया था।
कथन II: राणा कुंभा ने इस युद्ध में अपनी विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़गढ़ में विजय स्तंभ का निर्माण कराया था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. खानवा के युद्ध के बाद के परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजपूत संघ पूर्णतः बिखर गया।
II. राणा सांगा को उनके ही उन सामंतों ने विष दे दिया जिन्होंने बाबर के विरुद्ध युद्ध पुनः प्रारंभ करने का विरोध किया था।
III. बाबर ने 'गाजी' की उपाधि धारण की।
IV. मुगल साम्राज्य ने उत्तर भारत पर निर्विवाद वर्चस्व स्थापित कर लिया।
V. मेवाड़ ने तत्काल मुगल अधीनता स्वीकार कर ली।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. 1570 में नागौर दरबार में अकबर की अधीनता स्वीकार करने वाले निम्नलिखित राजपूत राज्यों में से बेमेल की पहचान कीजिए:
(1) बीकानेर
(2) मेवाड़
(3) जैसलमेर
(4) जोधपुर

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. महाराणा प्रताप को हल्दीघाटी के युद्ध का मैदान छोड़ने के लिए विवश होने का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) वे बंदूक की गोली से घातक रुप से घायल हो गए थे।
(2) उनके सेनापति हकीम खां सूरी ने उनके साथ विश्वासघात किया और मान सिंह से जा मिले।
(3) मूसलाधार वर्षा के कारण युद्ध जारी रखना असंभव हो गया था।
(4) जब वे घिर गए थे तो उनके सामंतों ने उन्हें पीछे हटने का आग्रह किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. सूची I (महाराणा प्रताप से संबंधित स्थान) को सूची II (महत्व) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (महाराणा प्रताप से संबंधित स्थान)
A. गोगुंदा
B. दिवेर
C. चावंड
D. कुंभलगढ़
सूची II: (महत्व)
i. उनके राज्याभिषेक का स्थल
ii. "मेवाड़ का मैराथन"
iii. उनकी अंतिम राजधानी जहाँ उनका निधन हुआ
iv. महाराणा प्रताप का जन्मस्थान
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. मुगलों के प्रति मिर्जा राजा जय सिंह की सेवाओं के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) उन्होंने तीन मुगल सम्राटों: जहांगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के अधीन सेवा की।
(2) उन्होंने शिवाजी को पराजित किया और उन्हें पुरंदर की संधि (1665) पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश किया।
(3) उन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह किया और आमेर की स्वतंत्रता की घोषणा की।
(4) 1667 में बुरहानपुर में उनका निधन हो गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): मेवाड़ के महाराणा राज सिंह ने मारवाड़ के अजीत सिंह को शरण दी थी।
कारण (R): राज सिंह औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता और विस्तारवादी नीतियों के विरुद्ध एक संयुक्त राजपूत गठबंधन बनाना चाहते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. राजमहल के युद्ध (1747) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह जयपुर के सिंहासन के लिए ईश्वरी सिंह और माधो सिंह के बीच लड़ा गया था।
II. माधो सिंह को मेवाड़, कोटा और मराठों सहित एक गठबंधन का समर्थन प्राप्त था।
III. ईश्वरी सिंह युद्ध हार गए और युद्ध के मैदान में वीरगति को प्राप्त हुए।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. 1817 में अंग्रेजों के साथ विस्तृत सहायक संधि करने वाला प्रथम राजपूत राज्य कौन सा था?
(1) जयपुर
(2) करौली
(3) जोधपुर
(4) कोटा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. मध्यकालीन अरब इतिहासकारों द्वारा गुर्जर-प्रतिहारों को प्रायः इस्लामी विस्तार के लिए सबसे बड़ी बाधा के रूप में वर्णित किया गया है। किस अरब यात्री के वृत्तांत में प्रतिहार घुड़सवार सेना की शक्ति और अरबों के प्रति उनकी शत्रुता का स्पष्ट उल्लेख है?
(1) इब्न बतूता
(2) अल-बिरुनी
(3) सुलेमान
(4) अल-मसूदी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. प्रारंभिक राजपूत प्रतिरोध का विवरण देने वाले निम्नलिखित ऐतिहासिक ग्रंथ और लेखक के युग्मों में से कौन सा सही सुमेलित है?
(1) पृथ्वीराज रासो - जयानक
(2) पृथ्वीराज विजय - चंद बरदाई
(3) कान्हड़दे प्रबंध - सोमदेव
(4) हम्मीर महाकाव्य - नयनचंद्र सूरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. तराइन के प्रथम युद्ध (1191) का तात्कालिक कारण मोहम्मद गौरी द्वारा किस रणनीतिक दुर्ग पर अधिकार करना था?
(1) तबरहिंद (भटिंडा)

(2) लाहौर
(3) सरहिंद
(4) हांसी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. तराइन के द्वितीय युद्ध में राजपूतों की पराजय के लिए उत्तरदायी निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. एक केंद्रीकृत स्थायी सेना का अभाव।
II. पारस्परिक वैमनस्य और कन्नौज जैसे पड़ोसी हिंदू राज्यों के समर्थन की कमी।
III. मोहम्मद गौरी की कपटपूर्ण कूटनीतिक चालें, जिसमें आक्रमण करने से पूर्व युद्धविराम का प्रस्ताव दिया गया था।
IV. तीव्र गति वाली तुर्की घुड़सवार सेना के विरुद्ध हाथियों पर राजपूतों की निर्भरता।
V. पृथ्वीराज के सेनापति स्कंद द्वारा विश्वासघात।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. सूची I (राजपूत शासक) को सूची II (अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध रक्षित राज्य) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (राजपूत शासक)
A. हम्मीर देव
B. रावल रतन सिंह
C. कान्हड़ देव
D. सीतल देव
सूची II: (अलाउद्दीन खिलजी के विरुद्ध रक्षित राज्य)
i. जालौर
ii. चित्तौड़
iii. सिवाना
iv. रणथंभौर
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मेवाड़ के राणा हम्मीर की विरासत का सही वर्णन करता है?
(1) उन्होंने गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा की स्थापना की।
(2) उन्होंने बिना युद्ध किए चित्तौड़ तुगलकों को सौंप दिया।
(3) वे गुहिलोत वंश के संस्थापक थे।
(4) उन्होंने दिल्ली सल्तनत के साथ वैवाहिक गठबंधन किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. 1468 में अपने पुत्र उदा द्वारा राणा कुंभा की हत्या का मेवाड़ पर क्या तात्कालिक प्रभाव पड़ा?
(1) इसके परिणामस्वरूप मालवा सल्तनत द्वारा मेवाड़ का तत्काल विलय कर लिया गया।
(2) इसके कारण राजधानी चित्तौड़ से उदयपुर स्थानांतरित हो गई।
(3) इससे राजनीतिक अस्थिरता का दौर आया और उदा द्वारा कुछ समय के लिए सत्ता हथिया ली गई।
(4) इसके कारण राणा सांगा को शांतिपूर्ण ढंग से सत्ता का हस्तांतरण हुआ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. खानवा के युद्ध में राजपूत-अफगान गठबंधन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हसन खां मेवाती ने राणा सांगा का समर्थन करने वाले एक महत्वपूर्ण सैन्य दस्ते का नेतृत्व किया।
II. महमूद लोदी ने बाबर से दिल्ली का सिंहासन पुनः प्राप्त करने के लिए राणा सांगा की सहायता मांगी थी।
III. गठबंधन ने बाबर के तोपखाने को सफलतापूर्वक नष्ट कर दिया।
IV. यह एक विदेशी आक्रमणकारी के विरुद्ध संयुक्त हिंदू-मुस्लिम संघ का एक विरल उदाहरण था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. राजपूत प्रमुखों को मुगल प्रशासनिक तंत्र में सम्मिलित करने की अकबर की नीति ने मुख्य रूप से किस व्यवस्था का उपयोग किया?
(1) इक्ता व्यवस्था
(2) दहसाला व्यवस्था
(3) मनसबदारी व्यवस्था
(4) चौथ और सरदेशमुखी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. हल्दीघाटी के युद्ध के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कर्नल जेम्स टॉड द्वारा इसे प्रायः "मेवाड़ की थर्मोपॉली" कहा जाता है।
II. शाही मुगल सेना की संख्या महाराणा प्रताप की सेना से अधिक थी।
III. महाराणा प्रताप ने युद्ध के दौरान व्यक्तिगत द्वंद्व में कुंवर मान सिंह का वध कर दिया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. मुगलों के विरुद्ध अपने प्रतिरोध के दौरान महाराणा प्रताप की "जली हुई धरती" (स्कॉर्च्ड अर्थ) नीति में सम्मिलित था:
(1) युद्धों में हस्तगत सभी मुगल प्रशासनिक प्रलेखों को जलाना।
(2) मुगल सैनिकों को फँसाने के लिए अरावली के वनों में अग्नि लगाना।
(3) मुगल दुर्गों के विरुद्ध घेराबंदी युद्ध में 'ग्रीक फायर' का उपयोग करना।
(4) आक्रमणकारी को संसाधनों से वंचित करने के लिए फसलों को नष्ट करना और मैदानी क्षेत्रों को रिक्त करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. सूची I (मुगल सम्राट) को सूची II (राजपूत शासक जिसने प्रमुख सेनापति/सहयोगी के रूप में कार्य किया) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।
सूची I: (मुगल सम्राट)
A. अकबर
B. शाहजहाँ
C. औरंगजेब
D. जहांगीर
सूची II: (राजपूत शासक जिसने प्रमुख सेनापति/सहयोगी के रूप में कार्य किया)
i. मिर्जा राजा जय सिंह (प्रारंभिक अभियान)
ii. राजा मान सिंह
iii. महाराजा जसवंत सिंह (शासन का प्रारंभिक भाग)
iv. मारवाड़ के राजा सूर सिंह
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु पर, औरंगजेब ने तुरंत उनके शिशु पुत्र अजीत सिंह को मारवाड़ के वैध शासक के रूप में मान्यता दे दी थी।
कथन II: औरंगजेब ने मारवाड़ को 'खालसा' (सीधे शाही नियंत्रण वाली भूमि) प्रशासन के अंतर्गत ला दिया, जिससे राठौड़ विद्रोह प्रारंभ हो गया।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. 1734 के हुरड़ा सम्मेलन में निम्नलिखित में से किस राजपूत राज्य का प्रतिनिधित्व नहीं था?
(1) जैसलमेर
(2) मेवाड़
(3) जयपुर
(4) जोधपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. राजपूत राज्यों द्वारा अंग्रेजों के साथ की गई सहायक संधियों की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. अंग्रेजों ने बाहरी शत्रुओं से राज्यों की रक्षा करने का वचन दिया।
II. शासकों को अन्य विदेशी शक्तियों के साथ स्वतंत्र रूप से वार्ता करने की अनुमति थी।
III. राज्यों को अंग्रेजों को खिराज देना पड़ता था।
IV. राजपूत दरबारों में एक ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया गया था।
V. शासकों की आंतरिक स्वायत्तता की सैद्धांतिक रूप से गारंटी दी गई थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, III, IV और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और IV
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मेवाड़ के बप्पा रावल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्हें मेवाड़ के गुहिल राज्य का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
II. उन्होंने मौर्यों से चित्तौड़ छीना था।
III. उन्होंने अरब आक्रमणों को सफलतापूर्वक विफल कर दिया।
IV. उन्होंने शैव प्रतीकों वाले स्वर्ण के सिक्के जारी किए।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) उपरोक्त में से कोई नहीं
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. किस राजपूत शासक को अजमेर के निकट गजनवी सेना को पराजित करने और पश्चात भूमि को उनके रक्त से स्वच्छ करने के लिए आनासागर झील के निर्माण का श्रेय दिया जाता है?
(1) पृथ्वीराज III
(2) विग्रहराज IV
(3) अर्णोराज
(4) अजयराज
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित में से कौन सा कथन तराइन के प्रथम युद्ध से ठीक पूर्व उत्तर भारत की भू-राजनीतिक स्थिति का सटीक वर्णन करता है?
(1) चौहान साम्राज्य तेजी से पतन की ओर था और चंदेलों से

क्षेत्र खो रहा था।
(2) पृथ्वीराज चौहान ने उत्तर भारत के सभी प्रमुख हिंदू राज्यों को एक ध्वज के नीचे सफलतापूर्वक एकीकृत कर लिया था।
(3) दिल्ली सल्तनत पहले से ही कुतुबुद्दीन ऐबक के अधीन मजबूती से स्थापित थी।
(4) घोरी और चौहान साम्राज्यों की पंजाब सीमा अस्थिर और साझा थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. तराइन के द्वितीय युद्ध के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विवरण ऐतिहासिक रूप से असत्य है?
(1) पृथ्वीराज चौहान सफलतापूर्वक पीछे हटने में सफल रहे और अगले दो दशकों तक अजमेर पर शासन किया।
(2) यह युद्ध 1192 ईस्वी में हुआ था।
(3) मोहम्मद गौरी ने अपनी घुड़सवार सेना को चारों ओर से आक्रमण करने के लिए चार भागों में विभाजित किया था।
(4) इस पराजय से चौहान साम्राज्य की शक्ति का विनाश हो गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध राजपूत प्रतिरोध के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) जालौर - रावल रतन सिंह
(2) रणथंभौर - हम्मीर देव चौहान
(3) चित्तौड़ - कान्हड़ देव सोनगरा
(4) सिवाना - वाग्भट्ट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. निम्नलिखित में से कौन सी राणा हम्मीर की सैन्य उपलब्धि नहीं थी?
(1) दिल्ली सल्तनत से चित्तौड़ को पुनः प्राप्त करना।
(2) मालवा क्षेत्र पर स्थायी शासन स्थापित करना।
(3) सिंगोली में मोहम्मद बिन तुगलक की सेना को पराजित करना।
(4) मालवा के कुछ भागों को सम्मिलित करने के लिए मेवाड़ की सीमाओं का विस्तार करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. मेवाड़ के राणा कुंभा और मालवा एवं गुजरात के सुल्तानों के बीच निरंतर सैन्य संघर्ष का सर्वाधिक उपयुक्त कारण क्या था?
(1) हाड़ौती और सीमावर्ती क्षेत्रों के नियंत्रण पर रणनीतिक विवाद।
(2) इस्लामी क्षेत्रों में हिंदू धर्म के प्रसार का धार्मिक उत्साह।
(3) सुल्तानों द्वारा राणा कुंभा द्वारा मांगे गए जजिया कर का भुगतान करने से मना करना।
(4) मेवाड़ को कुचलने के लिए दिल्ली सल्तनत के सीधे निर्देश।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: खानवा का युद्ध पानीपत के प्रथम युद्ध से अधिक निर्णायक माना जाता है।
कथन II: खानवा में, बाबर का सामना राजपूत और अफगान सेनाओं के एक दुर्जेय संघ से हुआ था, जिसने उसके नवोदित साम्राज्य के लिए इब्राहिम लोदी की तुलना में कहीं अधिक बड़ा संकट उत्पन्न किया था।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. अकबर के शासनकाल के दौरान राजपूत प्रमुखों के लिए प्रारंभ की गई "वतन जागीर" की अवधारणा का अर्थ था:
(1) उन्हें गैर-राजपूत क्षेत्रों में दी गई भूमि जो प्रायः स्थानांतरित कर दी जाती थी।
(2) राजपूत राज्यों से वसूला जाने वाला एक सैन्य कर।
(3) राजपूताना में हिंदू मंदिरों को दिया गया विशुद्ध रूप से धार्मिक अनुदान।
(4) उनके पैतृक राज्यों को गैर-हस्तांतरणीय जागीर के रूप में वंशानुगत अनुदान।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. हल्दीघाटी में महाराणा प्रताप की ओर से लड़ने वाले सेनापतियों के संदर्भ में बेमेल की पहचान कीजिए:
(1) हकीम खां सूरी
(2) रामशाह तोमर
(3) आसफ खां
(4) पुंजा भील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. दिवेर के युद्ध (1582) में महाराणा प्रताप की विजय का क्या प्रभाव पड़ा?
(1) इसने अकबर को मेवाड़ में व्यक्तिगत रूप से अभियान चलाने और प्रताप को बंदी बनाने के लिए विवश किया।
(2) मेवाड़ के अधिकांश विजित क्षेत्रों की तीव्र बहाली।
(3) इसके कारण प्रताप और जहांगीर के बीच तत्काल शांति संधि पर हस्ताक्षर हुए।
(4) इसके परिणामस्वरूप मुगलों के हाथों कुंभलगढ़ का विनाश हुआ।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. मुगल-राजपूत संबंधों के संदर्भ में, "मनसब" शब्द को सर्वोत्तम रूप से परिभाषित किया गया है:
(1) एक कूटनीतिक विवाह प्रस्ताव।
(2) राजपूत राज्यों पर लगाया जाने वाला एक विशेष कर।
(3) एक गुप्त गुप्तचर रिपोर्ट।
(4) मुगल प्रशासनिक और सैन्य पदानुक्रम में एक पद।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. औरंगजेब के विरुद्ध आजीवन संघर्ष के लिए निम्नलिखित मारवाड़ शासकों में से किसे 'मारवाड़ का उद्धारक' के रूप में जाना जाता है?

(1) दुर्गादास राठौड़
(2) महाराजा जसवंत सिंह
(3) महाराजा अजीत सिंह
(4) राव चंद्रसेन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. पड़ोसी क्षेत्रों से भू-राजस्व का चतुर्थांश वसूलने की मराठा प्रथा, जिसने 18वीं शताब्दी में राजपूत राज्यों की अर्थव्यवस्था को गंभीर रूप से प्रभावित किया, कहलाती थी:

(1) सरदेशमुखी
(2) जजिया
(3) चौथ
(4) जकात
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. अंग्रेजों और राजपूत राज्यों (1817-18) के बीच हस्ताक्षरित संधियों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) शासकों ने आंतरिक शक्तियों को बनाए रखते हुए ब्रिटिश सर्वोच्चता को स्वीकार किया।
(2) अंग्रेजों ने सभी राजपूत राज्यों का विलय कर लिया और उनके राजतंत्रों को समाप्त कर दिया।
(3) राजपूत राज्यों ने अंग्रेजों के विरुद्ध एक सामूहिक सैन्य गठबंधन बनाया।
(4) संधियों ने राजपूत राज्यों को फ्रांसीसियों के साथ राजनयिक संबंध बनाए रखने की अनुमति दी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. प्रारंभिक अरब आक्रमणों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?

(1) पश्चिमी भारत की रक्षा करने में गुर्जर-प्रतिहारों ने अग्रणी भूमिका निभाई।
(2) जुनैद सिंध का अरब राज्यपाल था जिसने राजस्थान में अभियानों का नेतृत्व किया था।
(3) बप्पा रावल ने अरब सेनाओं को पीछे धकेलने के लिए कई स्थानीय कुलों को एकजुट किया।
(4) पूरे राजस्थान क्षेत्र का स्थायी इस्लामीकरण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. गजनवी/घोरी आक्रमणों के दौरान राजपूत वंश और उसके मुख्य क्षेत्र के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:

(1) गुहिल - कन्नौज
(2) चौहान - अजमेर और सांभर
(3) गहड़वाल - मेवाड़
(4) तोमर - मालवा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान के पास निम्नलिखित में से कौन सा लाभ नहीं था?

(1) एक विशाल और संख्यात्मक रूप से श्रेष्ठ सेना।
(2) स्थानीय सामंतों का सुदृढ़ समर्थन।
(3) घोरी घुड़सवार सेना पर उनके गज दल की श्रेष्ठ गतिशीलता।
(4) परिचित भूभाग पर लड़ने से उच्च मनोबल।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. तराइन और चंदावर में घोरी की विजय के तुरंत बाद उत्तर भारत में सबसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक परिवर्तन क्या था?

(1) जमींदारी व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन।
(2) राजधानी का दिल्ली से लाहौर स्थायी रूप से स्थानांतरण।
(3) पूरी कृषक आबादी का तत्काल विवश धर्म परिवर्तन।
(4) तुर्की विजेताओं द्वारा इक्ता व्यवस्था की स्थापना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

कथन I: 1301 में अलाउद्दीन खिलजी की रणथंभौर विजय हम्मीर के सेनापतियों, रणमल और रतिपाल के विश्वासघात के कारण संभव हुई थी।

कथन II: विजय के बाद, अलाउद्दीन खिलजी ने उदारतापूर्वक रणमल और रतिपाल को रणथंभौर की सूबेदारी से पुरस्कृत किया।

(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. "जौहर" की अवधारणा, जो प्रायः राजपूत दुर्गों की दिल्ली सल्तनत की घेराबंदी के दौरान देखी जाती थी, मुख्य रूप से की जाती थी:

(1) राजपूत राजाओं द्वारा आत्मसमर्पण संधियों को औपचारिक रूप देने के लिए।
(2) बंदी बनने और दासता से बचने के लिए महिलाओं द्वारा सामूहिक आत्मदाह।
(3) राजपूत सैनिकों द्वारा अंतिम आत्मघाती हमले के लिए शत्रु के शिविर में घुसने के लिए।
(4) लंबे अनावृष्टि काल में ईश्वरीय सहायता प्राप्त करने के लिए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. राणा कुंभा की बौद्धिक विरासत से संबंधित ग्रंथों में से बेमेल की पहचान कीजिए:

(1) संगीत राज
(2) पद्मावत
(3) संगीत मीमांसा
(4) सुधा प्रबंध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. खानवा के युद्ध में राणा सांगा द्वारा की गई एक बड़ी रणनीतिक त्रुटि क्या थी जो उनकी पराजय का कारण बनी?
(1) बाबर को सुरक्षात्मक घेराबंदी स्थापित करने के लिए समय देना।
(2) उन्होंने रात्रि में आक्रमण करने का निर्णय लिया जब उनके सैनिक सज्जित नहीं थे।
(3) उन्होंने पूर्णतः पैदल सेना पर विश्वास करते हुए किसी भी घुड़सवार सेना को तैनात करने से मना कर दिया।
(4) उन्होंने यमुना नदी पार करते समय बाबर की सेना पर आक्रमण किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. राजपूत राज्यों के साथ "वैवाहिक गठबंधन" बनाने की मुगल प्रशासनिक नीति को शैक्षणिक रूप से किसके साधन के रूप में सर्वोत्तम रूप से परिभाषित किया गया है?
(1) राजपूत पहचान को समाप्त करने की ओर ले जाने वाला सांस्कृतिक आत्मसातीकरण।
(2) दहेज के माध्यम से राजपूत राजकोष को रिक्त करने का आर्थिक शोषण।
(3) सैन्य निष्ठा प्राप्त करना और सीमावर्ती क्षेत्रों को स्थिर करना।
(4) एक एकल भारतीय धर्म बनाने के उद्देश्य से धार्मिक समन्वय।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. हल्दीघाटी के युद्ध के दौरान, महाराणा प्रताप का वह प्रसिद्ध हाथी कौन सा था जिसने पकड़े जाने से पूर्व मुगल सेना में व्यापक विनाश किया था?
(1) चेतक
(2) मर्दाना
(3) गजमुक्ता
(4) रामप्रसाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

101. महाराणा प्रताप की विरासत के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) उन्हें केवल एक क्षेत्रीय सरदार के रूप में स्मरण किया जाता है जिन्होंने व्यक्तिगत गौरव के लिए युद्ध किया।
(2) उनकी विरासत की परवर्ती मेवाड़ शासकों द्वारा प्रखर आलोचना की गई जिन्होंने स्वेच्छा से अंग्रेजों के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया।
(3) वे अविचल स्वतंत्रता और देशभक्तिपूर्ण प्रतिरोध के प्रतीक हैं।
(4) उन्होंने अपने निधन से पूर्व कुछ समय के लिए आगरा और दिल्ली पर सफलतापूर्वक अधिकार कर लिया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

102. मारवाड़ (जोधपुर) और मुगलों के बीच गठबंधन के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) मोटा राजा उदय सिंह अकबर की अधीनता स्वीकार करने वाले प्रथम मारवाड़ शासक थे।
(2) महाराजा जसवंत सिंह ने कभी भी मुगल सेना की कमान नहीं संभाली क्योंकि वे निरंतर शाहजहाँ के विरुद्ध विद्रोह करते रहे।
(3) मारवाड़ के राठौड़ों और मुगल शाही परिवार के बीच वैवाहिक गठबंधन किए गए थे।
(4) 1678 में जसवंत सिंह की मृत्यु के पश्चात यह गठबंधन पूर्णतः टूट गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

103. औरंगजेब के विरुद्ध राजपूत प्रतिरोध के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) महाराणा राज सिंह - औरंगजेब की मंदिर विनाश नीति का समर्थन किया
(2) सवाई जय सिंह - मेवाड़ विद्रोह का नेतृत्व किया
(3) अजीत सिंह - स्वेच्छा से औरंगजेब के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया
(4) दुर्गादास राठौड़ - 30 वर्षों तक राठौड़ विद्रोह का नेतृत्व किया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

104. 18वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में बढ़ते मराठा आक्रमणों का निम्नलिखित में से कौन सा कारण नहीं था?
(1) राजपूताना को विजित करने के लिए अंग्रेजों और मराठों के बीच बना एक सुदृढ़ सैन्य गठबंधन।
(2) मुगल केंद्रीय सत्ता का निरंतर पतन।
(3) चौथ वसूलने के लिए राजपूत राज्यों की समृद्ध आर्थिक क्षमता।
(4) उत्तराधिकार के विवादों में हस्तक्षेप करने के लिए परस्पर विरोधी राजपूत गुटों द्वारा आमंत्रण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

105. अंग्रेजों के साथ 1817-18 की संधियों पर हस्ताक्षर करने के तुरंत पश्चात राजपूत राज्यों की राजनीतिक स्थिति का सर्वाधिक उपयुक्त वर्णन क्या है?
(1) संप्रभु और स्वतंत्र राष्ट्र।
(2) ब्रिटिश भारत के सीधे प्रशासित प्रांत।
(3) ब्रिटिश सर्वोच्चता के अंतर्गत अर्ध-स्वायत्त रियासतें।
(4) अंग्रेजों को खिराज देने वाले मराठा साम्राज्य के जागीरदार राज्य।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

106. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य ने कई शताब्दियों तक अरब आक्रमणों के विरुद्ध भारत की सीमाओं की सफलतापूर्वक रक्षा की।
कथन II: गुर्जर-प्रतिहारों के पतन ने उत्तर भारत में शक्ति का एक शून्य उत्पन्न कर दिया, जिससे यह परवर्ती तुर्की आक्रमणों के प्रति सुभेद्य हो गया।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।

(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

107. राजपूतों के विरुद्ध एक निर्णायक युद्ध के दौरान अपने सैनिकों को प्रेरित करने के लिए किस आक्रमणकारी द्वारा "गाजी" की अवधारणा का उपयोग किया गया था?
(1) सोमनाथ में महमूद गजनवी
(2) तराइन में मोहम्मद गौरी
(3) चित्तौड़ में अलाउद्दीन खिलजी
(4) खानवा में बाबर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

108. पृथ्वीराज चौहान के साथ तराइन के प्रथम युद्ध में भाग लेने वाले राजपूत सरदारों में से बेमेल की पहचान कीजिए:
(1) दिल्ली के गोविंद राय
(2) कन्नौज के जयचंद्र
(3) स्कंद
(4) भुवनमल्ल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

109. तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की पराजय का अजमेर क्षेत्र पर क्या प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा?
(1) इसे स्थायी रूप से घोरी साम्राज्य में मिला लिया गया, और किसी भी राजपूत को शासन करने की अनुमति नहीं दी गई।
(2) इसे महोबा के चंदेलों ने विजित किया था।
(3) इस पर गोविंदराज ने एक अधीनस्थ शासक के रूप में कुछ समय शासन किया।
(4) यह नवनिर्मित दिल्ली सल्तनत की राजधानी बना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

110. अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़गढ़ की प्रसिद्ध घेराबंदी का जीवंत वर्णन 1540 में रचित निम्नलिखित में से किस ऐतिहासिक साहित्यिक कृति में मिलता है?
(1) तारीख-ए-फिरोज शाही
(2) खजाइन-उल-फुतूह
(3) बाबरनामा
(4) पद्मावत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

111. राणा हम्मीर के शासनकाल के दौरान, मेवाड़ की सेना ने ईडर की प्रमुख सैन्य चौकी पर अधिकार कर लिया था। ईडर वर्तमान में किस राज्य में स्थित है?
(1) गुजरात
(2) राजस्थान
(3) मध्य प्रदेश
(4) महाराष्ट्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

112. राणा कुंभा की किलेबंदी की रणनीति के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) उन्होंने केवल एक दुर्ग कुंभलगढ़ बनवाया और अपने शेष राज्य की उपेक्षा की।
(2) उन्हें मेवाड़ के 84 दुर्गों में से 32 दुर्गों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।
(3) उन्होंने प्रासाद बनाने के लिए प्राचीन दुर्गों को नष्ट कर दिया था।
(4) वे अपने दुर्गों के अभिकल्प के लिए फ्रांसीसी अभियंताओं पर अत्यधिक निर्भर थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

113. खानवा के युद्ध के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) यह आधुनिक राजस्थान के भरतपुर जिले में लड़ा गया था।
(2) बाबर की सेना पूर्णतः पैदल सेना से निर्मित थी, जिसमें घुड़सवार सेना और तोपखाना दोनों का अभाव था।
(3) राणा सांगा युद्ध के दौरान गंभीर रूप से घायल होकर मूर्छित हो गए थे।
(4) रायसेन के सिलहदी के विश्वासघात ने राजपूत सेना को गंभीर रूप से प्रभावित किया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

114. राजपूताना के साथ अकबर की वार्ता के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) सुरजन हाड़ा - अकबर को रणथंभौर सौंप दिया
(2) राव चंद्रसेन - नागौर दरबार में अकबर की अधीनता स्वीकार की
(3) महाराणा उदय सिंह - चित्तौड़ की घेराबंदी में अकबर को पराजित किया
(4) राजा भारमल - महाराणा प्रताप के विरुद्ध मुगल सेना का नेतृत्व किया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

115. निम्नलिखित में से कौन हल्दीघाटी के युद्ध में सम्मिलित सैन्य सेनापति नहीं था?
(1) आसफ खां
(2) सैयद हाशिम
(3) महाबत खां
(4) रामदास राठौड़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

116. हल्दीघाटी के बाद के दशकों में महाराणा प्रताप की सैन्य रणनीति का सर्वाधिक उपयुक्त चित्रण क्या है?
(1) मुगलों को पराजित करने के लिए मैदानी क्षेत्रों में विशाल सम्मुख युद्धों पर निर्भर रहना।
(2) गुजरात में मुगल व्यापारिक मार्गों की नौसैनिक नाकाबंदी प्रारंभ करना।
(3) आधुनिक तोपखाना प्राप्त करने के लिए पुर्तगाली सेनाओं के साथ गठबंधन करना।

(4) निरंतर छापामार युद्ध करने के लिए अरावली की पर्वतमालाओं का उपयोग करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

117. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: आमेर के कच्छवाहा शासकों ने 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान मुगल साम्राज्य के साथ गहरा विद्वेषपूर्ण संबंध बनाए रखा।
कथन II: आमेर के राजा मान सिंह अकबर के विश्वासपात्र सेनापति थे और उन्होंने बंगाल, बिहार और काबुल के सूबेदार के रूप में कार्य किया।
(1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
(2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

118. 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजपूत राज्यों पर अंग्रेजों द्वारा स्थापित "सर्वोच्चता" (पैरामाउंटसी) की अवधारणा का वैधानिक अर्थ था:
(1) ब्रिटिश क्राउन ने भारत के सम्राट की उपाधि धारण की, और राजपूत राज्य मात्र जिले बन गए।
(2) आंतरिक शासक की संप्रभुता को मान्यता देते हुए बाह्य मामलों को नियंत्रित करना।
(3) राजपूत राज्य अंग्रेजों के साथ एक संघीय संघ में पूर्णतः समान भागीदार थे।
(4) व्यापारिक अधिकारों के लिए अंग्रेजों को राजपूत राजाओं को खिराज देने के लिए विवश किया गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

119. हुरड़ा सम्मेलन (1734) की विफलता का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) नादिर शाह के आकस्मिक आक्रमण ने प्रतिभागियों का ध्यान भटका दिया।
(2) मराठों ने मार्ग में ही प्रमुख राजाओं को रोककर उनका वध कर दिया।
(3) अंग्रेजों ने कूटनीतिक साधनों से सम्मेलन को सक्रिय रूप से विफल कर दिया।
(4) आपसी संदेह और हितों के टकराव ने एकीकृत कार्रवाई को रोक दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

120. ब्रिटिश-राजपूत संबंधों के संदर्भ में, चार्ल्स मेटकाफ कौन थे?
(1) वह अधिकारी जिसने 1817-18 की अधीनस्थ गठबंधन संधियों की वार्ता की।
(2) वह ब्रिटिश सेनापति जिसने मेड़ता के युद्ध में राजपूत संघ को पराजित किया था।
(3) भारत के गवर्नर-जनरल जिन्होंने 'व्यपगत का सिद्धांत' तैयार किया था।
(4) "एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान" के लेखक।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) नागभट्ट प्रथम
आठवीं शताब्दी में अरब आक्रमणकारियों ने भारत के पश्चिमी क्षेत्रों पर आक्रमण किया था। गुर्जर-प्रतिहार वंश के प्रतापी शासक नागभट्ट प्रथम ने सिंध की ओर से बढ़ते हुए अरब सेनापति जुनैद और उसकी सेना को पराजित कर राजस्थान तथा मालवा की रक्षा की। उनकी इस वीरतापूर्ण सफलता ने उत्तरी भारत में विदेशी आक्रमणों के प्रसार को कई वर्षों तक रोक दिया। ग्वालियर प्रशस्ति में नागभट्ट की उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन मिलता है।

2. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
महमूद गजनवी ने 1025 में सोमनाथ मंदिर को लूटकर भारी क्षति पहुँचाई थी। मोहम्मद गौरी ने 1192 के तराइन युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को पराजित किया। अजमेर के शासक अर्णोराज ने तुर्की सेना को हराकर आनासागर झील का निर्माण करवाया था। बप्पा रावल ने अरब सेनापति जुनैद के आक्रमणों का डटकर मुकाबला किया। ये सभी घटनाएँ राजस्थान के शौर्यपूर्ण इतिहास और विदेशी संघर्षों को दर्शाती हैं। इन सुमेलों से शासकों की भूमिका स्पष्ट होती है।

3. (1) केवल I और II
तराइन का प्रथम युद्ध 1191 में पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी के मध्य हुआ था। इस युद्ध में दिल्ली के शासक गोविंद राय ने राजपूत सेना के अग्रिम दल का नेतृत्व करते हुए गौरी को घायल कर दिया था। राजपूतों की संयुक्त वीरता के कारण मोहम्मद गौरी की सेना पराजित हुई और उसे पीछे हटना पड़ा। मोहम्मद गौरी की निर्णायक विजय तराइन के द्वितीय युद्ध में हुई थी। अतः प्रथम दो कथन पूर्णतः सत्य हैं।

4. (4) इसने चौहान शक्ति को समाप्त कर तुर्की शासन की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।
तराइन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी की विजय ने भारतीय इतिहास की दिशा बदल दी। पृथ्वीराज चौहान की पराजय के बाद अजमेर और दिल्ली पर तुर्की नियंत्रण स्थापित हो गया। इस युद्ध ने उत्तर भारत में सदियों पुराने राजपूत प्रभुत्व को समाप्त कर दिल्ली सल्तनत की नींव रखी। यह रणनीतिक विजय तुर्की सेनाओं के लिए भारत के आंतरिक भागों में विस्तार का माध्यम बनी। इससे राजपूतों की केंद्रीकृत सैन्य सत्ता का ह्रास हुआ।

5. (3) आमेर
अलाउद्दीन खिलजी ने राजस्थान के कई महत्वपूर्ण किलों पर आक्रमण किया था। उसने 1301 में रणथंभौर, 1303 में चित्तौड़गढ़ और 1311 में जालौर को लंबी घेराबंदी के बाद जीता। इन युद्धों में राजपूतों ने अभूतपूर्व वीरता दिखाई और जौहर किया। आमेर का कछवाहा राज्य उस दौरान खिलजी के प्रत्यक्ष सैन्य अभियान और विजय का केंद्र नहीं बना था। इस प्रकार आमेर खिलजी के अभियानों के दौरान विजित होने से बच गया था, जबकि अन्य दुर्गों का पतन हुआ।

6. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राणा हम्मीर सिंह को मेवाड़ के इतिहास में 'मेवाड़ का उद्धारक' माना जाता है। उन्होंने अलाउद्दीन खिलजी की मृत्यु के बाद उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाया और तुगलक सेना को पराजित कर चित्तौड़गढ़ दुर्ग को पुनः स्वतंत्र कराया। इस विजय के साथ ही उन्होंने मेवाड़ पर गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा के शासन की पुनर्स्थापना की। उनकी बहाली ने मेवाड़ को मध्यकालीन भारत की एक प्रमुख शक्ति बनाया। अतः अभिकथन और कारण दोनों सत्य हैं।

7. (4) उन्हें चंपानेर की संधि के तहत मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं ने हराया था।
राणा कुंभा मेवाड़ के एक प्रभावशाली और बहुआयामी शासक थे। उन्होंने मालवा के महमूद खिलजी पर अपनी ऐतिहासिक विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़गढ़ में विजय स्तंभ बनवाया था। वे कला और साहित्य के महान संरक्षक थे जिन्होंने 'संगीत राज' जैसे ग्रंथों की रचना की। हालांकि, मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं द्वारा उन्हें हराने का दावा ऐतिहासिक रूप से असत्य है, क्योंकि उन्होंने चंपानेर की संधि के बावजूद अपनी रक्षा सफलतापूर्वक की थी।

8. (1) II, III, I
राणा सांगा और मुगल आक्रांता बाबर के मध्य हुए संघर्ष का एक निश्चित कालक्रम है। फरवरी 1527 में बयाना के युद्ध में राजपूतों ने मुगलों को पराजित किया था। इसके पश्चात, बाबर ने अपनी सेना का मनोबल बढ़ाने के लिए धर्मयुद्ध (जिहाद) की घोषणा की और मदिरा का त्याग किया। अंततः, मार्च 1527 में खानवा के मैदान में निर्णायक युद्ध हुआ जहाँ बाबर की तोपें विजयी रहीं। अतः बयाना युद्ध, जिहाद घोषणा और खानवा युद्ध सही क्रम है।

9. (3) मुगल साम्राज्य के विस्तार के लिए निष्ठावान सहयोगियों को सुरक्षित करना।
सम्राट अकबर की राजपूत नीति का मुख्य उद्देश्य मुगल साम्राज्य को सुदृढ़ आधार प्रदान करना था। वह जानते थे कि भारत पर शासन करने के लिए राजपूत योद्धाओं की वीरता और स्वामीभक्ति आवश्यक है। इसलिए, उन्होंने दमन के स्थान पर वैवाहिक संबंधों, उच्च पदों और धार्मिक सहिष्णुता के माध्यम से उन्हें अपना निष्ठावान सहयोगी बनाया। इस नीति ने मुगलों को साम्राज्य विस्तार के लिए शक्तिशाली सैन्य और प्रशासनिक समर्थन तंत्र प्रदान किया, जिससे उनका वर्चस्व स्थापित हुआ।

10. (1) झाला बीदा - महाराणा प्रताप की प्राण रक्षा के लिए उनके राजचिह्न धारण किए
हल्दीघाटी का युद्ध 1576 में महाराणा प्रताप और अकबर की सेना के मध्य हुआ था। युद्ध के संकटपूर्ण समय में, जब प्रताप शत्रुओं से घिर गए थे, तब झाला बीदा ने उनका राजचिह्न और मुकुट धारण कर लिया। उन्होंने स्वयं को राणा घोषित कर मुगल सेना का ध्यान भटकाया, जिससे प्रताप सुरक्षित रूप से रणभूमि से निकल सके। झाला बीदा के इस महान बलिदान ने मेवाड़ के भविष्य की रक्षा की। हकीम खां सूरी तोपखाना नहीं, बल्कि अग्रिम दल के सेनापति थे।

11. (4) दक्षिणी मेवाड़ की अरावली पहाड़ियाँ।
हल्दीघाटी के युद्ध के उपरांत महाराणा प्रताप ने अपनी युद्ध रणनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। उन्होंने मुगलों की विशाल सेना का सामना करने के लिए छापामार युद्ध प्रणाली को अपनाया। इस रणनीति की सफलता दक्षिणी मेवाड़ की अरावली पहाड़ियों और घने वनों की दुर्गम भौगोलिक स्थिति पर निर्भर थी। इन पहाड़ियों ने प्रताप और उनकी भील सेना को प्राकृतिक सुरक्षा प्रदान की, जिससे वे लंबे समय तक मुगलों के विरुद्ध संघर्ष कर सके। अरावली की स्थिति ही उनके प्रतिरोध का आधार थी।

12. (2) केवल III
मुगल काल में राजपूत राज्यों के संबंधों के अध्ययन में मारवाड़ की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। जहाँ आमेर के राजा भारमल ने सर्वप्रथम वैवाहिक गठबंधन किया और मान सिंह ने उच्च पदों पर सेवा दी, वहीं मारवाड़ के जसवंत सिंह का औरंगजेब के साथ संबंध जटिल था। जसवंत सिंह ने उत्तराधिकार के युद्ध में प्रारंभ में दारा शिकोह का समर्थन किया था, न कि औरंगजेब का। इसलिए, उनका निरंतर औरंगजेब को समर्थन देने का कथन ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है। अन्य सभी कथन सत्य हैं।

13. (2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
औरंगजेब द्वारा 1679 में जजिया कर का पुनः लगाया जाना मुगल-राजपूत संबंधों के पतन का एक प्रमुख कारण बना। जहाँ कई राज्यों ने विवश होकर इसे स्वीकार किया, वहीं मेवाड़ के महाराणा राज सिंह ने इसका तीव्र विरोध किया था। उन्होंने सम्राट को एक कड़ा पत्र लिखकर इस कर को अन्यायपूर्ण और धार्मिक सहिष्णुता के विरुद्ध बताया। राज सिंह के इस साहसी कदम ने मेवाड़ को औरंगजेब की नीतियों के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रमुख केंद्र बना दिया। अतः कथन II सही है।

14. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
18वीं शताब्दी में मराठा आक्रमणों के विरुद्ध राजपूत राजाओं की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। सवाई जय सिंह ने मराठों को रोकने हेतु हुरड़ा सम्मेलन की योजना प्रस्तावित की थी। जयपुर के ईश्वरी सिंह ने मराठों के भारी सैन्य दबाव और आर्थिक माँगों के कारण विवश होकर आत्महत्या कर ली थी। माधो सिंह प्रथम ने जयपुर नगर में मराठा सैनिकों का नरसंहार करवाया था। मेवाड़ के जगत सिंह द्वितीय ने ऐतिहासिक हुरड़ा सम्मेलन की अध्यक्षता की थी। यह सुमेल राजपूतों की तत्कालीन स्थिति को दर्शाता है।

15. (1) सिरोही
19वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजपूत राज्यों ने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ सहायक संधियों पर हस्ताक्षर करना शुरु किया। करौली पहला राज्य था जिसने 1817 में संधि की, जबकि अधिकांश राज्यों ने 1818 के दौरान इन समझौतों को स्वीकार कर लिया। हालांकि, सिरोही राज्य ने आंतरिक विवादों और भौगोलिक कारणों से सबसे अंत में, 1823 में ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार किया। इस संधि के साथ ही राजस्थान के सभी प्रमुख राज्यों ने ब्रिटिश प्रभुत्व स्वीकार कर लिया। यह प्रक्रिया लॉर्ड हेस्टिंग्स के काल में पूर्ण हुई।

16. (2) दद्दा III - बीकानेर के राठौड़ शासक
प्रारंभिक मध्यकाल में अरबों के विरुद्ध भारतीय शासकों का प्रतिरोध अत्यंत गौरवशाली रहा है। मेवाड़ के बप्पा रावल और गुर्जर-प्रतिहार वंश के नागभट्ट प्रथम ने विदेशी आक्रमणकारियों को पीछे धकेलने में अद्वितीय भूमिका निभाई। दक्षिण गुजरात में चालुक्य शासक पुलकेशिन ने भी प्रभावशाली रक्षा की थी। हालांकि, दद्दा तृतीय का बीकानेर के राठौड़ शासक के रूप में वर्णन गलत है, क्योंकि वे भड़ौच के गुर्जर शासक थे और राठौड़ वंश की स्थापना बीकानेर में बहुत बाद में हुई थी।

17. (2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
महमूद गजनवी के भारत पर आक्रमणों का प्राथमिक उद्देश्य यहाँ की अतुलनीय धन-संपदा को लूटना और अपने मध्य एशियाई साम्राज्य को आर्थिक रूप से सुदृढ़ करना था। 1025 ईस्वी में उसने सोमनाथ मंदिर पर भयानक आक्रमण कर भारी विनाश किया। हालांकि राजस्थान के मार्गों से गुजरते हुए उसने कई क्षेत्रों को प्रभावित किया, किंतु उसने कभी भी राजपूताना में स्थायी शासन स्थापित करने या क्षेत्र विस्तार का प्रयास नहीं किया। उसके जाने के बाद राजपूतों ने अपनी सत्ता सुदृढ़ कर ली थी।

18. (1) तराइन का प्रथम युद्ध, तराइन का द्वितीय युद्ध, चंदावर का युद्ध
12वीं शताब्दी के अंत में उत्तर भारत के इतिहास में तीन निर्णायक युद्ध हुए थे। 1191 में तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी को पराजित किया। इसके ठीक एक वर्ष बाद, 1192 में तराइन के द्वितीय युद्ध में गौरी ने पृथ्वीराज को हराकर तुर्की सत्ता की नींव रखी। अंततः, 1194 में चंदावर के युद्ध में मोहम्मद गौरी ने कन्नौज के जयचंद्र गहड़वाल को हराकर गंगा के मैदानों पर अपना नियंत्रण स्थापित किया। यह कालक्रम ऐतिहासिक रूप से सर्वाधिक महत्वपूर्ण और सटीक है।

19. (3) पीछे हटने का छलावा करने वाली हल्की घुड़सवार सेना।
तराइन के द्वितीय युद्ध में मोहम्मद गौरी ने पृथ्वीराज चौहान के विरुद्ध एक सुविचारित युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया। उसने अपनी हल्की और तीव्रगामी तुर्की घुड़सवार सेना का उपयोग करते हुए राजपूतों को थकाने की रणनीति अपनाई। गौरी के सैनिक बार-बार पीछे हटने का नाटक करते और फिर अचानक आक्रमण कर देते थे। इस छलावे ने राजपूत सेना की पंक्तियों को अस्त-व्यस्त कर दिया। यह गतिशील युद्ध पद्धति हाथियों

पर आधारित पारंपरिक राजपूत सैन्य व्यवस्था पर भारी पड़ी, जिससे राजपूतों की हार हुई।

20. (4) I, II, III, IV और V
अलाउद्दीन खिलजी के राजस्थान अभियान अत्यंत आक्रामक और विस्तारवादी थे। उसने 1301 में रणथंभौर पर आक्रमण किया क्योंकि हम्मीर देव ने विद्रोही मंगोलों को शरण दी थी। 1303 में चित्तौड़ की विजय के बाद उसने उसे अपने पुत्र खिज्र खान को सौंपकर खिज्राबाद नाम दिया। 1308 में सिवाना को जीतकर उसका नाम खैराबाद किया गया और अंततः 1311 में जालौर पर अधिकार कर लिया। ये सभी तथ्य खिलजी की सैन्य सफलताओं और राजपूत प्रतिरोध की घटनाओं की ऐतिहासिक रूप से पुष्टि करते हैं।

21. (3) कुंभलगढ़ प्रशस्ति
मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह को सिसोदिया वंश की सत्ता को पुनर्स्थापित करने और तुगलकों को पराजित करने के लिए जाना जाता है। उनकी अद्भुत वीरता और विपरीत परिस्थितियों में अडिग रहने के कारण उन्हें कुंभलगढ़ प्रशस्ति में "विषम घाटी पंचानन" की उपाधि दी गई है। इस उपाधि का अर्थ है 'कठिन परिस्थितियों में सिंह के समान पराक्रमी'। यह सम्मान उनके द्वारा मेवाड़ को बाहरी दासता से मुक्त कराने और राज्य की प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने के प्रयासों का एक उत्कृष्ट प्रमाण है।

22. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राणा कुंभा न केवल एक महान योद्धा थे, बल्कि वे एक प्रकांड विद्वान और स्थापत्य कला के संरक्षक भी थे। उन्होंने जयदेव के 'गीत गोविंद' पर 'रसिक प्रिया' नामक प्रसिद्ध टीका लिखी थी। उनके शासनकाल की विजयों और उपलब्धियों का विस्तृत वर्णन कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति में उत्कीर्ण है। उन्होंने माउंट आबू में सामरिक महत्व के अचलगढ़ दुर्ग का पुनर्निर्माण करवाया था। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 'संगीत रत्नाकर' जैसे जटिल संगीत शास्त्र के ग्रंथों पर भी विद्वत्तापूर्ण टीकाएँ और विस्तृत व्याख्याएँ लिखी थीं।

23. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
खानवा का युद्ध 1527 में लड़ा गया था जिसमें मुगल आक्रांता बाबर ने राणा सांगा को पराजित किया। बाबर की सफलता का मुख्य कारण उसका आधुनिक सैन्य संगठन और नवीन रणनीतियाँ थीं। उसने अपनी सेना को संगठित करने के लिए 'तुलुगमा' पद्धति का प्रयोग किया, जिससे शत्रुओं को चारों ओर से घेरना संभव हुआ। साथ ही, बाबर के शक्तिशाली तोपखाने ने राजपूतों की पारंपरिक वीरता और घुड़सवार सेना पर घातक प्रहार किया, जिसके कारण सांगा की विशाल सेना भी पराजय से नहीं बच सकी।

24. (1) राजनीतिक एकीकरण की ओर ले जाने वाली सार्वभौमिक शांति और धार्मिक सहिष्णुता।
अकबर ने अपने साम्राज्य की स्थिरता के लिए "सुलह-ए-कुल" की नीति अपनाई, जिसका अर्थ 'सार्वभौमिक शांति' है। यह सिद्धांत सभी धर्मों और समुदायों के प्रति सहिष्णुता और समान व्यवहार पर आधारित था। राजपूतों के संदर्भ में, इस नीति ने उन्हें मुगल तंत्र में सम्मानजनक स्थान दिलाने और वैचारिक संघर्ष को कम करने में सहायता की। इससे न केवल साम्राज्य का राजनीतिक एकीकरण संभव हुआ, बल्कि राजपूतों की अटूट निष्ठा प्राप्त कर अकबर ने एक सुदृढ़ भारतीय साम्राज्य की नींव रखी।

25. (3) युद्ध के अंत में महाराणा प्रताप को मुगल सेना ने जीवित बंदी बना लिया था।
हल्दीघाटी का युद्ध 1576 में अरावली की संकरी घाटियों में लड़ा गया था। मुगल सेना का नेतृत्व आमेर के कुंवर मान सिंह ने किया, जबकि महाराणा प्रताप ने अपनी अनुशासित सेना का नेतृत्व किया। युद्ध अत्यंत भीषण था और प्रताप का प्रिय अश्व चेतक वीरता दिखाते हुए शहीद हो गया। हालांकि, यह कथन असत्य है कि प्रताप को मुगलों ने जीवित बंदी बना लिया था; वे सुरक्षित रूप से युद्ध क्षेत्र से निकलकर लंबे समय तक स्वाधीनता हेतु संघर्ष जारी रखने में सफल रहे थे।

26. (1) केवल I और II
हल्दीघाटी युद्ध के पश्चात महाराणा प्रताप ने संघर्ष जारी रखा। 1582 में दिवेर के युद्ध में उन्होंने मुगल चौकियों पर सफल आक्रमण किया और बड़े क्षेत्रों को पुनः मुक्त कराया। सुरक्षा और प्रशासनिक सुगमता की दृष्टि से उन्होंने चावंड को अपनी नई राजधानी बनाया, जहाँ उन्होंने कला और संस्कृति को संरक्षण दिया। उन्होंने 1597 में अपने निधन तक अकबर के समक्ष कभी आत्मसमर्पण नहीं किया, बल्कि अरावली की पहाड़ियों से स्वाधीनता की रक्षा हेतु संघर्ष का निरंतर नेतृत्व किया।

27. (4) मुगल साम्राज्य के विरुद्ध 30 वर्षीय राठौड़ विद्रोह का प्रारंभ।
1678 में अफगानिस्तान के जमरूद में महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु मारवाड़ के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। उनकी मृत्यु के पश्चात मारवाड़ में कोई वयस्क उत्तराधिकारी नहीं था, जिसका लाभ उठाकर औरंगजेब ने जोधपुर को सीधे मुगल नियंत्रण में ले लिया। इस अन्यायपूर्ण कार्रवाई और जसवंत सिंह के शिशु पुत्र अजीत सिंह के अधिकारों के हनन ने राठौड़ सरदारों को क्रुद्ध कर दिया। इसके परिणामस्वरूप मुगलों के विरुद्ध प्रसिद्ध 30 वर्षीय राठौड़ विद्रोह प्रारंभ हुआ, जिसका नेतृत्व दुर्गादास राठौड़ ने किया।

28. (2) I, III, II
औरंगजेब के काल में मारवाड़ के घटनाक्रमों का एक स्पष्ट कालक्रम है। 1678 में महाराजा जसवंत सिंह की जमरूद में मृत्यु हुई, जिसके बाद मुगल साम्राज्य ने मारवाड़ को खालसा घोषित कर दिया। इसके पश्चात, औरंगजेब ने 1679 में जजिया कर पुनः लागू किया, जिससे राजपूतों में भारी असंतोष फैला। इसी दौरान दुर्गादास राठौड़ ने अपनी बुद्धिमत्ता से शिशु अजीत सिंह को दिल्ली से सुरक्षित बाहर निकाला और मारवाड़ की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष तेज किया। अतः जसवंत सिंह की मृत्यु और जजिया सही क्रम है।

29. (3) बढ़ते मराठा आक्रमणों को रोकने के लिए राजपूत शासकों को एकजुट करना।
18वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही राजस्थान में मराठों का हस्तक्षेप और आर्थिक लूटपाट काफी बढ़ गई थी। इस संकट का सामना करने के लिए जयपुर के सवाई जय सिंह ने सभी राजपूत राज्यों को एकजुट करने का प्रयास किया। इसी उद्देश्य से 1734 में भीलवाड़ा के हुरड़ा नामक स्थान पर एक सम्मेलन आयोजित किया गया। इसका मुख्य लक्ष्य मराठों के बढ़ते आक्रमणों को रोकने के लिए एक संयुक्त सैन्य योजना बनाना और आपसी मतभेदों को भुलाकर संगठित होना था।

30. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
राजस्थान में ब्रिटिश प्रभाव के विस्तार में विभिन्न अधिकारियों की विशिष्ट भूमिकाएँ रही हैं। लॉर्ड वेलेजली ने प्रारंभ में अलवर और भरतपुर जैसे राज्यों के साथ रक्षात्मक संधियों का प्रयास किया था। चार्ल्स मेटकाफ ने 1817-18 के दौरान राजपूत राज्यों के साथ विस्तृत सहायक संधियों की वार्ताएँ संपन्न कीं। लॉर्ड हेस्टिंग्स ने 'अधीनस्थ पृथक्करण' की नीति को प्रभावी ढंग से लागू किया। कर्नल जेम्स टॉड को पश्चिमी राजपूत राज्यों के प्रथम राजनीतिक प्रतिनिधि के रूप में नियुक्त किया गया था।

31. (2) केवल III
गुर्जर-प्रतिहार वंश ने मध्यकालीन भारत में इस्लामी विस्तार को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नागभट्ट प्रथम ने सिंध के अरब सेनापति जुनैद को पराजित कर अपनी सीमाओं की रक्षा की, जिसका विवरण ग्वालियर प्रशस्ति में मिलता है। इस शक्तिशाली साम्राज्य ने लगभग तीन शताब्दियों तक अरब आक्रमणों का प्रभावी ढंग से मुकाबला किया। हालांकि, मिहिर भोज के बारे में यह कहना गलत है कि वे अरबों से हार गए थे; वास्तव में वे उनके सबसे शक्तिशाली और अजेय शत्रु माने जाते थे।

32. (2) मुइज़ुद्दीन मोहम्मद गौरी
घोरी वंश का शासक मुइज़ुद्दीन मोहम्मद गौरी भारत में तुर्की सत्ता का वास्तविक संस्थापक माना जाता है। उसने गजनी और मुल्तान को जीतने के बाद अपना ध्यान गंगा-यमुना के मैदानों और राजस्थान की ओर केंद्रित किया। उसके इस विस्तारवादी अभियान के कारण उसका सीधा टकराव अजमेर के शक्तिशाली चौहान शासक पृथ्वीराज तृतीय से हुआ। तराइन के युद्धों ने दोनों के बीच संघर्ष को निर्णायक मोड़ दिया, जिससे उत्तर भारत में राजपूत शासन के स्थान पर मुस्लिम सल्तनत की स्थापना का मार्ग प्रशस्त हुआ।

33. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तराइन के प्रथम युद्ध में विजय प्राप्त करने के बाद पृथ्वीराज चौहान की रणनीतिक दूरदर्शिता पर इतिहासकार प्रश्न उठाते हैं। उन्होंने पराजित और भागते हुए मोहम्मद गौरी को सुरक्षित वापस जाने दिया, जो एक बड़ी सैन्य भूल सिद्ध हुई। इसके अतिरिक्त, उन्होंने अपनी पश्चिमी सीमाओं की किलेबंदी सुदृढ़ नहीं की और पड़ोसी राजपूत राजाओं के साथ सहयोग बढ़ाने के स्थान पर अपनी विजय के गौरव में रहे। इन्हीं कारणों से गौरी को अपनी सेना पुनर्गठित करने और अगले वर्ष भारी तैयारी के साथ लौटने का अवसर मिला।

34. (1) एक ऐसी चाल जहाँ सेना की टुकड़ियाँ शत्रु को पीछे से घेर लेती हैं।
"तुलुगमा" एक विशिष्ट मंगोलियाई युद्ध पद्धति थी जिसे बाबर ने मध्य एशिया से सीखा और भारत में प्रयुक्त किया। इस रणनीति में सेना को विभिन्न टुकड़ियों में विभाजित किया जाता था, जो शत्रु पर सम्मुख आक्रमण करने के साथ-साथ उनके दोनों किनारों और पीछे से घेर लेती थीं। इस चक्रव्यूह जैसी संरचना ने राजपूतों की पारंपरिक सम्मुख युद्ध शैली को विफल कर दिया। अचानक चारों ओर से होने वाले हमलों और तोपखाने के समन्वय ने विशाल सेनाओं को पराजित करने में बाबर की सहायता की थी।

35. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
अलाउद्दीन खिलजी ने जब राजस्थान के दुर्गों को विजित किया, तो उसने उनके नाम बदलकर अपनी जीत और परिवार का प्रभुत्व स्थापित किया। चित्तौड़गढ़ को जीतने के बाद उसने इसका नाम अपने पुत्र के सम्मान में 'खिज्राबाद' रखा। सिवाना दुर्ग का नाम बदलकर 'खैराबाद' कर दिया गया और जालौर की विजय के पश्चात उसे 'जलालाबाद' के रूप में जाना जाने लगा। हालांकि, रणथंभौर की विजय के बाद उसने आधिकारिक तौर पर उसका कोई नया नाम नहीं बदला था, बल्कि उसे पूर्णतः प्रशासनिक नियंत्रण में ले लिया था।

36. (4) उन्हें अलाउद्दीन खिलजी ने निर्णायक रूप से पराजित किया था और चित्तौड़ की रक्षा करते हुए उनकी मृत्यु हो गई थी।
मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा के प्रवर्तक थे। उन्होंने अपनी वीरता से खिलजी के पतन के बाद मेवाड़ को तुगलक शासन से मुक्त कराया। सिंगोली के युद्ध में उन्होंने मोहम्मद बिन तुगलक की सेना को पराजित कर चित्तौड़ पर अधिकार सुदृढ़ किया था। उन्होंने धार्मिक कार्यों में भी रुचि दिखाई और अन्नपूर्णा माता मंदिर का निर्माण कराया। यह कथन असत्य है कि वे अलाउद्दीन खिलजी से हारे; वास्तव में वे खिलजी के काल के बहुत बाद के प्रतापी शासक थे।

37. (4) I, II, III, IV और V
राणा कुंभा का शासनकाल मेवाड़ की चहुंमुखी उन्नति का युग था। उन्होंने मालवा के महमूद खिलजी को हराकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन किया और अपने भाई खेमकरण के विद्रोह को कुशलतापूर्वक दबाया। चंपानेर की संधि के तहत मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं ने मेवाड़ पर आक्रमण किया, किंतु कुंभा ने उन्हें विफल कर दिया। वे स्वयं एक उत्कृष्ट संगीतज्ञ और वीणा वादक थे। अंततः, 1468 में उनके अपने पुत्र उदा ने सत्ता के लालच में उनकी हत्या कर दी, जिससे उनके महान शासन का अंत हुआ।

38. (2) सिकंदर लोदी
खानवा के युद्ध में राणा सांगा ने बाबर के विरुद्ध एक विशाल राजपूत और अफगान संघ का नेतृत्व किया था। इस संघ में मेवात के हसन खां मेवाती, चंदेरी के मेदिनी राय और इब्राहिम

लोदी के भाई महमूद लोदी जैसे प्रमुख सेनापति सम्मिलित थे। वे सभी बाबर को भारत से बाहर निकालने के लिए एकजुट हुए थे। हालांकि, दिल्ली का पूर्व सुल्तान सिकंदर लोदी इस युद्ध में सम्मिलित नहीं था, क्योंकि बाबर के आगमन और पानीपत के युद्ध से काफी पहले ही उसका निधन हो चुका था।

39. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
1562 में आमेर के राजा भारमल ने स्वेच्छा से सांगानेर में सम्राट अकबर की अधीनता स्वीकार की थी। उन्होंने अपनी पुत्री का विवाह अकबर से कर मुगलों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित करने वाले पहले राजपूत शासक का गौरव प्राप्त किया। यह एक कूटनीतिक निर्णय था जिसने आमेर को गृहयुद्ध और बाहरी खतरों से सुरक्षा प्रदान की। हालांकि, अन्य राजपूत राज्यों ने इसे तुरंत स्वीकार नहीं किया, लेकिन आमेर के विरुद्ध किसी संयुक्त युद्ध की स्थिति उत्पन्न नहीं हुई; बल्कि धीरे-धीरे अन्य राज्यों ने समझौते किए।

40. (3) अग्रिम टुकड़ी (हरावल), मध्य दल (घोल), पिछला दस्ता (चंद्रावल)
हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप ने अपनी सेना को पारंपरिक और सुव्यवस्थित व्यूह रचना में व्यवस्थित किया था। इसमें सबसे आगे रहने वाले दस्ते को 'हरावल' कहा जाता था, जिसमें हकीम खां सूरी और अग्रिम योद्धा सम्मिलित थे। सेना के मुख्य मध्य भाग को 'घोल' कहा जाता था, जहाँ स्वयं महाराणा प्रताप स्थिति संभालते थे। सबसे पीछे रहने वाली सुरक्षात्मक टुकड़ी को 'चंद्रावल' कहा जाता था, जो पीछे से होने वाले हमलों को रोकने के लिए उत्तरदायी थी। यह संरचना वीरता और अनुशासन का संतुलित मिश्रण थी।

41. (3) पुंजा भील - हल्दीघाटी में भील सेना के सेनापति
हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप को समाज के विभिन्न वर्गों का अटूट सहयोग प्राप्त था। विशेष रूप से, भील जनजाति के योद्धाओं ने अरावली के जंगलों में अपनी छापामार युद्ध कला से मुगलों को भारी क्षति पहुँचाई। इस भील सेना का सफल नेतृत्व पुंजा भील ने किया था, जिन्हें आज भी उनकी वीरता और स्वामीभक्ति के लिए गौरव के साथ याद किया जाता है। अन्य विकल्पों में भामाशाह ने अपनी संपत्ति दान की थी और राव चंद्रसेन मारवाड़ के स्वतंत्र सेनानी थे, जिन्होंने प्रताप का सहयोग किया था।

42. (1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
मुगल प्रशासन में राजपूत शासकों को उनकी निष्ठा और सैन्य क्षमता के आधार पर मनसब तथा ऊँची उपाधियाँ प्रदान की जाती थीं। आमेर के राजा मान सिंह को अकबर के काल में सर्वाधिक 7000 का मनसब प्राप्त था। मिर्जा राजा जय सिंह ने दक्कन में शिवाजी के विरुद्ध मुगलों का नेतृत्व किया और महत्वपूर्ण संधियाँ संपन्न कीं। महाराजा जसवंत सिंह ने काबुल और गुजरात जैसे दूरस्थ प्रांतों की सूबेदारी संभाली। सवाई जय सिंह को उनकी विद्वत्ता के लिए 'सवाई' की उपाधि और औरंगजेब के परवर्ती सम्राटों से सम्मान मिला था।

43. (1) केवल I और II
वीर दुर्गादास राठौड़ मारवाड़ की स्वतंत्रता के अटूट प्रहरी थे। उन्होंने औरंगजेब की कैद और षड्यंत्रों से बालक अजीत सिंह को सुरक्षित निकाल कर दिल्ली से बाहर लाने में अद्भुत साहस दिखाया था। उन्होंने मुगलों की विस्तारवादी नीति को विफल करने के लिए मेवाड़ के महाराणा राज सिंह के साथ एक सुदृढ़ राजपूत गठबंधन बनाया। हालांकि, बाद के वर्षों में अजीत सिंह के साथ उनके मतभेद हुए, लेकिन वे कभी मुगलों से नहीं मिले; बल्कि अपनी अंतिम सांस तक स्वाभिमान और राष्ट्रभक्ति के सिद्धांतों पर अडिग रहे।

44. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
18वीं शताब्दी के मध्य में राजस्थान की राजनीति अत्यंत अस्थिर हो गई थी, जिसका मुख्य कारण राजपूत राज्यों के आंतरिक उत्तराधिकार संघर्ष थे। जयपुर और मारवाड़ जैसे राज्यों में गद्दी के लिए होने वाले विवादों में विभिन्न गुटों ने अपनी जीत सुनिश्चित करने हेतु मराठा सेनापतियों को सैन्य सहायता के लिए आमंत्रित किया। मराठों ने इस अवसर का लाभ उठाकर भारी धन वसूला और धीरे-धीरे वे राजस्थान के आंतरिक मामलों में निर्णायक भूमिका निभाने लगे। इस हस्तक्षेप ने राजपूत राज्यों की सैन्य शक्ति को दुर्बल कर दिया।

45. (3) पारंपरिक सामंती नियंत्रण और संतुलन की व्यवस्था का विखंडन।
1817-18 में ब्रिटिश सहायक संधियों ने राजपूत राज्यों की पारंपरिक सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया। इन संधियों के बाद ब्रिटिश राजनीतिक प्रतिनिधियों का हस्तक्षेप बढ़ गया, जिससे राजाओं की निरपेक्ष सत्ता और उनके सामंतों के बीच का पुराना संतुलन टूट गया। सामंतों के सैन्य उत्तरदायित्व समाप्त हो गए और राजा अब अपनी सुरक्षा के लिए अंग्रेजों पर निर्भर रहने लगे। इससे सदियों पुरानी सामंती मर्यादाओं का ह्रास हुआ और राज्यों की आंतरिक प्रशासनिक स्वायत्तता केवल नाममात्र रह गई।

46. (4) बप्पा रावल और नागभट्ट प्रथम
आठवीं शताब्दी में सिंध के मार्ग से भारत में बढ़ते अरब आक्रमणों को रोकने के लिए राजस्थान में एक विशाल संयुक्त मोर्चा बनाया गया था। 738 ईस्वी के 'राजस्थान के युद्ध' में मेवाड़ के बप्पा रावल और गुर्जर-प्रतिहार वंश के नागभट्ट प्रथम ने मिलकर अरब सेनाओं को करारी शिकस्त दी थी। उनकी इस वीरतापूर्ण जीत ने भारतीय उपमहाद्वीप में इस्लामी विस्तार को कई दशकों तक के लिए रोक दिया। यह युद्ध भारतीय इतिहास में क्षेत्रीय गौरव और एकजुट प्रतिरोध के एक महान उदाहरण के रूप में सदैव अंकित रहेगा।

47. (1) सोमनाथ की लूट के दौरान वह थार मरुस्थल से होकर गुजरा था।
महमूद गजनवी ने जब 1025 ईस्वी में प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर पर आक्रमण किया, तो उसने थार मरुस्थल और राजस्थान के क्षेत्रों को अपने मार्ग के रूप में चुना था। इस अभियान के दौरान उसे अनेक छोटे-बड़े राजपूत प्रतिरोधों का सामना करना पड़ा, किंतु उसका मुख्य उद्देश्य लूटपाट करना था, शासन करना नहीं। उसने

कभी भी राजस्थान में कोई स्थायी राजधानी नहीं बनाई और न ही यहाँ के शासकों ने उसके विरुद्ध कोई सुसंगठित राष्ट्रीय सेना का गठन किया था। गजनवी के प्रस्थान के बाद स्थानीय राजाओं ने अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली।

48. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
पृथ्वीराज चौहान के शासनकाल में उत्तर भारत की भू-राजनीति विभिन्न शक्तिशाली राजवंशों में विभक्त थी। उनके समकालीन शासकों में कन्नौज के जयचंद्र गहड़वाल प्रमुख थे, जिनसे उनकी दीर्घकालिक शत्रुता रही। महोबा क्षेत्र पर चंदेल राजा परमर्दी देव का शासन था, जिन्हें पृथ्वीराज ने पराजित किया था। गुजरात में चालुक्य वंश के भीम द्वितीय शासन कर रहे थे, जिनके साथ चौहानों के सीमा विवाद थे। इसी कालखंड में उत्तर-पश्चिम से मोहम्मद गौरी ने घोरी साम्राज्य का विस्तार करते हुए भारत पर आक्रमण कर चौहान सत्ता को चुनौती दी थी।

49. (2) केवल IV
गोविंद राय दिल्ली के शासक और पृथ्वीराज चौहान के एक अत्यंत निष्ठावान सामंत थे। तराइन के प्रथम युद्ध में उन्होंने अदम्य साहस दिखाते हुए मोहम्मद गौरी पर अपने भाले से प्रहार किया, जिससे गौरी गंभीर रूप से घायल हो गया और उसकी सेना में भगदड़ मच गई। 1192 के तराइन के द्वितीय युद्ध में भी उन्होंने वीरतापूर्वक संघर्ष किया, किंतु दुर्भाग्यवश वे रणभूमि में शहीद हो गए। यह कथन पूर्णतः गलत है कि वे पराजय के बाद गुजरात भाग गए थे; उन्होंने अपनी मातृभूमि की रक्षा में अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था।

50. (1) III, I, IV, II
अलाउद्दीन खिलजी की राजस्थान विजयों का एक व्यवस्थित कालक्रम है जिसने राजपूत शक्ति के केंद्रों को ध्वस्त कर दिया। उसने सर्वप्रथम 1301 में रणथंभौर के अभेद्य दुर्ग पर अधिकार किया, जहाँ हम्मीर देव ने अंतिम समय तक संघर्ष किया। इसके पश्चात 1303 में चित्तौड़गढ़ का ऐतिहासिक पतन हुआ और रानी पद्मिनी ने जौहर किया। 1308 में खिलजी ने बाड़मेर स्थित सिवाना दुर्ग को विजित किया और अंततः 1311 में जालौर की विजय के साथ उसका राजस्थान अभियान पूर्ण हुआ। अतः रणथंभौर, चित्तौड़, सिवाना और जालौर सही क्रम है।

51. (3) मोहम्मद बिन तुगलक
मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह ने चित्तौड़ को मुगलों और तुगलकों के प्रभाव से मुक्त कराने के लिए निरंतर संघर्ष किया। 14वीं शताब्दी के मध्य में सिंगोली के युद्ध में उन्होंने दिल्ली के सुल्तान मोहम्मद बिन तुगलक की विशाल सेना को पराजित कर एक ऐतिहासिक विजय प्राप्त की। इस युद्ध की सफलता ने न केवल मेवाड़ की स्वतंत्रता को सुदृढ़ किया, बल्कि हम्मीर के नेतृत्व में गुहिल वंश की प्रतिष्ठा को भी पूरे उत्तर भारत में स्थापित कर दिया। इस पराजय के बाद तुगलक शासकों ने मेवाड़ के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप बंद कर दिया था।

52. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
1437 में राणा कुंभा और मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी के मध्य सारंगपुर का भीषण युद्ध हुआ था। इस युद्ध में कुंभा ने मालवा की सेना को निर्णायक रूप से पराजित किया और सुल्तान को बंदी बनाकर चित्तौड़ ले आए। इस गौरवशाली विजय के उपलक्ष्य में राणा कुंभा ने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में प्रसिद्ध 'विजय स्तंभ' का निर्माण करवाया, जिसे 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश' भी कहा जाता है। यह नौ मंजिला स्तंभ आज भी मेवाड़ के सैन्य पराक्रम और कुंभा की अजेय शक्ति के जीवंत प्रतीक के रूप में खड़ा है।

53. (1) केवल I, II, III और IV
1527 में खानवा के युद्ध के परिणाम राजपूत शक्ति के लिए अत्यंत घातक सिद्ध हुए। इस पराजय के बाद संगठित राजपूत-अफगान संघ पूर्णतः बिखर गया और बाबर ने अपनी विजय के प्रतीक स्वरूप 'गाजी' की उपाधि धारण की। राणा सांगा, जो युद्ध जारी रखना चाहते थे, को उन्हीं के असंतुष्ट सामंतों ने विष दे दिया जिससे उनकी मृत्यु हो गई। इस युद्ध ने मुगलों को उत्तर भारत में निर्विवाद शक्ति के रूप में स्थापित किया। हालांकि, मेवाड़ ने तुरंत अधीनता स्वीकार नहीं की और मुगलों के विरुद्ध संघर्ष का सिलसिला आगे भी जारी रहा।

54. (2) मेवाड़
1570 में अकबर ने नागौर में एक दरबार का आयोजन किया था, जिसका उद्देश्य राजपूत राज्यों को बिना युद्ध के अपनी अधीनता में लाना था। इस दौरान बीकानेर के राव कल्याणमल, जैसलमेर के रावल हरराय और जोधपुर के कुछ राजकुमारों ने अकबर की सर्वोच्चता स्वीकार कर ली थी। हालांकि, मेवाड़ का सिसोदिया राजवंश इस दरबार से पूर्णतः दूर रहा। महाराणा उदय सिंह और उनके पुत्र प्रताप ने मुगलों की अधीनता स्वीकार करने के स्थान पर स्वतंत्रता और संघर्ष के मार्ग को चुना, जिससे मेवाड़ इस सूची में बेमेल सिद्ध होता है।

55. (4) जब वे घिर गए थे तो उनके सामंतों ने उन्हें पीछे हटने का आग्रह किया।
हल्दीघाटी के भीषण युद्ध में जब महाराणा प्रताप मुगल सेना के बीच शत्रुओं से घिर गए थे और उनके जीवन पर संकट बढ़ गया था, तब उनके स्वामिभक्त सरदारों ने उन्हें पीछे हटने का सुझाव दिया। वे चाहते थे कि प्रताप सुरक्षित रहकर भविष्य में मुगलों के विरुद्ध संघर्ष का नेतृत्व कर सकें। इसी रणनीतिक निर्णय के तहत झाला बीदा ने प्रताप का राजचिह्न धारण किया ताकि मुगलों को भ्रमित किया जा सके। भारी मन से प्रताप ने रणभूमि छोड़ी ताकि मेवाड़ की स्वाधीनता की लौ को आगे भी प्रज्वलित रखा जा सके।

56. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
महाराणा प्रताप के जीवन से जुड़े प्रत्येक स्थान का अपना ऐतिहासिक महत्व है। गोगुंदा वह स्थल है जहाँ 1572 में उनका विधिवत राज्याभिषेक हुआ था। दिवेर में 1582 में हुई विजय को कर्नल टॉड ने 'मेवाड़ का मैराथन' कहा है क्योंकि यहाँ से प्रताप की पुनर्विजय का अभियान प्रारंभ हुआ। चावंड उनकी अंतिम राजधानी बनी जहाँ उन्होंने अपने अंतिम वर्ष बिताए। कुंभलगढ़ का दुर्ग महाराणा प्रताप का जन्मस्थान माना जाता है, जहाँ से उन्होंने कई वर्षों तक अपने सैन्य अभियानों का संचालन किया था। ये स्थान संघर्ष के प्रमुख केंद्र थे।

57. (3) उन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह किया और आमेर की स्वतंत्रता की घोषणा की।
आमेर के मिर्जा राजा जय सिंह मुगल साम्राज्य के सबसे प्रभावशाली और चतुर सेनापतियों में से एक थे। उन्होंने जहांगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब के अधीन अत्यंत निष्ठापूर्वक सेवा की और कई कठिन सैन्य अभियानों को सफल बनाया। उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि 1665 में शिवाजी को पराजित करना और उन्हें पुरंदर की संधि के लिए विवश करना थी। हालांकि, यह कथन कि उन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह किया, पूर्णतः असत्य है; वे जीवन के अंत तक मुगल सत्ता के आधार स्तंभ बने रहे और 1667 में बुरहानपुर में उनका निधन हुआ।

58. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
औरंगजेब की कट्टरपंथी नीतियों और मारवाड़ को हड़पने की कोशिश के विरुद्ध मेवाड़ के महाराणा राज सिंह ने साहसी कदम उठाए। उन्होंने न केवल जजिया कर का विरोध किया, बल्कि मारवाड़ के शिशु राजकुमार अजीत सिंह को सुरक्षा प्रदान कर मुगलों को चुनौती पेश की। राज सिंह का उद्देश्य औरंगजेब की विस्तारवादी और मंदिर विरोधी गतिविधियों को रोकने के लिए एक सुदृढ़ राजपूत गठबंधन बनाना था। उनकी इस नीति ने मेवाड़ और मारवाड़ को एक साझा शत्रु के विरुद्ध एकजुट कर दिया, जिससे मुगल सत्ता को राजस्थान में कड़ी चुनौती मिली।

59. (1) केवल I और II
1747 में जयपुर के सिंहासन के लिए ईश्वरी सिंह और उनके सौतेले भाई माधो सिंह के बीच राजमहल का युद्ध हुआ था। सवाई जय सिंह की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के इस संघर्ष में माधो सिंह को मेवाड़ के महाराणा, कोटा के शासक और मराठा सेनापतियों का समर्थन प्राप्त था। इसके बावजूद, ईश्वरी सिंह ने अद्भुत सैन्य कौशल का प्रदर्शन करते हुए इस विशाल गठबंधन को पराजित कर दिया और अपनी विजय की स्मृति में जयपुर में 'ईसरलाट' का निर्माण करवाया। अतः ईश्वरी सिंह की हार और मृत्यु का कथन पूर्णतः गलत है।

60. (2) करौली
1817 में जब अंग्रेजों ने पिंडारियों के दमन और मराठा प्रभाव को समाप्त करने के लिए राजपूत राज्यों से सहयोग मांगा, तब करौली के राजा हरबख्श पाल ने सर्वप्रथम पहल की। नवंबर 1817 में करौली अंग्रेजों के साथ विस्तृत सहायक संधि पर हस्ताक्षर करने वाला पहला राजपूत राज्य बना। इस संधि के माध्यम से करौली ने ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार की और बदले में अंग्रेजों ने उसे सुरक्षा का आश्वासन दिया। इसके बाद ही कोटा, जोधपुर और जयपुर जैसे बड़े राज्यों ने ब्रिटिश संरक्षण में आने की प्रक्रिया शुरू की थी।

61. (3) सुलेमान
मध्यकालीन अरब यात्रियों ने अपनी यात्रा वृत्तांतों में भारतीय शासकों की सैन्य शक्ति का सजीव वर्णन किया है। प्रसिद्ध अरब यात्री सुलेमान, जो नवीं शताब्दी में भारत आया था, ने गुर्जर-प्रतिहार वंश के प्रतापी राजा मिहिर भोज के बारे में विस्तार से लिखा है। उसने मिहिर भोज को अरबों का सबसे बड़ा शत्रु बताया और उनके पास मौजूद विशाल तथा शक्तिशाली अश्व सेना की भूरि-भूरि प्रशंसा की। सुलेमान के अनुसार, प्रतिहारों की यह सैन्य शक्ति ही थी जिसने अरबों को सिंध के आगे बढ़ने से प्रभावी ढंग से रोक रखा था।

62. (4) हम्मीर महाकाव्य - नयनचंद्र सूरी
राजस्थान के वीरतापूर्ण इतिहास को लिपिबद्ध करने में अनेक ग्रंथों का योगदान रहा है। नयनचंद्र सूरी द्वारा रचित 'हम्मीर महाकाव्य' रणथंभौर के शासक हम्मीर देव चौहान के संघर्ष और शौर्य का सबसे प्रामाणिक स्रोत माना जाता है। अन्य विकल्पों में, 'पृथ्वीराज रासो' के रचयिता चंद बरदाई हैं, जबकि 'पृथ्वीराज विजय' जयानक द्वारा लिखा गया था। 'कान्हड़दे प्रबंध' की रचना पद्मनाभ ने की थी, जिसमें जालौर के प्रतिरोध का वर्णन है। अतः केवल हम्मीर महाकाव्य और नयनचंद्र सूरी का युग्म ही ऐतिहासिक रूप से सही और सुमेलित है।

63. (1) तबरहिंद (भटिंडा)
तराइन के प्रथम युद्ध की पृष्ठभूमि में मोहम्मद गौरी द्वारा भारत की सीमावर्ती चौकियों पर अधिकार करना प्रमुख था। 1191 में गौरी ने रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण तबरहिंद (आधुनिक भटिंडा) के दुर्ग पर अधिकार कर लिया, जो पृथ्वीराज चौहान के साम्राज्य की सीमा पर स्थित था। अपने क्षेत्र पर इस अतिक्रमण और सामरिक संकट को देखते हुए पृथ्वीराज ने विशाल सेना के साथ गौरी की ओर कूच किया। तबरहिंद के इसी विवाद ने दोनों महाशक्तियों को तराइन के मैदान में आमने-सामने ला खड़ा किया, जहाँ प्रथम युद्ध लड़ा गया था।

64. (1) केवल I, II, III और IV
तराइन के द्वितीय युद्ध में राजपूतों की पराजय के पीछे कई गंभीर कारण थे। राजपूतों के पास तुर्क सैनिकों जैसी केंद्रीकृत और स्थायी सेना का अभाव था, और वे युद्ध के समय सामंती सेनाओं पर निर्भर थे। जयचंद्र जैसे पड़ोसी राजाओं की तटस्थता और आपसी वैमनस्य ने भी चौहानों को कमजोर किया। इसके अतिरिक्त, मोहम्मद गौरी की कपटपूर्ण कूटनीति और हाथियों की तुलना में तीव्रगामी तुर्की घुड़सवार सेना का प्रभावी उपयोग निर्णायक सिद्ध हुआ। यह युद्ध पारंपरिक वीरता और रणनीतिक चातुर्य के बीच का संघर्ष था।

65. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
अलाउद्दीन खिलजी के राजस्थान अभियानों के दौरान विभिन्न राजपूत शासकों ने अपने राज्यों की रक्षा के लिए अभूतपूर्व संघर्ष किया। रणथंभौर के शासक हम्मीर देव चौहान ने मंगोल विद्रोहियों को शरण देकर खिलजी से सीधा लोहा लिया। चित्तौड़गढ़ में रावल रतन सिंह ने खिलजी की विशाल सेना का डटकर मुकाबला किया, जिसके बाद प्रसिद्ध जौहर हुआ। जालौर की रक्षा का भार कान्हड़ देव सोनगरा पर था, जिन्होंने वीरतापूर्वक प्राणों का उत्सर्ग किया। बाड़मेर के सिवाना दुर्ग में सीतल देव ने खिलजी की सेना को कड़ी टक्कर दी थी।

66. (1) उन्होंने गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा की स्थापना की।
मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह को गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा की नींव रखने का श्रेय दिया जाता है, जो आगे चलकर

मेवाड़ के गौरव का पर्याय बनी। उन्होंने खिलजी द्वारा विजित चित्तौड़गढ़ को पुनः स्वतंत्र कराया और मेवाड़ की सीमाओं का विस्तार किया। उनकी सबसे बड़ी विरासत यह थी कि उन्होंने बाहरी दासता को अस्वीकार कर स्वाभिमान और स्वतंत्रता की वह परंपरा स्थापित की, जिसका अनुसरण कुंभा, सांगा और प्रताप जैसे शासकों ने किया। हम्मीर के नेतृत्व में ही मेवाड़ उत्तर भारत की एक अपराजेय शक्ति बना।

67. (3) इससे राजनीतिक अस्थिरता का दौर आया और उदा द्वारा कुछ समय के लिए सत्ता हथिया ली गई।
1468 में राणा कुंभा की उनके ही पुत्र उदा (उदयकरण) द्वारा हत्या मेवाड़ के इतिहास की एक अत्यंत दुखद घटना थी। सत्ता प्राप्ति के लिए किए गए इस जघन्य कृत्य के कारण मेवाड़ में अचानक राजनीतिक अस्थिरता का वातावरण व्याप्त हो गया। उदा ने कुछ समय के लिए सत्ता पर अधिकार तो कर लिया, किंतु मेवाड़ के निष्ठावान सामंतों और जनता ने उसे कभी स्वीकार नहीं किया। इसके बाद उत्तराधिकार के लिए आंतरिक संघर्ष छिड़ गया, जिसने कुछ समय के लिए मेवाड़ की सैन्य और प्रशासनिक शक्ति को अत्यधिक दुर्बल कर दिया था।

68. (2) केवल III
खानवा के युद्ध में राणा सांगा ने एक असाधारण कूटनीतिक सफलता प्राप्त करते हुए हिंदू राजपूतों और अफगान मुस्लिम शासकों का एक संयुक्त मोर्चा बनाया था। हसन खां मेवाती और महमूद लोदी जैसे अफगान नेताओं ने बाबर के विरुद्ध सांगा का साथ दिया, क्योंकि वे बाबर को एक विदेशी आक्रांता मानते थे। यह गठबंधन विदेशी आक्रमण के विरुद्ध भारतीय शक्तियों की एकता का एक दुर्लभ उदाहरण था। हालांकि, यह कथन गलत है कि उन्होंने बाबर के तोपखाने को नष्ट कर दिया था; वास्तव में तोपखाना ही राजपूतों की हार का मुख्य कारण बना।

69. (3) मनसबदारी व्यवस्था
सम्राट अकबर ने राजपूतों को मुगल शासन का अभिन्न अंग बनाने के लिए मनसबदारी व्यवस्था का कुशलतापूर्वक उपयोग किया था। इस प्रणाली के अंतर्गत राजपूत राजाओं को उनकी सैन्य क्षमता और निष्ठा के आधार पर विशिष्ट श्रेणी या 'मनसब' प्रदान किए जाते थे, जिससे उन्हें साम्राज्य के उच्च पदों पर कार्य करने का अवसर मिलता था। इससे राजपूतों को मुगलों के अधीन रहकर भी अपनी स्वायत्तता और सम्मान बनाए रखने का अवसर मिला। इस नीति ने राजपूत योद्धाओं को मुगल विस्तार का सबसे शक्तिशाली हथियार और सहयोगी बना दिया था।

70. (1) केवल I और II
हल्दीघाटी का युद्ध राजपूताना के गौरव का चरम बिंदु माना जाता है, जिसे प्रसिद्ध इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने "मेवाड़ की थर्मोपॉली" की संज्ञा दी है। इस युद्ध में अकबर की शाही मुगल सेना संख्या और संसाधनों में महाराणा प्रताप की छोटी सेना से कहीं अधिक शक्तिशाली थी। युद्ध अत्यंत भीषण था, जिसमें दोनों पक्षों ने अदम्य साहस दिखाया। हालांकि, ऐतिहासिक रूप से यह कहना असत्य है कि महाराणा प्रताप ने मान सिंह का वध कर दिया था; वास्तव में मान सिंह युद्ध के बाद सुरक्षित बच निकले थे और प्रताप भी सुरक्षित रहे।

71. (4) आक्रमणकारी को संसाधनों से वंचित करने के लिए फसलों को नष्ट करना और मैदानी क्षेत्रों को रिक्त करना।
मुगलों के विरुद्ध अपने लंबे संघर्ष के दौरान महाराणा प्रताप ने "जली हुई धरती" (स्कॉर्च्ड अर्थ) की अत्यंत कठोर रणनीतिक नीति अपनाई थी। इसके अंतर्गत उन्होंने आक्रमणकारी मुगल सेना को रसद और अन्य संसाधनों से वंचित करने के लिए मैदानी क्षेत्रों की फसलों को नष्ट करवा दिया और जल स्रोतों को अनुपयोगी बना दिया। उन्होंने संपूर्ण ग्रामीण जनसंख्या को सुरक्षित पहाड़ियों में स्थानांतरित कर दिया ताकि मुगलों को कोई स्थानीय सहायता न मिल सके। इस नीति के कारण मुगल सेना को रसद के अभाव में भारी कठिनाई हुई।

72. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
मुगल साम्राज्य की स्थिरता में विभिन्न राजपूत शासकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। अकबर के शासनकाल में आमेर के राजा मान सिंह ने काबुल से बंगाल तक साम्राज्य का विस्तार किया। शाहजहाँ के काल में मिर्जा राजा जय सिंह ने अपनी सैन्य चतुरता से कई जटिल अभियानों का नेतृत्व किया। औरंगजेब के प्रारंभिक वर्षों में मारवाड़ के महाराजा जसवंत सिंह ने एक प्रमुख सेनापति के रूप में कार्य किया। जहांगीर के समय में मारवाड़ के राजा सूर सिंह ने दक्षिण भारत और गुजरात के अभियानों में मुगलों का प्रभावशाली सहयोग किया था।

73. (2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
1678 में महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु के पश्चात औरंगजेब की नीति मारवाड़ के प्रति बदल गई। उसने जसवंत सिंह के नवजात पुत्र अजीत सिंह को मारवाड़ का वैध उत्तराधिकारी मानने से इंकार कर दिया और जोधपुर को सीधे मुगल शासन के अंतर्गत 'खालसा' घोषित कर दिया। औरंगजेब की इस हड़पने वाली नीति ने राठौड़ सरदारों में भारी रोष उत्पन्न किया। इसके परिणामस्वरूप दुर्गादास राठौड़ के नेतृत्व में एक व्यापक और लंबा विद्रोह छिड़ गया, जिसका उद्देश्य मारवाड़ की स्वतंत्रता और अजीत सिंह के अधिकारों की रक्षा करना था।

74. (1) जैसलमेर
1734 में आयोजित हुरड़ा सम्मेलन राजस्थान के प्रमुख राजाओं का एक संयुक्त प्रयास था, जिसमें मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह द्वितीय, जयपुर के सवाई जय सिंह और जोधपुर के महाराजा अभय सिंह जैसे बड़े शासकों ने भाग लिया था। कोटा और बीकानेर जैसे राज्यों ने भी इसमें अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी। हालांकि, सुदूर पश्चिम में स्थित जैसलमेर राज्य ने भौगोलिक दूरी और अपने विशिष्ट स्थानीय राजनीतिक समीकरणों के कारण इस सम्मेलन में भाग नहीं लिया था। जैसलमेर का इस राजपूत संघ से बाहर रहना उस समय के बिखराव को भी दर्शाता है।

75. (1) केवल I, III, IV और V
1817-18 की सहायक संधियों ने राजपूत राज्यों को ब्रिटिश संरक्षण के अंतर्गत ला दिया। इन संधियों की मुख्य विशेषता यह थी कि अंग्रेजों ने राज्यों की बाहरी आक्रमणों से रक्षा का वचन दिया और उनकी आंतरिक स्वायत्तता को बनाए रखने का आश्वासन दिया। इसके बदले में, राज्यों को प्रतिवर्ष एक निश्चित खिराज (कर) अंग्रेजों को देना पड़ता था और उनके

दरबारों में एक ब्रिटिश राजनीतिक प्रतिनिधि नियुक्त किया गया। हालांकि, संधियों ने राजाओं की विदेशी शक्तियों के साथ स्वतंत्र रूप से वार्ता करने की शक्ति को समाप्त कर दिया था।

76. (3) उपरोक्त में से कोई नहीं
बप्पा रावल को मेवाड़ के गुहिल राजवंश का वास्तविक संस्थापक और एक महान योद्धा माना जाता है। उन्होंने आठवीं शताब्दी में चित्तौड़गढ़ को मौर्य शासक मान मोरी से जीतकर अपनी सत्ता का केंद्र बनाया था। उन्होंने अरब आक्रमणकारियों को पराजित कर भारत की सीमाओं को सुरक्षित करने में अग्रणी भूमिका निभाई। उनकी धार्मिक आस्था के प्रतीक के रूप में उन्होंने शैव धर्म से प्रभावित स्वर्ण सिक्के जारी किए थे। उनके बारे में दिए गए चारों प्रमुख ऐतिहासिक तथ्य सही हैं, अतः इनमें से कोई भी कथन गलत नहीं है।

77. (3) अर्णोराज
अजमेर के शासक अर्णोराज, जिन्हें आनाजी के नाम से भी जाना जाता है, ने अपने शासनकाल में तुर्की सेनाओं के विरुद्ध कई महत्वपूर्ण युद्ध लड़े। 12वीं शताब्दी में उन्होंने अजमेर पर आक्रमण करने वाली गजनवी सेना को बुरी तरह पराजित किया था। स्थानीय जनश्रुतियों के अनुसार, युद्ध के बाद रणभूमि को तुर्की सैनिकों के रक्त से स्वच्छ करने और विजय की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए उन्होंने अजमेर में भव्य 'आनासागर झील' का निर्माण करवाया था। यह झील आज भी उनकी सैन्य विजय और स्थापत्य प्रेम के प्रतीक के रूप में विख्यात है।

78. (4) घोरी और चौहान साम्राज्यों की पंजाब सीमा अस्थिर और साझा थी।
तराइन के प्रथम युद्ध (1191) से ठीक पहले उत्तर भारत की स्थिति अत्यंत तनावपूर्ण थी। इस दौरान अजमेर के चौहानों और अफगानिस्तान के घोरी साम्राज्य की सीमाएं पंजाब के क्षेत्रों में एक-दूसरे से टकरा रही थीं। दोनों साम्राज्यों के बीच पंजाब का भूभाग एक मध्यवर्ती क्षेत्र की तरह था, जहाँ प्रभुत्व स्थापित करने के लिए निरंतर संघर्ष हो रहा था। तबरहिंद (भटिंडा) जैसे रणनीतिक दुर्गों पर अधिकार को लेकर उभरे विवाद ने ही अंततः पृथ्वीराज चौहान और मोहम्मद गौरी के बीच एक बड़े युद्ध की तात्कालिक स्थिति उत्पन्न कर दी थी।

79. (1) पृथ्वीराज चौहान सफलतापूर्वक पीछे हटने में सफल रहे और अगले दो दशकों तक अजमेर पर शासन किया।
1192 में लड़ा गया तराइन का द्वितीय युद्ध भारतीय इतिहास की एक अत्यंत विनाशकारी घटना थी। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को मोहम्मद गौरी के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा और इसके साथ ही शक्तिशाली चौहान साम्राज्य का पतन हो गया। यह ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः असत्य है कि पृथ्वीराज चौहान ने अगले दो दशकों तक अजमेर पर शासन किया; वास्तव में उन्हें बंदी बना लिया गया था और कुछ समय पश्चात उनकी मृत्यु हो गई। इस पराजय ने उत्तर भारत में तुर्की शासन की स्थायी नींव रख दी थी।

80. (2) रणथंभौर - हम्मीर देव चौहान
दिल्ली सल्तनत के विस्तार के विरुद्ध राजस्थान के विभिन्न राजपूत वंशों ने वीरतापूर्वक संघर्ष किया। इनमें रणथंभौर के शासक हम्मीर देव चौहान का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने 1301 में अलाउद्दीन खिलजी की विशाल सेना का डटकर मुकाबला किया। अन्य विकल्पों में जालौर के रक्षक कान्हड़ देव सोनगरा थे, जबकि चित्तौड़ की रक्षा रावल रतन सिंह ने की थी। सिवाना में सीतल देव ने प्रतिरोध का नेतृत्व किया था। अतः हम्मीर देव और रणथंभौर का युग्म ही ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर पूर्णतः सही सुमेलित है।

81. (2) मालवा क्षेत्र पर स्थायी शासन स्थापित करना।
मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह ने चित्तौड़ को तुगलक शासन से मुक्त कराकर मेवाड़ के गौरव को पुनः स्थापित किया। उन्होंने सिंगोली के युद्ध में मोहम्मद बिन तुगलक की सेना को पराजित कर एक ऐतिहासिक विजय प्राप्त की। इस युद्ध की सफलता ने न केवल मेवाड़ की स्वतंत्रता को सुदृढ़ किया, बल्कि हम्मीर के नेतृत्व में गुहिल वंश की प्रतिष्ठा को भी पूरे उत्तर भारत में स्थापित कर दिया। इस पराजय के बाद तुगलक शासकों ने मेवाड़ के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करना बंद कर दिया था।

82. (1) हाड़ौती और सीमावर्ती क्षेत्रों के नियंत्रण पर रणनीतिक विवाद।
राणा कुंभा के शासनकाल में मेवाड़ का मालवा और गुजरात की सल्तनतों के साथ निरंतर सैन्य संघर्ष बना रहा। इस दीर्घकालिक शत्रुता का मुख्य कारण हाड़ौती, नागौर और अन्य सीमावर्ती क्षेत्रों के नियंत्रण को लेकर रणनीतिक विवाद था। ये क्षेत्र व्यापारिक और सैन्य दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थे, जिन पर अधिकार के लिए तीनों शक्तियाँ प्रयासरत थीं। कुंभा की बढ़ती शक्ति सुल्तानों के लिए एक बड़ी चुनौती थी, जिसके कारण उन्होंने मेवाड़ को कमजोर करने के लिए चंपानेर की संधि जैसे साझा गठबंधन भी किए थे।

83. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
ऐतिहासिक दृष्टि से खानवा का युद्ध पानीपत के प्रथम युद्ध की तुलना में कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण और निर्णायक माना जाता है। पानीपत में बाबर का सामना केवल इब्राहिम लोदी से था, जबकि खानवा में उसे राणा सांगा के नेतृत्व वाले एक अत्यंत शक्तिशाली राजपूत और अफगान संघ से जूझना पड़ा। सांगा की सेना अधिक अनुभवी और भारतीय भूभाग से परिचित थी, जिसने बाबर के साम्राज्य के अस्तित्व के लिए वास्तविक संकट उत्पन्न कर दिया था। खानवा की विजय ने ही बाबर के भारत में ठहरने के मार्ग को प्रशस्त किया था।

84. (4) उनके पैतृक राज्यों को गैर-हस्तांतरणीय जागीर के रूप में वंशानुगत अनुदान।
अकबर ने राजपूत शासकों की निष्ठा प्राप्त करने के लिए "वतन जागीर" की एक नवीन और कूटनीतिक अवधारणा विकसित की थी। इसके अंतर्गत राजपूत राजाओं को उनके अपने पैतृक राज्यों को जागीर के रूप में वापस प्रदान किया जाता था, जो गैर-हस्तांतरणीय और वंशानुगत होती थी। इसका तात्पर्य था कि राजा अपने क्षेत्र में स्वायत्त शासन कर सकते थे, बशर्ते वे

मुगल सम्राट की सर्वोच्चता स्वीकार करें। इस नीति ने राजपूतों के स्वाभिमान को बनाए रखा और उन्हें मुगल प्रशासनिक ढांचे का एक विश्वसनीय और स्थायी अंग बना दिया।

85. (3) आसफ खां
हल्दीघाटी के ऐतिहासिक युद्ध में महाराणा प्रताप की सेना में विभिन्न समुदायों और क्षेत्रों के बहादुर योद्धा सम्मिलित थे। हकीम खां सूरी उनके अग्रिम दस्ते का नेतृत्व कर रहे थे, जबकि ग्वालियर के राजा रामशाह तोमर और भील सेनापति पुंजा ने वीरता की मिसाल पेश की। हालांकि, आसफ खां इस सूची में बेमेल हैं क्योंकि वे महाराणा प्रताप के सहयोगी नहीं, बल्कि मुगल सेना के एक प्रमुख सेनापति थे जिन्होंने मान सिंह के साथ मिलकर प्रताप के विरुद्ध युद्ध का संचालन किया था।

86. (2) मेवाड़ के अधिकांश विजित क्षेत्रों की तीव्र बहाली।
1582 में दिवेर के युद्ध में महाराणा प्रताप की विजय मेवाड़ के इतिहास में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक सफलता थी। इस युद्ध में प्रताप ने मुगल चौकियों को ध्वस्त कर दिया और मुगलों के बड़े सैन्य तंत्र को पंगु बना दिया। इस विजय का तात्कालिक और दूरगामी प्रभाव यह पड़ा कि प्रताप ने मुगलों द्वारा विजित मेवाड़ के अधिकांश क्षेत्रों पर पुनः अधिकार कर लिया। इससे न केवल मेवाड़ की जनता का मनोबल बढ़ा, बल्कि अकबर को भी यह अहसास हो गया कि प्रताप को पूरी तरह दबाना असंभव है और उनका प्रतिरोध अटूट है।

87. (4) मुगल प्रशासनिक और सैन्य पदानुक्रम में एक पद।
मुगल प्रशासनिक और सैन्य व्यवस्था में "मनसब" शब्द एक अत्यंत महत्वपूर्ण पद या श्रेणी को दर्शाता था। अकबर द्वारा प्रारंभ की गई इस व्यवस्था के तहत प्रत्येक अधिकारी को एक विशिष्ट मनसब प्रदान किया जाता था, जो दरबार में उसकी स्थिति, वेतन और उसके द्वारा रखी जाने वाली सेना की संख्या निर्धारित करता था। राजपूत शासकों के लिए मनसब प्राप्त करना मुगल साम्राज्य के पदानुक्रम में उनकी प्रतिष्ठा और शक्ति का परिचायक था। इस व्यवस्था ने विभिन्न क्षेत्रीय शक्तियों को एक एकीकृत प्रशासनिक ढांचे में सफलतापूर्वक पिरोने का कार्य किया था।

88. (1) दुर्गादास राठौड़
वीर दुर्गादास राठौड़ को मारवाड़ के इतिहास में 'मारवाड़ का उद्धारक' और 'राजपूताना का गेरीबाल्डी' कहा जाता है। उन्होंने औरंगजेब की दमनकारी नीतियों और जोधपुर पर मुगल कब्जे के विरुद्ध लगभग 30 वर्षों तक अनवरत संघर्ष किया। महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद, उन्होंने उनके शिशु पुत्र अजीत सिंह की रक्षा की और उन्हें मारवाड़ का वैध शासक बनाने के लिए अपने जीवन का अधिकांश भाग युद्धों में व्यतीत किया। उनकी अटूट स्वामीभक्ति और अदम्य साहस ने मारवाड़ की स्वतंत्रता को अक्षुण्ण बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

89. (3) चौथ
18वीं शताब्दी में जब मुगल साम्राज्य का पतन हो रहा था, तब मराठों ने अपनी शक्ति का विस्तार उत्तर भारत में किया। उन्होंने पड़ोसी राज्यों से उनकी आय का एक-चौथाई हिस्सा वसूलना शुरु किया, जिसे "चौथ" कहा जाता था। यह कर मुख्य रूप से मराठा आक्रमण से सुरक्षा प्रदान करने के बदले में लिया जाता था। राजस्थान के राजपूत राज्यों पर इस भारी कर के बोझ ने उनकी आर्थिक स्थिति को अत्यंत दयनीय बना दिया। निरंतर चौथ की वसूली ने राज्यों को आर्थिक रूप से पंगु कर दिया और उनके सैन्य संसाधनों को भी कमजोर कर दिया।

90. (1) शासकों ने आंतरिक शक्तियों को बनाए रखते हुए ब्रिटिश सर्वोच्चता को स्वीकार किया।
1817-18 के दौरान अंग्रेजों और राजपूत राज्यों के बीच हुई संधियाँ एक नए राजनीतिक युग का प्रारंभ थीं। इन समझौतों के तहत राजपूत शासकों ने स्वेच्छा से ब्रिटिश सर्वोच्चता को स्वीकार कर लिया और अपने विदेशी मामलों का नियंत्रण अंग्रेजों को सौंप दिया। बदले में, अंग्रेजों ने राज्यों की बाहरी शत्रुओं से रक्षा करने और उनकी आंतरिक स्वायत्तता को अक्षुण्ण रखने का वचन दिया। इस प्रकार, राजपूत राज्य ब्रिटिश साम्राज्य के सीधे अंग न बनकर, उसकी छत्रछाया में अर्ध-स्वायत्त रियासतों के रूप में बने रहे, जहाँ राजाओं का आंतरिक शासन सुरक्षित रहा।

91. (4) पूरे राजस्थान क्षेत्र का स्थायी इस्लामीकरण।
आठवीं शताब्दी में अरबों द्वारा किए गए प्रारंभिक आक्रमणों का भारतीय शासकों ने दृढ़ता से मुकाबला किया। गुर्जर-प्रतिहारों और मेवाड़ के बप्पा रावल ने जुनैद जैसे अरब सेनापतियों को पराजित कर उन्हें सिंध तक ही सीमित रखा। इन प्रयासों ने भारत की पश्चिमी सीमा की रक्षा की और इस्लामी विस्तार को रोक दिया। हालांकि, यह कथन पूर्णतः असत्य है कि इस दौरान पूरे राजस्थान का स्थायी इस्लामीकरण हो गया था; वास्तव में, राजपूतों के सफल प्रतिरोध के कारण राजस्थान अपनी प्राचीन संस्कृति और हिंदू धर्म को सुरक्षित रखने में सफल रहा था।

92. (2) चौहान - अजमेर और सांभर
गजनवी और घोरी आक्रमणों के कालखंड में राजस्थान के विभिन्न राजवंशों का शासन विशिष्ट क्षेत्रों पर स्थापित था। चौहान वंश का मुख्य शक्ति केंद्र अजमेर और सांभर का क्षेत्र था, जहाँ से पृथ्वीराज चौहान ने शासन किया। अन्य विकल्पों में गुहिल वंश मेवाड़ पर शासन कर रहा था, जबकि गहड़वाल वंश का प्रभुत्व कन्नौज में था। तोमर वंश दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों से संबंधित था। अतः चौहानों और अजमेर-सांभर का युग्म ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सही है, क्योंकि इसी क्षेत्र से उन्होंने तुर्क आक्रमणकारियों का प्रबल सामना किया था।

93. (3) घोरी घुड़सवार सेना पर उनके गज दल की श्रेष्ठ गतिशीलता।
1191 के तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान को कई महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त थे। उनके पास एक विशाल और संख्यात्मक रूप से श्रेष्ठ सेना थी, जिसे स्थानीय सामंतों का पूर्ण समर्थन प्राप्त था। अपने ही क्षेत्र में लड़ने के कारण राजपूत सैनिकों का मनोबल अत्यंत ऊँचा था। हालांकि, यह कहना गलत है कि उनके हाथियों की गतिशीलता घोरी की घुड़सवार सेना से अधिक थी। वास्तव में, तुर्की घुड़सवार सेना अधिक तीव्रगामी थी, लेकिन प्रथम युद्ध में राजपूतों के साहस और

संख्या बल ने गौरी की सेना को पराजित करने में सफलता पाई।

94. (4) तुर्की विजेताओं द्वारा इक्ता व्यवस्था की स्थापना।
तराइन और चंदावर के युद्धों में विजय प्राप्त करने के बाद तुर्क विजेताओं ने उत्तर भारत में एक नई प्रशासनिक व्यवस्था लागू की, जिसे "इक्ता व्यवस्था" कहा जाता है। इसके अंतर्गत विजित क्षेत्रों को विभिन्न भागों या 'इक्ताओं' में विभाजित कर सैन्य कमांडरों को सौंपा गया, जिन्हें कर वसूलने और कानून व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी दी गई। इस व्यवस्था ने पुरानी सामंती व्यवस्था को विस्थापित कर दिल्ली सल्तनत को प्रशासनिक मजबूती प्रदान की। यह परिवर्तन उत्तर भारत के सामाजिक और आर्थिक ढांचे में एक बड़े बदलाव का आधार बना था।

95. (1) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है।
1301 में अलाउद्दीन खिलजी की रणथंभौर विजय में छल और विश्वासघात की बड़ी भूमिका रही थी। हम्मीर देव के दो प्रमुख सेनापतियों, रणमल और रतिपाल, ने लालच में आकर गुप्त मार्ग की जानकारी खिलजी को दे दी, जिससे किले का पतन हुआ। हालांकि, खिलजी ने इन विश्वासघातियों को पुरस्कृत करने के बजाय उनका वध करवा दिया। उसने तर्क दिया कि जो अपने स्वामी के प्रति निष्ठावान नहीं रह सके, वे उसके प्रति कभी वफादार नहीं होंगे। इस प्रकार खिलजी ने विश्वासघातियों को उनके कृत्य की अत्यंत कठोर सजा दी थी।

96. (2) बंदी बनने और दासता से बचने के लिए महिलाओं द्वारा सामूहिक आत्मदाह।
"जौहर" मध्यकालीन राजस्थान की एक अत्यंत गौरवशाली किंतु हृदयविदारक परंपरा थी, जो मुख्य रूप से विदेशी आक्रमणों के समय देखी जाती थी। जब राजपूत दुर्ग की घेराबंदी के दौरान यह निश्चित हो जाता था कि हार अपरिहार्य है, तो राजपूत स्त्रियाँ शत्रु के हाथों बंदी बनने और अपमानित होने के स्थान पर सामूहिक आत्मदाह कर लेती थीं। इसे अपनी मर्यादा और सम्मान की रक्षा के लिए किया जाने वाला सर्वोच्च बलिदान माना जाता था। इसी के साथ राजपूत योद्धा 'केसरिया' धारण कर अंतिम और निर्णायक आत्मघाती हमला करते थे।

97. (2) पद्मावत
मेवाड़ के राणा कुंभा एक महान साहित्यकार और कला प्रेमी शासक थे, जिन्होंने संगीत और व्याकरण पर कई प्रमाणिक ग्रंथों की रचना की। उनके द्वारा रचित ग्रंथों में 'संगीत राज', 'संगीत मीमांसा' और 'सुधा प्रबंध' अत्यंत प्रसिद्ध हैं, जो उनकी बौद्धिक क्षमता को दर्शाते हैं। हालांकि, 'पद्मावत' इस सूची में बेमेल है क्योंकि इसकी रचना 1540 ईस्वी में मलिक मोहम्मद जायसी ने की थी। 'पद्मावत' चित्तौड़ की रानी पद्मिनी और अलाउद्दीन खिलजी के संघर्ष पर आधारित एक महाकाव्य है, जिसका कुंभा के लेखन से कोई संबंध नहीं है।

98. (1) बाबर को सुरक्षात्मक घेराबंदी स्थापित करने के लिए समय देना।
1527 में खानवा के युद्ध में राणा सांगा की पराजय के पीछे एक प्रमुख रणनीतिक चूक यह थी कि उन्होंने बाबर को युद्ध की तैयारी और सुरक्षा घेरा बनाने के लिए पर्याप्त समय दे दिया। बयाना की जीत के बाद सांगा ने तुरंत आक्रमण नहीं किया, जिससे बाबर को अपनी तोपों को व्यवस्थित करने और 'तुलुगमा' व्यूह रचना तैयार करने का अवसर मिल गया। इस विलंब के कारण बाबर ने अपनी रक्षात्मक स्थिति को अत्यंत सुदृढ़ कर लिया, जिससे बाद में राजपूतों के साहसी आक्रमण भी बाबर के अभेद्य तोपखाने को नहीं तोड़ सके।

99. (3) सैन्य निष्ठा प्राप्त करना और सीमावर्ती क्षेत्रों को स्थिर करना।
मुगलों द्वारा राजपूत राज्यों के साथ वैवाहिक गठबंधन करने की नीति एक अत्यंत परिष्कृत राजनीतिक और रणनीतिक साधन थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य राजपूत शासकों की अटूट सैन्य निष्ठा प्राप्त करना और साम्राज्य के अशांत सीमावर्ती क्षेत्रों में स्थिरता सुनिश्चित करना था। इन संबंधों के माध्यम से राजपूतों को मुगल परिवार का हिस्सा माना जाने लगा, जिससे उनकी विद्रोह करने की संभावना कम हो गई और वे साम्राज्य विस्तार में सक्रिय सहभागी बन गए। यह नीति न केवल राजनीतिक एकीकरण का जरिया बनी, बल्कि इससे लंबे समय तक मुगल सत्ता को सुरक्षा मिली।

100. (4) रामप्रसाद
हल्दीघाटी के भीषण युद्ध में न केवल योद्धाओं, बल्कि युद्ध हाथियों ने भी अपनी वीरता की छाप छोड़ी थी। महाराणा प्रताप का अत्यंत प्रिय और शक्तिशाली हाथी 'रामप्रसाद' था, जिसने युद्ध के मैदान में मुगल सेना में भारी तबाही मचाई थी। उसकी शक्ति और कौशल को देखकर स्वयं अकबर भी आश्चर्यचकित रह गया था। युद्ध के बाद मुगलों ने उसे किसी तरह बंदी बना लिया और उसका नाम बदलकर 'पीरप्रसाद' रख दिया। रामप्रसाद की स्वामीभक्ति ऐसी थी कि उसने मुगलों की कैद में अन्न-जल त्याग दिया और अंततः अपने प्राण त्याग दिए।

101. (3) वे अविचल स्वतंत्रता और देशभक्तिपूर्ण प्रतिरोध के प्रतीक हैं।
महाराणा प्रताप की ऐतिहासिक विरासत केवल एक शासक तक सीमित नहीं है, बल्कि वे आज भी भारतीय जनमानस में अविचल स्वतंत्रता और देशभक्तिपूर्ण प्रतिरोध के सर्वोच्च प्रतीक माने जाते हैं। उन्होंने शक्तिशाली मुगल साम्राज्य के समक्ष झुकने के बजाय घास की रोटियाँ खाना और जंगलों में भटकना स्वीकार किया, किंतु अपने स्वाभिमान और मातृभूमि की स्वाधीनता से कभी समझौता नहीं किया। उनकी यह अडिग संकल्प शक्ति परवर्ती पीढ़ियों और अन्य क्रांतिकारी सेनानियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी रही, जो उन्हें एक क्षेत्रीय नायक से ऊपर उठाकर राष्ट्र गौरव बनाती है।

102. (2) महाराजा जसवंत सिंह ने कभी भी मुगल सेना की कमान नहीं संभाली क्योंकि वे निरंतर शाहजहाँ के विरुद्ध विद्रोह करते रहे।
मारवाड़ के राठौड़ शासकों और मुगलों के बीच गठबंधन की शुरुआत मोटा राजा उदय सिंह के काल में हुई, जिन्होंने सर्वप्रथम अकबर की अधीनता स्वीकार की और वैवाहिक संबंध बनाए। इसके पश्चात कई राठौड़ राजाओं ने मुगल सेना के सेनापति के रूप में अपनी सेवाएँ दीं। यह कथन पूर्णतः असत्य है कि महाराजा जसवंत सिंह ने कभी मुगल सेना की कमान नहीं संभाली; वास्तव में उन्होंने शाहजहाँ और औरंगजेब के अधीन काबुल, गुजरात और दक्कन जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में प्रमुख सैन्य अभियानों का सफलतापूर्वक नेतृत्व किया था, जो उनकी उच्च योग्यता का परिचायक है।

103. (4) दुर्गादास राठौड़ - 30 वर्षों तक राठौड़ विद्रोह का नेतृत्व किया
औरंगजेब की धार्मिक कट्टरता और विस्तारवादी नीतियों के विरुद्ध राजस्थान में लंबा प्रतिरोध चला, जिसमें वीर दुर्गादास राठौड़ का नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित है। उन्होंने महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु के पश्चात उनके पुत्र अजीत सिंह को सुरक्षित बचाते हुए मुगलों के विरुद्ध लगभग 30 वर्षों तक निरंतर राठौड़ विद्रोह का नेतृत्व किया। उनकी कूटनीति और वीरता के कारण ही मारवाड़ अपनी स्वतंत्रता पुनः प्राप्त कर सका। अन्य विकल्पों में, राज सिंह ने मंदिरों के विनाश का विरोध किया था और अजीत सिंह ने कभी स्वेच्छा से आत्मसमर्पण नहीं किया, बल्कि संघर्ष किया था।

104. (1) राजपूताना को विजित करने के लिए अंग्रेजों और मराठों के बीच बना एक सुदृढ़ सैन्य गठबंधन।
18वीं शताब्दी में राजस्थान में मराठा हस्तक्षेप के कई कारण थे, जिनमें औरंगजेब के बाद मुगल केंद्रीय सत्ता का पतन और राजपूतों के आपसी उत्तराधिकार विवाद प्रमुख थे। राजपूत राज्यों की आर्थिक समृद्धि ने भी मराठों को चौथ और सरदेशमुखी वसूलने के लिए आकर्षित किया। हालांकि, यह कथन पूर्णतः गलत है कि मराठा आक्रमणों के पीछे अंग्रेजों और मराठों के बीच कोई सैन्य गठबंधन था। वास्तव में, उस समय अंग्रेज और मराठा स्वयं एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी थे और उनके बीच कोई ऐसा गठबंधन नहीं था जिसने राजस्थान पर आक्रमणों को बढ़ावा दिया हो।

105. (3) ब्रिटिश सर्वोच्चता के अंतर्गत अर्ध-स्वायत्त रियासतें।
1817-18 की सहायक संधियों के पश्चात राजपूत राज्यों की राजनीतिक स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन आया। ये राज्य अब न तो पूर्णतः संप्रभु थे और न ही ब्रिटिश भारत के सीधे शासित प्रांत। उन्हें ब्रिटिश सर्वोच्चता (पैरामाउंटसी) के अंतर्गत 'अर्ध-स्वायत्त रियासतों' का दर्जा प्राप्त हुआ। इसका तात्पर्य यह था कि राजाओं को अपने आंतरिक प्रशासन और सामाजिक व्यवस्था में स्वतंत्रता प्राप्त थी, लेकिन उनके बाह्य संबंध और रक्षा से जुड़े सभी निर्णय अब ब्रिटिश सरकार के अधीन थे। यह व्यवस्था भारत की आजादी तक इसी स्वरूप में प्रभावी बनी रही थी।

106. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य ने मध्यकालीन भारत के इतिहास में एक रक्षक की भूमिका निभाई थी, जिसने आठवीं से दसवीं शताब्दी तक अरबों के लगातार आक्रमणों को भारत की सीमा पर ही विफल कर दिया। उनकी सैन्य शक्ति और कुशल कूटनीति ने उत्तर भारत को बाहरी आक्रमणों से सुरक्षित रखा। हालांकि, प्रतिहारों के पतन के पश्चात उत्तर भारत में कोई अन्य ऐसी शक्ति नहीं उभरी जो पूरे क्षेत्र को एकीकृत कर सके। इस शक्ति शून्य के कारण ही बाद में गजनवी और गौरी जैसे तुर्क आक्रमणकारियों को भारत के आंतरिक भागों में प्रवेश करने का अवसर मिला।

107. (4) खानवा में बाबर
खानवा के निर्णायक युद्ध में जब बाबर की सेना राजपूतों की विशाल संख्या और साहस को देखकर हतोत्साहित हो रही थी, तब बाबर ने इसे एक धार्मिक युद्ध का रूप दिया। उसने अपने सैनिकों में जोश भरने के लिए 'जिहाद' की घोषणा की और मदिरा का परित्याग करने की कसम खाई। राजपूत सेना को पराजित करने के पश्चात बाबर ने 'गाजी' (काफिरों का संहारक) की उपाधि धारण की। यह उपाधि उसकी धार्मिक विजय और उत्तर भारत पर मुगल सत्ता की पुनर्स्थापना के प्रतीक के रूप में उपयोग की गई थी, जिसने उसे अतिरिक्त सैन्य प्रतिष्ठा प्रदान की थी।

108. (2) कन्नौज के जयचंद्र
1191 के तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान ने मोहम्मद गौरी के विरुद्ध एक संगठित राजपूत मोर्चे का नेतृत्व किया था। इस युद्ध में दिल्ली के गोविंद राय ने अद्वितीय वीरता दिखाई और भुवनमल्ल तथा स्कंद जैसे सेनापतियों ने भी चौहान सेना का कुशलतापूर्वक संचालन किया। हालांकि, कन्नौज के राजा जयचंद्र गहड़वाल इस गठबंधन में सम्मिलित नहीं थे। ऐतिहासिक रूप से जयचंद्र और पृथ्वीराज के बीच गहरी शत्रुता थी, जिसके कारण जयचंद्र ने इस संकट के समय चौहानों की सहायता करने के बजाय तटस्थ रहना उचित समझा, जो आगे चलकर घातक सिद्ध हुआ।

109. (3) इस पर गोविंदराज ने एक अधीनस्थ शासक के रूप में कुछ समय शासन किया।
1192 में तराइन के द्वितीय युद्ध में पृथ्वीराज चौहान की पराजय ने अजमेर के राजनीतिक परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया। विजय के तुरंत बाद मोहम्मद गौरी ने अजमेर को सीधे तुर्की नियंत्रण में नहीं लिया, बल्कि कुछ समय के लिए पृथ्वीराज के पुत्र गोविंदराज को अपनी अधीनता में वहां का शासक नियुक्त किया। यह एक कूटनीतिक कदम था ताकि स्थानीय प्रतिरोध को कम किया जा सके। हालांकि, बाद में विद्रोहों के कारण तुर्कों ने प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित कर लिया और गोविंदराज को अजमेर छोड़कर रणथंभौर में एक नई चौहान शाखा स्थापित करनी पड़ी।

110. (4) पद्मावत
अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1303 में चित्तौड़गढ़ पर किए गए आक्रमण और वहाँ के ऐतिहासिक संघर्ष का वर्णन 1540 ईस्वी में सूफी कवि मलिक मोहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत'

में विस्तार से मिलता है। यद्यपि यह एक महाकाव्य है जिसमें काल्पनिक और काव्यात्मक पुट सम्मिलित है, किंतु इसने रानी पद्मिनी के जौहर और राजपूतों के बलिदान की कथा को भारतीय जनमानस में अमर कर दिया। खिलजी के आक्रमण के तत्कालीन विवरण अमीर खुसरो की कृतियों में भी मिलते हैं, लेकिन रानी पद्मिनी की कथा का मुख्य साहित्यिक आधार जायसी की 'पद्मावत' ही है।

111. (1) गुजरात
मेवाड़ के राणा हम्मीर सिंह ने अपने शासनकाल में न केवल चित्तौड़ को मुक्त कराया, बल्कि मेवाड़ की सैन्य शक्ति का विस्तार पड़ोसी क्षेत्रों में भी किया। इसी क्रम में मेवाड़ की सेना ने 'ईडर' की महत्वपूर्ण सैन्य चौकी पर अधिकार कर लिया था, जो सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण थी। वर्तमान भौगोलिक स्थिति के अनुसार, ईडर गुजरात राज्य के साबरकांठा जिले में स्थित है। उस समय ईडर मेवाड़ और गुजरात के सुल्तानों के बीच संघर्ष का एक प्रमुख केंद्र हुआ करता था, जिस पर नियंत्रण मेवाड़ की पश्चिमी सीमाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करता था।

112. (2) उन्हें मेवाड़ के 84 दुर्गों में से 32 दुर्गों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।
मेवाड़ के राणा कुंभा को राजस्थान की सैन्य वास्तुकला और दुर्ग निर्माण का पितामह माना जाता है। उनकी दूरदर्शी रणनीति के कारण मेवाड़ में रक्षात्मक दुर्गों का एक जाल बिछाया गया था। प्रसिद्ध ग्रंथ 'वीर विनोद' के अनुसार, मेवाड़ के कुल 84 दुर्गों में से 32 दुर्गों का निर्माण या पुनर्निर्माण अकेले राणा कुंभा ने करवाया था। इनमें कुंभलगढ़, अचलगढ़ और मचान जैसे अभेद्य दुर्ग सम्मिलित हैं। उनके द्वारा निर्मित दुर्गों की विशेषता उनकी सुदृढ़ प्राचीरें और रणनीतिक अवस्थिति थी, जिन्होंने सदियों तक बाहरी आक्रमणकारियों से मेवाड़ की सफलतापूर्वक रक्षा की थी।

113. (2) बाबर की सेना पूर्णतः पैदल सेना से निर्मित थी, जिसमें घुड़सवार सेना और तोपखाना दोनों का अभाव था।
1527 में लड़ा गया खानवा का युद्ध मध्यकालीन भारत के सबसे महत्वपूर्ण युद्धों में से एक था, जो आधुनिक राजस्थान के भरतपुर जिले में स्थित खानवा के मैदान में हुआ था। बाबर की विजय का मुख्य आधार उसकी अनुशासित घुड़सवार सेना और शक्तिशाली तोपखाना था, जिसका राजपूतों के पास कोई प्रभावी उत्तर नहीं था। यह कहना पूर्णतः असत्य है कि बाबर के पास तोपखाने का अभाव था; वास्तव में तोपखाना ही इस युद्ध में निर्णायक कारक सिद्ध हुआ था। युद्ध के दौरान राणा सांगा के घायल होने और विश्वासघात ने राजपूतों की हार निश्चित की।

114. (1) सुरजन हाड़ा - अकबर को रणथंभौर सौंप दिया
अकबर ने जब 1569 में रणथंभौर के अभेद्य दुर्ग की घेराबंदी की, तब वहां के शासक राव सुरजन हाड़ा थे। अकबर के कूटनीतिक प्रयासों और आमेर के राजा मान सिंह की मध्यस्थता के कारण सुरजन हाड़ा ने संघर्ष के स्थान पर सम्मानजनक समझौता करना उचित समझा। उन्होंने कुछ विशेष शर्तों के साथ रणथंभौर का दुर्ग अकबर को सौंप दिया और बदले में मुगल सेवा में उच्च पद स्वीकार किया। यह समझौता अकबर की राजपूत नीति की एक बड़ी सफलता थी, क्योंकि इसने बिना भारी रक्तपात के एक अत्यंत महत्वपूर्ण सामरिक केंद्र पर मुगलों का अधिकार सुनिश्चित किया।

115. (3) महाबत खां
हल्दीघाटी के ऐतिहासिक युद्ध में मुगल और मेवाड़ दोनों सेनाओं की ओर से कई प्रसिद्ध सेनापति और योद्धा सम्मिलित हुए थे। मुगलों की ओर से आसफ खां, मान सिंह और सैयद हाशिम ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। महाराणा प्रताप की ओर से रामदास राठौड़, हकीम खां सूरी और पुंजा भील जैसे योद्धाओं ने वीरता दिखाई थी। हालांकि, महाबत खां इस विशिष्ट युद्ध में सैन्य सेनापति के रूप में सम्मिलित नहीं थे। वे बाद के वर्षों में जहांगीर के शासनकाल में एक प्रमुख मुगल सेनापति के रूप में उभरे थे, जिन्होंने मेवाड़ के विरुद्ध अभियानों का नेतृत्व किया था।

116. (4) निरंतर छापामार युद्ध करने के लिए अरावली की पर्वतमालाओं का उपयोग करना।
हल्दीघाटी के युद्ध के उपरांत महाराणा प्रताप ने अपनी युद्ध शैली में आमूलचूल परिवर्तन किया और मुगलों के विरुद्ध अरावली की पर्वतमालाओं को अपनी ढाल बनाया। उन्होंने मैदानी युद्धों के स्थान पर निरंतर 'छापामार युद्ध' (गोरिल्ला वारफेयर) की रणनीति अपनाई, जिसमें अचानक आक्रमण करना और पुनः जंगलों में छिप जाना सम्मिलित था। इस शैली ने मुगलों की विशाल सेना को थका दिया और उन्हें भारी क्षति पहुँचाई। अपनी दुर्गम भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर प्रताप ने मुगलों को मेवाड़ पर कभी भी स्थायी प्रशासनिक और सैन्य नियंत्रण स्थापित करने का अवसर नहीं दिया।

117. (2) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है।
आमेर के कच्छवाहा शासकों और मुगल साम्राज्य के बीच संबंध 16वीं शताब्दी से ही अत्यंत घनिष्ठ और सहयोगात्मक रहे थे। राजा भारमल से शुरू हुआ यह गठबंधन मान सिंह के काल में अपनी चरम पराकाष्ठा पर पहुँचा। राजा मान सिंह अकबर के नवरत्नों में से एक थे और उन्होंने काबुल, बंगाल और बिहार जैसे सुदूर प्रांतों में मुगल सूबेदार के रूप में कार्य करते हुए साम्राज्य विस्तार में अद्वितीय योगदान दिया। अतः यह कहना गलत है कि आमेर और मुगलों के बीच विद्वेषपूर्ण संबंध थे; वास्तव में वे मुगलों के सबसे विश्वसनीय सहयोगी थे।

118. (2) आंतरिक शासक की संप्रभुता को मान्यता देते हुए बाह्य मामलों को नियंत्रित करना।
19वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजपूत राज्यों पर अंग्रेजों द्वारा स्थापित "सर्वोच्चता" (पैरामाउंटसी) एक विशिष्ट वैधानिक अवधारणा थी। इसका मुख्य अर्थ यह था कि ब्रिटिश सरकार ने भारत की सर्वोच्च शक्ति के रूप में राजपूत शासकों की आंतरिक संप्रभुता को मान्यता दी, लेकिन उनके रक्षा, संचार और विदेशी मामलों पर अपना पूर्ण नियंत्रण स्थापित कर लिया। इस व्यवस्था के अंतर्गत राजा अपने राज्यों के भीतर शासन करने के लिए स्वतंत्र थे, किंतु वे किसी अन्य विदेशी शक्ति या पड़ोसी राज्य के साथ बिना ब्रिटिश अनुमति के कोई स्वतंत्र संबंध नहीं रख सकते थे।

119. (4) आपसी संदेह और हितों के टकराव ने एकीकृत कार्रवाई को रोक दिया।

1734 में आयोजित हुरड़ा सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य मराठा आक्रमणों के विरुद्ध एक संयुक्त राजपूत मोर्चा बनाना था, किंतु यह प्रयास सफल नहीं हो सका। इसकी विफलता का प्राथमिक कारण विभिन्न राजपूत शासकों के बीच व्याप्त आपसी संदेह, निजी महत्वाकांक्षाएँ और हितों का टकराव था। यद्यपि उन्होंने एक साझा योजना पर हस्ताक्षर किए थे, लेकिन जब वास्तविक सैन्य कार्रवाई का समय आया, तो वे एक नेतृत्व के नीचे संगठित नहीं हो सके। इस बिखराव और समन्वय की कमी ने मराठों को राजस्थान में अपना प्रभाव और लूटपाट जारी रखने का अवसर दिया।

120. (1) वह अधिकारी जिसने 1817-18 की अधीनस्थ गठबंधन संधियों की वार्ता की।

ब्रिटिश-राजपूत संबंधों के इतिहास में चार्ल्स मेटकाफ एक अत्यंत प्रभावशाली नाम है। 1817-18 के दौरान जब लॉर्ड हेस्टिंग्स ने 'अधीनस्थ पृथक्करण' की नीति अपनाई, तब मेटकाफ ही वह वरिष्ठ ब्रिटिश अधिकारी थे जिन्होंने राजस्थान के विभिन्न राजपूत राज्यों के साथ सहायक संधियों की विस्तृत वार्ताएँ संपन्न कीं। उनकी कूटनीतिक कुशलता ने ही लगभग सभी प्रमुख राज्यों को ब्रिटिश संरक्षण के दायरे में लाने में सफलता प्राप्त की। इन संधियों ने राजस्थान के राजनीतिक परिदृश्य को स्थायी रूप से बदल दिया और ब्रिटिश साम्राज्य की नींव को राजपूताना में मजबूती से स्थापित कर दिया था।

अध्याय 06

मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक एवं राजस्व व्यवस्था

1. मध्यकालीन राजस्थान के केंद्रीय प्रशासन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन शासक की भूमिका को सर्वाधिक उपयुक्त रूप से परिभाषित करता है?
(1) एक निरंकुश शासक जिसने स्थानीय धार्मिक परंपराओं या स्थापित पारंपरिक मानदंडों की पूर्णतः अवहेलना करते हुए शासन किया
(2) कार्यकारी, न्यायिक और सैन्य क्षेत्रों में सर्वोच्च अधिकारी, जो धर्म और कुल के मानदंडों द्वारा निर्देशित होता था
(3) एक संवैधानिक प्रमुख जिसके प्रशासनिक कार्य एक औपचारिक और लिखित कानूनी संहिता द्वारा प्रतिबंधित थे
(4) एक प्रतीकात्मक प्रमुख जिसकी सभी निर्णय लेने और कार्यकारी शक्तियाँ नियुक्त प्रधानमंत्री को सौंपी गई थीं
(5) प्रश्न अनुत्तरित

2. मध्यकालीन राजपूताना में लागू 'राजाओं के दैवीय अधिकार' के सिद्धांत के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) शासकों ने अपने अधिकार को वैध बनाने के लिए दैवीय सत्ताओं के वंशज होने का दावा किया
(2) शासकों ने किसी भी कुल के जुड़ाव को नकारते हुए प्राथमिक देवता के सीधे अवतार होने का दावा किया
(3) यह सिद्धांत मुगलों द्वारा प्रस्तुत किया गया था और राजपूत शासकों पर कठोरता से लागू किया गया था
(4) दैवीय अधिकार ने अधीनस्थ जागीरदारों के भूमि अधिकारों को पूर्णतः समाप्त कर दिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

3. सूची-I (केंद्रीय अधिकारी) को सूची-II (उनके प्राथमिक कर्तव्य) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (केंद्रीय अधिकारी)
A. प्रधान
B. दीवान
C. मीर बख्शी
D. खजांची
सूची II: (प्राथमिक कर्तव्य)
i. सैन्य विभाग का प्रमुख और वेतन भुगतान अधिकारी
ii. राज्य के खजाने का प्रभारी
iii. मुख्यमंत्री या राज्य का प्रमुख कुलीन
iv. वित्त और राजस्व विभाग का प्रमुख
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

4. केंद्रीय प्रशासनिक संरचना के संबंध में, 'दरबार-ए-आम' का प्राथमिक कार्य क्या था?
(1) यह शासक के निकटतम संबंधियों की एक अत्यंत गुप्त परिषद थी
(2) यह विशेष रूप से बाह्य व्यापार नियमों के लिए उत्तरदायी विभाग था
(3) यह केवल जागीरदारों के उत्तराधिकार विवादों के समाधान हेतु एक विशेष न्यायालय था
(4) यह सार्वजनिक सभा स्थल था जहाँ शासक आम लोगों की शिकायतें सुनता था
(5) प्रश्न अनुत्तरित

5. मध्यकालीन राजस्थान में शासक और कुलीन वर्ग के बीच संबंधों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: शासक को समस्त भूमि का पूर्ण स्वामी माना जाता था, और कुलीन केवल वेतनभोगी कर्मचारी थे।
कथन II: प्रशासनिक ढांचा 'भाई-बंध' अवधारणा से अत्यधिक प्रभावित था, जहाँ शासक को समानों में प्रथम के रूप में देखा जाता था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

6. मध्यकालीन राजस्थान में शासक की प्रशासनिक शक्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वह दीवानी और फौजदारी मामलों में अपील का सर्वोच्च न्यायालय था।
II. उसके पास जागीरें प्रदान करने, जप्त करने या स्थानांतरित करने का एकमात्र अधिकार था।
III. उसने व्यक्तिगत रूप से राज्य के प्रत्येक गाँव के राजस्व

का निर्धारण किया।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

7. मंत्रिपरिषद का निम्नलिखित में से कौन सा अधिकारी सामान्यतः राज्य के अभिलेख बनाए रखने, शाही आदेश जारी करने और राजनयिक पत्राचार संभालने के लिए उत्तरदायी था?

(1) कोतवाल
(2) फौजदार
(3) किलेदार
(4) मीर मुंशी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

कथन (A): मध्यकालीन राजस्थान में शासक, सैद्धांतिक रूप से निरंकुश होने के बावजूद, शायद ही कभी प्रमुख कुल प्रमुखों की सामूहिक इच्छा के विरुद्ध कार्य कर सकता था।

कारण (R): राज्य को शासक कुल की संयुक्त संपत्ति माना जाता था, और शासक की सैन्य शक्ति काफी हद तक इन प्रमुखों द्वारा प्रदान की गई सैन्य टुकड़ियों पर निर्भर थी।

उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?

(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. मारवाड़ (जोधपुर) के मध्यकालीन प्रशासनिक ढांचे के संदर्भ में, 'मुसाहिब' के रूप में जाने जाने वाले अधिकारी का मुख्य कार्य था:

(1) नौसेना बेड़े का मुख्य सेनापति
(2) स्थानीय आरक्षी व्यवस्था के लिए उत्तरदायी गाँव का मुखिया
(3) शासक का एक प्रमुख सलाहकार या मुख्यमंत्री
(4) शाही दान का प्रभारी अधिकारी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. सूची-I (मध्यकालीन राजपूताना के विभाग) को सूची-II (कार्य क्षेत्र) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (विभाग)

A. सिलहखाना
B. सूरतखाना
C. कपड़-द्वारा
D. पोथीखाना

सूची II: (कार्य क्षेत्र)

i. शाही पोशाक और बहुमूल्य वस्तुएं
ii. राज्य पुस्तकालय और पांडुलिपियाँ
iii. राज्य शस्त्रागार और शस्त्र
iv. चित्रशाला और दृश्य अभिलेख

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मध्यकालीन राजपूत राज्यों में 'प्रधान' की स्थिति का गलत वर्णन करता है?

(1) उसने शासक की अस्थाई अनुपस्थिति के दौरान प्राथमिक प्रतिनिधि और सहायक के रूप में कार्य किया।
(2) वह प्रायः राज्य के राजस्व और सैन्य मामलों पर व्यापक और महत्वपूर्ण प्रभाव डालता था।
(3) आधिकारिक पदनाम क्षेत्र के अनुसार भिन्न था, जिसे अन्यथा दीवान या मुसाहिब के नाम से जाना जाता था।
(4) यह पद सदैव वंशानुगत था और एक विशिष्ट कुलीन परिवार तक ही सीमित था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. मध्यकालीन राजस्थान में दीवान के कर्तव्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. वह वित्त विभाग का सर्वोच्च प्रमुख था।
II. उसने खालसा भूमि से भू-राजस्व के संग्रह का पर्यवेक्षण किया।
III. उसने राज्य की आय और व्यय का लेखा-जोखा रखा।
IV. वह शासक के स्थान पर सीधे सैन्य अभियानों का नेतृत्व करने के लिए उत्तरदायी था।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?

(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और III
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. अधिकारी और उनके प्राथमिक कार्य क्षेत्र का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?

(1) खजांची - न्याय प्रशासन के लिए उत्तरदायी अधिकारी
(2) मीर बख्शी - शाही पाकशाला का मुख्य पर्यवेक्षक
(3) दरोगा-ए-डाक - डाक और गुप्तचर तंत्र का प्रमुख
(4) सिकदार - राज्य के आभूषणों और आधिकारिक टकसाल इकाई का रक्षक
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में कोतवाल के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) वह मुख्य रूप से राजधानी में कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए उत्तरदायी था।

(2) उसके कर्तव्यों में बाजारों को विनियमित करना और बाट एवं माप की जाँच करना शामिल था।
(3) उसने कभी-कभी शहर में लघु आपराधिक मामलों के लिए न्यायाधीश के रूप में कार्य किया।
(4) उसके पास राज्य की संपूर्ण घुड़सवार सेना पर सर्वोच्च कमान थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. मध्यकालीन राजस्थान के निम्नलिखित प्रशासनिक अधिकारियों को उनके सामान्य पदानुक्रम (उच्चतम से निम्नतम) के अवरोही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. प्रधान
II. दीवान
III. दरोगा
IV. आमिल
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, I, III, IV
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. मध्यकालीन राजस्थान के सैन्य प्रशासन में 'बारगीर' शब्द का तात्पर्य था:
(1) एक सैनिक जो अपना निजी घोड़ा और शस्त्र लाता था।
(2) एक सैनिक जिसे राज्य द्वारा घोड़ा और शस्त्र प्रदान किए जाते थे।
(3) स्थाई दुर्ग सेना का उच्च पदस्थ सेनापति।
(4) तोपखाना कोर का प्रभारी विशेष अधिकारी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. मध्यकालीन राजपूताना में सैन्य संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: घुड़सवार सेना राजपूत सेनाओं का सर्वाधिक सम्मानित और निर्णायक अंग थी।
कथन II: पैदल सेना मुख्य रूप से उच्च पदस्थ राजपूत कुलीनों और जागीरदारों से बनी थी।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. मध्यकालीन राजस्थान में दुर्ग प्रशासन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. दुर्ग सैन्य गढ़ और आसपास के क्षेत्र के प्रशासनिक केंद्र दोनों के रूप में कार्य करते थे।
II. 'किलेदार' दुर्ग की रक्षा और प्रशासन का मुख्य अधिकारी था।
III. लंबी घेराबंदी का सामना करने के लिए धान्य, जल और गोला-बारूद का पर्याप्त भंडार रखा जाता था।
IV. दुर्ग की चौकसी पूर्णतः राजपूताना के बाहर के वैतनिक सैनिकों से बनी थी।
V. बाह्य आक्रमणों के दौरान स्थानीय किसान प्रायः इन दुर्गों में शरण लेते थे।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. मध्यकालीन राजस्थान के सैन्य प्रशासन से संबंधित निम्नलिखित शब्दों में से विषम को चुनिए।
(1) तोपखाना
(2) सिलहखाना
(3) पोथीखाना
(4) फीलखाना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. मध्यकालीन राजस्थान के सैन्य और क्षेत्रीय प्रशासन में, 'फौजदार' मुख्य रूप से किसके लिए उत्तरदायी था?
(1) संपूर्ण राज्य में विभिन्न धार्मिक बंदोबस्त का प्रबंधन करना।
(2) सभी प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मार्गों पर सीमा शुल्क एकत्र करना।
(3) शासक के अत्यंत विश्वसनीय निजी अंगरक्षक के रूप में कार्य करना।
(4) स्थानीय व्यवस्था बनाए रखना और जिला सैन्य इकाइयों की कमान संभालना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. सूची-I (सैन्य शब्द) को सूची-II (अर्थ) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (सैन्य शब्द)
A. सिलेहदार
B. अहदी
C. तोपची
D. प्यादा
सूची II: (अर्थ)
i. तोपखाना सैनिक या गोलंदाज
ii. पैदल सैनिक
iii. घुड़सवार जो अपने घोड़े और शस्त्रों की आपूर्ति स्वयं करता था
iv. कुलीन सैनिक जो सीधे शासक के प्रति उत्तरदायी था
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

प्रायः गैर-सैन्य होते थे
iii. ब्राह्मण, विद्वान और धार्मिक व्यक्ति
iv. स्थानीय रक्षक और बलिदान देने वालों के परिवार
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. 'खाम' (या जप्ती) जागीर के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह एक ऐसी जागीर को संदर्भित करता था जिसे अस्थाई रुप से जप्त कर लिया गया था और सीधे राज्य प्रबंधन के अधीन लाया गया था।
(2) खाम भूमि वह भूमि थी जो विदेशी आक्रमणकारियों को स्थाई रुप से कर के रूप में दान की गई थी।
(3) यदि जागीरदार अपने सैन्य दायित्वों को निभाने में विफल रहता था, तो उसकी जागीर को 'खाम' के अधीन रखा जा सकता था।
(4) उत्तराधिकार विवाद के दौरान जागीर को प्रायः तब तक 'खाम' के अधीन रखा जाता था जब तक कि वैध उत्तराधिकारी को मान्यता नहीं मिल जाती थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. मेवाड़ राज्य की कृषि शब्दावली में, राज्य के अधिकारियों द्वारा सीधे प्रशासित सरकारी भूमि को स्थानीय रूप से किस नाम से जाना जाता था?
(1) बीघादारी
(2) मुकाता
(3) इजारा
(4) हवाला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. विभिन्न भूमि अनुदानों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'पेशकश' व्यापारियों को दी जाने वाली एक प्रकार की भूमि थी।
II. 'अलुफा' राजघराने की महिलाओं को दिया जाने वाला भरण-पोषण अनुदान था।
III. 'सासन' भूमि सामान्यतः राज्य के हस्तक्षेप और कराधान से मुक्त थी।
IV. 'भोमियों' का महत्वपूर्ण स्थानीय प्रभाव था और वे प्रायः स्थानीय आरक्षी के रूप में कार्य करते थे।
V. 'तनख्वाह' जागीरें धारक की मृत्यु पर 'राजगामी' कानून के अधीन थीं।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल II, III, IV और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल I, III, IV और V
(4) केवल I, II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. मध्यकालीन राजस्थान की प्रशासनिक व्यवस्था में 'रेख' शब्द का तात्पर्य है:
(1) जागीरदार द्वारा शासक को दी जाने वाली पारंपरिक और औपचारिक बधाई।
(2) सभी कृषि उपकरणों पर लगाया जाने वाला विशिष्ट और भारी कर।
(3) सैन्य और वित्तीय दायित्वों को निर्धारित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला अनुमानित राजस्व।
(4) ग्राम स्तर के विवादों को सुलझाने के लिए स्थापित विशेष न्यायिक न्यायालय।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. मध्यकालीन जागीर प्रणाली में 'चाकरी' नामक दायित्व का क्या अर्थ था?
(1) सैन्य सेवा प्रदान करना और घुड़सवारों का एक निश्चित कोटा सुनिश्चित करना।
(2) शाही राजकुमार के जन्म के दौरान एक निश्चित नकद भेंट देना।
(3) फसल का एक हिस्सा राजकीय अन्नागार में जमा करना।
(4) जागीर से गुजरने वाले विभिन्न व्यापारिक मार्गों का रखरखाव करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): जागीरदार की मृत्यु पर, उसके उत्तराधिकारी को हुक्मनामा, नजराना या तलवार-बंधाई के रूप में एक भारी उत्तराधिकार शुल्क देना पड़ता था।
कारण (R): राज्य तकनीकी रूप से धारक की मृत्यु पर जागीर को पुनः अधिग्रहित कर लेता था, और शासक की औपचारिक मान्यता और अनुदान के नवीनीकरण के लिए शुल्क का भुगतान किया जाता था।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. भूमिधारकों के दायित्वों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) भोमियों को तनख्वाह जागीरदारों के समान ही नियमित सैन्य सेवा (चाकरी) प्रदान करने की आवश्यकता थी।
(2) जागीरदारों को दशहरा जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर शासक के दरबार में उपस्थित होना आवश्यक था।
(3) सासन धारकों के लिए उत्तराधिकार पर हुक्मनामा देना अनिवार्य था।
(4) जागीरदारों के पास अपनी जागीर के भीतर स्वतंत्र रूप से सिक्के ढालने का अधिकार था।

सूची I: (शब्द)
A. ठिकाना
B. उमराव
C. पट्टायत
D. भोमिया
सूची II: (विवरण)
i. एक प्रमुख कुलीन या वरिष्ठ जागीरदार (विशेष रूप से मेवाड़ में)
ii. एक रियासत के भीतर एक बड़ी जागीर या प्रमुख क्षेत्र
iii. एक भूमिधारक जिसने गाँव की सुरक्षा करने की शर्त पर भूमि धारण की थी
iv. लिखित विलेख (पट्टा) के माध्यम से भूमि धारण करने वाला कुलीन
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. 'सिरायत' प्रणाली, जिसने राज्य परिषद में विशिष्ट उच्च पदों के लिए वंशानुगत अधिकार रखने वाले प्रमुख कुलीनों को नामित किया, किसके प्रशासन की एक प्रमुख विशेषता थी?
(1) मारवाड़ (जोधपुर)
(2) जयपुर
(3) कोटा
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. सही क्रम का चयन कीजिए जो मध्यकालीन राजपूत राज्य में क्षेत्रीय विभाजनों के प्रशासनिक पदानुक्रम को सबसे बड़े से छोटे की ओर दर्शाता है।
(1) राज्य → परगना → टप्पा → गाँव (ग्राम)
(2) राज्य → टप्पा → परगना → गाँव (ग्राम)
(3) परगना → राज्य → टप्पा → गाँव (ग्राम)
(4) गाँव (ग्राम) → टप्पा → परगना → राज्य
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. जागीरों के प्रकार के संदर्भ में, 'वतन जागीर' का क्या अर्थ था?
(1) विशेष रूप से विदेशी वैतनिक सैनिकों को दिया गया एक अस्थाई और सशर्त भूमि अनुदान।
(2) एक वंशानुगत भूमि अनुदान, जो सामान्यतः गैर-हस्तांतरणीय मूल मातृभूमि होती थी।
(3) विशेष रूप से धार्मिक स्थलों के स्थाई रखरखाव के लिए दिया गया भूमि अनुदान।
(4) एक निश्चित और वार्षिक कर के बदले व्यापारियों को दी गई भूमि।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. जागीरों के प्रकार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: एक 'तनख्वाह जागीर' किसी कुलीन को पूर्णतः वेतन के बदले आवंटित की जाती थी और सामान्यतः हस्तांतरणीय होती थी।
कथन II: एक 'वतन जागीर' वंशानुगत होती थी और शासक द्वारा नियमित स्थानांतरण के अधीन नहीं होती थी।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. मध्यकालीन राजस्थान में 'सासन' या 'उदक' भूमि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ये राजस्व-मुक्त अनुदान थे।
II. ये मुख्य रूप से युद्ध के मैदान में सैन्य उपलब्धियों के लिए दिए गए थे।
III. ये ब्राह्मणों, चारणों, भाटों या धार्मिक संस्थानों को दिए गए थे।
IV. इन भूमि के प्राप्तकर्ताओं पर नियमित सैन्य सेवा (चाकरी) का भारी दायित्व था।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. मध्यकालीन राजस्थान में 'भोम' कार्यकाल की सर्वाधिक उपयुक्त परिभाषा निम्नलिखित में से कौन सी है?
(1) उस व्यक्ति को दी गई भूमि जिसने किसी गाँव से सफलतापूर्वक कर वसूल किया हो।
(2) किसी राज्य अधिकारी को उसके वेतन बकाया के निपटान तक अस्थाई रूप से दी गई भूमि।
(3) विशेष रूप से शाही आखेट अभियानों के लिए आरक्षित सरकारी भूमि।
(4) स्थानीय सुरक्षा के लिए या बलिदान देने वाले ग्रामीण रक्षकों के उत्तराधिकारियों को दिया गया वंशानुगत अनुदान।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. सूची-I (जागीर/भूमि अनुदान का प्रकार) को सूची-II (अनुदान प्राप्तकर्ता की प्रकृति) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (अनुदान का प्रकार)
A. सासन
B. भोम
C. तनख्वाह जागीर
D. इनाम
सूची II: (अनुदान प्राप्तकर्ता की प्रकृति)
i. वेतन के बदले राज्य के अधिकारी और कुलीन
ii. विशेष सेवाओं या कौशल के लिए पुरस्कृत व्यक्ति, जो

(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. मध्यकालीन पंचायत प्रणाली के संदर्भ में 'चौरासी' शब्द का प्रायः तात्पर्य था:
(1) कुल वार्षिक फसल उपज के 84% के बराबर कर।
(2) प्रत्येक गाँव में तैनात 84 विशिष्ट रक्षकों की स्थाई सेना।
(3) गाँव के दंड का भुगतान करने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक विशिष्ट सिक्का।
(4) लगभग 84 गाँवों के समूह का प्रतिनिधित्व करने वाली एक परिषद।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) ग्राम - ग्राम प्रशासन की मूल इकाई
(2) परगना - गाँवों के समूह वाला एक जिला
(3) सूबा - गाँव के भीतर का सबसे छोटा मोहल्ला
(4) टप्पा - गाँव और परगना के बीच की एक मध्यवर्ती इकाई
(5) प्रश्न अनुत्तरित

86. मध्यकालीन राजस्थान में निम्नलिखित न्यायिक मंचों को अपील के मानक पदानुक्रमित क्रम में, निम्नतम स्तर से उच्चतम तक व्यवस्थित कीजिए:
I. शासक का न्यायालय (न्याय सभा)
II. ग्राम पंचायत
III. हाकिम का न्यायालय (परगना स्तर पर)
IV. दीवान का न्यायालय
सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) II, III, IV, I
(2) II, IV, III, I
(3) III, II, IV, I
(4) II, I, III, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. मध्यकालीन राजस्थान में ग्राम पंचायत का अधिकार मुख्य रूप से किससे प्राप्त होता था?
(1) अंग्रेजों द्वारा तैयार किया गया एक लिखित और औपचारिक विधान।
(2) तत्कालीन मुगल सम्राट द्वारा सीधे जारी किए गए कठोर आदेश।
(3) पंचों द्वारा आदेशित अपार सैन्य शक्ति और बल।
(4) सदियों पुराने स्थानीय रीति-रिवाज और समुदाय की नैतिक स्वीकार्यता।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. किसी अपराधी सदस्य के विरुद्ध जाति पंचायत द्वारा निम्नलिखित में से कौन सा दंड सर्वाधिक और प्रभावी ढंग से उपयोग किया जाता था?
(1) 'हुक्का-पानी बंद' (सामाजिक बहिष्कार और जाति से निष्कासन)।
(2) सुरक्षित राजकीय दुर्ग के भीतर आजीवन कारावास।
(3) उनकी व्यक्तिगत वतन जागीर की तत्काल जप्ती।
(4) किसी सुदूर विदेशी देश में अनिवार्य निर्वासन।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. मध्यकालीन राजस्थान में व्यापार और वाणिज्य के संदर्भ में, 'दान' शब्द का तात्पर्य है:
(1) स्थानीय किसानों द्वारा स्वेच्छा से दिया गया धार्मिक दान।
(2) विभिन्न स्थानीय साहूकारों द्वारा वसूल की जाने वाली उच्च ब्याज दर।
(3) राज्य की सीमाओं को पार करने पर लगाया जाने वाला पारगमन और सीमा शुल्क।
(4) नमक के क्षेत्रीय निर्माण पर लगने वाला विशिष्ट और भारी कर।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. व्यापारिक मार्गों पर व्यापारियों और माल की सुरक्षित आवाजाही सुनिश्चित करने के लिए सुरक्षा शुल्क के रूप में मुख्य रूप से निम्नलिखित में से कौन सा कर लगाया गया था?
(1) राहदारी
(2) सिंगोटी
(3) मापा
(4) जरी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

91. मध्यकालीन राजस्थान में 'बंजारों' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे खानाबदोश व्यापारी और भारवाही थे जो पशुओं पर धान्य और नमक जैसा थोक माल ले जाते थे।
II. उन्होंने सैन्य अभियानों के दौरान सेनाओं के लिए आपूर्ति श्रृंखला बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
III. उन्हें सभी राजपूत राज्यों में किसी भी प्रकार के पारगमन शुल्क के भुगतान से पूर्णतः छूट दी गई थी।
IV. वे प्रायः 'टांडा' के रूप में जाने जाने वाले बड़े संगठित समूहों में चलते थे।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. मध्यकालीन राजपूताना के बाजार नियमों में 'मापा' कर क्या था?
(1) विशेष रूप से घोड़ों के निर्यात पर लगाया जाने वाला कर
(2) स्थानीय बाजार या मंडी में बेचे जाने वाले माल पर लगाया जाने वाला बिक्री कर
(3) नई कृषि भूमि के मानचित्रण और मापन पर लगने वाला

(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. जागीरदारों के सैन्य दायित्वों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. एक जागीरदार को कितने सैनिकों का रखरखाव करना था, यह उसकी जागीर की 'रेख' द्वारा निर्धारित किया जाता था।

II. यदि जागीरदार 'जकात' नामक एक विशेष कर देते थे, तो उन्हें सैन्य सेवा से छूट दी जाती थी।

III. सैन्य अभियान के दौरान सैनिक उपलब्ध कराने में विफलता के परिणामस्वरूप जागीर जप्त की जा सकती थी।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?

(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल I और III
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. मध्यकालीन राजस्थान में जागीरदार द्वारा केंद्रीय शासक को दिए जाने वाले करों या दायित्वों में निम्नलिखित में से कौन सा सम्मिलित नहीं था?

(1) न्योता (विशेष अवसरों पर प्रथागत उपहार)
(2) नजर (दरबार में उपस्थिति के दौरान भेंट किया गया उपहार)
(3) तलवार-बंधाई (उत्तराधिकार शुल्क)
(4) जजिया (गैर-मुसलमानों के लिए धार्मिक कर)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. सूची-I (दायित्व/कर) को सूची-II (संदर्भ) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (दायित्व/कर)

A. तलवार-बंधाई
B. चाकरी
C. रेख
D. न्योता

सूची II: (संदर्भ)

i. निर्धारित राजस्व जिसके आधार पर सैन्य टुकड़ी का कोटा तय होता था
ii. शाही विवाह जैसे अवसरों पर नकद योगदान
iii. राज्य को अनिवार्य सैन्य सेवा
iv. नए जागीरदार द्वारा भुगतान किया गया उत्तराधिकार शुल्क

(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. जागीर के उत्तराधिकार की सामान्य प्रक्रिया के निम्नलिखित चरणों को कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. खाम (अस्थाई राज्य प्रबंधन) लागू करना
II. वर्तमान जागीरदार की मृत्यु
III. उत्तराधिकारी द्वारा हुक्मनामा/नजराना का भुगतान
IV. शासक द्वारा नया पट्टा और मातमी जारी करना

सही क्रम का चयन कीजिए:

(1) II, III, I, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, II, IV, III
(4) II, IV, III, I
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. मध्यकालीन राजस्थान की राजस्व निर्धारण प्रणालियों में, 'लाटा' शब्द का क्या तात्पर्य था?

(1) एक मानक रस्सी का उपयोग करके खड़ी फसल की माप के आधार पर निर्धारण।
(2) खलिहान में फसल काटने के बाद उपज का अनुमान लगाना।
(3) ऐतिहासिक उत्पादन औसत के आधार पर नकद में राजस्व का संग्रह।
(4) एक विशिष्ट क्षेत्र के लिए राजस्व कृषक को दिया गया निश्चित अवधि का अनुबंध।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. मध्यकालीन राजस्व प्रशासन के संदर्भ में 'मुकाता' या 'इजारा' प्रणाली का अर्थ था:

(1) एक ऐसी प्रणाली जहाँ राजस्व संग्रह के अधिकार उच्चतम बोली लगाने वाले को नीलाम किए जाते थे।
(2) बिना किसी मध्यस्थ के राज्य के अधिकारियों द्वारा प्रत्यक्ष निर्धारण की प्रणाली।
(3) विधवाओं के स्वामित्व वाली सभी भूमि के लिए भू-राजस्व की छूट।
(4) राज्य द्वारा निश्चित मूल्यों पर धान्य की अनिवार्य खरीद।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. मध्यकालीन राजस्थान में 'बटाई' (फसल-साझाकरण) प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. 'खेत बटाई' में कटाई से पहले राज्य और किसान के बीच खेत का ही बँटवारा कर दिया जाता था।

II. 'लांक बटाई' में गहाई से पहले कटी हुई फसल के गट्ठरों का बँटवारा किया जाता था।

III. 'रास बटाई' में गहाई के बाद अनाज के ढेर का बँटवारा किया जाता था।

IV. बटाई प्रणाली किसानों के बीच अत्यंत अलोकप्रिय थी क्योंकि इसने फसल खराब होने का पूरा जोखिम उन पर डाल दिया था।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. उत्तर मध्यकाल (18वीं शताब्दी) के दौरान, राजस्थान के शासकों ने अपनी सेनाओं में निम्नलिखित में से किस समूह को वैतनिक सैनिकों के रूप में नियुक्त करना प्रारंभ किया?
(1) पुर्तगाली और डच नाविक
(2) सिंधी, रोहिल्ला और नागा साधु
(3) तिब्बती भिक्षु और गोरखा
(4) विशेष रूप से एबिसिनियाई घुड़सवार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): मध्यकाल के दौरान, राजपूत शासकों ने अपनी राजधानियों और रणनीतिक क्षेत्रीय केंद्रों की भारी किलेबंदी की।
कारण (R): दुर्ग विशुद्ध रूप से सजावटी उद्देश्यों के लिए और विदेशी दूतों की भव्य मेजबानी के लिए आवश्यक थे।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजपूत राज्यों के सैन्य प्रशासन पर मुगल सहयोग के प्रभाव की सही पहचान करता है?
(1) इसने श्रेणीबद्ध पद (मनसब) और विशेष तोपखाना इकाइयाँ प्रारंभ कीं।
(2) इसके कारण राजपूत घुड़सवार सेना का पूर्ण और स्थाई विघटन हुआ।
(3) इसने राजपूत शासकों को केवल रक्षात्मक सैन्य रणनीति अपनाने के लिए बाध्य किया।
(4) इसने सैनिकों के लिए फारसी को एकमात्र कमान भाषा के रूप में उपयोग करना अनिवार्य कर दिया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. पूर्व मध्यकालीन राजपूत राजनीति में जागीर प्रणाली का आधार, जो इस अवधारणा पर आधारित था कि राज्य शासक कुल की संयुक्त संपत्ति है, किस नाम से जाना जाता है?
(1) जप्ती प्रणाली
(2) मनसबदारी प्रणाली
(3) भाई-बंध प्रणाली
(4) इजारा प्रणाली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. मध्यकालीन राजस्थान में जागीर अधिकारों की प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. जागीर मूल रूप से राज्य सेवाओं, मुख्य रूप से सैन्य सेवाओं के बदले में दिया गया भूमि अनुदान था।
II. जागीरदारों के पास भूमि का पूर्ण स्वामित्व था और वे इसे व्यापारियों को बेच सकते थे।
III. शासक के पास जागीर को पुनः अधिग्रहित करने या स्थानांतरित करने का सैद्धांतिक अधिकार था।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. मध्यकालीन राजस्थान की कृषि व्यवस्था में, 'खालसा' और 'जागीर' भूमि के बीच प्राथमिक अंतर क्या था?
(1) खालसा भूमि काफी हद तक बंजर थी; जागीर भूमि असाधारण रूप से उपजाऊ थी।
(2) खालसा भूमि ब्राह्मणों के स्वामित्व में थी; जागीर भूमि व्यापारियों की थी।
(3) खालसा भूमि को करों से छूट दी गई थी; जागीर भूमि पर भारी कर लगाया गया था।
(4) खालसा का राजस्व राज्य को जाता था; जागीर का राजस्व कुलीनों को आवंटित किया जाता था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. भूमि बंदोबस्त से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) सासन - ब्राह्मणों, चारणों या मंदिरों को दिया गया कर-मुक्त भूमि अनुदान
(2) खालसा - विशेष रूप से ग्राम पंचायत की चराई की आवश्यकताओं के लिए आरक्षित भूमि
(3) भोम - विशेष सेवाओं या वीरगति की मान्यता में दी गई भूमि, जो सामान्यतः नाममात्र के किराए के अधीन होती है
(4) हवाला - राज्य के अधिकारियों द्वारा सीधे प्रबंधित सरकारी भूमि (विशेष रूप से मेवाड़ में)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. राजपूत शासक के राजनीतिक अधिकार पर 'कुल स्वामित्व' की अवधारणा का प्राथमिक प्रभाव क्या था?
(1) इसने शासक को बिना किसी विरोध के निरंकुश तानाशाह बनने की अनुमति दी।
(2) इसने शासक से गाँव के मुखियाओं को सारी सैन्य शक्ति हस्तांतरित कर दी।
(3) इसके तहत शासक को प्रमुख कुल प्रमुखों से परामर्श करने और उन्हें साथ लेकर चलने की आवश्यकता होती थी।
(4) इसके कारण 16वीं शताब्दी तक जागीर प्रणाली का स्थाई उन्मूलन हुआ।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. सूची-I (सामंती/प्रशासनिक शब्द) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।

60. सिंचाई के आधार पर भूमि वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'चाही' भूमि कुओं से कृत्रिम सिंचाई पर निर्भर थी।
II. 'नहरी' भूमि वह थी जिसे नहरों से जल दिया जाता था।
III. सिंचित भूमि (चाही/नहरी) के लिए राजस्व दरें सामान्यतः वर्षा आधारित भूमि (बरानी) की तुलना में कम थीं।
IV. 'तलाबी' उन भूमियों को संदर्भित करता था जो तालाबों या पोखरों द्वारा सिंचित थीं।
V. सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता राज्य की राजस्व मांग का एक प्राथमिक निर्धारक थी।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और V
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. निम्नलिखित शब्दों में से विषम को चुनिए, जो मध्यकालीन राजस्थान में भूमि माप की इकाइयों का प्रतिनिधित्व करते हैं:
(1) बीघा
(2) बिस्वा
(3) मन
(4) जरीब
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. राजस्थान के उत्तर मध्यकालीन कृषि ढांचे में 'चाही' और 'नहरी' भूमि के बीच का अंतर किस पर आधारित था?
(1) उगाई जाने वाली फसल का प्रकार (खाद्यान्न बनाम नकद फसल)
(2) भूमि का स्वामित्व (राज्य बनाम कुलीन)
(3) किसान की धार्मिक संबद्धता
(4) सिंचाई का स्रोत (कुआँ बनाम नहर)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. कृषि भूमि के निम्नलिखित वर्गीकरणों में से, किस पर सामान्यतः राज्य को न्यूनतम भू-राजस्व दर प्राप्त होती थी?
(1) बरानी
(2) चाही
(3) नहरी
(4) पीवल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. मानक मध्यकालीन निर्धारण प्रथाओं के आधार पर, निम्नलिखित प्रकार की भूमि को उनके प्रति बीघा राजस्व उपज के सामान्य क्रम में, उच्चतम से निम्नतम तक व्यवस्थित कीजिए:
(1) बरानी → चाही → मगरा
(2) चाही → बरानी → मगरा
(3) मगरा → बरानी → चाही
(4) चाही → मगरा → बरानी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. मध्यकालीन राजस्थान में राजस्व प्रणाली के संदर्भ में, 'लाग-बाग' शब्द का तात्पर्य है:
(1) राजधानी में स्थित प्राथमिक केंद्रीय कोष।
(2) किसानों पर लगाए गए विभिन्न उपकर और स्वेच्छाचारी कर।
(3) जागीर संपत्ति प्रदान करने वाला औपचारिक और आधिकारिक प्रलेख।
(4) गाँव द्वारा प्रदान की जाने वाली स्थाई सैन्य टुकड़ी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. 'चंवरी' (या चावर) कर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह किसान के परिवार में पुत्री के विवाह के अवसर पर लगाया जाने वाला कर था।
II. इसका व्यापक विरोध हुआ और यह बिजोलिया जैसे क्षेत्रों में किसान असंतोष का एक प्रमुख कारण बना।
III. यह कृषि उपकरणों पर लगाया जाने वाला निर्यात शुल्क था।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'खाद-लाकड़' ग्रामीणों से एकत्र किया जाने वाला एक उपकर था ताकि राज्य के अधिकारियों या शासक के पड़ाव के समय उन्हें लकड़ी और चारा उपलब्ध कराया जा सके।
कथन II: इस प्रकार के उपकर सदैव प्राथमिक भू-राजस्व मांग के साथ समायोजित किए जाते थे और किसानों पर कभी अतिरिक्त भार नहीं डालते थे।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. सूची-I (विशिष्ट उपकर) को सूची-II (उपकर की प्रकृति) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (विशिष्ट उपकर)
A. सिंगोटी
B. हलबरार
C. बैठ-बेगार
D. कांसक
सूची II: (उपकर की प्रकृति)
i. किसान के स्वामित्व वाले प्रति हल पर लगाया जाने वाला कर
ii. पशुधन पर लगने वाला कर

iii. पीतल के पात्रों या उनके समतुल्य मूल्य के रूप में एकत्र किया गया कर
iv. राज्य या जागीरदार द्वारा ली जाने वाली बाध्यकारी, अवैतनिक श्रम (बेगार)

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. मध्यकालीन राजपूताना में, 'जकात' नामक कर मुख्य रूप से किससे संबंधित था?
(1) विशेष रूप से मस्जिदों के रखरखाव के लिए एकत्र किया गया एक धार्मिक कर।
(2) किसी कुलीन परिवार में पुरुष उत्तराधिकारी के जन्म पर लगने वाला कर।
(3) राज्य से गुजरने वाले माल पर सीमा शुल्क और पारगमन शुल्क।
(4) चोरों को पकड़ने में विफल रहने वाले गाँवों पर लगाया गया दंड।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. मध्यकालीन राजस्थान में 'लाग-बाग' के संग्रह के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) लाग-बाग में नियमित प्रथागत देय राशि और स्वेच्छाचारी मांगें दोनों सम्मिलित थीं।
(2) लाग-बाग को एक केंद्रीकृत लिखित विधान द्वारा कठोरता से विनियमित किया गया था।
(3) उपकरों की संख्या प्रायः एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने में बहुत भिन्न होती थी।
(4) 'कामठा लाग' राज्य के दुर्ग निर्माण के लिए एकत्र किया जाने वाला कर था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. कई उपकरों (लाग-बाग) की दमनकारी प्रकृति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने कृषि उपज के किसान के शुद्ध हिस्से को काफी कम कर दिया।
II. वे 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में कृषि अशांति का प्राथमिक कारण थे।
III. इन उपकरों का भार निम्न जाति के किसानों पर भारी पड़ा जबकि उच्च जातियों को प्रायः छूट मिली।
IV. राज्य के अधिकारियों ने जागीरदारों को अपने स्तर पर ये उपकर लगाने से कठोरता से मना किया था।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल I, II और III
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. मध्यकालीन जागीरदारों द्वारा स्थानीय किसानों पर अत्यधिक कराधान और दमनकारी लाग-बाग का एक सामान्य परिणाम निम्नलिखित में से कौन सा था?
(1) बेहतर शर्तों वाले पड़ोसी राज्यों में किसानों का बड़े पैमाने पर पलायन।
(2) तीव्र शहरीकरण क्योंकि किसान औद्योगिक केंद्रों की स्थापना के लिए चले गए।
(3) सभी कृषि भूमि का स्वेच्छा से राजकीय वनों में परिवर्तन।
(4) ग्रामीण ग्राम समाज से साहूकारों का पूर्ण उन्मूलन।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. मध्यकालीन राजस्थान में, प्राथमिक ग्राम मुखिया, जो ग्रामीणों और राज्य प्रशासन के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करता था, सामान्यतः किस उपाधि से जाना जाता था?
(1) कोतवाल
(2) मीर बख्शी
(3) पटेल या चौधरी
(4) किलेदार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. जबकि पटेल (या चौधरी) गाँव का मुखिया था, 'पटवारी' की प्राथमिक भूमिका क्या थी?
(1) वह गाँव का लेखाकार था जो भूमि और राजस्व के अभिलेख रखता था।
(2) वह ग्राम रक्षक दल का सैन्य कमांडर था।
(3) वह गाँव का पुजारी था जो बुवाई के लिए शुभ तिथियाँ तय करने के लिए उत्तरदायी था।
(4) वह शिल्पकार वर्गों के लिए जाति पंचायत का प्रमुख था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): मध्यकालीन ग्राम समाज में पटेल का पद काफी प्रभाव और प्रतिष्ठा वाला था।
कारण (R): वह राज्य तंत्र और किसानों के बीच महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता था, राजस्व संग्रह में सहायता करता था और स्थानीय व्यवस्था बनाए रखता था।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. पटेल (ग्राम मुखिया) के पारिश्रमिक के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) उसे सीधे शाही खजाने से भारी नकद वेतन प्राप्त होता था।
(2) उसे राजस्व का एक हिस्सा मिलता था और उसके पास

रियायती भूमि होती थी।
(3) उसे बिल्कुल भी भुगतान नहीं किया जाता था, क्योंकि यह भूमिका विशुद्ध रूप से मानद कर्तव्य थी।
(4) उसे पूरे गाँव के खाद्य उत्पादन का आधा हिस्सा रखने की अनुमति थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. निम्नलिखित में से किसे सामान्यतः ग्राम पटेल का कर्तव्य नहीं माना जाता था?
(1) भू-राजस्व के निर्धारण और संग्रह में राज्य के अधिकारियों की सहायता करना
(2) किसानों को बंजर भूमि को खेती के अधीन लाने के लिए प्रोत्साहित करना
(3) गाँव के व्यापार के लिए स्वर्ण और रजत के सिक्के ढालना
(4) मामूली स्थानीय विवादों के प्रारंभिक समाधान में सहायता करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. गाँव के मुखिया (पटेल/चौधरी) के कार्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उसने ग्रामीणों के अच्छे आचरण की गारंटी दी।
II. उसने 'लाटा' और 'कूँता' प्रक्रियाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
III. उसने आने वाले राज्य अधिकारियों के रहने और रसद की व्यवस्था की।
IV. उसके पास स्वतंत्र रूप से पड़ोसी राज्यों पर युद्ध की घोषणा करने की शक्ति थी।
V. उसने किसानों से लाग-बाग के संग्रह की सुविधा प्रदान की।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. सूची-I (ग्राम/स्थानीय अधिकारी) को सूची-II (उनकी भूमिका) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (ग्राम/स्थानीय अधिकारी)
A. पटवारी
B. पटेल
C. चौकीदार/संसारी
D. कानूनगो
सूची II: (प्राथमिक भूमिका)
i. समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाला गाँव का मुखिया
ii. गाँव का पहरेदार और रक्षक
iii. परगना स्तर पर राजस्व अधिकारी जो पटवारियों की देखरेख करता था
iv. ग्राम अभिलेख रक्षक और लेखाकार
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. मध्यकाल में खेत की सीमाओं या चराई के अधिकारों पर मामूली विवादों को सुलझाने में, राज्य के अधिकारियों के समक्ष किसकी राय या गवाही का सर्वाधिक प्रथागत महत्व होता था?
(1) राजधानी में स्थित केंद्रीय दीवान।
(2) गाँव का पटेल और स्थानीय पंच।
(3) वहाँ से गुजरने वाला कोई भी विदेशी व्यापारी।
(4) गाँव का सबसे युवा निवासी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. पूर्व मध्यकालीन राजस्थान में स्थानीय प्रशासन के संदर्भ में, ग्राम परिषद या बुजुर्गों की समिति, जो स्थानीय मामलों और विवाद समाधान का प्रबंधन करती थी, पारंपरिक रूप से किस नाम से जानी जाती थी?
(1) मंत्रिपरिषद
(2) पंच-कुल
(3) न्याय सभा
(4) महकमा खास
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. स्थानीय स्तर पर पंचायत प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: ग्राम पंचायत ने पूरे गाँव को प्रभावित करने वाले बहु-जातीय विवादों और कृषि मुद्दों का समाधान किया।
कथन II: जाति पंचायतें आंतरिक सामाजिक मुद्दों, विवाहों और किसी विशेष समुदाय के विशिष्ट धार्मिक रीति-रिवाजों को संभालती थीं।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. स्थानीय पंचायत की न्यायिक शक्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसने पूर्णतः एक सलाहकार निकाय के रूप में कार्य किया जिसके पास बाध्यकारी निर्णय जारी करने की कोई शक्ति नहीं थी।
II. स्थानीय दीवानी विवादों पर इसके निर्णयों का सामान्यतः राज्य के अधिकारियों द्वारा सम्मान किया जाता था।
III. उसके पास मामूली चोरी के लिए मृत्युदंड देने का अधिकार था।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III

52. राजस्व निर्धारण शर्तों से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(1) कूँता - खड़ी फसल की अंतिम उपज का कच्चा अनुमान।
(2) डोरी - एक मानक रस्सी या जंजीर प्रणाली का उपयोग करके भूमि की माप।
(3) जब्ती - फसल के प्रकार के आधार पर प्रति बीघा नकद में तय किया गया निर्धारण।
(4) घूघरी - राज्य द्वारा प्रदान की गई फसल बीमा प्रणाली।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. राजस्व निर्धारण की 'जब्ती' प्रणाली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: जब्ती प्रणाली में भूमि को मापना और फसल दरों की अनुसूची के आधार पर नकद में राजस्व मांग तय करना सम्मिलित था।
कथन II: यह प्रणाली पूर्णतः राजपूताना की स्वदेशी थी और बाद में मुगलों द्वारा अपनाई गई थी।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. मध्यकालीन राजस्थान में भूमि माप की प्रणाली जिसमें मापने वाली रस्सी या जंजीर का उपयोग किया जाता था, स्थानीय रूप से किस नाम से जानी जाती थी?
(1) कूँता
(2) डोरी
(3) बटाई
(4) हासिल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): राज्य प्रायः वास्तविक तौल के स्थान पर 'कूँता' (खड़ी फसल का अनुमान) प्रणाली को प्राथमिकता देता था, जबकि किसान प्रायः इसका विरोध करते थे।
कारण (R): कूँता राज्य के अधिकारियों द्वारा दृश्य अनुमान पर निर्भर था, जिससे प्रायः अधिक निर्धारण और भ्रष्टाचार होता था, जो किसान के लिए हानिकारक था।
उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा एक सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. राजस्थान में उत्तर मध्यकाल के दौरान 'इजारा' (राजस्व खेती) प्रणाली के बढ़ते उपयोग का मुख्य परिणाम क्या था?
(1) इसके परिणामस्वरूप किसानों का शोषण हुआ क्योंकि इजारेदारों ने अधिकतम लाभ कमाने का प्रयास किया।
(2) इससे कृषि नवाचार और किसानों की समृद्धि में भारी वृद्धि हुई।
(3) इसके कारण खाद्यान्नों के मूल्यों में भारी कमी आई।
(4) इसके कारण सभी अप्रत्यक्ष करों (लाग-बाग) का पूर्ण उन्मूलन हुआ।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. निम्नलिखित में से कौन मध्यकालीन राजस्थान में भूमि माप की मानक इकाइयाँ थीं?
(1) मन और सेर
(2) तोला और माशा
(3) बीघा और बिस्वा
(4) कोस और योजन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. सूची-I (भूमि वर्गीकरण शब्द) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (भूमि वर्गीकरण)
A. चाही
B. बरानी
C. पीवल
D. मगरा
सूची II: (विवरण)
i. कुओं द्वारा सिंचित भूमि
ii. नहरों या तालाबों द्वारा सिंचित भूमि
iii. असिंचित, वर्षा आधारित भूमि
iv. पहाड़ी या पथरीली भूमि, जो प्रायः खेती के योग्य नहीं होती
(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. राजस्व उद्देश्यों के लिए भूमि के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) राज्य सभी प्रकार की भूमि पर राजस्व की एक समान दर वसूल करता था।
(2) 'मगरा' भूमि को सर्वाधिक उपजाऊ माना जाता था और इस पर उच्चतम मांग की जाती थी।
(3) 'बरानी' भूमि भारी सिंचित थी और इस प्रकार कई नकद फसलें पैदा करती थी।
(4) 'ऊसर' या 'बंजर' के नाम से जानी जाने वाली अनुपयोगी भूमि को भू-राजस्व से छूट दी गई थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

कर
(4) विदेशी व्यापारियों द्वारा शासक को दिया जाने वाला एक निश्चित वार्षिक नजराना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. मध्यकालीन राजस्थान में 'शाह' या 'साहूकार' की भूमिका के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने किसानों को बीज और बैल खरीदने के लिए आवश्यक ऋण प्रदान किया।
(2) वे अक्सर राज्य के लिए राजस्व कृषक (इजारेदार) के रूप में कार्य करते थे।
(3) उन्हें कानून द्वारा किसानों के ऋण पर ब्याज लेने से रोक दिया गया था।
(4) उन्होंने हुंडी (विनिमय पत्र) जारी करके व्यापार को सुगम बनाया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

94. सूची-I (व्यापार और बाजार शब्द) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (व्यापारिक शब्द)
A. दान
B. मापा
C. राहदारी
D. हुंडी
सूची II: (विवरण)
i. बाजार में माल की बिक्री पर कर
ii. विनिमय पत्र या साख पत्र
iii. राज्य की सीमाओं को पार करने वाले माल पर सीमा शुल्क
iv. राजमार्गों पर पारगमन के लिए सुरक्षा कर
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. निम्नलिखित करों में से विषम को चुनिए, क्योंकि यह मुख्य रूप से व्यापार और वाणिज्य के स्थान पर कृषि से संबंधित है:
(1) हासिल
(2) दान
(3) जकात
(4) मापा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. एक राज्य के भीतर प्रत्येक परगना और ठिकाना सीमा पर कई पारगमन शुल्क (दान, जकात, राहदारी) लगाने का सर्वाधिक महत्वपूर्ण नकारात्मक प्रभाव क्या था?
(1) इसने पूरे राजपूताना में औद्योगिक क्रांति को तीव्र कर दिया।
(2) इसने आंतरिक व्यापार में बाधा डाली और आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि की।
(3) इसने किसानों को नकद फसलों की खेती की ओर मुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया।
(4) इसके कारण क्षेत्रीय कृषि का पूर्ण परित्याग हुआ।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. मध्यकालीन राजपूत राज्य के न्यायिक प्रशासन में, अपील का सर्वोच्च और अंतिम न्यायालय था:
(1) मुख्य काजी
(2) शासक का न्यायालय (न्याय सभा/दरबार)
(3) महकमा खास
(4) ब्रिटिश रेजिडेंट
(5) प्रश्न अनुत्तरित

98. राजस्थान में मध्यकालीन न्यायिक प्रशासन की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कार्यकारी और न्यायिक शक्तियों के बीच कोई कठोर अलगाव नहीं था।
II. लिखित वैधानिक कानूनों की तुलना में प्रथागत कानून और परंपराओं ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई।
III. दंड प्रायः अपराधी की जाति और सामाजिक स्थिति पर निर्भर करता था।
IV. विवाद समाधान का उद्देश्य कठोर दंडात्मक कार्रवाई के स्थान पर समझौता और क्षतिपूर्ति अधिक था।
V. ठोस साक्ष्यों के अभाव में यह प्रणाली काफी हद तक शपथ और कठिन परीक्षाओं (ordeals) पर निर्भर थी।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. राजस्थान की मध्यकालीन न्यायिक प्रक्रिया में 'दिव्य' शब्द का तात्पर्य था:
(1) परगना स्तर के हाकिम द्वारा जारी किया गया लिखित और औपचारिक निर्णय।
(2) विभिन्न उत्सवों के अवसर पर शासक द्वारा दी गई विशेष क्षमा।
(3) आरोपी व्यक्ति के दोष या निर्दोषता का निर्धारण करने के लिए कठिन परीक्षा (trial by ordeal)।
(4) सीधे पीड़ित के स्थानीय परिवार को दिया गया मौद्रिक मुआवजा।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. न्यायिक अधिकारियों और उनके प्राथमिक क्षेत्राधिकार के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) कोतवाल - अंतर्राष्ट्रीय सीमा विवादों को सुलझाना
(2) हाकिम - परगना स्तर पर दीवानी और फौजदारी न्याय
(3) पटेल - राजद्रोह के मामलों के लिए उच्च न्यायालय के न्यायाधीश
(4) फौजदार - जटिल धर्मशास्त्रीय बहसों को सुलझाना

118. ब्रिटिश सर्वोपरिता की स्थापना के बाद, जागीरदारों के सैन्य दायित्व (चाकरी) सामान्यतः कैसे बदल गए?
(1) उन्हें बिना किसी मुआवजे के पूर्णतः समाप्त कर दिया गया।
(2) दायित्वों को प्रायः नकद भुगतान में बदल दिया गया।
(3) जागीरदारों को यूरोप में लड़ने के लिए अपनी सेना भेजने की आवश्यकता थी।
(4) फ्रांसीसी आक्रमणों से लड़ने के लिए दायित्व को दोगुना कर दिया गया था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

119. ब्रिटिश प्रभाव के तहत पारंपरिक जागीर प्रणाली के पतन के साथ हुए व्यापक प्रशासनिक बदलाव को किसके संक्रमण के रूप में सर्वाधिक उपयुक्त रूप से वर्णित किया जा सकता है:
(1) एक केंद्रीकृत नौकरशाही से विकेंद्रीकृत कुल-राजनीति की ओर
(2) एक धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य से एक पूर्ण धर्मतंत्र की ओर
(3) विशुद्ध रूप से कृषि अर्थव्यवस्था से भारी औद्योगिक अर्थव्यवस्था की ओर
(4) एक कुल-आधारित सामंती राजनीति से केंद्रीकृत नौकरशाही प्रशासन की ओर।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

120. 19वीं शताब्दी के अंत में घटती जागीर प्रणाली के दीर्घकालिक सामाजिक-आर्थिक प्रभाव के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) किसानों को लाभ हुआ क्योंकि अंग्रेजों ने सभी कृषि ऋण निरस्त कर दिए।
(2) जैसे-जैसे जागीरदारों ने अपना सैन्य महत्व खो दिया, उन्होंने तेजी से अपनी जागीर से राजस्व निष्कर्षण को अधिकतम करने पर ध्यान केंद्रित किया।
(3) शासक और कुलीनों के बीच 'भाई-बंध' का पारंपरिक बंधन काफी कमजोर हो गया।
(4) ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक अस्थिरता ने शक्तिशाली किसान और आदिवासी सुधार आंदोलनों के उदय को बढ़ावा दिया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

(2) वे युवा राजकुमारों के शिक्षक के रूप में नियुक्त महिला विद्वान थीं।
(3) महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव रखने वाली अत्यंत पसंदीदा उप-रानियाँ या रखैलें।
(4) वे ग्राम पंचायत की अध्यक्षता के लिए चुनी गई स्थानीय किसान महिलाएँ थीं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

110. मध्यकालीन राजपूत राजघराने के संदर्भ में महिलाओं द्वारा धारण की गई भूमिकाओं या उपाधियों से संबंधित विषम को चुनिए:
(1) पटरानी
(2) राजमाता
(3) पासवान
(4) फौजदार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

111. मध्यकालीन राजपूत महल में 'जनानी ड्योढ़ी' (महिला कक्ष का प्रवेश द्वार) का राजनीतिक महत्व मुख्य रूप से यह था कि यह:
(1) गुप्त कूटनीति और गुटीय राजनीति का केंद्र था।
(2) राज्य के खजाने के रूप में कार्य करता था जहाँ सारा स्वर्ण ढला जाता था।
(3) मुख्य शस्त्रागार था जहाँ भारी तोपें रखी जाती थीं।
(4) सामान्य अपराधियों के सार्वजनिक मुकदमों के लिए विशेष स्थान था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

112. यद्यपि महिलाओं ने मध्यकालीन राजस्थान में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला, लेकिन वे सामान्यतः रीति-रिवाजों के अनुसार निम्नलिखित में से किस औपचारिक प्रशासनिक भूमिका से प्रतिबंधित थीं?
(1) व्यक्तिगत जागीर संपदा और उनके संबंधित राजस्व का प्रबंधन करना।
(2) आधिकारिक तौर पर अपने अधिकार में मान्यता प्राप्त संप्रभु के रूप में अध्यक्षता करना।
(3) अल्पवयस्क शासकों के लिए अस्थाई संरक्षक के रूप में कार्य करना।
(4) मंदिरों और बावड़ियों के निर्माण का आदेश देना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

113. 18वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान में जागीरदारी प्रथा के पतन और गंभीर आर्थिक क्षति का मुख्य बाह्य कारक क्या था?
(1) सिकंदर महान का आकस्मिक और हिंसक आक्रमण।
(2) मराठों द्वारा निरंतर छापे और 'चौथ' की मांग।
(3) राजस्थान क्षेत्र को दरकिनार करने वाले समुद्री मार्गों की खोज।
(4) मुगल साम्राज्य द्वारा कागजी मुद्रा प्रणालियों की शुरुआत।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

114. निम्नलिखित में से कौन सा कथन जागीर प्रणाली पर ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ 1818 की संधियों के प्रभाव का सही वर्णन करता है?
(1) ब्रिटिश सुरक्षा के कारण शासक जागीरदारों पर कम निर्भर हो गए।
(2) संधियों ने शासकों को तत्काल जागीर प्रथा को समाप्त करने के लिए बाध्य किया।
(3) संधियों ने यह अनिवार्य कर दिया कि जागीरदारों को सीधे लंदन को कर देना चाहिए।
(4) संधियों ने जागीरदारों को स्वतंत्र राजाओं के पद तक पहुँचा दिया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

115. 18वीं शताब्दी राजस्थान की आर्थिक स्थितियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 18वीं शताब्दी में निरंतर मराठा छापों ने कृषि को गंभीर रूप से क्षति पहुँचाई और राज्य एवं जागीरदारों दोनों की संपत्ति को कम कर दिया।
कथन II: अपनी वित्तीय क्षति की भरपाई के लिए, राज्य और जागीरदारों ने किसानों पर कर के भार (लाग-बाग) को काफी कम कर दिया।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

116. निम्नलिखित में से कौन सा 19वीं और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में जागीर प्रणाली के पतन का प्रभाव नहीं था?
(1) कुल-आधारित सैन्य टुकड़ियों के स्थान पर ब्रिटिश-प्रशिक्षित स्थाई सेनाओं का क्रमिक आगमन
(2) बिजोलिया और बेगूं जैसे किसान आंदोलनों को जन्म देने वाला बढ़ता कृषि संकट
(3) सामंती प्रशासनिक ढांचे से अधिक केंद्रीकृत नौकरशाही व्यवस्था में संक्रमण
(4) शासक के विरुद्ध जागीरदारों की सैन्य शक्ति और राजनीतिक स्वतंत्रता में भारी वृद्धि
(5) प्रश्न अनुत्तरित

117. 1818 के बाद राजपूत राज्यों पर अंग्रेजों द्वारा लगाए गए भारी वित्तीय नजराने का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या था?
(1) इसने राजपूत शासकों को अपने राज्य मराठों को बेचने के लिए बाध्य किया।
(2) इसके परिणामस्वरूप पूरे राजपूताना में कर-मुक्त कृषि का स्वर्ण युग आया।
(3) शासकों ने राजस्व की मांगें बढ़ा दीं, जिससे किसानों का अधिक शोषण हुआ।
(4) इसके कारण मजदूरों के बीच सभी जागीर भूमि का तत्काल पुनर्वितरण हुआ।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
मध्यकालीन सामंती व्यवस्था में 'ठिकाना' एक बड़ी जागीर को दर्शाता था, जो एक प्रमुख प्रशासनिक क्षेत्र होता था। 'उमराव' मेवाड़ जैसे राज्यों में उच्च श्रेणी के वरिष्ठ जागीरदारों की पदवी थी। 'पट्टायत' वह कुलीन था जिसने शासक द्वारा जारी लिखित पट्टे के माध्यम से भूमि धारण की थी। 'भोमिया' वह स्थानीय भूमिधारक था जिसे गाँवों की सुरक्षा के उत्तरदायित्व के बदले भूमि प्राप्त थी। ये शब्द राजपूताना की जटिल और श्रेणीबद्ध सामाजिक-राजनीतिक संरचना को परिभाषित करते हैं।

31. (1) मारवाड़ (जोधपुर)
मारवाड़ राज्य के प्रशासन में 'सिरायत' प्रणाली एक अनूठी विशेषता थी। इसके अंतर्गत कुछ अत्यंत प्रतिष्ठित कुलीन परिवारों को राज्य परिषद में विशिष्ट पदों पर बैठने का वंशानुगत अधिकार प्राप्त था। ये सिरायत जागीरदार शासक के निकटतम सलाहकार होते थे और दरबार के शिष्टाचार में उन्हें सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाती थी। इस व्यवस्था ने मारवाड़ की राजनीति में शक्तिशाली कुलीन समूहों के प्रभाव को स्थाई बनाया और शासन संचालन में निरंतरता सुनिश्चित की।

32. (1) राज्य → परगना → टप्पा → गाँव (ग्राम)
मध्यकालीन राजस्थान में राज्य का क्षेत्रीय विभाजन सुव्यवस्थित था। प्रशासनिक दृष्टि से राज्य को सर्वप्रथम 'परगना' में विभाजित किया गया था। परगना आगे चलकर 'टप्पा' नामक छोटी इकाइयों में बँटा होता था। सबसे छोटी और मूलभूत प्रशासनिक इकाई 'गाँव' या 'ग्राम' थी। यह विभाजन राजस्व संग्रह और स्थानीय प्रशासन की सुविधा के लिए अत्यंत प्रभावी था। बड़े से छोटे की ओर यह पदानुक्रम शासन की पहुँच को प्रत्येक स्तर तक सुनिश्चित करता था।

33. (2) एक वंशानुगत भूमि अनुदान, जो सामान्यतः गैर-हस्तांतरणीय मूल मातृभूमि होती थी।
'वतन जागीर' मध्यकालीन जागीर प्रणाली का एक विशिष्ट रूप था, जिसका अर्थ जागीरदार की मूल पैतृक भूमि या मातृभूमि से था। यह अनुदान पूर्णतः वंशानुगत होता था और सामान्य परिस्थितियों में इसे शासक द्वारा छीना या स्थानांतरित नहीं किया जा सकता था। यह जागीरदार के लिए न केवल आय का स्रोत थी, बल्कि उसके सामाजिक सम्मान और कुल की पहचान का प्रतीक भी थी। वतन जागीर के बदले जागीरदार शासक के प्रति निष्ठा रखता था।

34. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
मध्यकालीन जागीर प्रणाली में तनख्वाह और वतन जागीरों के बीच स्पष्ट अंतर था। तनख्वाह जागीर किसी राज्य अधिकारी को उसके नकद वेतन के बदले में दी जाती थी और शासक इसे कभी भी स्थानांतरित कर सकता था। इसके विपरीत, वतन जागीर जागीरदार की पैतृक भूमि होती थी जिसे वंशानुगत माना जाता था और वह सामान्य स्थानांतरण से मुक्त थी। ये दोनों प्रणालियाँ राज्य के प्रति कुलीनों की सेवा सुनिश्चित करने और उन्हें आर्थिक सुरक्षा देने का माध्यम थीं।

35. (2) केवल II और IV
'सासन' या 'उदक' भूमि पूर्णतः राजस्व-मुक्त अनुदान थे जो मुख्य रूप से ब्राह्मणों, विद्वानों या धार्मिक संस्थाओं को प्रदान किए जाते थे। इन अनुदानों का उद्देश्य धार्मिक पुण्य अर्जित करना और शिक्षा को बढ़ावा देना था। ये भूमि प्राप्तकर्ता किसी भी प्रकार की नियमित सैन्य सेवा या चाकरी के दायित्व से मुक्त होते थे। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि ये अनुदान सैन्य उपलब्धियों के लिए दिए जाते थे, क्योंकि इनका स्वरूप विशुद्ध रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक था।

36. (4) स्थानीय सुरक्षा के लिए या बलिदान देने वाले ग्रामीण रक्षकों के उत्तराधिकारियों को दिया गया वंशानुगत अनुदान।
'भोम' कार्यकाल मध्यकालीन राजस्थान में भूमि स्वामित्व का एक अत्यंत सम्मानित रूप था। यह भूमि उन व्यक्तियों को वंशानुगत रूप से दी जाती थी जिन्होंने स्थानीय सुरक्षा सुनिश्चित की हो या राज्य रक्षा हेतु बलिदान दिया हो। 'भोमिया' कहलाने वाले ये भूमिधारक अपने क्षेत्र में व्यवस्था बनाए रखने और गाँवों की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी थे। यह अनुदान उनके शौर्य की राजकीय मान्यता थी। भोम भूमि पर सामान्यतः बहुत ही नाममात्र का कर लिया जाता था।

37. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मध्यकालीन भूमि अनुदानों का वितरण उनकी प्रकृति और प्राप्तकर्ता की भूमिका पर निर्भर करता था। 'सासन' भूमि ब्राह्मणों को धार्मिक कार्यों के लिए दी जाती थी। 'भोम' भूमि स्थानीय रक्षकों और बलिदानी परिवारों के लिए आरक्षित थी। 'तनख्वाह' जागीरें राज्य के अधिकारियों को उनके प्रशासनिक और सैन्य वेतन के स्थान पर आवंटित की जाती थीं। 'इनाम' उन व्यक्तियों को प्रदान किया जाता था जिन्होंने किसी विशेष कौशल या विशिष्ट गैर-सैन्य सेवा के माध्यम से राज्य की सेवा की हो।

38. (2) खाम भूमि वह भूमि थी जो विदेशी आक्रमणकारियों को स्थाई रूप से कर के रूप में दान की गई थी।
'खाम' या 'जप्ती' एक ऐसी प्रशासनिक प्रक्रिया थी जिसमें किसी जागीर को अस्थाई रूप से राज्य के प्रत्यक्ष नियंत्रण में ले लिया जाता था। यह तब होता था जब जागीरदार अपने सैन्य कर्तव्यों को पूरा करने में असफल रहता था या उत्तराधिकार का प्रकरण विवादित होता था। खाम भूमि का अर्थ विदेशी शत्रुओं को दिया गया दान नहीं था। इसके विपरीत, यह राज्य की संप्रभुता और जागीरदारों पर प्रशासनिक नियंत्रण बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम था।

39. (4) हवाला
मेवाड़ राज्य में कृषि शब्दावली के अंतर्गत 'हवाला' शब्द का प्रयोग उन भूमियों के लिए किया जाता था जो सीधे राज्य के अधिकारियों द्वारा प्रशासित होती थीं। यह खालसा भूमि का ही एक विशिष्ट स्थानीय रूप था, जिसका राजस्व प्रबंधन सीधे केंद्रीय कोष के अधीन था। 'हवाला' भूमि पर राजस्व संग्रह और कृषि सुधारों का दायित्व राज्य द्वारा नियुक्त अधिकारियों का होता था। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती थी कि राज्य के पास वित्तीय आवश्यकताओं हेतु सुरक्षित भूमि उपलब्ध रहे।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) कार्यकारी, न्यायिक और सैन्य क्षेत्रों में सर्वोच्च अधिकारी, जो धर्म और कुल के मानदंडों द्वारा निर्देशित होता था
मध्यकालीन राजस्थान के केंद्रीय प्रशासन में शासक राज्य की समस्त शक्तियों का मुख्य केंद्र था। वह कार्यपालिका, न्यायपालिका और सैन्य मामलों में निर्णय लेने वाला सर्वोच्च अधिकारी था। यद्यपि उसके पास व्यापक शक्तियाँ थीं, किंतु उसका शासन निरंकुश नहीं था। वह धर्म के सिद्धांतों, सामाजिक परंपराओं और अपने विशिष्ट राजपूत कुल के नैतिक मानदंडों से बंधा रहता था। प्रशासन के सुचारु संचालन हेतु वह प्रमुख कुलीनों से अनिवार्य परामर्श करता था।

2. (1) शासकों ने अपने अधिकार को वैध बनाने के लिए दैवीय सत्ताओं के वंशज होने का दावा किया
मध्यकालीन राजपूताना में शासकों ने अपनी सत्ता को वैधता प्रदान करने के लिए स्वयं को दैवीय सत्ताओं का वंशज घोषित किया। सूर्यवंशी और चंद्रवंशी जैसे दावों के माध्यम से उन्होंने समाज में अपनी विशिष्ट और पवित्र स्थिति स्थापित की। यह सिद्धांत शासक की शक्ति को नैतिक बल प्रदान करता था। इसके फलस्वरूप प्रजा शासक की आज्ञा को दैवीय इच्छा मानकर पालन करती थी, जिससे राजनीतिक स्थिरता और निरंतरता बनी रहती थी।

3. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मध्यकालीन प्रशासन में विभिन्न अधिकारियों के उत्तरदायित्व स्पष्ट रूप से विभाजित थे। प्रधान राज्य का मुख्यमंत्री और प्रमुख कुलीन होता था, जो प्रशासनिक कार्यों में शासक की सहायता करता था। दीवान मुख्य रूप से वित्त और राजस्व विभाग का प्रबंधन करता था। मीर बख्शी सैन्य विभाग का प्रमुख था, जिसका कार्य सैनिकों का वेतन और अनुशासन सुनिश्चित करना था। खजांची राज्य के राजकीय कोष का मुख्य प्रभारी अधिकारी होता था।

4. (4) यह सार्वजनिक सभा स्थल था जहाँ शासक आम लोगों की शिकायतें सुनता था
दरबार-ए-आम वह सार्वजनिक स्थल था जहाँ मध्यकालीन शासक नियमित रूप से अपनी प्रजा से भेंट करता था। इसका मुख्य उद्देश्य सामान्य नागरिकों की परिवेदनाओं और समस्याओं को प्रत्यक्ष रूप से सुनना था। यहाँ प्रशासनिक न्याय और सार्वजनिक कल्याण से संबंधित महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते थे। यह व्यवस्था शासक और जनता के बीच सीधा संपर्क स्थापित करती थी, जिससे प्रशासन में पारदर्शिता बनी रहती थी और जनता का विश्वास सुदृढ़ होता था।

5. (4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
राजस्थान के प्रशासनिक ढांचे में 'भाई-बंध' की अवधारणा अत्यंत महत्वपूर्ण थी, जो शासक और कुलीन वर्ग के संबंधों को परिभाषित करती थी। यहाँ शासक को कोई वेतनभोगी स्वामी नहीं बल्कि अपने ही कुल के समान सदस्यों में प्रथम माना जाता था। राज्य को किसी एक व्यक्ति की निजी संपत्ति के स्थान पर पूरे शासक कुल की संयुक्त संपत्ति समझा जाता था। इस प्रणाली में कुलीनों की मंत्रणा और भागीदारी अनिवार्य थी।

6. (1) केवल I और II
मध्यकालीन राजस्थान में शासक की न्यायिक और प्रशासनिक शक्तियाँ अत्यंत व्यापक थीं। वह दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के मुकदमों में अपील सुनने वाला राज्य का सर्वोच्च न्यायालय था। इसके अतिरिक्त, राज्य की समस्त भूमि पर उसका पूर्ण नियंत्रण था, जिससे उसे जागीरें प्रदान करने अथवा जप्त करने का अनन्य अधिकार प्राप्त था। यद्यपि वह राजस्व प्रशासन का पर्यवेक्षण करता था, किंतु ग्राम स्तर का प्रत्यक्ष निर्धारण स्थानीय अधिकारियों द्वारा किया जाता था।

7. (4) मीर मुंशी
मीर मुंशी राज्य परिषद का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अधिकारी था जो मुख्य रूप से प्रशासनिक पत्राचार का कार्य संभालता था। राज्य के सभी महत्वपूर्ण अभिलेखों को सुरक्षित रखना और राजकीय आदेशों को लिपिबद्ध कर जारी करना उसकी प्राथमिक जिम्मेदारी थी। इसके अतिरिक्त, अन्य राज्यों के साथ होने वाले राजनयिक पत्राचार का प्रबंधन भी उसी के द्वारा किया जाता था। वह शासक और अन्य प्रशासनिक विभागों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी था।

8. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्यकालीन राजस्थान में शासक सैद्धांतिक रूप से शक्तिशाली होने के बावजूद व्यवहार में स्वतंत्र नहीं था। राज्य को शासक कुल की संयुक्त थाती माना जाता था, इसलिए महत्वपूर्ण निर्णयों में प्रमुख कुलपतियों की सहमति अनिवार्य थी। शासक की सैन्य शक्ति पूर्णतः इन जागीरदारों द्वारा प्रदान की गई सेना पर निर्भर थी। यदि शासक उनकी सामूहिक इच्छा की अवहेलना करता, तो उसे विद्रोह अथवा सैन्य समर्थन की कमी का सामना करना पड़ता था।

9. (3) शासक का एक प्रमुख सलाहकार या मुख्यमंत्री
मारवाड़ राज्य के प्रशासनिक ढांचे में मुसाहिब का पद अत्यंत गरिमामय और प्रभावशाली होता था। वह शासक के प्रधान सलाहकार और मुख्यमंत्री के रूप में कार्य करता था। राज्य के महत्वपूर्ण नीतिगत निर्णयों, सैन्य अभियानों और नागरिक प्रशासन में उसकी भूमिका निर्णायक होती थी। मुसाहिब शासक और अन्य जागीरदारों के बीच समन्वय स्थापित करने का कार्य भी करता था। उसकी नियुक्ति प्रायः राज्य के सबसे विश्वसनीय कुलीनों में से होती थी।

10. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मध्यकालीन राजपूताना में शासन की सुविधा हेतु विभिन्न विभागों का गठन किया गया था। सिलहखाना राज्य का शस्त्रागार था जहाँ अस्त्र-शस्त्र सुरक्षित रखे जाते थे। सूरतखाना चित्रशाला के रूप में कार्य करता था जहाँ विभिन्न दृश्य अभिलेख और चित्र संग्रहित थे। कपड़-द्वारा राजकीय पोशाकों और बहुमूल्य वस्तुओं के प्रबंधन के लिए उत्तरदायी था। पोथीखाना राज्य का केंद्रीय पुस्तकालय था जहाँ महत्वपूर्ण पांडुलिपियों और ऐतिहासिक ग्रंथों का व्यवस्थित संग्रह किया जाता था।

11. (4) यह पद सदैव वंशानुगत था और एक विशिष्ट कुलीन परिवार तक ही सीमित था।
प्रधान का पद मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक पदानुक्रम में सर्वोच्च था, जो शासक की अनुपस्थिति में राज्य का प्रतिनिधित्व करता था। यद्यपि यह पद अत्यंत महत्वपूर्ण था, किंतु यह सदैव वंशानुगत नहीं होता था। शासक अपनी इच्छा और कुलीनों की योग्यता के आधार पर प्रधान की नियुक्ति करता था। विभिन्न रियासतों में इस पद को दीवान या मुसाहिब जैसे भिन्न नामों से भी जाना जाता था। यह पद केवल एक परिवार तक सीमित नहीं था।

12. (3) केवल I, II और III
दीवान राज्य के वित्त विभाग का सर्वोच्च अधिकारी था और आर्थिक स्थिरता के लिए उत्तरदायी था। उसका मुख्य कार्य खालसा भूमि से भू-राजस्व संग्रह का पर्यवेक्षण करना और राज्य की समस्त आय-व्यय का सटीक लेखा-जोखा रखना था। वह राज्य के वित्तीय संसाधनों के प्रबंधन में शासक का मुख्य सहायक होता था। यद्यपि वह एक उच्च अधिकारी था, किंतु सीधे युद्ध क्षेत्र में सैन्य अभियानों का नेतृत्व करना उसके प्राथमिक कर्तव्यों में नहीं था।

13. (3) दरोगा-ए-डाक - डाक और गुप्तचर तंत्र का प्रमुख
मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में संचार तंत्र की कुशलता दरोगा-ए-डाक पर निर्भर थी। वह राज्य के डाक विभाग और गुप्तचर प्रणाली का मुख्य प्रमुख अधिकारी था। उसका कार्य सूचनाओं का त्वरित आदान-प्रदान सुनिश्चित करना और आंतरिक एवं बाह्य गतिविधियों की गुप्त सूचनाएं शासक तक पहुँचाना था। एक प्रभावी गुप्तचर तंत्र के माध्यम से ही शासक राज्य में शांति और सुरक्षा बनाए रखने में सक्षम होता था। यह पद प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील था।

14. (4) उसके पास राज्य की संपूर्ण घुड़सवार सेना पर सर्वोच्च कमान थी।
कोतवाल मुख्य रूप से शहरी प्रशासन और आंतरिक सुरक्षा का उत्तरदायी अधिकारी था। राजधानी में विधि-व्यवस्था बनाए रखना, संदिग्ध गतिविधियों पर दृष्टि रखना और नागरिक सुरक्षा सुनिश्चित करना उसका प्राथमिक कर्तव्य था। वह बाजारों के नियमन और तौल-माप के मानकों की जाँच के लिए भी उत्तरदायी था। इसके अतिरिक्त वह लघु आपराधिक मामलों का निपटारा भी करता था। यद्यपि उसके पास स्थानीय पुलिस बल था, किंतु संपूर्ण सेना की कमान उसके पास नहीं थी।

15. (2) I, II, III, IV
मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक पदानुक्रम स्पष्ट रूप से परिभाषित था। इस व्यवस्था में प्रधान सर्वोच्च स्थान पर होता था जो मुख्यमंत्री के समकक्ष था। उसके पश्चात दीवान का स्थान आता था जो वित्तीय एवं राजस्व मामलों का प्रबंधन करता था। दरोगा विभिन्न विशिष्ट विभागों के प्रमुख होते थे और स्थानीय स्तर पर आमिल राजस्व संग्रह का कार्य संपन्न करते थे। यह क्रम राज्य के सुचारु संचालन और शक्तियों के विकेंद्रीकृत विभाजन को सुनिश्चित करता था।

16. (2) एक सैनिक जिसे राज्य द्वारा घोड़ा और शस्त्र प्रदान किए जाते थे।
सैन्य प्रशासन में 'बारगीर' उस घुड़सवार सैनिक को कहा जाता था जिसे राज्य द्वारा घोड़ा और आवश्यक युद्ध सामग्री प्रदान की जाती थी। ये सैनिक सीधे राज्य के नियंत्रण में होते थे और उनके रखरखाव का समस्त व्यय सरकारी कोष से वहन किया जाता था। यह व्यवस्था उन सैनिकों से भिन्न थी जो अपने निजी घोड़ों के साथ सेना में सम्मिलित होते थे। बारगीर प्रणाली के माध्यम से शासक अपनी स्थाई सेना पर बेहतर नियंत्रण रखता था।

17. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
राजपूत सैन्य संरचना में घुड़सवार सेना को सर्वाधिक सम्मानजनक और महत्वपूर्ण अंग माना जाता था। युद्ध क्षेत्र में गतिशीलता और प्रहार क्षमता के कारण घुड़सवार सेना ही निर्णायक भूमिका निभाती थी। अधिकांश उच्च पदस्थ राजपूत कुलीन और जागीरदार घुड़सवार दस्ते के रूप में सेवा प्रदान करते थे। इसके विपरीत, पैदल सेना में सामान्यतः समाज के विभिन्न वर्गों के लोग सम्मिलित होते थे और उन्हें घुड़सवार सेना की तुलना में कम सामरिक महत्व प्राप्त था।

18. (1) केवल I, II, III और V
मध्यकालीन राजस्थान में दुर्ग केवल सैन्य गढ़ नहीं बल्कि प्रमुख प्रशासनिक केंद्र भी थे। किलेदार दुर्ग की सुरक्षा और आंतरिक प्रशासन का मुख्य प्रभारी होता था। संकट के समय लंबी घेराबंदी हेतु दुर्गों में पर्याप्त खाद्य सामग्री और गोला-बारूद का भंडारण किया जाता था। युद्ध की स्थिति में स्थानीय नागरिक सुरक्षा हेतु दुर्गों में शरण लेते थे। दुर्ग की रक्षा हेतु स्थानीय सैनिकों और विशिष्ट समुदायों की भर्ती की जाती थी, न कि केवल वैतनिक सैनिकों की।

19. (3) पोथीखाना
मध्यकालीन सैन्य प्रशासन में तोपखाना, सिलहखाना और फीलखाना सीधे तौर पर युद्ध और सामरिक गतिविधियों से संबंधित विभाग थे। तोपखाना अग्नि अस्त्रों का विभाग था, सिलहखाना शस्त्रागार था और फीलखाना हाथियों की सेना का प्रबंधन करता था। इसके विपरीत, पोथीखाना एक शैक्षणिक और सांस्कृतिक संस्थान था जो पांडुलिपियों और ऐतिहासिक ग्रंथों के संरक्षण का कार्य करता था। अतः सैन्य संरचना के संदर्भ में पोथीखाना अन्य तीन विकल्पों से पूर्णतः भिन्न और विषम है।

20. (4) स्थानीय व्यवस्था बनाए रखना और जिला सैन्य इकाइयों की कमान संभालना।
फौजदार एक महत्वपूर्ण जिला स्तरीय अधिकारी था जो मुख्य रूप से सैन्य और सुरक्षा कार्यों के लिए उत्तरदायी था। उसका प्राथमिक कार्य अपने अधिकार क्षेत्र में स्थानीय शांति व्यवस्था बनाए रखना और अपराधियों पर नियंत्रण करना था। वह जिला स्तर की सैन्य इकाइयों की कमान संभालता था और राजस्व अधिकारियों को कर संग्रह में आवश्यक सैन्य सहायता प्रदान करता था। इस प्रकार, वह क्षेत्रीय प्रशासन में शासक की शक्ति का प्रतिनिधित्व करने वाला सुरक्षा स्तंभ था।

21. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मध्यकालीन सैन्य शब्दावली में सैनिकों की विभिन्न श्रेणियों के स्पष्ट अर्थ थे। 'सिलेहदार' वे घुड़सवार थे जो अपने अस्त्र और घोड़े की व्यवस्था स्वयं करते थे। 'अहदी' उन विशिष्ट सैनिकों को कहा जाता था जो किसी जागीरदार के स्थान पर सीधे शासक के प्रति निष्ठा रखते थे। 'तोपची' तोपखाने के विशेषज्ञ सैनिक या गोलंदाज होते थे। 'प्यादा' शब्द का प्रयोग पैदल सैनिकों के लिए किया जाता था। यह वर्गीकरण सेना के संगठनात्मक ढांचे को स्पष्ट करता था।

22. (2) सिंधी, रोहिल्ला और नागा साधु
18वीं शताब्दी के दौरान राजनीतिक अस्थिरता और निरंतर युद्धों के कारण राजस्थान के शासकों ने अपनी सेनाओं को सुदृढ़ करने हेतु पेशेवर वैतनिक सैनिकों की भर्ती प्रारंभ की। इस काल में सिंधी, रोहिल्ला और नागा साधुओं जैसे समूहों को सेना में बड़े पैमाने पर सम्मिलित किया गया। ये समूह अपनी विशिष्ट युद्ध कला और साहस के लिए विख्यात थे। स्थाई सैन्य टुकड़ियों की कमी को पूरा करने हेतु इन वैतनिक सैनिकों पर शासकों की निर्भरता निरंतर बढ़ती गई।

23. (3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
मध्यकालीन राजस्थान में दुर्गों का निर्माण और सुदृढ़ किलेबंदी एक अनिवार्य सामरिक आवश्यकता थी। ये दुर्ग बाह्य आक्रमणों के समय राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करते थे और रणनीतिक नियंत्रण के प्रमुख केंद्र थे। इनका निर्माण मात्र सजावटी उद्देश्यों के स्थान पर सुरक्षा और प्रशासनिक स्थायित्व के लिए किया जाता था। दुर्गों की विशाल दीवारें और ऊँचे बुर्ज शत्रु सेना को रोकने में प्रभावी सिद्ध होते थे। इसके अतिरिक्त, ये दुर्ग आपदाओं में जनता को आश्रय प्रदान करते थे।

24. (1) इसने श्रेणीबद्ध पद (मनसब) और विशेष तोपखाना इकाइयाँ प्रारंभ कीं।
मुगलों के साथ सहयोग के परिणामस्वरूप राजपूत राज्यों के सैन्य प्रशासन में महत्वपूर्ण संगठनात्मक परिवर्तन आए। इस प्रभाव से श्रेणीबद्ध पद सोपान, जिसे 'मनसबदारी' कहा जाता था, राजस्थान की सैन्य व्यवस्था में अपनाया गया। इसके अतिरिक्त, युद्ध कला में नवीन तकनीकी सुधार हुए और विशेष तोपखाना इकाइयों का गठन किया गया। इन परिवर्तनों ने राजपूत सेनाओं को अधिक सुव्यवस्थित और आधुनिक बनाया। इससे न केवल युद्ध कौशल में वृद्धि हुई, बल्कि सेना के प्रबंधन में भी सुधार हुआ।

25. (3) भाई-बंध प्रणाली
पूर्व मध्यकालीन राजपूत राजनीति में जागीर प्रणाली का मुख्य आधार 'भाई-बंध' अवधारणा थी। इस सिद्धांत के अनुसार राज्य को किसी एक शासक की निजी संपत्ति नहीं, बल्कि पूरे शासक कुल की संयुक्त थाती माना जाता था। जागीरदार स्वयं को शासक के सेवक के स्थान पर उसके कुल का सदस्य और राज्य का सह-स्वामी समझते थे। इस भावना ने राज्य के प्रति सामूहिक उत्तरदायित्व और एकता को बढ़ावा दिया। यह व्यवस्था आपसी रक्त संबंधों पर आधारित थी।

26. (2) केवल I और III
मध्यकालीन राजस्थान में जागीरें मुख्य रूप से राज्य द्वारा प्रदान की जाने वाली सैन्य या विशिष्ट सेवाओं के बदले में दिया गया भूमि अनुदान थीं। जागीरदारों को भूमि से राजस्व एकत्र करने का अधिकार था, किंतु वे भूमि के पूर्ण स्वामी नहीं थे और न ही उसे बेच सकते थे। सैद्धांतिक रूप से शासक के पास किसी भी जागीर को पुनः वापस लेने या उसे स्थानांतरित करने का सर्वोच्च अधिकार सुरक्षित था। यह व्यवस्था शासक और कुलीनों के बीच शक्ति संतुलन बनाती थी।

27. (4) खालसा का राजस्व राज्य को जाता था; जागीर का राजस्व कुलीनों को आवंटित किया जाता था।
मध्यकालीन कृषि और प्रशासनिक व्यवस्था में भूमि को मुख्य रूप से खालसा और जागीर श्रेणियों में विभाजित किया गया था। खालसा भूमि सीधे राज्य के नियंत्रण में होती थी और इससे प्राप्त होने वाला समस्त राजस्व सीधे राजकीय कोष में जमा होता था। इसके विपरीत, जागीर भूमि विभिन्न कुलीनों को उनकी सैन्य या प्रशासनिक सेवाओं के बदले आवंटित की जाती थी। जागीर भूमि से प्राप्त राजस्व का उपयोग कुलीन अपने निजी व्ययों और सैन्य टुकड़ियों के रखरखाव के लिए करते थे।

28. (2) खालसा - विशेष रूप से ग्राम पंचायत की चराई की आवश्यकताओं के लिए आरक्षित भूमि
भूमि बंदोबस्त की विभिन्न श्रेणियों के विशिष्ट प्रशासनिक अर्थ थे। 'सासन' धार्मिक या शैक्षणिक सेवाओं हेतु दिया गया कर-मुक्त अनुदान था। 'भोम' भूमि स्थानीय रक्षकों को उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए प्रदान की जाती थी। 'हवाला' सीधे सरकारी प्रबंधन वाली भूमि थी। हालांकि, खालसा शब्द ग्राम पंचायत की चराई के लिए नहीं, बल्कि सीधे राज्य के प्रशासन और राजस्व के अधीन भूमि हेतु प्रयुक्त होता था। यह त्रुटिपूर्ण मिलान मध्यकालीन भूमि स्वामित्व को स्पष्ट करता है।

29. (3) इसके तहत शासक को प्रमुख कुल प्रमुखों से परामर्श करने और उन्हें साथ लेकर चलने की आवश्यकता होती थी।
'कुल स्वामित्व' की अवधारणा ने राजपूत शासक के राजनीतिक अधिकारों को महत्वपूर्ण रूप से संतुलित किया। इसके कारण शासक एक पूर्ण निरंकुश तानाशाह के रूप में कार्य नहीं कर सकता था। उसे महत्वपूर्ण प्रशासनिक और सैन्य निर्णयों में अपने कुल के प्रमुखों से अनिवार्य रूप से परामर्श करना पड़ता था। यह व्यवस्था शासक और कुलीन वर्ग के बीच सहयोग और साझा उत्तरदायित्व पर आधारित थी। इस प्रणाली ने राज्य के भीतर आंतरिक संघर्षों को कम करने में सहायता की।

(5) प्रश्न अनुत्तरित

101. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: विशुद्ध रूप से शास्त्रीय हिंदू ग्रंथों (धर्मशास्त्रों) पर आधारित औपचारिक कानूनी संहिताएं ग्रामीण राजपूताना में न्याय का एकमात्र आधार थीं।
कथन II: स्थानीय अलिखित रीति-रिवाजों ने कानूनी निर्णयों को बहुत प्रभावित किया, जो प्रायः शास्त्रीय पाठ्य कानूनों पर प्रभावी हो जाते थे।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

102. राजपूताना की मध्यकालीन न्यायिक व्यवस्था में गंभीर अपराधों के लिए भी निम्नलिखित में से कौन सा दंड अत्यंत दुर्लभ और सांस्कृतिक रूप से हतोत्साहित करने वाला था?
(1) दंड और संपत्ति की जप्ती
(2) ब्राह्मणों के लिए मृत्युदंड
(3) अंग-भंग
(4) राज्य से निर्वासन (देश-निकाला)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

103. उत्तर मध्यकाल के दौरान जिला स्तर पर फौजदारी न्याय के प्रशासन में, डकैती और राजमार्ग लूटपाट के दमन के लिए मुख्य रूप से उत्तरदायी अधिकारी था:
(1) दीवान
(2) खजांची
(3) मीर बख्शी
(4) फौजदार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

104. मध्यकालीन राजस्थान में अत्यधिक विकेंद्रीकृत और रीति-रिवाज आधारित न्यायिक प्रणाली का एक सामान्य परिणाम क्या था?
(1) न्याय त्वरित था लेकिन स्थानीय शक्ति गतिशीलता से प्रभावित था।
(2) कानूनी कार्यवाही दशकों तक जटिल कागजी कार्रवाई के कारण रुकी रहती थी।
(3) अंततः सभी विवादों को मुगल सम्राट के पास भेजा जाता था।
(4) सशस्त्र संघर्ष का सहारा लिए बिना कोई भी दीवानी विवाद हल नहीं किया जाता था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

105. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मध्यकालीन प्रशासन में शाही महिलाओं (रानियों/राजमाताओं) की स्थिति पर सही प्रकाश डालता है?
(1) उन्हें किसी भी भूमि के स्वामित्व या अनुदान देने से पूर्णतः रोक दिया गया था।
(2) उन्होंने राज्य के आधिकारिक मुख्यमंत्री (प्रधान) के रूप में कार्य किया।
(3) उनके पास व्यापक जागीरें थीं और वे धर्मार्थ 'सासन' अनुदान जारी करती थीं।
(4) उनके लिए प्रत्येक युद्ध में सेना की अग्रिम पंक्ति (हरावल) का नेतृत्व करना अनिवार्य था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

106. मध्यकालीन राजपूत प्रशासन में महिलाओं की स्थिति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) किसान महिलाओं को सभी प्रकार के कृषि श्रम और करों से पूर्ण छूट प्राप्त थी।
(2) 'पर्दा' प्रथा ने प्रशासन में शाही महिलाओं की प्रत्यक्ष सार्वजनिक भागीदारी को भारी रूप से प्रतिबंधित किया।
(3) नपुंसक और महिला परिचारिकाएँ (धायभाई/बड़ारन) अक्सर रानियों और राज्य के अधिकारियों के बीच महत्वपूर्ण मध्यस्थ के रूप में कार्य करती थीं।
(4) प्रभावशाली रानियाँ (पटरानियाँ) कभी-कभी सिंहासन के उत्तराधिकार को निर्धारित करने में निर्णायक भूमिका निभाती थीं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

107. राजघराने (जनाना) में कठोर 'पर्दा' प्रणाली के कारण, रानियाँ अपनी संपदा का प्रबंधन करती थीं और मुख्य रूप से किसके माध्यम से राज्य के अधिकारियों के साथ संवाद करती थीं?
(1) दरबार-ए-आम में दिए गए सार्वजनिक और प्रत्यक्ष भाषणों के माध्यम से।
(2) केंद्रीय दीवान के मुख्य कार्यालय में सीधे व्यक्तिगत दौरों के माध्यम से।
(3) उन्नत ब्रिटिश तार संचार प्रणालियों के माध्यम से।
(4) विश्वसनीय महिला मध्यस्थों और नपुंसकों के माध्यम से।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

108. मध्यकालीन राजपूत राजघराने के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'पटरानियों' का महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव था और उनके गुट प्रायः राज्य की नीति और उत्तराधिकार को प्रभावित करते थे।
कथन II: जनाना महल राज्य के राजनीतिक षड्यंत्रों से पूर्णतः पृथक था।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

109. मध्यकालीन राजपूत दरबारों में 'पासवानों' या 'परदायतों' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) वे राजदरबार में तैनात विदेशी महिला राजदूत थीं।

40. (1) केवल II, III, IV और V
मध्यकालीन राजस्थान में विभिन्न भूमि अनुदानों के विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित थे। 'अलुफा' राजघराने की महिलाओं के भरण-पोषण हेतु विशेष अनुदान था। 'सासन' भूमि धार्मिक व्यक्तियों को दी जाती थी और यह करों से मुक्त थी। 'भोमिया' स्थानीय सुरक्षा के प्रहरी थे। 'तनख्वाह' जागीरें अधिकारियों के वेतन के रूप में थीं जो उत्तराधिकारी न होने पर राज्य को वापस मिल जाती थीं। 'पेशकश' कोई व्यापारिक भूमि नहीं, बल्कि एक प्रकार का राजकीय शुल्क था।

41. (3) सैन्य और वित्तीय दायित्वों को निर्धारित करने के लिए उपयोग किया जाने वाला अनुमानित राजस्व।
मध्यकालीन राजस्थान में 'रेख' एक अत्यंत महत्वपूर्ण वित्तीय और प्रशासनिक शब्द था। यह किसी जागीर से प्राप्त होने वाले अनुमानित या मूल्यांकित वार्षिक राजस्व को संदर्भित करता था। रेख का मुख्य उपयोग जागीरदार के सैन्य और वित्तीय दायित्वों को निर्धारित करने हेतु किया जाता था। इसी के आधार पर यह तय होता था कि जागीरदार को युद्ध के समय कितने सुसज्जित सैनिकों की टुकड़ी भेजनी होगी। यह जागीरदार की आर्थिक क्षमता का मानक मापदंड था।

42. (1) सैन्य सेवा प्रदान करना और घुड़सवारों का एक निश्चित कोटा सुनिश्चित करना।
मध्यकालीन जागीर प्रणाली में 'चाकरी' सबसे मौलिक और अनिवार्य दायित्व था जो जागीरदार को अपने शासक के प्रति निभाना पड़ता था। इसका अर्थ था राज्य की रक्षा हेतु सैन्य सेवा प्रदान करना और एक निश्चित संख्या में घुड़सवारों का दस्ता तैयार रखना। जागीरदार को युद्ध काल और शांति काल में भी दरबार की सेवा में उपस्थित रहना पड़ता था। इस कर्तव्य के बदले ही उसे भूमि से राजस्व वसूलने का अधिकार प्राप्त होता था।

43. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जागीरदार की मृत्यु होने पर, उसके उत्तराधिकारी हेतु जागीर का नवीनीकरण एक औपचारिक प्रक्रिया थी। इसके लिए उत्तराधिकारी को 'हुक्मनामा' या 'तलवार-बंधाई' नामक एक भारी शुल्क चुकाना पड़ता था। तकनीकी रूप से, जागीरदार की मृत्यु के साथ ही जागीर राज्य को वापस मिल जाती थी। नया शुल्क जमा करने के पश्चात ही शासक नए पट्टे के माध्यम से उस जागीर को उत्तराधिकारी को पुनः प्रदान करता था। यह प्रक्रिया शासक की सर्वोच्चता को दर्शाती थी।

44. (2) जागीरदारों को दशहरा जैसे महत्वपूर्ण अवसरों पर शासक के दरबार में उपस्थित होना आवश्यक था।
मध्यकालीन राजस्थान में जागीरदारों के लिए केवल कर देना ही पर्याप्त नहीं था, बल्कि उन्हें दरबार के प्रति अपनी अटूट निष्ठा प्रदर्शित करनी होती थी। दशहरा, दीपावली और शासक के जन्मदिवस जैसे महत्वपूर्ण सांस्कृतिक अवसरों पर जागीरदारों का व्यक्तिगत रूप से दरबार में उपस्थित होना अनिवार्य था। यह उपस्थिति उनकी अधीनता और शासक के प्रति सम्मान का प्रतीक थी। ऐसे अवसरों पर वे 'नजर' भी भेंट करते थे, जो सामाजिक-राजनीतिक संबंधों को सुदृढ़ करता था।

45. (2) केवल II
जागीरदारों के सैन्य दायित्व उनकी जागीर के अनुमानित राजस्व या 'रेख' द्वारा कठोरता से निर्धारित किए जाते थे। प्रत्येक जागीरदार को उसकी आय के अनुपात में सैनिकों और घोड़ों का एक निश्चित कोटा बनाए रखना अनिवार्य था। यदि कोई जागीरदार कर्तव्यों की अवहेलना करता था, तो शासक को उसकी जागीर जप्त करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त था। 'जकात' जैसे किसी कर का भुगतान सैन्य सेवा से छूट का आधार नहीं बन सकता था, क्योंकि सेवा पूर्णतः अनिवार्य थी।

46. (4) जजिया (गैर-मुसलमानों के लिए धार्मिक कर)
जागीरदार शासक को कई प्रकार के भुगतान करते थे, जिनमें तलवार-बंधाई (उत्तराधिकार शुल्क), नजर (भेंट) और न्योता (विशेष उपहार) सम्मिलित थे। ये भुगतान जागीरदार की वफादारी और राज्य की वित्तीय आवश्यकताओं का हिस्सा थे। यद्यपि 'जजिया' एक धार्मिक कर था जो मुगल काल में गैर-मुसलमानों पर लगाया जाता था, किंतु राजस्थान के राजपूत शासकों और उनके जागीरदारों के बीच होने वाले पारंपरिक व्यवहार में जजिया कभी भी एक सामान्य प्रशासनिक कर नहीं रहा।

47. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
मध्यकालीन सामंती व्यवस्था में करों की प्रकृति स्पष्ट थी। 'तलवार-बंधाई' वह शुल्क था जो नया जागीरदार उत्तराधिकार के समय चुकाता था। 'चाकरी' राज्य के प्रति अनिवार्य सैन्य सेवा थी। 'रेख' वह निर्धारित राजस्व मूल्य था जिसके आधार पर सैन्य टुकड़ी का आकार तय होता था। 'न्योता' राजकीय विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर जागीरदारों द्वारा दिया जाने वाला नकद योगदान था। ये सभी तत्व मिलकर एक संगठित व्यापारिक और वित्तीय तंत्र का निर्माण करते थे।

48. (2) II, I, III, IV
जागीर उत्तराधिकार की प्रक्रिया एक व्यवस्थित क्रम में संपन्न होती थी। जागीरदार की मृत्यु के पश्चात, जागीर को अस्थाई रूप से 'खाम' के तहत राजकीय प्रबंधन में लिया जाता था। इसके पश्चात, वैध उत्तराधिकारी शासक को 'हुक्मनामा' जैसे उत्तराधिकार शुल्क का भुगतान करता था। अंत में, शासक संतुष्ट होने पर नया पट्टा और 'मातमी' आदेश जारी करता था, जिससे उत्तराधिकारी को कानूनी अधिकार प्राप्त होता था। यह क्रम सत्ता का शांतिपूर्ण हस्तांतरण सुनिश्चित करता था।

49. (2) खलिहान में फसल काटने के बाद उपज का अनुमान लगाना।
मध्यकालीन राजस्थान की राजस्व प्रणाली में 'लाटा' फसल निर्धारण की एक व्यावहारिक पद्धति थी। इस प्रणाली के अंतर्गत जब फसल कट जाती थी और खलिहान में अनाज का ढेर तैयार हो जाता था, तब राजकीय अधिकारी वहां पहुँचकर कुल उपज का प्रत्यक्ष अनुमान लगाते थे। इसी अनुमान के आधार पर राज्य का हिस्सा निर्धारित किया जाता था। यह विधि खड़ी फसल के अनुमान की तुलना में अधिक सटीक थी क्योंकि इसमें वास्तविक कटी हुई फसल का निरीक्षण संभव था।

50. (1) एक ऐसी प्रणाली जहाँ राजस्व संग्रह के अधिकार उच्चतम बोली लगाने वाले को नीलाम किए जाते थे।
'मुकाता' या 'इजारा' प्रणाली मध्यकालीन राजस्व प्रशासन में 'राजस्व की ठेकेदारी' का एक रूप थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत राज्य किसी निश्चित क्षेत्र से राजस्व वसूलने का अधिकार एक मध्यस्थ को दे देता था, जो सर्वाधिक बोली लगाता था। यह एक प्रकार का अनुबंध था जिसमें इजारेदार राज्य को एक निश्चित राशि देने का वचन देता था और बदले में किसानों से कर वसूलता था। यह प्रणाली राज्य हेतु आय की सुरक्षा तो सुनिश्चित करती थी, किंतु किसानों के शोषण का कारण भी बनी।

51. (1) केवल I, II और III
'बटाई' फसल साझा करने की एक परंपरागत प्रणाली थी जिसमें उपज को राज्य और किसान के बीच विभाजित किया जाता था। इसके विभिन्न रूप थे: 'खेत बटाई' में कटाई से पूर्व हिस्सा तय होता था, 'लांक बटाई' में कटाई पश्चात फसल के गट्ठरों का बँटवारा होता था, और 'रास बटाई' में अनाज के ढेर का विभाजन किया जाता था। यह प्रणाली किसानों हेतु अनुकूल थी क्योंकि इसमें प्राकृतिक आपदा का जोखिम दोनों पक्षों में साझा होता था।

52. (4) घूघरी - राज्य द्वारा प्रदान की गई फसल बीमा प्रणाली।
राजस्व निर्धारण की विभिन्न शर्तों के विशिष्ट अर्थ थे। 'कूँता' खड़ी फसल की उपज का एक दृश्य अनुमान था। 'डोरी' भूमि मापन हेतु रस्सी के उपयोग की पद्धति थी। 'जब्ती' नकद में निर्धारित राजस्व दर थी जो फसल के प्रकार पर आधारित होती थी। हालांकि, 'घूघरी' कोई बीमा प्रणाली नहीं थी, बल्कि यह राज्य द्वारा किसानों को बीज के रूप में दिए गए अनाज की वापसी या एक लघु उपकर था। ये शब्द तत्कालीन कृषि अर्थव्यवस्था को दर्शाते हैं।

53. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
जब्ती प्रणाली राजस्व निर्धारण की एक वैज्ञानिक विधि थी जिसमें भूमि की सटीक माप की जाती थी। इस प्रणाली में विभिन्न फसलों के लिए प्रति बीघा नकद राजस्व दरें पूर्व में ही निर्धारित कर दी जाती थीं। यह व्यवस्था किसानों और राज्य दोनों को आय की निश्चितता प्रदान करती थी। यद्यपि इसे मुगल काल में राजा टोडरमल द्वारा व्यापक रूप से विकसित किया गया था, किंतु यह पूर्णतः राजपूताना की स्वदेशी तकनीक नहीं थी। बाद में राजपूत शासकों ने इसे अपनाया।

54. (2) डोरी
मध्यकालीन राजस्थान में भूमि की माप हेतु अपनाई गई सबसे सरल और प्रचलित पद्धति 'डोरी' कहलाती थी। इसमें एक मानक लंबाई की रस्सी या जंजीर का उपयोग करके खेतों का क्षेत्रफल मापा जाता था। माप की शुद्धता हेतु रस्सी में निश्चित अंतराल पर गाँठें लगाई जाती थीं। भूमि के सटीक क्षेत्रफल की जानकारी होने से ही न्यायपूर्ण राजस्व निर्धारण संभव हो पाता था। यह विधि विशेष रूप से 'जब्ती' प्रणाली के क्रियान्वयन के लिए अनिवार्य मानी जाती थी।

55. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
'कूँता' प्रणाली में राजकीय अधिकारी खड़ी फसल को देखकर उसकी संभावित उपज का अनुमान लगाते थे। राज्य इस पद्धति को प्राथमिकता देता था क्योंकि इसमें फसल कटने का प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी और राजस्व की मांग शीघ्र तय हो जाती थी। हालांकि, किसान अक्सर इसका विरोध करते थे क्योंकि यह अनुमान अधिकारी के व्यक्तिगत निर्णय पर आधारित था। इसमें प्रायः भ्रष्टाचार और उपज के अधिक आकलन की संभावना रहती थी, जिससे किसानों पर अत्यधिक कर भार पड़ता था।

56. (1) इसके परिणामस्वरूप किसानों का शोषण हुआ क्योंकि इजारेदारों ने अधिकतम लाभ कमाने का प्रयास किया।
उत्तर मध्यकाल में 'इजारा' या राजस्व ठेकेदारी प्रणाली के बढ़ने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इजारेदार, जिन्होंने सर्वाधिक बोली लगाकर अधिकार प्राप्त किया था, उनका मुख्य उद्देश्य अनुबंध की राशि चुकाने के पश्चात अधिकतम लाभ अर्जित करना था। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने किसानों पर अत्यधिक कर लगाए और क्रूरतापूर्वक वसूली की। इस व्यवस्था ने कृषि में निवेश को हतोत्साहित किया और किसानों को ऋण के कुचक्र में धकेल दिया, जिससे समाज में असंतोष फैला।

57. (3) बीघा और बिस्वा
मध्यकालीन राजस्थान में भूमि मापन हेतु 'बीघा' और 'बिस्वा' सबसे मानक इकाइयाँ थीं। एक बीघा भूमि का मुख्य भाग था और एक बीघा के बीसवें हिस्से को बिस्वा कहा जाता था। राजस्व का निर्धारण इन्हीं इकाइयों के आधार पर किया जाता था, जिससे कर गणना में एकरूपता बनी रहती थी। यद्यपि 'मन' और 'सेर' भार की इकाइयाँ थीं, लेकिन भूमि और कृषि क्षेत्रफल के संदर्भ में बीघा-बिस्वा प्रणाली ही प्रशासनिक और राजस्व दृष्टि से सर्वाधिक प्रभावी थी।

58. (1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
मध्यकालीन राजस्व प्रशासन में भूमि को उसकी सिंचाई क्षमता और गुणवत्ता के आधार पर वर्गीकृत किया गया था। 'चाही' वह भूमि थी जो कुओं से सिंचित होती थी, जबकि 'पीवल' नहरों या तालाबों के जल पर निर्भर थी। 'बरानी' भूमि पूर्णतः वर्षा आधारित थी और इसमें सिंचाई की कोई कृत्रिम व्यवस्था नहीं थी। 'मगरा' पहाड़ी या पथरीली भूमि को कहा जाता था जो कृषि हेतु कम उपयुक्त थी। यह वर्गीकरण न्यायपूर्ण राजस्व दरों को निर्धारित करने का वैज्ञानिक आधार था।

59. (4) 'ऊसर' या 'बंजर' के नाम से जानी जाने वाली अनुपयोगी भूमि को भू-राजस्व से छूट दी गई थी।
कृषि राजस्व निर्धारण में उत्पादकता का विशेष ध्यान रखा जाता था। जो भूमि अनुपजाऊ, लवणीय या पूरी तरह बंजर होती थी, उसे स्थानीय भाषा में 'ऊसर' कहा जाता था। ऐसी भूमि पर खेती करना संभव नहीं था, इसलिए राज्य द्वारा इसे भू-राजस्व की मांग से पूर्णतः मुक्त रखा गया था। इसके विपरीत, चाही और नहरी जैसी उपजाऊ भूमियों पर उच्चतम कर दरें लागू होती थीं। यह नीति केवल वास्तविक कृषि उपज पर ही कर वसूलने के सिद्धांत पर आधारित थी।

60. (2) केवल III

मध्यकालीन राजस्थान में सिंचाई के साधन राजस्व निर्धारण के मुख्य आधार थे। चाही, नहरी और तलाबी भूमियों को सिंचित माना जाता था क्योंकि यहाँ जल की उपलब्धता सुनिश्चित थी। इन भूमियों पर राजस्व दरें बरानी भूमि की तुलना में सदैव अधिक होती थीं, क्योंकि सिंचित भूमि की उत्पादकता और फसल सुरक्षा कहीं अधिक थी। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि सिंचित भूमि पर कर की दरें कम थीं। सिंचाई सुविधाओं की उपलब्धता ही राज्य की उच्च राजस्व मांग का प्राथमिक कारण थी।

61. (3) मन

भूमि मापन और राजस्व प्रशासन से संबंधित शब्दावली में 'बीघा', 'बिस्वा' और 'जरीब' एक ही समूह का भाग हैं। बीघा और बिस्वा क्षेत्रफल की इकाइयाँ हैं, जबकि जरीब वह मानक पैमाना है जिससे भूमि मापी जाती थी। इसके विपरीत, 'मन' भार या वजन मापने की एक इकाई है, जिसका उपयोग अनाज या अन्य वस्तुओं के तौल के लिए किया जाता था। अतः क्षेत्रफल मापन के संदर्भ में 'मन' अन्य विकल्पों से भिन्न है और इस समूह में विषम है।

62. (4) सिंचाई का स्रोत (कुआँ बनाम नहर)

राजस्थान के कृषि ढांचे में 'चाही' और 'नहरी' भूमि का वर्गीकरण पूर्णतः सिंचाई के स्रोत पर आधारित था। चाही भूमि वह थी जहाँ सिंचाई का मुख्य साधन कुएँ होते थे, जिसमें रहट का उपयोग करके जल निकाला जाता था। नहरी भूमि वह थी जिसे राजकीय या स्थानीय नहरों के माध्यम से जल प्राप्त होता था। जल की उपलब्धता और उसके स्रोत के अनुसार ही फसल का प्रकार और उस पर आरोपित होने वाली राजस्व की दरें निर्धारित की जाती थीं।

63. (1) बरानी

मध्यकालीन राजस्थान में 'बरानी' भूमि पर राज्य को सामान्यतः न्यूनतम भू-राजस्व प्राप्त होता था। इसका मुख्य कारण यह था कि बरानी भूमि पूर्णतः वर्षा पर निर्भर थी और यहाँ सिंचाई की कोई कृत्रिम व्यवस्था उपलब्ध नहीं थी। वर्षा की अनिश्चितता के कारण फसल नष्ट होने का जोखिम सदैव बना रहता था, जिससे यहाँ उत्पादकता सिंचित भूमियों की तुलना में काफी कम थी। किसानों को प्रोत्साहित करने और आर्थिक जोखिम कम करने हेतु राज्य यहाँ अल्प कर वसूलता था।

64. (2) चाही → बरानी → मगरा

भूमि की राजस्व उपज और उस पर आरोपित कर की दरें भूमि की गुणवत्ता एवं जल उपलब्धता पर निर्भर थीं। इस क्रम में 'चाही' भूमि सर्वोच्च स्थान पर थी क्योंकि कुओं द्वारा निरंतर सिंचाई से यहाँ उच्च पैदावार संभव थी। इसके पश्चात 'बरानी' भूमि आती थी जो वर्षा आधारित होने के कारण मध्यम उत्पादकता वाली थी। 'मगरा' भूमि पहाड़ी और पथरीली होने के कारण सबसे कम उपज देती थी। अतः राजस्व क्षमता का सही क्रम चाही, बरानी और फिर मगरा है।

65. (2) किसानों पर लगाए गए विभिन्न उपकर और स्वेच्छाचारी कर।

मध्यकालीन राजस्थान की आर्थिक व्यवस्था में 'लाग-बाग' शब्द उन अतिरिक्त करों और उपकरों हेतु प्रयुक्त होता था जो मूल भू-राजस्व के अतिरिक्त किसानों पर आरोपित किए जाते थे। ये कर प्रायः स्वेच्छाचारी प्रकृति के होते थे और विभिन्न सामाजिक या प्रशासनिक बहाने बनाकर वसूले जाते थे। लाग-बाग की संख्या और दरें विभिन्न ठिकानों में भिन्न थीं। इन उपकरों के भारी बोझ ने किसानों की आर्थिक स्थिति को दयनीय बना दिया था, जो आगे चलकर किसान आंदोलनों का कारण बना।

66. (1) केवल I और II

'चंवरी' कर एक अत्यंत विवादास्पद और दमनकारी उपकर था जो किसान परिवार में पुत्री के विवाह के अवसर पर जागीरदार द्वारा वसूला जाता था। यह कर न केवल आर्थिक भार था बल्कि किसानों के सामाजिक सम्मान पर भी प्रहार था। बिजोलिया जैसे क्षेत्रों में इस कर का तीव्र विरोध हुआ, जिसने किसान आंदोलन को एक नवीन दिशा प्रदान की। अंततः व्यापक असंतोष और विरोध प्रदर्शनों के दबाव में आकर जागीरदारों को इस अनैतिक कर को वापस लेने हेतु विवश होना पड़ा।

67. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है

'खाद-लाकड़' एक पारंपरिक उपकर था जिसके तहत ग्रामीणों को राजकीय अधिकारियों के उनके क्षेत्र में प्रवास के दौरान ईंधन हेतु लकड़ी और पशुओं हेतु चारा निःशुल्क उपलब्ध कराना पड़ता था। यह कर किसानों पर एक अतिरिक्त आर्थिक और शारीरिक भार था, क्योंकि इसके लिए उन्हें अपना श्रम और संसाधन बिना किसी प्रतिफल के देने होते थे। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इन करों को मुख्य राजस्व में समायोजित किया जाता था; वास्तव में ये अतिरिक्त शोषणकारी बोझ बने रहे।

68. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii

मध्यकालीन राजस्थान में विभिन्न प्रकार के उपकर प्रचलित थे जो किसानों के दैनिक संसाधनों पर आधारित थे। 'सिंगोटी' पशुधन पर आरोपित कर था, जबकि 'हलबरार' प्रत्येक हल के आधार पर वसूला जाता था। 'बैठ-बेगार' बिना किसी पारिश्रमिक के किया जाने वाला अनिवार्य श्रम था। 'कांसक' के तहत पीतल के बर्तनों के रूप में या उनके मूल्य के बराबर कर लिया जाता था। ये कर जागीरदारों की आय बढ़ाने के साधन थे, जिन्होंने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को अत्यंत दुर्बल कर दिया था।

69. (3) राज्य से गुजरने वाले माल पर सीमा शुल्क और पारगमन शुल्क।

मध्यकालीन राजपूताना के आर्थिक प्रशासन में 'जकात' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से व्यापारिक वस्तुओं पर आरोपित सीमा शुल्क और पारगमन शुल्क के लिए किया जाता था। जब भी व्यापारी माल लेकर राज्य की सीमाओं को पार करते थे या एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाते थे, तो उन्हें यह कर चुकाना पड़ता था। यद्यपि इसका नाम धार्मिक कर जैसा था, किंतु राजस्थान के संदर्भ में यह एक शुद्ध व्यावसायिक कर था। यह राज्य के लिए राजस्व का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और नियमित स्रोत था।

(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. मराठा-राजपूत संघर्षों के संबंध में सूची I के युद्धों को सूची II के उनके संबंधित वर्षों से सुमेलित कीजिए:

सूची I: (युद्ध)

A. राजमहल का युद्ध
B. भटवाड़ा का युद्ध
C. तुंगा का युद्ध
D. पाटन का युद्ध

सूची II: (वर्ष)

i. 1761
ii. 1747
iii. 1790
iv. 1787

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. कुख्यात कृष्णा कुमारी विवाद, जिसके कारण 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजपूत राज्यों के बीच विनाशकारी युद्ध हुआ, मुख्य रूप से किन दो राज्यों के बीच संघर्ष था?

(1) मेवाड़ और कोटा
(2) जयपुर और जोधपुर
(3) बीकानेर और जैसलमेर
(4) बूंदी और भरतपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. कृष्णा कुमारी प्रकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. कृष्णा कुमारी मेवाड़ की राजकुमारी थीं।
II. उनकी सगाई मूल रूप से जोधपुर के महाराजा भीम सिंह से हुई थी।
III. भीम सिंह की मृत्यु के बाद, उनका विवाह जयपुर के जगत सिंह से निश्चित हुआ।
IV. जोधपुर के मान सिंह ने इस नए संबंध पर आपत्ति जताई और यह दावा किया कि सगाई जोधपुर राज्य के साथ हुई थी।
V. ब्रिटिश रेजिडेंट की मध्यस्थता के माध्यम से विवाद को शांतिपूर्ण ढंग से हल किया गया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II, III, और V
(2) केवल I, II, III, और IV
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. 18वीं शताब्दी में राजपूत राज्यों के बीच आंतरिक संघर्षों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(1) उत्तराधिकार विवादों ने अक्सर मराठों और पिंडारियों के बाह्य हस्तक्षेप को आमंत्रित किया।
(2) शासकों ने अक्सर शांति बनाए रखने के लिए प्रतिद्वंद्वी दावेदारों को जागीरें दीं, जिससे राज्य की वित्तीय स्थिति प्रभावित हुई।
(3) अमीर खान पिंडारी के संकट का सामना करने के लिए राजपूत कुलों के बीच सुदृढ़ आंतरिक एकता का निर्माण किया गया था।
(4) सामंतों ने बार-बार अपनी निष्ठा बदली, जिससे शासकों की केंद्रीय सत्ता और निर्बल हो गई।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान राजपूत राज्यों के भीतर निरंतर उत्तराधिकार विवादों का एक बड़ा राजनीतिक परिणाम क्या था?

(1) शासन की एक अधिक प्रतिनिधि लोकतांत्रिक प्रणाली का उदय
(2) केंद्रीय राजपूत शासक द्वारा प्रशासनिक शक्ति का सुदृढ़ीकरण
(3) मराठा साम्राज्य में राजपूत रियासतों का स्वैच्छिक विलय
(4) राज्य की प्रमुख नीतियों को निर्देशित करने वाले शक्तिशाली सामंतों का उदय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. सूची I में उत्तराधिकार विवादों में सम्मिलित शासकों को सूची II में उनके संबंधित राज्यों से सुमेलित कीजिए:

सूची I: (उत्तराधिकार विवादों में शामिल शासक)

A. ईश्वरी सिंह और माधो सिंह
B. राम सिंह और बख्त सिंह
C. उम्मेद सिंह और दलेल सिंह
D. रतन सिंह और सरदार सिंह

सूची II: (राज्य)

i. मारवाड़
ii. जयपुर
iii. बीकानेर
iv. बूंदी

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. जयपुर के उन शासकों के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन कीजिए जिन्होंने तीव्र मराठा दबाव और आंतरिक संघर्षों का सामना किया:

(1) सवाई जय सिंह → ईश्वरी सिंह → माधो सिंह I → प्रताप सिंह
(2) सवाई जय सिंह → माधो सिंह I → ईश्वरी सिंह → प्रताप सिंह
(3) ईश्वरी सिंह → सवाई जय सिंह → प्रताप सिंह → माधो सिंह I
(4) माधो सिंह I → प्रताप सिंह → सवाई जय सिंह →

लेखा-जोखा रखने वाला अधिकारी था। पटेल समुदाय का प्रतिनिधित्व करने वाला गाँव का मुख्य मुखिया था। चौकीदार गाँव की सुरक्षा और पहरेदारी का कार्य करता था। कानूनगो परगना स्तर का एक उच्च राजस्व अधिकारी था जो अपने अधीन आने वाले सभी पटवारियों के कार्यों की देखरेख करता था। यह संगठनात्मक ढांचा ग्रामीण स्तर से लेकर परगना स्तर तक राजस्व व्यवस्था सुनिश्चित करता था।

80. (2) गाँव का पटेल और स्थानीय पंच।
मध्यकाल में भूमि की सीमाओं या चराई के अधिकारों जैसे स्थानीय विवादों को सुलझाने हेतु राजकीय अधिकारी पूर्णतः स्थानीय ज्ञान पर निर्भर थे। ऐसे प्रकरणों में गाँव के पटेल और अनुभवी स्थानीय पंचों की राय और साक्ष्य को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था। उनकी गवाही को ही सत्य का मानक माना जाता था क्योंकि उन्हें क्षेत्र की ऐतिहासिक स्थिति और परंपराओं की गहरी जानकारी होती थी। यह एक विकेंद्रीकृत न्याय प्रणाली थी जहाँ समुदाय के बुजुर्गों की भागीदारी से विवादों का समाधान निकलता था।

81. (2) पंच-कुल
पूर्व मध्यकालीन राजस्थान में स्थानीय स्वशासन की एक अत्यंत सुदृढ़ प्राचीन संस्था 'पंच-कुल' थी। यह गाँव के अनुभवी बुजुर्गों और प्रतिष्ठित सदस्यों की एक परिषद थी जो स्थानीय विवादों, कृषि संबंधी समस्याओं और सामाजिक मामलों का प्रबंधन करती थी। पंच-कुल की भूमिका आधुनिक ग्राम पंचायत के समान थी, जिसे समुदाय में उच्च नैतिक स्वीकार्यता प्राप्त थी। इसके निर्णय सर्वसम्मति पर आधारित होते थे और राज्य सामान्यतः इसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता था। यह सामाजिक समरसता का केंद्र थी।

82. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं
मध्यकालीन राजस्थान में पंचायत प्रणाली दो स्तरों पर कार्य करती थी। ग्राम पंचायत एक समावेशी संस्था थी जो पूरे गाँव के साझा हितों, जैसे कृषि संसाधनों के प्रबंधन और विवादों का समाधान करती थी। इसके विपरीत, जाति पंचायतें अधिक विशिष्ट थीं और वे केवल एक विशेष समुदाय के आंतरिक सामाजिक नियमों, विवाह संबंधों और धार्मिक रीति-रिवाजों के पालन पर ध्यान केंद्रित करती थीं। ये दोनों संस्थाएं मिलकर ग्रामीण समाज में विधि-व्यवस्था और सामाजिक नैतिकता को बनाए रखने का प्रभावी तंत्र थीं।

83. (2) केवल I और III
स्थानीय पंचायतों के पास महत्वपूर्ण न्यायिक शक्तियाँ थीं और उनके निर्णयों का राजकीय अधिकारियों द्वारा सम्मान किया जाता था। ये पंचायतें दीवानी विवादों को सुलझाने में अत्यंत प्रभावी थीं। हालांकि, पंचायतों के पास मृत्युदंड देने जैसे गंभीर अधिकार कभी नहीं रहे; ऐसे दंड केवल शासक या उच्च न्यायालयों द्वारा ही दिए जा सकते थे। यह कहना भी त्रुटिपूर्ण है कि पंचायतें केवल सलाहकार थीं, क्योंकि उनके सामाजिक बहिष्कार जैसे आदेश अत्यंत बाध्यकारी होते थे। इनका अधिकार क्षेत्र नागरिक मामलों तक सीमित था।

84. (4) लगभग 84 गाँवों के समूह का प्रतिनिधित्व करने वाली एक परिषद।
मध्यकालीन प्रशासनिक और सामाजिक संदर्भ में 'चौरासी' शब्द एक भौगोलिक और संगठनात्मक इकाई को दर्शाता था। इसका तात्पर्य लगभग 84 गाँवों के एक संगठित समूह से था, जिनकी अपनी एक संयुक्त परिषद होती थी। यह परिषद व्यापक क्षेत्रीय हितों, बड़े सामाजिक विवादों और जागीरदारों के साथ राजस्व संबंधी वार्ताओं में इन गाँवों का प्रतिनिधित्व करती थी। 'चौरासी' की अवधारणा न केवल प्रशासनिक सुविधा हेतु थी, बल्कि यह विभिन्न गाँवों के बीच आपसी सहयोग और सामूहिक पहचान को सुदृढ़ करने का माध्यम थी।

85. (3) सूबा - गाँव के भीतर का सबसे छोटा मोहल्ला
मध्यकालीन राजस्थान में प्रशासनिक इकाइयों का विभाजन सुस्पष्ट था। ग्राम सबसे छोटी मूलभूत इकाई थी, जबकि परगना गाँवों के समूह से बना एक बड़ा जिला था। टप्पा गाँव और परगना के बीच की एक मध्यवर्ती प्रशासनिक इकाई थी। हालांकि, 'सूबा' शब्द मुगल साम्राज्य के अंतर्गत एक बड़े प्रांत हेतु प्रयुक्त होता था, न कि गाँव के किसी छोटे मोहल्ले के लिए। अतः स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों के संदर्भ में सूबा का मिलान पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है और यह इस श्रेणी में अनुपयुक्त है।

86. (1) II, III, IV, I
मध्यकालीन राजस्थान में न्याय प्राप्ति हेतु एक व्यवस्थित पदानुक्रम विद्यमान था। सबसे निचले स्तर पर ग्राम पंचायत होती थी जो स्थानीय और आपसी विवादों का समाधान करती थी। पंचायत के निर्णय से संतुष्ट न होने पर अपील परगना स्तर के हाकिम के न्यायालय में की जाती थी। इसके पश्चात दीवान का न्यायालय वित्तीय और उच्च दीवानी मामलों की सुनवाई करता था। न्याय की अंतिम और सर्वोच्च शक्ति शासक के न्यायालय में निहित थी, जहाँ का निर्णय राज्य में सर्वोपरि माना जाता था।

87. (4) सदियों पुराने स्थानीय रीति-रिवाजों और समुदाय की नैतिक स्वीकार्यता।
मध्यकालीन राजस्थान में ग्राम पंचायत की शक्ति किसी लिखित राजकीय संविधान से प्राप्त नहीं होती थी। इसका वास्तविक आधार सदियों पुराने स्थानीय रीति-रिवाजों, परंपराओं और ग्रामीण समुदाय की नैतिक स्वीकार्यता थी। पंचायत के सदस्यों को उनकी आयु, अनुभव और निष्पक्षता के कारण अत्यधिक सम्मान प्राप्त था। समाज का यह अडिग विश्वास ही उनके निर्णयों को बाध्यकारी बनाता था। राज्य भी इन परंपराओं का सम्मान करता था, जिससे पंचायतें एक स्वायत्त और प्रभावशाली न्यायिक इकाई के रूप में कार्य करती थीं।

88. (1) 'हुक्का-पानी बंद' (सामाजिक बहिष्कार और जाति से निष्कासन)।
जाति पंचायतों के पास अपने सदस्यों को अनुशासित करने का सबसे शक्तिशाली अस्त्र 'हुक्का-पानी बंद' करना अर्थात सामाजिक बहिष्कार था। यह दंड किसी भी व्यक्ति के लिए अत्यंत कठोर माना जाता था क्योंकि इसमें उसे अपने ही

माध्यम से प्रशासन में हस्तक्षेप करती थीं। प्रभावशाली रानियाँ अक्सर उत्तराधिकार के युद्धों और राजनीतिक संधियों में निर्णायक भूमिका निभाती थीं।

107. (4) विश्वसनीय महिला मध्यस्थों और नपुंसकों के माध्यम से।
राजपूत महलों में 'पर्दा' प्रणाली के अत्यंत कठोर होने के कारण, रानियों के लिए राजकीय अधिकारियों से प्रत्यक्ष मिलना असंभव था। इस बाधा को दूर करने हेतु, वे अपनी संपदा के प्रबंधन और प्रशासनिक संदेशों के आदान-प्रदान के लिए विश्वसनीय महिला मध्यस्थों और नपुंसक परिचारकों का उपयोग करती थीं। ये मध्यस्थ रानियों की ओर से आदेश जारी करते थे और अधिकारियों की बातें रानियों तक पहुँचाते थे। इस गुप्त संचार तंत्र ने रानियों को पर्दे के पीछे रहकर भी सत्ता और राजनीति पर प्रभावी नियंत्रण रखने में सक्षम बनाया।

108. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
मध्यकालीन राजपूत दरबारों में 'पटरानी' अर्थात मुख्य रानी का राजनीतिक प्रभाव अत्यंत गहरा था। वह न केवल शासक की प्रमुख सलाहकार थी, बल्कि उसके अपने समर्थक कुलीनों का एक शक्तिशाली गुट भी होता था। ये गुट अक्सर राज्य की महत्वपूर्ण नीतियों, विदेश संबंधों और विशेष रूप से आगामी शासक के उत्तराधिकार को निर्धारित करने में सक्रिय भूमिका निभाते थे। यह मानना त्रुटिपूर्ण है कि जनाना महल राजनीति से विलग था; वास्तव में, यह कूटनीतिक गतिविधियों का एक अत्यंत सक्रिय और प्रभावशाली केंद्र बना रहता था।

109. (3) महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव रखने वाली अत्यंत पसंदीदा उप-रानियाँ या रखैलें।
मध्यकालीन राजपूत समाज में 'पासवान' और 'परदायत' उन महिलाओं को कहा जाता था जो शासक की अत्यंत पसंदीदा और प्रभावशाली उप-रानियाँ थीं। यद्यपि उनका विवाह पारंपरिक रीति से नहीं होता था, किंतु शासक के साथ निकटता के कारण उन्हें समाज और दरबार में उच्च दर्जा प्राप्त था। उनके पास प्रायः अपनी जागीरें और व्यक्तिगत परिचारक होते थे। उनके पुत्रों को भी कभी-कभी राज्य प्रशासन में महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया जाता था। इन महिलाओं का राजनीतिक प्रभाव अक्सर मुख्य रानियों के प्रभाव को चुनौती देता था।

110. (4) फौजदार
मध्यकालीन राजपूत राजघराने और महिलाओं से संबंधित शब्दावली में 'पटरानी', 'राजमाता' और 'पासवान' स्पष्ट रूप से महिला भूमिकाओं और उनकी सामाजिक स्थिति को दर्शाते हैं। पटरानी मुख्य रानी थी, राजमाता शासक की माता का गरिमामय पद था और पासवान विशेष कृपा प्राप्त उप-रानी थी। इसके विपरीत, 'फौजदार' पूर्णतः एक पुरुष प्रधान सैन्य और प्रशासनिक पद था, जो जिले की सुरक्षा और न्याय का प्रबंधन करता था। अतः पद की प्रकृति के आधार पर फौजदार इस समूह में विषम और असंगत विकल्प है।

111. (1) गुप्त कूटनीति और गुटीय राजनीति का केंद्र था।
मध्यकालीन महलों में 'जनानी ड्योढ़ी' वह प्रवेश द्वार था जो महिलाओं के कक्षों को बाह्य जगत से पृथक करता था। इसका राजनीतिक महत्व यह था कि यह गुप्त कूटनीति और महल के भीतर चलने वाले गुटीय संघर्षों का मुख्य मिलन स्थल था। यहाँ विश्वसनीय संदेशवाहक रानियों से संपर्क करते थे। राज्य के कई महत्वपूर्ण निर्णय और रणनीतियां यहीं से प्रारंभ होती थीं। यह स्थान शक्ति प्रदर्शन का केंद्र था जहाँ रानियाँ और उनके गुट शासक के निर्णयों को प्रभावित करने हेतु निरंतर सक्रिय रहते थे।

112. (2) आधिकारिक तौर पर अपने अधिकार में मान्यता प्राप्त संप्रभु के रूप में अध्यक्षता करना।
यद्यपि मध्यकालीन राजस्थान में महिलाओं ने जागीर प्रबंधन, धार्मिक अनुदान देने और अल्पवयस्क शासकों के संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण कार्य किए, किंतु वे कुछ औपचारिक सीमाओं से बंधी थीं। स्थापित सामाजिक रीति-रिवाजों और राजवंशीय परंपराओं के अनुसार, कोई भी महिला आधिकारिक तौर पर स्वतंत्र संप्रभु शासक के रूप में सिंहासन पर आसीन होकर शासन की अध्यक्षता नहीं कर सकती थी। उन्हें सदैव किसी पुरुष उत्तराधिकारी की प्रतिनिधि के रूप में ही कार्य करना पड़ता था। यह पितृसत्तात्मक शासन व्यवस्था की एक अनिवार्य विशेषता थी।

113. (2) केवल II
18वीं शताब्दी में राजस्थान की सामंती और आर्थिक व्यवस्था के पतन का सबसे बड़ा कारण मराठों का निरंतर आक्रमण और उनकी 'चौथ' एवं 'सरदेशमुखी' की भारी मांगें थीं। इन छापों ने न केवल कृषि को विनष्ट किया, बल्कि राज्य के कोष और जागीरदारों की संपत्ति को भी पूर्णतः रिक्त कर दिया। निरंतर युद्धों और अनिश्चितता के कारण व्यापार अवरुद्ध हो गया। इस आर्थिक संकट ने राजपूत शासकों को अपनी सुरक्षा हेतु भारी कर आरोपित करने या अंततः अंग्रेजों की शरण में जाने हेतु विवश कर दिया।

114. (1) ब्रिटिश सुरक्षा के कारण शासक जागीरदारों पर कम निर्भर हो गए।
अंग्रेजों के साथ 1818 की संधियों ने जागीरदारी प्रथा की जड़ों को हिला दिया। ब्रिटिश सुरक्षा की प्रत्याभूति मिलने के पश्चात, राजपूत शासक अब अपनी सैन्य आवश्यकताओं हेतु जागीरदारों पर निर्भर नहीं रहे। इसके परिणामस्वरूप शासकों ने जागीरदारों की राजनीतिक स्वतंत्रता और उनके पारंपरिक अधिकारों को न्यून करना प्रारंभ कर दिया। जागीरदार, जो कभी राज्य के मुख्य स्तंभ थे, अब केवल भूमि कर वसूलने वाले मध्यस्थ बनकर रह गए। इस व्यवस्था ने सदियों पुरानी 'भाई-बंध' अवधारणा को समाप्त कर सामंती ढांचे को दुर्बल किया।

115. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है
18वीं शताब्दी राजस्थान के लिए अत्यंत विनाशकारी सिद्ध हुई। मराठों के अनवरत आक्रमणों और लूटपाट ने कृषि आधारित अर्थव्यवस्था को पूर्णतः ध्वस्त कर दिया। अपनी वित्तीय क्षति और मराठों को दी जाने वाली भारी राशि की भरपाई हेतु, राज्य और जागीरदारों ने किसानों पर करों का बोझ घटाने के स्थान पर और अधिक बढ़ा दिया। नवीन लाग-बाग और उपकर आरोपित किए गए, जिससे किसानों का शोषण अपनी चरम सीमा पर

नहीं थी। वह धर्म और परंपराओं के आधार पर न्याय करता था, जो प्रजा के लिए सर्वोपरि और बाध्यकारी आदेश के समान होता था।

98. (4) I, II, III, IV और V
मध्यकालीन न्यायिक प्रशासन की अपनी विशिष्ट विशेषताएं थीं। यहाँ कार्यपालिका और न्यायपालिका के बीच कोई स्पष्ट विभाजन नहीं था और शासक ही सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। लिखित विधानों के स्थान पर स्थानीय परंपराओं और प्रथाओं का अधिक महत्व था। दंड निर्धारण करते समय अपराधी की सामाजिक स्थिति और जाति को भी संज्ञान में लिया जाता था। न्याय का प्राथमिक उद्देश्य केवल दंड देना नहीं बल्कि आपसी समझौता और पीड़ित को क्षतिपूर्ति दिलाना था। साक्ष्यों के अभाव में शपथ का सहारा लिया जाता था।

99. (3) आरोपी व्यक्ति के दोष या निर्दोषता का निर्धारण करने के लिए कठिन परीक्षा (trial by ordeal)।
राजस्थान की मध्यकालीन न्यायिक प्रक्रिया में 'दिव्य' एक अनूठी और प्राचीन पद्धति थी, जिसे कठिन परीक्षा कहा जाता था। जब किसी मामले में ठोस साक्ष्य या साक्षी उपलब्ध नहीं होते थे, तो आरोपी की सत्यता परखने हेतु उसे अग्नि या तप्त जल जैसी कठिन शारीरिक परीक्षाओं से गुजरना पड़ता था। यह विश्वास किया जाता था कि दैवीय शक्तियाँ निर्दोष व्यक्ति की रक्षा करेंगी। यद्यपि यह पद्धति आज अतार्किक प्रतीत हो सकती है, किंतु उस काल में इसे ईश्वर की न्यायपूर्ण इच्छा मानकर स्वीकार किया जाता था।

100. (2) हाकिम - परगना स्तर पर दीवानी और फौजदारी न्याय
मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था में अधिकारियों के न्यायिक क्षेत्राधिकार स्पष्ट रूप से विभाजित थे। 'हाकिम' परगना स्तर का सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी था, जिसके पास दीवानी और फौजदारी दोनों प्रकार के मुकदमों की सुनवाई करने की शक्ति थी। वह अपने क्षेत्र में विधि-व्यवस्था बनाए रखने और न्याय सुनिश्चित करने हेतु सीधे तौर पर उत्तरदायी था। उसके निर्णय स्थानीय स्तर पर अंतिम होते थे, यद्यपि विशेष परिस्थितियों में उसके विरुद्ध केंद्रीय दीवान या सीधे शासक के पास अपील की जा सकती थी।

101. (4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है
मध्यकालीन राजस्थान में न्याय का आधार केवल शास्त्रीय धर्मशास्त्र नहीं थे। यद्यपि विद्वान धर्मग्रंथों का संदर्भ देते थे, किंतु व्यवहार में स्थानीय अलिखित रीति-रिवाजों और लोक परंपराओं का प्रभाव कहीं अधिक व्यापक था। न्यायिक निर्णय लेते समय समुदाय की मान्यताओं और प्राचीन प्रथाओं को प्राथमिकता दी जाती थी, जो प्रायः शास्त्रीय विधानों से भी अधिक प्रभावी सिद्ध होती थीं। यह कानूनी बहुलवाद का एक रूप था, जहाँ न्याय प्रणाली कठोर संहिताओं के स्थान पर लचीली और सामाजिक संदर्भों के प्रति संवेदनशील थी।

102. (2) केवल III
राजपूताना की न्याय व्यवस्था में यद्यपि दंड कठोर थे, किंतु ब्राह्मणों को मृत्युदंड प्रदान करना अत्यंत दुर्लभ और सांस्कृतिक रूप से वर्जित माना जाता था। हिंदू धर्मशास्त्रों और स्थानीय परंपराओं के अनुसार ब्राह्मण वध को महापाप माना जाता था। यदि कोई ब्राह्मण गंभीर अपराध का दोषी पाया जाता था, तो उसे मृत्युदंड के स्थान पर भारी अर्थदंड, संपत्ति की जब्ती या राज्य से निष्कासन जैसे दंड दिए जाते थे। यह नियम तत्कालीन समाज में उच्च वर्णों को प्राप्त विशिष्ट सामाजिक विशेषाधिकारों का एक स्पष्ट उदाहरण है।

103. (4) फौजदार
उत्तर मध्यकाल में जिला या परगना स्तर पर फौजदारी न्याय और सुरक्षा का उत्तरदायित्व 'फौजदार' पर था। उसका मुख्य कार्य डकैती, चोरी और राजमार्गों पर होने वाली लूटपाट को रोकना था। वह अपनी सैन्य टुकड़ी की सहायता से अपराधियों का पीछा करता था और उन्हें दंडित करता था। व्यापारियों और आम जनता की सुरक्षा सुनिश्चित करना उसकी प्राथमिक जिम्मेदारी थी। फौजदार की कुशलता पर ही राज्य की आंतरिक शांति और व्यापारिक मार्गों की सुरक्षा निर्भर करती थी, जिससे वह प्रशासनिक ढांचे का अनिवार्य रक्षक था।

104. (1) न्याय त्वरित था लेकिन स्थानीय शक्ति गतिशीलता से प्रभावित था।
मध्यकालीन राजस्थान की विकेंद्रीकृत और प्रथा-आधारित न्याय प्रणाली का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम यह था कि न्याय प्रक्रिया अत्यंत त्वरित और सुलभ थी। चूँकि अधिकांश विवाद स्थानीय पंचायतों और हाकिमों द्वारा सुलझाए जाते थे, इसलिए लोगों को न्याय हेतु लंबी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती थी। हालांकि, यह प्रणाली पूर्णतः निष्पक्ष नहीं थी क्योंकि स्थानीय शक्ति संतुलन और प्रभावशाली कुलीनों का हस्तक्षेप अक्सर निर्णयों को प्रभावित कर सकता था। इसके बावजूद, यह व्यवस्था ग्रामीण समाज की मान्यताओं के अनुरूप प्रभावी थी।

105. (3) उनके पास व्यापक जागीरें थीं और वे धर्मार्थ 'सासन' अनुदान जारी करती थीं।
मध्यकालीन राजपूत प्रशासन में शाही महिलाओं, विशेषकर रानियों और राजमाताओं की स्थिति अत्यंत प्रभावशाली थी। यद्यपि वे पर्दे में रहती थीं, किंतु उनके पास अपनी व्यक्तिगत जागीरें और आय के स्वतंत्र स्रोत उपलब्ध थे। उनके पास जागीर प्रबंधन का अधिकार था और वे अपनी ओर से धार्मिक एवं धर्मार्थ कार्यों हेतु 'सासन' भूमि अनुदान भी जारी कर सकती थीं। उनकी सम्मति को राज्य के महत्वपूर्ण मामलों में गंभीरता से लिया जाता था और वे परोपकारी कार्यों के माध्यम से समाज में अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखती थीं।

106. (1) किसान महिलाओं को सभी प्रकार के कृषि श्रम और करों से पूर्ण छूट प्राप्त थी।
मध्यकालीन समाज में महिलाओं की भूमिका के संबंध में यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि किसान महिलाओं को सभी करों से छूट प्राप्त थी। वास्तव में, उन्हें पुरुषों के साथ खेतों में कठोर परिश्रम करना पड़ता था और उन पर भी राज्य के विभिन्न करों का भार था। शाही परिवारों में 'पर्दा' प्रथा के कारण रानियों की सार्वजनिक भागीदारी सीमित थी, किंतु वे विश्वसनीय परिचारिकाओं के

समुदाय से पूर्णतः पृथक कर दिया जाता था। बहिष्कृत व्यक्ति को किसी भी सामाजिक उत्सव, विवाह या सामूहिक भोज में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं थी। इस सामाजिक अलगाव के भय से ही लोग जाति के नियमों और पंचायत के निर्णयों का निष्ठापूर्वक पालन करते थे।

89. (3) राज्य की सीमाओं को पार करने पर लगाया जाने वाला पारगमन और सीमा शुल्क।
व्यापार और वाणिज्य के क्षेत्र में 'दान' शब्द का अर्थ किसी धार्मिक उपहार से नहीं था। मध्यकालीन राजस्थान में यह एक प्रकार का पारगमन और सीमा शुल्क था। जब भी व्यापारी अपना माल लेकर राज्य की सीमा में प्रवेश करते थे या एक प्रशासनिक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जाते थे, तो उन्हें यह कर चुकाना पड़ता था। यह कर वस्तुओं के मूल्य और भार के आधार पर निर्धारित किया जाता था। राज्य के राजस्व के लिए यह एक अनिवार्य कर प्रणाली थी, जो व्यापारिक गतिविधियों को विनियमित करती थी।

90. (1) राहदारी
'राहदारी' एक विशिष्ट सुरक्षा शुल्क था जो व्यापारिक मार्गों पर माल ले जाने वाले व्यापारियों से वसूला जाता था। इस कर के बदले राज्य या स्थानीय जागीरदार व्यापारियों को लुटेरों से सुरक्षा प्रदान करने की प्रत्याभूति देते थे। यदि किसी सुरक्षित मार्ग पर माल की चोरी हो जाती थी, तो राज्य को उसकी क्षतिपूर्ति करनी पड़ती थी। यह कर मुख्य रूप से व्यापारिक मार्गों को सुरक्षित बनाने और वाणिज्य को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से आरोपित किया गया था, जिससे लंबी दूरी का व्यापार सुगम हो सके।

91. (2) केवल III
बंजारे मध्यकालीन भारत के भ्रमणशील व्यापारी थे जो अनाज और नमक जैसे भारी माल की आपूर्ति में कुशल थे। वे 'टांडा' कहलाने वाले बड़े समूहों में यात्रा करते थे और युद्ध के समय सेनाओं हेतु रसद पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य करते थे। यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि उन्हें सभी पारगमन शुल्कों से पूर्ण छूट प्राप्त थी। वास्तव में, उन्हें भी राज्य के नियमों के अनुसार 'दान' और 'जकात' जैसे कर देने पड़ते थे, यद्यपि उनकी सेवाओं के महत्व को देखते हुए उन्हें कभी-कभी कुछ विशेष रियायतें दी जाती थीं।

92. (2) स्थानीय बाजार या मंडी में बेचे जाने वाले माल पर लगाया जाने वाला बिक्री कर
मध्यकालीन राजपूताना के बाजारों में 'मापा' एक अत्यंत सामान्य और महत्वपूर्ण कर था। यह मूल रूप से एक बिक्री कर था जो स्थानीय बाजार या मंडी के भीतर विक्रय किए जाने वाले माल पर आरोपित किया जाता था। जब भी कोई वस्तु बाजार में विक्रय हेतु आती थी, तो उसके मूल्य का एक निश्चित भाग राज्य को कर के रूप में देना पड़ता था। यह कर शहरी प्रशासन और बाजार के नियमन हेतु आय का मुख्य स्रोत था, जिससे व्यापारिक केंद्रों के रखरखाव के प्रबंध किए जाते थे।

93. (3) उन्हें कानून द्वारा किसानों के ऋण पर ब्याज लेने से रोक दिया गया था।
मध्यकालीन राजस्थान में साहूकार ग्रामीण और व्यापारिक अर्थव्यवस्था की रीढ़ थे। वे न केवल किसानों को बीज और कृषि उपकरणों हेतु ऋण देते थे, बल्कि राज्य के लिए राजस्व की उगाही का अनुबंध भी लेते थे। 'हुंडी' के माध्यम से उन्होंने धन के हस्तांतरण को सुगम बनाया। यह कहना पूर्णतः गलत है कि कानून द्वारा उन्हें ब्याज लेने से प्रतिबंधित किया गया था; वास्तव में ब्याज ही उनके व्यवसाय का मुख्य आधार था, जिससे अक्सर किसान ऋण के जाल में फँस जाते थे।

94. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
मध्यकालीन व्यापारिक शब्दावली में प्रत्येक शब्द का विशिष्ट आर्थिक अर्थ था। 'दान' सीमा शुल्क था जो राज्य की सीमाओं पर आरोपित होता था। 'मापा' बाजार में माल की बिक्री पर वसूला जाने वाला कर था। 'राहदारी' मार्गों पर सुरक्षा और पारगमन हेतु लिया जाने वाला शुल्क था। 'हुंडी' एक पारंपरिक विनिमय पत्र था, जिसके माध्यम से नकद धन ले जाने के जोखिम के बिना लंबी दूरी का व्यापार संभव हो पाता था। ये सभी तत्व मिलकर एक संगठित व्यापारिक और वित्तीय तंत्र का निर्माण करते थे।

95. (1) हासिल
व्यापारिक और कृषि करों के बीच स्पष्ट विभाजन विद्यमान था। 'दान', 'जकात' और 'मापा' मुख्य रूप से व्यापार, वस्तुओं के आवागमन और बाजार में बिक्री से संबंधित कर थे, जो व्यापारियों द्वारा चुकाए जाते थे। इसके विपरीत, 'हासिल' शब्द सीधे कृषि उत्पादन और भू-राजस्व से संबंधित था। यह उस वास्तविक राजस्व को प्रदर्शित करता था जो किसान अपनी उपज के भाग के रूप में राज्य को प्रदान करता था। अतः आर्थिक गतिविधियों के आधार पर 'हासिल' अन्य तीन विकल्पों से भिन्न और विषम है।

96. (2) इसने आंतरिक व्यापार में बाधा डाली और आवश्यक वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि की।
प्रत्येक परगना और ठिकाने की सीमाओं पर बार-बार पारगमन शुल्क (दान, जकात, राहदारी) आरोपित करने का व्यापार पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। इससे माल की परिवहन लागत अत्यधिक बढ़ जाती थी, जिससे आवश्यक वस्तुओं के मूल्य आम जनता हेतु महंगे हो जाते थे। इस अत्यधिक कराधान ने आंतरिक व्यापार के स्वतंत्र प्रवाह को बाधित किया और व्यापारियों को नवीन निवेश करने से हतोत्साहित किया। यह व्यवस्था आर्थिक एकीकरण के मार्ग में एक बड़ी बाधा थी और इसने क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था की विकास दर को न्यून कर दिया था।

97. (2) शासक का न्यायालय (न्याय सभा/दरबार)
मध्यकालीन राजपूत राज्यों में न्याय की अंतिम शक्ति शासक के हाथों में केंद्रित थी। यद्यपि पंचायतें और हाकिम स्थानीय स्तर पर प्रकरणों का निपटारा करते थे, किंतु किसी भी गंभीर मामले में अपील का सर्वोच्च और अंतिम न्यायालय शासक का अपना दरबार या 'न्याय सभा' ही थी। शासक का निर्णय अंतिम माना जाता था और उसके विरुद्ध कहीं भी पुनः अपील संभव

पहुँच गया। इस दमनकारी नीति ने ग्रामीण क्षेत्रों में अत्यधिक दरिद्रता और असंतोष को जन्म दिया।

116. (4) शासक के विरुद्ध जागीरदारों की सैन्य शक्ति और राजनीतिक स्वतंत्रता में भारी वृद्धि
जागीर प्रणाली के पतन के साथ ही राजस्थान में व्यापक प्रशासनिक परिवर्तन आए। कुल-आधारित सेनाओं का स्थान अंग्रेजों द्वारा प्रशिक्षित आधुनिक स्थाई सेनाओं ने ले लिया। सामंती प्रशासन एक केंद्रीकृत नौकरशाही में परिवर्तित होने लगा, जिससे जागीरदारों की शक्ति न्यून हो गई। बढ़ते आर्थिक शोषण के कारण बिजोलिया जैसे विशाल किसान आंदोलन प्रारंभ हुए। यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि इस काल में जागीरदारों की सैन्य शक्ति या स्वतंत्रता में वृद्धि हुई; वास्तव में, वे अपनी पुरानी प्रतिष्ठा खोकर पूरी तरह पराश्रित हो गए थे।

117. (3) शासकों ने राजस्व की मांगें बढ़ा दीं, जिससे किसानों का अधिक शोषण हुआ।
1818 के पश्चात अंग्रेजों ने राजपूत राज्यों पर भारी वार्षिक 'खिराज' आरोपित कर दिया। इस भारी वित्तीय बोझ को वहन करने हेतु शासकों के पास अतिरिक्त राजस्व जुटाने के अतिरिक्त कोई विकल्प शेष नहीं था। इसके परिणामस्वरूप उन्होंने जागीरदारों पर दबाव बनाया और जागीरदारों ने अंततः किसानों से होने वाली वसूली को कई गुना बढ़ा दिया। नवीन करों और कठोर वसूली के कारण किसानों का आर्थिक शोषण निरंतर बढ़ता गया। इस ब्रिटिश वित्तीय मांग ने राजपूताना की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को संकट में डाल दिया।

118. (2) दायित्वों को प्रायः नकद भुगतान में बदल दिया गया।
ब्रिटिश सर्वोपरिता स्थापित होने के पश्चात, जागीरदारों के पारंपरिक सैन्य दायित्वों (चाकरी) में व्यापक परिवर्तन आया। अब युद्ध की संभावना न्यून होने के कारण अंग्रेजों ने जागीरदारों से सैन्य सेवा लेने के स्थान पर 'नकद भुगतान' की मांग प्रारंभ कर दी। शासकों ने भी जागीरदारों को अपनी स्वतंत्र सेना रखने से हतोत्साहित किया और उसके बदले निश्चित वार्षिक राशि वसूलना प्रारंभ किया। इस परिवर्तन से जागीरदारों का सैन्य महत्व पूर्णतः समाप्त हो गया। यह सामंती गौरव के अंत और नवीन आर्थिक व्यवस्था का उदय था।

119. (4) एक कुल-आधारित सामंती राजनीति से केंद्रीकृत नौकरशाही प्रशासन की ओर।
राजस्थान में सामंती प्रशासन के अंत को एक बड़े ऐतिहासिक संक्रमण के रूप में देखा जाता है। यह परिवर्तन एक ऐसी प्राचीन व्यवस्था से था जो 'कुल-आधारित राजनीति' और आपसी रक्त संबंधों पर आधारित थी, जहाँ जागीरदार शासक के समकक्ष माने जाते थे। ब्रिटिश प्रभाव में यह व्यवस्था धीरे-धीरे 'केंद्रीकृत नौकरशाही प्रशासन' में परिवर्तित हो गई, जहाँ पद योग्यता और शासन के कठोर नियमों पर आधारित थे। इस नवीन व्यवस्था ने जागीरदारों की व्यक्तिगत शक्ति को समाप्त कर राज्य को आधुनिक प्रशासनिक ढांचे की ओर अग्रसर किया।

120. (1) किसानों को लाभ हुआ क्योंकि अंग्रेजों ने सभी कृषि ऋण निरस्त कर दिए।
जागीर प्रणाली के पतन का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव किसानों के लिए अत्यंत कष्टकारी रहा। यह सोचना त्रुटिपूर्ण है कि अंग्रेजों के आगमन से किसानों को कोई लाभ प्राप्त हुआ। इसके विपरीत, जागीरदारों ने अपना सैन्य महत्व खोने के पश्चात अपना पूर्ण ध्यान केवल किसानों से अधिकतम राजस्व निष्कर्षण पर केंद्रित कर दिया। शासक और कुलीनों के बीच का 'भाई-बंध' का पुराना संबंध विच्छेद हो गया, जिससे प्रशासनिक क्रूरता बढ़ गई। इसी निरंतर आर्थिक अस्थिरता ने राजस्थान के प्रसिद्ध किसान आंदोलनों हेतु पृष्ठभूमि तैयार की।

70. (2) लाग-बाग को एक केंद्रीकृत लिखित विधान द्वारा कठोरता से विनियमित किया गया था।
लाग-बाग के संग्रह के संबंध में यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि इसे किसी केंद्रीकृत लिखित विधान द्वारा विनियमित किया गया था। वास्तव में, ये उपकर अत्यंत अनिश्चित और जागीरदारों की व्यक्तिगत इच्छा पर निर्भर थे। इनकी संख्या और प्रकार एक ठिकाने से दूसरे ठिकाने में बहुत अधिक भिन्न होते थे, जिससे किसानों हेतु कोई निश्चित नियम नहीं था। जहाँ कुछ उपकर पारंपरिक थे, वहीं कई अन्य पूर्णतः शोषणकारी थे। इस अनियमितता ने ही जागीरदारों को किसानों के शोषण की छूट प्रदान की थी।

71. (2) केवल I, II और III
लाग-बाग की दमनकारी प्रकृति ने ग्रामीण समाज में गहरा असंतोष उत्पन्न किया। इन उपकरों ने किसानों की शुद्ध आय को इतना न्यून कर दिया कि उनके पास जीवन निर्वाह हेतु भी पर्याप्त संसाधन नहीं बचते थे। उच्च जातियों को प्रायः इन करों से छूट प्राप्त थी, जिससे निम्न वर्ग के किसानों पर इसका बोझ असहनीय हो गया। यह व्यवस्था 19वीं और 20वीं शताब्दी के प्रसिद्ध किसान आंदोलनों की आधारशिला बनी। यह कहना गलत है कि राज्य ने जागीरदारों को ऐसे कर लगाने से रोका था।

72. (1) बेहतर शर्तों वाले पड़ोसी राज्यों में किसानों का बड़े पैमाने पर पलायन।
मध्यकालीन राजस्थान में जब जागीरदारों का शोषण और लाग-बाग का बोझ असहनीय हो जाता था, तो किसानों के पास विरोध का एक प्रभावी माध्यम 'पलायन' था। वे अपनी कृषि भूमि छोड़कर उन पड़ोसी राज्यों में चले जाते थे जहाँ कर की दरें न्यून और शर्तें बेहतर होती थीं। इस पलायन से मूल जागीर की कृषि व्यवस्था अवरुद्ध हो जाती थी और राजस्व में भारी गिरावट आती थी। यह जागीरदारों पर दबाव बनाने का एक शक्तिशाली माध्यम था, जिससे वे शर्तें सुधारने हेतु विवश होते थे।

73. (3) पटेल या चौधरी
ग्रामीण प्रशासन में 'पटेल' या 'चौधरी' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। वह गाँव का मुख्य मुखिया होता था जो राजकीय प्रशासन और किसानों के बीच एक अनिवार्य कड़ी के रूप में कार्य करता था। उसका पद अत्यंत प्रतिष्ठित माना जाता था और वह स्थानीय समाज का प्रतिनिधित्व करता था। पटेल का मुख्य कार्य राजस्व संग्रह में सहायता करना, गाँव में शांति व्यवस्था बनाए रखना और प्रशासनिक आदेशों को कार्यान्वित करना था। वह विवादों को सुलझाने में भी अपनी निर्णायक भूमिका निभाता था।

74. (1) वह गाँव का लेखाकार था जो भूमि और राजस्व के अभिलेख रखता था।
जबकि पटेल गाँव का प्रशासनिक मुखिया था, 'पटवारी' का कार्य पूर्णतः वित्तीय और अभिलेख प्रबंधन से संबंधित था। वह गाँव का मुख्य लेखाकार होता था जिसकी जिम्मेदारी भूमि स्वामित्व, फसलों के विवरण और राजस्व देय राशि का सटीक अभिलेख रखना था। पटवारी द्वारा रखे गए ये दस्तावेज ही भूमि विवादों के निपटारे और कर निर्धारण का प्राथमिक आधार होते थे। उसकी तकनीकी जानकारी के कारण उसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक अत्यंत प्रभावशाली और अनिवार्य स्तंभ माना जाता था।

75. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्यकालीन ग्राम समाज में पटेल का पद अत्यधिक प्रभाव और सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक था। इसकी मुख्य कारण यह था कि वह राजकीय तंत्र और आम किसानों के बीच एकमात्र सीधा संपर्क सूत्र था। वह न केवल भू-राजस्व के कुशल संग्रह में अधिकारियों की सहायता करता था, बल्कि स्थानीय स्तर पर विधि-व्यवस्था बनाए रखने के लिए भी उत्तरदायी था। उसके निर्णयों का गाँव के सामाजिक और आर्थिक जीवन में बहुत महत्व था। इसी कारण उसे ग्रामीणों का स्वाभाविक नेता माना जाता था।

76. (2) उसे राजस्व का एक हिस्सा मिलता था और उसके पास रियायती भूमि होती थी।
पटेल को उनके प्रशासनिक कार्यों के बदले में कोई प्रत्यक्ष नकद वेतन नहीं मिलता था। इसके स्थान पर, उन्हें पारिश्रमिक के रूप में कुल वसूल किए गए राजस्व का एक निश्चित प्रतिशत प्राप्त होता था। इसके अतिरिक्त, पटेल को गाँव में कुछ विशेष रियायती भूमि प्रदान की जाती थी, जिस पर उन्हें कर नहीं देना पड़ता था। यह व्यवस्था उन्हें अपने कर्तव्यों के प्रति निष्ठावान बनाए रखने और गाँव की आर्थिक समृद्धि में उनकी व्यक्तिगत अभिरुचि सुनिश्चित करने के लिए की गई थी।

77. (3) गाँव के व्यापार के लिए स्वर्ण और रजत के सिक्के ढालना
ग्राम पटेल के कर्तव्यों में राजस्व संग्रह, कृषि विस्तार हेतु किसानों को प्रोत्साहित करना और स्थानीय विवादों का समाधान करना सम्मिलित था। वह गाँव के विकास और सुरक्षा का मुख्य संरक्षक था। हालांकि, सिक्के ढालने जैसा महत्वपूर्ण कार्य पूर्णतः राज्य का संप्रभु अधिकार था और यह केंद्रीय प्रशासन के अधीन होता था। किसी भी ग्राम स्तर के अधिकारी के पास स्वतंत्र रूप से स्वर्ण या रजत के सिक्के ढालने की शक्ति नहीं थी। यह कार्य शाही टकसालों द्वारा ही संपन्न किया जाता था।

78. (1) केवल I, II, III और V
गाँव के मुखिया के रूप में पटेल के पास बहुआयामी उत्तरदायित्व थे। उसने ग्रामीणों के आचरण की प्रत्याभूति दी और राजस्व निर्धारण की लाटा एवं कूँता प्रक्रियाओं में सक्रिय भाग लिया। राजकीय अधिकारियों के भ्रमण के समय उनके भोजन और निवास का प्रबंधन करना भी उसकी जिम्मेदारी थी। उसने किसानों से विभिन्न लाग-बाग एकत्र करने में सहायता की। युद्ध की घोषणा करना शासक का अनन्य विशेषाधिकार था और पटेल के पास ऐसी कोई राजनीतिक शक्ति नहीं थी। वह नागरिक प्रशासनिक अधिकारी था।

79. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
मध्यकालीन स्थानीय प्रशासन में विभिन्न अधिकारियों की भूमिकाएं सुस्पष्ट थीं। पटवारी गाँव के भूमि अभिलेख और

7. मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के बाद राजपूत शासकों के एकजुट होने में विफल रहने का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) अफगान आक्रमणकारियों की अत्यधिक सैन्य श्रेष्ठता
(2) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा राजपूताना का तत्काल विलय
(3) निरंतर अकाल के कारण राजपूताना का पूर्ण आर्थिक पतन
(4) राजपूत घरानों के बीच आपसी विश्वास की कमी और तीव्र वंशानुगत प्रतिद्वंद्विता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. मुगल हस्तक्षेप से स्वतंत्रता सुरक्षित करने के लिए 1708 में गठित प्रसिद्ध त्रि-पक्षीय गठबंधन (Triple Alliance) में किन तीन राज्यों के शासक सम्मिलित थे?
(1) मेवाड़, मारवाड़ और आमेर
(2) मेवाड़, कोटा और बूंदी
(3) आमेर, भरतपुर और अलवर
(4) मारवाड़, बीकानेर और जैसलमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. राजपूताना में मराठा आक्रमणों के संदर्भ में, किसी क्षेत्र को लूटपाट से बचाने के लिए मराठों द्वारा वसूले जाने वाले वित्तीय कर को सामान्यतः किस नाम से जाना जाता था?
(1) जकात
(2) जजिया
(3) चौथ
(4) खुम्स
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. मराठों और राजपूत राज्यों के बीच होने वाले निम्नलिखित युद्धों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. तुंगा का युद्ध
II. राजमहल का युद्ध
III. पाटन का युद्ध
IV. मालपुरा का युद्ध
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) II, III, I, IV
(4) III, I, IV, II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. निम्नलिखित में से कौन सा राजपूत राज्य अपनी भौगोलिक पृथकता के कारण प्रत्यक्ष मराठा सैन्य आक्रमणों और चौथ के भुगतान से काफी हद तक मुक्त रहा?
(1) मेवाड़
(2) जयपुर
(3) कोटा
(4) जैसलमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. राजस्थान में मराठा उद्देश्यों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राजपूताना में मराठों का प्राथमिक उद्देश्य क्षेत्रों का विलय करना और प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करना था।
कथन II: मराठा मुख्य रूप से वित्तीय कर (खिराज) वसूलने और मौद्रिक लाभ के लिए उत्तराधिकार विवादों का लाभ उठाने में रुचि रखते थे।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. राजस्थान में मराठा आक्रमणों के परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इससे राजकीय कोष में भारी कमी आई।
II. इसके परिणामस्वरूप कृषि का विनाश और व्यापार में गिरावट हुई।
III. इसने अपने सामंतों पर राजपूत शासकों के निरंकुश अधिकार को सुदृढ़ किया।
IV. इसने अंततः राजपूत शासकों को ब्रिटिश सुरक्षा प्राप्त करने के लिए विवश किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, II, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. तुंगा का युद्ध (1787) महादजी सिंधिया के नेतृत्व वाली मराठा सेना और किसके नेतृत्व वाली संयुक्त राजपूत सेना के बीच लड़ा गया था?
(1) सवाई माधो सिंह और महाराणा भीम सिंह
(2) महाराजा अभय सिंह और सवाई जय सिंह
(3) महाराणा जगत सिंह II और राव राजा उम्मेद सिंह
(4) सवाई प्रताप सिंह और महाराजा विजय सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजपूताना में महत्वपूर्ण आर्थिक गिरावट देखी गई।
कारण (R): मराठा सेनापतियों द्वारा चौथ और खिराज की निरंतर मांगों ने व्यापारियों और किसानों दोनों को आर्थिक रूप से क्षतिग्रस्त कर दिया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।

अध्याय 07
18वीं–19वीं शताब्दी की राजनीतिक एवं सामाजिक परिस्थितियाँ

1. 18वीं शताब्दी के दौरान किस घटना को सामान्यतः राजपूत राज्यों के आंतरिक राजनीतिक मामलों में मराठों के खुले हस्तक्षेप का प्रथम उदाहरण माना जाता है?
(1) 1734 का हुरड़ा सम्मेलन
(2) 1734 का बूंदी उत्तराधिकार विवाद
(3) 1747 का राजमहल का युद्ध
(4) 1750 का जयपुर राज्य का लंबा घेरा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): 18वीं शताब्दी में मुगल सत्ता के पतन के कारण राजपूताना में गंभीर राजनीतिक अस्थिरता उत्पन्न हुई।
कारण (R): राजपूत राज्यों ने मुगल सर्वोच्चता को प्रतिस्थापित करने के लिए एक स्थायी और सफल परिसंघ का निर्माण किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

3. 17 जुलाई, 1734 को आयोजित हुरड़ा सम्मेलन के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) इसे विशेष रूप से जयपुर राज्य के उत्तराधिकार विवाद को हल करने के लिए बुलाया गया था।
(2) इसके परिणामस्वरूप मालवा में मराठों पर राजपूतों की निर्णायक सैन्य विजय हुई।
(3) इसकी अध्यक्षता मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह II ने मराठा आक्रमणों के विरुद्ध राजपूत शासकों को एकजुट करने के लिए की थी।
(4) यह राजपूत शासकों और ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के बीच किया गया एक गठबंधन था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

4. 18वीं शताब्दी के राजनीतिक पुनर्गठन के दौरान सूची I के राजपूत शासकों को सूची II के उनके संबंधित राज्यों से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (राजपूत शासक)
A. सवाई जयसिंह
B. जगत सिंह II
C. अभय सिंह
D. उम्मेद सिंह
सूची II: (राज्य)
i. मेवाड़
ii. जयपुर
iii. बूंदी
iv. मारवाड़
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

5. निम्नलिखित में से कौन सा राजपूताना के राज्यों के लिए मुगल सर्वोच्चता के पतन का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं था?
(1) प्रमुख राजपूत शासकों द्वारा स्वतंत्रता की घोषणा
(2) मराठा और पिंडारी लूटपाट के छापों के प्रति असुरक्षा
(3) संपूर्ण उत्तर भारत में एक एकीकृत राजपूत साम्राज्य की स्थापना
(4) लंबे समय से चले आ रहे आंतरिक सीमा और उत्तराधिकार विवादों का उभरना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

6. गिरती हुई मुगल सत्ता के प्रति राजपूतों की प्रतिक्रिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने अपने निर्बल पड़ोसियों की लागत पर अपने क्षेत्रों का विस्तार करने का प्रयास किया।
II. उन्होंने 1740 में मराठा पेशवा के साथ एक स्थायी शांति संधि पर सफलतापूर्वक वार्ता की।
III. उन्होंने प्रतिद्वंद्वी राजपूत कुलों के विरुद्ध अक्सर मराठा सरदारों की सैन्य सहायता मांगी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

ईश्वरी सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. 18वीं शताब्दी के राजपूताना के संदर्भ में, 'भाई-बंट' शब्द का तात्पर्य है:
(1) राजकीय सेना के रख-रखाव के लिए एकत्र किया गया कर
(2) विभिन्न प्रतिद्वंद्वी राजपूत राज्यों के बीच हस्ताक्षरित एक राजनयिक संधि
(3) धार्मिक परिषद जो प्रमुख न्यायिक मामलों पर राजा को परामर्श देती थी
(4) विजित भूमि का कुलीन भाइयों के बीच पारंपरिक विभाजन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. किस कुख्यात पिंडारी नेता ने एक भाड़े के सैनिक के रूप में कार्य करके राजपूताना के आंतरिक संघर्षों, विशेष रूप से कृष्णा कुमारी विवाद में एक निर्णायक और विनाशकारी भूमिका निभाई?
(1) अमीर खान
(2) करीम खान
(3) चीतू
(4) वासिल मुहम्मद
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. 18वीं शताब्दी के दौरान, राजपूताना के राजनीतिक विखंडन को नई स्वतंत्र रियासतों के उदय से चिह्नित किया गया था। निम्नलिखित में से कौन इस अवधि के दौरान एक शक्तिशाली जाट राज्य के रूप में उभरा?
(1) अलवर
(2) भरतपुर
(3) धौलपुर
(4) (2) और (3) दोनों
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. राजपूताना के राजनीतिक विखंडन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मुगल नियंत्रण के निर्बल होने से महत्वाकांक्षी स्थानीय सरदारों को स्वतंत्र राज्य बनाने का अवसर मिला।
II. प्रताप सिंह नरुका ने जयपुर से अलग होकर अलवर के स्वतंत्र राज्य की सफलतापूर्वक स्थापना की।
III. विखंडन के कारण स्थानीय व्यापारिक जाल के फलस्वरूप निरंतर आर्थिक समृद्धि हुई।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. 18वीं शताब्दी के स्वतंत्र राज्य और उसके संस्थापक/प्रमुख नेता के गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) भरतपुर - बदन सिंह
(2) अलवर - प्रताप सिंह नरुका
(3) टोंक - अमीर खान पिंडारी
(4) झालावाड़ - झाला जालिम सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक, राजपूताना कई अराजक और निर्बल राज्यों में विभाजित हो गया था।
कारण (R): एक सर्वोच्च केंद्रीय शक्ति की अनुपस्थिति ने महत्वाकांक्षी कुलीनों और भाड़े के सैनिकों को स्वतंत्र क्षेत्र बनाने की अनुमति दी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. टोंक रियासत को 1817 में अंग्रेजों द्वारा औपचारिक रूप से एक संप्रभु राज्य के रूप में मान्यता दी गई थी और निम्नलिखित में से किस नेता को प्रदान की गई थी?
(1) नवाब फैजुल्ला खान
(2) वजीर अली
(3) अमीर खान पिंडारी
(4) हाफिज रहमत खान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. सूची I के राज्यों को सूची II के उनके संबंधित शासक कुलों या समुदायों से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विखंडित/नया राज्य)
A. भरतपुर
B. अलवर
C. टोंक
D. शाहपुरा
सूची II: (शासक कुल/समुदाय)
i. नरुका राजपूत
ii. जाट
iii. सिसोदिया राजपूत
iv. पठान मुस्लिम
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. निम्नलिखित में से किस कारक ने 18वीं शताब्दी में राजपूताना के राजनीतिक विखंडन में योगदान नहीं दिया?

(4) मेवाड़ में अफीम उत्पादक समस्त भूमियों का प्रत्यक्ष विलय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

94. ब्रिटिश दबाव में विभिन्न राजपूत राज्यों में 'राहदारी' (पारगमन शुल्क) का उन्मूलन स्पष्ट रूप से मुक्त व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए किया गया था। इस नीति के वास्तविक प्रमुख लाभार्थी कौन थे?
(1) स्थानीय किसान
(2) स्वदेशी बंजारे और ऊंट कारवां संचालक
(3) राजस्थान के पारंपरिक शिल्पकार संघ
(4) ब्रिटिश व्यापारी और मशीन निर्मित उत्पादों के निर्माता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. अंग्रेजों द्वारा स्थानीय संसाधनों पर एकाधिकार करने से पूर्व, राजपूताना से निम्नलिखित में से कौन सी सबसे प्रमुख निर्यात वस्तु थी जिसने स्थानीय राज्यों के लिए महत्वपूर्ण संपदा उत्पन्न की थी?
(1) नमक
(2) नील
(3) जूट
(4) चाय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. वह प्राथमिक तंत्र क्या था जिसके माध्यम से राजपूताना से ब्रिटिश भारत की ओर "धन का निष्कासन" (Drain of Wealth) हुआ?
(1) ब्रिटिश क्राउन द्वारा व्यक्तिगत किसानों पर प्रत्यक्ष कराधान
(2) वार्षिक खिराज, सैन्य टुकड़ियों का रख-रखाव और प्रतिकूल व्यापार शर्तें
(3) राजपूत शासकों द्वारा लंदन में ब्रिटिश शैक्षणिक संस्थानों को स्वैच्छिक दान
(4) अरावली श्रेणी से स्वर्ण खदानों का बड़े पैमाने पर निर्यात
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. 18वीं और 19वीं शताब्दी के राजस्थान के प्रशासनिक और आर्थिक ढांचे में, सेठों, साहूकारों और महाजनों के प्रभावशाली वर्ग के पास मुख्य रूप से सत्ता क्यों थी?
(1) उन्होंने क्षेत्र में सबसे बड़ी स्थायी निजी सेनाएं बनाए रखी थीं।
(2) उन्होंने राज्य को वित्तपोषित किया और कृषि ऋण को नियंत्रित किया।
(3) धार्मिक अनुष्ठानों और शिक्षा पर उनका एकाधिकार था।
(4) वे नए बने स्वतंत्र राज्यों के पारंपरिक शासक थे।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

98. राजस्थान की अर्थव्यवस्था में महाजन/सेठ समुदाय द्वारा निभाई गई निम्नलिखित भूमिकाओं पर विचार कीजिए:
I. जागीरदारों और किसानों को उच्च ब्याज दरों पर ऋण प्रदान करना।
II. हुंडी प्रणाली का उपयोग करके क्षेत्रों में धन के हस्तांतरण का प्रबंधन करना।
III. राज्य की सैन्य तोपखाने इकाइयों की सीधे कमान संभालना।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. राजस्थान के आर्थिक इतिहास के संदर्भ में, 'हुंडी' को सर्वाधिक उपयुक्त रूप से किस रूप में परिभाषित किया जा सकता है?
(1) भूमि मापन की एक पारंपरिक इकाई
(2) पशुओं की बिक्री पर लगाया जाने वाला कर
(3) लंबी दूरी के व्यापार के लिए उपयोग किया जाने वाला विनिमय पत्र या साख पत्र
(4) घुड़सवार सेना द्वारा उपयोग किया जाने वाला एक विशिष्ट प्रकार का स्वदेशी अस्त्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. एक प्रमुख ऐतिहासिक व्यापारी/बैंकर परिवार और राजस्थान में उनके प्राथमिक आधार के गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) सेठ मिर्जामल - चूरू
(2) अमर चंद बांठिया - बीकानेर/ग्वालियर
(3) लोढ़ा परिवार - अजमेर
(4) बिड़ला - जैसलमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

101. 19वीं शताब्दी में मारवाड़ी महाजनों के प्रवास के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: बड़ी संख्या में मारवाड़ी व्यापारी राजपूताना से ब्रिटिश भारतीय केंद्रों जैसे कलकत्ता, बॉम्बे और कानपुर चले गए।
कथन II: उनके प्रवास का प्राथमिक कारण देशी राजपूत शासकों द्वारा प्रदान की जाने वाली अत्यधिक अनुकूल और सुरक्षात्मक आर्थिक नीतियां थीं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

102. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान की रियासतों में प्रमुख बैंकरों (नगर सेठों) द्वारा किया जाने वाला एक विशिष्ट कार्य नहीं था?
(1) अनुबंध के अंतर्गत राज्य मुद्रा की ढलाई करना
(2) जनजातीय समूहों के बीच धार्मिक धर्मांतरण आंदोलनों का नेतृत्व करना
(3) राज्य की ओर से मराठा चौथ का भुगतान करना
(4) किसानों को अनाज और बीज ऋण (तकावी) प्रदान

(2) चार्ल्स मेटकाफ
(3) जॉन मैल्कम
(4) आर्थर वेलेजली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. राजपूताना के राज्यों में से, 1823 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ अधीनस्थ गठबंधन की संधि पर हस्ताक्षर करने वाला अंतिम राज्य कौन सा था?
(1) जैसलमेर
(2) बीकानेर
(3) डूंगरपुर
(4) सिरोही
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. निम्नलिखित में से कौन सा 1817-18 में राजपूत राज्यों के साथ संधियाँ करने में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्राथमिक उद्देश्य का सबसे सटीक विवरण है?
(1) ब्रिटिश क्षेत्रों को सुरक्षित करने के लिए आश्रित राज्यों का एक मध्यवर्ती क्षेत्र (Buffer) निर्मित करना
(2) प्रत्यक्ष ब्रिटिश प्रशासनिक शासन स्थापित करना और राजशाही को समाप्त करना
(3) सामाजिक सुधारों को प्रोत्साहित करना और सती एवं शिशु हत्या जैसी कुरीतियों को समाप्त करना
(4) क्षेत्र में कृषि उत्पादन पर पूर्ण एकाधिकार स्थापित करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. 1817-18 की संधियों के माध्यम से लागू की गई भारतीय रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति को ऐतिहासिक रूप से किस रूप में जाना जाता है?
(1) घेरे की नीति (Ring Fence)
(2) समान संघ (Equal Federation)
(3) अधीनस्थ पृथक्करण (Subordinate Isolation)
(4) प्रत्यक्ष विलय (Direct Annexation)
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. राजपूत राज्यों और अंग्रेजों के बीच 1817-18 की संधियों के संबंध में निम्नलिखित धाराओं पर विचार कीजिए:
I. राज्यों ने ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार की।
II. अंग्रेजों ने बाह्य आक्रमण से राज्यों की रक्षा करने का वचन दिया।
III. राज्यों ने स्वतंत्र रूप से अन्य विदेशी शक्तियों के साथ वार्ता करने का अधिकार बनाए रखा।
IV. राज्य मांग किए जाने पर अंग्रेजों को सैन्य टुकड़ियाँ उपलब्ध कराने हेतु सहमत हुए।
V. राज्यों को वार्षिक खिराज (Tribute) देना आवश्यक था, जो सामान्यतः मराठों को दिए जाने वाले कर के समान था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III, और V
(2) केवल I, II, IV, और V
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. निम्नलिखित में से कौन सी राजपूत राज्यों द्वारा हस्ताक्षरित 1817-18 की संधियों की सामान्य शर्त नहीं थी?
(1) शासक ब्रिटिश सरकार के साथ अधीनस्थ सहयोग करने के लिए बाध्य था।
(2) राज्य ब्रिटिश अनुमति के बिना किसी भी सामंत या राज्य के साथ कोई वार्ता नहीं करेगा।
(3) ब्रिटिश सरकार ने राज्य में ब्रिटिश कानूनों या प्रत्यक्ष प्रशासन को लागू न करने का वचन दिया।
(4) शासक को बिना शर्त अपनी पदवी त्यागनी पड़ी और कंपनी का पेंशनभोगी बनना पड़ा।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): 1817-18 की संधियों ने अंततः अपने सामंतों (जागीरदारों) पर राजपूत शासकों के पारंपरिक अधिकार को निर्बल कर दिया।
कारण (R): आंतरिक मामलों में ब्रिटिश हस्तक्षेप और पॉलिटिकल एजेंटों की नियुक्ति ने राजपूत शासन व्यवस्था के पारंपरिक नियंत्रण एवं संतुलन (Checks and Balances) को दरकिनार कर दिया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. सूची I के राज्यों को सूची II में उनकी 1817-18 की संधियों पर हस्ताक्षर करने के समय से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (राज्य)
A. करौली
B. कोटा
C. मेवाड़
D. जयपुर
सूची II: (1817-18 की संधि पर हस्ताक्षर करने का माह/वर्ष)
i. दिसंबर 1817
ii. जनवरी 1818
iii. अप्रैल 1818
iv. नवंबर 1817
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. 1817-18 की संधियों में खिराज की धारा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(2) जागीरदारी प्रथा को समाप्त करना और कृषकों को भूमि प्रदान करना
(3) विवाह व्यय, बहुविवाह और विवाह योग्य आयु को विनियमित करना
(4) सभी जातियों में विधवा विवाह को प्रोत्साहित करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. 19वीं शताब्दी के राजस्थान में सामाजिक प्रथाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 19वीं शताब्दी के राजस्थान में कन्या शिशु हत्या का प्रचलन मुख्य रूप से राजपूत समुदाय तक ही सीमित था।
कथन II: इस प्रथा का मूल कारण कुल की श्रेष्ठता का मिथ्या अभिमान और दहेज एवं त्याग का भारी आर्थिक भार था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. 19वीं शताब्दी के राजस्थान में महिलाओं की स्थिति के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा प्रत्येक ग्राम में व्यापक और राज्य प्रायोजित थी।
(2) राजसी और उच्च वर्ग के परिवारों में पर्दा प्रथा का कठोरता से पालन किया जाता था।
(3) कृषक और जनजातीय समुदायों की महिलाओं को अधिक सामाजिक स्वतंत्रता प्राप्त थी क्योंकि वे कृषि कार्यों में भाग लेती थीं।
(4) बाल विवाह लगभग सभी जातियों और समुदायों में गहराई से प्रचलित था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. ' डाकन प्रथा' (चुड़ैल-शिकार), जिसे 1853 में मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह द्वारा आधिकारिक तौर पर प्रतिबंधित कर दिया गया था, मुख्य रूप से किन समुदायों की महिलाओं को लक्षित करती थी?
(1) राजसी राजपूत परिवार
(2) भील और मीणा जनजातीय समुदाय
(3) ब्राह्मण और चारण समुदाय
(4) महाजन और ओसवाल समुदाय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. 18वीं और 19वीं शताब्दी के राजस्थान की कृषि प्रणाली में, वह भूमि जो सीधे राज्य द्वारा प्रबंधित की जाती थी और जिसका राजस्व केंद्रीय कोष में जाता था, कहलाती थी:
(1) जागीर
(2) खालसा
(3) भोम
(4) सासन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. राजस्थान में प्रचलित कृषि करों और प्रथाओं के संबंध में निम्नलिखित परिभाषाओं पर विचार कीजिए:
I. लाटा - राज्य और किसान के बीच काटी गई फसल के ढेरों का विभाजन।
II. बटाई - राज्य/जागीरदार और किसान के बीच कटी हुई फसल का विभाजन।
III. बेगार - जागीरदारों द्वारा कराया गया बलात अवैतनिक श्रम।
IV. लाग-बाग - विभिन्न अवसरों (जैसे विवाह, जन्म) पर आरोपित मनमाने उपकर (Cesses)।
उपरोक्त में से कौन शब्दों को सही ढंग से परिभाषित करता है?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. राजस्थान में पारंपरिक करों (लाग) के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) चंवरी लाग - पुत्री के विवाह के अवसर पर लगाया जाने वाला कर
(2) तलवार बंधाई - नए जागीरदार द्वारा शासक को दिया जाने वाला उत्तराधिकार शुल्क
(3) जकात - आयतन के अनुसार विशेष रूप से कृषि उपज पर लगाया जाने वाला कर
(4) कामठा लाग - जागीरदार के दुर्ग के निर्माण या मरम्मत के लिए एकत्र किया गया कर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. 19वीं शताब्दी के राजस्थान में स्वदेशी कारीगर वर्गों (बुनकरों, रंगरेजों, धातु श्रमिकों) के पतन का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) कारीगरों का यूरोप में बड़े पैमाने पर प्रवास
(2) कारीगरों की युवा पीढ़ी में कौशल का अचानक अभाव
(3) राजपूत शासकों द्वारा स्वदेशी विनिर्माण का पूर्ण निषेध
(4) सस्ते, मशीन निर्मित ब्रिटिश उत्पादों से बाजारों का भर जाना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. शासकों और जागीरदारों द्वारा किसानों और निम्न जातियों से अनिवार्य एवं अवैतनिक श्रम प्राप्त करने की प्रणाली को सामान्यतः किस रूप में जाना जाता था?
(1) हलमा
(2) इजारा
(3) बेगार
(4) हवाला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

86. राजस्थान के किसानों पर ब्रिटिश-प्रेरित भू-राजस्व बंदोबस्त के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: नकद-आधारित राजस्व बंदोबस्त के प्रारंभ ने किसानों को भारी राहत प्रदान की और साहूकारों पर उनकी निर्भरता

(1) आधुनिक यूरोपीय तोपखाने के साथ राज्य सेनाओं का आधुनिकीकरण।
(2) राज्य की सेनाओं को बड़े पैमाने पर भंग करना जिससे स्थानीय बेरोजगारी में वृद्धि हुई।
(3) पड़ोसी क्षेत्रों को जीतने के लिए शासकों द्वारा इन टुकड़ियों का उपयोग करना।
(4) राजपूत घुड़सवार सेना का ब्रिटिश सेना की मुख्य लड़ाकू शक्ति बनना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. सहायक संधि प्रणाली के अंतर्गत, यदि दो राजपूत राज्यों के बीच कोई सीमा विवाद उत्पन्न होता, तो उसे किसके द्वारा हल किया जाना था?
(1) प्रमुख राजपूत कुलीनों की एक संयुक्त सलाहकार परिषद
(2) शासकों के बीच आधिकारिक रूप से स्वीकृत द्वंद्वयुद्ध
(3) दिल्ली में मुगल सम्राट को औपचारिक याचिका देना
(4) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा मध्यस्थता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. राजस्थान में निम्नलिखित ब्रिटिश-नेतृत्व वाली सैन्य टुकड़ियों की स्थापना के लिए सही कालानुक्रमिक अनुक्रम का चयन कीजिए:
(1) मेरवाड़ा बटालियन → शेखावाटी ब्रिगेड → जोधपुर लीजन → मेवाड़ भील कोर
(2) शेखावाटी ब्रिगेड → मेरवाड़ा बटालियन → मेवाड़ भील कोर → जोधपुर लीजन
(3) मेवाड़ भील कोर → जोधपुर लीजन → शेखावाटी ब्रिगेड → मेरवाड़ा बटालियन
(4) जोधपुर लीजन → मेरवाड़ा बटालियन → शेखावाटी ब्रिगेड → मेवाड़ भील कोर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. राजपूताना में स्थापित 'रेजिडेंट' प्रणाली के अंतर्गत, ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंट की प्राथमिक भूमिका आधिकारिक तौर पर क्या थी?
(1) राज्य की सर्वोच्च अदालत की अध्यक्षता करने वाले मुख्य न्यायाधीश के रूप में कार्य करना
(2) कंपनी की ओर से किसानों से भू-राजस्व एकत्र करना
(3) राज्य दरबार में ब्रिटिश हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले सलाहकार के रूप में कार्य करना
(4) राजपूत शासक के व्यक्तिगत सैन्य अंगरक्षक की सीधे कमान संभालना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. उन विधियों पर विचार कीजिए जिनके द्वारा ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंटों ने राजपूत राज्यों के आंतरिक प्रशासन में हस्तक्षेप किया:
I. शासक के अल्पवयस्क होने के दौरान 'संरक्षक परिषद' (Regency Council) का गठन करना।
II. शासकों को स्वदेशी दीवानों (मंत्रियों) को बर्खास्त करने और ब्रिटिश पसंदीदा व्यक्तियों को नियुक्त करने के लिए विवश करना।
III. ब्रिटिश सेना का उपयोग करके असंतुष्ट जागीरदारों के विद्रोहों को दबाना।
IV. राज्य विधानसभा के सदस्यों के चयन के लिए लोकतांत्रिक चुनाव अनिवार्य करना।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, II, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. 1832 में स्थापित राजपूताना एजेंसी के लिए प्रथम 'एजेंट टू द गवर्नर जनरल' (AGG) के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?
(1) कर्नल जेम्स टॉड
(2) सर चार्ल्स मेटकाफ
(3) जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस
(4) मिस्टर अब्राहम लॉकेट
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
कथन (A): रेजिडेंट प्रणाली ने राजपूत शासकों के पारंपरिक अधिकार को प्रभावी ढंग से समाप्त कर दिया।
कारण (R): पॉलिटिकल एजेंट अक्सर उत्तराधिकार विवादों, प्रशासनिक मामलों और शासक एवं कुलीनों के बीच संबंधों में हस्तक्षेप करते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. सूची I की पॉलिटिकल एजेंसियों को सूची II में उनके संबंधित मुख्यालयों से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पॉलिटिकल एजेंसी)
A. राजपूताना एजेंसी (AGG)
B. मेवाड़ रेजिडेंसी
C. जयपुर एजेंसी
D. मारवाड़ एजेंसी
सूची II: (मुख्यालय)
i. उदयपुर
ii. अजमेर
iii. जोधपुर
iv. जयपुर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii

(1) मुगल सम्राट द्वारा स्थापित एकीकृत प्रशासनिक संहिता
(2) जागीरदारी संकट और अत्यधिक शक्तिशाली सामंतों का उदय
(3) विभिन्न राज्यों के उत्तराधिकार में मराठों का हस्तक्षेप
(4) वंशानुगत प्रतिद्वंद्विता और पारंपरिक भाई-बंट भूमि प्रणाली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 18वीं शताब्दी में, राजपूत कुलीनों ने अक्सर दावा किया कि शासक केवल 'समानों में प्रथम' (first among equals) था।
कथन II: इस विचारधारा ने शासकों को अपने प्रशासन को केंद्रीकृत करने और किसी भी सामंती विद्रोह को सुगमता से कुचलने में सहायता की।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. राजपूताना के राज्यों के साथ ब्रिटिश संधियों का प्रथम चरण 1803 में द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान हुआ था। 1803 में ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ रक्षात्मक गठबंधन की संधि पर हस्ताक्षर करने वाला प्रथम राज्य कौन सा था?
(1) जयपुर
(2) भरतपुर
(3) अलवर
(4) कोटा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. 1817 से पूर्व राजपूताना में प्रारंभिक ब्रिटिश प्रवेश के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. लॉर्ड वेलेजली ने मराठा शक्ति का सामना करने के लिए राजपूत राज्यों के साथ गठबंधन बनाने की नीति प्रारंभ की।
II. 1803 में भरतपुर और अलवर जैसे राज्यों के साथ हस्ताक्षरित संधियाँ कड़ाई से आपसी अहस्तक्षेप पर आधारित थीं।
III. लॉर्ड कॉर्नवालिस ने राजपूताना में वेलेजली की आक्रामक गठबंधन नीति को कड़ाई से जारी रखा।
IV. अंग्रेजों ने प्रारंभ में 1805 के बाद अहस्तक्षेप की नीति अपनाते हुए कई संधियों को रद्द कर दिया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, II, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. वह प्राथमिक कारण क्या था जिसने गवर्नर-जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स को अहस्तक्षेप की नीति त्यागने और 1817 में राजपूत राज्यों के साथ सक्रिय रूप से संधियाँ करने के लिए विवश किया?
(1) राजस्थान में पश्चिमी शिक्षा के प्रसार की इच्छा
(2) फ्रांसीसियों और अफगानों द्वारा संयुक्त आक्रमण का संकट
(3) पिंडारी संकट को घेरने और दमन करने की रणनीतिक आवश्यकता
(4) अरावली क्षेत्र में विशाल स्वर्ण भंडार की खोज
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. 1817-18 में अंग्रेजों के साथ अधीनस्थ गठबंधन (Subordinate Alliance) की संधियों पर हस्ताक्षर करने के कालानुक्रमिक क्रम में निम्नलिखित राज्यों को व्यवस्थित कीजिए:
I. करौली
II. कोटा
III. मेवाड़ (उदयपुर)
IV. जयपुर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) I, III, II, IV
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. सूची I के ब्रिटिश अधिकारियों को सूची II में राजपूताना में उनकी संबंधित भूमिकाओं या घटनाओं से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (ब्रिटिश अधिकारी)
A. लॉर्ड वेलेजली
B. लॉर्ड हेस्टिंग्स
C. चार्ल्स मेटकाफ
D. जेम्स टॉड
सूची II: (राजपूताना में भूमिका/घटना)
i. अधीनस्थ पृथक्करण (Subordinate Isolation) की नीति प्रारंभ की (1817)
ii. द्वितीय मराठा युद्ध (1803) के दौरान गठबंधन का प्रस्ताव देने वाले प्रथम व्यक्ति
iii. मेवाड़ और मारवाड़ के प्रथम पॉलिटिकल एजेंट
iv. राजपूत राज्यों के साथ 1817-18 की संधियों के मुख्य वार्ताकार
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. 1817-18 में अधिकांश राजपूत राज्यों के साथ अधीनस्थ पृथक्करण की संधियों पर वार्ता करने के लिए कौन सा ब्रिटिश अधिकारी मुख्य रूप से उत्तरदायी था?
(1) सर डेविड ऑक्टरलोनी

सूची II: (पारंपरिक भूमिका/व्यवसाय)
i. वस्तुओं (अनाज, नमक) के खानाबदोश परिवहनकर्ता
ii. खानाबदोश मनोरंजनकर्ता और सपेरे
iii. साहूकारी, व्यापार और राज्य प्रशासन
iv. ऐतिहासिक वंशावलियों के संरक्षक और साहित्यिक रचनाकार
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. निम्नलिखित समुदायों में से किसे 19वीं शताब्दी के राजस्थान में पारंपरिक रूप से प्राथमिक कृषि समुदाय के रूप में मान्यता नहीं दी गई थी?
(1) जाट
(2) ओसवाल
(3) बिश्नोई
(4) धाकड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता 18वीं शताब्दी के राजस्थान में जाति व्यवस्था की विशेषता नहीं थी?
(1) जाति के भीतर कठोर अंतर्विवाह (Endogamy)
(2) विभिन्न जातियों के बीच सह-भोज को प्रतिबंधित करने वाले नियम
(3) वंशानुगत व्यावसायिक विशेषज्ञता
(4) अप्रतिबंधित सामाजिक गतिशीलता जो किसानों को धन के आधार पर शासक अभिजात वर्ग बनने की अनुमति देती थी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. 18वीं शताब्दी के राजपूताना में निम्न जातियों के बीच सीमित सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण कारण क्या था?
(1) कुलीनों द्वारा जातिगत कर्तव्यों और बेगार का कठोर प्रवर्तन।
(2) राज्य द्वारा आधुनिक पश्चिमी शिक्षा का प्रारंभ।
(3) खेती के लिए उपलब्ध कृषि भूमि का पूर्ण अभाव।
(4) समुद्री व्यापार के लिए विदेशों में निरंतर प्रवास।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. राजस्थान की किस रियासत ने 1822 में सती प्रथा पर आधिकारिक तौर पर प्रतिबंध लगाने वाला प्रथम राज्य होने का गौरव प्राप्त किया?
(1) जयपुर
(2) मेवाड़
(3) बूंदी
(4) मारवाड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. राजस्थान में 'त्याग प्रथा' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक अनिवार्य प्रथा थी जहाँ राजपूत कन्या के विवाह के अवसर पर चारणों, भाटों और ढोलियों को भारी मात्रा में धन दिया जाता था।
II. इसके कारण राजपूत परिवारों में भारी आर्थिक क्षति हुई, जिससे कन्या शिशु हत्या को बढ़ावा मिला।
III. इसे ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंटों द्वारा कानूनी रूप से संरक्षित और प्रोत्साहित किया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. राजस्थान में निम्नलिखित सामाजिक कुरीतियों पर औपचारिक प्रतिबंध लगाने को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. सती प्रथा (सर्वप्रथम बूंदी में प्रतिबंधित)
II. कन्या शिशु हत्या (सर्वप्रथम कोटा में प्रतिबंधित)
III. डाकन प्रथा (मेवाड़ में प्रतिबंधित)
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन कीजिए:
(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) I, III, II
(4) III, II, I
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. सूची I की सामाजिक कुरीतियों को सूची II में सर्वप्रथम उन पर प्रतिबंध लगाने वाले राज्य से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (सामाजिक बुराई)
A. सती
B. कन्या शिशु हत्या
C. डाकन प्रथा (Witchcraft)
D. समाधि प्रथा
सूची II: (सबसे पहले प्रतिबंध लगाने वाला राज्य)
i. कोटा
ii. बूंदी
iii. जयपुर
iv. मेवाड़
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. 1889 में 'वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा' की स्थापना मुख्य रूप से राजपूतों के बीच किन सामाजिक विषयों के समाधान के लिए की गई थी?
(1) अस्पृश्यता का उन्मूलन और दलित शिक्षा को प्रोत्साहित करना

(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा स्थापित राजनीतिक प्रशासन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) AGG का मुख्यालय प्रारंभ में 1832 में अजमेर में स्थापित किया गया था।
(2) AGG का मुख्यालय 1845 में ग्रीष्मकालीन महीनों के लिए माउंट आबू स्थानांतरित कर दिया गया था।
(3) प्रमुख राज्यों में तैनात पॉलिटिकल एजेंट AGG के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में कार्य करते थे।
(4) 1850 तक रियासतों को समाप्त करके उन्हें ब्रिटिश भारत में एकीकृत कर दिया गया था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. ब्रिटिश प्रभाव में विभिन्न राजपूत राज्यों में स्थापित 'कोर्ट ऑफ वाड्र्स' का सबसे उपयुक्त कार्य क्या था?
(1) अल्पवयस्क शासकों के वयस्क होने तक उनकी संपत्तियों का प्रबंधन करना
(2) आपराधिक मामलों के लिए सर्वोच्च अपीलीय न्यायालय के रूप में कार्य करना
(3) सांभर झील में नमक उत्पादन के एकाधिकार को विनियमित करना
(4) अंग्रेजों को उपलब्ध कराई जाने वाली सैन्य टुकड़ियों को प्रशिक्षित करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. राजनीतिक प्रभाव के माध्यम से ब्रिटिश आर्थिक नियंत्रण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: पॉलिटिकल एजेंटों ने राजपूत शासकों को प्रतिकूल नमक समझौतों पर हस्ताक्षर करने के लिए विवश करने हेतु अपने प्रभाव का उपयोग किया, जिससे स्थानीय एकाधिकार अंग्रेजों को प्राप्त हो गया।
कथन II: इन समझौतों ने राज्य के राजस्व में भारी वृद्धि की और स्थानीय बंजारा व्यापारियों के लिए समृद्धि लाए।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. राजस्थान के 18वीं शताब्दी के सामाजिक पदानुक्रम में, किस समुदाय को पारंपरिक रूप से मृत्युदंड से मुक्त होने का विशेषाधिकार प्राप्त था और वे 'सासन' के रूप में जानी जाने वाली कर-मुक्त भूमि के अनुदान का उपभोग करते थे?
(1) महाजन
(2) चारण और ब्राह्मण
(3) जाट और गुर्जर
(4) भील और मीणा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. 18वीं शताब्दी के राजस्थान की सामाजिक स्थितियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजपूतों ने शासक अभिजात वर्ग का गठन किया और शक्ति के संदर्भ में उच्चतम सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठित रहे।
II. महाजनों ने व्यापार, बैंकिंग और राज्य के वित्त को नियंत्रित किया।
III. जाट, सिरवी और पाटीदार जैसी कृषि जातियों ने कृषि अर्थव्यवस्था का आधार निर्मित किया।
IV. भील और मीणा जैसे जनजातीय समुदायों को क्षत्रियों के रूप में मुख्यधारा के जाति पदानुक्रम में पूर्णतः एकीकृत किया गया था।
V. दलित समुदायों के विरुद्ध व्यापक स्तर पर अस्पृश्यता का प्रचलन था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III, और V
(2) केवल I, II, III, और IV
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. पारंपरिक 18वीं और 19वीं शताब्दी के राजस्थानी समाज में, 'चाकर', 'दारोगा', 'गोला' और 'खवास' शब्द मुख्य रूप से किसे संदर्भित करते थे?
(1) राजकीय सेना में सैन्य कमांडरों की पदवियाँ
(2) अत्यधिक कुशल कारीगर वर्गों के संघ
(3) कुलीन परिवारों में वंशानुगत घरेलू दासता वाले समूह
(4) पारगमन शुल्क (Transit duties) एकत्र करने के लिए उत्तरदायी राजस्व अधिकारी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. कौन सा कथन 18वीं शताब्दी के राजस्थान में राजपूत जाति संरचना की प्रकृति का सही वर्णन करता है?
(1) यह पूर्णतः समतावादी था, जिसमें कोई आंतरिक पदानुक्रम या उप-कुल नहीं थे।
(2) इसने किसी अन्य राजपूत उप-कुल के साथ अंतर्विवाह को कड़ाई से प्रतिबंधित किया था।
(3) इसने अनिवार्य किया था कि सभी राजपूतों को अपने एकमात्र व्यवसाय के रूप में कृषि को अपनाना चाहिए।
(4) वंश और शक्ति पर आधारित उप-कुलों का एक कठोर पदानुक्रम था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. सूची I के समुदायों को सूची II में 18वीं शताब्दी के राजस्थान में उनकी पारंपरिक भूमिकाओं या व्यवसायों से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (समुदाय/जाति)
A. चारण
B. महाजन
C. कालबेलिया
D. बंजारा

कम कर दी।
कथन II: अकाल के वर्षों में भी नकद में राजस्व की कठोर मांग ने किसानों को ऋण के जाल में फंसा दिया और उनकी भूमि छिन गई।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. निम्नलिखित में से किसे 19वीं शताब्दी के राजस्थान में गंभीर किसान संकट का सबसे उपयुक्त कारण माना जाता है?
(1) आधुनिक कृषि मशीनरी का अभाव
(2) कृषि भूमि पर सीधे विदेशी यूरोपीय शक्तियों का निरंतर आक्रमण
(3) कुछ उच्च उपज वाली फसलों की खेती पर धार्मिक प्रतिबंध
(4) अत्यधिक सरकारी राजस्व और उच्च ब्याज वाले ऋणों द्वारा दोहरा शोषण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में जागीरदारी प्रथा की विशेषता नहीं थी?
(1) जागीर भूमि के किसानों को स्थायी, हस्तांतरणीय पट्टा अधिकार प्राप्त थे।
(2) जागीरदार शासक को सैन्य सेवा प्रदान करने के बदले में भूमि रखते थे।
(3) जागीरदार अपनी जागीर के भीतर पर्याप्त न्यायिक और पुलिस शक्तियों का प्रयोग करता था।
(4) जागीरदार की मृत्यु पर, उत्तराधिकारी द्वारा उत्तराधिकार शुल्क दिए जाने तक जागीर सैद्धांतिक रूप से खालसा में समाहित हो जाती थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 1869-70 की नमक संधियों के माध्यम से राजस्थान में नमक उत्पादन पर एकाधिकार सुरक्षित कर लिया। इन संधियों का प्राथमिक केंद्र कौन सी प्रमुख झील थी?
(1) पिछोला झील
(2) पुष्कर झील
(3) सांभर झील
(4) नक्की झील
(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. राजस्थान में ब्रिटिश नीतियों के आर्थिक प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. अंग्रेजों ने अफीम की खेती और व्यापार पर एकाधिकार स्थापित किया।
II. पारगमन शुल्क (राहदारी) के उन्मूलन ने ब्रिटिश व्यापारियों की तुलना में स्थानीय व्यापारियों को समान रूप से लाभ पहुँचाया।
III. रेलवे के प्रारंभ ने ब्रिटिश उत्पादों से बाजारों को पाटकर स्थानीय कारीगरों की बर्बादी को तीव्र कर दिया।
IV. ब्रिटिश नमक संधियों ने स्थानीय बंजारा समुदायों की आजीविका को गंभीर क्षति पहुँचाई।
V. कृषि के व्यावसायीकरण ने किसानों को अकाल के प्रति कम असुरक्षित बना दिया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) केवल II, IV, और V
(4) केवल I, II, IV, और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

91. राजस्थान में ब्रिटिश आर्थिक हस्तक्षेप के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) अंग्रेजों ने सीमा शुल्क चौकियां स्थापित कीं और राजपूताना से ब्रिटिश भारत को निर्यात किए जाने वाले उत्पादों पर उच्च शुल्क लगाया।
(2) राजस्थान से गुजरने वाले पारंपरिक व्यापारिक मार्गों ने वैकल्पिक औपनिवेशिक बंदरगाह शहरों के विकास के साथ अपना महत्व खो दिया।
(3) अंग्रेजों ने स्थानीय राज्य की मुद्राओं और ब्रिटिश भारतीय रुपयों के बीच विनिमय दरों में अपने लाभ के लिए हेरफेर किया।
(4) ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए सुरक्षात्मक शुल्कों के कारण स्थानीय उद्योगों में भारी वृद्धि हुई।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. 19वीं शताब्दी के अंत में राजस्थान में रेलवे के प्रारंभ का दोहरा आर्थिक प्रभाव पड़ा। जहाँ इसने माल के तीव्र परिवहन को सुगम बनाया, वहीं स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए इसका प्रमुख नकारात्मक परिणाम क्या था?
(1) इसके कारण स्थानीय कारीगरों की मजदूरी में भारी मुद्रास्फीति हुई।
(2) अभाव के समय अनाज का निर्यात, जिससे अकाल की स्थिति और भयावह हो गई।
(3) इसने महाजनों को ब्रिटिश भारत में निवेश करने से हतोत्साहित किया।
(4) इससे ब्रिटिश नमक एकाधिकार का तत्काल पतन हो गया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. मालवा और मेवाड़ से होने वाले आकर्षक अफीम व्यापार को नियंत्रित करने के लिए, अंग्रेजों ने एक प्रणाली प्रारंभ की जहाँ अफीम को भारी शुल्क देने के बाद ही बॉम्बे के माध्यम से निर्यात किया जा सकता था। इस प्रणाली को किसके द्वारा लागू किया गया था?
(1) सहायक संधि की धाराएं
(2) पारगमन पास (दस्तक) प्रणाली
(3) व्यापार का विशेष रूप से ब्रिटिश क्षेत्र के माध्यम से अफीम एजेंसी मार्ग

कथन I: अधिकांश राजपूत राज्य अंग्रेजों को वार्षिक खिराज देने के लिए सहमत हुए, जो सामान्यतः उस चौथ के समान था जो वे पहले मराठों को देते थे।

कथन II: बीकानेर, जैसलमेर और किशनगढ़ जैसे राज्य, जिन्होंने कभी मराठों को खिराज नहीं दिया था, उन पर अंग्रेजों द्वारा समानता बनाए रखने के लिए भारी कर लगाया गया था।

(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. राजपूत राज्यों के लिए 1817-18 की संधियों का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम निम्नलिखित में से क्या है?
(1) बाह्य संप्रभुता और विदेश नीति की स्वतंत्रता की पूर्ण हानि
(2) निर्धनता और कृषि संकट का पूर्ण उन्मूलन
(3) संवैधानिक राजतंत्र में तत्काल संक्रमण
(4) सभी राजपूत राज्यों के लिए क्षेत्रीय सीमाओं का विस्तार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. 1817-18 की संधियों के प्रावधानों के अंतर्गत, निम्नलिखित में से किस राज्य को अंग्रेजों को वार्षिक खिराज देने से छूट दी गई थी क्योंकि वह पूर्व में मराठों को खिराज देने के अधीन नहीं था?
(1) जयपुर
(2) बीकानेर
(3) जोधपुर
(4) मेवाड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. राजपूताना में सहायक संधि प्रणाली के संदर्भ में, अंग्रेजों और देशी शासकों के बीच संबंधों को परिभाषित करने वाला मूलभूत सिद्धांत क्या था?
(1) सभी मामलों में पूर्ण अहस्तक्षेप
(2) आंतरिक स्वायत्तता की गारंटी देते हुए ब्रिटिश सर्वोच्चता (Paramountcy)
(3) पुरुष उत्तराधिकारी के अभाव में राज्यों का पूर्ण विलय
(4) गवर्नर-जनरल की परिषद में राजपूत कुलीनों का लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. वेलेजली की सहायक संधियों और राजपूताना में हेस्टिंग्स की संधियों के बीच अंतर करने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वेलेजली की प्रणाली में अक्सर राज्य के व्यय पर एक ब्रिटिश सहायक सेना की तैनाती की आवश्यकता होती थी।
II. हेस्टिंग्स की प्रणाली ने राज्यों के एक-दूसरे से पूर्ण अलगाव को औपचारिक रूप दिया।
III. हेस्टिंग्स ने राजपूत शासकों को गैर-भारतीय शक्तियों के साथ अपने स्वतंत्र विदेशी संबंध बनाए रखने की अनुमति दी।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. ब्रिटिश गवर्नर-जनरल और राजपूताना के प्रति उनकी प्राथमिक नीति के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) लॉर्ड कॉर्नवालिस - आक्रामक सैन्य गठबंधन और विलय
(2) लॉर्ड वेलेजली - अधीनस्थ पृथक्करण की नीति (1817)
(3) लॉर्ड हेस्टिंग्स - पिंडारियों का दमन और अधीनस्थ सहयोग की संधियाँ
(4) लॉर्ड डलहौजी - राजस्थान से ब्रिटिश सेना की पूर्ण वापसी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. सहायक संधि ढांचे के अंतर्गत राजपूत राज्यों पर आरोपित गंभीर वित्तीय दायित्वों में से एक था:
(1) बंगाल प्रेसीडेंसी के संपूर्ण शैक्षिक बजट का वित्तपोषण करना
(2) ब्रिटिश कोष को वार्षिक 'जकात' देना
(3) कृषि भूमि से प्राप्त समस्त राजस्व सीधे ईस्ट इंडिया कंपनी को सौंपना
(4) ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा निर्देशित सहायक सैन्य टुकड़ियों का रख-रखाव
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. सूची I की सैन्य टुकड़ियों को सूची II में उनके संबंधित मुख्यालयों या आधारों से सुमेलित कीजिए:

सूची I: (अंग्रेजों द्वारा गठित सैन्य टुकड़ी)
A. मेरवाड़ा बटालियन
B. शेखावाटी ब्रिगेड
C. जोधपुर लीजन
D. मेवाड़ भील कोर

सूची II: (मुख्यालय/आधार)
i. खेरवाड़ा
ii. एरिनपुरा
iii. झुंझुनू
iv. ब्यावर

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. अंग्रेजों द्वारा सहायक सैन्य टुकड़ियों (जैसे जोधपुर लीजन) की मांग का राजपूताना की राज्य सेनाओं पर क्या प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ा?

करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

103. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान राजस्थान से महाजन समुदाय के बड़े पैमाने पर पलायन का सबसे उपयुक्त कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) उनके व्यापारिक कौशल का अचानक पतन
(2) राजपूत शासकों द्वारा धार्मिक उत्पीड़न
(3) रियासतों से उनके निष्कासन का आदेश देने वाला प्रत्यक्ष ब्रिटिश शासनादेश
(4) पारंपरिक व्यापारिक मार्गों का पतन और औपनिवेशिक व्यावसायिक अवसर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

104. राज्य की राजधानी में सर्वाधिक प्रतिष्ठित और धनी बैंकर, जो अक्सर शासक और जनता के लिए मुख्य वित्तपोषक के रूप में कार्य करता था, उसे पारंपरिक रूप से किस पदवी से सम्मानित किया जाता था?
(1) नगर सेठ
(2) दीवान-ए-अर्ज
(3) मीर बख्शी
(4) फौजदार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

105. राजस्थान में 1899-1900 के विनाशकारी अकाल को स्थानीय और ऐतिहासिक रूप से किस नाम से स्मरण किया जाता है?
(1) सहसा मोद
(2) त्रिकाल
(3) छप्पनिया अकाल
(4) मकरा अकाल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

106. 19वीं शताब्दी के राजस्थान में बार-बार पड़ने वाले अकाल के निम्नलिखित परिणामों पर विचार कीजिए:
I. मानव और पशुधन जनसंख्या के बीच भारी मृत्यु दर।
II. पशुपालक और किसान समुदायों का पड़ोसी प्रांतों में बड़े पैमाने पर पलायन।
III. प्राकृतिक मृदा विश्राम के कारण कृषि उत्पादकता में वृद्धि।
IV. अकाल के वर्षों के पश्चात हैजा और मलेरिया जैसी महामारियां, जिन्होंने जनसांख्यिकीय आपदा को और बढ़ा दिया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, II, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

107. राजपूताना में 1868-69 के भीषण अकाल को 'त्रिकाल' (Triple Famine) के रूप में जाना जाता है क्योंकि इसमें किन तीन वस्तुओं की एक साथ भारी कमी सम्मिलित थी?
(1) अनाज, नमक और अफीम
(2) जल, ईंधन की लकड़ी और कपास
(3) चारा, स्वर्ण और रजत
(4) अनाज, जल और चारा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

108. 19वीं शताब्दी के राजस्थान में अकाल राहत उपायों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) पारंपरिक अकाल राहत में मुख्य रूप से राजकीय अन्न भंडार खोलना और अनाज पर पारगमन शुल्क को समाप्त करना सम्मिलित था।
(2) किसानों की समस्त खोई हुई फसलों की क्षतिपूर्ति करने वाले बड़े पैमाने पर ब्रिटिश अनुदान।
(3) शासक अक्सर अकाल प्रभावित लोगों को रोजगार प्रदान करने के लिए बड़ी निर्माण परियोजनाएं (जैसे झीलें और दुर्ग) प्रारंभ करते थे।
(4) परोपकारी सेठ और महाजन अक्सर निर्धनों के लिए निःशुल्क रसोई (सदाव्रत) खोलते थे।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

109. 'छप्पनिया अकाल' के संदर्भ में 'छप्पनिया' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(1) अकाल से प्रभावित राजपूताना के 56 जिले
(2) निरंतर सूखे के 56 दिन
(3) विक्रम संवत वर्ष 1956 (1899 ईस्वी)
(4) आपदा के दौरान मृत्यु को प्राप्त 56 लाख लोग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

110. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान राजस्थान में बार-बार पड़ने वाले अकाल का एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय और आर्थिक प्रभाव क्या था?
(1) जनसंख्या वृद्धि दर में तीव्र वृद्धि
(2) थार मरुस्थल क्षेत्र का पूर्ण शहरीकरण
(3) ग्रामीण जनसंख्या का विशेष रूप से औद्योगिक श्रम में स्थानांतरण
(4) पारंपरिक पशुधन अर्थव्यवस्था का विनाश और कृषि ऋण में वृद्धि
(5) प्रश्न अनुत्तरित

111. राजस्थान में अकाल के प्रति ब्रिटिश प्रतिक्रिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: अंग्रेजों ने प्रारंभ में राजपूताना की रियासतों में अकाल को विशुद्ध रूप से देशी शासकों की आंतरिक प्रशासनिक विफलता के रूप में देखा।
कथन II: अकाल आयोगों से प्रभावित होकर, अंग्रेजों ने अंततः देशी राज्यों पर व्यवस्थित अकाल राहत कोड अपनाने के लिए दबाव डाला, जिसका मुख्य उद्देश्य शाही राजस्व की रक्षा करना और ब्रिटिश क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर पलायन को

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 1734 का बूंदी उत्तराधिकार विवाद
18वीं शताब्दी के दौरान राजस्थान के राजपूत राज्यों की आंतरिक राजनीति में मराठों के सक्रिय हस्तक्षेप का प्रथम उदाहरण बूंदी के उत्तराधिकार विवाद को माना जाता है। बूंदी नरेश बुध सिंह और जयपुर के सवाई जय सिंह के बीच सत्ता संघर्ष ने मराठों के लिए मार्ग प्रशस्त किया। बुध सिंह की रानी आनंद कुंवरी ने मल्हारराव होलकर को आमंत्रित किया था। यह घटना मराठा शक्ति के राजस्थान में प्रवेश का मुख्य प्रस्थान बिंदु बनी।

2. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
मुगल सम्राट औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात मुगल सत्ता के क्रमिक पतन ने राजपूताना में एक गंभीर राजनीतिक शून्यता उत्पन्न कर दी थी। यद्यपि मुगल नियंत्रण कमजोर हुआ, किंतु राजपूत राज्य किसी स्थायी और सफल परिसंघ का निर्माण करने में सर्वथा विफल रहे। आपसी प्रतिद्वंद्विता, वंशानुगत कलह और क्षेत्रीय विस्तार की लालसा ने उन्हें एकजुट नहीं होने दिया। इसी कारण मराठों और पिंडारियों को राजस्थान के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप का अवसर प्राप्त हुआ।

3. (3) इसकी अध्यक्षता मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह II ने मराठा आक्रमणों के विरुद्ध राजपूत शासकों को एकजुट करने के लिए की थी।
मराठा आक्रमणों के बढ़ते खतरे का सामना करने के लिए 17 जुलाई, 1734 को भीलवाड़ा के हुरड़ा नामक स्थान पर राजपूत राजाओं का एक ऐतिहासिक सम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन की रुपरेखा जयपुर के सवाई जय सिंह द्वारा तैयार की गई थी। मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह द्वितीय ने इसकी अध्यक्षता की थी। इसका प्राथमिक उद्देश्य सभी राजपूत रियासतों को एक मंच पर लाना और मराठों के विरुद्ध सामूहिक सैन्य कार्रवाई को संगठित करना था।

4. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के इतिहास में विभिन्न शासकों का उनके संबंधित राज्यों के साथ अटूट संबंध रहा है। सवाई जय सिंह जयपुर के प्रतापी शासक थे, जिन्होंने आधुनिक जयपुर नगर की स्थापना की। महाराणा जगत सिंह द्वितीय मेवाड़ रियासत के शासक थे। महाराजा अभय सिंह का शासन मारवाड़ अर्थात जोधपुर क्षेत्र पर था, जिनके समय प्रसिद्ध खेजड़ली बलिदान हुआ था। राव राजा उम्मेद सिंह बूंदी के महत्वपूर्ण शासक थे। इन सभी ने 18वीं शताब्दी की राजनीति को प्रभावित किया।

5. (3) संपूर्ण उत्तर भारत में एक एकीकृत राजपूत साम्राज्य की स्थापना
मुगल सत्ता के पतन के पश्चात राजपूत शासकों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा अवश्य की, किंतु वे एक एकीकृत राजपूत साम्राज्य बनाने में विफल रहे। आपसी कलह और ईर्ष्या के कारण राजस्थान की रियासतें बिखरी रहीं। इस राजनीतिक विखंडन ने मराठों और पिंडारियों को लूटपाट करने का सुलभ अवसर प्रदान किया। राज्यों के बीच उत्तराधिकार और सीमाओं को लेकर होने वाले निरंतर संघर्षों ने उनकी सैन्य और आर्थिक शक्ति को क्षीण कर दिया।

6. (3) केवल I और III
मुगल साम्राज्य के पतन के समय राजपूत शासकों ने अपने निर्बल पड़ोसी राज्यों के क्षेत्रों पर अधिकार करके अपनी रियासतों का विस्तार करने का प्रयास किया। इस दौरान उन्होंने अपने प्रतिद्वंद्वी राजपूत कुलों के विरुद्ध अक्सर मराठा सरदारों की सैन्य सहायता प्राप्त की। हालांकि, मराठा पेशवा के साथ कोई स्थायी शांति समझौता सफल नहीं हो सका। निरंतर युद्धों और बाहरी हस्तक्षेप के कारण राजपूत राज्यों की केंद्रीय सत्ता कमजोर होती गई और क्षेत्रीय अस्थिरता बढ़ी।

7. (4) राजपूत घरानों के बीच आपसी विश्वास की कमी और तीव्र वंशानुगत प्रतिद्वंद्विता
औरंगजेब के पश्चात मुगल सत्ता के निर्बल होने पर भी राजपूत शासक आपसी अविश्वास और वंशानुगत शत्रुता के कारण एकजुट नहीं हो सके। प्रत्येक रियासत के शासक अपनी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं और क्षेत्रीय गौरव को सर्वोपरि मानते थे। इस आंतरिक कलह ने उन्हें एक शक्तिशाली संघ बनाने से रोका। एकता के अभाव में वे मराठों और बाद में अंग्रेजों का सामना करने में असमर्थ रहे। यही मुख्य कारण था कि राजस्थान की रियासतें बाहरी शक्तियों का शिकार बनीं।

8. (1) मेवाड़, मारवाड़ और आमेर
मुगल नियंत्रण से स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए वर्ष 1708 में मेवाड़ के महाराणा अमर सिंह द्वितीय, मारवाड़ के अजीत सिंह और आमेर के सवाई जय सिंह के बीच एक प्रसिद्ध त्रि-पक्षीय गठबंधन हुआ था। इसे 'देबारी समझौता' के नाम से जाना जाता है। इस गठबंधन का मुख्य उद्देश्य मुगल सम्राट बहादुर शाह प्रथम के विरुद्ध आपसी सहयोग करना और खोए हुए क्षेत्रों को पुनः प्राप्त करना था। इस समझौते ने अल्पकाल के लिए प्रमुख राजपूत राज्यों को एकजुट किया था।

9. (3) चौथ
18वीं शताब्दी में मराठों द्वारा राजपूत राज्यों और अन्य क्षेत्रों से वसूला जाने वाला प्रमुख सैन्य कर 'चौथ' कहलाता था। यह कर किसी क्षेत्र को मराठा आक्रमण और लूटपाट से सुरक्षा प्रदान करने के बदले में लिया जाता था। सैद्धांतिक रूप से यह कुल राजस्व का एक-चौथाई हिस्सा होता था। चौथ की निरंतर मांगों ने राजपूत राज्यों की अर्थव्यवस्था को जर्जर कर दिया। इसके

लगाने जैसे सामाजिक सुधारों को प्रारंभ करने पर अत्यधिक बल क्यों दिया?

(1) ब्रिटिश सर्वोच्चता को एक 'सभ्य बनाने के मिशन' (Civilizing Mission) के रूप में न्यायसंगत सिद्ध करने के लिए
(2) वे स्थानीय रीति-रिवाजों की हीनता सिद्ध करके स्थानीय जनसंख्या को ईसाई धर्म में परिवर्तित करना चाहते थे।
(3) उन्हें ब्रिटिश संसद द्वारा रियासतों पर अंग्रेजी सामान्य कानून को बलपूर्वक थोपने का आदेश दिया गया था।
(4) राजपूत शासकों ने स्वयं ब्रिटिश क्राउन से इन परंपराओं को अवैध घोषित करने की याचिका की थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

ब्रिगेड बनाई गई। जोधपुर लीजन की स्थापना 1835 में की गई थी। अंत में, मेवाड़ के पहाड़ी और जनजातीय क्षेत्रों में व्यवस्था स्थापित करने हेतु 1841 में मेवाड़ भील कोर का गठन हुआ। यह क्रम ब्रिटिश सैन्य प्रभुत्व के क्रमिक प्रसार का प्रतीक है।

57. (3) राज्य दरबार में ब्रिटिश हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले सलाहकार के रूप में कार्य करना
राजपूताना एजेंसी के अंतर्गत प्रत्येक प्रमुख राज्य में एक 'राजनीतिक प्रतिनिधि' तैनात किया जाता था। आधिकारिक तौर पर उसकी भूमिका शासक के सलाहकार के रूप में ब्रिटिश हितों की रक्षा करना और संधि की शर्तों का पालन सुनिश्चित करना था। हालांकि, व्यवहार में वह राज्य के आंतरिक प्रशासन में अत्यधिक हस्तक्षेप करने लगा था। वह राजा और दिल्ली स्थित 'गवर्नर जनरल के एजेंट' के बीच संचार की मुख्य कड़ी था। राजनीतिक प्रतिनिधि के परामर्श की अवहेलना करना किसी भी शासक के लिए अत्यंत कठिन था।

58. (1) केवल I, II, और III
ब्रिटिश राजनीतिक प्रतिनिधियों ने विभिन्न माध्यमों से आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप किया। शासक के अल्पवयस्क होने पर वे 'संरक्षक परिषद' बनाकर प्रत्यक्ष नियंत्रण रखते थे। वे अक्सर अवांछित मंत्रियों को हटाकर अपने विश्वासपात्रों को नियुक्त करवाते थे। सामंती विद्रोहों को दबाने के लिए ब्रिटिश सेना की सहायता प्रदान करके वे शासक को अपने प्रति ऋणी और निर्भर बना देते थे। उनका मुख्य उद्देश्य प्रशासन को ब्रिटिश हितों के अनुरुप ढालना और निरंतर राजस्व संग्रह सुनिश्चित करना था।

59. (4) मिस्टर अब्राहम लॉकेट
वर्ष 1832 में राजपूताना एजेंसी की स्थापना की गई थी, जिसका मुख्यालय अजमेर में स्थित था। इस एजेंसी के सर्वोच्च अधिकारी को 'गवर्नर जनरल का एजेंट' कहा जाता था। मिस्टर अब्राहम लॉकेट को राजस्थान का प्रथम सर्वोच्च ब्रिटिश अधिकारी नियुक्त किया गया था। यह अधिकारी सीधे भारत के गवर्नर जनरल के प्रति उत्तरदायी होता था और राजस्थान की सभी रियासतों के राजनीतिक प्रतिनिधि उसके अधीन कार्य करते थे। इस पद की स्थापना के साथ ही राजस्थान में ब्रिटिश राजनीतिक नियंत्रण को एक औपचारिक ढांचा प्राप्त हुआ।

60. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजनीतिक प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने राजपूत शासकों के पारंपरिक और स्वतंत्र अधिकार को प्रभावी रूप से सीमित कर दिया था। ये प्रतिनिधि केवल सलाहकार नहीं रहे, बल्कि वे उत्तराधिकार के विवादों में अंतिम निर्णय लेने लगे और राज्य के दैनिक प्रशासन में हस्तक्षेप करने लगे। उन्होंने राजा और उसके सामंतों के बीच के संबंधों को भी अपने लाभ के लिए नियंत्रित किया। इससे शासकों की अपनी प्रजा और कुलीनों के बीच साख कम हुई और वे पूर्णतः ब्रिटिश निर्देश पर निर्भर होकर रह गए।

61. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
ब्रिटिश प्रशासन ने राजपूताना को विभिन्न एजेंसियों और रेजिडेंसियों में विभाजित किया था। संपूर्ण राजपूताना एजेंसी का मुख्यालय अजमेर में था। मेवाड़ रेजिडेंसी का मुख्यालय उदयपुर में स्थित था, जहाँ से दक्षिणी राजस्थान की रियासतों पर नियंत्रण रखा जाता था। जयपुर एजेंसी का केंद्र जयपुर नगर ही था। मारवाड़ एजेंसी का संचालन जोधपुर से होता था। ये मुख्यालय रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण थे, जहाँ से ब्रिटिश राजनीतिक प्रतिनिधि संबंधित रियासतों के शासकों की गतिविधियों और प्रशासन पर निगरानी रखते थे।

62. (4) 1850 तक रियासतों को समाप्त करके उन्हें ब्रिटिश भारत में एकीकृत कर दिया गया था।
यह कथन पूर्णतः असत्य है क्योंकि 1850 तक राजस्थान की रियासतों को समाप्त नहीं किया गया था। वास्तव में, रियासतें 1947 में भारत की स्वतंत्रता और उसके बाद हुए एकीकरण तक अस्तित्व में रहीं। अंग्रेजों ने अजमेर-मेरवाड़ा जैसे क्षेत्रों पर तो प्रत्यक्ष शासन किया, किंतु अन्य रियासतों को उनके अधीन राज्यों के रूप में बनाए रखा। सर्वोच्च ब्रिटिश कार्यालय 1832 में अजमेर में बना और 1845 में ग्रीष्मकाल के लिए माउंट आबू स्थानांतरित हुआ। प्रतिनिधियों ने केवल निगरानी और हस्तक्षेप किया।

63. (1) अल्पवयस्क शासकों के वयस्क होने तक उनकी संपत्तियों का प्रबंधन करना
ब्रिटिश प्रभाव के तहत विभिन्न रियासतों में 'संरक्षण परिषद' की स्थापना की गई थी। इसका मुख्य कार्य तब सक्रिय होना था जब किसी राज्य का शासक अल्पवयस्क (नाबालिग) होता था। ऐसी स्थिति में, राज्य के प्रशासन और शाही संपत्तियों का प्रबंधन इस परिषद द्वारा किया जाता था, जिसमें अक्सर ब्रिटिश अधिकारियों का वर्चस्व होता था। इसके माध्यम से अंग्रेजों को रियासत के आंतरिक राजस्व, शिक्षा और भविष्य के शासक के प्रशिक्षण पर सीधा नियंत्रण प्राप्त करने का अवसर मिलता था, जिससे उनके हित सुरक्षित रहते थे।

64. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
ब्रिटिश राजनीतिक प्रतिनिधियों ने अपने प्रभाव का उपयोग करके राजपूत शासकों को ऐसे नमक समझौतों के लिए विवश किया जो राज्यों के लिए आर्थिक रूप से हानिकारक थे। इन समझौतों ने नमक उत्पादन और व्यापार पर अंग्रेजों का पूर्ण एकाधिकार स्थापित कर दिया। हालांकि, इससे स्थानीय राजस्व में वृद्धि नहीं हुई बल्कि परंपरागत रूप से नमक व्यापार से जुड़े स्थानीय बंजारा समुदाय और व्यापारियों की आजीविका नष्ट हो गई। नमक के दाम बढ़ने से जनसाधारण पर भी अतिरिक्त वित्तीय बोझ पड़ा और अर्थव्यवस्था कमजोर हुई।

65. (2) चारण और ब्राह्मण
18वीं शताब्दी के राजस्थानी समाज में चारण और ब्राह्मण समुदायों को विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा प्राप्त थी। उन्हें 'पवित्र' माना जाता था और वे अक्सर मृत्युदंड जैसे गंभीर दंडों से मुक्त होते थे। शासकों द्वारा उन्हें 'सासन' के रूप में कर-मुक्त भूमि अनुदान में दी जाती थी। चारण समाज ऐतिहासिक वंशावलियों का संरक्षण करता था और अपनी कविताओं के माध्यम से शासकों को प्रेरित करता था। इन वर्गों की सामाजिक

अतिरिक्त मराठे 'सरदेशमुखी' नामक एक अन्य कर भी वसूलते थे, जो कुल राजस्व का 10% होता था।

10. (2) II, I, III, IV
मराठों और राजपूतों के मध्य युद्धों का सही कालानुक्रमिक क्रम ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। राजमहल का युद्ध 1747 में ईश्वरी सिंह और माधो सिंह के बीच उत्तराधिकार को लेकर हुआ था। तुंगा का युद्ध 1787 में लड़ा गया जिसमें जयपुर-जोधपुर की संयुक्त सेना ने मराठों को हराया। पाटन का युद्ध 1790 में हुआ जिसमें मराठों की विजय हुई। मालपुरा का युद्ध 1800 में लड़ा गया था। यह क्रम राजस्थान में मराठा प्रभाव के उतार-चढ़ाव को दर्शाता है।

11. (4) जैसलमेर
राजस्थान का जैसलमेर राज्य अपनी विशिष्ट भौगोलिक स्थिति और थार मरुस्थल की दुर्गमता के कारण मराठा सैन्य आक्रमणों से काफी हद तक सुरक्षित रहा। मराठा सेनाएं मुख्य रूप से उपजाऊ और समृद्ध क्षेत्रों जैसे जयपुर, मेवाड़ और मारवाड़ पर ध्यान केंद्रित करती थीं। जैसलमेर की दूरी और संसाधनों की कमी के कारण मराठों ने वहां चौथ वसूलने या आक्रमण करने में विशेष रुचि नहीं दिखाई। इसी कारण यह राज्य अन्य राजपूत रियासतों की तुलना में मराठा हस्तक्षेप से बचा रहा।

12. (4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
राजपूताना में मराठों का प्राथमिक उद्देश्य क्षेत्रों का स्थायी विलय या प्रत्यक्ष प्रशासनिक नियंत्रण स्थापित करना नहीं था। उनका मुख्य लक्ष्य वित्तीय लाभ प्राप्त करना था। वे राजपूत राज्यों से भारी मात्रा में चौथ और खिराज वसूलते थे। मराठों ने विभिन्न रियासतों के आंतरिक उत्तराधिकार विवादों का लाभ उठाकर मौद्रिक लाभ प्राप्त किया। वे एक सवेतन सैन्य दल के रूप में कार्य करते थे जो सर्वाधिक धन देने वाले पक्ष की सहायता करती थी। इससे आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई।

13. (2) केवल I, II, और IV
राजस्थान में निरंतर मराठा आक्रमणों के कारण राजकीय कोष में भारी कमी आई क्योंकि शासकों को अत्यधिक खिराज और चौथ देना पड़ता था। युद्धों और लूटपाट ने कृषि को नष्ट कर दिया और व्यापारिक गतिविधियां बाधित हुईं। मराठा हस्तक्षेप ने सामंतों के विद्रोहों को बढ़ावा दिया जिससे शासकों की शक्ति कम हुई। अंततः, इन अराजक स्थितियों और निरंतर आर्थिक शोषण से तंग आकर राजपूत शासकों ने अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी से संधियां करना उचित समझा।

14. (4) सवाई प्रताप सिंह और महाराजा विजय सिंह
तुंगा का प्रसिद्ध युद्ध वर्ष 1787 में लड़ा गया था। यह युद्ध जयपुर के सवाई प्रताप सिंह और मारवाड़ के महाराजा विजय सिंह की संयुक्त राजपूत सेना तथा महादजी सिंधिया के नेतृत्व वाली मराठा सेना के बीच हुआ था। इस युद्ध में राजपूतों ने अत्यधिक वीरता का प्रदर्शन किया और मराठों को पीछे हटने पर विवश कर दिया। यद्यपि यह विजय निर्णायक नहीं थी, फिर भी इसने राजपूत शासकों के बीच कुछ समय के लिए एकता और आत्मविश्वास का संचार अवश्य किया।

15. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजपूताना की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई थी। इसका मुख्य कारण मराठा सेनापतियों द्वारा की जाने वाली चौथ और खिराज की निरंतर मांगें थीं। इन करों का भारी बोझ अंततः किसानों और व्यापारियों पर पड़ा, जिससे उत्पादन और वाणिज्य दोनों प्रभावित हुए। बार-बार होने वाले युद्धों और लूटपाट ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पूरी तरह नष्ट कर दिया। धन के इस निरंतर निष्कासन ने राजपूत राज्यों को आर्थिक रूप से पंगु बना दिया था।

16. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के इतिहास में हुए प्रमुख युद्धों का उनके वर्षों के साथ सुमेलित रूप इस प्रकार है। राजमहल का युद्ध 1747 में उत्तराधिकार के संघर्ष के रूप में लड़ा गया था। भटवाड़ा का युद्ध 1761 में कोटा और जयपुर की सेनाओं के मध्य हुआ। तुंगा का युद्ध 1787 में राजपूतों और मराठों के बीच हुआ जिसमें मराठों को पीछे हटना पड़ा। पाटन का युद्ध 1790 में हुआ जिसमें मराठा सेना ने राजपूतों को पराजित कर अपना प्रभाव पुनः स्थापित किया।

17. (2) जयपुर और जोधपुर
कृष्णा कुमारी विवाद 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में राजपूताना का एक काला अध्याय था। यह विवाद मुख्य रूप से जयपुर के महाराजा जगत सिंह और जोधपुर के महाराजा मान सिंह के बीच मेवाड़ की राजकुमारी कृष्णा कुमारी से विवाह को लेकर हुआ था। इस संघर्ष ने दोनों राज्यों के बीच गहरी शत्रुता उत्पन्न कर दी और गिंगोली का युद्ध हुआ। अंततः, राज्य को विनाश से बचाने के लिए 1810 में राजकुमारी को विष देकर इस विवाद का अत्यंत दुखद अंत किया गया।

18. (2) केवल I, II, III, और IV
कृष्णा कुमारी मेवाड़ के महाराणा भीम सिंह की पुत्री थीं। उनकी सगाई पहले जोधपुर के महाराजा भीम सिंह से हुई थी, किंतु उनकी असामयिक मृत्यु के बाद सगाई जयपुर के महाराजा जगत सिंह से तय की गई। जोधपुर के नए महाराजा मान सिंह ने इसे जोधपुर का अपमान मानकर विरोध किया। इस विवाद ने भीषण युद्ध का रूप ले लिया। अंततः अमीर खान पिंडारी के दबाव में राजकुमारी को विष दिया गया। ब्रिटिश मध्यस्थता द्वारा इसका कोई शांतिपूर्ण समाधान नहीं हुआ था।

19. (3) अमीर खान पिंडारी के संकट का सामना करने के लिए राजपूत कुलों के बीच सुदृढ़ आंतरिक एकता का निर्माण किया गया था।
18वीं शताब्दी में राजपूत राज्यों के बीच आंतरिक संघर्षों के दौरान कभी भी सुदृढ़ एकता का निर्माण नहीं हो सका। इसके विपरीत, आपसी फूट और उत्तराधिकार विवादों ने मराठों और अमीर खान पिंडारी जैसे सवेतन सैनिकों को हस्तक्षेप का अवसर दिया। शासकों ने अक्सर शांति खरीदने के लिए विद्रोहियों और मराठों को जागीरें दीं, जिससे राज्य निर्बल हुए। सामंतों ने अपनी

निष्ठा बार-बार बदली, जिससे केंद्रीय सत्ता और भी कमजोर हो गई। एकता के अभाव में लूटपाट बढ़ी।

20. (4) राज्य की प्रमुख नीतियों को निर्देशित करने वाले शक्तिशाली सामंतों का उदय
18वीं शताब्दी में निरंतर होने वाले उत्तराधिकार विवादों ने राजपूत शासकों की स्थिति को अत्यंत निर्बल कर दिया। इस राजनीतिक अस्थिरता का लाभ उठाकर रियासतों के भीतर शक्तिशाली सामंतों और जागीरदारों का उदय हुआ। ये सामंत अक्सर प्रतिद्वंद्वी दावेदारों का समर्थन करते थे और अपनी सहायता के बदले में अधिक शक्तियां और भूमि प्राप्त करते थे। अंततः, राजा केवल नाममात्र का प्रमुख रह गया और राज्य की वास्तविक नीतियां इन शक्तिशाली सामंतों के गुटों द्वारा निर्धारित होने लगीं।

21. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजपूत राज्यों के उत्तराधिकार विवादों में विभिन्न शासक सम्मिलित थे। जयपुर में ईश्वरी सिंह और माधो सिंह के बीच गद्दी के लिए भीषण संघर्ष हुआ। मारवाड़ में राम सिंह और बख्त सिंह के मध्य सत्ता प्राप्ति की प्रतिद्वंद्विता रही। बूंदी रियासत में उम्मेद सिंह और दलेल सिंह के बीच लंबे समय तक विवाद चला, जिसमें बाहरी शक्तियों ने भी हस्तक्षेप किया। बीकानेर में रतन सिंह और सरदार सिंह के बीच आंतरिक कलह उत्पन्न हुई। ये विवाद रियासतों के पतन और आर्थिक कमजोरी का कारण बने।

22. (1) सवाई जय सिंह → ईश्वरी सिंह → माधो सिंह I → प्रताप सिंह
जयपुर के शासकों का सही कालानुक्रमिक क्रम उनके शासनकाल की घटनाओं को समझने के लिए आवश्यक है। सवाई जय सिंह ने राज्य को सुदृढ़ किया। उनके बाद ईश्वरी सिंह शासक बने, जिन्होंने मराठों के दबाव में आत्महत्या कर ली थी। तत्पश्चात माधो सिंह प्रथम ने शासन संभाला और मराठों के साथ संघर्ष जारी रखा। सवाई प्रताप सिंह के समय मराठा हस्तक्षेप चरम पर था और उन्होंने तुंगा के युद्ध में मराठों का सामना किया। इन सभी ने भीषण आंतरिक और बाहरी चुनौतियों का सामना किया।

23. (4) विजित भूमि का कुलीन भाइयों के बीच पारंपरिक विभाजन
18वीं शताब्दी के राजपूताना में 'भाई-बंट' एक पारंपरिक भूमि प्रणाली थी। इसके अंतर्गत विजित या पैतृक भूमि का विभाजन शासक के भाइयों और निकटतम कुलीन संबंधियों के बीच किया जाता था। इस प्रथा का मुख्य उद्देश्य परिवार के सदस्यों को आजीविका और सम्मान प्रदान करना था। हालांकि, समय के साथ इस प्रणाली ने राज्यों के अत्यधिक विखंडन को जन्म दिया। भूमि के छोटे-छोटे हिस्सों में बंटने से केंद्रीय शासन की पकड़ कमजोर हुई और राजस्व संग्रहण में भी अनेक जटिलताएं उत्पन्न हुईं।

24. (1) अमीर खान
अमीर खान पिंडारी 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में एक शक्तिशाली और क्रूर सवेतन सैनिक नेता था। उसने राजपूताना के आंतरिक संघर्षों, विशेषकर कृष्णा कुमारी विवाद में अत्यंत विनाशकारी भूमिका निभाई। उसने अपनी सेना के साथ कभी जयपुर तो कभी जोधपुर का पक्ष लेकर लूटपाट की। उसने मेवाड़ के महाराणा पर दबाव डालकर राजकुमारी कृष्णा कुमारी को विष देने के लिए विवश किया। बाद में अंग्रेजों ने उसे टोंक की रियासत प्रदान कर एक स्वतंत्र शासक के रूप में मान्यता प्रदान की थी।

25. (4) (2) और (3) दोनों
18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही नवीन स्वतंत्र रियासतों का उदय हुआ। इस कालखंड में भरतपुर और धौलपुर शक्तिशाली जाट राज्यों के रूप में उभरे। बदन सिंह और महाराजा सूरजमल के नेतृत्व में भरतपुर ने एक मजबूत सैन्य और राजनीतिक पहचान बनाई। इन जाट राज्यों ने मुगलों और राजपूतों के बीच के क्षेत्रों में अपनी सत्ता स्थापित की। उन्होंने अपनी सुदृढ़ किलाबंदी और कुशल सैन्य प्रबंधन के माध्यम से तत्कालीन राजनीति में अपना प्रभाव अत्यंत प्रभावी ढंग से स्थापित किया था।

26. (1) केवल I और II
मुगलों के कमजोर पड़ने से राजपूताना में स्थानीय सरदारों को स्वतंत्र राज्य बनाने का अवसर मिला। इसी क्रम में प्रताप सिंह नरुका ने जयपुर राज्य से अलग होकर अलवर के स्वतंत्र राज्य की नींव रखी। हालांकि, इस राजनीतिक विखंडन के कारण निरंतर युद्ध और अस्थिरता पैदा हुई, जिससे आर्थिक समृद्धि के स्थान पर व्यापारिक मार्ग बाधित हुए और अर्थव्यवस्था को भारी क्षति पहुंची। छोटे राज्यों के पास संसाधनों की कमी थी, जिसके कारण वे मराठों और पिंडारियों की लूटपाट का शिकार बनते रहे।

27. (4) झालावाड़ - झाला जालिम सिंह
झालावाड़ राज्य की स्थापना झाला जालिम सिंह ने नहीं बल्कि उनके वंशज झाला मदन सिंह ने 1838 में की थी। झाला जालिम सिंह कोटा राज्य के अत्यंत शक्तिशाली प्रशासक थे जिन्होंने लंबे समय तक शासन का संचालन किया। अन्य युग्मों में, बदन सिंह ने भरतपुर की नींव रखी, प्रताप सिंह नरुका ने अलवर राज्य की स्थापना की और अमीर खान पिंडारी को अंग्रेजों ने टोंक का नवाब बनाया। झालावाड़ राजस्थान की सबसे नवीन रियासत थी जिसे कोटा राज्य से पृथक करके बनाया गया था।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक राजपूताना के अधिकांश राज्य निरंतर युद्धों और आंतरिक कलह के कारण निर्बल और अराजक हो गए थे। एक शक्तिशाली केंद्रीय शक्ति या मुगल नियंत्रण के अभाव में महत्वाकांक्षी सामंतों, जागीरदारों और अमीर खान पिंडारी जैसे सवेतन सैनिकों को अपने स्वतंत्र क्षेत्र और प्रभाव क्षेत्र बनाने का पर्याप्त अवसर मिला। इस विखंडन ने राज्यों की रक्षा प्रणाली को ध्वस्त कर दिया, जिससे वे बाहरी आक्रमणों और आंतरिक अशांति के प्रति और भी अधिक असुरक्षित हो गए।

29. (3) अमीर खान पिंडारी
टोंक रियासत का गठन 1817 में अंग्रेजों द्वारा किया गया था। तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान पिंडारियों के दमन की रणनीति के तहत, ब्रिटिश सरकार ने शक्तिशाली पिंडारी नेता अमीर खान के साथ समझौता किया। उसे उसकी सैन्य शक्ति को भंग करने के बदले में टोंक का संप्रभु नवाब स्वीकार किया गया। यह राजस्थान की एकमात्र मुस्लिम रियासत थी। इस प्रकार, एक सवेतन सैनिक नेता को औपचारिक रूप से शासक के रूप में स्थापित करके अंग्रेजों ने क्षेत्र में शांति स्थापित करने का प्रयास किया।

30. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान की विभिन्न रियासतों में अलग-अलग कुलों का शासन था। भरतपुर में जाट शासकों का वर्चस्व था, जिन्होंने अपनी शक्ति से मुगलों को चुनौती दी। अलवर राज्य की स्थापना नरुका राजपूतों द्वारा की गई थी। टोंक राजस्थान की एकमात्र मुस्लिम रियासत थी जहाँ पठान नवाबों का शासन रहा। शाहपुरा रियासत में मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश की एक शाखा का शासन था। इन राज्यों की संरचना और स्थापना की परिस्थितियाँ 18वीं शताब्दी के राजनीतिक संक्रमण काल के दौरान निर्मित हुई थीं।

31. (1) मुगल सम्राट द्वारा स्थापित एकीकृत प्रशासनिक संहिता
18वीं शताब्दी में मुगल साम्राज्य स्वयं पतन की ओर था, इसलिए कोई एकीकृत प्रशासनिक संहिता विखंडन को रोकने के लिए मौजूद नहीं थी। वास्तव में, जागीरदारी संकट और सामंतों की बढ़ती शक्ति ने विखंडन को बढ़ावा दिया। मराठों के निरंतर हस्तक्षेप और उनके द्वारा समर्थित उत्तराधिकार विवादों ने राज्यों की स्थिरता को नष्ट कर दिया। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक 'भाई-बंट' प्रणाली और राजपूत कुलों के बीच पुरानी शत्रुता ने राज्यों को छोटे-छोटे हिस्सों में विभाजित करने और केंद्रीय सत्ता को कमजोर किया।

32. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
राजपूत शासन व्यवस्था में कुलीन वर्ग स्वयं को राजा के समान ही उच्च कुल का मानता था और राजा को मात्र 'समानों में प्रथम' समझता था। इस विचारधारा के कारण शासकों के लिए अपनी सत्ता का पूर्ण केंद्रीकरण करना अत्यंत कठिन था। सामंत अक्सर राजा की आज्ञाओं की अवहेलना करते थे और स्वतंत्र व्यवहार करते थे। इस सामंती प्रवृत्ति ने राज्यों के भीतर निरंतर संघर्ष और विद्रोह की स्थिति बनाए रखी, जिससे केंद्रीय प्रशासन कमजोर हुआ और राजा की शक्ति अत्यंत सीमित हो गई।

33. (2) भरतपुर
1803 में द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के दौरान, लॉर्ड वेलेजली की सहायक संधि नीति के अंतर्गत भरतपुर के महाराजा रणजीत सिंह ने सबसे पहले ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ एक रक्षात्मक गठबंधन की संधि पर हस्ताक्षर किए थे। हालांकि, बाद में जसवंत राव होलकर को शरण देने के कारण अंग्रेजों और भरतपुर के बीच संघर्ष भी हुआ। इस संधि का मुख्य उद्देश्य मराठा शक्ति के प्रभाव को कम करना और ब्रिटिश हितों की रक्षा के लिए राजपूत राज्यों का सहयोग प्राप्त करना था।

34. (2) केवल I, II, और IV
लॉर्ड वेलेजली ने मराठों के विरुद्ध राजपूतों का सहयोग प्राप्त करने के लिए 1803 में संधियों की नीति शुरु की। भरतपुर और अलवर ने प्रारंभिक संधियाँ कीं, जो सैद्धांतिक रूप से समानता पर आधारित थीं। हालांकि, 1805 में वेलेजली के जाने के बाद लॉर्ड कॉर्नवालिस और जॉर्ज बार्लो ने अहस्तक्षेप की नीति अपनाई और कई संधियों को रद्द कर दिया। इस नीतिगत बदलाव के कारण राजपूत राज्य पुनः मराठों और पिंडारियों के शोषण के लिए असुरक्षित छोड़ दिए गए, जिससे अगले दशक में अराजकता फैली।

35. (3) पिंडारी संकट को घेरने और दमन करने की रणनीतिक आवश्यकता
1817 में गवर्नर-जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स ने अहस्तक्षेप की नीति को त्यागकर राजपूत राज्यों के साथ सक्रिय रूप से संधियाँ करने का निर्णय लिया। इसका मुख्य कारण पिंडारियों का बढ़ता हुआ आतंक था, जो मध्य भारत और राजपूताना में व्यापक लूटपाट कर रहे थे। पिंडारियों को पूरी तरह समाप्त करने के लिए अंग्रेजों को राजपूत राज्यों के सहयोग और उनके क्षेत्रों में सैन्य आवाजाही के अधिकार की आवश्यकता थी। मराठों की शक्ति को अंतिम रूप से कुचलने के लिए भी यह गठबंधन अनिवार्य था।

36. (1) I, II, III, IV
1817-18 की अधीनस्थ संधियों पर हस्ताक्षर करने का सही क्रम राज्यों की राजनीतिक स्थिति को दर्शाता है। सर्वप्रथम करौली ने नवंबर 1817 में संधि की। इसके बाद कोटा ने दिसंबर 1817 में ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार किया। मेवाड़ रियासत ने जनवरी 1818 में महाराणा भीम सिंह के समय संधि पर हस्ताक्षर किए। जयपुर ने लंबे विचार-विमर्श के पश्चात अप्रैल 1818 में अधीनस्थ गठबंधन स्वीकार किया। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे अंग्रेज धीरे-धीरे राजपूताना के सभी प्रमुख राज्यों को अपने प्रभाव में लाए।

37. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
ब्रिटिश अधिकारियों ने राजपूताना में औपनिवेशिक सत्ता स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लॉर्ड वेलेजली ने 1803 में सर्वप्रथम गठबंधन का प्रस्ताव दिया। लॉर्ड हेस्टिंग्स ने 1817 में अधीनस्थ सहयोग और पृथक्करण की नीति लागू की। चार्ल्स मेटकाफ इन संधियों के प्रमुख वार्ताकार थे जिन्होंने दिल्ली में रहकर राजपूत दूतों के साथ चर्चा की। जेम्स टॉड को मेवाड़ और मारवाड़ का प्रथम राजनीतिक प्रतिनिधि नियुक्त किया गया था, जिन्होंने राजस्थान के इतिहास और भूगोल पर व्यापक शोध कार्य भी किया था।

38. (2) चार्ल्स मेटकाफ
लॉर्ड हेस्टिंग्स के कार्यकाल के दौरान, दिल्ली के स्थानीय प्रतिनिधि चार्ल्स मेटकाफ को राजपूत राज्यों के साथ अधीनस्थ गठबंधन की संधियों पर वार्ता करने का मुख्य उत्तरदायित्व

रोकना था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

112. भीषण अकाल के समय, पश्चिमी राजस्थान के पशुपालक समुदाय (जैसे राइका और बंजारे) सामान्यतः जल और चारे की खोज में किन क्षेत्रों की ओर पलायन करते थे?
(1) हिमालय
(2) मालवा (मध्य प्रदेश) और गुजरात
(3) बंगाल के गंगा के मैदान
(4) दक्षिण भारत का दक्कन का पठार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

113. 19वीं शताब्दी के किस प्रमुख सामाजिक और धार्मिक सुधारक ने राजस्थान की व्यापक यात्रा की, जिससे महाराणा सज्जन सिंह और महाराजा जसवंत सिंह II जैसे शासक प्रभावित हुए?
(1) राजा राममोहन राय
(2) स्वामी दयानंद सरस्वती
(3) स्वामी विवेकानंद
(4) ईश्वर चंद्र विद्यासागर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

114. स्वामी दयानंद सरस्वती और राजस्थान में आर्य समाज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने वैदिक शिक्षा, गौरक्षा और अस्पृश्यता उन्मूलन की पुरजोर वकालत की।
II. उन्होंने 1883 में उदयपुर में 'परोपकारिणी सभा' की स्थापना की।
III. 1883 में अजमेर में संदिग्ध परिस्थितियों में उनका निधन हो गया।
IV. आर्य समाज को राजस्थान के स्थानीय शासकों और जनसामान्य के बीच बहुत कम या कोई स्वीकृति नहीं मिली।
V. उनकी शिक्षाओं ने क्षेत्र में बाद के किसान और आदिवासी आंदोलनों को अत्यधिक प्रभावित किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III, और V
(2) केवल I, II, IV, और V
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

115. 'परोपकारिणी सभा', जो राजस्थान में प्रारंभिक सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन का केंद्र थी, वैदिक साहित्य के प्रकाशन और प्रचार के लिए स्थापित की गई थी। 1883 में मूल रूप से इसकी स्थापना कहाँ की गई थी?
(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर
(4) अजमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

116. प्रारंभिक सामाजिक सुधार संस्थान/घटना और राजस्थान में उसके संबंधित स्थान के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए:
(1) वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा की स्थापना - बीकानेर
(2) 'सत्यार्थ प्रकाश' (द्वितीय संस्करण) का प्रकाशन - जोधपुर
(3) शुद्धि आंदोलन का उद्भव - जैसलमेर
(4) प्रथम आर्य समाज शाखा (1881) की स्थापना - अजमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

117. वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा के प्रस्तावों द्वारा निम्नलिखित में से कौन सी सामाजिक बुराई सीधे तौर पर लक्षित नहीं थी?
(1) विवाहों पर अत्यधिक व्यय (त्याग)
(2) अनमेल विवाह (आयु में विसंगति)
(3) अस्पृश्यता की प्रणाली
(4) सती प्रथा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

118. राजस्थान में ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंटों (जैसे जयपुर में लुडलो) द्वारा प्रारंभ किए गए 19वीं शताब्दी के प्रारंभिक सामाजिक सुधार प्रयासों का प्राथमिक केंद्र क्या था?
(1) महिला मताधिकार और मतदान अधिकारों का प्रारंभ
(2) सती, कन्या शिशु हत्या और मानव तस्करी पर प्रतिबंध लगाना
(3) उच्च जाति के हिंदुओं के बीच विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित करना
(4) जाति व्यवस्था को पूर्णतः समाप्त करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

119. राजस्थान में सामाजिक सुधारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: जयपुर के महाराजा राम सिंह II एक प्रगतिशील शासक थे जिन्होंने अपने राज्य में सती, दास प्रथा और कन्या शिशु हत्या के उन्मूलन का समर्थन किया था।
कथन II: स्वदेशी राजपूत शासकों ने कभी भी सामाजिक सुधारों में भाग नहीं लिया और समाज को आधुनिक बनाने के सभी ब्रिटिश प्रयासों का सक्रिय विरोध किया।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

120. 19वीं शताब्दी के प्रारंभ से मध्य तक ब्रिटिश पॉलिटिकल एजेंटों ने राजपूताना में कन्या शिशु हत्या और सती पर प्रतिबंध

स्वायत्तता देने का वादा किया गया था, परंतु व्यावहारिक रूप से वे अब ब्रिटिश साम्राज्य के आश्रित मात्र बनकर रह गए थे।

48. (2) बीकानेर
1818 की संधि के दौरान बीकानेर राज्य को वार्षिक खिराज देने से छूट दी गई थी। इसका मुख्य कारण यह था कि बीकानेर कभी भी मराठा प्रभाव क्षेत्र में नहीं रहा था और उसने कभी मराठों को चौथ या खिराज का भुगतान नहीं किया था। अंग्रेजों ने अपनी खिराज नीति को मराठा करों के उत्तराधिकारी के रूप में लागू किया था, इसलिए जो राज्य मराठा करों से मुक्त थे, उन्हें इस दायित्व से अलग रखा गया। जैसलमेर और किशनगढ़ को भी इसी आधार पर खिराज से छूट प्राप्त थी।

49. (2) आंतरिक स्वायत्तता की गारंटी देते हुए ब्रिटिश सर्वोच्चता (Paramountcy)
सहायक संधि प्रणाली का मूल सिद्धांत ब्रिटिश सर्वोपरिता को स्थापित करना था। इसके तहत रियासतों को यह आश्वासन दिया गया कि उनके आंतरिक प्रशासन में अंग्रेज हस्तक्षेप नहीं करेंगे और शासकों की प्रतिष्ठा बनी रहेगी। हालांकि, सुरक्षा और विदेश नीति के बदले में राज्यों को ब्रिटिश प्रभुत्व स्वीकार करना पड़ा। वास्तव में, यह 'आंतरिक स्वायत्तता' केवल सैद्धांतिक थी, क्योंकि राजनीतिक प्रतिनिधि अक्सर राज्य के महत्वपूर्ण निर्णयों, उत्तराधिकार के मामलों और वित्तीय प्रबंधन में सक्रिय हस्तक्षेप करते थे, जिससे शासकों की वास्तविक शक्ति क्षीण हो गई।

50. (1) केवल I और II
वेलेजली की सहायक संधियों में अक्सर राज्यों में एक स्थायी ब्रिटिश सैन्य टुकड़ी रखने और उसका खर्च उठाने की शर्त होती थी। लॉर्ड हेस्टिंग्स की 1817 की संधियों ने इस व्यवस्था को और आगे बढ़ाते हुए राज्यों के बीच 'अधीनस्थ पृथक्करण' को अनिवार्य बना दिया, जिससे वे एक-दूसरे से पूरी तरह अलग हो गए। हेस्टिंग्स की नीति के तहत किसी भी राज्य को अन्य शक्तियों के साथ स्वतंत्र संबंध रखने की अनुमति नहीं थी। इन नीतियों ने रियासतों को ब्रिटिश नियंत्रण के एक जाल में मजबूती से बांध दिया।

51. (3) लॉर्ड हेस्टिंग्स - पिंडारियों का दमन और अधीनस्थ सहयोग की संधियाँ
लॉर्ड हेस्टिंग्स ने 1817 में पिंडारियों के दमन के लिए एक व्यापक अभियान चलाया और इसी दौरान राजपूत राज्यों के साथ अधीनस्थ सहयोग की संधियाँ संपन्न कीं। लॉर्ड वेलेजली को 1803 की प्रारंभिक संधियों के लिए जाना जाता है, न कि 1817 की नीति के लिए। लॉर्ड कॉर्नवालिस ने अहस्तक्षेप की नीति अपनाई थी। डलहौजी ने बाद में 'व्यपगत का सिद्धांत' लागू किया था। अतः हेस्टिंग्स का संबंध पिंडारियों के विनाश और राजपूताना में स्थायी ब्रिटिश व्यवस्था की स्थापना से स्पष्ट रूप से जुड़ा हुआ है।

52. (4) ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा निर्देशित सहायक सैन्य टुकड़ियों का रख-रखाव
सहायक संधि प्रणाली के तहत राजपूत राज्यों पर भारी वित्तीय बोझ डाला गया था। राज्यों को वार्षिक खिराज के अतिरिक्त उन विशेष सैन्य टुकड़ियों का खर्च भी उठाना पड़ता था जिनका गठन अंग्रेजों द्वारा उनकी रक्षा के नाम पर किया गया था। इन टुकड़ियों, जैसे जोधपुर लीजन या शेखावाटी ब्रिगेड, की कमान ब्रिटिश अधिकारियों के पास होती थी, किंतु उनका संपूर्ण वेतन और रसद राज्य के कोष से दिया जाता था। इस व्यवस्था ने रियासतों की अर्थव्यवस्था को खोखला कर दिया और उन्हें निरंतर ऋण के जाल में धकेल दिया।

53. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
अंग्रेजों ने राजपूताना में नियंत्रण स्थापित करने के लिए विभिन्न सैन्य टुकड़ियों का गठन किया और उनके मुख्यालय रणनीतिक स्थानों पर रखे। मेरवाड़ा बटालियन का मुख्यालय ब्यावर में था, जिसे अजमेर क्षेत्र की रक्षा के लिए बनाया गया था। शेखावाटी ब्रिगेड का आधार झुंझुनू में था ताकि उस क्षेत्र के विद्रोहियों पर नजर रखी जा सके। जोधपुर लीजन का मुख्यालय एरिनपुरा में स्थापित किया गया था। मेवाड़ भील कोर का मुख्यालय खेरवाड़ा में था, जिसका उद्देश्य मेवाड़ के जनजातीय क्षेत्रों में व्यवस्था बनाए रखना था।

54. (2) राज्य की सेनाओं को बड़े पैमाने पर भंग करना जिससे स्थानीय बेरोजगारी में वृद्धि हुई।
अंग्रेजों द्वारा सहायक सैन्य टुकड़ियों के गठन और उनके खर्च के बोझ के कारण राजपूत शासकों को अपनी पारंपरिक राज्य सेनाओं को भंग करने के लिए विवश होना पड़ा। इससे हजारों सैनिक और घुड़सवार अचानक बेरोजगार हो गए। इन सैनिकों के पास आजीविका का कोई अन्य साधन नहीं था, जिसके कारण उनमें से कई लूटपाट या डकैती जैसी गतिविधियों में संलिप्त हो गए। इस प्रक्रिया ने न केवल राज्यों की सैन्य शक्ति को कम किया, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक अस्थिरता को भी बढ़ावा दिया।

55. (4) ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा मध्यस्थता
1817-18 की संधियों के प्रावधानों के अनुसार, राजपूत राज्यों के बीच होने वाले किसी भी विवाद, विशेषकर सीमा विवादों को सीधे हल करने का अधिकार शासकों के पास नहीं रहा। ऐसे सभी मामलों में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को अंतिम मध्यस्थ नियुक्त किया गया था। राज्यों के लिए कंपनी का निर्णय अनिवार्य और बाध्यकारी था। इस व्यवस्था ने राज्यों के बीच आपसी संवाद को समाप्त कर दिया और उन्हें प्रत्येक छोटे-बड़े विवाद के समाधान के लिए पूरी तरह से ब्रिटिश सत्ता और उनके प्रतिनिधियों पर निर्भर बना दिया।

56. (1) मेरवाड़ा बटालियन → शेखावाटी ब्रिगेड → जोधपुर लीजन → मेवाड़ भील कोर
राजस्थान में ब्रिटिश नेतृत्व वाली सैन्य टुकड़ियों की स्थापना का क्रम उनके प्रशासनिक विस्तार को दर्शाता है। मेरवाड़ा बटालियन का गठन सर्वप्रथम 1822 में किया गया था। इसके पश्चात शेखावाटी क्षेत्र में नियंत्रण के लिए 1834 में शेखावाटी

सौंपा गया था। मेटकाफ ने कुशलतापूर्वक विभिन्न रियासतों के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की और उन्हें ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार करने के लिए तैयार किया। उनके द्वारा तैयार की गई संधियों के प्रारूप ने आने वाले दशकों के लिए ब्रिटिश और राजपूत राज्यों के संबंधों को परिभाषित किया। मेटकाफ की कूटनीति ने ही राजपूताना में ब्रिटिश प्रभाव स्थापित किया।

39. (4) सिरोही
राजपूताना की सभी रियासतों में से सिरोही वह अंतिम राज्य था जिसने अंग्रेजों के साथ अधीनस्थ गठबंधन की संधि पर हस्ताक्षर किए। सिरोही के महाराजा शिव सिंह ने 11 सितंबर, 1823 को इस संधि पर हस्ताक्षर किए थे। देरी का मुख्य कारण जोधपुर राज्य द्वारा सिरोही पर अपना संप्रभु अधिकार जताने का दावा था। अंग्रेजों द्वारा इस दावे की जांच करने और सिरोही की स्वतंत्र पहचान स्वीकार करने के बाद ही यह संधि संभव हो सकी। इसके साथ ही राजपूताना के राजनीतिक संरक्षण की प्रक्रिया पूर्ण हुई।

40. (1) ब्रिटिश क्षेत्रों को सुरक्षित करने के लिए आश्रित राज्यों का एक मध्यवर्ती क्षेत्र (Buffer) निर्मित करना
1817-18 की संधियों के माध्यम से ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य उद्देश्य राजपूत राज्यों को अपने अधीन लाकर एक 'मध्यवर्ती क्षेत्र' बनाना था। इससे वे प्रत्यक्ष ब्रिटिश क्षेत्रों को मराठों, पिंडारियों और संभावित अफगान आक्रमणों से सुरक्षित रख सकते थे। अंग्रेज इन राज्यों का प्रशासन स्वयं नहीं संभालना चाहते थे, बल्कि वे चाहते थे कि ये राज्य बाहरी सुरक्षा के लिए कंपनी पर निर्भर रहें और बदले में सैन्य व वित्तीय सहयोग प्रदान करें। इससे कंपनी का प्रभाव क्षेत्र विस्तारित हुआ।

41. (3) अधीनस्थ पृथक्करण (Subordinate Isolation)
1817-18 की संधियों द्वारा स्थापित ब्रिटिश नीति को 'अधीनस्थ पृथक्करण' के रूप में जाना जाता है। इस नीति के अंतर्गत राजपूत राज्यों ने ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार की और कंपनी के साथ अधीनस्थ सहयोग करने का वचन दिया। साथ ही, उन्हें एक-दूसरे से पूर्णतः पृथक कर दिया गया। वे बिना ब्रिटिश अनुमति के किसी अन्य राज्य के साथ राजनीतिक संबंध या वार्ता नहीं कर सकते थे। इस व्यवस्था ने राज्यों की बाह्य संप्रभुता को समाप्त कर दिया और उन्हें केवल आंतरिक प्रशासन तक सीमित कर दिया।

42. (2) केवल I, II, IV, और V
1817-18 की संधियों के प्रावधानों के अनुसार, राजपूत राज्यों ने ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार की और अपनी विदेश नीति अंग्रेजों को सौंप दी। बदले में अंग्रेजों ने राज्यों की बाहरी आक्रमणों से रक्षा करने का आश्वासन दिया। राज्यों को आवश्यकता पड़ने पर ब्रिटिश सेना के लिए सैन्य सहायता उपलब्ध कराना अनिवार्य था। इसके अतिरिक्त, अधिकांश राज्यों को वार्षिक खिराज देना पड़ता था, जिसकी राशि अक्सर पूर्व में मराठों को दिए जाने वाले कर के आधार पर निर्धारित की गई थी। राज्यों की संप्रभुता समाप्त हो गई थी।

43. (4) शासक को बिना शर्त अपनी पदवी त्यागनी पड़ी और कंपनी का पेंशनभोगी बनना पड़ा।
1817-18 की संधियों का उद्देश्य राजपूत राज्यों का पूर्ण विलय या शासकों को हटाना नहीं था। इसके विपरीत, अंग्रेजों ने शासकों के वंशानुगत अधिकारों और आंतरिक स्वायत्तता को बनाए रखने का वचन दिया था। शासकों को पेंशनभोगी नहीं बनाया गया, बल्कि उन्हें अपने राज्यों का प्रशासन चलाने की अनुमति दी गई, बशर्ते वे ब्रिटिश सर्वोच्चता स्वीकार करें और खिराज का भुगतान करें। हालांकि, संधियों ने उनके विदेश नीति के अधिकार छीन लिए और उन्हें अन्य राज्यों के साथ स्वतंत्र वार्ता करने से पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया।

44. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
ब्रिटिश संधियों के बाद राजपूत शासकों का अपने सामंतों पर पारंपरिक नियंत्रण कमजोर हो गया। राजनीतिक प्रतिनिधियों की नियुक्ति ने दरबार की राजनीति में हस्तक्षेप बढ़ाया, जिससे शासक और सामंतों के बीच के सदियों पुराने संतुलन में व्यवधान उत्पन्न हुआ। जब भी सामंतों ने विद्रोह किया, शासकों ने अपनी शक्ति के बजाय ब्रिटिश सेना की सहायता मांगी। इससे सामंतों की दृष्टि में शासक की प्रतिष्ठा कम हुई और वे सीधे अंग्रेजों के प्रति जवाबदेह या उनसे भयभीत रहने लगे, जिससे पारंपरिक व्यवस्था ध्वस्त हो गई।

45. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
1817-18 के दौरान विभिन्न राज्यों द्वारा संधियों पर हस्ताक्षर करने का समय उनके संकट की तीव्रता को दर्शाता है। करौली ने सर्वप्रथम नवंबर 1817 में संधि की। कोटा रियासत ने दिसंबर 1817 में ब्रिटिश संरक्षण प्राप्त किया। मेवाड़ के महाराणा ने जनवरी 1818 में संधि पर हस्ताक्षर कर पिंडारियों से मुक्ति की राह खोजी। जयपुर राज्य ने अंततः अप्रैल 1818 में गठबंधन स्वीकार किया। इन संधियों के माध्यम से ईस्ट इंडिया कंपनी ने अल्प समय में ही लगभग संपूर्ण राजपूताना पर अपना राजनीतिक प्रभुत्व स्थापित कर लिया था।

46. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
1817-18 की संधियों के तहत खिराज की राशि का निर्धारण अक्सर मराठों को दिए जाने वाले चौथ के आधार पर किया गया था। जिन राज्यों ने पहले मराठों को कर दिया था, उन पर वही वित्तीय भार अंग्रेजों ने डाल दिया। हालांकि, बीकानेर, जैसलमेर और किशनगढ़ जैसे राज्य, जिन्होंने कभी मराठों को खिराज नहीं दिया था, उन्हें अंग्रेजों ने वार्षिक खिराज देने से पूरी तरह छूट प्रदान की थी। इन राज्यों को केवल विशेष परिस्थितियों में सैन्य सहायता या अन्य सहयोग के लिए उत्तरदायी बनाया गया था।

47. (1) बाह्य संप्रभुता और विदेश नीति की स्वतंत्रता की पूर्ण हानि
1817-18 की संधियों का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक परिणाम यह हुआ कि राजपूत राज्यों ने अपनी बाह्य संप्रभुता पूरी तरह खो दी। अब वे किसी भी अन्य भारतीय या विदेशी शक्ति के साथ स्वतंत्र रूप से युद्ध, संधि या राजनयिक संबंध नहीं रख सकते थे। उनकी विदेश नीति का नियंत्रण पूर्णतः ब्रिटिश सरकार के हाथों में चला गया। यद्यपि शासकों को आंतरिक प्रशासन में

सुरक्षा और विशेषाधिकारों का आधार समाज में उनकी विशिष्ट भूमिका थी।

66. (1) केवल I, II, III, और V
18वीं शताब्दी के राजस्थान का समाज कठोर जाति पदानुक्रम पर आधारित था। राजपूतों का राजनीतिक और सामाजिक वर्चस्व था। महाजन वर्ग ने व्यापार और बैंकिंग के माध्यम से अर्थव्यवस्था को नियंत्रित किया। जाट और अन्य कृषि जातियों ने उत्पादन का आधार संभाला। हालांकि, जनजातीय समुदायों जैसे भील और मीणा को क्षत्रिय पदानुक्रम में पूर्णतः एकीकृत नहीं किया गया था, वे मुख्यधारा से बाहर जंगलों में रहते थे। दलितों के विरुद्ध अस्पृश्यता व्यापक रुप से प्रचलित थी, जो समाज के एक बड़े वर्ग को वंचित रखती थी।

67. (3) कुलीन परिवारों में वंशानुगत घरेलू दासता वाले समूह
पारंपरिक राजस्थानी समाज में 'चाकर', 'दारोगा', 'गोला' और 'खवास' जैसे शब्द उन व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त होते थे जो राजसी और कुलीन परिवारों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी घरेलू सेवा करते थे। यह एक प्रकार की वंशानुगत दासता थी। ये लोग महल के भीतर विभिन्न कार्यों को संभालते थे और उनका सामाजिक स्तर अत्यंत निम्न माना जाता था। हालांकि वे परिवार के अभिन्न अंग की तरह रहते थे, किंतु उन्हें स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। यह प्रथा तत्कालीन सामंती व्यवस्था के अंतर्गत दासता के स्वरुप को दर्शाती थी।

68. (4) वंश और शक्ति पर आधारित उप-कुलों का एक कठोर पदानुक्रम था।
18वीं शताब्दी के दौरान राजपूत जाति संरचना समतावादी नहीं थी, बल्कि यह विभिन्न उप-कुलों के एक जटिल और कठोर पदानुक्रम में विभाजित थी। सूर्यवंश, चंद्रवंश और अग्निवंश जैसे उच्च कुलों का अधिक सम्मान था। सत्ता और भूमि के स्वामित्व के आधार पर कुछ उप-कुलों को अन्य की तुलना में श्रेष्ठ माना जाता था। विवाह और सामाजिक संबंधों में इन उप-कुलों की शुद्धता और प्रतिष्ठा का अत्यधिक ध्यान रखा जाता था। यह पदानुक्रम राजनीतिक सत्ता और जागीरदारी अधिकारों के वितरण को भी प्रभावित करता था।

69. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थानी समाज में विभिन्न समुदायों की भूमिकाएँ स्पष्ट रुप से परिभाषित थीं। चारण समुदाय के लोग मुख्य रूप से कवि, साहित्यकार और ऐतिहासिक वंशावलियों के संरक्षक थे। महाजन वर्ग साहूकारी, व्यापार और राज्य के प्रशासनिक एवं वित्तीय पदों को संभालता था। कालबेलिया एक खानाबदोश समुदाय था जो मनोरंजन और सपेरे के रुप में जाना जाता था। बंजारे अनाज और नमक जैसी वस्तुओं को बैलगाड़ियों और ऊंटों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने वाले प्रमुख परिवहनकर्ता थे।

70. (2) ओसवाल
19वीं शताब्दी के राजस्थान में ओसवाल समुदाय को मुख्य रूप से एक व्यापारिक और प्रशासनिक वर्ग के रूप में पहचाना जाता था। वे ओसवाल महाजन थे जो बैंकिंग, लंबी दूरी के व्यापार और रियासतों के दीवान या राजस्व अधिकारी के रूप में कार्य करते थे। इसके विपरीत, जाट, बिश्नोई और धाकड़ जैसी जातियां राजस्थान की पारंपरिक और प्रमुख कृषि जातियां थीं, जिनका मुख्य व्यवसाय भूमि की खेती करना और पशुपालन था। ओसवाल समुदाय का संबंध कृषि उत्पादन के बजाय वित्तीय प्रबंधन और वाणिज्यिक गतिविधियों से था।

71. (4) अप्रतिबंधित सामाजिक गतिशीलता जो किसानों को धन के आधार पर शासक अभिजात वर्ग बनने की अनुमति देती थी
18वीं शताब्दी के राजपूताना में जाति व्यवस्था अत्यंत कठोर थी और इसमें सामाजिक गतिशीलता का लगभग अभाव था। कोई किसान केवल धन अर्जित करके शासक राजपूत वर्ग में सम्मिलित नहीं हो सकता था क्योंकि शासक वर्ग की सदस्यता पूर्णतः जन्म और वंश पर आधारित थी। समाज में जाति के भीतर विवाह के कड़े नियम थे और विभिन्न जातियों के बीच खान-पान पर भी प्रतिबंध थे। प्रत्येक जाति का व्यवसाय वंशानुगत रूप से निश्चित था, जिसे बदलना सामाजिक रूप से अत्यंत कठिन माना जाता था।

72. (1) कुलीनों द्वारा जातिगत कर्तव्यों और बेगार का कठोर प्रवर्तन।
राजस्थान में निम्न जातियों की सामाजिक और आर्थिक स्थिति स्थिर रहने का प्रमुख कारण कुलीनों और जागीरदारों का उन पर कठोर नियंत्रण था। सामंती व्यवस्था के अंतर्गत निम्न जातियों को अपने जातिगत कर्तव्यों का पालन करने और बिना मजदूरी के 'बेगार' करने के लिए विवश किया जाता था। उन पर मनमाने कर लगाए जाते थे, जिससे वे कभी भी पर्याप्त धन संचित नहीं कर पाते थे। शिक्षा के अभाव और इन कठोर सामाजिक नियमों ने उन्हें शोषण के चक्र में बांधे रखा, जिससे उनकी सामाजिक गतिशीलता बाधित हुई।

73. (3) बूंदी
राजस्थान में सामाजिक सुधारों की दिशा में बूंदी रियासत ने एक ऐतिहासिक कदम उठाया था। वर्ष 1822 में बूंदी के शासक ने सती प्रथा पर आधिकारिक तौर पर प्रतिबंध लगा दिया, जिससे वह इस कुप्रथा को अवैध घोषित करने वाला राजस्थान का प्रथम राज्य बना। यह निर्णय लॉर्ड विलियम बेंटिक द्वारा 1829 में पूरे भारत में सती प्रथा निषेध कानून लागू करने से भी कई वर्ष पूर्व लिया गया था। हालांकि, इस प्रतिबंध को जमीनी स्तर पर प्रभावी रूप से लागू करने में कई दशक और ब्रिटिश दबाव की आवश्यकता पड़ी।

74. (1) केवल I और II
'त्याग प्रथा' राजपूत समाज की एक कुरीति थी जिसमें पुत्री के विवाह पर चारणों और भाटों को उनकी मांग के अनुसार भारी मात्रा में धन और उपहार देने पड़ते थे। इस अत्यधिक वित्तीय भार के कारण राजपूत परिवारों में पुत्री का जन्म एक आर्थिक संकट माना जाने लगा, जिससे कन्या शिशु हत्या जैसी अमानवीय प्रथा को बढ़ावा मिला। ब्रिटिश राजनीतिक प्रतिनिधियों ने इस समस्या को पहचानकर त्याग की राशि को सीमित करने और इस प्रथा को नियंत्रित करने के प्रयास किए थे, न कि इसे प्रोत्साहित किया था।

93. (3) व्यापार का विशेष रूप से ब्रिटिश क्षेत्र के माध्यम से अफीम एजेंसी मार्ग
मालवा और मेवाड़ क्षेत्र में उत्पादित होने वाली अफीम वैश्विक बाजार में अत्यधिक मांग में थी। इसके लाभदायक व्यापार को नियंत्रित करने के लिए अंग्रेजों ने एक विशेष प्रणाली लागू की। उन्होंने अनिवार्य किया कि समस्त अफीम का निर्यात केवल ब्रिटिश नियंत्रण वाले बॉम्बे बंदरगाह के माध्यम से ही किया जा सकता है। इसके लिए उन्होंने 'अफीम एजेंसी' स्थापित की और निर्यात पर भारी शुल्क लगाया। इस नीति का उद्देश्य सिंध के रास्ते होने वाले स्वतंत्र व्यापार को रोकना और अफीम का संपूर्ण लाभ प्राप्त करना था।

94. (4) ब्रिटिश व्यापारी और मशीन निर्मित उत्पादों के निर्माता
राजस्थान की रियासतों में ब्रिटिश दबाव के कारण पारगमन शुल्कों को समाप्त कर दिया गया था। यद्यपि इसे व्यापार को बढ़ावा देने वाला कदम बताया गया, किंतु इसका वास्तविक लाभ केवल ब्रिटिश व्यापारियों और इंग्लैंड के उद्योगपतियों को मिला। उनके मशीन निर्मित उत्पादों के लिए राजस्थान का बाजार पूरी तरह खुल गया और परिवहन लागत कम हो गई। इसके विपरीत, स्थानीय राज्यों को राजस्व की भारी हानि हुई और स्थानीय कारीगरों के उत्पाद ब्रिटिश माल की सस्ती कीमतों के सामने टिक नहीं सके, जिससे वे बर्बाद हो गए।

95. (1) नमक
ब्रिटिश हस्तक्षेप से पूर्व, नमक राजस्थान का सबसे महत्वपूर्ण और लाभदायक निर्यात उत्पाद था। सांभर, डीडवाना और पचपदरा जैसी झीलों से बड़ी मात्रा में नमक का उत्पादन होता था। बंजारा समुदाय के माध्यम से इस नमक को संपूर्ण उत्तर भारत और दक्षिण तक भेजा जाता था, जिससे रियासतों को भारी राजस्व प्राप्त होता था। हालांकि, 1869 के बाद अंग्रेजों ने इन स्रोतों पर एकाधिकार कर लिया और नमक के मुक्त व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिए। इससे राज्यों की आय का एक बड़ा स्रोत समाप्त हो गया और ब्रिटिश प्रभुत्व बढ़ा।

96. (2) वार्षिक खिराज, सैन्य टुकड़ियों का रख-रखाव और प्रतिकूल व्यापार शर्तें
राजपूताना से ब्रिटिश भारत की ओर धन के निष्कासन का मुख्य माध्यम वे वित्तीय दायित्व थे जो संधियों के अंतर्गत थोपे गए थे। रियासतों को भारी वार्षिक खिराज देना पड़ता था और ब्रिटिश अधिकारियों के अधीन वाली सहायक सेनाओं का संपूर्ण खर्च भी उठाना पड़ता था। इसके अतिरिक्त, नमक और अफीम पर ब्रिटिश एकाधिकार और प्रतिकूल व्यापारिक नीतियों ने स्थानीय संसाधनों को कम कीमत पर बाहर भेजने के लिए विवश किया। धन का यह निरंतर प्रवाह स्थानीय पूंजी को समाप्त कर रहा था, जिससे अर्थव्यवस्था निर्बल होती गई।

97. (2) उन्होंने राज्य को वित्तपोषित किया और कृषि ऋण को नियंत्रित किया।
18वीं और 19वीं शताब्दी में राजस्थान के सेठ और महाजन वर्ग की शक्ति का आधार उनका वित्तीय वर्चस्व था। ये बैंकर न केवल आम जनता और किसानों को ऋण देते थे, बल्कि वे संकट के समय रियासत के शासकों और जागीरदारों को भी बड़ी धनराशि उधार देते थे। राज्य के राजस्व संग्रहण और सैन्य खर्चों के प्रबंधन में उनकी भूमिका अपरिहार्य थी। हुंडी प्रणाली के माध्यम से वे व्यापारिक पूंजी का संचालन करते थे। उनकी आर्थिक शक्ति ने उन्हें राज्य की राजनीतिक निर्णयों और प्रशासन में भी अत्यंत प्रभावशाली बना दिया था।

98. (1) केवल I और II
महाजन और सेठ समुदाय ने राजस्थान की अर्थव्यवस्था में दो महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं। प्रथम, वे किसानों और जागीरदारों के लिए ऋण के प्राथमिक स्रोत थे, हालांकि ब्याज दरें अक्सर बहुत उच्च होती थीं। द्वितीय, उन्होंने 'हुंडी' प्रणाली का कुशलतापूर्वक उपयोग किया, जिससे नकद धन को भौतिक रूप से ले जाए बिना एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुरक्षित स्थानांतरित किया जा सकता था। सैन्य इकाइयों की कमान संभालना उनकी पारंपरिक भूमिका नहीं थी; उनका प्रभाव मुख्य रूप से वित्तीय, वाणिज्यिक और प्रशासनिक क्षेत्रों तक ही सीमित था।

99. (3) लंबी दूरी के व्यापार के लिए उपयोग किया जाने वाला विनिमय पत्र या साख पत्र
'हुंडी' मध्यकालीन और औपनिवेशिक भारत की एक अत्यंत विकसित स्वदेशी बैंकिंग प्रणाली थी। यह एक प्रकार का विनिमय पत्र या साख पत्र होता था जिसका उपयोग व्यापारी लंबी दूरी के व्यापार के लिए करते थे। इसके माध्यम से व्यापारी नकद राशि साथ ले जाने के जोखिम से बच सकते थे। एक स्थान पर धन जमा करके हुंडी प्राप्त की जाती थी और दूसरे शहर के संबंधित महाजन से उसे भुनाया जा सकता था। राजस्थान के मारवाड़ी व्यापारियों ने इस प्रणाली के माध्यम से पूरे देश में अपना व्यापारिक नेटवर्क स्थापित किया था।

100. (4) बिड़ला - जैसलमेर
बिड़ला परिवार का मूल संबंध जैसलमेर से नहीं बल्कि झुंझुनू जिले के पिलानी क्षेत्र से है। वे शेखावाटी के प्रसिद्ध मारवाड़ी व्यापारियों में से एक हैं। अन्य विकल्प सही हैं: सेठ मिर्जामल चूरू के एक अत्यंत धनी व्यापारी थे जिनका व्यापार काबुल तक फैला था। अमर चंद बांठिया बीकानेर के थे जिन्होंने ग्वालियर के राजकीय खजाने के प्रबंधन में भूमिका निभाई। लोढ़ा परिवार अजमेर के प्रतिष्ठित बैंकर थे। मारवाड़ी व्यापारियों के इन परिवारों ने अपनी कुशलता से अखिल भारतीय स्तर पर अपनी व्यापारिक साख स्थापित की थी।

101. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
19वीं शताब्दी में बड़ी संख्या में मारवाड़ी व्यापारियों ने राजपूताना से कलकत्ता और बॉम्बे जैसे ब्रिटिश व्यापारिक केंद्रों की ओर पलायन किया। इसका कारण राजपूताना में प्रतिकूल नीतियां नहीं, बल्कि वहां की बिगड़ती आर्थिक स्थिति और सामंती करों का बोझ था। इसके विपरीत, ब्रिटिश भारत के बंदरगाह शहरों में रेलवे और समुद्री व्यापार के कारण असीमित नए अवसर उपलब्ध थे। मारवाड़ी व्यापारियों ने अपने वित्तीय कौशल से इन नए केंद्रों में व्यापार और उद्योगों पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया, जिससे वे अत्यधिक समृद्ध हुए।

84. (4) सस्ते, मशीन निर्मित ब्रिटिश उत्पादों से बाजारों का भर जाना
19वीं शताब्दी में राजस्थान के स्वदेशी उद्योगों और कारीगरों के पतन का मुख्य कारण औद्योगिक क्रांति के बाद इंग्लैंड से आने वाला सस्ता माल था। ब्रिटिश शासन ने ऐसी व्यापारिक नीतियां अपनाईं जिनसे मशीन निर्मित वस्त्र और अन्य उत्पाद राजस्थान के बाजारों में भर गए। स्थानीय बुनकर, रंगरेज और धातु श्रमिक इन सस्ते उत्पादों की प्रतिस्पर्धा में नहीं टिक सके। इसके अतिरिक्त, पारंपरिक राजसी संरक्षण के समाप्त होने से भी इन कारीगरों की मांग कम हो गई, जिससे वे खेती या मजदूरी करने को विवश हुए।

85. (3) बेगार
'बेगार' राजस्थान की सामंती व्यवस्था में प्रचलित एक अत्यंत शोषणकारी प्रथा थी। इसके अंतर्गत जागीरदार और राजकीय अधिकारी किसानों, कारीगरों और निम्न जातियों से जबरन काम करवाते थे और बदले में उन्हें कोई मजदूरी या भोजन नहीं दिया जाता था। इस अनिवार्य श्रम का उपयोग दुर्गों की मरम्मत, सामान ढोने और व्यक्तिगत सेवा जैसे कार्यों के लिए किया जाता था। बेगार प्रथा ने ग्रामीण जनता के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाई और उनकी आर्थिक स्थिति को और अधिक दयनीय बना दिया, जिससे किसान आंदोलन हुए।

86. (4) कथन I गलत है और कथन II सही है।
अंग्रेजों द्वारा लागू किए गए नकद-आधारित राजस्व बंदोबस्त ने किसानों की समस्याओं को कम करने के बजाय और बढ़ा दिया। पूर्व में फसल के रूप में राजस्व देना सरल था, किंतु नकद भुगतान के लिए किसानों को फसल पकने से पहले ही उसे बेचना पड़ता था। अकाल और सूखे के दौरान भी नकद राजस्व की मांग अपरिवर्तित रहती थी। इस दबाव के कारण किसान साहूकारों से उच्च ब्याज पर ऋण लेने को विवश हुए। ऋण न चुका पाने की स्थिति में उनकी पैतृक भूमि जब्त कर ली गई, जिससे किसान भूमिहीन हो गए।

87. (4) अत्यधिक सरकारी राजस्व और उच्च ब्याज वाले ऋणों द्वारा दोहरा शोषण
19वीं शताब्दी में राजस्थान के किसानों के संकट का मूल कारण राज्य और जागीरदारों द्वारा वसूला जाने वाला अत्यधिक भू-राजस्व था। इसके साथ ही, अंग्रेजों को दिए जाने वाले खिराज का भार भी अंततः किसानों पर ही पड़ा। जब वर्षा की अनिश्चितता के कारण फसल विफल हो जाती, तब भी राजस्व की मांग कम नहीं होती थी। अपनी जान बचाने और कर चुकाने के लिए किसान महाजनों के चंगुल में फंस जाते थे। भारी राजस्व और साहूकारों का बढ़ता ब्याज, दोनों ने मिलकर किसानों को स्थायी निर्धनता की ओर धकेल दिया।

88. (1) जागीर भूमि के किसानों को स्थायी, हस्तांतरणीय पट्टा अधिकार प्राप्त थे।
जागीरदारी प्रथा में किसानों की स्थिति अत्यंत असुरक्षित थी। उन्हें भूमि पर कोई स्थायी या हस्तांतरणीय अधिकार प्राप्त नहीं थे; जागीरदार उन्हें कभी भी भूमि से बेदखल कर सकता था। जागीरदार को शासक द्वारा सैन्य सेवा के बदले भूमि प्रदान की जाती थी और वह अपनी जागीर के भीतर पुलिस एवं न्यायिक शक्तियों का प्रयोग करता था। शासक की मृत्यु या नए जागीरदार के आने पर 'तलवार बंधाई' जैसे शुल्क देने पड़ते थे। किसानों का अधिकार केवल तब तक था जब तक वे जागीरदार की शर्तें मानते थे।

89. (3) सांबर झील
1869-70 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने राजस्थान के नमक उत्पादन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने के लिए रियासतों के साथ संधियां कीं। इन संधियों का मुख्य केंद्र सांभर झील थी, जो भारत के सबसे बड़े नमक स्रोतों में से एक थी। जयपुर और जोधपुर राज्यों ने सांभर झील का प्रबंधन अंग्रेजों को पट्टे पर दे दिया। इसके परिणामस्वरूप, स्थानीय नमक उद्योग नष्ट हो गया और अंग्रेजों ने नमक पर भारी कर लगाकर अत्यधिक लाभ अर्जित किया। इससे न केवल स्थानीय व्यापारियों को हानि हुई, बल्कि नमक भी महंगा हो गया।

90. (2) केवल I, III, और IV
राजस्थान में ब्रिटिश आर्थिक नीतियों का विनाशकारी प्रभाव पड़ा। अंग्रेजों ने अफीम और नमक के व्यापार पर अपना एकाधिकार स्थापित कर लिया, जिससे स्थानीय राजस्व और बंजारा समुदाय की आजीविका समाप्त हो गई। रेलवे के विस्तार ने ब्रिटिश माल की पहुंच को सुगम बनाया, जिससे स्थानीय शिल्पकारों का बाजार पूरी तरह नष्ट हो गया। पारगमन शुल्कों के उन्मूलन का लाभ केवल ब्रिटिश व्यापारियों को मिला, जबकि स्थानीय राज्यों को राजस्व की हानि हुई। अकाल के समय भी संसाधनों के निर्यात ने किसानों को और निर्धन बना दिया।

91. (4) ब्रिटिश सरकार द्वारा लगाए गए सुरक्षात्मक शुल्कों के कारण स्थानीय उद्योगों में भारी वृद्धि हुई।
यह कथन पूरी तरह से गलत है क्योंकि अंग्रेजों ने स्थानीय उद्योगों को बचाने के लिए कभी कोई सुरक्षात्मक शुल्क नहीं लगाया। इसके विपरीत, उनकी नीतियां 'मुक्त व्यापार' के नाम पर ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं को बढ़ावा देने वाली थीं। उन्होंने ब्रिटिश भारत की सीमाओं पर भारी शुल्क लगाकर राजस्थान के उत्पादों के निर्यात को कठिन बना दिया। स्थानीय मुद्राओं के विनिमय में हेरफेर और पारम्परिक व्यापारिक मार्गों के महत्व को कम करके अंग्रेजों ने राजस्थान की स्वावलंबी अर्थव्यवस्था को औपनिवेशिक हितों के अधीनस्थ बना दिया था।

92. (2) अभाव के समय अनाज का निर्यात, जिससे अकाल की स्थिति और भयावह हो गई।
19वीं शताब्दी के अंत में राजस्थान में रेलवे के आगमन का एक अत्यंत नकारात्मक पक्ष यह रहा कि इसने अकाल के वर्षों के दौरान भी अनाज के त्वरित निर्यात को संभव बना दिया। व्यापारी लाभ कमाने के लिए प्रभावित क्षेत्रों से अनाज बाहर भेज देते थे, जिससे स्थानीय बाजारों में भोजन की भारी कमी और कीमतें बढ़ जाती थीं। इससे प्राकृतिक आपदा एक मानव-निर्मित त्रासदी में बदल गई। हालांकि रेलवे से राहत सामग्री पहुंचाई जा सकती थी, परंतु इसका उपयोग औपनिवेशिक शोषण और संसाधनों के दोहन के लिए ही अधिक हुआ।

16. निम्नलिखित में से कौन सा नेता बिजोलिया किसान आंदोलन के नेतृत्व से सीधे तौर पर नहीं जुड़ा होने के कारण शेष से भिन्न है?
(1) साधु सीताराम दास
(2) जय नारायण व्यास
(3) विजय सिंह पथिक
(4) हरि भाई किंकर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. सूची-I (बिजोलिया आंदोलन का चरण) को सूची-II (प्रमुख नेता) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (बिजोलिया आंदोलन का चरण)
A. प्रथम चरण (1897-1915)
B. द्वितीय चरण (1915-1923)
C. तृतीय चरण (1927-1941)
D. राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारक
सूची II: (प्रमुख नेता)
i. जमनालाल बजाज
ii. गणेश शंकर विद्यार्थी
iii. विजय सिंह पथिक
iv. साधु सीताराम दास
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. प्रमुख क्रांतिकारी और किसान नेता विजय सिंह पथिक का मूल नाम क्या था?
(1) भूप सिंह गुर्जर
(2) मूल शंकर
(3) राम चंद्र पांडुरंग
(4) बलवंत सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): विजय सिंह पथिक ने अपना नाम भूप सिंह से बदलकर राजस्थान में भूमिगत जीवन व्यतीत किया था।
कारण (R): वे लाहौर षड्यंत्र केस में संलिप्त थे और उन्हें टॉडगढ़ दुर्ग में बंदी बनाया गया था जहाँ से वे भाग निकले थे।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. विजय सिंह पथिक ने बिजोलिया में किसान प्रतिरोध को संस्थागत बनाने के लिए 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' की स्थापना किस वर्ष की थी?
(1) 1913
(2) 1915
(3) 1917
(4) 1921
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. निम्नलिखित समाचार पत्रों और संगठनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान केसरी
II. तरुण राजस्थान
III. राजस्थान सेवा संघ
IV. विद्या प्रचारिणी सभा
V. मीणा क्षत्रिय महासभा
उपरोक्त में से कौन सी संस्थाएँ विजय सिंह पथिक से जुड़ी थीं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. नेता और स्थानीय किसानों की शिकायतों को राष्ट्रीय स्तर पर ले जाने के लिए उपयोग किए गए समाचार पत्र के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) माणिक्य लाल वर्मा - राजस्थान पत्रिका
(2) गणेश शंकर विद्यार्थी - प्रताप
(3) साधु सीताराम दास - नवजीवन
(4) नयनूराम शर्मा - हरिजन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. राजस्थान में आगमन के शुरुआती वर्षों में विजय सिंह पथिक की बढ़ती क्रांतिकारी गतिविधियों का प्रत्यक्ष परिणाम क्या था?
(1) उन्हें मेवाड़ दरबार में मंत्री नियुक्त किया गया
(2) उन्हें बिजोलिया के राजस्व संग्रह पर नियंत्रण दिया गया
(3) उन्होंने अजमेर से ब्रिटिश सेना की पूर्ण वापसी के लिए सफलतापूर्वक वार्ता की
(4) उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा टॉडगढ़ दुर्ग में बंदी बना लिया गया था
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. सूची-I (प्रकाशन/संगठन) को सूची-II (संबंधित मूल स्थान/प्रकाशन स्थल) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रकाशन/संगठन)
A. प्रताप
B. राजस्थान केसरी
C. तरुण राजस्थान
D. राजस्थान सेवा संघ
सूची II: (संबंधित मूल स्थान/प्रकाशन स्थल)

102. (2) जनजातीय समूहों के बीच धार्मिक धर्मांतरण आंदोलनों का नेतृत्व करना
नगर सेठों और प्रमुख बैंकरों का मुख्य कार्य वित्तीय और वाणिज्यिक क्षेत्रों तक सीमित था। वे रियासतों में टकसाल का प्रबंधन करते थे और राज्य के नाम पर सिक्के ढालने का अधिकार रखते थे। वे अक्सर मराठा चौथ या ब्रिटिश खिराज के भुगतान के लिए राज्य को अग्रिम राशि प्रदान करते थे। साथ ही, वे किसानों को कृषि संबंधी आवश्यकताओं के लिए तकावी ऋण भी देते थे। हालांकि, जनजातीय क्षेत्रों में धार्मिक सुधार जैसे कार्यों में उनकी कोई भूमिका नहीं थी; वे अपनी धार्मिक आस्थाओं में पारंपरिक और रूढ़िवादी थे।

103. (4) पारंपरिक व्यापारिक मार्गों का पतन और औपनिवेशिक व्यावसायिक अवसर
राजस्थान से महाजन समुदाय के बड़े पैमाने पर पलायन का सबसे ठोस कारण आर्थिक परिस्थितियों में आने वाला बुनियादी बदलाव था। रेलवे के विकास और समुद्री व्यापार के उदय के साथ ही राजस्थान से गुजरने वाले पुराने कारवां मार्ग अपना महत्व खो चुके थे। राजपूताना की रियासतों में आंतरिक व्यापार पर करों का अत्यधिक बोझ था। इसके विपरीत, कलकत्ता और बॉम्बे जैसे उभरते औपनिवेशिक शहरों में वैश्विक व्यापार की असीम संभावनाएं थीं। अपने भविष्य को सुरक्षित करने के लिए ये कुशल व्यापारी नए केंद्रों की ओर चले गए।

104. (1) नगर सेठ
रियासत काल में राज्य की राजधानी के सर्वाधिक प्रतिष्ठित, धनी और प्रभावशाली बैंकर को 'नगर सेठ' की उपाधि दी जाती थी। वह न केवल व्यापारिक समुदाय का प्रमुख होता था, बल्कि अक्सर राज्य के शासक का व्यक्तिगत सलाहकार और मुख्य वित्तपोषक भी होता था। राजकीय समारोहों में उसे विशेष सम्मान प्राप्त था। युद्ध या अकाल जैसी आपदाओं के समय नगर सेठ ही राज्य की वित्तीय व्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता था। उसकी साख इतनी अधिक होती थी कि उसकी हुंडी पूरे भारत के व्यापारिक केंद्रों में स्वीकार की जाती थी।

105. (3) छप्पनिया अकाल
राजस्थान में विक्रम संवत 1956 (1899-1900 ईस्वी) में पड़े भीषण अकाल को 'छप्पनिया अकाल' के नाम से जाना जाता है। यह राजस्थान के इतिहास का सबसे विनाशकारी अकाल माना जाता है क्योंकि इसने लगभग संपूर्ण राज्य को अपनी चपेट में ले लिया था। इसमें वर्षा की पूर्ण विफलता के कारण अनाज, चारे और जल का भारी संकट उत्पन्न हुआ। इस आपदा ने न केवल जनसाधारण को प्रभावित किया, बल्कि पशुधन की भी भारी हानि हुई। इसकी भयावहता की स्मृतियाँ आज भी राजस्थानी लोकजीवन और साहित्य में बनी हुई हैं।

106. (2) केवल I, II, और IV
19वीं शताब्दी के अकालों के परिणाम अत्यंत त्रासद थे। इनके कारण मानव और पशुधन की जनसंख्या में भारी कमी आई क्योंकि भुखमरी और प्यास से लाखों जीव मृत्यु को प्राप्त हुए। जीवन बचाने के लिए ग्रामीण जनता और चरवाहों ने मालवा जैसे समृद्ध क्षेत्रों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन किया। अकाल के बाद अक्सर हैजा और मलेरिया जैसी बीमारियां फैलती थीं, जो कमजोर हो चुकी जनसंख्या के लिए और भी घातक सिद्ध होती थीं। कृषि उत्पादकता में वृद्धि का कोई अवसर नहीं था; वास्तव में भूमि उपेक्षित हो गई थी।

107. (4) अनाज, जल और चारा
1868-69 के अकाल को 'त्रिकाल' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें मानव जीवन के लिए अनिवार्य तीन आधारभूत वस्तुओं का एक साथ पूर्ण अभाव हो गया था। ये तीन वस्तुएं थीं: अनाज (भोजन), जल (पीने का पानी) और चारा (पशुओं का आहार)। जब इन तीनों की कमी एक साथ होती है, तो उसे सबसे भीषण अकाल माना जाता है। इस स्थिति ने न केवल मनुष्यों को भुखमरी के कगार पर खड़ा कर दिया, बल्कि राजस्थान की अर्थव्यवस्था की रीढ़ माने जाने वाले पशुधन को भी पूरी तरह नष्ट कर दिया था।

108. (2) किसानों की समस्त खोई हुई फसलों की क्षतिपूर्ति करने वाले बड़े पैमाने पर ब्रिटिश अनुदान।
यह कहना पूरी तरह गलत है कि अंग्रेजों ने किसानों को उनकी फसलों के नुकसान के लिए कोई बड़ा अनुदान दिया था। वास्तव में, ब्रिटिश सरकार का मुख्य ध्यान राजस्व वसूली पर ही रहा। पारंपरिक राहत उपायों में राजाओं द्वारा सार्वजनिक निर्माण कार्य जैसे कि झीलों की खुदाई शुरू करना शामिल था ताकि लोगों को मजदूरी मिल सके। धनी व्यापारियों ने दान स्वरुप अनाज बांटा और निःशुल्क रसोई चलाई। अंग्रेजों ने केवल अकाल संहिताओं के माध्यम से प्रशासनिक ढांचा प्रदान किया, वित्तीय क्षतिपूर्ति नहीं दी।

109. (3) विक्रम संवत वर्ष 1956 (1899 ईस्वी)
'छप्पनिया अकाल' नाम विक्रम संवत कैलेंडर पर आधारित है। ईस्वी सन 1899 को हिंदू कैलेंडर के अनुसार संवत 1956 कहा जाता है। चूंकि यह अकाल संवत 1956 में पड़ा था, इसलिए जनसाधारण ने इसे 'छप्पनिया' अकाल कहना शुरु किया। इस वर्ष वर्षा की एक बूंद भी नहीं गिरी थी, जिससे थार मरुस्थल के साथ-साथ उपजाऊ क्षेत्र भी सूखे की चपेट में आ गए। यह नाम आज भी राजस्थान में किसी भी बड़ी प्राकृतिक आपदा और अत्यधिक कष्ट के पर्याय के रूप में उपयोग किया जाता है।

110. (4) पारंपरिक पशुधन अर्थव्यवस्था का विनाश और कृषि ऋण में वृद्धि
19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के अकालों ने राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भारी चोट पहुँचाई। पशुपालन, जो पश्चिमी राजस्थान की आजीविका का मुख्य आधार था, चारे और पानी के अभाव में पूरी तरह ध्वस्त हो गया। इससे किसानों की संपत्ति और आय का जरिया खत्म हो गया। पुनः खेती शुरु करने के लिए उन्हें महाजनों से ऋण लेना पड़ा, जिससे कृषि ऋण का बोझ अत्यधिक बढ़ गया। जनसंख्या में कमी और पशुओं की मृत्यु ने ग्रामीण समाज को आर्थिक और जनसांख्यिकीय रूप से दशकों पीछे धकेल दिया।

111. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
प्रारंभ में अंग्रेजों ने राजपूताना के अकालों को रियासतों का आंतरिक मामला मानकर हस्तक्षेप नहीं किया। हालांकि, जब अकाल के कारण ब्रिटिश शासित क्षेत्रों में शरणार्थियों का दबाव बढ़ा और राजस्व की हानि होने लगी, तो उनकी नीति बदल गई। उन्होंने रियासतों पर 'अकाल राहत संहिता' लागू करने का दबाव बनाया ताकि एक व्यवस्थित राहत प्रणाली विकसित की जा सके। इसका मुख्य उद्देश्य मानवीय सहायता से अधिक औपनिवेशिक व्यवस्था को सुचारु बनाए रखना और भविष्य में होने वाले आर्थिक नुकसान को कम करना था।

112. (2) मालवा (मध्य प्रदेश) और गुजरात
पश्चिमी राजस्थान के पशुपालक समुदायों के लिए अकाल के समय पलायन एक जीवन रक्षक रणनीति थी। जब मारवाड़ और जैसलमेर में चारा और पानी समाप्त हो जाता, तो वे अपने पशुओं के विशाल झुंडों के साथ मालवा और गुजरात के अपेक्षाकृत नम और उपजाऊ क्षेत्रों की ओर चले जाते थे। इन क्षेत्रों में नदियाँ और बारहमासी घास उपलब्ध होती थी। यह पलायन अक्सर सैकड़ों मील का होता था और परिवार महीनों तक बाहर रहते थे। सामान्य स्थिति होने पर ही वे अपनी मातृभूमि की ओर वापस लौटते थे।

113. (2) स्वामी दयानंद सरस्वती
स्वामी दयानंद सरस्वती 19वीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली समाज सुधारक थे जिन्होंने राजस्थान में जागृति लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने करौली, जयपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर और जोधपुर की व्यापक यात्राएं कीं। उदयपुर के महाराणा सज्जन सिंह उनके शिष्य बन गए और जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय भी उनसे प्रभावित थे। स्वामीजी ने शासकों को स्वधर्म, स्वदेशी और सुशासन का उपदेश दिया। उनकी शिक्षाओं ने न केवल धार्मिक सुधारों को प्रेरित किया बल्कि राजस्थान में राष्ट्रीय चेतना के बीज भी बोए थे।

114. (1) केवल I, II, III, और V
स्वामी दयानंद सरस्वती ने राजस्थान में वैदिक संस्कृति और सामाजिक सुधारों के लिए अभूतपूर्व कार्य किया। उन्होंने 1883 में उदयपुर में 'परोपकारिणी सभा' की स्थापना की जो सुधारों का केंद्र बनी। उसी वर्ष जोधपुर प्रवास के दौरान एक षड्यंत्र के तहत उन्हें विष दिया गया और अजमेर में उनका निधन हो गया। उनकी शिक्षाओं को राजस्थान के शासकों और जनता दोनों ने व्यापक रूप से स्वीकार किया। आर्य समाज के सिद्धांतों ने आगे चलकर किसान आंदोलनों और आदिवासी सुधार आंदोलनों को वैचारिक आधार प्रदान किया।

115. (3) उदयपुर
'परोपकारिणी सभा' की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने फरवरी 1883 में उदयपुर में की थी। इस संस्था के प्रथम अध्यक्ष मेवाड़ के महाराणा सज्जन सिंह को बनाया गया था। इस सभा का मुख्य उद्देश्य आर्य समाज के सिद्धांतों का प्रचार करना, वैदिक साहित्य का प्रकाशन सुनिश्चित करना और समाज में व्याप्त कुरीतियों के विरुद्ध अभियान चलाना था। बाद में इसका कार्यालय अजमेर स्थानांतरित कर दिया गया था। उदयपुर में इसकी स्थापना इस बात का प्रमाण है कि राजस्थान के प्रमुख शासक उस समय समाज सुधार के प्रति सजग थे।

116. (4) प्रथम आर्य समाज शाखा (1881) की स्थापना - अजमेर
राजस्थान में आर्य समाज का प्रभाव अजमेर से ही सर्वाधिक प्रसारित हुआ। वर्ष 1881 में राजस्थान की प्रथम आर्य समाज शाखा की स्थापना अजमेर में ही की गई थी। इसके विपरीत, 'सत्यार्थ प्रकाश' के द्वितीय संस्करण का लेखन और संपादन कार्य उदयपुर में हुआ था। वाल्टर कृत सभा की स्थापना भी अजमेर में हुई थी। अजमेर ब्रिटिश शासित क्षेत्र होने के कारण सुधारवादी गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बन गया था, जहाँ से आर्य समाज के विचारों ने संपूर्ण राजपूताना की रियासतों में प्रवेश किया और सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया।

117. (3) अस्पृश्यता की प्रणाली
1889 में गठित 'वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा' का मुख्य ध्यान राजपूत समुदाय के विशिष्ट सामाजिक रीति-रिवाजों को सुधारने पर था। इसने विवाहों में होने वाले भारी व्यय, बाल विवाह और वृद्ध विवाह जैसी आयु विसंगतियों तथा बहुविवाह प्रथा को समाप्त करने के लिए ठोस नियम बनाए। हालांकि, अस्पृश्यता उन्मूलन इस सभा के प्राथमिक एजेंडे में सम्मिलित नहीं था। इस संस्था का स्वरूप मुख्य रूप से सामंती वर्ग के भीतर आर्थिक और नैतिक सुधार लाने तक ही सीमित था ताकि वे ऋणग्रस्तता और सामाजिक पतन से बच सकें।

118. (2) सती, कन्या शिशु हत्या और मानव तस्करी पर प्रतिबंध लगाना
19वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में ब्रिटिश राजनीतिक प्रतिनिधियों ने अपना ध्यान उन सामाजिक प्रथाओं पर केंद्रित किया जिन्हें वे 'अमानवीय' मानते थे। जयपुर में कैप्टन लुडलो जैसे अधिकारियों ने सती प्रथा, कन्या शिशु हत्या और बच्चों एवं महिलाओं की तस्करी के विरुद्ध कड़े कानून बनवाने में सफलता प्राप्त की। इन सुधारों के पीछे मानवीय दृष्टिकोण के साथ-साथ ब्रिटिश शासन की यह मंशा भी थी कि वे स्वयं को एक 'सभ्यकारी शक्ति' के रूप में स्थापित कर सकें और रियासतों के आंतरिक सामाजिक ढांचे में अपना प्रभाव बढ़ा सकें।

119. (3) कथन I सही है और कथन II गलत है।
जयपुर के महाराजा राम सिंह द्वितीय को एक अत्यंत आधुनिक और प्रगतिशील शासक माना जाता है। उन्होंने अपने राज्य में सती प्रथा और दासता को अवैध घोषित करने के साथ-साथ शिक्षा और कला के प्रसार के लिए भी महत्वपूर्ण कार्य किए। यह कहना गलत है कि सभी राजपूत शासकों ने सुधारों का विरोध किया। वास्तव में, मेवाड़, कोटा और जयपुर के कई शासकों ने ब्रिटिश प्रतिनिधियों के साथ मिलकर अपनी स्वेच्छा से कई सामाजिक कुरीतियों को समाप्त करने के आदेश जारी किए थे, जो उनकी दूरदर्शिता का परिचायक था।

120. (1) ब्रिटिश सर्वोच्चता को एक 'सभ्य बनाने के मिशन' (Civilizing Mission) के रुप में न्यायसंगत सिद्ध करने के लिए

ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा राजपूताना में सामाजिक सुधारों पर बल देने का एक बड़ा रणनीतिक उद्देश्य था। वे भारतीय समाज की कुरीतियों को उजागर करके यह सिद्ध करना चाहते थे कि उनका शासन भारत की प्रगति के लिए अनिवार्य है। इसे 'श्वेत व्यक्ति का उत्तरदायित्व' का मिशन कहा जाता था। इन सुधारों के माध्यम से वे जनता की सहानुभूति प्राप्त करना और शासकों की नैतिक शक्ति को कम करना चाहते थे। यद्यपि सुधारों के परिणाम सकारात्मक रहे, किंतु उनके पीछे का मूल राजनीतिक उद्देश्य औपनिवेशिक प्रभुत्व को आधार देना ही था।

75. (1) I, II, III
राजस्थान में सामाजिक बुराइयों पर प्रतिबंध का कालानुक्रमिक क्रम तत्कालीन प्रशासनिक सुधारों को दर्शाता है। सती प्रथा पर सर्वप्रथम 1822 में बूंदी राज्य ने प्रतिबंध लगाया। इसके पश्चात 1833-34 के दौरान कोटा और बूंदी में कन्या शिशु हत्या को अवैध घोषित किया गया। अंततः 1853 में मेवाड़ के महाराणा स्वरूप सिंह ने डाकन प्रथा पर आधिकारिक रोक लगाई। ये सुधार मुख्य रूप से ब्रिटिश राजनीतिक प्रतिनिधियों के निरंतर दबाव और कुछ प्रगतिशील शासकों की जागरूकता के परिणामस्वरूप संभव हो सके थे।

76. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान की विभिन्न रियासतों ने समय-समय पर सामाजिक सुधार लागू किए। सती प्रथा पर सर्वप्रथम 1822 में बूंदी ने रोक लगाई। कन्या शिशु हत्या को रोकने की दिशा में कोटा राज्य ने 1833 में प्रथम पहल की। डाकन प्रथा, जो जनजातीय क्षेत्रों में प्रचलित थी, उसे 1853 में मेवाड़ में प्रतिबंधित किया गया। समाधि प्रथा पर जयपुर रियासत ने 1844 में राजनीतिक प्रतिनिधि लुडलो के प्रयासों से प्रतिबंध लगाया। इन सुधारों का उद्देश्य समाज में व्याप्त अमानवीय परंपराओं को समाप्त करना और नए प्रशासनिक मूल्यों को स्थापित करना था।

77. (3) विवाह व्यय, बहुविवाह और विवाह योग्य आयु को विनियमित करना
कर्नल वाल्टर के प्रयासों से 1889 में अजमेर में 'वाल्टर कृत राजपुत्र हितकारिणी सभा' की स्थापना की गई थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य राजपूत समुदाय के भीतर व्याप्त सामाजिक कुरीतियों को दूर करना था। इसने विवाह के अवसर पर होने वाले फिजूलखर्ची, बहुविवाह की प्रथा को नियंत्रित करने और लड़के-लड़कियों की विवाह योग्य न्यूनतम आयु निर्धारित करने के महत्वपूर्ण नियम बनाए। इन सुधारों का उद्देश्य राजपूत परिवारों को ऋणग्रस्तता से बचाना और समाज के नैतिक एवं आर्थिक स्तर को ऊपर उठाना था।

78. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
19वीं शताब्दी के राजस्थान में कन्या शिशु हत्या की कुप्रथा मुख्य रूप से राजपूत समाज में व्याप्त थी। इसका प्राथमिक कारण कुल की झूठी मान-प्रतिष्ठा और विवाह के समय दिया जाने वाला भारी दहेज तथा 'त्याग' की राशि का आर्थिक बोझ था। राजपूत अपनी पुत्रियों का विवाह अपने से उच्च कुल में करने को प्रतिष्ठा का प्रश्न मानते थे, जिसमें अत्यधिक धन व्यय होता था। इसी आर्थिक और सामाजिक दबाव के कारण कई परिवारों में जन्म के समय ही कन्याओं को मार दिया जाता था, जो एक दुखद सच्चाई थी।

79. (1) महिलाओं के लिए औपचारिक शिक्षा प्रत्येक ग्राम में व्यापक और राज्य प्रायोजित थी।
19वीं शताब्दी के राजस्थान में महिलाओं की स्थिति के संबंध में यह कथन पूर्णतः गलत है कि वहां औपचारिक शिक्षा व्यापक थी। वास्तव में, उस समय महिला साक्षरता दर अत्यंत कम थी और शिक्षा के अवसर केवल कुछ समृद्ध परिवारों तक ही सीमित थे। समाज में पर्दा प्रथा का कठोर पालन होता था और बाल विवाह एक सामान्य बात थी। केवल ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों की महिलाएं, जो श्रम कार्यों में सक्रिय थीं, उन्हें कुछ हद तक अधिक व्यावहारिक स्वतंत्रता प्राप्त थी, किंतु वे भी शिक्षा से वंचित थीं।

80. (2) भील और मीणा जनजातीय समुदाय
'डाकन प्रथा' एक अंधविश्वास आधारित कुरीति थी, जो मुख्य रूप से मेवाड़ के भील और मीणा जैसे जनजातीय समुदायों में प्रचलित थी। इसके अंतर्गत किसी महिला पर 'डाकन' होने का आरोप लगाकर उसे प्रताड़ित किया जाता था या उसकी हत्या कर दी जाती थी। इस अमानवीय प्रथा को समाप्त करने के लिए मेवाड़ के महाराणा स्वरुप सिंह ने 1853 में खेरवाड़ा में इसे अवैध घोषित किया। ब्रिटिश अधिकारियों, विशेषकर मेवाड़ भील कोर के कमांडरों ने इस प्रथा के विरुद्ध जनजातीय क्षेत्रों में कड़े कदम उठाए थे।

81. (2) खालसा
राजस्थान की पारंपरिक कृषि व्यवस्था में भूमि को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया था। वह भूमि जो सीधे राज्य या शासक के नियंत्रण में होती थी, 'खालसा' कहलाती थी। खालसा भूमि से प्राप्त होने वाला समस्त भू-राजस्व सीधे राजकीय कोष में जमा होता था। इसके विपरीत, 'जागीर' भूमि सामंतों के अधिकार में होती थी, जहाँ राजस्व वे स्वयं एकत्र करते थे। खालसा भूमि का प्रबंधन राज्य के अधिकारियों जैसे दीवान और तहसीलदारों द्वारा किया जाता था ताकि राज्य के दैनिक खर्चों की पूर्ति हो सके।

82. (4) I, II, III, और IV
राजस्थान की सामंती कृषि प्रणाली में करों और प्रथाओं के विविध रूप प्रचलित थे। 'लाटा' और 'बटाई' फसल कटाई के बाद अनाज के बंटवारे की विधियाँ थीं। 'बेगार' एक अत्यंत शोषणकारी प्रथा थी जिसमें किसानों और पिछड़ी जातियों से बिना किसी भुगतान के कठोर श्रम कराया जाता था। 'लाग-बाग' विभिन्न प्रकार के छोटे और मनमाने उपकर थे जो जागीरदार अपने व्यक्तिगत या प्रशासनिक खर्चों के लिए किसानों से वसूलते थे। ये सभी प्रथाएं सामूहिक रूप से किसानों के निरंतर आर्थिक शोषण का आधार बनीं।

83. (3) जकात - आयतन के अनुसार विशेष रूप से कृषि उपज पर लगाया जाने वाला कर
राजस्थान के संदर्भ में 'जकात' मुख्य रूप से वस्तुओं के आयात-निर्यात पर लगाया जाने वाला व्यापारिक सीमा शुल्क या पारगमन शुल्क था, न कि केवल कृषि उपज पर आधारित कर। इसके विपरीत, अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं। 'चंवरी लाग' पुत्री के विवाह पर किसान द्वारा जागीरदार को दिया जाने वाला कर था। 'तलवार बंधाई' एक उत्तराधिकार शुल्क था। 'कामठा लाग' दुर्ग निर्माण के लिए वसूला जाता था। जकात जैसे शुल्कों ने व्यापारिक लागत को बढ़ाकर स्थानीय वाणिज्यिक गतिविधियों को गहराई से प्रभावित किया था।

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. 'तलवार बँधाई' कर के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) एक उत्तराधिकार शुल्क जो नए जागीरदार द्वारा शासक को दिया जाता था, जिसका भार किसानों पर पड़ता था।
(2) राज्य के विरुद्ध अपनी कानूनी लड़ाई के लिए धन जुटाने हेतु किसानों द्वारा एकत्र किया गया एक सामूहिक कर।
(3) भील जनजातियों द्वारा सीधे ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को दी जाने वाली वार्षिक भेंट।
(4) लोहे के नए हल खरीदने के लिए किसानों को दी जाने वाली राज्य कृषि सहायता।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. बिजोलिया किसान आंदोलन, जो भारत के सबसे लंबे अहिंसक कृषि संघर्षों में से एक था, मुख्य रूप से किस जाति के किसानों द्वारा संचालित और समर्थित था?
(1) जाट
(2) राजपूत
(3) धाकड़
(4) मीणा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. निम्नलिखित में से कौन सा बिजोलिया किसान आंदोलन के तीन विभिन्न चरणों के प्रमुख नेताओं का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) विजय सिंह पथिक → साधु सीताराम दास → माणिक्य लाल वर्मा
(2) साधु सीताराम दास → विजय सिंह पथिक → माणिक्य लाल वर्मा
(3) माणिक्य लाल वर्मा → साधु सीताराम दास → विजय सिंह पथिक
(4) साधु सीताराम दास → माणिक्य लाल वर्मा → विजय सिंह पथिक
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. बिजोलिया किसान आंदोलन की सटीक ऐतिहासिक अवधि क्या थी, जो इसे भारत का सबसे लंबा निरंतर चलने वाला कृषि आंदोलन बनाती है?
(1) 1857 से 1919
(2) 1897 से 1941
(3) 1905 से 1947
(4) 1913 से 1938
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. बिजोलिया किसान आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी शुरुआत मेवाड़ राज्य में महाराणा फतेह सिंह के शासनकाल में हुई थी।
II. यह आंदोलन राव गोविंद दास की मृत्यु और उसके बाद राव कृष्ण सिंह के उत्तराधिकार के कारण शुरु हुआ था।
III. बिजोलिया के किसानों ने अपनी शिकायतें दर्ज कराने के लिए नानजी और ठाकरी पटेल को मेवाड़ के महाराणा के पास भेजा था।
IV. यह आंदोलन राज्य पुलिस के विरुद्ध हिंसक छापामार युद्ध नीति पर बहुत अधिक निर्भर था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) केवल II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. बिजोलिया किसान आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: इसे भारतीय इतिहास के सबसे शुरुआती और सबसे लंबे अहिंसक किसान आंदोलनों में से एक माना जाता है।
कथन II: इस आंदोलन ने 1922 तक राजस्थान में जागीरदारी प्रथा को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. बिजोलिया के किस जागीरदार ने 1903 में विवादास्पद 'चँवरी कर' लगाया था, जिससे किसानों में व्यापक रोष फैल गया था?
(1) राव पृथ्वी सिंह
(2) महाराणा भूपाल सिंह
(3) राव केसरी सिंह
(4) राव कृष्ण सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. बिजोलिया किसान आंदोलन से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. राव कृष्ण सिंह द्वारा चँवरी कर लगाया जाना
II. राव पृथ्वी सिंह द्वारा तलवार बँधाई लगाया जाना
III. विजय सिंह पथिक द्वारा ऊपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना
IV. माणिक्य लाल वर्मा के नेतृत्व में अंतिम समझौता और आंदोलन की समाप्ति
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) III, I, IV, II
(5) प्रश्न अनुत्तरित

अध्याय 08

किसान, जनजातीय एवं प्रजा मंडल आंदोलन

1. राजस्थान में किसान असंतोष के संदर्भ में 'लाटा' और 'कुंता' शब्दों का प्राथमिक अर्थ क्या था?
(1) ब्रिटिश रेजिडेंट द्वारा लगाया गया प्रशासनिक बेगार का प्रकार
(2) फसल की उपज के आधार पर भू-राजस्व के निर्धारण और संग्रह की प्रणालियाँ
(3) जागीरदार की पुत्री के विवाह के समय लगाया जाने वाला विशेष कर
(4) मेवाड़ राज्य के राजस्व विभाग में न्यायिक पद
(5) प्रश्न अनुत्तरित

2. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राजस्थान की रियासतों में 'बेगार' की प्रथा किसान विद्रोहों का एक प्रमुख कारण थी।
कारण (R): किसानों और वंचित जातियों को जागीरदारों और राज्य के अधिकारियों के लिए बिना किसी पारिश्रमिक के शारीरिक श्रम करने के लिए विवश किया जाता था।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

3. स्वतंत्रता-पूर्व राजस्थान की कृषि संरचना के संदर्भ में, 'लाग-बाग' शब्द क्या दर्शाता है?
(1) स्थानीय प्रमुखों द्वारा विकसित राज्य-प्रायोजित सिंचाई प्रणाली
(2) सर्वोच्च सैन्य कमांडर को दी जाने वाली आधिकारिक उपाधि
(3) किसानों पर लगाए गए विभिन्न मनमाने उपकर और अवैध वसूली
(4) साहूकारों और जनजातीय किसानों के बीच एक पारंपरिक अनुबंध
(5) प्रश्न अनुत्तरित

4. बिजोलिया में किसानों के संकट को गंभीर बनाने वाला 'चँवरी कर', निम्नलिखित में से किस अवसर पर लगाया गया था?
(1) जब कोई किसान अपने पूर्वजों से भूमि उत्तराधिकार में प्राप्त करता था
(2) राज्य-प्रायोजित पशु मेलों में मवेशी बेचते समय
(3) गाँव में नए आवासीय भवन के निर्माण पर
(4) किसान की पुत्री के विवाह के अवसर पर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

5. राजस्थान में किसान असंतोष के कारणों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'लाग-बाग' के रूप में जाने जाने वाले 80 से अधिक प्रकार के मनमाने उपकरों का लगाया जाना।
II. जागीरदारों द्वारा बेगार का व्यवस्थित प्रवर्तन।
III. किसानों की मांगों के पक्ष में ब्रिटिश सर्वोच्च सत्ता का सक्रिय हस्तक्षेप और समर्थन।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

6. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान की रियासतों में व्यापक किसान असंतोष का एक स्वीकृत कारण नहीं था?
(1) भू-राजस्व दरों और राज्य करों में बार-बार वृद्धि
(2) जागीरदारों द्वारा लोकतांत्रिक चुनावी प्रणालियों की शुरुआत
(3) 'तलवार बँधाई' जैसे उत्तराधिकार शुल्कों की कठोर वसूली
(4) पारंपरिक कृषि जीवन में ब्रिटिश एजेंटों का हस्तक्षेप
(5) प्रश्न अनुत्तरित

7. सूची-I (कराधान से संबंधित शब्द) को सूची-II (अर्थ) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (कराधान से संबंधित शब्द)
A. चँवरी
B. तलवार बँधाई
C. लाटा
D. बेगार
सूची II: (अर्थ)
i. सत्ता संभालने पर नए जागीरदार द्वारा भुगतान किया जाने वाला उत्तराधिकार कर
ii. किसानों से लिया जाने वाला अवैतनिक बलपूर्वक श्रम
iii. किसान की पुत्री के विवाह पर लगाया जाने वाला कर
iv. कटी हुई फसलों के आधार पर राजस्व का अनुमान

i. वर्धा
ii. अजमेर
iii. कानपुर
iv. ब्यावर
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. बिजोलिया आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा में लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला समाचार पत्र 'प्रताप' किस शहर से प्रकाशित होता था?
(1) अजमेर
(2) वर्धा
(3) कानपुर
(4) दिल्ली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. बिजोलिया की सफलता से प्रेरित होकर, बेगूँ किसान आंदोलन का नेतृत्व प्रारंभ में स्थानीय किसानों के अनुरोध पर किस प्रमुख नेता ने किया था?
(1) रामनारायण चौधरी
(2) जय नारायण व्यास
(3) जमनालाल बजाज
(4) मोतीलाल तेजावत
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. बेगूँ किसान आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह आंदोलन मेवाड़ राज्य के बेगूँ ठिकाने में केंद्रित था।
II. बेगूँ के किसानों की शिकायतों की जाँच के लिए ट्रेंच आयोग नियुक्त किया गया था।
III. बिना किसी रियायत के किसानों के पूर्ण आत्मसमर्पण के कारण आंदोलन अचानक समाप्त हो गया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. दो प्रमुख किसान नेता रूपा जी और कृपा जी किस विशिष्ट घटना के दौरान राज्य पुलिस की गोलीबारी में बलिदानी हुए थे?
(1) भोमट क्षेत्र में हुआ नीमड़ा हत्याकांड
(2) बेगूँ आंदोलन के दौरान गोविंदपुरा गाँव की सभा
(3) बूंदी किसान आंदोलन के दौरान डाबी का जमावड़ा
(4) मानगढ़ पहाड़ी जनजातीय सभा और बलिदान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. राजस्थान के किसान आंदोलनों के संदर्भ में 'बोल्शेविक समझौते' के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) अंग्रेजों के विरुद्ध मेवाड़ और मारवाड़ के शासकों के बीच हुआ एक रक्षात्मक समझौता।
(2) अस्त्र प्राप्त करने के लिए मोतीलाल तेजावत द्वारा सोवियत संघ के साथ की गई एक गुप्त संधि।
(3) बेगूँ के रावत अनूप सिंह और राजस्थान सेवा संघ के बीच हुआ समझौता।
(4) जयपुर प्रजामंडल द्वारा प्रस्तुत आधिकारिक संवैधानिक सुधार दस्तावेज।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. ट्रेंच आयोग के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: इसकी स्थापना बेगूँ ठिकाने के कृषि विवादों को हल करने के लिए की गई थी।
कथन II: आयोग ने गोविंदपुरा गाँव में किसानों की शांतिपूर्ण सभा पर बिना उकसावे के गोली चलाने का आदेश दिया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. मेवाड़ राज्य प्रशासन ने रावत अनूप सिंह और राजस्थान सेवा संघ के बीच हुए समझौते को रद्द करने का सबसे उपयुक्त कारण क्या बताया था?
(1) राज्य को राजस्व की पूर्ण हानि और अन्य क्षेत्रों के लिए एक खतरनाक उदाहरण बनने का भय था।
(2) किसानों ने समझौते को स्वीकार करने से मना कर दिया क्योंकि इससे चँवरी कर की दरें बढ़ गई थीं।
(3) ब्रिटिश रेजिडेंट ने मांग की कि सभी आधिकारिक राज्य समझौते अंग्रेजी में निर्मित किए जाएं।
(4) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने हस्तक्षेप किया और किसानों को शर्तों को अस्वीकार करने का निर्देश दिया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. सूची-I (किसान/जनजातीय आंदोलन) को सूची-II (संबंधित बलिदानी) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (किसान/जनजातीय आंदोलन)
A. बेगूँ किसान आंदोलन
B. बूंदी किसान आंदोलन
C. भील आंदोलन (मानगढ़)
D. नीमूचाणा हत्याकांड (अलवर)
सूची II: (संबंधित बलिदानी)
i. नानक जी भील और देवा गुर्जर
ii. रूपा जी और कृपा जी धाकड़
iii. सीता राम और खुर्दी (सीता देवी)
iv. 1500 से अधिक अनाम जनजातीय अनुयायी
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii

(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. निम्नलिखित में से कौन सा व्यक्ति बेगूँ किसान आंदोलन के नेतृत्व या घटनाओं से नहीं जुड़ा था?
(1) रामनारायण चौधरी
(2) नानक जी भील
(3) विजय सिंह पथिक
(4) रावत अनूप सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. बूंदी किसान आंदोलन, जो बेगार और उच्च कराधान के विरुद्ध अपने कड़े प्रतिरोध के लिए उल्लेखनीय है, को ऐतिहासिक रूप से किस अन्य नाम से भी जाना जाता है?
(1) बरड़ किसान आंदोलन
(2) एका आंदोलन
(3) भगत आंदोलन
(4) ऊपरमाल आंदोलन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. बूंदी किसान आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से नयनूराम शर्मा के नेतृत्व में आयोजित किया गया था।
II. डाबी गाँव में एक बड़ी दुखद घटना हुई जहाँ राज्य पुलिस ने किसानों पर गोलियाँ चलाईं।
III. आंदोलन पूरी तरह विफल रहा और कोई प्रशासनिक रियायत कभी नहीं दी गई।
IV. डाबी में पुलिस गोलीबारी के दौरान नानक जी भील बलिदानी हुए थे।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. बूंदी किसान आंदोलन के दौरान कुख्यात डाबी हत्याकांड किस तिथि को हुआ था, जिसमें नानक जी भील बलिदानी हुए थे?
(1) 13 अप्रैल 1919
(2) 2 अप्रैल 1923
(3) 17 नवंबर 1913
(4) 14 मई 1925
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. डाबी घटना के दौरान नानक जी भील के बलिदान के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) वे बूंदी के ब्रिटिश रेजिडेंट के विरुद्ध संघर्ष के दौरान मारे गए थे।
(2) कोटा जनपद की केंद्रीय जेल में लंबी भूख हड़ताल के बाद उनकी मृत्यु हुई थी।
(3) देशभक्तिपूर्ण 'झंडा' गीत गाते समय पुलिस ने उन्हें गोली मार दी थी।
(4) उत्तराधिकार कर देने से मना करने पर महाराजा द्वारा उन्हें सार्वजनिक रूप से दंडित किया गया था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पंडित नयनूराम शर्मा बूंदी और कोटा क्षेत्रों में किसान जागरण के मुख्य प्रणेता के रूप में उभरे।
कारण (R): राजस्थान सेवा संघ के एक सक्रिय सदस्य के रूप में, उन्होंने अत्यधिक कराधान और राज्य के उत्पीड़न के विरुद्ध बरड़ के किसानों को व्यवस्थित रूप से संगठित किया।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. राजस्थान में किसान आंदोलनों से संबंधित निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. राजस्थान सेवा संघ की स्थापना
II. बेगूँ किसान आंदोलन की शुरुआत
III. बूंदी में डाबी हत्याकांड
IV. बिजोलिया आंदोलन की अंतिम समाप्ति
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) III, I, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. बूंदी किसान आंदोलन के दौरान देखा गया एक महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय प्रभाव क्या था?
(1) पुलिस को चुनौती देने और आंदोलन का समर्थन करने में स्थानीय महिलाओं की व्यापक भागीदारी।
(2) बरड़ क्षेत्र में पारंपरिक जाति व्यवस्था का पूर्ण और तत्काल उन्मूलन।
(3) ब्रिटिश कानूनी संरक्षण प्राप्त करने के लिए स्थानीय किसानों का ईसाई धर्म में सामूहिक धर्मांतरण।
(4) किसान जनसंख्या का पड़ोसी मालवा पठार क्षेत्रों में पूर्ण पलायन।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. सूची-I (किसान आंदोलन) को सूची-II (प्रमुख नेता) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (किसान आंदोलन)
A. बूंदी किसान आंदोलन
B. बेगूँ किसान आंदोलन
C. बिजोलिया किसान आंदोलन (द्वितीय चरण)
D. बीकानेर किसान आंदोलन
सूची II: (प्रमुख नेता)
i. विजय सिंह पथिक
ii. नयनूराम शर्मा
iii. रामनारायण चौधरी
iv. कुंभाराम आर्य
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में दक्षिणी राजस्थान में जनजातीय आंदोलनों, विशेष रूप से भीलों के बीच विद्रोह का प्राथमिक कारण क्या था?
(1) उनके पारंपरिक वन अधिकारों और जनजातीय स्वायत्तता पर राज्य का अतिक्रमण।
(2) ब्रिटिश संसद और राज्य परिषदों में समान प्रतिनिधित्व की मांग।
(3) प्रथम विश्व युद्ध के लिए ब्रिटिश भारतीय सेना में भील युवाओं की बलपूर्वक भर्ती।
(4) स्वदेशी जनजातीय ग्रामीण विद्यालयों में अंग्रेजी भाषा का अनिवार्य रूप से लागू किया जाना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. राजस्थान में जनजातीय जनसंख्या की निम्नलिखित शिकायतों पर विचार कीजिए:
I. पारंपरिक वन अधिकारों और लकड़ी के उपयोग पर प्रतिबंध।
II. नमक और अफीम के उत्पादन पर राज्य का एकाधिकार और नए कर।
III. राज्य के अधिकारियों द्वारा बलपूर्वक अवैतनिक श्रम (बेगार) लेना।
IV. 'रखवाली' और 'बोलाई' जैसी पारंपरिक जनजातीय कराधान प्रणाली में हस्तक्षेप।
V. स्थानीय साहूकारों की जगह आधुनिक बैंकिंग प्रणालियों का बलपूर्वक क्रियान्वयन।
उपरोक्त में से किन शिकायतों के कारण जनजातीय असंतोष फैला?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. निम्नलिखित में से कौन सा भीलों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला पारंपरिक अधिकार नहीं था जिसे औपनिवेशिक-सामंती राज्य तंत्र ने चुनौती दी थी?
(1) पहाड़ियों से स्वतंत्र रूप से वन उपज एकत्र करने का अधिकार
(2) व्यापार के लिए स्वतंत्र चांदी की मुद्रा ढालने का अधिकार
(3) महुआ के पेड़ों से स्वदेशी मदिरा बनाने का अधिकार
(4) स्थानीय स्तर पर रखवाली और बोलाई कर एकत्र करने का अधिकार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. भील जनजातीय पहचान और शिकायतों के संदर्भ में, 'रखवाली' शब्द का क्या अर्थ था?
(1) महत्वपूर्ण जनजातीय युद्धों के दौरान भील योद्धाओं द्वारा धारण किया जाने वाला सुरक्षा कवच।
(2) पारंपरिक सरदारों को वन अधिकार प्रदान करने वाला आधिकारिक दस्तावेज।
(3) भीलों द्वारा यात्रियों और गांवों से वसूला जाने वाला एक पारंपरिक सुरक्षा कर।
(4) मानसूनी फसलों की सफल कटाई का उत्सव मनाने वाला एक स्थानीय पर्व।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. पारंपरिक जनजातीय शब्दों और उनके अर्थों के संबंध में सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) दापा - बलपूर्वक सैन्य भर्ती का एक रूप
(2) मौतणा - वन देवताओं को समर्पित एक धार्मिक समारोह
(3) सागड़ी - सामुदायिक खेती की एक प्रणाली
(4) बोलाई - भीलों द्वारा उनके क्षेत्र से गुजरने वाले माल पर लगाया जाने वाला कर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. राजस्थान में जनजातीय जीवन पर ब्रिटिश प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: राजपूताना राज्यों के साथ ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की संधियों के कारण प्रशासनिक केंद्रीकरण बढ़ा, जिससे भील स्वायत्तता को संकट उत्पन्न हो गया।
कथन II: अंग्रेजों ने जनजातीय क्षेत्रों से शोषक साहूकार वर्ग को सफलतापूर्वक समाप्त कर दिया, जिससे जनजातीय समृद्धि हुई।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. निम्नलिखित में से कौन सा मुद्दा राजस्थान में एक सामान्य किसान शिकायत के बजाय मौलिक रूप से एक जनजातीय शिकायत होने के कारण शेष से भिन्न है?
(1) राज्य द्वारा भू-राजस्व की उच्च दरें लगाना।

(2) महुआ के फूलों से मदिरा बनाने के अधिकार की हानि।
(3) लाटा और कुंता प्रणालियों के माध्यम से शोषण।
(4) पारंपरिक कृषि भूमि से मनमाने ढंग से निष्कासन।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र के भीलों के बीच सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन, जो बाद में एक राजनीतिक संघर्ष में परिवर्तित हो गया, किस नेता द्वारा प्रारंभ किया गया था?
(1) मोतीलाल तेजावत
(2) गोविंद गिरी
(3) भोगीलाल पंड्या
(4) सुरजी भगत
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. गोविंद गिरी के आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने भीलों के बीच एकता और सामाजिक सुधार को बढ़ावा देने के लिए 1883 में सम्प सभा की स्थापना की।
II. उनके आंदोलन को ऐतिहासिक रुप से भगत आंदोलन कहा जाता है।
III. आंदोलन का अंत भीलों द्वारा किए गए एक हिंसक हमले में हुआ जहाँ उन्होंने उदयपुर शहर पर अधिकार कर लिया था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. दुखद मानगढ़ हत्याकांड, जिसे अक्सर राजस्थान का जलियाँवाला बाग कहा जाता है, किस तिथि को हुआ था?
(1) 13 अप्रैल 1919
(2) 17 नवंबर 1913
(3) 7 मार्च 1922
(4) 14 मई 1925
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. सूची-I (नेता) को सूची-II (संबंधित संगठन / घटना) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (नेता)
A. गोविंद गिरी
B. मोतीलाल तेजावत
C. नयनूराम शर्मा
D. मुनि मगन सागर
सूची II: (संबंधित संगठन / घटना)
i. एकी आंदोलन
ii. मीणा पुराण
iii. सम्प सभा
iv. हाड़ौती प्रजामंडल
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भीलों के बीच गोविंद गिरी के शुरुआती प्रयास राजनीतिक विद्रोह के बजाय सामाजिक और धार्मिक सुधारों पर अधिक केंद्रित थे।
कारण (R): उन्होंने भीलों से मदिरा त्यागने, मांस का सेवन बंद करने, चोरी छोड़ने और अपनी सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए शांतिपूर्ण कृषि अपनाने का आग्रह किया था।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. निम्नलिखित में से कौन सा गोविंद गिरी के नेतृत्व वाले भगत आंदोलन के सही विकासात्मक क्रम को दर्शाता है?
(1) सम्प सभा की स्थापना → सामाजिक सुधारों का प्रचार → मानगढ़ पहाड़ी पर जमावड़ा → मेवाड़ भील कोर द्वारा सैन्य कार्रवाई
(2) मानगढ़ पहाड़ी पर जमावड़ा → सम्प सभा की स्थापना → सामाजिक सुधारों का प्रचार → मेवाड़ भील कोर द्वारा सैन्य कार्रवाई
(3) सामाजिक सुधारों का प्रचार → मेवाड़ भील कोर द्वारा सैन्य कार्रवाई → सम्प सभा की स्थापना → मानगढ़ पहाड़ी पर जमावड़ा
(4) सम्प सभा की स्थापना → मेवाड़ भील कोर द्वारा सैन्य कार्रवाई → मानगढ़ पहाड़ी पर जमावड़ा → सामाजिक सुधारों का प्रचार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. 1913 के अंत में मानगढ़ पहाड़ी पर हजारों भीलों के एकत्र होने का प्रत्यक्ष कारण क्या था?
(1) ब्रिटिश रेजिडेंट के हस्तक्षेप के बिना पारंपरिक फसल उत्सव मनाना।
(2) ब्रिटिश सेना की छावनी पर सीधे आक्रमण के लिए एक संगठित सेना बनाना।
(3) राजपूताना राज्यों के ब्रिटिश एजेंट के साथ एक औपचारिक शांति संधि पर हस्ताक्षर करना।
(4) एक सामूहिक समारोह आयोजित करना और राज्य से अपनी शिकायतों के निवारण की मांग करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. गोविंद गिरी की सुधारवादी विचारधारा और भगत आंदोलन किस प्रमुख आध्यात्मिक नेता की शिक्षाओं से महत्वपूर्ण रूप से प्रेरित थे?
(1) स्वामी दयानंद सरस्वती
(2) स्वामी विवेकानंद
(3) राजा राममोहन राय
(4) संत दादू दयाल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. राजस्थान में जनजातीय आंदोलनों के संदर्भ में 'एकी' शब्द का मूल अर्थ क्या है?
(1) स्वतंत्रता
(2) क्रांति
(3) एकता
(4) अहिंसा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. भीलों के बीच हुए 'एकी आंदोलन' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका उद्देश्य सामंती शोषण का सामूहिक रूप से विरोध करने के लिए भीलों और गरासियों के बीच एकता स्थापित करना था।
II. एक बड़ा संकल्प अन्यायपूर्ण करों का भुगतान पूरी तरह से बंद करना और बेगार न करना था।
III. आंदोलन ने 'भीलस्तान' नामक एक अलग संप्रभु भील राज्य की स्थापना की कड़ी मांग की थी।
IV. इसने मदिरा के बहिष्कार और स्थानीय पंचायतों के माध्यम से विवादों को सुलझाने जैसे आंतरिक सामाजिक सुधारों पर बल दिया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. 1920 के दशक में प्रारंभ किए गए एकी आंदोलन के प्राथमिक उद्देश्य का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(1) मेवाड़ राज्य विधानसभा में आनुपातिक राजनीतिक प्रतिनिधित्व की मांग करना।
(2) विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार करके असहयोग आंदोलन का समर्थन करना।
(3) जनजातीय सरदारों के लिए वन उपज के विशेष व्यापारिक अधिकार सुरक्षित करना।
(4) सामंती शोषण और आंतरिक सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए जनजातीय समूहों को एकजुट करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. एकी आंदोलन के भौगोलिक विस्तार के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह कड़ाई से बीकानेर राज्य क्षेत्र की सीमाओं तक सीमित था।
(2) यह मेवाड़ में शुरू हुआ और ईडर तथा दांता जैसे पड़ोसी राज्यों में फैल गया।
(3) इसकी उत्पत्ति शेखावाटी क्षेत्र में हुई और यह मत्स्य राज्यों की ओर फैल गया।
(4) यह पूरी तरह से अजमेर-मेरवाड़ा क्षेत्र के शहरी केंद्रों पर आधारित था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. राज्य के अत्याचारों के विरुद्ध एकी आंदोलन में भीलों के साथ किस अन्य प्रमुख जनजातीय समुदाय ने सक्रिय रूप से भाग लिया था?
(1) सहरिया
(2) कथोड़ी
(3) गरासिया
(4) डामोर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. एकी आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: आंदोलन ने राज्य के अधिकारियों और जनजातीय हितों के साथ विश्वासघात करने वालों के विरुद्ध सामाजिक बहिष्कार की पद्धति अपनाई थी।
कथन II: आंदोलन पूरी तरह से शांतिपूर्ण रहा और राज्य की सेनाओं के साथ कभी भी इसका कोई हिंसक टकराव नहीं हुआ।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. एकी आंदोलन मुख्य रूप से मेवाड़ राज्य के किस भौगोलिक क्षेत्र में केंद्रित था, जो अपने सघन वनों और भारी जनजातीय जनसंख्या के लिए जाना जाता है?
(1) भोमट
(2) ऊपरमाल
(3) वागड़
(4) गोडवाड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. एकी आंदोलन की निम्नलिखित में से कौन सी मांग शेष से भिन्न है क्योंकि यह राज्य के विरुद्ध आर्थिक या राजनीतिक प्रतिरोध के बजाय आंतरिक सामाजिक सुधार से संबंधित है?
(1) भारी भू-राजस्व करों के भुगतान से इनकार।
(2) मदिरा और मांस से परहेज करने का संकल्प।
(3) अधिकारियों के लिए बलपूर्वक श्रम (बेगार) का बहिष्कार।
(4) मनमाने ढंग से लगाए गए वन उपज करों की अस्वीकृति।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

(1) बलवंत सिंह मेहता
(2) माणिक्य लाल वर्मा
(3) भूरेलाल बया
(4) (1) और (2) दोनों
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. जयपुर प्रजामंडल के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह राजस्थान का पहला प्रजामंडल था, जिसकी स्थापना मूल रुप से 1931 में कपूर चंद पाटनी ने की थी।
II. इसका पुनर्गठन 1936 में जमनालाल बजाज के मार्गदर्शन में किया गया था।
III. भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान, हीरालाल शास्त्री और मिर्जा इस्माइल के बीच 'जेंटलमैन समझौता' हुआ था।
IV. बाबा हरिश्चंद्र ने 'आजाद मोर्चा' का गठन किया क्योंकि उन्होंने जेंटलमैन समझौते का समर्थन किया था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल II और III
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. 1942 का ऐतिहासिक 'जेंटलमैन समझौता', जिसने जयपुर प्रजामंडल को आधिकारिक तौर पर भारत छोड़ो आंदोलन से बाहर रखा, किसके बीच हस्ताक्षरित हुआ था?
(1) जय नारायण व्यास और सर डोनाल्ड फील्ड
(2) माणिक्य लाल वर्मा और टी. विजयाराघवाचार्य
(3) जमनालाल बजाज और महाराजा सवाई मान सिंह II
(4) हीरालाल शास्त्री और सर मिर्जा इस्माइल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

101. भारत छोड़ो आंदोलन से अलग रहने के जयपुर प्रजामंडल के निर्णय से असंतुष्ट होकर किस नेता ने 'आजाद मोर्चा' नामक विद्रोही गुट का गठन किया था?
(1) हीरालाल शास्त्री
(2) टीकाराम पालीवाल
(3) बाबा हरिश्चंद्र
(4) दौलतमल भंडारी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

102. सूची-I (पुस्तिका/गीत) को सूची-II (संबंधित नेता) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पुस्तिका/गीत)
A. मेवाड़ का वर्तमान शासन
B. पोपाबाई की पोल
C. पंछीड़ा (गीत)
D. प्रतीक्षा नमो नमः (गीत)
सूची II: (संबंधित नेता)
i. माणिक्य लाल वर्मा
ii. जय नारायण व्यास
iii. हीरालाल शास्त्री
iv. माणिक्य लाल वर्मा (बिजोलिया के दौरान)
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

103. मेवाड़ प्रजामंडल की पहली कार्यकारिणी समिति के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) माणिक्य लाल वर्मा को अध्यक्ष और बलवंत सिंह मेहता को महासचिव नियुक्त किया गया था।
(2) महात्मा गांधी को मानद आजीवन अध्यक्ष नामित किया गया था।
(3) समिति पूरी तरह से मेवाड़ के महाराणा द्वारा मनोनीत की गई थी।
(4) बलवंत सिंह मेहता को अध्यक्ष और भूरेलाल बया को उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

104. 1942 के दौरान जयपुर के राजनीतिक परिदृश्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: आजाद मोर्चा ने सक्रिय रूप से प्रदर्शन आयोजित किए और अंग्रेजों के विरुद्ध भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया।
कथन II: हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व वाले आधिकारिक जयपुर प्रजामंडल ने भी साथ ही साथ सरकारी इमारतों पर हिंसक हमले शुरु किए थे।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

105. निम्नलिखित में से कौन सा नेता मेवाड़ प्रजामंडल से संबंधित नहीं है?
(1) माणिक्य लाल वर्मा
(2) भूरेलाल बया
(3) भंवरलाल सर्राफ
(4) रमेश चंद्र व्यास
(5) प्रश्न अनुत्तरित

106. पुनर्गठित जयपुर प्रजामंडल का पहला औपचारिक अधिवेशन जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में किस वर्ष आयोजित किया गया था?
(1) 1931
(2) 1936
(3) 1938
(4) 1942
(5) प्रश्न अनुत्तरित

आदिवासियों की ओर से मेवाड़ के महाराणा को प्रस्तुत 21 सूत्री मांग पत्र था।
कथन II: महाराणा द्वारा कई प्रमुख मांगों को सीधे तौर पर अस्वीकार करने के कारण एकी आंदोलन एक उग्र कर-बंदी अभियान में परिवर्तित हो गया।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. 20वीं सदी की शुरुआत में मीणा जनजातीय विद्रोह मौलिक रूप से किस दमनकारी औपनिवेशिक कानून के विरुद्ध एक प्रतिक्रिया थी?
(1) आपराधिक जनजाति अधिनियम, 1924
(2) वन अधिनियम, 1865
(3) वर्नाकुलर प्रेस अधिनियम, 1878
(4) रौलट अधिनियम, 1919
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. 1930 में लागू 'जरायम पेशा कानून' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसके तहत सभी वयस्क मीणा पुरुषों और महिलाओं के लिए स्थानीय पुलिस थाने में अपनी दैनिक उपस्थिति दर्ज कराना अनिवार्य था।
II. इसे राजनीतिक असंतोष को दबाने के लिए विशेष रूप से मारवाड़ राज्य में लाया गया था।
III. इसने मीणा समुदाय की गरिमा, स्वतंत्रता और आजीविका को गंभीर रूप से प्रभावित किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. राज्य के अत्याचारों के विरुद्ध समुदाय को सामाजिक और राजनीतिक रूप से संगठित करने के लिए 'मीणा क्षत्रिय महासभा' की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(1) 1924
(2) 1930
(3) 1933
(4) 1944
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. मीणाओं में गौरव की भावना और ऐतिहासिक चेतना जाग्रत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला धार्मिक और ऐतिहासिक ग्रंथ 'मीणा पुराण' किसके द्वारा लिखा गया था?
(1) बंसी धर शर्मा
(2) छोटूराम झझारिया
(3) मुनि मगन सागर
(4) ठक्कर बापा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. सूची-I (मीणा आंदोलन संगठन/घटना) को सूची-II (वर्ष) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (मीणा आंदोलन संगठन/घटना)
A. राजपूताना में आपराधिक जनजाति अधिनियम का लागू होना
B. जयपुर में जरायम पेशा कानून का अधिनियमन
C. मीणा क्षत्रिय महासभा की स्थापना
D. नीम का थाना में विशाल मीणा सम्मेलन
सूची II: (वर्ष)
i. 1944
ii. 1933
iii. 1930
iv. 1924
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. 1944 के नीम का थाना सम्मेलन के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) मुनि मगन सागर के नेतृत्व में हुआ जमावड़ा जहाँ 'जयपुर राज्य मीणा सुधार समिति' का गठन किया गया था।
(2) जरायम पेशा कानून को आधिकारिक रूप से समाप्त करने के लिए विशेष रूप से ब्रिटिश रेजिडेंट द्वारा बुलाया गया था।
(3) इसने जयपुर राज्य की सैन्य सेनाओं के विरुद्ध मीणा जनजाति के हिंसक विद्रोह को चिह्नित किया।
(4) वह स्थान जहाँ मीणाओं ने आधिकारिक तौर पर अपने आंदोलन का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में विलय कर दिया था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. निम्नलिखित में से कौन सा कानून या व्यवस्था राजस्थान में मीणा समुदाय की शिकायतों से सीधे तौर पर संबंधित नहीं थी?
(1) आपराधिक जनजाति अधिनियम
(2) दादर प्रथा
(3) जरायम पेशा कानून
(4) चौकीदारी प्रथा विवाद
(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. किस वर्ष अपमानजनक जरायम पेशा कानून को अंततः पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया, जिससे लंबे समय से चले आ रहे मीणा संघर्ष का अंत हुआ?
(1) 1947
(2) 1950

65. मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में संगठित एकी आंदोलन आधिकारिक रूप से 1921 में मेवाड़ के किस सांस्कृतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान से प्रारंभ किया गया था?
(1) हल्दीघाटी
(2) मातृकुंडिया
(3) ऋषभदेव
(4) गोगुंदा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. मोतीलाल तेजावत द्वारा तैयार की गई 'मेवाड़ की पुकार' में सम्मिलित निम्नलिखित मांगों पर विचार कीजिए:
I. बेगार की प्रथा का पूर्ण उन्मूलन।
II. भू-राजस्व की दरों में कमी।
III. वन संसाधनों के उपयोग के भीलों के पारंपरिक अधिकारों की बहाली।
IV. कृषि फसलों को नष्ट करने वाले जंगली जानवरों के शिकार की अनुमति।
V. महाराणा फतेह सिंह का तत्काल पदत्याग।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. एकी आंदोलन के दौरान वह दुखद हत्याकांड कहाँ हुआ था जहाँ मेजर सटन के नेतृत्व में ब्रिटिश भारतीय सेना ने हजारों भीलों की शांतिपूर्ण सभा पर गोलियाँ चलाई थीं?
(1) 1923 में डाबी गाँव
(2) 1913 में मानगढ़ पहाड़ी
(3) 1922 में नीमड़ा गाँव
(4) 1923 में गोविंदपुरा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. सूची-I (घटना) को सूची-II (वर्ष) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (घटना)
A. सम्प सभा की स्थापना
B. मानगढ़ हत्याकांड
C. मातृकुंडिया में एकी आंदोलन की शुरुआत
D. नीमड़ा हत्याकांड
सूची II: (वर्ष)
i. 1922
ii. 1921
iii. 1913
iv. 1883
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. राजस्थान में जनजातीय आंदोलनों से संबंधित निम्नलिखित प्रमुख घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. 'मेवाड़ की पुकार' का प्रारूप तैयार करना और उसे प्रस्तुत करना
II. मानगढ़ पहाड़ी पर हत्याकांड
III. मातृकुंडिया से एकी आंदोलन की शुरुआत
IV. महात्मा गांधी के परामर्श पर मोतीलाल तेजावत का आत्मसमर्पण
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) II, III, I, IV
(2) II, I, III, IV
(3) III, I, II, IV
(4) I, II, III, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. मोतीलाल तेजावत को जनजातीय हितों के प्रति उनके अद्वितीय समर्पण और भीलों के बीच उनकी अत्यधिक लोकप्रियता के कारण स्नेह से निम्नलिखित में से कौन सी उपाधि दी गई थी?
(1) क्षेत्र के लोकनायक
(2) बावजी और मेवाड़ का गांधी
(3) शेर-ए-राजस्थान नेता
(4) मारवाड़ का गांधी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. मोतीलाल तेजावत के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने झाडोल ठिकाने में एक कामदार के रूप में अपना कार्य प्रारंभ किया था।
(2) वे जन्म से ओसवाल बनिया समुदाय के थे।
(3) उन्होंने 21 सूत्री मांग पत्र संकलित किया था जिसे 'मेवाड़ की पुकार' के रूप में जाना जाता है।
(4) उनका जन्म डूंगरपुर राज्य के एक प्रमुख भील परिवार में हुआ था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. 1929 तक मोतीलाल तेजावत के निरंतर भूमिगत प्रतिरोध का परिणाम क्या था?
(1) उन्हें पुलिस ने खेड़ब्रह्मा में पकड़कर मेवाड़ राज्य को सौंप दिया था।
(2) उन्होंने उदयपुर में एक समानांतर जनजातीय सरकार सफलतापूर्वक स्थापित की थी।
(3) वे भीलों के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने हेतु सोवियत रूस चले गए थे।
(4) ब्रिटिश सरकार ने उन्हें केंद्रीय विधानसभा में जनजातीय क्षेत्रों का आधिकारिक प्रतिनिधि नियुक्त किया था।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. 'मेवाड़ की पुकार' के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: मेवाड़ की पुकार आंदोलनकारी किसानों और

(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. मारवाड़ प्रजामंडल, जो राजस्थान में स्थापित होने वाले सबसे शुरुआती प्रजामंडलों में से एक था, की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(1) 1931
(2) 1934
(3) 1936
(4) 1938
(5) प्रश्न अनुत्तरित

91. निम्नलिखित नेताओं पर विचार कीजिए:
I. जय नारायण व्यास
II. भंवरलाल सर्राफ
III. अभय मल जैन
IV. छगनराज चौपासनीवाला
V. माणिक्य लाल वर्मा
उपरोक्त में से कौन से नेता मारवाड़ प्रजामंडल या मारवाड़ लोक परिषद से जुड़े थे?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. मारवाड़ प्रजामंडल की औपचारिक स्थापना से पहले, जोधपुर राज्य में राजनीतिक और सामाजिक जागरूकता बढ़ाने की दिशा में किस प्रमुख संगठन ने सक्रिय रूप से कार्य किया?
(1) मेवाड़ हितकारिणी सभा
(2) मारवाड़ हितकारिणी सभा
(3) राजपूताना सेवा संघ
(4) विद्या प्रचारिणी सभा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. अन्याय के विरुद्ध विरोध करने के लिए मारवाड़ क्षेत्र के राजनीतिक कार्यकर्ताओं द्वारा किस वर्ष 'कृष्णा दिवस' व्यापक रूप से मनाया गया था?
(1) 1931
(2) 1936
(3) 1942
(4) 1945
(5) प्रश्न अनुत्तरित

94. सूची-I (प्रजामंडल) को सूची-II (प्रमुख संस्थापक / अध्यक्ष) के साथ सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रजामंडल)
A. मारवाड़ प्रजामंडल
B. मेवाड़ प्रजामंडल
C. जयपुर प्रजामंडल
D. बूंदी प्रजामंडल
सूची II: (प्रमुख संस्थापक / अध्यक्ष)
i. कपूर चंद पाटनी / जमनालाल बजाज
ii. कांति लाल
iii. भंवरलाल सर्राफ
iv. बलवंत सिंह मेहता
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. मारवाड़ के राजनीतिक घटनाक्रम के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) मारवाड़ प्रजामंडल को ब्रिटिश अधिकारियों का भारी समर्थन प्राप्त था जो इसकी गतिविधियों के लिए धन देते थे।
(2) मारवाड़ लोक परिषद की स्थापना 1938 में रणछोड़ दास गट्टानी के नेतृत्व में हुई थी।
(3) जय नारायण व्यास ने जोधपुर राज्य के कुशासन को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
(4) 'पोपाबाई की पोल' मारवाड़ के कुशासन पर प्रकाश डालने वाली एक तीखी पुस्तिका थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. जय नारायण व्यास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: उन्होंने जोधपुर राज्य प्रशासन के भ्रष्टाचार और कुशासन को उजागर करने के लिए विवादास्पद पुस्तिकाएं 'मारवाड़ की अवस्था' और 'पोपाबाई की पोल' लिखी थीं।
कथन II: वे लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन में राजपूताना राज्यों के एकमात्र प्रतिनिधि थे।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. मारवाड़ प्रजामंडल द्वारा 'कृष्णा दिवस' मनाए जाने का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) भगवान कृष्ण की जयंती मनाना और हिंदू एकता की भावना को बढ़ावा देना।
(2) कृष्णा नामक महिला के अपहरण और राज्य द्वारा न्याय देने में विफलता का विरोध करना।
(3) मारवाड़ राजघराने के संस्थापक की आधिकारिक पुण्यतिथि को चिह्नित करना।
(4) क्षेत्र में कृषि उपज पर नए कर लगाए जाने का विरोध करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

98. मेवाड़ प्रजामंडल की औपचारिक स्थापना 24 अप्रैल 1938 को किसके नेतृत्व और पहल के तहत हुई थी?

(3) 1952
(4) 1956
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. राजस्थान की रियासतों में प्रजामंडल आंदोलनों की स्थापना के पीछे प्राथमिक राजनीतिक उद्देश्य क्या था?
(1) शासकों के संरक्षण में नागरिक स्वतंत्रता और उत्तरदायी सरकार के लिए संघर्ष करना।
(2) राजशाही को तत्काल उखाड़ फेंकने और एक नए साम्यवादी राज्य की स्थापना की मांग करना।
(3) रियासतों को सीधे ब्रिटिश प्रांतों के प्रशासन में एकीकृत करना।
(4) राज्य प्रशासनों में स्थानीय कुलीनों के लिए विशेष रोजगार अधिकार सुरक्षित करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों के उदय में योगदान देने वाले निम्नलिखित कारकों पर विचार कीजिए:
I. लंबे समय तक चले किसान और जनजातीय आंदोलनों द्वारा उत्पन्न जन जागृति।
II. हरिपुरा अधिवेशन के बाद रियासतों के प्रति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की परिवर्तित नीति।
III. अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना और गतिविधियाँ।
IV. राष्ट्रवादी प्रेस और क्रांतिकारी साहित्य की भूमिका।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. 'राजपूताना मध्य भारत सभा' के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) एक उग्रवादी संगठन जो विशेष रूप से अंग्रेजों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष में विश्वास करता था।
(2) राष्ट्रीय कांग्रेस के बढ़ते प्रभाव का सामना करने के लिए महाराणा फतेह सिंह द्वारा स्थापित।
(3) एक संगठन जिसने अपनी सदस्यता केवल सामंती शासकों और जागीरदारों तक सीमित रखी थी।
(4) राजपूताना और मध्य भारत में राजनीतिक जागृति के समन्वय के लिए 1918 में दिल्ली में स्थापित।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): प्रजामंडल आंदोलनों को शुरुआती चरण में रियासतों के शासकों की ओर से कठोर दमन का सामना करना पड़ा।
कारण (R): शासक नागरिक स्वतंत्रता और उत्तरदायी सरकार की मांग को अपनी निरंकुश शक्ति और सामंती विशेषाधिकारों के लिए सीधा संकट मानते थे।
उपरोक्त दो कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

86. राष्ट्रीय स्तर पर प्रजामंडल गतिविधियों के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली संस्था 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद' की स्थापना किस वर्ष की गई थी?
(1) 1920
(2) 1927
(3) 1935
(4) 1938
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1938 के हरिपुरा अधिवेशन, जिसने आधिकारिक तौर पर रियासतों में प्रजामंडलों की स्थापना की अनुमति दी थी, की अध्यक्षता किसने की थी?
(1) जवाहरलाल नेहरु
(2) महात्मा गांधी
(3) सरदार वल्लभभाई पटेल
(4) सुभाष चंद्र बोस
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. राजस्थान के राजनीतिक परिदृश्य पर हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन (1938) में पारित प्रस्ताव का प्रत्यक्ष प्रभाव क्या था?
(1) रियासतों में कांग्रेस के गैर-हस्तक्षेप की नीति समाप्त हुई, जिससे प्रजामंडलों के गठन में तीव्रता आई।
(2) इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने राजपूताना से अपने राजनीतिक रेजिडेंट्स को पूरी तरह हटा लिया।
(3) इसके कारण ब्रिटिश अधिकारियों के विरुद्ध राज्य की सेनाओं द्वारा तत्काल सशस्त्र विद्रोह हुआ।
(4) इसने राजस्थान के शासकों को चुनावों के पक्ष में स्वेच्छा से पद छोड़ने के लिए प्रेरित किया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. निम्नलिखित में से कौन सी पद्धति शेष से भिन्न है क्योंकि इसे प्रजामंडल आंदोलनों द्वारा उत्तरदायी सरकार के संघर्ष में सामान्यतः नहीं अपनाया गया था?
(1) शांतिपूर्ण जनसभाएं आयोजित करना और जुलूस निकालना
(2) पर्चे प्रकाशित करना और राज्य के अत्याचारों को उजागर करने के लिए प्रेस का उपयोग करना
(3) राज्य के शस्त्रागारों के विरुद्ध हिंसक सशस्त्र छापामार युद्ध प्रारंभ करना
(4) हरिजन उत्थान और खादी को बढ़ावा देने जैसे रचनात्मक कार्य करना

107. स्वतंत्रता संग्राम और प्रजामंडल आंदोलनों के दौरान बंदी बनाई जाने वाली राजस्थान की पहली महिला राजनीतिक कार्यकर्ता होने का ऐतिहासिक गौरव किसे प्राप्त है?
(1) नारायणी देवी वर्मा
(2) रमा देवी
(3) रतन शास्त्री
(4) अंजना देवी चौधरी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

108. नारायणी देवी वर्मा के योगदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे मेवाड़ के प्रमुख नेता माणिक्य लाल वर्मा की पत्नी थीं।
II. वे 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जेल गई थीं।
III. उन्होंने महिला शिक्षा और उत्थान पर ध्यान केंद्रित करने के लिए 1944 में भीलवाड़ा में 'महिला आश्रम' की स्थापना की थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

109. महिला स्वतंत्रता सेनानी और उनके द्वारा संबद्ध मुख्य क्षेत्र/प्रजामंडल के सही सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) रमा देवी - मारवाड़ प्रजामंडल समूह
(2) सावित्री देवी भाटी - मेवाड़ प्रजामंडल
(3) महिमा देवी किंकर - जोधपुर आंदोलन
(4) भगवती देवी - बीकानेर प्रजामंडल इकाई
(5) प्रश्न अनुत्तरित

110. सावित्री देवी भाटी, एक साहसी महिला जिन्होंने महिलाओं को संगठित करने और विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, किस रियासत में प्रमुख रूप से सक्रिय थीं?
(1) जयपुर
(2) मेवाड़
(3) कोटा
(4) जोधपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

111. निम्नलिखित प्रतिष्ठित महिलाओं में से कौन राजस्थान के भीतर स्वदेशी प्रजामंडल या किसान आंदोलनों का सीधा हिस्सा नहीं थीं?
(1) अरुणा आसफ अली
(2) अंजना देवी चौधरी
(3) रतन शास्त्री
(4) रमा देवी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

112. राजस्थान के राजनीतिक आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: किसान और प्रजामंडल आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी ने राजपूताना में रूढ़िवादी पर्दा प्रथा को तोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
कथन II: महिलाएँ पूरी तरह से भूमिगत गतिविधियों तक सीमित थीं और उन्हें राज्य के अधिकारियों द्वारा कभी भी कारावास या पुलिस क्रूरता का सामना नहीं करना पड़ा।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

113. निम्नलिखित महिला नेताओं पर विचार कीजिए:
I. अंजना देवी चौधरी
II. नारायणी देवी वर्मा
III. रमा देवी
IV. महिमा देवी किंकर
V. रतन शास्त्री
उपरोक्त में से किन महिलाओं ने राजस्थान में जन जागृति और राजनीतिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण योगदान दिया?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

114. प्रजामंडल आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी के प्रमुख प्रभाव का सबसे उपयुक्त मूल्यांकन क्या है?
(1) इसने राष्ट्रवादी आधार को व्यापक बनाया और राजनीतिक अधिकारों को महिलाओं के सामाजिक सुधारों से जोड़ा।
(2) इसके कारण राज्य विधानसभाओं में महिलाओं को तुरंत 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया।
(3) इसके कारण गंभीर प्रतिक्रिया हुई जहाँ प्रजामंडलों ने आधिकारिक तौर पर महिलाओं को राजनीति से प्रतिबंधित कर दिया।
(4) इसके परिणामस्वरूप मेवाड़ राज्य में पूर्ण महिला सशस्त्र क्रांतिकारी बटालियन का गठन हुआ।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

115. राष्ट्रीय नेता सुभाष चंद्र बोस ने 1938 में राजस्थान की किस रियासत का भ्रमण किया था, जिससे स्थानीय प्रजामंडल कार्यकर्ताओं का मनोबल काफी बढ़ा और उन्होंने युवाओं से स्वतंत्रता संग्राम में सम्मिलित होने का आग्रह किया था?
(1) जयपुर
(2) उदयपुर
(3) जोधपुर
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

न केवल राजस्थान, अपितु पूरे भारत के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान और राष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

10. (2) साधु सीताराम दास → विजय सिंह पथिक → माणिक्य लाल वर्मा
बिजोलिया आंदोलन के प्रथम चरण का नेतृत्व 1897 से साधु सीताराम दास ने किया, जिन्होंने किसानों को संगठित करना प्रारंभ किया। द्वितीय चरण में 1916 से विजय सिंह पथिक ने नेतृत्व संभाला और इसे राष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता दिलाई। अंतिम चरण में माणिक्य लाल वर्मा ने कुशल कूटनीति से किसानों की मांगों को स्वीकार कराया और 1941 में आंदोलन का सफल समापन किया। नेतृत्व का यह क्रम आंदोलन की क्रमिक परिपक्वता और सफलता की गाथा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

11. (2) 1897 से 1941
बिजोलिया किसान आंदोलन 1897 में प्रारंभ होकर 1941 तक कुल 44 वर्षों तक अनवरत चला। यह भारत के इतिहास में सर्वाधिक लंबी अवधि तक चलने वाला एकमात्र पूर्णतः अहिंसक किसान संघर्ष है। इस विस्तृत कालखंड में आंदोलन ने कई चरणों में विकास किया और विभिन्न महान नेताओं के मार्गदर्शन में सफलता प्राप्त की। इसकी सफलता ने राजस्थान की अन्य रियासतों के किसानों को भी अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करने और सामंती शोषण के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा दी।

12. (3) केवल IV
बिजोलिया आंदोलन का सूत्रपात महाराणा फतेह सिंह के समय हुआ था, जब राव गोविंद दास की मृत्यु के पश्चात नए जागीरदार ने दमनकारी नीतियां अपनाईं। किसानों ने अपनी समस्याओं हेतु नानजी और ठाकरी पटेल को महाराणा के पास भेजा था। यह आंदोलन पूर्णतः अहिंसक और सत्याग्रह पर आधारित था। इसमें किसी भी प्रकार की छापामार युद्ध नीति अथवा हिंसा का प्रयोग नहीं किया गया था। अहिंसा का यही मार्ग इस लंबे संघर्ष की सबसे बड़ी शक्ति और सफलता का आधार बना।

13. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
बिजोलिया आंदोलन भारतीय इतिहास का सबसे लंबा और अहिंसक किसान संघर्ष था, जिसने किसानों को संगठित करने का नवीन मार्ग प्रदर्शित किया। यद्यपि इस आंदोलन ने किसानों को कई महत्वपूर्ण रियायतें दिलवाईं और उनकी स्थिति में सुधार किया, किंतु इसने 1922 तक जागीरदारी प्रथा को पूर्णतः समाप्त नहीं किया था। जागीरदारी प्रथा का वास्तविक अंत स्वतंत्रता के पश्चात ही संभव हो सका। यह आंदोलन सामंती शोषण के विरुद्ध एक सशक्त स्वर बनकर उभरा, जिसने भविष्य की राजनीति को परिवर्तित कर दिया।

14. (4) राव कृष्ण सिंह
1903 में बिजोलिया के जागीरदार राव कृष्ण सिंह ने चँवरी नामक एक नवीन और अपमानजनक कर आरोपित किया था। इस कर के अंतर्गत प्रत्येक किसान को अपनी पुत्री के विवाह पर पाँच रुपये की राशि ठिकाने को देनी पड़ती थी। उस समय यह राशि अत्यंत प्रभावी थी और इस कर ने किसानों की सामाजिक परंपराओं पर प्रहार किया। इस दमनकारी नीति के कारण किसानों में भारी असंतोष व्याप्त हो गया और उन्होंने सामूहिक रूप से दो वर्षों तक कृषि कार्य न करने का निर्णय लिया था।

15. (1) I, II, III, IV
बिजोलिया की घटनाओं का क्रम 1903 में चँवरी कर के आरोपण से प्रारंभ हुआ, जिसके पश्चात 1906 में तलवार बँधाई कर लागू किया गया। 1917 में विजय सिंह पथिक ने किसानों के संगठन हेतु ऊपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना की। अंततः 1941 में माणिक्य लाल वर्मा के कुशल नेतृत्व में एक समझौते के माध्यम से इस लंबे संघर्ष का समापन हुआ। यह क्रम प्रदर्शित करता है कि कैसे स्थानीय करों के विरोध से प्रारंभ हुआ आंदोलन धीरे-धीरे एक सशक्त और संगठित राजनीतिक आंदोलन में परिवर्तित हो गया।

16. (2) जय नारायण व्यास
साधु सीताराम दास, विजय सिंह पथिक और हरि भाई किंकर प्रत्यक्ष रूप से बिजोलिया किसान आंदोलन के विभिन्न चरणों और संगठन से गहनता से जुड़े थे। इसके विपरीत, जय नारायण व्यास का मुख्य कार्यक्षेत्र जोधपुर रियासत थी और वे मुख्य रूप से मारवाड़ प्रजामंडल तथा वहां के किसान आंदोलनों के नेतृत्व के लिए विख्यात हैं। यद्यपि सभी नेता राजस्थान की जागृति हेतु समर्पित थे, किंतु बिजोलिया के विशिष्ट घटनाक्रम में जय नारायण व्यास की भूमिका अन्य तीन नेताओं की तुलना में प्रत्यक्ष नहीं थी।

17. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
बिजोलिया आंदोलन के प्रथम चरण का नेतृत्व साधु सीताराम दास ने किया, जबकि द्वितीय चरण में विजय सिंह पथिक मुख्य चेहरा बने। तृतीय चरण की गतिविधियों को जमनालाल बजाज ने निर्देशित किया और गणेश शंकर विद्यार्थी ने अपने समाचार पत्र के माध्यम से इसे राष्ट्रीय स्तर पर प्रसारित किया। इन नेताओं के समन्वय ने ही स्थानीय किसान समस्याओं को एक विशाल राष्ट्रीय मुद्दे के रूप में स्थापित किया। इस सहयोग के कारण ही ब्रिटिश सरकार और मेवाड़ प्रशासन को किसानों की मांगों के सम्मुख झुकना पड़ा था।

18. (1) भूप सिंह गुर्जर
महान क्रांतिकारी और किसान नेता विजय सिंह पथिक का जन्म उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जनपद में हुआ था और उनका मूल नाम भूप सिंह गुर्जर था। वे सशस्त्र क्रांति के माध्यम से राष्ट्र को स्वतंत्र करना चाहते थे, किंतु परिस्थितियों के कारण उन्होंने राजस्थान को अपना कार्यक्षेत्र बनाया। ब्रिटिश गिरफ्तारी से बचने के लिए उन्होंने अपना छद्म नाम विजय सिंह पथिक रख लिया था। उन्होंने बिजोलिया आंदोलन को नवीन दिशा प्रदान की और राजस्थान सेवा संघ जैसी संस्थाओं के माध्यम से जन-जागृति का प्रसार किया।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) फसल की उपज के आधार पर भू-राजस्व के निर्धारण और संग्रह की प्रणालियाँ
राजस्थान में लाटा और कुंता राजस्व निर्धारण की दो प्रमुख प्रणालियाँ थीं। लाटा पद्धति के अंतर्गत फसल की कटाई के पश्चात अनाज के ढेर के आधार पर कर निर्धारित किया जाता था। इसके विपरीत, कुंता प्रणाली में खड़ी फसल को देखकर ही राजस्व का अनुमान लगाया जाता था। इन पद्धतियों में अधिकारियों की स्वेच्छाचारिता के कारण किसानों पर अत्यधिक वित्तीय भार पड़ता था, जो कालांतर में किसान आंदोलनों का आधार बना।

2. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान की रियासतों में बेगार प्रथा प्रचलित थी, जिसमें किसानों और पिछड़ी जातियों से बिना किसी पारिश्रमिक के कठिन शारीरिक श्रम कराया जाता था। यह व्यवस्था अत्यंत शोषणकारी थी और जागीरदारों द्वारा इसका व्यापक उपयोग किया जाता था। किसानों के आत्म-सम्मान और आजीविका पर इस निरंतर प्रहार ने उनमें भारी असंतोष उत्पन्न किया। इसी कारण बेगार प्रथा राज्य में हुए विभिन्न किसान विद्रोहों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राथमिक कारण सिद्ध हुई।

3. (3) किसानों पर लगाए गए विभिन्न मनमाने उपकर और अवैध वसूली
स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान में लाग-बाग उन विभिन्न प्रकार के मनमाने करों और उपकरों को कहा जाता था, जो मुख्य भू-राजस्व के अतिरिक्त वसूले जाते थे। जागीरदार अपने व्यक्तिगत और प्रशासनिक व्ययों के लिए किसानों पर यह अनुचित वित्तीय भार डालते थे। इसमें लगभग 80 से अधिक प्रकार की वसूली सम्मिलित थी। इन करों की अत्यधिक दर और निरंतर वृद्धि ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पंगु बना दिया और किसानों को संगठित विद्रोह के लिए विवश किया।

4. (4) किसान की पुत्री के विवाह के अवसर पर
चँवरी कर बिजोलिया के राव कृष्ण सिंह द्वारा 1903 में आरोपित किया गया एक अत्यंत विवादास्पद कर था। इसके अंतर्गत प्रत्येक किसान को अपनी पुत्री के विवाह के अवसर पर पाँच रुपये की राशि ठिकाने के कोष में जमा करनी पड़ती थी। यह कर न केवल आर्थिक रूप से बोझिल था, बल्कि किसानों की सामाजिक गरिमा के विरुद्ध भी था। इस दमनकारी नीति के विरोध में किसानों ने दो वर्षों तक अपनी भूमि पर कृषि कार्य बंद कर दिया था।

5. (1) केवल I और II
राजस्थान में किसान असंतोष का मुख्य कारण लाग-बाग के नाम पर वसूले जाने वाले अत्यधिक कर और बिना पारिश्रमिक के कराया जाने वाला बेगार श्रम था। किसानों को अपनी उपज का बड़ा भाग जागीरदारों को देना पड़ता था, जिससे वे ऋण के जाल में फंस जाते थे। ब्रिटिश सत्ता ने किसानों की मांगों का समर्थन करने के स्थान पर सदैव दमनकारी शासकों का पक्ष लिया। इसी कारण किसानों ने अपनी समस्याओं के समाधान हेतु स्वयं को संगठित करना प्रारंभ किया।

6. (2) जागीरदारों द्वारा लोकतांत्रिक चुनावी प्रणालियों की शुरुआत
राजस्थान की रियासतों में किसान विद्रोहों के प्रमुख कारणों में भू-राजस्व की उच्च दरें और तलवार बँधाई जैसे कठोर उत्तराधिकार शुल्क सम्मिलित थे। इसके अतिरिक्त, ब्रिटिश अधिकारियों का ग्रामीण जीवन में बढ़ता हस्तक्षेप भी असंतोष का कारण था। जागीरदारों ने कभी भी लोकतांत्रिक प्रणालियों या चुनावों का सूत्रपात नहीं किया, अपितु वे अपनी निरंकुश सत्ता बनाए रखना चाहते थे। अतः लोकतांत्रिक सुधारों का अभाव ही जन-जागृति और आंदोलनों का वास्तविक आधार बना था।

7. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
चँवरी कर पुत्री के विवाह पर लिया जाता था, जबकि तलवार बँधाई नए जागीरदार के पदभार ग्रहण करने पर लगने वाला शुल्क था। लाटा कटी हुई फसलों के आधार पर राजस्व आकलन की विधि थी और बेगार का अर्थ बिना भुगतान के श्रम करना था। ये सभी शब्द राजस्थान के सामंती कराधान और शोषण की जटिल व्यवस्था को प्रदर्शित करते हैं। इन विभिन्न करों के भार ने किसानों की आर्थिक स्थिति को अत्यंत दयनीय बना दिया, जिससे उनमें विद्रोह की भावना जागृत हुई।

8. (1) एक उत्तराधिकार शुल्क जो नए जागीरदार द्वारा शासक को दिया जाता था, जिसका भार किसानों पर पड़ता था।
तलवार बँधाई एक सामंती उत्तराधिकार कर था, जो नए जागीरदार द्वारा राज्य के शासक को अपनी नियुक्ति के समय देना होता था। सैद्धांतिक रूप से यह शुल्क जागीरदार को स्वयं वहन करना चाहिए था, किंतु वे इसका पूर्ण आर्थिक भार करों के रूप में किसानों पर डाल देते थे। 1906 में बिजोलिया में पृथ्वी सिंह द्वारा इस कर को कठोरतापूर्वक वसूलने के कारण किसानों में भारी रोष उत्पन्न हुआ, जिसने किसान आंदोलन को नई ऊर्जा प्रदान की।

9. (3) धाकड़
बिजोलिया किसान आंदोलन मुख्य रूप से धाकड़ जाति के किसानों द्वारा संचालित किया गया था। यह समुदाय अपनी कृषि कुशलता और संघर्षशील प्रवृत्ति के लिए विख्यात था। धाकड़ किसानों ने जागीरदारों के अत्याचारों के विरुद्ध अभूतपूर्व एकता का प्रदर्शन किया और 44 वर्षों तक अहिंसक संघर्ष जारी रखा। उनके संगठित विरोध और त्याग ने इस आंदोलन को

नामक दो साहसी धाकड़ किसान घटनास्थल पर ही शहीद हो गए। उनकी इस शहादत ने आंदोलन की ज्वाला को और अधिक तीव्र कर दिया। राजस्थान के किसान आंदोलनों के इतिहास में इन दोनों बलिदानियों का नाम अत्यंत श्रद्धा और गौरव के साथ स्मरण किया जाता है।

29. (3) बेगूँ के रावत अनूप सिंह और राजस्थान सेवा संघ के बीच हुआ समझौता।
बेगूँ किसान आंदोलन के दौरान किसानों के दबाव में आकर वहां के रावत अनूप सिंह ने राजस्थान सेवा संघ के साथ एक समझौता किया था, जिसमें लगान कम करने और बेगार समाप्त करने का प्रावधान था। मेवाड़ सरकार और ब्रिटिश अधिकारियों ने इस समझौते को क्रांतिकारी विचारों से प्रेरित मानते हुए 'बोल्शेविक समझौते' की संज्ञा दी और इसे अवैध घोषित कर दिया। इसके परिणामस्वरुप अनूप सिंह को नजरबंद कर दिया गया और बेगूँ में सीधा मुंसमात प्रशासन लागू कर दिया गया ताकि आंदोलन का दमन किया जा सके।

30. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
ट्रेंच आयोग की स्थापना बेगूँ ठिकाने के किसानों और ठाकुर के मध्य चल रहे विवादों की जाँच और समाधान हेतु की गई थी। यद्यपि यह आयोग पूर्णतः पक्षपाती था और इसने किसानों की वास्तविक समस्याओं की अनदेखी की। जब किसानों ने इस आयोग का बहिष्कार किया और गोविंदपुरा में अपनी सभा जारी रखी, तो ट्रेंच ने स्वयं सेना को उन पर गोली चलाने का आदेश दिया। इस घटना ने प्रशासन के क्रूर स्वरुप को उजागर किया और किसानों के संकल्प को और अधिक सुदृढ़ बना दिया।

31. (1) राज्य को राजस्व की पूर्ण हानि और अन्य क्षेत्रों के लिए एक खतरनाक उदाहरण बनने का भय था।
मेवाड़ प्रशासन का मानना था कि यदि बेगूँ के किसानों के साथ हुआ समझौता स्वीकार कर लिया गया, तो अन्य ठिकानों के किसान भी विद्रोह कर देंगे, जिससे राज्य की संपूर्ण राजस्व व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी। उन्हें भय था कि राजस्थान सेवा संघ जैसे संगठनों का प्रभाव बढ़ने से सामंती सत्ता दुर्बल हो जाएगी। इसे एक खतरनाक मिसाल मानते हुए उन्होंने समझौते को बोल्शेविक क्रांति के समान घोषित किया। इस अस्वीकृति का उद्देश्य किसानों के मनोबल को तोड़ना और सामंती विशेषाधिकारों की रक्षा करना था।

32. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
बेगूँ आंदोलन में रुपा जी और कृपा जी ने अपने प्राणों की आहुति दी, जबकि बूंदी में नानक जी भील और देवा गुर्जर शहीद हुए। मानगढ़ पहाड़ी पर 1500 से अधिक निर्दोष आदिवासियों का सामूहिक नरसंहार हुआ और नीमूचाणा में सीता देवी जैसे कार्यकर्ताओं ने अदम्य साहस प्रदर्शित किया। ये सभी नाम राजस्थान के स्वतंत्रता संघर्ष में किसानों और आदिवासियों के महान त्याग के प्रतीक हैं। इन बलिदानों ने ही राजस्थान की रियासतों में सदियों पुराने सामंती शासन की नींव को हिलाने और जन-चेतना जागृत करने का कार्य किया।

33. (2) नानक जी भील
रामनारायण चौधरी ने बेगूँ आंदोलन का मुख्य नेतृत्व किया था, जबकि विजय सिंह पथिक इसके मार्गदर्शक और रणनीतिकार थे। रावत अनूप सिंह बेगूँ के वह जागीरदार थे, जिन्होंने किसानों के साथ समझौता करने का प्रयास किया था। इसके विपरीत, नानक जी भील का संबंध बूंदी रियासत के बरड़ किसान आंदोलन से था, जहाँ वे डाबी हत्याकांड के दौरान शहीद हुए थे। यद्यपि सभी का उद्देश्य शोषण का विरोध करना था, किंतु भौगोलिक और घटनाक्रम के आधार पर नानक जी भील बेगूँ के घटनाक्रम के अंग नहीं थे।

34. (1) बरड़ किसान आंदोलन
बूंदी रियासत के पश्चिमी पथरीले भाग को बरड़ कहा जाता है, जहाँ निवास करने वाले किसानों ने प्रशासन के विरुद्ध कठोर संघर्ष किया था। इसी भौगोलिक क्षेत्र के नाम पर बूंदी किसान आंदोलन को ऐतिहासिक रूप से 'बरड़ किसान आंदोलन' के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ के किसानों ने बेगार प्रथा और लगान की उच्च दरों के विरुद्ध राजस्थान सेवा संघ के नेतृत्व में स्वर मुखर किया था। यह क्षेत्र अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों और किसानों के संघर्षशील स्वभाव के कारण आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण केंद्र बनकर उभरा था।

35. (2) केवल III
बूंदी का आंदोलन पंडित नयनूराम शर्मा के नेतृत्व में अत्यंत व्यवस्थित रीति से संचालित किया गया था। डाबी गाँव में पुलिस द्वारा की गई गोलीबारी इस आंदोलन की सबसे दुखद और महत्वपूर्ण घटना थी, जिसमें निर्दोष किसानों ने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया था। इस संघर्ष के परिणामस्वरुप राज्य प्रशासन को झुकना पड़ा और किसानों को लगान में छूट तथा बेगार से मुक्ति जैसी कई महत्वपूर्ण रियायतें प्रदान की गई थीं। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि आंदोलन विफल रहा, क्योंकि इसने अपनी अधिकांश मांगों को मनवा लिया था।

36. (2) 2 अप्रैल 1923
2 अप्रैल 1923 को बूंदी रियासत के डाबी गाँव में किसानों की एक विशाल जनसभा आयोजित की गई थी। इस शांतिपूर्ण सभा पर पुलिस अधीक्षक इकराम हुसैन के आदेश पर गोलियाँ चलाई गईं। इस हिंसक घटना में नानक जी भील और देवीलाल गुर्जर जैसे देशभक्त शहीद हो गए। यह तिथि राजस्थान के इतिहास में किसान बलिदान के एक काले अध्याय के रूप में अंकित है। इस हत्याकांड ने संपूर्ण राज्य में सनसनी फैला दी और बूंदी के किसानों के संघर्ष को एक नवीन दिशा और तीव्रता प्रदान की।

37. (3) देशभक्तिपूर्ण 'झंडा' गीत गाते समय पुलिस ने उन्हें गोली मार दी थी।
डाबी की किसान सभा में नानक जी भील हाथ में तिरंगा झंडा लिए हुए प्रसिद्ध देशभक्ति गीत गा रहे थे, जिससे किसानों में उत्साह का संचार हो रहा था। पुलिस ने उनके साहस को कुचलने के उद्देश्य से उन पर सीधी गोली चलाई। गोली लगने के उपरांत भी उन्होंने झंडे को नीचे नहीं गिरने दिया और गीत गाते हुए ही वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी इस वीरता और शहादत ने उन्हें

19. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
विजय सिंह पथिक का वास्तविक नाम भूप सिंह था और वे प्रसिद्ध क्रांतिकारी रासबिहारी बोस के सहयोगी थे। लाहौर षड्यंत्र केस में नाम आने के कारण वे राजस्थान में भूमिगत हो गए और उन्हें अजमेर के समीप टॉडगढ़ दुर्ग में बंदी बनाया गया था। वहां से पलायन करने के पश्चात उन्होंने अपनी पहचान गुप्त रखने के लिए दाढ़ी बढ़ा ली और नाम बदलकर पथिक रख लिया। इसी वेश में उन्होंने बिजोलिया के किसानों को संगठित किया और उनके महान संघर्ष का सफल नेतृत्व किया।

20. (3) 1917
विजय सिंह पथिक ने 1917 में हरियाली अमावस्या के दिन बेरीसाल गाँव में ऊपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना की थी। इस पंचायत का मुख्य उद्देश्य किसानों को संगठित करना और उनकी शिकायतों को एक औपचारिक मंच प्रदान करना था। मन्ना पटेल को इसका प्रथम सरपंच नियुक्त किया गया था। इस संस्था के गठन से बिजोलिया आंदोलन को एक सुदृढ़ संगठनात्मक ढांचा प्राप्त हुआ और किसानों ने सामूहिक निर्णय लेने की शक्ति सीखी। इसी संस्था के माध्यम से कर-बंदी जैसे बड़े निर्णय प्रभावी रूप से क्रियान्वित किए गए।

21. (1) केवल I, II, III और IV
विजय सिंह पथिक ने राजस्थान में राजनीतिक चेतना जागृत करने हेतु 'राजस्थान केसरी' और 'तरुण राजस्थान' जैसे समाचार पत्रों का संपादन किया। उन्होंने राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की, जिसने राज्य भर के किसान आंदोलनों को संबल प्रदान किया। विद्या प्रचारिणी सभा के माध्यम से उन्होंने शिक्षा और संस्कारों का प्रसार किया। यद्यपि मीणा क्षत्रिय महासभा से उनका सीधा संबंध नहीं था, क्योंकि वह मीणा जाति का अपना विशिष्ट संगठन था। पथिक जी की संस्थाओं ने राजस्थान के जन आंदोलनों को वैचारिक आधार प्रदान किया।

22. (2) गणेश शंकर विद्यार्थी - प्रताप
गणेश शंकर विद्यार्थी ने कानपुर से प्रकाशित होने वाले अपने प्रसिद्ध समाचार पत्र 'प्रताप' के माध्यम से बिजोलिया किसान आंदोलन के समाचारों को संपूर्ण भारत में प्रसारित किया। उन्होंने किसानों पर होने वाले अत्याचारों को निर्भीकता से प्रकाशित किया, जिससे ब्रिटिश सरकार पर भारी दबाव पड़ा। विद्यार्थी जी के इस सहयोग के कारण ही बिजोलिया का स्थानीय मुद्दा एक राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गया। इस प्रचार ने आंदोलनकारियों का मनोबल बढ़ाया और अन्य क्षेत्रों के नागरिकों को भी अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने की प्रेरणा दी।

23. (4) उन्हें ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा टॉडगढ़ दुर्ग में बंदी बना लिया गया था
राजस्थान में अपनी प्रारंभिक क्रांतिकारी गतिविधियों और सशस्त्र विद्रोह की योजनाओं के कारण विजय सिंह पथिक ब्रिटिश अधिकारियों की दृष्टि में आ गए थे। उन्हें बंदी बनाकर अजमेर के निकट स्थित टॉडगढ़ दुर्ग में रखा गया था। यद्यपि वे वहां से पलायन करने में सफल रहे और उसके पश्चात उन्होंने मेवाड़ के पर्वतीय क्षेत्रों में अपनी पहचान बदलकर कार्य करना प्रारंभ किया। उनकी यह बंदी अवस्था और संघर्ष उनके साहस को प्रदर्शित करता है, जिसने बाद में उन्हें किसानों का सर्वाधिक प्रभावशाली नेता और नायक बना दिया।

24. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
'प्रताप' समाचार पत्र कानपुर से निकलता था, जबकि 'राजस्थान केसरी' का प्रकाशन वर्धा से प्रारंभ हुआ था। 'तरुण राजस्थान' ब्यावर से प्रकाशित होता था और राजस्थान सेवा संघ का मुख्यालय कालांतर में अजमेर स्थानांतरित कर दिया गया था। इन प्रकाशनों और संगठनों ने राजस्थान की बंद राजनीतिक सीमाओं को तोड़ने का कार्य किया। इनके माध्यम से जनता तक राष्ट्रवादी विचार पहुँचे और उन्हें सामंती शासन के विरुद्ध एकजुट होने का साहस प्राप्त हुआ। यह तंत्र ही राजस्थान में आधुनिक राजनीतिक चेतना का मुख्य कारण था।

25. (3) कानपुर
'प्रताप' समाचार पत्र उत्तर प्रदेश के कानपुर नगर से प्रकाशित होता था और इसके संपादक प्रसिद्ध देशभक्त गणेश शंकर विद्यार्थी थे। विजय सिंह पथिक के अनुरोध पर इस पत्र ने बिजोलिया के किसानों की दयनीय स्थिति पर नियमित लेख प्रकाशित किए। कानपुर जैसे बड़े केंद्र से प्रकाशित होने के कारण इसकी पहुँच देश के शीर्ष नेतृत्व तक थी। इस पत्र के माध्यम से ही महात्मा गांधी और तिलक जैसे नेताओं का ध्यान राजस्थान के किसान आंदोलनों की ओर आकृष्ट हुआ, जिससे आंदोलन को नवीन शक्ति और समर्थन प्राप्त हुआ।

26. (1) रामनारायण चौधरी
बेगूँ के किसानों ने बिजोलिया की सफलता से अनुप्रेरित होकर 1921 में लाग-बाग और बेगार के विरुद्ध आंदोलन प्रारंभ किया था। किसानों के विशेष अनुरोध पर विजय सिंह पथिक ने रामनारायण चौधरी को इस आंदोलन का नेतृत्व संभालने हेतु भेजा। चौधरी ने कुशलतापूर्वक किसानों को संगठित किया और उनके संघर्ष को दिशा प्रदान की। उनके नेतृत्व में आंदोलन अत्यंत प्रभावी हुआ और बेगूँ के ठाकुर अनूप सिंह को अंततः विवश होकर किसानों के साथ समझौता करना पड़ा, जिसे बाद में मेवाड़ प्रशासन ने अस्वीकार कर दिया था।

27. (1) केवल I और II
बेगूँ किसान आंदोलन मेवाड़ राज्य के बेगूँ ठिकाने में संचालित हुआ था, जो वर्तमान चित्तौड़गढ़ जनपद में स्थित है। किसानों की शिकायतों और मांगों की जाँच करने के उद्देश्य से सरकार ने ट्रेंच आयोग का गठन किया था। यह आंदोलन बिना किसी समर्पण के निरंतर जारी रहा और अंततः किसानों को कई महत्वपूर्ण रियायतें प्राप्त हुईं। यह आंदोलन किसानों की अटूट इच्छाशक्ति और राजस्थान सेवा संघ के कुशल मार्गदर्शन का परिणाम था। गोविंदपुरा में हुई हिंसा के उपरांत भी किसानों ने अपनी मांगों से कभी समझौता नहीं किया।

28. (2) बेगूँ आंदोलन के दौरान गोविंदपुरा गाँव की सभा
13 जुलाई 1923 को बेगूँ किसान आंदोलन के दौरान गोविंदपुरा गाँव में किसानों की एक विशाल सभा आयोजित की जा रही थी। इस शांतिपूर्ण सभा पर ट्रेंच के आदेश पर पुलिस ने अंधाधुंध गोलियाँ चलाईं। इस वीभत्स घटना में रुपा जी और कृपा जी

116. राजस्थान के स्थानीय आंदोलनों के व्यापक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के साथ एकीकरण के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) महात्मा गांधी ने प्रजामंडलों का कड़ा विरोध किया क्योंकि वे ब्रिटिश युद्ध प्रयासों को दुर्बल करेंगे।
(2) राजस्थान के प्रजामंडलों ने सभी राज्यों में भारत छोड़ो आंदोलन का पूरी तरह से बहिष्कार किया।
(3) भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने रियासतों के संबंध में कभी कोई औपचारिक प्रस्ताव पारित नहीं किया।
(4) उदयपुर में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के सातवें सत्र (1945-46) की अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू ने की थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

117. प्रजामंडल के उद्देश्यों को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की विचारधारा के साथ जोड़ने का महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(1) स्थानीय किसान जनसंख्या अलग-थलग पड़ गई जो अपने सामंती सरदारों के प्रति निष्ठावान रहना पसंद करती थी।
(2) इसके परिणामस्वरूप अंग्रेजों ने 'व्यपगत के सिद्धांत' के तहत सभी राजपूताना राज्यों को तुरंत मिला लिया।
(3) इसने स्थानीय संघर्षों को एक लोकतांत्रिक भारत के लिए एक संगठित राष्ट्रवादी आंदोलन में परिवर्तित कर दिया।
(4) इसने आंदोलन के दायरे को केवल प्रमुख राज्य केंद्रों के शहरी बुद्धिजीवियों तक सीमित कर दिया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

118. लोक गीत 'पंछीड़ा', जो जन जागृति का एक माध्यम बना और बिजोलिया आंदोलन के दौरान किसानों में देशभक्ति का भाव जाग्रत किया, किसके द्वारा रचित और गाया गया था?
(1) विजय सिंह पथिक
(2) माणिक्य लाल वर्मा
(3) जय नारायण व्यास
(4) साधु सीताराम दास
(5) प्रश्न अनुत्तरित

119. प्रजामंडल आंदोलनों के वैचारिक विकास के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प चुनिए:
कथन I: अपने शुरुआती चरण में, प्रजामंडलों ने मुख्य रूप से पारंपरिक शासकों के संरक्षण में संवैधानिक सुधारों और उत्तरदायी सरकार की मांग की थी।
कथन II: 1940 के दशक के मध्य तक, राष्ट्रीय भारत छोड़ो आंदोलन से प्रभावित होकर, उनकी मांगें राजशाही शासन की पूर्ण अस्वीकृति और स्वतंत्र भारत में पूर्ण एकीकरण में विकसित हो गईं।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

120. राजस्थान के सामाजिक-राजनीतिक ढांचे पर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन का निम्नलिखित में से कौन सा प्रभाव शेष से भिन्न है, क्योंकि यह प्रजामंडलों के उद्देश्यों के सीधे विपरीत था?
(1) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का समर्थन करने के लिए स्थानीय संसाधनों को जुटाना।
(2) क्षेत्र में व्यापक खादी उत्पादन और व्यावसायिक केंद्रों की स्थापना।
(3) एकीकृत राष्ट्रीय संचार माध्यम के रूप में हिंदी भाषा का सक्रिय प्रचार।
(4) स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा अस्पृश्यता की प्रथाओं को पूरी तरह से हटाने की दिशा में व्यवस्थित प्रयास।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

लोक नायकों की श्रेणी में प्रतिष्ठित कर दिया। उनके सम्मान में माणिक्य लाल वर्मा ने प्रसिद्ध 'अर्जी' गीत की रचना की थी।

38. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पंडित नयनूराम शर्मा हाड़ौती क्षेत्र के सर्वाधिक प्रभावशाली जननेता थे, जिन्होंने राजस्थान सेवा संघ के सक्रिय सदस्य के रूप में कार्य किया। उन्होंने बूंदी और कोटा की रियासतों में किसानों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और उन्हें संगठित कर बरड़ क्षेत्र में आंदोलन का नेतृत्व किया। उनके प्रयासों के फलस्वरूप ही सामंती शोषण के विरुद्ध एक सुदृढ़ जनमत निर्मित हुआ। उन्होंने किसानों को बेगार न करने और अनुचित करों का विरोध करने हेतु प्रशिक्षित किया, जिससे प्रशासन को विवश होकर झुकना पड़ा।

39. (1) I, II, III, IV
राजस्थान में राजनीतिक सक्रियता का क्रम 1919 में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना से प्रारंभ हुआ, जिसने किसान आंदोलनों को संगठनात्मक आधार प्रदान किया। इसके पश्चात 1921 में बेगूँ किसान आंदोलन प्रारंभ हुआ और 1923 में बूंदी के डाबी में दुखद हत्याकांड हुआ। सर्वाधिक अंत में 1941 में बिजोलिया आंदोलन का औपचारिक समापन हुआ। यह कालक्रम प्रदर्शित करता है कि कैसे एक संस्थागत प्रारंभ ने संपूर्ण राज्य में आंदोलनों की एक श्रृंखला को जन्म दिया, जो दशकों तक अपने अधिकारों हेतु संघर्षरत रही।

40. (1) पुलिस को चुनौती देने और आंदोलन का समर्थन करने में स्थानीय महिलाओं की व्यापक भागीदारी।
बूंदी किसान आंदोलन की एक विशिष्ट विशेषता यह थी कि इसमें ग्रामीण महिलाओं ने अत्यंत सक्रिय और साहसी भूमिका निर्वहन की थी। जब पुरुष नेताओं को बंदी बनाया गया अथवा उन पर अत्याचार हुए, तो महिलाओं ने मोर्चा संभाला और पुलिस का दृढ़ता से सामना किया। उन्होंने न केवल रसद और सूचनाओं का संचार किया, अपितु सार्वजनिक प्रदर्शनों में भी बढ़-चढ़कर सहभागिता की। महिलाओं की इस भागीदारी ने आंदोलन को एक सामाजिक स्वरूप प्रदान किया और पितृसत्तात्मक समाज में एक नवीन चेतना का संचार किया।

41. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
बूंदी में नयनूराम शर्मा ने चेतना जागृत की, जबकि बेगूँ के संघर्ष की कमान रामनारायण चौधरी के हाथों में थी। बिजोलिया के सर्वाधिक महत्वपूर्ण द्वितीय चरण का नेतृत्व विजय सिंह पथिक ने किया और बीकानेर में कुंभाराम आर्य ने किसानों के अधिकारों की लड़ाई लड़ी। इन सभी नेताओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में सामंती शोषण की जड़ों को दुर्बल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके समन्वित प्रयासों और बलिदानों के कारण ही राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में लोकतंत्र और उत्तरदायी सरकार के प्रति जागरूकता का प्रसार संभव हुआ।

42. (1) उनके पारंपरिक वन अधिकारों और जनजातीय स्वायत्तता पर राज्य का अतिक्रमण।
दक्षिणी राजस्थान के भील समुदाय के विद्रोह का सर्वाधिक प्रमुख कारण ब्रिटिश और रियासती प्रशासन द्वारा उनके सदियों पुराने वन अधिकारों को छीनना था। आदिवासियों की आजीविका पूर्णतः वनों पर आश्रित थी, किंतु नवीन नियमों ने उन्हें काष्ठ कर्तन और वन उपज एकत्र करने से प्रतिबंधित कर दिया। इसके अतिरिक्त, उनकी आंतरिक शासन व्यवस्था में राज्य का हस्तक्षेप उनके लिए असहनीय था। इन परिवर्तनों ने उनकी आर्थिक और सांस्कृतिक स्वतंत्रता को संकट में डाल दिया, जिससे जनजातीय समूहों ने संगठित विद्रोह किया।

43. (1) केवल I, II, III और IV
जनजातीय असंतोष के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण थे, जिनमें वन अधिकारों पर प्रतिबंध और नमक तथा अफीम पर राज्य का एकाधिकार प्रमुख थे। राज्य द्वारा बेगार की मांग और भीलों के पारंपरिक करों जैसे रखवाली और बोलाई के संग्रह में हस्तक्षेप ने स्थिति को और अधिक बिगाड़ दिया। यद्यपि आधुनिक बैंकिंग का कोई मुद्दा उस समय नहीं था, अपितु वे स्थानीय साहूकारों के शोषण से त्रस्त थे। इन आर्थिक और सामाजिक चोटों ने भीलों और गरासियों को एकजुट होकर सामंती और औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध संघर्ष हेतु प्रेरित किया।

44. (2) व्यापार के लिए स्वतंत्र चांदी की मुद्रा ढालने का अधिकार
भीलों के पास वन उपज एकत्र करने, महुआ से मदिरा निर्मित करने और अपने क्षेत्रों की सुरक्षा के बदले कर लेने के पारंपरिक अधिकार थे। यद्यपि उनके पास कभी भी अपनी मुद्रा ढालने का कोई प्रशासनिक अथवा वैधानिक अधिकार नहीं रहा। ब्रिटिश शासन ने भीलों के उन अधिकारों पर प्रहार किया जो उनकी आजीविका और स्थानीय प्रभाव से संबद्ध थे। इन अधिकारों के छिनने से भीलों की आत्मनिर्भरता समाप्त हो गई और वे आर्थिक रूप से राज्य और साहूकारों के अधीन होने लगे, जिससे उनमें तीव्र विद्रोह की भावना उत्पन्न हुई।

45. (3) भीलों द्वारा यात्रियों और गांवों से वसूला जाने वाला एक पारंपरिक सुरक्षा कर।
'रखवाली' भील जनजाति द्वारा वसूला जाने वाला एक प्राचीन और पारंपरिक कर था, जो वे अपने क्षेत्र से गुजरने वाले यात्रियों और माल की सुरक्षा के बदले प्राप्त करते थे। यह उनकी आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत था और उनके स्थानीय प्रभुत्व को प्रदर्शित करता था। जब ब्रिटिश प्रशासन और रियासती सरकारों ने इस कर को अवैध घोषित कर स्वयं वसूली प्रारंभ की, तो भीलों ने इसे अपनी स्वायत्तता पर सीधा आक्रमण माना। इस आर्थिक हानि और सम्मान की ठेस ने जनजातीय समुदायों को विद्रोह के मार्ग पर अग्रसर कर दिया।

46. (4) बोलाई - भीलों द्वारा उनके क्षेत्र से गुजरने वाले माल पर लगाया जाने वाला कर
'बोलाई' एक प्रकार का सुरक्षा शुल्क था, जो भील समुदाय उन व्यापारियों और यात्रियों से लेता था जो उनके दुर्गम पर्वतीय मार्गों से गुजरते थे। इसके प्रतिफल में भील उनकी सुरक्षा की पूर्ण गारंटी देते थे। जब औपनिवेशिक सरकार ने इस पारंपरिक व्यवस्था को समाप्त कर दिया, तो भीलों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई। अन्य शब्द जैसे 'दापा' कन्या शुल्क से संबंधित था और 'मौतणा' हत्या के बदले हर्जाने को कहा जाता

था। इन परंपराओं में हस्तक्षेप ने जनजातीय समाज में भारी रोष उत्पन्न किया।

47. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
अंग्रेजों के साथ संधियों के पश्चात राजपूताना के शासकों ने अपने आंतरिक प्रशासन को और अधिक केंद्रीकृत किया, जिससे भीलों की पारंपरिक स्वायत्तता समाप्त होने लगी। वनों पर कठोर कानून लागू किए गए और जनजातीय सरदारों की शक्तियाँ छीन ली गईं। यद्यपि अंग्रेजों ने साहूकारों को समाप्त नहीं किया, अपितु उनकी नीतियों से साहूकार वर्ग और अधिक शक्तिशाली हो गया, जिसने आदिवासियों का शोषण किया। इस दोहरी मार ने आदिवासियों के जीवन को असुरक्षित और अत्यंत कष्टकारी बना दिया, जिससे बड़े पैमाने पर जनजातीय विद्रोह हुए।

48. (2) महुआ के फूलों से मदिरा बनाने के अधिकार की हानि।
भू-राजस्व की उच्च दरें और लाटा-कुंता जैसी प्रणालियाँ सामान्यतः सभी किसानों की समस्याएँ थीं। इसके विपरीत, महुआ के फूलों से मदिरा बनाना भील जनजाति की एक विशिष्ट सांस्कृतिक और आर्थिक परंपरा थी, जिस पर राज्य ने प्रतिबंध लगा दिया था। यह मुद्दा भीलों की जीवनशैली और धार्मिक मान्यताओं से गहनता से जुड़ा था, अतः यह एक विशिष्ट जनजातीय शिकायत थी। इस प्रतिबंध ने भीलों को अत्यंत आहत किया क्योंकि महुआ उनकी आजीविका और रीति-रिवाजों का एक अपरिहार्य भाग था, जिसका कोई अन्य विकल्प नहीं था।

49. (2) गोविंद गिरी
गोविंद गिरी ने डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र के भीलों में सामाजिक और धार्मिक सुधार लाने के उद्देश्य से एक महान आंदोलन का सूत्रपात किया था। उन्होंने आदिवासियों को सभ्य जीवन व्यतीत करने, मांस और मदिरा त्यागने तथा अपनी परंपराओं पर गौरव करने हेतु प्रेरित किया। उनके द्वारा स्थापित इस धार्मिक सुधार की लहर ने कालांतर में एक राजनीतिक स्वरूप ग्रहण कर लिया, क्योंकि राज्य ने उनके शांतिपूर्ण प्रयासों का दमन करने की चेष्टा की। गोविंद गिरी के नेतृत्व ने बिखरे हुए भील समुदाय को एक संगठित शक्ति में परिवर्तित कर दिया था।

50. (1) केवल I और II
गोविंद गिरी ने 1883 में सम्प सभा की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य भीलों के मध्य आपसी प्रेम और सामाजिक एकता को प्रोत्साहित करना था। उनके इस आंदोलन को 'भगत आंदोलन' के रूप में जाना गया, क्योंकि उन्होंने भीलों को भक्ति और नैतिकता का मार्ग प्रदर्शित किया था। यह आंदोलन पूर्णतः अहिंसक और सुधारवादी था। यद्यपि उदयपुर पर अधिकार करने जैसी कोई हिंसक घटना नहीं हुई थी, अपितु ब्रिटिश सेना ने मानगढ़ की शांतिपूर्ण सभा पर आक्रमण कर निर्दोष आदिवासियों का सामूहिक नरसंहार किया था।

51. (2) 17 नवंबर 1913
मानगढ़ हत्याकांड 17 नवंबर 1913 को हुआ था, जिसे राजस्थान के इतिहास का सर्वाधिक वीभत्स नरसंहार माना जाता है। इस दिन मानगढ़ की पहाड़ी पर हजारों भील अपने नेता गोविंद गिरी के नेतृत्व में एक धार्मिक और सामाजिक सभा हेतु एकत्र हुए थे। ब्रिटिश और रियासती सेनाओं ने बिना किसी पूर्व सूचना के इस निहत्थी भीड़ पर चारों दिशाओं से गोलियाँ बरसाईं। इस हृदयविदारक घटना में लगभग 1500 आदिवासी शहीद हो गए थे। यह बलिदान दिवस आज भी जनजातीय वीरता और ब्रिटिश क्रूरता के प्रतीक के रूप में स्मरणीय है।

52. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
गोविंद गिरी ने भील एकता हेतु सम्प सभा का गठन किया, जबकि मोतीलाल तेजावत ने एकी आंदोलन के माध्यम से आदिवासियों को संगठित किया। पंडित नयनूराम शर्मा ने हाड़ौती प्रजामंडल के माध्यम से राजनीतिक चेतना प्रसारित की और मुनि मगन सागर ने 'मीणा पुराण' लिखकर मीणा समुदाय को जागृत किया। इन सभी विभूतियों ने राजस्थान के विभिन्न वर्गों और क्षेत्रों में अन्याय के विरुद्ध संघर्ष की ज्वाला प्रज्वलित की। इनके सामूहिक योगदान से ही राजस्थान में सदियों से व्याप्त जड़ता समाप्त हुई और आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों का उदय हुआ।

53. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गोविंद गिरी का प्राथमिक उद्देश्य भील समाज में व्याप्त कुरीतियों का उन्मूलन करना था। उन्होंने अनुभव किया कि मदिरापान और अन्य बुराइयों के कारण जनजातीय समाज का पतन हो रहा है। इसलिए उन्होंने उन्हें सत्य, अहिंसा और सात्विक जीवन का मार्ग दिखाया। जब भील संगठित और सुसंस्कृत होने लगे, तो सामंती शासकों को अपनी सत्ता के प्रति संकट की अनुभूति होने लगी। इस प्रकार, एक विशुद्ध सामाजिक सुधार आंदोलन को शासन ने अपनी दमनकारी नीतियों से एक विशाल राजनीतिक संघर्ष में परिवर्तित कर दिया।

54. (1) सम्प सभा की स्थापना → सामाजिक सुधारों का प्रचार → मानगढ़ पहाड़ी पर जमावड़ा → मेवाड़ भील कोर द्वारा सैन्य कार्रवाई
भगत आंदोलन का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया थी, जिसमें सर्वप्रथम 1883 में सम्प सभा का गठन हुआ। इसके माध्यम से भीलों के मध्य नैतिक और सामाजिक सुधारों का व्यापक प्रसार किया गया। जब यह समुदाय संगठित हो गया, तो अपनी मांगों को लेकर वे मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्रित हुए। आदिवासियों की इस बढ़ती शक्ति से आशंकित होकर ब्रिटिश और रियासती सेनाओं ने मेवाड़ भील कोर के माध्यम से उन पर बर्बर सैन्य आक्रमण किया। यह क्रम प्रदर्शित करता है कि कैसे सुधारवादी प्रयासों का दमन अंततः त्रासदी में परिवर्तित हुआ।

55. (4) एक सामूहिक समारोह आयोजित करना और राज्य से अपनी शिकायतों के निवारण की मांग करना।
1913 के अंत में मानगढ़ पहाड़ी पर हजारों भीलों के एकत्रित होने का उद्देश्य कोई सैन्य विद्रोह नहीं, अपितु एक शांतिपूर्ण धार्मिक सभा और अपनी समस्याओं पर विचार-विमर्श करना था। वे गोविंद गिरी के मार्गदर्शन में अपने अधिकारों हेतु एक सामूहिक मांग पत्र निर्मित करना चाहते थे। उन्होंने राज्य के अधिकारियों के सम्मुख अपनी आर्थिक कठिनाइयों और प्रशासनिक शोषण

का पक्ष रखना चाहा था। दुर्भाग्यवश, शासन ने इस शांतिपूर्ण जमावड़े को अपनी सत्ता हेतु चुनौती माना और क्रूरतापूर्वक सैन्य बल का प्रयोग कर इसे कुचल दिया।

56. (1) स्वामी दयानंद सरस्वती
गोविंद गिरी की विचारधारा स्वामी दयानंद सरस्वती के स्वदेश और स्वधर्म के विचारों से अत्यंत प्रभावित थी। 1883 में उदयपुर प्रवास के समय गोविंद गिरी ने स्वामी जी से भेंट की थी, जिसने उनके जीवन का लक्ष्य परिवर्तित कर दिया। स्वामी जी की शिक्षाओं से प्रेरणा ग्रहण कर उन्होंने भीलों में आत्म-सम्मान जागृत करने और उन्हें कुरीतियों से मुक्त करने का संकल्प लिया। उन्होंने भीलों को बाह्य धार्मिक प्रभाव से सुरक्षित रखकर अपनी संस्कृति में सुधार करने का मार्ग दिखाया, जो दयानंद सरस्वती के सुधारवादी सिद्धांतों पर आधारित था।

57. (3) एकता
'एकी' शब्द का शाब्दिक और मूल अर्थ एकता है। मोतीलाल तेजावत ने इस शब्द का प्रयोग भील और गरासिया जनजातियों को एक सूत्र में पिरोने हेतु किया था, ताकि वे सम्मिलित होकर सामंती शोषण का सामना कर सकें। इस आंदोलन का मुख्य घोष ही यह था कि सभी आदिवासी भाई एक हैं और वे किसी भी अन्याय के सम्मुख नहीं झुकेंगे। एकता का यह भाव जनजातीय समुदायों हेतु अत्यंत शक्तिशाली सिद्ध हुआ, क्योंकि इसने उनके आपसी मतभेदों को विस्मृत कर उन्हें एक सुदृढ़ और संगठित राजनीतिक शक्ति बना दिया।

58. (2) केवल III
एकी आंदोलन का उद्देश्य भीलों और गरासियों को एकजुट कर सामंती शोषण, अत्यधिक करों और बेगार के विरुद्ध संगठित करना था। इस आंदोलन ने सामाजिक सुधारों यथा मदिरा-त्याग और स्थानीय पंचायतों द्वारा विवाद सुलझाने पर भी बल दिया। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इस आंदोलन ने कभी भी 'भीलस्थान' जैसे किसी पृथक संप्रभु राज्य की मांग नहीं की थी। उनकी मांगें पूर्णतः आर्थिक न्याय और मानवीय गरिमा पर केंद्रित थीं, जिन्हें प्रशासन ने अनावश्यक रूप से राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के रूप में प्रस्तुत किया था।

59. (4) सामंती शोषण और आंतरिक सामाजिक बुराइयों को समाप्त करने के लिए जनजातीय समूहों को एकजुट करना।
एकी आंदोलन का प्राथमिक लक्ष्य आदिवासियों को जागीरदारों के अमानवीय शोषण से सुरक्षित करना और उनमें नवीन सामाजिक चेतना विकसित करना था। मोतीलाल तेजावत ने अनुभव किया कि जब तक आदिवासी एकजुट नहीं होंगे और अपनी कुरीतियों का त्याग नहीं करेंगे, तब तक वे बाह्य अन्याय का सामना नहीं कर पाएंगे। इसलिए उन्होंने अत्यधिक लगान और बेगार के विरुद्ध संघर्ष को मदिरा-त्याग और नैतिकता जैसे सामाजिक सुधारों से संबद्ध कर दिया। इस प्रकार, यह आंदोलन केवल एक आर्थिक विरोध न रहकर संपूर्ण जनजातीय पुनर्जागरण का प्रतीक बना।

60. (2) यह मेवाड़ में शुरू हुआ और ईडर तथा दांता जैसे पड़ोसी राज्यों में फैल गया।
एकी आंदोलन का प्रारंभ मेवाड़ के झाडोल और मातृकुण्डिया क्षेत्रों से हुआ था, किंतु अपनी लोकप्रियता के कारण यह शीघ्र ही पड़ोसी रियासतों में भी प्रसारित हो गया। ईडर, दांता, सिरोही और गुजरात की सीमाओं तक निवास करने वाले भील और गरासिया समुदाय इस आंदोलन से गहनता से जुड़ गए। इस भौगोलिक विस्तार ने ब्रिटिश अधिकारियों को चिंता में डाल दिया, क्योंकि यह आंदोलन कई प्रशासनिक सीमाओं का अतिक्रमण कर रहा था। इस व्यापक प्रसार ने सिद्ध किया कि जनजातीय समुदायों की वेदना और आकांक्षाएं सर्वत्र एक समान थीं।

61. (3) गरासिया
एकी आंदोलन की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि इसमें भीलों के साथ-साथ गरासिया जनजाति ने भी सक्रिय रूप से सहभागिता की थी। मोतीलाल तेजावत ने इन दोनों समुदायों के मध्य एक अटूट सेतु का निर्माण किया, जिससे आंदोलन की शक्ति द्विगुणित हो गई। गरासिया बाहुल्य क्षेत्रों में भी वही आर्थिक शोषण और वन अधिकारों का हनन हो रहा था, जो भील क्षेत्रों में था। इन दोनों प्रमुख जनजातियों की एकजुटता ने सामंती प्रशासन और ब्रिटिश सेना हेतु एक गंभीर चुनौती प्रस्तुत की थी, जिसका दमन करना सुगम नहीं था।

62. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
एकी आंदोलन ने उन व्यक्तियों के विरुद्ध सामाजिक बहिष्कार की नीति अपनाई थी, जो आंदोलन के नियमों का उल्लंघन करते थे अथवा प्रशासन की सहायता करते थे। यह सामूहिक दबाव का एक प्रभावी अहिंसक माध्यम था। यद्यपि यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि आंदोलन पूर्णतः संघर्ष रहित रहा, क्योंकि नीमड़ा जैसे स्थानों पर सेना के साथ भीषण और खूनी झड़पें हुईं। शांतिपूर्ण सभाओं पर ब्रिटिश सेना के आक्रमणों के कारण कई बार हिंसक स्थितियां उत्पन्न हुईं। इन संघर्षों ने प्रदर्शित किया कि आदिवासी अपने अधिकारों हेतु किसी भी सीमा तक जाने को तत्पर थे।

63. (1) भोमट
एकी आंदोलन का मुख्य केंद्र मेवाड़ का भोमट क्षेत्र था, जो अपनी दुर्गम पहाड़ियों और सघन वनों के लिए विख्यात है। यहाँ भील जनसंख्या का घनत्व अत्यंत अधिक था और सामंती नियंत्रण अपेक्षाकृत कठिन था। मोतीलाल तेजावत ने इसी क्षेत्र को अपनी गतिविधियों का आधार बनाया, क्योंकि यहाँ के आदिवासी अपनी स्वतंत्रता हेतु अत्यंत सजग थे। भोमट की भौगोलिक स्थिति ने आंदोलनकारियों को सुरक्षित आश्रय प्रदान किया और इसे राज्य के विरुद्ध प्रतिरोध के एक अभेद्य दुर्ग के रूप में विकसित करने में सहायता प्रदान की।

64. (2) मदिरा और मांस से परहेज करने का संकल्प।
भू-राजस्व का विरोध, बेगार का बहिष्कार और वन उपज करों की अस्वीकृति प्रत्यक्ष रूप से राज्य की आर्थिक नीतियों और सामंती सत्ता के विरुद्ध राजनीतिक प्रतिरोध के अंग थे। इसके विपरीत, मदिरा और मांस का त्याग करना पूर्णतः एक आंतरिक

सामाजिक और नैतिक सुधार का विषय था। तेजावत जी ने इसे इसलिए सम्मिलित किया ताकि आदिवासियों का चारित्रिक उत्थान हो और वे आर्थिक रूप से भी सुदृढ़ हो सकें। यह कदम आंदोलन को केवल एक शिकायत मंच से उन्नत कर एक स्थाई सुधार प्रक्रिया में परिवर्तित करने का प्रयास था।

65. (2) मातृकुंडिया
मोतीलाल तेजावत ने 1921 में वैशाख पूर्णिमा के अवसर पर चित्तौड़गढ़ के मातृकुंडिया नामक पवित्र स्थान से एकी आंदोलन का विधिवत शंखनाद किया था। इस स्थान को 'राजस्थान का हरिद्वार' कहा जाता है और यहाँ हजारों की संख्या में भील और गरासिया एकत्र हुए थे। इस सांस्कृतिक संगम ने आदिवासियों में एकता की एक नवीन लहर उत्पन्न की। इसी स्थान पर तेजावत ने अन्यायपूर्ण करों के भुगतान को रोकने और संगठित प्रतिरोध करने की शपथ दिलाई थी, जिससे सामंती व्यवस्था के विरुद्ध एक शक्तिशाली अभियान प्रारंभ हुआ।

66. (1) केवल I, II, III और IV
'मेवाड़ की पुकार' 21 सूत्री मांगों का एक ऐतिहासिक प्रलेख था, जिसे मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ के महाराणा के सम्मुख प्रस्तुत किया था। इसमें बेगार प्रथा की समाप्ति, लगान में कमी, वन अधिकारों की पुनर्बहाली और कृषि को क्षति पहुँचाने वाले पशुओं को मारने की अनुमति जैसे न्यायसंगत मुद्दे सम्मिलित थे। यद्यपि इसमें महाराणा के पदत्याग जैसी कोई मांग कभी नहीं की गई थी, क्योंकि आंदोलनकारी केवल प्रशासनिक सुधार और न्याय चाहते थे। महाराणा ने इनमें से अधिकांश मांगों को अस्वीकार कर दिया था, जिससे आंदोलन और तीव्र हुआ।

67. (3) 1922 में नीमड़ा गाँव
7 मार्च 1922 को विजयनगर राज्य के नीमड़ा गाँव में एकी आंदोलन से संबद्ध आदिवासियों का एक विशाल सम्मेलन आयोजित हो रहा था। इस शांतिपूर्ण सभा को मेजर सटन के नेतृत्व वाली मेवाड़ भील कोर की सेना ने घेर लिया और उन पर मशीनगनों से अंधाधुंध गोलीबारी की। इस वीभत्स हत्याकांड में लगभग 1200 आदिवासी शहीद हो गए थे। यह घटना मानगढ़ हत्याकांड के पश्चात राजस्थान के इतिहास की दूसरी सबसे बड़ी त्रासदी थी। इस रक्तपात ने ब्रिटिश सरकार के अमानवीय और दमनकारी स्वरूप को पूर्णतः उजागर कर दिया था।

68. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान के जनजातीय संघर्षों का क्रम 1883 में सम्प सभा की स्थापना से प्रारंभ हुआ, जिसने वैचारिक आधार प्रदान किया। 1913 में मानगढ़ की दुखद घटना हुई और इसके पश्चात 1921 में मोतीलाल तेजावत ने मातृकुंडिया से एकी आंदोलन का नेतृत्व संभाला। अंततः 1922 में नीमड़ा में एक और विशाल नरसंहार हुआ। यह कालक्रम प्रदर्शित करता है कि कैसे आदिवासियों ने दशकों तक निरंतर बलिदान देकर अपने अधिकारों की रक्षा की चेष्टा की। इन घटनाओं ने ही राजस्थान में सामंती शासन के विरुद्ध एक स्थाई जनमत निर्मित करने का कार्य किया।

69. (1) II, III, I, IV
जनजातीय इतिहास में सर्वप्रथम 1913 में मानगढ़ हत्याकांड हुआ, जिसने आदिवासियों को गहरा आघात पहुँचाया। इसके पश्चात 1921 में मातृकुंडिया से एकी आंदोलन का औपचारिक प्रारंभ हुआ और इसी अवधि में 21 सूत्री 'मेवाड़ की पुकार' निर्मित की गई। अंत में आंदोलनों के दमन और गांधी जी के आग्रह पर 1929 में मोतीलाल तेजावत ने खेड़ब्रह्मा में आत्मसमर्पण किया। यह अनुक्रम राजस्थान में जनजातीय चेतना के उदय, उसके चरमोत्कर्ष संघर्ष और फिर गांधीवादी प्रभाव के अंतर्गत आने की संपूर्ण प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

70. (2) बावजी और मेवाड़ का गांधी
मोतीलाल तेजावत को आदिवासियों के मध्य उनके निस्वार्थ सेवा और असीम त्याग के कारण अत्यंत सम्मान प्राप्त था। भील और गरासिया समुदाय उन्हें स्नेह से 'बावजी' कहकर पुकारते थे, जिसका अर्थ पिता तुल्य संरक्षक होता है। उनके अहिंसक संघर्ष और जनजातीय उत्थान के कार्यों को देखते हुए उन्हें 'मेवाड़ का गांधी' भी कहा जाता है। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन वनों में आदिवासियों के अधिकारों हेतु संघर्ष करते हुए व्यतीत किया। उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक थी कि वे जनजातीय समाज हेतु एक दैवीय और मुक्तिदाता व्यक्तित्व बन गए थे।

71. (4) उनका जन्म डूंगरपुर राज्य के एक प्रमुख भील परिवार में हुआ था।
मोतीलाल तेजावत के संबंध में यह धारणा त्रुटिपूर्ण है कि वे जन्म से भील थे। वास्तव में, उनका जन्म उदयपुर के कोलियारी गाँव में एक ओसवाल बनिया परिवार में हुआ था। यद्यपि वे उच्च जाति से थे, किंतु आदिवासियों की पीड़ा ने उन्हें इतना द्रवित किया कि उन्होंने झाडोल ठिकाने की राजकीय सेवा त्याग दी और अपना जीवन उनके कल्याण हेतु समर्पित कर दिया। उन्होंने आदिवासियों के मध्य रहकर उनकी भाषा और संस्कृति को अंगीकार कर लिया था, इसीलिए वे उनके मध्य इतने लोकप्रिय और प्रभावशाली नेता सिद्ध हुए।

72. (1) उन्हें पुलिस ने खेड़ब्रह्मा में पकड़कर मेवाड़ राज्य को सौंप दिया था।
वर्षों तक भूमिगत रहकर आदिवासियों को संगठित करने के पश्चात मोतीलाल तेजावत पर ब्रिटिश सरकार और रियासतों का दबाव अत्यधिक बढ़ गया था। अंततः 1929 में ईडर राज्य के खेड़ब्रह्मा नामक स्थान पर उन्हें बंदी बना लिया गया और पश्चात उदयपुर राज्य के अधिकारियों को समर्पित कर दिया गया। कारावास में रहने के दौरान भी उन्होंने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। उनकी गिरफ्तारी के पश्चात एकी आंदोलन की प्रत्यक्ष गतिविधियां तो न्यून हो गईं, किंतु उनके द्वारा रोपित जन-जागृति के बीज सदैव पल्लवित होते रहे।

73. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
'मेवाड़ की पुकार' वास्तव में किसानों और आदिवासियों की वेदना को व्यक्त करने वाला एक विस्तृत 21 सूत्री मांग पत्र था, जिसे महाराणा के सम्मुख प्रस्तुत किया गया था। इसमें सामंती शोषण को समाप्त करने की न्यायोचित मांगें थीं, किंतु जब शासक ने इन आधारभूत मांगों को अस्वीकार कर दिया, तो

आदिवासियों का धैर्य समाप्त हो गया। इसके परिणामस्वरूप एकी आंदोलन ने कर-बंदी के एक उग्र अभियान का रूप ले लिया, जिससे शासन की राजस्व व्यवस्था संकटग्रस्त हो गई। इस टकराव ने सिद्ध किया कि अब आदिवासी अन्याय सहने को विवश नहीं थे।

74. (1) आपराधिक जनजाति अधिनियम, 1924
20वीं शताब्दी के प्रारंभ में मीणा समुदाय के विद्रोह का सर्वाधिक प्रमुख कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा आरोपित ' criminal tribes act' (आपराधिक जनजाति अधिनियम) था। इस कानून के अंतर्गत मीणा जनजाति को जन्मजात अपराधी घोषित कर दिया गया था, जो उनके आत्म-सम्मान पर एक विशाल प्रहार था। इस औपनिवेशिक कानून का उद्देश्य वास्तव में उन साहसी जनजातियों को नियंत्रित करना था जो ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध खड़ी हो सकती थीं। इस अपमानजनक विशेषण के कारण मीणा समाज को अत्यधिक सामाजिक और प्रशासनिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ा।

75. (2) केवल I और III
1930 में जयपुर रियासत में लागू किया गया 'जरायम पेशा' कानून मीणा समुदाय हेतु अत्यंत दयनीय और अपमानजनक था। इसके अंतर्गत प्रत्येक वयस्क पुरुष और महिलाओं को भी प्रतिदिन स्थानीय पुलिस थाने में अपनी उपस्थिति अंकित कराना अनिवार्य था। इस कानून ने उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को पूर्णतः समाप्त कर दिया और उन्हें अपराधी के समान बना दिया। यह कानून विशेष रूप से जयपुर राज्य में प्रभावी था, जिसने मीणाओं की गरिमा और आजीविका को बुरी तरह प्रभावित किया, जिससे उनमें सामूहिक संघर्ष की भावना जागृत हुई।

76. (3) 1933
मीणा समुदाय ने दमनकारी कानूनों और सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध संगठित रूप से संघर्ष करने हेतु 1933 में 'मीणा क्षत्रिय महासभा' की स्थापना की। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य समाज में जागृति लाना और जरायम पेशा कानून जैसे काले कानूनों को समाप्त कराना था। इस सभा के माध्यम से मीणाओं ने अपनी गौरवशाली ऐतिहासिक पहचान को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया। इस संस्थागत प्रयास ने बिखरे हुए मीणा समूहों को एक मंच पर लाकर उनके संघर्ष को एक स्पष्ट दिशा और सुदृढ़ राजनीतिक आधार प्रदान करने में सफलता प्राप्त की।

77. (3) मुनि मगन सागर
जैन मुनि मगन सागर ने 'मीणा पुराण' नामक ग्रंथ की रचना की, जो मीणा समुदाय हेतु एक धार्मिक और ऐतिहासिक पथ-प्रदर्शक बना। इस ग्रंथ के माध्यम से उन्होंने मीणाओं को उनके महान पूर्वजों और गौरवशाली अतीत के विषय में ज्ञान प्रदान किया, जिससे उनमें आत्म-विश्वास की वृद्धि हुई। उन्होंने समाज को शिक्षित होने और सामाजिक बुराइयों का त्याग करने का आह्वान किया। उनके इस वैचारिक योगदान ने मीणा आंदोलन को केवल एक राजनीतिक संघर्ष न रहने देकर एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण के रूप में परिवर्तित कर दिया।

78. (1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
मीणा आंदोलन के इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं का क्रम 1924 में आपराधिक जनजाति अधिनियम के लागू होने से प्रारंभ हुआ। इसके पश्चात 1930 में जयपुर राज्य ने जरायम पेशा कानून लागू किया। इसके विरोध में 1933 में मीणा क्षत्रिय महासभा का गठन हुआ, जिसने आंदोलन को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। अंततः 1944 में नीम का थाना में एक विशाल सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसने संघर्ष को निर्णायक मोड़ प्रदान किया। यह कालक्रम दर्शाता है कि कैसे प्रशासनिक दमन ने धीरे-धीरे एक सुव्यवस्थित और प्रभावशाली जनजातीय आंदोलन को जन्म दिया था।

79. (1) मुनि मगन सागर के नेतृत्व में हुआ जमावड़ा जहाँ 'जयपुर राज्य मीणा सुधार समिति' का गठन किया गया था।
अप्रैल 1944 में नीम का थाना में आयोजित मीणा सम्मेलन एक युगांतकारी घटना थी। जैन मुनि मगन सागर की अध्यक्षता में आयोजित इस सभा में हजारों मीणाओं ने सहभागिता की और अपनी एकजुटता प्रदर्शित की। इसी सम्मेलन के दौरान 'जयपुर राज्य मीणा सुधार समिति' का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य केवल जरायम पेशा कानून को समाप्त करना ही नहीं, अपितु समाज में व्यापक सुधार लाना भी था। इस सम्मेलन ने मीणा आंदोलन को नवीन ऊर्जा प्रदान की और सरकार पर दमनकारी नीतियों को परिवर्तित करने हेतु भारी दबाव निर्मित किया।

80. (2) दादर प्रथा
मीणा समुदाय की शिकायतें मुख्य रूप से आपराधिक जनजाति अधिनियम और जरायम पेशा कानून जैसे विधानों से संबद्ध थीं, जिन्होंने उनकी स्वतंत्रता का हनन किया था। चौकीदारी प्रथा में भी भारी विसंगतियां थीं, जिसके कारण उन्हें बिना पारिश्रमिक के कार्य करना पड़ता था। इसके विपरीत, दादर प्रथा राजस्थान में मीणाओं की प्रमुख समस्या नहीं थी। मीणाओं का संघर्ष अपनी विस्मृत सामाजिक प्रतिष्ठा और मानवीय अधिकारों की पुनर्प्राप्ति हेतु था। वे उन समस्त कानूनों का विरोध कर रहे थे जो उन्हें जन्मजात अपराधी के रूप में कलंकित करते थे।

81. (3) 1952
जरायम पेशा कानून जैसे दमनकारी और अपमानजनक विधान को अंततः 1952 में पूर्णतः समाप्त कर दिया गया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भी इस काले कानून को हटाने हेतु मीणा समुदाय को कठोर संघर्ष और वैधानिक लड़ाई लड़नी पड़ी थी। इस कानून के अंत ने दशकों पुराने जनजातीय उत्पीड़न के युग का समापन किया और मीणा समुदाय को पूर्ण नागरिक स्वतंत्रता प्रदान की। यह विजय राजस्थान के जनजातीय आंदोलनों के इतिहास में धैर्य, संगठन और अनवरत संघर्ष की एक महान मिसाल के रूप में स्वीकार की जाती है।

82. (1) शासकों के संरक्षण में नागरिक स्वतंत्रता और उत्तरदायी सरकार के लिए संघर्ष करना।
राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों का मुख्य उद्देश्य रियासतों के भीतर निरंकुश शासन को समाप्त कर एक ऐसी सरकार की स्थापना करना था जो जनता के प्रति उत्तरदायी हो। वे चाहते थे कि नागरिकों को अभिव्यक्ति, संगठन निर्माण और प्रेस

117. (3) इसने स्थानीय संघर्षों को एक लोकतांत्रिक भारत के लिए एक संगठित राष्ट्रवादी आंदोलन में परिवर्तित कर दिया।
प्रजामंडल के उद्देश्यों का कांग्रेस की विचारधारा के साथ विलय होने से राजस्थान की स्थानीय समस्याएं अब संपूर्ण राष्ट्र की समस्या बन गईं। इससे आंदोलनों को एक स्पष्ट वैचारिक दिशा प्राप्त हुई और कार्यकर्ताओं को अनुभव हुआ कि वे केवल एक स्थानीय जागीरदार से नहीं, अपितु एक महान स्वतंत्र राष्ट्र के निर्माण हेतु संघर्ष कर रहे हैं। इस एकीकरण ने प्रजामंडलों को संकीर्ण क्षेत्रीय सोच से मुक्त कर एक विशाल राष्ट्रीय लक्ष्य की ओर प्रेरित किया। इसी समन्वय के कारण ही स्वतंत्रता के समय राजस्थान की रियासतों का भारत संघ में विलय सुगम हुआ।

118. (2) माणिक्य लाल वर्मा
'पंछीड़ा' गीत माणिक्य लाल वर्मा द्वारा रचित एक अत्यंत प्रभावशाली और लोकप्रिय गीत है, जिसने बिजोलिया किसान आंदोलन के दौरान किसानों में अपूर्व जोश भरा था। इस गीत की सरल भाषा और गहन राष्ट्रभक्ति ने निरक्षर किसानों को भी अन्याय के विरुद्ध खड़े होने हेतु प्रेरित किया। वर्मा जी स्वयं इस गीत को अपनी खंजरी बजाते हुए गाते थे, जिससे वातावरण में उत्साह का संचार हो जाता था। राजस्थान के जन आंदोलनों में लोक संगीत और गीतों का यह प्रयोग जन-चेतना जागृत करने का सर्वाधिक सशक्त और सफल माध्यम सिद्ध हुआ था।

119. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
प्रजामंडल आंदोलनों का विकास एक क्रमिक और परिपक्व प्रक्रिया थी। प्रारंभ में उनके प्रयास केवल नागरिक अधिकारों की प्राप्ति और राजाओं के अधीन एक संवैधानिक व्यवस्था तक सीमित थे, क्योंकि वे राजतंत्र के प्रति पारंपरिक रूप से निष्ठावान थे। यद्यपि राष्ट्रीय स्तर पर भारत छोड़ो आंदोलन के प्रभाव और शासकों के हठधर्मी रवैये ने उनकी सोच को परिवर्तित कर दिया। 1940 के दशक तक वे पूर्णतः समझ गए कि पूर्ण स्वतंत्रता और लोकतंत्र तभी संभव है जब सामंती शासन का अंत हो जाए और रियासतें स्वतंत्र भारत में विलीन हो जाएं।

120. (1) द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश युद्ध प्रयासों का समर्थन करने के लिए स्थानीय संसाधनों को जुटाना।
प्रजामंडल आंदोलनों का मुख्य लक्ष्य रियासतों में उत्तरदायी शासन की स्थापना और ब्रिटिश प्रभाव को न्यून करना था। इसके विपरीत, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश युद्ध प्रयासों हेतु संसाधन जुटाना पूर्णतः औपनिवेशिक हितों की सेवा थी, जिसे ब्रिटिश सरकार और उनके समर्थक शासक संपन्न कर रहे थे। प्रजामंडल ने खादी प्रचार, हिंदी के प्रयोग और अस्पृश्यता निवारण जैसे रचनात्मक कार्यों के माध्यम से जनता को आत्मनिर्भर और जागरूक बनाने का प्रयास किया। अतः ब्रिटिश युद्ध प्रयासों में सहयोग करना प्रजामंडल की राष्ट्रवादी विचारधारा के पूर्णतः प्रतिकूल था।

91. (1) केवल I, II, III और IV
जय नारायण व्यास मारवाड़ की राजनीति के केंद्रीय स्तंभ थे और उनके साथ भंवरलाल सर्राफ, अभय मल जैन और छगनराज चौपासनीवाला ने मारवाड़ प्रजामंडल और लोक परिषद को सुदृढ़ बनाया। इन नेताओं ने जोधपुर राज्य में भ्रष्टाचार और अन्याय के विरुद्ध अनवरत संघर्ष किया। इसके विपरीत, माणिक्य लाल वर्मा मुख्य रूप से मेवाड़ रियासत के आंदोलनों के नेतृत्व हेतु समर्पित थे। मारवाड़ के इन नेताओं ने ग्रामीण क्षेत्रों में जाकर किसानों को संगठित किया और उन्हें अधिकारों हेतु संघर्ष करने हेतु प्रेरित किया, जिससे आंदोलन व्यापक और सफल रहा।

92. (2) मारवाड़ हितकारिणी सभा
मारवाड़ प्रजामंडल के अस्तित्व में आने से पूर्व मारवाड़ हितकारिणी सभा ने जोधपुर राज्य में जन-चेतना जागृत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया था। 1920 के दशक में पुनर्गठित इस सभा ने किसानों की समस्याओं और राज्य के कुशासन के विरुद्ध सफलतापूर्वक अभियान संचालित किए थे। जय नारायण व्यास इसके प्रमुख संचालक थे, जिन्होंने इसके माध्यम से मारवाड़ की जनता को राजनीतिक अधिकारों के प्रति शिक्षित किया। इस संस्था द्वारा निर्मित आधार ने ही आगे चलकर मारवाड़ प्रजामंडल और मारवाड़ लोक परिषद जैसे शक्तिशाली राजनीतिक संगठनों की सफलता का मार्ग प्रशस्त किया था।

93. (2) 1936
1936 में मारवाड़ के राजनीतिक कार्यकर्ताओं ने 'कृष्णा दिवस' का आयोजन किया था। यह दिवस मारवाड़ के एक निवासी की पुत्री कृष्णा के अपहरण की घटना और राज्य द्वारा उसे न्याय दिलाने में की गई विफलता के विरोध में मनाया गया था। प्रजामंडल ने इस मुद्दे को मानवाधिकारों और राज्य की अकर्मण्यता के साथ संबद्ध कर दिया, जिससे जनता में भारी रोष व्याप्त हुआ। इस विरोध प्रदर्शन ने न केवल मारवाड़, अपितु संपूर्ण राजपूताना में हलचल उत्पन्न कर दी और यह सिद्ध किया कि प्रजामंडल अब सामाजिक अन्याय के विरुद्ध भी एक सशक्त स्वर है।

94. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मारवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अध्यक्ष भंवरलाल सर्राफ थे, जबकि मेवाड़ प्रजामंडल की कमान बलवंत सिंह मेहता ने संभाली थी। जयपुर में प्रजामंडल का प्रारंभ कपूर चंद पाटनी ने किया, जिसका पश्चात में जमनालाल बजाज ने नेतृत्व किया और बूंदी में कांति लाल ने इस आंदोलन को गति प्रदान की। इन नेताओं के व्यक्तिगत नेतृत्व और साहस ने ही विभिन्न रियासतों में दमनकारी शासन के विरुद्ध संघर्ष को जीवंत रखा। इनके कार्यों के फलस्वरूप ही राजस्थान के पृथक-पृथक भागों में बिखरी हुई जनता एक सामान्य लोकतांत्रिक उद्देश्य हेतु एकजुट हो सकी।

95. (1) मारवाड़ प्रजामंडल को ब्रिटिश अधिकारियों का भारी समर्थन प्राप्त था जो इसकी गतिविधियों के लिए धन देते थे।
यह कहना पूर्णतः त्रुटिपूर्ण है कि मारवाड़ प्रजामंडल को अंग्रेजों का समर्थन प्राप्त था। वास्तव में, ब्रिटिश अधिकारी प्रजामंडल को एक विद्रोही संस्था मानते थे और उन्होंने राज्य के शासकों के साथ मिलकर इसे कुचलने का यथासंभव प्रयास किया। प्रजामंडल का वित्त पोषण पूर्णतः स्थानीय जनता और देशभक्त दानदाताओं द्वारा किया जाता था। मारवाड़ लोक परिषद की स्थापना और जय नारायण व्यास द्वारा कुशासन के विरुद्ध रचित साहित्य ने प्रशासन को चिंतित कर दिया था। प्रजामंडल को सदैव कठोर प्रतिबंधों और गिरफ्तारी का सामना करना पड़ा।

96. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
जय नारायण व्यास ने अपनी लेखनी के माध्यम से मारवाड़ राज्य के कुशासन और आर्थिक भ्रष्टाचार का अनावरण किया था। उनकी पुस्तिकाएं 'मारवाड़ की अवस्था' और 'पोपाबाई की पोल' जनता के मध्य अत्यंत लोकप्रिय हुईं और शासन के विरुद्ध आक्रोश जागृत किया। यद्यपि वे लंदन में प्रथम गोलमेज सम्मेलन के प्रतिनिधि नहीं थे, अपितु वहां मुख्य रूप से देशी राज्यों के शासक ही गए थे। व्यास जी का वास्तविक प्रभाव धरातल पर था जहाँ उन्होंने किसानों और जन-साधारण को संगठित कर सामंती निरंकुशता के विरुद्ध एक सफल जन आंदोलन निर्मित किया।

97. (2) कृष्णा नामक महिला के अपहरण और राज्य द्वारा न्याय देने में विफलता का विरोध करना।
मारवाड़ में 'कृष्णा दिवस' का आयोजन एक गंभीर सामाजिक और राजनीतिक अन्याय के विरुद्ध प्रतिरोध का प्रतीक था। कृष्णा नामक युवती के अपहरण की घटना ने जोधपुर रियासत की कानून व्यवस्था और महिलाओं की सुरक्षा पर गंभीर प्रश्न चिन्ह अंकित कर दिए थे। जब राज्य प्रशासन ने अपराधियों को संरक्षण प्रदान करने का प्रयास किया, तो प्रजामंडल ने इसे एक विशाल राजनीतिक मुद्दा बनाया। इस दिवस के माध्यम से जनता ने यह संदेश प्रेषित किया कि वे अब राज्य की किसी भी निरंकुशता अथवा न्याय में विलंब को सहन नहीं करेंगे।

98. (4) (1) और (2) दोनों
मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना 24 अप्रैल 1938 को बलवंत सिंह मेहता के आवास पर हुई थी। इस ऐतिहासिक पहल में माणिक्य लाल वर्मा और बलवंत सिंह मेहता दोनों की मुख्य भूमिका थी। मेहता को इसका प्रथम अध्यक्ष और वर्मा को इसका मुख्य रणनीतिकार तथा कार्यकर्ता नियुक्त किया गया था। इन दोनों नेताओं के समन्वय ने मेवाड़ के सामंती शासन को प्रथम बार एक सुव्यवस्थित राजनीतिक चुनौती प्रदान की। इनकी गिरफ्तारी और प्रजामंडल पर प्रतिबंध के उपरांत भी इन्होंने आंदोलन को भूमिगत रीति से जारी रखा, जिसने मेवाड़ में राजनीतिक क्रांति का आधार निर्मित किया।

99. (2) केवल IV
जयपुर प्रजामंडल राजस्थान का प्रथम प्रजामंडल था, जिसकी स्थापना 1931 में हुई और 1936 में जमनालाल बजाज द्वारा इसका पुनर्गठन किया गया। भारत छोड़ो आंदोलन के समय 'जेंटलमैन समझौते' के कारण जयपुर प्रजामंडल ने प्रत्यक्ष रूप से सहभागिता नहीं की। बाबा हरिश्चंद्र ने इस समझौते के विरोध में 'आजाद मोर्चा' निर्मित किया, क्योंकि वे सक्रिय रूप से आंदोलन में भाग लेना चाहते थे, न कि सरकार का मौन

शासन के साथ मौजूदा प्रशासनिक व्यवस्था को बनाए रखना।
(4) राज्यों को उनकी आंतरिक सैन्य शक्तियों की स्वतंत्र भर्ती या विस्तार से कड़ाई से प्रतिबंधित करना।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, कथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): सरदार वल्लभभाई पटेल ने राजपूताना राज्यों के त्वरित एकीकरण को प्राथमिकता दी।
कारण (R): राजपूताना के राज्य नवनिर्मित पाकिस्तान के साथ एक लंबी सीमा साझा करने वाले अत्यधिक संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्र थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. एकीकरण प्रक्रिया में सरदार वल्लभभाई पटेल की सहायता के लिए मुख्य रूप से किस भारतीय नेता को रियासती विभाग का सचिव नियुक्त किया गया था?
(1) के.एम. मुंशी
(2) शंकरराव देव
(3) एन.V. गाडगिल
(4) वी.पी. मेनन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. निम्नलिखित राज्यों को विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. बीकानेर
II. धौलपुर
III. जोधपुर
सही क्रम का चयन करें:
(1) I, III, II
(2) I, II, III
(3) III, I, II
(4) II, III, I
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. विलय पत्र पर हस्ताक्षर करके, रियासतें भारतीय अधिराज्य को किन तीन विषयों को सौंपने के लिए सहमत हुईं?
(1) रक्षा, शिक्षा और राजस्व
(2) विदेश मामले, मुद्रा और कृषि
(3) रक्षा, विदेश मामले और संचार
(4) संचार, पुलिस और रक्षा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. अपनी रियासतों को भारत में विलय करने के बदले रियासतों के शासकों को दी जाने वाली वित्तीय सहायता को क्या विशिष्ट नाम दिया गया था?
(1) राज्य पेंशन
(2) शाही पारिश्रमिक
(3) एकीकरण भत्ता
(4) प्रिवी पर्स
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. राजस्थान के एकीकरण की पृष्ठभूमि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. राजस्थान का एकीकरण सात चरणों में पूरा हुआ था।
II. पूरी प्रक्रिया को पूरा होने में आठ वर्ष से अधिक का समय लगा।
III. अजमेर-मेरवाड़ा 1956 से पहले इस क्षेत्र का एकमात्र ग-श्रेणी राज्य था।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. वी.पी. मेनन ने रियासतों के विलय की जटिल प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण करने वाली एक अत्यंत प्रभावशाली पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक का शीर्षक क्या है?
(1) द डिस्कवरी एंड मर्जर ऑफ इंडियन स्टेट्स
(2) द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स
(3) प्रिंसली इंडिया एंड द मिशन ऑफ सरदार पटेल
(4) द यूनिफिकेशन एंड गवर्नेंस ऑफ मॉडर्न इंडिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. एकीकरण की प्रक्रिया के दौरान, सरदार पटेल और वी.पी. मेनन के साथ किस ब्रिटिश अधिकारी ने अनिच्छुक शासकों को मनाने के लिए एक महत्वपूर्ण मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी?
(1) लॉर्ड वेवेल
(2) लॉर्ड माउंटबेटन
(3) क्लीमेंट एटली
(4) सर स्टैफोर्ड क्रिप्स
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. सूची I में दिए गए प्रमुख व्यक्तियों को सूची II में एकीकरण प्रक्रिया के दौरान उनकी संबंधित भूमिकाओं या स्थिति के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रमुख व्यक्ति)
A. सरदार वल्लभभाई पटेल
B. वी.पी. मेनन
C. एन.वी. गाडगिल
D. के.एम. मुंशी
सूची II: (संबंधित भूमिका/स्थिति)

कि समाज के उत्थान हेतु महिलाओं का शिक्षित होना अनिवार्य है, इसलिए उन्होंने 1944 में भीलवाड़ा में 'महिला आश्रम' की स्थापना की। उनके इन प्रयासों ने न केवल राजनीतिक स्वतंत्रता, अपितु सामाजिक सुधार और महिला सशक्तीकरण की दिशा में भी राजस्थान में एक नवीन क्रांति का सूत्रपात किया।

109. (3) महिमा देवी किंकर - जोधपुर आंदोलन
महिमा देवी किंकर जोधपुर की उन साहसी महिलाओं में से थीं, जिन्होंने मारवाड़ लोक परिषद के आंदोलनों में अत्यंत सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और मद्यपान निषेध के अभियानों का नेतृत्व किया और कई बार पुलिस के उत्पीड़न का सामना किया। अन्य विकल्पों में सावित्री देवी भाटी भी जोधपुर से संबद्ध थीं, जबकि नारायणी देवी का संबंध मेवाड़ से था। महिमा देवी जैसी महिलाओं की भागीदारी ने सिद्ध किया कि राजस्थान का स्वतंत्रता संग्राम केवल पुरुषों तक सीमित नहीं था, अपितु इसमें समाज के प्रत्येक वर्ग और लिंग का समान योगदान था।

110. (4) जोधपुर
सावित्री देवी भाटी जोधपुर रियासत की एक प्रखर महिला नेता थीं, जिन्होंने मारवाड़ प्रजामंडल और लोक परिषद की गतिविधियों को गति प्रदान की। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं को संगठित करने हेतु सभाएं कीं और उन्हें नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्होंने जोधपुर में प्रचंड विरोध प्रदर्शनों का नेतृत्व किया, जिसके कारण उन्हें कारावास भी भोगना पड़ा। उनकी निर्भीकता और संगठनात्मक सामर्थ्य ने मारवाड़ के जन आंदोलनों को एक नवीन ऊँचाई और व्यापक सामाजिक आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

111. (1) अरुणा आसफ अली
अंजना देवी चौधरी, रतन शास्त्री और रमा देवी राजस्थान की स्थानीय भूमि से संबद्ध नेत्री थीं, जिन्होंने प्रजामंडल और किसान आंदोलनों में प्रत्यक्ष रूप से धरातल पर कार्य किया था। इसके विपरीत, अरुणा आसफ अली एक राष्ट्रीय स्तर की क्रांतिकारी नेता थीं, जो मुख्य रूप से दिल्ली और उत्तर भारत में 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान सक्रिय रहीं। यद्यपि वे राजस्थान के नेताओं हेतु प्रेरणास्त्रोत थीं, किंतु उन्होंने राजस्थान की किसी विशिष्ट रियासत के प्रजामंडल अथवा स्थानीय किसान आंदोलन का प्रत्यक्ष नेतृत्व अथवा सदस्यता ग्रहण नहीं की थी।

112. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों ने महिलाओं को गृह की चारदीवारी से बाहर निकालकर सार्वजनिक जीवन में भाग लेने का अवसर प्रदान किया, जिससे सदियों पुरानी पर्दा प्रथा निर्बल हुई। महिलाओं ने जनसभाओं को संबोधित किया और तिरंगा लेकर रैलियां निकालीं। यह कहना सर्वथा त्रुटिपूर्ण है कि उन्हें कभी पुलिस की प्रताड़ना नहीं झेलनी पड़ी, क्योंकि अंजना देवी और नारायणी देवी जैसी अनेक महिलाओं ने कठोर जेल यात्राएं कीं और पुलिस की लाठियों का सामना किया। इन महिलाओं के त्याग ने ही राजस्थान के समाज में आधुनिक बदलावों का मार्ग प्रशस्त किया।

113. (4) I, II, III, IV और V
इन सभी महिला विभूतियों ने राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में जन-जागृति हेतु अपना जीवन समर्पित कर दिया। अंजना देवी ने किसान आंदोलनों में साहस प्रदर्शित किया, जबकि नारायणी देवी ने मेवाड़ में शिक्षा और राजनीति का समन्वय किया। रतन शास्त्री ने 'वनस्थली विद्यापीठ' के माध्यम से बालिका शिक्षा की नींव रखी और रमा देवी तथा महिमा देवी ने प्रजामंडल के संघर्षों में अग्रणी भूमिका निभाई। इनके सामूहिक प्रयासों ने राजस्थान के रुढ़िवादी समाज में महिलाओं हेतु सम्मान और समान अधिकारों के नवीन द्वार खोले, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को सर्वव्यापी बना दिया।

114. (1) इसने राष्ट्रवादी आधार को व्यापक बनाया और राजनीतिक अधिकारों को महिलाओं के सामाजिक सुधारों से जोड़ा।
आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी का सर्वाधिक प्रभाव यह हुआ कि स्वतंत्रता का संघर्ष केवल पुरुषों का राजनीतिक विषय नहीं रहा, अपितु एक व्यापक सामाजिक आंदोलन बन गया। महिलाओं ने शिक्षा, स्वच्छता और व्यसनमुक्ति जैसे मुद्दों को स्वतंत्रता की मांग के साथ जोड़ दिया, जिससे घर-घर तक राष्ट्रवादी भावना पहुँच गई। इससे समाज में महिलाओं की स्थिति के प्रति दृष्टिकोण परिवर्तित हुआ और उन्हें निर्णय लेने की प्रक्रिया में सम्मिलित होने का आत्मविश्वास प्राप्त हुआ। इस व्यापक आधार ने ही प्रजामंडल आंदोलनों को सफल और चिरस्थाई बनाया।

115. (3) जोधपुर
नेताजी सुभाष चंद्र बोस ने 1938 में जोधपुर रियासत का भ्रमण किया था, जो मारवाड़ के राजनीतिक इतिहास की एक अत्यंत प्रेरणादायक घटना थी। उनके आगमन और ओजस्वी व्याख्यानों ने स्थानीय युवाओं और प्रजामंडल के कार्यकर्ताओं में राष्ट्रप्रेम की एक नवीन लहर उत्पन्न कर दी। उन्होंने जनता को संगठित होकर ब्रिटिश साम्राज्यवाद और सामंती अत्याचारों के विरुद्ध संघर्ष का आह्वान किया। नेताजी की इस यात्रा ने मारवाड़ लोक परिषद को एक नवीन ऊर्जा प्रदान की और इसके पश्चात ही जोधपुर में उत्तरदायी शासन हेतु आंदोलन ने अधिक व्यापक और प्रखर रूप धारण किया।

116. (4) उदयपुर में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद के सातवें सत्र (1945-46) की अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू ने की थी।
1945-46 में उदयपुर में आयोजित अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद का सातवां अधिवेशन राजस्थान के राजनीतिक एकीकरण की दिशा में एक मील का पत्थर था। इसकी अध्यक्षता पंडित जवाहरलाल नेहरू ने की थी, जिससे राजस्थान की जनता का सीधा संबंध राष्ट्रीय नेतृत्व के साथ स्थापित हुआ। इस अधिवेशन में यह स्पष्ट संदेश प्रेषित किया गया कि स्वतंत्र भारत में रियासतों का भविष्य लोकतंत्र और पूर्ण विलय में ही निहित है। इस आयोजन ने राजस्थान के प्रजामंडल नेताओं को भविष्य की चुनौतियों हेतु तैयार किया और अखंड भारत के स्वप्न को स्पष्टता प्रदान की।

की स्वतंत्रता प्राप्त हो। उन्होंने कभी भी शासकों को अपदस्थ करने का प्रयास नहीं किया, अपितु वे चाहते थे कि शासक लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से शासन का संचालन करें। इस राजनीतिक चेतना ने ही राजस्थान के निवासियों को एक आधुनिक और लोकतांत्रिक समाज हेतु तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

83. (4) I, II, III, IV
प्रजामंडल आंदोलनों का अभ्युदय किसान आंदोलनों द्वारा उत्पन्न जन-जागृति और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की नीतियों में आए परिवर्तनों का परिणाम था। अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद ने इन आंदोलनों को एक राष्ट्रीय मंच प्रदान किया, जिससे कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ा। साथ ही, राष्ट्रवादी समाचार पत्रों और साहित्य ने जनता तक स्वतंत्रता के विचारों को पहुँचाया। इन सभी कारकों के सामूहिक प्रभाव ने राजस्थान की दबी हुई आवाजों को संगठित कर उत्तरदायी शासन की एक सशक्त मांग में परिवर्तित कर दिया, जिसने भविष्य का मार्ग प्रशस्त किया।

84. (4) राजपूताना और मध्य भारत में राजनीतिक जागृति के समन्वय के लिए 1918 में दिल्ली में स्थापित।
राजपूताना मध्य भारत सभा की स्थापना 1918 में दिल्ली के चांदनी चौक स्थित मारवाड़ी पुस्तकालय में हुई थी। इसमें विजय सिंह पथिक और जमनालाल बजाज जैसे नेताओं की प्रमुख भूमिका थी। इसका उद्देश्य राजपूताना की रियासतों में चल रहे जन आंदोलनों को राष्ट्रीय राजनीति से संबद्ध करना और उनमें आपसी सहयोग स्थापित करना था। इस संगठन ने रियासती जनता की समस्याओं को कांग्रेस के अधिवेशनों में उठाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। यह संस्था राजस्थान में आधुनिक राजनीतिक चेतना के प्रसार की दिशा में प्रथम ठोस प्रयास मानी जाती है।

85. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान की रियासतों के शासक प्रजामंडल की गतिविधियों को अपनी संप्रभुता हेतु संकट मानते थे। वे किसी भी मूल्य पर अपनी असीमित शक्तियों और सामंती विशेषाधिकारों का त्याग नहीं करना चाहते थे। इसलिए जब प्रजामंडल ने नागरिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन की मांग की, तो शासकों ने लाठीचार्ज, गिरफ्तारी और निर्वासन जैसी दमनकारी नीतियों का आश्रय लिया। प्रजामंडल कार्यकर्ताओं पर हुए इस अत्याचार ने जनता में शासकों के प्रति विश्वास को न्यून किया और उनके लोकतंत्र के प्रति संकल्प को और अधिक सुदृढ़ बना दिया।

86. (2) 1927
अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना 1927 में बॉम्बे में की गई थी, जिसका उद्देश्य रियासतों में चल रहे जन आंदोलनों को एक संगठित और साझा मंच प्रदान करना था। इसने विभिन्न रियासतों के राजनीतिक कार्यकर्ताओं को एक-दूसरे के संपर्क में लाया और उनके संघर्षों को एक अखिल भारतीय पहचान प्रदान की। इस संस्था ने ब्रिटिश सरकार और शासकों पर दबाव बनाया कि वे रियासतों में भी वही नागरिक अधिकार लागू करें जो ब्रिटिश भारत में प्रभावी थे। यह राजस्थान के प्रजामंडल आंदोलनों हेतु एक मार्गदर्शक संस्था सिद्ध हुई।

87. (4) सुभाष चंद्र बोस
1938 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का ऐतिहासिक हरिपुरा अधिवेशन सुभाष चंद्र बोस की अध्यक्षता में हुआ था। इस अधिवेशन में प्रथम बार आधिकारिक रूप से यह प्रस्ताव पारित किया गया कि रियासतों की जनता को भी स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेने और प्रजामंडलों के माध्यम से उत्तरदायी सरकार की मांग करने का पूर्ण अधिकार है। बोस के क्रांतिकारी विचारों और इस स्पष्ट घोषणा ने राजस्थान के राजनीतिक कार्यकर्ताओं को नवीन ऊर्जा प्रदान की। इसके पश्चात ही राज्य में प्रजामंडल आंदोलनों की स्थापना में अभूतपूर्व तीव्रता और व्यापकता आई थी।

88. (1) रियासतों में कांग्रेस के गैर-हस्तक्षेप की नीति समाप्त हुई, जिससे प्रजामंडलों के गठन में तीव्रता आई।
हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के पश्चात कांग्रेस ने रियासतों के प्रति अपनी पुरानी तटस्थता की नीति को परिवर्तित कर दिया। इस नवीन दृष्टिकोण ने राजस्थान के राजनीतिक कार्यकर्ताओं के मानस से शासकों और अंग्रेजों का भय कम कर दिया। इसके प्रत्यक्ष परिणाम स्वरूप मेवाड़, मारवाड़, जयपुर और अन्य कई राज्यों में प्रजामंडलों का गठन तीव्र गति से हुआ। अब प्रजामंडल केवल स्थानीय संस्थाएं नहीं रहीं, अपितु उन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का नैतिक समर्थन और मार्गदर्शन प्राप्त होने लगा, जिससे उनके आंदोलनों को नवीन धार और राष्ट्रीय विश्वसनीयता प्राप्त हुई।

89. (3) राज्य के शस्त्रागारों के विरुद्ध हिंसक सशस्त्र छापामार युद्ध प्रारंभ करना
राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों का स्वरुप मुख्य रूप से अहिंसक और रचनात्मक था। उन्होंने जनसभाओं, प्रभात फेरियों और शांतिपूर्ण जुलूसों के माध्यम से जनता को जागरूक किया। इसके साथ ही, उन्होंने खादी के प्रचार और अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन पर विशेष ध्यान दिया। प्रजामंडल के नेताओं ने कभी भी सशस्त्र क्रांति अथवा हिंसक आक्रमणों का मार्ग नहीं अपनाया, क्योंकि वे गांधीवादी मूल्यों में विश्वास रखते थे। उनकी शक्ति का मुख्य स्रोत जनसमर्थन और नैतिक दबाव था, न कि शस्त्रों का बल अथवा उग्रवादी गतिविधियाँ।

90. (2) 1934
मारवाड़ प्रजामंडल की स्थापना 1934 में भंवरलाल सर्राफ की अध्यक्षता में की गई थी। यद्यपि इससे पूर्व भी मारवाड़ में कई संस्थाएं सक्रिय थीं, किंतु प्रजामंडल के गठन ने राजनीतिक संघर्ष को एक औपचारिक और सुदृढ़ स्वरुप प्रदान किया। जय नारायण व्यास जैसे दिग्गज नेताओं के मार्गदर्शन में इस संस्था ने जोधपुर रियासत में नागरिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन हेतु प्रबल स्वर मुखर किया। इसकी स्थापना ने मारवाड़ के इतिहास में एक नवीन युग का सूत्रपात किया जहाँ जनता ने प्रथम बार संगठित होकर सामंती निरंकुशता को चुनौती दी थी।

अध्याय 09
राजस्थान का एकीकरण

1. भारत की स्वतंत्रता के समय, रियासतों और ठिकानों के संदर्भ में राजपूताना क्षेत्र की प्रशासनिक संरचना क्या थी?
   (1) 18 रियासतें और 4 ठिकाने
   (2) 19 रियासतें और 3 ठिकाने
   (3) 20 रियासतें और 2 ठिकाने
   (4) 21 रियासतें और 1 ठिकाना
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

2. एकीकरण की प्रक्रिया शुरू होने से पहले, राजपूताना का निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र मुख्य आयुक्त प्रांत के रूप में सीधे ब्रिटिश मुकुट के प्रशासन के अधीन था?
   (1) अजमेर-मेरवाड़ा
   (2) मेवाड़
   (3) मारवाड़
   (4) शेखावाटी
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

3. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प एकीकरण से पहले राजपूताना में मौजूद तीन ठिकानों की सही पहचान करता है?
   (1) शाहपुरा, लावा और कुशलगढ़
   (2) नीमराणा, किशनगढ़ और लावा
   (3) कुशलगढ़, लावा और नीमराणा
   (4) कुशलगढ़, टोंक और नीमराणा
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

4. रियासतों के एकीकरण के लिए 5 जुलाई 1947 को गठित 'रियासती विभाग' ने किसी राज्य के स्वतंत्र अस्तित्व को बनाए रखने के लिए विशिष्ट मापदंड निर्धारित किए थे। वे मापदंड क्या थे?
   (1) न्यूनतम जनसंख्या 20 लाख और वार्षिक आय 2 करोड़
   (2) न्यूनतम जनसंख्या 10 लाख और वार्षिक आय 1 करोड़
   (3) न्यूनतम जनसंख्या 15 लाख और वार्षिक आय 50 लाख
   (4) न्यूनतम जनसंख्या 5 लाख और वार्षिक आय 2 करोड़
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

5. राजपूताना की निम्नलिखित में से किन रियासतों ने रियासती विभाग द्वारा स्वतंत्र पहचान बनाए रखने के लिए निर्धारित मापदंडों को पूरा किया था?
   (1) जयपुर, जोधपुर, कोटा और बीकानेर
   (2) उदयपुर, कोटा, भरतपुर और जोधपुर
   (3) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और उदयपुर
   (4) बीकानेर, अलवर, जोधपुर और उदयपुर
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

6. राजपूताना की कौन सी रियासत 7 अगस्त 1947 को भारतीय संघ में सम्मिलित होने के लिए विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली पहली रियासत थी?
   (1) जोधपुर
   (2) बीकानेर
   (3) जयपुर
   (4) मेवाड़
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

7. राजपूताना की कौन सी रियासत 14 अगस्त 1947 को विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाली अंतिम रियासत थी?
   (1) भरतपुर
   (2) जैसलमेर
   (3) सिरोही
   (4) धौलपुर
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

8. सूची I में दी गई रियासतों को सूची II में स्वतंत्रता के समय उनके शासक राजवंशों के साथ सुमेलित कीजिए।
   सूची I: (रियासत)
   A. मेवाड़
   B. जोधपुर
   C. जयपुर
   D. कोटा
   सूची II: (शासक राजवंश)
   i. कच्छवाहा
   ii. हाड़ा चौहान
   iii. सिसोदिया
   iv. राठौड़
   सही कूट का चयन करें:
   (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
   (2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
   (3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
   (4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
   (5) प्रश्न अनुत्तरित

9. रियासतों द्वारा हस्ताक्षरित 'यथास्थिति समझौते' का मुख्य उद्देश्य क्या था?
   (1) सभी सहभागी राज्यों की भौगोलिक सीमाओं और प्रशासनिक क्षेत्राधिकार को स्थायी रुप से स्थिर करना।
   (2) औपचारिक एकीकरण प्रक्रिया पूरी होने तक राज्य के राजस्व के संग्रह और वितरण को स्थगित करना।
   (3) नए संवैधानिक प्रावधान स्थापित होने तक ब्रिटिश

समर्थन करना। अतः यह कहना कि उन्होंने समझौते का समर्थन किया था, पूर्णतः गलत है। आजाद मोर्चे ने जयपुर में राष्ट्रवादी गतिविधियों को तीव्रता प्रदान की।

100. (4) हीरालाल शास्त्री और सर मिर्जा इस्माइल
1942 में जयपुर प्रजामंडल के अध्यक्ष हीरालाल शास्त्री और जयपुर राज्य के प्रधानमंत्री सर मिर्जा इस्माइल के मध्य एक महत्वपूर्ण समझौता हुआ, जिसे 'जेंटलमैन समझौता' कहा जाता है। इसके अंतर्गत राज्य ने आश्वासन दिया कि वह भविष्य में उत्तरदायी सरकार स्थापित करेगा और ब्रिटिश युद्ध प्रयासों में जनता को विवश नहीं करेगा। इसके प्रतिफल में प्रजामंडल ने भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान कोई प्रत्यक्ष विरोध प्रदर्शन न करने का निर्णय लिया। इस समझौते ने जयपुर में व्यापक हिंसा को तो रोका, किंतु प्रजामंडल के भीतर वैचारिक मतभेद भी उत्पन्न कर दिए।

101. (3) बाबा हरिश्चंद्र
जब जयपुर प्रजामंडल ने जेंटलमैन समझौते के अंतर्गत भारत छोड़ो आंदोलन से पृथक रहने का निर्णय लिया, तो कई उग्रवादी और युवा नेता इससे संतुष्ट नहीं थे। बाबा हरिश्चंद्र ने इन असंतुष्ट कार्यकर्ताओं को एकजुट किया और 'आजाद मोर्चा' नामक एक पृथक संगठन का गठन किया। इस मोर्चे ने स्पष्ट रूप से गांधी जी के आह्वान का समर्थन किया और जयपुर की गलियों में ब्रिटिश विरोधी नारे और प्रदर्शन आयोजित किए। बाबा हरिश्चंद्र के साहसी नेतृत्व ने यह सुनिश्चित किया कि जयपुर रियासत की जनता भी राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा में अपना सक्रिय योगदान दे सके।

102. (1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
माणिक्य लाल वर्मा ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' लिखकर सामंती शोषण को अनावृत किया और बिजोलिया के समय 'पंछीड़ा' गीत से उत्साह भरा। जय नारायण व्यास की 'पोपाबाई की पोल' मारवाड़ प्रशासन पर तीखा प्रहार थी और हीरालाल शास्त्री का 'प्रतीक्षा नमो नमः' जन-जन का प्रिय गीत बना। इन साहित्यों और गीतों ने राजस्थान की निरक्षर और दबी हुई जनता में वह चेतना उत्पन्न की जो विशाल भाषण नहीं कर सकते थे। इनके माध्यम से राष्ट्रवादी विचार अत्यंत सरल और प्रभावशाली रीति से जन-साधारण के हृदय तक पहुँचने में सफल रहे।

103. (4) बलवंत सिंह मेहता को अध्यक्ष और भूरेलाल बया को उपाध्यक्ष नियुक्त किया गया था।
मेवाड़ प्रजामंडल के गठन के समय बलवंत सिंह मेहता को इसका प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था, जो इसके संस्थापकों में से एक थे। भूरेलाल बया को उपाध्यक्ष और माणिक्य लाल वर्मा को मुख्य सचिव नियुक्त किया गया था। इस कार्यसमिति ने मेवाड़ में नागरिक अधिकारों हेतु संघर्ष की कार्ययोजना तैयार की थी। यद्यपि प्रशासन ने तत्काल इस संस्था को अवैध घोषित कर दिया और इसके नेताओं को बंदी बना लिया। इन प्रारंभिक पदाधिकारियों के साहस ने ही मेवाड़ की जनता को सदियों की पराधीनता की श्रृंखलाओं को तोड़ने हेतु प्रेरित और संगठित किया था।

104. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान 'आजाद मोर्चा' ने जयपुर में सक्रिय रूप से तिरंगा फहराया और जनसभाएं आयोजित कीं, जिससे राष्ट्रवादी भावना प्रज्वलित रही। इसके विपरीत, हीरालाल शास्त्री के नेतृत्व वाले आधिकारिक प्रजामंडल ने जेंटलमैन समझौते का अनुपालन किया और वे किसी भी हिंसक अथवा विद्रोही गतिविधि में सम्मिलित नहीं हुए। शास्त्री जी का विश्वास था कि शांतिपूर्ण वार्ता से अधिक लाभ प्राप्त होगा, जबकि आजाद मोर्चा तत्काल संघर्ष के पक्ष में था। इन दोनों के पृथक मार्गों के उपरांत भी जयपुर में राजनीतिक चेतना का प्रवाह अनवरत रहा।

105. (3) भंवरलाल सर्राफ
माणिक्य लाल वर्मा, भूरेलाल बया और रमेश चंद्र व्यास मेवाड़ प्रजामंडल के अत्यंत महत्वपूर्ण स्तंभ थे, जिन्होंने उदयपुर रियासत में लोकतंत्र हेतु संघर्ष किया। इसके विपरीत, भंवरलाल सर्राफ जोधपुर रियासत के प्रमुख नेता थे और उन्होंने मारवाड़ प्रजामंडल की स्थापना और उसके संचालन में मुख्य भूमिका निर्वहन की थी। राजस्थान के प्रजामंडल आंदोलन में नेताओं का कार्यक्षेत्र सामान्यतः उनकी रियासत तक सीमित रहता था ताकि वे स्थानीय जनता की विशिष्ट समस्याओं को श्रेष्ठ रीति से उठा सकें। अतः भंवरलाल सर्राफ मेवाड़ के घटनाक्रम का भाग नहीं थे।

106. (3) 1938
1931 में स्थापित होने के पश्चात जयपुर प्रजामंडल कई वर्षों तक निष्क्रिय रहा, किंतु 1936 के पुनर्गठन के पश्चात इसमें नवीन प्राणों का संचार हुआ। 1938 में जमनालाल बजाज की अध्यक्षता में जयपुर प्रजामंडल का प्रथम वार्षिक अधिवेशन आयोजित किया गया। इस अधिवेशन ने प्रजामंडल को एक सशक्त जन संगठन के रूप में स्थापित किया और उत्तरदायी सरकार हेतु एक स्पष्ट कार्ययोजना निर्मित की। बजाज जी के राष्ट्रीय कद और मार्गदर्शन ने जयपुर के कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह भरा, जिससे यह आंदोलन कालांतर में जयपुर राज्य की राजनीति में एक निर्णायक शक्ति बना।

107. (4) अंजना देवी चौधरी
अंजना देवी चौधरी राजस्थान के राजनीतिक आंदोलनों के इतिहास में एक अत्यंत सम्माननीय व्यक्तित्व हैं। वे प्रसिद्ध नेता रामनारायण चौधरी की धर्मपत्नी थीं और उन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बिजोलिया और बूंदी के आंदोलनों में सहभागिता की। 1924 में उन्हें अपनी राजनीतिक गतिविधियों के कारण बंदी बनाया गया, जिससे वे राजस्थान की प्रथम महिला बनीं जिन्हें किसी रियासत में कारावास की सजा हुई। उनके इस साहसी पदक्षेप ने राजपूताना की हजारों अन्य महिलाओं को पर्दा प्रथा त्यागकर राष्ट्र सेवा हेतु बाहर आने की महान प्रेरणा प्रदान की।

108. (4) I, II, III और IV
नारायणी देवी वर्मा ने अपने पति माणिक्य लाल वर्मा के साथ मिलकर मेवाड़ में जन-जागृति का महान कार्य किया। 1942 के आंदोलन के समय वे अपने अल्पायु बच्चों के साथ जेल गईं, जो उनके अटूट राष्ट्रप्रेम का परिचायक है। उन्होंने अनुभव किया

i. रियासती विभाग के सचिव
ii. रियासती विभाग के मंत्री
iii. 'मत्स्य संघ' नाम का सुझाव दिया
iv. एकीकरण के शुरुआती चरणों का उद्घाटन किया

सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. एकीकरण के लिए रियासती विभाग द्वारा उपयोग की गई प्रारंभिक रणनीति के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) शासकों को आश्वासन दिया गया था कि विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के तुरंत बाद उनकी आंतरिक स्वायत्तता से समझौता नहीं किया जाएगा।
(2) प्रारंभिक विलय केवल तीन प्रमुख विषयों तक सीमित था।
(3) सरदार पटेल ने राजपूताना की सभी रियासतों को 15 अगस्त 1947 तक हस्ताक्षर न करने पर तत्काल सैन्य अधिग्रहण की धमकी दी थी।
(4) भारत या पाकिस्तान के साथ राज्य की भौगोलिक निकटता विलय में एक प्रमुख व्यावहारिक कारक थी।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. एकीकरण में वी.पी. मेनन की भूमिका के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उन्होंने विलय पत्र का मसौदा तैयार किया।
II. उन्होंने सरदार पटेल और राजाओं के बीच प्राथमिक दूत के रूप में कार्य किया।
III. उन्होंने जोधपुर के महाराजा के हिचकिचाने पर उनसे व्यक्तिगत रूप से वार्ता की।
IV. वे एकीकृत राजस्थान के पहले मुख्यमंत्री थे।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. किस शासक ने विलय दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने के संबंध में वी.पी. मेनन के साथ एक बैठक के दौरान प्रसिद्ध रूप से पेन-पिस्तौल निकाल ली थी?
(1) बीकानेर के महाराजा सादुल सिंह
(2) मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह
(3) जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह
(4) कोटा के महाराव भीम सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. राजस्थान के एकीकरण के निम्नलिखित प्रशासनिक चरणों को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. संयुक्त राजस्थान का गठन
II. मत्स्य संघ का गठन
III. वृहद राजस्थान का गठन
IV. राजस्थान संघ का गठन

सही क्रम का चयन करें:
(1) II, IV, I, III
(2) II, I, IV, III
(3) IV, II, I, III
(4) II, III, IV, I
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. राजस्थान में एकीकरण के पहले चरण के परिणामस्वरूप 'मत्स्य संघ' का गठन हुआ। इसका उद्घाटन किस तिथि को हुआ था?
(1) 15 अगस्त 1947
(2) 25 मार्च 1948
(3) 18 अप्रैल 1948
(4) 18 मार्च 1948
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. मत्स्य संघ किन चार रियासतों से मिलकर बना था?
(1) अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली
(2) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर
(3) कोटा, बूंदी, झालावाड़ और टोंक
(4) उदयपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. मत्स्य संघ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसका गठन 18 मार्च 1948 को हुआ था।
II. इसकी राजधानी अलवर में स्थापित की गई थी।
III. शोभाराम कुमावत को इसका प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था।
IV. धौलपुर के उदयभान सिंह को इसका राजप्रमुख बनाया गया था।
V. इसका उद्घाटन सरदार वल्लभभाई पटेल ने किया था।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल V
(4) केवल II, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. प्राचीन महाभारत काल से प्रेरणा लेते हुए, प्रथम चरण में नवगठित इकाई के लिए "मत्स्य संघ" नाम का सुझाव किसने दिया था?
(1) के.एम. मुंशी
(2) जवाहरलाल नेहरू
(3) वी.पी. मेनन
(4) गोकुलभाई भट्ट
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. एकीकरण के पहले चरण के दौरान मत्स्य संघ में किस ठिकाने को सम्मिलित किया गया था?
(1) लावा
(2) कुशलगढ़
(3) शाहपुरा
(4) नीमराणा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. सूची I में मत्स्य संघ के पदों को सूची II में नियुक्त व्यक्तियों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (मत्स्य संघ का पद)
A. राजप्रमुख
B. उप-राजप्रमुख
C. प्रधानमंत्री
D. उद्घाटनकर्ता
सूची II: (नियुक्त व्यक्ति)
i. शोभाराम कुमावत
ii. एन.वी. गाडगिल
iii. उदयभान सिंह
iv. गणेशपाल देव
सही कूट का चयन करें:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. मत्स्य संघ के गठन से पहले, महात्मा गांधी की हत्या में शासक की संलिप्तता के संदेह के कारण भारत सरकार ने किस राज्य का प्रशासन अस्थायी रूप से अपने हाथ में ले लिया था?
(1) धौलपुर
(2) करौली
(3) अलवर
(4) भरतपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, कथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): मत्स्य संघ ने अंततः वृहद राजस्थान में विलय से पहले मई 1949 तक एक पृथक अस्तित्व बनाए रखा।
कारण (R): इसके सदस्य राज्यों के बीच भाषाई समानता के आधार पर राजस्थान या उत्तर प्रदेश में विलय के संबंध में गहरा मतभेद था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. मत्स्य संघ का उद्घाटन समारोह कहाँ आयोजित किया गया था?
(1) लोहागढ़ किला, भरतपुर
(2) सिटी पैलेस, अलवर
(3) जूनागढ़ किला, बीकानेर
(4) करौली पैलेस
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. एकीकरण के दूसरे चरण (25 मार्च 1948) में, कितनी रियासतों का विलय होकर 'राजस्थान संघ' का गठन हुआ?
(1) सात
(2) आठ
(3) नौ
(4) दस
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. निम्नलिखित में से कौन सा राज्य एकीकरण के दूसरे चरण के दौरान गठित राजस्थान संघ का हिस्सा नहीं था?
(1) कोटा
(2) उदयपुर
(3) बूंदी
(4) झालावाड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. दूसरे चरण के दौरान राजस्थान संघ में किस ठिकाने को एकीकृत किया गया था?
(1) कुशलगढ़
(2) लावा
(3) नीमराणा
(4) सिरोंज
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. राजस्थान संघ (द्वितीय चरण) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. कोटा को इसकी राजधानी नामित किया गया था।
II. कोटा के महाराव भीम सिंह को राजप्रमुख नियुक्त किया गया था।
III. हीरालाल शास्त्री को प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया था।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. 25 मार्च 1948 को गठित राजस्थान संघ के प्रधानमंत्री के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?
(1) माणिक्य लाल वर्मा
(2) शोभाराम कुमावत
(3) जय नारायण व्यास
(4) गोकुल लाल असावा

(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. राजस्थान संघ के लिए विलय समझौते पर हस्ताक्षर करते समय किस शासक ने ये प्रसिद्ध शब्द कहे थे, "मैं अपने डेथ वारंट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ"?
(1) डूंगरपुर के महारावल लक्ष्मण सिंह
(2) बूंदी राज्य के महाराव बहादुर सिंह
(3) बांसवाड़ा के महारावल चंद्रवीर सिंह
(4) शाहपुरा राज्य के महाराजा सुदर्शन देव
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. सूची I में द्वितीय चरण के राज्यों को सूची II में उनके शासक राजवंशों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (द्वितीय चरण का राज्य)
A. कोटा
B. प्रतापगढ़
C. शाहपुरा
D. झालावाड़
सूची II: (शासक राजवंश)
i. झाला
ii. हाड़ा
iii. सिसोदिया
iv. गुहिल
सही कूट का चयन करें:
(1) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. 25 मार्च 1948 को राजस्थान संघ का उद्घाटन किसने किया था?
(1) जवाहरलाल नेहरू
(2) सरदार वल्लभभाई पटेल
(3) लॉर्ड माउंटबेटन
(4) एन.वी. गाडगिल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. राजस्थान संघ के गठन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसमें हाड़ौती क्षेत्र के राज्य सम्मिलित थे।
II. इसमें वागड़ क्षेत्र के राज्य सम्मिलित थे।
III. शाहपुरा राजपूताना का पहला राज्य था जिसने विलय से पहले पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की थी।
IV. टोंक इस संघ की एकमात्र मुस्लिम रियासत थी।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. संयुक्त राजस्थान (तृतीय चरण) का गठन 18 अप्रैल 1948 को मौजूदा राजस्थान संघ में किस बड़े राज्य के विलय से हुआ था?
(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर (मेवाड़)
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. राजस्थान के एकीकरण के पहले चार चरणों के दौरान प्रधानमंत्री बनने वाले निम्नलिखित नेताओं को उनके कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. गोकुल लाल असावा
II. शोभाराम कुमावत
III. हीरालाल शास्त्री
IV. माणिक्य लाल वर्मा
सही क्रम का चयन करें:
(1) II, I, IV, III
(2) I, II, III, IV
(3) II, IV, I, III
(4) IV, II, I, III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. अप्रैल 1948 में संयुक्त राजस्थान के राजप्रमुख के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?
(1) महाराव भीम सिंह
(2) सवाई मान सिंह II
(3) महाराजा हनवंत सिंह
(4) महाराणा भूपाल सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. संयुक्त राजस्थान के प्रधानमंत्री कौन थे?
(1) जय नारायण व्यास
(2) माणिक्य लाल वर्मा
(3) गोकुल लाल असावा
(4) मोहन लाल सुखाड़िया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. तृतीय चरण में उदयपुर के एकीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. उदयपुर संयुक्त राजस्थान की राजधानी बना।
II. महाराणा भूपाल सिंह ने 20 लाख रुपये के प्रिवी पर्स की मांग की।
III. कोटा के महाराव भीम सिंह को वरिष्ठ उप-राजप्रमुख बनाया गया।
IV. उद्घाटन सरदार पटेल द्वारा किया गया था।
V. प्रतिवर्ष कोटा में विधानसभा का एक पृथक सत्र आयोजित करने का आश्वासन दिया गया था।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, III और V
(2) केवल I, II, IV और V

iv. अपने सिंचाई मुख्य कार्यों की सुरक्षा के लिए विलय पर हस्ताक्षर करने वाला पहला राज्य

सही कूट का चयन करें:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

98. 1956 में इसके अंतिम गठन पर, राजस्थान राज्य के तहत समेकित कुल अनुमानित भौगोलिक क्षेत्रफल कितना था?
(1) 2.42 लाख वर्ग किमी
(2) 3.42 लाख वर्ग किमी
(3) 4.42 लाख वर्ग किमी
(4) 1.42 लाख वर्ग किमी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. राजस्थान के एकीकरण ने राज्य में किस पारंपरिक सामंती प्रशासनिक व्यवस्था के उन्मूलन को गति प्रदान की?
(1) रैयतवाड़ी व्यवस्था
(2) महलवाड़ी व्यवस्था
(3) जागीरदारी व्यवस्था
(4) मनसबदारी व्यवस्था
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. एकीकरण के दौरान राजनीतिक पुनर्गठन के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. एकीकरण प्रक्रिया ने वास्तविक राजनीतिक शक्ति शासकों से लोकप्रिय नेताओं को हस्तांतरित कर दी।
II. प्रत्येक रियासत की पूर्व राजधानी में उच्च न्यायालय स्थापित किए गए थे।
III. विभिन्न राज्यों के बीच सीमा शुल्क अवरोधों को समाप्त कर दिया गया था।
IV. राजस्थान के लिए एक एकीकृत सिविल सेवा की स्थापना की गई थी।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

101. भारतीय संविधान के किस अनुच्छेद में मूल रूप से रियासतों के पूर्व शासकों को प्रिवी पर्स के भुगतान का प्रावधान था?
(1) अनुच्छेद 370
(2) अनुच्छेद 356
(3) अनुच्छेद 291
(4) अनुच्छेद 395
(5) प्रश्न अनुत्तरित

102. निम्नलिखित प्रमुख हस्तियों को उस क्रम में व्यवस्थित करें जिस क्रम में उन्होंने राजस्थान के प्रशासनिक प्रमुखों के रूप में कार्य किया:
I. हीरालाल शास्त्री
II. सी.एस. वेंकटाचारी
III. जय नारायण व्यास
IV. टीकाराम पालीवाल

सही क्रम का चयन करें:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) I, III, II, IV
(4) IV, III, II, I
(5) प्रश्न अनुत्तरित

103. भरतपुर के किस स्थानीय नेता को, जो प्रजा परिषद में सक्रिय थे, अक्सर "राजस्थान के दूसरे नेहरू" कहा जाता है?
(1) मास्टर आदित्येंद्र
(2) गोपी लाल यादव
(3) किशन लाल जोशी
(4) जुगल किशोर चतुर्वेदी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

104. निम्नलिखित में से किस रियासत ने भारतीय संघ में सम्मिलित होने से पूर्व 'स्वतंत्रता दिवस' पृथक रूप से मनाया था?
(1) राजपूताना के किसी भी राज्य ने आधिकारिक तौर पर पृथक संस्था के रूप में अपनी स्वतंत्रता नहीं मनाई थी।
(2) महाराजा हनवंत सिंह के अधीन जोधपुर राज्य।
(3) महाराणा भूपाल सिंह के अधीन उदयपुर राज्य।
(4) महाराजा सादुल सिंह के अधीन बीकानेर राज्य।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

105. राजस्थान के एकीकरण के राष्ट्रीय महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसने भारत की संवेदनशील पश्चिमी सीमा को सुरक्षित किया।
II. इसने पूर्ण राजतंत्रों को एक लोकतांत्रिक गणराज्य में सुगमता से विलीन किया।
III. इसने विलय पत्र तंत्र की प्रभावकारिता सिद्ध की।
IV. इसके परिणामस्वरूप पूरे राजपूताना में तत्काल बड़े पैमाने पर सांप्रदायिक दंगे हुए।
V. इसने उत्तर भारत में भाषाई राज्य पुनर्गठन का आधार बनाया।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, IV और V
(4) केवल I, II, III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. बी.आर. पटेल समिति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. इसका गठन वृहद राजस्थान की राजधानी को लेकर चल रहे विवाद को सुलझाने के लिए किया गया था।
II. इसने अपनी भौगोलिक केंद्रीयता के आधार पर जोधपुर को राजधानी बनाने की अनुशंसा की थी।
III. इसने जोधपुर में उच्च न्यायालय की स्थापना की अनुशंसा की थी।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. बी.आर. पटेल समिति की अनुशंसाओं के आधार पर किस शहर को वृहद राजस्थान की राजधानी बनाया गया था?

(1) जयपुर
(2) जोधपुर
(3) उदयपुर
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. 30 मार्च 1949 को वृहद राजस्थान के प्रधानमंत्री का पद किसने ग्रहण किया?

(1) जय नारायण व्यास
(2) टीकाराम पालीवाल
(3) हीरालाल शास्त्री
(4) मोहन लाल सुखाड़िया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. सूची I में बी.आर. पटेल समिति द्वारा सौंपे गए सरकारी विभागों को सूची II में उनके आवंटित शहरों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (सरकारी विभाग)

A. उच्च न्यायालय
B. शिक्षा विभाग
C. खनिज और सीमा शुल्क विभाग
D. कृषि विभाग

सूची II: (आवंटित शहर)

i. भरतपुर
ii. बीकानेर
iii. जोधपुर
iv. उदयपुर

सही कूट का चयन करें:

(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. जयपुर में वृहद राजस्थान के गठन का औपचारिक उद्घाटन किसने किया था?

(1) लॉर्ड माउंटबेटन
(2) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(3) जवाहरलाल नेहरु
(4) सरदार वल्लभभाई पटेल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. वृहद राजस्थान के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. इसने लगभग सभी प्रमुख राजपूताना राज्यों को एक राजनीतिक छत्र के नीचे ला दिया।
II. इस विलय से पहले जैसलमेर सीधे केंद्र सरकार द्वारा प्रशासित था।
III. महाराजप्रमुख का पद विशेष रूप से मेवाड़ शासक के सम्मान के लिए बनाया गया था।
IV. वी.पी. मेनन ने इस चरण में जैसलमेर को सम्मिलित करने का कड़ा विरोध किया था।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. 15 मई 1949 को, 'संयुक्त वृहद राजस्थान' बनाने के लिए अंततः मत्स्य संघ का वृहद राजस्थान में विलय कर दिया गया। यह विलय किस समिति की अनुशंसाओं पर आधारित था?

(1) फजल अली आयोग
(2) बी.आर. पटेल समिति
(3) शंकरराव देव समिति
(4) जे.वी.पी. समिति
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. राजस्थान के एकीकरण के संबंध में निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

I. वृहद राजस्थान में मत्स्य संघ का विलय
II. मत्स्य संघ का गठन
III. उदयपुर का समावेशन
IV. सिरोही का समावेशन

सही क्रम का चयन करें:

(1) II, I, III, IV
(2) II, III, I, IV
(3) III, II, I, IV
(4) II, III, IV, I
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. शंकरराव देव समिति को मुख्य रूप से किन दो विशिष्ट राज्यों की जनता की राय जानने का कार्य सौंपा गया था कि वे राजस्थान या उत्तर प्रदेश में से किसमें विलय होना चाहते हैं?

(1) भरतपुर और धौलपुर

(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. राजस्थान में विलय से पहले, 1950 के भारतीय संविधान के तहत अजमेर-मेरवाड़ा की संवैधानिक स्थिति क्या थी?
(1) क-श्रेणी राज्य
(2) ख-श्रेणी राज्य
(3) ग-श्रेणी राज्य
(4) घ-श्रेणी क्षेत्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. 1956 से पहले अजमेर राज्य की पृथक विधानसभा को किस नाम से जाना जाता था?
(1) धारा सभा
(2) विधान परिषद
(3) प्रजा मंडल
(4) लोक सभा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. अजमेर की धारा सभा में कितने निर्वाचित सदस्य थे?
(1) 20
(2) 30
(3) 40
(4) 60
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. राजस्थान में विलय से पहले अजमेर राज्य के पहले और एकमात्र मुख्यमंत्री के रूप में किसने कार्य किया?
(1) मुकुट बिहारी लाल भार्गव
(2) ज्वाला प्रसाद शर्मा
(3) गोकुलभाई भट्ट
(4) हरिभाऊ उपाध्याय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. अजमेर-मेरवाड़ा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह रियासतों से घिरा हुआ एक ब्रिटिश प्रशासनिक अंतः क्षेत्र था।
II. यह राजपूताना में आर्य समाज आंदोलन का गढ़ था।
III. हरिभाऊ उपाध्याय ने 1949 में राजस्थान के साथ इसके तत्काल विलय की वकालत की थी।
IV. राज्य पुनर्गठन आयोग ने अजमेर को पृथक राज्य बनाए रखने की अनुशंसा की थी।
V. यह अंततः राजस्थान का 26वां जिला बना।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और V
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, IV और V
(4) केवल I, III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

86. अजमेर में हरिभाऊ उपाध्याय द्वारा स्थापित किस प्रमुख संस्था ने स्वतंत्रता और एकीकरण संघर्ष के दौरान राजनीतिक और सामाजिक जागृति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी?
(1) वनस्थली विद्यापीठ
(2) गांधी आश्रम, हटूंडी
(3) वर्धमान विद्यालय
(4) राजस्थान सेवा संघ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. अजमेर-मेरवाड़ा के एकीकरण के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) इसकी रणनीतिक और प्रशासनिक विशिष्टता के कारण केंद्र सरकार शुरु में अजमेर का विलय करने में हिचकिचा रही थी।
(2) अजमेर के स्थानीय कांग्रेस नेता शुरु में विलय के प्रश्न पर विभाजित थे।
(3) अंतिम विलय के लिए प्रत्यक्ष संवैधानिक संशोधन की आवश्यकता थी।
(4) अजमेर के विलय के परिणामस्वरूप राजस्थान राज्य को क्षेत्र का महत्वपूर्ण नुकसान हुआ।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. सूची I में नेताओं को सूची II में एकीकरण प्रक्रिया के दौरान उनके संबंधित क्षेत्रों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (नेता)
A. हीरालाल शास्त्री
B. माणिक्य लाल वर्मा
C. जय नारायण व्यास
D. गोकुलभाई भट्ट
सूची II: (संबंधित क्षेत्र)
i. जोधपुर
ii. जयपुर
iii. सिरोही
iv. मेवाड़
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. राजस्थान के एकीकरण के नेताओं के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. माणिक्य लाल वर्मा ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' पुस्तक लिखी।
II. हीरालाल शास्त्री ने वनस्थली में 'जीवन कुटीर' की स्थापना की।
III. जय नारायण व्यास ने 'अखंड भारत' समाचार पत्र का संपादन किया।

(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. एकीकरण के क्रमिक चरणों (प्रथम से चतुर्थ) के दौरान राजधानी के रूप में कार्य करने वाले स्थानों के सही क्रम का चयन करें:
(1) अलवर → कोटा → उदयपुर → जयपुर
(2) भरतपुर → उदयपुर → कोटा → जोधपुर
(3) अलवर → उदयपुर → कोटा → जयपुर
(4) कोटा → अलवर → जयपुर → उदयपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. 1 नवंबर 1956 को निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र राजस्थान में सम्मिलित नहीं किया गया था?
(1) अजमेर-मेरवाड़ा
(2) आबू और देलवाड़ा
(3) सिरोंज
(4) सुनील टप्पा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. सुनील टप्पा का क्षेत्र, जिसे 1956 में राजस्थान में विलीन कर दिया गया था, पहले किस राज्य का हिस्सा था?
(1) मध्य भारत
(2) बॉम्बे राज्य
(3) उत्तर प्रदेश
(4) गुजरात
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. 1956 में क्षेत्रीय आदान-प्रदान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर consider करें:
I. झालावाड़ जिले का सिरोंज उपखंड मध्य प्रदेश को हस्तांतरित कर दिया गया।
II. मंदसौर जिले का सुनील टप्पा राजस्थान को हस्तांतरित कर दिया गया।
III. अजमेर-मेरवाड़ा को राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच विभाजित किया गया था।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. निम्नलिखित अंतिम एकीकरण की घटनाओं को क्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना
II. बॉम्बे राज्य में आबू और देलवाड़ा का विलय
III. 7वें संविधान संशोधन अधिनियम का कार्यान्वयन
IV. राजस्थान में अजमेर-मेरवाड़ा का अंतिम एकीकरण
सही क्रम का चयन करें:
(1) II, I, III, IV
(2) I, II, IV, III
(3) II, I, IV, III
(4) I, III, II, IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. किस संविधान संशोधन अधिनियम के माध्यम से राजप्रमुख के पद को समाप्त कर राज्यपाल के संवैधानिक पद से प्रतिस्थापित किया गया था?
(1) प्रथम संशोधन अधिनियम, 1951
(2) चतुर्थ संशोधन अधिनियम, 1955
(3) 7वाँ संशोधन अधिनियम, 1956
(4) 9वाँ संशोधन अधिनियम, 1960
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. सूची I में दिए गए क्षेत्रों को सूची II में 1956 के पुनर्गठन के दौरान की गई कार्रवाइयों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (1956 में क्षेत्र)
A. अजमेर-मेरवाड़ा
B. आबू और देलवाड़ा
C. सुनील टप्पा
D. सिरोंज
सूची II: (की गई कार्रवाई)
i. बॉम्बे राज्य से राजस्थान को हस्तांतरित
ii. मध्य प्रदेश से राजस्थान को हस्तांतरित
iii. राजस्थान से मध्य प्रदेश को हस्तांतरित
iv. एक नए जिले के रूप में पूर्णतः राजस्थान में विलीन
सही कूट का चयन करें:
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

79. 1 नवंबर 1956 को राजस्थान के पूर्णतः एकीकृत राज्य के पहले राज्यपाल के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?
(1) गुरुमुख निहाल सिंह
(2) डॉ. संपूर्णानंद
(3) सरदार हुकम सिंह
(4) जोगेंद्र सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. एकीकरण के अंतिम चरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. जब अंतिम पुनर्गठन हुआ तब मोहन लाल सुखाड़िया राजस्थान के मुख्यमंत्री थे।
II. अजमेर राजस्थान का 26वां जिला बना।
III. राजस्थान की राजधानी अस्थायी रूप से जयपुर से अजमेर स्थानांतरित कर दी गई थी।
IV. पुनर्गठन के बाद उच्च न्यायालय को स्थायी रूप से जोधपुर में रखा गया।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II और III

(2) अलवर और करौली
(3) भरतपुर और अलवर
(4) धौलपुर और करौली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. वृहद राजस्थान में मत्स्य संघ के एकीकरण के दौरान, मत्स्य मंत्रिमंडल के किस नेता को हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमंडल में सम्मिलित किया गया था?
(1) जुगल किशोर चतुर्वेदी
(2) शोभाराम कुमावत
(3) मास्टर आदित्येंद्र
(4) भोला नाथ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. मई 1949 में एकीकरण प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. नई इकाई को 'संयुक्त वृहद राजस्थान' कहा गया।
II. शंकरराव देव समिति में तीन सदस्य थे।
III. आर.के. सिद्धवा और प्रभु दयाल समिति के अन्य दो सदस्य थे।
IV. भरतपुर और धौलपुर की जनता ने भारी बहुमत से उत्तर प्रदेश में सम्मिलित होने के लिए मतदान किया।
V. मत्स्य संघ के विलय के साथ ही सभी मुख्य रूप से हिंदी भाषी जिलों का एकीकरण पूर्ण हो गया।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल IV
(2) केवल I और II
(3) केवल III और V
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. एकीकरण के छठे चरण (26 जनवरी 1950) में, किस रियासत का राजस्थान में विलय किया गया था, लेकिन उसके एक महत्वपूर्ण हिस्से को विभाजित कर पृथक कर दिया गया था?
(1) सिरोही
(2) झालावाड़
(3) डूंगरपुर
(4) प्रतापगढ़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, कथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): राजस्थान के लोगों ने सिरोही के प्रारंभिक एकीकरण मापदंडों का जोरदार विरोध किया था।
कारण (R): सरदार पटेल ने सिरोही की आबू और देलवाड़ा तहसीलों को बॉम्बे राज्य में मिला दिया था, जिससे राजस्थान अपने एकमात्र पर्वतीय स्थल से वंचित हो गया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. सूची I में एकीकरण के चरणों को सूची II में उनके संबंधित उद्घाटनकर्ताओं के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (एकीकरण चरण)
A. मत्स्य संघ
B. राजस्थान संघ
C. संयुक्त राजस्थान
D. वृहद राजस्थान
सूची II: (उद्घाटनकर्ता)
i. जवाहरलाल नेहरू
ii. सरदार पटेल
iii. एन.वी. गाडगिल (18 मार्च)
iv. एन.वी. गाडगिल (25 मार्च)
सही कूट का चयन करें:
(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. सिरोही के किस प्रमुख राजनीतिक नेता ने सिरोही के राजस्थान में पूर्ण विलय के लिए आंदोलन का नेतृत्व किया था?
(1) माणिक्य लाल वर्मा
(2) जय नारायण व्यास
(3) गोकुलभाई भट्ट
(4) भोगीलाल पंड्या
(5) प्रश्न अनुत्तरित

70. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, कथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): राजस्थान के एकीकरण का अंतिम चरण 1 नवंबर 1956 को संपन्न हुआ।
कारण (R): राज्य पुनर्गठन आयोग ने पूरे भारत में भाषाई और प्रशासनिक आधार पर सीमाओं के समायोजन की अनुशंसा की थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. राज्य पुनर्गठन आयोग (1953-1955), जिसकी अनुशंसाओं के कारण राजस्थान को अंतिम स्वरुप मिला, की अध्यक्षता किसने की थी?
(1) के.एम. पणिक्कर
(2) एच.एन. कुंजरू
(3) वी.पी. मेनन
(4) फजल अली

IV. गोकुल लाल असावा मुख्य रुप से बीकानेर क्षेत्र के नेता थे।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, कथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें:

कथन (A): राजपूताना राज्यों के एकीकरण को बड़े पैमाने पर “रक्तहीन क्रांति” कहा गया।

कारण (R): हैदराबाद या जूनागढ़ के विपरीत, केंद्र सरकार को राजस्थान के किसी भी राज्य को एकीकृत करने के लिए प्रत्यक्ष सैन्य कार्रवाई का सहारा नहीं लेना पड़ा।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

91. जोधपुर के किस शासक ने स्वतंत्रता से ठीक पहले मुहम्मद अली जिन्ना के साथ गुप्त वार्ता की थी?

(1) महाराजा उम्मेद सिंह
(2) महाराजा गज सिंह
(3) महाराजा सादुल सिंह
(4) महाराजा हनवंत सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. इन गुप्त वार्ताओं के दौरान जोधपुर के महाराजा और मुहम्मद अली जिन्ना के बीच प्राथमिक मध्यस्थ के रुप में किसने कार्य किया था?

(1) हैदराबाद के निजाम
(2) भोपाल के नवाब
(3) जूनागढ़ के नवाब
(4) सर वी.टी. कृष्णामाचारी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. जोधपुर के महाराजा को पाकिस्तान में सम्मिलित होने के लिए लुभाने हेतु जिन्ना द्वारा एक रिक्त कागज़ पर कथित तौर पर कौन सी महत्वपूर्ण रियायत दी गई थी?

(1) पाकिस्तानी केंद्रीय विधायिका से पूर्ण स्वतंत्रता
(2) पश्चिमी पाकिस्तान के गवर्नर-जनरल की उपाधि
(3) कराची पत्तन तक निःशुल्क पहुंच और शस्त्र निर्माण का अधिकार
(4) पड़ोसी राजपूत राज्यों को जीतने के लिए तत्काल सैन्य सहायता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

94. प्रारंभिक विलय की अवधि के दौरान जैसलमेर राज्य ने एक जटिल स्थिति क्यों प्रस्तुत की थी?

(1) वहां एक नवाब का शासन था जिसने जनता की इच्छा के विरुद्ध पाकिस्तान में सम्मिलित होने का प्रयास किया था।
(2) इसने किसी भी विलय समझौते पर हस्ताक्षर करने से तब तक इनकार किया जब तक महत्वपूर्ण औद्योगिक अनुदान नहीं मिला।
(3) इसने जुलाई 1947 में ही पाकिस्तान के साथ औपचारिक गुप्त संधि कर ली थी।
(4) यह पाकिस्तान की सीमा से लगा एक हिंदू बहुल राज्य था जिसके निर्णय जोधपुर के रुख से प्रभावित थे।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. एकीकरण के प्रतिरोध के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. सरदार पटेल ने अनिच्छुक शासकों को विवश करने के लिए प्रजा मंडल के माध्यम से जन विद्रोह की चेतावनी का उपयोग किया।
II. लॉर्ड माउंटबेटन और वी.पी. मेनन के दबाव के कारण जोधपुर ने अंततः भारत के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए।
III. एकीकरण से पहले धौलपुर और भरतपुर में महत्वपूर्ण आंतरिक सांप्रदायिक तनाव देखा गया था।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. मत्स्य संघ के गठन से लेकर अंतिम पुनर्गठन तक, राजस्थान के एकीकरण की संपूर्ण प्रक्रिया में कुल कितना समय लगा?

(1) 7 वर्ष, 11 महीने और 14 दिन
(2) 8 वर्ष, 7 महीने और 14 दिन
(3) 9 वर्ष, 2 महीने और 10 दिन
(4) 5 वर्ष, 8 महीने और 15 दिन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. सूची I में रियासतों को सूची II में एकीकरण के दौरान उनकी विशिष्ट मांगों या शर्तों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (रियासत)

A. जोधपुर
B. मेवाड़
C. बीकानेर
D. जयपुर

सूची II: (विशिष्ट मांग/शर्त)

i. चाहता था कि वृहद राजस्थान की राजधानी वहां स्थित हो
ii. 20 लाख के प्रिवी पर्स की मांग की
iii. शुरु में कराची पत्तन तक पहुंच के लिए वार्ता की

(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. उदयपुर में संयुक्त राजस्थान (तृतीय चरण) का उद्घाटन व्यक्तिगत रूप से किस राष्ट्रीय नेता द्वारा किया गया था?
(1) महात्मा गांधी
(2) सरदार वल्लभभाई पटेल
(3) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
(4) जवाहरलाल नेहरु
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. जयपुर के वृहद राजस्थान में एकीकृत होने से पहले जुलाई 1948 में किस ठिकाने का विलय जयपुर राज्य में किया गया था?
(1) लावा
(2) कुशलगढ़
(3) नीमराणा
(4) सिरोंज
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. सूची I में एकीकरण के चरणों को सूची II में उनकी राजधानियों के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: (एकिकरण का चरण)
A. मत्स्य संघ
B. राजस्थान संघ
C. संयुक्त राजस्थान
D. वृहद राजस्थान
सूची II: (राजधानी)
i. कोटा
ii. अलवर
iii. जयपुर
iv. उदयपुर
सही कूट का चयन करें:
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. महाराणा भूपाल सिंह की 20 लाख रुपये के प्रिवी पर्स की मांग को पूरा करने के लिए केंद्र सरकार ने भुगतान की संरचना किस प्रकार की थी?
(1) 10 लाख मानक प्रिवी पर्स के रूप में और 10 लाख कृषि सहायता के लिए वार्षिक अनुदान के रूप में।
(2) 10 लाख प्रिवी पर्स के रूप में, 5 लाख राजप्रमुख भत्ते के रूप में, और 5 लाख धार्मिक अनुदान के रूप में।
(3) समस्त शाही प्रशासनिक व्यय के लिए 20 लाख को एकल समेकित कर-मुक्त अनुदान के रूप में।
(4) 15 लाख मानक प्रिवी पर्स के रूप में और 5 लाख एक विशेष व्यक्तिगत ऋण के रूप में।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, कथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें:
कथन (A): संयुक्त राजस्थान ने रियासती विभाग के लिए एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक विजय दर्ज की।
कारण (R): मेवाड़ के एकीकरण ने, जिसने सदियों तक विदेशी अधीनता का कड़ा विरोध किया था, राजपूताना की अन्य प्रमुख रियासतों को संघ में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. वृहद राजस्थान का गठन किस ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण तिथि को हुआ था, जिसे अब राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाता है?
(1) 26 जनवरी 1950
(2) 15 अगस्त 1947
(3) 30 मार्च 1949
(4) 1 नवंबर 1956
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. वृहद राजस्थान बनाने के लिए कौन सी चार बड़ी रियासतें संयुक्त राजस्थान में विलीन हुईं?
(1) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और भरतपुर
(2) जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर और सिरोही
(3) जयपुर, उदयपुर, जोधपुर और बीकानेर
(4) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. वृहद राजस्थान के गठन पर किसे आजीवन "महाराजप्रमुख" के रूप में विशिष्ट रूप से नामित किया गया था?
(1) सवाई मान सिंह II
(2) महाराजा हनवंत सिंह
(3) महाराणा भूपाल सिंह
(4) महाराजा सादुल सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. वृहद राजस्थान के राजप्रमुख के रूप में किसे नियुक्त किया गया था?
(1) महाराणा भूपाल सिंह
(2) सवाई मान सिंह II
(3) महाराव भीम सिंह
(4) उदयभान सिंह
(5) प्रश्न अनुत्तरित

106. 1947 में, भारत सरकार के किस विभाग को एकीकरण के माध्यम से देश के विखंडन को रोकने का महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था?

(1) रियासती विभाग
(2) गृह विभाग
(3) रक्षा विभाग
(4) प्रांतीय समन्वय विभाग
(5) प्रश्न अनुत्तरित

107. हीरालाल शास्त्री के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. वे वृहद राजस्थान के पहले मुख्यमंत्री थे।
II. उन्होंने जयपुर राज्य के प्रारंभिक एकीकरण की वार्ता की।
III. उन्होंने 1951 में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

108. किस राज्य के शासक पर महात्मा गांधी की हत्या से संभावित संबंधों का संदेह व्यक्त किया गया था?

(1) धौलपुर
(2) अलवर
(3) भरतपुर
(4) करौली
(5) प्रश्न अनुत्तरित

109. एकीकरण प्रक्रिया के दौरान, प्रिवी पर्स किस प्राथमिक मापदंड के आधार पर निर्धारित किया गया था?

(1) कुल जनसंख्या
(2) वर्ग किलोमीटर में क्षेत्रफल
(3) राज्य का औसत वार्षिक राजस्व
(4) भारतीय सेना को सौंपे गए सैनिकों की संख्या
(5) प्रश्न अनुत्तरित

110. सूची I में रियासतों को सूची II में उनकी एकीकरण चरण की तिथियों के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (रियासत)

A. बांसवाड़ा
B. जयपुर
C. अलवर
D. सिरोही (आंशिक)

सूची II: (एकीकरण चरण की तिथि)

i. 18 मार्च 1948
ii. 25 मार्च 1948
iii. 30 मार्च 1949
iv. 26 जनवरी 1950

सही कूट का चयन करें:

(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

111. निम्नलिखित में से कौन वृहद राजस्थान में हीरालाल शास्त्री मंत्रिमंडल का सदस्य नहीं था?

(1) गोकुल लाल असावा
(2) सिद्धराज ढड्ढा
(3) प्रेम नारायण माथुर
(4) फूलचंद बाफना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

112. राजस्थान पर राज्य पुनर्गठन आयोग के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. इसे 1 नवंबर 1956 को लागू किया गया था।
II. इसने अजमेर-मेरवाड़ा के पूर्ण राज्य के विलय की मांग को अस्वीकार कर दिया था।
III. इसने आबू और देलवाड़ा की राजस्थान में वापसी को सुगम बनाया।
IV. यह सीमावर्ती क्षेत्रों की भाषाई संरचना से प्रभावित था।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

113. यथास्थिति समझौते के तहत, प्रशासन का निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र अपरिवर्तित रहा?

(1) विधानसभाओं का निर्वाचन
(2) व्यापार, पारगमन और संचार
(3) सैन्य विस्तार
(4) राज्य के संविधान का प्रारूप तैयार करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

114. उस प्राथमिक कारण की पहचान करें जिसके कारण जैसलमेर को अल्प अवधि के लिए प्रत्यक्ष केंद्रीय प्रशासन के अधीन रखा गया था।

(1) सीमा पर रणनीतिक सुरक्षा चिंताएं और आंतरिक प्रशासनिक बुनियादी ढांचे का अभाव।
(2) रेगिस्तानी क्षेत्र में भीषण अकाल की स्थिति जिसके लिए केंद्रीय सहायता की आवश्यकता थी।
(3) प्रारंभिक अवधि में महारावल द्वारा विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने से सार्वजनिक इनकार।
(4) स्थानीय नेताओं द्वारा जैसलमेर को पूर्ण स्वतंत्र राष्ट्र बनाए रखने की मांग।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

115. स्थानीय जनसंख्या के एकीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. प्रजा मंडलों ने भारत में रियासतों के एकीकरण का पूर्ण समर्थन किया।
II. राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी ने लोकतांत्रिक सुधारों के लिए आंदोलन किया।
III. सामंतों ने बिना किसी प्रतिरोध के लोकतांत्रिक एकीकरण का समर्थन किया।
IV. एकीकरण रियासतों के नागरिकों के लिए मौलिक अधिकार लेकर आया।
V. स्थानीय नेताओं ने एकीकरण को अपने स्वतंत्रता संग्राम का तार्किक समापन माना।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल I, II, III और IV
(3) केवल II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

116. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन, कथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। सही विकल्प चुनें:

कथन (A): राजप्रमुख का पद ख-श्रेणी राज्यों में राज्यपाल के पद के समतुल्य था।

कारण (R): 1950 के भारतीय संविधान ने राजस्थान जैसी रियासतों के एकीकृत समूहों को ख-श्रेणी राज्यों के रूप में वर्गीकृत किया।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

117. निम्नलिखित में से कौन सा नेता बीकानेर में राजनीतिक जागृति से निकटता से जुड़ा था?

(1) गोकुलभाई भट्ट
(2) भोगीलाल पंड्या
(3) मघाराम वैद्य
(4) मास्टर आदित्येंद्र
(5) प्रश्न अनुत्तरित

118. राजस्थान के वित्तीय एकीकरण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. विभिन्न रियासतों के मध्य लागू सीमा शुल्क समाप्त कर दिए गए।
II. 1949 में सभी क्षेत्रों में कराधान की एकीकृत प्रणाली पूर्णतः लागू की गई।
III. एकीकरण ने क्षेत्र में पहली बार केंद्रीकृत आर्थिक नियोजन की अनुमति दी।

उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?

(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

119. सूची I में स्थानीय नेताओं को सूची II में उनके द्वारा नेतृत्व की गई संस्थाओं के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: (स्थानीय नेता)

A. जय नारायण व्यास
B. हीरालाल शास्त्री
C. माणिक्य लाल वर्मा
D. हरिभाऊ उपाध्याय

सूची II: (संस्था/संगठन)

i. मारवाड़ हितकारिणी सभा
ii. वनस्थली विद्यापीठ
iii. मेवाड़ प्रजा मंडल
iv. गांधी आश्रम, हटूंडी

सही कूट का चयन करें:

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

120. निम्नलिखित में से किस घटना ने राजस्थान की एकीकरण प्रक्रिया के पूर्ण होने को चिन्हित किया?

(1) 1 नवंबर 1956 को राज्य पुनर्गठन अधिनियम का औपचारिक कार्यान्वयन।
(2) 30 मार्च 1949 को वृहद राजस्थान का गठन।
(3) 1947 के अंत में सभी राज्यों द्वारा विलय पत्र पर हस्ताक्षर।
(4) 1971 में सरकार द्वारा शाही प्रिवी पर्स का उन्मूलन।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) 19 रियासतें और 3 ठिकाने
स्वतंत्रता के समय राजपूताना क्षेत्र का प्रशासनिक ढांचा अत्यंत विविध था। इस भौगोलिक क्षेत्र में कुल उन्नीस रियासतें थीं, जिनका शासन स्थानीय राजाओं के अधीन था। इनके साथ कुशलगढ़, लावा और नीमराणा नामक तीन ठिकाने स्वायत्त इकाइयों के रूप में विद्यमान थे। अजमेर-मेरवाड़ा सीधे ब्रिटिश शासन के अधीन मुख्य आयुक्त प्रांत था। इन सभी इकाइयों को मिलाकर ही राजस्थान के सात चरणों वाले एकीकरण की आधारशिला रखी गई थी।

2. (1) अजमेर-मेरवाड़ा
राजपूताना के राजनीतिक मानचित्र पर अजमेर-मेरवाड़ा एक विशिष्ट प्रशासनिक इकाई थी। यह क्षेत्र देशी रियासतों के मध्य एक केंद्र-शासित प्रदेश की भांति कार्य करता था और सीधे ब्रिटिश शासन के प्रतिनिधि मुख्य आयुक्त द्वारा संचालित होता था। सामरिक महत्व के कारण अंग्रेजों ने इसे अपना मुख्यालय बनाया था। स्वतंत्रता के पश्चात इसे ग-श्रेणी राज्य का दर्जा दिया गया और अंततः 1956 में इसका राजस्थान में पूर्ण विलय हुआ।

3. (3) कुशलगढ़, लावा और नीमराणा
एकीकरण से पूर्व राजस्थान में तीन प्रमुख ठिकाने थे जो अर्ध-स्वायत्त प्रशासनिक दर्जा रखते थे। कुशलगढ़ बांसवाड़ा रियासत के अंतर्गत था, जबकि नीमराणा अलवर राज्य का हिस्सा था। लावा पूर्व में जयपुर रियासत का अंग था, जिसे बाद में टोंक प्रशासन से जोड़ा गया। इन ठिकानों का एकीकरण संबंधित चरणों के दौरान निकटवर्ती संघों में किया गया। ये इकाइयां रियासतों की तुलना में छोटी थीं परंतु अपनी स्थानीय शासन व्यवस्था हेतु स्वतंत्र थीं।

4. (2) न्यूनतम जनसंख्या 10 लाख और वार्षिक आय 1 करोड़
रियासती विभाग ने रियासतों के स्वतंत्र अस्तित्व के लिए कड़े मापदंड निर्धारित किए थे। सरदार पटेल के नेतृत्व में यह निर्णय लिया गया कि केवल वे ही राज्य पृथक इकाई रह सकते हैं जिनकी जनसंख्या कम से कम दस लाख हो और वार्षिक आय एक करोड़ रुपये से अधिक हो। इस नियम का उद्देश्य छोटी रियासतों के विखंडन को रोककर उन्हें बड़े संघों में मिलाना था। राजपूताना की केवल चार रियासतें ही ये शर्तें पूरी करती थीं।

5. (3) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और उदयपुर
रियासती विभाग द्वारा निर्धारित मापदंडों के अनुसार राजपूताना की उन्नीस रियासतों में से केवल चार राज्य ही स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखने के योग्य पाए गए थे। जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और उदयपुर इन शर्तों को पूरा करने वाले बड़े और आर्थिक रूप से संपन्न राज्य थे। अन्य रियासतों की आय या जनसंख्या निर्धारित सीमा से कम थी, जिसके कारण उनका पड़ोसी राज्यों या संघों में विलय करना अनिवार्य हो गया था।

6. (2) बीकानेर
भारतीय संघ में सम्मिलित होने के लिए विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के मामले में बीकानेर के महाराजा सादुल सिंह ने अग्रणी भूमिका निभाई थी। उन्होंने 7 अगस्त 1947 को इस ऐतिहासिक दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए, जिससे वे राजपूताना के पहले शासक बने जिन्होंने भारत के साथ पूर्ण सहयोग की प्रतिबद्धता जताई। उनके इस दूरदर्शी निर्णय ने अन्य रियासतों के लिए एक सकारात्मक उदाहरण प्रस्तुत किया और क्षेत्र की राजनीतिक स्थिरता सुनिश्चित करने में सहयोग दिया।

7. (4) धौलपुर
राजपूताना क्षेत्र में धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह भारतीय संघ के विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने वाले अंतिम शासक थे। उन्होंने 14 अगस्त 1947 को इस आधिकारिक प्रपत्र पर अपनी सहमति दी थी। यह हस्ताक्षर प्रक्रिया स्वतंत्रता दिवस से ठीक एक दिन पूर्व संपन्न हुई थी। धौलपुर की भौगोलिक स्थिति और कुछ राजनीतिक कारणों से इस निर्णय में विलंब हुआ था, किंतु अंततः यह राज्य भी भारतीय संघ का अभिन्न हिस्सा बन गया।

8. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान की विभिन्न रियासतों पर विशिष्ट ऐतिहासिक राजवंशों का शासन था। मेवाड़ क्षेत्र पर सिसोदिया वंश का अधिपत्य था, जो विश्व के सबसे प्राचीन राजवंशों में से एक माना जाता है। मारवाड़ में राठौड़ वंश का शासन था, जबकि जयपुर रियासत पर कच्छवाहा शासकों का नियंत्रण था। हाड़ौती क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले कोटा राज्य पर हाड़ा चौहान राजवंश का शासन रहा है। इन राजवंशों ने राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को अत्यंत समृद्ध किया है।

9. (3) नए संवैधानिक प्रावधान स्थापित होने तक ब्रिटिश शासन के साथ मौजूदा प्रशासनिक व्यवस्था को बनाए रखना।
यथास्थिति समझौते का प्राथमिक उद्देश्य सत्ता हस्तांतरण के दौरान प्रशासनिक शून्यता को रोकना था। इस समझौते ने सुनिश्चित किया कि जब तक भारत का नया संविधान और प्रशासनिक ढांचा तैयार नहीं हो जाता, तब तक संचार, परिवहन और व्यापार जैसी आवश्यक सेवाएं पुराने नियमों के अनुसार ही चलती रहेंगी। यह एक अंतरिम व्यवस्था थी जिसने रियासतों और भारत सरकार के बीच संबंधों को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए आवश्यक स्थिरता प्रदान की।

10. (1) A- और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
सरदार पटेल ने राजपूताना के राज्यों के तीव्र एकीकरण को प्राथमिकता दी क्योंकि यह क्षेत्र पाकिस्तान के साथ लंबी अंतरराष्ट्रीय सीमा साझा करता था। विभाजन के बाद उत्पन्न

69. (3) गोकुलभाई भट्ट
गोकुलभाई भट्ट सिरोही के सबसे प्रतिष्ठित राजनीतिक नेता और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्हें 'राजस्थान का गांधी' भी कहा जाता है। उन्होंने आबू और देलवाड़ा को राजस्थान में वापस लाने और सिरोही के पूर्ण विलय के लिए एक शक्तिशाली जन आंदोलन का सफल नेतृत्व किया। उनके अडिग संघर्ष और गांधीवादी सिद्धांतों के कारण ही राजस्थान के अन्य नेता भी इस मांग के समर्थन में एकजुट हुए। अंततः 1956 में राज्य पुनर्गठन आयोग ने उनकी दलीलों को स्वीकार किया और आबू-देलवाड़ा को पुनः राजस्थान का हिस्सा बनाया।

70. (1) A- और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान के एकीकरण का सातवां और अंतिम चरण 1 नवंबर 1956 को संपन्न हुआ। यह राज्य पुनर्गठन आयोग की दूरगामी अनुशंसाओं का परिणाम था, जिसने पूरे भारत में राज्यों की सीमाओं को भाषाई और प्रशासनिक दक्षता के आधार पर पुनर्व्यवस्थित करने का सुझाव दिया था। इसी प्रक्रिया के तहत अजमेर-मेरवाड़ा, आबू-देलवाड़ा और सुनील टप्पा का राजस्थान में विलय हुआ, जबकि सिरोंज को मध्य प्रदेश को सौंपा गया। इस अंतिम समायोजन ने ही राजस्थान को वह वर्तमान भौगोलिक स्वरूप प्रदान किया।

71. (4) फजल अली
1953 में गठित राज्य पुनर्गठन आयोग की अध्यक्षता न्यायमूर्ति फजल अली ने की थी, इसीलिए इसे 'फजल अली आयोग' के नाम से भी जाना जाता है। इस आयोग में के.एम. पणिक्कर और एच.एन. कुंजरू अन्य महत्वपूर्ण सदस्य थे। आयोग का मुख्य कार्य भाषाई और प्रशासनिक आधार पर भारत के राज्यों की सीमाओं का पुनर्निर्धारण करना था। राजस्थान के संदर्भ में इस आयोग ने अजमेर के विलय और आबू-देलवाड़ा की राजस्थान में वापसी की ऐतिहासिक सिफारिशें की थीं, जिससे राज्य का आधुनिक स्वरूप सुनिश्चित हो सका।

72. (1) अलवर → कोटा → उदयपुर → जयपुर
एकीकरण के पहले चार चरणों के दौरान राजधानियों का परिवर्तन राज्य की बढ़ती सीमाओं और बदलती राजनीतिक प्राथमिकता को दर्शाता है। प्रथम चरण में मत्स्य संघ का केंद्र अलवर था। दूसरे चरण में राजस्थान संघ की राजधानी कोटा बनी। तीसरे चरण में मेवाड़ के शामिल होने पर उदयपुर को यह गौरव प्राप्त हुआ। अंततः चौथे चरण में वृहद राजस्थान के गठन के साथ जयपुर को स्थायी राजधानी के रूप में चुना गया। यह क्रमिक विकास एक विशाल राज्य की स्थायी राजधानी की स्थापना की दिशा में तार्किक यात्रा थी।

73. (3) सिरोंज
1 नवंबर 1956 को हुए अंतिम भाषाई पुनर्गठन के दौरान सिरोंज क्षेत्र को राजस्थान के झालावाड़ जिले से अलग करके मध्य प्रदेश राज्य में मिला दिया गया था। यह निर्णय क्षेत्रीय संतुलन और प्रशासनिक सुगमता को ध्यान में रखकर लिया गया था। इसके विपरीत, अजमेर-मेरवाड़ा, आबू-देलवाड़ा और सुनील टप्पा को राजस्थान में शामिल किया गया था। सिरोंज का मध्य प्रदेश में जाना उस समय के सीमा समायोजन की एक महत्वपूर्ण घटना थी, जिसने राजस्थान की दक्षिण-पूर्वी सीमा को उसके वर्तमान स्वरूप में स्थायी रूप से निर्धारित कर दिया।

74. (1) मध्य भारत
सुनील टप्पा का क्षेत्र, जिसे 1956 में राजस्थान के झालावाड़ जिले में विलीन किया गया था, मूल रूप से तत्कालीन 'मध्य भारत' राज्य के मंदसौर जिले का हिस्सा था। राज्य पुनर्गठन आयोग ने भौगोलिक निकटता और जन सुविधा को ध्यान में रखते हुए इस क्षेत्र को राजस्थान को सौंपने की सिफारिश की थी। यह हस्तांतरण राज्यों के बीच क्षेत्रीय आदान-प्रदान का एक हिस्सा था, जिसका उद्देश्य सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रशासनिक नियंत्रण को अधिक प्रभावी बनाना था। इस बदलाव ने राजस्थान के मानचित्र को और अधिक स्पष्टता प्रदान की।

75. (1) केवल I और II
1956 के राज्य पुनर्गठन के दौरान राजस्थान और मध्य प्रदेश के बीच महत्वपूर्ण क्षेत्रीय आदान-प्रदान हुआ था। झालावाड़ जिले के सिरोंज उपखंड को मध्य प्रदेश को सौंपा गया, जबकि मध्य प्रदेश के मंदसौर जिले के सुनील टप्पा क्षेत्र को राजस्थान में शामिल किया गया। हालांकि, अजमेर-मेरवाड़ा के संबंध में तीसरा कथन गलत है, क्योंकि उसे विभाजित नहीं किया गया था बल्कि वह पूर्णतः राजस्थान का हिस्सा बना था। यह पुनर्गठन सीमाओं को अधिक तार्किक और प्रशासनिक रूप से सरल बनाने के उद्देश्य से लागू किया गया था।

76. (1) II, I, III, IV
राजस्थान के अंतिम एकीकरण की घटनाओं का एक निश्चित ऐतिहासिक क्रम है। सर्वप्रथम 26 जनवरी 1950 को आबू और देलवाड़ा को बॉम्बे राज्य में मिलाया गया। इसके बाद 1953 में राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना हुई। इसके पश्चात 1956 में सातवें संविधान संशोधन अधिनियम को पारित किया गया। अंततः 1 नवंबर 1956 को अजमेर-मेरवाड़ा के राजस्थान में पूर्ण विलय के साथ एकीकरण की लंबी प्रक्रिया का समापन हुआ। यह क्रम दर्शाता है कि किस प्रकार निरंतर संवैधानिक प्रयासों से राजस्थान का आधुनिक स्वरूप अस्तित्व में आया।

77. (3) 7वाँ संशोधन अधिनियम, 1956
सातवें संविधान संशोधन अधिनियम, 1956 ने भारतीय राज्यों के वर्गीकरण को समाप्त कर दिया और इसके साथ ही 'राजप्रमुख' के पद को भी विलोपित कर दिया। राजस्थान में इस ऐतिहासिक पद के स्थान पर 'राज्यपाल' का संवैधानिक पद सृजित किया गया, जो केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त राज्य का औपचारिक प्रमुख होता है। इस संशोधन के बाद ही सवाई मान सिंह द्वितीय का राजप्रमुख कार्यकाल समाप्त हुआ और प्रदेश में एक पूर्णतः एकीकृत लोकतांत्रिक प्रशासनिक व्यवस्था की नई नींव रखी गई।

78. (4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
1956 के पुनर्गठन में विभिन्न क्षेत्रों पर विशिष्ट कार्रवाइयां की गईं। अजमेर-मेरवाड़ा को राजस्थान के 26वें जिले के रूप में पूर्णतः विलीन कर दिया गया। आबू और देलवाड़ा को लंबे संघर्ष के बाद बॉम्बे राज्य से वापस लेकर राजस्थान को सौंपा

20. (1) केवल I, II और III
वी.पी. मेनन ने रियासती विभाग के सचिव के रूप में एकीकरण की पूरी योजना और विलय पत्र का वैधानिक ढांचा तैयार किया था। उन्होंने सरदार पटेल के प्रतिनिधि के रूप में शासकों से व्यक्तिगत मुलाकातें कीं। विशेष रूप से जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह के साथ उनकी वार्ता ऐतिहासिक रही, जहां उन्होंने महाराजा के संशय को दूर कर उन्हें भारत के पक्ष में किया। हालांकि, वे राजस्थान के पहले मुख्यमंत्री नहीं थे; यह पद हीरालाल शास्त्री को प्राप्त हुआ था।

21. (3) जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह
एकीकरण के दौरान एक अत्यंत नाटकीय घटना जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह के साथ घटी थी। विलय की शर्तों और पाकिस्तान के साथ उनके संभावित झुकाव को लेकर हुई चर्चा के दौरान उन्होंने आवेश में आकर वी.पी. मेनन पर अपनी पेन-पिस्तौल तान दी थी। महाराजा हनवंत सिंह शुरू में भारत में विलय को लेकर संशय में थे और जिन्ना के संपर्क में भी थे। हालांकि, लॉर्ड माउंटबेटन और मेनन के निरंतर कूटनीतिक प्रयासों के बाद उन्होंने अंततः भारतीय संघ को चुना।

22. (1) II, IV, I, III
राजस्थान के एकीकरण का घटनाक्रम क्रमिक चरणों में संपन्न हुआ था। सर्वप्रथम 18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ का गठन हुआ। इसके पश्चात 25 मार्च 1948 को राजस्थान संघ अस्तित्व में आया। तीसरे चरण में 18 अप्रैल 1948 को उदयपुर के विलय के साथ संयुक्त राजस्थान बनाया गया। अंततः 30 मार्च 1949 को चार बड़ी रियासतों के शामिल होने से वृहद राजस्थान का निर्माण हुआ। यह कालानुक्रमिक प्रगति छोटे संघों से विशाल एकीकृत राज्य की ओर बढ़ती गई।

23. (4) 18 मार्च 1948
राजस्थान के एकीकरण का प्रथम चरण 18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ के गठन के साथ आधिकारिक रूप से प्रारंभ हुआ। इस संघ में अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली नामक चार रियासतें शामिल थीं। इसका उद्घाटन केंद्रीय मंत्री एन.वी. गाडगिल द्वारा किया गया था। यह ऐतिहासिक दिन राजपूताना के राजनीतिक पुनर्गठन की दिशा में पहला ठोस कदम था, जिसने भविष्य के बड़े संघों के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया और प्रशासनिक इकाइयों को संगठित किया।

24. (1) अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली
मत्स्य संघ का निर्माण राजपूताना के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की चार विशिष्ट रियासतों अलवर, भरतपुर, धौलपुर और करौली को मिलाकर किया गया था। इन राज्यों की भौगोलिक निकटता और ऐतिहासिक सांस्कृतिक संबंधों के कारण इन्हें एक साथ एकीकृत करना प्रशासनिक रूप से सरल था। इस संघ में नीमराणा ठिकाने को भी शामिल किया गया था। प्राचीन मत्स्य प्रदेश की ऐतिहासिक पहचान को पुनर्जीवित करने के उद्देश्य से ही इस नई प्रशासनिक इकाई का नामकरण किया गया था।

25. (3) केवल V
मत्स्य संघ के गठन के बारे में अधिकांश तथ्य सही हैं, किंतु उद्घाटनकर्ता के संबंध में जानकारी त्रुटिपूर्ण है। इस संघ का उद्घाटन 18 मार्च 1948 को लोहागढ़ दुर्ग में हुआ था और यह समारोह केंद्रीय मंत्री एन.वी. गाडगिल द्वारा संपन्न किया गया था, न कि सरदार पटेल द्वारा। अन्य व्यवस्थाओं के तहत अलवर को राजधानी बनाया गया, शोभाराम कुमावत को प्रधानमंत्री पद सौंपा गया और धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह को राजप्रमुख के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

26. (1) के.एम. मुंशी
एकीकरण के प्रथम चरण में बनी नई राजनीतिक इकाई का नाम 'मत्स्य संघ' रखने का विचार कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी ने दिया था। उन्होंने महाभारत काल के प्राचीन मत्स्य महाजनपद से प्रेरणा ली थी, जिसका विस्तार इसी भौगोलिक क्षेत्र में था। मुंशी जी का मानना था कि ऐतिहासिक गौरव से जुड़े नाम न केवल जनता में स्वीकार्यता बढ़ाते हैं, बल्कि नई इकाई को एक सशक्त पहचान भी प्रदान करते हैं। उनका यह सुझाव सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया था।

27. (4) नीमराणा
एकीकरण के प्रथम चरण में जब मत्स्य संघ का गठन किया गया, तब अलवर रियासत के अधीन आने वाले नीमराणा ठिकाने को भी इसमें सम्मिलित किया गया था। नीमराणा एक छोटी लेकिन महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई थी जिसकी अपनी ऐतिहासिक विशिष्टता थी। इस समावेशन के साथ ही मत्स्य संघ के अंतर्गत चार मुख्य रियासतें और एक प्रमुख ठिकाना एकीकृत हो गए। ठिकानों का रियासतों के साथ विलय एकीकरण प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा था ताकि भविष्य में किसी क्षेत्रीय विवाद से बचा जा सके।

28. (2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
मत्स्य संघ के प्रशासनिक ढांचे में विभिन्न रियासतों के शासकों और नेताओं को सम्मिलित किया गया था। धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह को राजप्रमुख नियुक्त किया गया, जबकि करौली के महाराजा गणेशपाल देव को उप-राजप्रमुख का पद दिया गया। नेतृत्व के रूप में अलवर के शोभाराम कुमावत को प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी सौंपी गई। इस पूरे संघ का विधिवत उद्घाटन केंद्रीय मंत्री एन.वी. गाडगिल द्वारा किया गया था। पदों का यह वितरण क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने के लिए किया गया था।

29. (3) अलवर
महात्मा गांधी की हत्या के पश्चात भारत सरकार ने अलवर रियासत के प्रशासन को अपने प्रत्यक्ष नियंत्रण में ले लिया था। तत्कालीन परिस्थितियों में ऐसी आशंकाएं व्यक्त की गई थीं कि राज्य के कुछ तत्वों का संबंध इस षड्यंत्र से हो सकता है। इसी जांच और कानून-व्यवस्था बनाए रखने के उद्देश्य से अलवर के महाराजा को दिल्ली में रहने का निर्देश दिया गया था। इस प्रशासनिक हस्तक्षेप ने अंततः मत्स्य संघ के गठन की प्रक्रिया को और अधिक तीव्र करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सांप्रदायिक तनाव और सुरक्षा चुनौतियों के कारण सीमावर्ती राज्यों का सुदृढ़ीकरण आवश्यक था। यदि इन राज्यों का एकीकरण शीघ्र नहीं होता, तो राष्ट्र की सुरक्षा और अखंडता खतरे में पड़ सकती थी। रणनीतिक दृष्टिकोण से राजस्थान का एकीकृत होना भारत सरकार के लिए अत्यंत अनिवार्य कार्य था।

11. (4) वी.पी. मेनन
रियासतों के एकीकरण में सरदार वल्लभभाई पटेल के साथ वी.पी. मेनन ने मुख्य वास्तुकार की भूमिका निभाई थी। उन्हें रियासती विभाग का सचिव नियुक्त किया गया था और उन्होंने ही विलय पत्र का प्रारूप तैयार किया था। मेनन ने अपनी कूटनीतिक कुशलता से शासकों के साथ जटिल वार्ताएं कीं और उन्हें भारतीय संघ में शामिल होने के लिए राजी किया। पटेल और मेनन की जोड़ी ने प्रशासनिक बुद्धिमत्ता के साथ भारत का राजनीतिक मानचित्र पुनर्परिभाषित करने का कार्य किया।

12. (1) I, III, II
राजपूताना की रियासतों द्वारा विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने का एक निश्चित कालानुक्रमिक क्रम है। बीकानेर के महाराजा सादुल सिंह ने सर्वप्रथम 7 अगस्त 1947 को हस्ताक्षर किए। इसके पश्चात जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह ने कुछ संशय के बाद 10 अगस्त 1947 को अपनी सहमति दी। अंत में धौलपुर के महाराजा उदयभान सिंह ने 14 अगस्त 1947 को इस दस्तावेज पर हस्ताक्षर किए। यह क्रम राज्यों की राजनीतिक तत्परता और वार्ताओं की प्रगति को दर्शाता है।

13. (3) रक्षा, विदेश मामले और संचार
विलय पत्र के माध्यम से रियासतों ने अपनी संप्रभुता के तीन महत्वपूर्ण स्तंभ भारतीय अधिराज्य को सौंप दिए थे। इनमें रक्षा, विदेशी मामले और संचार व्यवस्था मुख्य रूप से शामिल थे। इन शक्तियों के हस्तांतरण के उपरांत भी शासकों को अपनी रियासतों के आंतरिक प्रशासन में कुछ समय के लिए स्वायत्तता प्रदान की गई थी। इस व्यवस्था ने रियासतों को राष्ट्रीय मुख्यधारा में समाहित होने का अवसर दिया और केंद्र सरकार को सीमाओं पर प्रभावी नियंत्रण प्रदान किया।

14. (4) प्रिवी पर्स
रियासतों के भारत में शांतिपूर्ण विलय के बदले वहां के शासकों को जो वार्षिक वित्तीय सहायता प्रदान की जाती थी, उसे प्रिवी पर्स कहा जाता था। यह राशि राजाओं की प्रतिष्ठा और उनके राज्य के पूर्व राजस्व के आधार पर निर्धारित की गई थी। इसके अतिरिक्त उन्हें कुछ निजी संपत्तियां और विशेष विशेषाधिकार भी दिए गए थे। यह संवैधानिक गारंटी के तहत दी जाने वाली पेंशन थी, जिसे 1971 में संविधान संशोधन के माध्यम से समाप्त कर दिया गया।

15. (2) केवल II और III
राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया 18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ के गठन से शुरू होकर 1 नवंबर 1956 तक चली, जिसमें कुल आठ वर्ष से अधिक का समय लगा। अजमेर-मेरवाड़ा इस क्षेत्र का एकमात्र केंद्र-शासित या ग-श्रेणी राज्य था, जिसका प्रशासन केंद्र से संचालित होता था। यद्यपि एकीकरण सात चरणों में हुआ था, किंतु दूसरे और तीसरे कथन का मेल ही इस ऐतिहासिक प्रक्रिया की प्रशासनिक और समय संबंधी जटिलता को सही स्पष्ट करता है।

16. (2) द स्टोरी ऑफ द इंटीग्रेशन ऑफ द इंडियन स्टेट्स
वी.पी. मेनन द्वारा लिखित यह पुस्तक भारतीय रियासतों के एकीकरण का सबसे प्रामाणिक और विस्तृत ऐतिहासिक विवरण प्रस्तुत करती है। इसमें उन्होंने उन चुनौतियों और कूटनीतिक प्रयासों का उल्लेख किया है जिनके माध्यम से सरदार पटेल ने बिखरे हुए भारत को एक सूत्र में पिरोया था। पुस्तक में राजपूताना के शासकों के साथ हुई वार्ताओं और विलय की कठिन प्रक्रियाओं का सजीव वर्णन मिलता है। यह ग्रंथ भारतीय इतिहास को समझने हेतु अनिवार्य दस्तावेज है।

17. (2) लॉर्ड माउंटबेटन
भारत के अंतिम वायसराय लॉर्ड माउंटबेटन ने रियासतों के शासकों को भारतीय संघ में शामिल होने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उनके राजाओं के साथ व्यक्तिगत संबंध थे, जिसका उपयोग उन्होंने सरदार पटेल और वी.पी. मेनन के प्रयासों को बल देने के लिए किया। उन्होंने शासकों को स्पष्ट किया कि ब्रिटिश सर्वोच्चता समाप्त होने के बाद भारत या पाकिस्तान में से किसी एक को चुनना ही व्यावहारिक विकल्प है। उनकी मध्यस्थता ने कई शासकों को विलय हेतु सहमत किया।

18. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के एकीकरण में विभिन्न व्यक्तियों का योगदान महत्वपूर्ण रहा है। सरदार पटेल रियासती विभाग के मंत्री थे, जबकि वी.पी. मेनन ने सचिव के रूप में कार्य किया। एन.वी. गाडगिल ने केंद्रीय मंत्री के रूप में एकीकरण के शुरुआती दो चरणों का उद्घाटन किया था। प्रथम चरण में गठित इकाई के लिए 'मत्स्य संघ' नाम का ऐतिहासिक सुझाव के.एम. मुंशी द्वारा दिया गया था। इन सभी के समन्वित प्रयासों से ही आधुनिक राजस्थान का गठन संभव हो सका।

19. (3) सरदार पटेल ने राजपूताना की सभी रियासतों को 15 अगस्त 1947 तक हस्ताक्षर न करने पर तत्काल सैन्य अधिग्रहण की धमकी दी थी।
एकीकरण की प्रारंभिक प्रक्रिया मुख्य रूप से संवाद और कूटनीतिक दबाव पर आधारित थी। सरदार पटेल ने सैन्य कार्रवाई की धमकी देने के बजाय शासकों को ऐतिहासिक उत्तरदायित्व और यथार्थवादी राजनीतिक स्थिति का बोध कराया। उन्होंने शासकों को आश्वासन दिया कि विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद उनकी आंतरिक स्वायत्तता और मान-मर्यादा बनी रहेगी। भारत सरकार का लक्ष्य राज्यों को विश्वास में लेकर उनका शांतिपूर्ण एकीकरण करना था, न कि बलपूर्वक सैन्य अधिग्रहण करना।

40. (1) केवल I, II और III
राजस्थान संघ एक व्यापक इकाई थी जिसमें हाड़ौती के कोटा, बूंदी और झालावाड़ तथा वागड़ के डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ जैसे क्षेत्र शामिल थे। शाहपुरा रियासत ने सबसे पहले पूर्ण उत्तरदायी शासन लागू करके एक ऐतिहासिक मिसाल कायम की थी। यद्यपि टोंक इस संघ की एकमात्र मुस्लिम रियासत थी, किंतु उपरोक्त कथनों में से पहले तीन की सत्यता ही इस संघ की भौगोलिक और राजनीतिक विशिष्टता को पूर्णतः स्पष्ट करती है। यह संघ दक्षिण राजस्थान के एकीकरण का केंद्र बना।

41. (3) उदयपुर (मेवाड़)
संयुक्त राजस्थान का गठन 18 अप्रैल 1948 को राजस्थान संघ में मेवाड़ (उदयपुर) रियासत के ऐतिहासिक विलय के साथ हुआ था। मेवाड़ की प्राचीनता और मर्यादा को देखते हुए इसके शासक को विशेष सम्मान प्रदान किया गया। उदयपुर के शामिल होने से राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया को अत्यधिक गौरव और बल प्राप्त हुआ। इस विलय ने अन्य बड़ी रियासतों जैसे जयपुर और जोधपुर के लिए भी भविष्य में संघ में शामिल होने का एक मनोवैज्ञानिक और राजनीतिक मार्ग प्रशस्त किया।

42. (1) II, I, IV, III
राजस्थान के एकीकरण के दौरान विभिन्न चरणों में प्रधानमंत्रियों की नियुक्ति क्षेत्रीय और राजनीतिक समीकरणों के आधार पर हुई थी। सर्वप्रथम मत्स्य संघ में शोभाराम कुमावत को नियुक्त किया गया। दूसरे चरण के राजस्थान संघ में गोकुल लाल असावा ने यह पद संभाला। तीसरे चरण में मेवाड़ के विलय के बाद माणिक्य लाल वर्मा प्रधानमंत्री बने। अंततः चौथे चरण में जब वृहद राजस्थान बना, तब हीरालाल शास्त्री को एकीकृत राजस्थान का नेतृत्व करने के लिए चुना गया।

43. (4) महाराणा भूपाल सिंह
अप्रैल 1948 में संयुक्त राजस्थान के गठन पर मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह को राजप्रमुख नियुक्त किया गया था। मेवाड़ राजवंश की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा और भारत की स्वतंत्रता के प्रति उनके वंश के प्राचीन संघर्ष को सम्मान देने के लिए यह निर्णय लिया गया था। हालांकि वे शारीरिक रूप से असमर्थ थे, फिर भी उनकी उपस्थिति ने संघ को उच्च नैतिक और राजनीतिक स्वीकार्यता प्रदान की। उनके राजप्रमुख बनने से राजस्थान के एकीकरण में मेवाड़ की अग्रणी भूमिका आधिकारिक रूप से स्थापित हुई।

44. (2) माणिक्य लाल वर्मा
मेवाड़ के प्रसिद्ध क्रांतिकारी और प्रजामंडल नेता माणिक्य लाल वर्मा को संयुक्त राजस्थान का प्रधानमंत्री बनाया गया था। उन्होंने मेवाड़ में किसानों और आदिवासियों के अधिकारों के लिए लंबे समय तक संघर्ष किया था। प्रधानमंत्री के रूप में उनकी नियुक्ति लोकप्रिय जनभावनाओं और लोकतांत्रिक आंदोलनों की विजय का प्रतीक थी। उन्होंने अपने कार्यकाल में विभिन्न रियासती विभागों के एकीकरण और जन-कल्याणकारी कार्यों को प्राथमिकता दी, जिससे प्रशासन को एक नया जन-केंद्रित दृष्टिकोण प्राप्त हुआ।

45. (1) केवल I, II, III और V
संयुक्त राजस्थान के गठन के समय उदयपुर को राजधानी घोषित किया गया और महाराणा भूपाल सिंह के लिए 20 लाख रुपये की वार्षिक राशि सुनिश्चित की गई। कोटा के महाराव भीम सिंह को वरिष्ठ उप-राजप्रमुख बनाया गया और कोटा के महत्व हेतु वहां प्रतिवर्ष विधानसभा सत्र आयोजित करने का वादा किया गया। इस चरण का उद्घाटन व्यक्तिगत रूप से जवाहरलाल नेहरू ने किया था, न कि सरदार पटेल ने। ये शर्तें मेवाड़ और हाड़ौती के बीच क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने हेतु निर्धारित थीं।

46. (4) जवाहरलाल नेहरू
संयुक्त राजस्थान (तृतीय चरण) का औपचारिक उद्घाटन 18 अप्रैल 1948 को जवाहरलाल नेहरू द्वारा उदयपुर में किया गया था। मेवाड़ जैसी ऐतिहासिक रियासत के विलय के महत्व को देखते हुए स्वयं प्रधानमंत्री ने इस समारोह में भाग लिया था। उन्होंने महाराणा के निर्णय की प्रशंसा की और राजस्थान के गौरवशाली इतिहास को आधुनिक भारत की लोकतांत्रिक शक्ति से जोड़ने का आह्वान किया। नेहरू जी की उपस्थिति ने इस एकीकरण को राष्ट्रीय स्तर पर एक विशिष्ट गौरव और राजनीतिक गंभीरता प्रदान की थी।

47. (1) लावा
जुलाई 1948 में, वृहद राजस्थान के औपचारिक गठन से पहले, लावा ठिकाने का जयपुर राज्य में विलय कर दिया गया था। लावा मूल रूप से टोंक रियासत के प्रशासन के अधीन था, परंतु भौगोलिक और राजनीतिक कारणों से वहां की जनता जयपुर के साथ जुड़ना चाहती थी। केंद्र सरकार ने स्थानीय मांग को स्वीकार करते हुए यह स्थानांतरण किया। बाद में जब जयपुर रियासत वृहद राजस्थान का हिस्सा बनी, तो लावा भी स्वतः ही इस विशाल संघ की प्रशासनिक सीमाओं के अंतर्गत समाहित हो गया।

48. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
एकीकरण के विभिन्न चरणों में राजधानियों का परिवर्तन क्षेत्रीय रियासतों के प्रभाव को दर्शाता है। प्रथम चरण में अलवर को मत्स्य संघ की राजधानी बनाया गया। दूसरे चरण के राजस्थान संघ के लिए कोटा को यह गौरव प्राप्त हुआ। तीसरे चरण में मेवाड़ के शामिल होने पर उदयपुर संयुक्त राजस्थान का मुख्य केंद्र बना। अंततः चौथे चरण में जयपुर को वृहद राजस्थान की स्थायी राजधानी के रूप में चुना गया, जो आज भी राजस्थान राज्य की राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित है।

49. (2) 10 लाख प्रिवी पर्स के रूप में, 5 लाख राजप्रमुख भत्ते के रूप में, और 5 लाख धार्मिक अनुदान के रूप में।
महाराणा भूपाल सिंह की 20 लाख रुपये की मांग को स्वीकार करते हुए केंद्र सरकार ने इसे विभिन्न श्रेणियों में विभाजित किया था। इसमें से 10 लाख रुपये मानक प्रिवी पर्स के रूप में दिए गए। अतिरिक्त 5 लाख रुपये उनके राजप्रमुख पद के

भत्ते के रूप में और शेष 5 लाख रुपये मेवाड़ के मंदिरों और धार्मिक कार्यों के लिए अनुदान के रूप में आवंटित किए गए। इस वित्तीय विभाजन ने महाराणा की मर्यादा भी बनाए रखी और सरकारी नियमों का उल्लंघन भी नहीं होने दिया।

50. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मेवाड़ के एकीकरण को भारत सरकार के लिए एक बड़ी मनोवैज्ञानिक विजय माना गया क्योंकि इस रियासत का इतिहास सदैव विदेशी अधीनता के विरुद्ध अटूट संघर्ष का रहा है। जब मेवाड़ जैसे प्रतिष्ठित और प्राचीन राज्य ने भारतीय संघ में शामिल होने का निर्णय लिया, तो इसने शेष बड़ी रियासतों के शासकों के मन में बचे संशय को समाप्त कर दिया। इसने स्पष्ट कर दिया कि भविष्य केवल एकीकृत भारत में सुरक्षित है, जिससे राजस्थान के पूर्ण एकीकरण का मार्ग निष्कंटक हो गया।

51. (3) 30 मार्च 1949
30 मार्च 1949 को वृहद राजस्थान का गठन हुआ, जो राजस्थान के एकीकरण का सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव था। इस दिन जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर जैसी बड़ी रियासतों ने मिलकर एक विशाल प्रदेश की संरचना की। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के कारण ही 30 मार्च को प्रतिवर्ष 'राजस्थान दिवस' के रूप में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। यह तिथि राजपूताना के बिखरे हुए राज्यों के एक शक्तिशाली और एकीकृत आधुनिक राज्य में रूपांतरण का प्रतीक मानी जाती है।

52. (4) जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर
वृहद राजस्थान के निर्माण के लिए संयुक्त राजस्थान में चार अत्यंत महत्वपूर्ण और विशाल रियासतों का विलय हुआ। ये रियासतें जयपुर, जोधपुर, बीकानेर और जैसलमेर थीं। इन राज्यों के शामिल होने से राजस्थान का अधिकांश हिस्सा एक ही शासन के अधीन आ गया। यह चरण न केवल क्षेत्रफल की दृष्टि से विशाल था, बल्कि आर्थिक और सामरिक रूप से भी अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि इससे पाकिस्तान के साथ लगने वाली लंबी पश्चिमी सीमा का प्रशासनिक प्रबंधन और सुरक्षा व्यवस्था सुगम हो गई।

53. (3) महाराणा भूपाल सिंह
वृहद राजस्थान के गठन के समय मेवाड़ के महाराणा भूपाल सिंह के सम्मान को अक्षुण्ण रखने के लिए 'महाराजप्रमुख' का एक विशेष पद सृजित किया गया था। यह पद उन्हें आजीवन प्रदान किया गया था। यद्यपि वास्तविक कार्यकारी शक्तियां राजप्रमुख के पास थीं, परंतु महाराजप्रमुख का पद देकर भारत सरकार ने मेवाड़ राजवंश की ऐतिहासिक महानता को स्वीकार किया। यह भारतीय रियासतों के एकीकरण के इतिहास में एकमात्र उदाहरण था जहां इस प्रकार के विशिष्ट पद का सृजन किया गया था।

54. (2) सवाई मान सिंह II
वृहद राजस्थान के राजप्रमुख के रूप में जयपुर के महाराजा सवाई मान सिंह द्वितीय को नियुक्त किया गया था। जयपुर के राजधानी के रूप में चयन और वहां की आधुनिक प्रशासनिक व्यवस्था को देखते हुए उन्हें यह महत्वपूर्ण संवैधानिक जिम्मेदारी सौंपी गई। उन्होंने 30 मार्च 1949 को इस पद की शपथ ली और 1956 में राज्यपाल का पद सृजित होने तक राजस्थान के संवैधानिक प्रमुख के रूप में कार्य किया। उनकी नियुक्ति ने राजस्थान के एकीकरण में जयपुर के सक्रिय महत्व को रेखांकित किया।

55. (2) केवल I और III
बी.आर. पटेल समिति का गठन मुख्य रूप से जयपुर और जोधपुर के बीच राजधानी चयन के विवाद को सुलझाने के लिए किया गया था। समिति ने जयपुर को राजधानी बनाने की अनुशंसा की थी, न कि जोधपुर को। हालांकि, जोधपुर के महत्व को संतुलित करने के लिए समिति ने वहां राजस्थान के उच्च न्यायालय को स्थापित करने का महत्वपूर्ण सुझाव दिया था। समिति के इन संतुलित निर्णयों ने विभिन्न क्षेत्रों के बीच उत्पन्न संभावित तनाव को कम करने और एकीकरण प्रक्रिया को सर्वसम्मति से आगे बढ़ाया।

56. (1) जयपुर
बी.आर. पटेल समिति की विस्तृत सिफारिशों और प्रशासनिक पहलुओं पर विचार करने के पश्चात जयपुर को वृहद राजस्थान की स्थायी राजधानी के रूप में स्वीकार किया गया। जयपुर का चयन उसकी सुविकसित शहरी अवसंरचना, विशाल सरकारी भवनों की उपलब्धता और बेहतर संचार सुविधाओं के आधार पर किया गया था। हालांकि जोधपुर और उदयपुर भी इस दौड़ में शामिल थे, परंतु जयपुर की भौगोलिक स्थिति और आधुनिकता ने इसे प्रदेश की प्रशासनिक बागडोर संभालने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान बना दिया।

57. (3) हीरालाल शास्त्री
30 मार्च 1949 को वृहद राजस्थान के गठन के साथ ही हीरालाल शास्त्री ने इसके पहले प्रधानमंत्री का पदभार ग्रहण किया। वे एक प्रख्यात स्वतंत्रता सेनानी, समाज सुधारक और जयपुर प्रजामंडल के प्रभावशाली नेता थे। शास्त्री जी ने 'वनस्थली विद्यापीठ' के माध्यम से महिला शिक्षा और ग्रामीण उत्थान में अभूतपूर्व कार्य किया था। उनके नेतृत्व में नई सरकार को राजस्थान के बिखरे हुए प्रशासनिक विभागों को एकीकृत करने और एक आधुनिक नागरिक सेवा तंत्र विकसित करने की विशाल चुनौती का सामना करना पड़ा था।

58. (1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
बी.आर. पटेल समिति ने विभिन्न शहरों के महत्व को बनाए रखने के लिए सरकारी विभागों का वितरण किया। इसके तहत उच्च न्यायालय की स्थापना जोधपुर में की गई। शिक्षा विभाग का मुख्यालय बीकानेर में रखा गया ताकि पश्चिमी राजस्थान में शैक्षिक विकास को गति मिल सके। खनिज विभाग को उदयपुर में स्थानांतरित किया गया, जबकि कृषि विभाग की जिम्मेदारी भरतपुर को सौंपी गई। इस विकेंद्रीकृत वितरण का उद्देश्य राज्य के विभिन्न अंचलों के बीच विकास और प्रशासनिक प्रतिनिधित्व का संतुलन स्थापित करना था।

59. (4) सरदार वल्लभभाई पटेल
वृहद राजस्थान का भव्य उद्घाटन 30 मार्च 1949 को स्वयं सरदार वल्लभभाई पटेल द्वारा जयपुर के सिटी पैलेस में किया गया था। इस संघ का निर्माण उनकी एकीकरण नीति की सबसे बड़ी सफलता थी। इस अवसर पर उन्होंने राजपूताना के गौरवशाली इतिहास और लोकतांत्रिक भविष्य के संगम पर ओजस्वी भाषण दिया। पटेल जी की उपस्थिति ने इस नवगठित राज्य को राष्ट्रीय एकता के एक सुदृढ़ स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठापित किया और शासकों व जनता के बीच अटूट विश्वास का संचार किया।

60. (2) केवल I और III
वृहद राजस्थान के गठन ने राजपूताना की लगभग सभी प्रमुख रियासतों को एक ही राजनीतिक नेतृत्व के अधीन ला दिया, जिससे आधुनिक राजस्थान की वास्तविक रूपरेखा तैयार हुई। मेवाड़ शासक के ऐतिहासिक सम्मान के लिए विशेष रूप से महाराजप्रमुख का पद सृजित किया गया, जो भारतीय एकीकरण के इतिहास में अद्वितीय था। जैसलमेर कभी भी प्रत्यक्ष केंद्रीय प्रशासन में नहीं रहा था, बल्कि वह जोधपुर के साथ वार्ताओं के दौर में था। महाराजप्रमुख का पद एकीकरण को गरिमापूर्ण बनाने हेतु एक कूटनीतिक कदम था।

61. (3) शंकरराव देव समिति
15 मई 1949 को मत्स्य संघ का वृहद राजस्थान में विलय करने का निर्णय शंकरराव देव समिति की सिफारिशों के आधार पर लिया गया था। इस समिति को भरतपुर और धौलपुर की जनता की राय जानने का विशेष कार्य सौंपा गया था कि वे राजस्थान में शामिल होना चाहते हैं या उत्तर प्रदेश में। समिति की रिपोर्ट ने स्पष्ट किया कि अधिकांश लोग राजस्थान का हिस्सा बनना चाहते हैं। इस विलय के बाद राजस्थान के एकीकरण का पांचवां चरण पूर्ण हुआ और राज्य का नाम 'संयुक्त वृहद राजस्थान' रखा गया।

62. (2) II, III, I, IV
राजस्थान के एकीकरण की घटनाओं का सही क्रम इसके चरणों की प्रगति को दर्शाता है। सर्वप्रथम 18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ का गठन हुआ। इसके पश्चात 18 अप्रैल 1948 को उदयपुर का विलय हुआ। 15 मई 1949 को मत्स्य संघ को वृहद राजस्थान में मिलाया गया। अंततः 26 जनवरी 1950 को सिरोही रियासत के एक बड़े हिस्से का राजस्थान में विलय हुआ। यह क्रम राज्य की सीमाओं के निरंतर विस्तार और समेकन की ऐतिहासिक यात्रा को पूर्णतः स्पष्ट करता है।

63. (1) भरतपुर और धौलपुर
शंकरराव देव समिति को मुख्य रूप से भरतपुर और धौलपुर रियासतों में जनमत संग्रह जैसा कार्य करने के लिए भेजा गया था। इन दोनों राज्यों की सीमाएं उत्तर प्रदेश से लगती थीं और वहां की भाषा व संस्कृति पर ब्रज क्षेत्र का गहरा प्रभाव था। इस कारण वहां एक बड़ा वर्ग उत्तर प्रदेश में विलय का पक्षधर था। समिति ने गहन जांच और स्थानीय जनता से संवाद के बाद यह निष्कर्ष निकाला कि इन क्षेत्रों का भविष्य राजस्थान के साथ जुड़ने में ही अधिक सुरक्षित और तार्किक है।

64. (2) शोभाराम कुमावत
मई 1949 में जब मत्स्य संघ का विधिवत विलय वृहद राजस्थान में हुआ, तो प्रशासनिक निरंतरता और क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए मत्स्य संघ के पूर्व प्रधानमंत्री शोभाराम कुमावत को हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमंडल में शामिल किया गया। कुमावत जी अलवर के एक अनुभवी और लोकप्रिय नेता थे। उनके मंत्रिमंडल में शामिल होने से मत्स्य क्षेत्र की जनता को यह विश्वास प्राप्त हुआ कि नए और विशाल राजस्थान राज्य के शासन में उनकी समस्याओं और आकांक्षाओं को उचित स्थान तथा प्राथमिकता दी जाएगी।

65. (1) केवल IV
मई 1949 के घटनाक्रम के संबंध में चौथा कथन पूरी तरह गलत है। शंकरराव देव समिति की जांच में यह पाया गया कि भरतपुर और धौलपुर की जनता का बहुमत राजस्थान में ही शामिल होने के पक्ष में था, न कि उत्तर प्रदेश में। इसी जनभावना का सम्मान करते हुए भारत सरकार ने मत्स्य संघ को राजस्थान का अभिन्न अंग बनाया। अन्य तथ्य जैसे समिति के तीन सदस्य (शंकरराव देव, आर.के. सिद्धवा और प्रभु दयाल) और संघ का नया नाम 'संयुक्त वृहद राजस्थान' बिल्कुल सही हैं।

66. (1) सिरोही
26 जनवरी 1950 को जब भारत का संविधान लागू हुआ, उसी दिन सिरोही रियासत का राजस्थान में विलय किया गया था। हालांकि, यह विलय पूर्ण नहीं था क्योंकि इसके दो महत्वपूर्ण हिस्से, आबू और देलवाड़ा को राजस्थान से अलग कर बॉम्बे राज्य में मिला दिया गया था। सरदार पटेल की इस कार्रवाई का राजस्थान के नेताओं और जनता ने कड़ा विरोध किया क्योंकि वे एकमात्र पर्वतीय पर्यटक स्थल को खोना नहीं चाहते थे। इस विभाजन ने भविष्य के बड़े आंदोलनों की नींव रखी थी।

67. (1) A- और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान की जनता और नेताओं ने सिरोही के प्रारंभिक एकीकरण के स्वरूप का कड़ा विरोध किया था क्योंकि रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण आबू और देलवाड़ा तहसीलों को बॉम्बे राज्य में स्थानांतरित कर दिया गया था। सरदार पटेल का यह निर्णय राजस्थान के लिए एक सांस्कृतिक और भौगोलिक आघात था, क्योंकि इससे प्रदेश अपने एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल और प्रसिद्ध मंदिरों से वंचित हो गया था। इस क्षेत्रीय विभाजन के कारण उत्पन्न असंतोष ने ही अंततः राज्य पुनर्गठन आयोग के समक्ष इस मुद्दे को उठाया।

68. (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान के विभिन्न चरणों के उद्घाटन की जिम्मेदारी तत्कालीन केंद्रीय नेतृत्व ने संभाली थी। मत्स्य संघ का उद्घाटन 18 मार्च 1948 को एन.वी. गाडगिल ने किया। इसके ठीक एक सप्ताह बाद 25 मार्च को राजस्थान संघ का उद्घाटन भी गाडगिल जी द्वारा ही संपन्न हुआ। संयुक्त राजस्थान जैसे महत्वपूर्ण चरण के लिए 18 अप्रैल 1948 को स्वयं जवाहरलाल नेहरु उदयपुर पहुंचे थे। अंत में 30 मार्च 1949 को वृहद राजस्थान की स्थापना का गौरवपूर्ण उद्घाटन सरदार वल्लभभाई पटेल ने जयपुर में किया था।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मत्स्य संघ के सदस्य राज्यों, विशेषकर धौलपुर और भरतपुर में जनता के बीच इस बात को लेकर मतभेद था कि उन्हें राजस्थान में मिलना चाहिए या भाषाई समानता के आधार पर उत्तर प्रदेश में। इस विवाद और अनिश्चितता के कारण ही मत्स्य संघ को तत्काल राजस्थान के अन्य संघों में शामिल नहीं किया गया और उसने मई 1949 तक अपनी पृथक पहचान बनाए रखी। बाद में जनभावना जानने के लिए गठित समिति की सिफारिशों पर ही अंतिम विलय हुआ।

31. (1) लोहागढ़ किला, भरतपुर
मत्स्य संघ का औपचारिक उद्घाटन समारोह भरतपुर के प्रसिद्ध लोहागढ़ दुर्ग में आयोजित किया गया था। 18 मार्च 1948 को हुए इस भव्य कार्यक्रम में चारों रियासतों के शासकों और नेताओं ने भाग लिया था। केंद्रीय मंत्री एन.वी. गाडगिल ने इस ऐतिहासिक संघ की स्थापना की घोषणा की थी। लोहागढ़ किले का चयन इसके अजेय इतिहास और क्षेत्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में किया गया था। इस आयोजन ने राजस्थान में लोकतांत्रिक शासन प्रणाली की विधिवत शुरुआत को चिह्नित किया।

32. (3) नौ
राजस्थान के एकीकरण के दूसरे चरण में कुल नौ रियासतों का सामूहिक विलय हुआ, जिसे 'राजस्थान संघ' का नाम दिया गया। इन राज्यों में कोटा, बूंदी, झालावाड़, टोंक, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, किशनगढ़ और शाहपुरा शामिल थे। 25 मार्च 1948 को अस्तित्व में आए इस संघ ने दक्षिण-पूर्वी और दक्षिणी राजस्थान के एक बड़े हिस्से को एकीकृत किया। इतनी बड़ी संख्या में रियासतों का एक साथ आना एकीकरण प्रक्रिया की गति और शासकों के बढ़ते विश्वास का परिचायक था।

33. (2) उदयपुर
25 मार्च 1948 को गठित राजस्थान संघ में हाड़ौती, वागड़ और अन्य मध्य क्षेत्रों की नौ रियासतें शामिल थीं, किंतु उदयपुर (मेवाड़) उस समय इसका हिस्सा नहीं था। मेवाड़ के महाराणा ने शुरु में इस संघ में शामिल होने से इनकार कर दिया था क्योंकि वे अपनी प्राचीन रियासत की स्वतंत्र पहचान और उच्च मर्यादा को बनाए रखना चाहते थे। हालांकि, बाद में राजनीतिक दबाव और परिस्थितियों के कारण उदयपुर ने विलय का निर्णय लिया, जिससे संयुक्त राजस्थान का गठन हुआ।

34. (1) कुशलगढ़
एकीकरण के दूसरे चरण के दौरान जब नौ रियासतों ने मिलकर राजस्थान संघ बनाया, तब बांसवाड़ा रियासत के अंतर्गत आने वाले कुशलगढ़ ठिकाने को भी इसमें एकीकृत किया गया। कुशलगढ़ क्षेत्रफल की दृष्टि से उस समय का सबसे बड़ा ठिकाना था। ठिकानों का विलय संबंधित रियासतों के साथ ही किया गया ताकि क्षेत्रीय अखंडता बनी रहे। इस समावेशन ने दक्षिण राजस्थान के जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण में सहायता की और स्थानीय शासन को बड़े राज्य तंत्र का हिस्सा बनाया।

35. (1) केवल I और II
राजस्थान संघ के गठन के समय कोटा को इसकी राजधानी के रुप में चुना गया और कोटा के महाराव भीम सिंह को राजप्रमुख नियुक्त किया गया। प्रशासनिक नेतृत्व के लिए शाहपुरा के गोकुल लाल असावा को प्रधानमंत्री बनाया गया था, न कि हीरालाल शास्त्री को। हीरालाल शास्त्री का कार्यकाल बाद के चरणों में प्रारंभ हुआ था। पदों का यह चयन क्षेत्र की प्रमुख रियासतों के प्रभाव और लोकतांत्रिक आंदोलनों में सक्रिय नेताओं की भूमिका को ध्यान में रखकर किया गया था।

36. (4) गोकुल लाल असावा
25 मार्च 1948 को स्थापित राजस्थान संघ के प्रधानमंत्री के रूप में गोकुल लाल असावा को नियुक्त किया गया था। वे शाहपुरा रियासत के प्रखर स्वतंत्रता सेनानी और प्रजामंडल नेता थे। उनके नेतृत्व में ही शाहपुरा राजपूताना की पहली ऐसी रियासत बनी थी जिसने राजा के संरक्षण में पूर्ण उत्तरदायी शासन स्थापित किया था। असावा जी को इस पद पर नियुक्त करना रियासती जनता की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं का सम्मान करने और संघ में प्रगतिशील नेतृत्व प्रदान करने की दिशा में कदम था।

37. (3) बांसवाड़ा के महारावल चंद्रवीर सिंह
राजस्थान संघ के विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय बांसवाड़ा के महारावल चंद्रवीर सिंह ने अत्यंत भावुक होकर कहा था कि वे अपने "डेथ वारंट" पर हस्ताक्षर कर रहे हैं। उनके ये शब्द सदियों पुरानी राजशाही और रियासती संप्रभुता के अंत के प्रति उनके दुख और हताशा को प्रकट करते थे। यह कथन एकीकरण के उस दौर की जटिलता को दर्शाता है जहां कई शासकों को अपनी पारंपरिक सत्ता त्यागकर नए लोकतांत्रिक ढांचे को स्वीकार करने में मानसिक पीड़ा हुई।

38. (2) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
द्वितीय चरण में शामिल राज्यों पर विभिन्न राजपूत और अन्य राजवंशों का शासन था। कोटा और बूंदी पर हाड़ा चौहानों का शासन था। प्रतापगढ़ रियासत पर गुहिल वंश की शाखा का शासन रहा है, जबकि शाहपुरा पर मेवाड़ के सिसोदिया राजवंश से संबंधित शासकों का अधिकार था। झालावाड़ राजपूताना की एक अपेक्षाकृत नई रियासत थी जहां झाला वंश का शासन स्थापित था। इन विभिन्न कुलों के राज्यों को एक साथ लाकर राजस्थान संघ ने प्रशासनिक एकरुपता की दिशा में प्रगति की।

39. (4) एन.वी. गाडगिल
25 मार्च 1948 को कोटा में राजस्थान संघ का उद्घाटन भी केंद्रीय खनिज एवं विद्युत मंत्री एन.वी. गाडगिल द्वारा किया गया था। उन्होंने मत्स्य संघ के उद्घाटन के मात्र एक सप्ताह बाद इस दूसरे बड़े संघ की आधारशिला रखी। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्र निर्माण में राजाओं के त्याग की सराहना की और जनता को नए लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया। गाडगिल जी द्वारा किए गए ये उद्घाटन भारत सरकार की एकीकरण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं।

गया। सुनील टप्पा का स्थानांतरण मध्य प्रदेश से राजस्थान में हुआ, जबकि सिरोंज के क्षेत्र को राजस्थान से अलग करके मध्य प्रदेश राज्य का हिस्सा बना दिया गया। इन क्षेत्रीय परिवर्तनों ने भाषाई और भौगोलिक आधार पर राजस्थान की सीमाओं को अंतिम और स्थायी रुप प्रदान किया।

79. (1) गुरुमुख निहाल सिंह
1 नवंबर 1956 को जब राजस्थान का एकीकरण पूर्ण हुआ और राजप्रमुख का पद समाप्त किया गया, तब गुरुमुख निहाल सिंह को राज्य के प्रथम राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया गया। इससे पहले वे दिल्ली के मुख्यमंत्री के रूप में भी अपनी सेवाएं दे चुके थे। उनकी नियुक्ति ने राजस्थान में संसदीय लोकतंत्र के एक नए अध्याय की शुरुआत की, जहां राज्य का प्रमुख राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त एक संवैधानिक पदाधिकारी होता है। उन्होंने प्रदेश में नई संवैधानिक परंपराओं को स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

80. (3) केवल I, II और IV
राजस्थान के अंतिम पुनर्गठन के समय मोहन लाल सुखाड़िया मुख्यमंत्री थे और उनके कार्यकाल में ही अजमेर राजस्थान का 26वां जिला बना। प्रशासनिक व्यवस्था के तहत उच्च न्यायालय को स्थायी रूप से जोधपुर में रखा गया। हालांकि, तीसरा कथन गलत है क्योंकि राजधानी को कभी भी जयपुर से अजमेर स्थानांतरित नहीं किया गया था; वह हमेशा जयपुर ही रही। सत्यनारायण राव समिति ने भी राजधानी के रूप में जयपुर की स्थिति को ही बनाए रखने की सिफारिश की थी। इन निर्णयों ने राज्य के प्रशासनिक ढांचे को स्थायी स्वरूप दिया।

81. (3) ग-श्रेणी राज्य
1950 के भारतीय संविधान के तहत अजमेर-मेरवाड़ा को 'ग-श्रेणी' राज्य का दर्जा प्राप्त था। ग-श्रेणी के राज्य वे थे जो आकार में छोटे थे और जिनका प्रशासन सीधे केंद्र सरकार द्वारा मुख्य आयुक्त के माध्यम से संचालित किया जाता था। हालांकि अजमेर की अपनी एक निर्वाचित विधानसभा और मुख्यमंत्री थे, परंतु इसकी संवैधानिक शक्तियां अन्य बड़े राज्यों की तुलना में सीमित थीं। 1956 के पुनर्गठन के बाद ही इस पृथक श्रेणी को समाप्त कर अजमेर को राजस्थान राज्य के एक सामान्य जिले के रूप में एकीकृत किया गया।

82. (1) धारा सभा
1956 में राजस्थान में विलय से पूर्व अजमेर राज्य की अपनी एक स्वतंत्र और पृथक विधानसभा थी, जिसे 'धारा सभा' के नाम से जाना जाता था। यह संस्था स्थानीय जनता की समस्याओं को सुलझाने और कानून बनाने के लिए उत्तरदायी थी। धारा सभा के माध्यम से ही अजमेर-मेरवाड़ा के विकास कार्यों और स्थानीय प्रशासन का संचालन किया जाता था। एकीकरण के बाद इस पृथक विधायी संस्था का अस्तित्व समाप्त हो गया और इसके सदस्यों को राजस्थान विधानसभा की मुख्य धारा में समाहित कर लिया गया था।

83. (2) 30
अजमेर की धारा सभा में निर्वाचित सदस्यों की कुल संख्या तीस थी। यह संख्या अजमेर-मेरवाड़ा की सीमित जनसंख्या और भौगोलिक क्षेत्रफल के आधार पर निर्धारित की गई थी। इन तीस सदस्यों का चुनाव प्रत्यक्ष मतदान द्वारा किया जाता था और उन्हीं के बीच से राज्य का मंत्रिमंडल गठित होता था। 1956 के एकीकरण के पश्चात इन सभी तीस निर्वाचन क्षेत्रों को राजस्थान विधानसभा के निर्वाचन क्षेत्रों में शामिल कर लिया गया, जिससे राजस्थान विधानसभा की कुल सदस्य संख्या में वृद्धि हुई और अजमेर को उचित प्रतिनिधित्व मिला।

84. (4) हरिभाऊ उपाध्याय
हरिभाऊ उपाध्याय अजमेर राज्य के पहले और एकमात्र मुख्यमंत्री थे। वे एक समर्पित गांधीवादी नेता, साहित्यकार और समाज सुधारक थे। उन्होंने अजमेर में 'त्याग भूमि' जैसे समाचार पत्रों के माध्यम से जन जागृति फैलाई और वहां के सामाजिक-राजनीतिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया। मुख्यमंत्री के रुप में उनके कार्यकाल में अजमेर ने शिक्षा और खादी ग्रामोद्योग के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की। शुरु में वे अजमेर के राजस्थान में विलय के प्रति संशय में थे, परंतु अंततः व्यापक जनहित में इसे स्वीकार किया।

85. (1) केवल I, II और V
अजमेर-मेरवाड़ा रियासतों के मध्य स्थित एक प्रमुख ब्रिटिश केंद्र था और यहाँ स्वामी दयानंद सरस्वती के प्रभाव से आर्य समाज आंदोलन की जड़ें बहुत गहरी थीं। 1956 में यह राजस्थान का 26वां जिला बना। हालांकि, हरिभाऊ उपाध्याय शुरु में इसके स्वतंत्र अस्तित्व के पक्षधर थे और राज्य पुनर्गठन आयोग ने इसे पृथक रखने के बजाय राजस्थान में मिलाने की सिफारिश की थी। यह क्षेत्र अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों और राजनीतिक चेतना के कारण राजस्थान के एकीकरण इतिहास में एक अत्यंत विशिष्ट स्थान रखता है।

86. (2) गांधी आश्रम, हटूंडी
हरिभाऊ उपाध्याय ने अजमेर के निकट हटूंडी में 'गांधी आश्रम' की स्थापना की थी, जिसने राजस्थान में राजनीतिक चेतना और समाज सेवा के केंद्र के रूप में अभूतपूर्व कार्य किया। इस संस्था ने न केवल खादी और ग्रामोद्योग को बढ़ावा दिया, बल्कि स्वतंत्रता सेनानियों और प्रजामंडल कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने का मंच भी प्रदान किया। गांधी आश्रम के माध्यम से ही हरिभाऊ जी ने शिक्षा, महिला सशक्तिकरण और दलित उत्थान जैसे रचनात्मक कार्यों को जन-जन तक पहुंचाया, जिससे एकीकरण आंदोलन को सामाजिक आधार प्राप्त हुआ।

87. (4) अजमेर के विलय के परिणामस्वरुप राजस्थान राज्य को क्षेत्र का महत्वपूर्ण नुकसान हुआ।
अजमेर-मेरवाड़ा के विलय के संबंध में चौथा कथन पूर्णतः असत्य है, क्योंकि इस एकीकरण से राजस्थान के क्षेत्रफल में वृद्धि हुई और उसे एक ऐतिहासिक व सामरिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र प्राप्त हुआ। अन्य तथ्य सही हैं; केंद्र सरकार इसकी विशिष्ट प्रशासनिक स्थिति के कारण शुरुआत में हिचकिचा रही थी और स्थानीय कांग्रेस नेताओं के बीच विलय के स्वरुप को

लेकर मतभेद थे। अंततः संवैधानिक संशोधनों के माध्यम से इसे राजस्थान में शामिल किया गया, जिसने प्रदेश की भौगोलिक और राजनीतिक अखंडता को पूर्णता प्रदान की।

88. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान के एकीकरण के प्रमुख नायकों का संबंध विशिष्ट क्षेत्रों से रहा है। हीरालाल शास्त्री जयपुर प्रजामंडल के मुख्य स्तंभ थे और राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री बने। माणिक्य लाल वर्मा ने मेवाड़ में जन आंदोलनों का नेतृत्व किया और संयुक्त राजस्थान के प्रधानमंत्री बने। जय नारायण व्यास जोधपुर के दिग्गज नेता थे जिन्होंने मारवाड़ में सामंतवाद के विरुद्ध लंबी लड़ाई लड़ी। गोकुलभाई भट्ट सिरोही के सर्वमान्य नेता थे जिन्होंने उस रियासत के हितों की रक्षा की। इन नेताओं के सामूहिक प्रयासों ने राजस्थान को आधुनिक स्वरूप दिया।

89. (1) केवल I, II और III
माणिक्य लाल वर्मा ने 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' लिखकर वहां की दमनकारी व्यवस्था को उजागर किया था। हीरालाल शास्त्री ने अपनी पत्नी के साथ मिलकर वनस्थली में 'जीवन कुटीर' की नींव रखी, जो आगे चलकर प्रसिद्ध विश्वविद्यालय बना। जय नारायण व्यास ने जोधपुर से बाहर रहते हुए भी 'अखंड भारत' जैसे पत्रों के माध्यम से संघर्ष जारी रखा। हालांकि, गोकुल लाल असावा शाहपुरा क्षेत्र के प्रमुख नेता थे, न कि बीकानेर के। इन नेताओं की साहित्यिक गतिविधियों ने एकीकरण के लिए आवश्यक वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार की।

90. (1) A- और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजपूताना के राज्यों का एकीकरण एक "रक्तहीन क्रांति" के रूप में जाना जाता है क्योंकि यहाँ हैदराबाद या जूनागढ़ जैसी कोई बड़ी सैन्य कार्रवाई करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। सरदार पटेल और वी.पी. मेनन की कुशल कूटनीति तथा स्थानीय शासकों के देशभक्तिपूर्ण सहयोग के कारण लगभग सभी रियासतों का विलय शांतिपूर्ण वार्ताओं के माध्यम से संपन्न हुआ। यद्यपि कुछ स्थानों पर छोटे तनाव उत्पन्न हुए, परंतु कुल मिलाकर यह पूरी प्रक्रिया जनमत और शासकों की आपसी सहमति के आधार पर लोकतांत्रिक ढंग से पूरी हुई थी।

91. (4) महाराजा हनवंत सिंह
जोधपुर के युवा महाराजा हनवंत सिंह ने स्वतंत्रता प्राप्ति से ठीक पहले अपनी रियासत की स्वतंत्र स्थिति या पाकिस्तान में विलय की संभावनाओं को लेकर मोहम्मद अली जिन्ना के साथ गुप्त वार्ताएं की थीं। वे भारतीय संघ की कुछ शर्तों से असंतुष्ट थे और अपनी रियासत के लिए अधिकतम लाभ प्राप्त करना चाहते थे। जिन्ना के साथ उनकी मुलाकातें और पत्राचार उस समय के संवेदनशील और तनावपूर्ण राजनीतिक माहौल का हिस्सा थे, जिसने सरदार पटेल और वी.पी. मेनन को जोधपुर के प्रति अत्यंत सतर्क रहने के लिए विवश कर दिया था।

92. (2) भोपाल के नवाब
जोधपुर के महाराजा हनवंत सिंह और मोहम्मद अली जिन्ना के बीच गुप्त संवाद स्थापित करने में भोपाल के नवाब हमीदुल्लाह खान ने प्रमुख मध्यस्थ की भूमिका निभाई थी। भोपाल के नवाब स्वयं एक स्वतंत्र 'तीसरे ब्लॉक' के निर्माण या पाकिस्तान के साथ निकटता के पक्षधर थे और उन्होंने कई राजपूत शासकों को भारत से अलग रहने के लिए प्रोत्साहित किया था। उनकी इस सक्रियता ने एकीकरण प्रक्रिया में बड़ी बाधा उत्पन्न की थी, जिसे अंततः सरदार पटेल ने अपनी दृढ़ता और कूटनीतिक सूझबूझ के साथ सफलतापूर्वक नियंत्रित किया।

93. (3) कराची पत्तन तक निःशुल्क पहुंच और शस्त्र निर्माण का अधिकार
मोहम्मद अली जिन्ना ने जोधपुर के महाराजा को पाकिस्तान की ओर आकर्षित करने के लिए एक हस्ताक्षरित रिक्त कागज़ पर उनकी मनचाही शर्तें लिखने की छूट दी थी। उन्होंने कराची बंदरगाह तक मुफ्त पहुंच, अनाज का आयात-निर्यात करने की सुविधा और अपनी स्वयं की सेना हेतु आधुनिक शस्त्रों के निर्माण की अनुमति जैसे बड़े प्रलोभन दिए थे। जिन्ना का उद्देश्य राजस्थान की सीमावर्ती रियासतों को तोड़कर भारत की सुरक्षा को कमजोर करना था। हालांकि, भारत सरकार के कड़े रुख और भविष्य की अनिश्चितताओं के कारण महाराजा ने अंततः भारत को चुना।

94. (4) यह पाकिस्तान की सीमा से लगा एक हिंदू बहुल राज्य था जिसके निर्णय जोधपुर के रुख से प्रभावित थे।
जैसलमेर की स्थिति अत्यंत संवेदनशील थी क्योंकि यह पूर्णतः मरुस्थलीय और सीमावर्ती राज्य था। वहां की अधिकांश जनसंख्या हिंदू थी, परंतु रियासत का झुकाव काफी हद तक जोधपुर के महाराजा के निर्णयों पर निर्भर था। यदि जोधपुर पाकिस्तान की ओर जाता, तो जैसलमेर का भी भारत से कटे रहने का खतरा था। इसके अतिरिक्त, वहां आंतरिक प्रशासनिक व्यवस्था भी अत्यंत कमजोर थी। इन कारकों ने जैसलमेर के एकीकरण को चुनौतीपूर्ण बना दिया था, जिसके कारण बाद में इसे कुछ समय के लिए विशेष ध्यान और सुरक्षा दी गई थी।

95. (4) I, II और III
सरदार पटेल ने रियासतों के शासकों पर दबाव बनाने के लिए प्रजामंडल आंदोलनों की जनशक्ति का कुशलतापूर्वक उपयोग किया। लॉर्ड माउंटबेटन की व्यक्तिगत मध्यस्थता ने भी जोधपुर जैसे राज्यों को भारत के पक्ष में करने में सहायता की। साथ ही, धौलपुर और भरतपुर जैसे राज्यों में विभाजन के दौरान उत्पन्न सांप्रदायिक तनाव ने वहां के प्रशासन को हिला दिया था, जिससे भारत सरकार को हस्तक्षेप करने का उचित अवसर मिला। इन सभी कारकों के सम्मिलित प्रभाव ने राजस्थान की जटिल राजनीतिक गुत्थी को सुलझाने और एकीकरण का मार्ग प्रशस्त करने में योगदान दिया।

96. (2) 8 वर्ष, 7 महीने और 14 दिन
राजस्थान के एकीकरण की ऐतिहासिक यात्रा 18 मार्च 1948 को मत्स्य संघ के गठन से प्रारंभ होकर 1 नवंबर 1956 को अजमेर-मेरवाड़ा के अंतिम विलय तक चली। इस संपूर्ण कालखंड की कुल अवधि आठ वर्ष, सात महीने और चौदह दिन थी। इस लंबे समय के दौरान राज्य ने सात अलग-अलग चरणों में भौगोलिक और प्रशासनिक विस्तार के विभिन्न दौर देखे। यह अवधि विभिन्न राजनीतिक वार्ताओं, संवैधानिक संशोधनों और

क्षेत्रीय आंदोलनों की गवाह रही है, जिसके अंत में आज के सुदृढ़ और विशाल राजस्थान का निर्माण हुआ।

97. (2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
एकीकरण के दौरान विभिन्न राज्यों की अपनी विशिष्ट मांगें और परिस्थितियां थीं। जोधपुर के महाराजा ने शुरुआत में कराची बंदरगाह तक पहुंच के लिए जिन्ना से वार्ता की थी। मेवाड़ के महाराणा ने अपनी ऐतिहासिक प्रतिष्ठा के अनुरूप 20 लाख रुपये के प्रिवी पर्स की शर्त रखी। बीकानेर के महाराजा ने सिंचाई परियोजनाओं की सुरक्षा के लिए सबसे पहले विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए। वहीं, जयपुर के नेतृत्व ने इस शर्त पर सहयोग किया कि राजधानी उनके शहर में ही स्थित हो। इन हितों के टकराव को सरदार पटेल ने बड़ी कुशलता से सुलझाया।

98. (2) 3.42 लाख वर्ग किमी
1 नवंबर 1956 को जब राजस्थान का अंतिम पुनर्गठन संपन्न हुआ, तब इस नवगठित राज्य का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल लगभग 3,42,239 वर्ग किलोमीटर दर्ज किया गया। इस विशाल विस्तार के साथ राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत के सबसे बड़े राज्यों में से एक बनकर उभरा। इस भूभाग में थार मरुस्थल, अरावली पर्वतमाला और पूर्वी मैदानी क्षेत्र जैसी विविध भौगोलिक विशेषताएं समाहित थीं। एकीकरण ने उन्नीस अलग-अलग रियासतों की सीमाओं को समाप्त कर एक विशाल और अखंड भौगोलिक इकाई की स्थापना सुनिश्चित की।

99. (3) जागीरदारी व्यवस्था
राजस्थान के एकीकरण के साथ ही सदियों से चली आ रही सामंती जागीरदारी व्यवस्था के उन्मूलन की प्रक्रिया तीव्र हो गई। रियासतों के एकीकृत होने के बाद नई लोकतांत्रिक सरकार ने भूमि सुधार कानूनों को लागू किया ताकि किसानों को शोषण से मुक्त किया जा सके। जागीरदारों की न्यायिक और प्रशासनिक शक्तियां समाप्त कर दी गईं और भूमि का स्वामित्व सीधे राज्य के अधीन लाया गया। इस क्रांतिकारी प्रशासनिक बदलाव ने ग्रामीण राजस्थान में सामाजिक न्याय की नींव रखी और एक पुरानी दमनकारी व्यवस्था को समाप्त कर आधुनिक शासन की शुरुआत की।

100. (2) केवल I, III और IV
एकीकरण ने वास्तविक राजनीतिक शक्ति राजाओं के हाथों से हटाकर जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों को हस्तांतरित कर दी, जो लोकतंत्र की एक बड़ी जीत थी। विभिन्न राज्यों के बीच के सीमा शुल्क और व्यापारिक अवरोध समाप्त होने से एक एकीकृत आर्थिक बाजार का निर्माण हुआ। साथ ही, पूरे राज्य के लिए राजस्थान प्रशासनिक सेवा जैसे एकीकृत सिविल सेवा ढांचे की स्थापना की गई। हालांकि, प्रत्येक पूर्व राजधानी में उच्च न्यायालय नहीं बल्कि केवल जोधपुर में मुख्य पीठ और अन्य स्थानों पर खंडपीठ की व्यवस्था की गई थी।

101. (3) अनुच्छेद 291
भारतीय संविधान के मूल पाठ में अनुच्छेद 291 के अंतर्गत रियासतों के पूर्व शासकों को दिए जाने वाले प्रिवी पर्स के भुगतान का संवैधानिक प्रावधान किया गया था। यह अनुच्छेद केंद्र सरकार को उन राजाओं को वित्तीय अनुदान देने का कानूनी आधार प्रदान करता था जिन्होंने स्वेच्छा से अपनी रियासतों का भारत में विलय किया था। इस संवैधानिक गारंटी का उद्देश्य विलय के समय शासकों को दिए गए वचनों का सम्मान करना था। हालांकि, सामाजिक समानता के सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए 1971 के 26वें संशोधन द्वारा इसे पूर्णतः समाप्त कर दिया गया।

102. (1) I, II, III, IV
राजस्थान के प्रशासनिक नेतृत्व का एक निश्चित कालानुक्रमिक क्रम रहा है। सबसे पहले हीरालाल शास्त्री ने 1949 से 1951 तक मनोनीत मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। उनके इस्तीफे के बाद आई.सी.एस. अधिकारी सी.एस. वेंकटाचारी को केंद्र द्वारा नियुक्त किया गया। इसके पश्चात जय नारायण व्यास ने सत्ता संभाली और अंततः 1952 के पहले आम चुनावों के बाद टीकाराम पालीवाल राजस्थान के पहले निर्वाचित मुख्यमंत्री बने। यह क्रम राज्य में मनोनीत शासन से पूर्णतः निर्वाचित लोकतांत्रिक व्यवस्था की ओर संक्रमण के विभिन्न चरणों को स्पष्ट करता है।

103. (4) जुगल किशोर चतुर्वेदी
भरतपुर के जुगल किशोर चतुर्वेदी को उनके व्यक्तित्व और सिद्धांतों के कारण 'राजस्थान का दूसरा नेहरू' कहा जाता है। वे मत्स्य संघ के मंत्रिमंडल में सदस्य रहे और बाद में राजस्थान की राजनीति में भी सक्रिय भूमिका निभाई। पंडित नेहरू की तरह ही वे भी आधुनिक सोच, धर्मनिरपेक्ष मूल्यों और सामाजिक न्याय के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने पूर्वी राजस्थान में प्रजामंडल आंदोलनों को संगठित करने और रियासती निरंकुशता के विरुद्ध जनता को जागृत करने में अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया था, जिससे उन्हें यह सम्मानजनक उपमा प्राप्त हुई।

104. (1) राजपूताना के किसी भी राज्य ने आधिकारिक तौर पर पृथक संस्था के रूप में अपनी स्वतंत्रता नहीं मनाई थी।
राजपूताना की सभी रियासतें 15 अगस्त 1947 से पूर्व या उस समय तक किसी न किसी रूप में भारतीय संघ के साथ जुड़ने की प्रक्रिया में थीं। किसी भी रियासत ने आधिकारिक तौर पर स्वयं को एक पृथक 'स्वतंत्र राष्ट्र' घोषित करके अपना अलग स्वतंत्रता दिवस नहीं मनाया था। यद्यपि जोधपुर और धौलपुर जैसी कुछ रियासतों में विलय को लेकर अंतिम समय तक संशय बना रहा, परंतु वे सभी अंततः भारतीय अधिराज्य का हिस्सा बन गईं। यह सामूहिक निर्णय राष्ट्र की अखंडता के प्रति शासकों की अंतिम प्रतिबद्धता और बदलती वैश्विक परिस्थितियों का परिणाम था।

105. (1) केवल I, II और III
राजस्थान का एकीकरण राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था क्योंकि इसने पाकिस्तान से लगी पश्चिमी सीमा को एक सुदृढ़ प्रशासनिक इकाई के अधीन ला दिया। इस प्रक्रिया ने बिना किसी बड़े संघर्ष के प्राचीन राजतंत्रों को एक लोकतांत्रिक गणराज्य में सफलतापूर्वक विलीन कर दिया, जो विश्व इतिहास की एक विरल उपलब्धि है। इसने सरदार पटेल द्वारा तैयार किए गए 'विलय पत्र' तंत्र की व्यवहारिकता

(2) हवा महल
(3) जयबाण
(4) जंतर मंतर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. सूची-I (हवा महल के तल) को सूची-II (उनके नाम) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (हवा महल के तल)
A. प्रथम तल
B. द्वितीय तल
C. चतुर्थ तल
D. पंचम तल
सूची II: (नाम)
i. प्रकाश मंदिर
ii. शरद मंदिर
iii. हवा मंदिर
iv. रतन मंदिर
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. राजस्थान के प्रमुख दुर्गों के भीतर 'बावड़ी' (सीढ़ीदार कुएँ) के निर्माण का विशिष्ट कारण क्या था?
(1) राज्याभिषेक के दौरान आध्यात्मिक शुद्धि हेतु अनुष्ठानिक आवश्यकता।
(2) आक्रमण के समय शाही परिवार के लिए सुरक्षित भूमिगत निकास मार्ग।
(3) दीर्घकालिक घेराबंदी के दौरान शुष्क जलवायु में जल भंडारण की रणनीतिक आवश्यकता।
(4) दक्षिण भारतीय द्रविड़ मंदिर कुंडों की अनुकृति बनाने की सौंदर्यवादी इच्छा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. सिटी पैलेस, जयपुर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह पुराने नियोजित शहर के लगभग सातवें भाग पर विस्तृत है।
II. मुबारक महल मुख्य रूप से विदेशी अतिथियों के स्वागत के लिए निर्मित किया गया था।
III. चंद्र महल सात मंजिला भवन है जो शाही परिवार के निवास के रूप में प्रयुक्त होता है।
IV. यह मूल रूप से पूर्णतः शुद्ध श्वेत संगमरमर से निर्मित था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. ऐतिहासिक 'सोनारगढ़' दुर्ग भौगोलिक रूप से किस संरचना पर स्थित है?
(1) अरावली पर्वतमाला
(2) भौमगढ़ शिखर
(3) विंध्यन कगार
(4) त्रिकुटा पहाड़ी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. पुष्कर स्थित ब्रह्मा मंदिर के संबंध में कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर विश्व का एकमात्र मंदिर है जो भगवान ब्रह्मा को समर्पित है।
कथन II: ऐतिहासिक साक्ष्य भारत में कुछ अन्य ब्रह्मा मंदिरों के अस्तित्व को दर्शाते हैं, जैसे आसोतरा (राजस्थान) और कुंभकोणम (तमिलनाडु) में।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता नाथद्वारा मंदिर की स्थापत्य शैली से सर्वाधिक निकटता से संबद्ध है?
(1) विभिन्न हिंदू देवताओं की आकृतियों से सजाया गया एक विशाल गोपुरम द्वार।
(2) मध्यकालीन युग के दौरान एक ही पर्वत को काटकर बनाया गया चट्टान-कर्तित एकाश्म मंदिर।
(3) पारंपरिक नागर मंदिर के स्थान पर एक आवासीय हवेली के समान विन्यास।
(4) दैनिक धार्मिक उत्सवों के लिए प्रयुक्त खुला प्रदक्षिणा पथ वाला एक ऊँचा चबूतरा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. दिलवाड़ा जैन मंदिरों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) पीत्तलहर मंदिर प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की विशाल पीतल की प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है।
(2) महावीर स्वामी मंदिर परिसर की सबसे बड़ी और प्राचीनतम संरचना है।
(3) मंदिरों को मुख्य रूप से कछवाहा राजवंश द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था।
(4) खरतर वसही मंदिर पूर्णतः लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. राजस्थानी दुर्ग वास्तुकला में पाए जाने वाले निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. पोल (द्वार)
II. बुर्ज (Bastions)
III. कंगूरा (Battlements)
IV. छतरी (स्मारक/मंडप)

की आंतरिक कानून-व्यवस्था व प्रशासनिक ढांचे के अत्यंत कमजोर होने के कारण केंद्र सरकार ने वहां की सुरक्षा स्वयं संभालने का निर्णय लिया। इसके अतिरिक्त, सीमावर्ती क्षेत्रों में तस्करी और बाहरी घुसपैठ की आशंकाओं के मद्देनजर एक मजबूत केंद्रीय नियंत्रण आवश्यक था। यह व्यवस्था केवल एक सुरक्षात्मक कदम थी जब तक कि राजस्थान का संपूर्ण प्रशासनिक तंत्र पूरी तरह से विकसित नहीं हो गया।

115. (1) केवल I, II, IV और V
प्रजामंडलों और प्रांतीय कांग्रेस ने एकीकरण का पूर्ण समर्थन किया क्योंकि वे इसे लोकतांत्रिक अधिकारों की प्राप्ति का एकमात्र मार्ग मानते थे। एकीकरण ने वास्तव में रियासतों की जनता के लिए पहली बार मौलिक अधिकारों और कानूनी समानता की संभावना उत्पन्न की। स्थानीय नेताओं ने इसे अपने लंबे स्वतंत्रता संघर्ष के तार्किक परिणाम के रूप में देखा। हालांकि, सामंतों और जागीरदारों ने अपनी शक्तियों के छिनने के डर से शुरु में इस प्रक्रिया का कड़ा विरोध किया था, इसलिए तीसरा कथन गलत है। एकीकरण जनता की सामूहिक आकांक्षाओं की विजय थी।

116. (1) A- और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1950 के भारतीय संविधान के अनुसार, रियासतों के विलय से बने संघों जैसे राजस्थान को 'ख-श्रेणी' राज्यों में रखा गया था। इन राज्यों में संवैधानिक प्रमुख का पद 'राजप्रमुख' कहलाता था, जो शक्तियों के मामले में क-श्रेणी के राज्यों के राज्यपाल के समतुल्य था। यह व्यवस्था रियासतों की ऐतिहासिक पहचान और लोकतंत्र के बीच एक संतुलन बनाने के लिए की गई थी। 1956 में श्रेणियों के उन्मूलन के साथ ही यह पद भी समाप्त हो गया और राजस्थान को अन्य राज्यों के समान पूर्ण संवैधानिक दर्जा प्राप्त हुआ।

117. (3) मघाराम वैद्य
बीकानेर रियासत में राजनीतिक चेतना और प्रजामंडल आंदोलन का नेतृत्व मुख्य रूप से मघाराम वैद्य ने किया था। उन्होंने 1936 में बीकानेर प्रजामंडल की स्थापना की और महाराजा की निरंकुशता के विरुद्ध किसानों और आम जनता को संगठित किया। राज्य से निष्कासित होने के बाद भी उन्होंने कलकत्ता से अपनी गतिविधियां जारी रखीं और बीकानेर की जनता की आवाज को दबने नहीं दिया। उनके प्रयासों ने बीकानेर में लोकतांत्रिक मूल्यों की नींव रखी और अंततः रियासत को भारतीय संघ में शामिल करने के लिए आवश्यक जनसमर्थन और वैचारिक आधार तैयार किया।

118. (2) केवल I और III
राजस्थान के वित्तीय एकीकरण का सबसे बड़ा लाभ विभिन्न रियासतों के बीच लगने वाले जटिल और बाधक सीमा शुल्कों की समाप्ति थी, जिससे व्यापार सुगम हुआ। इसने पहली बार पूरे राजस्थान के लिए एक केंद्रीकृत आर्थिक नियोजन और बजट व्यवस्था की अनुमति दी। हालांकि, दूसरा कथन गलत है क्योंकि 1949 में कराधान की एकीकृत प्रणाली पूर्णतः लागू नहीं हो पाई थी; विभिन्न करों और भूमि राजस्व पद्धतियों के समरूपीकरण में कई वर्षों का समय लगा। इस आर्थिक एकीकरण ने राज्य के आधुनिक विकास के लिए आवश्यक संसाधनों के प्रबंधन का मार्ग प्रशस्त किया।

119. (4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान के नेताओं ने विभिन्न संगठनों के माध्यम से जन जागृति फैलाई। जय नारायण व्यास 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' से जुड़े थे, जिसने सामंतवाद के विरुद्ध संघर्ष किया। हीरालाल शास्त्री ने 'वनस्थली विद्यापीठ' के माध्यम से महिला शिक्षा की क्रांति शुरु की। माणिक्य लाल वर्मा 'मेवाड़ प्रजामंडल' के प्राण थे और उन्होंने वहां के किसानों को संगठित किया। हरिभाऊ उपाध्याय ने अजमेर के निकट 'गांधी आश्रम' स्थापित कर रचनात्मक कार्यों का नेतृत्व किया। इन संस्थाओं ने न केवल आजादी की लड़ाई लड़ी, बल्कि एकीकरण के लिए समाज को वैचारिक रूप से तैयार किया।

120. (1) 1 नवंबर 1956 को राज्य पुनर्गठन अधिनियम का औपचारिक कार्यान्वयन।
राजस्थान के एकीकरण की लंबी और जटिल प्रक्रिया का आधिकारिक समापन 1 नवंबर 1956 को हुआ। इस दिन राज्य पुनर्गठन अधिनियम लागू होने के साथ ही अजमेर-मेरवाड़ा का पूर्ण विलय हुआ और आबू-देलवाड़ा को भी राजस्थान का हिस्सा बनाया गया। इसी तिथि को राजप्रमुख का पद समाप्त हुआ और प्रथम राज्यपाल की नियुक्ति हुई। इस अंतिम चरण ने राजस्थान को उसकी वर्तमान भौगोलिक सीमाओं और संवैधानिक ढांचे में स्थापित किया। यह दिन आधुनिक राजस्थान के पूर्ण और अखंड स्वरुप के जन्म का प्रतीक माना जाता है।

52. एकलिंगजी मंदिर परिसर 108 मंदिरों का समूह है। शैव धर्म का कौन सा संप्रदाय मुख्य रुप से इस ऐतिहासिक मंदिर से संबद्ध है?
(1) लिंगायत संप्रदाय
(2) कापालिक संप्रदाय
(3) कालामुख संप्रदाय
(4) लकुलीश (पाशुपत) संप्रदाय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. उदयपुर के सिटी पैलेस के भीतर स्थित प्रासादों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
(1) अमर विलास - फव्वारों वाला एक ऊँचा उद्यान
(2) भीम विलास - लघु चित्रों का संग्रह यहाँ स्थित है
(3) शीश महल - मध्यकालीन तोपों वाला एक विशाल शस्त्रागार
(4) फतेहप्रकाश पैलेस - इसमें प्रसिद्ध क्रिस्टल गैलरी स्थित है
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन — अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): जयपुर स्थित जंतर मंतर को भारत की ऐतिहासिक वेधशालाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और संरक्षित माना जाता है।
कारण (R): इसमें पाषाण निर्मित स्थिर यंत्र हैं जो उच्च सटीकता के साथ खगोलीय स्थितियों के प्रेक्षण की सुविधा प्रदान करते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. हवा महल में 953 छोटी खिड़कियों (झरोखों) के निर्माण के पीछे व्यावहारिक उद्देश्य क्या था?
(1) सैन्य रक्षा के लिए तीरंदाजों के उपयोग हेतु छिद्रों के रूप में कार्य करना।
(2) ग्रीष्मकालीन हवाओं के माध्यम से आंतरिक तापमान को नियंत्रित करना।
(3) शाही संगीतकारों के लिए एक जटिल ध्वनि प्रणाली के रूप में कार्य करना।
(4) शाही महिलाओं को लोक-दृष्टि से दूर रहकर सड़क के दृश्यों और उत्सवों का अवलोकन करने देना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. चित्तौड़गढ़ दुर्ग का निम्नलिखित में से कौन सा संरचनात्मक तत्व विशेष रुप से महाराणा कुंभा के काल का माना जाता है?
(1) विजय स्तंभ का निर्माण
(2) पद्मिनी महल की नींव
(3) कालिका माता मंदिर की स्थापना
(4) प्राथमिक गौमुख जलाशय का निर्माण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. ऐतिहासिक जयगढ़ दुर्ग को उसकी सुदृढ़ रक्षात्मक प्रकृति के कारण किस अन्य नाम से जाना जाता है?
(1) विजय दुर्ग
(2) स्वर्ण गिरी
(3) चील का टीला
(4) जल दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. दिलवाड़ा मंदिरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे पूर्णतः श्वेत संगमरमर से निर्मित हैं।
II. इनका निर्माण 11वीं और 13वीं शताब्दी के मध्य हुआ था।
III. वे अपनी अलंकृत नक्काशीदार शिखरों और स्तंभों के लिए प्रसिद्ध हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. पारंपरिक राजस्थानी मंदिर स्थापत्य में 'मंडप' क्या दर्शाता है?
(1) देवता के ऊपर स्थित मुख्य शिखर।
(2) औपचारिक सीमा प्राचीर।
(3) मंदिर परिसर से संलग्न जल कुंड।
(4) गर्भगृह के सम्मुख स्थित स्तंभों वाला सभा कक्ष।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. जैसलमेर का दुर्ग ऐतिहासिक रूप से 'ढाई साके' की घटना के लिए प्रसिद्ध है। 'आधा' साका उस घटना को संदर्भित करता है जहाँ:
(1) महिलाओं ने जौहर किया, जबकि पुरुष युद्ध में जीवित रहे।
(2) राजपूत पुरुष युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, लेकिन महिलाओं का जौहर संपन्न नहीं हो सका।
(3) घेराबंदी के मध्य दोनों पक्षों द्वारा युद्धविराम किया गया।
(4) हताहतों के बिना ही दुर्ग को शत्रु के अधीन कर दिया गया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. सूची-I (मंदिर स्थापत्य की विशेषताएँ) को सूची-II (विवरण) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (विशेषताएँ)
A. शिखर
B. आमलक
C. अंतराल
D. जगती
सूची II: (विवरण)

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. झालावाड़ जिले में स्थित गागरोन का दुर्ग राजस्थान में दुर्गों के किस विशिष्ट वर्गीकरण का प्रमुख उदाहरण है?
(1) वन दुर्ग
(2) धान्वन दुर्ग
(3) जल दुर्ग
(4) सैन्य दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. सूची-I (राजस्थान के दुर्ग) को सूची-II (विशिष्ट विशेषताएँ) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (राजस्थान के दुर्ग)
A. चित्तौड़गढ़ दुर्ग
B. मेहरानगढ़ दुर्ग
C. जैसलमेर दुर्ग
D. कुंभलगढ़ दुर्ग
सूची II: (विशिष्ट विशेषताएँ)
i. इसमें विश्व की दूसरी सबसे लंबी निरंतर प्राचीर है
ii. इसमें प्रसिद्ध कीर्ति स्तंभ और विजय स्तंभ स्थित हैं
iii. पीले बलुआ पत्थर के कारण 'स्वर्ण दुर्ग' के रूप में जाना जाता है
iv. इसमें चोखेलाव महल और फूल महल स्थित हैं
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(4) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. राजपूत सैन्य वास्तुकला के अनुसार 'पारिख दुर्ग' की परिभाषित विशेषता क्या है?
(1) यह निर्जन मरुस्थलीय भू-भाग से घिरा होता है।
(2) यह रक्षा के लिए मुख्य रूप से एक विशाल स्थायी सेना पर निर्भर करता है।
(3) यह झील से घिरे एक द्वीप पर निर्मित होता है।
(4) यह चारों ओर से एक गहरी और चौड़ी खाई द्वारा सुरक्षित होता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. चित्तौड़गढ़ दुर्ग में ऐतिहासिक विजय स्तंभ का निर्माण राणा कुंभा ने किन क्षेत्रों की संयुक्त सेनाओं पर अपनी विजय की स्मृति में करवाया था?
(1) दिल्ली और आगरा
(2) मालवा और गुजरात
(3) मारवाड़ और आमेर
(4) सिंध और मुल्तान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. मेहरानगढ़ दुर्ग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह भौमगढ़ नामक एक ऊँची पहाड़ी पर स्थित है।
II. इसकी स्थापना 15वीं शताब्दी में राव जोधा द्वारा की गई थी।
III. दुर्ग परिसर में प्रसिद्ध चामुंडा माता मंदिर स्थित है।
IV. अपने पूरे इतिहास में इसे किसी भी बाहरी आक्रमणकारी सेना द्वारा कभी भी विजित नहीं किया जा सका।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और III
(2) केवल II और III
(3) II, III और IV
(4) केवल I और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. निम्नलिखित में से कौन सा द्वार आमेर दुर्ग परिसर का मुख्य और ऐतिहासिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार है, जो सीधे जलेब चौक की ओर ले जाता है?
(1) गणेश पोल
(2) चाँद पोल
(3) त्रिपोलिया द्वार
(4) सूरज पोल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. निम्नलिखित घटनाक्रम जयपुर की खगोलीय वेधशाला (जंतर मंतर) के इतिहास से संबंधित हैं। उन्हें सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
I. यूनेस्को (UNESCO) विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित होना
II. सवाई जय सिंह II द्वारा निर्माण का आदेश दिया जाना
III. आर्थर गैरेट के निर्देशन में व्यापक जीर्णोद्धार किया जाना
IV. प्राथमिक खगोलीय यंत्रों का निर्माण पूर्ण होना
(1) II, IV, III, I
(2) II, III, IV, I
(3) IV, II, I, III
(4) II, IV, I, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. जयगढ़ दुर्ग विशेष रूप से 'जयबाण' तोप के लिए प्रसिद्ध है, जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि:
(1) यह मध्यकालीन राजपूत कवच का सबसे बड़ा संग्रह है।
(2) यह प्रारंभिक आधुनिक युग में निर्मित पहियों पर चलने वाली विश्व की सबसे बड़ी तोप है।
(3) यह कछवाहा शासकों द्वारा उपयोग की जाने वाली एक विशाल भूमिगत टकसाल थी।
(4) यह वर्षा जल संचयन के लिए निर्मित एक जटिल जल-संग्रहण कुंड है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. कौन सी अद्वितीय भूगर्भीय विशेषता जैसलमेर दुर्ग को "स्वर्ण दुर्ग" (सोनार किला) का नाम देती है?
(1) मंदिर के शिखरों और प्रासाद के मेहराबों पर वास्तविक स्वर्ण की परत का व्यापक उपयोग।
(2) पीले बलुआ पत्थर का उपयोग जो सूर्य की किरणों में सुनहरी आभा बिखेरता है।
(3) इसके चारों ओर की खाई के जल पर ढलते सूर्य का परावर्तन।
(4) दुर्ग की आधुनिक खुदाई के दौरान प्राप्त प्राचीन स्वर्ण मुद्राओं का विशाल भंडार।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. रणथंभौर दुर्ग के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान की सीमाओं के भीतर स्थित है।
II. यह दुर्ग ऐतिहासिक शासक हम्मीर देव चौहान से गहराई से संबद्ध है।
III. इसमें प्रसिद्ध त्रिनेत्र गणेश मंदिर स्थित है।
IV. इसे 1301 में अलाउद्दीन खिलजी द्वारा विजित किया गया था।
V. उदयपुर की स्थापना से पहले यह मेवाड़ राज्य की प्राथमिक राजधानी थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल V
(3) केवल III और IV
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. राणा कुंभा के संरक्षण में कुंभलगढ़ दुर्ग के अभिकल्प (डिजाइन) के लिए उत्तरदायी वास्तुकार की पहचान कीजिए।
(1) विद्याधर भट्टाचार्य
(2) लाल चंद उस्ता
(3) मंडन
(4) देपा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. कुंभलगढ़ दुर्ग का सबसे आंतरिक और सर्वाधिक सुरक्षित भाग, जो राणा कुंभा के निजी निवास के रूप में प्रयुक्त होता था, किस नाम से जाना जाता है?
(1) बादल महल
(2) नवलखा महल
(3) जूना महल
(4) कटारगढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. उदयपुर के सिटी पैलेस परिसर की कौन सी प्रमुख विशेषता एक विशाल ऊँचा उद्यान प्रांगण है जो प्राकृतिक चट्टान पर निर्मित है, जिससे यह भू-तल उद्यान का भ्रम उत्पन्न करता है?
(1) मोर चौक
(2) मानक महल
(3) बाड़ी महल
(4) जनाना महल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. सूची-I (स्मारक/प्रासाद) को सूची-II (संबद्ध शासक/संस्थापक) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (स्मारक/प्रासाद)
A. हवा महल, जयपुर
B. सिटी पैलेस, जयपुर
C. उम्मेद भवन पैलेस, जोधपुर
D. लेक पैलेस (जग निवास), उदयपुर
सूची II: (संबद्ध शासक/संस्थापक)
i. महाराणा जगत सिंह II
ii. महाराजा उम्मेद सिंह
iii. सवाई प्रताप सिंह
iv. सवाई जय सिंह II
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. जयपुर में हवा महल के अद्वितीय पाँच मंजिला अग्रभाग को किस धार्मिक प्रतीक के आकार में अभिकल्पित किया गया है?
(1) भगवान शिव का त्रिशूल
(2) देवी लक्ष्मी का कमल पुष्प
(3) भगवान राम का धनुष
(4) भगवान कृष्ण का मुकुट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. जयपुर में जंतर मंतर वेधशाला के भीतर स्थित 'सम्राट यंत्र' का प्राथमिक खगोलीय कार्य क्या है?
(1) इसके शंकु (नोमोन) की छाया का उपयोग करके स्थानीय समय का सटीक मापन करना
(2) चंद्र ग्रहण की भविष्यवाणी करना
(3) पृथ्वी और चंद्रमा के बीच की सटीक दूरी की गणना करना
(4) तारों की रासायनिक संरचना का निर्धारण करना
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. निम्नलिखित शहरों की स्थापना के सही कालानुक्रमिक क्रम के अनुसार उन्हें प्राचीन से नवीन के रूप में व्यवस्थित करें:
(1) चित्तौड़गढ़, जोधपुर, जयपुर, उदयपुर
(2) चित्तौड़गढ़, जोधपुर, उदयपुर, जयपुर
(3) जोधपुर, चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जयपुर
(4) चित्तौड़गढ़, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. उदयपुर की कौन सी कृत्रिम झील में एक छोटा द्वीप है जहाँ सौर वेधशाला स्थित है, और इसके पुनर्निर्माण के समय इसका नाम ड्यूक ऑफ कनॉट के नाम पर रखा गया था?
(1) फतेह सागर झील
(2) पिछोला झील
(3) उदय सागर झील
(4) जयसमंद झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. राजस्थान के यूनेस्को (UNESCO) विश्व धरोहर स्थलों के संबंध में गलत सुमेलित युग्म की पहचान कीजिए।
(1) केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान - प्राकृतिक स्थल
(2) जंतर मंतर, जयपुर - सांस्कृतिक स्थल
(3) जयपुर का परकोटा शहर - सांस्कृतिक स्थल
(4) राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग - प्राकृतिक स्थल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. निम्नलिखित में से कौन सा दुर्ग 2013 में यूनेस्को द्वारा नामित "राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग" की श्रेणी में सम्मिलित नहीं था?
(1) आमेर दुर्ग
(2) तारागढ़ दुर्ग
(3) गागरोन दुर्ग
(4) रणथंभौर दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन — अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): दिलवाड़ा जैन मंदिर का बाहरी भाग अत्यधिक सादा और सरल प्रतीत होता है।
कारण (R): इसके निर्माताओं ने आक्रमणकारियों का ध्यान आकर्षित करने से बचने के लिए बाहरी अलंकरण को जानबूझकर सीमित रखा, जबकि आंतरिक भाग में कलात्मक वैभव को चरमोत्कर्ष पर पहुँचाया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित में से कौन सा संरचनात्मक तत्व मुख्य रूप से रणकपुर जैन मंदिर की स्थापत्य कला से संबद्ध है?
(1) बाहरी स्तंभों के लिए लाल बलुआ पत्थर का व्यापक उपयोग
(2) पूर्णतः कांसे से निर्मित एक विशाल केंद्रीय गुंबद की उपस्थिति
(3) बिना केंद्रीय मंडप वाला अष्टकोणीय आधार
(4) संरचना को आधार प्रदान करने वाले 1,444 विशिष्ट नक्काशीदार संगमरमर के स्तंभ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. पारंपरिक राजस्थानी मंदिर स्थापत्य में 'तोरण' की अवधारणा विशेष रूप से संदर्भित करती है:
(1) एक जटिल रूप से तराशा गया औपचारिक मेहराबदार प्रवेश द्वार।
(2) मुख्य देवता के चारों ओर का प्रदक्षिणा पथ।
(3) गर्भगृह के ऊपर निर्मित शंक्वाकार शिखर।
(4) शास्त्रीय नृत्य प्रदर्शन के लिए प्रयुक्त मंच।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. चित्तौड़गढ़ में कीर्ति स्तंभ के मूल महत्व का वर्णन करने वाले सबसे उपयुक्त कथन का चयन करें।
(1) यह दिल्ली के विरुद्ध राणा सांगा की सैन्य विजय के उपलक्ष्य में निर्मित एक विजय स्तंभ है।
(2) यह आदिनाथ को समर्पित 12वीं शताब्दी का एक जैन स्मारक है, जिसमें दिगंबर संप्रदाय की विभिन्न नक्काशी है।
(3) यह ऐतिहासिक घेराबंदी के दौरान सैन्य निगरानी के लिए प्रयुक्त एक बुर्ज है।
(4) यह अलाउद्दीन खिलजी द्वारा चित्तौड़गढ़ पर विजय के प्रतीक के रूप में निर्मित एक स्तंभ है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. आमेर दुर्ग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कछवाहा राजपूतों के अधिकार से पूर्व यह मूलतः मीणाओं का था।
II. दुर्ग के भीतर स्थित शीश महल पूर्णतः प्राकृतिक प्रकाश से रहित है।
III. दीवान-ए-आम में हिंदू और मुगल दोनों शैलियों का समन्वय दिखाई देता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. राजस्थान के कई पहाड़ी दुर्गों में पाए जाने वाले 'जौहर कुंड' शब्द का अर्थ है:
(1) वह स्थान जहाँ राजपूत महिलाओं ने सम्मान की रक्षा हेतु सामूहिक आत्मदाह किया था।
(2) घेराबंदी के दौरान पेयजल सुरक्षित रखने के लिए निर्मित जलाशय।
(3) हाथियों के द्वंद्व और सार्वजनिक सैन्य प्रदर्शनों के लिए निर्धारित अखाड़ा।
(4) राजकीय संपत्ति और आभूषणों को सुरक्षित रखने के लिए प्रयुक्त मुख्य कोषागार।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. उनके प्राथमिक ऐतिहासिक कार्य के आधार पर स्मारकों की निम्नलिखित सूची में से विषम को पहचानें।
(1) विजय स्तंभ

और शक्ति को भी सिद्ध किया। यह एक शांतिपूर्ण राजनीतिक परिवर्तन था जिसने उत्तर भारत में सुदृढ़ शासन व्यवस्था की आधारशिला रखी और राष्ट्र को एकता प्रदान की।

106. (1) रियासती विभाग
भारत की स्वतंत्रता के समय रियासतों की जटिल समस्या को हल करने के लिए 5 जुलाई 1947 को 'रियासती विभाग' की स्थापना की गई थी। इस विभाग का नेतृत्व सरदार वल्लभभाई पटेल को सौंपा गया और वी.पी. मेनन इसके सचिव बने। इस विभाग का प्राथमिक उत्तरदायित्व 560 से अधिक बिखरी हुई रियासतों को भारतीय संघ में शामिल करने के लिए वार्ताएं करना और देश के संभावित विखंडन को रोकना था। इस विभाग की कार्यकुशलता और रणनीतिक सूझबूझ के कारण ही आधुनिक भारत का एकीकृत राजनीतिक मानचित्र तैयार होना संभव हो सका।

107. (4) I, II और III
हीरालाल शास्त्री वृहद राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री थे और उन्होंने जयपुर रियासत के भारत में सुगम विलय के लिए अत्यंत प्रभावी वार्ताओं का नेतृत्व किया था। उनके नेतृत्व में नई सरकार ने प्रशासनिक एकरूपता लाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। हालांकि, आंतरिक राजनीतिक मतभेदों और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के दबाव के कारण उन्होंने जनवरी 1951 में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। उनका कार्यकाल राजस्थान के निर्माण के संक्रमणकालीन दौर का सबसे महत्वपूर्ण समय था, जिसने भविष्य की प्रशासनिक व्यवस्थाओं के लिए एक बुनियादी ढांचा तैयार किया।

108. (2) अलवर
महात्मा गांधी की हत्या के बाद अलवर के महाराजा तेज सिंह और वहां के दीवान एन.बी. खरे पर हत्यारों को संरक्षण देने या षड्यंत्र से संभावित संबंधों के संदेह में जांच बिठाई गई थी। इस कारण भारत सरकार ने अलवर के प्रशासन को तत्काल अपने हाथों में ले लिया था। यद्यपि बाद में उन्हें इन आरोपों से मुक्त कर दिया गया, किंतु इस घटना ने मत्स्य संघ के गठन की प्रक्रिया को अत्यधिक प्रभावित किया। इसने केंद्र सरकार को रियासतों के आंतरिक मामलों में कानून-व्यवस्था के नाम पर हस्तक्षेप करने का एक सशक्त संवैधानिक आधार भी प्रदान किया था।

109. (3) राज्य का औसत वार्षिक राजस्व
शासकों को मिलने वाले प्रिवी पर्स की राशि मुख्य रूप से उनकी रियासत के औसत वार्षिक राजस्व के आधार पर निर्धारित की जाती थी। सामान्यतः यह राशि राज्य की कुल आय का लगभग 10 प्रतिशत होती थी, जिसकी एक अधिकतम सीमा भी तय की गई थी। इसके अतिरिक्त शासकों की ऐतिहासिक प्रतिष्ठा और उनके द्वारा किए गए त्याग को भी ध्यान में रखा जाता था। प्रिवी पर्स का उद्देश्य शासकों को उनके जीवन स्तर को बनाए रखने के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान करना था ताकि वे बिना किसी प्रतिरोध के अपनी शक्तियां लोकतांत्रिक सरकार को सौंप सकें।

110. (4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों का एकीकरण अलग-अलग तिथियों पर संपन्न हुआ। अलवर मत्स्य संघ का हिस्सा 18 मार्च 1948 को बना। बांसवाड़ा का विलय राजस्थान संघ के साथ 25 मार्च 1948 को हुआ। जयपुर वृहद राजस्थान के रूप में 30 मार्च 1949 को संघ में शामिल हुआ। सिरोही का मुख्य हिस्सा (आबू-देलवाड़ा को छोड़कर) 26 जनवरी 1950 को एकीकृत किया गया। यह तिथियां राजस्थान के मानचित्र में क्रमिक विस्तार को दर्शाती हैं, जहां छोटे संघ धीरे-धीरे मिलकर एक विशाल और शक्तिशाली राज्य के रूप में परिवर्तित होते गए।

111. (1) गोकुल लाल असावा
वृहद राजस्थान के गठन के बाद हीरालाल शास्त्री के मंत्रिमंडल में सिद्धराज ढड्ढा, प्रेम नारायण माथुर और फूलचंद बाफना जैसे प्रमुख नेताओं को शामिल किया गया था। गोकुल लाल असावा, जो राजस्थान संघ (द्वितीय चरण) के प्रधानमंत्री रहे थे, इस विशिष्ट मंत्रिमंडल का हिस्सा नहीं थे। मंत्रिमंडल का गठन विभिन्न रियासती क्षेत्रों और प्रजामंडल के प्रभावशाली नेताओं के बीच शक्ति संतुलन बनाने के उद्देश्य से किया गया था। इन सदस्यों ने नए एकीकृत राज्य के लिए नीतियों के निर्माण और प्रशासनिक ढांचा खड़ा करने में अपनी महत्वपूर्ण विशेषज्ञता और अनुभव प्रदान किया।

112. (2) केवल I, III और IV
राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशें 1 नवंबर 1956 को लागू हुईं, जिसके तहत आबू और देलवाड़ा को राजस्थान में वापस मिलाया गया। आयोग ने भाषाई और भौगोलिक निकटता को प्राथमिकता दी, जिससे राजस्थान को उसका पूर्ण आकार प्राप्त हुआ। हालांकि, आयोग ने अजमेर के स्वतंत्र बने रहने की मांग को पूरी तरह से खारिज कर दिया था और इसे राजस्थान में मिलाने की स्पष्ट अनुशंसा की थी। इस ऐतिहासिक पुनर्गठन ने अंतर-राज्यीय सीमा विवादों को समाप्त किया और राजस्थान को एक अधिक संगठित और समरूप प्रशासनिक इकाई के रूप में स्थापित किया।

113. (2) व्यापार, पारगमन और संचार
यथास्थिति समझौते के अंतर्गत, रियासतों और भारतीय अधिराज्य के बीच व्यापार, पारगमन और संचार जैसी महत्वपूर्ण नागरिक सेवाएं बिना किसी परिवर्तन के जारी रहीं। इसका उद्देश्य सत्ता हस्तांतरण के दौरान जनता को होने वाली असुविधाओं को कम करना था। इस समझौते ने सुनिश्चित किया कि रेलवे, डाक-तार और सीमा शुल्क जैसी व्यवस्थाएं पुरानी संधियों के अनुसार तब तक चलती रहें जब तक कि नया प्रशासनिक ढांचा पूरी तरह से लागू नहीं हो जाता। इसने एकीकरण की संक्रमण अवधि में आर्थिक स्थिरता और निरंतरता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

114. (1) सीमा पर रणनीतिक सुरक्षा चिंताएं और आंतरिक प्रशासनिक बुनियादी ढांचे का अभाव।
जैसलमेर को थोड़े समय के लिए प्रत्यक्ष केंद्रीय प्रशासन के अधीन रखने का मुख्य कारण इसकी भौगोलिक स्थिति थी। पाकिस्तान के साथ लंबी सीमा साझा करने और वहां

V. झरोखा

उपरोक्त तत्वों में से कौन सा संयोजन मुख्य रूप से सुरक्षात्मक या सैन्य उद्देश्यों के लिए प्रयुक्त होता था?

(1) I, II और III
(2) II, IV और V
(3) I, III और IV
(4) II, III और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. नाथद्वारा मंदिर ऐतिहासिक रूप से किस पारंपरिक कला रूप के विकास का केंद्र रहा है?

(1) बनी-ठनी लघु चित्रकला
(2) पिछवाई चित्रकला
(3) फड़ चित्रकला
(4) ब्लू पॉटरी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. 'पद्मिनी महल' एक प्रमुख ऐतिहासिक स्मारक है जो निम्नलिखित में से किस दुर्ग के परिसर में स्थित है?

(1) मेहरानगढ़ दुर्ग
(2) आमेर दुर्ग
(3) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
(4) कुंभलगढ़ दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. सूची-I (द्वार/संरचनाएँ) को सूची-II (दुर्ग जहाँ वे स्थित हैं) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।

सूची I: (द्वार/संरचनाएँ)

A. पाडन पोल
B. लोहा पोल
C. गणेश पोल
D. अखै पोल

सूची II: (दुर्ग)

i. मेहरानगढ़ दुर्ग
ii. जैसलमेर दुर्ग
iii. चित्तौड़गढ़ दुर्ग
iv. आमेर दुर्ग

(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित में से कौन 'जीवंत दुर्ग' (Living Fort) की अवधारणा का सटीक वर्णन करता है, जो जैसलमेर दुर्ग की प्रमुख विशेषता है?

(1) एक ऐसा दुर्ग जहाँ दुर्ग की प्राचीरों के भीतर एक विशाल नागरिक जनसंख्या निवास करती है।
(2) एक ऐसा दुर्ग जहाँ सक्रिय सैन्य टुकड़ियाँ निरंतर तैनात रहती हैं।
(3) घने वन की लकड़ी जैसी जैविक सामग्रियों से निर्मित दुर्ग।
(4) एक ऐसा दुर्ग जिसका निरंतर संरचनात्मक विस्तार होता रहता है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. रणकपुर जैन मंदिर के स्थापत्य अभिकल्प में वास्तुकार 'देपा' (या दीपक) का क्या महत्व है?

(1) उन्होंने जैन वास्तुकला में मुगल शैली के गुंबदों को सफलतापूर्वक सम्मिलित किया।
(2) उन्होंने मुख्य संरक्षक धरण शाह द्वारा देखे गए एक दिव्य स्वप्न के आधार पर मंदिर का विन्यास तैयार किया।
(3) वे राणा कुंभा द्वारा अभियांत्रिकी की निगरानी के लिए नियुक्त विदेशी वास्तुकार थे।
(4) उन्होंने वर्षों की अवधि में केवल पारंपरिक उपकरणों से व्यक्तिगत रूप से सभी 1,444 स्तंभों को तराशा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. राजस्थान के नागर शैली के मंदिरों में 'गर्भगृह' विशेष रूप से संदर्भित करता है:

(1) श्रद्धालुओं के लिए मुख्य सभा मंडप।
(2) मुख्य देवता की स्थापना वाला पवित्रतम स्थान।
(3) मंदिर के शिखर की सबसे ऊँची चोटी।
(4) प्रदक्षिणा के लिए प्रयुक्त बाहरी प्रांगण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. मंदिर स्थापत्य की नागर और द्रविड़ शैलियों के बीच मूलभूत अंतर क्या है, जो विशेष रूप से राजस्थानी मंदिरों की दक्षिण भारत के मंदिरों से तुलना करने पर स्पष्ट होता है?

(1) नागर शैली में वक्राकार शिखर होता है, जबकि द्रविड़ शैली में सोपाननुमा (सीढ़ीदार) पिरामिडीय विमान होता है।
(2) नागर शैली रॉक-कट वास्तुकला है, जबकि द्रविड़ शैली पूरी तरह संरचनात्मक है।
(3) नागर मंदिरों में केंद्रीय देवता का अभाव होता है, जबकि द्रविड़ मंदिरों में कई देवता होते हैं।
(4) नागर मंदिर केवल ईंटों का उपयोग करते हैं, जबकि द्रविड़ मंदिर केवल श्वेत संगमरमर का।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. जयपुर शहर और इसके शाही प्रासादों का विन्यास मुख्य रूप से किस प्राचीन भारतीय स्थापत्य ग्रंथ के सिद्धांतों पर आधारित था?

(1) मानसार शिल्प शास्त्र में वर्णित शहरी विन्यास के सिद्धांत।
(2) कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रदत्त प्रशासनिक दिशा-निर्देश।
(3) शास्त्रीय शिल्प शास्त्र के साथ समन्वित वास्तु शास्त्र के सिद्धांत।
(4) नाट्य शास्त्र में प्रदान किए गए कलात्मक निर्देश।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

अध्याय 10

मंदिर, किले, महल एवं स्मारक

1. निम्नलिखित में से किस स्थापत्य शैली को 8वीं से 11वीं शताब्दी के दौरान मुख्य रूप से राजस्थान में पाई जाने वाली नागर शैली के क्षेत्रीय स्वरूप के रूप में पहचाना जाता है?
(1) द्रविड़ शैली
(2) महामारु शैली
(3) वेसर शैली
(4) कलिंग शैली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. राजस्थान की मंदिर स्थापत्य कला के संदर्भ में, 'पंचायतन' विन्यास निम्नलिखित में से किस व्यवस्था को संदर्भित करता है?
(1) एक मुख्य मंदिर जो चार सहायक मंदिरों से घिरा हो
(2) पाँच क्रमिक प्राचीरों से घिरा एक प्रांगण
(3) समान ऊँचाई के पाँच अलग-अलग शिखरों वाला मंदिर
(4) एक ही अक्ष पर संरेखित पाँच अलग-अलग मंडपों वाला परिसर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. माउंट आबू स्थित दिलवाड़ा जैन मंदिरों के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) वे अपनी जटिल संगमरमर की नक्काशी और बाहरी अलंकरण के अभाव के लिए प्रसिद्ध हैं।
(2) विमल वसही मंदिर प्रथम जैन तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है।
(3) लूना वसही मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी में सोलंकी शासकों द्वारा करवाया गया था।
(4) ये मंदिर स्थापत्य की मारु-गुर्जर शैली को दर्शाते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. रणकपुर जैन मंदिर के संबंध में कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: रणकपुर जैन मंदिर को 'चौमुखा मंदिर' के नाम से भी जाना जाता है।
कथन II: मुख्य मंदिर में भगवान नेमिनाथ की चार मुख वाली मूर्ति है, जो चारों दिशाओं की ओर उन्मुख है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन — अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): एकलिंगजी मंदिर को मेवाड़ के गुहिल शासकों के लिए सबसे महत्वपूर्ण आध्यात्मिक केंद्र माना जाता है।
कारण (R): मेवाड़ के महाराणा स्वयं को देवता एकलिंगजी का केवल दीवान (प्रतिनिधि) मानते थे और उनकी ओर से राज्य पर शासन करते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. नाथद्वारा मंदिर में स्थित श्रीनाथजी की मूर्ति मूल रूप से किस मुगल सम्राट की मूर्तिभंजक नीतियों से बचाने के लिए राजस्थान लाई गई थी?
(1) अकबर
(2) औरंगजेब
(3) जहाँगीर
(4) शाहजहाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. पुष्कर स्थित ब्रह्मा मंदिर की प्राथमिक स्थापत्य विशेषता का सबसे उपयुक्त वर्णन निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) एक स्वर्ण बलुआ पत्थर की संरचना जिसके मुख्य बाहरी अग्रभाग पर जटिल काँच का काम है।
(2) दक्षिण भारतीय द्रविड़ मंदिरों के समान एक विशाल गोपुरम द्वार वाली संरचना।
(3) एक भूमिगत एकाश्म चट्टान को काटकर बनाई गई संरचना जिसे सीधे एक विशाल पत्थर से तराशा गया है।
(4) एक लाल शिखर वाली संरचना और इसके गर्भगृह में देवता ब्रह्मा की चार मुख वाली मूर्ति है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. शुक्र नीति जैसे प्राचीन भारतीय ग्रंथों के अनुसार दुर्गों के वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. धान्वन दुर्ग वह दुर्ग है जो विशाल जल राशियों से घिरा होता है।
II. गिरि दुर्ग एक ऊँची पहाड़ी या पर्वत पर स्थित होता है।
III. एरण दुर्ग वह है जिसका मार्ग काँटों, खाइयों और पत्थरों से दुर्गम होता है।

i. शिखर के शीर्ष पर स्थित धारीदार पाषाण चक्र
ii. वह ऊँचा चबूतरा जिस पर मंदिर निर्मित है
iii. मुख्य गर्भगृह के ऊपर स्थित ऊँची संरचना
iv. सभा भवन को गर्भगृह से जोड़ने वाला गलियारा
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. राजस्थान का कौन सा दुर्ग अपनी विशाल प्राचीर के लिए प्रसिद्ध है, जिसके बारे में कहा जाता है कि उस पर एक साथ आठ घोड़े दौड़ सकते हैं?
(1) मेहरानगढ़ दुर्ग
(2) जैसलमेर दुर्ग
(3) तारागढ़ दुर्ग
(4) कुंभलगढ़ दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. पुष्कर स्थित ब्रह्मा मंदिर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से संगमरमर और पाषाण शिलाओं से निर्मित है।
II. यह पवित्र पुष्कर झील के तट पर स्थित है।
III. मंदिर के गर्भगृह के तल पर चाँदी का कछुआ उत्कीर्ण है।
IV. गोकुल चंद पारीक द्वारा 14वीं शताब्दी में इसका वर्तमान स्वरूप निर्मित किया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, II और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. राजस्थान के महलों और दुर्गों में प्रचलित 'छतरी' को सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया जा सकता है:
(1) एक सुरक्षित भूमिगत तिजोरी जिसका उपयोग राजकीय कोष के लिए किया जाता है।
(2) छाया प्रदान करने वाला या एक स्मारक के रूप में प्रयुक्त ऊँचा गुंबददार मंडप।
(3) हाथियों के प्रहार को सहने हेतु बनाया गया सुदृढ़ लकड़ी का द्वार।
(4) वर्षा जल के कुशल भंडारण के लिए निर्मित एक गहरा सीढ़ीदार जलाशय।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. नागर शैली के मंदिर के भागों को प्रवेश द्वार से गर्भगृह की ओर सही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. गर्भगृह
II. मंडप
III. अर्ध मंडप
IV. अंतराल
(1) III, II, IV, I
(2) II, III, IV, I
(3) III, IV, II, I
(4) I, IV, II, III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. जयपुर में कौन सा प्रमुख ऐतिहासिक स्मारक बिना किसी नींव के निर्मित है और अपने भार हेतु वक्राकार अभिकल्प पर निर्भर है?
(1) हवा महल
(2) जंतर मंतर
(3) जल महल
(4) अल्बर्ट हॉल संग्रहालय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. 'जय नारायण व्यास टाउन हॉल', जो मूल रूप से जोधपुर की शाही विरासत का भाग था, किस प्रमुख प्रासाद परिसर से संबद्ध है?
(1) सिटी पैलेस, उदयपुर
(2) उम्मेद भवन पैलेस
(3) राय का बाग पैलेस
(4) लालगढ़ पैलेस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. रणकपुर जैन मंदिर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका निर्माण राणा सांगा के काल में हुआ था।
II. इसका स्थापत्य अभिकल्प 'नलिनी-गुल्म विमान' की अवधारणा पर आधारित है।
III. इसमें विभिन्न नृत्य मुद्राओं में अप्सराओं की उत्कृष्ट नक्काशी है।
IV. मंदिर परिसर एक प्राचीर से घिरा है, जिसे 'भामती' कहा जाता है।
V. यह मुख्य रूप से धौलपुर के लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और V
(2) केवल II और III
(3) केवल III और IV
(4) II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. राजपूत दुर्ग रणनीति के आधार पर, चित्तौड़गढ़ दुर्ग को इसके विशाल आकार के बावजूद प्रायः असुरक्षित क्यों माना जाता था?
(1) यह प्रवेश हेतु केवल एक संकीर्ण द्वार पर निर्भर था, जिसे शत्रु सेना सुगमता से अवरुद्ध कर सकती थी।
(2) इसमें कोई आंतरिक जल स्रोत नहीं था, जिससे शीघ्र आत्मसमर्पण की स्थिति उत्पन्न होती थी।
(3) इसके विशाल विस्तार के कारण एक सीमित सैन्य बल

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) महामारु शैली
महामारु शैली राजस्थान में 8वीं से 11वीं शताब्दी के मध्य विकसित नागर वास्तुकला का एक अत्यंत विशिष्ट क्षेत्रीय स्वरूप माना जाता है। इस स्थापत्य शैली का विकास मुख्य रूप से गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के संरक्षण में हुआ था। इसकी प्रमुख विशेषताओं में दीवारों पर जटिल नक्काशी, भव्य शिखर और अलंकृत स्तंभों का प्रयोग प्रमुखता से शामिल है। यह शैली ओसियां और मंडोर के प्राचीन मंदिरों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। यह राजपूत कालीन स्थापत्य कला का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है।

2. (1) एक मुख्य मंदिर जो चार सहायक मंदिरों से घिरा हो
पंचायतन मंदिर स्थापत्य की वह विशिष्ट शैली है जिसमें मुख्य मंदिर एक ऊँचे आयताकार चबूतरे के केंद्र में स्थित होता है और इसके चारों कोनों पर चार छोटे सहायक मंदिर निर्मित होते हैं। इस प्रकार कुल पाँच मंदिरों का एक समूह बनता है। यह विन्यास उत्तर भारतीय नागर शैली की एक प्रमुख विशेषता है जो राजस्थान के कई प्राचीन मंदिरों में पाई जाती है। यह आध्यात्मिक व्यवस्था मंदिर परिसर को संरचनात्मक पूर्णता और भव्यता प्रदान करती है।

3. (3) लूना वसही मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी में सोलंकी शासकों द्वारा करवाया गया था।
लूना वसही मंदिर का निर्माण वास्तव में 13वीं शताब्दी में लगभग 1230 ईस्वी में वास्तुपाल और तेजपाल नामक दो प्रसिद्ध भाइयों द्वारा करवाया गया था। यह मंदिर जैन तीर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित है और माउंट आबू के प्रसिद्ध दिलवाड़ा जैन मंदिर परिसर का अभिन्न अंग है। यह मारु-गुर्जर स्थापत्य शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इन मंदिरों की बाहरी सादगी और आंतरिक भाग में संगमरमर की अत्यंत सूक्ष्म नक्काशी इन्हें वैश्विक स्तर पर कला का अद्वितीय केंद्र बनाती है।

4. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
रणकपुर जैन मंदिर अपनी अनूठी 'चौमुखा' वास्तुकला के लिए विश्व विख्यात है, जिसका अर्थ है कि इसमें चारों दिशाओं में चार भव्य प्रवेश द्वार बने हुए हैं। इसका मुख्य मंदिर जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को समर्पित है, न कि नेमिनाथ को। मंदिर के मुख्य गर्भगृह में आदिनाथ की चार मुख वाली विशाल प्रतिमा स्थापित है, जो चारों दिशाओं की ओर देखती है। यह मंदिर अपनी जटिल नक्काशी और 1,444 अद्वितीय स्तंभों के लिए प्रसिद्ध माना जाता है।

5. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
एकलिंगजी मंदिर उदयपुर के निकट स्थित मेवाड़ के गुहिल और बाद में सिसोदिया राजवंश का सबसे महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र रहा है। मेवाड़ के महाराणा स्वयं को राज्य का वास्तविक शासक नहीं मानते थे। वे भगवान एकलिंगजी को मेवाड़ का अधिपति और स्वयं को उनका दीवान या केवल एक प्रतिनिधि मानते थे। किसी भी महत्वपूर्ण सैन्य अभियान या राजकीय कार्य से पूर्व शासक एकलिंगजी का आशीर्वाद प्राप्त करते थे। यह परंपरा मेवाड़ की गहरी निष्ठा दर्शाती है।

6. (2) औरंगजेब
17वीं शताब्दी के दौरान मुगल शासक औरंगजेब की कट्टर मूर्तिभंजक नीतियों और मंदिरों को ध्वस्त करने के आदेशों से सुरक्षित रखने हेतु श्रीनाथजी की पवित्र मूर्ति को मथुरा के निकट गोवर्धन से राजस्थान लाया गया था। मेवाड़ के महाराणा राज सिंह ने इस मूर्ति को संरक्षण प्रदान किया और इसे सिहाड़ गाँव (वर्तमान नाथद्वारा) में स्थापित किया। यहाँ एक हवेलीनुमा मंदिर का निर्माण किया गया। इसी कारण नाथद्वारा वल्लभ संप्रदाय का प्रमुख केंद्र बना और यहाँ पिछवाई कला विकसित हुई।

7. (4) एक लाल शिखर वाली संरचना और इसके गर्भगृह में देवता ब्रह्मा की चार मुख वाली मूर्ति है।
पुष्कर स्थित भगवान ब्रह्मा का मंदिर अपनी विशिष्ट स्थापत्य विशेषताओं के लिए विख्यात है। इस मंदिर की सबसे बड़ी पहचान इसका चमकीला लाल रंग का शिखर है, जिसके शीर्ष पर हंस की आकृति बनी हुई है। मंदिर के मुख्य गर्भगृह में भगवान ब्रह्मा की चार मुख वाली अत्यंत दुर्लभ चतुर्मुखी प्रतिमा स्थापित है। संगमरमर और पत्थर से निर्मित यह मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से सादगी और धार्मिक महत्व का अद्भुत मिश्रण है। यह विश्व के सक्रिय ब्रह्मा मंदिरों में प्रमुख है।

8. (2) केवल II और III
प्राचीन भारतीय ग्रंथ शुक्र नीति के अनुसार दुर्गों का वर्गीकरण उनकी भौगोलिक स्थिति के आधार पर किया गया है। गिरि दुर्ग वह है जो किसी ऊँची पहाड़ी पर स्थित हो, जैसे मेहरानगढ़। एरण दुर्ग का मार्ग पत्थरों, खाइयों और काँटों के कारण अत्यंत दुर्गम होता है। जल राशियों से घिरा दुर्ग 'जल दुर्ग' या 'ओदक दुर्ग' कहलाता है, जबकि धान्वन दुर्ग वह है जो चारों ओर से मरुस्थल से घिरा हो। ये दुर्ग सुरक्षा की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण थे।

9. (3) जल दुर्ग
झालावाड़ जिले में स्थित गागरोन का किला राजस्थान में 'जल दुर्ग' या 'ओदक दुर्ग' का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करता है। यह दुर्ग तीन ओर से आहू और कालीसिंध नदियों के संगम के जल से सुरक्षित रूप से घिरा हुआ है। इस किले की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इसे बिना किसी वास्तविक नींव के सीधे एक विशाल चट्टान पर निर्मित किया गया है। यह दुर्ग

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. काँच की सूक्ष्म पच्चीकारी का काम, जो प्रकाश होने पर तारों भरी रात का आभास कराता है, आमेर दुर्ग के किस भाग का मुख्य आकर्षण है?
(1) सुख निवास
(2) दीवान-ए-खास (शीश महल)
(3) जनाना महल
(4) जय मंदिर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. दुर्ग वास्तुकला में 'नौबत खाना' या 'नक्कारखाना' का क्या कार्य था?
(1) यह स्वर्ण और मुद्रा के भंडारण हेतु प्रयुक्त राजकीय टकसाल थी।
(2) वह स्थान जहाँ राजकीय आगमन की घोषणा हेतु औपचारिक वादन किया जाता था।
(3) भारी शस्त्रों और बारूद के भंडारण हेतु प्रयुक्त मुख्य शस्त्रागार।
(4) शाही युद्ध हाथियों के आवास और प्रशिक्षण हेतु भव्य अश्वशाला।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. झुंझुनू के खेतड़ी महल की वास्तुकला से प्रेरित होकर महाराजा सवाई प्रताप सिंह ने किस संरचना का निर्माण करवाया था?
(1) हवा महल
(2) जल महल
(3) चंद्र महल
(4) रामबाग पैलेस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. एकलिंगजी मंदिर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वर्तमान संरचना मुख्य रूप से महाराणा रायमल द्वारा पुनर्निर्मित है।
II. इसमें काले संगमरमर की भगवान शिव की चतुर्मुखी प्रतिमा है।
III. मंदिर की वास्तुकला पूर्णतः द्रविड़ शैली का प्रतिनिधित्व करती है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. 'नवलखा दरवाजा' निम्नलिखित में से किस दुर्ग का मुख्य प्रवेश द्वार है?
(1) जैसलमेर दुर्ग
(2) मेहरानगढ़ दुर्ग
(3) गागरोन दुर्ग
(4) रणथंभौर दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. सूची-I (स्मारक) को सूची-II (निर्माण सामग्री) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (स्मारक)
A. जैसलमेर दुर्ग
B. हवा महल
C. दिलवाड़ा मंदिर
D. विजय स्तंभ
सूची II: (सामग्री)
i. श्वेत संगमरमर
ii. पीला बलुआ पत्थर
iii. लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर
iv. लाल बलुआ पत्थर और श्वेत संगमरमर का समन्वय
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. जयपुर की मान सागर झील के मध्य स्थित 'जल प्रासाद' का नाम क्या है?
(1) जगमंदिर
(2) जल महल
(3) जग निवास
(4) पद्मिनी महल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. उदयपुर की प्रसिद्ध 'सहेलियों की बाड़ी' किस झील के तट पर स्थित है?
(1) पिछोला झील
(2) जयसमंद झील
(3) राजसमंद झील
(4) फतेह सागर झील
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. जोधपुर के उम्मेद भवन पैलेस के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसे तकनीकी रूप से मुख्य आधुनिक सिटी पैलेस माना जाता है।
II. इसका निर्माण अकाल राहत कार्य के अंतर्गत रोजगार प्रदान करने हेतु हुआ था।
III. इसकी वास्तुकला राजपूत और आर्ट डेको (Art Deco) शैलियों का मिश्रण है।
IV. यह पूर्णतः श्वेत मकराना संगमरमर से निर्मित है।

20. (4) कटारगढ़
कुंभलगढ़ दुर्ग का सबसे ऊँचा और आंतरिक भाग ‘कटारगढ़’ के नाम से जाना जाता है। इसे मुख्य दुर्ग के भीतर एक और छोटा दुर्ग भी कहा जाता है। यह महाराणा कुंभा का निजी निवास स्थान था और यहीं से वे पूरे मेवाड़ क्षेत्र पर निगरानी रखते थे। अपनी अत्यधिक ऊँचाई के कारण इसे ‘मेवाड़ की आँख’ भी कहा जाता है। कटारगढ़ के भीतर ही प्रसिद्ध बादल महल स्थित है। यह स्थान सामरिक दृष्टि से अत्यंत सुरक्षित और शत्रु की पहुँच से बाहर माना जाता था।

21. (3) बाड़ी महल
उदयपुर सिटी पैलेस परिसर में स्थित ‘बाड़ी महल’ स्थापत्य कला का एक चमत्कार है। यह महल एक विशाल प्राकृतिक चट्टान के ऊपर निर्मित किया गया है, जिसकी ऊँचाई लगभग 27 मीटर है। इस चट्टान की चोटी पर एक सुंदर उद्यान विकसित किया गया है, जो महल के ऊपरी तल पर होने के बावजूद भू-तल पर स्थित उद्यान जैसा प्रतीत होता है। इसे ‘अमर विलास’ भी कहा जाता है। इसमें फव्वारे, अलंकृत मेहराब और संगमरमर की सुंदर नक्काशीदार बालकनियाँ शामिल हैं।

22. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थान के प्रमुख स्मारकों का निर्माण विभिन्न शासकों द्वारा कराया गया था। हवा महल का निर्माण 1799 में सवाई प्रताप सिंह ने करवाया था। जयपुर के सिटी पैलेस की नींव सवाई जय सिंह द्वितीय ने रखी थी। जोधपुर का भव्य उम्मेद भवन पैलेस महाराजा उम्मेद सिंह द्वारा अकाल राहत कार्य के रूप में बनवाया गया था। उदयपुर की पिछोला झील में स्थित सुंदर लेक पैलेस या जग निवास का निर्माण महाराणा जगत सिंह द्वितीय ने ग्रीष्मकालीन विश्राम स्थल के रूप में करवाया था।

23. (4) भगवान कृष्ण का मुकुट
जयपुर के प्रसिद्ध हवा महल की पाँच मंजिला संरचना को भगवान कृष्ण के मुकुट के आकार में बनाया गया है। सवाई प्रताप सिंह, जिन्होंने इसका निर्माण करवाया था, भगवान कृष्ण के अनन्य भक्त थे। इसीलिए वास्तुकार लाल चंद उस्ता ने इसे मुकुट जैसी पिरामिडाकार आकृति प्रदान की। इसमें 953 सूक्ष्म झरोखे और खिड़कियाँ हैं जो इसे मधुमक्खी के छत्ते जैसा दृश्य प्रदान करती हैं। यह स्मारक राजस्थानी और मुगल वास्तुकला के सुंदर मिश्रण के साथ-साथ धार्मिक श्रद्धा का भी प्रतीक है।

24. (1) इसके शंकु (नोमोन) की छाया का उपयोग करके स्थानीय समय का सटीक मापन करना
जयपुर के जंतर मंतर में स्थित ‘सम्राट यंत्र’ विश्व की सबसे बड़ी सौर घड़ी है। इसका प्राथमिक कार्य इसके 27 मीटर ऊँचे शंकु की छाया का उपयोग करके स्थानीय समय को दो सेकंड की सटीकता के साथ मापना है। इसके विशाल अर्द्धवृत्ताकार पैमानों पर छाया की गति को देखकर दिन के समय का सटीक अनुमान लगाया जाता है। यह यंत्र खगोल विज्ञान के प्रति सवाई जय सिंह द्वितीय के गहरे ज्ञान और उनकी वैज्ञानिक दृष्टि का एक अद्भुत प्रमाण प्रस्तुत करता है।

25. (2) चित्तौड़गढ़, जोधपुर, उदयपुर, जयपुर
राजस्थान के इन शहरों की स्थापना का कालानुक्रमिक क्रम ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। चित्तौड़गढ़ सबसे प्राचीन है, जिसकी स्थापना 7वीं शताब्दी के आसपास हुई थी। जोधपुर की स्थापना 1459 ईस्वी में राव जोधा द्वारा की गई थी। इसके उपरांत, महाराणा उदय सिंह ने 1559 ईस्वी में उदयपुर शहर बसाया था। अंत में, 1727 ईस्वी में सवाई जय सिंह द्वितीय ने आधुनिक नियोजित शहर जयपुर की नींव रखी थी। यह क्रम राजस्थान के राजनीतिक और स्थापत्य विकास को स्पष्ट करता है।

26. (1) फतेह सागर झील
उदयपुर की फतेह सागर झील एक कृत्रिम झील है जिसका निर्माण मूल रूप से महाराणा जय सिंह ने करवाया था, लेकिन बाद में महाराणा फतेह सिंह ने इसका पुनर्निर्माण किया। इसके पुनर्निर्माण के समय इसका नाम ड्यूक ऑफ कनॉट के नाम पर रखा गया था। इस झील के मध्य में एक छोटा द्वीप है जहाँ उदयपुर सौर वेधशाला स्थित है, जो एशिया की सबसे महत्वपूर्ण सौर वेधशालाओं में से एक मानी जाती है। इसके अतिरिक्त यहाँ नेहरू गार्डन नामक एक अन्य सुंदर उद्यान स्थित है।

27. (4) राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग - प्राकृतिक स्थल
यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में स्थलों को सांस्कृतिक या प्राकृतिक श्रेणियों में विभाजित किया जाता है। केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान एक प्राकृतिक स्थल है, जबकि जंतर मंतर और जयपुर का परकोटा शहर सांस्कृतिक स्थल हैं। राजस्थान के छह पहाड़ी दुर्गों को वर्ष 2013 में सांस्कृतिक स्थलों की श्रेणी में सम्मिलित किया गया था, न कि प्राकृतिक स्थल के रूप में। ये दुर्ग राजपूत सैन्य वास्तुकला और ऐतिहासिक विरासत के उत्कृष्ट प्रतीक हैं। इनमें चित्तौड़गढ़ और कुंभलगढ़ जैसे महत्वपूर्ण दुर्ग शामिल हैं।

28. (2) तारागढ़ दुर्ग
वर्ष 2013 में यूनेस्को ने राजस्थान के छह विशिष्ट पहाड़ी दुर्गों को विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्रदान की थी। इन दुर्गों में चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, आमेर, जैसलमेर और गागरोन शामिल थे। अजमेर का तारागढ़ दुर्ग इस विशेष सूची में सम्मिलित नहीं किया गया था। यद्यपि तारागढ़ दुर्ग का अपना ऐतिहासिक और सामरिक महत्व है, लेकिन यूनेस्को द्वारा चयनित छह दुर्ग राजपूत सैन्य स्थापत्य कला के विभिन्न स्वरूपों और विविध भौगोलिक स्थितियों का सर्वोत्तम प्रतिनिधित्व करते हैं।

29. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
दिलवाड़ा जैन मंदिरों की स्थापत्य शैली बहुत ही रणनीतिक मानी जाती है। इन मंदिरों का बाहरी हिस्सा जानबूझकर बहुत साधारण और बिना अलंकरण के बनाया गया था ताकि मध्यकाल के दौरान बाहरी आक्रमणकारियों की दृष्टि से इन्हें सुरक्षित रखा जा सके। इसके विपरीत, मंदिरों के भीतर संगमरमर की इतनी सूक्ष्म और जटिल नक्काशी की गई है जो विश्व में कहीं और मिलना दुर्लभ है। यह विरोधाभास मंदिर

(2) जीजा भार्गव
(3) धरण शाह
(4) विमल शाह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. जैसलमेर दुर्ग की कौन सी विशिष्ट विशेषता संरचनात्मक दृढ़ता हेतु निर्मित 99 बुर्ज हैं?
(1) बुर्ज (Bastions)
(2) कमर कोट (प्राचीर)
(3) पोल (द्वार)
(4) जनाना महल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. उदयपुर के सिटी पैलेस के संबंध में कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: उदयपुर के सिटी पैलेस का निर्माण लगभग 400 वर्षों की अवधि में विभिन्न महाराणाओं के योगदान से हुआ।
कथन II: निर्माण की लंबी अवधि के उपरांत भी महल में पूर्णतः सममित अग्रभाग विद्यमान है।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. कौन सा दुर्ग मेवाड़ के राजवंश के लिए संकटकालीन शरणस्थली रहा, जहाँ उदय सिंह II और महाराणा प्रताप ने आश्रय लिया था?
(1) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
(2) रणथंभौर दुर्ग
(3) तारागढ़ दुर्ग
(4) कुंभलगढ़ दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

101. राजस्थान के दुर्गों में 'बावड़ी' और साधारण कुएं के बीच मूलभूत अंतर क्या है?
(1) बावड़ी केवल वर्षा जल संचयन हेतु है, जबकि कुआँ भूजल हेतु।
(2) बावड़ी का निर्माण केवल धार्मिक समारोहों के लिए किया जाता है।
(3) बावड़ी में जल स्तर तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ होती हैं।
(4) बावड़ी एक अस्थायी भंडारण संरचना है जो जल संचय नहीं कर सकती।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

102. आमेर दुर्ग में प्रचलित फ्रेस्को पेंटिंग शैली 'आरायश' का सबसे उपयुक्त वर्णन है:
(1) सूखे प्लास्टर पर जैविक रंगों का उपयोग।
(2) प्लास्टर की वह तकनीक जिससे संगमरमर जैसी चमकदार सतह प्राप्त होती है।
(3) बलुआ पत्थर पर सीधे गाढ़े तेल रंगों का प्रयोग।
(4) काष्ठ के पैनलों पर सोने की परत युक्त लघु चित्र।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

103. जयपुर सिटी पैलेस परिसर के भीतर उनकी स्थिति के आधार पर विषम को पहचानें।
(1) मुबारक महल
(2) चंद्र महल
(3) दीवान-ए-खास
(4) बादल महल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

104. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन — अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): जयगढ़ दुर्ग को ऐतिहासिक रूप से कभी भी युद्ध में विजित नहीं किया जा सका।
कारण (R): इसने राजपूतों और मुगलों के लिए प्रमुख तोपखाना केंद्र के रूप में कार्य किया, जहाँ श्रेष्ठ मारक क्षमता उपलब्ध थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

105. 'गज मंदिर' और 'शीश महल' राजस्थान के किस दुर्ग परिसर के भीतर स्थित अलंकृत महल हैं?
(1) जैसलमेर दुर्ग
(2) मेहरानगढ़ दुर्ग
(3) जूनागढ़ दुर्ग, बीकानेर
(4) भटनेर दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

106. सूची-I (वास्तुकार/निर्माता) को सूची-II (स्मारक) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (वास्तुकार)
A. लाल चंद उस्ता
B. मंडन
C. राव जोधा
D. देपा
सूची II: (स्मारक)
i. कुंभलगढ़ दुर्ग
ii. मेहरानगढ़ दुर्ग
iii. हवा महल
iv. रणकपुर जैन मंदिर
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

107. चित्तौड़गढ़ दुर्ग की कौन सी संरचना राजपूत और पूर्व-मुगल इस्लामी स्थापत्य के समन्वय के लिए जानी जाती है?
(1) कुंभ श्याम मंदिर
(2) राणा कुंभा महल
(3) मीराबाई मंदिर
(4) फतेह प्रकाश महल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

108. दिलवाड़ा मंदिरों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इनकी छतों पर बहु-स्तरीय लटकते हुए पेंडेंट (pendants) हैं।
II. अलाउद्दीन खिलजी द्वारा इन मंदिरों को क्षति पहुँचाई गई थी और बाद में जीर्णोद्धार हुआ।
III. वे चंदेल शासकों के संरक्षण को दर्शाते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

109. 'जोगी महल' किस प्रसिद्ध दुर्ग के सानिध्य में स्थित एक उल्लेखनीय संरचना है?
(1) सरिस्का पैलेस
(2) कुंभलगढ़ दुर्ग
(3) रणथंभौर दुर्ग
(4) आमेर दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

110. आमेर दुर्ग से जयपुर के सिटी पैलेस तक का विकास किस परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) हिंदू मंदिर वास्तुकला का परित्याग।
(2) पाषाण निर्माण से ईंटों के उपयोग में पूर्ण बदलाव।
(3) मुगल शैलियों का पूर्ण तिरस्कार।
(4) सुरक्षित पहाड़ी दुर्गों से नियोजित, खुले मैदानी प्रासादों की ओर संक्रमण।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

111. राजस्थान का कौन सा दुर्ग मीरान साहब की दरगाह के लिए प्रसिद्ध है?
(1) तारागढ़ दुर्ग, अजमेर
(2) मेहरानगढ़ दुर्ग, जोधपुर
(3) जैसलमेर दुर्ग
(4) गागरोन दुर्ग, झालावाड़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

112. आमेर दुर्ग में गणेश पोल के ऊपर स्थित 'सुहाग मंदिर' का उपयोग किस उद्देश्य के लिए किया जाता था?
(1) शाही शस्त्रागार के रूप में।
(2) शाही महिलाओं के लिए जालीदार खिड़कियों से राजकीय उत्सवों को देखने हेतु।
(3) शाही परिवार के भोजन कक्ष के रूप में।
(4) एक गुप्त कोषागार के रूप में।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

113. नागर मंदिर के घटकों को आधार से शीर्ष की ओर सही क्रम में व्यवस्थित करें:
I. कलश
II. शिखर
III. जगती
IV. आमलक
(1) III, II, IV, I
(2) III, IV, II, I
(3) I, II, IV, III
(4) III, II, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

114. 'पटवों की हवेली' किस शहर में घरेलू वास्तुकला के उच्चतम मानक का प्रतिनिधित्व करती है?
(1) जैसलमेर
(2) उदयपुर
(3) जयपुर
(4) जोधपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

115. स्मारकों को उनकी निर्माण सामग्री (पीला बलुआ पत्थर, श्वेत संगमरमर, लाल बलुआ पत्थर) के क्रम में व्यवस्थित करें:
I. दिलवाड़ा मंदिर
II. जैसलमेर दुर्ग
III. हवा महल
(1) II, I, III
(2) I, II, III
(3) II, III, I
(4) III, I, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

116. राजस्थान के प्रासादों में 'आरायश' तकनीक को सबसे अच्छी तरह परिभाषित किया जा सकता है:
(1) ग्रेनाइट ब्लॉकों में पुष्प आकृतियों को तराशने की विधि।
(2) बिना कीस्टोन के भारी भार सहने वाला मेहराब निर्माण।
(3) संगमरमर में अर्द्ध-बहुमूल्य पत्थरों को जड़ने की तकनीक।
(4) प्लास्टर तकनीक जिससे संगमरमर जैसी अत्यधिक चमकदार सतह प्राप्त होती है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

117. चोखेलाव महल, जो अपने शानदार राजपूत लघु चित्रों के लिए प्रसिद्ध है, किस दुर्ग के भीतर स्थित है?
(1) आमेर दुर्ग
(2) जूनागढ़ दुर्ग
(3) मेहरानगढ़ दुर्ग

(4) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

118. यूनेस्को (UNESCO) विश्व धरोहर "राजस्थान के पहाड़ी दुर्गों" के संबंध में सही संयोजन चुनें:
I. इसमें 11 शताब्दियों की राजपूत सैन्य वास्तुकला का प्रतिबिंब है।
II. सभी छह दुर्ग प्राकृतिक सुरक्षा का उपयोग करते हैं।
III. ये दुर्ग राजपूत संस्कृति के प्रमुख केंद्र प्रदर्शित करते हैं।
IV. केवल 15वीं शताब्दी के दुर्गों को चुना गया था।
V. इनके भीतर जल संचयन संरचनाएँ आज भी कार्यात्मक हैं।
(1) I, II, III और V
(2) I, II, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

119. विशिष्ट 'बंगालदार' छत आमेर दुर्ग के किस मंडप का आदर्श उदाहरण है?
(1) दीवान-ए-आम
(2) सिलह खाना
(3) केसर क्यारी
(4) जस मंदिर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

120. सूची-I (क्षेत्रीय नाम) को सूची-II (संबंधित स्मारक) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (नाम)
A. चौमुखा प्रासाद
B. स्वर्ण गिरी
C. चील का टीला
D. गढ़ चिंतामणि
सूची II: (स्मारक)
i. जैसलमेर दुर्ग
ii. जयगढ़ दुर्ग
iii. रणकपुर जैन मंदिर
iv. मेहरानगढ़ दुर्ग
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

के लिए पूरी सीमा की रक्षा करना कठिन था।
(4) यह एक गहरी घाटी में स्थित था, जिससे पहाड़ियों से गोलाबारी सुगम हो जाती थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. सूची-I (छतरियाँ) को सूची-II (स्थान/संबद्ध शासक) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (छतरियाँ)
A. मूसी महारानी की छतरी
B. 84 खंभों की छतरी
C. जसवंत थड़ा
D. आहड़ की छतरियाँ
सूची II: (स्थान)
i. जोधपुर
ii. उदयपुर
iii. अलवर
iv. बूंदी
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. सवाई जय सिंह II द्वारा निर्मित खगोलीय वेधशालाओं के आधार पर निम्नलिखित में से विषम को पहचानें।
(1) जंतर मंतर, जयपुर
(2) जंतर मंतर, दिल्ली
(3) जंतर मंतर, उज्जैन
(4) जंतर मंतर, उदयपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. अपनी जल प्रबंधन प्रणाली के लिए प्रसिद्ध कौन सा दुर्ग 'लोहा पोल' नामक भारी लोहे के द्वार के रक्षात्मक उपयोग के लिए विशिष्ट रूप से जाना जाता है?
(1) मेहरानगढ़ दुर्ग
(2) रणथंभौर दुर्ग
(3) आमेर दुर्ग
(4) गागरोन दुर्ग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. प्राचीन स्थापत्य ग्रंथों में वर्णित 'ओदक दुर्ग' का क्या अर्थ है?
(1) पूर्णतः काष्ठ से निर्मित दुर्ग।
(2) पर्वत चोटी पर स्थित दुर्ग।
(3) जल से घिरा हुआ दुर्ग (जल दुर्ग)।
(4) भूमिगत सुरंगों पर आधारित दुर्ग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. उदयपुर के सिटी पैलेस के संबंध में कथन I और कथन II को ध्यानपूर्वक पढ़ें और सही विकल्प चुनें।
कथन I: उदयपुर का सिटी पैलेस राजस्थानी, मुगल, मध्यकालीन और यूरोपीय शैलियों का मिश्रण प्रस्तुत करता है।
कथन II: इस परिसर का निर्माण महाराणा उदय सिंह II द्वारा एक ही दशक के भीतर पूर्ण किया गया था।
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. निम्नलिखित राजपूत दुर्गों के निर्माण के सही कालानुक्रमिक क्रम के अनुसार उन्हें प्राचीन से आधुनिक के रूप में व्यवस्थित करें:
(1) चित्तौड़गढ़, जैसलमेर, कुंभलगढ़, मेहरानगढ़
(2) जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, मेहरानगढ़
(3) चित्तौड़गढ़, मेहरानगढ़, जैसलमेर, कुंभलगढ़
(4) मेहरानगढ़, चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, जैसलमेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. मेहरानगढ़ दुर्ग का 'फूल महल' अपनी किस विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है?
(1) यूरोपीय पुष्प चित्रों का संग्रह।
(2) छत पर स्वर्ण की बारीक नक्काशी का काम।
(3) हज़ारों रंगीन काँच की खिड़कियाँ।
(4) सुगंधित जल छोड़ने वाला केंद्रीय फव्वारा।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. रणकपुर जैन मंदिर परिसर मुख्य रूप से जैन धर्म के किस संप्रदाय से संबंधित है?
(1) दिगंबर
(2) स्थानकवासी
(3) श्वेतांबर
(4) तेरापंथी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित में से कौन विद्याधर भट्टाचार्य के स्थापत्य योगदान का सटीक वर्णन करता है?
(1) वे चित्तौड़गढ़ के विजय स्तंभ के निर्माता थे।
(2) उन्होंने हवा महल की मधुमक्खी के छत्ते जैसी संरचना अभिकल्पित की थी।
(3) उन्होंने कुंभलगढ़ की किलेबंदी का पर्यवेक्षण किया था।
(4) वे जयपुर शहर के ग्रिड-प्लान (नियोजित विन्यास) के मुख्य वास्तुकार थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन — अभिकथन (A) और कारण (R) शामिल हैं। उपयुक्त विकल्प चुनकर प्रश्न का उत्तर दें।
अभिकथन (A): जैसलमेर का दुर्ग आधुनिक समय में गंभीर संरचनात्मक संकट का सामना कर रहा है।
कारण (R): आधुनिक जल निकासी व्यवस्था के अभाव और जनसंख्या के दबाव के कारण होने वाले जल रिसाव से इसकी नींव अस्थिर हो गई है।

यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में सम्मिलित है और सामरिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है।

10. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
राजस्थान के दुर्ग अपनी विशिष्टताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में प्रसिद्ध विजय स्तंभ और कीर्ति स्तंभ स्थित हैं। मेहरानगढ़ दुर्ग जोधपुर में चोखेलाव महल और फूल महल जैसे अलंकृत प्रासादों के लिए जाना जाता है। जैसलमेर दुर्ग अपने पीले बलुआ पत्थर की चमक के कारण 'स्वर्ण दुर्ग' कहलाता है। कुंभलगढ़ दुर्ग की सबसे बड़ी पहचान उसकी 36 किलोमीटर लंबी प्राचीर है, जिसे चीन की महान दीवार के बाद विश्व की दूसरी सबसे लंबी दीवार माना जाता है।

11. (4) यह चारों ओर से एक गहरी और चौड़ी खाई द्वारा सुरक्षित होता है।
राजपूत सैन्य वास्तुकला में 'पारिख दुर्ग' उस दुर्ग को कहा जाता है जिसके चारों ओर रक्षा के उद्देश्य से एक अत्यंत गहरी और चौड़ी खाई खोदी गई हो। इस खाई में प्रायः जल भरकर जहरीले जीव छोड़े जाते थे ताकि शत्रु सेना आसानी से प्रवेश न कर सके। भरतपुर का लोहागढ़ दुर्ग पारिख दुर्ग शैली का सबसे प्रमुख उदाहरण माना जाता है। यह सैन्य रणनीति सुरक्षा की दृष्टि से प्राचीन और मध्यकालीन काल में बहुत प्रभावी मानी जाती थी।

12. (2) मालवा और गुजरात
चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित विजय स्तंभ का निर्माण महाराणा कुंभा ने 1448 ईस्वी में करवाया था। यह स्तंभ 1437 ईस्वी के सारंगपुर युद्ध में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी और गुजरात की संयुक्त सेनाओं पर मिली महान विजय की स्मृति में बनवाया गया था। नौ मंजिला यह संरचना भगवान विष्णु को समर्पित है और इसे 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश' भी कहा जाता है। यह राजस्थान पुलिस और माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का आधिकारिक प्रतीक चिन्ह भी माना जाता है।

13. (2) केवल II और III
मेहरानगढ़ दुर्ग की स्थापना 1459 ईस्वी में राव जोधा द्वारा जोधपुर में की गई थी। यह दुर्ग 'चिड़ियाटूँक' नामक पहाड़ी पर स्थित है, न कि भौमगढ़ पर। दुर्ग परिसर के भीतर प्रसिद्ध चामुंडा माता मंदिर और कई भव्य महल जैसे मोती महल और फूल महल स्थित हैं। हालांकि, यह कहना पूर्णतः अनुचित है कि इसे कभी विजित नहीं किया जा सका, क्योंकि इतिहास में शेरशाह सूरी जैसे शासकों का इस पर कुछ समय के लिए अधिकार रहा था। यह सामरिक दुर्ग है।

14. (4) सूरज पोल
आमेर दुर्ग का मुख्य प्रवेश द्वार 'सूरज पोल' है, जो पूर्व दिशा की ओर उन्मुख है। सूर्योदय के समय सूर्य की पहली किरणें इसी द्वार पर पड़ती हैं, इसलिए इसका नाम सूरज पोल रखा गया है। यह द्वार सीधे मुख्य जलेब चौक की ओर ले जाता है, जहाँ सेना की परेड और महत्वपूर्ण राजकीय सभाएँ आयोजित की जाती थीं। गणेश पोल एक अन्य महत्वपूर्ण आंतरिक द्वार है जो दीवान-ए-खास की ओर जाता है, लेकिन बाहरी मुख्य प्रवेश हेतु सूरज पोल ही प्राथमिक है।

15. (1) II, IV, III, I
जयपुर की खगोलीय वेधशाला जंतर मंतर का इतिहास एक व्यवस्थित क्रम में रहा है। सबसे पहले सवाई जय सिंह द्वितीय ने इसके निर्माण का आदेश दिया था। इसके उपरांत खगोलीय यंत्रों का निर्माण पूर्ण हुआ। 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में आर्थर गैरेट के निर्देशन में इसका व्यापक जीर्णोद्धार किया गया ताकि यंत्रों की वैज्ञानिक सटीकता बनी रहे। अंततः, वर्ष 2010 में यूनेस्को द्वारा इसे विश्व धरोहर स्थल के रूप में मान्यता प्रदान की गई, जो इसकी वैज्ञानिक महत्ता सिद्ध करती है।

16. (2) यह प्रारंभिक आधुनिक युग में निर्मित पहियों पर चलने वाली विश्व की सबसे बड़ी तोप है।
जयपुर के जयगढ़ दुर्ग में स्थित 'जयबाण' तोप अपनी विशालता के कारण ऐतिहासिक महत्व रखती है। इसका निर्माण 1720 ईस्वी में महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय के शासनकाल में दुर्ग के भीतर स्थित तोपखाने में किया गया था। यह पहियों पर चलने वाली उस समय की विश्व की सबसे बड़ी तोप मानी जाती है। इसकी मारक क्षमता बहुत अधिक थी, हालांकि इसे केवल एक बार परीक्षण हेतु चलाया गया था। यह राजपूतों की उन्नत सैन्य अभियांत्रिकी का बेजोड़ उदाहरण है।

17. (2) पीले बलुआ पत्थर का उपयोग जो सूर्य की किरणों में सुनहरी आभा बिखेरता है।
जैसलमेर दुर्ग को 'स्वर्ण दुर्ग' या 'सोनार किला' कहने का मुख्य कारण इसके निर्माण में प्रयुक्त पीला बलुआ पत्थर है। जब सूर्य की किरणें इन विशिष्ट पत्थरों पर पड़ती हैं, विशेष रूप से सूर्योदय और सूर्यास्त के समय, तो पूरा किला सोने की तरह चमकने लगता है। थार मरुस्थल की सुनहरी रेत के बीच यह दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। इस दुर्ग की स्थापत्य शैली में पत्थरों को जोड़ने के लिए केवल इंटरलॉकिंग तकनीक का उपयोग किया गया है। यह गौरवशाली दुर्ग है।

18. (2) केवल V
रणथंभौर दुर्ग सवाई माधोपुर के राष्ट्रीय उद्यान के भीतर स्थित है और हम्मीर देव चौहान की वीरता से जुड़ा है। यहाँ प्रसिद्ध त्रिनेत्र गणेश मंदिर स्थित है और 1301 में अलाउद्दीन खिलजी ने इस पर विजय प्राप्त की थी। यह कथन गलत है कि यह उदयपुर की स्थापना से पहले मेवाड़ की प्राथमिक राजधानी थी। वास्तव में, मेवाड़ की मुख्य राजधानियाँ चित्तौड़गढ़, चावंड और कुंभलगढ़ रही थीं। रणथंभौर मुख्य रूप से चौहानों के गौरवशाली इतिहास और संघर्ष का प्रमुख केंद्र रहा है।

19. (3) मंडन
कुंभलगढ़ दुर्ग के मुख्य वास्तुकार मंडन थे, जिन्होंने महाराणा कुंभा के संरक्षण में इस विशाल दुर्ग की संपूर्ण रूपरेखा तैयार की थी। मंडन एक महान विद्वान और शिल्पी थे, जिन्होंने 'राजवल्लभ' और 'प्रसाद मंडन' जैसे कई महत्वपूर्ण स्थापत्य ग्रंथों की रचना की थी। उनके कुशल निर्देशन में ही कुंभलगढ़ की अजेय प्राचीर और इसके भीतर के विभिन्न मंदिरों और भव्य महलों का निर्माण हुआ था। उनकी स्थापत्य कला में सुरक्षा के साथ-साथ सौंदर्यशास्त्र का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. जंतर मंतर में कौन सा खगोलीय यंत्र 'बाउल इंस्ट्रूमेंट' के नाम से जाना जाता है, जिसका उपयोग देशांतर और अक्षांश निर्धारण हेतु होता है?
(1) राम यंत्र
(2) सम्राट यंत्र
(3) जय प्रकाश यंत्र
(4) राशि वलय यंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. विशाल कृत्रिम झील 'जयसमंद झील' का निर्माण किस शासक द्वारा करवाया गया था?
(1) महाराणा जय सिंह
(2) महाराणा प्रताप
(3) महाराणा राज सिंह
(4) महाराणा फतेह सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. राजस्थान के यूनेस्को (UNESCO) विश्व धरोहर दुर्गों की स्थापत्य शैली के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) आमेर दुर्ग अपने कक्षों में गहरा मुगल प्रभाव प्रदर्शित करता है।
(2) कुंभलगढ़ दुर्ग प्राचीर के विन्यास हेतु अरावली की स्थलाकृति का उपयोग करता है।
(3) रणथंभौर दुर्ग की रक्षा प्रणाली सघन वन और दुर्गम भू-भाग पर आधारित है।
(4) गागरोन का दुर्ग किसी भी प्राचीर से रहित है और केवल जल पर निर्भर है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. पूर्व मध्यकालीन राजस्थान की 'महामारु' स्थापत्य शैली का श्रेय किस राजवंश को दिया जाता है?
(1) मेवाड़ के गुहिल
(2) गुर्जर-प्रतिहार
(3) मारवाड़ के राठौर
(4) आमेर के कछवाहा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. पुष्कर स्थित ब्रह्मा मंदिर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह अजमेर जिले में स्थित है।
II. मंदिर एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है जहाँ संगमरमर की सीढ़ियाँ बनी हैं।
III. प्रवेश द्वार पर ब्रह्मा के वाहन हंस की नक्काशी प्रमुखता से अंकित है।
IV. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI) द्वारा इसे एक मृत स्मारक के रुप में प्रशासित किया जाता है।
V. मुख्य गर्भगृह में ब्रह्मा के साथ गायत्री की प्रतिमा स्थापित है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और V
(4) केवल IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. सूची-I (जलाशय) को सूची-II (संबद्ध दुर्ग) के साथ सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची I: (जलाशय)
A. मावठा झील
B. गौमुख कुंड
C. रानीसर और पदमसर
D. गडीसर झील

सूची II: (संबद्ध दुर्ग)
i. मेहरानगढ़ दुर्ग
ii. आमेर दुर्ग
iii. जैसलमेर दुर्ग
iv. चित्तौड़गढ़ दुर्ग

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. नाथद्वारा मंदिर की 'दर्शन' प्रणाली के अंतर्गत, श्रीनाथजी के दर्शन हेतु एक दिन में कितनी बार पट खोले जाते हैं?
(1) आठ बार
(2) तीन बार
(3) पाँच बार
(4) बारह बार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. राजपूत संरचनाओं में 'गुंबद' अपनाते समय मुख्य स्थापत्य नवाचार क्या था?
(1) पाषाण के स्थान पर केवल काष्ठ का उपयोग करके गुंबद निर्माण।
(2) मेहराबदार निर्माण के स्थान पर कोर्बेल्ड (कदलिकाभरण) संरचना का उपयोग।
(3) गुंबद के शीर्ष से कमल के स्वरुप का त्याग करना।
(4) चूने के गारे का त्याग कर केवल इंटरलॉकिंग पर निर्भर रहना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. चित्तौड़गढ़ स्थित कीर्ति स्तंभ सात मंजिला संरचना है, जिसका निर्माण किस जैन श्रेष्ठी द्वारा करवाया गया था?
(1) बप्पा रावल

की सुरक्षा और कलात्मक वैभव के बीच एक सुंदर संतुलन स्थापित करता है।

30. (4) संरचना को आधार प्रदान करने वाले 1,444 विशिष्ट नक्काशीदार संगमरमर के स्तंभ
रणकपुर जैन मंदिर की सबसे विशिष्ट स्थापत्य विशेषता इसके 1,444 नक्काशीदार संगमरमर के स्तंभ हैं। इन स्तंभों की अद्वितीयता यह है कि प्रत्येक स्तंभ पर की गई नक्काशी दूसरे से पूर्णतः भिन्न है। साथ ही, इन्हें इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि मंदिर के किसी भी कोने से मुख्य देवता की मूर्ति को देखने पर ये स्तंभ दृष्टि में बाधा नहीं बनते हैं। यह जटिल संरचना मंदिर को एक विशाल स्तंभित वन का आभास कराती है और जैन स्थापत्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

31. (1) एक जटिल रूप से तराशा गया औपचारिक मेहराबदार प्रवेश द्वार।
पारंपरिक राजस्थानी मंदिर स्थापत्य में 'तोरण' एक औपचारिक और अलंकृत प्रवेश द्वार को संदर्भित करता है। यह प्रायः पत्थर या लकड़ी से निर्मित एक मुक्त खड़ी संरचना होती है जिसमें जटिल नक्काशीदार मेहराब होते हैं। तोरण का उपयोग मंदिर परिसर के मुख्य मार्ग पर या पवित्र स्थान के प्रवेश द्वार पर किया जाता है। यह न केवल सौंदर्य को बढ़ाता है, बल्कि धार्मिक अनुष्ठानों में भी इसका विशेष महत्व होता है। नाडोल और ओसियां के मंदिरों में सुंदर तोरण द्वार विद्यमान हैं।

32. (2) यह आदिनाथ को समर्पित 12वीं शताब्दी का एक जैन स्मारक है, जिसमें दिगंबर संप्रदाय की विभिन्न नक्काशी है।
चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित 'कीर्ति स्तंभ' मूल रूप से 12वीं शताब्दी का एक जैन स्मारक है, जिसका निर्माण जैन श्रेष्ठी जीजा भार्गव द्वारा करवाया गया था। यह सात मंजिला स्तंभ जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ को समर्पित है। इसकी दीवारों पर दिगंबर संप्रदाय से संबंधित तीर्थंकरों की विभिन्न मूर्तियाँ और नक्काशी उकेरी गई हैं। इसे महाराणा कुंभा द्वारा निर्मित 'विजय स्तंभ' से अलग पहचानना आवश्यक है, जो कि 15वीं शताब्दी की संरचना है और विजय के उपलक्ष्य में बनी थी।

33. (2) केवल I और III
आमेर दुर्ग का इतिहास अत्यंत प्राचीन है और कछवाहा राजपूतों द्वारा अधिकार किए जाने से पूर्व यह मूलतः मीणा शासकों के अधीन था। दुर्ग के भीतर स्थित 'दीवान-ए-आम' हिंदू और मुगल स्थापत्य शैलियों के उत्कृष्ट समन्वय का उदाहरण है, जिसमें दोहरे स्तंभों की कतारें और मेहराब बने हैं। हालांकि, शीश महल के बारे में यह कहना गलत है कि वह प्राकृतिक प्रकाश से रहित है। वास्तव में, शीश महल प्रकाश के परावर्तन के सिद्धांत पर कार्य करता है और प्रकाश होने पर जगमगा उठता है।

34. (1) वह स्थान जहाँ राजपूत महिलाओं ने सम्मान की रक्षा हेतु सामूहिक आत्मदाह किया था।
राजस्थान के इतिहास में 'जौहर कुंड' एक अत्यंत महत्वपूर्ण और भावुक स्थल माना जाता है। यह वह पवित्र स्थान है जहाँ युद्ध में पराजय की स्थिति और दुर्ग के पतन को निश्चित जानकर राजपूत महिलाओं ने अपने सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से अग्नि में आत्मदाह किया था। चित्तौड़गढ़, रणथंभौर और जैसलमेर जैसे दुर्गों में जौहर की ऐतिहासिक घटनाएँ प्रसिद्ध हैं। यह कुंड उस काल के महान बलिदान, त्याग और वीरता की परंपराओं का एक मूक साक्षी है।

35. (3) जयबाण
इन स्मारकों में 'जयबाण' का ऐतिहासिक कार्य अन्य तीनों से पूर्णतः भिन्न है। विजय स्तंभ एक स्मारक संरचना है, हवा महल एक राजसी प्रासाद है, और जंतर मंतर एक खगोलीय वेधशाला है। इसके विपरीत, जयबाण एक विशाल तोप है जो सैन्य शस्त्रागार का हिस्सा थी और इसका उद्देश्य रक्षात्मक और युद्ध संबंधी था। जहाँ अन्य संरचनाएँ कला, खगोल विज्ञान और स्मृति से जुड़ी हैं, वहीं जयबाण राजपूतों की अग्नि-शक्ति और सैन्य अभियांत्रिकी के प्रभुत्व का अद्वितीय प्रतिनिधित्व करती है।

36. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
जयपुर के हवा महल की पाँच मंजिलों के विशिष्ट नाम हैं जो इसके धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व को दर्शाते हैं। पहली मंजिल को शरद मंदिर या प्रताप मंदिर कहा जाता है। दूसरी मंजिल रतन मंदिर के नाम से जानी जाती है, जहाँ काँच का सुंदर काम है। तीसरी मंजिल विचित्र मंदिर है। चौथी मंजिल को प्रकाश मंदिर कहा जाता है क्योंकि यह खुली और हवादार है। सबसे ऊपरी यानी पाँचवीं मंजिल को 'हवा मंदिर' कहा जाता है, जिसके नाम पर पूरे महल का नाम पड़ा है।

37. (3) दीर्घकालिक घेराबंदी के दौरान शुष्क जलवायु में जल भंडारण की रणनीतिक आवश्यकता।
राजस्थान की शुष्क जलवायु और मरुस्थलीय भू-भाग में जल की उपलब्धता हमेशा से एक बड़ी चुनौती रही है। दुर्गों के भीतर 'बावड़ी' (सीढ़ीदार कुओं) के निर्माण का मुख्य रणनीतिक उद्देश्य लंबे समय तक चलने वाली घेराबंदी के दौरान सैनिकों और निवासियों के लिए पर्याप्त जल सुरक्षित रखना था। ये बावड़ियाँ न केवल वर्षा जल का संचयन करती थीं, बल्कि भूजल तक सुगम पहुँच भी प्रदान करती थीं। चित्तौड़गढ़ और मेहरानगढ़ जैसे दुर्गों में जल प्रबंधन की ये प्रणालियाँ अत्यंत विकसित थीं।

38. (2) I, II और III
जयपुर का सिटी पैलेस पुराने नियोजित शहर के सातवें भाग पर फैला एक विशाल परिसर है। मुबारक महल का निर्माण विदेशी अतिथियों के स्वागत और स्वागत कक्ष के रूप में किया गया था। चंद्र महल सात मंजिला भव्य भवन है जो आज भी शाही परिवार के निवास के रूप में प्रयुक्त होता है। हालांकि, यह कहना गलत है कि यह पूर्णतः श्वेत संगमरमर से निर्मित था। इसमें बलुआ पत्थर, प्लास्टर और संगमरमर का समन्वित उपयोग किया गया है, जो राजपूत और मुगल शैलियों को दर्शाता है।

39. (4) त्रिकुटा पहाड़ी
ऐतिहासिक जैसलमेर दुर्ग, जिसे 'सोनारगढ़' के नाम से भी जाना जाता है, भौगोलिक रूप से 'त्रिकुटा पहाड़ी' पर स्थित है। यह पहाड़ी थार मरुस्थल के बीच स्थित है और दुर्ग को एक विशेष ऊँचाई प्रदान करती है, जिससे इसकी रक्षात्मक स्थिति बहुत मजबूत हो जाती है। यह दुर्ग पीले बलुआ पत्थर से निर्मित है और अपनी विशिष्ट त्रिकोणीय आकृति के कारण दूर से ही दिखाई देता है। इसकी स्थापना 1156 ईस्वी में भाटी राजपूत शासक राव जैसल द्वारा की गई थी। यह मरुस्थलीय स्थापत्य है।

40. (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
यह एक सामान्य धारणा है कि पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर विश्व का एकमात्र ब्रह्मा मंदिर है, लेकिन यह ऐतिहासिक रूप से सही नहीं है। भारत में कई अन्य महत्वपूर्ण ब्रह्मा मंदिर मौजूद हैं, जैसे राजस्थान के बाड़मेर जिले में आसोतरा का ब्रह्मा मंदिर और तमिलनाडु के कुंभकोणम में स्थित मंदिर। हालांकि, पुष्कर का मंदिर अपनी प्राचीनता, धार्मिक पवित्रता और पुष्कर झील के साथ जुड़ाव के कारण विश्व भर में सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण माना जाता है, जहाँ नियमित पूजा और अनुष्ठान संपन्न होते हैं।

41. (3) पारंपरिक नागर मंदिर के स्थान पर एक आवासीय हवेली के समान विन्यास।
नाथद्वारा स्थित श्रीनाथजी मंदिर की वास्तुकला पारंपरिक नागर शैली के ऊँचे शिखरों वाले मंदिरों से सर्वथा भिन्न है। इसे 'नंदालय' या 'हवेली' के रूप में अभिकल्पित किया गया है। मुगल शासक औरंगजेब के समय मूर्ति को सुरक्षा प्रदान करने हेतु इसे एक आवासीय प्रासाद जैसी संरचना में स्थापित किया गया था ताकि यह बाहर से मंदिर जैसा न दिखे। इसमें एक बड़ा आँगन, भंडार गृह और विभिन्न कक्ष हैं, जो इसे एक जीवंत राजसी निवास का स्वरूप प्रदान करते हैं।

42. (1) पीत्तलहर मंदिर प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की विशाल पीतल की प्रतिमा के लिए प्रसिद्ध है।
दिलवाड़ा मंदिर परिसर में स्थित 'पीत्तलहर मंदिर' अपनी विशिष्टता के लिए जाना जाता है। इसमें जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ की एक विशाल मूर्ति स्थापित है, जो पाँच धातुओं के मिश्रण से बनी है, जिसमें पीतल की प्रमुखता है। इस मूर्ति का वजन बहुत अधिक है। विमल वसही मंदिर परिसर की सबसे प्राचीन संरचना है, जबकि इन मंदिरों को मुख्य रूप से गुजरात के चालुक्य शासकों के मंत्रियों द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था। यह जैन धर्म का एक प्रमुख आध्यात्मिक और कलात्मक केंद्र है।

43. (1) I, II और III
राजपूत दुर्गों की सुरक्षा प्रणाली में पोल (मजबूत प्रवेश द्वार), बुर्ज (दीवारों पर बने निगरानी स्तंभ) और कंगूरा (प्राचीर के ऊपरी दांतेदार हिस्से जहाँ से सैनिक वार करते थे) अनिवार्य सैन्य तत्व थे। ये सीधे तौर पर शत्रु के आक्रमण को रोकने और प्रभावी प्रतिरक्षा के लिए बनाए जाते थे। छतरी एक स्मारक संरचना है और झरोखा मुख्य रूप से दर्शन के लिए प्रयुक्त होता था। यद्यपि झरोखों का उपयोग निगरानी के लिए किया जा सकता था, परंतु प्राथमिक सैन्य तत्व पहले तीन ही माने जाते थे।

44. (2) पिछवाई चित्रकला
नाथद्वारा मंदिर ऐतिहासिक रूप से 'पिछवाई चित्रकला' के विकास का मुख्य केंद्र रहा है। पिछवाई शब्द का अर्थ है 'पीछे वाला', और ये चित्र श्रीनाथजी की मूर्ति के पीछे पृष्ठभूमि के रूप में लटकाए जाने वाले बड़े कपड़े के पर्दे होते हैं। इनमें भगवान कृष्ण की विभिन्न लीलाओं, त्योहारों और सुंदर प्राकृतिक दृश्यों का अत्यंत बारीक चित्रण किया जाता है। यह कला रूप वल्लभ संप्रदाय की धार्मिक परंपराओं से गहराई से जुड़ा है और आज भी स्थानीय कलाकारों द्वारा इसे जीवित रखा गया है।

45. (3) चित्तौड़गढ़ दुर्ग
'पद्मिनी महल' चित्तौड़गढ़ दुर्ग के भीतर स्थित एक अत्यंत ऐतिहासिक और दर्शनीय स्थल है। यह महल एक जल निकाय (तालाब) के किनारे स्थित है, जिसके मध्य में एक छोटा सा मंडप बना हुआ है। ऐतिहासिक गाथाओं के अनुसार, यह रानी पद्मिनी का निवास स्थान था और यहीं से सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी ने रानी का प्रतिबिंब देखा था। यह महल राजपूत वास्तुकला की सादगी और ऐतिहासिक गाथाओं का मूक प्रतीक है। वर्तमान संरचना में बाद के समय के कुछ जीर्णोद्धार के निशान भी दिखाई देते हैं।

46. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान के विभिन्न दुर्गों के प्रवेश द्वारों के विशिष्ट नाम हैं जो उनके महत्व को दर्शाते हैं। चित्तौड़गढ़ दुर्ग का मुख्य द्वार 'पाडन पोल' कहलाता है। मेहरानगढ़ दुर्ग में स्थित 'लोहा पोल' अपने सुदृढ़ निर्माण और सुरक्षा के लिए प्रसिद्ध है। आमेर दुर्ग का अत्यंत अलंकृत और सुंदर द्वार 'गणेश पोल' के नाम से जाना जाता है, जो आंतरिक कक्षों की ओर ले जाता है। जैसलमेर दुर्ग का मुख्य प्रवेश मार्ग 'अखै पोल' से होकर गुजरता है। ये सभी द्वार दुर्गों की भव्यता दर्शाते हैं।

47. (1) एक ऐसा दुर्ग जहाँ दुर्ग की प्राचीरों के भीतर एक विशाल नागरिक जनसंख्या निवास करती है।
जैसलमेर दुर्ग को 'जीवंत दुर्ग' इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह विश्व के उन गिने-चुने किलों में से एक है जहाँ आज भी शहर की लगभग एक-चौथाई जनसंख्या दुर्ग की प्राचीरों के भीतर निवास करती है। यहाँ दुकानें, होटल, मंदिर और आवासीय घर सक्रिय रूप से उपयोग में हैं। यह केवल एक पर्यटन स्थल या संरक्षित स्मारक नहीं है, बल्कि एक जीवंत सामाजिक और आर्थिक केंद्र भी है। यह विशेषता इसे अन्य ऐतिहासिक दुर्गों से अलग और पूर्णतः अद्वितीय बनाती है।

48. (2) उन्होंने मुख्य संरक्षक धरण शाह द्वारा देखे गए एक दिव्य स्वप्न के आधार पर मंदिर का विन्यास तैयार किया।
रणकपुर जैन मंदिर के निर्माण के पीछे एक रोचक कथा जुड़ी है। कहा जाता है कि मंदिर के मुख्य संरक्षक धरण शाह ने एक 'नलिनी-गुल्म विमान' का दिव्य स्वप्न देखा था। उन्होंने कई वास्तुकारों से उस स्वप्न को साकार करने का अनुरोध किया, लेकिन केवल वास्तुकार देपा ने उनके दृष्टिकोण के अनुरूप एक

जटिल और दिव्य नक्शा तैयार किया था। देपा के निर्देशन में ही इस अद्भुत मंदिर का निर्माण हुआ, जो अपनी जटिल संरचना और आध्यात्मिक ऊर्जा के लिए विश्व भर में विख्यात है।

49. (2) मुख्य देवता की स्थापना वाला पवित्रतम स्थान।
नागर शैली के मंदिरों में 'गर्भगृह' मंदिर का सबसे महत्वपूर्ण और पवित्रतम आंतरिक भाग होता है। यह वह स्थान है जहाँ मंदिर के मुख्य देवता की प्रतिमा स्थापित की जाती है। सामान्यतः यह एक छोटा और कम प्रकाश वाला वर्गाकार कक्ष होता है, जिसे 'पवित्रता का गर्भ' माना जाता है। गर्भगृह के ठीक ऊपर मंदिर का मुख्य शिखर निर्मित किया जाता है। श्रद्धालु मंडप से होते हुए गर्भगृह के सम्मुख पहुँचते हैं, जहाँ वे अपने आराध्य देव के दर्शन और पूजा-अर्चना करते हैं।

50. (1) नागर शैली में वक्राकार शिखर होता है, जबकि द्रविड़ शैली में सोपाननुमा (सीढ़ीदार) पिरामिडीय विमान होता है।
नागर और द्रविड़ शैलियों के बीच मुख्य अंतर उनके शिखर की बनावट में निहित है। उत्तर भारतीय नागर शैली, जो राजस्थान में प्रचलित है, में शिखर ऊपर की ओर वक्राकार होता है और शीर्ष पर एक आमलक स्थित होता है। इसके विपरीत, दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली में मंदिर का ऊपरी हिस्सा जिसे 'विमान' कहते हैं, सीढ़ीदार पिरामिड के आकार का होता है। इसके अतिरिक्त, द्रविड़ मंदिरों में ऊँचे गोपुरम और विशाल प्रांगण होते हैं जो नागर शैली में प्रमुख नहीं होते हैं।

51. (3) शास्त्रीय शिल्प शास्त्र के साथ समन्वित वास्तु शास्त्र के सिद्धांत।
जयपुर शहर का नियोजन और इसके राजप्रासादों का निर्माण प्राचीन भारतीय वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों और शास्त्रीय शिल्प शास्त्रों पर आधारित था। सवाई जय सिंह द्वितीय ने वास्तुकार विद्याधर भट्टाचार्य के साथ मिलकर नौ ग्रहों के प्रतीक के रूप में नौ वर्गों के सिद्धांत पर शहर को बसाया था। इसमें सड़कों के समकोण पर कटने और मुख्य बाजारों के व्यवस्थित विन्यास को प्राथमिकता दी गई थी। यह वैज्ञानिक और पारंपरिक भारतीय शहरी नियोजन का एक उत्कृष्ट और आधुनिक उदाहरण है।

52. (4) लकुलीश (पाशुपत) संप्रदाय
उदयपुर के निकट स्थित प्रसिद्ध एकलिंगजी मंदिर मुख्य रूप से शैव धर्म के 'लकुलीश' या 'पाशुपत' संप्रदाय से संबद्ध है। इस संप्रदाय के प्रवर्तक भगवान लकुलीश माने जाते हैं, जिन्हें भगवान शिव का अवतार माना जाता है। मेवाड़ के शासक इसी संप्रदाय के कट्टर अनुयायी थे और भगवान एकलिंगजी को अपना कुलदेवता मानते थे। मंदिर के गर्भगृह में स्थित भगवान शिव की चार मुख वाली काले संगमरमर की प्रतिमा इसी संप्रदाय की धार्मिक मान्यताओं और कलात्मक परंपराओं का प्रतिनिधित्व करती है।

53. (3) शीश महल - मध्यकालीन तोपों वाला एक विशाल शस्त्रागार
उदयपुर सिटी पैलेस में स्थित 'शीश महल' के बारे में यह जानकारी गलत है कि यह एक तोपखाना या शस्त्रागार था। वास्तव में, शीश महल काँच के बारीक काम और दर्पणों की पच्चीकारी के लिए प्रसिद्ध एक अलंकृत कक्ष है, जिसे महाराणा प्रताप सिंह ने बनवाया था। अन्य युग्म सही हैं: अमर विलास एक ऊँचा उद्यान है, भीम विलास में सुंदर चित्र हैं और फतेह प्रकाश पैलेस अपनी अद्भुत क्रिस्टल गैलरी के लिए वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध है। यह कला का केंद्र है।

54. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जयपुर का जंतर मंतर अपनी वैज्ञानिक सटीकता और विशालता के कारण भारत की सभी ऐतिहासिक वेधशालाओं में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसका मुख्य कारण यहाँ पत्थरों से निर्मित स्थिर और विशाल यंत्र हैं, जो समय के साथ अपनी स्थिति नहीं बदलते। ये यंत्र धातु के छोटे यंत्रों की तुलना में बहुत अधिक सटीकता प्रदान करते हैं। इसके द्वारा खगोलीय पिंडों की स्थिति, समय की गणना और ग्रहणों की भविष्यवाणी अत्यंत परिशुद्धता के साथ की जा सकती है, जो इसे अद्वितीय वैज्ञानिक स्थल बनाता है।

55. (4) शाही महिलाओं को लोक-दृष्टि से दूर रहकर सड़क के दृश्यों और उत्सवों का अवलोकन करने देना।
हवा महल के निर्माण का मुख्य व्यावहारिक उद्देश्य तत्कालीन 'पर्दा प्रथा' का कड़ाई से पालन करना था। इसमें निर्मित 953 छोटे झरोखे और खिड़कियाँ इस प्रकार बनाई गई थीं कि शाही परिवार की महिलाएँ बिना किसी बाहरी व्यक्ति की नजर में आए, सड़क पर होने वाले उत्सवों, झांकियों और दैनिक गतिविधियों को देख सकें। इन खिड़कियों से ठंडी हवा भी अंदर आती थी, जिससे ग्रीष्मकाल में महल का तापमान नियंत्रित रहता था। यह स्थापत्य कला की एक अत्यंत चतुर योजना थी।

56. (1) इसके निर्माण का श्रेय महाराणा कुंभा को दिया जाता है।
महाराणा कुंभा चित्तौड़गढ़ दुर्ग के इतिहास में सबसे महान निर्माता और संरक्षक माने जाते हैं। उनके शासनकाल की सबसे महत्वपूर्ण स्थापत्य उपलब्धि 'विजय स्तंभ' का निर्माण है, जो उन्होंने मालवा विजय की स्मृति में बनवाया था। यद्यपि दुर्ग के भीतर अन्य कई संरचनाएँ भी हैं, लेकिन विजय स्तंभ कुंभा की शक्ति और कला के प्रति अनुराग का सर्वोत्तम प्रतीक है। उन्होंने दुर्ग की सुरक्षा व्यवस्था को भी सुदृढ़ किया और कई मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया, जो उनके स्वर्णिम काल की स्मृति दिलाते हैं।

57. (3) चील का टीला
जयपुर में स्थित जयगढ़ दुर्ग को 'चील का टीला' के नाम से भी जाना जाता है। यह नाम उस पहाड़ी के आधार पर पड़ा है जिस पर यह दुर्ग निर्मित है। अरावली पर्वतमाला की इस ऊँची चोटी से पूरे आमेर दुर्ग और जयपुर शहर पर आसानी से नजर रखी जा सकती थी। इस दुर्ग का निर्माण मुख्य रूप से आमेर दुर्ग की सुरक्षा और शाही खजाने की रक्षा हेतु किया गया था। यह अपनी मजबूत किलेबंदी और अजेय स्थिति के कारण राजस्थान के सबसे सुरक्षित दुर्गों में गिना जाता है।

58. (4) I, II और III
माउंट आबू के दिलवाड़ा जैन मंदिर अपनी अद्वितीय स्थापत्य विशेषताओं के लिए विश्व प्रसिद्ध हैं। ये पूर्णतः श्वेत मकराना

संगमरमर से निर्मित हैं, जो इन्हें एक अलौकिक सुंदरता प्रदान करता है। इनका निर्माण 11वीं और 13वीं शताब्दी के बीच सोलंकी और वाघेला शासकों के मंत्रियों द्वारा कराया गया था। इन मंदिरों की छतों, स्तंभों और द्वारों पर की गई अत्यंत अलंकृत और सूक्ष्म नक्काशी इन्हें विश्व के सर्वश्रेष्ठ संगमरमर स्मारकों में से एक बनाती है। इनका प्रत्येक भाग कला का उत्कृष्ट नमूना है।

59. (4) गर्भगृह के सम्मुख स्थित स्तंभों वाला सभा कक्ष।
नागर शैली के मंदिरों में 'मंडप' वह स्थान होता है जो मुख्य गर्भगृह के ठीक सामने स्थित होता है। यह एक विशाल, स्तंभों वाला हॉल या सभा कक्ष होता है जहाँ श्रद्धालु सामूहिक पूजा, कीर्तन और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए एकत्रित होते हैं। कुछ बड़े मंदिरों में अर्ध-मंडप, महा-मंडप और कल्याण मंडप जैसे कई स्तर हो सकते हैं। यह स्थान भक्तों के लिए सामुदायिक प्रार्थना और देवता के दर्शन के लिए मुख्य प्रतीक्षा स्थल के रूप में कार्य करता है, जो अत्यंत भव्य होता है।

60. (2) राजपूत पुरुष युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए, लेकिन महिलाओं का जौहर संपन्न नहीं हो सका।
जैसलमेर दुर्ग के इतिहास में 'ढाई साके' की घटना अद्वितीय मानी जाती है। 'साका' तब पूर्ण माना जाता है जब पुरुष 'केसरिया' (युद्ध में वीरगति) करते हैं और महिलाएँ 'जौहर' करती हैं। 1550 ईस्वी में लूणकरण भाटी के समय हुए आक्रमण के दौरान, राजपूत योद्धाओं ने वीरतापूर्वक लड़ते हुए प्राण त्याग दिए, लेकिन शत्रु का अचानक प्रवेश होने के कारण महिलाओं के पास जौहर की अग्नि प्रज्वलित करने का समय नहीं बचा था। इसलिए यह आधा साका माना जाता है क्योंकि केवल पुरुषों का बलिदान हुआ था।

61. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
नागर मंदिर के विभिन्न अंगों के विशिष्ट धार्मिक और स्थापत्य कार्य होते हैं। 'शिखर' मुख्य गर्भगृह के ऊपर बनी ऊँची मीनारनुमा संरचना है। 'आमलक' शिखर के शीर्ष पर स्थित धारीदार पत्थर का चक्र होता है। 'अंतराल' वह गलियारा है जो सभा मंडप को पवित्र गर्भगृह से जोड़ता है। 'जगती' वह ऊँचा चबूतरा या आधार होता है जिस पर पूरा मंदिर निर्मित किया जाता है। ये तत्व मिलकर एक मंदिर को उसकी शास्त्रीय पूर्णता और भव्य धार्मिक स्वरूप प्रदान करते हैं। यह शिल्प शास्त्र का आधार है।

62. (4) कुंभलगढ़ दुर्ग
कुंभलगढ़ दुर्ग अपनी विशाल और मजबूत रक्षा प्राचीर के लिए विश्व भर में प्रसिद्ध है। इस किले की बाहरी दीवार की कुल लंबाई लगभग 36 किलोमीटर है। इस दीवार की चौड़ाई इतनी अधिक है कि इसके बारे में यह प्रचलित है कि इस पर एक साथ आठ घुड़सवार दौड़ सकते हैं। अपनी अभेद्य सुरक्षा प्रणाली और इस विशाल प्राचीर के कारण ही कुंभलगढ़ को 'अजेय दुर्ग' कहा जाता था। यह राजपूत सैन्य वास्तुकला की भव्यता और रणनीतिक दूरदर्शिता का एक शानदार ऐतिहासिक प्रमाण है।

63. (1) I, II और III
पुष्कर का ब्रह्मा मंदिर संगमरमर और पत्थरों से निर्मित एक अत्यंत पवित्र संरचना है जो विश्व प्रसिद्ध पुष्कर झील के तट पर स्थित है। मंदिर के भीतर कई अनूठी विशेषताएँ हैं, जिनमें गर्भगृह के फर्श पर उकेरा गया चाँदी का कछुआ प्रमुख है, जो भक्तों द्वारा दान की गई चाँदी की मुद्राओं से घिरा रहता है। हालांकि, यह कहना गलत है कि इसका वर्तमान स्वरूप 14वीं शताब्दी में बना था; वास्तव में यह 19वीं शताब्दी के प्रारंभ का माना जाता है, यद्यपि यह स्थल अत्यंत प्राचीन है।

64. (2) छाया प्रदान करने वाला या एक स्मारक के रूप में प्रयुक्त ऊँचा गुंबददार मंडप।
राजस्थानी स्थापत्य में 'छतरी' एक अत्यंत महत्वपूर्ण और विशिष्ट संरचना मानी जाती है। यह मूल रूप से एक ऊँचा, गुंबददार और स्तंभों वाला मंडप होता है जो खुले स्थान पर बनाया जाता है। इनका उपयोग स्मारक के रूप में किसी महान व्यक्ति या शासक की अंत्येष्टि स्थल पर उनकी स्मृति को जीवित रखने के लिए किया जाता था। छतरियाँ अपनी सुंदर नक्काशी और विशिष्ट स्थापत्य शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। अलवर की मूसी महारानी की छतरी और जोधपुर का जसवंत थड़ा इसके बेहतरीन उदाहरण हैं।

65. (1) III, II, IV, I
नागर शैली के मंदिर में प्रवेश करने पर संरचनाओं का एक निश्चित धार्मिक क्रम होता है। सबसे पहले 'अर्ध मंडप' आता है, उसके बाद मुख्य 'मंडप' (बड़ा सभा कक्ष) आता है। मंडप के बाद 'अंतराल' आता है, जो गर्भगृह और मंडप के बीच का एक गलियारा होता है। अंत में, मंदिर का सबसे पवित्र हिस्सा 'गर्भगृह' आता है जहाँ मुख्य प्रतिमा स्थापित होती है। यह क्रम भक्त को धीरे-धीरे बाहरी संसार से आध्यात्मिक केंद्र और दिव्यता की ओर ले जाता है। यह व्यवस्थित स्थापत्य है।

66. (1) हवा महल
जयपुर का हवा महल स्थापत्य कला का एक चमत्कार माना जाता है क्योंकि यह पाँच मंजिला इमारत होने के बावजूद बिना किसी पारंपरिक गहरी नींव के सीधे जमीन पर निर्मित है। इसकी स्थिरता इसके विशिष्ट पिरामिडाकार और वक्राकार अभिकल्प पर निर्भर करती है, जो ऊपर की ओर जाते हुए क्रमशः संकरा होता जाता है। इसकी पतली दीवारों को सहारा देने के लिए इसकी अनूठी आकृति और इसके भीतर के छोटे कक्षों का वैज्ञानिक विन्यास महत्वपूर्ण है। यह विश्व के अनूठे ऊँचे स्मारकों में से एक है।

67. (3) राय का बाग पैलेस
'जय नारायण व्यास टाउन हॉल' ऐतिहासिक रूप से जोधपुर के 'राय का बाग पैलेस' परिसर का हिस्सा रहा है। राय का बाग पैलेस का निर्माण 1663 ईस्वी में महाराजा जसवंत सिंह प्रथम की रानी हाड़ी जी द्वारा करवाया गया था। यह परिसर अपनी सुंदर वास्तुकला और ऐतिहासिक महत्व के लिए जाना जाता है। कालांतर में, इसके कुछ हिस्सों का उपयोग प्रशासनिक और सार्वजनिक कार्यों के लिए किया जाने लगा था। यह जोधपुर

की समृद्ध सांस्कृतिक और शाही विरासत का एक अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है।

68. (1) केवल I और V
रणकपुर जैन मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी में महाराणा कुंभा के शासनकाल में हुआ था, न कि राणा सांगा के समय। इसके मुख्य संरक्षक धरण शाह थे। यह मंदिर पूर्णतः श्वेत संगमरमर से निर्मित है, इसलिए इसे धौलपुर के लाल बलुआ पत्थर से बना कहना सर्वथा गलत है। मंदिर की वास्तुकला दिव्य विमान की अवधारणा पर आधारित है और इसमें अद्भुत नक्काशी की गई है। इसके चारों ओर की रक्षा प्राचीर को 'भामती' कहा जाता है, जो इस विशाल मंदिर परिसर को पूर्ण सुरक्षा प्रदान करती है।

69. (3) इसके विशाल विस्तार के कारण एक सीमित सैन्य बल के लिए पूरी सीमा की रक्षा करना कठिन था।
चित्तौड़गढ़ दुर्ग का कुल क्षेत्रफल लगभग 700 एकड़ में फैला हुआ है, जो इसे भारत के सबसे बड़े किलों में से एक बनाता है। इसके इसी विशाल आकार के कारण, प्राचीन युद्धनीति के अनुसार इसे पूरी तरह सुरक्षित रखना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था। एक सीमित सैन्य बल के लिए इतनी लंबी प्राचीर के प्रत्येक बिंदु पर निरंतर पहरा देना और रक्षा करना कठिन हो जाता था। यही कारण है कि इतिहास में कई बार विशाल शत्रु सेनाओं ने इसकी घेराबंदी करके इसके सुरक्षा चक्र को भेदने का प्रयास किया था।

70. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान की प्रसिद्ध छतरियाँ अपनी ऐतिहासिकता और कला के लिए जानी जाती हैं। मूसी महारानी की छतरी अलवर में स्थित है, जो अपनी द्वि-रंगी वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है। 84 खंभों की छतरी बूंदी में स्थित है और स्थापत्य का अद्भुत नमूना है। जसवंत थड़ा को 'मारवाड़ का ताजमहल' कहा जाता है और यह जोधपुर में स्थित है। उदयपुर के निकट आहड़ की छतरियाँ मेवाड़ के महाराणाओं का शाही श्मशान स्थल हैं। ये सभी स्मारक राजस्थान के शासकों की स्मृति और उनके कला प्रेम को दर्शाते हैं।

71. (4) जंतर मंतर, उदयपुर
महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने भारत के पाँच अलग-अलग शहरों में खगोलीय वेधशालाओं (जंतर मंतर) का निर्माण करवाया था। ये शहर जयपुर, दिल्ली, उज्जैन, मथुरा और वाराणसी थे। उदयपुर में कोई ऐतिहासिक जंतर मंतर नहीं है, हालांकि वहाँ आधुनिक समय की एक सौर वेधशाला फतेह सागर झील में स्थित है। जय सिंह द्वारा निर्मित ये वेधशालाएँ उनके खगोल विज्ञान के प्रति जुनून और भारत के प्राचीन वैज्ञानिक ज्ञान को पुनर्जीवित करने के उनके प्रयासों का एक गौरवशाली वैज्ञानिक प्रतीक हैं।

72. (1) मेहरानगढ़ दुर्ग
जोधपुर का मेहरानगढ़ दुर्ग अपने सुदृढ़ द्वारों के लिए प्रसिद्ध है। इनमें 'लोहा पोल' अत्यंत महत्वपूर्ण है, जो दुर्ग के ऊपरी भाग की ओर जाने वाला अंतिम द्वार माना जाता है। इसके लोहे के मजबूत फाटकों को हाथियों के प्रहार को सहने के लिए विशेष रूप से बनाया गया था। इसके अतिरिक्त, इस दुर्ग में वर्षा जल संचयन की अत्यंत विकसित प्रणाली विद्यमान थी, जो शुष्क मारवाड़ क्षेत्र में जीवन रेखा का कार्य करती थी। दुर्ग के द्वारों की यह सुरक्षा और जल प्रबंधन इसकी प्रमुख रणनीतिक विशेषताएँ हैं।

73. (3) जल से घिरा हुआ दुर्ग (जल दुर्ग)।
प्राचीन भारतीय स्थापत्य ग्रंथों और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में 'ओदक दुर्ग' का अर्थ 'जल दुर्ग' बताया गया है। यह वह दुर्ग होता है जो चारों ओर से गहरी जल राशि, नदियों या झीलों से पूरी तरह घिरा होता है। जल एक प्राकृतिक बाधा के रूप में कार्य करता है, जिससे शत्रु सेना के लिए दुर्ग तक पहुँचना अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण हो जाता है। झालावाड़ का गागरोन दुर्ग और चित्तौड़गढ़ का कुछ हिस्सा ओदक दुर्ग की श्रेणी के प्रमुख उदाहरण हैं, जो राजस्थान की प्राचीन रक्षात्मक रणनीति का हिस्सा थे।

74. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
उदयपुर का सिटी पैलेस स्थापत्य शैली का एक अद्भुत समन्वय है, जिसमें राजस्थानी, मुगल, मध्यकालीन और यूरोपीय तत्वों का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है। यह इसकी भव्यता और सांस्कृतिक विविधता का मुख्य कारण है। हालांकि, यह कहना गलत है कि इसका निर्माण केवल एक ही दशक में पूर्ण हुआ था। वास्तव में, इस विशाल परिसर का निर्माण महाराणा उदय सिंह द्वितीय से शुरु होकर लगभग 400 वर्षों की लंबी अवधि में विभिन्न महाराणाओं के निरंतर योगदान और विस्तार के माध्यम से संपन्न हुआ था।

75. (1) चित्तौड़गढ़, जैसलमेर, कुंभलगढ़, मेहरानगढ़
राजस्थान के दुर्गों का निर्माण इतिहास विभिन्न युगों में फैला हुआ है। चित्तौड़गढ़ दुर्ग सबसे प्राचीन माना जाता है, जिसकी नींव 7वीं शताब्दी में मौर्य शासकों ने रखी थी। जैसलमेर दुर्ग का निर्माण 1156 ईस्वी में राव जैसल ने करवाया था। कुंभलगढ़ दुर्ग का आधुनिक स्वरूप महाराणा कुंभा ने 15वीं शताब्दी के मध्य में तैयार किया था। जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव राव जोधा ने 1459 ईस्वी में रखी थी। यह क्रम इन दुर्गों के ऐतिहासिक और स्थापत्य विकास की लंबी यात्रा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

76. (2) छत पर स्वर्ण की बारीक नक्काशी का काम।
मेहरानगढ़ दुर्ग के भीतर स्थित 'फूल महल' अपनी अलंकृत सजावट और राजसी भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। इस महल की सबसे विशिष्ट विशेषता इसकी छत पर किया गया स्वर्ण की बारीक नक्काशी का काम है। महाराजा अभय सिंह के शासनकाल में निर्मित यह कक्ष शाही दरबार और मनोरंजन के लिए प्रयुक्त होता था। इसकी दीवारों पर विभिन्न राग-रागिनियों के चित्र और बारीक नक्काशी इसे राजस्थानी कला का एक बेजोड़ नमूना बनाती है। सोने की अद्भुत चमक इसे एक दिव्य और राजसी आभा प्रदान करती है।

77. (3) श्वेतांबर
पाली जिले में स्थित प्रसिद्ध रणकपुर जैन मंदिर मुख्य रूप से जैन धर्म के 'श्वेतांबर' संप्रदाय से संबंधित है। इस मंदिर का प्रबंधन और सभी धार्मिक अनुष्ठान श्वेतांबर परंपराओं के अनुसार ही संपन्न किए जाते हैं। मंदिर के मुख्य गर्भगृह में श्वेतांबर शैली की भगवान आदिनाथ की भव्य प्रतिमा सुशोभित है। यह मंदिर न केवल अपनी अनूठी वास्तुकला के लिए, बल्कि श्वेतांबर जैनियों के एक प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ का आध्यात्मिक वातावरण श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

78. (4) वे जयपुर शहर के ग्रिड-प्लान (नियोजित विन्यास) के मुख्य वास्तुकार थे।
विद्याधर भट्टाचार्य एक महान वास्तुकार और योजनाकार थे, जिन्होंने महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय के कुशल मार्गदर्शन में जयपुर शहर का विस्तृत नक्शा तैयार किया था। उन्होंने प्राचीन भारतीय वास्तु शास्त्र के सिद्धांतों को आधुनिक शहरी नियोजन के साथ जोड़कर जयपुर को नौ वर्गों के ग्रिड पैटर्न पर अभिकल्पित किया था। उनकी दूरदर्शिता के कारण ही जयपुर भारत का पहला नियोजित शहर बना, जहाँ सीधी सड़कें और सुव्यवस्थित बाजार हैं। यह आज भी विश्व में शहरी विकास का एक अद्वितीय उदाहरण है।

79. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जैसलमेर दुर्ग वर्तमान में गंभीर संरचनात्मक चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसका मुख्य कारण यह है कि दुर्ग के भीतर आधुनिक जल निकासी व्यवस्था पर्याप्त नहीं है। बढ़ती जनसंख्या और पर्यटन के दबाव के कारण उपयोग किए गए जल का रिसाव दुर्ग की नींव और इसकी पीली बलुआ पत्थर की दीवारों में हो रहा है। चूंकि यह दुर्ग एक नरम चट्टानी पहाड़ी पर स्थित है, इसलिए जल रिसाव से मिट्टी ढीली हो रही है, जिससे दुर्ग के ऐतिहासिक हिस्सों के ढहने का निरंतर खतरा बना हुआ है।

80. (2) दीवान-ए-खास (शीश महल)
आमेर दुर्ग के भीतर स्थित 'शीश महल' काँच की सूक्ष्म पच्चीकारी के लिए विश्व विख्यात है। इसकी दीवारों और छत पर हज़ारों छोटे दर्पणों को बेल्जियम काँच के साथ इस प्रकार जड़ा गया है कि एक मोमबत्ती जलाने पर भी पूरा कक्ष तारों भरी रात की तरह जगमगा उठता है। यह प्रकाश के परावर्तन का एक उत्कृष्ट स्थापत्य उदाहरण माना जाता है। यह महल राजाओं के निजी मेहमानों से मिलने और विश्राम करने का एक अत्यंत विलासितापूर्ण स्थान था। इसकी सुंदरता राजस्थानी वैभव का प्रतीक है।

81. (2) वह स्थान जहाँ राजकीय आगमन की घोषणा हेतु औपचारिक वादन किया जाता था।
दुर्गों और प्रासादों की वास्तुकला में 'नौबत खाना' वह स्थान होता था जहाँ शहनाई, नगाड़े और अन्य वाद्ययंत्र बजाने वाले कलाकार बैठते थे। इसका मुख्य कार्य राजा के आगमन, प्रस्थान या किसी महत्वपूर्ण राजकीय उत्सव की घोषणा संगीत के माध्यम से करना था। यह प्रायः मुख्य प्रवेश द्वार के ऊपर स्थित होता था। यह न केवल सुरक्षात्मक दृष्टि से महत्वपूर्ण था, बल्कि राजपूत और मुगल दरबारों की भव्यता और शिष्टाचार का एक अनिवार्य हिस्सा माना जाता था। यह सांस्कृतिक परंपरा का अंग था।

82. (1) हवा महल
झुंझुनू जिले के खेतड़ी में स्थित 'खेतड़ी महल' अपनी हवादार खिड़कियों और झरोखों के लिए विशेष रूप से जाना जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार, जयपुर के महाराजा सवाई प्रताप सिंह इस महल की वास्तुकला और इसकी ठंडक प्रदान करने वाली संरचना से इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने इसी से प्रेरणा लेकर जयपुर में विश्व प्रसिद्ध ' हवा महल' का निर्माण करवाया था। दोनों इमारतों में हवा के मुक्त संचार के लिए जालीदार झरोखों का उपयोग किया गया है, जो राजस्थान की भीषण गर्मी में शीतलता प्रदान करते हैं।

83. (1) केवल I और II
एकलिंगजी मंदिर का वर्तमान स्वरूप मुख्य रूप से 15वीं शताब्दी में महाराणा रायमल द्वारा कराए गए पुनर्निर्माण का परिणाम है। इस मंदिर के गर्भगृह में भगवान शिव की चार मुख वाली काले संगमरमर की भव्य प्रतिमा स्थापित है, जो शांति और शक्ति का प्रतीक मानी जाती है। हालांकि, इस मंदिर की स्थापत्य शैली उत्तर भारतीय नागर शैली का प्रतिनिधित्व करती है, न कि दक्षिण भारतीय द्रविड़ शैली का। यह मेवाड़ की धार्मिक अस्मिता का मुख्य केंद्र है और इसके चारों ओर कई छोटे मंदिरों का समूह स्थित है।

84. (4) रणथंभौर दुर्ग
'नवलखा दरवाजा' रणथंभौर दुर्ग का मुख्य और सबसे सुदृढ़ प्रवेश द्वार है। यह द्वार अपनी विशाल ऊँचाई और मजबूती के लिए प्रसिद्ध है और दुर्ग की प्रारंभिक रक्षा पंक्ति का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। रणथंभौर दुर्ग अपनी जटिल भौगोलिक स्थिति और सात पहाड़ियों से सुरक्षित रूप से घिरे होने के कारण अत्यंत अजेय माना जाता था। इस द्वार से प्रवेश करने के बाद ही दुर्ग के मुख्य परिसर और त्रिनेत्र गणेश मंदिर की ओर जाने वाला मार्ग खुलता है। यह चौहान शासकों की सैन्य कला का नमूना है।

85. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान के स्मारक अपनी विशिष्ट निर्माण सामग्री के लिए प्रसिद्ध हैं। जैसलमेर दुर्ग पूर्णतः पीले बलुआ पत्थर से बना है। हवा महल के निर्माण में लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर का प्रयोग हुआ है, जो जयपुर को गुलाबी आभा प्रदान करता है। दिलवाड़ा के जैन मंदिर अपने श्वेत मकराना संगमरमर की सूक्ष्म नक्काशी के लिए विश्व भर में जाने जाते हैं। विजय स्तंभ में लाल बलुआ पत्थर के साथ-साथ ऊपरी हिस्सों में श्वेत संगमरमर का उपयोग कर एक सुंदर दृश्य प्रभाव उत्पन्न किया गया है। यह विविधता क्षेत्रीय गौरव है।

86. (2) जल महल
जयपुर की मान सागर झील के मध्य में स्थित सुंदर प्रासाद को 'जल महल' के नाम से जाना जाता है। इसका निर्माण

महाराजा सवाई जय सिंह द्वितीय ने करवाया था। इस महल की विशिष्टता यह है कि इसकी पाँच मंजिलों में से चार मंजिलें झील के जल के भीतर रहती हैं और केवल सबसे ऊपरी मंजिल ही बाहर दिखाई देती है। यह राजपूत शैली में निर्मित एक विशिष्ट ग्रीष्मकालीन विश्राम स्थल था। झील के शांत जल में इसका प्रतिबिंब और आसपास की अरावली पहाड़ियाँ इसे अत्यंत आकर्षक और पर्यटन स्थल बनाती हैं।

87. (4) फतेह सागर झील
उदयपुर की प्रसिद्ध 'सहेलियों की बाड़ी' फतेह सागर झील के तट पर स्थित है। इस सुंदर उद्यान का निर्माण महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय ने शाही महिलाओं के मनोरंजन के लिए करवाया था। यह उद्यान अपने फव्वारों, संगमरमर के हाथियों, सुंदर कमल के तालाबों और घने पेड़ों के लिए जाना जाता है। यहाँ के फव्वारे बिना किसी आधुनिक मोटर के केवल जल के प्राकृतिक दबाव के सिद्धांत पर कार्य करते हैं। यह राजस्थानी उद्यान कला और जल प्रबंधन कौशल का एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

88. (2) I, II और III
जोधपुर का उम्मेद भवन पैलेस दुनिया के सबसे बड़े निजी आवासों में से एक है और इसे आधुनिक जोधपुर का मुख्य सिटी पैलेस माना जाता है। इसका निर्माण 1928 से 1943 के बीच महाराजा उम्मेद सिंह ने भीषण अकाल के समय स्थानीय लोगों को रोजगार प्रदान करने हेतु करवाया था। इसकी वास्तुकला में पारंपरिक राजपूत शैली के साथ पश्चिमी आर्ट डेको शैली का अद्भुत मिश्रण दिखाई देता है। यह महल सुनहरे पीले रंग के 'चित्तर' पत्थर से बना है, न कि श्वेत संगमरमर से। यह जोधपुर की आधुनिक पहचान है।

89. (3) जय प्रकाश यंत्र
जयपुर के जंतर मंतर में स्थित 'जय प्रकाश यंत्र' को सवाई जय सिंह द्वितीय का अपना निजी वैज्ञानिक आविष्कार माना जाता है। इसमें दो अर्द्धवृत्ताकार कटोरेनुमा संरचनाएँ होती हैं जो जमीन में धंसी होती हैं। इसका मुख्य उपयोग खगोलीय पिंडों की स्थिति, देशांतर और अक्षांश का सटीक निर्धारण करने के लिए किया जाता है। इसकी आंतरिक सतह पर अत्यंत बारीक अंकन किया गया है। यह यंत्र खगोलीय गणनाओं के लिए एक अत्यंत प्रभावी उपकरण है, जो उस समय की महान वैज्ञानिक प्रगति का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करता है।

90. (1) महाराणा जय सिंह
उदयपुर की विशाल 'जयसमंद झील' का निर्माण महाराणा जय सिंह ने 17वीं शताब्दी (1685-1691) में गोमती नदी पर बांध बनाकर करवाया था। इसे 'ढेबर झील' के नाम से भी जाना जाता है और यह एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम मीठे जल की झीलों में से एक मानी जाती है। इस झील के तट पर सुंदर महल और कलात्मक छतरियाँ बनी हुई हैं। महाराणा ने इसके माध्यम से मेवाड़ क्षेत्र में सिंचाई और पेयजल की समस्या का स्थायी समाधान निकाला था। यह जल प्रबंधन की एक महान और ऐतिहासिक उपलब्धि मानी जाती है।

91. (4) गागरोन का दुर्ग किसी भी प्राचीर से रहित है और केवल जल पर निर्भर है।
गागरोन दुर्ग के बारे में यह कथन गलत है कि इसमें प्राचीर नहीं है। यद्यपि यह नदियों से घिरा एक जल दुर्ग है, लेकिन इसकी सुरक्षा हेतु सुदृढ़ दोहरी प्राचीरें और मजबूत बुर्ज बनाए गए हैं। अन्य कथन सही हैं: आमेर में मुगल प्रभाव स्पष्ट है, कुंभलगढ़ अरावली की पहाड़ियों का रक्षा हेतु उत्कृष्ट उपयोग करता है और रणथंभौर सघन वनों के बीच अपनी स्थिति के कारण दुर्गम है। गागरोन दुर्ग प्राकृतिक जल बाधा और कृत्रिम किलेबंदी का एक संयुक्त उदाहरण है, जो सामरिक रूप से महत्वपूर्ण है।

92. (2) गुर्जर-प्रतिहार
राजस्थान में 'महामारु' स्थापत्य शैली के विकास का मुख्य श्रेय गुर्जर-प्रतिहार राजवंश को दिया जाता है। 8वीं से 10वीं शताब्दी के दौरान इस राजवंश ने मारवाड़ और आसपास के क्षेत्रों में कई भव्य मंदिरों का निर्माण करवाया था। ओसियां के मंदिर समूह और चित्तौड़गढ़ का कालिका माता मंदिर इसी शैली के उत्कृष्ट उदाहरण माने जाते हैं। इस शैली की पहचान इसके ऊँचे आधार, अलंकृत स्तंभों और जटिल नक्काशीदार शिखरों से होती है। यह शैली बाद की राजपूत कालीन वास्तुकला की महत्वपूर्ण आधारशिला बनी थी।

93. (2) केवल IV
पुष्कर स्थित ब्रह्मा मंदिर अजमेर जिले में एक ऊँचे चबूतरे पर स्थित है, जहाँ संगमरमर की सीढ़ियाँ और प्रवेश द्वार पर हंस की सुंदर नक्काशी है। मुख्य गर्भगृह में ब्रह्मा और गायत्री की मूर्तियाँ स्थापित हैं। यह कथन गलत है कि इसे भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा 'मृत स्मारक' के रूप में प्रशासित किया जाता है। वास्तव में, यह एक अत्यंत जीवंत मंदिर है जहाँ दैनिक पूजा और अनुष्ठान निरंतर होते रहते हैं। यह हिंदू धर्म के सबसे पवित्र और प्राचीन स्थलों में से एक माना जाता है।

94. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान के दुर्गों के जल स्रोत ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण रहे हैं। आमेर दुर्ग के नीचे सुंदर मावठा झील स्थित है। चित्तौड़गढ़ दुर्ग में प्रसिद्ध गौमुख कुंड है, जो जल का मुख्य प्राकृतिक स्रोत माना जाता है। मेहरानगढ़ दुर्ग की सुरक्षा और जलापूर्ति हेतु रानीसर और पदमसर तालाबों का निर्माण किया गया था। जैसलमेर दुर्ग के पास गडीसर झील स्थित है, जो प्राचीन काल में पूरे मरुस्थलीय शहर के लिए जल का एकमात्र स्रोत थी। ये जलाशय दुर्गों की जीवन रेखा और सौंदर्य का प्रतीक रहे हैं।

95. (1) आठ बार
नाथद्वारा स्थित श्रीनाथजी मंदिर में दर्शन की एक अनूठी और व्यवस्थित प्रणाली प्रचलित है। पुष्टिमार्ग परंपरा के अनुसार, एक दिन में आठ बार पट खोले जाते हैं जिन्हें 'आठ झाँकियाँ' कहा जाता है। ये झाँकियाँ भगवान कृष्ण के दिनचर्या के विभिन्न चरणों जैसे मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, आरती और शयन को दर्शाती हैं। प्रत्येक दर्शन का अपना विशिष्ट धार्मिक महत्व, संगीत और श्रृंगार होता है। भक्त इन

क्षणिक दर्शनों के माध्यम से अपनी गहरी श्रद्धा और भक्ति व्यक्त करते हैं।

96. (2) मेहराबदार निर्माण के स्थान पर कोर्बेल्ड (कदलिकाभरण) संरचना का उपयोग।
राजपूत स्थापत्य में गुंबद निर्माण की एक विशिष्ट तकनीक अपनाई गई थी। मुगलों की 'ट्रू आर्च' आधारित मेहराब तकनीक के विपरीत, राजपूतों ने 'कोर्बेल्ड' या कदलिकाभरण विधि का अधिक उपयोग किया था। इसमें पत्थरों की परतों को एक के ऊपर एक थोड़ा खिसकाकर तब तक रखा जाता था जब तक कि वे शीर्ष पर न मिल जाएँ। इससे गुंबद को एक अलग आंतरिक स्वरूप और मजबूती मिलती थी। यह भारतीय परंपरागत निर्माण कला और बाहरी प्रभावों के सफल समन्वय का एक बेहतरीन परिणाम माना जाता है।

97. (2) जीजा भार्गव
चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित 'कीर्ति स्तंभ' का निर्माण 12वीं शताब्दी में एक समृद्ध जैन व्यापारी जीजा भार्गव द्वारा करवाया गया था। यह स्तंभ जैन धर्म के प्रचार और प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने हेतु बनाया गया था। इसकी ऊँचाई लगभग 22 मीटर है और यह सात मंजिला संरचना है। इसे महाराणा कुंभा द्वारा निर्मित नौ मंजिला 'विजय स्तंभ' से भ्रमित नहीं होना चाहिए। कीर्ति स्तंभ की प्रत्येक मंजिल पर दिगंबर जैन संप्रदाय की कलात्मक नक्काशी और तीर्थंकरों की मूर्तियाँ उकेरी गई हैं।

98. (1) बुर्ज (Bastions)
जैसलमेर दुर्ग की सबसे प्रमुख संरचनात्मक विशेषता इसकी बाहरी दीवारों पर बने 99 विशाल 'बुर्ज' हैं। ये बुर्ज किले को न केवल एक अद्भुत और भव्य स्वरूप प्रदान करते हैं, बल्कि सामरिक दृष्टि से भी इसे अत्यंत सुदृढ़ बनाते हैं। इन बुर्जों का उपयोग सैनिकों द्वारा निरंतर निगरानी रखने और आक्रमण के समय प्रभावी रक्षा हेतु किया जाता था। इतने अधिक बुर्जों वाला यह राजस्थान का संभवतः एकमात्र किला है। इसकी पीली दीवारों और इन बुर्जों के कारण ही इसे 'सोनार किला' या स्वर्ण दुर्ग भी कहा जाता है।

99. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
उदयपुर सिटी पैलेस का निर्माण लगभग 400 वर्षों के लंबे अंतराल में विभिन्न महाराणाओं द्वारा कराया गया था, जो ऐतिहासिक रूप से सत्य है। हालांकि, यह कथन गलत है कि इसमें पूर्णतः सममित अग्रभाग है। चूंकि इसका निर्माण अलग-अलग समय पर और विभिन्न आवश्यकताओं के अनुसार हुआ, इसलिए इसकी संरचना में असमता दिखाई देती है। लेकिन यही विविधता इसकी असली सुंदरता है, जहाँ अलग-अलग स्थापत्य शैलियाँ एक साथ मिलकर एक भव्य और एकीकृत परिसर का निर्माण करती हैं जो अत्यंत आकर्षक है।

100. (4) कुंभलगढ़ दुर्ग
कुंभलगढ़ दुर्ग को मेवाड़ के राजवंश की 'संकटकालीन शरणस्थली' के रूप में जाना जाता है। अपनी अभेद्य भौगोलिक स्थिति और अजेय प्राचीर के कारण यह दुर्ग शत्रुओं की पहुँच से बाहर माना जाता था। जब चित्तौड़गढ़ असुरक्षित होता था, तो मेवाड़ के शासक यहीं आश्रय लेते थे। पन्ना धाय ने कुँवर उदय सिंह की रक्षा हेतु उन्हें यहीं सुरक्षित पहुँचाया था और महाराणा प्रताप का जन्म भी इसी दुर्ग के कटारगढ़ में हुआ था। यह किला मेवाड़ के संघर्ष, स्वाभिमान और गौरवशाली इतिहास का प्रमुख साक्षी है।

101. (3) बावड़ी में जल स्तर तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ होती हैं।
राजस्थान की दुर्ग स्थापत्य कला में 'बावड़ी' और साधारण कुएं के बीच मुख्य अंतर सीढ़ियों की उपस्थिति का है। कुएं से जल प्रायः रस्सी और बाल्टी की सहायता से ऊपर खींचा जाता है, जबकि बावड़ी एक बहु-मंजिला संरचना होती है जिसमें नीचे जल स्तर तक पहुँचने के लिए पत्थर की चौड़ी और कलात्मक सीढ़ियाँ बनी होती हैं। बावड़ियाँ न केवल जल संचयन का साधन थीं, बल्कि वे सामाजिक मेलजोल और भीषण गर्मियों में ठंडक प्रदान करने वाले विश्राम स्थल के रूप में भी प्रयुक्त होती थीं।

102. (2) प्लास्टर की वह तकनीक जिससे संगमरमर जैसी चमकदार सतह प्राप्त होती है।
'आरायश' राजस्थान की एक अत्यंत प्रसिद्ध भित्ति चित्रकला और प्लास्टर तकनीक है, जो विशेष रूप से आमेर और जयपुर के महलों में देखी जा सकती है। इसमें चूने के प्लास्टर की कई बारीक परतें लगाई जाती हैं और अंत में उन्हें विशेष पत्थरों से घिसकर इतना चिकना और चमकदार बना दिया जाता है कि वह असली संगमरमर जैसा प्रतीत होता है। इस सतह पर किए गए चित्र लंबे समय तक पूरी तरह सुरक्षित और जीवंत रहते हैं। यह तकनीक राजस्थानी कारीगरों के तकनीकी कौशल का उत्कृष्ट उदाहरण है।

103. (4) बादल महल
जयपुर सिटी पैलेस परिसर में मुबारक महल, चंद्र महल और दीवान-ए-खास जैसे महत्वपूर्ण भवन स्थित हैं, जो शाही प्रशासन और निवास के मुख्य अंग हैं। 'बादल महल' इस मुख्य परिसर का भाग नहीं है, बल्कि यह मुख्य रूप से कुंभलगढ़ दुर्ग के कटारगढ़ का सबसे ऊपरी हिस्सा है, जहाँ महाराणा प्रताप का जन्म हुआ था। जयपुर में भी एक बादल महल है, लेकिन वह सिटी पैलेस के मुख्य आवासीय विन्यास से अलग तालकटोरा झील के पास स्थित है। अतः, यह ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ में विषम है।

104. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जयगढ़ दुर्ग को 'अजेय दुर्ग' माना जाता है क्योंकि अपने पूरे इतिहास में इसे युद्ध के माध्यम से कभी भी विजित नहीं किया जा सका। इसकी अजेयता का मुख्य कारण इसकी सुदृढ़ किलेबंदी और यहाँ स्थित एशिया का सबसे आधुनिक तोपखाना था। सवाई जय सिंह ने यहाँ तोपें बनाने का एक विशाल कारखाना स्थापित किया था, जहाँ 'जयबाण' जैसी शक्तिशाली तोपें निर्मित हुई थीं। श्रेष्ठ अग्नि-शक्ति और ऊँचाई पर स्थित होने के कारण शत्रु सेना कभी भी इस पर अधिकार करने का साहस नहीं कर सकी थी।

105. (3) जूनागढ़ दुर्ग, बीकानेर
बीकानेर का जूनागढ़ दुर्ग अपनी शानदार आंतरिक सजावट और भव्य महलों के लिए विख्यात है। 'गज मंदिर' और 'शीश महल' इसी दुर्ग परिसर के भीतर स्थित अत्यंत अलंकृत महल हैं। गज मंदिर में काँच का सुंदर काम और स्वर्ण चित्रकारी है, जबकि शीश महल दर्पणों की सूक्ष्म पच्चीकारी के लिए जाना जाता है। यह दुर्ग उन किलों में से एक है जो किसी पहाड़ी पर नहीं बल्कि समतल जमीन पर बने हैं, और इसकी कलात्मकता इसे राजस्थान के अन्य दुर्गों से एक अलग और विशिष्ट पहचान दिलाती है।

106. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
इन स्मारकों के निर्माण में उनके वास्तुकारों और संस्थापकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। लाल चंद उस्ता ने जयपुर के प्रसिद्ध हवा महल का डिजाइन तैयार किया था। मंडन महाराणा कुंभा के प्रमुख वास्तुकार थे जिन्होंने कुंभलगढ़ दुर्ग की रूपरेखा बनाई थी। राव जोधा ने 1459 में जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग की नींव रखी थी। वास्तुकार देपा ने पाली में स्थित रणकपुर जैन मंदिर की जटिल और भव्य संरचना को साकार किया था। ये सभी व्यक्तित्व राजस्थान की स्थापत्य विरासत के प्रमुख आधार स्तंभ माने जाते हैं।

107. (2) राणा कुंभा महल
चित्तौड़गढ़ दुर्ग में स्थित 'राणा कुंभा महल' राजपूत स्थापत्य कला के प्रारंभिक और महत्वपूर्ण चरणों का प्रतिनिधित्व करता है। इस महल की बनावट में पारंपरिक हिंदू तत्वों के साथ-साथ पूर्व-मुगल काल की स्थापत्य शैली, विशेष रूप से मेहरानों और गुंबदों के प्रारंभिक स्वरूप का समन्वय देखने को मिलता है। यह महाराणा कुंभा का मुख्य निवास स्थान था और यहीं मीराबाई ने भी अपना समय व्यतीत किया था। यह महल राजपूतों के सांस्कृतिक विकास और उनकी कलात्मक अनुकूलन क्षमता का एक जीवंत दस्तावेज है।

108. (1) केवल I और II
दिलवाड़ा जैन मंदिर अपनी छतों पर बहु-स्तरीय लटकते हुए संगमरमर के पेंडेंट के लिए प्रसिद्ध हैं, जो नक्काशी का सर्वोच्च शिखर माने जाते हैं। ऐतिहासिक रूप से, अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमणों के दौरान इन मंदिरों को काफी क्षति पहुँची थी, जिसका बाद में 14वीं शताब्दी में जीर्णोद्धार कराया गया था। यह कथन गलत है कि वे चंदेल शासकों के संरक्षण को दर्शाते हैं; वास्तव में इनका निर्माण और संरक्षण सोलंकी और वाघेला शासकों के मंत्रियों द्वारा किया गया था, जो गुजरात क्षेत्र से संबंधित थे। यह जैन कला का केंद्र है।

109. (3) रणथंभौर दुर्ग
'जोगी महल' रणथंभौर दुर्ग की तलहटी में स्थित एक प्रसिद्ध और सुरम्य ऐतिहासिक स्थल है। यह महल 'पदम तालाब' के किनारे स्थित है और मूल रूप से शाही परिवार के लिए एक शिकारगाह के रूप में बनाया गया था। बाद में, यहाँ एक साधु के रहने के कारण इसका नाम जोगी महल पड़ा था। वर्तमान में, यह रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के भीतर स्थित है और पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण का केंद्र है। यहाँ से दुर्ग की विशाल दीवारों और आसपास के सघन वनों का अत्यंत सुंदर दृश्य दिखाई देता है।

110. (4) सुरक्षित पहाड़ी दुर्गों से नियोजित, खुले मैदानी प्रासादों की ओर संक्रमण।
आमेर से जयपुर सिटी पैलेस तक का विकास राजस्थान के राजनीतिक और सुरक्षात्मक वातावरण में आए महत्वपूर्ण बदलाव को दर्शाता है। आमेर एक पहाड़ी दुर्ग था जिसे मुख्य रूप से सुरक्षा और प्रतिरक्षा की दृष्टि से बनाया गया था। जैसे-जैसे मुगल साम्राज्य के साथ संबंध सुदृढ़ हुए और सुरक्षा की चिंताएँ कम हुईं, सवाई जय सिंह ने मैदानी इलाके में जयपुर जैसा नियोजित शहर बसाया। सिटी पैलेस इसी नए युग का प्रतीक है, जहाँ सुरक्षा के स्थान पर भव्यता और नागरिक सुख-सुविधाओं को प्राथमिकता दी गई थी।

111. (1) तारागढ़ दुर्ग, अजमेर
अजमेर का तारागढ़ दुर्ग, जिसे 'अरावली का अरमान' भी कहा जाता है, मीरान साहब की दरगाह के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। मीरान साहब इस दुर्ग के गवर्नर थे जिन्होंने युद्ध में वीरगति प्राप्त की थी। यह दरगाह हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के लिए गहरी श्रद्धा का केंद्र है। तारागढ़ दुर्ग अपनी सामरिक स्थिति और अजमेर शहर पर नियंत्रण के कारण इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। यहाँ की दरगाह और अन्य ऐतिहासिक स्मारक इस दुर्ग को एक विशिष्ट धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान प्रदान करते हैं।

112. (2) शाही महिलाओं के लिए जालीदार खिड़कियों से राजकीय उत्सवों को देखने हेतु।
आमेर दुर्ग के गणेश पोल के ठीक ऊपर स्थित 'सुहाग मंदिर' एक अत्यंत सुंदर और छोटा मंडप है। इसका मुख्य कार्य शाही परिवार की महिलाओं के लिए एक एकांत स्थान प्रदान करना था। यहाँ लगी बारीक जालीदार खिड़कियों के माध्यम से महिलाएँ नीचे 'जलेब चौक' में होने वाले सैन्य प्रदर्शनों, त्योहारों और राजकीय समारोहों को सुरक्षित रूप से देख सकती थीं, जबकि वे स्वयं बाहरी लोगों की दृष्टि से पूर्णतः ओझल रहती थीं। यह उस काल की सामाजिक परंपराओं और स्थापत्य कुशलता का एक बेहतरीन उदाहरण है।

113. (1) III, II, IV, I
नागर शैली के मंदिर की ऊर्ध्वाधर संरचना का एक निश्चित धार्मिक और स्थापत्य क्रम होता है। आधार पर सबसे पहले 'जगती' (चबूतरा) होती है। उसके ऊपर मुख्य ढांचा और 'शिखर' का निर्माण किया जाता है। शिखर के सबसे ऊपरी भाग पर 'आमलक' (एक चपटा पत्थर) स्थापित होता है। अंत में, आमलक के ऊपर 'कलश' रखा जाता है, जो मंदिर का सर्वोच्च बिंदु होता है। यह क्रम पृथ्वी से आकाश की ओर आध्यात्मिक यात्रा और दिव्यता के आरोहण को प्रतीकात्मक रूप से दर्शाता है। यह शास्त्रीय मंदिर विन्यास है।

114. (1) जैसलमेर
'पटवों की हवेली' जैसलमेर शहर में स्थित घरेलू वास्तुकला का सबसे उत्कृष्ट और भव्य उदाहरण मानी जाती है। यह पाँच

हवेलियों का एक समूह है, जिसका निर्माण 19वीं शताब्दी में एक अमीर व्यापारी पटवा परिवार द्वारा करवाया गया था। इन हवेलियों की खिड़कियों, छज्जों और द्वारों पर पीले बलुआ पत्थर पर की गई बारीक पत्थर की नक्काशी इतनी सूक्ष्म है कि वह लकड़ी के काम जैसी प्रतीत होती है। यह जैसलमेर के व्यापारियों की समृद्धि और राजस्थानी कारीगरों के अद्भुत हुनर का एक वैश्विक प्रतीक है।

115. (2) II, I, III
राजस्थान के स्मारकों को उनकी निर्माण सामग्री के आधार पर वर्गीकृत किया जा सकता है। जैसलमेर दुर्ग पूर्णतः 'पीले बलुआ पत्थर' से बना है जो मरुस्थल की धूप में सोने जैसा चमकता है। दिलवाड़ा के मंदिर अपनी अलौकिक सुंदरता हेतु 'श्वेत संगमरमर' के उपयोग के लिए विश्व विख्यात हैं। जयपुर का प्रसिद्ध हवा महल 'लाल और गुलाबी बलुआ पत्थर' से निर्मित है, जो इसे अपनी विशिष्ट गुलाबी पहचान देता है। यह क्रम इन स्मारकों के सौंदर्य और क्षेत्रीय निर्माण सामग्रियों की उपलब्धता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

116. (4) प्लास्टर तकनीक जिससे संगमरमर जैसी अत्यधिक चमकदार सतह प्राप्त होती है।
'आरायश' राजस्थान की एक विशिष्ट प्लास्टर तकनीक है जिसका उपयोग महलों की दीवारों को सजाने के लिए किया जाता था। इस प्रक्रिया में विशेष प्रकार के चूने और अन्य प्राकृतिक पदार्थों का उपयोग करके दीवारों पर कई बारीक परतें चढ़ाई जाती थीं। अंत में, घिसाई के माध्यम से सतह को इतना चिकना और परावर्तक बना दिया जाता था कि वह असली संगमरमर की तरह चमकने लगती थी। यह तकनीक न केवल सौंदर्य बढ़ाती थी, बल्कि दीवारों को नमी से भी बचाती थी। यह राजस्थानी शिल्प कौशल का शिखर है।

117. (3) मेहरानगढ़ दुर्ग
'चोखेलाव महल' जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग परिसर के भीतर स्थित एक अत्यंत महत्वपूर्ण कलात्मक स्थल है। यह महल विशेष रूप से अपने शानदार 'मारवाड़ शैली' के भित्ति चित्रों और राजपूत लघु चित्रों के संग्रह के लिए प्रसिद्ध माना जाता है। इन चित्रों में शिकार के दृश्य, युद्ध प्रसंग और पौराणिक कथाओं का जीवंत चित्रण किया गया है। यह महल राजपूत राजाओं के कला के प्रति प्रेम और उनकी जीवनशैली की भव्यता को प्रदर्शित करता है। यहाँ की चित्रकारी राजस्थानी कला के इतिहास का एक अमूल्य हिस्सा है।

118. (1) I, II, III और V
यूनेस्को विश्व धरोहर के रूप में नामित राजस्थान के पहाड़ी दुर्ग राजपूत सैन्य वास्तुकला के 11 शताब्दियों के विकास को दर्शाते हैं। ये सभी छह दुर्ग (चित्तौड़गढ़, कुंभलगढ़, रणथंभौर, गागरोन, आमेर, जैसलमेर) अपनी रक्षा हेतु पहाड़ों, वनों और जल जैसी प्राकृतिक विशेषताओं का उत्कृष्ट उपयोग करते हैं। ये दुर्ग राजपूत शक्ति और संस्कृति के प्रमुख केंद्र रहे हैं। इनमें निर्मित जल संचयन की विशाल संरचनाएँ आज भी क्रियाशील हैं। यह कहना गलत है कि केवल 15वीं शताब्दी के दुर्गों को ही चुना गया था।

119. (4) जस मंदिर
आमेर दुर्ग के भीतर स्थित 'जस मंदिर' अपनी अद्वितीय स्थापत्य विशेषताओं के लिए जाना जाता है। यहाँ प्रयुक्त 'बंगालदार' छत (मुड़ी हुई छत) का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जो मूल रूप से बंगाल की पारंपरिक झोपड़ियों से प्रेरित थी और बाद में मुगल और राजपूत वास्तुकला का अभिन्न अंग बन गई थी। यह छत न केवल सौंदर्य को बढ़ाती है, बल्कि वर्षा जल के सुगम निकास में भी सहायक होती है, जो तत्कालीन स्थापत्य नवाचार को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। यह राजपूत शैली का विस्तार है।

120. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान के स्मारकों के क्षेत्रीय और ऐतिहासिक नाम उनकी विशिष्ट पहचान को गहरा करते हैं। रणकपुर जैन मंदिर को उसके चार दिशाओं वाले प्रवेश द्वारों के कारण 'चौमुखा प्रासाद' कहा जाता है। जैसलमेर दुर्ग अपने सुनहरे पत्थरों के कारण 'स्वर्ण गिरी' के नाम से विख्यात है। जयगढ़ दुर्ग अपनी सामरिक पहाड़ी की चोटी पर स्थित होने के कारण 'चील का टीला' कहलाता है। जोधपुर के मेहरानगढ़ दुर्ग को उसकी विशालता और रक्षात्मक सुदृढ़ता के कारण 'गढ़ चिंतामणि' के नाम से भी जाना जाता है।

अध्याय 11

मानव निर्मित जल संरचनाएं एवं जल धरोहर

1. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प शुष्क राजस्थान में ऐतिहासिक रूप से विकसित जल प्रबंधन प्रणालियों के प्राथमिक कारण का सबसे सटीक वर्णन करता है?

(1) क्षेत्र में अत्यधिक वार्षिक बाढ़ के कारण उन्नत जल निकासी समाधानों की आवश्यकता।
(2) उच्च वाष्पोत्सर्जन और अल्प वर्षा के कारण कठोर जल संरक्षण की आवश्यकता।
(3) व्यापक बारहमासी नदी प्रणालियों के वितरण के लिए विस्तृत नेटवर्क की आवश्यकता।
(4) प्राचीन शासकों का प्राथमिक उद्देश्य केवल सौंदर्य बोध और सजावट था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

2. अरावली पर्वतमाला की भौगोलिक स्थिति पश्चिमी राजस्थान में जल की उपलब्धता को कैसे प्रभावित करती है?

(1) यह अरब सागर की मानसून शाखा के समानांतर स्थित है, जिससे पर्वतीय वर्षा नहीं हो पाती है।
(2) यह लौटते हुए उत्तर-पूर्वी मानसून की हवाओं को रोकता है, जिससे मरुस्थल में शीतकालीन बाढ़ आती है।
(3) यह बंगाल की खाड़ी से आने वाली नमी युक्त हवाओं को रोकता है, जिससे जैसलमेर में अत्यधिक वर्षा होती है।
(4) यह शुष्क मैदानों की ओर बहने वाली हिमनद-पोषित नदियों के प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

3. राजस्थान में जल की उपलब्धता के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

कथन I: राजस्थान में भारत के कुल भू-भाग का लगभग 10.4 प्रतिशत हिस्सा है, लेकिन यहाँ देश के सतही जल संसाधनों का 2 प्रतिशत से भी कम भाग उपलब्ध है।

कथन II: भूजल पर राज्य की अत्यधिक निर्भरता के कारण इसका अति-दोहन हुआ है, जिससे इसके अधिकांश प्रशासनिक खंड "असुरक्षित" श्रेणी में आ गए हैं।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

4. निम्नलिखित में से कौन सी संरचना पारंपरिक जल संचयन प्रणालियों का अपवाद है, जो मुख्य रूप से राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में उपयोग की जाती हैं?

(1) खड़ीन
(2) टाँका
(3) जोहड़
(4) नलकूप
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

5. सूची I में दी गई पारंपरिक जल संचयन संरचनाओं को सूची II में उनके विशिष्ट भौगोलिक या क्षेत्रीय जुड़ाव के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (संरचना)

A. खड़ीन
B. जोहड़
C. टाँका
D. झालरा

सूची II: (क्षेत्रीय जुड़ाव)

i. जोधपुर में निर्मित उप-सतही बावड़ियाँ
ii. बीकानेर और बाड़मेर में निर्मित वृत्ताकार भूमिगत जलाशय
iii. अलवर में प्रचलित मिट्टी के अवरोध बाँध
iv. जैसलमेर में प्रमुख अपवाह कृषि प्रणाली

(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

6. पश्चिमी राजस्थान के एक गाँव में अत्यधिक अनियमित वर्षा होती है, लेकिन वह एक बड़े, प्राकृतिक और मंद ढलान वाले जलग्रहण क्षेत्र के समीप स्थित है। इस विशिष्ट भू-भाग में कृषि उपज बढ़ाने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी स्वदेशी प्रणाली सबसे उपयुक्त है?

(1) बावड़ियों की एक श्रृंखला का निर्माण
(2) खड़ीन प्रणाली का कार्यान्वयन
(3) गहरे नलकूपों की खुदाई
(4) आना सागर जैसे बड़े सतही जलाशय का निर्माण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

7. राजस्थान में ऐतिहासिक जल प्रबंधन दृष्टिकोण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. जल प्रबंधन को शासकों और नागरिकों दोनों द्वारा एक पवित्र कर्तव्य और नैतिक उत्तरदायित्व माना जाता था।
II. स्वदेशी प्रणालियाँ मध्य एशिया से आयातित यांत्रिक तकनीकों पर पूर्णतः निर्भर थीं।

V. ये थार मरुस्थल के ग्रीष्मकालीन उच्च तापमान से पूर्णतः सुरक्षित हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II, III, और IV
(2) केवल II, III, IV, और V
(3) केवल I, III, IV, और V
(4) केवल I, II, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

73. जैसलमेर की 'खड़ीन' प्रणाली को किस रूप में सर्वोत्तम परिभाषित किया जा सकता है?

(1) गहरे भूजल के दोहन के लिए निर्मित एक पक्का गहरा कुआँ।
(2) जल वितरण के लिए एक पारंपरिक सामुदायिक विवाद समाधान तंत्र।
(3) वर्षा जल संचयन पर आधारित एक स्वदेशी अपवाह कृषि प्रणाली।
(4) राजपरिवार के मनोरंजन के लिए बनाई गई झीलों की एक श्रृंखला।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

74. जैसलमेर क्षेत्र में खड़ीन कृषि प्रणाली का विकास करने का श्रेय किस विशिष्ट समुदाय को दिया जाता है?

(1) बिश्नोई
(2) मांगणियार
(3) सहरिया
(4) पालीवाल ब्राह्मण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

75. एक पारंपरिक खड़ीन प्रणाली में जल के प्रवाह को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

I. नेहटा (अतिरिक्त जल निकासी मार्ग)
II. पथरीला जलग्रहण क्षेत्र
III. खड़ीन बाँध (मिट्टी का तटबंध)
IV. निचला खड़ीन खेत

(1) II, III, I, IV
(2) III, II, IV, I
(3) II, I, III, IV
(4) IV, I, III, II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

76. वह प्राथमिक कारण क्या है जो खड़ीन प्रणाली को 150 मिमी से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में कृषि में सक्षम बनाता है?

(1) बाँध द्वारा निर्मित गहरी झील से जल पंप करके सिंचाई की जाती है।
(2) संचित अपवाह रबी की फसलों के लिए भूमि में नमी का गहरा रिसाव सुनिश्चित करता है।
(3) यह प्रणाली खारे जल को कृषि योग्य बनाने के लिए उसका रासायनिक उपचार करती है।
(4) यह संरचना वाष्पीकरण से पूर्व फसल उगाने के लिए हरित गृह के रूप में कार्य करती है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

77. खड़ीन के भौतिक घटकों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:

(1) इसमें अतिरिक्त जल निकासी का तंत्र नहीं होता, जिससे तटबंध बार-बार टूटते हैं।
(2) मिट्टी का बाँध पारंपरिक रूप से जलग्रहण क्षेत्र की ऊपरी ढलान पर बनाया जाता है।
(3) कृषि क्षेत्र विशेष रूप से निकटवर्ती पथरीली पहाड़ियों पर स्थित होता है।
(4) अतिरिक्त बाढ़ के जल को सुरक्षित निकालने के लिए एक पक्का निकास मार्ग (नेहटा) बनाया जाता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

78. खड़ीन प्रणाली के पारिस्थितिक लाभों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह अपवाह जल के वेग को कम करके मृदा अपरदन को रोकता है।
II. यह अपवाह द्वारा लाए गए सूक्ष्म उपजाऊ तलछट को जमा करके मिट्टी को समृद्ध करता है।
III. यह स्थानीय भूजल पुनर्भरण करता है, जिससे समीपवर्ती कुओं का जल स्तर सुधरता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

79. खड़ीन खेत की मिट्टी के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

कथन I: खड़ीन खेत की उर्वरता बनाए रखने के लिए आधुनिक रासायनिक उर्वरकों की भारी आवश्यकता होती है।

कथन II: अपवाह जल प्राकृतिक रूप से महीन गाद और कार्बनिक पदार्थ जमा करता है, जिससे सदियों तक उर्वरता बनी रहती है।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

80. सूची I में खड़ीन प्रणाली से जुड़े शब्दों को सूची II में उनके कार्यात्मक अर्थों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (पारंपरिक शब्द)

A. धोरा
B. आगोर
C. बैठक
D. नेहटा

सूची II: (अर्थ)

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

15. बावड़ियों के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इन्होंने महत्वपूर्ण व्यापारिक मार्गों के सूचक के रूप में कार्य किया, जिससे यात्रियों और व्यापारियों को विश्राम मिला।
II. संरचनात्मक गहराई के कारण इनमें प्राकृतिक शीतलन होता था, जिससे ये भीषण गर्मी में सामुदायिक स्थल बन गए।
III. जल के निम्नतम स्तर तक पहुँच सामान्य नागरिकों के लिए प्रतिबंधित थी और केवल राजपरिवार के लिए आरक्षित थी।
IV. जल पूजा से संबंधित त्योहार, जैसे जल झुलनी एकादशी, प्रायः इन स्थलों पर मनाए जाते थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, II, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

16. बावड़ी निर्माण के संदर्भ में, सीढ़ीदार वास्तुकला ने किस प्राथमिक अभियांत्रिकी चुनौती का सफलतापूर्वक समाधान किया?
(1) इसने जल की सतह को पूर्णतः ढककर वाष्पीकरण को रोका।
(2) इसने मिट्टी के दबाव के विरुद्ध गहरी खाइयों की दीवारों को स्थिरता प्रदान की।
(3) इसने मानसून के दौरान बाढ़ के पानी की तीव्र निकासी की सुविधा दी।
(4) इसने जल जलग्रहण क्षेत्र के रखरखाव की आवश्यकता को समाप्त कर दिया।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

17. चाँद बावड़ी, जो भारत की सबसे गहरी और सबसे बड़ी बावड़ियों में से एक है, राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(1) जोधपुर
(2) दौसा
(3) बूंदी
(4) जैसलमेर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

18. आभानेरी स्थित चाँद बावड़ी के मूल निर्माण में मुख्य रूप से किस राजवंश की स्थापत्य शैली परिलक्षित होती है?
(1) गुर्जर-प्रतिहार राजवंश
(2) चौहान राजवंश
(3) राठौड़ राजवंश
(4) सिसोदिया राजवंश
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

19. आभानेरी की चाँद बावड़ी में लगभग कितनी सममित संकीर्ण सीढ़ियाँ हैं?
(1) 1,500
(2) 2,500
(3) 3,500
(4) 4,500
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

20. चाँद बावड़ी के संरचनात्मक विन्यास के संबंध में सही कथन का चयन कीजिए:
(1) यह एक बंद भूमिगत संरचना है जहाँ सूर्य का प्रकाश नहीं पहुँचता।
(2) यह संरचना धार्मिक मूर्तिकला या मंदिरों से पूर्णतः रहित है।
(3) इसका निर्माण मुख्य रूप से रक्षात्मक सैन्य किलेबंदी के रूप में किया गया था।
(4) इसके तीन ओर सीढ़ियाँ हैं और चौथी ओर एक बहुमंजिला मंडप है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

21. चाँद बावड़ी की ढालू सीढ़ियों को देखने पर होने वाले दृष्टिभ्रम का प्राथमिक कारण क्या है?
(1) वैकल्पिक अनुक्रमों में विभिन्न रंगों के संगमरमर का उपयोग।
(2) स्थिर जल की सतह पर सूर्य की किरणों का प्रतिबिंब।
(3) समकोण पर दोहरी सीढ़ियों की सटीक ज्यामितीय व्यवस्था।
(4) प्राचीन वास्तुकारों द्वारा बड़े उत्तल दर्पणों का कूटनीतिक प्रयोग।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

22. चाँद बावड़ी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह आभानेरी गाँव में स्थित है।
II. इसका निर्माण 8वीं और 9वीं शताब्दी के दौरान किया गया था।
III. इससे सटा मंदिर हर्षत माता को समर्पित है, जो प्रसन्नता की देवी मानी जाती हैं।
IV. यह भूमि में लगभग 13 मंजिल गहराई तक विस्तृत है।
V. ऊपरी मंडप संरचनाओं को बाद में मुगल काल के दौरान जोड़ा गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, IV, और V
(3) केवल I, III, IV, और V
(4) I, II, III, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

23. चाँद बावड़ी के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) इसका निर्माण राजा चाँद के नाम से ज्ञात शासक ने करवाया था।
(2) यह शुष्क क्षेत्रों में जल संरक्षण का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।
(3) इसके निचले स्तर सतह के तापमान की तुलना में अधिक ठंडे रहते हैं।
(4) भूमिगत नदी के प्रवाह के कारण यह वर्ष भर जल से लबालब रहती है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

24. निम्नलिखित में से कौन सा क्रम चाँद बावड़ी की वास्तुकला में ऐतिहासिक प्रभाव के प्राचीनतम से नवीनतम कालक्रम को दर्शाता है?
(1) ब्रिटिश काल के संशोधन, मुगल मंडप, गुर्जर-प्रतिहार आधार
(2) गुर्जर-प्रतिहार आधार, चौहान कालीन विस्तार, मुगल मंडप
(3) मुगल आधार, गुर्जर-प्रतिहार मंडप, राजपूत आधुनिक जीर्णोद्धार
(4) मौर्य कालीन आधार, गुप्त कालीन मूर्तियाँ, ब्रिटिश कालीन स्तंभ
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

25. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प उदयपुर की प्रमुख झीलों का उत्तर से दक्षिण की ओर सही भौगोलिक क्रम दर्शाता है?
(1) पिछोला, फतेह सागर, स्वरुप सागर
(2) फतेह सागर, स्वरुप सागर, पिछोला
(3) स्वरुप सागर, पिछोला, फतेह सागर
(4) पिछोला, स्वरुप सागर, फतेह सागर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

26. प्रसिद्ध द्वीप महल 'जग निवास' और 'जग मंदिर' निम्नलिखित में से किस झील में स्थित हैं?
(1) पिछोला झील
(2) फतेह सागर झील
(3) आना सागर झील
(4) सिलीसेढ़ झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

27. सांभर झील के पारिस्थितिक महत्व के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) यह कृषि सिंचाई के लिए निर्मित एक बड़ी कृत्रिम मीठे पानी की झील है।
(2) अपनी अत्यधिक उच्च विषाक्तता के कारण इसमें सूक्ष्म जीवों का पूर्णतः अभाव है।
(3) यह जयपुर शहर को जल आपूर्ति करने वाली एक गहरी ज्वालामुखी क्रेटर झील है।
(4) यह राजहंस के महत्व के कारण नामित एक रामसर स्थल है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

28. सूची I में राजस्थान की प्रमुख झीलों को सूची II में उनके ऐतिहासिक निर्माताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (झील)
A. पिछोला झील
B. फतेह सागर झील
C. आना सागर झील
D. राजसमंद झील
सूची II: (ऐतिहासिक निर्माता/जीर्णोद्धारकर्ता)
i. महाराणा राज सिंह
ii. अर्णोराज
iii. महाराणा फतेह सिंह
iv. महाराणा लाखा के शासनकाल में एक बंजारा
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

29. सांभर नमक झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: झील में मेंढा, रुपनगढ़, खारी और खंडेला सहित कई मौसमी धाराओं से जल आता है।
कथन II: झील की उच्च लवणता का मुख्य कारण अरावली श्रेणी में नमक युक्त चट्टानों का घुलना है, जो सदियों से इन धाराओं द्वारा लाया गया है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

30. जल की प्रकृति (लवणता/मिठास) के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सी झील असंगत है?
(1) सांभर झील
(2) पिछोला झील
(3) फतेह सागर झील
(4) सिलीसेढ़ झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

31. फतेह सागर झील को पिछोला झील से जोड़ने वाले उस जल मार्ग का क्या नाम है जो उनके जल स्तर को संतुलित करता है?
(1) गंग नहर
(2) इन्दिरा गाँधी नहर
(3) नर्मदा नहर
(4) स्वरुप सागर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

32. फतेह सागर झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इसका निर्माण मूलतः महाराणा जय सिंह द्वारा किया गया था, परंतु बाद में महाराणा फतेह सिंह द्वारा इसका पुनर्निर्माण कराया गया।
II. इसके एक द्वीप पर उदयपुर सौर वेधशाला स्थित है।
III. यह एक अत्यधिक खारी झील है जहाँ से व्यावसायिक नमक निकाला जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

33. अपनी धार्मिक पवित्रता के लिए विख्यात पुष्कर झील लगभग कितने स्नान घाटों से घिरी हुई है?
(1) 21
(2) 52
(3) 84
(4) 108
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

34. पुष्कर झील के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे उपयुक्त है?
(1) यह भगवान ब्रह्मा से संबंधित है और यहाँ उनका सुविख्यात मंदिर स्थित है।
(2) यह विशेष रूप से एक जैन तीर्थ स्थल है जहाँ हिंदू मंदिर नहीं हैं।
(3) इसकी खुदाई सम्राट अकबर ने अपनी मेवाड़ विजय के उपलक्ष्य में करवाई थी।
(4) यह हाल ही में कृषि उद्देश्यों के लिए निर्मित एक आधुनिक जलाशय है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

35. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पुष्कर झील ने हाल के दशकों में जल स्तर में गिरावट और अत्यधिक गाद जमने जैसी गंभीर पारिस्थितिक चुनौतियों का सामना किया है।
कारण (R): आसपास की अरावली पहाड़ियों में वनों की कटाई और अनियंत्रित व्यावसायिक गतिविधियों ने इसके प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्र को क्षतिग्रस्त कर दिया है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

36. प्रसिद्ध वार्षिक ऊँट मेला, जो एक प्रमुख सांस्कृतिक आयोजन है, कार्तिक माह में किस झील के किनारे आयोजित किया जाता है?
(1) आना सागर झील
(2) पुष्कर झील
(3) नक्की झील
(4) सांभर झील
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

37. निम्नलिखित में से कौन सा घाट पुष्कर झील के ऐतिहासिक घाटों में सम्मिलित नहीं है?
(1) ब्रह्मा घाट
(2) दशाश्वमेध घाट
(3) गऊ घाट
(4) वराह घाट
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

38. पुष्कर झील में गाद जमने की समस्या का प्रत्यक्ष कारण निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि है?
(1) जलग्रहण क्षेत्रों में वनस्पति का विनाश और बालू का खनन।
(2) झील के पारितंत्र में विभिन्न विदेशी मछली प्रजातियों का प्रवेश।
(3) तीर्थयात्रियों द्वारा वार्षिक आधार पर किया जाने वाला अनुष्ठानिक स्नान।
(4) पर्यटकों के लिए मोटर चालित नौकाओं का अत्यधिक संचालन।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

39. निम्नलिखित में से कौन सी रणनीति पुष्कर झील के दीर्घकालिक पारिस्थितिक पुनरुद्धार के लिए सबसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है?
(1) जल रिसाव रोकने के लिए झील के तल को सीमेंट से पक्का करना।
(2) जल स्तर बनाए रखने के लिए गहरे जलभृतों से भूजल पंप करना।
(3) अरावली जलग्रहण क्षेत्र का पुनर्वनीकरण और भूमि उपयोग का नियमन करना।
(4) जल सतह क्षेत्र बढ़ाने के लिए सभी ऐतिहासिक घाटों को हटा देना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

40. पुष्कर झील के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित है।
II. इसका उल्लेख रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलता है।
III. झील का जल प्राकृतिक रूप से अत्यधिक खारा है, जो कृषि के लिए अनुपयुक्त है।
IV. राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना के अंतर्गत इसके संरक्षण और गाद निकालने की परियोजनाएं शुरु की गई हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, II, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

41. अजमेर की प्रमुख कृत्रिम झील 'आना सागर' का निर्माण 12वीं शताब्दी में किस शासक द्वारा करवाया गया था?
(1) पृथ्वीराज चौहान
(2) महाराणा प्रताप
(3) सवाई जय सिंह
(4) अर्णोराज
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

42. सूची I में दी गई ऐतिहासिक विशेषताओं को सूची II में उन झीलों के साथ सुमेलित कीजिए जिनसे वे संबंधित हैं:
सूची I: (विशेषता/स्मारक)
A. दौलत बाग (सुभाष उद्यान)
B. बारादरी (संगमरमर के मंडप)
C. शाही शिकारगाह (महल)
D. अरावली जलग्रहण क्षेत्र
सूची II: (संबंधित झील)
i. आना सागर झील (जहाँगीर द्वारा निर्मित)
ii. आना सागर झील (शाहजहाँ द्वारा निर्मित)
iii. सिलीसेढ़ झील (महाराजा विनय सिंह द्वारा निर्मित)
iv. आना सागर और सिलीसेढ़ दोनों के लिए सामान्य
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

43. अपनी प्राकृतिक सुंदरता और ऐतिहासिक शिकारगाह के लिए प्रसिद्ध सिलीसेढ़ झील राजस्थान के किस जिले में स्थित है?
(1) उदयपुर
(2) अजमेर
(3) अलवर
(4) भरतपुर
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

44. आना सागर झील के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) इसका निर्माण अजमेर शहर को विश्वसनीय जल आपूर्ति प्रदान करने के लिए किया गया था।
(2) इसके जलग्रहण क्षेत्रों को बाद में मुगल सम्राटों द्वारा सौंदर्यपूर्ण बनाया गया।
(3) भीषण गर्मी और सूखे के दौरान झील के सूखने की संभावना रहती है।
(4) इसका निर्माण लूणी नदी पर बाँध बनाकर किया गया था।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

45. राजस्थान की निम्नलिखित झीलों को उनके मूल निर्माण के कालक्रमानुसार (प्राचीनतम से नवीनतम) व्यवस्थित कीजिए:
I. आना सागर झील
II. राजसमंद झील
III. फतेह सागर झील
(1) I, II, III
(2) II, I, III
(3) III, I, II
(4) I, III, II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

46. आना सागर झील के तटबंध पर स्थित 'बारादरी' (संगमरमर के मंडप) का निर्माण किस मुगल सम्राट ने करवाया था?
(1) अकबर
(2) शाहजहाँ
(3) जहाँगीर
(4) औरंगज़ेब
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

47. 1845 में महाराजा विनय सिंह द्वारा सिलीसेढ़ झील के निर्माण के प्राथमिक उद्देश्य का सबसे सटीक वर्णन क्या है?
(1) अलवर किले के चारों ओर एक रक्षात्मक खाई का निर्माण करना।
(2) अलवर शहर को पेयजल और कृषि आवश्यकताओं के लिए जल पहुँचाना।
(3) विभिन्न प्रवासी पक्षियों के लिए एक समर्पित अभयारण्य बनाना।
(4) राजमहल के उपयोग के लिए जलविद्युत उत्पन्न करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

48. आना सागर और सिलीसेढ़ झीलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. आना सागर अजमेर में तथा सिलीसेढ़ अलवर में स्थित है।
II. दोनों झीलें विशुद्ध प्राकृतिक निकाय हैं जिनके लिए किसी मानवीय अभियांत्रिकी की आवश्यकता नहीं थी।
III. आना सागर में दौलत बाग जैसे मुगल वास्तुकला के उदाहरण मिलते हैं।
IV. सिलीसेढ़ झील के समीप स्थित महल अब एक हेरिटेज होटल के रूप में संचालित है।
V. दोनों झीलें अरावली पहाड़ियों से आने वाले मानसून अपवाह पर निर्भर हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, III, IV, और V
(2) केवल I, II, III, और V
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) I, II, III, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

49. राजस्थान की पारंपरिक जल विरासत के संदर्भ में, 'कुंड' क्या है?
(1) एक गहरी बावड़ी जैसी संरचना जिसका उपयोग केवल शाही उत्सवों के लिए होता है।
(2) कृषि सिंचाई के लिए नदी पर बनाया गया एक विशाल कच्चा बाँध।
(3) एक ढलवां जलग्रहण क्षेत्र जो वर्षा जल को एक केंद्रीय भूमिगत गड्ढे में संचित करता है।
(4) अरावली की तलहटी से निकलने वाला एक प्राकृतिक मीठे पानी का सोता।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

50. पारंपरिक कुंड के घटकों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत है?
(1) पायतन — अतिरिक्त बाढ़ के जल को बाहर निकालने का मार्ग
(2) आगोर — कृत्रिम रूप से तैयार किया गया जलग्रहण क्षेत्र
(3) सूता — केंद्रीय भंडारण गड्ढा
(4) जाली — कचरा रोकने के लिए प्रवेश मार्ग पर लगा आवरण
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

51. कुंडों के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: कुंड पारंपरिक रूप से उन क्षेत्रों में पेयजल संचयन के लिए बनाए गए थे जहाँ भूजल अत्यधिक खारा होता है।
कथन II: कुंड में संचित जल को शुद्ध माना जाता है क्योंकि इसके जलग्रहण क्षेत्र को अत्यंत स्वच्छ रखा जाता है और वहाँ पशुओं का प्रवेश वर्जित होता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

52. सूची I में दी गई जल संरचनाओं को सूची II में उनकी प्रमुख संरचनात्मक विशेषताओं के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संरचना)
A. कुंड
B. बावड़ी
C. खड़ीन
D. जोहड़
सूची II: (विशेषताएं)
i. कलात्मक सीढ़ियों वाली भूमिगत संरचना
ii. तश्तरी के आकार का कृत्रिम जलग्रहण क्षेत्र जो एक गहरे गड्ढे से जुड़ा होता है
iii. जल भंडारण और भूजल पुनर्भरण के लिए मिट्टी का अवरोध बाँध
iv. अपवाह कृषि के लिए पहाड़ियों की ढलानों पर निर्मित लंबा मिट्टी का तटबंध
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

NODIA

53. यदि कोई समुदाय शुद्ध जल की अधिकतम प्राप्ति के लिए कुंड को अनुकूलित करना चाहता है, तो इसके जलग्रहण क्षेत्र (आगोर) पर क्या किया जाना चाहिए?
(1) जल रिसाव बढ़ाने के लिए जलग्रहण क्षेत्र की गहरी जुताई करना।
(2) वनस्पतियों को हटाने के लिए पशुओं की चराई को बढ़ावा देना।
(3) अपवाह और शुद्धता को अधिकतम करने के लिए आगोर को चूने या राख से लेपना।
(4) जल आपूर्ति बढ़ाने के लिए जलग्रहण क्षेत्र के समीप गहरे नलकूप खोदना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

54. कुंड में जल की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए उपयोग किए जाने वाले पारंपरिक तत्वों में निम्नलिखित में से कौन सा असंगत है?
(1) केंद्रीय भंडारण गड्ढे को एक सुरक्षात्मक गुंबद या ढक्कन से ढकना।
(2) मलबे को छानने के लिए जल प्रवेश मार्गों पर जाली लगाना।
(3) गड्ढे की आंतरिक दीवारों पर चूने का पलस्तर करना।
(4) जल की ओर जाने वाले बड़े सार्वजनिक स्नान घाटों का निर्माण।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

55. कुंडों से जुड़ी पारंपरिक सामाजिक प्रथाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पेयजल के कुंड के जलग्रहण क्षेत्र (आगोर) में प्रवेश से पूर्व जूते उतारना अनिवार्य है।
II. कुंड अक्सर धनी व्यक्तियों द्वारा पुण्य कार्य के रूप में निर्मित कराए जाते थे।
III. कुंड के जल का उपयोग मुख्य रूप से बड़े पैमाने पर कृषि सिंचाई के लिए होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

56. जल रिसाव रोकने और शुद्धता बनाए रखने के लिए कुंड के निर्माण में पारंपरिक रूप से किस सामग्री का उपयोग नहीं किया जाता है?
(1) चूना
(2) अत्यधिक सरंध्र बलुआ पत्थर

III. जल निकायों के जलग्रहण क्षेत्रों को अक्सर 'ओरण' के रूप में जाने जाने वाले पवित्र उपवनों के रूप में संरक्षित किया जाता था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

8. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): पश्चिमी राजस्थान में जीवन निर्वाह के लिए पारंपरिक वर्षा जल संचयन प्रणालियाँ अनिवार्य हैं।

कारण (R): यह क्षेत्र वर्षा की उच्च परिवर्तनशीलता, बारहमासी नदियों के अभाव और गहरे तथा खारे जलभृतों द्वारा अभिलक्षित है।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

9. राजस्थान में पारंपरिक बावड़ी की विशिष्ट स्थापत्य विशेषता क्या है?

(1) खुले में वर्षा जल संचयन के लिए उपयोग किया जाने वाला उथला तश्तरीनुमा क्षेत्र।
(2) एक प्रमुख मौसमी नदी पर निर्मित मिट्टी का एक बड़ा तटबंध।
(3) भूजल स्तर तक नीचे जाने वाली कलात्मक सीढ़ियाँ या गलियारे।
(4) पेयजल के भंडारण के लिए निर्मित एक वृत्ताकार पक्का जलाशय।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

10. बावड़ियों को ऐतिहासिक रूप से उनके प्रवेश द्वारों और संरचनाओं के आधार पर वर्गीकृत किया गया है। निम्नलिखित में से कौन सा प्रकार दो प्रवेश द्वारों वाली बावड़ी को संदर्भित करता है?

(1) भद्रा
(2) नंदा
(3) जया
(4) विजया
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

11. मध्यकाल के दौरान बावड़ियों की कार्यात्मक उपयोगिता के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प असंगत है?

(1) शुष्क मौसम के दौरान विश्वसनीय पेयजल उपलब्ध कराना।
(2) सामाजिक समूहों के लिए एक शीतल भूमिगत विश्राम स्थल के रूप में उपयोग।
(3) धार्मिक अनुष्ठानों और उत्सवों के स्थल के रूप में कार्य करना।
(4) बड़े शहरी केंद्रों के लिए जलविद्युत उत्पन्न करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

12. राजस्थान में बावड़ियों के निर्माण के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

कथन I: बावड़ियों का निर्माण विशेष रूप से केवल सत्तारूढ़ राजाओं और स्थानीय सामंतों द्वारा ही किया जाता था।

कथन II: ऐतिहासिक प्रमाण बताते हैं कि बड़ी संख्या में बावड़ियों का निर्माण राजघरानों की महिलाओं, धनी व्यापारियों और स्थानीय समुदायों द्वारा पुण्य कार्य के रूप में किया गया था।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

13. बावड़ियों की वास्तुकला के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. इनमें अक्सर नक्काशीदार मंडप और विश्राम कक्ष होते थे।
II. बावड़ी की दीवारों के ताकों में अक्सर देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित की जाती थीं।
III. इनका निर्माण केवल कच्ची मिट्टी की ईंटों का उपयोग करके किया गया था ताकि पानी का तेजी से रिसाव हो सके।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) केवल I और II
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

14. सूची I में पारंपरिक राजस्थानी बावड़ियों से जुड़े स्थापत्य शब्दों को सूची II में उनके सही अर्थों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (स्थापत्य शब्द)

A. कूट
B. तोरण
C. मंडप
D. गर्भगृह

सूची II: (अर्थ)

i. सार्वजनिक अनुष्ठानों के लिए स्तंभों वाला कक्ष
ii. आंतरिक कक्ष जहाँ मुख्य देवता को स्थापित किया जाता है
iii. सीढ़ियों की निरंतरता को तोड़ने वाला मंच या चबूतरा
iv. अलंकृत मेहराबदार प्रवेश द्वार

लिए निरंतर चुनौतियां हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I, II, और IV
(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, II, और III
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

66. पारंपरिक राजस्थानी जल वास्तुकला में एक नाडी, कुंड से किस प्रकार भिन्न है?

(1) नाडी पक्के जलग्रहण क्षेत्र का उपयोग करती है, जबकि कुंड केवल प्राकृतिक भू-भाग पर निर्भर है।
(2) नाडी एक खुला सतही तालाब है, जबकि कुंड एक ढका हुआ भूमिगत जलाशय है।
(3) नाडी भूजल पुनर्भरण के लिए है, जबकि कुंड केवल पशुओं के लिए।
(4) नाडी विशेष रूप से शहरी है, जबकि कुंड केवल ग्रामीण क्षेत्रों में होते हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

67. निम्नलिखित में से कौन सा रखरखाव मुद्दा समय के साथ नाडी की जल संग्रहण क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से कम कर देता है?

(1) आधुनिक उर्वरकों के उपयोग से होने वाला शैवाल प्रस्फुटन।
(2) क्षेत्रीय भूकंपों के कारण तटबंध का संरचनात्मक रूप से ढहना।
(3) औद्योगिक मोटरों द्वारा संचित जल की अत्यधिक निकासी।
(4) अपवाह जल द्वारा लाई गई गाद और बालू का तीव्र जमाव।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

68. सूची I में दी गई पारंपरिक जल संरचनाओं को सूची II में उनकी प्रमुख चुनौतियों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (संरचना)

A. नाडी
B. टाँका
C. खड़ीन
D. बावड़ी

सूची II: (कमजोरी/चुनौती)

i. सतही वाष्पीकरण और तीव्र गाद जमाव के प्रति संवेदनशीलता
ii. शहरी क्षेत्रों में संरचनात्मक उपेक्षा और कचरा फेंकने की समस्या
iii. विशिष्ट ढलान और मिट्टी पर निर्भरता तथा वर्षा के बदलते स्वरुप के प्रति संवेदनशीलता
iv. जलग्रहण क्षेत्र स्वच्छ न होने पर संचित पेयजल का दूषित होना

(1) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

69. नाडी में जल की उपलब्धता बढ़ाने के लिए मानसून से पूर्व समुदाय द्वारा कौन सा पारंपरिक अभ्यास किया जाता है?

(1) आधुनिक औद्योगिक रसायनों के साथ जल का उपचार।
(2) वाष्पीकरण रोकने के लिए पूरे सतह क्षेत्र को प्लास्टिक शीट से ढकना।
(3) तालाब की गहराई बढ़ाने के लिए जमा हुई गाद की खुदाई और सफाई।
(4) जल स्तर बनाए रखने के लिए कृषि अपशिष्ट जल को नाडी में मोड़ना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

70. शुष्क जलवायु में नाडी के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

कथन I: नाडी प्रायः जोहड़ों की तुलना में उथली होती हैं और उनमें गहराई की तुलना में सतह क्षेत्र अधिक होता है।

कथन II: उथली गहराई और उच्च सतह क्षेत्र के कारण नाडी का अधिकांश जल वाष्पीकरण में नष्ट हो जाता है।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?

(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं, और कथन II, कथन I का प्रत्यक्ष परिणाम है।
(2) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं, लेकिन वे असंबद्ध हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

71. खुले ग्रामीण तालाबों (नाडी) में संचित जल के पारंपरिक उपयोगों में निम्नलिखित में से कौन सा असंगत है?

(1) पालतू पशुओं और मवेशियों के लिए जल उपलब्ध कराना।
(2) घरेलू धुलाई और स्वच्छता के लिए जल प्रदान करना।
(3) स्थानीय वन्यजीवों और पक्षियों के लिए पेयजल स्रोत के रूप में।
(4) ग्रामीण चिकित्सालयों में शल्य चिकित्सा के लिए उच्च शुद्धता वाले जल की आपूर्ति।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

72. नाडी के निर्माण और उपयोगिता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. ये पश्चिमी राजस्थान में पारंपरिक सतही जल निकायों का सबसे सामान्य रूप हैं।
II. इनका आकार और जलग्रहण क्षेत्र यह निर्धारित करते हैं कि वे मानसून के बाद कितने समय तक जल बनाए रखेंगे।
III. ये ऐतिहासिक रूप से प्राकृतिक गर्तों की खुदाई करके बनाए जाते हैं।
IV. खुदाई से निकली मिट्टी का उपयोग जल रोकने के लिए तटबंध बनाने में किया जाता है।

(3) राख
(4) सीमेंट (आधुनिक संदर्भ में)
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

57. सूखे के प्रभाव को कम करने के लिए 'जोहड़ों' का सामुदायिक पुनरुद्धार राजस्थान के किस क्षेत्र से प्रमुखता से जुड़ा है?
(1) मेवाड़
(2) मारवाड़
(3) शेखावाटी और अलवर
(4) हाड़ौती
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

58. राजेंद्र सिंह के नेतृत्व में किस प्रमुख संगठन ने राजस्थान में जोहड़ों के पुनर्निर्माण के लिए समुदायों को संगठित किया?
(1) तरुण भारत संघ
(2) नर्मदा बचाओ आंदोलन
(3) बेयरफुट कॉलेज, तिलोनिया
(4) अरवरी संसद
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

59. निम्नलिखित में से कौन सा कथन जोहड़ को टाँका से सही ढंग से अलग करता है?
(1) जोहड़ एक भूमिगत बंद जलाशय है, जबकि टाँका एक खुला सतही तालाब है।
(2) जोहड़ केवल थार मरुस्थल में मिलते हैं, जबकि टाँका केवल अरावली में।
(3) जोहड़ भूजल पुनर्भरण के लिए निर्मित कच्चा बाँध है, जबकि टाँका एक पक्का भूमिगत जलाशय है।
(4) जोहड़ पूर्णतः पत्थर से निर्मित होते हैं, जबकि टाँका केवल मिट्टी से।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

60. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): जोहड़ों की श्रृंखला के निर्माण से सूखी हुई मौसमी नदियों को पुनर्जीवित किया जा सकता है।
कारण (R): जोहड़ वर्षा जल के तीव्र सतही अपवाह को रोकते हैं, जिससे जल धीरे-धीरे रिसकर भूज़ल स्तर को बढ़ाता है और नदियों को आधार प्रवाह प्रदान करता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

61. एक सूक्ष्म जल-विभाजक क्षेत्र में जोहड़ों के सफल क्रियान्वयन का प्रत्यक्ष पारिस्थितिक प्रभाव क्या होता है?
(1) गहरे जीवाश्म जलभृतों का तेजी से समाप्त होना।
(2) केंद्रित जल प्रवाह के कारण मृदा अपरदन में वृद्धि।
(3) आसपास की ऊपरी मृदा का स्थायी लवणीकरण।
(4) सूक्ष्म जलवायु और वनस्पति आवरण में सुधार।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

62. जोहड़ों के सामुदायिक प्रबंधन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) इसका नियोजन स्थानीय भू-भाग और जल प्रवाह के पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है।
(2) जोहड़ निजी संरचनाएँ हैं जिनका जल केवल भूमि स्वामी के लिए सुरक्षित रहता है।
(3) निर्माण और रखरखाव के लिए स्वैच्छिक श्रमदान एक मौलिक आधार है।
(4) ग्राम सभाएँ प्रायः जल के उपयोग और प्रबंधन के नियम निर्धारित करती हैं।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

63. जोहड़ों के कृषि प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: जोहड़ वर्ष भर नकदी फसलों की सिंचाई के लिए प्रत्यक्ष सतही जल उपलब्ध कराते हैं।
कथन II: जोहड़ों का मुख्य कृषि लाभ मिट्टी की नमी बढ़ाने और समीपवर्ती कुओं के पुनर्भरण से होता है, जिससे रबी की फसलें सुरक्षित होती हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

64. जोहड़ के प्राथमिक कार्य का सबसे सटीक वर्णन क्या है?
(1) अंतर्देशीय परिवहन के लिए गहरे नौवहन मार्ग के रूप में कार्य करना।
(2) व्यावसायिक मछली पालन के लिए स्थायी जल संचित करना।
(3) शाही महलों में सजावटी जल संरचना के रूप में कार्य करना।
(4) अपवाह को रोकना, मृदा अपरदन रोकना और भूज़ल पुनर्भरण को सुगम बनाना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

65. राजस्थान में 'नाडी' की विशेषता बताने वाले निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह एक पारंपरिक ग्रामीण तालाब है जिसका उपयोग प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्रों से जल संचित करने के लिए किया जाता है।
II. इसका स्थान रणनीतिक रूप से प्राकृतिक ढलानों और कम पारगम्यता वाली मिट्टी के आधार पर चुना जाता है।
III. इसका उपयोग मुख्य रूप से बड़े पैमाने पर जलविद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है।
IV. उच्च वाष्पीकरण दर और गाद जमना इसके रखरखाव के

i. अतिरिक्त जल निकासी का मार्ग
ii. अपवाह प्रदान करने वाला जलग्रहण क्षेत्र
iii. जल रोकने वाला मिट्टी का तटबंध
iv. जलमग्र क्षेत्र जहाँ कृषि की जाती है
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

81. बीकानेर, बाड़मेर और जोधपुर में 'टाँका' को पारंपरिक रूप से किस प्रकार परिभाषित किया जाता है?
(1) कपड़े धोने और नहाने के लिए उपयोग किया जाने वाला एक खुला सामुदायिक तालाब।
(2) वर्षा जल संचयन और भंडारण के लिए निर्मित एक पक्का भूमिगत जलाशय।
(3) सैन्य विजयों की स्मृति में बनाई गई एक अलंकृत बावड़ी।
(4) क्षेत्रीय नहरों के पार जल पहुँचाने के लिए प्रयुक्त लकड़ी का जलप्रणाल।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

82. पारंपरिक टाँका वास्तुकला में 'सूही' का विशिष्ट उद्देश्य क्या है?
(1) जलाशय में जल प्रवेश से पूर्व गाद और बालू को रोकना।
(2) सूर्य के प्रकाश को रोकने के लिए एक सुरक्षात्मक आवरण के रूप में।
(3) रस्सियों और बाल्टियों से जल निकालने के लिए बने चबूतरे के रूप में।
(4) अचानक आई बाढ़ के दौरान अतिरिक्त जल निकासी के मार्ग के रूप में।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

83. टाँका के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) ये मुख्य रूप से थार मरुस्थल के रेतीले क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
(2) रिसाव रोकने के लिए इनकी आंतरिक दीवारों को चूने और राख से लेपा जाता था।
(3) ये केवल सरकारी परियोजनाएं हैं और कभी निजी स्वामित्व में नहीं होते।
(4) सतही अपवाह बढ़ाने के लिए इनका जलग्रहण क्षेत्र प्रायः पक्का बनाया जाता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

84. टाँका के निर्माण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत है?
(1) आगोर — केंद्र की ओर ढलान वाला कृत्रिम जलग्रहण क्षेत्र
(2) जाली — कचरा रोकने के लिए प्रवेश मार्ग पर लगा आवरण
(3) छज्जा — बाहरी अशुद्ध जल को रोकने के लिए बनी उभरी हुई सीमा
(4) पाताल — वह भू-परत जहाँ से टाँका जल प्राप्त करता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

85. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): पश्चिमी राजस्थान की बिखरी हुई बस्तियों (ढाणियों) के लिए टाँका पेयजल सुरक्षा का मुख्य आधार है।
कारण (R): इनका ढका हुआ भूमिगत स्वरुप वाष्पीकरण को कम करता है और जल को धूल भरी आँधियों से प्रदूषित होने से बचाता है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

86. टाँका के निर्माण और रखरखाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: टाँका के जलग्रहण क्षेत्र (आगोर) को अभेद्य बनाने के लिए मिट्टी, राख और बजरी के मिश्रण का लेप लगाया जाता है।
कथन II: आधुनिक टाँका निर्माण में जलग्रहण क्षेत्र और आंतरिक दीवारों के लिए सीमेंट कंक्रीट का उपयोग बढ़ रहा है।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

87. यदि जोधपुर का एक आधुनिक शहरी घर पारंपरिक टाँका प्रणाली अपनाना चाहता है, तो सबसे वैज्ञानिक उपयोग क्या होगा?
(1) सीवेज लाइनों को जल संग्रहण स्रोत के रूप में प्रयुक्त करना।
(2) वाष्पीकरण के लिए उद्यान में एक खुला और उथला गड्ढा बनाना।
(3) जल स्तर के लिए टाँका को गहरे खारे जलभृतों से जोड़ना।
(4) छत के स्वच्छ वर्षा जल को पाइप द्वारा भूमिगत टाँका में संचित करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

88. एक पारंपरिक टाँका की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. स्वच्छ जलग्रहण क्षेत्र सुनिश्चित करने के लिए इसे स्थानीय स्तर पर ऊंचे स्थान पर बनाया जाता है।

(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

119. ऐतिहासिक बावड़ियों की उपेक्षा का निम्नलिखित में से कौन सा प्रत्यक्ष पारिस्थितिक परिणाम नहीं है?
(1) बावड़ी की सूक्ष्म जलवायु पर निर्भर स्थानीय जैव विविधता का ह्रास।
(2) बावड़ी का रोगों के वाहक कीटों के प्रजनन स्थल में परिवर्तन।
(3) क्षेत्रीय गहरे प्राचीन भूजल स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि।
(4) संरचनात्मक क्षति जिससे खतरनाक ढहाव की स्थिति उत्पन्न होती है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

120. राजस्थान के बार-बार होने वाले जल संकट का सबसे स्थायी समाधान क्या है?
(1) पुनर्जीवित स्वदेशी जल संचयन को सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के साथ जोड़ना।
(2) सुदूर स्थित प्रायद्वीपीय नदियों को जोड़ने की योजना पर पूर्णतः निर्भर रहना।
(3) उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए राज्य में कृषि कार्य को पूर्णतः त्याग देना।
(4) समाप्त होने तक विशेष रूप से केवल गहरे प्राचीन जलभृतों से जल निकालना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

II. शाही आदेशों द्वारा जलग्रहण क्षेत्रों (ओरण) को वनों की कटाई से सुरक्षित रखा जाता था।
III. शाही झीलों में कलात्मक संगमरमर के तटबंध (पाल) और मंडप (बारादरी) निर्मित किए जाते थे।
IV. शासकों के इतिहास और वंशावली वाले शिलालेख (प्रशस्तियाँ) प्रायः तटबंधों पर लगाए जाते थे।
V. उन्होंने जल प्रबंधन में सामुदायिक भागीदारी या निजी दान को पूर्णतः प्रतिबंधित किया था।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III, और IV
(2) केवल II, III, IV, और V
(3) केवल I, III, IV, और V
(4) I, II, III, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

97. पारंपरिक ग्रामीण राजस्थान में 'ओरण' क्या है?
(1) शाही महलों के लिए निर्मित एक भूमिगत जलप्रणाल।
(2) समुदाय द्वारा संरक्षित पवित्र उपवन जो जल जलग्रहण क्षेत्र के रूप में कार्य करता है।
(3) प्राचीन जलभृत तक पहुँचने के लिए खोदा गया एक विशेष गहरा कुआँ।
(4) अत्यधिक जल उपयोग पर ग्राम पंचायत द्वारा लगाया जाने वाला कर।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

98. राजस्थान की पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत आधुनिक ग्रामीण जल प्रबंधन में सही संस्थागत पदानुक्रम क्या है?
(1) ग्राम सभा → वार्ड सभा → जिला परिषद → पंचायत समिति
(2) वार्ड सभा → ग्राम सभा → पंचायत समिति → जिला परिषद
(3) पंचायत समिति → ग्राम सभा → वार्ड सभा → जिला परिषद
(4) जिला परिषद → पंचायत समिति → ग्राम सभा → वार्ड सभा
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

99. स्थानीय जल प्रबंधन में ग्राम सभा की भूमिका के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए:
(1) यह सामुदायिक नियोजन और सामाजिक अंकेक्षण के लिए एक मंच प्रदान करती है।
(2) यह जल स्रोतों की स्वच्छता के लिए स्थानीय नियम और दंड निर्धारित कर सकती है।
(3) यह नदी जल के बंटवारे के लिए अंतर्राष्ट्रीय संधियों का निर्धारण करती है।
(4) यह व्यक्तिगत जल संरचनाओं के लिए लाभार्थियों के चयन में सहायता करती है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

100. ग्रामीण जल आपूर्ति और प्रबंधन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

कथन I: पाइपलाइन आधारित केंद्रीकृत जल आपूर्ति के कारण पारंपरिक सामुदायिक जल निकायों की उपेक्षा हुई है।
कथन II: समुदाय आधारित विकेंद्रीकृत प्रबंधन, राज्य संचालित प्रणालियों की तुलना में स्वामित्व की भावना और बेहतर रखरखाव को बढ़ावा देता है।

निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

101. जल निकायों की सुरक्षा के लिए पारंपरिक सामुदायिक नियमों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. ओरण (पवित्र जलग्रहण क्षेत्र) में हरे वृक्षों की कटाई सामाजिक रूप से दंडनीय थी।
II. स्थानीय सहमति से पेयजल के तालाबों में पशुओं के प्रवेश और साबुन के उपयोग को प्रतिबंधित किया जाता था।
III. समुदाय जल नियमों को लागू करने के लिए नियमित रूप से राज्य के सशस्त्र सैनिकों की नियुक्ति करते थे।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

102. सूची I में जल प्रबंधन के सामुदायिक शब्दों को सूची II में उनके विवरणों के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (सामुदायिक शब्द)
A. ओरण
B. श्रमदान
C. कुईं
D. आगोर

सूची II: (विवरण)
i. समुदाय द्वारा किया गया स्वैच्छिक शारीरिक श्रम
ii. जलग्रहण क्षेत्र की जैव विविधता की रक्षा करने वाला पवित्र उपवन
iii. जलाशय की ओर ढलान वाला तैयार जलग्रहण क्षेत्र
iv. उप-सतही रिसाव को संचित करने के लिए निर्मित गहरा संकीर्ण कुआँ

(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

103. यदि दो किसानों के बीच खड़ीन में अपवाह जल के प्रवाह को लेकर विवाद होता है, तो पारंपरिक रूप से सबसे प्रभावी समाधान तंत्र क्या है?

32. (1) केवल I और II
फतेह सागर झील का निर्माण मूल रुप से महाराणा जय सिंह ने करवाया था, लेकिन बाद में महाराणा फतेह सिंह ने इसका पुनर्निर्माण कराया। इस झील के एक द्वीप पर स्थित उदयपुर सौर वेधशाला अपनी विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों के कारण प्रसिद्ध है। यह एक मीठे पानी की झील है, न कि खारी झील। इसका उपयोग पर्यटन और शहर की जलापूर्ति के लिए किया जाता है, न कि व्यावसायिक नमक उत्पादन हेतु।

33. (2) 52
राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित पुष्कर झील हिंदुओं के सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में से एक मानी जाती है। यह झील अर्धवृत्ताकार रुप में फैली हुई है और चारों ओर से लगभग 52 स्नान घाटों से घिरी हुई है। इन घाटों का निर्माण विभिन्न राजाओं और धनी व्यापारियों द्वारा करवाया गया था। प्रत्येक घाट का अपना विशेष धार्मिक महत्व है, जहाँ श्रद्धालु पवित्र स्नान करते हैं। यह आध्यात्मिक वातावरण प्रदान करती है।

34. (1) यह भगवान ब्रह्मा से संबंधित है और यहाँ उनका सुविख्यात मंदिर स्थित है।
पुष्कर झील का ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व अद्वितीय है, क्योंकि इसे पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान ब्रह्मा के कमल से उत्पन्न माना जाता है। यहाँ विश्व का सबसे प्रमुख और प्राचीन ब्रह्मा मंदिर स्थित है, जो इसे हिंदुओं के लिए 'तीर्थों का राजा' बनाता है। यह कोई आधुनिक जलाशय नहीं है, बल्कि सदियों पुरानी एक पवित्र प्राकृतिक झील है जिसका उल्लेख प्राचीन भारतीय ग्रंथों में विस्तार से मिलता है।

35. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पुष्कर झील वर्तमान में गंभीर पारिस्थितिक संकट से गुजर रही है, जिसमें जल स्तर में गिरावट और गाद का जमना मुख्य समस्याएं हैं। इसका प्राथमिक कारण आसपास की अरावली पहाड़ियों में बड़े पैमाने पर वनों की कटाई और अनियंत्रित निर्माण गतिविधियाँ हैं। इन मानवीय हस्तक्षेपों ने झील के प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्र को नष्ट कर दिया है, जिससे वर्षा का पानी सुचारु रुप से झील तक नहीं पहुँच पाता।

36. (2) पुष्कर झील
राजस्थान का विश्व प्रसिद्ध वार्षिक ऊँट मेला, जिसे पुष्कर मेले के रुप में जाना जाता है, प्रत्येक वर्ष कार्तिक माह की पूर्णिमा के अवसर पर पुष्कर झील के किनारे आयोजित किया जाता है। यह मेला न केवल पशुओं के व्यापार का एक बड़ा केंद्र है, बल्कि राजस्थान की जीवंत लोक संस्कृति और कला का भी प्रदर्शन है। इस दौरान हजारों श्रद्धालु झील के पवित्र जल में स्नान करते हैं।

37. (2) दशाश्वमेध घाट
पुष्कर झील के चारों ओर कई ऐतिहासिक घाट स्थित हैं, जिनमें ब्रह्मा घाट, गऊ घाट और वराह घाट अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। गऊ घाट पर कई प्रमुख हस्तियों की अस्थियां विसर्जित की गई हैं, जबकि वराह घाट भगवान विष्णु के अवतार से संबंधित है। इसके विपरीत, दशाश्वमेध घाट मुख्य रुप से वाराणसी में गंगा नदी के तट पर स्थित है और पुष्कर झील के ऐतिहासिक घाटों में सम्मिलित नहीं है।

38. (1) जलग्रहण क्षेत्रों में वनस्पति का विनाश और बालू का खनन।
पुष्कर झील में गाद जमने की समस्या का मुख्य कारण इसके जलग्रहण क्षेत्र में होने वाला पर्यावरणीय ह्रास है। अरावली की पहाड़ियों से वनस्पति के हटने और अनियंत्रित बालू खनन के कारण मिट्टी ढीली हो गई है। वर्षा के दौरान यह मिट्टी और रेत बहकर झील में जमा हो जाती है, जिससे झील की गहराई लगातार कम हो रही है। यह प्रक्रिया झील की जल धारण क्षमता को बाधित करती है।

39. (3) अरावली जलग्रहण क्षेत्र का पुनर्वनीकरण और भूमि उपयोग का नियमन करना।
पुष्कर झील के संरक्षण के लिए सबसे वैज्ञानिक तरीका इसके प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्र को पुनर्जीवित करना है। अरावली पहाड़ियों में सघन वृक्षारोपण करने से मिट्टी का कटाव रुकेगा और गाद जमा होना कम होगा। साथ ही, भूमि उपयोग का उचित नियमन करने से निर्माण गतिविधियों पर रोक लगेगी और प्राकृतिक जल प्रवाह सुनिश्चित होगा। केवल तल को पक्का करना या भूजल पंप करना पारिस्थितिकी हेतु स्थायी समाधान नहीं है।

40. (3) केवल I, II, और IV
पुष्कर झील अजमेर में स्थित है और इसका प्राचीन ग्रंथों में विस्तृत उल्लेख मिलता है, जो इसकी ऐतिहासिकता सिद्ध करता है। यह एक पवित्र मीठे पानी की झील है, खारी नहीं। इसके संरक्षण के लिए राष्ट्रीय झील संरक्षण योजना के तहत कई महत्वपूर्ण परियोजनाएं संचालित की जा रही हैं ताकि इसके आध्यात्मिक और पारिस्थितिक स्वरुप को बचाया जा सके। यह झील सदियों से राजस्थान की धार्मिक पहचान रही है।

41. (4) अर्णोराज
अजमेर की प्रसिद्ध 'आना सागर' झील एक विशाल कृत्रिम जलाशय है, जिसका निर्माण 12वीं शताब्दी में चौहान शासक अर्णोराज द्वारा करवाया गया था। अर्णोराज, जिन्हें 'आनाजी' के नाम से भी जाना जाता था, ने तुर्क आक्रमणकारियों पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में और शहर की जल आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु इस झील का निर्माण कराया। यह झील अजमेर की भौगोलिक सुंदरता और ऐतिहासिक समृद्धि का हिस्सा है।

42. (2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
आना सागर और सिलीसेढ़ झीलों के किनारे कई ऐतिहासिक स्मारक स्थित हैं। आना सागर के तट पर जहाँगीर ने 'दौलत बाग' बनवाया था, जबकि शाहजहाँ ने पाँच संगमरमर के मंडप जिन्हें 'बारादरी' कहा जाता है, का निर्माण करवाया। अलवर की सिलीसेढ़ झील के पास महाराजा विनय सिंह ने एक शाही महल और शिकारगाह का निर्माण कराया था। ये दोनों झीलें अपने जल हेतु अरावली पहाड़ियों के जलग्रहण क्षेत्रों पर निर्भर हैं।

(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

112. पारंपरिक जल संरचनाओं को उनकी जल भंडारण गहराई के अनुसार (सतह से गहराई की ओर) व्यवस्थित कीजिए:
I. बावड़ी
II. नाडी (ग्रामीण तालाब)
III. टाँका (भूमिगत जलाशय)
(1) II, III, I
(2) I, II, III
(3) III, II, I
(4) II, I, III
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

113. वर्तमान शहरीकरण और पारंपरिक जल निकायों के ह्रास के बीच सबसे महत्वपूर्ण संबंध क्या है?
(1) शहरीकरण के कारण प्राचीन कुओं का वैज्ञानिक मानचित्रण हुआ है।
(2) जलग्रहण क्षेत्रों के कंक्रीटीकरण और अतिक्रमण के कारण जल निकाय सूख रहे हैं।
(3) शहरी नियोजन कानून ऐतिहासिक स्थलों के पास निर्माण को कड़ाई से रोकते हैं।
(4) शहरीकरण ने ग्रामीण तालाबों में प्राकृतिक स्वच्छ जल का प्रवाह बढ़ा दिया है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

114. राजस्थान की जल विरासत के आधुनिक संरक्षण के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान पारंपरिक संचयन को आधुनिक प्रबंधन के साथ एकीकृत करने पर केंद्रित है।
(2) राज्य सरकार किसी भी स्थिति में झीलों से गाद निकालने पर पूर्ण प्रतिबंध लगाती है।
(3) क्षेत्रीय आर्द्रभूमि की रक्षा के लिए वर्तमान में कोई पर्यावरण कानून उपलब्ध नहीं है।
(4) प्रशासन सुरक्षा कारणों से सभी ऐतिहासिक बावड़ियों को पूर्णतः सील करने का निर्देश देता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

115. वर्तमान जल संकट के समाधान हेतु आधुनिक कृषि में खड़ीन प्रणाली को कैसे पुन: एकीकृत किया जा सकता है?
(1) उन्हें नहर नेटवर्क से प्रतिस्थापित करके और अपवाह कृषि को त्याग कर।
(2) नमी सोखने से रोकने के लिए खड़ीन क्षेत्रों को प्लास्टिक से ढक कर।
(3) सूक्ष्म जल-विभाजक क्षेत्रों में नए खड़ीन निर्माण हेतु भौगोलिक मानचित्रण का उपयोग करके।
(4) अन्य राज्यों से लाए गए जल को संचित करने के लिए उनका उपयोग करके।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

116. राजस्थान की जल विरासत के लिए आधुनिक खतरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. नगरीय विकास द्वारा जलग्रहण क्षेत्रों (आगोर/ओरण) पर अतिक्रमण।
II. जल निकायों में अनुपचारित औद्योगिक और शहरी कचरा फेंकना।
III. पाइपलाइन जलापूर्ति के कारण सामुदायिक रखरखाव (श्रमदान) की परंपरा का त्याग।
IV. गहरे बोरवेल द्वारा भूजल का अत्यधिक दोहन, जिससे सतही निकायों का संपर्क टूट जाता है।
V. जल के मानवीय उपयोग को प्रतिबंधित करने वाले कड़े पर्यावरण कानूनों का प्रवर्तन।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, III, और IV
(2) केवल II, III, IV, और V
(3) केवल I, III, IV, और V
(4) I, II, III, IV, और V
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

117. इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: इन्दिरा गाँधी नहर परियोजना के आने से पश्चिमी राजस्थान के शुष्क जिलों में कृषि समृद्धि आई है।
कथन II: नहर के जल की निरंतर आपूर्ति के कारण कई क्षेत्रों में पारंपरिक प्रणालियों को त्याग दिया गया, जिससे जलभराव और मृदा लवणता की समस्याएँ उत्पन्न हुईं।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

118. सूची I में आधुनिक संरक्षण चुनौतियों को सूची II में उनकी न्यूनीकरण रणनीतियों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (चुनौती)
A. नाडी में गाद जमना
B. जलग्रहण क्षेत्रों पर अतिक्रमण
C. बावड़ियों का प्रदूषण
D. भूजल का गिरता स्तर
सूची II: (रणनीति)
i. ओरण/गौचर का कड़ा कानूनी सीमांकन और संरक्षण
ii. मानसून से पूर्व सामुदायिक स्तर पर नियमित गाद की सफाई
iii. जोहड़ों और रिसाव तालाबों के व्यापक निर्माण को बढ़ावा देना
iv. कचरा फेंकने पर प्रतिबंध और संरचनात्मक जीर्णोद्धार
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii

II. इसमें छोटे प्रवेश द्वारों के साथ गुंबददार या समतल ढकी हुई छत होती है।
III. इसे बड़े पैमाने पर कृषि सिंचाई के लिए डिज़ाइन किया गया है।
IV. जलरोधी बनाने के लिए इसकी आंतरिक सतह पर सघन पलस्तर किया जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, II, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

89. नौ चौकी पाल और राज प्रशस्ति शिलालेखों के लिए प्रसिद्ध राजसमंद झील का निर्माण किस शासक ने करवाया था?
(1) महाराणा प्रताप
(2) महाराणा कुंभा
(3) महाराणा राज सिंह
(4) सवाई जय सिंह
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

90. मध्यकाल में राजपूत शासकों द्वारा बड़ी झीलों और बाँधों जैसी परियोजनाओं को शुरु करने की प्राथमिक प्रेरणा क्या थी?
(1) अकाल के दौरान जनता को राहत कार्य और रोजगार प्रदान करना।
(2) अन्य शासकों पर केवल अपनी स्थापत्य श्रेष्ठता प्रदर्शित करना।
(3) सैन्य शिविरों के चारों ओर केवल रक्षात्मक खाइयाँ बनाना।
(4) शाही वर्ग के लिए जल-क्रीड़ा प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

91. बालसमंद झील के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) इसे 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों ने ग्रीष्मकालीन महल के रूप में बनाया था।
(2) यह एक प्राकृतिक खारे जल की झील है जिसका उपयोग नमक उत्पादन में होता है।
(3) यह अरावली पहाड़ियों में स्थित है और इसमें 'टोड रॉक' विद्यमान है।
(4) यह जोधपुर के समीप प्रतिहार शासकों द्वारा निर्मित एक कृत्रिम झील है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

92. सूची I में शासकों को सूची II में उनके द्वारा निर्मित या विस्तारित जलाशयों के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शासक)
A. महाराणा राज सिंह
B. अर्णोराज
C. महाराजा जय सिंह II
D. महाराजा विनय सिंह

सूची II: (जलाशय)
i. सिलीसेढ़ झील
ii. आना सागर
iii. जयसमंद (ढेबर झील)
iv. राजसमंद झील

(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

93. बावड़ियों और कृत्रिम झीलों के निर्माण के लिए राजसी संरक्षण क्यों आवश्यक था?
(1) केवल राजघरानों को ही सतही जल के उपयोग का अधिकार प्राप्त था।
(2) धार्मिक ग्रंथ सामान्य जनता को झील के जल के उपयोग से रोकते थे।
(3) इनमें लगने वाली अत्यधिक पूँजी और जटिल अभियांत्रिकी स्थानीय लोगों के सामर्थ्य से बाहर थी।
(4) पड़ोसी राज्यों पर कर लगाने के लिए इन संरचनाओं की आवश्यकता थी।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

94. निम्नलिखित में से किस जलाशय का निर्माण ऐतिहासिक रूप से अकाल राहत परियोजना के रूप में नहीं किया गया था?
(1) राजसमंद झील
(2) जयसमंद झील
(3) फोय सागर झील
(4) चाँद बावड़ी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

95. राजस्थान में धार्मिक स्थलों और जल निकायों के समन्वय के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: राजस्थान में शासकों ने प्रायः प्रमुख मंदिरों और घाटों को जल निकायों के निर्माण के साथ एकीकृत किया।
कथन II: इस समन्वय का उद्देश्य जल तक पहुँच को सीमित करना था ताकि इसका उपयोग केवल पुरोहित वर्ग ही कर सके।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों असत्य हैं।
(3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
(4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

96. जल प्रबंधन में राजपूत शासकों की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. शासकों ने भीषण सूखे के दौरान जन कल्याण और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए जल अवसंरचना का उपयोग किया।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) उच्च वाष्पीकरण और न्यून वर्षा के कारण कठोर जल संरक्षण की आवश्यकता।
राजस्थान के शुष्क क्षेत्रों में उच्च वाष्पीकरण और न्यून वर्षा की स्थिति बनी रहती है। जल की इस प्राकृतिक कमी को दूर करने के लिए यहाँ ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट जल प्रबंधन प्रणालियाँ विकसित की गईं। इन संरचनाओं का मुख्य उद्देश्य वर्षा जल का कुशल संचयन करना और वाष्पीकरण द्वारा होने वाली हानि को कम करना था। यह परंपरा मरुस्थलीय पारिस्थितिकी के अनुकूल जीवन निर्वाह का आधार बनी।

2. (1) यह अरब सागर की मानसून शाखा के समानांतर स्थित है, जिससे पर्वतीय वर्षा नहीं हो पाती है।
अरावली पर्वतमाला की स्थिति अरब सागर से आने वाली दक्षिण-पश्चिमी मानसून शाखा के बिल्कुल समानांतर है। इस भौगोलिक विन्यास के कारण नमी युक्त मानसूनी हवाएँ बिना किसी अवरोध के उत्तर की ओर निकल जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप पश्चिमी राजस्थान में पर्वतीय वर्षा नहीं हो पाती और यह क्षेत्र एक विशाल वृष्टि छाया क्षेत्र में बदल जाता है। यही कारण है कि यहाँ वर्षा अत्यधिक न्यून रहती है।

3. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
राजस्थान भौगोलिक रूप से भारत का सबसे बड़ा राज्य है, जो देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 10.4 प्रतिशत भाग घेरता है। इसके विपरीत, यहाँ देश के उपलब्ध सतही जल संसाधनों का मात्र 1.16 प्रतिशत हिस्सा ही उपलब्ध है। यद्यपि राज्य भूजल पर अत्यधिक निर्भर है, लेकिन इसके अधिकांश प्रशासनिक खंड 'अति-दोहित' या संकटग्रस्त श्रेणी में वर्गीकृत हैं, न कि सभी खंड असुरक्षित श्रेणी में हैं।

4. (4) नलकूप
राजस्थान की पारंपरिक जल संचयन प्रणालियों में खड़ीन, टाँका और जोहड़ प्रमुख हैं, जो स्थानीय जलवायु और भूगोल के अनुरूप विकसित की गई थीं। इसके विपरीत, नलकूप एक आधुनिक यांत्रिक तकनीक है जिसका उपयोग बिजली की सहायता से गहरे भूजल के निष्कर्षण हेतु किया जाता है। पारंपरिक प्रणालियाँ वर्षा जल के संरक्षण और पुनर्भरण पर केंद्रित होती हैं, जबकि नलकूप केवल भूजल के तीव्र दोहन पर आधारित है।

5. (3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान में जल संचयन की पद्धतियाँ क्षेत्रीय विशिष्टताओं पर आधारित हैं। जैसलमेर में 'खड़ीन' एक प्रसिद्ध कृषि प्रणाली है। 'जोहड़' मुख्य रूप से अलवर क्षेत्र में मिट्टी के अवरोधों के रूप में प्रचलित हैं। बीकानेर और बाड़मेर में 'टाँका' नामक भूमिगत जलाशय पेयजल हेतु बनाए जाते हैं। जोधपुर में 'झालरा' ऐसी विशेष बावड़ियाँ हैं जो मुख्य रूप से धार्मिक और सामाजिक कार्यों हेतु जल उपलब्ध कराती थीं।

6. (2) खड़ीन प्रणाली का कार्यान्वयन
पश्चिमी राजस्थान की विशिष्ट परिस्थितियों, जहाँ अनियमित वर्षा और मंद ढलान वाले क्षेत्र होते हैं, वहाँ 'खड़ीन' प्रणाली कृषि उत्पादकता बढ़ाने हेतु सर्वश्रेष्ठ है। यह तकनीक मिट्टी के तटबंध द्वारा वर्षा जल को रोकती है, जिससे जल भूमि में गहराई तक रिसता है। यह प्रक्रिया मृदा में नमी बनाए रखती है, जो रबी की फसलों हेतु अनिवार्य है। यह पद्धति बिना किसी बाहरी सिंचाई के खेती संभव बनाती है।

7. (3) केवल I और III
राजस्थान में जल प्रबंधन को केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि एक पवित्र सामाजिक और नैतिक उत्तरदायित्व माना जाता था। प्राचीन काल से ही यहाँ के शासकों और समुदायों ने जल स्रोतों के संरक्षण को प्राथमिकता दी। 'ओरण' जैसे क्षेत्रों को देवताओं को समर्पित कर वहाँ की वनस्पतियों की रक्षा की गई, जिससे जलग्रहण क्षेत्रों की सुरक्षा सुनिश्चित हुई। ये प्रणालियाँ पूर्णतः स्वदेशी थीं और स्थानीय ज्ञान पर आधारित थीं।

8. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिमी राजस्थान में वर्षा की अनिश्चितता और बारहमासी नदियों का पूर्ण अभाव पाया जाता है। यहाँ का भूजल न केवल बहुत गहरा है, बल्कि अक्सर लवणीय और पीने के अयोग्य होता है। इन कठिन भौगोलिक परिस्थितियों में पारंपरिक वर्षा जल संचयन प्रणालियाँ ही जीवन का एकमात्र विश्वसनीय आधार प्रदान करती हैं। ये प्रणालियाँ न केवल पेयजल सुरक्षा सुनिश्चित करती हैं, बल्कि स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए भी अनिवार्य हैं।

9. (3) भूजल स्तर तक नीचे जाने वाली कलात्मक सीढ़ियाँ या गलियारे।
राजस्थान की बावड़ियाँ अपनी अद्वितीय वास्तुकला और अभियांत्रिकी हेतु विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। इनकी सबसे प्रमुख विशेषता भूमिगत जल स्तर तक पहुँचने के लिए बनाई गई कलात्मक सीढ़ियाँ और गलियारे हैं। इन संरचनाओं में जल संचयन के साथ-साथ यात्रियों के विश्राम हेतु स्तंभों वाले कक्ष और अलंकृत मंडप भी होते थे। ये केवल जल स्रोत ही नहीं थे, बल्कि सामाजिक मेल-मिलाप के प्रमुख केंद्र भी थे।

10. (1) भद्रा
प्राचीन भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुसार बावड़ियों को उनके प्रवेश द्वारों की संख्या के आधार पर विशिष्ट श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। जिस बावड़ी में केवल एक प्रवेश द्वार होता है, उसे 'नंदा' कहा जाता है। दो प्रवेश द्वारों वाली बावड़ी को 'भद्रा'

(1) मामले को सीधे भारत के सर्वोच्च न्यायालय में ले जाना।
(2) कंक्रीट बाँधों का उपयोग करके अपवाह जल को पूर्णतः रोकना।
(3) राज्य सरकार द्वारा विवादित कृषि भूमि का अधिग्रहण।
(4) पारंपरिक जल अधिकारों के आधार पर ग्राम के वरिष्ठ जनों द्वारा मध्यस्थता।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

104. नौकरशाही दृष्टिकोण की तुलना में जल प्रबंधन के लिए ग्राम सभा के नेतृत्व वाले दृष्टिकोण का सबसे बड़ा लाभ क्या है?
(1) यह पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करता है और सामूहिक स्वामित्व सुनिश्चित करता।
(2) यह असीमित परिष्कृत ड्रिलिंग तकनीकों तक पहुँच की गारंटी देता है।
(3) यह बाँध निर्माण के लिए पर्यावरण संरक्षण कानूनों को दरकिनार कर देता है।
(4) यह किसी भी वित्तीय व्यय की आवश्यकता को पूर्णतः समाप्त कर देता है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

105. निम्नलिखित प्रश्न में दो कथन हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राजस्थान में स्वदेशी जल संचयन प्रणालियाँ सदियों से टिकाऊ और लचीली सिद्ध हुई हैं।
कारण (R): इन प्रणालियों को स्थानीय प्राकृतिक सामग्रियों का उपयोग करके विशिष्ट भौगोलिक, जलवायु और भूवैज्ञानिक स्थितियों के अनुरूप वैज्ञानिक रूप से विकसित किया गया था।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

106. पश्चिमी राजस्थान की पारंपरिक जल प्रणालियों में 'कुईं' या 'बेरी' का विशिष्ट कार्य क्या है?
(1) यह बाढ़ नियंत्रण के लिए प्रयुक्त एक विशाल सतही जलाशय है।
(2) यह मीठे उप-सतही रिसाव को संचित करने के लिए खोदा गया एक संकीर्ण गहरा गड्ढा है।
(3) यह शाही आंगनों में स्थापित एक सजावटी फव्वारा है।
(4) यह सिंधु नदी से जल मोड़ने वाली एक बड़ी नहर प्रणाली है।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

107. राजस्थान में जल के पारंपरिक वर्गीकरण के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत है?
(1) पालर पाणी — वर्षा से सीधे संचित वर्षा जल, जो शुद्धतम माना जाता है
(2) पाताल पाणी — गहरे कुओं या नलकूपों के माध्यम से प्राप्त भूजल
(3) रेजाणी पाणी — अत्यधिक खारा सतही जल जो उपभोग के योग्य नहीं है
(4) रेजाणी पाणी (वास्तविक) — मृदा में रिसा हुआ जल जो खारे जलभृतों के ऊपर फंसा रहता है
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

108. पारंपरिक जल वर्गीकरण के संदर्भ में 'रेजाणी पाणी' विशेष रूप से किसे संदर्भित करता है?
(1) अभेद्य परतों के ऊपर स्थित नमी, जिसे कुईं के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।
(2) वह जल जो विनाशकारी बाढ़ के रूप में केवल सतह पर रहता है।
(3) आधुनिक नहर प्रणालियों द्वारा क्षेत्र में लाया गया जल।
(4) औद्योगिक उपयोग के लिए अलवणीकृत किया गया समुद्र का जल।
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

109. थार क्षेत्र में जल की पारंपरिक श्रेणियों में निम्नलिखित में से कौन सा असंगत है?
(1) पालर पाणी
(2) पाताल पाणी
(3) बिसलेरी पाणी
(4) रेजाणी पाणी
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

110. कुईं खोदने से पूर्व भूजल की उपस्थिति का पता लगाने के लिए प्रयुक्त स्वदेशी विधियों पर विचार कीजिए:
I. खेजड़ी या रोहिड़ा जैसे गहरी जड़ों वाले वृक्षों की उपस्थिति का अवलोकन।
II. दीमकों के टीलों की नमी और उनके रंग का विश्लेषण।
III. उन्नत उपग्रह आधारित रडार तकनीकों का उपयोग।
IV. स्थानीय वन्यजीवों और पशुओं के व्यवहार का सूक्ष्म अवलोकन।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, II, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, III, और IV
(5) प्रश्न प्रयास नहीं किया गया

111. राजस्थान में खानाबदोश चरवाहों और जल ज्ञान के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन I: खानाबदोश चरवाहों के पास प्राकृतिक झरनों और छिपे हुए पारंपरिक कुओं के जाल पर आधारित मार्गों का गहरा ज्ञान था।
कथन II: चरवाहों द्वारा चुने गए मार्ग जानबूझकर जल स्रोतों से दूर होते थे ताकि ग्रामीण संसाधनों पर दबाव न पड़े।
निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।

21. (3) समकोण पर दोहरी सीढ़ियों की सटीक ज्यामितीय व्यवस्था।
चाँद बावड़ी की सीढ़ियों को देखने पर होने वाले विशिष्ट दृष्टिभ्रम का मुख्य कारण उनकी सटीक ज्यामितीय व्यवस्था है। ये सीढ़ियाँ एक-दूसरे के समकोण पर दोहरी पंक्तियों में व्यवस्थित हैं, जो एक निरंतर लयबद्ध स्वरूप बनाती हैं। जब कोई व्यक्ति ऊपर से नीचे देखता है, तो यह ज्यामितीय पुनरावृत्ति आँखों को भ्रमित करती है और गहराई का एक अनूठा अहसास कराती है। यह प्राचीन भारतीय वास्तुकारों की गणितीय सटीकता का संगम है।

22. (4) I, II, III, IV, और V
चाँद बावड़ी आभानेरी में स्थित एक ऐतिहासिक जल संरचना है, जिसका निर्माण आठवीं-नवीं शताब्दी के दौरान हुआ था। यह लगभग 13 मंजिल गहरी है और इसमें हजारों सममित सीढ़ियाँ हैं। इसके निकट स्थित हर्षत माता का मंदिर प्रसन्नता की देवी को समर्पित है। समय के साथ, इसमें विभिन्न राजवंशों के प्रभाव देखे जा सकते हैं, जिनमें मुगल काल के दौरान जोड़े गए ऊपरी मंडप भी शामिल हैं। यह स्थल बेजोड़ विरासत है।

23. (4) भूमिगत नदी के प्रवाह के कारण यह वर्ष भर जल से लबालब रहती है।
चाँद बावड़ी का निर्माण राजा चाँद द्वारा करवाया गया था और यह जल संरक्षण का एक उत्कृष्ट ऐतिहासिक उदाहरण है। इसकी गहराई के कारण, निचले स्तरों पर तापमान सतह की तुलना में काफी कम और शीतल रहता है। हालाँकि, यह कहना गलत है कि यह किसी भूमिगत नदी के प्रवाह के कारण वर्ष भर भरी रहती है। यह मुख्य रूप से वर्षा जल के संचयन और भूजल स्तर पर निर्भर करती है।

24. (2) गुर्जर-प्रतिहार आधार, चौहान कालीन विस्तार, मुगल मंडप
चाँद बावड़ी की वास्तुकला सदियों के क्रमिक विकास का परिणाम है। इसका प्राचीनतम आधार आठवीं शताब्दी के गुर्जर-प्रतिहार काल का है, जो इसकी मूल संरचना को परिभाषित करता है। इसके बाद, चौहान राजवंश के शासनकाल के दौरान इसमें विभिन्न विस्तार और कलात्मक सुधार किए गए। अंततः, 18वीं शताब्दी के आसपास मुगल स्थापत्य शैली के प्रभाव में इसके ऊपरी मंडपों का निर्माण हुआ। यह कालक्रम राजस्थान के बदलते परिदृश्य को दर्शाता है।

25. (2) फतेह सागर, स्वरूप सागर, पिछोला
उदयपुर, जिसे झीलों की नगरी कहा जाता है, में झीलों का एक परस्पर जुड़ा हुआ जाल है। उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ने पर सबसे पहले फतेह सागर झील आती है। इसके दक्षिण में स्वरूप सागर स्थित है, जो एक संकरी कड़ी के रूप में कार्य करता है। सबसे दक्षिण में ऐतिहासिक पिछोला झील स्थित है। यह क्रम न केवल भौगोलिक है, बल्कि जल प्रबंधन की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

26. (1) पिछोला झील
उदयपुर की प्रसिद्ध पिछोला झील अपने मध्य स्थित भव्य महलों के लिए जानी जाती है। 'जग निवास', जिसे अब होटल के रूप में जाना जाता है, और 'जग मंदिर' इसी झील के द्वीपों पर निर्मित हैं। इन महलों की वास्तुकला और झील के शांत जल का संगम एक जादुई दृश्य उत्पन्न करता है। पिछोला झील का निर्माण 14वीं शताब्दी में हुआ था और यह सदियों से मेवाड़ की संस्कृति का केंद्र रही है।

27. (4) यह राजहंस के महत्व के कारण नामित एक रामसर स्थल है।
सांभर झील भारत की सबसे बड़ी अंतर्देशीय लवणीय झील है, जो जयपुर के निकट स्थित है। इसका पारिस्थितिक महत्व इतना अधिक है कि इसे 'रामसर कन्वेंशन' के तहत अंतरराष्ट्रीय महत्व की आर्द्रभूमि घोषित किया गया है। यह झील विशेष रूप से राजहंस और अन्य प्रवासी पक्षियों के लिए एक महत्वपूर्ण विश्राम स्थल प्रदान करती है। यहाँ का खारा पानी एक विशिष्ट पारितंत्र का निर्माण करता है, जो नमक उत्पादन हेतु मूल्यवान है।

28. (2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
राजस्थान की झीलों का इतिहास विभिन्न शासकों से जुड़ा है। पिछोला झील का निर्माण 14वीं शताब्दी में महाराणा लाखा के समय हुआ था। फतेह सागर झील का पुनर्निर्माण महाराणा फतेह सिंह ने 19वीं शताब्दी में किया। आना सागर झील का निर्माण 12वीं शताब्दी में अर्णोराज द्वारा अजमेर में कराया गया था। राजसमंद झील का निर्माण महाराणा राज सिंह ने 17वीं शताब्दी में अकाल राहत कार्य के रूप में मेवाड़ में करवाया था।

29. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
सांभर झील एक विशाल प्राकृतिक अंतर्देशीय जल निकाय है जिसे मेंढा, रुपनगढ़ और खंडेला जैसी मौसमी धाराएँ जल प्रदान करती हैं। इन नदियों के प्रवाह के साथ अरावली की चट्टानों से निकले विभिन्न लवण झील में एकत्रित होते रहते हैं। सदियों से चलने वाली इस प्रक्रिया और उच्च वाष्पीकरण दर के कारण झील के जल की लवणता अत्यधिक बढ़ गई है। यह भौगोलिक कारकों का परिणाम है।

30. (1) सांभर झील
जल की प्रकृति के आधार पर राजस्थान की झीलों को मीठे और खारे पानी की श्रेणियों में विभाजित किया गया है। पिछोला, फतेह सागर और सिलीसेढ़ झीलें मीठे पानी की झीलें हैं, जिनका निर्माण मुख्य रूप से पेयजल और कृषि आवश्यकताओं हेतु किया गया था। इसके विपरीत, सांभर झील एक विशाल खारे पानी की झील है, जहाँ प्राकृतिक रूप से नमक का जमाव होता है। अतः, सांभर झील अन्य तीनों से भिन्न है।

31. (4) स्वरुप सागर
उदयपुर की दो प्रमुख झीलें, पिछोला और फतेह सागर, आपस में एक जल मार्ग के माध्यम से जुड़ी हुई हैं जिसे 'स्वरुप सागर' कहा जाता है। इस नहर का मुख्य कार्य दोनों झीलों के जल स्तर को नियंत्रित और संतुलित करना है। जब पिछोला झील का जल स्तर अधिक हो जाता है, तो अतिरिक्त जल स्वरुप सागर के माध्यम से फतेह सागर में प्रवाहित हो जाता है। यह प्राचीन अभियांत्रिकी का उत्कृष्ट उदाहरण है।

नाम दिया गया है। इसी प्रकार, तीन प्रवेश द्वारों वाली संरचना को 'जया' और चार प्रवेश द्वारों वाली बावड़ी को 'विजया' कहा जाता है। यह वर्गीकरण उनकी स्थापत्य जटिलता को दर्शाता है।

11. (4) बड़े शहरी केंद्रों के लिए जलविद्युत उत्पन्न करना।
मध्यकाल में बावड़ियों का निर्माण बहुआयामी उद्देश्यों के लिए किया जाता था, जिनमें पेयजल की आपूर्ति सर्वोपरि थी। अपनी गहराई और भूमिगत संरचना के कारण ये भीषण गर्मी में स्थानीय समुदायों हेतु शीतल विश्राम स्थल के रूप में भी कार्य करती थीं। इनका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों और सामाजिक उत्सवों हेतु भी व्यापक रूप से होता था। हालाँकि, उस समय इन संरचनाओं का उपयोग जलविद्युत उत्पन्न करने हेतु नहीं किया जाता था।

12. (4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
राजस्थान में बावड़ियों का निर्माण केवल सत्तारूढ़ राजाओं तक ही सीमित नहीं था। यद्यपि शासकों ने विशाल बावड़ियाँ बनवाईं, लेकिन ऐतिहासिक प्रमाण दर्शाते हैं कि राजघरानों की महिलाओं, धनी व्यापारियों और स्थानीय समुदायों ने भी इनका निर्माण करवाया। इसे एक महान पुण्य और सामाजिक सेवा का कार्य माना जाता था। धनी नागरिकों द्वारा किया गया यह निवेश राज्य की जल सुरक्षा और सार्वजनिक कल्याण में महत्वपूर्ण था।

13. (3) केवल III
बावड़ियों की वास्तुकला अत्यंत समृद्ध थी, जिसमें नक्काशीदार मंडप, स्तंभ और विश्राम कक्ष बनाए जाते थे। इनकी दीवारों के ताकों में अक्सर देवी-देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित की जाती थीं, जो इनके धार्मिक महत्व को दर्शाती हैं। इनका निर्माण मुख्य रूप से पक्के पत्थरों और चूने के गारे से किया जाता था ताकि संरचना मजबूत रहे। कच्ची मिट्टी की ईंटों का उपयोग नहीं किया जाता था, क्योंकि वे जल दबाव से नष्ट हो सकती थीं।

14. (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
बावड़ियों की वास्तुकला में विभिन्न संरचनात्मक शब्दों के विशिष्ट अर्थ होते हैं। 'कूट' वह मंच या चबूतरा होता है जो सीढ़ियों के मध्य विश्राम हेतु बनाया जाता है। 'तोरण' एक अलंकृत और सुंदर मेहराबदार प्रवेश द्वार को संदर्भित करता है। 'मंडप' स्तंभों वाला एक खुला कक्ष होता है जहाँ सामाजिक अनुष्ठान संपन्न किए जाते थे। 'गर्भगृह' वह आंतरिक कक्ष है जहाँ मुख्य रूप से देवता की मूर्ति स्थापित की जाती है।

15. (3) केवल I, II, और IV
बावड़ियाँ ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक केंद्रों के रूप में विकसित हुई थीं। ये अक्सर प्रमुख व्यापारिक मार्गों पर स्थित थीं, जहाँ यात्रियों को सुरक्षित जल और विश्राम मिलता था। इनकी संरचनात्मक गहराई प्राकृतिक शीतलन प्रदान करती थी, जिससे ये गर्मी के दौरान सामुदायिक मिलन स्थल बन गए। जल पूजा से संबंधित विभिन्न त्योहार इन स्थलों पर मनाए जाते थे। जल तक पहुँच सर्वसाधारण के लिए खुली हुई थी।

16. (2) इसने मिट्टी के दबाव के विरुद्ध गहरी खाइयों की दीवारों को स्थिरता प्रदान की।
बावड़ियों में प्रयुक्त सीढ़ीदार वास्तुकला केवल सौंदर्य हेतु नहीं थी, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण अभियांत्रिकी समाधान भी था। गहरी खुदाई के दौरान आस-पास की मिट्टी का दबाव दीवारों पर बहुत अधिक होता है। सीढ़ियों की क्रमिक व्यवस्था इस पार्श्व दबाव को वितरित करने में मदद करती है, जिससे गहरी खाइयों की दीवारें स्थिर रहती हैं और उनके ढहने का खतरा कम हो जाता है। यह प्राचीन वास्तुकारों की दक्षता का परिचायक है।

17. (2) दौसा
चाँद बावड़ी राजस्थान के दौसा जिले के आभानेरी गाँव में स्थित है। यह भारत की सबसे प्राचीन, सबसे गहरी और सबसे सुंदर बावड़ियों में से एक मानी जाती है। अपनी अद्वितीय ज्यामितीय संरचना और स्थापत्य भव्यता के कारण यह विश्वभर के पर्यटकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र है। यह बावड़ी मरुस्थलीय क्षेत्रों में जल संचयन के प्राचीन भारतीय कौशल का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती है।

18. (1) गुर्जर-प्रतिहार राजवंश
आभानेरी की प्रसिद्ध चाँद बावड़ी का मूल निर्माण आठवीं और नवीं शताब्दी के दौरान किया गया था। इस संरचना की स्थापत्य शैली मुख्य रूप से गुर्जर-प्रतिहार राजवंश के काल की विशेषताओं को दर्शाती है। इस काल की वास्तुकला अपनी जटिल नक्काशी, पत्थर के काम और ज्यामितीय सटीकता के लिए जानी जाती है। यद्यपि बाद में इसमें कुछ संशोधन किए गए, लेकिन इसका बुनियादी ढांचा गुर्जर-प्रतिहार कला का सर्वोत्तम उदाहरण है।

19. (3) 3,500
चाँद बावड़ी अपनी आश्चर्यजनक ज्यामितीय सटीकता और विशालता के लिए जानी जाती है। इस बावड़ी में लगभग 3,500 अत्यंत संकीर्ण और सममित सीढ़ियाँ बनी हुई हैं, जो इसके निचले जल स्तर तक जाती हैं। इन सीढ़ियों का विन्यास इस प्रकार है कि वे देखने पर एक जादुई दृष्टिभ्रम पैदा करती हैं। यह संख्या और इनका क्रमबद्ध स्थापत्य प्राचीन काल की उच्च कोटि की गणितीय और वास्तुशिल्प दक्षता को प्रमाणित करता है।

20. (4) इसके तीन ओर सीढ़ियाँ हैं और चौथी ओर एक बहुमंजिला मंडप है।
चाँद बावड़ी का संरचनात्मक विन्यास अत्यंत अनूठा और भव्य है। इसके तीन तरफ सीढ़ियों का एक विशाल और जटिल जाल बना हुआ है, जो जल स्तर तक पहुँचने के लिए उपयोग किया जाता है। चौथी तरफ एक भव्य बहुमंजिला मंडप और कक्षों की श्रृंखला बनाई गई है, जहाँ से शाही परिवार जल का दृश्य देख सकते थे। इस भाग में सुंदर नक्काशीदार खंभे और मूर्तियाँ भी विद्यमान हैं।

43. (3) अलवर
सिलीसेढ़ झील राजस्थान के अलवर जिले में अरावली पहाड़ियों के मध्य स्थित एक अत्यंत मनोरम झील है। इसका निर्माण 1845 ईस्वी में महाराजा विनय सिंह ने अपनी रानी शीला की स्मृति में और शहर की जलापूर्ति के लिए करवाया था। यह झील अपनी प्राकृतिक शांत सुंदरता और इसके किनारे स्थित भव्य महल के लिए प्रसिद्ध है, जिसे अब एक हेरिटेज होटल में बदल दिया गया है। यह लोकप्रिय पर्यटन स्थल है।

44. (4) इसका निर्माण लूणी नदी पर बाँध बनाकर किया गया था।
आना सागर झील का निर्माण 12वीं शताब्दी में अजमेर शहर को सुरक्षित जल प्रदान करने के लिए किया गया था। बाद में मुगल सम्राटों ने इसके चारों ओर सुंदर उद्यान और संगमरमर के मंडप बनवाकर इसकी सुंदरता को बढ़ाया। यह सच है कि सूखे के दौरान इसमें जल स्तर कम हो सकता है। हालाँकि, यह कहना गलत है कि इसका निर्माण लूणी नदी पर हुआ था; वास्तव में यह बांडी नदी पर निर्मित है।

45. (1) I, II, III
राजस्थान की इन प्रमुख झीलों का निर्माण अलग-अलग युगों में हुआ है। आना सागर झील का निर्माण 12वीं शताब्दी में चौहान काल के दौरान हुआ था, जो सबसे प्राचीन है। राजसमंद झील का निर्माण 17वीं शताब्दी में महाराणा राज सिंह द्वारा अकाल राहत कार्य के रूप में करवाया गया। फतेह सागर झील का मूल निर्माण 17वीं शताब्दी के अंत में हुआ, लेकिन इसका वर्तमान स्वरूप 19वीं शताब्दी के जीर्णोद्धार के बाद का है।

46. (2) शाहजहाँ
आना सागर झील के तटबंध पर स्थित पाँच भव्य संगमरमर के मंडप, जिन्हें 'बारादरी' कहा जाता है, का निर्माण मुगल सम्राट शाहजहाँ ने 1637 ईस्वी में करवाया था। शाहजहाँ अपनी स्थापत्य रुचि और सफेद संगमरमर के उत्कृष्ट उपयोग के लिए जाना जाता था। ये मंडप मुगल काल की परिष्कृत कला और विलासिता का प्रदर्शन करते हैं। यहाँ से झील का मनोरम दृश्य दिखाई देता है, जिसने इसे एक पसंदीदा विश्राम स्थल बना दिया था।

47. (2) अलवर शहर को पेयजल और कृषि आवश्यकताओं के लिए जल पहुँचाना।
महाराजा विनय सिंह द्वारा 1845 में सिलीसेढ़ झील के निर्माण का मुख्य उद्देश्य अलवर शहर की बढ़ती जल आवश्यकताओं को पूरा करना था। इस कृत्रिम जलाशय के माध्यम से पेयजल की आपूर्ति सुनिश्चित की गई और आसपास के कृषि क्षेत्रों हेतु सिंचाई की सुविधा प्रदान की गई। यद्यपि इसके किनारे एक भव्य महल भी बनाया गया था, लेकिन इस परियोजना का व्यापक लक्ष्य जन कल्याण और क्षेत्रीय जल सुरक्षा था।

48. (1) केवल I, III, IV, और V
आना सागर और सिलीसेढ़ दोनों ही मानव निर्मित झीलें हैं, जो क्रमशः अजमेर और अलवर में स्थित हैं। ये झीलें अरावली पहाड़ियों से आने वाले वर्षा जल पर निर्भर हैं और इनके किनारे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्मारक स्थित हैं। आना सागर में मुगल वास्तुकला के सुंदर उदाहरण मिलते हैं, जबकि सिलीसेढ़ झील के पास बना शाही महल अब एक प्रसिद्ध होटल है। यह कहना गलत है कि ये विशुद्ध प्राकृतिक निकाय हैं।

49. (3) एक ढलवां जलग्रहण क्षेत्र जो वर्षा जल को एक केंद्रीय भूमिगत गड्ढे में संचित करता है।
राजस्थान की पारंपरिक जल विरासत में 'कुंड' एक अत्यंत महत्वपूर्ण संरचना है। यह मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में बनाया जाता है जहाँ सतही जल कम होता है। इसमें एक तश्तरीनुमा ढलवां जलग्रहण क्षेत्र (आगोर) होता है, जो चारों ओर से मध्य के गहरे भूमिगत भंडारण गड्ढे की ओर झुका होता है। वर्षा का जल इस ढलान से बहकर केंद्र में एकत्रित होता है। यह न्यूनतम वर्षा वाले क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल हेतु वैज्ञानिक तरीका है।

50. (1) पायतन — अतिरिक्त बाढ़ के जल को बाहर निकालने का मार्ग
पारंपरिक कुंड के निर्माण में विभिन्न तकनीकी शब्दों का उपयोग किया जाता है। 'आगोर' वह विशेष जलग्रहण क्षेत्र है जहाँ से वर्षा जल बहकर आता है। 'सूता' वह केंद्रीय गड्ढा है जहाँ जल जमा होता है, और 'जाली' का उपयोग कचरे को रोकने के लिए किया जाता है। 'पायतन' वास्तव में जलग्रहण क्षेत्र या आगोर का ही एक समानार्थी नाम है, न कि जल निकालने का मार्ग। जल की शुद्धता इसका प्राथमिक लक्ष्य है।

51. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
कुंड मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में बनाए जाते थे जहाँ भूजल लवणीय होता है और पीने योग्य नहीं होता। वर्षा जल को सुरक्षित रखने के लिए यह एक उत्कृष्ट प्रणाली है। कुंड के जलग्रहण क्षेत्र (आगोर) को अत्यंत स्वच्छ रखा जाता है और वहाँ मानवीय या पशु गतिविधियों को प्रतिबंधित किया जाता है ताकि जल प्रदूषित न हो। इस प्रकार संचित जल को 'पालर पाणी' कहा जाता है, जो शुद्धतम पेयजल माना जाता है।

52. (4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान की जल संरचनाओं की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ हैं। 'कुंड' तश्तरीनुमा जलग्रहण क्षेत्र वाला एक गहरा गड्ढा है। 'बावड़ी' कलात्मक सीढ़ियों वाली एक गहरी भूमिगत संरचना है। 'खड़ीन' जैसलमेर की एक अनूठी कृषि प्रणाली है जहाँ मिट्टी का तटबंध बनाकर खेती की जाती है। 'जोहड़' मुख्य रूप से शेखावाटी में प्रचलित मिट्टी के छोटे बाँध हैं, जो वर्षा जल को रोककर भूजल स्तर बढ़ाने का कार्य करते हैं।

53. (3) अपवाह और शुद्धता को अधिकतम करने के लिए आगोर को चूने या राख से लेपना।
कुंड से स्वच्छ और अधिकतम जल प्राप्त करने के लिए इसके जलग्रहण क्षेत्र (आगोर) का प्रबंधन अत्यंत महत्वपूर्ण है। पारंपरिक रूप से आगोर की सतह को चूने और राख के मिश्रण से लेपा जाता था। यह लेप न केवल सतह को अभेद्य बनाता है जिससे पानी मिट्टी में नहीं सोखता, बल्कि यह जल को प्राकृतिक रूप से शुद्ध करने में भी सहायक होता है। इस चिकनी सतह के कारण वर्षा जल सुरक्षित जमा होता है।

अत्यधिक उपयोग से कई क्षेत्रों में जलभराव और मिट्टी की लवणता बढ़ गई है, जो पर्यावरण हेतु एक नई चुनौती है।

118. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
आधुनिक जल संरक्षण की चुनौतियों हेतु विशिष्ट रणनीतियों की आवश्यकता है। नाडी में गाद की समस्या को मानसून पूर्व सामुदायिक सफाई से हल किया जा सकता है। अतिक्रमण रोकने हेतु जलग्रहण क्षेत्रों का कानूनी सीमांकन अनिवार्य है। बावड़ियों को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए कचरा फेंकने पर कड़ा प्रतिबंध आवश्यक है। गिरते भूजल स्तर को सुधारने हेतु जोहड़ों का व्यापक निर्माण सबसे प्रभावी समाधान है, जो वर्षा जल को पुनर्भरण करते हैं।

119. (3) क्षेत्रीय गहरे प्राचीन भूजल स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि।
ऐतिहासिक बावड़ियों की उपेक्षा के गंभीर सामाजिक परिणाम होते हैं। जब ये उपेक्षित होती हैं, तो इनमें कचरा जमा हो जाता है और ये रोगों के वाहकों के प्रजनन स्थल बन जाती हैं। साथ ही, इनकी दीवारों की नक्काशी और सूक्ष्म जलवायु पर निर्भर वनस्पति नष्ट हो जाती है। हालाँकि, इनकी उपेक्षा से भूजल स्तर में वृद्धि कभी नहीं होती; इसके विपरीत, संरक्षण के अभाव में भूजल का पुनर्भरण रुक जाता है और जल स्तर में गिरावट आती है।

120. (1) पुनर्जीवित स्वदेशी जल संचयन को सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों के साथ जोड़ना।
राजस्थान के जल संकट का सबसे स्थायी समाधान हमारी प्राचीन विरासत और आधुनिक विज्ञान का मेल है। हमें अपनी स्वदेशी प्रणालियों जैसे टाँका, खड़ीन और जोहड़ को पुनर्जीवित करना होगा ताकि वर्षा जल का अधिकतम संचय हो सके। इसके साथ ही, खेती में ड्रिप और फव्वारा जैसी 'सूक्ष्म सिंचाई' तकनीकों को अपनाकर पानी की हर बूंद का कुशलतापूर्वक उपयोग करना होगा। यह समन्वित दृष्टिकोण ही जल सुरक्षा सुनिश्चित कर सकता है।

65. (1) केवल I, II, और IV
नाडी राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाने वाला एक पारंपरिक तालाब है, जो प्राकृतिक ढलानों पर बनाया जाता है। इसका स्थान ऐसी मिट्टी पर चुना जाता है जिसकी जल सोखने की क्षमता कम हो, ताकि जल अधिक समय तक सतह पर बना रहे। हालाँकि, ये खुले जलाशय होते हैं, इसलिए उच्च वाष्पीकरण और गाद इनके लिए बड़ी चुनौतियां हैं। इनका उपयोग स्थानीय जलापूर्ति हेतु होता है, न कि औद्योगिक गतिविधियों हेतु।

66. (2) नाडी एक खुला सतही तालाब है, जबकि कुंड एक ढका हुआ भूमिगत जलाशय है।
नाडी और कुंड दोनों जल संचयन हेतु उपयोग किए जाते हैं, लेकिन उनकी संरचना में स्पष्ट अंतर है। नाडी एक खुला ग्रामीण तालाब है जो मुख्य रूप से मवेशियों और घरेलू उपयोग हेतु प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्रों से वर्षा जल एकत्र करता है। इसके विपरीत, कुंड एक पक्का और ढका हुआ भूमिगत जलाशय है जिसे विशेष रूप से पेयजल की शुद्धता बनाए रखने हेतु बनाया जाता है। नाडी अक्सर बड़ी और खुली संरचना होती है।

67. (4) अपवाह जल द्वारा लाई गई गाद और बालू का तीव्र जमाव।
नाडी की सबसे बड़ी समस्या 'सिल्टिंग' या गाद का जमना है। वर्षा के दौरान, अपवाह जल अपने साथ आसपास की मिट्टी और मलबा बहाकर ले आता है जो तालाब की तलहटी में जमा हो जाता है। समय के साथ यह गाद नाडी की गहराई को कम कर देती है, जिससे उसकी जल भंडारण क्षमता काफी घट जाती है। यदि नियमित रूप से इस गाद की सफाई न की जाए, तो नाडी जल्द ही सूखने लगती है।

68. (1) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
प्रत्येक जल संरचना की अपनी विशिष्ट चुनौतियां हैं। नाडी वाष्पीकरण और गाद जमने के कारण जल्दी प्रभावित होती है। टाँका में यदि जलग्रहण क्षेत्र साफ न हो, तो संचित पेयजल दूषित होने का खतरा रहता है। खड़ीन पूरी तरह से विशिष्ट भौगोलिक ढलान और वर्षा के स्वरूप पर निर्भर करती है। बावड़ियाँ, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में, कचरा फेंकने और संरचनात्मक उपेक्षा के कारण अपनी पहचान खो रही हैं।

69. (3) तालाब की गहराई बढ़ाने के लिए जमा हुई गाद की खुदाई और सफाई।
राजस्थान के गाँवों में मानसून के आगमन से पहले नाडी के रखरखाव हेतु एक सामूहिक परंपरा का पालन किया जाता है। ग्रामीण मिलकर नाडी की तलहटी में जमा हुई गाद और मिट्टी की खुदाई करते हैं। इस प्रक्रिया को 'गाद निकालना' कहा जाता है, जिससे तालाब की जल संग्रहण क्षमता बढ़ जाती है। निकाली गई उपजाऊ मिट्टी का उपयोग खेतों में किया जाता है। यह सामूहिक प्रयास अधिकतम वर्षा जल संचय सुनिश्चित करता है।

70. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं, और कथन II, कथन I का प्रत्यक्ष परिणाम है।
नाडी अक्सर जोहड़ों की तुलना में उथली होती है और इसका सतही फैलाव अधिक होता है। राजस्थान की भीषण गर्मी में, किसी जलाशय का सतह क्षेत्र जितना अधिक होगा, वाष्पीकरण की दर उतनी ही तीव्र होगी। चूँकि नाडी की गहराई कम होती है और फैलाव ज्यादा, इसलिए इसमें संचित जल का एक बड़ा हिस्सा बहुत कम समय में भाप बनकर उड़ जाता है। यह विशेषता जल के दीर्घकालिक भंडारण को चुनौतीपूर्ण बनाती है।

71. (4) ग्रामीण चिकित्सालयों में शल्य चिकित्सा के लिए उच्च शुद्धता वाले जल की आपूर्ति।
नाडी एक खुला ग्रामीण जलाशय है जिसका उपयोग मुख्य रूप से उन कार्यों के लिए किया जाता है जहाँ जल की शुद्धता का स्तर बहुत अधिक होना अनिवार्य नहीं है। यह पशुओं के पीने, कपड़े धोने और स्थानीय वन्यजीवों की प्यास बुझाने का प्राथमिक स्रोत है। हालाँकि, अपनी खुली प्रकृति के कारण यह धूल और अशुद्धियों से प्रभावित हो सकता है। अतः, इसका उपयोग चिकित्सालयों में शल्य चिकित्सा जैसे कार्यों हेतु नहीं किया जा सकता।

72. (1) केवल I, II, III, और IV
नाडी पश्चिमी राजस्थान के गाँवों में सतही जल संचयन का सबसे प्रचलित रूप है। ये प्राकृतिक गड्ढों की खुदाई करके बनाए जाते हैं और इनकी मिट्टी से ही किनारे के तटबंध ऊंचे किए जाते हैं। इनका आकार और आगोर यह तय करते हैं कि पानी कितने महीनों तक उपलब्ध रहेगा। हालाँकि, ये मरुस्थल की भीषण गर्मी से सुरक्षित नहीं हैं; वास्तव में उच्च तापमान के कारण इनमें वाष्पीकरण बहुत तेजी से होता है।

73. (3) वर्षा जल संचयन पर आधारित एक स्वदेशी अपवाह कृषि प्रणाली।
जैसलमेर की 'खड़ीन' प्रणाली दुनिया की सबसे वैज्ञानिक और प्रभावी स्वदेशी तकनीकों में से एक है। यह केवल पानी पीने का स्रोत नहीं है, बल्कि एक पूर्ण कृषि पद्धति है। इसमें पहाड़ियों के ढलान से आने वाले वर्षा जल को एक मिट्टी के बाँध द्वारा रोका जाता है। इससे खेत में पानी भर जाता है और मिट्टी गहराई तक नम हो जाती है। जब पानी सूख जाता है, तो उस उपजाऊ जमीन पर रबी की फसलें उगाई जाती हैं।

74. (4) पालीवाल ब्राह्मणों
जैसलमेर क्षेत्र में खड़ीन कृषि प्रणाली का विकास 15वीं शताब्दी के दौरान पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा किया गया था। यह समुदाय अपनी इंजीनियरिंग सूझबूझ और जल प्रबंधन के गहरे ज्ञान के लिए प्रसिद्ध था। उन्होंने मरुस्थल की अत्यंत कठिन परिस्थितियों में भी न्यून वर्षा का उपयोग करके भरपूर फसल लेने की यह अनूठी तकनीक विकसित की। उनके द्वारा बनाए गए खड़ीन आज भी जैसलमेर की कृषि अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार हैं।

निर्माण के लिए सदैव प्रोत्साहित किया, जिससे सामुदायिक भागीदारी को बल मिला।

97. (2) समुदाय द्वारा संरक्षित पवित्र उपवन जो जल जलग्रहण क्षेत्र के रूप में कार्य करता है।
'ओरण' राजस्थान की एक प्राचीन सामुदायिक संरक्षण परंपरा है। यह स्थानीय देवता को समर्पित एक भूमि क्षेत्र होता है जहाँ वनों की कटाई और शिकार पूरी तरह प्रतिबंधित होते हैं। पारिस्थितिक दृष्टि से, ओरण अक्सर गाँवों के जलाशयों के जलग्रहण क्षेत्र के रूप में कार्य करते हैं। यहाँ की सघन वनस्पति वर्षा जल को रोकने और उसे साफ करके तालाबों तक पहुँचाने में मदद करती है, जो जल सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

98. (2) वार्ड सभा → ग्राम सभा → पंचायत समिति → जिला परिषद
राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था के अंतर्गत जल प्रबंधन के कार्यों का एक स्पष्ट पदानुक्रम है। सबसे निचले स्तर पर 'वार्ड सभा' होती है जहाँ स्थानीय जरूरतों पर चर्चा होती है। इसके बाद 'ग्राम सभा' में पूरे गाँव के लिए निर्णय लिए जाते हैं। विकास की योजनाओं को मंजूरी हेतु 'पंचायत समिति' और अंत में नीतिगत निर्णय एवं बड़े बजट हेतु 'जिला परिषद' कार्य करती है। यह लोकतांत्रिक जल प्रबंधन है।

99. (3) यह नदी जल के बंटवारे के लिए अंतर्राष्ट्रीय संधियों का निर्धारण करती है।
स्थानीय जल प्रबंधन में ग्राम सभा की भूमिका प्रभावशाली होती है। यह सामुदायिक नियोजन, जल निकायों के रखरखाव और स्वच्छता के नियम बनाने के लिए एक सशक्त लोकतांत्रिक मंच है। यह जल स्रोतों के दुरुपयोग पर दंड भी लगा सकती है। हालाँकि, नदी जल के बंटवारे से जुड़ी अंतर्राष्ट्रीय या अंतर-राज्यीय संधियां केंद्र और राज्य सरकारों के अधिकार क्षेत्र में आती हैं, जिसमें ग्राम सभा की कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं होती।

100. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
आधुनिक समय में पाइपलाइन द्वारा घर-घर जल पहुँचाने की केंद्रीकृत व्यवस्था ने सुविधा तो दी है, लेकिन इसके कारण समुदाय का अपने पारंपरिक जल स्रोतों से लगाव कम हो गया है। इससे इन ऐतिहासिक निकायों की उपेक्षा हुई है। विशेषज्ञों का मानना है कि केवल राज्य पर निर्भरता के बजाय यदि समुदाय स्वयं अपने जल स्रोतों का प्रबंधन करे, तो उनमें स्वामित्व की भावना पैदा होती है और बेहतर रखरखाव संभव होता है।

101. (1) केवल I और II
राजस्थान में जल निकायों की सुरक्षा हेतु सदियों से कड़े सामुदायिक नियम प्रचलित रहे हैं। 'ओरण' में वृक्ष काटना दंडनीय माना जाता था, जिससे जलग्रहण क्षेत्र सुरक्षित रहते थे। पेयजल के तालाबों में स्वच्छता बनाए रखने हेतु पशुओं को दूर रखना और साबुन का प्रयोग न करना जैसे नियम सामाजिक सहमति से लागू किए जाते थे। इन नियमों का पालन जल के प्रति गहरी श्रद्धा और सामूहिक उत्तरदायित्व से किया जाता था।

102. (2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
जल प्रबंधन के पारंपरिक शब्द राजस्थान की समृद्ध संस्कृति को दर्शाते हैं। 'ओरण' वह पवित्र उपवन है जो जलग्रहण क्षेत्र की रक्षा करता है। 'श्रमदान' समुदाय द्वारा जल स्रोतों के निर्माण हेतु किया गया स्वैच्छिक शारीरिक कार्य है। 'कुईं' नमी को संचित करने वाला एक बहुत ही संकीर्ण और गहरा कुआँ है। 'आगोर' वह तैयार ढलान वाली सतह है जहाँ से वर्षा का जल बहकर जलाशय में एकत्रित होता है।

103. (4) पारंपरिक जल अधिकारों के आधार पर ग्राम के वरिष्ठ जनों द्वारा मध्यस्थता।
राजस्थान के ग्रामीण समाजों में जल वितरण को लेकर होने वाले विवादों को सुलझाने के लिए एक पारंपरिक व्यवस्था रही है। खड़ीन या नहरों के जल अधिकारों पर किसी भी असहमति को ग्राम के अनुभवी और निष्पक्ष बुजुर्गों (पंचों) के माध्यम से सुलझाया जाता है। यह मध्यस्थता ऐतिहासिक जल अधिकारों और सामुदायिक सद्भाव पर आधारित होती है। यह कानूनी प्रक्रियाओं की तुलना में तेज और स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल समाधान प्रदान करती है।

104. (1) यह पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करता है और सामूहिक स्वामित्व सुनिश्चित करता।
जल प्रबंधन का ग्राम सभा आधारित दृष्टिकोण नौकरशाही प्रणालियों से अधिक प्रभावी है क्योंकि यह स्थानीय भूगोल और सदियों पुराने पारंपरिक ज्ञान पर आधारित होता है। जब ग्रामीण स्वयं योजना बनाते हैं और निर्णय लेते हैं, तो उनमें उस परियोजना के प्रति 'सामूहिक स्वामित्व' की भावना विकसित होती है। इससे जल संसाधनों का अपव्यय कम होता है और उनका रखरखाव अधिक जिम्मेदारी से किया जाता है। यह टिकाऊ मॉडल है।

105. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान की स्वदेशी जल संचयन प्रणालियाँ, जैसे खड़ीन, टाँका और बावड़ियाँ, सदियों से निरंतर प्रभावी सिद्ध हुई हैं। इनकी सफलता का मुख्य कारण यह है कि इन्हें स्थानीय जलवायु, मिट्टी की प्रकृति और वर्षा के स्वरूप के सूक्ष्म विश्लेषण के आधार पर विकसित किया गया था। स्थानीय निर्माण सामग्री का उपयोग इन प्रणालियों को सस्ता और टिकाऊ बनाता है। यह मरुस्थलीय परिस्थितियों में जल सुरक्षा का आदर्श मॉडल है।

106. (2) यह मीठे उप-सतही रिसाव को संचित करने के लिए खोदा गया एक संकीर्ण गहरा गड्ढा है।
'कुईं' या 'बेरी' पश्चिमी राजस्थान की एक अनूठी जल संरचना है, जिसे मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में बनाया जाता है जहाँ भूजल खारा होता है। यह सामान्य कुओं से बहुत संकीर्ण होती है और इसकी गहराई उस परत तक होती है जहाँ वर्षा जल नमी के रूप में जमा रहता है। यह नमी धीरे-धीरे कुईं की दीवारों से रिसकर नीचे जमा होती है। यह जल अत्यंत मीठा और शुद्ध होता है।

86. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
टाँका के निर्माण में जलग्रहण क्षेत्र को चिकना और अभेद्य बनाना अनिवार्य है ताकि पानी मिट्टी में न सोख सके। पारंपरिक रूप से इसके लिए मिट्टी, राख और बारीक बजरी के मिश्रण का लेप लगाया जाता था, जो एक प्राकृतिक जलरोधी परत बनाता था। समय के साथ निर्माण तकनीकों में बदलाव आया है और अब स्थायित्व तथा बेहतर स्वच्छता के लिए सीमेंट और कंक्रीट का उपयोग व्यापक रूप से किया जा रहा है।

87. (4) छत के स्वच्छ वर्षा जल को पाइप द्वारा भूमिगत टाँका में संचित करना।
आधुनिक शहरी क्षेत्रों में पारंपरिक टाँका प्रणाली को अपनाने का सबसे वैज्ञानिक और व्यावहारिक तरीका 'छत वर्षा जल संचयन' है। इसमें घर की छत को जलग्रहण क्षेत्र के रूप में उपयोग किया जाता है। छत पर गिरने वाले बारिश के पानी को पाइपों के माध्यम से छानकर सीधे भूमिगत टाँका में पहुँचाया जाता है। यह विधि न केवल शहर की जलापूर्ति पर निर्भरता कम करती है, बल्कि भूजल स्तर को सुधारने में भी प्रभावी है।

88. (3) केवल I, II, और IV
एक आदर्श टाँका हमेशा ऊंचे और साफ स्थान पर बनाया जाता है ताकि जलग्रहण क्षेत्र प्रदूषित न हो। इसकी छत आमतौर पर गुंबददार या ढकी हुई होती है और इसमें छोटे प्रवेश द्वार होते हैं ताकि वाष्पीकरण और बाहरी गंदगी को रोका जा सके। इसकी आंतरिक दीवारों पर सघन पलस्तर किया जाता है ताकि पानी का रिसाव न हो। टाँका का निर्माण मुख्य रूप से मानव और पशुओं के पेयजल हेतु किया जाता है।

89. (3) महाराणा राज सिंह
राजसमंद झील मेवाड़ के इतिहास का एक अनमोल हिस्सा है, जिसका निर्माण महाराणा राज सिंह ने 17वीं शताब्दी में करवाया था। यह झील अपनी भव्य 'नौ चौकी पाल' के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ सुंदर संगमरमर के मंडप और कलात्मक नक्काशी की गई है। इसी पाल पर प्रसिद्ध 'राज प्रशस्ति' उत्कीर्ण है, जो 25 शिलालेखों पर लिखा गया दुनिया का सबसे बड़ा संस्कृत शिलालेख है। यह स्थापत्य कला का अद्भुत संगम है।

90. (1) अकाल के दौरान जनता को राहत कार्य और रोजगार प्रदान करना।
मध्यकाल में राजपूत शासकों द्वारा बड़ी झीलों के निर्माण के पीछे एक गहरी मानवीय सोच थी। भीषण अकाल के समय, जब जनता के पास आजीविका का कोई साधन नहीं होता था, तब ये विशाल परियोजनाएं शुरू की जाती थीं। इससे लोगों को काम मिलता था और बदले में उन्हें अनाज या धन प्राप्त होता था। ये संरचनाएं भविष्य के लिए जल सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ आपदा प्रबंधन का सशक्त माध्यम थीं।

91. (4) यह जोधपुर के समीप प्रतिहार शासकों द्वारा निर्मित एक कृत्रिम झील है।
बालसमंद झील जोधपुर की एक प्राचीन कृत्रिम झील है। इसका निर्माण 12वीं शताब्दी में गुर्जर-प्रतिहार शासक बालक राव द्वारा करवाया गया था। यह झील विशेष रूप से मांडोर क्षेत्र को जल की आपूर्ति करने और आसपास के उद्यानों को हरा-भरा रखने के लिए बनाई गई थी। इसके किनारे बना लाल बलुआ पत्थर का भव्य महल बाद में बनाया गया था। यह प्रतिहार कालीन उत्कृष्ट जल इंजीनियरिंग का एक जीवंत उदाहरण है।

92. (2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
राजस्थान की ऐतिहासिक झीलों का निर्माण विभिन्न शासकों ने अपनी दूरदर्शिता के साथ किया। महाराणा राज सिंह ने राजसमंद झील बनवाई। अर्णोराज ने अजमेर में आना सागर का निर्माण कराया। उदयपुर के निकट विशाल जयसमंद झील का निर्माण महाराणा जय सिंह द्वितीय ने करवाया था, जो एशिया की सबसे बड़ी कृत्रिम झीलों में से एक रही है। अलवर की सिलीसेढ़ झील का निर्माण महाराजा विनय सिंह ने करवाया था।

93. (3) इनमें लगने वाली अत्यधिक पूँजी और जटिल अभियांत्रिकी स्थानीय लोगों के सामर्थ्य से बाहर थी।
विशाल बावड़ियों और कृत्रिम झीलों का निर्माण अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य था। इनके लिए हजारों मजदूरों के श्रम, बड़े पैमाने पर पत्थरों की खुदाई और जटिल जल-निकासी इंजीनियरिंग की आवश्यकता होती थी। इतनी बड़ी मात्रा में धन और संसाधनों का प्रबंधन केवल राजसी संरक्षण में ही संभव था। शासकों के पास आवश्यक तकनीकी विशेषज्ञ उपलब्ध होते थे, जिससे वे ऐसी टिकाऊ संरचनाएं बना सकते थे जो सदियों तक उपयोगी रहीं।

94. (4) चाँद बावड़ी
राजस्थान की कई विशाल झीलों जैसे राजसमंद, जयसमंद और फोय सागर का निर्माण विशेष रूप से अकाल के दौरान राहत कार्य प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया था। इन परियोजनाओं ने हजारों लोगों को संकट के समय रोजगार दिया। इसके विपरीत, चाँद बावड़ी एक अत्यंत प्राचीन संरचना है जिसका निर्माण आठवीं शताब्दी के आसपास मुख्य रूप से जल संचयन और आध्यात्मिक केंद्र के रूप में किया गया था। यह अकाल राहत परियोजना नहीं थी।

95. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
राजस्थान में शासकों ने जल निकायों को अक्सर मंदिरों, घाटों और बगीचों के साथ एकीकृत किया। इस समन्वय के पीछे गहरी धार्मिक सोच थी। जल को पवित्र माना जाता था, इसलिए मंदिरों के पास इसके होने से इसकी स्वच्छता सुनिश्चित होती थी। यह एक सार्वजनिक व्यवस्था थी जिसका उद्देश्य सभी के लिए जल की सुलभता सुनिश्चित करना था। धार्मिक भावनाओं ने इन स्रोतों के प्रति संरक्षण और सम्मान की भावना पैदा की।

96. (1) केवल I, II, III, और IV
राजपूत शासकों ने जल प्रबंधन को राज्य की स्थिरता का आधार बनाया। उन्होंने अकाल के समय जलाशयों का निर्माण कर रोजगार दिया और 'ओरण' जैसे क्षेत्रों को शाही आदेशों से सुरक्षित रखा। इन झीलों के तटबंधों पर कलात्मक बारादरी और ऐतिहासिक शिलालेख उनके शासन की गवाही देते हैं। उन्होंने व्यापारियों और आम जनता को जल दान और बावड़ी

(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प प्रारंभिक कला इतिहासकारों द्वारा प्रतिपादित राजपूत और मुगल चित्रकला शैलियों के बीच के अंतर का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(1) राजपूत चित्रकला आध्यात्मिक और लोक-आधारित है, जबकि मुगल चित्रकला दरबारी और भौतिकवादी है।
(2) राजपूत चित्रकला काफी हद तक धर्मनिरपेक्ष और यथार्थवादी है, जबकि मुगल चित्रकला अत्यधिक धार्मिक और रहस्यवादी है।
(3) राजपूत चित्रकला में विशेष रूप से तैल रंगों का उपयोग किया जाता है, जबकि मुगल चित्रकला जल-आधारित रंगों के उपयोग के लिए जानी जाती है।
(4) राजपूत चित्रकला में परिदृश्य तत्वों का पूर्णतः अभाव है, जबकि मुगल चित्रकला केवल पुष्प और जीव-जंतुओं के रूपांकनों पर केंद्रित है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. सूची I में दी गई विशेषताओं या विषयों को सूची II में दी गई संबंधित चित्रकला शैलियों के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (विशेषताएं/विषय)
A. पीले और लाल रंगों की प्रधानता
B. आखेट (शिकार) के दृश्यों की प्रचुरता
C. हरी पृष्ठभूमि और पशुओं की लड़ाई का चित्रण
D. स्वर्ण और रजत के व्यापक उपयोग के साथ मानवाकार चित्र (पोर्ट्रेट)
सूची II: (चित्रकला शैली)
i. बूंदी शैली
ii. कोटा शैली
iii. जयपुर शैली
iv. मेवाड़ शैली
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. उदयपुर में 'चितेरों की ओवरी' (जिसे 'तस्वीरा रो कारखानो' भी कहा जाता है) नामक कला अकादमी की स्थापना का श्रेय किस शासक को दिया जाता है?
(1) महाराणा जगत सिंह प्रथम
(2) महाराणा अमर सिंह प्रथम
(3) महाराणा संग्राम सिंह द्वितीय
(4) महाराणा कुम्भा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. निम्नलिखित में से कौन-सी विस्तृत मेवाड़ चित्रकला शैली की मान्यता प्राप्त उप-शैली नहीं है?
(1) नाथद्वारा
(2) देवगढ़
(3) चावंड
(4) उनियारा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. मेवाड़ चित्रकला शैली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. कदम्ब के वृक्ष और हाथियों को प्रायः पृष्ठभूमि के तत्वों के रूप में चित्रित किया जाता है।
II. यह शैली महाराणा प्रताप के शासनकाल के दौरान अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।
III. साहिबदीन और मनोहर इस शैली से जुड़े प्रमुख चित्रकार थे।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II, और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. नाथद्वारा उप-शैली के संदर्भ में 'पिछवाई' शब्द का क्या अर्थ है?
(1) महाराणाओं के लघु चित्र जिन्हें प्रायः सामंतों द्वारा सजावटी स्वर्ण लॉकेट के रूप में धारण किया जाता था।
(2) प्रमुख मंदिर उत्सवों और समारोहों के दौरान विग्रहों द्वारा धारण किए जाने वाले स्वर्ण और रजत के जटिल आभूषण।
(3) श्रीनाथजी के विग्रह के पीछे लटकाए जाने वाले कपड़े के चित्र जिनमें कृष्ण के लीला प्रसंगों को दर्शाया गया है।
(4) मंदिर की बाह्य दीवारों पर चित्रित कथात्मक भित्ति चित्र जिनमें पुराणों के विभिन्न दृश्यों को दर्शाया गया है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. मेवाड़ शैली के अंतर्गत चित्रकार और उनके द्वारा चित्रित ग्रंथ के सही युग्म की पहचान करें।
(1) मनोहर - चावंड की रागमाला
(2) निसारुद्दीन - आर्ष रामायण
(3) हीरानंद - गीत गोविंद
(4) साहिबदीन - रसिकप्रिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. मेवाड़ चित्रकला शैली के निम्नलिखित घटनाक्रमों पर विचार करें:
I. निसारुद्दीन द्वारा चावंड रागमाला का चित्रण
II. महाराणा जगत सिंह प्रथम के अधीन स्वर्ण काल
III. श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी का चित्रण
IV. नाथद्वारा पिछवाई का उद्भव
निम्नलिखित में से कौन इन विकासों के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) III, I, II, IV
(2) I, III, IV, II
(3) III, II, I, IV

107. (3) रेज़ाणी पाणी — अत्यधिक खारा सतही जल जो उपभोग के योग्य नहीं है
राजस्थान की जल संस्कृति में पानी के तीन प्रमुख वर्गीकरण हैं। 'पालर पाणी' वर्षा जल है। 'पाताल पाणी' वह भूज़ल है जो गहराई से कुओं द्वारा निकाला जाता है। 'रेज़ाणी पाणी' वह नमी है जो धरातल के नीचे अभेद्य परत के ऊपर फंसी रहती है और खारे भूज़ल में नहीं मिलती। विकल्प में दी गई 'खारा सतही जल' वाली परिभाषा गलत है, क्योंकि रेजाणी पाणी अपने मीठे स्वाद हेतु प्रसिद्ध है।

108. (1) अभेद्य परतों के ऊपर स्थित नमी, जिसे कुईं के माध्यम से प्राप्त किया जाता है।
'रेजाणी पाणी' थार मरुस्थल की एक चमत्कारिक विशेषता है। वर्षा का पानी जब जमीन में रिसता है, तो वह एक गहरी अभेद्य परत (जिप्सम या खड़िया) पर रुक जाता है। यह पानी नीचे स्थित खारे भूज़ल में नहीं मिल पाता और नमी के रूप में सुरक्षित रहता है। कुईं खोदकर इसी नमी को धीरे-धीरे बूंद-बूंद करके एकत्रित किया जाता है। यह जल वाष्पीकरण से मुक्त और प्राकृतिक रूप से शुद्ध होता है।

109. (3) बिसलेरी पाणी
थार मरुस्थल में जल की प्रकृति को समझने के लिए तीन पारंपरिक श्रेणियों का उपयोग किया जाता रहा है: पालर पाणी (वर्षा जल), पाताल पाणी (भूज़ल) और रेजाणी पाणी (मृदा नमी)। ये शब्द स्थानीय पारिस्थितिकी और जल चक्र की गहरी समझ को दर्शाते हैं। इसके विपरीत, 'बिसलेरी' कोई पारंपरिक श्रेणी नहीं है, बल्कि यह एक आधुनिक व्यावसायिक ब्रांड का नाम है जिसका प्राचीन जल विरासत से कोई संबंध नहीं है।

110. (2) केवल I, II, और IV
प्राचीन काल के लोग जल की खोज में निपुण थे। वे गहरी जड़ों वाले वृक्षों (जैसे खेजड़ी) का अवलोकन करते थे, जो भूजल की निकटता का संकेत देते हैं। दीमकों के टीलों में नमी और उनके विशिष्ट रंग से भी जल की उपस्थिति का पता लगाया जाता था। इसके अलावा, जंगली जानवरों के व्यवहार का सूक्ष्म निरीक्षण किया जाता था। ये सभी विधियाँ स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान पर आधारित थीं, न कि उपग्रह तकनीक पर।

111. (3) कथन I सत्य है लेकिन कथन II असत्य है।
राजस्थान के खानाबदोश चरवाहा समुदायों के पास जल स्रोतों का विस्तृत ज्ञान था। वे अपने मवेशियों के साथ उन मार्गों पर चलते थे जहाँ प्राकृतिक कुएँ या पुरानी नाडियाँ उपलब्ध होती थीं। यह ज्ञान उनके जीवन निर्वाह के लिए अनिवार्य था। यह कहना गलत है कि वे जल स्रोतों से दूर रहते थे; वास्तव में वे जल स्रोतों के पास रुकते थे और उनके रखरखाव में भी मदद करते थे।

112. (1) II, III, I
राजस्थान की जल संरचनाओं की गहराई उनकी कार्यप्रणाली के अनुसार भिन्न होती है। नाडी (ग्रामीण तालाब) सबसे उथली संरचना है, जो केवल सतह पर वर्षा जल संचय करती है। टाँका एक गहरा भूमिगत जलाशय होता है जिसे जल संचयन हेतु पक्का बनाया जाता है। बावड़ी इन सबमें सबसे गहरी संरचना होती है, जो अक्सर भूज़ल स्तर तक पहुँचने हेतु कई मंजिलें नीचे तक बनाई जाती है। सही क्रम नाडी, टाँका, बावड़ी है।

113. (2) जलग्रहण क्षेत्रों के कंक्रीटीकरण और अतिक्रमण के कारण जल निकाय सूख रहे हैं।
वर्तमान शहरीकरण ने राजस्थान की पारंपरिक जल प्रणालियों को भारी नुकसान पहुँचाया है। शहरों के विस्तार के दौरान उन जलग्रहण क्षेत्रों (आगोर) पर कंक्रीट की इमारतें और सड़कें बना दी गई हैं, जहाँ से पानी बहकर जलाशयों में आता था। इस अतिक्रमण के कारण वर्षा का जल जलाशयों तक नहीं पहुँच पाता और वे सूख रहे हैं। यह असंतुलित नियोजन जल संकट और बाढ़ का कारण भी बन रहा है।

114. (1) मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान पारंपरिक संचयन को आधुनिक प्रबंधन के साथ एकीकृत करने पर केंद्रित है।
राजस्थान सरकार अपनी जल विरासत को बचाने के लिए प्रयास कर रही है। 'मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान' जैसी योजनाएं पारंपरिक संरचनाओं के जीर्णोद्धार को आधुनिक वैज्ञानिक मानचित्रण के साथ जोड़ती हैं। इसका लक्ष्य गाँवों को जल के मामले में आत्मनिर्भर बनाना और लुप्त हो रही स्वदेशी प्रणालियों को पुनर्जीवित करना है। यह अभियान जल संरक्षण में सामुदायिक भागीदारी और आधुनिक इंजीनियरिंग का सफल समन्वय प्रस्तुत करता है।

115. (3) सूक्ष्म जल-विभाजक क्षेत्रों में नए खड़ीन निर्माण हेतु भौगोलिक मानचित्रण का उपयोग करके।
आधुनिक कृषि में खड़ीन प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक है। रिमोट सेंसिंग और जीआईएस जैसी तकनीकों का उपयोग करके उन सूक्ष्म जल-विभाजक क्षेत्रों की पहचान की जा सकती है जहाँ प्राकृतिक ढलान खड़ीन के लिए उपयुक्त हो। नए खड़ीन बनाकर हम न केवल वर्षा जल का संचय कर सकते हैं, बल्कि कम लागत में टिकाऊ खेती को भी बढ़ावा दे सकते हैं। यह तकनीक शुष्क कृषि हेतु वरदान है।

116. (1) केवल I, II, III, और IV
राजस्थान की जल विरासत के सामने आज कई गंभीर संकट हैं। नगरीय विस्तार के कारण जलग्रहण क्षेत्रों पर अतिक्रमण हो रहा है और औद्योगिक अपशिष्ट जल निकायों को प्रदूषित कर रहे हैं। सरकारी पाइपलाइन आपूर्ति पर निर्भरता के कारण लोगों ने सामुदायिक रखरखाव की परंपरा को छोड़ दिया है। साथ ही, गहरे बोरवेलों द्वारा भूज़ल का अनियंत्रित दोहन सतह के पारंपरिक जल स्रोतों को सुखा रहा है। ये कारक जल सुरक्षा को कमजोर कर रहे हैं।

117. (1) कथन I और कथन II दोनों सत्य हैं।
इन्दिरा गाँधी नहर ने पश्चिमी राजस्थान की अर्थव्यवस्था को कृषि क्रांति के माध्यम से बदल दिया है। हालाँकि, इस निरंतर जल आपूर्ति का एक नकारात्मक पक्ष भी सामने आया है। नहर के पानी की प्रचुरता के कारण स्थानीय लोगों ने अपने पारंपरिक जल संचयन प्रणालियों की उपेक्षा शुरु कर दी। सिंचाई के

54. (4) जल की ओर जाने वाले बड़े सार्वजनिक स्नान घाटों का निर्माण।
कुंड का प्राथमिक उद्देश्य पेयजल की उच्च गुणवत्ता और शुद्धता बनाए रखना है। इसके लिए भंडारण गड्ढे को गुंबददार ढक्कन से ढका जाता है ताकि धूल अंदर न जा सके। जल प्रवेश मार्गों पर जालियाँ लगाई जाती हैं ताकि कचरा बाहर ही रुक जाए। आंतरिक दीवारों पर चूने का पलस्तर किया जाता है जो जल को साफ रखता है। चूँकि यह पेयजल स्रोत है, इसलिए यहाँ सार्वजनिक स्नान घाट नहीं बनाए जाते।

55. (1) केवल I और II
राजस्थान में कुंडों के प्रति गहरा सम्मान पाया जाता है। जलग्रहण क्षेत्र की स्वच्छता बनाए रखने के लिए वहाँ जूते पहनकर जाना वर्जित होता है, जो जल के प्रति श्रद्धा का प्रतीक है। ये संरचनाएँ अक्सर धनी व्यक्तियों द्वारा जनकल्याण हेतु बनवाई जाती थीं। कुंड का जल अत्यंत सीमित और मूल्यवान होता है, इसलिए इसका उपयोग केवल पीने के लिए किया जाता है, न कि कृषि सिंचाई हेतु। यह सामुदायिक प्रबंधन का उदाहरण है।

56. (2) अत्यधिक सरंध्र बलुआ पत्थर
कुंड के निर्माण में ऐसी सामग्रियों का चयन किया जाता है जो जल को रिसने से रोक सकें। चूने और राख का मिश्रण एक मजबूत जलरोधी परत बनाने हेतु उपयोग किया जाता है। इसके विपरीत, अत्यधिक सरंध्र बलुआ पत्थर का उपयोग नहीं किया जाता क्योंकि इसमें से पानी आसानी से रिस सकता है, जिससे संचित जल का नुकसान होगा। आधुनिक समय में सीमेंट का उपयोग भी किया जा रहा है, लेकिन अभेद्य सामग्री पहली पसंद है।

57. (3) शेखावाटी और अलवर
राजस्थान में 'जोहड़ों' के माध्यम से जल संरक्षण का सामुदायिक प्रयास मुख्य रूप से शेखावाटी (सीकर, झुंझुनू, चूरू) और अलवर जिलों में केंद्रित रहा है। इन क्षेत्रों में मिट्टी के छोटे अर्धवृत्ताकार बाँध बनाकर वर्षा जल को रोकने की पुरानी परंपरा है। हाल के दशकों में इन क्षेत्रों में जोहड़ों के पुनरुद्धार ने सूखी हुई नदियों को फिर से जीवित करने और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर बनाने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है।

58. (1) तरुण भारत संघ
'जल पुरुष' के नाम से विख्यात राजेंद्र सिंह के नेतृत्व में 'तरुण भारत संघ' नामक संगठन ने राजस्थान में जोहड़ों के पुनर्निर्माण हेतु महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस संगठन ने हजारों गाँवों में समुदायों को संगठित किया और उन्हें पारंपरिक तकनीकों के प्रति जागरूक बनाया। उनके प्रयासों से न केवल भूजल स्तर में सुधार हुआ, बल्कि कई मृत नदियाँ पुनर्जीवित हो गईं। इस कार्य हेतु उन्हें 'रेमन मैग्सेसे' पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

59. (3) जोहड़ भूजल पुनर्भरण के लिए निर्मित कच्चा बाँध है, जबकि टाँका एक पक्का भूमिगत जलाशय है।
जोहड़ और टाँका दोनों ही राजस्थान की महत्वपूर्ण जल प्रणालियाँ हैं, लेकिन उनकी संरचना भिन्न है। जोहड़ एक खुला, कच्चा मिट्टी का तटबंध होता है जिसका मुख्य उद्देश्य वर्षा जल को रोककर उसे भूमि में रिसने देना है, जिससे भूजल का पुनर्भरण होता है। इसके विपरीत, टाँका एक पक्का और ढका हुआ भूमिगत जलाशय है, जो विशेष रूप से शुद्ध पेयजल के संचयन हेतु बनाया जाता है। जोहड़ सामुदायिक होते हैं।

60. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जोहड़ों की एक श्रृंखला बनाकर बहते हुए वर्षा जल को छोटे-छोटे अवरोधों में रोका जाता है। इससे जल का तीव्र सतही प्रवाह धीमा हो जाता है और उसे जमीन के अंदर रिसने हेतु पर्याप्त समय मिलता है। यह प्रकिया न केवल कुओं के जल स्तर को बढ़ाती है, बल्कि मिट्टी के अंदर नमी का भंडार भी बनाती है। यही संचित भूजल बाद में नदियों को पुनर्जीवित करने में सहायक सिद्ध होता है।

61. (4) सूक्ष्म जलवायु और वनस्पति आवरण में सुधार।
जोहड़ों के सफल कार्यान्वयन से किसी क्षेत्र की पारिस्थितिकी पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। जब वर्षा जल को रोककर भूजल का पुनर्भरण किया जाता है, तो मिट्टी की नमी का स्तर बढ़ जाता है। इससे स्थानीय वनस्पति का तेजी से विकास होता है और चारागाहों में हरियाली लौट आती है। बढ़ी हुई नमी और हरियाली मिलकर क्षेत्र की सूक्ष्म जलवायु को ठंडा बनाती हैं। यह प्रक्रिया मृदा अपरदन को कम करती है।

62. (2) जोहड़ निजी संरचनाएँ हैं जिनका जल केवल भूमि स्वामी के लिए सुरक्षित रहता है।
जोहड़ अनिवार्य रूप से एक सामुदायिक संसाधन है, जिसका प्रबंधन और लाभ पूरे गाँव के लिए होता है। इनका नियोजन स्थानीय भौगोलिक ज्ञान के आधार पर सामूहिक रूप से किया जाता है। इनके निर्माण और रखरखाव में ग्रामीण 'श्रमदान' करते हैं, जो सामाजिक एकता का प्रतीक है। ग्राम सभाएँ ही इनके जल उपयोग के नियम तय करती हैं ताकि पशुओं और मनुष्यों को समान लाभ मिले। यह एक साझा विरासत है।

63. (4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
जोहड़ आमतौर पर वर्ष भर सिंचाई हेतु पर्याप्त सतही जल प्रदान नहीं करते, क्योंकि उनका मुख्य कार्य जल को भूमि में पहुँचाना है। इनका वास्तविक लाभ यह है कि ये मिट्टी की नमी को बढ़ाते हैं और आसपास के कुओं के जल स्तर को ऊपर लाते हैं। इससे रबी की फसल को कम सिंचाई में भी सुरक्षित उगाया जा सकता है। यह सूक्ष्म जल संचयन प्रणाली कृषि जोखिम को कम करती है।

64. (4) अपवाह को रोकना, मृदा अपरदन रोकना और भूजल पुनर्भरण को सुगम बनाना।
जोहड़ का प्राथमिक वैज्ञानिक कार्य वर्षा जल के तीव्र बहाव को नियंत्रित करना है। ढलान वाली भूमि पर मिट्टी का तटबंध बनाकर यह वर्षा जल को रोकता है, जिससे उपजाऊ मिट्टी बहने से बच जाती है। रुका हुआ जल धीरे-धीरे भूमि के नीचे रिसता है, जो स्थानीय जलभृतों को पुनर्जीवित करता है और कुओं में जल का स्तर बनाए रखता है। यह शुष्क क्षेत्रों में जल सुरक्षा सुनिश्चित करने वाली टिकाऊ तकनीक है।

अध्याय 12
चित्रकला की शैलियाँ एवं हस्तशिल्प

1. निम्नलिखित में से किसने अपने 1916 के प्रकाशन में मुगल चित्रकला से अलग पहचान स्थापित करने के लिए 'राजपूत पेंटिंग' शब्द का प्रतिपादन किया था?
(1) पर्सी ब्राउन
(2) आनंद कुमारस्वामी
(3) डब्लू. एच. आर्चर
(4) कार्ल खंडालवाला
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. राजस्थान की चित्रकला परंपराओं के प्रारंभिक विकास को प्रभावित करने वाले ऐतिहासिक ग्रंथों के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन करें।
(1) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी, सुपासनाह चरियम, कल्पसूत्र, रसिकप्रिया
(2) कल्पसूत्र, श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी, सुपासनाह चरियम, रसिकप्रिया
(3) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी, कल्पसूत्र, सुपासनाह चरियम, रसिकप्रिया
(4) सुपासनाह चरियम, कल्पसूत्र, रसिकप्रिया, श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. राजपूत चित्रकला की उत्पत्ति और विकास के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) यह ताड़ के पत्तों की पांडुलिपियों में पाई जाने वाली पश्चिमी भारतीय या अपभ्रंश शैली से विकसित हुई है।
(2) प्रारंभिक राजपूत चित्रों पर जैन पांडुलिपि चित्रों और धार्मिक प्रतीकों का गहरा प्रभाव था।
(3) राजपूत चित्रकला के विषयगत चयन को आकार देने में भक्ति आंदोलन की भूमिका नगण्य थी।
(4) विभिन्न राजपूत चित्र शैलियों में प्रकृति को मुख्य रूप से मानवीय भावनाओं की पृष्ठभूमि के रूप में चित्रित किया गया है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन करें।
कथन (A): प्रारंभिक राजपूत लघु चित्रों में मुख्य रूप से नायक-नायिका भेद और कृष्ण लीला के विषय शामिल थे।
कारण (R): वैष्णववाद के पुनरुद्धार और भक्ति आंदोलन के प्रसार ने अलौकिक प्रेम को चित्रित करने की एक सुदृढ़ सांस्कृतिक मांग उत्पन्न की थी।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. राजस्थान का सबसे प्राचीन ज्ञात लघु चित्र, 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी', मेवाड़ के रावल तेजसिंह के शासनकाल के दौरान किस चित्रकार द्वारा चित्रित किया गया था?
(1) साहिबदीन
(2) मनोहर
(3) कमलचन्द्र
(4) हीरानंद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. राजपूत चित्रकला की मुख्य विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह मुख्य रुप से एक दरबारी कला है जो लोक तत्वों से रहित है।
II. प्रयुक्त रंग मुख्य रूप से खनिजों, वनस्पतियों और बहुमूल्य रत्नों से प्राप्त किए जाते हैं।
III. आकृतियों को सामान्यतः एक-चश्म (एक तरफ का चेहरा) के रूप में चित्रित किया गया है।
IV. इसमें सपाट आयामों की तुलना में परिप्रेक्ष्य और यथार्थवाद पर अत्यधिक बल दिया गया है।
V. ऋतुओं, मनोभावों और रागों को चित्रित करने के लिए प्रतीकात्मकता का व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, और III
(2) II, III, और V
(3) I, III, और IV
(4) II, IV, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. राजपूत चित्रकला के विकास में मील का पत्थर मानी जाने वाली पांडुलिपि 'सुपासनाह चरियम' किस वर्ष चित्रित की गई थी?
(1) 1260 ईस्वी
(2) 1370 ईस्वी
(3) 1540 ईस्वी
(4) 1423 ईस्वी

75. (1) II, III, I, IV
खड़ीन प्रणाली में जल का प्रवाह एक निश्चित वैज्ञानिक मार्ग का अनुसरण करता है। सबसे पहले वर्षा का पानी पथरीले जलग्रहण क्षेत्रों से बहकर नीचे आता है। इसके बाद, इस अपवाह को मिट्टी के एक मजबूत तटबंध (खड़ीन बाँध) द्वारा रोका जाता है। जब जल का स्तर बहुत अधिक बढ़ जाता है, तो उसे 'नेहटा' नामक निकास मार्ग से सुरक्षित बाहर निकाला जाता है। अंततः, संचित जल से संतृप्त खेत में कृषि कार्य किया जाता है।

76. (2) संचित अपवाह रबी की फसलों के लिए भूमि में नमी का गहरा रिसाव सुनिश्चित करता है।
खड़ीन प्रणाली की सफलता का मुख्य रहस्य भूमि में नमी का संरक्षण है। जैसलमेर जैसे शुष्क क्षेत्रों में खड़ीन बाँध मानसून के थोड़े से पानी को भी रोक लेता है। यह पानी कई हफ्तों तक खेत में खड़ा रहता है, जिससे वह जमीन के काफी नीचे तक रिस जाता है। यह 'भूमिगत नमी' मानसून के महीनों बाद भी रबी की फसलों को बिना अतिरिक्त सिंचाई के पकने में मदद करती है।

77. (4) अतिरिक्त बाढ़ के जल को सुरक्षित निकालने के लिए एक पक्का निकास मार्ग (नेहटा) बनाया जाता है।
खड़ीन संरचना के डिजाइन में सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा जाता है। इसका मिट्टी का बाँध हमेशा ढलान के निचले हिस्से पर बनाया जाता है ताकि अधिकतम पानी रोका जा सके। यदि अत्यधिक वर्षा के कारण पानी का दबाव बढ़ जाए, तो बाँध को टूटने से बचाने हेतु एक पक्का निकास द्वार बनाया जाता है जिसे 'नेहटा' कहते हैं। यह अतिरिक्त जल को सुरक्षित क्षेत्र में प्रवाहित कर देता है, जिससे संरचना सुरक्षित रहती है।

78. (4) I, II, और III
खड़ीन प्रणाली के बहुआयामी लाभ हैं। यह ढलान से आने वाले पानी के वेग को कम करके मृदा अपरदन को रोकती है, जिससे खेतों की ऊपरी उपजाऊ परत सुरक्षित रहती है। अपवाह जल अपने साथ जो सूक्ष्म गाद और कार्बनिक तत्व लाता है, वे मिट्टी की उर्वरता को प्राकृतिक रूप से बढ़ाते हैं। इसके अतिरिक्त, खड़ीन में जमा पानी का रिसाव आसपास के कुओं के जल स्तर को भी ऊपर उठाता है।

79. (4) कथन I असत्य है लेकिन कथन II सत्य है।
खड़ीन खेतों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी प्राकृतिक उर्वरता है। यहाँ किसी भी प्रकार के रासायनिक उर्वरकों की आवश्यकता नहीं होती। इसका कारण यह है कि वर्षा जल पहाड़ियों से बहते समय अपने साथ सूक्ष्म मिट्टी और कार्बनिक पदार्थों का मिश्रण लेकर आता है। यह गाद हर साल खेत में एक नई उपजाऊ परत के रूप में जमा हो जाती है। यह प्रक्रिया मिट्टी को हमेशा पोषक तत्वों से भरपूर बनाए रखती है।

80. (2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
खड़ीन प्रणाली के प्रत्येक हिस्से का अपना विशिष्ट कार्य है। 'धोरा' वह मुख्य मिट्टी का तटबंध है जो पानी को खेत में रोकता है। 'आगोर' वह ऊँचा और पथरीला क्षेत्र है जहाँ से वर्षा का पानी बहकर आता है। 'बैठक' वह जलमग्न क्षेत्र है जहाँ पानी सूखने के बाद खेती की जाती है। 'नेहटा' वह निकास द्वार है जो बाँध की सुरक्षा हेतु अतिरिक्त पानी को बाहर निकालने का कार्य करता है।

81. (2) वर्षा जल संचयन और भंडारण के लिए निर्मित एक पक्का भूमिगत जलाशय।
बीकानेर, बाड़मेर और जोधपुर जैसे शुष्क जिलों में 'टाँका' एक अनिवार्य जल संरचना है। यह एक पक्का और गहराई में बना भूमिगत जलाशय होता है जिसे वर्षा जल को संग्रहित करने हेतु डिजाइन किया जाता है। टाँका की छत आमतौर पर ढकी हुई होती है ताकि जल वाष्पीकरण से बचा रहे। पश्चिमी राजस्थान के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में, यह सदियों से पेयजल का सबसे विश्वसनीय और शुद्धतम स्रोत रहा है।

82. (1) जलाशय में जल प्रवेश से पूर्व गाद और बालू को रोकना।
टाँका की वास्तुकला में 'सूही' एक अत्यंत महत्वपूर्ण सफाई घटक है। यह एक छोटा फिल्टर कक्ष होता है जो मुख्य टाँका के प्रवेश द्वार से ठीक पहले बनाया जाता है। जब जलग्रहण क्षेत्र से पानी बहकर आता है, तो वह पहले सूही में गिरता है। यहाँ पानी में घुली हुई मिट्टी और भारी कचरा नीचे बैठ जाता है और केवल साफ पानी ही मुख्य जलाशय में प्रवेश कर पाता है।

83. (3) ये केवल सरकारी परियोजनाएं हैं और कभी निजी स्वामित्व में नहीं होते।
टाँका राजस्थान की एक ऐसी परंपरा है जो केवल सरकारी परियोजनाओं तक सीमित नहीं है। ऐतिहासिक रूप से टाँका निर्माण एक व्यक्तिगत और सामुदायिक पहल रही है। पश्चिमी राजस्थान के लगभग हर पुराने घर में अपना एक निजी टाँका होता है। लोग इसे अपनी पेयजल सुरक्षा के लिए स्वयं निर्मित और अनुरक्षित करते हैं। यद्यपि अब सरकार भी इनका निर्माण करवाती है, लेकिन इनका मूल आधार निजी और सामाजिक स्वामित्व ही है।

84. (4) पाताल — वह भू-परत जहाँ से टाँका जल प्राप्त करता है
टाँका के निर्माण में 'आगोर' जलग्रहण क्षेत्र को कहते हैं, 'जाली' प्रवेश द्वार पर कचरा रोकने हेतु लगाई जाती है, और 'छज्जा' बाहरी गंदगी को रोकने वाली उभरी हुई सीमा होती है। हालाँकि, 'पाताल' टाँका का कोई घटक नहीं है। टाँका भू-परतों से जल प्राप्त नहीं करता, बल्कि यह पूरी तरह से वर्षा जल के संचयन पर निर्भर होता है। 'पाताल' शब्द आमतौर पर बहुत गहरे भूजल के संदर्भ में उपयोग होता है।

85. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिमी राजस्थान की दूर-दराज की बस्तियों में, जहाँ पाइपलाइन की सुविधा नहीं है, टाँका ही प्यास बुझाने का मुख्य साधन है। इसके भूमिगत और ढके हुए होने का वैज्ञानिक लाभ यह है कि यह भीषण गर्मी में वाष्पीकरण को न्यूनतम कर देता है। साथ ही, यह जल को धूल भरी आँधियों और बाहरी गंदगी से सुरक्षित रखता है, जिससे जल महीनों तक पीने योग्य बना रहता है। यह आदर्श समाधान है।

(4) I, II, III, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. मेवाड़ की शास्त्रीय चित्रकला शैली में बादलों के प्रतीक के रूप में किस विशिष्ट प्राकृतिक तत्व को सबसे विशिष्ट रूप से चित्रित किया गया है?
(1) हल्की वर्षा के आगमन को दर्शाने के लिए क्षितिज पर बिखरी हुई सूक्ष्म भूरी रेखाएं।
(2) कुंडलीदार सर्पाकार आकृति वाले गहरे नीले किनारे।
(3) गहरे नीले आकाश के सम्मुख नियोजित रूप से रखे गए कपास के समान सफेद धब्बे।
(4) मेवाड़ के भारी मानसूनी बादलों को दर्शाने के लिए स्वर्ण रेखाओं वाले काले बादल।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. स्वर्ण किनारों वाले बादलों के चित्रण और पीले रंग के प्रचुर उपयोग की विशिष्ट विशेषता किस चित्रकला शैली से सर्वाधिक निकटता से जुड़ी हुई है?
(1) बीकानेर शैली
(2) जोधपुर शैली
(3) किशनगढ़ शैली
(4) कोटा शैली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. मारवाड़ (जोधपुर) चित्रकला शैली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. राव मालदेव के शासनकाल में इसमें महत्वपूर्ण विकास हुआ।
II. ढोला-मारू की प्रेम कथा का चित्रण एक आवर्ती और प्रसिद्ध विषय है।
III. महाराजा मान सिंह के शासनकाल के दौरान, नाथ संप्रदाय ने विषयों को व्यापक रूप से प्रभावित किया।
IV. इस शैली ने अपने संपूर्ण इतिहास में मुगल प्रभाव को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, और III
(2) I, II, और IV
(3) II, III, और IV
(4) I, III, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. 'उस्ता कला', जिसमें ऊंट की खाल पर जटिल लघु चित्रकारी सम्मिलित है, मारवाड़ की किस उप-शैली की विशिष्ट पहचान है?
(1) नागौर
(2) जोधपुर
(3) बीकानेर
(4) घाणेराव
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. बीकानेर के निम्नलिखित में से कौन से परिवार या समुदाय मुख्य रूप से मुगल कलात्मक मूल के होने के उपरांत भी हिंदू धार्मिक विषयों को दर्शाने वाले भित्ति चित्र और लघु चित्र बनाने के लिए जाने जाते थे?
(1) मनिहार समुदाय
(2) उस्ता समुदाय
(3) साल्वी समुदाय
(4) मथेरण समुदाय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. सूची I में कलाकारों को सूची II में चित्रकला शैलियों के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (कलाकार)
A. अली रज़ा
B. वीरजी
C. निहाल चंद
D. निसारुद्दीन
सूची II: (चित्रकला शैली)
i. चावंड
ii. बीकानेर
iii. जोधपुर
iv. किशनगढ़
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार करें:
I. आम के वृक्षों का बार-बार चित्रण।
II. ऊँची पगड़ी और सुदृढ़ काठी वाले पात्र।
III. प्रमुख लाल और पीले रंगों का उपयोग।
IV. सघन वनों में आखेट के दृश्यों का चित्रण।
V. उत्तरवर्ती चरणों में वल्लभ संप्रदाय का व्यापक प्रभाव।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से मारवाड़ चित्रकला की जोधपुर उप-शैली का सही वर्णन करता/करते है/हैं?
(1) II, III, और IV
(2) I, II, और III
(3) I, IV, और V
(4) I, II, III, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. प्रसिद्ध लघु चित्र 'मूमल' मारवाड़ शैली की किस विशिष्ट उप-शैली से जुड़ा है?
(1) नागौर शैली
(2) सिरोही शैली
(3) घाणेराव शैली
(4) जैसलमेर शैली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

चित्रित करने के लिए यूरोपीय तैल रंगों और चित्रपट का अनन्य उपयोग।
(4) लोक उत्साह और हिंदू विषयों को मुगल तकनीकी परिष्करण तथा दरबारी सौंदर्यबोध के साथ मिश्रित करना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. राजस्थानी चित्रकला के संदर्भ में 'रागमाला' शब्द का अर्थ है:
(1) मनोभावों और ऋतुओं के अनुसार मानवीकृत रागों का दृश्य निरूपण।
(2) महत्वपूर्ण धार्मिक उत्सवों के दौरान विग्रह पर अर्पित पुष्पों की एक विशिष्ट माला।
(3) खनिज रंगों के मिश्रण की एक विशिष्ट तकनीक जो विशेष रूप से जयपुर शैली में प्रयुक्त होती है।
(4) मेवाड़ क्षेत्र के महाराणाओं द्वारा संरक्षित प्रधान चित्रकारों का राजकीय वंश।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. सूची I में प्रसिद्ध रागमाला सेटों को सूची II में उनके संबंधित चित्रकारों के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (प्रसिद्ध रागमाला सेट)
A. चावंड रागमाला (1605)
B. मेवाड़ रागमाला (1628)
C. कोटा रागमाला (1768)
D. पाली/मारवाड़ रागमाला (1623)
सूची II: (संबंधित चित्रकार)
i. वीरजी
ii. निसारुद्दीन
iii. साहिबदीन
iv. डालू
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. राजस्थान के निम्नलिखित प्रसिद्ध रागमाला चित्र सेटों पर विचार करें:
I. डालू द्वारा निर्मित कोटा रागमाला
II. निसारुद्दीन द्वारा निर्मित चावंड रागमाला
III. साहिबदीन द्वारा निर्मित मेवाड़ रागमाला
निम्नलिखित में से कौन उनके निर्माण के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) III, II, I
(2) II, III, I
(3) I, II, III
(4) II, I, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. राजस्थानी रागमाला चित्रों में 'राग भैरव' का मानवीकरण सामान्यतः क्या चित्रित करता है?
(1) भगवान शिव या कन्याओं द्वारा पूजित एक कुलीन पुरुष, प्रायः एक नंदी के साथ।
(2) वर्षा ऋतु की सघन निशाओं में वृष्टि के बीच अपने प्रिय की प्रतीक्षा करती एक नायिका।
(3) रणक्षेत्र से लौट रहे एक योद्धा का परिवार की स्त्रियों द्वारा स्वागत।
(4) पवित्र सरिता के तट के निकट सघन वन में सर्पों को मुग्ध करती एक नायिका।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. रागमाला चित्रों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. प्रत्येक राग दिन के एक विशिष्ट प्रहर और एक विशेष ऋतु से संबद्ध होता है।
II. वे कला, काव्य और शास्त्रीय संगीत के एकीकरण का प्रतिनिधित्व करते हैं।
III. रागमाला विषय अनन्य रूप से मेवाड़ शैली में चित्रित किए गए थे और मारवाड़ तथा हाड़ौती शैलियों में इनका अभाव है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल III
(4) केवल I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. राग या रागिनी के मनोभावों का वर्णन करने के लिए प्रायः रागमाला चित्रों के हाशिये या शीर्ष पटलों पर कौन-सा शास्त्रीय पाठ अंकित किया जाता था?
(1) बाबरनामा या अन्य मुगल दरबारी विवरण जो सम्राटों के जीवन का प्रलेखन करते थे।
(2) अर्थशास्त्र या प्राचीन राजनीतिक ग्रंथ जिनका उपयोग राजपूत राजकुमारों की शिक्षा हेतु किया जाता था।
(3) पद्मावत या मध्यकाल की अवधी बोली में रचित लोकप्रिय लोक आख्यान।
(4) संगीत रत्नाकर या राग का निरूपण करने वाले काव्यात्मक दोहे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. राजपूत परंपरा में रागिनी चित्र की विषयगत संरचना हेतु तत्वों का कौन-सा संयोजन आवश्यक है?
(1) एक पुरुष देवता, युद्ध भूमि का दृश्य और आकाश के लिए दीप्तिमान लाल रंग का प्रधान उपयोग।
(2) अमूर्त ज्यामितीय स्वरूप, मुगल वास्तुकला और पात्रों के लिए प्रयुक्त एकरंगी आभा।
(3) एक नायिका, विरह की अभिव्यक्ति और राग का प्रतीक प्रकृति।
(4) ग्रामीण राजस्थान के जनसामान्य, शस्य कर्तन के दृश्य और कृषि उपकरणों का चित्रण।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. जयपुर के निम्नलिखित शासकों और जयपुर चित्रकला शैली के विकास में उनके योगदान पर विचार करें:
I. सवाई जय सिंह द्वितीय (सूरतखाना की स्थापना)
II. सवाई प्रताप सिंह (चित्रकला का स्वर्ण युग)
III. सवाई राम सिंह द्वितीय (छायाचित्रण और नवीन कलाओं का परिचय)
IV. सवाई ईश्वरी सिंह (मानवाकार चित्रों का प्रारंभ)
निम्नलिखित में से कौन उनके योगदान के सही कालानुक्रमिक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, IV, II, III
(2) I, II, IV, III
(3) IV, I, II, III
(4) I, IV, III, II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. सूची I में जयपुर शैली के कलाकारों को सूची II में उनकी विशेषता या कार्य के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (जयपुर शैली के कलाकार)
A. साहिबराम
B. मोहम्मद शाह
C. शालिग्राम
D. रामजीदास
सूची II: (विशेषता/कार्य)
i. गीत गोविंद के लघु चित्र
ii. सवाई ईश्वरी सिंह का मानवाकार चित्र
iii. व्यक्तिचित्र और दरबारी दृश्य
iv. राधा-कृष्ण विषयों का चित्रण
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. जयपुर चित्रकला शैली की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसमें मुख्य चित्र के चारों ओर एक विस्तृत, अलंकृत हाशिया होता है।
II. दाढ़ी-विहीन चेहरे या कटी हुई दाढ़ी वाले पुरुषों का चित्रण मुगल प्रभाव को दर्शाता है।
III. पीपल और बरगद के वृक्ष सर्वाधिक चित्रित की जाने वाली वनस्पतियां हैं।
IV. प्राकृतिक हरे और सुनहरे रंगों का उपयोग अत्यधिक प्रचलित है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) II, III, और IV
(2) I, III, और IV
(3) I, II, और III
(4) I, II, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. पुंडरीक हवेली के उत्कृष्ट भित्ति चित्र किस चित्रकला शैली का श्रेष्ठ उदाहरण हैं?
(1) शेखावाटी शैली
(2) अलवर शैली
(3) जयपुर शैली
(4) बीकानेर शैली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. प्रमुख राजपूत चित्रकला शैलियों के अंतर्गत उनके प्राथमिक वर्गीकरण के आधार पर निम्नलिखित उप-शैलियों में से विषम का चयन करें।
(1) अलवर
(2) देवगढ़
(3) उनियारा
(4) शेखावाटी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. अलवर चित्रकला उप-शैली विशेष रूप से किस प्रकार के चित्रण के लिए प्रसिद्ध है?
(1) शुष्क पत्तों पर चित्रकारी
(2) मानवाकार चित्रपट व्यक्तिचित्र
(3) गुफाओं की छतों पर चित्रकारी
(4) हाथी दांत की पट्टियों पर चित्रकारी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. किसी चित्रकला शैली के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार करें:
I. जयपुर और बूंदी शैलियों का मिश्रण।
II. प्रसिद्ध कलाकारों में मीर बख्श, काशी और राम लखन सम्मिलित हैं।
III. राव राजा सरदार सिंह के संरक्षण में विकसित हुई।
IV. विशिष्ट स्थानीय विशेषताओं के साथ अश्वों और गजों को चित्रित करती है।
V. प्रायः रामायण और महाभारत के दृश्यों को दर्शाती है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन उनियारा चित्रकला शैली की सही पहचान करता है/करते हैं?
(1) केवल I, II, और V
(2) I, II, III, IV, और V
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, III, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. किशनगढ़ चित्रकला शैली किस शासक के संरक्षण में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची, जिन्होंने 'नागरी दास' के उपनाम से कविताएँ भी रची थीं?
(1) महाराजा जसवंत सिंह
(2) राजा किशन सिंह
(3) राजा सांवत सिंह
(4) राव सुरजन हाड़ा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. उत्कृष्ट कृति 'बणी-ठणी' के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. इसे प्रधान कलाकार निहाल चंद ने चित्रित किया था।
II. इस चित्र को प्रायः "भारत की मोनालिसा" कहा जाता है।
III. यह आकृति किशनगढ़ की एक ऐतिहासिक योद्धा रानी का प्रतिनिधित्व करती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से गलत है/हैं?

(1) केवल III
(2) केवल I और II
(3) केवल II और III
(4) केवल I
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. किस प्रमुख कला इतिहासकार और आलोचक को किशनगढ़ चित्रकला शैली को अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाने का श्रेय दिया जाता है?

(1) पर्सी ब्राउन और डब्लू. जी. आर्चर
(2) कार्ल खंडालवाला और आनंद कुमारस्वामी
(3) हरमन गोएट्ज़ और स्टेला क्रैमेरिश
(4) एरिक डिकिंसन और डॉ. फैयाज अली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार करें:

I. नुकीली नासिका और चिबुक के साथ दीर्घ मुखाकृति।
II. कमल दल या चापाकार नेत्र।
III. खिले हुए गुलाबी कमलों के साथ गहरे नीले जल का चित्रण।
IV. मुख्य रुप से श्वेत और गुलाबी रंगों का उपयोग।
V. राधा और कृष्ण के अलौकिक प्रेम के इर्द-गिर्द घूमने वाले केंद्रीय विषय।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से किशनगढ़ शैली की अनिवार्य विशेषताओं को दर्शाता है/दर्शाते हैं?

(1) I, II, और V
(2) I, II, III, IV, और V
(3) II, III, IV, और V
(4) I, III, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. किशनगढ़ शैली के संदर्भ में, 'बणी-ठणी' के विषय को सर्वाधिक उपयुक्त रुप से किसके मानवीकरण के रुप में व्याख्यायित किया गया है?

(1) देवी दुर्गा
(2) मीरा बाई
(3) राधा
(4) सीता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. किशनगढ़ चित्रकला शैली पर कांगड़ा प्रभाव के संबंध में सही कथन की पहचान करें।

(1) किशनगढ़ शैली ने स्थानीय जनजातीय रूपांकनों और ग्रामीण मरुस्थलीय विषयों के पक्ष में कांगड़ा शैली को पूर्णतः अस्वीकार कर दिया।
(2) कांगड़ा प्रभाव केवल स्थापत्य पृष्ठभूमि और श्वेत प्रसादों के शैलीबद्ध प्रतिनिधित्व में दृष्टिगोचर होता है।
(3) कांगड़ा प्रभाव के परिणामस्वरुप परवर्ती किशनगढ़ कला में विशेष रुप से लाल, नीले और पीले जैसे प्राथमिक रंगों का उपयोग किया गया।
(4) इसकी गीतात्मक भव्यता, सुकुमार रंग और रुमानी भाव कांगड़ा शैली के साथ गहरा सौंदर्य बोध साझा करते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. सूची I में चित्रकला शैलियों को सूची II में नेत्रों की विशिष्ट आकृतियों के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।

सूची I: (चित्रकला शैली)

A. मेवाड़
B. किशनगढ़
C. जोधपुर
D. जयपुर

सूची II: (नेत्रों की विशिष्ट आकृति)

i. बादामी नेत्र
ii. मत्स्याकार (मीनाक्षी) नेत्र
iii. कमल दल या चापाकार नेत्र
iv. तीक्ष्ण, विहंग दृश्य नेत्र

(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. किशनगढ़ चित्रकला शैली के विकास में वल्लभ संप्रदाय ने क्या भूमिका निभाई?

(1) इसने मंदिर के प्रवेश द्वारों पर विशेष रुप से अ-आलंकारिक ज्यामितीय स्वरुपों के चित्रण को अनिवार्य किया।
(2) इसने भगवान कृष्ण और राधा पर केंद्रित भक्ति विषयों को प्रेरित किया।
(3) इसने चित्रकला को पूर्णतः मंदिर के भित्ति चित्रों तक सीमित कर दिया और वाह्य चित्रपटों के उपयोग को प्रतिबंधित कर दिया।
(4) इसने क्षेत्र के आध्यात्मिक चित्रों में फारसी सुलेख की जटिल तकनीकों का समावेश किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन करें।

कथन (A): आमेर-जयपुर और बीकानेर चित्रकला शैलियों में उच्च स्तर का मुगल प्रभाव परिलक्षित होता है।

कारण (R): आमेर और बीकानेर के शासकों ने मुगल दरबार के साथ दीर्घकालिक वैवाहिक और राजनीतिक संबंध बनाए रखे थे।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. राजपूत चित्रकला का कौन-सा पक्ष मुगल शैली से सर्वाधिक प्रत्यक्ष रूप से ग्रहण किया गया था?
(1) यथार्थवादी दरबारी दृश्य, राजकीय व्यक्तिचित्र और विस्तृत वेशभूषा।
(2) प्राचीन ग्रंथों में वर्णित हिंदू पौराणिक कथाओं और आख्यानों पर विषयगत ध्यान।
(3) ग्रामीण भारतीय परिवेश में भक्ति आंदोलन और उसके संतों का चित्रण।
(4) यूरोपीय परिप्रेक्ष्य के बिना सुस्पष्ट, सपाट पृष्ठभूमि का उपयोग।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. सूची I में मुगल प्रभाव के चरण को सूची II में राजपूत चित्रकला पर संबंधित प्रभाव के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (मुगल प्रभाव का चरण)
A. अकबर का शासनकाल
B. जहांगीर का शासनकाल
C. शाहजहाँ का शासनकाल
D. औरंगजेब का शासनकाल
सूची II: (राजपूत चित्रकला पर प्रभाव)
i. समृद्ध हाशिये, स्वर्ण कार्य और परिष्कृत व्यक्तिचित्रों का परिचय।
ii. संरक्षण के अभाव के कारण राजकीय कलाकारों का राजपूत दरबारों में पलायन।
iii. फारसी परिष्करण के साथ स्वदेशी शैलियों का प्रारंभिक समन्वय।
iv. प्रकृति, पक्षियों और यथार्थवादी वनस्पतियों पर विशेष बल।
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. राजस्थान की प्रमुख शैलियों में से कौन-सी शैली उत्तरवर्ती काल तक अत्यधिक मुगल प्रभाव का विरोध करते हुए अपनी स्वदेशी विशेषताओं को सर्वाधिक समय तक बनाए रखने में सफल रही?
(1) मेवाड़
(2) आमेर
(3) बीकानेर
(4) मारवाड़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. उत्तरवर्ती राजपूत चित्रों में 'छाया-प्रकाश' (चियारोस्कुरो) की अवधारणा का समावेश मुगल दरबारों के माध्यम से प्राप्त किस प्रभाव का अप्रत्यक्ष परिणाम था?
(1) फारसी प्रभाव
(2) मध्य एशियाई प्रभाव
(3) चीनी प्रभाव
(4) यूरोपीय प्रभाव
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. राजपूत चित्रकला पर मुगल प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. स्त्रियों के वस्त्रों (ओढ़नी) में पारदर्शिता मुगल शैली से अपनाई गई एक विशेषता है।
II. मुगल प्रभाव के कारण समस्त राजपूत शैलियों में पौराणिक विषयों के स्थान पर पूर्णतः धर्मनिरपेक्ष दरबारी विषयों को समाहित कर लिया गया।
III. मुगल संपर्क से परिदृश्य पृष्ठभूमि में परिप्रेक्ष्य का व्यवस्थित उपयोग बढ़ा।
IV. बीकानेर के चित्रकार प्रायः स्पष्ट रूप से अपने कार्यों पर हस्ताक्षर और तिथि अंकित करते थे, यह परंपरा मुगल पद्धतियों से प्रभावित थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, और III
(2) I, III, और IV
(3) II, III, और IV
(4) I, II, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. मुगल और राजपूत चित्रकला शैलियों के बीच स्त्रियों के निरूपण में मौलिक अंतर क्या है?
(1) राजपूत चित्रों में स्त्रियों को किसी भी रूप में विरले ही चित्रित किया गया है, जबकि मुगल चित्र प्रायः महिला विषयों के जीवन के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं।
(2) मुगल चित्रों में स्त्रियों को मुख्य रूप से आध्यात्मिक परिवेश में दर्शाया गया है, जबकि राजपूत चित्र उन्हें राजनीतिक दरबारों और युद्ध क्षेत्रों में दिखाते हैं।
(3) राजपूत स्त्रियाँ आदर्शवादी 'नायिकाएँ' हैं, जबकि मुगल चित्रण अन्तःपुर का यथार्थवादी प्रतिबिंब हैं।
(4) दोनों के बीच कोई स्पष्ट अंतर नहीं है; दोनों शैलियाँ स्त्रियों को समान रूप से आदर्शवादी और आध्यात्मिक ढंग से चित्रित करती हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. निम्नलिखित में से कौन 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान राजपूत चित्रकला में हुए 'समन्वय' का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) मंदिर की दीवारों पर विशाल भित्ति चित्रों के पक्ष में पारंपरिक लघु चित्रकला का पूर्ण परित्याग।
(2) अमूर्त और अ-आलंकारिक चित्रों के साथ राजपूत कविता का फारसी सुलेख में अनुवाद।
(3) पारंपरिक राजपूत युद्धों और वीर लोककथाओं को

24. किस शासक के शासनकाल को बीकानेर चित्रकला शैली का स्वर्ण युग माना जाता है, जिसके दौरान रुकनुद्दीन जैसे चित्रकार समृद्ध हुए?
(1) महाराजा अनूप सिंह
(2) महाराजा राय सिंह
(3) महाराजा गंगा सिंह
(4) महाराजा करण सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. हाड़ौती चित्रकला शैली के प्रारंभिक रूपों से लेकर इसकी विशिष्ट उप-शैलियों तक के विकास का सही क्रम चुनें।
(1) झालावाड़ शैली, कोटा शैली से पूर्व आती है, जो बूंदी शैली से उद्भूत हुई है।
(2) बूंदी शैली सर्वप्रथम उभरती है, जिससे कोटा शैली पृथक होती है, और उत्तरवर्ती काल में झालावाड़ शैली आती है।
(3) कोटा शैली प्राचीनतम है, जिससे झालावाड़ और तदुपरान्त बूंदी शैली का जन्म हुआ।
(4) बूंदी और झालावाड़ का विकास साथ-साथ हुआ और बाद में कोटा शैली के रूप में इनका विलय हो गया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. बूंदी चित्रकला शैली किसके उत्कृष्ट चित्रण के लिए सर्वाधिक प्रसिद्ध है?
(1) प्रकृति, वर्षा, मेघ और सघन हरियाली।
(2) औपचारिक राजदरबार और विदेशी राजनयिक मिशन।
(3) अमूर्त आध्यात्मिक चित्र और तांत्रिक मंडल।
(4) जनसाधारण के यथार्थवादी मानवाकार चित्र।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. कला के इतिहास में कोटा चित्रकला शैली को विशिष्ट रूप से स्मरण किए जाने के सर्वाधिक उपयुक्त कारण की पहचान करें।
(1) चित्रपट पर विशेष रूप से नीली मृदभांड कला के विषयों के उपयोग हेतु।
(2) यूरोपीय तैल चित्रकला तकनीकों के परिचय हेतु।
(3) मानवीय आकृतियों के चित्रण पर पूर्ण प्रतिबंध हेतु।
(4) आखेट (शिकार) के दृश्यों के गतिशील और विस्तृत चित्रण हेतु।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन करें।
कथन (A): कोटा चित्रकला शैली में प्रायः रानियों और दरबारी महिलाओं सहित स्त्रियों को आखेट अभियानों में संलग्न दिखाया गया है।
कारण (R): कोटा के शासकों ने सफलतापूर्वक पर्दा प्रथा को समाप्त कर दिया था और राज्य की समस्त महिलाओं के लिए सैन्य प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. बूंदी शैली के चरमोत्कर्ष को दर्शाने वाले अपने भव्य भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध 'चित्रशाला' (उम्मेद महल) का निर्माण किस शासक ने करवाया था?
(1) राव सुरजन हाड़ा
(2) महाराव राम सिंह
(3) महाराव उम्मेद सिंह
(4) राव रतन सिंह हाड़ा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. पक्षियों और पशुओं का कौन-सा युग्म बूंदी चित्रकला शैली के पृष्ठभूमि दृश्यों से सर्वाधिक विशिष्ट रूप से जुड़ा हुआ है?
(1) ऊंट और कौआ
(2) अश्व और बाज़
(3) धेनु और हंस
(4) मयूर और गज
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. बूंदी चित्रकला शैली में पृष्ठभूमि के रंग के रूप में मुख्य रूप से किस रंग का उपयोग किया जाता है?
(1) सघन हरा
(2) दीप्तिमान लाल
(3) स्वर्ण आभा वाला पीला
(4) गहरा नीला
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. हाड़ौती चित्रकला शैली के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) बूंदी शैली मेवाड़ और मुगल प्रभावों का एक कलात्मक मिश्रण दर्शाती है।
(2) कोटा शैली महाराव राम सिंह प्रथम के शासनकाल के दौरान अपने उच्चतम कलात्मक स्तर पर पहुँची।
(3) रागमाला और बारहमासा बूंदी शैली के लोकप्रिय विषय हैं।
(4) कोटा शैली में चेहरे की विशेषताओं के चित्रण में सूक्ष्म सिर, उन्नत नासिका और लघु कद सम्मिलित है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. आमेर-जयपुर चित्रकला शैली किस बाह्य प्रभाव के उच्चतम स्तर के लिए जानी जाती है?
(1) यूरोपीय पुनर्जागरण
(2) मुगल शैली
(3) कांगड़ा शैली
(4) दक्कन शैली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. राजस्थान में चित्रित रागमाला सेटों के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।

(1) पाली में वीरजी द्वारा चित्रित रागमाला जयपुर शैली का प्राचीनतम ज्ञात पूर्ण रागमाला सेट है।
(2) चावंड रागमाला महाराणा अमर सिंह प्रथम के शासनकाल के दौरान चित्रित की गई थी।
(3) डालू का कोटा रागमाला सेट हाड़ौती शैली के विशालतम और महत्वपूर्ण सेटों में से एक माना जाता है।
(4) मारवाड़ शैली के रागमाला चित्रों में उनकी पृष्ठभूमि में मरुस्थल के शुष्क परिदृश्य का विशेष उपयोग किया गया है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. जयपुर की नीली मृदभांड कला (ब्लू पॉटरी) मूल रूप से भारत आगमन से पूर्व किस क्षेत्र से भौगोलिक रूप से संबद्ध थी?

(1) चीनी साम्राज्य
(2) मिस्र
(3) इतालवी राज्य
(4) फारस (ईरान)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. किसके शासनकाल के दौरान नीली मृदभांड कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची और जयपुर में एक विशिष्ट शिल्प के रूप में सुदृढ़ हुई?

(1) सवाई जय सिंह द्वितीय
(2) सवाई राम सिंह द्वितीय
(3) सवाई माधो सिंह प्रथम
(4) सवाई प्रताप सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. निम्नलिखित में से किस प्रसिद्ध कलाकार को जयपुर की पारंपरिक नीली मृदभांड कला को पुनर्जीवित करने और उसमें नवीन रंगों का समावेश करने हेतु पद्म श्री से अलंकृत किया गया था?

(1) रामगोपाल विजयवर्गीय
(2) भवानी चरण गुई
(3) कृपाल सिंह शेखावत
(4) भूर सिंह शेखावत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. सूची I में नीली मृदभांड कला की सामग्रियों को सूची II में उनकी भूमिकाओं या विवरणों के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।

सूची I: (नीली मृदभांड कला की सामग्री)

A. क्वार्ट्ज चूर्ण
B. मुल्तानी मिट्टी
C. कोबाल्ट ऑक्साइड
D. कॉपर ऑक्साइड

सूची II: (भूमिका/विवरण)

i. विशिष्ट नीला रंग प्रदान करता है।
ii. फिरोजा या हरित-नीला रंग प्रदान करता है।
iii. लुगदी का मुख्य आधार निर्मित करता है।
iv. लुगदी में बंधक कारक के रूप में कार्य करता है।

(1) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. कौन-सी अनूठी विशेषता जयपुर की नीली मृदभांड कला को विश्व के अन्य मृदभांड रूपों से पृथक करती है?

(1) इसके आधार वाली लुगदी में मिट्टी का उपयोग नहीं किया जाता है।
(2) इसे असाधारण रूप से निम्न तापमान पर पकाया जाता है।
(3) यह पकने के पश्चात हस्त-उत्कीर्णन पर निर्भर करती है।
(4) यह अरावली श्रेणियों से प्राप्त लाल मृदा का उपयोग करती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. जयपुर की नीली मृदभांड कला के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।

(1) यह अनिवार्यतः कांच जैसी चमक वाली (ग्लेज़्ड) मृदभांड तकनीक है।
(2) पात्रों को सांचों में ढालने के स्थान पर कुम्हार के चाक का उपयोग करके तैयार किया जाता है।
(3) पारंपरिक रूपांकन प्रधानतः पुष्प, बेल-बूटे और पशु आकृतियां हैं।
(4) कृपाल सिंह शेखावत ने रंगों की परिधि को केवल नीले और हरे रंग से बढ़ाकर 25 से अधिक विभिन्न आभाओं तक विस्तृत किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. जयपुर के अतिरिक्त, भारत में कौन-सा अन्य स्थान ऐतिहासिक रूप से नीली चमक वाली मृदभांड कला की एक विशिष्ट शैली के लिए प्रसिद्ध है?

(1) मुरादाबाद
(2) खुर्जा
(3) कांचीपुरम
(4) वारंगल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. नीली मृदभांड कला की निर्माण प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. लुगदी क्वार्ट्ज, कच्चे कांच, सोडियम सल्फेट और मुल्तानी मिट्टी के सम्मिश्रण से बनाई जाती है।
II. वस्तुओं को रंजित करने से पूर्व धूप में सुखाया जाता है।
III. रंजन कार्य विशेष रूप से भट्टी में प्रथम बार पकाने के पश्चात किया जाता है।
IV. दीप्ति हेतु अंतिम लेप लगाया जाता है और वस्तु को उच्च तापमान पर पकाया जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(1) I, II, और IV

(2) I, II, और III
(3) II, III, और IV
(4) I, III, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सांगानेर और बगरू ठप्पा छपाई (ब्लॉक प्रिंटिंग) परंपराओं के बीच सही अंतर स्पष्ट करता है?
(1) सांगानेरी छपाई में मुख्य रूप से गहरी पृष्ठभूमि का उपयोग होता है, जबकि बगरू छपाई विपरीत प्रभाव हेतु शुद्ध श्वेत पृष्ठभूमि का उपयोग करती है।
(2) सांगानेरी छपाई अनन्य रूप से रेशमी वस्त्रों पर की जाती है, जबकि बगरू छपाई केवल स्थूल ऊन और जूट पर की जाती है।
(3) सांगानेर में हल्की पृष्ठभूमि पर सूक्ष्म पुष्प रूपांकनों का उपयोग होता है, जबकि बगरू में गहरी पृष्ठभूमि पर सुस्पष्ट स्वरूपों का उपयोग होता है।
(4) बगरू छपाई में आधुनिक रासायनिक रंगों का उपयोग होता है, जबकि सांगानेर पूर्णतः प्राकृतिक वानस्पतिक रंगों पर निर्भर है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. फिटकरी और लौह-भस्म से प्राप्त लाल और काले रंगों का उपयोग करने वाली 'स्याही-बेगर' तकनीक किस छपाई शैली की विशिष्टता है?
(1) अजरक प्रिंट
(2) मलीर प्रिंट
(3) जाजम प्रिंट
(4) बगरू प्रिंट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. राजस्थान की ठप्पा छपाई के संदर्भ में 'छीपा' शब्द का क्या अर्थ है?
(1) वस्त्र की सतह पर जटिल रुपांकनों की छपाई हेतु प्रयुक्त काष्ठ खंड (ब्लॉक)।
(2) गहरी नीली पृष्ठभूमि हेतु नील के पौधों से प्राप्त प्राकृतिक रंजक।
(3) ठप्पा छपाई कार्य में संलग्न कारीगरों का पारंपरिक समुदाय।
(4) स्थानीय सरिता के जल में मुद्रित वस्त्र के अंतिम प्रक्षालन की प्रक्रिया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन करें।
कथन (A): बगरू छपाई पारिस्थितिक रूप से धारणीय है और पारंपरिक रूप से प्राकृतिक वानस्पतिक रंगों का उपयोग करती है।
कारण (R): बगरू छपाई में वस्त्र को पीला रंग देने और अन्य रंगों के स्थायित्व हेतु बंधक के रूप में हरड़ का व्यापक उपयोग किया जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. राजस्थान की कौन-सी प्रसिद्ध छपाई शैली वस्त्र के दोनों ओर मुद्रण हेतु जानी जाती है, जिसमें प्रमुखतः नीले और लाल रंगों के साथ जटिल ज्यामितीय स्वरूपों का उपयोग होता है?
(1) सांगानेरी प्रिंट
(2) दाबू प्रिंट
(3) कोटा डोरिया
(4) अजरक प्रिंट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. राजस्थान की वस्त्र छपाई, विशेष रूप से अकोला (चित्तौड़गढ़) में प्रयुक्त 'दाबू' तकनीक का मूल उद्देश्य क्या है?
(1) यह वस्त्र के सौंदर्य संवर्धन हेतु उस पर स्वर्ण की परत चढ़ाने की एक विधि है।
(2) मृदा-अवरोधक प्रक्रिया जिसमें लेप का उपयोग कर विशिष्ट क्षेत्रों में रंग के प्रवेश को रोका जाता है।
(3) यह स्थायित्व हेतु सूती साड़ी के किनारों में अतिरिक्त रेशम के तंतु बुनने की तकनीक है।
(4) यह वस्त्र के रंगों को चमकाने और उनके स्थायित्व को सुनिश्चित करने की एक रसायनिक प्रक्षालन विधि है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. 'मलीर' प्रिंट, जो गहरी पृष्ठभूमि पर अपने कत्थई-काले और लाल रंग विन्यास हेतु प्रसिद्ध है, राजस्थान के किस जिले से संबद्ध है?
(1) जोधपुर
(2) बीकानेर
(3) बाड़मेर
(4) जैसलमेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. निम्नलिखित तत्वों पर विचार करें:
I. कैलिको छपाई
II. बेल-बूटा रूपांकन
III. श्वेत या ऑफ-व्हाइट आधार वाला वस्त्र
IV. भौगोलिक संकेतक (जीआई) दर्जा
उपरोक्त में से कौन-से तत्व सांगानेरी ठप्पा छपाई परंपरा का सही प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल II, III, और IV
(3) केवल I, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. राजस्थान में 'टाई एंड डाई' (बंधेज/बंधनी) की कला मुख्य रूप से किस पारंपरिक कारीगर समुदाय से संबद्ध है?
(1) रंगरेज और छीपा
(2) मेघवाल कारीगर
(3) कुम्हार
(4) सिकलीगर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. बंधनी वस्त्र परंपरा के संदर्भ में 'एकडाली' क्या है?
(1) बिना किसी स्वरूप के एक ही ठोस रंग में रंजित वस्त्र।
(2) एक स्वरूप जिसमें वस्त्र पर एक ही बिंदु को बार-बार दोहराया जाता है।
(3) बंधनी के तंतु बुनने हेतु प्रयुक्त एक विशेष करघा।
(4) एक प्रकार का रेशमी तंतु जो विशेष रूप से जोधपुर में प्रयुक्त होता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. 'शिकारी' के नाम से ज्ञात जटिल बंधनी शैली, जिसमें आखेट में संलग्न मानवीय और पशु आकृतियों को दर्शाया जाता है, किस क्षेत्र की विशेषता है?
(1) जयपुर
(2) सीकर
(3) कोटा
(4) जोधपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. सूची I में बंधनी वस्त्रों के प्रकारों को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (वस्त्र का प्रकार)
A. चुनरी
B. मोठड़ा
C. पोमचा
D. धनक
सूची II: (विवरण)
i. एक-दूसरे को काटती तिरछी रेखाएं जो वर्गाकार स्वरूप बनाती हैं।
ii. बिखरी हुई बिंदियाँ, जो सामान्यतः स्त्रियों द्वारा दैनिक रूप से पहनी जाती हैं।
iii. वर्गाकार या हीरक रूपांकनों को निर्मित करने हेतु सुव्यवस्थित बिंदियाँ।
iv. केंद्र में लाल कमल के रूपांकन के साथ पीला या गुलाबी वस्त्र, जो प्रसूति के समय पहना जाता है।
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. राजस्थान में पारंपरिक 'पोमचा' स्त्रियों द्वारा विशेष रूप से किस अवसर पर धारण किया जाता है?
(1) शोक के समय
(2) मरु महोत्सव के दौरान
(3) संतान के जन्म के अवसर पर
(4) तीज के दौरान विशेष रूप से अविवाहित बालिकाओं द्वारा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

86. निम्नलिखित में से कौन 'पीला पोमचा' का सही वर्णन करता है?
(1) नवीन शस्यों की वृद्धि के उत्सव स्वरूप शस्य कर्तन ऋतु में पहनी जाने वाली हरी ओढ़नी।
(2) स्थानीय समुदाय में मर्यादा और शोक के प्रतीक के रूप में विधवाओं द्वारा ओढ़ा जाने वाला काला दुपट्टा।
(3) मंदिरों में विग्रह के विभिन्न रूपों को चित्रित करने हेतु प्रयुक्त सजावटी पट।
(4) लाल किनारे वाली पीली ओढ़नी, जो पारंपरिक रूप से पुत्र जन्म पर भेंट की जाती है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. बंधनी शिल्प के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) रंजक को रोकने हेतु रंगाई से पूर्व वस्त्र को तंतुओं से सुदृढ़ता से बांधा जाता है।
(2) जयपुर और जोधपुर राजस्थान में बंधनी के दो प्रमुख केंद्र हैं।
(3) पारंपरिक बंधनी में प्रयुक्त रंग प्रायः धूमिल और एकरंगी होते हैं।
(4) बंधनी की सूक्ष्मता बंधे हुए बिंदुओं के आकार पर निर्भर करती है; सूक्ष्म बिंदु श्रेष्ठ शिल्प कौशल के परिचायक हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. बंधनी प्रक्रिया के निम्नलिखित चरणों पर विचार करें:
I. वस्त्र का प्रक्षालन और विरंजन।
II. तंतु से वस्त्र को बांधना।
III. वस्त्र पर अभिकल्प (डिजाइन) का अंकन करना।
IV. वस्त्र को अभीष्ट रंग में रंजित करना।
V. स्वरूप को प्रकट करने हेतु गांठों को खोलना।
निम्नलिखित में से कौन इन चरणों के सही तार्किक क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) I, II, III, IV, V
(2) I, III, II, IV, V
(3) III, I, II, IV, V
(4) II, III, I, V, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. लहरिया वस्त्र परंपरा के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. इसमें तिरछी तरंगदार धारियां होती हैं।
II. इसे एक विशिष्ट अवरोधक-रंगाई (टाई-एंड-डाई) तकनीक से निर्मित किया जाता है।
III. यह पारंपरिक रूप से स्त्रियों द्वारा श्रावण के मानसूनी

मास में पहना जाता है।
IV. 'समुद्र लहर' लहरिया का एक लोकप्रिय प्रकार है।
V. यह शिल्प मुख्य रूप से उदयपुर क्षेत्र में केंद्रित है और जयपुर में इसका अस्तित्व नहीं है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, IV, और V
(2) I, II, III, और IV
(3) II, III, IV, और V
(4) I, III, और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. 'लहरिया' शब्द का शाब्दिक अर्थ है:
(1) मरुस्थलीय बालू
(2) बिंदुदार स्वरूप
(3) तरंग सदृश
(4) प्रफुल्लित पुष्प
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. अवरोधक-रंगाई की निम्नलिखित विविधताओं पर विचार करें:
I. मोठड़ा
II. लहरिया
III. एकडाली (बिंदु स्वरूप)

निम्नलिखित में से कौन सरल सीधी रेखाओं से लेकर एक-दूसरे को काटती रेखाओं तक, उनके रेखीय स्वरूप की जटिलता के आधार पर इन विविधताओं के सही क्रम का प्रतिनिधित्व करता है?
(1) III, I, II
(2) III, II, I
(3) I, II, III
(4) II, I, III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. राजस्थान का कौन-सा प्रसिद्ध उत्सव सांस्कृतिक रूप से लहरिया साड़ियाँ और दुपट्टे धारण करने वाली स्त्रियों का पर्याय है?
(1) तीज
(2) गणगौर
(3) दीपावली
(4) होलिका दहन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. एक लहरिया वस्त्र जिसकी तरंगदार धारियों में पांच भिन्न रंग होते हैं, उसे पारंपरिक रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(1) सतरंगी लहरिया
(2) नवरंगी लहरिया
(3) तिरंगी लहरिया
(4) पचरंगी लहरिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. 'मोठड़ा' स्वरूप तकनीकी रूप से मानक 'लहरिया' से किस प्रकार भिन्न है?
(1) मोठड़ा में वृत्ताकार बिंदु होते हैं, जबकि लहरिया में धारियाँ होती हैं जो वस्त्र की लंबाई में समानांतर चलती हैं।
(2) मोठड़ा में एक-दूसरे को काटती हुई तिरछी रेखाएं होती हैं, जबकि लहरिया में परस्पर न काटने वाली रेखाएं होती हैं।
(3) मोठड़ा काष्ठ ठप्पा छपाई द्वारा निर्मित होता है, जबकि लहरिया बंधनी तकनीक का उपयोग करके बनाया जाता है।
(4) मोठड़ा में केवल प्राकृतिक वानस्पतिक रंगों का उपयोग होता है, जबकि लहरिया पूर्णतः संश्लेषित और रासायनिक रंगों पर निर्भर है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. सूची I में वस्त्र परंपराओं को सूची II में उनकी प्रमुख पहचान विशेषताओं के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (वस्त्र परंपरा)
A. बंधनी
B. लहरिया
C. दाबू
D. बगरू

सूची II: (प्रमुख पहचान विशेषता)
i. तिरछी तरंगदार धारियां।
ii. मृदा-अवरोधक रंगाई।
iii. गांठें बांधकर निर्मित सूक्ष्म बिंदुदार स्वरूप।
iv. गहरी पृष्ठभूमि वाले प्राकृतिक रंजक (स्याही-बेगर)।
(1) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(2) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. राजस्थान में लहरिया के सांस्कृतिक महत्व के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) यह दृश्य रूप से मानसून के आगमन और उसके साथ आने वाली हरियाली का उत्सव मनाता है।
(2) उत्सव के अवसरों पर पुरुषों में लहरिया स्वरूप वाले साफे अत्यंत लोकप्रिय हैं।
(3) जयपुर प्रामाणिक लहरिया के उत्पादन के सर्वाधिक प्रमुख केंद्रों में से एक है।
(4) राजस्थान में पुरुष कभी भी लहरिया स्वरूप धारण नहीं करते हैं; यह केवल स्त्रियों की वेशभूषा है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. राजस्थान की सूक्ष्म हाथीदांत नक्काशी और जड़ाई का कार्य मुख्य रूप से किस रियासत के शासकों के संरक्षण में शिल्प कौशल के उच्चतम स्तर पर पहुँचा?
(1) जयपुर
(2) बीकानेर
(3) जैसलमेर

(4) डूंगरपुर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. सूची I में शिल्पों को सूची II में राजस्थान के उनके प्रसिद्ध केंद्रों के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (शिल्प)
A. थेवा कला
B. नीली मृदभांड कला
C. गोटा पत्ती
D. लाख के खिलौने
सूची II: (प्रसिद्ध केंद्र)
i. प्रतापगढ़
ii. जयपुर
iii. खंडेला
iv. सवाई माधोपुर
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. राजस्थान में लाख के कार्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. लाख विशिष्ट कीटों द्वारा स्रावित एक प्राकृतिक राल है।
II. जयपुर और जोधपुर लाख के आभूषणों के प्रमुख केंद्र हैं।
III. वे कारीगर जो पारंपरिक रूप से लाख की चूड़ियाँ बनाते हैं, 'मनिहार' कहलाते हैं।
IV. लाख के कार्य में पाषाण या कांच के अलंकरणों का पूर्णतः अभाव होता है।
V. सवाई माधोपुर लाख से लेपित काष्ठ खिलौनों के लिए प्रसिद्ध है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) II, III, IV, और V
(2) I, II, III, और V
(3) I, III, IV, और V
(4) I, II, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. राजस्थान में निम्नलिखित में से कौन-सा स्थान हाथीदांत की श्रेष्ठ चूड़ियाँ बनाने के लिए प्रसिद्ध है, जिन्हें पारंपरिक रूप से राजपूत समुदाय की वधुओं द्वारा धारण किया जाता है?
(1) जोधपुर
(2) बाड़मेर
(3) टोंक
(4) करौली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

101. वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 का राजस्थान के पारंपरिक हाथीदांत नक्काशी उद्योग पर क्या प्रभाव पड़ा?
(1) इसने हाथीदांत कारीगरों को वैश्विक बाजार में प्रतिस्पर्धा करने हेतु प्रचुर सरकारी सहायता प्रदान की।
(2) इसने भारत के भीतर हाथीदांत की वस्तुओं के विक्रय पर प्रतिबंध लगाते हुए केवल निर्यात हेतु नक्काशी को सीमित कर दिया।
(3) इसने हाथी दांत के व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया, जिससे ऊंट की अस्थि और काष्ठ शिल्प की ओर झुकाव बढ़ा।
(4) इसका स्थानीय उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि शिल्प में वनों से प्राप्त प्राकृतिक रूप से गिरे हुए हाथीदांत का उपयोग होता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

102. सीकर जिले का खंडेला वस्त्र अलंकरण से जुड़े किस विशिष्ट शिल्प के लिए विश्व स्तर पर प्रसिद्ध है?
(1) मीनाकारी आभूषण कार्य
(2) तारकशी धातु जड़ाई
(3) कोफ्तगिरी शस्त्र कला
(4) गोटा पत्ती (ज़री कार्य)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

103. राजस्थान में लाख के शिल्प के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. लाख को चूड़ियों में ढालने के लिए ऊष्मा प्रदान करना प्रक्रिया का एक अनिवार्य चरण है।
II. लाख का कार्य प्रधानतः मनिहार समुदाय के पुरुष सदस्यों द्वारा किया जाता है, जबकि स्त्रियाँ विपणन संभालती हैं।
III. जयपुर का त्रिपोलिया बाजार पारंपरिक लाख की चूड़ी निर्माताओं हेतु विख्यात है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

104. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में काष्ठ और हाथीदांत/अस्थि शिल्प के साथ एकीकृत 'तारकशी' कला का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) स्वरूप निर्मित करने हेतु काष्ठ में पीतल, तांबे या रजत के सूक्ष्म तारों को जड़ना।
(2) सूक्ष्म तूलिका और प्राकृतिक रंगों का उपयोग करके तंदुल (चावल) के दानों पर सूक्ष्म लघु चित्रकारी करना।
(3) पारंपरिक गवाक्षों और झरोखों में उपयोग हेतु बलुआ पत्थर में जटिल जालियों का उत्कीर्णन करना।
(4) एक विशिष्ट बनावट और सजावटी किनारे निर्मित करने हेतु सूती साड़ियों में रजत तंतु बुनना।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

आज भी बीकानेर उस्ता कला के संरक्षण और प्रदर्शन के लिए सबसे प्रमुख केंद्र के रूप में वैश्विक स्तर पर जाना जाता है।

20. (4) मथेरण समुदाय
बीकानेर में मथेरण समुदाय के कलाकार अपनी विशिष्ट चित्रकला शैली के लिए विख्यात रहे हैं। यह समुदाय पारंपरिक रूप से जैन धर्म से संबद्ध था, किंतु उन्होंने हिंदू धार्मिक विषयों, पौराणिक कथाओं और लोक देवताओं के भित्ति चित्रों का निर्माण अत्यंत कुशलता से किया। उनकी कला में स्वदेशी तत्वों और दरबारी परिष्कार का सुंदर मिश्रण मिलता है। बीकानेर की हवेलियों और मंदिरों में पाए जाने वाले प्राचीन भित्ति चित्रों के निर्माण में मथेरण कलाकारों का योगदान ऐतिहासिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

21. (3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान के प्रमुख चित्रकार विभिन्न शैलियों के विकास से जुड़े रहे हैं। अली रज़ा बीकानेर शैली के प्रसिद्ध कलाकार थे। वीरजी ने जोधपुर शैली में 'रागमाला' जैसे महत्वपूर्ण चित्रों का निर्माण किया। निहाल चंद किशनगढ़ शैली के विश्व विख्यात कलाकार हैं, जिनकी 'बणी-ठणी' कृति अमर है। निसारुद्दीन चावंड शैली के प्रमुख चित्रकार थे जिन्होंने मेवाड़ शैली के प्रारंभिक विकास में योगदान दिया। इन कलाकारों की विशिष्ट शैलियों ने राजस्थानी कला को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया है।

22. (2) I, II, और III
जोधपुर चित्रकला शैली में आम के वृक्षों का चित्रण एक प्रमुख प्राकृतिक विशेषता है। यहाँ के चित्रों में पात्रों को ऊँची पगड़ी और सुदृढ़ शारीरिक बनावट के साथ दर्शाया जाता है, जो मारवाड़ के पौरुष का प्रतीक है। रंगों के चयन में लाल और पीले रंगों की प्रधानता इस शैली को मरुस्थलीय परिवेश के अनुरूप जीवंतता प्रदान करती है। जबकि सघन वनों में आखेट के दृश्य मुख्य रूप से कोटा शैली की विशेषता हैं, जोधपुर शैली अपनी विशिष्ट वेशभूषा हेतु जानी जाती है।

23. (4) जैसलमेर शैली
'मूमल' जैसलमेर की प्रसिद्ध लोक गाथा है, जिसका लघु चित्रण जैसलमेर चित्रकला शैली की एक विशिष्ट पहचान बन गया है। इस शैली में मूमल और महेंद्र की प्रेम कथा को अत्यंत भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया गया है। जैसलमेर शैली की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि इस पर मुगल या किसी अन्य बाहरी शैली का प्रभाव बहुत कम रहा, जिससे इसकी मौलिकता सुरक्षित रही। मूमल के चित्रों में प्रयुक्त आभूषण और वेशभूषा जैसलमेर की सांस्कृतिक विरासत का सुंदर प्रतिबिंब प्रस्तुत करते हैं।

24. (1) महाराजा अनूप सिंह
महाराजा अनूप सिंह के शासनकाल को बीकानेर चित्रकला शैली का स्वर्ण युग माना जाता है। उनके काल में कला और साहित्य को विशेष प्रोत्साहन मिला तथा अनेक विद्वान व कलाकार बीकानेर आए। प्रसिद्ध चित्रकार रुकनुद्दीन ने उनके संरक्षण में रहकर अनेक उत्कृष्ट लघु चित्रों का निर्माण किया। इस दौरान हिंदू धार्मिक ग्रंथों और पौराणिक विषयों पर व्यापक चित्रण हुआ। महाराजा अनूप सिंह की कलात्मक अभिरुचि के कारण ही बीकानेर शैली में परिष्कृत तकनीक और स्वदेशी विषयों का अद्भुत सामंजस्य स्थापित हो सका।

25. (2) बूंदी शैली सर्वप्रथम उभरती है, जिससे कोटा शैली पृथक होती है, और उत्तरवर्ती काल में झालावाड़ शैली आती है।
हाड़ौती चित्रकला के विकास क्रम में बूंदी शैली सबसे प्राचीन और आधारभूत शैली मानी जाती है। 17वीं शताब्दी में जब कोटा एक स्वतंत्र राज्य बना, तब बूंदी शैली से ही कोटा शैली का उद्भव हुआ, जिसने बाद में अपनी अलग पहचान बनाई। कोटा शैली के विकास के पश्चात, 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में झालावाड़ राज्य की स्थापना के साथ झालावाड़ शैली अस्तित्व में आई। इस प्रकार, हाड़ौती क्षेत्र में कला का प्रवाह बूंदी से कोटा और अंततः झालावाड़ की ओर निरंतर विकसित होता रहा।

26. (1) प्रकृति, वर्षा, मेघ और सघन हरियाली।
बूंदी चित्रकला शैली अपने उत्कृष्ट प्रकृति चित्रण के लिए राजस्थानी शैलियों में सर्वोपरि मानी जाती है। इस शैली में बादलों का गरजना, बिजली की चमक, मूसलाधार वर्षा और सघन वनों की हरियाली को अत्यंत सजीवता के साथ चित्रित किया गया है। चित्रकारों ने मयूरों, हाथियों और जल के स्रोतों का उपयोग करके प्रकृति के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। सुनहरे बादलों और विविध वनस्पतियों का सूक्ष्म अंकन इस शैली को एक काव्यात्मक आभा प्रदान करता है, जो दर्शकों को आकर्षित करता है।

27. (4) आखेट (शिकार) के दृश्यों के गतिशील और विस्तृत चित्रण हेतु।
कोटा चित्रकला शैली अपनी अद्वितीय गतिशीलता और आखेट के दृश्यों के विस्तृत चित्रण के लिए विश्व भर में विख्यात है। यहाँ के कलाकारों ने सघन वनों में जंगली सुअर, बाघ और हिरणों के शिकार के रोमांचक प्रसंगों को अत्यंत बारीकी से चित्रित किया है। इन चित्रों में प्रयुक्त परिप्रेक्ष्य और पात्रों की ऊर्जा देखते ही बनती है। शिकार के प्रति कोटा के शासकों के अनुराग ने इस विशिष्ट विषय को इस शैली की प्रधान विशेषता बना दिया, जिससे यह अन्य पारंपरिक शैलियों से विशिष्ट बन गई।

28. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
कोटा चित्रकला में रानियों और दरबारी महिलाओं को आखेट अभियानों में सक्रिय रूप से संलग्न दिखाया जाना एक ऐतिहासिक तथ्य है। यह इस शैली की एक अनूठी विशेषता है जो तत्कालीन समाज के एक विशिष्ट पक्ष को उजागर करती है। हालाँकि, इसके पीछे का कारण अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण या पर्दा प्रथा का उन्मूलन नहीं था, बल्कि यह कोटा दरबार की शिकार के प्रति विशेष रुचि का परिचायक था। अतः कथन सही है, किंतु उसके लिए दिया गया तर्क ऐतिहासिक रूप से असंगत है।

(3) आग्नेय चट्टान
(4) ज्वालामुखी चट्टान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

114. मकराना संगमरमर संरचनात्मक रूप से किस रासायनिक यौगिक की उच्च सांद्रता की विशेषता रखता है, जो इसके स्थायित्व और शुद्ध श्वेत रंग में योगदान देता है?
(1) कैल्शियम सल्फेट
(2) सिलिकॉन डाइऑक्साइड
(3) कैल्शियम कार्बोनेट
(4) मैग्नीशियम सिलिकेट
(5) अनुत्तरित प्रश्न

115. राजस्थान में पत्थर की नक्काशी और संगमरमर शिल्प के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. जयपुर राजस्थान में संगमरमर की नक्काशी और मूर्ति कला का वृहत्तम केंद्र है।
II. जयपुर में 'खजाने वालों का रास्ता' संगमरमर के मूर्तिकारों के प्रमुख केंद्र के रूप में प्रसिद्ध है।
III. सोमपुरा ब्राह्मण समुदाय के कारीगर ऐतिहासिक रूप से मंदिर स्थापत्य और पाषाण नक्काशी हेतु विख्यात हैं।
IV. मकराना संगमरमर को विश्व स्तर पर 'ग्लोबल हेरिटेज स्टोन रिसोर्स' का दर्जा दिया गया है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) I, II, और III
(2) I, III, और IV
(3) II, III, और IV
(4) I, II, III, और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

116. राजस्थान का कौन-सा क्षेत्र विशेष रूप से 'गुलाबी संगमरमर' के खनन और शिल्प हेतु प्रसिद्ध है?
(1) राजसमंद
(2) भैंसलाना (जयपुर)
(3) बाबरमल (उदयपुर)
(4) आंधी (जयपुर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

117. काला संगमरमर, जिसका उपयोग मूर्तियों और सजावटी वस्तुओं के निर्माण हेतु किया जाता है, मुख्य रूप से राजस्थान में किस स्थान से प्राप्त होता है?
(1) मकराना
(2) भैंसलाना (जयपुर)
(3) जैसलमेर
(4) ऋषभदेव (उदयपुर)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

118. सूची I में पाषाण या संगमरमर के प्रकारों को सूची II में राजस्थान में उनके प्रसिद्ध स्थानों के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (पाषाण/संगमरमर का प्रकार)
A. सफेद संगमरमर
B. पीला संगमरमर
C. हरा संगमरमर
D. लाल पत्थर
सूची II: (प्रसिद्ध स्थान)
i. जैसलमेर
ii. धौलपुर/करौली
iii. मकराना
iv. ऋषभदेव (उदयपुर)
(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

119. राजस्थान के संगमरमर और पाषाण शिल्प के संबंध में गलत कथन की पहचान करें।
(1) मकराना संगमरमर अपनी आभा शीघ्र खो देता है और वायु के संपर्क में आने के कुछ दशकों के भीतर पीला पड़ जाता है।
(2) जटिल पाषाण जाली कार्य पारंपरिक स्थापत्य में गोपनीयता बनाए रखते हुए वातायन की अनुमति देता है।
(3) सिकंदरा और जयपुर ऐतिहासिक रूप से लाल बलुआ पत्थर और संगमरमर के व्यापार तथा शिल्प के माध्यम से जुड़े हुए हैं।
(4) सोमपुरा समुदाय के कारीगरों ने पारंपरिक पाषाण नक्काशी तकनीकों का उपयोग करके अक्षरधाम मंदिरों का अभिकल्प तैयार किया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

120. निम्नलिखित में से कौन-सा प्राथमिक कारण है कि मकराना संगमरमर बिना पीला पड़े शताब्दियों तक अपनी चमक बनाए रखता है?
(1) इसमें लौह ऑक्साइड का उच्च प्रतिशत होता है जो पत्थर को समय के साथ भंगुर होने से रोकता है।
(2) इसे बाह्य तत्वों से बचाने हेतु स्थानीय कारीगरों द्वारा नियमित रूप से संश्लेषित रेजिन से लेपित किया जाता है।
(3) इसमें जल का अवशोषण नगण्य होता है, जो अशुद्धियों के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया को रोकता है।
(4) यह स्वाभाविक रूप से रेडियोधर्मी है, जो संगमरमर की सतह से धूल और जैविक वृद्धि को दूर रखता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

105. अनूठी थेवा कला, जिसमें रंगीन कांच पर स्वर्ण की सूक्ष्म नक्काशी (फिलीग्री) सम्मिलित है, विशेष रुप से किस परिवार की विशेषज्ञता है?
(1) बीकानेर का उस्ता परिवार
(2) जोधपुर का मथेरण परिवार
(3) जयपुर का कुमावत परिवार
(4) प्रतापगढ़ का राज सोनी परिवार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

106. सूची I में थेवा कला की विशेषताओं को सूची II में उनके विवरण के साथ सुमेलित करें और दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन करें।
सूची I: (थेवा कला की विशेषता)
A. आधार सामग्री
B. प्रयुक्त धातु
C. प्रवर्तक
D. दर्जा
सूची II: (विवरण)
i. नाथूजी सोनी
ii. भौगोलिक संकेतक (जीआई) टैग
iii. 23-कैरेट स्वर्ण
iv. बेल्जियम रंगीन कांच (प्रधानतः हरा)
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

107. थेवा कला के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
I. यह प्रक्रिया एक गोपनीय पारिवारिक रहस्य है जो केवल परिवार के पुरुष उत्तराधिकारियों को ही सिखाई जाती है।
II. इसे प्रतापगढ़ के महारावत सामंत सिंह ने संरक्षण प्रदान किया था।
III. यह कला रुप मुगल काल के दौरान फारस से भारत लाया गया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II, और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

108. थेवा आभूषणों में प्रयुक्त कांच का सर्वाधिक प्रमुख और पारंपरिक पृष्ठभूमि रंग कौन-सा है?
(1) पन्ना हरा
(2) माणिक लाल
(3) कोबाल्ट नीला
(4) जेट ब्लैक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

109. थेवा कला के संबंध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(1) स्वर्ण पत्र को आखेट के दृश्यों, पुष्प रुपांकनों या हिंदू देवताओं को चित्रित करने हेतु जटिल रुप से काटा जाता है।
(2) कांच और स्वर्ण को मानक रत्न-जड़ाई तकनीकों के उपयोग के बिना परस्पर जोड़ा जाता है।
(3) सोनी परिवार की पुत्रियों और पुत्रवधुओं को इस शिल्प को जीवित रखने हेतु कड़ाई से यह कला सिखाई जाती है।
(4) 2014 में, थेवा कला के सम्मान में भारत सरकार द्वारा एक स्मारक डाक टिकट जारी किया गया था।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

110. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़ें और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन करें।
कथन (A): थेवा कला प्रतापगढ़ तक ही अत्यधिक स्थानीयकृत बनी हुई है और भारत के अन्य प्रमुख हस्तशिल्प केंद्रों में प्रसारित नहीं हुई है।
कारण (R): थेवा कला की तकनीकों को राज सोनी परिवार द्वारा गोपनीय रखा जाता है, जिन्हें केवल पुरुष वंश के माध्यम से आगे बढ़ाया जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

111. स्थानीय बोली में 'थेवा' शब्द शाब्दिक रुप से इस शिल्प में सम्मिलित किन दो प्राथमिक कार्यों को संदर्भित करता है?
(1) आधार सामग्री का गलन और ढालना।
(2) अंतिम उत्पाद का रंजन और कांचन (ग्लेज़िंग)।
(3) स्वर्ण सतह का कर्तन और मार्जन (पॉलिशिंग)।
(4) थरणा (हथौड़े से ठोकना) और वाडा (रजत तंतु का घेरा)।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

112. थेवा कला में उत्कृष्ट योगदान हेतु पद्म श्री सहित राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने वाले प्रधान शिल्पकार कौन हैं?
(1) महेश राज सोनी
(2) कृपाल सिंह शेखावत
(3) हिसामुद्दीन उस्ता
(4) रामकिशन सोनी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

113. विश्व प्रसिद्ध मकराना संगमरमर, जिसका उपयोग ताजमहल और विक्टोरिया मेमोरियल के निर्माण में हुआ था, भूगर्भीय रुप से किस रुप में वर्गीकृत है?
(1) अवसादी चट्टान
(2) कायांतरित चट्टान

भव्य उपयोग के लिए जानी जाती है। यह वर्गीकरण प्रत्येक शैली की मौलिक तकनीकी भिन्नता को स्पष्ट करता है।

10. (1) महाराणा जगत सिंह प्रथम
मेवाड़ के महाराणा जगत सिंह प्रथम के शासनकाल को मेवाड़ चित्रकला का स्वर्ण युग माना जाता है। उन्होंने उदयपुर के राजप्रासाद में 'चितेरों की ओवरी' नामक एक समर्पित कला अकादमी की स्थापना की थी। इसे 'तस्वीरों का कारखाना' भी कहा जाता था, जहाँ दरबारी चित्रकारों को विभिन्न ग्रंथों के चित्रण हेतु राजकीय संरक्षण प्राप्त होता था। उनके इस प्रयास से मेवाड़ शैली में 'रागमाला' और 'रसिकप्रिया' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों का चित्रण संभव हुआ, जिससे कला समृद्ध हुई।

11. (4) उनियारा
मेवाड़ चित्रकला शैली राजस्थान की प्राचीनतम शैली है, जिसकी नाथद्वारा, देवगढ़ और चावंड जैसी कई विशिष्ट उप-शैलियाँ हैं। ये अपनी अनूठी विशेषताओं के कारण पहचानी जाती हैं। हालाँकि, उनियारा शैली मेवाड़ का हिस्सा न होकर मूल रूप से ढूँढाड़ चित्रकला शैली की एक उप-शैली मानी जाती है। उनियारा शैली पर जयपुर और बूंदी शैलियों का स्पष्ट प्रभाव देखा जा सकता है, जो इसे मेवाड़ की पारंपरिक शाखाओं से भिन्न और एक स्वतंत्र पहचान प्रदान करता है।

12. (2) केवल I और III
मेवाड़ चित्रकला शैली में प्रकृति चित्रण के अंतर्गत कदम्ब के वृक्ष और हाथियों को प्रमुखता से चित्रित किया गया है। इस शैली के स्वर्ण युग का श्रेय महाराणा जगत सिंह प्रथम को दिया जाता है। साहिबदीन और मनोहर इस शैली के अत्यंत प्रभावशाली चित्रकार रहे हैं, जिन्होंने 'रागमाला' और 'रामायण' जैसे ग्रंथों को अपनी तूलिका से अमर बनाया। अतः मेवाड़ शैली के विकास में इन कलाकारों और विशिष्ट प्राकृतिक तत्वों का योगदान सर्वोपरि है। दूसरा कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

13. (3) श्रीनाथजी के विग्रह के पीछे लटकाए जाने वाले कपड़े के चित्र जिनमें कृष्ण के लीला प्रसंगों को दर्शाया गया है।
नाथद्वारा उप-शैली की सबसे विशिष्ट पहचान 'पिछवाई' कला है। 'पिछवाई' का शाब्दिक अर्थ है 'पीछे लटकाने वाला'। ये कपड़े पर बनाए गए बड़े आकार के चित्र होते हैं जो श्रीनाथजी के मंदिर में मुख्य मूर्ति के पीछे सजावट के रूप में लटकाए जाते हैं। इन चित्रों में भगवान कृष्ण की विविध बाल लीलाओं, रासलीला और गोवर्धन पूजा जैसे प्रसंगों को अत्यंत भक्ति भाव से चित्रित किया गया है। यह कला मेवाड़ की धार्मिक परंपरा का उत्कृष्ट प्रतीक है।

14. (4) साहिबदीन - रसिकप्रिया
मेवाड़ शैली के कलाकारों ने विभिन्न काव्य ग्रंथों को चित्रों के माध्यम से सजीव किया है। साहिबदीन इस शैली के प्रधान कलाकार थे, जिन्होंने 'रसिकप्रिया' और 'रागमाला' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों का उत्कृष्ट चित्रण किया। चावंड की 'रागमाला' का चित्रण निसारुद्दीन द्वारा किया गया था, जबकि 'आर्ष रामायण' पर मनोहर ने कार्य किया था। साहिबदीन का 'रसिकप्रिया' का चित्रण उनकी कलात्मक परिपक्वता का प्रमाण है। यह युग्म मेवाड़ कला के इतिहास में अत्यंत प्रसिद्ध और प्रामाणिक माना जाता है।

15. (1) III, I, II, IV
मेवाड़ चित्रकला के विकास का क्रम 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' (1260 ईस्वी) से प्रारंभ होता है। इसके पश्चात 1605 ईस्वी में निसारुद्दीन द्वारा 'चावंड रागमाला' का निर्माण हुआ। महाराणा जगत सिंह प्रथम का शासनकाल (1628-1652) इस शैली का स्वर्ण काल माना जाता है, जिसमें कला ने नई ऊंचाइयों को छुआ। अंत में, 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में श्रीनाथजी के मंदिर की स्थापना के साथ नाथद्वारा की 'पिछवाई' कला का विशेष रुप से उद्भव और विस्तार हुआ।

16. (2) कुंडलीदार सर्पाकार आकृति वाले गहरे नीले किनारे।
मेवाड़ की शास्त्रीय चित्रकला शैली में बादलों का चित्रण अत्यंत विशिष्ट और प्रतीकात्मक है। कलाकारों ने बादलों को दर्शाने के लिए गहरे नीले रंग के किनारों वाली कुंडलीदार और सर्पाकार आकृतियों का उपयोग किया है। यह शैलीगत विशेषता मेवाड़ के चित्रों को एक अद्वितीय दृश्य प्रभाव प्रदान करती है और वर्षा ऋतु के वातावरण को सजीव बनाती है। बादलों का यह स्वरूप स्वदेशी कला तत्वों के प्रति अनुराग और प्रकृति के सौंदर्य को प्रस्तुत करने की उनकी अनूठी कलात्मक दृष्टि को दर्शाता है।

17. (2) जोधपुर शैली
मारवाड़ की जोधपुर चित्रकला शैली में पीले रंग का प्रचुर उपयोग किया जाता है, जो मरुस्थलीय परिवेश को प्रतिबिंबित करता है। इस शैली की एक अत्यंत विशिष्ट विशेषता बादलों के किनारों पर स्वर्ण रेखाओं का प्रयोग करना है, जो चित्रों में राजसी भव्यता उत्पन्न करता है। जोधपुर शैली में रंगों का यह संयोजन और बादलों का विशेष निरूपण इसे अन्य राजस्थानी शैलियों से पृथक करता है। यह कलात्मक विशेषता विशेष रुप से महाराजा मान सिंह और उनके पूर्ववर्ती शासकों के संरक्षण में विकसित हुई थी।

18. (1) I, II, और III
मारवाड़ चित्रकला शैली का व्यवस्थित विकास राव मालदेव के शासनकाल से प्रारंभ हुआ। इस शैली में 'ढोला-मारु' जैसे लोक आख्यानों का चित्रण अत्यंत लोकप्रिय रहा है। महाराजा मान सिंह के काल में नाथ संप्रदाय के प्रभाव स्वरुप अनेक आध्यात्मिक चित्रों का निर्माण हुआ। यद्यपि इस शैली की अपनी मौलिक पहचान थी, किंतु मुगल दरबार के साथ राजनीतिक संबंधों के कारण इस पर मुगल कला का भी प्रभाव पड़ा। अतः यह कहना गलत है कि इसने मुगल प्रभाव को पूर्णतः अस्वीकार किया था।

19. (3) बीकानेर
'उस्ता कला' बीकानेर चित्रकला शैली की एक अनूठी और विश्व प्रसिद्ध विशेषता है। इस कला में ऊंट की खाल पर स्वर्ण की बारीक नक्काशी और लघु चित्रकारी की जाती है, जिसे 'मुनव्वत कार्य' भी कहा जाता है। मुगल दरबार से बीकानेर आए उस्ता कलाकारों ने इस शिल्प को यहाँ विकसित किया। महाराजा अनूप सिंह के संरक्षण में यह कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची।

57. (1) मनोभावों और ऋतुओं के अनुसार मानवीकृत रागों का दृश्य निरूपण।
'रागमाला' राजस्थानी चित्रकला का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रिय विषय है। इसका अर्थ है 'रागों की माला', जिसमें भारतीय शास्त्रीय संगीत के विभिन्न रागों को मानवीय स्वरूप में चित्रों के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। प्रत्येक चित्र एक विशिष्ट राग के मनोभाव, उससे जुड़ी ऋतु और दिन के समय को दर्शाता है। यह कला, काव्य और संगीत के अद्भुत संगम का प्रतिनिधित्व करता है। रागमाला चित्रों के माध्यम से कलाकारों ने अमूर्त ध्वनि को दृश्य रूप प्रदान करने की चुनौतीपूर्ण और सुंदर कला को सिद्ध किया है।

58. (2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
प्रसिद्ध रागमाला सेटों के निर्माण में विभिन्न कलाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। 1605 में निसारुद्दीन ने 'चावंड रागमाला' का निर्माण किया। साहिबदीन ने 1628 में 'मेवाड़ रागमाला' का उत्कृष्ट चित्रण किया, जो उनके कौशल का प्रमाण है। डालू द्वारा 1768 में निर्मित 'कोटा रागमाला' हाड़ौती शैली की भव्यता को दर्शाती है। वीरजी ने 1623 में 'पाली-मारवाड़ रागमाला' का चित्रण किया। इन कलाकारों ने अपनी विशिष्ट शैली के माध्यम से रागमाला की परंपरा को राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में समृद्ध और जीवंत बनाए रखा।

59. (2) II, III, I
राजस्थान के रागमाला चित्रों का निर्माण कालानुक्रमिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सबसे पहले 1605 ईस्वी में निसारुद्दीन द्वारा 'चावंड रागमाला' का चित्रण किया गया, जो मेवाड़ शैली के विकास की प्रारंभिक अवस्था थी। इसके पश्चात, 1628 ईस्वी में साहिबदीन ने अपनी प्रसिद्ध 'मेवाड़ रागमाला' का निर्माण किया, जो तकनीकी रूप से अधिक परिष्कृत थी। अंत में, 1768 ईस्वी में डालू द्वारा 'कोटा रागमाला' का सृजन हुआ। यह क्रम राजस्थान में चित्रकला के पारंपरिक रुपों से लेकर बाद के भव्य दरबारी चित्रण के विकास को स्पष्ट करता है।

60. (1) भगवान शिव या कन्याओं द्वारा पूजित एक कुलीन पुरुष, प्रायः एक नंदी के साथ।
राजस्थानी रागमाला चित्रों में 'राग भैरव' का चित्रण अत्यंत भक्तिमय और शांत भाव से किया जाता है। इसे प्रायः भगवान शिव के मानवीय स्वरूप के रूप में दर्शाया जाता है, जिन्हें कन्याओं या उपासकों द्वारा पूजा जा रहा होता है। अक्सर चित्र की पृष्ठभूमि में नंदी की उपस्थिति इस राग की आध्यात्मिक गंभीरता को और सुदृढ़ करती है। यह राग सूर्योदय के समय का माना जाता है, इसलिए चित्रों में सुबह की कोमल आभा और पवित्र वातावरण का सृजन किया जाता है। यह चित्रण संगीत की जड़ों को व्यक्त करता है।

61. (3) केवल III
रागमाला चित्र भारतीय कला की वह विधा है जहाँ संगीत, कविता और चित्रकला का मिलन होता है। प्रत्येक राग एक विशेष ऋतु और समय से जुड़ा होता है, जिसे चित्रकार सजीव करता है। यह कहना पूर्णतः गलत है कि ये विषय केवल मेवाड़ शैली तक सीमित थे। वास्तव में, रागमाला के उत्कृष्ट सेट मारवाड़, बूंदी, कोटा और जयपुर जैसी राजस्थान की लगभग सभी प्रमुख शैलियों में प्रचुरता से पाए जाते हैं। रागमाला विषय वस्तु की व्यापकता राजस्थानी कलाकारों की संगीत के प्रति गहरी समझ का प्रमाण है।

62. (4) संगीत रत्नाकर या राग का निरूपण करने वाले काव्यात्मक दोहे।
रागमाला चित्रों की एक अनिवार्य विशेषता उनके शीर्ष या हाशिये पर अंकित काव्यात्मक विवरण है। चित्रकार अक्सर 'संगीत रत्नाकर' जैसे ग्रंथों या अन्य समकालीन कविताओं से उद्धृत दोहों का उपयोग करते थे। ये दोहे उस विशिष्ट राग के स्वरूप, उसके नायक-नायिका और उससे जुड़े मनोभावों का वर्णन करते हैं। यह पाठ न केवल चित्र की व्याख्या करता है, बल्कि दर्शक को उस संगीत की अनुभूति कराने में भी सहायक होता है जिसका वह चित्र दृश्य रूप है। यह परंपरा भारतीय कला का उत्कृष्ट उदाहरण है।

63. (3) एक नायिका, विरह की अभिव्यक्ति और राग का प्रतीक प्रकृति।
रागिनी चित्रों की विषयगत संरचना मुख्य रूप से मानवीय भावनाओं, विशेषकर प्रेम और विरह के इर्द-गिर्द बुनी जाती है। इन चित्रों में एक नायिका को केंद्रीय पात्र के रूप में दर्शाया जाता है, जो अपने प्रिय की प्रतीक्षा या विरह की अवस्था में होती है। प्रकृति के विभिन्न तत्व, जैसे बादलों का गरजना या विशिष्ट वनस्पतियां, उस रागिनी के विशिष्ट मनोभाव और समय के प्रतीक के रूप में उपयोग किए जाते हैं। यह भावनात्मक गहराई और प्रतीकात्मकता ही रागिनी चित्रों को अत्यंत मर्मस्पर्शी और कलात्मक रूप से समृद्ध बनाती है।

64. (1) पाली में वीरजी द्वारा चित्रित रागमाला जयपुर शैली का प्राचीनतम ज्ञात पूर्ण रागमाला सेट है।
राजस्थान में रागमाला सेटों के बारे में यह तथ्य भ्रामक है कि वीरजी द्वारा चित्रित पाली रागमाला जयपुर शैली का हिस्सा है। वास्तव में, वीरजी द्वारा 1623 ईस्वी में चित्रित रागमाला मारवाड़ शैली की प्रारंभिक और अत्यंत महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है। अन्य कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं, जैसे 'चावंड रागमाला' का अमर सिंह प्रथम के काल में चित्रण और कोटा में डालू द्वारा निर्मित विशाल सेट। मारवाड़ शैली के रागमाला चित्रों में मरुस्थलीय पृष्ठभूमि का उपयोग उनकी क्षेत्रीय मौलिकता को उजागर करता है।

65. (4) फारस (ईरान)
जयपुर की प्रसिद्ध नीली मृदभांड कला (ब्लू पॉटरी) की जड़ें प्राचीन फारस में निहित हैं। मध्यकाल में यह कला फारस से मध्य एशिया होते हुए मुगलों के साथ भारत पहुँची। प्रारंभ में इसका उपयोग मस्जिदों और मकबरों की टाइलों को सजाने के लिए किया जाता था। फारस में विकसित इस तकनीक ने ही नीले रंग और विशिष्ट चमक के उपयोग की आधारशिला रखी। बाद में जयपुर के शासकों ने इस विदेशी कला को अपनाकर इसे राजस्थानी सांस्कृतिक रंग में ढाल दिया, जिससे यह आज जयपुर की वैश्विक पहचान बन गई है।

29. (3) महाराव उम्मेद सिंह
बूंदी के महाराव उम्मेद सिंह के शासनकाल के दौरान निर्मित 'चित्रशाला' भित्ति चित्रों का एक अनुपम भंडार है। इन दीवारों पर अंकित चित्र बूंदी शैली के चरमोत्कर्ष को प्रदर्शित करते हैं, जिनमें धार्मिक विषयों, राजसी ठाठ और प्रकृति के विविध रूपों का सुंदर समावेश है। इन भित्ति चित्रों को 'दीवारों का गहना' भी कहा जाता है। महाराव उम्मेद सिंह स्वयं कला के बड़े पारखी थे, और उनके संरक्षण में बूंदी शैली ने अपनी तकनीकी और सौंदर्यात्मक श्रेष्ठता को प्राप्त किया था।

30. (4) मयूर और गज
बूंदी चित्रकला शैली में मयूर और हाथियों का चित्रण अत्यंत प्रमुखता के साथ किया गया है। नाचते हुए मयूर और हाथियों को प्रायः सघन वनों, झीलों के किनारे या महलों के प्रांगण में दर्शाया जाता है। ये तत्व न केवल बूंदी की प्राकृतिक सुंदरता के प्रतीक हैं, बल्कि ये मानवीय भावनाओं और राजसी शक्ति को भी प्रतीकात्मक रूप से व्यक्त करते हैं। पशु-पक्षियों का यह संयोजन बूंदी शैली को अन्य शैलियों की तुलना में अधिक जीवंत, प्रकृति-प्रेमी और कलात्मक रूप से समृद्ध बनाता है।

31. (1) सघन हरा
बूंदी शैली के चित्रों में पृष्ठभूमि के रूप में सघन हरे रंग का उपयोग इसकी सबसे महत्वपूर्ण पहचान है। यह रंग क्षेत्र की प्राकृतिक हरियाली और वनों को प्रतिबिंबित करता है। हरे रंग के विभिन्न रूपों का उपयोग करके चित्रकारों ने वनस्पतियों को गहराई प्रदान की है। यह रंग संयोजन चित्रों को एक शीतल वातावरण प्रदान करता है, जो अक्सर सुनहरे और नारंगी रंगों के साथ मिलकर सुंदर दृश्य प्रभाव उत्पन्न करता है। पृष्ठभूमि की यह विशेषता बूंदी शैली को अन्य मरुस्थलीय शैलियों से अलग करती है।

32. (2) कोटा शैली महाराव राम सिंह प्रथम के शासनकाल के दौरान अपने उच्चतम कलात्मक स्तर पर पहुँची।
हाड़ौती चित्रकला के संदर्भ में यह कहना गलत है कि कोटा शैली महाराव राम सिंह प्रथम के काल में अपने चरमोत्कर्ष पर थी। वास्तव में, कोटा शैली ने महाराव उम्मेद सिंह के शासनकाल के दौरान अपनी कलात्मक ऊंचाइयों को छुआ था, विशेष रूप से आखेट के दृश्यों में। बूंदी शैली निश्चित रूप से मेवाड़ और मुगल शैलियों का मिश्रण है। कोटा शैली में पात्रों की शारीरिक विशिष्टताएँ जैसे उन्नत नासिका और लघु कद इसके शैलीगत परिपक्वता का ही अंग हैं। अतः दूसरा विकल्प असत्य है।

33. (2) मुगल शैली
आमेर-जयपुर चित्रकला शैली राजस्थान की अन्य शैलियों की तुलना में मुगल प्रभाव के उच्चतम स्तर को प्रदर्शित करती है। कछवाहा शासकों और मुगलों के बीच लंबे समय तक रहे वैवाहिक और राजनीतिक संबंधों के कारण मुगल कला का सीधा प्रभाव यहाँ के चित्रों पर पड़ा। चित्रों की बारीकियाँ, दरबारी परिवेश का चित्रण, वेशभूषा और तकनीक में मुगल परिष्कार स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इस शैली ने मुगल सौंदर्यबोध को अपनी स्थानीय कला परंपराओं के साथ सामंजस्यपूर्ण रूप से आत्मसात किया है।

34. (1) I, IV, II, III
जयपुर चित्रकला का विकास सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा 'सूरतखाना' की स्थापना से गति पकड़ता है। इसके पश्चात सवाई ईश्वरी सिंह के काल में साहिबराम ने विशाल आदमकद चित्रों की परंपरा प्रारंभ की। सवाई प्रताप सिंह का शासनकाल जयपुर शैली का स्वर्ण युग माना जाता है, जिसमें कृष्ण भक्ति पर आधारित उत्कृष्ट चित्रण हुआ। अंत में, 19वीं शताब्दी में सवाई राम सिंह द्वितीय ने छायाचित्रण और नवीन कला तकनीकों का परिचय देकर इस शैली को आधुनिकता की ओर अग्रसर किया।

35. (3) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
जयपुर शैली के कलाकारों ने विभिन्न विधाओं में विशेषज्ञता हासिल की थी। साहिबराम ने सवाई ईश्वरी सिंह का प्रसिद्ध आदमकद चित्र बनाया। मोहम्मद शाह दरबारी दृश्यों और व्यक्तिचित्रों के चित्रण के लिए विख्यात थे। शालिग्राम ने राधा-कृष्ण के भक्तिपूर्ण विषयों को अपनी तूलिका से सजीव किया। रामजीदास ने 'गीत गोविंद' जैसे शास्त्रीय ग्रंथों पर आधारित लघु चित्रों का निर्माण किया। इन सभी कलाकारों ने सामूहिक रूप से जयपुर शैली को उसकी विशिष्ट भव्यता और सूक्ष्मता प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

36. (4) I, II, और IV
जयपुर चित्रकला शैली में विस्तृत और अलंकृत हाशिये चित्रों की गरिमा बढ़ाते हैं। मुगल प्रभाव के कारण पुरुषों को दाढ़ी-विहीन या कटी हुई दाढ़ी के साथ चित्रित किया गया है। रंगों में प्राकृतिक हरे और सुनहरे रंगों का व्यापक उपयोग इसकी राजसी आभा को प्रकट करता है। जहाँ तक वनस्पतियों का प्रश्न है, जयपुर शैली में पीपल के स्थान पर प्रायः वटवृक्ष और उद्यानों के सुव्यवस्थित स्वरूप का अधिक चित्रण मिलता है। अतः विकल्प 4 में दिए गए तत्व इसकी सटीक पहचान करते हैं।

37. (3) जयपुर शैली
पुंडरीक जी की हवेली के भित्ति चित्र जयपुर चित्रकला शैली के श्रेष्ठ और जीवंत उदाहरण माने जाते हैं। इन चित्रों में जयपुर की पारंपरिक कलात्मकता, रंगों का संतुलन और विषयों की विविधता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। यह हवेली न केवल स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसके भित्ति चित्र तत्कालीन सामाजिक जीवन, धार्मिक कथाओं और सजावटी स्वरूपों का एक सुंदर दस्तावेज प्रस्तुत करते हैं। जयपुर शैली की सूक्ष्म रेखाएँ और प्राकृतिक रंगों का उपयोग इन चित्रों को आज भी ऐतिहासिक महत्व प्रदान करता है।

38. (2) देवगढ़
राजस्थानी चित्रकला के वर्गीकरण में अलवर, उनियारा और शेखावाटी मूलतः ढूँढाड़ स्कूल के अंतर्गत आने वाली शैलियाँ हैं। ये क्षेत्र भौगोलिक और कलात्मक दृष्टि से जयपुर के प्रभाव में रहे हैं। इसके विपरीत, देवगढ़ मेवाड़ स्कूल की एक महत्वपूर्ण उप-शैली है, जिसकी अपनी विशिष्ट विशेषताएँ हैं। देवगढ़ के रावत शासकों के संरक्षण में विकसित इस शैली में मारवाड़, जयपुर और मेवाड़ का अद्भुत समन्वय मिलता है। अतः क्षेत्रीय वर्गीकरण के आधार पर देवगढ़ अन्य विकल्पों से भिन्न और विषम है।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) आनंद कुमारस्वामी
आनंद कुमारस्वामी ने 1916 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'राजपूत चित्रकला' प्रकाशित की थी। इस कार्य के माध्यम से उन्होंने सर्वप्रथम राजस्थान और पंजाब की पहाड़ियों में प्रचलित चित्रकला शैलियों को मुगल शैली से अलग एक स्वतंत्र पहचान प्रदान की। उन्होंने इन शैलियों की विषयवस्तु, तकनीक और आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का गहन विश्लेषण किया। उनका यह योगदान भारतीय कला इतिहास में वैज्ञानिक वर्गीकरण और स्वदेशी कला के पुनरुत्थान का आधार स्तंभ बना।

2. (3) श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी, कल्पसूत्र, सुपासनाह चरियम, रसिकप्रिया
राजस्थान की चित्रकला परंपरा का विकास मेवाड़ शैली से प्रारंभ हुआ। 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' 1260 ईस्वी में चित्रित प्राचीनतम ज्ञात लघु चित्र ग्रंथ है। इसके पश्चात 14वीं और 15वीं शताब्दी में जैन शैली के 'कल्पसूत्र' का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा। 'सुपासनाह चरियम' का चित्रण 1423 ईस्वी में हुआ, जो शैलीगत परिवर्तन का काल था। अंत में, 'रसिकप्रिया' जैसे ग्रंथों का चित्रण 16वीं और 17वीं शताब्दी के दौरान दरबारी कला के परिपक्व चरण में हुआ।

3. (3) राजपूत चित्रकला के विषयगत चयन को आकार देने में भक्ति आंदोलन की भूमिका नगण्य थी।
राजपूत चित्रकला के विकास और उसके विषयगत विस्तार में भक्ति आंदोलन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और निर्णायक रही है। 15वीं और 16वीं शताब्दी में वैष्णववाद के प्रसार ने चित्रकारों को कृष्ण लीला, राम कथा और नायक-नायिका भेद जैसे विषयों के चित्रण हेतु गहन प्रेरणा प्रदान की। यह कला शैली लोक जीवन और धार्मिक भावनाओं से गहराई से जुड़ी हुई थी। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण है कि इसके विषयों के चयन में भक्ति परंपरा का प्रभाव नगण्य था।

4. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
प्रारंभिक राजपूत लघु चित्रों में नायक-नायिका भेद और कृष्ण की विविध लीलाओं को प्रमुखता दी गई थी। इसका मुख्य कारण तत्कालीन समाज में वैष्णववाद का पुनरुद्धार और भक्ति आंदोलन का व्यापक प्रसार था। कवियों और कलाकारों ने लौकिक प्रेम के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम को अभिव्यक्त करने की सांस्कृतिक आवश्यकता को पूरा किया। इस प्रकार, धार्मिक परिवेश ने कलात्मक विषयों के चयन और उनके चित्रण की शैली को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

5. (3) कमलचन्द्र
मेवाड़ के रावल तेजसिंह के शासनकाल में 1260 ईस्वी में 'श्रावक प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' नामक ग्रंथ का चित्रण हुआ था। यह राजस्थान की चित्रकला शैली का सबसे प्राचीन ज्ञात उदाहरण माना जाता है। इस महत्वपूर्ण पांडुलिपि को चित्रित करने का श्रेय प्रसिद्ध चित्रकार कमलचन्द्र को दिया जाता है। ताड़ के पत्तों पर निर्मित यह चित्र ग्रंथ आहड़ में तैयार किया गया था, जो तत्कालीन मेवाड़ की कलात्मक समृद्धि और जैन शैली के प्रभाव को स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करता है।

6. (2) II, III, और V
राजपूत चित्रकला में रंगों का निर्माण मुख्य रूप से खनिजों, वनस्पतियों और बहुमूल्य रत्नों जैसे प्राकृतिक स्रोतों से किया जाता था। इस शैली की प्रमुख विशेषता आकृतियों को एक-चश्म चेहरे के रूप में चित्रित करना है। कलाकारों ने विभिन्न ऋतुओं, मानवीय मनोभावों और रागों को व्यक्त करने के लिए प्रतीकात्मकता का व्यापक उपयोग किया। यह शैली लोक तत्वों से समृद्ध है और इसमें यथार्थवाद के स्थान पर आदर्शवाद और सपाट आयामों पर अधिक बल दिया गया है।

7. (4) 1423 ईस्वी
'सुपासनाह चरियम' मेवाड़ चित्रकला शैली के विकास क्रम में एक अत्यंत महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है। इसका चित्रण 1423 ईस्वी में देलवाड़ा (मेवाड़) में किया गया था। यह पांडुलिपि जैन अपभ्रंश शैली से राजस्थानी चित्रकला शैली की ओर संक्रमण के प्रारंभिक चरणों को दर्शाती है। इसमें प्रयुक्त स्वर्ण स्याही और रंगों की विविधता उस काल की कलात्मक प्रगति का प्रमाण है। यह ग्रंथ राजस्थान के कला इतिहास में पांडुलिपि चित्रण की समृद्ध परंपरा को उजागर करता है।

8. (1) राजपूत चित्रकला आध्यात्मिक और लोक-आधारित है, जबकि मुगल चित्रकला दरबारी और भौतिकवादी है।
कला इतिहासकारों के अनुसार राजपूत और मुगल शैलियों के बीच प्राथमिक अंतर उनकी अंतर्निहित प्रेरणाओं में निहित है। राजपूत चित्रकला मुख्य रूप से आध्यात्मिक विषयों, धार्मिक कथाओं और लोक जीवन से प्रेरित है, जो इसे जनसाधारण की कला बनाता है। इसके विपरीत, मुगल चित्रकला का केंद्र बिंदु शाही दरबार की भव्यता, शासकों के पराक्रम और भौतिक जगत का यथार्थवादी चित्रण था। जहाँ राजपूत कला में भावनाओं की प्रधानता थी, वहीं मुगल शैली में तकनीकी बारीकी पर अधिक ध्यान दिया गया।

9. (3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
राजस्थान की विभिन्न चित्रकला शैलियों की अपनी विशिष्ट पहचान है। मेवाड़ शैली में पीले और लाल रंगों की प्रधानता इसे जीवंत बनाती है। कोटा शैली अपने गतिशील आखेट के दृश्यों के लिए प्रसिद्ध है, जबकि बूंदी शैली में पशुओं के युद्ध और सघन प्राकृतिक पृष्ठभूमि का प्रभावी चित्रण मिलता है। जयपुर शैली अपने विशाल आदमकद चित्रों और स्वर्ण व रजत रंगों के

भक्ति और 'पुष्टि मार्ग' पर बल देता है, जिसने किशनगढ़ के कलाकारों को कृष्ण की विविध लीलाओं और राधा-कृष्ण के अलौकिक प्रेम को चित्रित करने हेतु प्रेरित किया। राजा सांवत सिंह स्वयं इस संप्रदाय के अनुयायी थे, जिससे चित्रकला में भक्ति और श्रृंगार का अनूठा संगम हुआ। इसी प्रभाव के कारण किशनगढ़ शैली में धार्मिकता और कलात्मकता एक-दूसरे में पूर्णतः समाहित हो सकीं।

49. (1) A-1 और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
आमेर-जयपुर और बीकानेर रियासतों के मुगल दरबार के साथ अत्यंत घनिष्ठ राजनीतिक संबंध थे। इन शासकों ने मुगलों के साथ वैवाहिक गठबंधन भी किए, जिसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक आदान-प्रदान का मार्ग प्रशस्त हुआ। मुगल दरबार में प्रचलित कला शैलियाँ और तकनीक इन रियासतों के कलाकारों तक पहुँचे। यही कारण है कि आमेर और बीकानेर की चित्रकला में परिष्कृत रेखाएँ, सूक्ष्म चित्रण और दरबारी वैभव जैसे मुगल तत्व प्रचुरता से दिखाई देते हैं। राजनीतिक निकटता ने कलात्मक समन्वय को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया।

50. (1) यथार्थवादी दरबारी दृश्य, राजकीय व्यक्तिचित्र और विस्तृत वेशभूषा।
राजपूत चित्रकला ने मुगल शैली से तकनीकी और विषयगत दोनों स्तरों पर प्रेरणा ली। इनमें सबसे प्रमुख प्रभाव राजकीय व्यक्तिचित्रों का निर्माण और शाही दरबार की औपचारिकताओं का यथार्थवादी चित्रण था। मुगल शैली के प्रभाव से ही राजपूत चित्रों में वेशभूषा की सूक्ष्मता, गहनों की चमक और वस्त्रों की पारदर्शिता को बहुत बारीकी से दर्शाया जाने लगा। इसके अतिरिक्त, शिकार के दृश्यों और दरबारी उत्सवों के चित्रण में जो भव्यता आई, वह सीधे तौर पर मुगल कला परंपराओं से ग्रहण किया गया एक प्रमुख पक्ष था।

51. (3) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजपूत चित्रकला पर मुगल प्रभाव क्रमिक रूप से विकसित हुआ। अकबर के काल में स्वदेशी तत्वों का प्रारंभिक समन्वय हुआ। जहाँगीर के समय में प्रकृति चित्रण और यथार्थवाद पर बल दिया गया। शाहजहाँ के शासनकाल ने स्वर्ण कार्य और परिष्कृत हाशिये प्रदान किए। औरंगज़ेब की कला के प्रति उदासीनता के कारण शाही कलाकारों ने राजपूत दरबारों की ओर पलायन किया, जिससे क्षेत्रीय शैलियों में मुगल बारीकियों का समावेश हुआ। यह कालानुक्रमिक प्रभाव राजस्थान की चित्रकला को तकनीकी रूप से समृद्ध और विविध बनाने में सहायक रहा।

52. (1) मेवाड़
मेवाड़ चित्रकला शैली अपनी सांस्कृतिक दृढ़ता और स्वदेशी विशेषताओं को बनाए रखने के लिए जानी जाती है। मेवाड़ के शासकों ने लंबे समय तक मुगलों के विरुद्ध प्रतिरोध जारी रखा, जिसका प्रभाव उनकी कला पर भी पड़ा। अन्य रियासतों के विपरीत, मेवाड़ ने बहुत बाद तक मुगल कला के अत्यधिक प्रभाव को स्वीकार नहीं किया और अपनी प्राचीन परंपराओं, रंगों के विशिष्ट संयोजन और लोक तत्वों को सुरक्षित रखा। यही कारण है कि मेवाड़ शैली आज भी राजस्थानी कला के सबसे शुद्ध स्वरूप का प्रतिनिधित्व करती है।

53. (4) यूरोपीय प्रभाव
राजपूत चित्रकला में 'छाया-प्रकाश' की अवधारणा का प्रवेश एक रोचक ऐतिहासिक घटना है। मुगल सम्राटों, विशेष रूप से जहाँगीर के दरबार में यूरोपीय व्यापारियों द्वारा पाश्चात्य चित्र भेंट किए गए थे। इन चित्रों के माध्यम से मुगल कलाकारों ने वस्तुओं को त्रिविमीय आभा देने वाली तकनीक सीखी। कालांतर में मुगल दरबार के संपर्क में आने वाले राजपूत शासकों और उनके कलाकारों ने इस तकनीक को अपनी शैली में समाहित किया। इस प्रकार, छाया-प्रकाश का उपयोग राजस्थानी कला में यूरोपीय कला के अप्रत्यक्ष प्रभाव का परिणाम था।

54. (2) I, III, और IV
राजस्थानी चित्रों में ओढ़नी की पारदर्शिता और परिप्रेक्ष्य का व्यवस्थित उपयोग मुगल तकनीकी प्रभाव के प्रमुख उदाहरण हैं। बीकानेर के चित्रकारों द्वारा चित्रों पर नाम और तिथि अंकित करने की परंपरा भी मुगल दरबार से ही प्रेरित थी। हालाँकि, यह कहना गलत है कि मुगलों के प्रभाव में पौराणिक विषयों को पूर्णतः त्याग दिया गया था। वास्तव में, राजपूत शैली में धार्मिक विषयों का प्रभुत्व सदैव बना रहा और दरबारी विषय उनके समानांतर चलते रहे। अतः दूसरा कथन ऐतिहासिक सत्य से परे और भ्रामक है।

55. (3) राजपूत स्त्रियाँ आदर्शवादी 'नायिकाएँ' हैं, जबकि मुगल चित्रण अन्तःपुर का यथार्थवादी प्रतिबिंब हैं।
मुगल और राजपूत शैलियों में स्त्रियों के चित्रण का दृष्टिकोण मौलिक रूप से भिन्न है। राजपूत चित्रकला में स्त्रियों को अक्सर 'नायिका' के रूप में, प्रतीकात्मक और आदर्शवादी ढंग से प्रस्तुत किया गया है, जो विरह या भक्ति जैसे भावों का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसके विपरीत, मुगल चित्रों में स्त्रियों का चित्रण प्रायः शाही अन्तःपुर की गतिविधियों और विलासितापूर्ण जीवन के यथार्थवादी दस्तावेजीकरण के रूप में मिलता है। जहाँ राजपूत शैली में स्त्री सौंदर्य एक आध्यात्मिक प्रतीक है, वहीं मुगल शैली में यह सांसारिक वैभव का अंग है।

56. (4) लोक उत्साह और हिंदू विषयों को मुगल तकनीकी परिष्करण तथा दरबारी सौंदर्यबोध के साथ मिश्रित करना।
17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान राजपूत चित्रकला में एक अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। इस काल में कलाकारों ने राजस्थान के पारंपरिक लोक उत्साह, पौराणिक कथाओं और भक्ति विषयों को मुगल शैली की तकनीकी बारीकियों, जैसे सूक्ष्म रेखांकन और प्राकृतिक रंगों के परिष्कृत उपयोग के साथ जोड़ा। इस मेल से एक ऐसी नई दृश्य भाषा विकसित हुई जिसमें भारतीय आत्मा और मुगल भव्यता का सामंजस्य था। इस समन्वय ने ही राजस्थानी चित्रकला को उसकी वह विशिष्ट पहचान प्रदान की जो आज विश्व विख्यात है।

39. (4) हाथी दांत की पट्टियों पर चित्रकारी
अलवर चित्रकला शैली अपनी सूक्ष्मता और अनूठे प्रयोगों के लिए प्रसिद्ध है। इस शैली की सबसे विशिष्ट पहचान हाथी दांत की छोटी-छोटी पट्टियों पर अत्यंत बारीक लघु चित्रकारी करना है। इन चित्रों में मानवीय आकृतियों, विशेष रूप से महिलाओं के सौंदर्य और दरबारी दृश्यों को बहुत ही कोमलता से उकेरा गया है। मूलसिंह जैसे कलाकारों ने इस विधा में विशेषज्ञता प्राप्त की थी। हाथी दांत पर चित्रण की यह तकनीक अलवर शैली को राजस्थानी कला के फलक पर एक अत्यंत मूल्यवान स्थान प्रदान करती है।

40. (1) केवल I, II, और V
उनियारा चित्रकला शैली जयपुर और बूंदी शैलियों के कलात्मक संगम का प्रतिनिधित्व करती है। इस शैली के विकास में मीर बख्श, काशी और राम लखन जैसे कलाकारों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनियारा के चित्रों में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों के दृश्यों का अत्यंत भावपूर्ण चित्रण मिलता है। यद्यपि यह राव राजा सरदार सिंह के काल में समृद्ध हुई, किंतु इसकी पहचान मुख्य रूप से इसके शैलीगत मिश्रण और महाकाव्य आधारित विषयों की उत्कृष्ट और सूक्ष्म अभिव्यक्ति में निहित है।

41. (3) राजा सांवत सिंह
किशनगढ़ चित्रकला शैली राजा सांवत सिंह के संरक्षण में अपने कलात्मक शिखर पर पहुँची। सांवत सिंह स्वयं एक उच्च कोटि के विद्वान और कवि थे, जो 'नागरी दास' के नाम से भक्तिपूर्ण रचनाएँ करते थे। उनके शासनकाल में भगवान कृष्ण और राधा के प्रति उनके अगाध प्रेम ने चित्रकला को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने निहाल चंद जैसे चित्रकारों को प्रोत्साहित किया, जिन्होंने उनकी धार्मिक संवेदनाओं को चित्रों में ढाला। सांवत सिंह का वैराग्य और कला प्रेम किशनगढ़ शैली की मूल आत्मा है।

42. (1) केवल III
'बणी-ठणी' किशनगढ़ शैली की विश्व विख्यात कृति है, जिसे निहाल चंद ने चित्रित किया था। इसे 'भारत की मोनालिसा' के रूप में ख्याति प्राप्त है। ऐतिहासिक रूप से, यह आकृति किसी योद्धा रानी का प्रतिनिधित्व नहीं करती, बल्कि यह राजा सांवत सिंह की प्रेमिका थीं, जिन्हें आदर्श राधा के रूप में चित्रित किया गया था। अतः तीसरा कथन ऐतिहासिक रूप से असत्य है, जबकि प्रथम दो कथन इस अद्वितीय कलाकृति की विशेषताओं और चित्रकार के बारे में पूर्णतः सही हैं।

43. (4) एरिक डिकिंसन और डॉ. फैयाज अली
किशनगढ़ चित्रकला शैली को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने का मुख्य श्रेय एरिक डिकिंसन और डॉ. फैयाज अली को दिया जाता है। एरिक डिकिंसन ने ही 'बणी-ठणी' की तुलना विश्व प्रसिद्ध मोनालिसा से की थी, जिससे इस शैली के प्रति वैश्विक आकर्षण बढ़ा। इन दोनों विद्वानों के गहन शोध और प्रयासों के कारण ही किशनगढ़ की अद्भुत सूक्ष्मता, काव्यात्मकता और विशिष्ट शारीरिक सौंदर्य बोध को कला जगत में उचित स्थान प्राप्त हो सका। उनका योगदान किशनगढ़ शैली के इतिहास में अविस्मरणीय है।

44. (2) I, II, III, IV, और V
किशनगढ़ शैली अपनी विशिष्ट शारीरिक विशेषताओं जैसे तीखी नासिका, लंबी मुखाकृति और कमल की पंखुड़ियों जैसे नेत्रों के लिए जानी जाती है। यहाँ के चित्रों में नीले जल में खिले गुलाबी कमलों का चित्रण एक अनिवार्य प्राकृतिक तत्व है। श्वेत और गुलाबी रंगों का प्रचुर उपयोग चित्रों को एक अलौकिक आभा प्रदान करता है। इस शैली के केंद्र में सदैव राधा और कृष्ण के आध्यात्मिक प्रेम के विषय रहे हैं। ये सभी तत्व मिलकर किशनगढ़ शैली को राजस्थानी कला की सबसे काव्यात्मक शैली बनाते हैं।

45. (3) राधा
किशनगढ़ शैली के संदर्भ में, 'बणी-ठणी' की आकृति को केवल एक मानवीय सौंदर्य के रूप में नहीं देखा गया है। इसे कलात्मक रूप से देवी राधा के मानवीकृत और आदर्श स्वरूप के रूप में व्याख्यायित किया गया है। राजा सांवत सिंह और चित्रकार निहाल चंद ने बणी-ठणी के माध्यम से राधा की उस दिव्य छवि को साकार करने का प्रयास किया, जो भक्ति साहित्यों में वर्णित है। उसकी लंबी उंगलियां, पारभासी ओढ़नी और विशिष्ट नेत्र विन्यास उसे एक सांसारिक नारी से ऊपर आध्यात्मिक प्रतीक के रूप में स्थापित करते हैं।

46. (4) इसकी गीतात्मक भव्यता, सुकुमार रंग और रुमानी भाव कांगड़ा शैली के साथ गहरा सौंदर्य बोध साझा करते हैं।
किशनगढ़ शैली पर कांगड़ा चित्रकला का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, विशेष रूप से इसकी कोमल रेखाओं और काव्यात्मक अभिव्यक्ति में। दोनों शैलियाँ प्रेम और भक्ति के विषयों को अत्यंत सूक्ष्म तरीके से प्रस्तुत करती हैं। सुकुमार रंगों का चयन और रुमानी वातावरण का सृजन कांगड़ा और किशनगढ़ के बीच एक गहरा संबंध स्थापित करता है। यह प्रभाव किशनगढ़ के चित्रों को एक ऐसी कोमलता प्रदान करता है जो अन्य शैलियों में विरले ही पाई जाती है। यह समन्वय कला के उदात्त रूप का परिचायक है।

47. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थानी चित्रकला शैलियों की पहचान अक्सर पात्रों के नेत्रों की आकृति से की जाती है। मेवाड़ शैली में मछली के आकार जैसे नेत्र चित्रित किए जाते हैं। किशनगढ़ शैली अपने लंबे चापाकार या कमल के समान नेत्रों के लिए प्रसिद्ध है। जोधपुर शैली में बादाम के आकार जैसे नेत्रों की प्रधानता है, जबकि जयपुर शैली में तीक्ष्ण और विहंग दृश्य वाले नेत्रों का अंकन मिलता है। नेत्रों का यह विशिष्ट चित्रण प्रत्येक शैली के अपने सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण और क्षेत्रीय पहचान को मजबूती से व्यक्त करता है।

48. (2) इसने भगवान कृष्ण और राधा पर केंद्रित भक्ति विषयों को प्रेरित किया।
किशनगढ़ शैली के विकास में वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव अत्यंत गहरा और मौलिक रहा है। वल्लभ संप्रदाय भगवान कृष्ण की

66. (2) सवाई राम सिंह द्वितीय
जयपुर में नीली मृदभांड कला का वास्तविक पुनरुद्धार और विकास महाराजा सवाई राम सिंह द्वितीय के शासनकाल (1835-1880) के दौरान हुआ। वे कला और विज्ञान के महान संरक्षक थे। उन्होंने इस कला को बढ़ावा देने के लिए स्थानीय कारीगरों को दिल्ली भेजकर प्रशिक्षण दिलवाया और जयपुर में इस शिल्प को एक संगठित स्वरूप प्रदान किया। उनके काल में ही नीली मृदभांड कला ने अपने तकनीकी परिष्कार और लोकप्रियता के उच्चतम स्तर को प्राप्त किया। राम सिंह द्वितीय के विजन ने इस पारंपरिक कला को नया जीवन प्रदान किया।

67. (3) कृपाल सिंह शेखावत
कृपाल सिंह शेखावत को जयपुर की नीली मृदभांड कला का आधुनिक मसीहा माना जाता है। उन्होंने इस कला को न केवल पुनर्जीवित किया, बल्कि इसमें अपनी नवीन कलात्मक दृष्टि से क्रांतिकारी परिवर्तन भी किए। उन्होंने पारंपरिक नीले और हरे रंगों की सीमा को तोड़ते हुए 25 से अधिक नए रंगों का समावेश किया। उनकी इस असाधारण सेवा और शिल्प कौशल के लिए भारत सरकार ने उन्हें प्रतिष्ठित पद्म श्री सम्मान से नवाजा। शेखावत के प्रयासों के कारण ही आज जयपुर की ब्लू पॉटरी अंतरराष्ट्रीय बाजारों में विशिष्ट पहचान बनाए हुए है।

68. (4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
नीली मृदभांड कला में प्रयुक्त सामग्री का अपना विशिष्ट महत्व है। क्वार्ट्ज पत्थर का चूर्ण लुगदी का मुख्य आधार बनाता है, जबकि मुल्तानी मिट्टी बंधक के रूप में कार्य करती है जो सामग्री को जोड़ने में सहायता करती है। रंगों के लिए कोबाल्ट ऑक्साइड का उपयोग विशिष्ट गहरा नीला रंग प्राप्त करने हेतु किया जाता है। कॉपर ऑक्साइड के माध्यम से फिरोजा रंग तैयार किया जाता है। इन सामग्रियों का सटीक मिश्रण और भट्टी में पकाने की प्रक्रिया ही इस मृदभांड को उसकी विशिष्ट चमक और रंगत प्रदान करती है।

69. (1) इसके आधार वाली लुगदी में मिट्टी का उपयोग नहीं किया जाता है।
जयपुर की नीली मृदभांड कला विश्व के अन्य मृदभांडों से इस मामले में अनूठी है कि इसमें सामान्य चिकनी मिट्टी का उपयोग नहीं किया जाता है। इसके स्थान पर क्वार्ट्ज पत्थर का चूर्ण, कांच का बुरादा, मुल्तानी मिट्टी, सोडियम सल्फेट और गोंद के मिश्रण से एक विशेष लुगदी तैयार की जाती है। मिट्टी का उपयोग न होने के कारण यह पकने के पश्चात अत्यंत पारभासी और कांच जैसी चमक वाली दिखाई देती है। यही वह प्रमुख तकनीकी विशेषता है जो इसे साधारण बर्तनों से अलग कर एक उच्च स्तरीय हस्तशिल्प बनाती है।

70. (2) पात्रों को सांचों में ढालने के स्थान पर कुम्हार के चाक का उपयोग करके तैयार किया जाता है।
नीली मृदभांड कला की निर्माण प्रक्रिया के संबंध में यह कथन कि इसमें केवल कुम्हार के चाक का उपयोग होता है, तकनीकी रूप से गलत है। वास्तव में, ब्लू पॉटरी की लुगदी लचीली नहीं होती, इसलिए पात्रों को मुख्य रूप से सांचों का उपयोग करके ढाला जाता है। यह एक कांच जैसी चमक वाली तकनीक है। इसमें पुष्प और पशुओं के पारंपरिक रूपांकनों का चित्रण बहुत सूक्ष्मता से किया जाता है। कृपाल सिंह शेखावत द्वारा रंगों की परिधि को विस्तृत करना इस कला के आधुनिक विकास का एक महत्वपूर्ण सत्य है।

71. (2) खुर्जा
जयपुर के अतिरिक्त, उत्तर प्रदेश का खुर्जा शहर भी ऐतिहासिक रूप से अपनी विशिष्ट नीली चमक वाली मृदभांड कला के लिए प्रसिद्ध है। यद्यपि जयपुर और खुर्जा दोनों ही शैलियों की जड़ें फारसी कला में हैं, किंतु दोनों की तकनीकी विशेषताओं में अंतर है। खुर्जा पॉटरी में मिट्टी का उपयोग आधार के रूप में किया जाता है, जबकि जयपुर की शैली पूरी तरह से मिट्टी रहित लुगदी पर आधारित है। फिर भी, चमक और नीले रंगों के प्रयोग की समानता के कारण खुर्जा को भारत में ग्लेज्ड पॉटरी का एक अन्य प्रमुख केंद्र माना जाता है।

72. (1) I, II, और IV
नीली मृदभांड कला की प्रक्रिया जटिल है। लुगदी निर्माण हेतु क्वार्ट्ज, कांच और मुल्तानी मिट्टी का उपयोग होता है। आकृतियों को सुखाने के पश्चात उन पर रंग और रेखांकन किया जाता है। यह महत्वपूर्ण है कि रंजन कार्य पकाने से पूर्व ही कच्ची सतह पर किया जाता है, न कि पहली बार पकाने के पश्चात। अंत में, एक पारभासी लेप लगाकर वस्तुओं को लगभग 800 डिग्री तापमान पर भट्टी में पकाया जाता है। अतः विकल्प 1 में दिए गए चरण इस शिल्प की वास्तविक निर्माण प्रक्रिया का सही विवरण प्रस्तुत करते हैं।

73. (3) सांगानेर में हल्की पृष्ठभूमि पर सूक्ष्म पुष्प रूपांकनों का उपयोग होता है, जबकि बगरू में गहरी पृष्ठभूमि पर सुस्पष्ट स्वरूपों का उपयोग होता है।
सांगानेर और बगरू की ठप्पा छपाई अपनी विशिष्ट शैलियों के कारण जानी जाती हैं। सांगानेरी छपाई अक्सर श्वेत या हल्के रंग के वस्त्रों पर की जाती है, जिसमें बेल-बूटों और सूक्ष्म पुष्पों के कोमल रूपांकन होते हैं। इसके विपरीत, बगरू छपाई में कत्थई, काले और लाल जैसे गहरे रंगों का उपयोग किया जाता है, जहाँ पृष्ठभूमि प्रायः रंगीन होती है। बगरू में रूपांकन अधिक सुस्पष्ट, ज्यामितीय और ठोस होते हैं। रंगों और डिजाइनों का यह मूलभूत अंतर ही इन दोनों विश्व प्रसिद्ध छपाई केंद्रों की अपनी अलग पहचान सुनिश्चित करता है।

74. (4) बगरू प्रिंट
बगरू की छपाई अपनी पारंपरिक 'स्याही-बेगर' तकनीक के लिए प्रसिद्ध है। इस विधि में फिटकरी और लोहे के बुरादे के साथ गुड़ का उपयोग करके प्राकृतिक काले और लाल रंग तैयार किए जाते हैं। 'स्याही' काले रंग को और 'बेगर' लाल रंग को संदर्भित करता है। यह तकनीक रसायनों के स्थान पर पूरी तरह से वानस्पतिक और खनिज पदार्थों पर निर्भर है, जो वस्त्रों को एक विशिष्ट मटमैली और गहरी आभा प्रदान करती है। बगरू के कारीगर सदियों से इस पद्धति का उपयोग करके पर्यावरण अनुकूल और टिकाऊ छपाई कार्य कर रहे हैं।

से चित्रित फड़, वाद्य संगीत और कथात्मक नृत्य-गायन को एकीकृत करती है, तो उनके अध्ययन का प्राथमिक केंद्र निम्नलिखित में से कौन सी परंपरा होनी चाहिए?
(1) भोपाओं द्वारा फड़ वाचन
(2) तेरह ताली मंदिर अनुष्ठान
(3) भवाई शारीरिक कौतुक प्रदर्शन
(4) गैर जनजातीय वृत्ताकार नृत्य
(5) अनुत्तरित प्रश्न

9. पारंपरिक राजस्थानी नृत्य 'घूमर' का नाम 'घूमना' शब्द से बना है, जो विशेष रूप से प्रदर्शन के किस तत्व को संदर्भित करता है?
(1) पारंपरिक पुरुष ढोल वादकों की वृत्ताकार व्यवस्था
(2) भारी पीतल या मिट्टी के पात्रों का लयबद्ध घूमना
(3) महिलाओं के लहराते घाघरे की घूर्णन गति (चक्कर)
(4) मूल जनजातियों के मौसमी प्रवास का स्वरूप
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. घूमर के प्रकारों और उनके संबंधित कलाकारों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: घूमर के प्रकार
A. मानक घूमर
B. लूर
C. झूमरिया
D. वालर (घूमर शैली)
सूची II: संबंधित समुदाय/कलाकार
i. युवा अविवाहित कन्याएं
ii. गरासिया जनजाति
iii. राजपूत महिलाएं
iv. गरासिया के पुरुष और महिलाएं
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(4) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. घूमर नृत्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मूल रूप से भील समुदाय द्वारा किया जाता था।
II. कालांतर में इसे राजपूत महिलाओं द्वारा अंतःपुर (जनाना) नृत्य के रूप में अपनाया गया।
III. यह अनिवार्य रूप से बिना किसी वाद्य यंत्र के किया जाता है।
IV. यह प्रमुख रूप से तीज और गणगौर के पर्वों के दौरान किया जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, II और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. गणगौर उत्सव के अवसर पर घूमर नृत्य के प्रदर्शन के दौरान मुख्य रूप से किस हिंदू देवी की पूजा की जाती है?
(1) देवी दुर्गा
(2) देवी गौरी (पार्वती)
(3) देवी लक्ष्मी
(4) देवी सरस्वती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. उस बेमेल वाद्य यंत्र की पहचान करें, जो सामान्यतः घूमर नृत्य के साथ होने वाले पारंपरिक संगीत समूह का हिस्सा नहीं है।
(1) ढोल
(2) नगाड़ा
(3) रावणहत्था
(4) शहनाई
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. घूमर नृत्य के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन स्वतः ही गलत सिद्ध होता है?
(1) नृत्य में सुंदर संचालन और चक्कर शामिल हैं।
(2) नृत्य की गति धीरे-धीरे चरमोत्कर्ष की ओर बढ़ती है।
(3) पारंपरिक प्रदर्शन के दौरान महिलाएं अपने मुख को घूंघट से ढकती हैं।
(4) यह विशेष रूप से पुरुष प्रधान शारीरिक कौतुक वाला नृत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. राजसी राजस्थानी संस्कृति के प्रतिनिधि प्रतीक के रूप में घूमर का व्यापक उत्थान किस ऐतिहासिक घटना का प्रत्यक्ष प्रभाव था?
(1) महलों में राजपूत राजघरानों द्वारा इसका परिष्करण।
(2) उच्च पदस्थ ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा इसका प्रचार।
(3) जनजातीय चरणों में पश्चिमी बैले का समावेशन।
(4) राजपूत सेनाओं द्वारा युद्ध नृत्य के रूप में इसका प्रयोग।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): घूमर की विशेषता आक्रामक शारीरिक उछाल के स्थान पर नपे-तुले, गरिमामय और समन्वित संचालन हैं।
कारण (R): ऐतिहासिक रूप से इस नृत्य को पर्दा प्रथा की अत्यंत प्रतिबंधित स्थानिक और सामाजिक सीमाओं के भीतर महिलाओं द्वारा किए जाने हेतु अनुकूलित किया गया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

जाल होता है। 'मोठड़ा' में लहरिया की रेखाएं एक-दूसरे को काटकर छोटे वर्गाकार खाने बनाती हैं। 'पोमचा' एक विशिष्ट पीला या गुलाबी वस्त्र है जो प्रसूति के समय माँ द्वारा पहना जाता है। 'धनक' में बिंदुओं को व्यवस्थित रूप से बांधकर बड़े वर्गाकार या हीरक स्वरूप निर्मित किए जाते हैं। ये सभी वस्त्र राजस्थान के सामाजिक रीति-रिवाजों और उत्सवों के अभिन्न अंग हैं।

85. (3) संतान के जन्म के अवसर पर
राजस्थान की संस्कृति में 'पोमचा' एक अत्यंत शुभ और पारंपरिक ओढ़नी है, जिसे स्त्रियाँ विशेष रूप से संतान के जन्म के पश्चात धारण करती हैं। यह जच्चा (नवजात की माँ) के लिए एक अनिवार्य वस्त्र माना जाता है। पोमचा पहनना न केवल मातृत्व का उत्सव है, बल्कि यह परिवार की खुशहाली और वंश वृद्धि का भी प्रतीक है। इसके रंग और डिजाइन के माध्यम से समाज में यह संदेश भी पहुँचता है कि परिवार में पुत्र या पुत्री का आगमन हुआ है। यह परंपरा राजस्थान के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में आज भी निभाई जाती है।

86. (4) लाल किनारे वाली पीली ओढ़नी, जो पारंपरिक रूप से पुत्र जन्म पर भेंट की जाती है।
'पीला पोमचा' राजस्थान में पुत्र जन्म के उल्लास का प्रतीक है। यह पीले रंग की एक भव्य ओढ़नी होती है जिसके चारों ओर गहरे लाल या केसरिया रंग के किनारे और केंद्र में बड़ा कमल का रुपांकन होता है। इसे पारंपरिक रूप से जच्चा के मायके पक्ष द्वारा उपहार स्वरूप भेजा जाता है। पीला रंग ज्ञान और पवित्रता का सूचक माना जाता है, जो नवजात पुत्र के सुखद भविष्य की कामना को दर्शाता है। वहीं, यदि पुत्री का जन्म होता है, तो गुलाबी रंग के पोमचा का उपयोग करने की परंपरा प्रचलित है।

87. (3) पारंपरिक बंधनी में प्रयुक्त रंग प्रायः धूमिल और एकरंगी होते हैं।
बंधनी शिल्प के संबंध में यह कहना कि इसके रंग धूमिल और एकरंगी होते हैं, पूर्णतः गलत है। वास्तव में, राजस्थानी बंधनी अपने चटकीले और विविध रंगों जैसे कि लाल, पीला, हरा और गहरा नीला के लिए विश्व विख्यात है। इन रंगों का जीवंत मेल मरुस्थलीय परिवेश में एक अद्भुत दृश्य आनंद प्रदान करता है। बंधनी की गुणवत्ता उसके बांधे गए बिंदुओं की सूक्ष्मता पर निर्भर करती है; जितने बारीक और घने बिंदु होंगे, कारीगरी उतनी ही श्रेष्ठ मानी जाती है। जयपुर और जोधपुर इस जीवंत कला के प्रमुख वैश्विक केंद्र हैं।

88. (2) I, III, II, IV, V
बंधनी निर्माण की प्रक्रिया एक निश्चित वैज्ञानिक क्रम का पालन करती है। सर्वप्रथम, कच्चे वस्त्र को धोकर साफ और विरंजित किया जाता है। इसके पश्चात, कुशल कारीगर वस्त्र पर गेरु या नील की सहायता से अभीष्ट डिजाइन अंकित करते हैं। फिर, अंकित बिंदुओं को बहुत ही बारीकी से सूती धागे से बांधा जाता है। इसके बाद वस्त्र को रंग के कुंड में डाला जाता है। अंत में, रंग सूखने पर गांठों को खोला जाता है, जिससे बांधे गए स्थानों पर बिना रंग के सुंदर स्वरुप प्रकट होते हैं।

89. (2) I, II, III, और IV
लहरिया राजस्थान की पारंपरिक वस्त्र कला है, जिसमें तिरछी तरंगदार धारियाँ (I) प्रमुख विशेषता हैं। इसे टाई-एंड-डाई (अवरोधक-रंगाई) तकनीक (II) से बनाया जाता है। यह विशेष रुप से श्रावण मास में महिलाओं द्वारा पहना जाता है (III), जो मानसून और उत्सव से जुड़ा है। 'समुद्र लहर' इसका लोकप्रिय पैटर्न (IV) है। जबकि यह कला जयपुर सहित कई क्षेत्रों में प्रचलित है, इसलिए कथन V गलत है।

90. (3) तरंग सदृश
'लहरिया' शब्द की उत्पत्ति 'लहर' शब्द से हुई है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'तरंग' होता है। इस वस्त्र का नामकरण इसकी बनावट के आधार पर किया गया है, क्योंकि इसमें रंगों की धारियां बहते हुए जल की लहरों या रेगिस्तान के रेत के टीलों पर हवा से बनने वाली तरंगों के समान दिखाई देती हैं। यह नाम इस शिल्प की सौंदर्यात्मक आत्मा को पूर्णतः व्यक्त करता है। लहरिया की यह 'तरंग सदृश' बनावट देखने वाले को शीतलता और गतिशीलता का अनुभव कराती है, जो इसे विशेष रूप से मानसून ऋतु के लिए उपयुक्त बनाती है।

91. (2) III, II, I
अवरोधक-रंगाई के इन रुपों में रेखाओं की जटिलता का एक निश्चित स्तर है। 'एकडाली' सबसे सरल रूप है जिसमें केवल स्वतंत्र बिंदुओं को बांधा जाता है। 'लहरिया' में वस्त्र को एक दिशा में मोड़कर समांतर तिरछी रेखाएं बनाई जाती हैं, जो मध्यम जटिलता का कार्य है। 'मोठड़ा' इन सबमें सबसे जटिल है क्योंकि इसमें पहले एक दिशा में लहरिया बनाया जाता है और फिर उसे दूसरी दिशा से काटकर वर्गाकार खाने निर्मित किए जाते हैं। अतः सूक्ष्मता और मेहनत के आधार पर बिंदुओं से रेखाओं और फिर कटान वाली रेखाओं का क्रम सही है।

92. (1) तीज
राजस्थान में 'तीज' का उत्सव लहरिया के बिना अधूरा माना जाता है। श्रावण मास में आने वाले इस त्योहार पर स्त्रियाँ विशेष रूप से पचरंगी या अन्य चटकीले रंगों वाले लहरिया वस्त्र धारण करती हैं। यह उत्सव मानसून के आगमन और चारों ओर फैली हरियाली का जश्न है, जहाँ लहरिया की तरंगदार धारियां खुशी और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती हैं। जयपुर की 'तीज माता' की सवारी के दौरान शहर की गलियाँ लहरिया के रंगों से सराबोर हो जाती हैं। यह राजस्थान की एक गहरी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा है।

93. (4) पचरंगी लहरिया
जब एक ही लहरिया वस्त्र में पांच अलग-अलग रंगों की तिरछी धारियों का सुंदर संयोजन किया जाता है, तो उसे 'पचरंगी लहरिया' कहा जाता है। यह अत्यंत शुभ माना जाता है और अक्सर महत्वपूर्ण धार्मिक और मांगलिक अवसरों पर पहना जाता है। इन पांच रंगों में प्रायः लाल, पीला, हरा, नीला और केसरिया का उपयोग होता है, जो पंचतत्वों या जीवन की विविधताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। पचरंगी लहरिया न केवल देखने में अत्यंत आकर्षक होता है, बल्कि यह राजस्थानी

कारीगरों की रंगाई की अद्भुत कुशलता और रंगों के सामंजस्य को भी प्रदर्शित करता है।

94. (2) मोठड़ा में एक-दूसरे को काटती हुई तिरछी रेखाएं होती हैं, जबकि लहरिया में परस्पर न काटने वाली रेखाएं होती हैं।
तकनीकी रूप से, मोठड़ा और लहरिया दोनों ही बंधेज की प्रक्रिया का हिस्सा हैं, किंतु उनके रेखा विन्यास में बड़ा अंतर है। लहरिया में धारियां एक ही दिशा में तिरछी चलती हैं और एक-दूसरे को कभी नहीं काटतीं। इसके विपरीत, मोठड़ा बनाने के लिए वस्त्र को दो विपरीत दिशाओं से मोड़कर रंगा जाता है, जिससे धारियां एक-दूसरे को आड़ी-तिरछी काटकर छोटे वर्गाकार या हीरक जैसे आकार बनाती हैं। यह प्रभाव ही मोठड़ा को लहरिया की तुलना में अधिक घना और विशिष्ट दृश्य प्रभाव प्रदान करता है।

95. (3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान की वस्त्र परंपराओं की अपनी अनूठी पहचान है। बंधनी मुख्य रूप से धागों से बांधकर बनाए गए सूक्ष्म बिंदुओं के लिए जानी जाती है। लहरिया में तिरछी और लहरदार धारियों का उपयोग होता है जो तरंगों का अहसास कराती हैं। दाबू एक अवरोधक तकनीक है जिसमें मिट्टी के लेप का उपयोग करके विशिष्ट डिजाइनों को रंगों से बचाया जाता है। बगरू प्रिंट अपनी गहरी पृष्ठभूमि और प्राकृतिक रंजकों के लिए प्रसिद्ध है। ये सभी कलाएँ मिलकर राजस्थान के वस्त्र उद्योग को विविधता, सूक्ष्मता और एक समृद्ध सांस्कृतिक पहचान प्रदान करती हैं।

96. (4) राजस्थान में पुरुष कभी भी लहरिया स्वरूप धारण नहीं करते हैं; यह केवल स्त्रियों की वेशभूषा है।
यह धारणा पूर्णतः गलत है कि लहरिया केवल स्त्रियों के लिए है। राजस्थान की संस्कृति में पुरुषों के लिए भी लहरिया का अत्यधिक महत्व है। विशेष रूप से सावन के महीने और मांगलिक उत्सवों पर पुरुष लहरिया की पगड़ी (साफा) बहुत गर्व के साथ धारण करते हैं। लहरिया साफे पुरुषों की वेशभूषा में राजसी ठाठ और उत्सव के उल्लास को जोड़ते हैं। जयपुर के महाराजाओं से लेकर आम नागरिक तक, लहरिया साफा पहनना एक प्रतिष्ठित सांस्कृतिक परंपरा रही है। अतः लहरिया स्त्री और पुरुष दोनों के पहनावे का महत्वपूर्ण अंग है।

97. (1) जयपुर
राजस्थान में हाथीदांत की नक्काशी और जड़ाई का कार्य जयपुर रियासत के शासकों के संरक्षण में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा। जयपुर के महाराजाओं ने इस कला को बढ़ावा देने के लिए कुशल कारीगरों को संरक्षण दिया और उन्हें विशेष बाजार उपलब्ध कराए। जयपुर के कारीगर हाथीदांत पर इतनी सूक्ष्म नक्काशी करने में माहिर थे कि वे छोटे से स्थान पर भी जटिल कथाएं और पुष्प रूपांकन उकेर देते थे। यद्यपि अब हाथीदांत पर प्रतिबंध है, किंतु जयपुर की यह कला परंपरा आज भी ऊंट की हड्डियों और चंदन की लकड़ी पर नक्काशी के रूप में जीवित है।

98. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
राजस्थान के हस्तशिल्प और उनके प्रमुख केंद्र एक-दूसरे के पूरक हैं। थेवा कला अनन्य रूप से प्रतापगढ़ की पहचान है, जहाँ कांच पर सोने की नक्काशी की जाती है। नीली मृदभांड कला (ब्लू पॉटरी) जयपुर का विश्व प्रसिद्ध गौरव है। गोटा पत्ती और ज़री का बारीक कार्य सीकर जिले के खंडेला कस्बे में अपनी श्रेष्ठता के लिए जाना जाता है। लाख के खूबसूरत खिलौने और वस्तुएं सवाई माधोपुर में अत्यंत कुशलता के साथ तैयार की जाती हैं। यह क्षेत्रीय विशेषज्ञता ही राजस्थान को हस्तशिल्प का एक अद्भुत खजाना बनाती है।

99. (2) I, II, III, और V
लाख का शिल्प राजस्थान की एक जीवंत परंपरा है। यह लाख के कीटों से प्राप्त प्राकृतिक राल है, जिसे ऊष्मा देकर पिघलाया जाता है और चूड़ियों व खिलौनों का आकार दिया जाता है। जयपुर और जोधपुर लाख के आभूषणों के सबसे बड़े केंद्र हैं, जहाँ 'मनिहार' समुदाय इस कार्य को निपुणता से करता है। सवाई माधोपुर लाख के लकड़ी के खिलौनों के लिए प्रसिद्ध है। यह कहना गलत है कि इसमें पाषाण या कांच का उपयोग नहीं होता; वास्तव में, लाख की चूड़ियों को अक्सर नगों, कांच और मोतियों से बहुत ही खूबसूरती से सजाया जाता है।

100. (1) जोधपुर
जोधपुर ऐतिहासिक रूप से हाथीदांत की बनी कलात्मक चूड़ियों के लिए प्रसिद्ध रहा है। ये चूड़ियां न केवल अपनी सफेदी और चमक के लिए जानी जाती थीं, बल्कि इनका सांस्कृतिक महत्व भी अत्यधिक था। विशेष रूप से राजपूत समुदाय की वधुओं के लिए विवाह के अवसर पर हाथीदांत की चूड़ियां पहनना एक अनिवार्य और गौरवशाली परंपरा मानी जाती थी। जोधपुर के कारीगर इन चूड़ियों पर सोने की पत्ती का काम और सूक्ष्म नक्काशी करने में अद्वितीय कौशल रखते थे। वर्तमान में, हाथीदांत के विकल्प के रूप में प्लास्टिक और हड्डियों से बनी चूड़ियां वहाँ बनाई जाती हैं।

101. (3) इसने हाथी दांत के व्यापार पर प्रतिबंध लगा दिया, जिससे ऊंट की अस्थि और काष्ठ शिल्प की ओर झुकाव बढ़ा।
1972 के वन्यजीव संरक्षण अधिनियम ने हाथीदांत के व्यापार और नक्काशी पर पूर्ण प्रतिबंध लगा दिया, जिसका राजस्थान के हाथीदांत उद्योग पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस कानून के कारण सदियों पुरानी यह कला संकट में आ गई। हालाँकि, राजस्थान के कुशल कारीगरों ने हार नहीं मानी और अपनी नक्काशी की तकनीक को ऊंट की हड्डी और सुगंधित चंदन की लकड़ी पर स्थानांतरित कर दिया। आज, ऊंट की हड्डी पर की जाने वाली नक्काशी हाथीदांत के समान ही लोकप्रिय है, जिसने कारीगरों की जीविका और कला दोनों को सुरक्षित रखा है।

102. (4) गोटा पत्ती (ज़री कार्य)
सीकर जिले का खंडेला कस्बा 'गोटा पत्ती' के काम के लिए पूरे देश में प्रसिद्ध है। यहाँ के कारीगर रेशमी और सूती वस्त्रों पर तांबे, चांदी या सोने के तारों से बने गोटे को काटकर फूलों, पत्तियों और लताओं की सुंदर आकृतियां टाँकने में माहिर हैं। गोटा पत्ती का यह काम विशेष रूप से ओढ़नियों, लहंगों और साड़ियों की सुंदरता को कई गुना बढ़ा देता है। खंडेला में निर्मित गोटा अपनी चमक और टिकाऊपन के लिए जाना जाता है। यह

शिल्प न केवल इस क्षेत्र की आर्थिक रीढ़ है, बल्कि राजस्थान की पारंपरिक वेशभूषा का एक अनिवार्य हिस्सा भी है।

103. (3) केवल I और III

लाख का शिल्प ऊष्मा पर आधारित है; इसे नरम करने और चूड़ियों का आकार देने के लिए अग्नि की गर्मी का उपयोग अनिवार्य है। जयपुर का त्रिपोलिया बाजार सदियों से इस शिल्प का सबसे जीवंत केंद्र रहा है, जहाँ मनिहारों की अनगिनत दुकानें हैं। जहाँ तक कार्य विभाजन का प्रश्न है, लाख का कार्य मनिहार समुदाय के पुरुष और महिला सदस्य मिलकर करते हैं। अक्सर महिलाएं चूड़ियों पर नग जड़ने और सजावट का बारीक काम बहुत कुशलता से करती हैं। अतः विपणन और निर्माण में दोनों की सक्रिय भागीदारी होती है, न कि केवल पुरुषों की।

104. (1) स्वरूप निर्मित करने हेतु काष्ठ में पीतल, तांबे या रजत के सूक्ष्म तारों को जड़ना।

'तारकशी' राजस्थान की एक अत्यंत सूक्ष्म और परिष्कृत धातु जड़ाई कला है। इसमें शीशम या आबनूस जैसी कठोर लकड़ी की सतह पर बारीक खांचे बनाए जाते हैं और फिर उनमें पीतल, तांबे या चांदी के बहुत पतले तारों को हथौड़े से सावधानीपूर्वक जड़ा जाता है। इसके बाद लकड़ी को रेगमाल से घिसा जाता है, जिससे लकड़ी की काली आभा के ऊपर धातु की चमक वाले सुंदर ज्यामितीय और पुष्प पैटर्न उभर आते हैं। यह कला विशेष रूप से जयपुर में विकसित हुई है और लकड़ी की वस्तुओं को राजसी स्वरूप प्रदान करती है।

105. (4) प्रतापगढ़ का राज सोनी परिवार

'थेवा कला' प्रतापगढ़ के 'राज सोनी' परिवार की एक अनूठी और गौरवशाली विरासत है। इस कला का आविष्कार लगभग 400 वर्ष पूर्व इसी परिवार के पूर्वजों द्वारा किया गया था। इस शिल्प में रंगीन बेल्जियम कांच के ऊपर 23-कैरेट सोने की अत्यंत सूक्ष्म और बारीक नक्काशी की जाती है। राज सोनी परिवार ने इस कला की बारीकियों को एक पवित्र रहस्य के रूप में सहेज कर रखा है। उनके इस अद्वितीय कौशल के कारण थेवा कला को वैश्विक स्तर पर सराहा गया है और इस परिवार के कई सदस्यों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

106. (2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii

थेवा कला की संरचना अत्यंत विशिष्ट है। इसके आधार के रूप में विशेष रूप से बेल्जियम से मंगवाए गए रंगीन कांच का उपयोग किया जाता है। नक्काशी के लिए शुद्ध 23-कैरेट स्वर्ण पत्र का प्रयोग होता है। इस अद्भुत कला का प्रवर्तक श्री नाथूजी सोनी को माना जाता है जिन्होंने इसे प्रतापगढ़ में स्थापित किया। इसकी विशिष्टता और क्षेत्रीय महत्ता को देखते हुए भारत सरकार ने इसे भौगोलिक संकेतक (जीआई) का दर्जा प्रदान किया है। ये तत्व सामूहिक रूप से थेवा कला की शुद्धता, इतिहास और विधिक पहचान को मजबूती प्रदान करते हैं।

107. (3) केवल I और II

थेवा कला अपनी गोपनीयता के लिए जानी जाती है; राज सोनी परिवार की यह परंपरा रही है कि इस कला की सूक्ष्म तकनीकें केवल परिवार के पुरुष सदस्यों को ही सिखाई जाती हैं ताकि यह रहस्य परिवार के भीतर बना रहे। ऐतिहासिक रूप से, इसे प्रतापगढ़ के महारावत सामंत सिंह ने विशेष संरक्षण प्रदान किया, जिससे यह शिल्प फला-फूला। यह कहना गलत है कि यह मुगल काल में फारस से आई थी; वास्तव में, यह पूर्णतः स्वदेशी कला है जिसका जन्म और विकास प्रतापगढ़ की धरती पर ही हुआ है। यह राजस्थान के कलात्मक नवाचार का श्रेष्ठ प्रमाण है।

108. (1) पन्ना हरा

थेवा कला में यद्यपि लाल, नीले और पीले जैसे विभिन्न रंगों के कांच का उपयोग किया जाता है, किंतु 'पन्ना हरा' रंग इसकी सबसे पारंपरिक और प्रतिष्ठित पहचान है। हरे रंग के कांच पर सोने की पीली चमक एक अत्यंत सुंदर और राजसी विरोधाभास पैदा करती है, जो पन्ने के आभूषणों जैसा आभास देती है। यह रंग संयोजन थेवा की पहचान का पर्याय बन चुका है और आज भी अधिकांश क्लासिक थेवा आभूषणों में इसी पृष्ठभूमि का उपयोग किया जाता है। हरा रंग सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक भी माना जाता है।

109. (3) सोनी परिवार की पुत्रियों और पुत्रवधुओं को इस शिल्प को जीवित रखने हेतु कड़ाई से यह कला सिखाई जाती है।

थेवा कला के संदर्भ में यह कथन पूर्णतः गलत है कि यह महिलाओं को सिखाई जाती है। वास्तव में, इस कला की गोपनीयता बनाए रखने के लिए यह कड़ा नियम रहा है कि इसे परिवार की बहुओं या बेटियों को नहीं सिखाया जाता। यह ज्ञान केवल पितातुल्य गुरु द्वारा अपने पुत्रों को ही दिया जाता है। स्वर्ण पत्र पर पौराणिक और प्राकृतिक दृश्यों का सूक्ष्म अंकन और बिना किसी टांके के कांच पर जड़ना इसकी तकनीकी श्रेष्ठता है। 2014 में इसके सम्मान में डाक टिकट जारी होना इसकी सांस्कृतिक महत्ता को दर्शाता है।

110. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

थेवा कला आज भी प्रतापगढ़ के बाहर किसी अन्य स्थान पर विकसित नहीं हो सकी है, इसका मुख्य कारण इसकी अत्यधिक गोपनीयता है। राज सोनी परिवार ने इस शिल्प की बारीकियों और तकनीकों को एक पारिवारिक गुप्त रहस्य के रूप में संजोया है, जिसे केवल पुरुष उत्तराधिकारियों को ही हस्तांतरित किया जाता है। अन्य शिल्पों के विपरीत, थेवा कला के कोई बाहरी प्रशिक्षण केंद्र या विद्यालय नहीं हैं। यह कड़ा नियंत्रण ही इस कला को प्रतापगढ़ तक सीमित रखने और उसकी विशिष्टता को अक्षुण्ण बनाए रखने का प्रमुख कारण है।

111. (4) थरणा (हथौड़े से ठोकना) और वाडा (रजत तंतु का घेरा)।

'थेवा' शब्द स्थानीय बोलचाल के दो क्रियात्मक शब्दों 'थरणा' और 'वाडा' के मेल से बना है। 'थरणा' का अर्थ है सोने के पत्र को हथौड़े से ठोककर अत्यंत पतला और समतल बनाना, जो नक्काशी हेतु आधार तैयार करता है। 'वाडा' उस चांदी के महीन तार या घेरे को संदर्भित करता है जिसका उपयोग कांच और सोने के काम को चारों ओर से सुदृढ़ता से बांधने और फ्रेम करने के लिए किया जाता है। ये दो प्रक्रियाएं ही इस पूरे शिल्प की तकनीकी रीढ़ हैं, इसीलिए इस अद्भुत कला को 'थेवा' के नाम से पुकारा जाता है।

75. (3) ठप्पा छपाई कार्य में संलग्न कारीगरों का पारंपरिक समुदाय।
राजस्थान में 'छीपा' शब्द उस विशिष्ट समुदाय के लिए प्रयुक्त होता है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी हाथ से ठप्पा छपाई (ब्लॉक प्रिंटिंग) के कार्य में संलग्न रहा है। ये कारीगर लकड़ी के ठप्पों पर बारीक नक्काशी करके उनसे वस्त्रों पर सुंदर डिजाइन उकेरने में माहिर होते हैं। सांगानेर, बगरू और अकोला जैसे प्रसिद्ध केंद्रों में छीपा समुदाय के लोगों ने ही इस प्राचीन कला को जीवित रखा है। उनकी विशेषज्ञता केवल छपाई तक सीमित नहीं है, बल्कि वे प्राकृतिक रंगों के निर्माण और वस्त्र की रंगाई की जटिल प्रक्रियाओं के भी जानकार होते हैं।

76. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।
बगरू छपाई पूर्णतः प्राकृतिक और पारिस्थितिक रूप से सुरक्षित प्रक्रिया है क्योंकि इसमें रसायनों का उपयोग नहीं होता। इस शिल्प में 'हरड़' का उपयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है। वस्त्र को रंगने से पूर्व हरड़ के घोल में डुबोया जाता है, जो वस्त्र को हल्का पीला आधार प्रदान करता है और अन्य वानस्पतिक रंगों के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया कर उनके स्थायित्व को सुनिश्चित करता है। इस प्रकार, हरड़ एक प्राकृतिक बंधक के रूप में कार्य करता है। यह पारंपरिक ज्ञान बगरू छपाई की स्थिरता और उसकी विशिष्ट रंगत का मुख्य आधार है।

77. (4) अजरक प्रिंट
बाड़मेर का 'अजरक प्रिंट' अपनी विशिष्टता के कारण पूरे विश्व में प्रसिद्ध है। इस छपाई की सबसे बड़ी खूबी यह है कि इसमें वस्त्र के दोनों ओर मुद्रण किया जाता है, जो अत्यंत कठिन कार्य है। अजरक में मुख्य रूप से गहरे नीले और सिंदूरी लाल रंगों का उपयोग होता है, जिनमें जटिल ज्यामितीय स्वरूपों की प्रधानता होती है। यह कला सिंधी संस्कृति से गहराई से जुड़ी हुई है और इसमें प्रयुक्त नील और अन्य प्राकृतिक रंजक इसे एक अनूठी पहचान प्रदान करते हैं। यह शिल्प कौशल और धैर्य का उत्कृष्ट उदाहरण है।

78. (2) मृदा-अवरोधक प्रक्रिया जिसमें लेप का उपयोग कर विशिष्ट क्षेत्रों में रंग के प्रवेश को रोका जाता है।
'दाबू' राजस्थान की एक प्राचीन और अनूठी अवरोधक छपाई तकनीक है, जिसका मुख्य केंद्र चित्तौड़गढ़ का अकोला गाँव है। इस प्रक्रिया में काली मिट्टी, गोंद और चूने के लेप को उन स्थानों पर लगाया जाता है जहाँ रंग नहीं चढ़ाना होता। जब वस्त्र को रंग के कुंड में डुबोया जाता है, तो लेप वाले हिस्से सुरक्षित रहते हैं और रंग के सूखने के पश्चात धो दिए जाते हैं। इससे वस्त्र पर सुंदर और सुस्पष्ट सफेद या हल्के रंग के स्वरूप उभर आते हैं। यह विधि हस्तशिल्प की सरलता और वैज्ञानिक सूझबूझ का मिश्रण है।

79. (3) बाड़मेर
'मलीर' प्रिंट राजस्थान के बाड़मेर जिले की एक अत्यंत प्राचीन और विशिष्ट छपाई शैली है। यह प्रिंट अपनी गहरी पृष्ठभूमि, विशेष रूप से कत्थई-काले और लाल रंगों के संयोजन के लिए जाना जाता है। अजरक के समान ही इसमें भी ज्यामितीय पैटर्न का उपयोग होता है, किंतु इसके रंगों की आभा अधिक मटमैली और गहरी होती है। बाड़मेर की विषम जलवायु के अनुकूल इसके रंग अत्यंत पक्के होते हैं। मलीर प्रिंट पारंपरिक रूप से स्थानीय समुदायों द्वारा पहने जाने वाले वस्त्रों का अभिन्न अंग रहा है और आज भी मजबूती के लिए लोकप्रिय है।

80. (4) I, II, III, और IV
सांगानेरी ठप्पा छपाई अपनी सूक्ष्मता और लालित्य के लिए विश्व विख्यात है। इसमें 'कैलिको' छपाई की तकनीक का उपयोग होता है, जहाँ रंगीन डिजाइनों को सफेद या मटमैले आधार वाले वस्त्रों पर उकेरा जाता है। बेल-बूटों और फूलों के रूपांकन इसकी प्रधान विशेषता हैं। सांगानेरी प्रिंट की गुणवत्ता और ऐतिहासिक महत्व को देखते हुए इसे भारत सरकार द्वारा भौगोलिक संकेतक (जीआई) का दर्जा भी प्रदान किया गया है। ये सभी तत्व सामूहिक रूप से सांगानेर की इस हस्तशिल्प परंपरा की शुद्धता और वैश्विक प्रतिष्ठा को रेखांकित करते हैं।

81. (1) रंगरेज और छीपा
राजस्थान में 'टाई एंड डाई' या बंधेज की कला सदियों से 'रंगरेज' और 'छीपा' समुदायों द्वारा संरक्षित और विकसित की गई है। रंगरेज समुदाय मुख्य रूप से वस्त्रों को बांधने और विभिन्न रंगों में रंगने की कला में निपुण होता है, जबकि छीपा समुदाय छपाई और डिजाइन अंकन का कार्य करता है। इन कारीगरों के पास रंगों के मिश्रण और बांधने की तकनीकों का वह पारंपरिक ज्ञान है जो चित्रों और वस्त्रों पर सूक्ष्म बिंदुओं और लहरिया जैसी जटिल आकृतियाँ उकेरने में सहायक होता है। उनकी मेहनत ने बंधेज को राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान बना दिया है।

82. (2) एक स्वरूप जिसमें वस्त्र पर एक ही बिंदु को बार-बार दोहराया जाता है।
बंधनी शिल्प में 'एकडाली' एक अत्यंत सूक्ष्म और धैर्यपूर्ण कार्य है। इसमें वस्त्र के एक छोटे से हिस्से को धागे से बांधकर एक अकेला बिंदु बनाया जाता है, और इसी प्रक्रिया को पूरे वस्त्र पर एक निश्चित अंतराल के साथ बार-बार दोहराया जाता है। यह सरल होते हुए भी अपनी निरंतरता और सूक्ष्मता के कारण बहुत ही आकर्षक लगता है। एकडाली का उपयोग अक्सर चुनरी और दुपट्टों में एक शांत दृश्य प्रभाव उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। यह बंधनी के प्रारंभिक और सबसे मौलिक डिजाइनों में से एक माना जाता है।

83. (3) कोटा
'शिकारी' बंधनी एक विशेष प्रकार की बंधनी कला है जो मुख्य रूप से कोटा क्षेत्र में प्रचलित है। इसमें केवल साधारण बिंदुओं के स्थान पर, बांधने की तकनीक का उपयोग करके शिकार के दृश्यों, जैसे कि आखेट करते हुए पुरुष, हाथी, घोड़े और विभिन्न जंगली पशुओं की आकृतियों को वस्त्र पर उकेरा जाता है। इस शैली में रंगों का चयन और आकृतियों की सूक्ष्मता इसे सामान्य बंधनी से बहुत अधिक जटिल और कलात्मक बनाती है। कोटा की यह विशेषता वहाँ के शासकों के शिकार के प्रति प्रेम और स्थानीय कलात्मक नवाचार का प्रतिबिंब है।

84. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान में बंधनी वस्त्रों के नाम उनके डिजाइनों और उपयोग के आधार पर रखे गए हैं। 'चुनरी' में बिखरी हुई बिंदियों का सुंदर

अध्याय 13
प्रदर्शन कलाएँ : लोक नृत्य, नाटक एवं संगीत

1. राजस्थान में किस समुदाय को ऐतिहासिक रूप से वंशावली विवरण रखने और संरक्षण के माध्यम से प्रदर्शन कलाओं की मौखिक परंपराओं को आगे बढ़ाने के लिए पहचाना जाता है?
(1) कालबेलिया और भील
(2) चारण और भाट
(3) गरासिया और सहरिया
(4) मीणा और कथोड़ी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

2. राजस्थान की लोक प्रदर्शन कलाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: स्वतंत्रता से पूर्व राजस्थान की लोक प्रदर्शन कलाओं को मुख्य रूप से देशी रियासतों और स्थानीय जागीरदारों द्वारा संरक्षण प्रदान किया जाता था।
कथन II: रियासतों के विलीनीकरण के परिणामस्वरूप इन पारंपरिक लोक विधाओं का तत्काल और पूर्ण ह्रास हो गया।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): राजस्थान में प्रदर्शन कलाएं बदलते मौसम, कृषि चक्र और स्थानीय त्योहारों के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं।
कारण (R): ऐतिहासिक रूप से राजस्थान मुख्य रूप से एक कृषि और पशुपालन आधारित समाज रहा है जहाँ जलवायु परिवर्तन सामुदायिक उत्सवों को निर्धारित करते हैं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

4. निम्नलिखित में से कौन सा मांगणियार समुदाय द्वारा उत्सवी लोक कलाओं के प्रदर्शन का पारंपरिक अवसर नहीं है?
(1) शिशु का जन्म और नामकरण संस्कार
(2) विवाह और मांगलिक उत्सव
(3) फसल कटाई और मौसमी पर्व
(4) मृत्यु और शोक अनुष्ठान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

5. राजस्थान के संदर्भ में शास्त्रीय प्रदर्शन कलाओं और लोक प्रदर्शन कलाओं के बीच मूलभूत अंतर मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस पहलू में निहित है?
(1) शास्त्रीय कलाएं कठोर नियमों का पालन करती हैं जबकि लोक कलाएं स्वतःस्फूर्त रूप से उभरती हैं।
(2) शास्त्रीय कलाएं राजदरबार की नृत्य विधाएं हैं जबकि लोक कलाएं जनमानस की हैं।
(3) संरचित शास्त्रीय कलाओं के विपरीत, लोक कलाओं में कठोर संहिताबद्धता का अभाव होता है।
(4) लोक कलाएं आधुनिक ध्वनियों को प्राथमिकता देती हैं जबकि शास्त्रीय कलाएं प्राचीन रागों का प्रयोग करती हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

6. राजस्थान में लोक नाट्यों की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे ऐतिहासिक रूप से ग्रामीण मनोरंजन के प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करते थे।
II. वे अक्सर सामाजिक संदेशों और समकालीन मुद्दों को समाहित करते थे।
III. वे अनिवार्य रूप से बंद और विशिष्ट आंतरिक रंगशालाओं में प्रदर्शित किए जाते थे।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

7. राजस्थान के सांस्कृतिक परिवेश में गहराई से समाहित लोक नाट्य का पारंपरिक 'ख्याल' रूप, मुख्य रूप से किस व्यापक ऐतिहासिक काल के दौरान अपने लोकप्रिय संरचित स्वरूप में विकसित हुआ?
(1) 12वीं शताब्दी
(2) 15वीं शताब्दी
(3) 20वीं शताब्दी
(4) 18वीं शताब्दी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

8. यदि कोई सांस्कृतिक शोधकर्ता एक ऐसी राजस्थानी लोक परंपरा का दस्तावेजीकरण करना चाहता है जो विशिष्ट रूप

25. चरी नृत्य, जो प्रज्वलित पात्रों को संतुलित करने के अद्भुत प्रदर्शन के लिए जाना जाता है, राजस्थान के किस विशिष्ट क्षेत्र का एक प्रमुख लोक नृत्य है?
(1) दक्षिणी मेवाड़ क्षेत्र
(2) पश्चिमी मारवाड़ क्षेत्र
(3) अजमेर-किशनगढ़ क्षेत्र
(4) उत्तरी शेखावाटी क्षेत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): चरी नृत्य महिलाओं द्वारा अपने सिर पर जलते हुए कपास के बीज (काकड़े) वाले पीतल के पात्रों (चरी) को संतुलित करके किया जाता है।
कारण (R): यह नृत्य हर्षोल्लास की एक अनुष्ठानिक अभिव्यक्ति है जो मुख्य रूप से गुर्जर समुदाय द्वारा पुत्र जन्म और विवाह समारोहों के उत्सव हेतु किया जाता है।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. चरी नृत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह मुख्य रूप से गुर्जर समुदाय की महिलाओं द्वारा किया जाता है।
II. यह नृत्य पेयजल संग्रहण हेतु लंबी दूरी तय करने वाली महिलाओं के पारंपरिक दैनिक कार्यों को दर्शाता है।
III. इसमें तलवारों के साथ आक्रामक युद्ध कला के संचालन सम्मिलित हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. राजस्थान के चरी नृत्य के संबंध में सही युग्म की पहचान करें।
(1) मुख्य कलाकार - भील समुदाय के पुरुष
(2) प्राथमिक वाद्य यंत्र - बांकिया
(3) केंद्रीय सहायक सामग्री - जल से भरे मृदा पात्र
(4) मुख्य अवसर - शोक अनुष्ठान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थान में चरी नृत्य की मुख्य विषयगत उत्पत्ति का सर्वश्रेष्ठ वर्णन करता है?
(1) राजपूत शासकों द्वारा प्रमुख सैन्य विजय का भव्य उत्सव।
(2) महाशिवरात्रि के दौरान भगवान शिव को अर्पित की जाने वाली भक्ति सेवा।
(3) मरुस्थल में जल संग्रहण से प्राप्त होने वाले आनंद की एक कलात्मक अभिव्यक्ति।
(4) एक कृषि नृत्य जो विशेष रूप से गेहूं की कटाई के समय किया जाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. एक नृत्य निर्देशक एक मंच प्रदर्शन तैयार कर रहा है जिसमें नर्तकों को सामग्री गिराए बिना या लपटों को बुझाए बिना अपने सिर पर प्रज्वलित पीतल के पात्रों के साथ धरातल पर सुचारु रूप से चलना है। निर्देशक को किस पारंपरिक राजस्थानी नृत्य प्रविधि का अध्ययन करना चाहिए?
(1) वालर
(2) गैर
(3) रम्मत
(4) चरी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. निम्नलिखित में से कौन किशनगढ़ के चरी नृत्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध नर्तकी और प्रतिपादक के रूप में व्यापक रूप से प्रशंसित है?
(1) फलकू बाई
(2) गुलाबो सपेरा
(3) मांगी बाई
(4) गवरी देवी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. राजस्थानी कलाओं और उनके प्रसिद्ध प्रतिपादकों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: नृत्य/कला
A. कालबेलिया
B. चरी
C. तेरह ताली
D. मांड (गायन)
सूची II: प्रसिद्ध प्रतिपादक
i. अल्लाह जिलाई बाई
ii. मांगी बाई
iii. गुलाबो सपेरा
iv. फलकू बाई
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. राजस्थान का भवाई नृत्य निम्नलिखित में से किस प्रदर्शन तत्व द्वारा सर्वाधिक विशिष्ट है?
(1) भक्ति भजनों का सामूहिक गायन
(2) अद्भुत शारीरिक कौतुक और संतुलन के करतब
(3) स्थानीय किंवदंतियों को दर्शाने वाले नाटकीय संवाद
(4) आक्रामक तलवारबाजी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. राजस्थान का विश्व प्रसिद्ध कालबेलिया नृत्य मुख्य रूप से पारंपरिक रूप से किस व्यवसाय से जुड़े समुदाय द्वारा किया जाता है?
(1) लौहशिल्प
(2) सर्प ग्रहण (सपेरा)
(3) भेड़ पालन
(4) कुंभकारी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. कालबेलिया नृत्य परंपरा की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. नर्तक चांदी की गोटा-पत्ती से सजे काले रंग के घाघरे पहनते हैं।
II. नृत्य में अत्यधिक लोचदार और सर्पिलाकार शारीरिक कौतुक वाले संचालन शामिल हैं।
III. पुंगी (बीन) इस प्रदर्शन का एक केंद्रीय वाद्य यंत्र है।
IV. नृत्य संचालन मुख्य रूप से पुरुषों द्वारा किया जाता है, जबकि महिलाएं वाद्य यंत्र बजाती हैं।
V. इसे 2010 में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में सम्मिलित किया गया था।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और V
(2) केवल IV
(3) केवल II और III
(4) केवल III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. कालबेलिया परंपरा के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: कालबेलिया गीत और संगीत परंपराएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी पूर्णतः मौखिक रूप से हस्तांतरित होती हैं।
कथन II: पारंपरिक कालबेलिया संगीत के लिए कोई लिखित पाठ, शास्त्र या औपचारिक प्रशिक्षण नियमावली उपलब्ध नहीं है।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. राजस्थानी नृत्य रूपों और उनकी प्रमुख पहचान विशेषताओं के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: नृत्य रूप
A. कालबेलिया
B. घूमर
C. भवाई
D. तेरह ताली
सूची II: मुख्य पहचान विशेषता
i. सिर पर अनेक पीतल के घड़ों का संतुलन बनाना
ii. काली वेशभूषा में सर्पिलाकार संचालन
iii. जीवंत घाघरे पहनकर चक्राकार गति करना
iv. शरीर से बंधे मंजीरों का लयबद्ध आघात
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कलाकार गुलाबो सपेरा को वैश्विक मंच पर किस पारंपरिक राजस्थानी नृत्य रूप को लोकप्रिय बनाने का श्रेय दिया जाता है?
(1) गैर
(2) चरी
(3) कालबेलिया
(4) कठपुतली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. भारत के निम्नलिखित अमूर्त सांस्कृतिक विरासत तत्वों को यूनेस्को की प्रतिनिधि सूची में उनके अंकित होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें (प्राचीनतम से नवीनतम):
A. रामलीला, रामायण का पारंपरिक प्रदर्शन
B. राजस्थान के कालबेलिया लोक गीत और नृत्य
C. कुंभ मेला
D. कोलकाता में दुर्गा पूजा
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन करें:
(1) A, B, C, D
(2) B, A, D, C
(3) A, C, B, D
(4) C, A, B, D
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. निम्नलिखित में से कौन सा वाद्य यंत्र सामान्यतः कालबेलिया नृत्य के संगीत समूह से संबंधित नहीं है?
(1) पुंगी (बीन)
(2) डफ
(3) मोरचंग
(4) कामायचा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. किस वर्ष यूनेस्को ने राजस्थान के कालबेलिया लोक गीतों और नृत्यों को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में सम्मिलित करके आधिकारिक मान्यता प्रदान की थी?
(1) 2005
(2) 2008
(3) 2010
(4) 2016
(5) अनुत्तरित प्रश्न

112. (1) महेश राज सोनी
महेश राज सोनी थेवा कला के क्षेत्र में एक अत्यंत प्रतिष्ठित और सम्मानित नाम हैं। उन्होंने अपनी पूर्वजों की इस कला को न केवल कुशलता से आगे बढ़ाया, बल्कि इसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी स्थापित किया। उनके असाधारण शिल्प कौशल और थेवा कला के संरक्षण में उनके योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री सम्मान से अलंकृत किया। उनके नेतृत्व में थेवा कला में नए डिजाइनों और आधुनिकता का समावेश हुआ। वे इस पारंपरिक कला के एक ऐसे जीवित स्तंभ हैं जिन्होंने अपनी प्रतिभा से राजस्थान का गौरव विश्व भर में बढ़ाया है।

113. (2) कायांतरित चट्टान
मकराना संगमरमर भूगर्भीय रूप से एक कायांतरित चट्टान है। यह मूल रूप से चूना पत्थर था, जो पृथ्वी के भीतर अत्यधिक ताप और दबाव के कारण लाखों वर्षों की प्रक्रिया के दौरान संगमरमर में परिवर्तित हो गया। इस कायांतरण प्रक्रिया ने इसे एक सघन और क्रिस्टलीय संरचना प्रदान की, जो इसे साधारण पत्थरों से बहुत अधिक कठोर और चमकदार बनाती है। यही कारण है कि मकराना संगमरमर न केवल दिखने में सुंदर है, बल्कि यह समय के प्रभाव और कठोर जलवायु को सहन करने में भी सक्षम है।

114. (3) कैल्शियम कार्बोनेट
मकराना संगमरमर की सर्वोच्च गुणवत्ता का मुख्य कारण इसमें 'कैल्शियम कार्बोनेट' की अत्यधिक उच्च मात्रा का होना है। इस संगमरमर में 98 प्रतिशत से अधिक शुद्ध कैल्शियम कार्बोनेट पाया जाता है, जो इसे इसकी अद्वितीय सफेदी और चमक प्रदान करता है। अन्य किस्मों के विपरीत, इसमें लौह या अन्य खनिजों की अशुद्धियां बहुत कम होती हैं, जिससे इसमें समय के साथ पीलापन आने का भय नहीं रहता। यही रासायनिक शुद्धता मकराना के पत्थर को ताजमहल जैसी ऐतिहासिक धरोहरों के निर्माण के लिए दुनिया का सबसे पसंदीदा पत्थर बनाती है।

115. (4) I, II, III, और IV
राजस्थान में पाषाण कला का समृद्ध इतिहास है। जयपुर संगमरमर की मूर्तियों का सबसे बड़ा केंद्र है, जहाँ 'खजाने वालों का रास्ता' अपने कुशल मूर्तिकारों के लिए प्रसिद्ध है। सोमपुरा ब्राह्मण समुदाय प्राचीन काल से ही मंदिरों के स्थापत्य और पत्थरों पर जीवंत नक्काशी करने में अग्रणी रहा है। मकराना संगमरमर को इसकी वैश्विक महत्ता और ऐतिहासिक विरासत के कारण अंतरराष्ट्रीय स्तर पर 'ग्लोबल हेरिटेज स्टोन रिसोर्स' के रूप में मान्यता प्राप्त है। ये सभी तथ्य राजस्थान की पाषाण शिल्प परंपरा की श्रेष्ठता को प्रमाणित करते हैं।

116. (3) बाबरमल (उदयपुर)
राजस्थान में अपनी सुंदरता के लिए विख्यात 'गुलाबी संगमरमर' मुख्य रूप से उदयपुर जिले के बाबरमल क्षेत्र से प्राप्त किया जाता है। इस पत्थर का सौम्य गुलाबी रंग और इसकी अनूठी बनावट इसे भवनों के आंतरिक सज्जा और सजावटी वस्तुओं के निर्माण के लिए अत्यंत लोकप्रिय बनाती है। बाबरमल की खदानों से निकला यह संगमरमर न केवल राजस्थान में बल्कि देश-विदेश के बाजारों में भी काफी मांग में रहता है। यह पत्थर प्रकृति की उस विविधता का उदाहरण है जहाँ खनिज संरचनाओं के कारण पत्थरों को विविध रंग प्राप्त होते हैं।

117. (2) भैंसलाना (जयपुर)
राजस्थान में काले संगमरमर का सबसे प्रमुख स्रोत जयपुर जिले का भैंसलाना क्षेत्र है। यह पत्थर अपने गहरे काले रंग और उस पर प्राकृतिक रूप से बनी सफेद रेखाओं के लिए जाना जाता है। भैंसलाना का काला संगमरमर अत्यंत कठोर होता है, इसलिए इसका उपयोग विशेष रूप से देवी-देवताओं की सुंदर मूर्तियों, फर्श की टाइलों और बड़े स्मारकों के निर्माण में किया जाता है। जयपुर के मूर्तिकार इस पत्थर पर बारीक नक्काशी करके इसे एक राजसी भव्यता प्रदान करते हैं। यह पत्थर राजस्थान के पत्थर उद्योग में अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है।

118. (4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त पत्थर अपनी विशिष्ट रंगत के लिए प्रसिद्ध हैं। सफेद संगमरमर का पर्याय मकराना है, जहाँ का पत्थर अपनी शुद्धता के लिए विश्व विख्यात है। जैसलमेर अपने पीले बलुआ पत्थर और संगमरमर के लिए जाना जाता है। उदयपुर का ऋषभदेव क्षेत्र हरे संगमरमर का मुख्य उत्पादक है, जिसे 'पारा ग्रीन' भी कहा जाता है। धौलपुर और करौली अपने लाल और गुलाबी पत्थरों के लिए प्रसिद्ध हैं, जिनका उपयोग राष्ट्रपति भवन जैसी प्रतिष्ठित इमारतों में हुआ है। यह विविधता राजस्थान की भूगर्भीय समृद्धि को दर्शाती है।

119. (1) मकराना संगमरमर अपनी आभा शीघ्र खो देता है और वायु के संपर्क में आने के कुछ दशकों के भीतर पीला पड़ता है।
मकराना संगमरमर के बारे में यह कहना कि यह जल्दी पीला पड़ जाता है, वैज्ञानिक और ऐतिहासिक रूप से सर्वथा गलत है। वास्तव में, इसकी सबसे बड़ी विशेषता ही यही है कि यह सदियों तक अपनी मूल श्वेत आभा को बनाए रखता है। ताजमहल इसका सबसे प्रत्यक्ष प्रमाण है जो 350 से अधिक वर्षों के बाद भी चमक रहा है। अन्य पत्थरों में लौह तत्व होने के कारण वे ऑक्सीकरण से पीले पड़ सकते हैं, किंतु मकराना का पत्थर जल और अशुद्धियों के प्रति अभेद्य है। बाकी सभी विकल्प पाषाण शिल्प के वास्तविक पहलुओं को सही दर्शाते हैं।

120. (3) इसमें जल का अवशोषण नगण्य होता है, जो अशुद्धियों के साथ रासायनिक प्रतिक्रिया को रोकता है।
मकराना संगमरमर की चिरस्थायी सफेदी का मुख्य राज इसकी सघन क्रिस्टलीय संरचना में निहित है। अन्य पत्थरों की तुलना में, मकराना संगमरमर में जल अवशोषण की दर शून्य के करीब होती है। जल का प्रवेश न होने के कारण, वायुमंडलीय धूल, प्रदूषक या अम्लीय वर्षा पत्थर के भीतर रासायनिक क्रिया नहीं कर पाते हैं। इसी भौतिक गुण के कारण यह पत्थर बाहरी कारकों से प्रभावित नहीं होता और अपनी चमक को पीढ़ी दर पीढ़ी बनाए रखता है। यही वह अद्वितीय गुण है जो इसे विश्व के सर्वोत्तम पत्थरों की श्रेणी में शीर्ष पर रखता है।

34. भवाई नृत्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें सिर पर 7 से 9 पीतल या मिट्टी के घड़े संतुलित करना शामिल है।
II. नर्तक अपने पैरों को तलवारों या कांच की बोतलों के किनारों पर टिकाते हैं।
III. नृत्य की विशेषता संतुलन खोए बिना तीव्र गति से पद-संचालन है।
IV. यह विशेष रूप से बारां की सहरिया जनजाति द्वारा किया जाता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. उस बेमेल तत्व की पहचान करें जो भवाई नृत्य प्रदर्शन के दौरान किए जाने वाले पारंपरिक कृत्यों से मेल नहीं खाता है।
(1) पीतल की थाली के किनारों पर संतुलन बनाना
(2) नंगी तलवार की धार पर नृत्य करना
(3) वायु में प्रज्वलित मशालों के साथ करतब दिखाना
(4) कांच के टुकड़ों पर नृत्य करना
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. भवाई नृत्य से जुड़ी उत्पत्ति और समुदाय के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) माना जाता है कि इसकी उत्पत्ति राजस्थान में प्रसारित होने से पूर्व पड़ोसी राज्य गुजरात में हुई थी।
(2) नृत्य मुख्य रूप से भवाई समुदाय द्वारा किया जाता है।
(3) प्रदर्शन के लिए संतुलन प्रविधियों में दक्षता प्राप्त करने हेतु वर्षों के कठोर प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
(4) यह एक विशुद्ध रूप से धार्मिक नृत्य है जो केवल मंदिर के गर्भगृह के भीतर किया जाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. भवाई नृत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: भवाई नृत्य कथात्मक कहानी कहने के स्थान पर शारीरिक चपलता और अद्भुत संतुलन के करतबों पर अधिक केंद्रित होता है।
कथन II: भवाई में पुरुष कलाकार विशेष रूप से पृष्ठभूमि वाद्य यंत्र बजाते हैं जबकि महिला कलाकार संतुलन के करतब दिखाती हैं।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

38. एक आदर्श भवाई प्रदर्शन में, नर्तक बढ़ते हुए संतुलन के करतबों की एक श्रृंखला प्रस्तुत करता है। निम्नलिखित पारंपरिक सहायक सामग्रियों को कम जटिल से सर्वाधिक जटिल के सही क्रम में व्यवस्थित करें:
(1) एक घड़ा → थाली का किनारा → कांच के टुकड़े → अनेक घड़े (7-9)
(2) अनेक घड़े (7-9) → थाली का किनारा → कांच के टुकड़े → एक घड़ा
(3) कांच के टुकड़े → अनेक घड़े (7-9) → एक घड़ा → थाली का किनारा
(4) थाली का किनारा → एक घड़ा → अनेक घड़े (7-9) → कांच के टुकड़े
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. भवाई नृत्य के लिए संगीत संगति मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किन वाद्य यंत्रों पर निर्भर करती है?
(1) कामायचा और रावणहत्था जैसे तत वाद्य
(2) मोरचंग और खड़ताल जैसे लघु वाद्य यंत्र
(3) सुरिंदा और नड जैसी पारंपरिक मरुस्थलीय बांसुरी
(4) पखावज, ढोलक और झांझर जैसे ताल वाद्य
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. राजस्थान के भवाई नृत्य के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. अनेक घड़ों को संतुलित करने पर केंद्रित है।
II. तलवार की धार पर नृत्य करना सम्मिलित है।
III. मेवाड़ के पूर्व सामंती शासकों द्वारा संरक्षित।
IV. अपनी रोमांचकारी और कौतूहलपूर्ण प्रकृति के लिए जाना जाता है।
V. इसके लिए किसी औपचारिक प्रशिक्षण या अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती है।
उपर्युक्त विशेषताओं में से कौन सी गलत है/हैं?
(1) केवल I और III
(2) केवल V
(3) केवल III और IV
(4) केवल II और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. राजस्थान का तेरह ताली नृत्य एक प्रसिद्ध भक्ति प्रदर्शन है जो मुख्य रूप से किस लोक देवता के प्रति श्रद्धा में अर्पित किया जाता है?
(1) पाबूजी
(2) गोगाजी
(3) रामदेवजी
(4) तेजाजी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. तेरह ताली के तत्वों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: तेरह ताली के तत्व
A. कामड़
B. मंजीरा
C. रामदेवरा

(1) ढोलक
(2) रावणहत्था
(3) नगाड़ा
(4) चंग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

113. राजस्थान में 'भोपा' और 'भोपी' द्वारा प्रस्तुत पारंपरिक कथा गायन किस कला के दृश्य प्रदर्शन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा है?
(1) ब्लू पॉटरी
(2) फड़ (चित्रांकित स्क्रॉल)
(3) पिछवाई
(4) थेवा कला
(5) अनुत्तरित प्रश्न

114. निम्नलिखित में से कौन सा कथन पारंपरिक प्रदर्शन के दौरान भोपा और भोपी की भूमिका का सही वर्णन करता है?
(1) भोपा गायन करता है जबकि भोपी फड़ के दृश्यों को आलोकित करती है।
(2) भोपा तलवार के साथ नृत्य करता है जबकि भोपी पार्श्व में बैठती है।
(3) भोपा और भोपी एक तनी हुई रस्सी पर शारीरिक कौतुक दिखाते हैं।
(4) वे बिना किसी संगीत संगति के ग्रंथों का गद्य वाचन करते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

115. फड़ परंपरा के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: पाबूजी की फड़ पारंपरिक रूप से थोरी/नायक समुदाय के भोपाओं द्वारा बांची और गाई जाती है।
कथन II: पाबूजी की फड़ वाचन के दौरान भोपा द्वारा प्रयुक्त प्राथमिक वाद्य यंत्र रावणहत्था है।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

116. देवनारायण जी की फड़, गुर्जर भोपाओं द्वारा गाई जाने वाली महागाथा है, इसे किस विशिष्ट वाद्य यंत्र के साथ प्रस्तुत किया जाता है?
(1) रावणहत्था
(2) कामायचा
(3) अलगोजा
(4) जंतर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

117. भोपा-भोपी परंपरा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) प्रदर्शन प्रायः रात्रि में होते हैं और भोर तक चलते हैं।
(2) प्रयुक्त फड़ को अत्यंत पवित्र मानकर प्रदर्शन पूर्व उसका पूजन किया जाता है।
(3) जब कोई फड़ जीर्ण-शीर्ण हो जाती है, तो उसे घरेलू अपशिष्ट में फेंक दिया जाता है।
(4) खुले स्थानों में ग्रामीण दर्शकों तक पहुँचने हेतु गायन में उच्च स्वर शैली का प्रयोग होता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

118. ग्राम-ग्राम भ्रमण करने वाली भोपा-भोपी परंपरा की ऐतिहासिक आवश्यकता किसका प्रत्यक्ष प्रभाव थी?
(1) कलाकारों को नगरों से निष्कासित करने के मुगल आदेश।
(2) स्थायी मंदिरों के अभाव वाले पशुपालक समाजों हेतु सचल मंदिरों के रूप में कार्य करना।
(3) विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्ध श्रेष्ठ गुणवत्ता वाले कैनवास की खोज।
(4) राजपूत राज्यों के अनिवार्य सैन्य भर्ती नियम।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

119. निम्नलिखित में से किस लोक देवता की पारंपरिक रूप से कोई समर्पित फड़ या विशिष्ट भोपा गायन परंपरा नहीं है?
(1) पाबूजी
(2) देवनारायण जी
(3) रामदेवजी
(4) करणी माता
(5) अनुत्तरित प्रश्न

120. रात्रि प्रदर्शन के दौरान फड़ को एक-एक खंड करके आलोकित करने का सर्वाधिक उपयुक्त कारण क्या है?
(1) दर्शकों का ध्यान विशिष्ट प्रसंगों पर केंद्रित करना।
(2) क्योंकि उनके पास संपूर्ण स्क्रॉल हेतु पर्याप्त तेल का अभाव था।
(3) प्राकृतिक रंगों को दीपक के ताप से सुरक्षित रखना।
(4) क्योंकि ग्रामीण नियम रात्रि में तीव्र प्रकाश को प्रतिबंधित करते थे।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. राजस्थान के जनजातीय नृत्यों के संबंध में गलत युग्म की पहचान करें।
(1) वालर - गरासिया जनजाति
(2) गैर - भील जनजाति
(3) गवरी - मीणा जनजाति
(4) चरी - गुर्जर समुदाय
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. गैर नृत्य में वृत्ताकार घेरे में किए जाने वाले जटिल पद-संचालन शामिल हैं। एक एकल गैर चक्र के निम्नलिखित मूल संचालनों को उनके लयबद्ध क्रम में व्यवस्थित करें:
A. नर्तक केंद्र की ओर मुख करते हैं
B. सम्मुख नर्तक के साथ डंडे टकराते हैं
C. आधा चक्कर लेकर बाहर की ओर मुख करते हैं
D. पार्श्व नर्तक के साथ डंडे टकराते हैं
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन करें:
(1) A, B, C, D
(2) B, C, A, D
(3) A, C, B, D
(4) C, D, A, B
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. गैर नृत्य किस प्रमुख भारतीय त्योहार के उत्सव के दौरान सर्वाधिक उत्साह के साथ किया जाता है?
(1) दीपावली
(2) रक्षा बंधन
(3) होली
(4) मकर संक्रांति
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. वालर नृत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: वालर नृत्य एक मंद गति का नृत्य है जहाँ लय पूर्णतः हाथों की तालियों और नर्तकों के कदमों से बनी रहती है।
कथन II: वालर नृत्य का प्रारंभ नृत्य घेरे के केंद्र में एक पुरुष द्वारा छाता या तलवार धारण करने के साथ होता है।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. गैर नृत्य के प्रकारों और उनके विशिष्ट क्षेत्रों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: गैर नृत्य के प्रकार
A. डांडी गैर
B. गींदड़ (गैर के समान)
C. कणाना गैर
D. मेवाड़ी गैर
सूची II: राजस्थान का क्षेत्र
i. बाड़मेर
ii. मेवाड़
iii. शेखावाटी
iv. मारवाड़
(1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. निम्नलिखित में से कौन सा नृत्य अन्य से भिन्न है क्योंकि यह पारंपरिक रूप से केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है, जबकि अन्य में पुरुष सम्मिलित होते हैं?
(1) घूमर
(2) वालर
(3) गैर
(4) गींदड़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. राजस्थान का पारंपरिक धागा कठपुतली नाट्य सार्वभौमिक रूप से निम्नलिखित में से किस नाम से जाना जाता है?
(1) थोलू बोम्मलाटा
(2) तोगालू गोम्बेयाटा
(3) कठपुतली
(4) पावाकूथु
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. कठपुतली परंपरा की निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. कठपुतलियाँ अरडू या गूलर की लकड़ी के एक ही टुकड़े से तराशी जाती हैं।
II. कठपुतलियों में सामान्यतः निचले अंग या पैर नहीं होते हैं।
III. कठपुतली कलाकार कठपुतली संचालन हेतु एक परिष्कृत 15-धागों वाली प्रणाली का प्रयोग करता है।
IV. नाट्य के साथ 'बोली' नामक बांस के उपकरण द्वारा उत्पन्न एक तीखी आवाज होती है।
V. भाट समुदाय मुख्य रूप से इस कला रूप से जुड़ा हुआ है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल III
(2) केवल I और II
(3) केवल IV और V
(4) केवल II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. पारंपरिक राजस्थानी कठपुतलियों को बिना पैरों के निर्मित करने का सर्वाधिक उपयुक्त कारण क्या है?
(1) नक्काशी प्रक्रिया के दौरान लकड़ी की खपत को कम करना।
(2) क्योंकि वे उन पवित्र सत्ताओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जो वायु में तैरती हैं।
(3) ऐतिहासिक रूप से कठपुतली कलाकारों में संधियुक्त

(1) सवाई जय सिंह द्वितीय
(2) सवाई प्रताप सिंह
(3) सवाई राम सिंह द्वितीय
(4) सवाई माधो सिंह
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. कथक के जयपुर घराने के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: कथक का जयपुर घराना भक्ति पक्षों और जटिल लयबद्ध पद-संचालन (तत्कार) पर अत्यधिक बल देता है।
कथन II: लखनऊ घराने के विपरीत, जयपुर घराना कोमल मुखाभिव्यक्ति पर कम और तकनीकी पद-संचालन पर अधिक बल देता है।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. निम्नलिखित में से कौन सी गायन शैली पारंपरिक रूप से राजस्थान के राजदरबारों में विकसित हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत परंपराओं के अंतर्गत वर्गीकृत नहीं है?
(1) ध्रुपद गायन
(2) धमार गायन
(3) ख्याल गायन
(4) कीर्तन गायन
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. राजस्थान में नाथद्वारा जैसे क्षेत्रों में प्रचलित 'हवेली संगीत' परंपरा का सर्वाधिक उपयुक्त विवरण क्या है?
(1) भगवान कृष्ण की स्तुति में गाया जाने वाला भक्तिपरक मंदिर संगीत।
(2) सैनिकों का मनोबल बढ़ाने हेतु राजपूत दरबारों में प्रयुक्त संगीत।
(3) पश्चिमी और राजस्थानी लोक धुनों का आधुनिक सम्मिश्रण।
(4) फसल कटाई के समय गाए जाने वाले मौसमी कृषि गीत।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. राजस्थान में ध्रुपद के निम्नलिखित प्रमुख ऐतिहासिक घटनाक्रमों को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
A. ग्वालियर में ध्रुपद का मूल प्रतिपादन (राजा मानसिंह तोमर काल)।
B. राजस्थान के दरबारों में डागर घराने की स्थापना और संरक्षण।
C. जयपुर में 'राधा गोविंद संगीत सार' का औपचारिक संकलन।
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन करें:
(1) A, B, C
(2) B, C, A
(3) A, C, B
(4) C, A, B
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त राजस्थानी लोक गीत "केसरिया बालम आवो नी, पधारो म्हारे देस" मुख्य रूप से किस गायन शैली में गाया जाता है?
(1) मांगणियार शैली
(2) मांड शैली
(3) लंगा शैली
(4) हवेली शैली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. राजस्थान के लोक संगीत और उसके मुख्य विषयगत सार के संबंध में सही युग्म की पहचान करें।
(1) पणिहारी - जल भरने वाली महिलाओं के गीत
(2) कुरजां - होली के उत्सवी गीत
(3) मोरचंग - शिशु के जन्म का उत्सव मनाने वाले गीत
(4) हिचकी - राजपूत शौर्य के वीर गीत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. मांड गायन शैली के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: मांड को न तो पूर्णतः शास्त्रीय राग माना जाता है और न ही साधारण लोक गीत; यह राजस्थान का एक परिष्कृत दरबारी संगीत रूप है।
कथन II: मांड गायन पारंपरिक रूप से जैसलमेर, बीकानेर और जोधपुर के राजदरबारों में शासकों की महिमा का गुणगान करने हेतु विकसित हुआ।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. राजस्थानी लोक परंपराओं में, 'कुरजां' शब्द एक प्रवासी पक्षी को संदर्भित करता है जो गीतों में प्रतीकात्मक रूप से किसका प्रतिनिधित्व करता है?
(1) मानसून के आगमन का संकेत।
(2) भीषण अकाल का पूर्व संकेत देने वाला अशुभ पक्षी।
(3) किसी दिवंगत पूर्वज की भटकती आत्मा।
(4) विरही युगल के मध्य संदेश ले जाने वाला संदेशवाहक।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

101. राजस्थान की मांड गायन शैली के प्रसिद्ध प्रतिपादकों में से बेमेल का चयन करें।
(1) अल्लाह जिलाई बाई
(2) गवरी देवी
(3) गुलाबो सपेरा
(4) मांगी बाई आर्या
(5) अनुत्तरित प्रश्न

सूची II: संबंधित व्यक्ति/संस्थापक
i. नैनूराम
ii. लच्छीराम
iii. नवाब अलीबख्श
iv. हेला शायर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. निम्नलिखित में से कौन सी कुचामनी ख्याल की एक विशिष्ट विशेषता है?
(1) यह विशेष रूप से जटिल शास्त्रीय उर्दू कविता का प्रयोग करता है।
(2) यह पूर्णतः मूक अभिनय और स्वांग पर निर्भर करता है।
(3) यह अनिवार्य रूप से राजदरबारों के भीतर प्रदर्शित किया जाता है।
(4) पुरुष अभिनेता ही महिला पात्रों की भूमिका भी निभाते हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. हेला ख्याल के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: लालसोट (दौसा) क्षेत्र के हेला ख्याल की विशेषता 'बम' या 'नगाड़ा' (नौबत) नामक एक विशाल ढोल का प्रयोग है।
कथन II: हेला ख्याल के कलाकार दर्शकों को आकर्षित करने हेतु 'हेला' नामक एक लंबी पुकार लगाकर अपना प्रदर्शन प्रारंभ करते हैं।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. अलीबख्शी ख्याल के संबंध में निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. इसकी उत्पत्ति अलवर क्षेत्र में हुई थी।
II. इसे नवाब अलीबख्श द्वारा पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया गया था।
III. यह हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तत्वों के साथ अहीरवाटी बोली का सम्मिश्रण है।
IV. यह विशेष रूप से ब्रिटिश अधिकारियों की कहानियों को चित्रित करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. निम्नलिखित में से कौन सा वाद्य यंत्र पारंपरिक राजस्थानी ख्याल लोक नाट्यों के प्रदर्शन से संबंधित नहीं है?
(1) नगाड़ा
(2) हारमोनियम
(3) ढोलक
(4) सितार
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. झुंझुनू जिले का 'चिड़ावा' ऐतिहासिक रूप से ख्याल की किस विशिष्ट शैली के विकास हेतु प्रसिद्ध है?
(1) शेखावाटी ख्याल
(2) कुचामनी ख्याल
(3) तुर्रा-कलंगी
(4) रम्मत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. राजस्थान की 'रम्मत' लोक नाट्य परंपरा की सर्वाधिक गहरी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ें मुख्य रूप से किन दो नगरों में हैं?
(1) जयपुर और जोधपुर
(2) उदयपुर और चित्तौड़गढ़
(3) बीकानेर और जैसलमेर
(4) कोटा और बूंदी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. रम्मत नाट्य रूप के संबंध में निम्नलिखित तत्वों पर विचार कीजिए:
I. यह प्रायः खुले चौकों में एक काष्ठ मंच (पाटा) पर प्रदर्शित किया जाता है।
II. कलाकारों को 'खेलार' के रूप में जाना जाता है।
III. यह सामान्यतः रामदेवजी को समर्पित भजनों के साथ प्रारंभ होता है।
IV. इसके विषय प्रायः 'अमर सिंह राठौड़' जैसी ऐतिहासिक किंवदंतियों पर आधारित होते हैं।
V. यह बिना किसी दर्शक संवाद के किया जाने वाला एकल प्रदर्शन है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल V
(4) केवल II और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. कलाकारों का एक समूह होली के उत्सव के दौरान नगाड़ा और ढोलक के साथ काव्यात्मक संवाद गाते हुए, बीकानेर के एक खुले आंगन में 'पाटा संस्कृति' नामक ऊंचे काष्ठ मंच पर एक नाटक का मंचन कर रहा है।
उपर्युक्त लोक नाट्य की पहचान करें।
(1) भवाई
(2) तमाशा
(3) गवरी

(4) रम्मत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

76. प्रसिद्ध रम्मतों और उनके प्राथमिक विषयों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।
सूची I: प्रसिद्ध रम्मतें
A. हेडाऊ मेरी री रम्मत
B. अमर सिंह राठौड़ री रम्मत
C. फागू महाराज री रम्मत
D. स्वतंत्र बावनी री रम्मत
सूची II: विषय
i. राष्ट्रवादी और देशभक्तिपूर्ण विषय
ii. शौर्य और ऐतिहासिक वीरता
iii. पौराणिक और सामाजिक व्यंग्य
iv. आदर्श प्रेम और दांपत्य द्वंद्व
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. रम्मत परंपरा से जुड़े प्रमुख कवियों के संबंध में सही युग्म की पहचान करें।
(1) तेज कवि - बीकानेर रम्मत
(2) नैनूराम - जैसलमेर रम्मत
(3) जवाहर लाल पुरोहित - हेडाऊ मेरी री रम्मत
(4) लच्छीराम - अमर सिंह राठौड़ री रम्मत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. जैसलमेर के तेज कवि ने प्रसिद्ध 'स्वतंत्र बावनी' की रचना की और इसे किस प्रमुख ऐतिहासिक व्यक्तित्व को भेंट किया?
(1) महाराजा गंगा सिंह
(2) जवाहरलाल नेहरू
(3) सरदार वल्लभभाई पटेल
(4) महात्मा गांधी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. रम्मत के संगीत पक्षों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रदर्शन पूर्णतः संवाद-उन्मुख है, जो एक संगीतमय और काव्यात्मक लय में प्रस्तुत किया जाता है।
II. नगाड़ा और ढोलक प्रयोग किए जाने वाले प्राथमिक ताल वाद्य हैं।
III. यह अपनी पृष्ठभूमि ध्वनि हेतु अनिवार्य रूप से पश्चिमी शास्त्रीय स्वरलिपि का प्रयोग करता है।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. रम्मत के प्रदर्शन के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: रम्मत के कलाकार (खेलार) लंबे काव्यात्मक संवाद कंठस्थ करते हैं और जनसमूह तक पहुंचने हेतु उन्हें ऊंचे स्वर में प्रस्तुत करते हैं।
कथन II: शास्त्रीय मर्यादा बनाए रखने हेतु रम्मत प्रदर्शन के दौरान दर्शकों की सहभागिता पूर्णतः वर्जित है।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. तुर्रा-कलंगी लोक नाट्य परंपरा मौलिक रूप से किन दो प्रतीकात्मक पक्षों के बीच काव्यात्मक संवाद और दार्शनिक प्रतिद्वंद्विता द्वारा परिभाषित है?
(1) सुकीर्ति और कुकीर्ति
(2) शिव और पार्वती
(3) शासक और कृषक
(4) ग्रीष्म और शीत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. तुर्रा-कलंगी में उत्पत्ति और प्रतीकवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'तुर्रा' भगवान शिव का प्रतीक है।
II. 'कलंगी' देवी पार्वती की प्रतीक है।
III. इस परंपरा का प्रारंभ दो संतों, तुकनगीर और शाह अली ने किया था।
IV. कलाकार मूक बैठकर केवल कहानियों का स्वांग रचते हैं।
उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. तुर्रा-कलंगी लोक नाट्य के संदर्भ में, सूचीबद्ध तत्वों में से बेमेल चुनें जो प्रदर्शन के पारंपरिक स्वरूप के अनुरूप नहीं है।
(1) दंगल (काव्यात्मक प्रतियोगिता)
(2) माच (सजावटी रंगमंच)
(3) पर्दा प्रथा (कलाकारों का घूंघट)
(4) चंग (ताल वाद्य)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. तुर्रा-कलंगी प्रदर्शन में एक संरचित काव्यात्मक चर्चा (दंगल) होती है। प्रदर्शन के निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:
A. मंच सज्जा (माच)
B. प्रारंभिक वंदना/भजन
C. एक पक्ष द्वारा काव्यात्मक प्रश्न

D. विरोधी पक्ष द्वारा काव्यात्मक उत्तर

नीचे दिए गए विकल्पों में से सही अनुक्रम का चयन करें:

(1) A, B, C, D
(2) B, C, A, D
(3) A, C, B, D
(4) C, D, A, B
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. तुर्रा-कलंगी तत्वों और उनके अर्थों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: तुर्रा-कलंगी तत्व

A. तुकनगीर
B. शाह अली
C. माच
D. दंगल

सूची II: संबंध/अर्थ

i. कलंगी (पार्वती) पक्ष का प्रतिनिधित्व किया
ii. प्रदर्शन हेतु सुसज्जित रंगमंच
iii. तुर्रा (शिव) पक्ष का प्रतिनिधित्व किया
iv. दोनों पक्षों के मध्य काव्यात्मक प्रतियोगिता

(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

86. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अन्य राजस्थानी लोक नाट्य रुपों की तुलना में तुर्रा-कलंगी के एक अद्वितीय पक्ष की सही पहचान करता है?

(1) यह एकमात्र रुप है जहाँ सजीव पशुओं का प्रयोग किया जाता है।
(2) दर्शक काव्यात्मक चर्चाओं में किसी पक्ष का समर्थन कर भाग लेते हैं।
(3) यह जटिल काष्ठ यंत्रवत कठपुतलियों के प्रयोग पर निर्भर है।
(4) यह किसी भी पारंपरिक वाद्य यंत्र के प्रयोग को वर्जित करता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. तुर्रा-कलंगी परंपरा को मुख्य रुप से राजस्थान के किस क्षेत्र में सर्वाधिक संरक्षण और लोकप्रियता प्राप्त हुई?

(1) पश्चिमी मेवात क्षेत्र
(2) मध्य मारवाड़ क्षेत्र
(3) उत्तरी ढूंढाड़ क्षेत्र
(4) चित्तौड़गढ़-घोसुंडा क्षेत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. तुर्रा-कलंगी के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. तुर्रा पक्ष केसरिया वस्त्र धारण करता है।
II. कलंगी पक्ष हरे वस्त्र धारण करता है।
III. प्रयुक्त प्राथमिक वाद्य यंत्र 'चंग' है।
IV. गाए जाने वाले काव्यात्मक छंदों को 'गम्मत' कहा जाता है।
V. इसकी उत्पत्ति 20वीं शताब्दी में जयपुर में हुई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से गलत है/हैं?

(1) केवल V
(2) केवल I और II
(3) केवल IV और V
(4) केवल III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. कथक का जयपुर घराना, जो अपनी तीव्र गति के चक्करों और जटिल पद-संचालन (तत्कार) हेतु विख्यात है, किस कलाकार द्वारा प्रवर्तित किया गया था?

(1) पंडित बिरजू महाराज
(2) लच्छू महाराज
(3) भानुजी
(4) सितारा देवी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. राजस्थान की शास्त्रीय संगीत परंपरा के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) मेवाती घराने की स्थापना उस्ताद घग्गे खुदाबख्श ने की थी।
(2) डागर घराना गायन की प्राचीन ध्रुपद शैली के संरक्षण हेतु प्रसिद्ध है।
(3) सेनिया घराना अपनी वंश-परंपरा तानसेन से जोड़ता है।
(4) जयपुर-अतरौली घराना अपने जटिल और दुर्लभ रागों हेतु विख्यात है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. राजस्थान के संगीत घरानों और उनके प्रमुख कलाकारों/संस्थापकों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: राजस्थान का संगीत घराना

A. जयपुर-अतरौली घराना
B. डागर घराना
C. मेवाती घराना
D. सेनिया घराना

सूची II: प्रमुख कलाकार/संस्थापक

i. पंडित जसराज
ii. उस्ताद अल्लादिया खां
iii. सूरत सेन
iv. बहराम खां

(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. शास्त्रीय संगीत पर प्रसिद्ध ग्रंथ 'राधा गोविंद संगीत सार' का संकलन जयपुर के किस संरक्षक शासक के काल में हुआ था?

D. तेरह

सूची II: विवरण

i. नृत्य के दौरान बजाया जाने वाला प्राथमिक वाद्य यंत्र

ii. वह समुदाय जो पारंपरिक रूप से नृत्य करता है

iii. नर्तकी के शरीर से बंधे मंजीरों की संख्या

iv. मुख्य तीर्थ स्थल जहाँ यह आयोजित किया जाता है

(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii

(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv

(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii

(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i

(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): तेरह ताली नृत्य मुख्य रूप से खड़े होने के स्थान पर बैठी हुई मुद्रा में महिलाओं द्वारा किया जाता है।

कारण (R): नृत्य में पैरों और हाथों के विभिन्न अंगों से बंधे तेरह मंजीरों को जटिल लयबद्ध स्वरूप में टकराने की आवश्यकता होती है।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(3) A सही है लेकिन R गलत है।

(4) A गलत है लेकिन R सही है।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. कामड़ समुदाय की महिलाएं तेरह ताली प्रदर्शन के दौरान अपने शरीर पर मंजीरे बांधती हैं। विशेष रूप से, दाएं पैर पर कितने मंजीरे बंधे होते हैं?

(1) सात

(2) नौ

(3) ग्यारह

(4) तेरह

(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. तेरह ताली के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

(1) पुरुष समुदाय के सदस्य जटिल मंजीरा वादन करते हैं जबकि महिलाएं गायन करती हैं।

(2) यह एक परिष्कृत युद्ध नृत्य है जिसे शस्त्र कौशल प्रदर्शित करने हेतु बनाया गया है।

(3) इसमें मक्खन मथना और गेहूं पीसना जैसे दैनिक कार्यों का अभिनय सम्मिलित है।

(4) नर्तक नृत्य के दौरान अपने सिर पर अनेक प्रज्वलित पात्र संतुलित करते हैं।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. तेरह ताली के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह रामदेवजी मेले के दौरान एक भेंट के रूप में किया जाता है।

II. पुरुष संगतकार भक्ति गीत (भजन) गाते हैं और तन्दूरा बजाते हैं।

III. नृत्य की उत्पत्ति शेखावाटी क्षेत्र में हुई थी।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II

(2) केवल II और III

(3) केवल I और III

(4) I, II और III

(5) अनुत्तरित प्रश्न

47. पारंपरिक तेरह ताली प्रदर्शन के दौरान नर्तकी द्वारा सामान्यतः किस क्रिया का अभिनय नहीं किया जाता है?

(1) ऊंट की सवारी करना

(2) आटा गूँथना

(3) चरखा कातना

(4) दही बिलोना

(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. यदि एक सांस्कृतिक उत्सव के लिए प्रामाणिक तेरह ताली प्रदर्शन आयोजित करना हो, तो कलाकारों के पास कौन सी आवश्यक सामग्री/वाद्य यंत्र होने चाहिए?

(1) घुंघरू, तलवारें और ढाल

(2) मंजीरे, तन्दूरा और ढोलक

(3) मिट्टी के पात्र, कपास के बीज और बांकिया

(4) पुंगी, डफ और काले घाघरे

(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. गैर नृत्य, जो अपने जीवंत वृत्ताकार स्वरूप और डंडा-प्रहार लय के लिए जाना जाता है, मुख्य रूप से राजस्थान के किस जनजातीय समुदाय का पारंपरिक नृत्य है?

(1) सहरिया

(2) भील

(3) मीणा

(4) कथोड़ी

(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. वालर नृत्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह प्रसिद्ध रूप से गरासिया जनजाति द्वारा किया जाता है।

II. यह अद्वितीय है क्योंकि यह बिना किसी वाद्य यंत्र के किया जाता है।

III. इसमें पुरुषों और महिलाओं के दो संकेंद्रित घेरे शामिल होते हैं।

IV. इसकी विशेषता तीव्र और अत्यधिक आक्रामक संचालन है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) I, II और III

(2) II, III और IV

(3) I, III और IV

(4) I, II और IV

(5) अनुत्तरित प्रश्न

102. 'पणिहारी' गीतों के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(1) ये कृषि कार्य के समय विशेष रूप से पुरुषों द्वारा गाए जाते हैं।
(2) ये मरुस्थलीय जीवन और जल की महत्ता को दर्शाते हैं।
(3) ये युद्ध से पूर्व उत्साह उत्पन्न करने वाले वीर गीत हैं।
(4) ये पुंगी के साथ गाए जाते हैं और कालबेलिया समुदाय द्वारा नृत्य किया जाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

103. मेवात क्षेत्र में 'हिचकी' गीत गायन का पारंपरिक संदर्भ कौन सा नहीं है?
(1) यह तब गाया जाता है जब किसी प्रियजन द्वारा स्मृति की जा रही हो।
(2) यह स्मृतियों और विरह को दर्शाता है।
(3) यह विरह की पीड़ा को व्यक्त करने वाला भावप्रधान गीत है।
(4) यह युद्धोपरांत शोक की अवधि के दौरान गाया जाता है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

104. लंगा और मांगणियार संगीत परंपराओं की वैश्विक मान्यता का मुख्य कारण क्या है?
(1) कामायचा और सिंधी सारंगी के साथ सशक्त गायन प्रस्तुति।
(2) किसी भी गैर-पारंपरिक वाद्य यंत्र के प्रयोग का पूर्ण निषेध।
(3) केवल राजप्रासादों के भीतर प्रदर्शन करने के शाही आदेश।
(4) राजकीय आदेश जिसने संगीत को औपचारिक शिक्षा का अंग बना दिया।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

105. 'रावणहत्था' राजस्थान के प्राचीनतम तत वाद्यों में से एक है। इसे किस श्रेणी के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है?
(1) सुषिर वाद्य
(2) अवनद्ध वाद्य
(3) तत वाद्य
(4) घन वाद्य
(5) अनुत्तरित प्रश्न

106. राजस्थान के भ्रमणशील पशुपालकों का अध्ययन कर रहे एक नृवंश-संगीतशास्त्री का सामना एक ऐसे वादक से होता है जो दांतों के मध्य रखे एक लघु धातु वाद्य को बजा रहा है, और मुख गुहिका के आकार को बदलकर ध्वनि परिवर्तित कर रहा है। वह कौन सा वाद्य यंत्र बजा रहा है?
(1) मोरचंग
(2) अलगोजा
(3) खड़ताल
(4) नड
(5) अनुत्तरित प्रश्न

107. अलगोजा के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
कथन I: अलगोजा एक द्वि-बांसुरी वाला सुषिर वाद्य है जो सामान्यतः राजस्थान के पशुपालक समुदायों द्वारा प्रयुक्त होता है।
कथन II: वादक ध्वनि के अनवरत प्रवाह को बनाए रखने हेतु सतत श्वसन तकनीक का प्रयोग करता है।
(1) कथन I सही है और कथन II गलत है
(2) कथन I गलत है और कथन II सही है
(3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(4) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(5) अनुत्तरित प्रश्न

108. कामायचा, जो आम की लकड़ी से निर्मित और चर्म पत्र से आच्छादित एक तत वाद्य है, राजस्थान के किस लोक समुदाय का प्रमुख वाद्य यंत्र है?
(1) कालबेलिया
(2) मांगणियार
(3) भील
(4) सहरिया
(5) अनुत्तरित प्रश्न

109. राजस्थानी वाद्य यंत्र को उसके संरचनात्मक विवरण से सुमेलित करने वाले सही युग्म की पहचान करें।
(1) नड - काष्ठ मुदगर से आघात किया जाने वाला पीतल का घंटा।
(2) मोरचंग - मृदा का एक विशाल पात्र जो ढोल के रूप में प्रयुक्त होता है।
(3) खड़ताल - सुघड़ काष्ठ खंडों के दो जोड़े जिन्हें परस्पर टकराया जाता है।
(4) सारंगी - छह छिद्रों वाली बांस की बांसुरी।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

110. निम्नलिखित में से कौन सा वाद्य यंत्र राजस्थानी लोक संगीत में 'सुषिर वाद्य' (फूंक वाद्य) के रूप में वर्गीकृत नहीं है?
(1) बांकिया
(2) पुंगी
(3) सतारा
(4) भपंग
(5) अनुत्तरित प्रश्न

111. पश्चिमी राजस्थान में प्रयुक्त होने वाली 'सिंधी सारंगी' का सर्वाधिक उपयुक्त विवरण क्या है?
(1) लंगा समुदाय हेतु अनुनादी तारों वाला एक तत वाद्य।
(2) सैन्य संचलन में प्रयुक्त एक ताल वाद्य।
(3) अंगुलियों से बजाया जाने वाला एक तत वाद्य।
(4) स्थानीय मशक बाजे के समान ध्वनि वाला सुषिर वाद्य।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

112. ध्वनि उत्पादन की विधि के आधार पर निम्नलिखित वाद्य यंत्रों में से बेमेल चुनें।

पैरों के निर्माण कौशल का अभाव था।

(4) लहराते घाघरे पैरों के लयबद्ध संचालन का भ्रम उत्पन्न करते हैं।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. 19वीं सदी के उत्तरार्ध और 20वीं शताब्दी के दौरान कठपुतली कला के पारंपरिक संरक्षण में ह्रास का मुख्य कारण क्या था?

(1) प्रतिमा निर्माण और काष्ठशिल्प पर कठोर धार्मिक प्रतिबंध।

(2) सिनेमा और टेलीविजन जैसे आधुनिक संचार माध्यमों का उदय।

(3) भाट कलाकार समुदाय का भारत से पूर्णतः पलायन।

(4) औद्योगिक कारणों से काष्ठ कटाई पर राजकीय प्रतिबंध।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. कठपुतली नाट्य के तत्वों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: कठपुतली पात्र/तत्व

A. सूत्रधार

B. बोली

C. अमर सिंह राठौड़

D. ढोलक

सूची II: भूमिका/विवरण

i. नाटकों में चित्रित सर्वाधिक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नायक

ii. लय निर्धारित करने वाला ताल वाद्य

iii. मुख्य कठपुतली कलाकार और कथावाचक

iv. कठपुतली की आवाज हेतु प्रयुक्त बांस की सीटी

(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii

(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i

(3) A-i, B-ii, C-iii, D-iv

(4) A-iii, B-i, C-iv, D-ii

(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. किस प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तित्व का जीवन और वीरतापूर्ण कार्य राजस्थान के पारंपरिक कठपुतली नाटकों के सर्वाधिक प्रमुख और आवर्ती विषय हैं?

(1) महाराणा प्रताप

(2) पृथ्वीराज चौहान

(3) राव जोधा

(4) अमर सिंह राठौड़

(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. कठपुतली मंच व्यवस्था (ताजमहल) के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(1) मंच के लिए विस्तृत विद्युत प्रकाश व्यवस्था और यंत्रीकृत पर्दों की आवश्यकता होती है।

(2) मंच प्रायः ऊर्ध्वाधर रखी गई दो खाट (चारपाई) का प्रयोग कर बनाया जाता है।

(3) धागों को अदृश्य रखने हेतु पृष्ठभूमि के रूप में गहरे रंग के वस्त्र का प्रयोग किया जाता है।

(4) मंच के अग्र भाग को रंगीन नक्काशीदार मेहराबों से सजाया जाता है जिन्हें 'ताजमहल' कहते हैं।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. कठपुतली में संगीत संगति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. कठपुतली कलाकार की पत्नी प्रायः मंच के पार्श्व में बैठकर ढोलक बजाती है।

II. वह कठपुतलियों की क्रियाओं की व्याख्या करने वाले कथात्मक गीत गाती है।

III. कठपुतली कलाकार स्वयं धागे संचालन के समय शास्त्रीय राग गाता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(1) केवल I और II

(2) केवल II और III

(3) केवल I और III

(4) I, II और III

(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. राजस्थानी लोक परंपराओं के संदर्भ में 'ख्याल' शब्द विशेष रूप से किसे संदर्भित करता है?

(1) मानसून के दौरान गाया जाने वाला एक शास्त्रीय संगीत राग।

(2) संगीत, नृत्य और कथात्मक कहानी का मिश्रण वाला एक लोक नाट्य।

(3) एक प्रकार की अत्यंत विस्तृत और शैलीबद्ध लघु चित्रकला।

(4) धातु की तलवारों और ढालों का प्रयोग करने वाला एक ऐतिहासिक युद्ध कला रूप।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. नीचे दो कथन दिए गए हैं: एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): शेखावाटी ख्याल अपनी संगीत संरचना और प्रस्तुति में कुचामनी ख्याल से पर्याप्त भिन्न है।

कारण (R): राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों ने अपने स्थानीय दर्शकों की विशिष्ट भाषाई और सांस्कृतिक प्राथमिकताओं के अनुरूप ख्याल की पृथक स्थानीय शैलियाँ (घराने) विकसित कीं।

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।

(3) A सही है लेकिन R गलत है।

(4) A गलत है लेकिन R सही है।

(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. ख्याल के प्रकारों और उनके संस्थापकों के संबंध में सूची I को सूची II के साथ सुमेलित कीजिए।

सूची I: ख्याल का प्रकार

A. कुचामनी ख्याल

B. शेखावाटी ख्याल

C. हेला ख्याल

D. अलीबख्शी ख्याल

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) चारण और भाट
राजस्थान में चारण और भाट समुदाय ऐतिहासिक रूप से वंशावली विवरणों और प्रदर्शन कलाओं की मौखिक परंपराओं के संरक्षण हेतु विख्यात हैं। चारण समुदाय विशेष रूप से वीर गाथाओं और दरबारी साहित्य के सृजन से संबद्ध रहा है, जबकि भाट समुदाय पारिवारिक वंशावली के दस्तावेजीकरण में संलग्न रहा है। ये समुदाय ऐतिहासिक तथ्यों को कलात्मक माध्यम से सुरक्षित रखकर राजस्थान की सांस्कृतिक विरासत को आज भी अक्षुण्ण बनाए हुए हैं।

2. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है
स्वतंत्रता पूर्व राजस्थान की लोक कलाओं को स्थानीय रियासतों और जागीरदारों द्वारा व्यापक संरक्षण प्रदान किया गया था। रियासतों के विलीनीकरण के पश्चात पारंपरिक राजसी संरक्षण में कमी अवश्य आई, किंतु इन लोक विधाओं का पूर्ण ह्रास नहीं हुआ। कई कलाओं ने बदलते सामाजिक परिवेश के अनुकूल स्वयं को ढाल लिया और जनमानस के सहयोग से अपना अस्तित्व बनाए रखा। अतः दूसरा कथन ऐतिहासिक तथ्यों की दृष्टि से त्रुटिपूर्ण है।

3. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान की प्रदर्शन कलाएं स्थानीय कृषि चक्र, ऋतु परिवर्तन और क्षेत्रीय त्योहारों से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं। यहाँ का समाज ऐतिहासिक रूप से मुख्य रूप से कृषि और पशुपालन पर निर्भर रहा है, जहाँ फसल कटाई के समय सामुदायिक उत्सवों की रूपरेखा निर्धारित करते हैं। ये प्रदर्शन प्रकृति के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं, जो कला और ग्रामीण जीवन के मध्य विद्यमान प्रगाढ़ अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हैं।

4. (4) मृत्यु और शोक अनुष्ठान
मांगणियार समुदाय पारंपरिक रूप से हर्षोल्लास और मांगलिक अवसरों, जैसे शिशु जन्म, विवाह और फसल कटाई पर अपनी कला का प्रदर्शन करता है। उनकी संगीत परंपरा आशीर्वाद और सामाजिक उत्सवों से संबद्ध है, जो जीवन के सकारात्मक पक्षों का गुणगान करती है। मृत्यु और शोक अनुष्ठान उनके प्रदर्शन के पारंपरिक अवसर नहीं माने जाते, क्योंकि उनकी कला विधा मुख्य रूप से जीवन के मांगलिक उत्सवों को समर्पित एक संगीतमय भेंट है।

5. (3) संरचित शास्त्रीय कलाओं के विपरीत, लोक कलाओं में कठोर संहिताबद्धता का अभाव होता है।
राजस्थान में शास्त्रीय और लोक प्रदर्शन कलाओं के मध्य मूल अंतर उनकी संरचनात्मक संहिताबद्धता में निहित है। शास्त्रीय कलाएं कठोर नियमों, व्याकरण और औपचारिक प्रशिक्षण प्रणालियों का पालन करती हैं। इसके विपरीत, लोक कलाओं में ऐसी संहिताबद्धता का अभाव होता है और वे स्वतःस्फूर्तता एवं लचीलेपन पर आधारित होती हैं। लोक परंपराएं मौखिक रूप से स्थानांतरित होती हैं, जो इन्हें शास्त्रीय विधाओं की तुलना में अधिक सहज और जनसामान्य के निकट बनाती हैं।

6. (1) केवल I और II
राजस्थान के लोक नाट्य ग्रामीण जनमानस के मनोरंजन और जनजागृति के प्राथमिक साधन रहे हैं। इन प्रदर्शनों में अक्सर सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार और समकालीन मुद्दों से संबंधित संदेश निहित होते थे। ये नाट्य बंद रंगशालाओं के स्थान पर खुले मैदानों या सार्वजनिक चौकों पर आयोजित किए जाते थे। इस प्रकार, ये कलाएं जनसामान्य की पहुँच में रहकर सामाजिक संवाद का सशक्त माध्यम बनी रहीं। कथन III इनके प्रदर्शन स्थल को गलत बताता है।

7. (4) 18वीं शताब्दी
राजस्थान की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में रचे-बसे 'ख्याल' लोक नाट्य का लोकप्रिय स्वरूप मुख्य रूप से 18वीं शताब्दी के दौरान विकसित हुआ। इस काल में ख्याल की विभिन्न क्षेत्रीय शैलियाँ उभरीं, जिनमें स्थानीय बोलियों और संगीत का प्रभाव स्पष्ट था। इस ऐतिहासिक कालखंड में इन प्रदर्शनों ने एक निश्चित रूपरेखा ग्रहण की, जिससे ये मनोरंजन के साथ-साथ वीरता और पौराणिक कथाओं के प्रसार का एक प्रमुख माध्यम बन गए।

8. (1) भोपाओं द्वारा फड़ वाचन
भोपाओं द्वारा फड़ वाचन की परंपरा एक ऐसी अनूठी कला है जिसमें चित्रित फड़, वाद्य संगीत और कथात्मक गायन का समन्वय होता है। प्रदर्शन के दौरान भोपा लोक देवताओं की जीवन गाथाओं वाले विशाल चित्रों का उपयोग करते हैं और रावणहत्था के साथ गायन करते हैं। यह दृश्य और श्रव्य तत्वों का जीवंत मिश्रण है, जो ग्रामीण समाज में ऐतिहासिक कथाओं के प्रसार का प्रभावी माध्यम रहा है और राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान है।

9. (3) महिलाओं के लहराते घाघरे की घूर्णन गति (चक्कर)
पारंपरिक राजस्थानी नृत्य 'घूमर' का नाम 'घूमना' शब्द से प्रेरित है, जो नर्तकियों के लहरदार घाघरे की घूर्णन गति या चक्कर को संदर्भित करता है। जब महिलाएं लयबद्ध तरीके से गोल घूमती हैं, तो उनके घाघरे का घेरा एक सुंदर वृत्ताकार आकृति बनाता है, जिसे 'घूम' कहा जाता है। यही विशिष्ट गति इस नृत्य की पहचान है, जो उत्सवों पर राजस्थानी महिलाओं की शालीनता और हर्षोल्लासपूर्ण अभिव्यक्ति को कलात्मक रूप से प्रदर्शित करती है।

10. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान में घूमर के विभिन्न स्वरूप प्रचलित हैं। मानक घूमर राजपूत महिलाओं द्वारा किया जाता है। 'लूर' गरासिया

संस्थापकों की सही जानकारी अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये घराने राजसी संरक्षण में विकसित हुई शास्त्रीय परंपराओं के मुख्य केंद्र रहे हैं।

91. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान के संगीत घरानों में उस्ताद अल्लादिया खां जयपुर-अतरौली घराने के प्रमुख स्तंभ रहे हैं। बहराम खां का नाम ध्रुपद के प्रसिद्ध डागर घराने से जुड़ा है। पंडित जसराज मेवाती घराने के सर्वाधिक यशस्वी कलाकार माने जाते हैं, जबकि सूरत सेन सेनिया घराने के प्रतिनिधि रहे हैं। इन कलाकारों और घरानों के मध्य का यह संबंध राजस्थानी संगीत की उस महान परंपरा को रेखांकित करता है जिसने देश के शास्त्रीय संगीत को नई दिशा प्रदान की। यह वर्गीकरण प्रत्येक घराने की विशिष्टता और उसके महान प्रतिपादकों के अतुलनीय योगदान को स्पष्ट करता है।

92. (2) सवाई प्रताप सिंह
प्रसिद्ध शास्त्रीय ग्रंथ 'राधा गोविंद संगीत सार' का संकलन जयपुर के महाराजा सवाई प्रताप सिंह के शासनकाल में हुआ था। वे स्वयं एक उच्च कोटि के विद्वान और कला प्रेमी शासक थे, जिन्होंने संगीत की विभिन्न विधाओं को शास्त्रीय स्वरूप प्रदान करने हेतु विद्वानों की एक सभा आयोजित की थी। उनके काल में जयपुर संगीत और साहित्य का एक प्रमुख केंद्र बन गया था। यह ग्रंथ आज भी भारतीय शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण संदर्भ माना जाता है, जो उनके शासनकाल की महान सांस्कृतिक उपलब्धियों और कला के प्रति अनुराग का प्रमाण है।

93. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
कथक का जयपुर घराना भक्ति तत्वों और पद-संचालन की जटिल लयबद्धता पर विशेष बल देता है, जो इसकी तकनीकी श्रेष्ठता को दर्शाता है। साथ ही, यह भी सत्य है कि लखनऊ घराने की कोमल मुखाभिव्यक्ति के विपरीत जयपुर घराना तकनीकी सूक्ष्मता और तीव्र गति के पैरों के काम पर अधिक ध्यान केंद्रित करता है। ये दोनों ही घराने कथक की समृद्ध विविधता के परिचायक हैं। जहाँ जयपुर घराना ओज और तकनीकी निपुणता का प्रतिनिधित्व करता है, वहीं लखनऊ घराना लावण्य और भाव प्रधान अभिनय के लिए अपनी स्वतंत्र पहचान रखता है।

94. (4) कीर्तन गायन
ध्रुपद, धमार और ख्याल ऐसी गायन शैलियाँ हैं जो राजस्थान के राजदरबारों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की सुदृढ़ परंपरा के अंतर्गत विकसित और संरक्षित हुईं। ये शैलियाँ शास्त्रीय नियमों और रागों पर आधारित होती हैं। इसके विपरीत, कीर्तन गायन मुख्य रूप से एक सामूहिक भक्तिपरक विधा है जो मंदिरों और सामुदायिक पूजा स्थलों से जुड़ी रही है। यद्यपि कीर्तन में संगीत का गहरा पुट होता है, किंतु इसे उन संरचित दरबारी शास्त्रीय विधाओं की श्रेणी में नहीं रखा जाता है जिन्होंने दरबारों में प्रदर्शन कला के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई थी।

95. (1) भगवान कृष्ण की स्तुति में गाया जाने वाला भक्तिपरक मंदिर संगीत।
'हवेली संगीत' राजस्थान के वैष्णव मंदिरों, विशेष रूप से नाथद्वारा में प्रचलित एक अत्यंत समृद्ध भक्ति संगीत परंपरा है। यहाँ 'हवेली' का तात्पर्य भगवान के मंदिर से है, जहाँ श्रीनाथजी की स्तुति में शास्त्रीय रागों पर आधारित पद गाए जाते हैं। यह संगीत पुष्टिमार्गीय सेवा पद्धति का अभिन्न अंग है और इसका मुख्य उद्देश्य ईश्वर की भक्ति और अनन्य आराधना करना है। शास्त्रीयता और आध्यात्मिकता का यह अनूठा संगम न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि इसने राजस्थान की गायन कला को एक विशिष्ट और गरिमामय पहचान प्रदान की है।

96. (3) A, C, B
ध्रुपद के ऐतिहासिक घटनाक्रम में सर्वप्रथम ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर के काल में इस शैली का मूल प्रतिपादन हुआ। इसके पश्चात, 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में जयपुर में 'राधा गोविंद संगीत सार' का विधिवत संकलन कर संगीत ज्ञान को लिपिबद्ध किया गया। अंत में, राजस्थान के विभिन्न राजदरबारों में डागर घराने को व्यापक संरक्षण प्राप्त हुआ, जिससे ध्रुपद की यह प्राचीन परंपरा यहाँ सुदृढ़ हुई। यह क्रम दर्शाता है कि किस प्रकार ध्रुपद गायकी ने समय के साथ ग्वालियर से राजस्थान की ओर प्रवास कर यहाँ के शास्त्रीय परिवेश को समृद्ध किया।

97. (2) मांड शैली
विश्व विख्यात लोक गीत "केसरिया बालम आवो नी, पधारो म्हारे देस" मुख्य रूप से राजस्थान की 'मांड' गायन शैली में प्रस्तुत किया जाता है। मांड शैली अपनी विशिष्ट मधुरता और शास्त्रीय पुट के कारण जानी जाती है, जिसका विकास जैसलमेर और बीकानेर के राजदरबारों में हुआ। यह गीत स्वागत और विरह की भावनाओं का एक सुंदर संगम है, जो आज राजस्थान की पर्यटन पहचान और सांस्कृतिक प्रतीक बन चुका है। इसकी स्वर लहरियाँ मरुस्थल की आत्मा को प्रतिध्वनित करती हैं और दर्शकों को राजस्थान की समृद्ध अतिथि सत्कार परंपरा का अनुभव कराती हैं।

98. (1) पणिहारी - जल भरने वाली महिलाओं के गीत
'पणिहारी' और जल भरने वाली महिलाओं के गीतों का युग्म पूर्णतः सही है। पणिहारी गीत मरुस्थलीय जीवन में जल की महत्ता और घड़ा लेकर पानी भरने जाने वाली स्त्रियों के अनुभवों और संवादों को अत्यंत मधुर ढंग से व्यक्त करते हैं। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि कुरजां विरह का प्रतीक है और हिचकी प्रियजन की यादों से जुड़ी है। राजस्थानी लोक संगीत के ये विभिन्न रूप ग्रामीण समाज की भावनाओं, दैनिक संघर्षों और सांस्कृतिक मूल्यों का दर्पण हैं, जो लोक जीवन की सहजता और संवेदनशीलता को गीतों के माध्यम से सुरक्षित रखते हैं।

99. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
मांड गायन शैली राजस्थान की एक अत्यंत परिष्कृत विधा है जिसे न तो पूर्णतः शास्त्रीय राग और न ही साधारण लोक गीत माना जा सकता है; यह इन दोनों का एक सुंदर सामंजस्य है। इसके साथ ही, इस शैली का विकास मुख्य रूप से जैसलमेर,

21. (3) कालबेलिया
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कलाकार गुलाबो सपेरा को कालबेलिया लोक नृत्य को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाने का मुख्य श्रेय दिया जाता है। उन्होंने सपेरा समुदाय की इस पारंपरिक कला को प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद दुनिया के सामने प्रस्तुत किया। उनके प्रयासों के फलस्वरूप ही इस नृत्य को 2010 में यूनेस्को की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत सूची में स्थान मिला। वे आज भी लोक कलाओं के संरक्षण हेतु एक महान प्रेरणास्रोत के रूप में जानी जाती हैं।

22. (1) A, B, C, D
भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के यूनेस्को सूची में सम्मिलित होने के क्रम में रामलीला को 2008 में मान्यता मिली। इसके पश्चात 2010 में राजस्थान के कालबेलिया लोक नृत्य को इस सूची में स्थान दिया गया। कुंभ मेला वर्ष 2017 में और कोलकाता की दुर्गा पूजा को नवीनतम रूप में वर्ष 2021 में इस प्रतिष्ठित सूची में अंकित किया गया। यह कालानुक्रमिक व्यवस्था भारतीय परंपराओं को मिली वैश्विक पहचान और संरक्षण के चरणों को दर्शाती है।

23. (4) कामायचा
कालबेलिया नृत्य के संगीत में पुंगी, डफ और मोरचंग जैसे वाद्यों का प्रयोग किया जाता है, जो नृत्य की तीव्र गति के अनुकूल हैं। इसके विपरीत, कामायचा एक परिष्कृत तत वाद्य है जो मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान के मांगणियार समुदाय की गायन शैली से संबंधित है। कामायचा की गंभीर स्वर लहरियाँ मांगणियार गीतों की विशेषता हैं। अतः कामायचा कालबेलिया समुदाय के पारंपरिक संगीत समूह का हिस्सा नहीं है।

24. (3) 2010
यूनेस्को ने वर्ष 2010 में राजस्थान के कालबेलिया लोक गीतों और नृत्यों को मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि सूची में सम्मिलित कर आधिकारिक मान्यता प्रदान की थी। इस वैश्विक सम्मान ने सपेरा समुदाय की अनूठी जीवनशैली को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया। इस मान्यता के फलस्वरूप अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जागरूकता बढ़ी और कलाकारों को अपनी पारंपरिक विरासत को सुरक्षित रखने तथा उसे अगली पीढ़ी तक पहुँचाने हेतु महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हुए।

25. (3) अजमेर-किशनगढ़ क्षेत्र
चरी नृत्य मुख्य रूप से राजस्थान के अजमेर-किशनगढ़ क्षेत्र की प्रसिद्ध लोक नृत्य विधा है। प्रज्वलित पात्रों को सिर पर संतुलित करने की विशिष्ट शैली के कारण यह नृत्य देशभर में पहचाना जाता है। यह मुख्य रूप से गुर्जर समुदाय की महिलाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है और इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विशिष्टता का अभिन्न अंग है। यह प्रदर्शन न केवल शारीरिक संतुलन का अद्भुत उदाहरण है, बल्कि मरुस्थलीय जीवन की खुशियों को भी दर्शाता है।

26. (2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
चरी नृत्य में महिलाएं अपने सिर पर प्रज्वलित कपास के बीजों वाले पीतल के पात्रों को संतुलित करती हैं, जो इस कला की मुख्य विशेषता है। यह कथन भी सत्य है कि यह गुर्जर समुदाय द्वारा पुत्र जन्म और विवाह जैसे हर्षोल्लास के अवसरों पर किया जाने वाला एक अनुष्ठानिक प्रदर्शन है। यद्यपि दोनों तथ्य चरी नृत्य के संबंध में सही हैं, किंतु समुदाय की उत्सव परंपरा उस विशिष्ट भौतिक तकनीक की व्याख्या नहीं करती है।

27. (1) केवल I और II
चरी नृत्य मुख्य रूप से गुर्जर समुदाय की महिलाओं द्वारा किया जाता है। यह मरुस्थल में पेयजल संग्रहण हेतु लंबी दूरी तय करने वाली महिलाओं के श्रम और उस दौरान मिलने वाले आनंद को कलात्मक रूप से दर्शाता है। इसमें सिर पर संतुलित पात्र इसी संघर्ष और जीवन शक्ति का प्रतीक हैं। कथन III गलत है क्योंकि इस नृत्य में तलवारों या आक्रामक युद्ध कला का कोई स्थान नहीं होता है, बल्कि यह संतुलन पर आधारित है।

28. (2) प्राथमिक वाद्य यंत्र - बांकिया
चरी नृत्य के प्रदर्शन में 'बांकिया' एक महत्वपूर्ण और प्राथमिक सुषिर वाद्य यंत्र है, जो ढोल और थाली के साथ मिलकर नृत्य की लय बनाता है। इस नृत्य की मुख्य कलाकार गुर्जर समुदाय की महिलाएं होती हैं। इसमें प्रयुक्त होने वाले पात्र पीतल के होते हैं जिनमें प्रज्वलित कपास के बीज रखे जाते हैं। यह नृत्य सदैव हर्षोल्लास और मांगलिक अवसरों पर किया जाता है, अतः बांकिया वाद्य यंत्र वाला युग्म सांस्कृतिक रूप से सही है।

29. (3) मरुस्थल में जल संग्रहण से प्राप्त होने वाले आनंद की एक कलात्मक अभिव्यक्ति।
चरी नृत्य की विषयगत उत्पत्ति मरुस्थलीय जीवन में जल की महत्ता और उसे प्राप्त करने के संघर्ष से जुड़ी है। यह नृत्य मीलों दूर से पानी भरकर लाने वाली महिलाओं के उस संतोष और आनंद की कलात्मक अभिव्यक्ति है, जो उन्हें जल संग्रहण के पश्चात मिलता है। राजस्थान की शुष्क जलवायु में जल का मूल्य अत्यंत अधिक है। इसी बहुमूल्य संसाधन की प्राप्ति को उत्सव के रूप में मनाना इस नृत्य का मूल दर्शन है।

30. (4) चरी
यदि किसी नृत्य में प्रज्वलित पीतल के पात्रों को सिर पर रखकर बिना गिराए सुचारु रूप से चलना हो, तो वह 'चरी' नृत्य की विशिष्ट तकनीक है। राजस्थान की इस पारंपरिक विधा में कलाकारों को अद्भुत संतुलन और एकाग्रता का परिचय देना होता है। यह नृत्य गति के साथ सामंजस्य बिठाने की कला सिखाता है, जहाँ पात्रों की स्थिरता और निरंतर जलती लपटें सबसे महत्वपूर्ण होती हैं। अतः चरी नृत्य ही वह आधार है जो इस प्रदर्शन हेतु प्रयुक्त होता है।

31. (1) फलकू बाई
फलकू बाई को किशनगढ़ शैली के चरी नृत्य की सर्वाधिक प्रसिद्ध नर्तकी और मुख्य प्रतिपादक के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचाना जाता है। उन्होंने गुर्जर समुदाय के इस पारंपरिक

नृत्य में एक सुंदर ज्यामितीय स्वरूप और निरंतर संगीत उत्पन्न करती है।

53. (3) होली
राजस्थान में गैर नृत्य सर्वाधिक उत्साह और ऊर्जा के साथ होली के पावन पर्व पर किया जाता है। धुलंडी के अगले दिन से प्रारंभ होकर कई दिनों तक चलने वाले इस उत्सव में भील समुदाय के लोग रंग-बिरंगी वेशभूषा में एकत्रित होकर नृत्य करते हैं। डंडों की थाप और घेरे में घूमते नर्तकों का समूह वसंत ऋतु के आगमन और सामुदायिक भाईचारे के उल्लास को राजस्थान के गाँवों में अत्यंत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है।

54. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
वालर नृत्य एक मंद गति का नृत्य है जहाँ लय पूरी तरह से हाथों की तालियों और नर्तकों के कदमों के आपसी सामंजस्य से निर्मित होती है, जिसमें किसी वाद्य का प्रयोग नहीं होता। इसके साथ ही, इस नृत्य का प्रारंभ घेरे के केंद्र में एक पुरुष द्वारा छाता या तलवार धारण करने के साथ होता है, जो प्रदर्शन की औपचारिक शुरुआत का संकेत है। ये दोनों ही कथन वालर की पारंपरिक प्रस्तुति के अनिवार्य अंग हैं और गरासिया जनजाति की विशिष्टता को परिभाषित करते हैं।

55. (1) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में गैर नृत्य के अलग-अलग रूप प्रचलित हैं। डांडी गैर मुख्य रूप से मारवाड़ क्षेत्र की विशेषता है, जबकि गींदड़ नृत्य शेखावाटी क्षेत्र की पहचान है। कणाना गैर का संबंध बाड़मेर जिले के कणाना गाँव से है और मेवाड़ी गैर मेवाड़ क्षेत्र में पारंपरिक रूप से प्रचलित है। ये क्षेत्रीय भिन्नताएं दर्शाती हैं कि किस प्रकार एक ही मूल नृत्य शैली ने स्थानीय परंपराओं के अनुसार अपने स्वरूप और नाम में परिवर्तन कर लोक कला को समृद्ध किया है।

56. (1) घूमर
सूची में दिए गए नृत्यों में घूमर अन्य से भिन्न है क्योंकि यह पारंपरिक रूप से केवल महिलाओं द्वारा किया जाने वाला नृत्य है, जो स्त्रीत्व और गरिमा का प्रतीक माना जाता है। इसके विपरीत, वालर में गरासिया स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। गैर और गींदड़ नृत्य मुख्य रूप से पुरुष प्रधान हैं, जिनमें पुरुषों के समूह डंडों के साथ अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। अतः अपनी प्रस्तुति के आधार पर घूमर ही वह नृत्य है जो विशिष्ट रूप से केवल महिलाओं हेतु आरक्षित रहा है।

57. (3) कठपुतली
राजस्थान की पारंपरिक धागा कठपुतली नाट्य विधा को वैश्विक स्तर पर 'कठपुतली' के नाम से ही जाना जाता है। यह शब्द 'काष्ठ' (लकड़ी) और 'पुतली' से मिलकर बना है, जो लकड़ी से निर्मित गुड़ियों के माध्यम से प्रदर्शन को इंगित करता है। यद्यपि भारत के अन्य राज्यों में विभिन्न पुतली कलाएं प्रचलित हैं, किंतु राजस्थान की कठपुतली अपनी विशिष्ट संचालन तकनीक और ऐतिहासिक गाथाओं के कारण अद्वितीय है। यह कला रूप सदियों से भाट समुदाय द्वारा संरक्षित है।

58. (1) केवल III
कठपुतली कला में पात्रों का निर्माण अरडू की लकड़ी से होता है। 'बोली' यंत्र का उपयोग कठपुतलियों की विशिष्ट आवाज निकालने हेतु किया जाता है और भाट समुदाय इस कला का मुख्य संरक्षक है। कथन III गलत है क्योंकि राजस्थानी कठपुतली संचालन में 15 धागों वाली जटिल प्रणाली का प्रयोग नहीं होता; इसके बजाय यह केवल 2 से 5 धागों की एक अत्यंत सरल परंतु प्रभावी पद्धति पर आधारित है। यही सादगी इस विधा को अन्य पुतली कलाओं से भिन्न बनाती है।

59. (4) लहराते घाघरे पैरों के लयबद्ध संचालन का भ्रम उत्पन्न करते हैं।
पारंपरिक राजस्थानी कठपुतलियों को बिना पैरों के निर्मित करने का मुख्य कारण उनके परिधान की विशिष्ट बनावट है। कठपुतलियों द्वारा पहने जाने वाले लंबे और घेरदार घाघरे नृत्य के दौरान इस प्रकार लहराते हैं कि वे पैरों के लयबद्ध संचालन का एक सुंदर भ्रम उत्पन्न करते हैं। जब सूत्रधार धागों को हिलाता है, तो घाघरे की गति वास्तविक पद-संचालन जैसा अनुभव कराती है। यह कलात्मक प्रविधि निर्माण को सरल बनाती है और मंच पर कठपुतली के नृत्य को अधिक आकर्षक स्वरूप प्रदान करती है।

60. (2) सिनेमा और टेलीविजन जैसे आधुनिक संचार माध्यमों का उदय।
कठपुतली कला के पारंपरिक संरक्षण में गिरावट का मुख्य कारण सिनेमा और टेलीविजन जैसे आधुनिक मनोरंजन साधनों का उदय था। इन नवीन माध्यमों ने दर्शकों को मनोरंजन के अधिक सुलभ और विविध विकल्प प्रदान किए, जिससे पारंपरिक लोक कलाओं के प्रति जनमानस का आकर्षण कम होने लगा। आधुनिक संचार क्रांति के प्रभावस्वरूप भाट कलाकारों को मिलने वाली सामाजिक और आर्थिक सहायता में कमी आई, जिससे इस प्राचीन विधा के अस्तित्व पर संकट मंडराने लगा और यह आज सीमित हो गई है।

61. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
कठपुतली नाट्य में 'सूत्रधार' मुख्य कलाकार और कथावाचक होता है जो धागों का संचालन करता है। 'बोली' बाँस की वह सीटी है जिसके माध्यम से कठपुतलियों की विशिष्ट आवाजें निकाली जाती हैं। 'अमर सिंह राठौड़' इस नाट्य विधा में चित्रित होने वाले सर्वाधिक लोकप्रिय ऐतिहासिक नायक हैं। 'ढोलक' प्रदर्शन के दौरान लय और ताल बनाए रखने वाला अनिवार्य वाद्य है। इन सभी घटकों के उचित समन्वय से ही एक प्रभावशाली और जीवंत कठपुतली नाटक का मंचन सफल होता है।

62. (4) अमर सिंह राठौड़
अमर सिंह राठौड़ का जीवन और उनके वीरतापूर्ण कार्य राजस्थानी कठपुतली नाटकों के सर्वाधिक प्रमुख और आवर्ती विषय रहे हैं। 17वीं शताब्दी के इस साहसी योद्धा की गाथा, विशेष रूप से आगरा के किले में उनका पराक्रम और उनका बलिदान, दर्शकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। कठपुतली कलाकार पीढ़ी-दर-पीढ़ी उनकी वीरता के प्रसंगों को जीवंत

42. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
तेरह ताली नृत्य में 'कामड़' वह समुदाय है जो इस कला को पारंपरिक रूप से संजोए हुए है। 'मंजीरा' इस नृत्य का मुख्य वाद्य यंत्र है जिसे शरीर के विभिन्न अंगों पर बांधा जाता है। 'रामदेवरा' वह प्रमुख स्थल है जहाँ रामदेवजी के मेले में इसका आयोजन होता है। 'तेरह' की संख्या नर्तकी के शरीर पर बंधे उन तेरह मंजीरों को दर्शाती है जिन्हें लयबद्ध तरीके से बजाया जाता है। ये सभी तत्व मिलकर इसे एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान करते हैं।

43. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
तेरह ताली नृत्य मुख्य रूप से बैठी हुई मुद्रा में किया जाता है, जो इसे अन्य नृत्यों से अलग बनाता है। इसका कारण यह है कि नृत्य के दौरान नर्तकी को अपने हाथों और पैरों के विभिन्न अंगों पर बंधे तेरह मंजीरों को एक निश्चित लय में आपस में टकराना होता है। बैठी हुई स्थिति में शरीर को संतुलित रखते हुए इन मंजीरों पर सटीक प्रहार करना सरल होता है। इसी जटिल तकनीक के कारण इस मुद्रा का निर्धारण किया गया है।

44. (2) नौ
तेरह ताली नृत्य के दौरान कामड़ समुदाय की महिलाएं अपने शरीर पर कुल तेरह मंजीरे बांधती हैं। इसमें विशेष रूप से दाएं पैर पर टखने से घुटने तक कुल नौ मंजीरे बंधे होते हैं। शेष चार मंजीरों में से दो कोहनी पर और दो हाथों में रखे जाते हैं। पैरों पर बंधे इन नौ मंजीरों की व्यवस्था नर्तकी को विभिन्न लयबद्ध ध्वनियां उत्पन्न करने में सहायता करती है। यह विशिष्ट विन्यास ही इस नृत्य के नाम 'तेरह ताली' का मुख्य आधार है।

45. (3) इसमें मक्खन मथना और गेहूं पीसना जैसे दैनिक कार्यों का अभिनय सम्मिलित है।
तेरह ताली नृत्य की एक मुख्य विशेषता यह है कि इसमें ग्रामीण जीवन के दैनिक कार्यों को अभिनय के माध्यम से दर्शाया जाता है। नर्तकियां मंजीरों की लय के साथ मक्खन मथने, अनाज पीसने और चरखा चलाने जैसी क्रियाओं का अत्यंत सुंदर और जीवंत चित्रण करती हैं। यह नृत्य केवल शारीरिक संचालन नहीं है, बल्कि घरेलू जीवन को भक्ति के साथ जोड़ने का एक कलात्मक प्रयास है। इन कार्यों के दौरान मंजीरों पर नियंत्रण रखना अद्भुत कौशल को दर्शाता है।

46. (1) केवल I और II
तेरह ताली नृत्य रामदेवजी के मेले में एक महत्वपूर्ण भक्ति भेंट के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस दौरान पुरुष कलाकार तन्दूरा और ढोलक बजाते हुए भजनों का गायन करते हैं। कथन III गलत है क्योंकि इस नृत्य की उत्पत्ति शेखावाटी में नहीं, बल्कि पाली जिले के पादरला गाँव से मानी जाती है। यह कामड़ समुदाय की धार्मिक पहचान का हिस्सा है, जिसकी जड़ें मारवाड़ के भक्ति आंदोलनों में गहराई से समाहित रही हैं।

47. (1) ऊंट की सवारी करना
तेरह ताली नृत्य के दौरान नर्तकियां घरेलू दिनचर्या के विभिन्न अंगों का अभिनय करती हैं, जिनमें आटा गूंथना, चरखा कातना और दही बिलोना जैसे कार्य सम्मिलित हैं। ये क्रियाएं मंजीरों की लय के साथ अत्यंत समन्वय के साथ की जाती हैं। ऊंट की सवारी करना इस नृत्य के पारंपरिक अभिनय का हिस्सा नहीं है। जहाँ अन्य क्रियाएं ग्रामीण महिलाओं के श्रम को दर्शाती हैं, वहीं ऊंट की सवारी का चित्रण इस विशेष नृत्य की विषयवस्तु के अनुकूल नहीं है।

48. (2) मंजीरे, तन्दूरा और ढोलक
एक प्रामाणिक तेरह ताली प्रदर्शन हेतु कलाकारों के पास मंजीरे, तन्दूरा और ढोलक जैसे आवश्यक वाद्य यंत्र होने चाहिए। मंजीरे इस नृत्य की आत्मा हैं जिन्हें शरीर पर बांधकर लय उत्पन्न की जाती है। तन्दूरा और ढोलक का उपयोग पुरुष संगतकारों द्वारा भक्ति गीतों की प्रस्तुति के लिए किया जाता है। अन्य सामग्री जैसे तलवारें या जलते हुए पात्र इस विधा से संबंधित नहीं हैं। इन वाद्यों का संयोजन ही तेरह ताली को उसकी विशिष्ट मधुरता प्रदान करता है।

49. (2) भील
गैर नृत्य मुख्य रूप से राजस्थान की भील जनजाति का एक पारंपरिक और ऊर्जावान लोक नृत्य है। यह अपने जीवंत वृत्ताकार स्वरूप और लकड़ी के डंडों के लयबद्ध प्रहार के लिए प्रसिद्ध है। यद्यपि राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में इसके कई रूप प्रचलित हैं, किंतु भील समुदाय के बीच इसका सांस्कृतिक महत्व सर्वाधिक है। यह नृत्य सामूहिक एकता और उल्लास का प्रतीक है, जो विशेष रूप से मेवाड़ और मारवाड़ के जनजातीय क्षेत्रों में भील संस्कृति को प्रदर्शित करता है।

50. (1) I, II और III
वालर नृत्य गरासिया जनजाति की एक अनूठी सांस्कृतिक विरासत है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह बिना किसी वाद्य यंत्र के केवल तालियों और पद-संचालन की थाप पर किया जाता है। इसमें स्त्री और पुरुष दो अलग-अलग घेरों में नृत्य करते हैं। कथन IV गलत है क्योंकि वालर अपनी मंद गति, शालीनता और नपे-तुले संचालन के लिए जाना जाता है, न कि किसी तीव्र गतिविधि के लिए। इसकी यही धीमी लय इसे विशिष्ट बनाती है।

51. (3) गवरी - मीणा जनजाति
गवरी नृत्य और मीणा जनजाति का युग्म गलत है, क्योंकि गवरी वास्तव में मेवाड़ की भील जनजाति द्वारा किया जाने वाला 40 दिवसीय प्रसिद्ध लोक नाट्य और नृत्य अनुष्ठान है। अन्य युग्म जैसे वालर और गरासिया, गैर और भील, तथा चरी और गुर्जर समुदाय पूर्णतः सही हैं। गवरी भील संस्कृति का एक अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है जो देवी गौरी की आराधना को समर्पित है। अतः मीणा जनजाति के साथ गवरी का मेल सांस्कृतिक दृष्टि से त्रुटिपूर्ण है।

52. (1) A, B, C, D
गैर नृत्य के वृत्ताकार घेरे में पद-संचालन एक निश्चित लयबद्ध क्रम में होता है। सबसे पहले नर्तक घेरे के केंद्र की ओर मुख करते हैं। इसके पश्चात वे अपने सम्मुख खड़े नर्तक के साथ डंडे टकराते हैं। अगली कड़ी में वे आधा चक्कर लेकर बाहर की ओर मुख करते हैं और अंत में अपने पार्श्व में स्थित नर्तकों के साथ डंडे टकराते हुए आगे बढ़ते हैं। यह व्यवस्थित प्रक्रिया

72. (1) शेखावाटी ख्याल

झुंझुनू जिले का चिड़ावा नगर ऐतिहासिक रुप से 'शेखावाटी ख्याल' शैली के विकास और उसके संवर्धन हेतु प्रसिद्ध है। इस शैली को चिड़ावा के कलाकारों, विशेष रूप से नैनूराम ने अपनी कला से नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया। शेखावाटी ख्याल की मुख्य विशेषता इसके गायन में शास्त्रीय पुट और सारंगी तथा हारमोनियम जैसे वाद्यों का समन्वय है। चिड़ावा इस विधा का एक प्रमुख केंद्र रहा है, जहाँ से इस लोक नाट्य ने अपनी परिष्कृत गायकी और अभिनय के कारण पूरे राजस्थान में व्यापक ख्याति प्राप्त की है।

73. (3) बीकानेर और जैसलमेर

राजस्थान की 'रम्मत' लोक नाट्य परंपरा की जड़ें मुख्य रूप से बीकानेर और जैसलमेर शहरों में अत्यंत गहरी हैं। जैसलमेर में रम्मतों का विकास तेज कवि जैसे महान कवियों की लेखनी से हुआ, जबकि बीकानेर में यह 'पाटा संस्कृति' के रूप में फली-फूली। होली के अवसर पर इन दोनों शहरों के सार्वजनिक चौकों में रम्मतों का भव्य आयोजन एक गौरवशाली परंपरा रही है। स्थानीय समुदायों ने इस विधा को अपनी विशिष्ट गायन शैली और ऐतिहासिक कथाओं के माध्यम से आज भी जनमानस के बीच जीवंत बनाए रखा है।

74. (3) केवल V

रम्मत का प्रदर्शन लकड़ी के ऊंचे मंच (पाटा) पर होता है और इसके कलाकारों को 'खेलार' कहा जाता है। यह रामदेवजी की वंदना से प्रारंभ होकर ऐतिहासिक वीरता के प्रसंगों को चित्रित करता है। कथन V पूर्णतः गलत है क्योंकि रम्मत एक सामूहिक लोक नाट्य है, न कि कोई एकल प्रदर्शन। इसमें कलाकारों और दर्शकों के बीच निरंतर संवाद बना रहता है। पूरा समुदाय इस नाट्य प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भाग लेता है, जो इसे एक जीवंत और समावेशी सामाजिक उत्सव का स्वरुप प्रदान करता है।

75. (4) रम्मत

वर्णित लोक नाट्य की पहचान 'रम्मत' के रूप में की जा सकती है, जो विशेष रुप से बीकानेर की 'पाटा संस्कृति' से संबंधित है। होली के दौरान सार्वजनिक चौकों में ऊंचे काष्ठ मंचों पर नगाड़ा और ढोलक की थाप के साथ काव्यात्मक संवादों का गायन रम्मत की अनूठी विशेषता है। इसमें कलाकार ऐतिहासिक और पौराणिक आख्यानों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। यह नाट्य विधा अपनी विशिष्ट प्रदर्शन शैली और सामुदायिक भागीदारी के कारण राजस्थान के अन्य लोक नाट्यों से स्वतंत्र पहचान रखती है।

76. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i

प्रसिद्ध रम्मतों की विषयवस्तु में विविधता स्पष्ट है। 'हेडाऊ मेरी री रम्मत' आदर्श प्रेम और दांपत्य जीवन को दर्शाती है। 'अमर सिंह राठौड़ री रम्मत' वीरता और ऐतिहासिक शौर्य पर आधारित है। 'फागू महाराज री रम्मत' में पौराणिक कथाओं के साथ सामाजिक व्यंग्य का पुट मिलता है। जैसलमेर के तेज कवि द्वारा रचित 'स्वतंत्र बावनी' अपने प्रखर राष्ट्रवादी और देशभक्तिपूर्ण संदेशों के लिए जानी जाती है। ये रम्मतें केवल मनोरंजन ही नहीं, बल्कि समाज के विभिन्न पहलुओं और राष्ट्रीय चेतना के प्रसार का माध्यम रही हैं।

77. (3) जवाहर लाल पुरोहित - हेडाऊ मेरी री रम्मत

जवाहर लाल पुरोहित और 'हेडाऊ मेरी री रम्मत' का युग्म पूर्णतः सही है, क्योंकि वे इस प्रसिद्ध बीकानेरी रम्मत के रचयिता माने जाते हैं। अन्य विकल्प त्रुटिपूर्ण हैं क्योंकि तेज कवि का मुख्य संबंध जैसलमेर की रम्मतों से रहा है, जबकि लच्छीराम और नैनूराम ख्याल शैली के प्रवर्तक रहे हैं। रम्मत परंपरा की यह साहित्यिक नींव कवियों द्वारा रचित उन छंदों और संवादों पर टिकी है जो वर्षों से कलाकारों द्वारा मंचित किए जा रहे हैं। अतः कवियों और उनकी कृतियों का यह सही मेल रम्मत के इतिहास को स्पष्ट करता है।

78. (4) महात्मा गांधी

जैसलमेर के क्रांतिकारी कवि तेज कवि ने वर्ष 1943 में 'स्वतंत्र बावनी' की रचना की, जो ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रखर देशभक्ति के स्वर मुखरित करती थी। उन्होंने अपनी इस महान कृति को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को भेंट कर अपनी अटूट राष्ट्रीय भावना का परिचय दिया। इस रचना के कारण उन्हें जेल भी जाना पड़ा, किंतु उनके गीतों ने राजस्थानी जनमानस में स्वतंत्रता की अलख जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह ऐतिहासिक घटना स्पष्ट करती है कि किस प्रकार लोक कलाएं राष्ट्रीय आंदोलन में जन चेतना का सशक्त माध्यम बनी थीं।

79. (1) केवल I और II

रम्मत का प्रदर्शन पूर्णतः संवाद-उन्मुख होता है जिसे एक विशिष्ट संगीतमय और काव्यात्मक लय में प्रस्तुत किया जाता है। नगाड़ा और ढोलक जैसे ताल वाद्य इस नाट्य की गति और लय को नियंत्रित करने वाले मुख्य आधार हैं। कथन III गलत है क्योंकि रम्मत एक विशुद्ध लोक विधा है जो अपनी जड़ें स्थानीय परंपराओं में रखती है; इसमें पश्चिमी शास्त्रीय स्वरलिपि का कोई स्थान नहीं है। इसकी स्वर लहरियाँ और संगीत की शैली पूर्णतः देशी है, जो मरुस्थलीय संस्कृति की मौलिकता और लोक संगीत की समृद्ध विरासत को दर्शाती है।

80. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है

रम्मत के कलाकार लंबे काव्यात्मक संवादों को कंठस्थ करते हैं और जनसमूह तक पहुँचने के लिए उन्हें अत्यंत ऊंचे और स्पष्ट स्वर में प्रस्तुत करते हैं, जो उनके कौशल का प्रमाण है। कथन II गलत है क्योंकि रम्मत में दर्शकों की सहभागिता पर कोई प्रतिबंध नहीं है; इसके विपरीत, दर्शकों का उत्साह और उनकी सक्रिय भागीदारी इस प्रदर्शन को जीवंत बनाती है। यह एक सामूहिक सामाजिक उत्सव है जहाँ कलाकारों और जनता के बीच कोई कठोर सीमा नहीं होती। जन-सहभागिता ही इस लोक नाट्य की सफलता का मुख्य आधार है।

81. (2) शिव और पार्वती

तुर्रा-कलंगी लोक नाट्य परंपरा दार्शनिक प्रतिद्वंद्विता के दो महान प्रतीकों, शिव और पार्वती के बीच के काव्यात्मक संवादों पर आधारित है। इसमें 'तुर्रा' भगवान शिव का प्रतीक माना जाता है, जबकि 'कलंगी' देवी पार्वती का प्रतिनिधित्व

रूप में प्रस्तुत करते आ रहे हैं। यही कारण है कि अमर सिंह राठौड़ का चरित्र आज भी कठपुतली कला की पहचान और इसके कथा साहित्य का केंद्रीय स्तंभ बना हुआ है।

63. (1) मंच के लिए विस्तृत विद्युत प्रकाश व्यवस्था और यंत्रीकृत पर्दों की आवश्यकता होती है।
कठपुतली की पारंपरिक मंच व्यवस्था अत्यंत सरल और भ्रमणशील होती है, जिसे प्रायः दो चारपाइयों और रंगीन कपड़ों की सहायता से बनाया जाता है। धागों को छिपाने हेतु काली पृष्ठभूमि का प्रयोग किया जाता है। कथन I गलत है क्योंकि इस लोक नाट्य में किसी भी प्रकार की विस्तृत विद्युत प्रकाश व्यवस्था या यंत्रीकृत पर्दों की आवश्यकता नहीं होती है। यह कला अपनी सादगी और हस्तशिल्प पर आधारित है, जिसे कहीं भी सुलभता से बिना किसी जटिल यंत्र के प्रदर्शित किया जा सकता है।

64. (1) केवल I और II
कठपुतली प्रदर्शन के दौरान कलाकार की पत्नी मंच के पार्श्व में बैठकर ढोलक बजाती है और पात्रों की क्रियाओं की व्याख्या करने वाले लोक गीत गाती है। यह गायन दर्शकों को कथा से जोड़ने में सहायक होता है। कथन III गलत है क्योंकि सूत्रधार धागों के संचालन के समय स्वयं शास्त्रीय रागों का गायन नहीं करता है; उसकी मुख्य भूमिका धागा संचालन और ध्वनि प्रभाव उत्पन्न करने तक सीमित रहती है। संगीत और कथा वाचन का कार्य पार्श्व संगतकार द्वारा ही संपन्न किया जाता है।

65. (2) संगीत, नृत्य और कथात्मक कहानी का मिश्रण वाला एक लोक नाट्य।
राजस्थानी लोक परंपराओं के संदर्भ में 'ख्याल' शब्द का तात्पर्य एक ऐसी लोक नाट्य विधा से है जिसमें संगीत, नृत्य और कथात्मक कहानी का अनूठा मिश्रण होता है। यह मनोरंजन का एक अत्यंत लोकप्रिय माध्यम है जहाँ कलाकार पौराणिक, ऐतिहासिक और सामाजिक कथाओं का मंचन करते हैं। ख्याल की प्रस्तुति में काव्यात्मक संवादों और क्षेत्रीय लोक धुनों की प्रधानता होती है। विभिन्न क्षेत्रों में प्रचलित इसकी अनेक शैलियाँ राजस्थान की भाषाई विविधता और समृद्ध नाट्य परंपरा को स्पष्ट करती हैं।

66. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
शेखावाटी ख्याल और कुचामनी ख्याल अपनी संगीत संरचना और प्रस्तुतीकरण में एक-दूसरे से पर्याप्त भिन्नता रखते हैं। इस भिन्नता का मुख्य कारण यह है कि राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों ने अपने स्थानीय दर्शकों की विशिष्ट भाषाई और सांस्कृतिक रुचियों के अनुसार स्वतंत्र शैलियाँ या घराने विकसित किए। क्षेत्रीय प्रभाव के कारण ही प्रत्येक शैली के गायन और अभिनय में अपनी एक मौलिक पहचान उभरकर सामने आई। अतः स्थानीय जनसमूह की प्राथमिकताएं ही इन नाट्य विधाओं के विकास का मुख्य आधार रही हैं।

67. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान की विभिन्न ख्याल शैलियों के संस्थापकों में लच्छीराम का नाम कुचामनी ख्याल के लिए प्रसिद्ध है। नैनूराम ने शेखावाटी ख्याल के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। हेला शायर को दौसा क्षेत्र के हेला ख्याल का प्रवर्तक माना जाता है, जो अपनी लंबी पुकार के लिए जाना जाता है। नवाब अलीबख्श ने अलवर क्षेत्र में अलीबख्शी ख्याल को पहचान प्रदान की। यह वर्गीकरण राजस्थान के लोक नाट्य इतिहास में इन व्यक्तित्वों के रचनात्मक और नेतृत्वकारी योगदान को पूर्णतः स्पष्ट करता है।

68. (4) पुरुष अभिनेता ही महिला पात्रों की भूमिका भी निभाते हैं।
लच्छीराम द्वारा प्रवर्तित कुचामनी ख्याल की एक विशिष्ट विशेषता यह है कि इसमें महिला पात्रों की भूमिकाएं भी पुरुष अभिनेताओं द्वारा ही निभाई जाती हैं। यह परंपरा उस समय की सामाजिक व्यवस्था को दर्शाती है जहाँ मंच पर महिलाओं की भागीदारी सीमित थी। पुरुष कलाकार वेशभूषा और स्वर परिवर्तन के माध्यम से अत्यंत कुशलता से स्त्री पात्रों का जीवंत अभिनय करते हैं। इसके साथ ही, लोक भाषा का सरल प्रयोग और संगीत की प्रधानता इस शैली को जनसाधारण के बीच आज भी लोकप्रिय बनाए हुए है।

69. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
लालसोट क्षेत्र के हेला ख्याल की पहचान 'बम' या 'नगाड़ा' जैसे विशाल वाद्यों का प्रयोग है, जो प्रदर्शन में उत्साह भर देते हैं। इसके अतिरिक्त, इस नाट्य विधा की एक अनिवार्य विशेषता कलाकारों द्वारा दी जाने वाली लंबी पुकार है जिसे 'हेला' कहा जाता है। यह पुकार न केवल दर्शकों को आकर्षित करने का एक माध्यम है, बल्कि यह प्रदर्शन की शुरुआत का एक पारंपरिक संकेत भी है। ये दोनों ही तत्व मिलकर हेला ख्याल को उसकी विशिष्ट पहचान और क्षेत्रीय लोकप्रियता प्रदान करते हैं।

70. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
अलीबख्शी ख्याल की उत्पत्ति अलवर क्षेत्र में हुई और इसे नवाब अलीबख्श का संरक्षण प्राप्त था। यह अहीरवाटी बोली और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के तत्वों का एक सुंदर मिश्रण है। कथन IV गलत है क्योंकि इसकी विषयवस्तु ब्रिटिश अधिकारियों की कहानियों पर आधारित न होकर स्थानीय लोक कथाओं और पौराणिक प्रसंगों पर केंद्रित रही है। यह शैली मेवात क्षेत्र की भाषाई मिठास और संगीत की गहराई को संजोए हुए है, जो इसे अन्य क्षेत्रीय ख्यालों से पर्याप्त विशिष्ट और भिन्न बनाती हैं।

71. (4) सितार
राजस्थानी ख्याल लोक नाट्यों के पारंपरिक प्रदर्शनों में नगाड़ा, ढोलक और हारमोनियम जैसे वाद्यों का व्यापक प्रयोग किया जाता है, जो खुले मंचों हेतु उपयुक्त होते हैं। इसके विपरीत, सितार एक अत्यंत परिष्कृत शास्त्रीय तत वाद्य है जिसका उपयोग इन लोक विधाओं में सामान्यतः नहीं किया जाता है। ख्याल की प्रकृति लोक संगीत और सामूहिक गायन पर आधारित है, जहाँ सितार जैसे सूक्ष्म स्वर वाले वाद्य के स्थान पर उच्च ध्वनि वाले लोक वाद्यों को अधिक प्रधानता दी जाती है।

नृत्य को राष्ट्रीय मंचों पर प्रतिष्ठित करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। उनके द्वारा प्रज्वलित चरी को संतुलित करने की अद्भुत कला ने इस विधा को एक नई ऊंचाई प्रदान की। फलकू बाई का नाम आज चरी नृत्य के व्यापक प्रचार-प्रसार हेतु गौरव के साथ लिया जाता है।

32. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थानी कलाओं के प्रतिपादकों में गुलाबो सपेरा कालबेलिया नृत्य से और फलकू बाई चरी नृत्य से जुड़ी हैं। मांगी बाई ने तेरह ताली नृत्य के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई है और अल्लाह जिलाई बाई मांड गायन की विश्व प्रसिद्ध गायिका रही हैं। इन कलाकारों ने अपनी साधना से इन लोक विधाओं को जीवित रखा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरवान्वित किया। यह सूची राजस्थान की विभिन्न कलाओं और उनके शिखर प्रतिपादकों के योगदान को स्पष्ट करती है।

33. (2) अद्भुत शारीरिक कौतुक और संतुलन के करतब
भवाई नृत्य की सर्वाधिक विशिष्ट पहचान इसके अद्भुत शारीरिक कौतुक और संतुलन के हैरतअंगेज करतबों में निहित है। अन्य लोक नृत्यों की तुलना में इसमें कलाकारों की चपलता और एकाग्रता की कठिन परीक्षा होती है। नर्तक अपने सिर पर अनेक घड़ों को संतुलित करते हुए तलवार की धार, कांच के टुकड़ों या पीतल की थाली के किनारों पर नृत्य करते हैं। ये रोमांचकारी तत्व भवाई को राजस्थान की एक अद्वितीय और साहसिक लोक प्रदर्शन कला बनाते हैं।

34. (2) I, II और III
भवाई नृत्य में सिर पर 7 से 9 पात्रों का संतुलन और तलवार या कांच पर नृत्य करना इसकी मुख्य विशेषताएं हैं। नर्तक बिना संतुलन खोए अत्यंत तीव्र गति से पद-संचालन करते हैं, जो वर्षों के अभ्यास का परिणाम होता है। कथन IV गलत है क्योंकि यह बारां की सहरिया जनजाति का नृत्य नहीं है; अपितु यह मुख्य रूप से मेवाड़ क्षेत्र के भवाई समुदाय द्वारा किया जाने वाला एक व्यावसायिक प्रदर्शन है।

35. (3) वायु में प्रज्वलित मशालों के साथ करतब दिखाना
भवाई नृत्य में सिर पर घड़े रखकर थाली के किनारों, नंगी तलवार की धार और कांच के टुकड़ों पर संतुलन बनाना मुख्य क्रियाएं हैं। ये कृत्य कलाकार के पैर और सिर के मध्य के अद्भुत सामंजस्य को दर्शाते हैं। वायु में प्रज्वलित मशालों के साथ करतब दिखाना इस नृत्य का पारंपरिक हिस्सा नहीं माना जाता है। ऐसे अग्नि संबंधी करतब प्रायः जसनाथी संप्रदाय के अग्नि नृत्य जैसी अन्य विशिष्ट विधाओं की पहचान होते हैं।

36. (4) यह एक विशुद्ध रूप से धार्मिक नृत्य है जो केवल मंदिर के गर्भगृह के भीतर किया जाता है।
भवाई नृत्य की जड़ें गुजरात में मानी जाती हैं और यह मुख्य रूप से भवाई समुदाय द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। इसके संतुलन कौशल हेतु कठोर अभ्यास की आवश्यकता होती है। यह कथन गलत है कि यह केवल मंदिर के गर्भगृह में किया जाने वाला एक धार्मिक नृत्य है। वास्तव में, यह एक व्यावसायिक लोक कला है जो मेलों, उत्सवों और सार्वजनिक मंचों पर मनोरंजन हेतु प्रदर्शित की जाती है। इसकी प्रकृति रोमांच उत्पन्न करने वाली है।

37. (1) कथन I सही है और कथन II गलत है
भवाई नृत्य मुख्य रूप से शारीरिक चपलता और हैरतअंगेज संतुलन के प्रदर्शन पर केंद्रित होता है, न कि किसी लंबी कहानी पर। कथन II गलत है क्योंकि इसमें महिला और पुरुष दोनों ही संतुलन के करतब दिखाने वाले मुख्य कलाकार हो सकते हैं। यद्यपि अक्सर महिलाएं नृत्य करती हैं और पुरुष वाद्य बजाते हैं, किंतु पुरुष कलाकार भी सिर पर घड़े रखकर और तलवार पर चढ़कर समान कौशल का प्रदर्शन करते हैं।

38. (1) एक घड़ा → थाली का किनारा → कांच के टुकड़े → अनेक घड़े (7-9)
भवाई नृत्य के प्रदर्शन में जटिलता का स्तर क्रमिक रूप से बढ़ता है ताकि दर्शकों में रोमांच बना रहे। यह प्रक्रिया एक साधारण घड़े को संतुलित करने से प्रारंभ होती है, जिसके बाद थाली के तीखे किनारों पर पैर टिकाने का कठिन कार्य किया जाता है। इसके पश्चात कांच के टुकड़ों पर नृत्य करना और अधिक जोखिम भरा होता है। प्रदर्शन का चरमोत्कर्ष सिर पर एक साथ अनेक घड़ों (7-9) को संतुलित करते हुए इन सभी क्रियाओं को करने में निहित है।

39. (4) पखावज, ढोलक और झांझर जैसे ताल वाद्य
भवाई नृत्य के लिए संगीत संगति मुख्य रूप से पखावज, ढोलक और झांझर जैसे ताल वाद्यों पर आधारित होती है। ये वाद्य नृत्य की तीव्र लय और गति को नियंत्रित करते हैं, जो संतुलन बनाए रखने के लिए अत्यंत आवश्यक है। ढोलक की थाप नर्तक को कदम और संतुलन साधने में सहायता प्रदान करती है। इस विधा की रोमांचकारी प्रकृति के अनुकूल ताल वाद्यों का प्रयोग ही इसे प्रभावशाली प्रदर्शन बनाने में मुख्य भूमिका निभाता है।

40. (2) केवल V
भवाई नृत्य की विशेषताओं में अनेक घड़ों का संतुलन और तलवार की धार पर नृत्य सर्वविदित है। इसे मेवाड़ के शासकों द्वारा संरक्षण भी प्राप्त रहा है। कथन V पूर्णतः गलत है क्योंकि इस विधा के लिए किसी भी कलाकार को वर्षों के कठोर अभ्यास और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। तीखी वस्तुओं और कांच पर भारी वजन के साथ संतुलन साधना बिना अभ्यास के असंभव है। कलाकार का प्रत्येक कदम गहन साधना का परिणाम होता है।

41. (3) रामदेवजी
राजस्थान का तेरह ताली नृत्य एक प्रसिद्ध भक्तिपूर्ण प्रदर्शन है जो मुख्य रूप से लोक देवता रामदेवजी के प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए किया जाता है। रामदेवजी को सांप्रदायिक सद्भाव और सामाजिक समानता का प्रतीक माना जाता है। इस नृत्य का आयोजन विशेष रूप से रामदेवरा के मेले में होता है, जहाँ कामड़ जाति की महिलाएं अपनी आस्था को कला के माध्यम से व्यक्त करती हैं। यह रामदेवजी के भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण आध्यात्मिक मार्ग है।

करती है। दोनों पक्षों के कलाकार काव्यात्मक चर्चाओं के माध्यम से एक-दूसरे के समक्ष जटिल प्रश्न और उत्तर प्रस्तुत करते हैं। यह विधा शिव और शक्ति के संतुलन के माध्यम से जीवन के रहस्यों को लोक भाषा में व्यक्त करने का एक अनूठा माध्यम है, जो चित्तौड़गढ़ क्षेत्र में अत्यंत लोकप्रिय है।

82. (1) I, II और III
'तुर्रा' भगवान शिव का और 'कलंगी' देवी पार्वती का प्रतीक है। इस अनूठी परंपरा का सूत्रपात तुकनगीर और शाह अली नामक दो संतों ने किया था, जिन्हें उनके काव्यात्मक कौशल हेतु राजसी सम्मान प्राप्त हुआ था। कथन IV गलत है क्योंकि इस विधा में कलाकार मूक अभिनय नहीं करते; इसके विपरीत, यह पूर्णतः उच्च स्वर में गाए जाने वाले संवादों और काव्यात्मक द्वंद्व पर आधारित है। चंग की थाप पर कलाकारों के बीच चलने वाली यह बौद्धिक और संगीतमय चर्चा ही इस नाट्य की वास्तविक आत्मा और विशिष्ट पहचान है।

83. (3) पर्दा प्रथा (कलाकारों का घूंघट)
तुर्रा-कलंगी के पारंपरिक तत्वों में दंगल, माच और चंग जैसे वाद्यों का प्रयोग अनिवार्य है, जो इसकी मौलिकता को दर्शाते हैं। 'पर्दा प्रथा' या कलाकारों का घूंघट इस नाट्य विधा का हिस्सा नहीं है। यह एक सार्वजनिक और प्रतिस्पर्धी कला है जहाँ कलाकार बिना किसी घूंघट के खुले मंच पर अपनी काव्यात्मक प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। दंगल की प्रकृति ऐसी होती है जिसमें संवादों और भावों का स्पष्ट संप्रेषण आवश्यक है, अतः कलाकारों का परदे में रहना इस विधा के मूल स्वरूप और उसकी संवाद-प्रधान शैली के प्रतिकूल है।

84. (1) A, B, C, D
तुर्रा-कलंगी का व्यवस्थित प्रदर्शन एक निश्चित क्रम में संपन्न होता है। इसकी शुरुआत 'माच' अर्थात सुसज्जित रंगमंच की तैयारी के साथ होती है। इसके पश्चात आध्यात्मिक वातावरण निर्मित करने हेतु प्रारंभिक वंदना और भजनों का गायन किया जाता है। अगले चरण में एक पक्ष द्वारा काव्यात्मक छंदों के माध्यम से प्रतिद्वंद्वी से प्रश्न पूछे जाते हैं। अंत में, विरोधी पक्ष अत्यंत चतुराई और लय के साथ उन प्रश्नों का काव्यात्मक उत्तर देता है। यह क्रमबद्ध प्रक्रिया दंगल में निरंतरता बनाए रखती है और दर्शकों का उत्साह बना रहता है।

85. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
तुर्रा-कलंगी परंपरा में तुकनगीर ने शिव के प्रतीक 'तुर्रा' पक्ष का नेतृत्व किया, जबकि शाह अली ने पार्वती के प्रतीक 'कलंगी' पक्ष का प्रतिनिधित्व किया। 'माच' उस सुसज्जित और ऊंचे रंगमंच को कहते हैं जहाँ यह नाट्य संपन्न होता है। 'दंगल' वह काव्यात्मक प्रतियोगिता है जो दोनों पक्षों के बीच बौद्धिक और संगीतमय द्वंद्व के रूप में चलती है। ये सभी तत्व मिलकर इस विधा को एक व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करते हैं और इसके ऐतिहासिक उद्भव तथा दार्शनिक आधार को कलाकारों के माध्यम से आज भी स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं।

86. (2) दर्शक काव्यात्मक चर्चाओं में किसी पक्ष का समर्थन कर भाग लेते हैं।
तुर्रा-कलंगी का एक अद्वितीय पक्ष यह है कि इसमें दर्शक केवल मौन श्रोता नहीं होते, बल्कि वे काव्यात्मक चर्चाओं में सक्रिय रूप से किसी एक पक्ष का समर्थन कर भाग लेते हैं। दर्शक अपनी पसंद के अनुसार शिव (तुर्रा) या पार्वती (कलंगी) पक्ष का उत्साहवर्धन करते हैं और उनकी जीत की कामना करते हैं। यह जन-भागीदारी दंगल के रोमांच को बढ़ा देती है। अन्य लोक नाट्यों की तुलना में दर्शकों का यह सीधा जुड़ाव और भावनात्मक निवेश ही तुर्रा-कलंगी को एक जीवंत और प्रभावशाली सामुदायिक उत्सव के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

87. (4) चित्तौड़गढ़-घोसुंडा क्षेत्र
तुर्रा-कलंगी परंपरा को राजस्थान के चित्तौड़गढ़ और घोसुंडा क्षेत्र में सर्वाधिक संरक्षण और लोकप्रियता प्राप्त हुई है। यद्यपि इसकी जड़ें अन्यत्र थीं, किंतु मेवाड़ की धरती पर आकर इस विधा ने अपना एक विशिष्ट स्वरूप विकसित किया। घोसुंडा आज भी इस कला का एक प्रमुख केंद्र माना जाता है जहाँ वार्षिक आधार पर दंगलों का आयोजन होता है। क्षेत्रीय शासकों और कलाकारों के सहयोग से यह विधा इस अंचल की सांस्कृतिक पहचान का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुकी है, जो आधुनिक समय में भी अपनी परंपराओं को संजोए हुए है।

88. (2) केवल V
तुर्रा-कलंगी में केसरिया और हरे वस्त्रों का प्रतीकात्मक महत्व है, चंग वाद्य का प्रयोग होता है और इसके छंदों को 'गम्मत' कहा जाता है। कथन V पूर्णतः गलत है क्योंकि इस विधा की उत्पत्ति 20वीं शताब्दी में जयपुर में नहीं हुई थी। वास्तव में, यह 400 वर्ष से भी अधिक प्राचीन परंपरा है जिसका विकास राजस्थान में चित्तौड़गढ़ के आसपास के क्षेत्रों में हुआ। इसकी ऐतिहासिक जड़ें मध्य प्रदेश के चंदेरी से जुड़ी हैं। अतः जयपुर में इसकी हालिया उत्पत्ति का दावा ऐतिहासिक तथ्यों और इसके क्षेत्रीय प्रसार के पूर्णतः विरुद्ध है।

89. (3) भानुजी
कथक के जयपुर घराने के प्रवर्तक और संस्थापक भानुजी माने जाते हैं। उन्होंने इस शास्त्रीय नृत्य शैली में शिव के तांडव तत्वों और जटिल लयबद्धता का समावेश किया। जयपुर घराना अपनी तीव्र गति के चक्करों, कठिन पद-संचालन और तकनीकी सूक्ष्मता के लिए विश्व विख्यात है। पंडित बिरजू महाराज और लच्छू महाराज लखनऊ घराने से संबंधित हैं, जबकि भानुजी की वंश परंपरा ने जयपुर शैली को एक स्वतंत्र और ओजस्वी पहचान प्रदान की। यह घराना आज भी कथक की शुद्धता और तकनीकी श्रेष्ठता को बनाए रखने के लिए जाना जाता है।

90. (1) मेवाती घराने की स्थापना उस्ताद घग्गे खुदाबख्श ने की थी।
मेवाती घराने के संस्थापक उस्ताद घग्गे खुदाबख्श थे, यह कथन गलत है; वास्तव में मेवाती घराने की स्थापना उस्ताद घग्गे नजीर खां ने की थी। अन्य तथ्य सही हैं: डागर घराना ध्रुपद गायन हेतु समर्पित है, सेनिया घराना अपनी जड़ें तानसेन से जोड़ता है और जयपुर-अतरौली घराना दुर्लभ रागों के लिए जाना जाता है। राजस्थान के संगीत इतिहास में घरानों और उनके

जनजाति की महिलाओं का नृत्य है, जबकि 'झूमरिया' विशेष रूप से अविवाहित बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। 'वालर' गरासिया जनजाति का प्रसिद्ध नृत्य है जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों भाग लेते हैं। ये विभिन्न प्रकार राजस्थान की समृद्ध जनजातीय और सामाजिक सांस्कृतिक विविधता को प्रतिबिंबित करते हैं, जो संगीत और नृत्य के माध्यम से व्यक्त होती है।

11. (3) I, II और IV
घूमर नृत्य की उत्पत्ति भील समुदाय में हुई थी, जिसे बाद में राजपूत राजघरानों ने अपनाकर परिष्कृत किया। यह नृत्य मुख्य रूप से गणगौर और तीज जैसे महत्वपूर्ण त्योहारों पर किया जाता है। इसमें वाद्यों का प्रयोग अनिवार्य है; वास्तव में ढोल और नगाड़े की थाप इसकी मुख्य संगत है। यह नृत्य राजस्थानी संस्कृति की गरिमा और महिलाओं के सौंदर्यपूर्ण कलात्मक कौशल का प्रतीक है, जिसने विश्व स्तर पर ख्याति प्राप्त की है।

12. (2) देवी गौरी (पार्वती)
गणगौर उत्सव पर किया जाने वाला घूमर नृत्य मुख्य रूप से देवी गौरी अर्थात पार्वती की आराधना को समर्पित है। यह पर्व अखंड सौभाग्य और दांपत्य सुख की कामना हेतु मनाया जाता है, जहाँ महिलाएं देवी का पूजन कर आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। इस अवसर पर नृत्य के माध्यम से भक्ति और हर्षोल्लास की अभिव्यक्ति की जाती है। यह परंपरा राजस्थान की धार्मिक आस्था और सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग है।

13. (3) रावणहत्था
घूमर नृत्य के साथ पारंपरिक संगीत में मुख्य रूप से ढोल, नगाड़ा और शहनाई जैसे वाद्यों का प्रयोग किया जाता है, जो नृत्य की लय निर्धारित करते हैं। इसके विपरीत, रावणहत्था एक तत वाद्य है जिसका उपयोग मुख्य रूप से भोपा समुदाय द्वारा पाबूजी की फड़ वाचन हेतु किया जाता है। अतः रावणहत्था घूमर प्रदर्शन के लिए प्रयुक्त होने वाले पारंपरिक वाद्यों में सम्मिलित नहीं है। घूमर में ताल और सुर का समन्वय महत्वपूर्ण होता है।

14. (4) यह विशेष रूप से पुरुष प्रधान शारीरिक कौतुक वाला नृत्य है।
घूमर महिलाओं द्वारा किया जाने वाला एक गरिमामय नृत्य है, जिसमें हाथों के सुंदर संचालन और घाघरे के घेरे का विशेष महत्व होता है। इसमें महिलाएं पारंपरिक रूप से घूंघट निकालकर नृत्य करती हैं। यह पुरुष प्रधान शारीरिक कौतुक वाला नृत्य नहीं है, क्योंकि इसमें शक्ति प्रदर्शन के स्थान पर लयबद्धता और शालीनता पर बल दिया जाता है। ऐसे कौतुक वाले तत्व भवाई जैसी अन्य नृत्य विधाओं की विशेषता होते हैं।

15. (1) महलों में राजपूत राजघरानों द्वारा इसका परिष्करण।
घूमर का सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में उत्थान मुख्य रूप से राजपूत राजघरानों द्वारा महलों में इसके परिष्करण का परिणाम था। यद्यपि इसकी जड़ें जनजातीय परंपराओं में थीं, किंतु राजसी संरक्षण मिलने के बाद इसमें शालीनता और कलात्मक सूक्ष्मता का समावेश हुआ। महलों के भीतर 'जनाना' महफिलों में इस नृत्य को विशिष्ट पहचान मिली, जिसने इसे स्थानीय लोक नृत्य से ऊपर उठाकर राजस्थान की गौरवशाली सांस्कृतिक विरासत का मुख्य स्तंभ बना दिया।

16. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
घूमर की विशेषता गरिमामय संचालन है, जो आक्रामक उछाल के स्थान पर समन्वय पर बल देता है। ऐतिहासिक रूप से इस शैली का विकास पर्दा प्रथा की सीमाओं और महलों के सीमित स्थान के भीतर हुआ था। महिलाओं के लिए सामाजिक मर्यादाओं का पालन करते हुए अपनी कला व्यक्त करना आवश्यक था, जिससे इस नृत्य में शालीनता समाहित हुई। अतः तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था ने प्रत्यक्ष रूप से इस नृत्य की तकनीकी और सौंदर्यशास्त्रीय बनावट को प्रभावित किया है।

17. (2) सर्प ग्रहण (सपेरा)
विश्व प्रसिद्ध कालबेलिया नृत्य पारंपरिक रूप से सपेरा समुदाय द्वारा किया जाता है, जिनका मुख्य व्यवसाय सांपों को पकड़ना रहा है। इस नृत्य की मुद्राओं में सांप जैसी लचक और फुर्ती स्पष्ट रूप से दिखाई देती है, जो उनके पारंपरिक जीवन ढंग को प्रतिबिंबित करती है। वर्तमान में वन्यजीव संरक्षण कानूनों के कारण उनके व्यवसाय में परिवर्तन आया है, किंतु उनकी यह कला विधा आज भी वैश्विक स्तर पर राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान बनी हुई है।

18. (2) केवल IV
कालबेलिया नृत्य में महिलाएं चांदी की गोटा-पत्ती वाले काले घाघरे पहनकर लचीला और सर्पिलाकार शारीरिक संचालन करती हैं। पुंगी इस प्रदर्शन का मुख्य वाद्य यंत्र है और इसे 2010 में यूनेस्को द्वारा अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्रदान की गई थी। कथन IV गलत है क्योंकि इस परंपरा में नृत्य केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है, जबकि पुरुष कलाकार वाद्य यंत्र बजाते हैं। यह लिंग-आधारित कार्य विभाजन इस लोक कला की मौलिक विशेषता है।

19. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
कालबेलिया समुदाय के गीत और संगीत परंपराएं पूर्णतः मौखिक रूप से हस्तांतरित होती हैं। इसके लिए कोई लिखित पाठ या औपचारिक नियमावली विद्यमान नहीं है। कलाकार बचपन से ही अपने पूर्वजों को देखकर इस जटिल कला को आत्मसात करते हैं। यह मौखिक परंपरा न केवल इस कला की मौलिकता को सुरक्षित रखती है, बल्कि कलाकारों की अद्भुत सृजनात्मकता को भी प्रदर्शित करती है, जो बिना किसी आधुनिक दस्तावेजीकरण के आज भी जीवित है।

20. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान के नृत्य अपनी विशिष्ट पहचान हेतु जाने जाते हैं। कालबेलिया नृत्य में सर्पिलाकार गति की जाती है, जबकि घूमर चक्राकार गति के लिए प्रसिद्ध है। भवाई नृत्य में सिर पर अनेक घड़ों को संतुलित कर शारीरिक कौशल दिखाया जाता है। तेरह ताली नृत्य की मुख्य विशेषता शरीर से बंधे मंजीरों का लयबद्ध आघात है। ये तत्व राजस्थान की सांस्कृतिक विविधता को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गौरव प्रदान करते हैं।

बीकानेर और जोधपुर के राजदरबारों में हुआ, जहाँ शासकों ने इसे विशेष संरक्षण प्रदान किया। ये दोनों ही कथन मांड की ऐतिहासिक और संगीतशास्त्रीय स्थिति को सटीक रूप से स्पष्ट करते हैं। यही कारण है कि मांड आज भी अपनी राजसी गरिमा और लोक माधुर्य के लिए विश्व प्रसिद्ध है।

100. (4) विरही युगल के मध्य संदेश ले जाने वाला संदेशवाहक।
राजस्थानी लोक परंपराओं में 'कुरजां' एक प्रवासी पक्षी है जो लोक गीतों में विरही युगल के मध्य संदेश ले जाने वाले एक संदेशवाहक का प्रतीक माना जाता है। जब पति आजीविका हेतु प्रदेश चला जाता है, तो पीछे रह गई पत्नी कुरजां पक्षी के माध्यम से अपनी विरह वेदना और प्रेम का संदेश अपने प्रियजन तक पहुँचाने की कामना करती है। यह पक्षी मरुस्थलीय गीतों में आशा और संवाद का एक अत्यंत भावुक माध्यम है। विरह के इन गीतों में कुरजां की उपस्थिति राजस्थान की संवेदनशीलता और प्रकृति के साथ मानवीय जुड़ाव को दर्शाती है।

101. (3) गुलाबो सपेरा
अल्लाह जिलाई बाई, गवरी देवी और मांगी बाई आर्या राजस्थान की मांड गायन शैली की प्रख्यात गायिकाएं रही हैं, जिन्होंने इस विधा को वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित किया। इसके विपरीत, गुलाबो सपेरा इस सूची में बेमेल हैं क्योंकि उनका मुख्य योगदान कालबेलिया नृत्य के क्षेत्र में रहा है, न कि मांड गायन में। यद्यपि वे राजस्थान की एक अत्यंत सम्मानित कलाकार हैं, किंतु उनकी विशेषज्ञता सपेरा समुदाय के पारंपरिक नृत्य और उसकी अंतरराष्ट्रीय पहचान से जुड़ी है। अतः मांड गायिकी के संदर्भ में उनका नाम अन्य गायिकाओं की तुलना में पूर्णतः असंगत है।

102. (2) ये मरुस्थलीय जीवन और जल की महत्ता को दर्शाते हैं।
'पणिहारी' गीत राजस्थान के लोक संगीत का एक अनिवार्य हिस्सा हैं, जो मरुस्थलीय जीवन की कठिनाइयों और जल की महत्ता को कलात्मक रूप से व्यक्त करते हैं। ये गीत उन महिलाओं की भावनाओं को दर्शाते हैं जो मीलों पैदल चलकर पानी लाने का श्रम साध्य कार्य करती हैं। इन गीतों में केवल जल संग्रहण ही नहीं, बल्कि दांपत्य प्रेम और पारिवारिक जीवन के प्रसंग भी समाहित होते हैं। यह गायन परंपरा स्पष्ट करती है कि किस प्रकार एक प्राकृतिक संसाधन ग्रामीण समाज की संस्कृति, गीतों और उनकी सामूहिक चेतना का मुख्य केंद्र बिंदु बना हुआ है।

103. (4) यह युद्धोपरांत शोक की अवधि के दौरान गाया जाता है।
मेवात क्षेत्र में 'हिचकी' गीत प्रियजन की स्मृतियों और विरह की भावनाओं को व्यक्त करने वाला एक अत्यंत भावप्रधान लोक गीत है। लोक मान्यता के अनुसार जब कोई याद करता है तो हिचकी आती है, इसी भाव को आधार बनाकर ये गीत गाए जाते हैं। कथन IV गलत है क्योंकि हिचकी गीत युद्धोपरांत शोक की अवधि के दौरान नहीं गाया जाता है। शोक के अवसरों के लिए राजस्थान में अन्य विशिष्ट गायन परंपराएं प्रचलित हैं। यह गीत मुख्य रूप से प्रेम और कोमल भावनात्मक जुड़ाव की कोमल अभिव्यक्तियों तक ही सीमित रहता है।

104. (1) कामायचा और सिंधी सारंगी के साथ सशक्त गायन प्रस्तुति।
लंगा और मांगणियार संगीत परंपराओं को वैश्विक ख्याति मिलने का मुख्य कारण उनकी सशक्त गायकी और कामायचा तथा सिंधी सारंगी जैसे अनूठे वाद्यों का अद्भुत समन्वय है। इन समुदायों की संगीत साधना पीढ़ियों पुरानी है, जिसमें तकनीकी सूक्ष्मता और भावात्मक गहराई का दुर्लभ मेल मिलता है। उनके द्वारा प्रस्तुत मरुस्थलीय धुनों और जटिल तालों ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया है। यह कला विधा अपनी मौलिकता को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक मंचों पर भी उतनी ही प्रभावशाली है, जिसके कारण इसे विश्व संगीत में विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

105. (3) तत वाद्य
'रावणहत्था' राजस्थान के प्राचीनतम वाद्यों में से एक है जिसे 'तत वाद्य' अर्थात तार वाले वाद्य यंत्र की श्रेणी में वर्गीकृत किया गया है। यह नारियल के खोल और बाँस की सहायता से निर्मित होता है, जिसे गज (धनुष) की सहायता से बजाया जाता है। इसका प्रयोग मुख्य रूप से भोपा समुदाय द्वारा पाबूजी की फड़ वाचन और कथा गायन के दौरान किया जाता है। इसकी विशिष्ट गूँज और स्वर लहरियाँ राजस्थान की लोक कथाओं को एक आध्यात्मिक और गंभीर आधार प्रदान करती हैं, जो इसे मरुस्थलीय संगीत का एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक स्तंभ बनाती हैं।

106. (1) मोरचंग
दांतों के मध्य रखकर बजाया जाने वाला वह लघु धातु वाद्य 'मोरचंग' कहलाता है, जिसमें मुख की गुहिका एक अनुनादक का कार्य करती है। वादक अपनी श्वास और मुख के आकार में परिवर्तन कर इसकी ध्वनियों को नियंत्रित करता है। यह राजस्थान के चरवाहा और खानाबदोश समुदायों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है। मोरचंग से निकलने वाली लयबद्ध और अनूठी ध्वनियां लोक संगीत में एक विशिष्ट प्रभाव उत्पन्न करती हैं। यह यंत्र अपनी सादगी के बावजूद बजाने के लिए अत्यंत कौशल और नियंत्रण की मांग करता है, जो इसे एक अनूठा वाद्य बनाता है।

107. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
अलगोजा एक द्वि-बांसुरी वाला सुषिर वाद्य है जो राजस्थान के चरवाहा समुदायों और ग्रामीण अंचलों में अत्यंत प्रचलित है। यह दो बांसुरियों को एक साथ फूंक मारकर बजाया जाता है। इसके साथ ही, वादक ध्वनि के निरंतर प्रवाह को बनाए रखने के लिए सतत श्वसन तकनीक का अत्यंत कुशलता से प्रयोग करता है। ये दोनों ही तथ्य अलगोजा वादन की मौलिक विशेषताओं को स्पष्ट करते हैं। यह वाद्य यंत्र अपनी गूँजती हुई सुरीली आवाजों के लिए जाना जाता है, जो मरुस्थल के शांत वातावरण में एक विशेष आकर्षण और संगीतमय माधुर्य भर देता है।

108. (2) मांगणियार
'कामायचा' एक अत्यंत परिष्कृत तत वाद्य है जो मुख्य रूप से पश्चिमी राजस्थान के मांगणियार समुदाय की पहचान है। यह आम की लकड़ी से निर्मित होता है और इसके निचले हिस्से पर

चर्म पत्र मढ़ा होता है। इसकी गंभीर और गूँजती हुई आवाज मांगणियार गायन की भावप्रवणता को द्विगुणित कर देती है। इस वाद्य यंत्र का निर्माण और इसे बजाने की जटिल तकनीक मांगणियार कलाकारों के उच्च स्तरीय संगीत कौशल का प्रमाण है। कामायचा न केवल एक वाद्य है, बल्कि यह इस समुदाय की सदियों पुरानी सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत का जीवंत प्रतीक भी है।

109. (3) खड़ताल - सुघड़ काष्ठ खंडों के दो जोड़े जिन्हें परस्पर टकराया जाता है।
'खड़ताल' का वर्णन दो जोड़ी सुघड़ काष्ठ खंडों के रूप में पूर्णतः सही है, जिन्हें हाथों की उंगलियों के बीच फंसाकर परस्पर टकराया जाता है। यह एक अत्यंत प्रभावशाली ताल वाद्य है जिसका प्रयोग मांगणियार कलाकार तीव्र गति से लय उत्पन्न करने हेतु करते हैं। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि नड एक सुषिर वाद्य है और मोरचंग एक लघु धातु वाद्य है। खड़ताल की थाप और कलाकारों की फुर्ती संगीत में एक अद्भुत ऊर्जा भर देती है। अतः वाद्यों के संरचनात्मक विवरण के आधार पर खड़ताल वाला युग्म ही पूर्णतः सटीक और संगत है।

110. (4) भपंग
'सुषिर वाद्य' वे होते हैं जो फूंक मारकर बजाए जाते हैं, जैसे बांकिया, पुंगी और सतारा। सूची में 'भपंग' इस श्रेणी से संबंधित नहीं है क्योंकि यह एक 'तत वाद्य' है। भपंग मुख्य रूप से मेवात क्षेत्र के जोगियों द्वारा बजाया जाता है, जिसमें लौकी के खोल पर मढ़े चर्म और एक तार का प्रयोग होता है। इसे उंगलियों से झंकृत कर विभिन्न ध्वनियां निकाली जाती हैं। अतः अपनी कार्यप्रणाली के आधार पर भपंग वायु वाद्यों की श्रेणी से बाहर है और एक विशिष्ट लयबद्ध तार वाद्य के रूप में अपनी स्वतंत्र पहचान रखता है।

111. (1) लंगा समुदाय हेतु अनुनादी तारों वाला एक तत वाद्य।
पश्चिमी राजस्थान में प्रचलित 'सिंधी सारंगी' लंगा समुदाय का एक अत्यंत महत्वपूर्ण तत वाद्य है। यह एक गज से बजाया जाने वाला तार वाद्य है जिसमें मुख्य तारों के साथ कई अनुनादी तार भी होते हैं, जो ध्वनि में गंभीरता और गूँज उत्पन्न करते हैं। यह शास्त्रीय सारंगी की तुलना में थोड़ी भिन्न होती है और लंगा गायकी की मिठास को और अधिक निखारती है। अपनी समृद्ध स्वर लहरियों के कारण यह वाद्य यंत्र मरुस्थलीय संगीत की मधुरता और लंगा कलाकारों के पारंपरिक संगीत ज्ञान का एक सशक्त और गौरवशाली प्रतीक माना जाता है।

112. (2) रावणहत्था
ध्वनि उत्पादन की विधि के आधार पर ढोलक, नगाड़ा और चंग 'अवनद्ध' वाद्यों की श्रेणी में आते हैं, जिन्हें चमड़े से मढ़े होने के कारण आघात करके बजाया जाता है। इसके विपरीत, 'रावणहत्था' एक 'तत वाद्य' है जिसमें तारों के घर्षण या उन्हें झंकृत करने से स्वर उत्पन्न होते हैं। जहाँ प्रथम तीन वाद्य केवल लय और ताल प्रदान करते हैं, वहीं रावणहत्था एक मधुर स्वर प्रधान वाद्य है। अतः वर्गीकरण की दृष्टि से रावणहत्था अन्य तीन ताल वाद्यों से पूर्णतः भिन्न है, क्योंकि इसके संगीत का आधार तार और उनकी गूँज है।

113. (2) फड़ (चित्रांकित स्क्रॉल)
राजस्थान में भोपा और भोपी द्वारा प्रस्तुत पारंपरिक कथा गायन 'फड़' कला के दृश्य प्रदर्शन के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। फड़ कपड़े पर बनी वह विशाल चित्रकारी है जिसमें लोक देवताओं की जीवन गाथाओं का विस्तृत चित्रण होता है। प्रदर्शन के समय भोपा गायन और वादन करता है, जबकि भोपी दीपक की सहायता से फड़ के संबंधित चित्रों को आलोकित करती है। यह अनूठी विधा चित्रकला, संगीत और मौखिक साहित्य का एक जीवंत संगम है, जो सदियों से ग्रामीण अंचलों में धार्मिक और सांस्कृतिक मूल्यों के प्रसार का साधन रही है।

114. (1) भोपा गायन करता है जबकि भोपी फड़ के दृश्यों को आलोकित करती है।
भोपा और भोपी की पारंपरिक प्रदर्शन शैली में दोनों की भूमिकाएं अत्यंत सुव्यवस्थित होती हैं। भोपा मुख्य रूप से रावणहत्था या जंतर बजाते हुए लोक देवता की वीर गाथाओं का गायन करता है। वहीं भोपी का मुख्य कार्य प्रदर्शन के दौरान एक दीपक लेकर फड़ के उन विशिष्ट दृश्यों को आलोकित करना होता है जिनका वर्णन भोपा अपने गीतों में कर रहा होता है। यह सामंजस्य दर्शकों को रात्रि के समय कथा के उतार-चढ़ाव और चित्रों के मध्य संबंध को स्पष्ट रूप से समझने में सहायता करता है, जिससे यह प्रदर्शन एक जीवंत अनुभव बन जाता है।

115. (3) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
पाबूजी की फड़ का वाचन पारंपरिक रूप से थोरी या नायक समुदाय के भोपाओं द्वारा किया जाता है, जो इस लोक गाथा के मुख्य संरक्षक रहे हैं। इसके साथ ही, यह भी सत्य है कि भोपा प्रदर्शन के दौरान 'रावणहत्था' नामक तत वाद्य का ही प्रयोग करता है, जो इस विधा की अनिवार्य पहचान है। ये दोनों ही कथन पाबूजी की फड़ की प्रस्तुति और इसकी सांस्कृतिक विशिष्टता को सटीक रूप से परिभाषित करते हैं। रावणहत्था की गूँज और भोपा का सस्वर वाचन मिलकर राजस्थान की इस गौरवशाली वीर गाथा को जनमानस के बीच अत्यंत प्रभावशाली बनाते हैं।

116. (4) जंतर
देवनारायण जी की फड़ का वाचन गुर्जर भोपाओं द्वारा 'जंतर' नामक विशिष्ट वाद्य यंत्र के साथ किया जाता है। जंतर एक प्राचीन तत वाद्य है जिसमें दो बड़े तूंबे होते हैं और इसे बजाने की अपनी एक विशेष शैली है। यह वाद्य यंत्र देवनारायण जी की महागाथा के लिए अनिवार्य माना जाता है और इसकी गूँज भक्तिपूर्ण वातावरण निर्मित करती है। पाबूजी की फड़ में प्रयुक्त होने वाले रावणहत्था के स्थान पर यहाँ जंतर का प्रयोग इस धार्मिक परंपरा की अपनी एक स्वतंत्र और ऐतिहासिक पहचान को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

117. (3) जब कोई फड़ जीर्ण-शीर्ण हो जाती है, तो उसे घरेलू अपशिष्ट में फेंक दिया जाता है।
फड़ को अत्यंत पवित्र माना जाता है और इसके प्रदर्शन प्रायः रात्रि में होते हैं जो सुबह तक चलते हैं। कथन III पूर्णतः गलत है क्योंकि जीर्ण-शीर्ण होने पर फड़ को कभी भी कचरे में नहीं फेंका जाता है। इसकी पवित्रता बनाए रखने हेतु इसे 'ठंडी

करना' नामक धार्मिक अनुष्ठान के माध्यम से किसी पवित्र जल स्रोत, जैसे पुष्कर झील, में विसर्जित किया जाता है। यह परंपरा लोक देवताओं के प्रति अगाध श्रद्धा और कलात्मक वस्तुओं के सम्मानपूर्ण निस्तारण की राजस्थानी संस्कृति की गहरी समझ को प्रदर्शित करती है।

118. (2) स्थायी मंदिरों के अभाव वाले पशुपालक समाजों हेतु सचल मंदिरों के रूप में कार्य करना।
ग्राम-ग्राम भ्रमण करने वाली भोपा-भोपी परंपरा की ऐतिहासिक जड़ें राजस्थान के पशुपालक समाज की आवश्यकताओं में निहित हैं। मरुस्थल के गतिशील समुदायों के पास हमेशा स्थायी मंदिरों की सुविधा नहीं होती थी, अतः यह सचल फड़ परंपरा 'चलते-फिरते मंदिर' के रूप में कार्य करती थी। कलाकार अपने साथ लोक देवताओं के सचित्र वृत्तांत ले जाते थे, जिससे लोग जहाँ भी हों, वे भक्ति और धार्मिक कथाओं से जुड़ सकें। यह व्यवस्था न केवल धर्म के प्रसार का माध्यम थी, बल्कि इसने उन क्षेत्रों में भी सांस्कृतिक चेतना को जीवित रखा जहाँ स्थायी ढांचा विरल था।

119. (4) करणी माता
राजस्थान के लोक देवताओं में पाबूजी, देवनारायण जी और रामदेवजी की अपनी विशिष्ट और सुव्यवस्थित फड़ वाचन परंपराएं एवं समर्पित भोपा गायक हैं। इसके विपरीत, करणी माता की ऐसी कोई पारंपरिक फड़ या विशिष्ट भोपा गायन पद्धति प्रचलित नहीं है। करणी माता की आराधना मुख्य रूप से मंदिरों में पूजा-अर्चना और भजनों के माध्यम से की जाती है। फड़ वाचन की विधा मुख्य रूप से उन नायक-देवताओं से जुड़ी है जिनकी गाथाएं वीर रस और ऐतिहासिक वीरता के प्रसंगों से ओत-प्रोत हैं। अतः करणी माता इस चित्रांकित कथा वाचन परंपरा का हिस्सा नहीं हैं।

120. (1) दर्शकों का ध्यान विशिष्ट प्रसंगों पर केंद्रित करना।
रात्रि के समय फड़ को एक-एक खंड करके आलोकित करने का मुख्य उद्देश्य दर्शकों का ध्यान कथा के विशिष्ट प्रसंगों और दृश्यों पर केंद्रित करना है। जब भोपा किसी विशेष घटना का वर्णन गाकर करता है, तो भोपी उसी समय उस चित्र पर प्रकाश डालती है। यह तकनीक अंधकार के मध्य एक 'स्पॉटलाइट' की तरह कार्य करती है, जिससे दर्शक मौखिक कहानी और दृश्य चित्रों के बीच सहजता से संबंध स्थापित कर पाते हैं। यह प्रविधि न केवल प्रदर्शन को प्रभावशाली बनाती है, बल्कि विस्तृत फड़ के जटिल दृश्यों को क्रमबद्ध तरीके से समझने में सहायता करती है।

अध्याय 14

राजस्थान की भाषा एवं साहित्य

1. राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति मुख्य रूप से निम्नलिखित में से किस अपभ्रंश से मानी जाती है?
   (1) मागधी अपभ्रंश
   (2) शौरसेनी (गुर्जरी) अपभ्रंश
   (3) महाराष्ट्री अपभ्रंश
   (4) पैशाची अपभ्रंश
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

2. किस विद्वान ने सर्वप्रथम 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में राजस्थान की बोलियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया था?
   (1) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन
   (2) एल. पी. टेसिटोरी
   (3) मोतीलाल मेनारिया
   (4) सुनीतिकुमार चटर्जी
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

3. निम्नलिखित में से कौन सा कथन राजस्थानी और गुजराती के मध्य संबंध का सटीक वर्णन करता है?
   (1) दोनों की उत्पत्ति प्राकृत साहित्य की पृथक शाखाओं से स्वतंत्र रूप से हुई।
   (2) राजस्थानी का विकास आधुनिक गुजराती बोलियों के प्रत्यक्ष वंशज के रूप में हुआ।
   (3) दोनों की उत्पत्ति एक ही स्रोत 'पुरानी पश्चिमी राजस्थानी' (मरु-गुर्जर) से हुई है।
   (4) गुजराती का विकास डिंगल से हुआ जबकि राजस्थानी का विकास पिंगल रूपों से हुआ।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

4. मारवाड़ी और गुजराती के मिश्रण से विकसित वह साहित्यिक शैली, जिसका प्रयोग मुख्य रूप से राजस्थान के चारणों द्वारा किया जाता था, किस नाम से जानी जाती है?
   (1) पिंगल
   (2) अपभ्रंश
   (3) संस्कृतनिष्ठ हिंदी
   (4) डिंगल
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

5. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।
   सूची-I: (विद्वान)
   A. जॉर्ज ग्रियर्सन
   B. एल.पी. टेसिटोरी
   C. के.एम. मुंशी
   D. सुनीतिकुमार चटर्जी
   सूची-II: (राजस्थानी की उत्पत्ति का सिद्धांत)
   i. शौरसेनी अपभ्रंश
   ii. गुर्जरी अपभ्रंश
   iii. नागरी अपभ्रंश
   iv. सौराष्ट्री अपभ्रंश
   (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
   (2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
   (3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
   (4) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

6. निम्नलिखित में से कौन सी उप-बोली मारवाड़ी के अंतर्गत नहीं आती है?
   (1) गोडवाड़ी
   (2) जग्रौती
   (3) मेवाड़ी
   (4) धाटकी
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

7. मुख्य रूप से डूंगरपुर और बांसवाड़ा में बोली जाने वाली वागड़ी बोली को जॉर्ज ग्रियर्सन ने किस श्रेणी में रखा था?
   (1) मालवी बोली
   (2) अहीरवाटी बोली
   (3) ब्रज बोली
   (4) भीली बोली
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

8. राजस्थानी साहित्य में डिंगल और पिंगल के मध्य मूल अंतर क्या है?
   (1) डिंगल मारवाड़ी प्रभावित पश्चिमी शैली है, जबकि पिंगल ब्रज प्रभावित पूर्वी शैली है।
   (2) डिंगल मुख्य रूप से ब्रज भाषा से प्रभावित है, जबकि पिंगल शुद्ध मारवाड़ी है।
   (3) डिंगल का प्रयोग केवल जैन मुनियों द्वारा किया जाता था, जबकि पिंगल चारणों की शैली थी।
   (4) डिंगल की रचना पूर्णतः गद्य में है, जबकि पिंगल की रचना केवल पद्य में है।
   (5) अनुत्तरित प्रश्न

9. चंदबरदाई द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' किस साहित्यिक शैली में लिखा गया है?

(1) शुद्ध डिंगल
(2) मेवाड़ी
(3) पिंगल
(4) संस्कृत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

10. मेवाड़ी बोली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह मुख्य रूप से उदयपुर, भीलवाड़ा और चित्तौड़गढ़ जिलों में बोली जाती है।
II. महाराणा कुंभा के नाटकों में प्रायः इस बोली का प्रयोग मिलता है।
III. इसकी कोई उप-बोली नहीं है और यह संपूर्ण क्षेत्र में एक समान है।

उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

11. ऐतिहासिक ग्रंथ 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' की रचना निम्नलिखित में से किसके द्वारा की गई थी?

(1) दुरसा आढ़ा
(2) सूर्यमल मिश्रण
(3) बांकीदास
(4) पृथ्वीराज राठौड़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

12. ढूँढाड़ी बोली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. यह मुख्य रूप से जयपुर, दौसा और टोंक क्षेत्रों में प्रचलित है।
II. दादू पंथ का अधिकांश साहित्य इसी बोली में रचा गया है।
III. इसे स्थानीय स्तर पर झाड़शाही के नाम से भी जाना जाता है।
IV. इस पर सिंधी भाषा का गहरा ध्वन्यात्मक प्रभाव है।

उपर्युक्त में से कौन सा कथन असत्य है?

(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) केवल IV
(4) II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

13. चारण साहित्य का वह काव्य रूप, जो किसी वीर योद्धा या संरक्षक की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने के लिए रचा जाता है, क्या कहलाता है?

(1) ख्यात
(2) बात
(3) मरसिया
(4) दवावैत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

14. किस प्रारंभिक जैन ग्रंथ को 'पुरानी पश्चिमी राजस्थानी' (मरु-गुर्जर) की प्रथम साहित्यिक कृति माना जाता है?

(1) कुवलयमाला
(2) कान्हड़दे प्रबंध
(3) अचलदास खींची री वचनिका
(4) भरतेश्वर बाहुबली घोर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

15. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर का चयन कीजिए।

सूची-I: (बोली)

A. हाड़ौती
B. शेखावाटी
C. वागड़ी
D. मालवी

सूची-II: (मुख्य क्षेत्र)

i. सीकर, झुंझुनूं
ii. प्रतापगढ़, झालावाड़
iii. डूंगरपुर, बांसवाड़ा
iv. कोटा, बूंदी

(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

16. किस प्राचीन ग्रंथ में पश्चिमी राजस्थान की भाषा के लिए सर्वप्रथम 'मरु भाषा' शब्द का उल्लेख किया गया है?

(1) पद्मावत
(2) कुवलयमाला
(3) वेलि क्रिसन रुकमणी री
(4) पृथ्वीराज रासो
(5) अनुत्तरित प्रश्न

17. संत दादू दयाल और उनके शिष्यों द्वारा अपने उपदेशों और पदों के लिए प्रयुक्त प्राथमिक भाषा कौन सी थी?

(1) मानक मारवाड़ी
(2) सधुक्कड़ी (ढूँढाड़ी मिश्रित)
(3) शुद्ध मेवाड़ी
(4) ब्रज भाषा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

18. चारण साहित्य के निम्नलिखित रूपों पर विचार कीजिए:

I. ख्यात
II. वेलि
III. मरसिया
IV. दवावैत
V. बात

राजस्थानी साहित्य के ऐतिहासिक गद्य रूपों की सही पहचान करने वाला कूट कौन सा है?
(1) I, IV और V
(2) केवल II और III
(3) I, II और III
(4) III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

19. मीरां बाई की रचनाएँ 'पदावली', किन भाषाओं के मिश्रण से सर्वाधिक प्रभावित हैं?
(1) मारवाड़ी और गुजराती
(2) मारवाड़ी और ब्रज
(3) मारवाड़ी, ब्रज और गुजराती
(4) मेवाड़ी और संस्कृत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

20. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): मध्यकाल के दौरान डिंगल पश्चिमी राजस्थान की मानक साहित्यिक भाषा के रूप में उभरी।
कारण (R): डिंगल का विकास सीधे नागरी अपभ्रंश से हुआ और इसमें श्रृंगारिक रचनाओं के लिए विशेष रूप से ब्रज शब्दावली का प्रयोग किया गया।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

21. राजस्थानी लोक साहित्य में पारंपरिक पहेलियों को किस शब्द से संबोधित किया जाता है?
(1) कहावत
(2) पवाड़ा
(3) आडी
(4) वात
(5) अनुत्तरित प्रश्न

22. निम्नलिखित में से कौन सा राजस्थानी भाषा के विकास का सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) गुर्जरी अपभ्रंश - पुरानी पश्चिमी राजस्थानी - मध्य राजस्थानी - आधुनिक राजस्थानी
(2) पुरानी पश्चिमी राजस्थानी - गुर्जरी अपभ्रंश - मध्य राजस्थानी - आधुनिक राजस्थानी
(3) मध्य राजस्थानी - गुर्जरी अपभ्रंश - पुरानी पश्चिमी राजस्थानी - आधुनिक राजस्थानी
(4) गुर्जरी अपभ्रंश - मध्य राजस्थानी - पुरानी पश्चिमी राजस्थानी - आधुनिक राजस्थानी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

23. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राजस्थान की राजनीतिक जागृति में किस समाचार पत्र ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी?
(1) राजस्थान पत्रिका
(2) दैनिक भास्कर
(3) लोकवाणी
(4) तरुण राजस्थान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

24. भारतीय संविधान के वर्तमान प्रावधानों के अनुसार राजस्थानी भाषा की क्या स्थिति है?
(1) इसे अभी तक संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित नहीं किया गया है।
(2) इसे संविधान की 8वीं अनुसूची के अंतर्गत मान्यता प्राप्त है।
(3) यह राजस्थान राज्य की एकमात्र राजभाषा है।
(4) इसे भारत की शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

25. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची-I: (साहित्यिक रचना)
A. वंश भास्कर
B. नैणसी री ख्यात
C. बातां री फुलवारी
D. लीलटांस
सूची-II: (लेखक)
i. कन्हैयालाल सेठिया
ii. सूर्यमल मिश्रण
iii. विजयदान देथा
iv. मुहणोत नैणसी
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

26. निम्नलिखित में से कौन सा क्षेत्र राजस्थानी और गुजराती भाषाओं के मध्य संक्रमण क्षेत्र निर्मित करता है?
(1) वागड़ क्षेत्र
(2) शेखावाटी क्षेत्र
(3) हाड़ौती क्षेत्र
(4) मेवात क्षेत्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

27. किस प्रसिद्ध विद्वान ने अपनी कृति 'पिंगल शिरोमणि' में मारवाड़ी भाषा के लिए 'डिंगल' शब्द का प्रयोग किया था?
(1) दुरसा आढ़ा
(2) बांकीदास
(3) एल.पी. टेसिटोरी
(4) कुशललाभ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

28. प्रारंभिक राजस्थानी साहित्य के निम्नलिखित ग्रंथों को उनकी रचना के कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. पृथ्वीराज रासो
II. कान्हड़दे प्रबंध
III. वेलि क्रिसन रुकमणी री
IV. वंश भास्कर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही क्रम चुनिए:
(1) II, I, III, IV
(2) I, II, III, IV
(3) II, III, I, IV
(4) I, III, II, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

29. पारंपरिक लोक कथाओं के विशाल संग्रह 'बातां री फुलवारी' के रचयिता कौन हैं?
(1) कन्हैयालाल सेठिया
(2) मेघराज मुकुल
(3) विजयदान देथा
(4) सत्य प्रकाश जोशी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

30. हाड़ौती बोली के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसकी व्याकरणिक संरचना गुजराती से अत्यधिक साम्य रखती है।
II. सूर्यमल मिश्रण ने अपनी अधिकांश रचनाएं इसी बोली में की थीं।
III. यह कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ क्षेत्र में प्रचलित है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सत्य हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

31. राजस्थानी भाषा के विकास के संदर्भ में 'अपभ्रंश' का क्या अर्थ है?
(1) प्राकृत भाषाओं का विकृत या परिवर्तनशील स्वरूप।
(2) संस्कृत का शुद्ध शास्त्रीय रूप।
(3) राजस्थानी लेखन के लिए प्रयुक्त आधुनिक लिपि।
(4) जैन मुनियों द्वारा प्रयुक्त विशेष काव्य छंद।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

32. राजस्थान की निम्नलिखित बोलियों पर विचार कीजिए:
I. थली
II. धाटकी
III. खैराड़ी
IV. अहीरवाटी
उपर्युक्त में से कौन सी मारवाड़ी की उप-बोलियां हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) केवल I और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

33. 'सोरठा' छंद का सर्वाधिक प्रभावशाली और स्वाभाविक प्रयोग किस शैली में मिलता है?
(1) पिंगल
(2) डिंगल
(3) ब्रज
(4) मालवी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

34. राजस्थान में 'चारण साहित्य' की मुख्य विशेषता क्या है?
(1) राजपूत शासकों की वीरता और वंशावली का यशोगान।
(2) विभिन्न तपस्वियों द्वारा रचित दार्शनिक विवेचन।
(3) संस्कृत महाकाव्यों का स्थानीय गद्य में अनुवाद।
(4) जनजातीय कृषि परंपराओं का विवरण।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

35. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची-I: (आधुनिक राजस्थानी रचना)
A. राधा
B. पीथल और पाथल
C. पगफेरो
D. बोल भारमली
सूची-II: (लेखक)
i. कन्हैयालाल सेठिया
ii. सत्य प्रकाश जोशी
iii. मणि मधुकर
iv. मेघराज मुकुल
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

36. मध्यकालीन राजस्थान में जैन साहित्य मुख्य रूप से किन रूपों में विकसित हुआ?
(1) ख्यात और बात
(2) मरसिया और झूलणा
(3) वेलि और दवावैत
(4) रास, फागु और चरचरी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

37. निम्नलिखित में से कौन सी रचना संत जाम्भोजी की है?
(1) अनभै वाणी
(2) कोड़ा
(3) सबद वाणी
(4) सिंभूदड़ा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

(4) अहीरवाटी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

57. सुप्रसिद्ध राजस्थानी ग्रंथ 'अचलदास खींची री वचनिका' के रचयिता कौन हैं?
(1) कवि कल्लोल
(2) श्रीधर व्यास
(3) शिवदास गाडण
(4) पद्मनाभ
(5) अनुत्तरित प्रश्न

58. निम्नलिखित में से कौन से जिले हाड़ौती बोली के प्राथमिक क्षेत्र के अंतर्गत आते हैं?
I. कोटा
II. बूंदी
III. बारां
IV. झालावाड़
V. टोंक
सही कूट चुनिए:
(1) I, II, III और IV
(2) I, II और V
(3) III, IV और V
(4) I, III, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

59. राजस्थानी लोक साहित्य में 'ख्याल' से क्या आशय है?
(1) मंदिरों में गाया जाने वाला भक्ति संगीत।
(2) राजाओं की वंशावली का गद्य विवरण।
(3) स्थानीय मुहावरों का संकलन।
(4) विभिन्न कथाओं पर आधारित लोक नाट्य रूप।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): चारण साहित्य में 'वेलि' एक अत्यंत लोकप्रिय काव्य विधा थी।
कारण (R): 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' राजस्थान में इस विधा में रचित एकमात्र ग्रंथ है।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

61. अलवर और भरतपुर क्षेत्र में प्रचलित वह बोली कौन सी है जिस पर ब्रज भाषा का गहरा प्रभाव है?
(1) बागड़ी
(2) शेखावाटी
(3) मेवाती
(4) गोरवाटी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

62. राजस्थानी भाषा के विकास क्रम में 11वीं से 13वीं शताब्दी की अवधि को क्या कहा जाता है?
(1) आधुनिक राजस्थानी काल
(2) शुद्ध डिंगल काल
(3) मध्य राजस्थानी काल
(4) पुरानी पश्चिमी राजस्थानी काल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

63. 19वीं शताब्दी के वे प्रमुख चारण कवि कौन थे जिन्होंने 'वंश भास्कर' के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना और प्रतिरोध का स्वर बुलंद किया?
(1) सूर्यमल मिश्रण
(2) बांकीदास
(3) दुरसा आढ़ा
(4) श्यामलदास
(5) अनुत्तरित प्रश्न

64. 'पिंगल' साहित्यिक शैली को मुख्य रूप से किन रियासतों के शासकों ने संरक्षण प्रदान किया था?
(1) मारवाड़
(2) जयपुर और भरतपुर
(3) मेवाड़
(4) जैसलमेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

65. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची-I: (पारिभाषिक शब्द)
A. बातां
B. पहेली
C. फड़
D. कहावत
सूची-II: (अर्थ)
i. लोक देवताओं के यशोगान का चित्रित पट
ii. पारंपरिक लघु लोक कथा
iii. आडी (बुझौवल)
iv. लोकोक्ति
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

66. बीकानेर के राव जैतसी की कामरान पर विजय का वर्णन करने वाला ग्रंथ 'राव जैतसी रो छंद' किसके द्वारा रचित है?
(1) बीठू सूजा
(2) सूजा जी
(3) चंदबरदाई
(4) जगनिक

47. राजस्थानी भाषा के प्रथम आधुनिक उपन्यास 'कनक सुंदर' के लेखक कौन हैं?
(1) शिवचंद्र भरतिया
(2) सीताराम लालस
(3) विजयदान देथा
(4) चंद्रसिंह बिरकाली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

48. राजस्थान की निम्नलिखित बोलियों को पश्चिम से पूर्व की ओर भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. मारवाड़ी
II. ढूँढाड़ी
III. ब्रज प्रभावित क्षेत्र
IV. मेवाड़ी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सही भौगोलिक क्रम चुनिए:
(1) I, IV, II, III
(2) I, II, IV, III
(3) IV, I, II, III
(4) I, IV, III, II
(5) अनुत्तरित प्रश्न

49. राजस्थानी साहित्य में 'दवावैत' की प्रमुख विशेषता क्या है?
(1) इसमें केवल दोहा छंद का प्रयोग होता है।
(2) यह तुकबंदी युक्त गद्य-पद्य मिश्रित शैली है।
(3) यह मांगणियारों द्वारा गाया जाने वाला लोक गीत है।
(4) यह केवल दादू पंथ द्वारा रचित धार्मिक ग्रंथ है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

50. प्रारंभिक राजस्थानी जैन साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें 'रास' और 'फागु' काव्य शैलियों का प्रचुर प्रयोग हुआ।
II. 'भरतेश्वर बाहुबली घोर' इस परंपरा का आरंभिक उदाहरण है।
III. इसमें केवल धार्मिक कर्मकांडों पर ध्यान दिया गया और नीतिगत विषयों को त्याग दिया गया।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

51. साहित्य अकादमी ने राजस्थानी को एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा के रूप में किस वर्ष मान्यता प्रदान की?
(1) 1956
(2) 1982
(3) 1974
(4) 1991
(5) अनुत्तरित प्रश्न

52. निम्नलिखित में से कन्हैयालाल सेठिया द्वारा रचित काव्य कृतियों की पहचान कीजिए:
I. हिवौ रो हंस
II. मिंझर
III. सबद
IV. लीलटांस
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) केवल I और II
(2) II, III और IV
(3) केवल II और IV
(4) I, II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

53. किस विद्वान को 'राजस्थानी सबद कोस' के निर्माण के लिए 'राजस्थानी का पाणिनी' कहा जाता है?
(1) सूर्यमल मिश्रण
(2) मुहणोत नैणसी
(3) सीताराम लालस
(4) उद्योतन सूरी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

54. राजस्थान में भक्ति साहित्य की 'निर्गुण' धारा का प्रतिनिधित्व मुख्य रूप से किसके साहित्य में मिलता है?
(1) मीरां बाई
(2) दादू दयाल
(3) भक्त कवि दुर्लभ
(4) गवरी बाई
(5) अनुत्तरित प्रश्न

55. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची-I: (संत कवि)
A. जाम्भोजी
B. जसनाथजी
C. हरिदासजी
D. चरणदासजी
सूची-II: (वाणी/रचना)
i. मंत्र राजप्रकाश
ii. ब्रह्म ज्ञान सागर
iii. सबद वाणी
iv. कोड़ा
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

56. किस बोली की मुख्य विशेषता सहायक क्रिया के रूप में 'छ' का प्रयोग है, जो इसे गुजराती के निकट लाती है?
(1) ढूँढाड़ी
(2) मारवाड़ी
(3) मालवी

38. राजस्थान के भक्ति आंदोलन से संबंधित निम्नलिखित संतों पर विचार कीजिए:

I. दादू दयाल
II. रामचरण
III. मीरां बाई
IV. लालदास
V. जसनाथ

उपर्युक्त में से कौन 'सगुण' भक्ति धारा के प्रमुख संत हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) I, IV और V
(4) केवल III और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

39. निम्नलिखित में से कौन सा ग्रंथ राजस्थानी साहित्य में ऐतिहासिक गद्य (ख्यात) का उत्कृष्ट उदाहरण है?

(1) अचलदास खींची री वचनिका
(2) बीसलदेव रासो
(3) ढोला मारु रा दूहा
(4) नैणसी री ख्यात
(5) अनुत्तरित प्रश्न

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:

अभिकथन (A): पृथ्वीराज राठौड़ कृत 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' को 'पांचवां वेद' और 'उन्नीसवां पुराण' कहा जाता है।

कारण (R): यह कृति मुगलों के विरुद्ध राठौड़ वंश की सैन्य विजय का ऐतिहासिक वृत्तांत है।

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:

(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

41. मीरां बाई की भक्ति मुख्य रुप से किस भाव की मानी जाती है?

(1) दास्य भाव
(2) सख्य भाव
(3) माधुर्य भाव
(4) वात्सल्य भाव
(5) अनुत्तरित प्रश्न

42. राजस्थानी काव्य परंपराओं के उदय का सही कालानुक्रमिक अनुक्रम कौन सा है?

(1) जैन रास परंपरा - चारण रासो परंपरा - संत साहित्य परंपरा
(2) चारण रासो परंपरा - संत साहित्य परंपरा - जैन रास परंपरा
(3) संत साहित्य परंपरा - जैन रास परंपरा - चारण रासो परंपरा
(4) जैन रास परंपरा - संत साहित्य परंपरा - चारण रासो परंपरा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

43. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थानी लोक कथाओं (बातां) की विशेषता नहीं है?

(1) ये मौखिक परंपरा के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रचलित रही हैं।
(2) इनमें प्रायः अलौकिक तत्व और नैतिक शिक्षा समाहित होती है।
(3) ये ग्रामीण राजस्थान के सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का दर्पण हैं।
(4) ये अनिवार्य रुप से क्लिष्ट संस्कृत छंदों में रचित हैं।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

44. राजस्थानी को संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित करने की मांग मुख्य रुप से किस तर्क पर आधारित है?

(1) यह आधुनिक मानक हिंदी की प्रत्यक्ष वंशज है।
(2) इसकी विशिष्ट भाषाई पहचान और समृद्ध साहित्यिक विरासत है।
(3) मध्यकालीन राजदरबारों की आधिकारिक भाषा के रुप में इसकी स्थिति।
(4) संपूर्ण उत्तर भारत में बहुसंख्यक जनसंख्या द्वारा इसका प्रयोग।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

45. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।

सूची-I: (ग्रंथ)

A. दयालदास री ख्यात
B. ढोला मारु रा दूहा
C. कान्हड़दे प्रबंध
D. राव जैतसी रो छंद

सूची-II: (साहित्यिक रुप)

i. ऐतिहासिक वंशावली गद्य
ii. वीर प्रधान प्रबंध काव्य
iii. लोक श्रृंगारिक काव्य
iv. युद्ध वृत्तांत आधारित पद्य ग्रंथ

(1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) अनुत्तरित प्रश्न

46. समृद्ध साहित्यिक विरासत के कारण किस बोली को राजस्थानी भाषा का मानक रुप माना जाता है?

(1) मेवाड़ी
(2) ढूँढाड़ी
(3) मालवी
(4) मारवाड़ी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

(5) अनुत्तरित प्रश्न

67. राजस्थानी भाषा दिवस प्रतिवर्ष किस तिथि को आयोजित किया जाता है?
(1) 14 सितंबर
(2) 30 मार्च
(3) 21 फरवरी
(4) 1 नवंबर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

68. राजस्थान के निम्नलिखित साहित्यिक विद्वानों को उनके कालक्रम के अनुसार व्यवस्थित कीजिए:
I. चंदबरदाई
II. पद्मनाभ
III. मुहणोत नैणसी
IV. सूर्यमल मिश्रण
सही कूट चुनिए:
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, IV, III
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

69. राजस्थानी लोक साहित्य के प्रसिद्ध प्रेम महाकाव्य 'ढोला मारु रा दूहा' के रचयिता कौन हैं?
(1) कुशललाभ
(2) जयानक
(3) कवि कल्लोल
(4) जोधराज
(5) अनुत्तरित प्रश्न

70. प्रारंभिक राजस्थानी साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. रासो साहित्य ऐतिहासिक तथ्यों से रहित और पूर्णतः काल्पनिक था।
II. 'पृथ्वीराज रासो' को पिंगल परंपरा का महाकाव्य माना जाता है।
III. 'बीसलदेव रासो' मूलतः वीर रस के स्थान पर एक श्रृंगारिक ग्रंथ है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सत्य हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

71. अपने विस्तृत भौगोलिक और सांख्यिकीय विवरण के कारण किस ग्रंथ को 'राजपूताना का गजेटियर' कहा जाता है?
(1) दयालदास री ख्यात
(2) वंश भास्कर
(3) पृथ्वीराज रासो
(4) मारवाड़ रा परगना री विगत
(5) अनुत्तरित प्रश्न

72. निम्नलिखित में से कौन सी पत्रिकाएं राजस्थानी भाषा और साहित्य अनुसंधान के संवर्धन से संबंधित हैं?
I. जागती जोत
II. मरुवाणी
III. परंपरा
IV. सुजस
सही उत्तर चुनिए:
(1) केवल I और IV
(2) I, II और III
(3) केवल II और IV
(4) केवल III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

73. 'नरसी रो मायरो' की रचना मीरां बाई के निर्देशन में किसके द्वारा की गई थी?
(1) रैदास
(2) जीव गोस्वामी
(3) रत्ना खाती
(4) पुण्डरीक विट्ठल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

74. किस विद्वान ने राजस्थानी को हिंदी की उप-शाखा मानने से इनकार करते हुए इसे गुजराती के समान स्वतंत्र दर्जा देने का प्रबल समर्थन किया था?
(1) सुनीतिकुमार चटर्जी
(2) के.एम. मुंशी
(3) रामचंद्र शुक्ल
(4) एल.पी. टेसिटोरी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

75. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची-I: (साहित्यिक विधा)
A. मरसिया
B. झूलणा
C. वचनिका
D. पवाड़ा
सूची-II: (विषयवस्तु)
i. वीरता और युद्ध कौशल का चित्रण करने वाला काव्य छंद
ii. ऐतिहासिक युद्धों का तुकबंदी युक्त गद्य-पद्य विवरण
iii. किसी नायक की मृत्यु पर शोक काव्य
iv. लोक नायकों की वीरगाथा का गायन
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

(3) मालवी
(4) वागड़ी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

120. किस विद्वान को दो लाख से अधिक शब्दों वाले 'राजस्थानी सबद कोस' की रचना हेतु पद्म श्री प्रदान किया गया?
(1) सीताराम लालस
(2) विजयदान देथा
(3) कन्हैयालाल सेठिया
(4) कोमल कोठारी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

86. राजस्थानी लोक साहित्य की विधा 'बात' (Vata), 'ख्यात' से किस प्रकार भिन्न है?
(1) 'बात' पूर्णतः पद्य में होती है, जबकि 'ख्यात' केवल गद्य में।
(2) 'बात' कथा वाचन पर केंद्रित है, जबकि 'ख्यात' औपचारिक ऐतिहासिक विवरण है।
(3) 'बात' केवल जैन मुनियों की रचना है, जबकि 'ख्यात' चारणों की।
(4) 'बात' केवल डिंगल शैली में है, जबकि 'ख्यात' केवल पिंगल में।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

87. हाड़ा रानी के उत्सर्ग पर आधारित प्रसिद्ध कविता 'सेनाणी' के रचयिता कौन हैं?
(1) कन्हैयालाल सेठिया
(2) नारायण सिंह भाटी
(3) सत्य प्रकाश जोशी
(4) मेघराज मुकुल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

88. अहीरवाटी बोली किन दो भाषाई क्षेत्रों के मध्य सेतु का कार्य करती है?
(1) मेवाती और हरयाणवी
(2) राजस्थानी और गुजराती
(3) मारवाड़ी और सिंधी
(4) हाड़ौती और मालवी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

89. 'बांकीदास री ख्यात' किस रियासत के इतिहास के अध्ययन का महत्वपूर्ण स्रोत है?
(1) मेवाड़
(2) जयपुर
(3) मारवाड़
(4) बीकानेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

90. राजस्थानी को संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित करने के प्रयासों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. राजस्थान विधानसभा ने 2003 में इसे सम्मिलित करने हेतु सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया।
II. सीताकांत महापात्र समिति ने राजस्थानी को 8वीं अनुसूची में रखने की अनुशंसा की थी।
III. राजस्थानी को केंद्र सरकार की द्वितीय आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त हो चुका है।
उपर्युक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) अनुत्तरित प्रश्न

91. निम्नलिखित में से कौन सी डिंगल काव्य परंपरा की विशेषता नहीं है?
(1) योद्धा वर्ग के लिए पुरातन शब्दावली का प्रयोग।
(2) वीर रस की प्रधानता।
(3) राजपूत दरबारों द्वारा संरक्षण।
(4) फारसी छंदों और शब्दावली का अनन्य उपयोग।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

92. निम्नलिखित में से पिंगल शैली में रचित ग्रंथों की पहचान कीजिए:
I. कान्हड़दे प्रबंध
II. खुमाण रासो
III. वेलि क्रिसन रुकमणी री
IV. पृथ्वीराज रासो
सही कूट चुनिए:
(1) केवल I और II
(2) केवल II और IV
(3) केवल III और IV
(4) II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

93. किस ग्रंथ में कवि दुरसा आढ़ा ने महाराणा प्रताप के शौर्य और प्रतिरोध की प्रशंसा की है?
(1) वेलि क्रिसन रुकमणी री
(2) वंश भास्कर
(3) विरुद्ध छहतरी
(4) कान्हड़दे प्रबंध
(5) अनुत्तरित प्रश्न

94. उत्पत्ति और सामाजिक संदर्भ के आधार पर प्रारंभिक राजस्थानी साहित्य को कितनी मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है?
(1) दो (चारण और जैन)
(2) तीन (जैन, चारण और संत)
(3) पांच (जैन, चारण, संत, लोक और दरबारी गद्य)
(4) चार (जैन, चारण, संत और लोक)
(5) अनुत्तरित प्रश्न

95. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची-I: (पुरस्कार)
A. सूर्यमल मिश्रण पुरस्कार
B. मीरां पुरस्कार
C. बिहारी पुरस्कार
D. साहित्य अकादमी पुरस्कार
सूची-II: (संस्था)
i. राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
ii. राजस्थान भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर
iii. के.के. बिड़ला फाउंडेशन
iv. साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
(1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iii, C-i, D-iv

76. आधुनिक राजस्थानी कविता की प्रथम कृतियों में से एक 'बादली' के रचयिता कौन थे?
(1) कन्हैयालाल सेठिया
(2) चंद्रसिंह बिरकाली
(3) नारायण सिंह भाटी
(4) मेघराज मुकुल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

77. किशनगढ़, अजमेर और मेरवाड़ा क्षेत्र में प्रचलित मुख्य बोली कौन सी है?
(1) मेवाड़ी
(2) गोरवाटी
(3) ढूँढाड़ी (अजमेरी स्वरुप)
(4) हाड़ौती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

78. निम्नलिखित में से किन विद्वानों ने राजस्थानी बोलियों के व्याकरण और शब्दकोश निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया?
I. सीताराम लालस
II. एल.पी. टेसिटोरी
III. मोतीलाल मेनारिया
IV. जॉर्ज ग्रियर्सन
V. के.एल. कमल
सही विकल्प का चयन कीजिए:
(1) I, II और III
(2) I, III और IV
(3) I, II, III और IV
(4) II, IV और V
(5) अनुत्तरित प्रश्न

79. 'रुकमणी हरण' ग्रंथ के रचयिता कौन हैं?
(1) सायांजी झूला
(2) पृथ्वीराज राठौड़
(3) इसरदास
(4) दुरसा आढ़ा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): दक्षिण राजस्थान, विशेष रुप से वागड़ की बोली, गुजराती से अत्यधिक साम्य रखती है।
कारण (R): वागड़ क्षेत्र गुजरात के साथ भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमा साझा करता है, जिससे भाषाई आदान-प्रदान सुगम हुआ।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

81. राजस्थान की वह कौन सी बोली है जो अपने कठोर स्वरों के लिए प्रसिद्ध है और जैसलमेर व बाड़मेर के रेतीले क्षेत्रों में बोली जाती है?
(1) मालवी
(2) थली
(3) अहीरवाटी
(4) हाड़ौती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

82. भील जनजाति के मौखिक साहित्य से जुड़ा प्रसिद्ध लोक नाट्य 'गवरी' मुख्य रुप से किस क्षेत्र में आयोजित होता है?
(1) मेवाड़
(2) मारवाड़
(3) शेखावाटी
(4) ढूँढाड़
(5) अनुत्तरित प्रश्न

83. वीर रस की डिंगल काव्य रचना 'हाला झाला री कुंडलियाँ' किसके द्वारा लिखी गई थी?
(1) पृथ्वीराज राठौड़
(2) बांकीदास
(3) कवि इसरदास
(4) सूर्यमल मिश्रण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

84. राजस्थानी साहित्यिक पत्रिका 'जागती जोत' का प्रकाशन किस संस्था द्वारा किया जाता है?
(1) राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर
(2) राजस्थान संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर
(3) अरबी फारसी शोध संस्थान, टोंक
(4) राजस्थान भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर
(5) अनुत्तरित प्रश्न

85. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए।
सूची-I: (भक्ति संत)
A. मीरां बाई
B. दादू दयाल
C. चरणदास
D. मावजी
सूची-II: (साहित्य की प्रधान बोली)
i. ढूँढाड़ी/सधुक्कड़ी
ii. मेवाती
iii. वागड़ी
iv. मारवाड़ी/मेवाड़ी/ब्रज का मिश्रण
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) अनुत्तरित प्रश्न

(5) अनुत्तरित प्रश्न

107. श्रीधर व्यास द्वारा रचित ग्रंथ कौन सा है?
(1) खुमाण रासो
(2) पाबू प्रकाश
(3) वेलि क्रिसन रुकमणी री
(4) रणमल्ल छंद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

108. अलवर-भरतपुर क्षेत्र की 'मेवाती' बोली पर किन पड़ोसी भाषाओं का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है?
(1) मालवी
(2) कौरवी और ब्रज
(3) गुजराती
(4) सिंधी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

109. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म असंगत है?
(1) सूर्यमल मिश्रण - बलवद विलास
(2) बांकीदास - बांकीदास री ख्यात
(3) मुहणोत नैणसी - बातां री फुलवारी
(4) कवि श्यामलदास - वीर विनोद
(5) अनुत्तरित प्रश्न

110. किस भाषाविद ने यह विचार प्रस्तुत किया कि डिंगल 'मरु भाषा' है और पिंगल 'नाग भाषा' है?
(1) जॉर्ज ग्रियर्सन
(2) सुनीतिकुमार चटर्जी
(3) पुरुषोत्तम लाल मेनारिया
(4) एल.पी. टेसिटोरी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

111. राजस्थान की किस महिला संत के पद 'पदावली' के रूप में विख्यात हैं?
(1) मीरां बाई
(2) गवरी बाई
(3) करमती बाई
(4) राणा बाई
(5) अनुत्तरित प्रश्न

112. राजस्थानी साहित्य में 'साझा संस्कृति' की समन्वित परंपरा मुख्य रूप से किसके साहित्य में दिखाई देती है?
(1) चारण साहित्य
(2) निर्गुण और सगुण संत साहित्य
(3) जैन साहित्य
(4) आधुनिक उपन्यास
(5) अनुत्तरित प्रश्न

113. राजस्थानी लोक साहित्य में 'पवाड़िया' से क्या तात्पर्य है?
(1) उत्सवों पर महिलाओं द्वारा गाए जाने वाले गीत।
(2) लोक नायकों के शौर्य का वर्णन करने वाले वीरगाथा गीत।
(3) विवाह के अवसर पर पूछे जाने वाली पहेलियाँ।
(4) राजसी घटनाओं का गद्य वृत्तांत।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

114. राजस्थानी भाषा का प्रथम विस्तृत व्याकरण 'मैकडुगल का व्याकरण', किस बोली पर आधारित था?
(1) मारवाड़ी
(2) मेवाड़ी
(3) हाड़ौती
(4) ढूँढाड़ी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

115. निम्नलिखित में से कौन सी रचना चारण साहित्य के पारंपरिक युद्ध विषयों का अपवाद है?
(1) नैणसी री ख्यात
(2) राव जैतसी रो छंद
(3) वेलि क्रिसन रुकमणी री
(4) राज रुपक
(5) अनुत्तरित प्रश्न

116. रतलाम के रतन सिंह और औरंगजेब के मध्य हुए युद्ध का वर्णन करने वाले ग्रंथ 'रतन रासो' के लेखक कौन हैं?
(1) जगनिक
(2) दयालदास
(3) नरपति नाल्ह
(4) कुम्भकर्ण
(5) अनुत्तरित प्रश्न

117. आधुनिक राजस्थानी साहित्य में ग्रामीण जीवन और कृषि समस्याओं को चित्रित करने वाला प्रथम उपन्यास कौन सा माना जाता है?
(1) बादली
(2) लीलटांस
(3) आभै पटकी
(4) राधा
(5) अनुत्तरित प्रश्न

118. 12वीं शताब्दी में कवि जयानक द्वारा रचित वह ग्रंथ कौन सा है जो चौहान कालीन राजस्थान के सांस्कृतिक परिवेश पर प्रकाश डालता है?
(1) पृथ्वीराज रासो
(2) पृथ्वीराज विजय
(3) हम्मीर महाकाव्य
(4) सुरजन चरित्र
(5) अनुत्तरित प्रश्न

119. संत मावजी, जिनका साहित्य 'चोपड़ा' कहलाता है, ने मुख्य रूप से किस बोली में रचना की?
(1) मारवाड़ी
(2) मेवाती

(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) अनुत्तरित प्रश्न

96. संत साहित्य की प्रमुख कृति 'अनभै वाणी' के रचयिता कौन हैं?
(1) संत दादू दयाल
(2) संत रामचरण
(3) संत लालदास
(4) संत हरिदास
(5) अनुत्तरित प्रश्न

97. 'पिंगल' शैली पूर्वी राजस्थान की बोलियों और किस भाषा के समन्वय का परिणाम है?
(1) अवधी
(2) ब्रज भाषा
(3) भोजपुरी
(4) मैथिली
(5) अनुत्तरित प्रश्न

98. आधुनिक राजस्थानी कविता में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले कवियों की पहचान कीजिए:
I. सीताराम लालस
II. कन्हैयालाल सेठिया
III. विजयदान देथा
IV. चंद्रसिंह बिरकाली
V. सत्य प्रकाश जोशी
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) I, II और III
(2) II, IV और V
(3) I, III और V
(4) II, III और IV
(5) अनुत्तरित प्रश्न

99. उप-बोली 'तोरवाटी' किस प्रमुख राजस्थानी बोली के अंतर्गत आती है?
(1) मेवाड़ी
(2) मारवाड़ी
(3) ढूँढाड़ी
(4) हाड़ौती
(5) अनुत्तरित प्रश्न

100. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): प्रारंभिक राजस्थानी साहित्य की 'रास' परंपरा मूलतः युद्ध और वीरता पर आधारित थी।
कारण (R): 'रास' साहित्य का सृजन मुख्य रूप से जैन मुनियों द्वारा धार्मिक प्रचार हेतु किया गया, जबकि 'रासो' परंपरा वीरता पर केंद्रित थी।
नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
(5) अनुत्तरित प्रश्न

101. कौन सा ऐतिहासिक ग्रंथ 17वीं शताब्दी के राजस्थान की सामाजिक-आर्थिक स्थिति, भू-राजस्व और कृषि संबंधी विस्तृत विवरण प्रस्तुत करता है?
(1) वेलि क्रिसन रुकमणी री
(2) नैणसी री ख्यात
(3) मारवाड़ रा परगना री विगत
(4) कान्हड़दे प्रबंध
(5) अनुत्तरित प्रश्न

102. 'राव जैतसी रो छंद' में राव जैतसी और किस मुगल शासक के भाई के मध्य हुए संघर्ष का वर्णन है?
(1) हुमायूँ
(2) कामरान
(3) अस्करी
(4) हिंदाल
(5) अनुत्तरित प्रश्न

103. 'ढोला मारु रा दूहा' किस श्रेणी के साहित्य का उदाहरण है?
(1) भक्ति काव्य
(2) वीर काव्य
(3) नीति काव्य
(4) लोक श्रृंगारिक काव्य
(5) अनुत्तरित प्रश्न

104. निम्नलिखित में से कौन सी बोली मारवाड़ी और ढूँढाड़ी के मध्य भाषाई सेतु का कार्य करती है?
(1) शेखावाटी
(2) अहीरवाटी
(3) मेवाती
(4) बागड़ी
(5) अनुत्तरित प्रश्न

105. डिंगल ग्रंथ 'गजगुणरुपक' के रचयिता कौन हैं?
(1) गाडण शिवदास
(2) इसरदास
(3) केशोदास गाडण
(4) कवि करणीदान
(5) अनुत्तरित प्रश्न

106. राजस्थान में 'राजभाषा अधिनियम', जिसने हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्वीकार किया, किस वर्ष पारित हुआ?
(1) 1956
(2) 1950
(3) 1967
(4) 1972

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) शौरसेनी (गुर्जरी) अपभ्रंश
राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश के गुर्जरी रूप से मानी जाती है। भाषाविदों के अनुसार 11वीं शताब्दी के आसपास यह अपभ्रंश से अलग होकर स्वतंत्र रूप लेने लगी थी। प्रारंभ में यह पुरानी पश्चिमी राजस्थानी के रूप में विकसित हुई। इसी भाषाई स्रोत से आधुनिक राजस्थानी और गुजराती दोनों का उद्भव हुआ, जो इसकी प्राचीनता और भाषाई सुदृढ़ता को दर्शाता है।

2. (1) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन
जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया' में सर्वप्रथम राजस्थानी बोलियों का वैज्ञानिक वर्गीकरण प्रस्तुत किया। उन्होंने ही इस भौगोलिक क्षेत्र की बोलियों के लिए 'राजस्थानी' शब्द का प्रयोग किया। ग्रियर्सन का यह वर्गीकरण भाषा विज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित था, जिसने राजस्थानी भाषा की विशिष्ट पहचान और उसकी उप-बोलियों के अंतर्संबंधों को स्पष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. (3) दोनों की उत्पत्ति एक ही स्रोत 'पुरानी पश्चिमी राजस्थानी' (मरु-गुर्जर) से हुई है।
राजस्थानी और गुजराती भाषाओं का उद्भव एक ही मूल स्रोत 'पुरानी पश्चिमी राजस्थानी' से हुआ है, जिसे 'मरु-गुर्जर' भी कहा जाता है। 15वीं शताब्दी तक इन दोनों क्षेत्रों की भाषा लगभग समान थी। इसके पश्चात क्षेत्रीय प्रभावों और सांस्कृतिक विकास के कारण ये दो स्वतंत्र भाषाओं के रूप में विकसित हुईं। यही कारण है कि आज भी इनके व्याकरण और शब्दावली में अत्यधिक समानता है।

4. (4) डिंगल
डिंगल राजस्थानी भाषा की एक विशिष्ट साहित्यिक शैली है, जो मुख्य रूप से मारवाड़ी का साहित्यिक रूप है। इसका प्रयोग चारण कवियों द्वारा वीर रस की कविताओं और ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना हेतु किया जाता था। डिंगल अपनी ओजपूर्ण शब्दावली और ध्वन्यात्मक कठोरता के लिए प्रसिद्ध है। यह मध्यकालीन राजस्थान की समृद्ध काव्य परंपरा है, जिसने क्षेत्रीय वीरता और स्वाभिमान को आज भी जीवंत रखा है।

5. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थानी भाषा की उत्पत्ति के संबंध में विद्वानों के मत भिन्न हैं। जॉर्ज ग्रियर्सन ने इसकी उत्पत्ति नागरी अपभ्रंश से मानी है, जबकि एल.पी. टेसिटोरी इसे शौरसेनी अपभ्रंश से उत्पन्न मानते हैं। के.एम. मुंशी के अनुसार राजस्थानी का विकास गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ है और सुनीतिकुमार चटर्जी इसे सौराष्ट्री अपभ्रंश से जोड़ते हैं। ये सिद्धांत राजस्थानी भाषा के विकास की जटिल ऐतिहासिक प्रक्रिया को दर्शाते हैं।

6. (2) जग्रौती
जग्रौती बोली मारवाड़ी की उप-बोली नहीं है, बल्कि यह मुख्य रूप से करौली क्षेत्र में बोली जाने वाली ढूँढाड़ी की उप-बोली है। मारवाड़ी राजस्थान के सर्वाधिक विस्तृत क्षेत्र में बोली जाने वाली प्रमुख भाषा है। इसकी महत्वपूर्ण उप-बोलियों में गोडवाड़ी, मेवाड़ी और धाटकी सम्मिलित हैं। मारवाड़ी का मानक रूप जोधपुर के आसपास प्रचलित है। बोलियों का यह अंतर राजस्थान की भाषाई विविधता और क्षेत्रीय विशेषताओं को दर्शाता है।

7. (4) भीली बोली
राजस्थान के दक्षिणी भाग डूंगरपुर और बांसवाड़ा क्षेत्र में प्रचलित वागड़ी बोली पर गुजराती भाषा का गहरा प्रभाव है। सुप्रसिद्ध भाषाविद जॉर्ज ग्रियर्सन ने इस क्षेत्र की भाषाई विशेषताओं और स्थानीय भील जनजाति द्वारा इसके व्यापक प्रयोग के कारण इसे 'भीली बोली' कहा था। वागड़ी बोली राजस्थानी और गुजराती के मध्य भाषाई सेतु है। इसकी ध्वन्यात्मक संरचना और व्याकरणिक विशेषताएं इसे अन्य बोलियों से विशिष्ट बनाती हैं।

8. (1) डिंगल मारवाड़ी प्रभावित पश्चिमी शैली है, जबकि पिंगल ब्रज प्रभावित पूर्वी शैली है।
राजस्थानी साहित्य की दो प्रमुख शैलियाँ डिंगल और पिंगल भौगोलिक आधार पर भिन्न हैं। डिंगल मारवाड़ी भाषा से प्रभावित पश्चिमी राजस्थानी की साहित्यिक शैली है, जिसका प्रयोग मुख्यतः चारणों द्वारा वीर रस के काव्य हेतु किया गया। इसके विपरीत, पिंगल पूर्वी राजस्थानी की शैली है जिस पर ब्रज भाषा का गहरा प्रभाव है। इसका प्रयोग मुख्य रूप से भाट कवियों द्वारा किया गया। ये दोनों शैलियाँ गौरवशाली परंपरा का आधार हैं।

9. (3) पिंगल
महाकवि चंदबरदाई द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' पिंगल साहित्यिक शैली में लिखा गया है। पिंगल शैली पूर्वी राजस्थान की बोलियों और ब्रज भाषा के समन्वय से विकसित हुई थी। यह शैली मुख्य रूप से भाट कवियों द्वारा अपनाई गई, जिसमें कोमल एवं मधुर शब्दावली का अधिक प्रयोग होता है। 'पृथ्वीराज रासो' न केवल ऐतिहासिक ग्रंथ है, बल्कि पिंगल शैली की उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा का महत्वपूर्ण प्रमाण भी है।

10. (1) केवल I और II
मेवाड़ी बोली मुख्य रूप से उदयपुर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़ और राजसमंद जिलों में बोली जाती है, जो मेवाड़ का ऐतिहासिक क्षेत्र है। यह मारवाड़ी की एक प्रमुख उप-बोली मानी जाती है। महाराणा कुंभा ने अपने नाटकों में इसी बोली का सफलतापूर्वक

प्रयोग किया था। मेवाड़ी साहित्य और लोक संस्कृति में इस बोली का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसकी अपनी क्षेत्रीय उप-बोलियां भी प्रचलित हैं, जो भाषाई समृद्धि को दर्शाती हैं।

11. (4) पृथ्वीराज राठौड़
ऐतिहासिक ग्रंथ 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' की रचना बीकानेर के राजकुमार पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा की गई थी। इस ग्रंथ की रचना डिंगल शैली में हुई है और इसे राजस्थानी साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कृति माना जाता है। इसकी साहित्यिक सुंदरता के कारण दुरसा आढ़ा ने इसे 'पांचवां वेद' और 'उन्नीसवां पुराण' कहा था। यह ग्रंथ भगवान कृष्ण और रुक्मणी के विवाह की कथा को अत्यंत भव्यता के साथ प्रस्तुत करता है।

12. (3) केवल IV
ढूँढाड़ी बोली मुख्य रूप से जयपुर, दौसा और टोंक क्षेत्रों में प्रचलित है। इस पर ब्रज भाषा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है, न कि सिंधी भाषा का। यह राजस्थान की महत्वपूर्ण बोलियों में से एक है, जिसमें दादू पंथ का विशाल साहित्य रचा गया है। स्थानीय स्तर पर इसे 'झाड़शाही' भी कहा जाता है। इसकी मुख्य विशेषता सहायक क्रिया के रूप में 'छै' शब्द का प्रयोग है।

13. (3) मरसिया
राजस्थानी साहित्य में 'मरसिया' एक विशिष्ट काव्य विधा है, जो शोक संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रयुक्त होती है। चारण कवियों द्वारा इसकी रचना किसी वीर योद्धा या शासक की मृत्यु के पश्चात उनके गुणों और बलिदान को याद करने के लिए की जाती थी। यह विधा मन में करुण रस का संचार करती है। ऐतिहासिक दृष्टि से मरसिया साहित्य तत्कालीन समाज में वीरता के प्रति सम्मान को प्रदर्शित करता है।

14. (4) भरतेश्वर बाहुबली घोर
'भरतेश्वर बाहुबली घोर' को पुरानी पश्चिमी राजस्थानी की प्रथम साहित्यिक कृति के रूप में मान्यता प्राप्त है। इस ग्रंथ की रचना वज्रसेन सूरी द्वारा लगभग 1168 ईस्वी में की गई थी। यह जैन साहित्य की रास परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह कृति राजस्थानी भाषा के प्रारंभिक स्वरूप और उसके क्रमिक विकास को समझने का महत्वपूर्ण आधार है। इसमें भाषाई संक्रमण काल की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है।

15. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
राजस्थानी बोलियों का क्षेत्रीय वितरण विविधतापूर्ण है। हाड़ौती बोली मुख्य रूप से कोटा और बूंदी में बोली जाती है, जबकि शेखावाटी का विस्तार सीकर और झुंझुनूं जिलों में है। वागड़ी बोली दक्षिणी राजस्थान के डूंगरपुर और बांसवाड़ा में प्रचलित है। मालवी बोली का प्रभाव मध्य प्रदेश की सीमा से सटे प्रतापगढ़ और झालावाड़ क्षेत्रों में देखा जाता है। यह वर्गीकरण राजस्थान की सांस्कृतिक विशिष्टता को स्पष्ट करता है।

16. (2) कुवलयमाला
उद्योतन सूरी द्वारा रचित ग्रंथ 'कुवलयमाला' में पश्चिमी राजस्थान की भाषा के लिए सर्वप्रथम 'मरु भाषा' शब्द का उल्लेख मिलता है। इस ग्रंथ की रचना 8वीं शताब्दी (778 ईस्वी) में जालौर में की गई थी। इसमें तत्कालीन भारत की 18 देशी भाषाओं की सूची दी गई है। यह उल्लेख प्रमाणित करता है कि राजस्थानी भाषा की पहचान प्राचीन काल से ही स्वतंत्र रूप से विद्यमान थी, जो इसके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाती है।

17. (2) सधुक्कड़ी (ढूँढाड़ी मिश्रित)
संत दादू दयाल और उनके शिष्यों ने अपने उपदेशों और काव्य रचनाओं के लिए मुख्य रूप से सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग किया। यह भाषा ढूँढाड़ी बोली और हिंदी के विभिन्न रूपों का एक सहज मिश्रण है। चूंकि दादू पंथ का मुख्य कार्यक्षेत्र जयपुर के आसपास का ढूँढाड़ क्षेत्र था, इसलिए उनकी वाणी में स्थानीय बोलियों का गहरा प्रभाव मिलता है। इस सरल भाषा ने उनके विचारों को लोकप्रिय बनाया।

18. (1) I, IV और V
राजस्थानी साहित्य के ऐतिहासिक गद्य रूपों में ख्यात, दवावैत और बात अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ख्यात में राज्यों की वंशावली और ऐतिहासिक घटनाओं का विवरण मिलता है। दवावैत एक तुकबंदी युक्त गद्य-पद्य मिश्रित शैली है। बात से तात्पर्य उन लोक कथाओं से है जो मौखिक और लिखित दोनों रूपों में प्रचलित रहीं। इसके विपरीत, वेलि और मरसिया मुख्य रूप से पद्य प्रधान काव्य रूप हैं, जिन्हें शुद्ध गद्य नहीं माना जाता।

19. (3) मारवाड़ी, ब्रज और गुजराती
मीरां बाई की काव्य रचनाएं, जिन्हें 'पदावली' कहा जाता है, मुख्य रूप से मारवाड़ी, ब्रज और गुजराती भाषाओं के मिश्रण से निर्मित हैं। मीरां का जन्म मारवाड़ में हुआ, विवाह मेवाड़ में हुआ और अंतिम समय गुजरात के द्वारका में व्यतीत किया। इसी भौगोलिक यात्रा के कारण उनकी भाषा में इन तीनों क्षेत्रों के भाषाई तत्वों का समावेश हुआ। उनकी रचनाओं की सरलता और भक्ति ने उन्हें विशिष्ट स्थान दिलाया है।

20. (3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
मध्यकाल में डिंगल निश्चित रूप से पश्चिमी राजस्थान की मानक साहित्यिक भाषा के रूप में विकसित हुई थी। यह चारण कवियों की प्रमुख शैली थी। हालांकि, डिंगल का विकास नागरी अपभ्रंश के स्थान पर गुर्जरी अपभ्रंश से हुआ माना जाता है। डिंगल में ब्रज शब्दावली का प्रयोग कम होता है, जबकि पिंगल शैली ब्रज भाषा से अत्यधिक प्रभावित है। डिंगल मुख्य रूप से वीर रस की अभिव्यक्ति हेतु प्रसिद्ध रही है।

21. (3) आडी
राजस्थानी लोक साहित्य में पारंपरिक पहेलियों को स्थानीय भाषा में 'आडी' कहा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में मनोरंजन और बौद्धिक चातुर्य के परीक्षण के लिए आडी पूछने की प्राचीन परंपरा रही है। ये पहेलियाँ अक्सर स्थानीय परिवेश की वस्तुओं पर आधारित होती हैं। इसके विपरीत, 'कहावत' लोकोक्ति को,

'पवाड़ा' वीरगाथा गीतों को और 'वात' कहानी को कहा जाता है। आडी राजस्थान की भाषाई विविधता का जीवंत अंग है।

22. (1) गुर्जरी अपभ्रंश - पुरानी पश्चिमी राजस्थानी - मध्य राजस्थानी - आधुनिक राजस्थानी
राजस्थानी भाषा का विकास एक क्रमिक प्रक्रिया के माध्यम से हुआ है। इसकी शुरुआत 11वीं शताब्दी में गुर्जरी अपभ्रंश से हुई, जो बाद में 'पुरानी पश्चिमी राजस्थानी' के रूप में विकसित हुई। 15वीं से 18वीं शताब्दी के मध्य इसे 'मध्य राजस्थानी' काल कहा जाता है, जो साहित्य का स्वर्ण युग था। 19वीं शताब्दी के पश्चात यह 'आधुनिक राजस्थानी' के रूप में उभरी, जो भाषाई स्थिरता और साहित्यिक विकास को दर्शाती है।

23. (4) तरुण राजस्थान
'तरुण राजस्थान' समाचार पत्र ने राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम और राजनीतिक चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विजय सिंह पथिक और रामनारायण चौधरी के संपादन में प्रकाशित इस पत्र ने किसानों के आंदोलनों और सामंती शोषण के विरुद्ध आवाज बुलंद की। इसने राजस्थानी जनता को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने और नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक करने का कार्य किया। यह पत्र तत्कालीन राजनीतिक सक्रियता का सशक्त माध्यम था।

24. (1) इसे अभी तक संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित नहीं किया गया है।
वर्तमान में राजस्थानी भाषा को भारतीय संविधान की 8वीं अनुसूची में आधिकारिक रूप से सम्मिलित नहीं किया गया है। हालांकि, इसे साहित्य अकादमी द्वारा एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा के रूप में मान्यता प्राप्त है। राजस्थान की राजभाषा वर्तमान में हिंदी है। राजस्थानी एक अत्यंत समृद्ध ऐतिहासिक और साहित्यिक विरासत वाली भाषा है। इसके संरक्षण और संवैधानिक मान्यता हेतु राज्य में निरंतर प्रयास और आंदोलन जारी हैं।

25. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
राजस्थानी साहित्य की प्रसिद्ध रचनाओं और उनके लेखकों का मिलान महत्वपूर्ण है। 'वंश भास्कर' सूर्यमल मिश्रण की रचना है, जबकि 'नैणसी री ख्यात' के रचयिता मुहणोत नैणसी हैं। 'बातां री फुलवारी' लोक कथाओं का संग्रह है जिसे विजयदान देथा ने संकलित किया है। 'लीलटांस' आधुनिक कवि कन्हैयालाल सेठिया की कृति है। ये रचनाएं राजस्थानी साहित्य के विभिन्न कालखंडों और विधाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो भाषाई संपन्नता को प्रमाणित करती हैं।

26. (1) वागड़ क्षेत्र
राजस्थान का दक्षिणी भाग, जिसे 'वागड़ क्षेत्र' कहा जाता है, राजस्थानी और गुजराती भाषाओं के मध्य एक संक्रमण क्षेत्र निर्मित करता है। यहां बोली जाने वाली वागड़ी बोली में दोनों भाषाओं की व्याकरणिक विशेषताएं सम्मिलित हैं। भौगोलिक समीपता और ऐतिहासिक संबंधों के कारण इस क्षेत्र की बोली पर गुजराती का गहरा प्रभाव पड़ा है। यह भाषाई मेल-जोल राजस्थान की दक्षिणी सीमा पर एक अनूठी सांस्कृतिक पहचान को जन्म देता है।

27. (4) कुशललाभ
जैसलमेर के दरबारी कवि कुशललाभ ने अपनी कृति 'पिंगल शिरोमणि' में मारवाड़ी भाषा के साहित्यिक रुप के लिए 'डिंगल' शब्द का सर्वप्रथम लिखित प्रयोग किया था। यह ग्रंथ 16वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में रचा गया। कुशललाभ ने इसके माध्यम से राजस्थानी काव्य शास्त्र के नियमों को स्पष्ट किया। डिंगल शब्द का प्रयोग पश्चिमी राजस्थान की ओजस्वी साहित्यिक भाषा को पूर्वी राजस्थान की पिंगल शैली से अलग पहचान दिलाने हेतु किया गया।

28. (2) I, II, III, IV
राजस्थानी साहित्य के इन ग्रंथों का सही कालक्रम उनके रचना काल पर आधारित है। चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' 12वीं-13वीं शताब्दी की रचना है। इसके पश्चात 15वीं शताब्दी में पद्मनाभ ने 'कान्हड़दे प्रबंध' लिखा। 16वीं शताब्दी में पृथ्वीराज राठौड़ ने 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' की रचना की। अंततः 19वीं शताब्दी में सूर्यमल मिश्रण ने 'वंश भास्कर' रचा। यह अनुक्रम राजस्थान की साहित्यिक प्रगति और भाषाई विकास के चरणों को दर्शाता है।

29. (3) विजयदान देथा
'बातां री फुलवारी' राजस्थानी लोक कथाओं का एक अत्यंत विशाल संग्रह है, जिसके रचयिता प्रसिद्ध साहित्यकार विजयदान देथा हैं। उन्होंने मौखिक परंपरा में प्रचलित सैकड़ों लोक कथाओं को 14 खंडों में संकलित कर उन्हें साहित्यिक स्वरुप प्रदान किया। देथा जी को 'बिज्जी' के नाम से भी जाना जाता है। उनकी कहानियों पर अनेक फिल्में और नाटक भी बने हैं। यह कार्य राजस्थानी लोक संस्कृति के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण है।

30. (2) केवल II और III
हाड़ौती बोली मुख्य रूप से राजस्थान के दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ में प्रचलित है। महाकवि सूर्यमल मिश्रण ने अपने ग्रंथ 'वंश भास्कर' सहित अनेक रचनाएं इसी बोली में की थीं। हाड़ौती की व्याकरणिक संरचना ढूँढाड़ी से अत्यधिक समानता रखती है, इसलिए इसे ढूँढाड़ी की ही एक उप-बोली माना जाता है। इस बोली के विशिष्ट शब्द और क्रिया रूप इसे अन्य क्षेत्रीय बोलियों से समृद्ध बनाते हैं।

31. (1) प्राकृत भाषाओं का विकृत या परिवर्तनशील स्वरूप।
भाषाई विकास के संदर्भ में 'अपभ्रंश' का अर्थ प्राकृत भाषाओं के उस परिवर्तित स्वरूप से है, जो आधुनिक भारतीय भाषाओं के उदय का आधार बना। संस्कृत से प्राकृत और फिर अपभ्रंश के माध्यम से राजस्थानी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं का जन्म हुआ। राजस्थानी के मामले में शौरसेनी अपभ्रंश का गुर्जरी रूप सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है। अपभ्रंश काल ने प्राचीन शास्त्रीय भाषाओं और आधुनिक जीवंत लोक भाषाओं के बीच एक मजबूत सेतु बनाया।

32. (1) I, II और III
थली, धाटकी और खैराड़ी मारवाड़ी की महत्वपूर्ण उप-बोलियाँ हैं। थली मुख्य रूप से बीकानेर और जैसलमेर के रेतीले क्षेत्रों में बोली जाती है, जबकि धाटकी बाड़मेर के सीमावर्ती क्षेत्रों में प्रचलित है। खैराड़ी मेवाड़ और ढूँढाड़ के सीमावर्ती क्षेत्रों का मिश्रण है। इसके विपरीत, अहीरवाटी मुख्य रूप से अलवर के बहरोड़ और कोटपुतली क्षेत्रों में बोली जाती है। मारवाड़ी की इन उप-बोलियों का विस्तार राजस्थान के विशाल पश्चिमी भूभाग पर है।

33. (2) डिंगल
'सोरठा' छंद का सबसे प्रभावशाली और स्वाभाविक प्रयोग डिंगल साहित्यिक शैली में मिलता है। डिंगल शैली की ध्वनि संरचना सोरठा छंद के लिए अत्यंत उपयुक्त मानी जाती है। राजस्थानी के प्रसिद्ध नीति काव्य, जैसे 'राजिया रा सोरठा', इसी विधा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। सोरठा दोहे का उल्टा रूप होता है। डिंगल कवियों ने इसके माध्यम से वीरता और सामाजिक संदेशों को अत्यंत संक्षिप्त और प्रभावशाली ढंग से जनता तक पहुँचाया है।

34. (1) राजपूत शासकों की वीरता और वंशावली का यशोगान।
चारण साहित्य की मुख्य विशेषता राजपूत शासकों और योद्धाओं की वीरता, उनके ऐतिहासिक बलिदानों और वंशावलियों का सजीव यशोगान करना है। चारण कवि युद्ध के मैदान में भी शासकों के साथ रहकर उनके शौर्य को कलमबद्ध करते थे। इस साहित्य में 'वीर रस' की प्रधानता होती है और इसके लिए प्रायः डिंगल शैली का प्रयोग किया गया है। यह साहित्य राजस्थान के मध्यकालीन इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण स्रोत है।

35. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-ii
आधुनिक राजस्थानी साहित्य में 'राधा' सत्य प्रकाश जोशी की प्रसिद्ध रचना है। 'पीथल और पाथल' कन्हैयालाल सेठिया की अमर कृति है, जो महाराणा प्रताप और पृथ्वीराज राठौड़ के संवाद पर आधारित है। 'पगफेरो' मणि मधुकर की बहुचर्चित काव्य रचना है, जबकि 'बोल भारमली' के रचयिता भी सत्य प्रकाश जोशी ही हैं। ये कृतियाँ आधुनिक राजस्थानी कविता में नए भावबोध और शिल्पगत प्रयोगों के उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करती हैं।

36. (4) रास, फागु और चरचरी
मध्यकालीन राजस्थान में जैन साहित्य मुख्य रूप से रास, फागु और चरचरी जैसी काव्य शैलियों में विकसित हुआ। 'रास' शैली में धार्मिक कथाओं का वर्णन नृत्य-संगीत के साथ किया जाता था। 'फागु' वसंत ऋतु और उल्लास का काव्य था, जबकि 'चरचरी' उपदेशात्मक विषयों पर केंद्रित होती थी। जैन मुनियों द्वारा रचित यह साहित्य राजस्थानी भाषा के प्रारंभिक स्वरूप और तत्कालीन सामाजिक-धार्मिक मान्यताओं के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

37. (3) सबद वाणी
विष्णोई संप्रदाय के प्रवर्तक संत जाम्भोजी की प्रमुख रचना 'सबद वाणी' है। इसमें उनके द्वारा दिए गए 120 शब्द या उपदेश संकलित हैं, जो पर्यावरण संरक्षण, नैतिकता और सादगीपूर्ण जीवन पर आधारित हैं। जाम्भोजी ने अपनी वाणी के माध्यम से निर्गुण भक्ति का प्रचार किया और समाज को 29 नियमों की सीख दी। उनकी भाषा सरल राजस्थानी है, जिसमें लोक जीवन के मुहावरों का सहज प्रयोग मिलता है। यह साहित्य आज भी प्रासंगिक है।

38. (2) केवल III
राजस्थान के भक्ति आंदोलन में मीरां बाई 'सगुण' भक्ति धारा की प्रमुख संत हैं, जिन्होंने भगवान कृष्ण की माधुर्य भाव से आराधना की। इसके विपरीत, संत दादू दयाल, रामचरण, लालदास और जसनाथ मुख्य रूप से 'निर्गुण' निराकार ईश्वर की उपासना पर बल देने वाले संत थे। मीरां की रचनाओं में ईश्वर के साकार रूप का चित्रण मिलता है, जबकि निर्गुण संतों ने आंतरिक भक्ति और नाम-स्मरण को महत्व दिया।

39. (4) नैणसी री ख्यात
'नैणसी री ख्यात' राजस्थानी साहित्य में ऐतिहासिक ख्यात लेखन का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण है। इसके रचयिता जोधपुर के महाराजा जसवंत सिंह प्रथम के दीवान मुहणोत नैणसी थे। इस ग्रंथ में राजस्थान की विभिन्न रियासतों के इतिहास और तत्कालीन भौगोलिक स्थिति का सूक्ष्म विवरण दिया गया है। इसकी व्यापकता के कारण नैणसी को 'राजस्थान का अबुल फजल' कहा जाता है। यह ग्रंथ इतिहास लेखन की मध्यकालीन परंपरा की अनमोल धरोहर है।

40. (3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा डिंगल शैली में रचित 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' को इसकी महानता के कारण दुरसा आढ़ा ने 'पांचवां वेद' और 'उन्नीसवां पुराण' कहा था। यह कथन पूर्णतः सत्य है। हालांकि, यह ग्रंथ मुगलों के विरुद्ध सैन्य विजय का वृत्तांत नहीं है, बल्कि यह भगवान कृष्ण और रुक्मणी के विवाह की एक सुंदर भक्तिपूर्ण काव्य रचना है। यह ग्रंथ अपनी काव्यात्मक सुंदरता और आध्यात्मिक गहराई के लिए अद्वितीय है।

41. (3) माधुर्य भाव
मीरां बाई की भक्ति मुख्य रूप से 'माधुर्य भाव' की है, जिसमें वे भगवान कृष्ण को अपना पति मानकर उनकी आराधना करती थीं। इस भाव में भक्त और ईश्वर के बीच प्रेम का उच्चतम स्तर होता है। मीरां के पदों में विरह की पीड़ा और मिलन की आकांक्षा का अनूठा संगम मिलता है। उनकी भक्ति परंपरा ने तत्कालीन समाज में प्रचलित रुढ़ियों को तोड़ते हुए व्यक्तिगत आध्यात्मिक स्वतंत्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

42. (1) जैन रास परंपरा - चारण रासो परंपरा - संत साहित्य परंपरा
राजस्थानी काव्य परंपराओं का उदय एक निश्चित कालक्रम में हुआ। सबसे पहले 11वीं-12वीं शताब्दी में जैन मुनियों द्वारा 'रास' परंपरा के अंतर्गत धार्मिक काव्य रचा गया। इसके पश्चात 13वीं

से 16वीं शताब्दी के मध्य चारणों द्वारा 'रासो' और वीरगाथा काव्य की प्रधानता रही। 15वीं शताब्दी से भक्ति आंदोलन के प्रभाव स्वरूप 'संत साहित्य' परंपरा विकसित हुई। यह विकास राजस्थानी समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को प्रतिबिंबित करता है।

43. (4) ये अनिवार्य रूप से क्लिष्ट संस्कृत छंदों में रचित हैं।
राजस्थानी लोक कथाओं या 'बातां' की प्रमुख विशेषता उनकी सरलता और जनभाषा में होना है। ये कथाएं सदियों से मौखिक परंपरा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचती रही हैं। इनमें वीरता, प्रेम और नैतिकता का अद्भुत समावेश होता है। 'बातां' ग्रामीण राजस्थान के सामाजिक मूल्यों और लोक विश्वासों का दर्पण हैं। इनका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ लोक कल्याण और नैतिक शिक्षा देना रहा है।

44. (2) इसकी विशिष्ट भाषाई पहचान और समृद्ध साहित्यिक विरासत है।
राजस्थानी को संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल करने की मांग इसकी प्राचीनता और समृद्ध साहित्यिक विरासत पर आधारित है। राजस्थानी भाषा का अपना एक सहस्राब्दी से पुराना लिखित इतिहास है, जिसमें जैन, चारण और संत साहित्य की विशाल धरोहर समाहित है। यह हिंदी की उप-बोली मात्र नहीं है, बल्कि इसकी अपनी विशिष्ट ध्वन्यात्मकता है। भाषाई विविधता के संरक्षण और सांस्कृतिक पहचान हेतु यह मांग निरंतर की जा रही है।

45. (1) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
राजस्थानी साहित्य के ग्रंथों की अपनी विशिष्ट विधाएं हैं। 'दयालदास री ख्यात' बीकानेर के राठौड़ शासकों की ऐतिहासिक वंशावली प्रस्तुत करती है। 'ढोला मारु रा दूहा' एक प्राचीन लोकप्रिय लोक श्रृंगारिक काव्य है। 'कान्हड़दे प्रबंध' जालौर के कान्हड़दे चौहान की वीरता का वर्णन करने वाला वीर प्रधान काव्य है। 'राव जैतसी रो छंद' युद्ध वृत्तांत और वीरता पर आधारित पद्य ग्रंथ है, जो बीठू सूजा द्वारा रचित है।

46. (4) मारवाड़ी
मारवाड़ी बोली को राजस्थानी भाषा का मानक साहित्यिक रूप माना जाता है। इसका मुख्य कारण इसकी समृद्ध साहित्यिक विरासत है, जिसमें मध्यकालीन डिंगल साहित्य और मीरां बाई की रचनाएं शामिल हैं। मारवाड़ी का विस्तार राजस्थान के सबसे बड़े भौगोलिक क्षेत्र में है। प्राचीन ग्रंथों में इसे 'मरु भाषा' के नाम से संबोधित किया गया है। इसकी व्याकरणिक सुदृढ़ता के कारण इसे राजस्थानी भाषा की प्रतिनिधि बोली के रूप में मान्यता प्राप्त है।

47. (1) शिवचंद्र भरतिया
राजस्थानी भाषा के प्रथम आधुनिक उपन्यास 'कनक सुंदर' के लेखक शिवचंद्र भरतिया हैं। इसकी रचना 1903 में हुई, जो राजस्थानी गद्य साहित्य की महत्वपूर्ण घटना है। भरतिया ने राजस्थानी का प्रथम आधुनिक नाटक 'केसर विलास' और प्रथम कहानी 'विश्रांत प्रवास' भी लिखी थी। उनके योगदान ने राजस्थानी साहित्य को पारंपरिक काव्य शैलियों से आधुनिक गद्य विधाओं की ओर मोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे भाषा का नया आयाम विकसित हुआ।

48. (1) I, IV, II, III
राजस्थान की बोलियों का पश्चिम से पूर्व की ओर भौगोलिक क्रम मारवाड़ी से शुरु होकर ब्रज क्षेत्र तक जाता है। सबसे पश्चिम में मरुस्थल क्षेत्र की प्रमुख बोली मारवाड़ी है। इसके दक्षिण-पूर्व की ओर बढ़ने पर मेवाड़ क्षेत्र में मेवाड़ी बोली का प्रभाव आता है। मध्य राजस्थान, विशेषकर जयपुर के क्षेत्रों में ढूँढाड़ी बोली का प्रभुत्व है। सबसे पूर्व में भरतपुर और धौलपुर की सीमा पर ब्रज भाषा प्रभावित क्षेत्र स्थित है।

49. (2) यह तुकबंदी युक्त गद्य-पद्य मिश्रित शैली है।
राजस्थानी साहित्य में 'दवावैत' एक विशिष्ट कलात्मक शैली है, जो मुख्यतः तुकबंदी युक्त गद्य-पद्य का मिश्रण होती है। इसमें अरबी और फारसी के शब्दों का प्रभाव भी देखने को मिलता है। इस विधा का प्रयोग दरबारों में राजाओं की वीरता और ऐतिहासिक घटनाओं का सजीव वर्णन करने के लिए किया जाता था। दवावैत का वाचन एक विशेष लय के साथ किया जाता है, जो राजस्थानी भाषा की भाषाई उदारता का प्रतीक है।

50. (1) केवल I और II
प्रारंभिक राजस्थानी जैन साहित्य में 'रास' और 'फागु' जैसी काव्य शैलियों का प्रचुर प्रयोग किया गया। 'भरतेश्वर बाहुबली घोर' इस परंपरा की महत्वपूर्ण कृति है। हालांकि, जैन साहित्य केवल कर्मकांडों तक सीमित नहीं था। वास्तव में, जैन साहित्य में नैतिकता, मानवीय मूल्यों और नीतिगत विषयों पर गहरा चिंतन मिलता है। यह साहित्य राजस्थानी भाषा के व्याकरणिक विकास और तत्कालीन समाज के सांस्कृतिक मूल्यों को समझने का अनिवार्य स्रोत है।

51. (3) 1974
साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने राजस्थानी को एक स्वतंत्र साहित्यिक भाषा के रूप में वर्ष 1974 में औपचारिक मान्यता प्रदान की थी। इसके पश्चात राजस्थानी लेखकों को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय स्तर पर साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया जाने लगा। यह कदम राजस्थानी भाषा की प्राचीनता को राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण था। इससे राजस्थानी साहित्य के आधुनिक विकास और अनुसंधान कार्यों को नई ऊर्जा प्राप्त हुई है।

52. (4) I, II, III और IV
कन्हैयालाल सेठिया आधुनिक राजस्थानी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिनकी कृतियों में 'हिवौ रो हंस', 'मिंझर', 'सबद' और 'लीलटांस' सम्मिलित हैं। उनकी कविताएं 'धरती धोरा री' और 'पीथल और पाथल' जनमानस में रची-बसी हैं। सेठिया जी की रचनाओं में राजस्थानी संस्कृति, प्रकृति चित्रण और मानवीय संवेदनाओं की प्रधानता मिलती है। 'लीलटांस' के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ था। उनका साहित्य गौरवशाली परंपरा को प्रतिष्ठित करता है।

तर्क दिया कि राजस्थानी की अपनी विशिष्ट पहचान है और इसे एक स्वतंत्र भाषा का दर्जा दिया जाना चाहिए। चटर्जी का मानना था कि राजस्थानी की व्याकरणिक संरचना और प्राचीन साहित्यिक परंपरा इसे एक सशक्त मौलिक भाषा बनाती है। उनके इस दृष्टिकोण ने राजस्थानी को स्वतंत्र भाषाई पहचान दिलाने के आंदोलन को बौद्धिक आधार प्रदान किया।

75. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थानी साहित्य की विधाओं के अपने विशिष्ट विषय होते हैं। 'मरसिया' किसी नायक की मृत्यु पर शोक व्यक्त करने वाला काव्य है। 'झूलणा' वीरता के चित्रण हेतु प्रयुक्त एक विशेष काव्य छंद है। 'वचनिका' में ऐतिहासिक युद्धों का गद्य-पद्य विवरण मिलता है, जैसे 'अचलदास खींची री वचनिका'। 'पवाड़ा' लोक नायकों की वीरगाथाओं के गायन की परंपरा है, जिसमें पाबूजी के पवाड़े प्रसिद्ध हैं। ये विधाएं साहित्य की विविधता को पूर्णता प्रदान करती हैं।

76. (2) चंद्रसिंह बिरकाली
आधुनिक राजस्थानी कविता की महत्वपूर्ण कृति 'बादली' के रचयिता प्रसिद्ध कवि चंद्रसिंह बिरकाली हैं। इसका प्रकाशन 1943 में हुआ, जो आधुनिक राजस्थानी साहित्य के इतिहास में मील का पत्थर है। इसमें कवि ने प्रकृति चित्रण, विशेष रूप से रेगिस्तान में वर्षा की प्रतीक्षा का सजीव वर्णन किया है। बिरकाली जी की इस रचना ने राजस्थानी कविता को पुरानी दरबारी परंपराओं से निकालकर आधुनिक भावबोध और प्रकृति प्रेम की नई दिशा प्रदान की है।

77. (3) ढूँढाड़ी (अजमेरी स्वरुप)
किशनगढ़, अजमेर और मेरवाड़ा क्षेत्र में मुख्य रूप से ढूँढाड़ी बोली का अजमेरी स्वरूप प्रचलित है। चूंकि यह क्षेत्र जयपुर और मारवाड़ के मध्य स्थित है, इसलिए यहां की बोली पर इन दोनों का प्रभाव दिखाई देता है। अजमेर की भौगोलिक स्थिति ने इसे बोलियों का संगम स्थल बना दिया है। यहां की ढूँढाड़ी में स्थानीय शब्दावली का विशिष्ट लहजा मिलता है, जिसे 'अजमेरी' कहा जाता है। यह बोली इस क्षेत्र की सांस्कृतिक विशिष्टता का अभिन्न अंग है।

78. (3) I, II, III और IV
राजस्थानी बोलियों के व्यवस्थित अध्ययन और शब्दकोश संकलन में सीताराम लालस, एल.पी. टेसिटोरी, मोतीलाल मेनारिया और जॉर्ज ग्रियर्सन ने अविस्मरणीय योगदान दिया है। ग्रियर्सन ने वैज्ञानिक वर्गीकरण किया, टेसिटोरी ने चारण साहित्य पर कार्य किया, जबकि मोतीलाल मेनारिया ने साहित्य के इतिहास को क्रमबद्ध किया। सीताराम लालस ने विशाल शब्दकोश तैयार कर इस भाषा को सुदृढ़ आधार प्रदान किया। इन विद्वानों के प्रयासों से ही आज राजस्थानी का भाषाई स्वरुप स्पष्ट है।

79. (1) सायांजी झूला
'रुकमणी हरण' नामक सुप्रसिद्ध डिंगल काव्य ग्रंथ के रचयिता कवि सायांजी झूला हैं। यह ग्रंथ भगवान कृष्ण द्वारा रुक्मणी के हरण और उनके विवाह के प्रसंग पर आधारित है। सायांजी झूला मध्यकालीन राजस्थान के प्रतिष्ठित भक्त कवि थे। उनकी इस रचना में वीरता और भक्ति का अनूठा समन्वय मिलता है। डिंगल शैली में रचित होने के कारण इसमें प्रयुक्त छंद और ओजस्वी भाषा पाठकों पर गहरा प्रभाव छोड़ती है। यह ग्रंथ काव्य परंपरा का उत्कृष्ट उदाहरण है।

80. (1) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
दक्षिण राजस्थान के वागड़ क्षेत्र की बोली वास्तव में गुजराती भाषा से अत्यधिक समानता रखती है। इसका मुख्य भौगोलिक कारण यह है कि यह क्षेत्र सीधे तौर पर गुजरात के साथ अपनी सीमा साझा करता है। सदियों से चले आ रहे सामाजिक और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के कारण यहां की वागड़ी बोली में गुजराती के व्याकरणिक तत्व और प्रचुर शब्दावली समाहित हो गई है। यह भाषाई प्रभाव इतना गहरा है कि यह एक विशिष्ट भाषाई पहचान बनाता है।

81. (2) थली
राजस्थान की 'थली' बोली मुख्य रूप से जैसलमेर, बाड़मेर और बीकानेर के मरुस्थलीय क्षेत्रों में बोली जाती है। यह मारवाड़ी की एक प्रमुख उप-बोली है, जो अपने कठोर और स्पष्ट स्वरों के लिए पहचानी जाती है। 'थली' का अर्थ ही मरुस्थलीय उच्च भूमि होता है। इस क्षेत्र की कठिन भौगोलिक परिस्थितियों ने इस बोली के उच्चारण को एक विशिष्ट स्वरुप प्रदान किया है। मरुस्थल के लोक गीतों में थली बोली का प्रयोग वहां की संस्कृति को सजीवता से व्यक्त करता है।

82. (1) मेवाड़
भील जनजाति के मौखिक साहित्य से जुड़ा प्रसिद्ध लोक नाट्य 'गवरी' मुख्य रूप से मेवाड़ क्षेत्र में आयोजित किया जाता है। यह रक्षाबंधन के अगले दिन से शुरू होकर 40 दिनों तक चलने वाला एक अनुष्ठानिक उत्सव है। गवरी का कथानक भगवान शिव और भस्मासुर की पौराणिक कथा पर आधारित है। इसमें मेवाड़ की लोक भाषा और भीली शब्दावली का सुंदर प्रयोग होता है। यह नाट्य राजस्थान की जनजातीय कला और भाषाई विरासत का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग है।

83. (3) कवि इसरदास
वीर रस की प्रसिद्ध डिंगल काव्य रचना 'हाला झाला री कुंडलियाँ' के रचयिता ओजस्वी कवि इसरदास जी हैं। इस ग्रंथ में उन्होंने योद्धाओं के मध्य हुए वीरतापूर्ण संघर्ष का अत्यंत प्रभावशाली वर्णन किया है। इसरदास जी को उनकी आध्यात्मिक रचनाओं के कारण राजस्थान में विशेष सम्मान प्राप्त है। यह कृति डिंगल के कुंडलिया छंद के सर्वश्रेष्ठ प्रयोगों में से एक मानी जाती है, जो पाठकों में वीरता और नैतिकता का भाव जाग्रत करने की अद्भुत शक्ति रखती है।

84. (4) राजस्थान भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर
राजस्थानी साहित्य की मासिक पत्रिका 'जागती जोत' का नियमित प्रकाशन राजस्थान भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर द्वारा किया जाता है। यह पत्रिका राजस्थानी लेखकों को एक मंच प्रदान करने और आधुनिक साहित्य की नई प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा

का प्रतीक मानी जाती हैं, जो उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित करती हैं।

64. (2) जयपुर और भरतपुर
'पिंगल' साहित्यिक शैली को मुख्य रूप से जयपुर और भरतपुर जैसी पूर्वी रियासतों के शासकों ने संरक्षण प्रदान किया। चूंकि पिंगल शैली पर ब्रज भाषा का गहरा प्रभाव था और यह क्षेत्र ब्रज भूमि के भौगोलिक सामीप्य में था, इसलिए यहां के दरबारी कवियों ने इस शैली को प्राथमिकता दी। पिंगल का प्रयोग अक्सर भाट कवियों द्वारा किया जाता था। इसके विपरीत, पश्चिमी राजस्थान में डिंगल शैली को अधिक राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ था।

65. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थानी लोक साहित्य के रूपों की विशिष्ट पहचान है। 'बातां' पारंपरिक लघु लोक कथाओं को कहा जाता है। 'पहेली' को स्थानीय भाषा में 'आडी' कहा जाता है, जो बौद्धिक चातुर्य का परीक्षण करती है। 'फड़' लोक देवताओं के यशोगान का चित्रित पट होता है, जिसका वाचन गायन के साथ होता है। 'कहावत' लोकोक्ति का रूप है, जो अनुभवों को संक्षिप्त रूप में व्यक्त करती है। ये सभी रूप सांस्कृतिक विविधता को दर्शाते हैं।

66. (1) बीठू सूजा
'राव जैतसी रो छंद' नामक ऐतिहासिक ग्रंथ की रचना कवि बीठू सूजा द्वारा की गई थी। इस डिंगल काव्य में बीकानेर के शासक राव जैतसी और मुगल शासक के भाई कामरान के मध्य हुए भीषण युद्ध का वर्णन है। यह ग्रंथ 1534 ईस्वी में राव जैतसी की विजय को गौरवशाली ढंग से प्रस्तुत करता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह कृति महत्वपूर्ण है क्योंकि यह तत्कालीन राजनीतिक संघर्षों पर प्रकाश डालती है। इसकी गणना श्रेष्ठ वीर रस रचनाओं में होती है।

67. (3) 21 फरवरी
राजस्थानी भाषा दिवस प्रतिवर्ष 21 फरवरी को मनाया जाता है। यह दिवस अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के साथ ही मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य राजस्थानी भाषा के संरक्षण और इसे संवैधानिक मान्यता दिलाने के प्रति जन-जागरूकता पैदा करना है। इस अवसर पर संपूर्ण राजस्थान में विभिन्न साहित्यिक गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं। यह दिवस राजस्थानी भाषियों के लिए अपनी मातृभाषा के प्रति गौरव व्यक्त करने और उसकी समृद्ध विरासत को याद करने का महत्वपूर्ण अवसर है।

68. (1) I, II, III, IV
राजस्थानी विद्वानों का सही कालक्रम उनके रचना काल के अनुसार व्यवस्थित है। चंदबरदाई 12वीं-13वीं शताब्दी के कवि थे। पद्मनाभ ने 15वीं शताब्दी में 'कान्हड़दे प्रबंध' की रचना की। मुहणोत नैणसी 17वीं शताब्दी में जोधपुर के दीवान रहे। अंत में, सूर्यमल मिश्रण 19वीं शताब्दी के प्रसिद्ध क्रांतिकारी कवि थे। यह कालक्रम राजस्थान के साहित्यिक विकास की निरंतरता को दर्शाता है, जिसमें प्रत्येक युग के विद्वान ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

69. (3) कवि कल्लोल
'ढोला मारू रा दूहा' राजस्थानी लोक साहित्य का प्राचीन प्रेम महाकाव्य है, जिसके मूल रचयिता कवि कल्लोल माने जाते हैं। इस काव्य में राजकुमार ढोला और राजकुमारी मारू की वियोग और मिलन की सुंदर कथा का वर्णन है। बाद में 16वीं शताब्दी में कुशललाभ ने इसमें कुछ चौपाइयाँ जोड़ीं। यह ग्रंथ राजस्थानी लोक संस्कृति और तत्कालीन सामाजिक परिवेश को भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करता है। इसकी गणना सर्वश्रेष्ठ श्रृंगारिक कृतियों में होती है।

70. (2) केवल II और III
राजस्थानी साहित्य में 'पृथ्वीराज रासो' को पिंगल परंपरा का सबसे प्रसिद्ध महाकाव्य माना जाता है। 'बीसलदेव रासो' अपनी प्रकृति में वीर रस के स्थान पर मुख्य रूप से एक श्रृंगारिक ग्रंथ है, जो राजा बीसलदेव और राजमती के प्रेम पर केंद्रित है। हालांकि, यह कहना गलत है कि रासो साहित्य ऐतिहासिक तथ्यों से पूर्णतः रहित है। यद्यपि इनमें कल्पनाशीलता मिलती है, फिर भी ये ग्रंथ तत्कालीन इतिहास और वंशावली के महत्वपूर्ण स्रोत हैं।

71. (4) मारवाड़ रा परगना री विगत
मुहणोत नैणसी द्वारा रचित ग्रंथ 'मारवाड़ रा परगना री विगत' को इसके व्यापक आर्थिक और सांख्यिकीय विवरणों के कारण 'राजपूताना का गजेटियर' कहा जाता है। नैणसी ने इसमें मारवाड़ की प्रत्येक तहसील, राजस्व और फसलों के सटीक आंकड़े प्रस्तुत किए हैं। यह ग्रंथ तत्कालीन प्रशासनिक व्यवस्था और ग्रामीण जनजीवन के अध्ययन के लिए अद्वितीय स्रोत है। इसकी तुलना अक्सर 'आइन-ए-अकबरी' से की जाती है, क्योंकि यह व्यवस्थित सांख्यिकीय रिकॉर्ड है।

72. (2) I, II और III
'जागती जोत', 'मरुवाणी' और 'परंपरा' राजस्थानी भाषा और साहित्य को बढ़ावा देने वाली प्रमुख पत्रिकाएं हैं। 'जागती जोत' का प्रकाशन राजस्थान भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर द्वारा किया जाता है। 'परंपरा' के माध्यम से राजस्थानी शोध संस्थान ने प्राचीन साहित्य का संपादन किया है। इसके विपरीत, 'सुजस' मुख्य रूप से सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की पत्रिका है, जो सरकारी योजनाओं पर केंद्रित होती है, न कि शुद्ध साहित्यिक अनुसंधान पर।

73. (3) रत्ना खाती
प्रसिद्ध ग्रंथ 'नरसी रो मायरो' की रचना मीरां बाई के निर्देशन और प्रेरणा से भक्त कवि रत्ना खाती द्वारा की गई थी। इस ग्रंथ में गुजरात के संत नरसी मेहता की उस कथा का वर्णन है, जब भगवान ने आकर उनकी पुत्री के विवाह में 'मायरा' भरा था। यह कृति राजस्थानी और ब्रज भाषा के मिश्रण में रची गई है। यह भक्ति साहित्य का अनुपम उदाहरण है, जो ईश्वर और भक्त के अटूट विश्वास को सरल शैली में व्यक्त करता है।

74. (1) सुनीतिकुमार चटर्जी
सुप्रसिद्ध भाषाविद डॉ. सुनीतिकुमार चटर्जी ने राजस्थानी को हिंदी की उप-शाखा मात्र मानने का विरोध किया था। उन्होंने

परंपराओं के रूप में प्रचलित रहा। यह वर्गीकरण राजस्थानी समाज के विभिन्न वर्गों की साहित्यिक अभिरुचियों को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

95. (1) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
राजस्थानी साहित्य के क्षेत्र में दिए जाने वाले पुरस्कारों का संबंध विशिष्ट संस्थाओं से है। सूर्यमल मिश्रण शिखर पुरस्कार राजस्थान भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी द्वारा दिया जाता है। मीरां पुरस्कार राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर का सर्वोच्च सम्मान है। प्रतिष्ठित बिहारी पुरस्कार के.के. बिड़ला फाउंडेशन द्वारा दिया जाता है। राष्ट्रीय स्तर का साहित्य अकादमी पुरस्कार साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा प्रदान किया जाता है। ये पुरस्कार लेखकों को सम्मानित कर भाषा के गौरव को संवर्धित करते हैं।

96. (2) संत रामचरण
राजस्थान में रामसनेही संप्रदाय के प्रवर्तक संत रामचरण जी की प्रमुख आध्यात्मिक रचना 'अनभै वाणी' है। इसमें उनके द्वारा दिए गए हजारों उपदेश और पद संकलित हैं, जो निराकार ब्रह्म की भक्ति और गुरु की महत्ता पर बल देते हैं। संत रामचरण जी ने अपनी सरल वाणी के माध्यम से तत्कालीन समाज में व्याप्त आडंबरों को दूर करने का प्रयास किया। यह ग्रंथ अनुयायियों के लिए पवित्र मार्गदर्शक है और राजस्थानी संत साहित्य की एक अत्यंत समृद्ध विरासत मानी जाती है।

97. (2) ब्रज भाषा
'पिंगल' साहित्यिक शैली मुख्य रूप से पूर्वी राजस्थान की बोलियों और ब्रज भाषा के मधुर समन्वय का परिणाम है। इस शैली का विकास उन क्षेत्रों में अधिक हुआ जो उत्तर प्रदेश की ब्रज भूमि के निकट स्थित थे। पिंगल में राजस्थानी की मौलिकता के साथ ब्रज की कोमलता का अद्भुत संगम मिलता है। इसका प्रयोग प्रायः भाट कवियों द्वारा प्रेम और श्रृंगार के चित्रण हेतु किया जाता था। पिंगल शैली ने राजस्थानी साहित्य को व्यापक आधार प्रदान कर पड़ोसी भाषाई क्षेत्रों से जोड़ा।

98. (2) II, IV और V
आधुनिक राजस्थानी कविता को नई ऊंचाइयों पर ले जाने वाले कवियों में कन्हैयालाल सेठिया, चंद्रसिंह बिरकाली और सत्य प्रकाश जोशी के नाम सर्वोपरि हैं। सेठिया ने सांस्कृतिक चेतना जगाई, बिरकाली ने प्रकृति चित्रण के नए मानक स्थापित किए और जोशी ने ऐतिहासिक पात्रों को आधुनिक संदर्भ प्रदान किए। यद्यपि सीताराम लालस का योगदान शब्दकोश में है, पर पद्य विधा में इन तीनों कवियों ने आधुनिक राजस्थानी काव्य को शिल्प और भाव दोनों दृष्टियों से अत्यंत समृद्ध बनाया है।

99. (3) ढूँढाड़ी
'तोरवाटी' उप-बोली मुख्य रूप से शेखावाटी और जयपुर के सीमावर्ती क्षेत्रों में बोली जाती है। भाषाई वर्गीकरण के अनुसार यह प्रमुख रूप से 'ढूँढाड़ी' बोली के अंतर्गत आती है। तोरवाटी पर यद्यपि शेखावाटी का भी प्रभाव है, परंतु इसकी मूल संरचना ढूँढाड़ी के अधिक निकट है। यह राजस्थान की क्षेत्रीय बोलियों की उस सूक्ष्म विविधता का उदाहरण है, जहां कुछ ही दूरी पर भाषाई लहजा बदल जाता है। यह इस भूमि की अनूठी भाषाई संपन्नता को दर्शाता है।

100. (4) A असत्य है लेकिन R सत्य है।
राजस्थानी साहित्य में 'रास' और 'रासो' दो अलग विधाएं हैं। 'रास' साहित्य मुख्य रूप से जैन मुनियों द्वारा नैतिकता की शिक्षा हेतु रचा गया था, जिसमें शांति और भक्ति रस की प्रधानता थी। इसके विपरीत, 'रासो' परंपरा के ग्रंथ जैसे 'पृथ्वीराज रासो' मुख्य रूप से शासकों की वीरता और युद्धों पर केंद्रित थे। इसलिए अभिकथन असत्य है कि रास परंपरा युद्ध पर आधारित थी। यह अंतर धार्मिक और दरबारी धाराओं के बीच के सूक्ष्म विभाजन को स्पष्ट करता है।

101. (3) मारवाड़ रा परगना री विगत
मुहणोत नैणसी द्वारा रचित 'मारवाड़ रा परगना री विगत' 17वीं शताब्दी के राजस्थान की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अध्ययन करने के लिए सबसे प्रामाणिक ग्रंथ है। इसमें प्रत्येक परगने की जनसंख्या, फसलों और राजस्व की दरें अत्यंत सूक्ष्मता से दी गई हैं। यह मध्यकालीन भारत का ऐसा ग्रंथ है जो आम जनता और अर्थव्यवस्था का विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत करता है। इसकी तथ्यात्मक शुद्धता के कारण इसे आधुनिक इतिहासकारों द्वारा अत्यंत सम्मान के साथ उद्धृत किया जाता है।

102. (2) कामरान
बीठू सूजा द्वारा रचित ऐतिहासिक ग्रंथ 'राव जैतसी रो छंद' में बीकानेर के शासक राव जैतसी और मुगल सम्राट के भाई कामरान के मध्य हुए भीषण सैन्य संघर्ष का चित्रण मिलता है। यह युद्ध 1534 ईस्वी में हुआ था, जिसमें राव जैतसी ने अपनी कुशल रणनीति से कामरान की विशाल सेना को पराजित किया था। यह ग्रंथ न केवल विजय का यशोगान करता है, बल्कि तत्कालीन उत्तर-पश्चिमी राजस्थान की राजनीतिक स्थिति को डिंगल शैली की ओजपूर्ण भाषा में लिपिबद्ध भी करता है।

103. (4) लोक श्रृंगारिक काव्य
'ढोला मारु रा दूहा' राजस्थानी साहित्य की अत्यंत लोकप्रिय कृति है, जिसे 'लोक श्रृंगारिक काव्य' की श्रेणी में रखा जाता है। इसमें राजकुमार ढोला और राजकुमारी मारु के वियोग की पीड़ा और सुखद पुनर्मिलन की मार्मिक गाथा वर्णित है। यह काव्य लोकमानस में गहरा रचा-बसा है और इसमें मारवाड़ की प्राकृतिक सुंदरता के साथ विरह की भावनाओं का सुंदर चित्रण मिलता है। यह ग्रंथ सिद्ध करता है कि राजस्थानी साहित्य में प्रेम की कोमल भावनाओं की भी समृद्ध अभिव्यक्ति है।

104. (1) शेखावाटी
शेखावाटी बोली राजस्थान के भाषाई मानचित्र पर मारवाड़ी और ढूँढाड़ी के मध्य एक महत्वपूर्ण 'भाषाई सेतु' का कार्य करती है। यह मुख्य रूप से सीकर, झुंझुनूं और चूरु में बोली जाती है। शेखावाटी की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि इसमें दोनों बोलियों के शब्द और व्याकरणिक लक्षण घुले-मिले पाए जाते हैं। यह बोली न केवल क्षेत्रीय पहचान का प्रतीक है,

रही है। इसमें कविताएं, कहानियां और शोध लेख प्रकाशित होते हैं। यह संस्था राजस्थानी को संवैधानिक मान्यता दिलाने और इसके सर्वांगीण विकास के लिए समर्पित राज्य की शीर्ष संस्था है।

85. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान के संतों ने अपनी शिक्षाओं के प्रसार के लिए क्षेत्रीय बोलियों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया। मीरां बाई के पदों में मारवाड़ी और ब्रज का मिश्रण मिलता है। संत दादू दयाल ने ढूँढाड़ी और सधुक्कड़ी भाषा को अपनाया। अलवर क्षेत्र के संत चरणदास की मुख्य बोली मेवाती थी। वागड़ क्षेत्र के संत मावजी ने अपने ग्रंथों की रचना स्थानीय वागड़ी बोली में की। यह भाषाई विविधता संतों की जन-सामान्य तक पहुँच को स्पष्ट रूप से प्रमाणित करती है।

86. (2) 'बात' कथा वाचन पर केंद्रित है, जबकि 'ख्यात' औपचारिक ऐतिहासिक विवरण है।
राजस्थानी साहित्य में 'बात' और 'ख्यात' के मध्य अंतर उनकी विषयवस्तु में है। 'बात' मुख्य रूप से कहानी या कथा वाचन की एक लोकप्रिय विधा है, जिसमें ऐतिहासिक घटनाओं के साथ लोक कथाओं का समावेश होता है। इसके विपरीत, 'ख्यात' एक औपचारिक ऐतिहासिक दस्तावेज है, जिसे प्रायः राजाओं के आदेश पर लिखा जाता था। ख्यात में वंशावलियों और प्रशासनिक उपलब्धियों का व्यवस्थित विवरण होता है। ये दोनों रूप इतिहास को समझने में सहायक हैं।

87. (4) मेघराज मुकुल
हाड़ा रानी के सर्वोच्च बलिदान पर आधारित कालजयी कविता 'सेनाणी' के रचयिता प्रसिद्ध कवि मेघराज मुकुल हैं। इस कविता की पंक्तियाँ संपूर्ण राजस्थान में वीरता के प्रतीक के रूप में विख्यात हैं। यह कविता उस ऐतिहासिक घटना का सजीव चित्रण करती है, जब नवविवाहिता पत्नी ने युद्ध हेतु प्रेरित करने के लिए अपना सिर काटकर भेंट कर दिया था। मुकुल जी ने अपनी इस ओजस्वी रचना के माध्यम से राजस्थानी नारियों के अदम्य साहस और देशभक्ति को अमर कर दिया है।

88. (1) मेवाती और हरयाणवी
अहीरवाटी बोली मुख्य रूप से राजस्थान के अलवर और हरियाणा के महेंद्रगढ़, गुड़गांव क्षेत्रों में प्रचलित है। यह बोली भौगोलिक रूप से मेवाती और हरयाणवी के संगम स्थल पर स्थित है। अहीरवाटी में मेवाती की ध्वन्यात्मकता और हरयाणवी की व्याकरणिक संरचना का अनूठा मेल मिलता है। जोधराज द्वारा रचित सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'हम्मीर रासो' इसी बोली में लिखा गया है, जो इसके साहित्यिक महत्व को दर्शाता है। यह क्षेत्र की एक विशिष्ट भाषाई पहचान है।

89. (3) मारवाड़
'बांकीदास री ख्यात' जोधपुर रियासत के इतिहास के अध्ययन का एक अत्यंत विश्वसनीय स्रोत है। इसके रचयिता प्रसिद्ध चारण कवि और इतिहासकार बांकीदास आसिया थे, जो महाराजा मानसिंह के दरबारी कवि थे। इस ख्यात में न केवल राठौड़ वंश की वंशावली बल्कि मारवाड़ के तत्कालीन सामाजिक और राजनीतिक परिवेश का व्यापक विवरण मिलता है। बांकीदास ने ऐतिहासिक तथ्यों को बारीकी से संकलित किया है। उनकी राष्ट्रवादी सोच के कारण यह ख्यात राजस्थानी इतिहास लेखन में विशेष स्थान रखती है।

90. (1) केवल I और II
राजस्थानी को संवैधानिक मान्यता दिलाने हेतु राजस्थान विधानसभा द्वारा 2003 में सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित किया गया था। साथ ही, सीताकांत महापात्र समिति ने भी राजस्थानी को 8वीं अनुसूची में शामिल करने की सकारात्मक अनुशंसा की थी। हालांकि, यह कथन गलत है कि इसे केंद्र सरकार की द्वितीय आधिकारिक भाषा का दर्जा प्राप्त हो चुका है। वास्तविकता यह है कि राजस्थानी आज भी अपनी संवैधानिक मान्यता और 8वीं अनुसूची में स्थान पाने के लिए निरंतर संघर्षरत है।

91. (4) फारसी छंदों और शब्दावली का अनन्य उपयोग।
डिंगल काव्य परंपरा अपनी जड़ें पुरातन भारतीय भाषाओं में रखती है, न कि फारसी के अनन्य उपयोग में। डिंगल शैली की मुख्य विशेषता योद्धा वर्ग के लिए प्राचीन और ओजपूर्ण शब्दावली का प्रयोग करना है, जो वीर रस की अभिव्यक्ति हेतु उपयुक्त है। इसे राजपूत दरबारों द्वारा विशेष संरक्षण प्राप्त था। हालांकि इसमें समय के साथ कुछ विदेशी शब्द अवश्य आए, लेकिन इसकी मूल संरचना और छंद शास्त्र पूर्णतः भारतीय परंपराओं पर आधारित हैं।

92. (2) केवल II और IV
पिंगल शैली मुख्य रूप से पूर्वी राजस्थान में ब्रज भाषा के प्रभाव से विकसित हुई थी। 'खुमाण रासो' और 'पृथ्वीराज रासो' पिंगल परंपरा के प्रमुख ग्रंथ माने जाते हैं, जिनमें मधुर शब्दावली के साथ वीरता का वर्णन मिलता है। इसके विपरीत, 'कान्हड़दे प्रबंध' और 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' मुख्य रूप से डिंगल शैली की उत्कृष्ट रचनाएं हैं। पिंगल का प्रयोग उन क्षेत्रों में अधिक हुआ जो भौगोलिक रूप से ब्रज क्षेत्र के निकट थे, जो भाषाई विविधता को दर्शाता है।

93. (3) विरुद्ध छहतरी
प्रसिद्ध चारण कवि दुरसा आढ़ा ने अपने ग्रंथ 'विरुद्ध छहतरी' में महाराणा प्रताप के अतुलनीय शौर्य और स्वाभिमान की मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। इस ग्रंथ में 76 दोहे हैं, जिनमें से प्रत्येक महाराणा प्रताप की वीरता को समर्पित है। दुरसा आढ़ा यद्यपि मुगल दरबार से भी जुड़े थे, परंतु वे प्रताप की राष्ट्रभक्ति के प्रबल प्रशंसक थे। उनकी यह रचना डिंगल साहित्य की अमर कृति है, जो प्रत्येक राजस्थानी के मन में गौरव का भाव जाग्रत करती है।

94. (4) चार (जैन, चारण, संत और लोक)
उत्पत्ति और सामाजिक संदर्भ के आधार पर प्रारंभिक राजस्थानी साहित्य को मुख्य रूप से चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम, जैन साहित्य जो मुनियों द्वारा धार्मिक विषयों पर रचा गया। द्वितीय, चारण साहित्य जो राजाओं की वीरता पर केंद्रित था। तृतीय, संत साहित्य जिसमें आध्यात्मिक पद सम्मिलित हैं। चतुर्थ, लोक साहित्य जो जनमानस की मौखिक

8. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर चुनें।
कथन (A): राजस्थान में भक्ति आंदोलन ने मध्यकाल के दौरान जाति व्यवस्था की कठोरता को काफी कम कर दिया था।
कारण (R): राजस्थान के कई प्रमुख भक्ति संत, जैसे दादू दयाल, कबीर और रैदास, वंचित समुदायों से आए थे और उन्होंने स्थानीय भाषा में उपदेश दिए थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

9. जोधपुर का महामंदिर, जो अपने 84 नक्काशीदार खंभों के लिए जाना जाता है, निम्नलिखित में से किस संप्रदाय की प्रधान पीठ है?
(1) रामस्नेही संप्रदाय
(2) दादूपंथ
(3) नाथ संप्रदाय
(4) विश्नोई संप्रदाय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. राजस्थान में नाथ संप्रदाय मुख्य रूप से दो प्रमुख शाखाओं में विभाजित है। उनके नाम क्या हैं?
(1) बैराग पंथ और माननाथी पंथ
(2) ऐतिहासिक खालसा और विरक्त शाखाएँ
(3) पारंपरिक निहंग और नागा वंश
(4) प्राचीन उत्तराधे और पूर्वी विभाजन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. राजस्थान में नाथ संप्रदाय के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) गुरु गोरखनाथ को इस संप्रदाय का प्राथमिक और सबसे प्रमुख व्यवस्थापक माना जाता है।
(2) यह संप्रदाय हठयोग के अभ्यास और कठोर शारीरिक तपस्या पर बहुत अधिक बल देता है।
(3) आयस देवनाथ ने जोधपुर के महाराजा मान सिंह के व्यक्तिगत आध्यात्मिक गुरु के रूप में कार्य किया।
(4) अनुयायी कृष्ण के सगुण रूप की पूजा करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. नाथ संप्रदाय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: नाथ संप्रदाय के बैराग पंथ का प्राथमिक केंद्र पुष्कर के राता डूंगा में है।
कथन II: माननाथी पंथ जोधपुर के महामंदिर के आसपास केंद्रित है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. राजस्थान में शैव परंपराओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हारीत राशि पाशुपत संप्रदाय के एक प्रमुख ऋषि थे जिन्होंने मेवाड़ में गुहिल वंश की स्थापना को प्रभावित किया था।
II. एकलिंगजी को मेवाड़ के शासकों का इष्ट देव (दीवान) माना जाता है।
III. कापालिक संप्रदाय अपनी चरम तांत्रिक प्रथाओं के लिए जाना जाता था और राजस्थान के व्यापारी वर्गों के बीच व्यापक रूप से फला-फूला।
IV. जालंधरनाथ राजस्थान के जालौर क्षेत्र में अत्यधिक पूजनीय हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत संयोजन है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और IV
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. निम्नलिखित में से कौन सा स्थान पारंपरिक रूप से राजस्थान में नाथ संप्रदाय से संबंधित नहीं है?
(1) सिरे मंदिर, जालौर
(2) महामंदिर, जोधपुर
(3) राता डूंगा, पुष्कर
(4) सलेमाबाद, अजमेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. 'शून्य समाधि' की अवधारणा और कुंडलिनी जागरण मध्यकालीन राजस्थान में प्रचलित किस संप्रदाय के केंद्रीय दार्शनिक सिद्धांत हैं?
(1) नाथ संप्रदाय
(2) पुष्टि मार्ग
(3) रामानंदी संप्रदाय
(4) निंबार्क संप्रदाय
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (नाथ/शैव केंद्र)
A. महामंदिर
B. सिरे मंदिर
C. राता डूंगा
D. एकलिंगजी
सूची II: (संबंधित व्यक्ति/विवरण)
i. जालंधरनाथ
ii. बप्पा रावल

बल्कि राजस्थान के दो बड़े भाषाई क्षेत्रों के बीच समन्वय बनाए रखने का एक प्रमुख माध्यम भी रही है।

105. (3) केशोदास गाडण
डिंगल भाषा के सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'गजगुणरुपक' के रचयिता महान कवि केशोदास गाडण हैं। यह ग्रंथ जोधपुर के महाराजा गजसिंह प्रथम के शासनकाल और उनकी वीरतापूर्ण उपलब्धियों का विस्तृत यशोगान करता है। केशोदास गाडण ने अपनी ओजस्वी लेखनी के माध्यम से मारवाड़ के वैभव और राजा की दानशीलता का सजीव चित्रण किया है। यह कृति डिंगल साहित्य की उन श्रेष्ठ रचनाओं में गिनी जाती है, जो मध्यकालीन दरबारी संस्कृति और वीर रस की पराकाष्ठा को भव्यता के साथ प्रस्तुत करती हैं।

106. (1) 1956
राजस्थान में 'राजभाषा अधिनियम' वर्ष 1956 में पारित किया गया था, जिसके अंतर्गत हिंदी को राज्य की आधिकारिक प्रशासनिक भाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यह अधिनियम राज्य की प्रशासनिक एकता और कामकाज की सुगमता को ध्यान में रखकर बनाया गया था। हालांकि राजस्थान की लोक भाषा राजस्थानी है, लेकिन सरकारी कार्यों हेतु हिंदी को अपनाया गया। यह अधिनियम आधिकारिक पत्राचार और विधिक प्रक्रियाओं के लिए भाषाई ढांचे को व्यवस्थित करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण विधायी मील का पत्थर सिद्ध हुआ है।

107. (4) रणमल्ल छंद
'रणमल्ल छंद' नामक ऐतिहासिक वीर काव्य के रचयिता श्रीधर व्यास हैं। इस ग्रंथ की रचना 14वीं शताब्दी के अंत में की गई थी, जिसमें ईडर के शासक राव रणमल्ल की वीरता और सैन्य विजय का अत्यंत ओजपूर्ण वर्णन है। यह डिंगल साहित्य के प्रारंभिक काल की अत्यंत महत्वपूर्ण कृति मानी जाती है। श्रीधर व्यास ने इसमें ऐतिहासिक घटनाओं को तत्कालीन भाषाई सौंदर्य के साथ पिरोया है, जो मध्यकालीन समाज के वीरतापूर्ण मूल्यों को समझने में साहित्यकारों हेतु अत्यंत सहायक सिद्ध होती है।

108. (2) कौरवी और ब्रज
राजस्थान के उत्तर-पूर्वी सीमावर्ती क्षेत्र की 'मेवती' बोली पर पड़ोसी राज्यों की भाषाई सीमाओं का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। इस बोली में मुख्य रूप से कौरवी और ब्रज भाषा का गहरा समावेश है। भौगोलिक रूप से हरियाणा और उत्तर प्रदेश के निकट होने के कारण मेवाती में इन भाषाओं की शब्दावली और व्याकरणिक विशेषताएं घुल-मिल गई हैं। यह भाषाई मिश्रण मेवात क्षेत्र की एक अनूठी पहचान बनाता है। यही कारण है कि इस क्षेत्र का लोक साहित्य ब्रज के भाषाई सौंदर्य को भी अभिव्यक्त करता है।

109. (3) मुहणोत नैणसी - बातां री फुलवारी
यह युग्म असंगत है क्योंकि 'बातां री फुलवारी' मुहणोत नैणसी की नहीं, बल्कि आधुनिक राजस्थानी साहित्यकार विजयदान देथा की प्रसिद्ध रचना है। मुहणोत नैणसी की सुप्रसिद्ध रचनाएं 'नैणसी री ख्यात' और 'मारवाड़ रा परगना री विगत' हैं। अन्य विकल्प सही हैं—सूर्यमल मिश्रण ने 'बलवद विलास' लिखी और कवि श्यामलदास ने 'वीर विनोद' लिखा। यह स्पष्ट अंतर राजस्थानी साहित्य के विभिन्न युगों और लेखकों के व्यक्तिगत योगदान को पहचानने हेतु अत्यंत आवश्यक है ताकि ऐतिहासिक तथ्यों की शुद्धता बनी रहे।

110. (4) एल.पी. टेसिटोरी
इतालवी भाषाविद डॉ. एल.पी. टेसिटोरी ने यह विचार प्रस्तुत किया था कि डिंगल वास्तव में 'मरु भाषा' है, जबकि पिंगल को उन्होंने 'नाग भाषा' कहा। टेसिटोरी ने राजस्थान के चारण साहित्य और बोलियों का गहन अध्ययन किया था। उन्होंने डिंगल को पश्चिमी राजस्थान की मूल साहित्यिक शैली माना, जो अपनी ओजस्विता के लिए प्रसिद्ध है। उनका यह शोध राजस्थानी बोलियों के वैज्ञानिक वर्गीकरण और उनके ऐतिहासिक मूल को समझने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था, जिसने साहित्य को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई।

111. (1) मीरां बाई
राजस्थान की सुप्रसिद्ध महिला संत मीरां बाई के भक्तिपूर्ण पद 'पदावली' के रूप में संपूर्ण विश्व में विख्यात हैं। मीरां ने अपने पदों के माध्यम से भगवान कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम और समर्पण की भावनाओं को अत्यंत हृदयस्पर्शी भाषा में व्यक्त किया है। उनकी पदावली में मारवाड़ी, ब्रज और गुजराती का सुंदर समन्वय मिलता है। ये पद न केवल धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि राजस्थानी साहित्य में माधुर्य भाव की भक्ति का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण भी प्रस्तुत करते हैं।

112. (2) निर्गुण और सगुण संत साहित्य
राजस्थानी साहित्य में धार्मिक समन्वय की सशक्त परंपरा निर्गुण और सगुण संत साहित्य में दिखाई देती है। जहां मीरां बाई ने सगुण भक्ति के माध्यम से प्रेम का संदेश दिया, वहीं दादू दयाल और जाम्भोजी जैसे निर्गुण संतों ने जाति-पाति के भेदभाव को मिटाकर मानवीय समानता पर बल दिया। इन संतों के साहित्य ने समाज के विभिन्न वर्गों को जोड़ने का कार्य किया। उनकी भाषा जनसाधारण की भाषा थी, जिसने बिना किसी भेदभाव के सभी समुदायों तक आध्यात्मिक ज्ञान के संदेश को प्रभावशाली ढंग से पहुँचाया।

113. (2) लोक नायकों के शौर्य का वर्णन करने वाले वीरगाथा गीत।
राजस्थानी लोक साहित्य में 'पवाड़िया' उन विशिष्ट वीरगाथा गीतों को कहा जाता है, जो क्षेत्रीय लोक नायकों के अद्भुत शौर्य और बलिदान का यशोगान करते हैं। इन गीतों का गायन अक्सर विशेष वाद्य यंत्रों के साथ लोक गायकों द्वारा किया जाता है। राजस्थान में 'पाबूजी के पवाड़े' सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं, जिन्हें रावणहत्था वाद्य यंत्र के साथ गाया जाता है। पवाड़िया केवल गीत नहीं हैं, बल्कि ये मौखिक परंपरा के वे माध्यम हैं जिन्होंने सदियों से लोक नायकों के आदर्शों को जनमानस में जीवित रखा है।

114. (1) मारवाड़ी
राजस्थानी भाषा का प्रथम विस्तृत और व्यवस्थित व्याकरण मुख्य रूप से 'मारवाड़ी' बोली पर आधारित था। मारवाड़ी

अपनी समृद्ध साहित्यिक विरासत और व्यापक विस्तार के कारण राजस्थानी की सबसे प्रतिनिधि बोली मानी जाती थी। विदेशी विद्वानों ने जब राजस्थानी का अध्ययन प्रारंभ किया, तो उन्होंने मारवाड़ी को ही इस भाषाई समूह के केंद्र में रखा। इस व्याकरण ने राजस्थानी की भाषाई संरचना को समझने और उसके मानकीकरण की प्रक्रिया में एक प्रारंभिक लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया, जिससे वैज्ञानिक अध्ययन की नींव पड़ी।

115. (3) वेलि क्रिसन रुकमणी री

चारण साहित्य प्रायः युद्ध और वीरता पर केंद्रित होता है, लेकिन पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रचित 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' इस पारंपरिक विषयवस्तु का एक सुंदर अपवाद है। यद्यपि पृथ्वीराज स्वयं एक योद्धा थे, परंतु उन्होंने इस ग्रंथ में भगवान कृष्ण और रुक्मणी के विवाह की भक्तिपूर्ण और श्रृंगारिक कथा को डिंगल शैली में प्रस्तुत किया है। यह ग्रंथ प्रमाणित करता है कि चारण कवि वीर रस के साथ-साथ श्रृंगार और भक्ति की भावनाओं को भी प्रखरता से व्यक्त करने में सक्षम थे।

116. (4) कुम्भकर्ण

सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ 'रतन रासो' के लेखक कुम्भकर्ण हैं। इस ग्रंथ में रतलाम के शासक रतन सिंह और मुगल सम्राट औरंगजेब के मध्य हुए भीषण युद्ध का अत्यंत सजीव वर्णन किया गया है। यह ग्रंथ 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के राजनीतिक संघर्षों और राजपूत योद्धाओं के अदम्य साहस का ऐतिहासिक दस्तावेज है। कुम्भकर्ण ने डिंगल शैली का प्रयोग करते हुए योद्धाओं के शौर्य को प्रभावशाली ढंग से चित्रित किया है। यह कृति वीर रस प्रधान राजस्थानी साहित्य की एक महत्वपूर्ण कड़ी मानी जाती है।

117. (3) आभै पटकी

आधुनिक राजस्थानी साहित्य में ग्रामीण जीवन की यथार्थपरक स्थितियों को चित्रित करने वाला प्रथम उपन्यास 'आभै पटकी' माना जाता है। इसके लेखक प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीलाल नथमल जोशी हैं। इस उपन्यास ने राजस्थानी गद्य साहित्य में एक नई धारा की शुरुआत की, जहां आम आदमी और किसानों के संघर्ष को केंद्र में रखा गया। अपनी सरल भाषा और मार्मिक विषयवस्तु के कारण यह उपन्यास पाठकों के बीच अत्यंत लोकप्रिय हुआ और इसने भविष्य के लिए एक प्रगतिशील मार्ग प्रशस्त किया।

118. (2) पृथ्वीराज विजय

12वीं शताब्दी में कश्मीरी कवि जयानक द्वारा रचित संस्कृत ग्रंथ 'पृथ्वीराज विजय' चौहान वंश के इतिहास पर प्रकाश डालने वाला महत्वपूर्ण स्रोत है। हालांकि यह ग्रंथ संस्कृत में है, लेकिन यह तत्कालीन राजस्थान के सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेश का प्रामाणिक वर्णन प्रस्तुत करता है। इसमें अजमेर की भव्यता और चौहान शासकों की उपलब्धियों का सजीव चित्रण मिलता है। ऐतिहासिक शुद्धता की दृष्टि से विद्वान इसे 'पृथ्वीराज रासो' की तुलना में अधिक विश्वसनीय मानते हैं, क्योंकि यह उसी कालखंड की समकालीन रचना है।

119. (4) वागड़ी

प्रसिद्ध संत और समाज सुधारक संत मावजी ने अपने आध्यात्मिक उपदेशों के संग्रह 'चोपड़ा' की रचना मुख्य रूप से स्थानीय 'वागड़ी' बोली में की थी। मावजी का मुख्य कार्यक्षेत्र डूंगरपुर और बांसवाड़ा का वागड़ अंचल था, इसलिए उन्होंने जन-जन तक पहुँचने के लिए उसी क्षेत्र की भाषा को अपनाया। उनकी वागड़ी बोली में स्थानीय जनजातीय शब्दों का अद्भुत समन्वय मिलता है। संत मावजी द्वारा रचित पांच बड़े 'चोपड़े' आज भी वागड़ क्षेत्र की धार्मिक आस्था और भाषाई गौरव के प्रतीक बने हुए हैं।

120. (1) सीताराम लालस

विद्वान डॉ. सीताराम लालस को राजस्थानी भाषा के वृहद 'राजस्थानी सबद कोस' के निर्माण हेतु भारत सरकार द्वारा पद्म श्री से सम्मानित किया गया था। उन्होंने अपने जीवन के लगभग 40 वर्ष इस कार्य को समर्पित किए और दो लाख से अधिक शब्दों का संग्रह कर उनके अर्थ लिपिबद्ध किए। उनके इस प्रयास ने राजस्थानी को भाषाई सुदृढ़ता प्रदान की। इसी योगदान के कारण उन्हें 'राजस्थानी का पाणिनी' कहा जाता है। यह शब्दकोश राजस्थानी के संरक्षण हेतु विश्व का सबसे बड़ा व्यक्तिगत भाषाई प्रयास है।

अध्याय 15
धार्मिक जीवन : संत, संप्रदाय एवं लोक देवता

1. निम्नलिखित में से कौन सा कथन मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक विविधता की व्यापक प्रकृति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
   (1) यह पूरी तरह से रुढ़िवादी वैदिक परंपराओं के प्रभुत्व में था, जिसने व्यवस्थित रूप से सभी स्थानीय समन्वयात्मक तत्वों को बाहर कर दिया था।
   (2) इसमें भक्ति परंपराओं, लोक देवताओं और सूफी रहस्यवाद का सम्मिश्रण देखने को मिलता था।
   (3) इस युग में जैन और शैव मत पूरी तरह से वैष्णव भक्ति संप्रदायों द्वारा प्रतिस्थापित हो गए थे।
   (4) इसने मूर्ति पूजा के सभी रूपों को अस्वीकार कर दिया और पूरी तरह से शास्त्रों में वर्णित अमूर्त दार्शनिक ग्रंथों पर ध्यान केंद्रित किया।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. राजस्थान में भक्ति आंदोलन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   कथन I: सगुण भक्ति के संत एक निराकार, निर्गुण ईश्वर में विश्वास करते थे और मुख्य रूप से अपने संदेश के प्रसार के लिए स्थानीय बोलियों का उपयोग करते थे।
   कथन II: निर्गुण भक्ति के संत गुणों वाले एक व्यक्तिगत ईश्वर में विश्वास करते थे और विस्तृत मंदिर अनुष्ठानों पर अधिक ध्यान केंद्रित करते थे।
   निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
   (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
   (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
   (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
   (4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. राजस्थान के प्राचीन और मध्यकालीन धार्मिक संप्रदायों में से, निम्नलिखित में से किसे शैव धर्म के कापालिक और पाशुपत संप्रदायों का प्राथमिक केंद्र माना जाता है?
   (1) गलताजी
   (2) नाथद्वारा
   (3) एकलिंगजी
   (4) नरायणा
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. राजस्थान के धार्मिक संप्रदायों और उनकी प्रधान पीठों के संबंध में गलत युग्म की पहचान कीजिए।
   (1) निंबार्क संप्रदाय - सलेमाबाद
   (2) रामस्नेही संप्रदाय - शाहपुरा
   (3) जसनाथी संप्रदाय - कतरियासर
   (4) अलखिया संप्रदाय - बांसवाड़ा
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. राजस्थान में प्रमुख धार्मिक धाराओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   I. जैन धर्म को मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्रों में व्यापक राजकीय संरक्षण प्राप्त हुआ।
   II. महाराजा मान सिंह के शासनकाल के दौरान मारवाड़ राज्य में नाथ संप्रदाय का महत्वपूर्ण राजनीतिक प्रभाव था।
   III. दादूपंथ की उत्पत्ति गुजरात में हुई थी, लेकिन इसका प्रमुख अनुयायी वर्ग और प्रधान पीठ मेवाड़ क्षेत्र में स्थित थी।
   उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही संयोजन है/हैं?
   (1) केवल I और II
   (2) केवल II और III
   (3) केवल I और III
   (4) I, II और III
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. 'वरकरी' और 'धरकरी' संप्रदायों की परंपरा मुख्य रूप से महाराष्ट्र से जुड़ी हुई है। राजस्थान के संदर्भ में, किस स्थानीय संत की शिक्षाएं वरकरी परंपरा में देखी जाने वाली गैर-सांप्रदायिक, समतावादी भक्ति के सबसे निकट हैं?
   (1) संत मावजी
   (2) दादू दयाल
   (3) लालदास
   (4) जाम्भोजी
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. राजस्थान के निम्नलिखित प्रमुख भक्ति संतों को उनके जन्म के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
   I. संत पीपा
   II. दादू दयाल
   III. जाम्भोजी
   IV. रामचरण
   (1) I, III, II, IV
   (2) III, I, II, IV
   (3) I, II, III, IV
   (4) II, III, I, IV
   (5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. (3) सीताराम लालस
विद्वान सीताराम लालस को 'राजस्थानी सबद कोस' जैसा विशाल शब्दकोश तैयार करने के लिए 'राजस्थानी का पाणिनी' कहा जाता है। उन्होंने दशकों के कठिन परिश्रम से दो लाख से अधिक राजस्थानी शब्दों का संग्रह किया। यह कार्य राजस्थानी भाषा के संरक्षण के लिए विश्व का सबसे बड़ा व्यक्तिगत भाषाई प्रयास माना जाता है। इस योगदान के लिए भारत सरकार ने उन्हें पद्म श्री से सम्मानित किया था। यह शब्दकोश शोधार्थियों हेतु आधार स्तंभ है।

54. (2) संत दादू दयाल
राजस्थान में भक्ति साहित्य की 'निर्गुण' धारा का सशक्त प्रतिनिधित्व संत दादू दयाल के साहित्य में मिलता है। उन्होंने मूर्ति पूजा का विरोध करते हुए निराकार ईश्वर की भक्ति और आंतरिक शुद्धि पर बल दिया। उनके उपदेश 'दादू दयाल री वाणी' के रूप में संकलित हैं। दादू पंथ ने सामाजिक समरसता के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी भाषा सधुक्कड़ी है, जिसमें राजस्थानी और हिंदी का सरल समन्वय है, जो आम लोगों हेतु सुबोध है।

55. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थानी संतों और उनकी रचनाओं का संबंध गहरा है। संत जाम्भोजी के उपदेशों का संग्रह 'सबद वाणी' है, जबकि संत जसनाथजी की रचनाएं 'कोड़ा' के नाम से विख्यात हैं। निरंजनी संप्रदाय के संत हरिदासजी की कृति 'मंत्र राजप्रकाश' है। संत चरणदासजी की प्रमुख रचना 'ब्रह्म ज्ञान सागर' है। ये ग्रंथ न केवल आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, बल्कि मध्यकालीन राजस्थानी भाषा के स्वरुप को समझने के लिए अमूल्य ऐतिहासिक दस्तावेज भी हैं।

56. (1) ढूँढाड़ी
ढूँढाड़ी बोली की एक विशिष्ट पहचान सहायक क्रिया के रूप में 'छै' या 'छ' का प्रयोग है। यह भाषाई विशेषता इसे गुजराती भाषा के काफी निकट ले आती है। ढूँढाड़ी मुख्य रूप से जयपुर और उसके आसपास के क्षेत्रों में बोली जाती है। इसकी यह ध्वनि विशेषता इसे मारवाड़ी और मेवाड़ी जैसी अन्य राजस्थानी बोलियों से स्पष्ट रूप से अलग करती है और इसकी क्षेत्रीय पहचान को सुदृढ़ बनाती है।

57. (3) शिवदास गाडण
राजस्थानी ग्रंथ 'अचलदास खींची री वचनिका' के रचयिता चारण कवि शिवदास गाडण हैं। इसकी रचना 15वीं शताब्दी में हुई, जिसमें गागरोन के शासक अचलदास खींची और मांडू के सुल्तान के मध्य हुए युद्ध का वर्णन है। यह डिंगल शैली में रचित एक ऐतिहासिक 'वचनिका' है, जो गद्य और पद्य के मिश्रण का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह ग्रंथ न केवल वीरता का वृत्तांत है, बल्कि तत्कालीन राजस्थानी भाषा के विकास का महत्वपूर्ण स्रोत भी है।

58. (1) I, II, III और IV
हाड़ौती बोली का प्राथमिक क्षेत्र राजस्थान का दक्षिण-पूर्वी भाग है, जिसे हाड़ौती प्रदेश कहा जाता है। इसमें मुख्य रूप से कोटा, बूंदी, बारां और झालावाड़ जिले सम्मिलित हैं। हाड़ौती प्रदेश की यह बोली अपनी विशिष्ट शब्दावली और उच्चारण शैली के लिए प्रसिद्ध है। महाकवि सूर्यमल मिश्रण ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस बोली को साहित्यिक गौरव प्रदान किया। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट भाषाई पहचान के कारण सांस्कृतिक मानचित्र पर अलग स्थान रखता है।

59. (4) विभिन्न कथाओं पर आधारित लोक नाट्य रूप।
राजस्थानी लोक साहित्य में 'ख्याल' का आशय एक विशिष्ट लोक नाट्य रूप से है, जो ऐतिहासिक या पौराणिक कथाओं पर आधारित होता है। इसमें गायन, वादन और अभिनय का समन्वय होता है। राजस्थान में कुचामनी ख्याल और शेखावाटी ख्याल जैसी विभिन्न शैलियाँ प्रचलित हैं। ये लोक नाट्य न केवल मनोरंजन के साधन रहे हैं, बल्कि इनके माध्यम से सामाजिक संदेशों और लोक गाथाओं को जीवंत बनाए रखने की प्राचीन परंपरा का निर्वहन भी होता है।

60. (3) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
चारण साहित्य में 'वेलि' एक अत्यंत लोकप्रिय और महत्वपूर्ण काव्य विधा रही है। इस विधा में ऐतिहासिक नायकों की वीरता और धार्मिक प्रसंगों का वर्णन किया जाता था। हालांकि, यह कहना गलत है कि 'वेलि क्रिसन रुकमणी री' एकमात्र ग्रंथ है। राजस्थान में 'राव रतन री वेलि' जैसी अन्य महत्वपूर्ण कृतियाँ भी रची गई हैं। यद्यपि पृथ्वीराज राठौड़ द्वारा रचित ग्रंथ सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, पर यह इस श्रेणी का अकेला ग्रंथ नहीं है।

61. (3) मेवाती
राजस्थान के उत्तर-पूर्वी भाग, विशेष रुप से अलवर और भरतपुर जिलों में बोली जाने वाली प्रमुख बोली 'मेवती' है। ब्रज भूमि के निकट होने के कारण इस बोली पर ब्रज भाषा का स्पष्ट प्रभाव दिखाई देता है। मेवाती बोली में राजस्थानी और ब्रज भाषा की शब्दावली का समन्वय मिलता है। संत लालदास और चरणदास जैसे महान संतों ने अपने उपदेशों के लिए इसी बोली का प्रयोग किया था। यह बोली भाषाई संक्रमण का प्रमुख उदाहरण है।

62. (4) पुरानी पश्चिमी राजस्थानी काल
राजस्थानी भाषा के विकास क्रम में 11वीं से 13वीं शताब्दी की अवधि को 'पुरानी पश्चिमी राजस्थानी काल' कहा जाता है। डॉ. एल.पी. टेसिटोरी ने इसे मरु-गुर्जर के रूप में पहचाना था। यह वह समय था जब राजस्थानी और गुजराती दोनों भाषाएं एक ही मूल स्रोत से विकसित हो रही थीं। इस काल के अधिकांश ग्रंथ जैन मुनियों द्वारा रचित हैं, जो राजस्थानी भाषा की व्याकरणिक जड़ों के क्रमिक विकास का प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

63. (1) सूर्यमल मिश्रण
19वीं शताब्दी के महान कवि सूर्यमल मिश्रण ने 'वंश भास्कर' और 'वीर सतसई' के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना का स्वर बुलंद किया। वे बूंदी के महाराव रामसिंह के दरबारी कवि थे। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्होंने अपनी ओजस्वी रचनाओं से राजपूताना की जनता में देशभक्ति का संचार किया। उनकी डिंगल शैली की रचनाएं आज भी राजस्थानी स्वाभिमान

iii. आयस देवनाथ
iv. भर्तृहरि
(1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टि मार्ग का दार्शनिक आधार क्या कहलाता है?
(1) अद्वैत वेदांत
(2) शुद्धाद्वैत
(3) विशिष्टाद्वैत
(4) द्वैताद्वैत
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. वल्लभाचार्य के पुष्टि मार्ग के संदर्भ में, 'पुष्टि' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(1) ईश्वर की कृपा
(2) सांसारिक जीवन का पूर्ण त्याग
(3) कठोर शारीरिक तपस्या
(4) परम सत्य का ज्ञान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. राजस्थान में पुष्टि मार्ग के प्रमुख देवता श्रीनाथजी की मूर्ति को किस मुगल सम्राट की मंदिर विरोधी नीतियों से बचाने के लिए मेवाड़ लाया गया था?
(1) अकबर
(2) जहांगीर
(3) औरंगजेब
(4) शाहजहां
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. मेवाड़ के किस शासक ने श्रीनाथजी की मूर्ति लाने वाले गोस्वामियों को शरण दी और मंदिर की स्थापना के लिए सिहाड़ गाँव दान में दिया?
(1) महाराणा प्रताप
(2) महाराणा अमर सिंह
(3) महाराणा संग्राम सिंह II
(4) महाराणा राज सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. राजस्थान में पुष्टि मार्ग के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह संप्रदाय भगवान कृष्ण के बाल रूप की पूजा पर बल देता है।
II. इस संप्रदाय के मंदिरों को पारंपरिक रूप से 'हवेली' कहा जाता है।
III. मंदिर के अनुष्ठानों से जुड़ी संगीत परंपरा को 'हवेली संगीत' के रूप में जाना जाता है।
IV. पिछवाई चित्रकला की उत्पत्ति इन मंदिरों में देवता के पीछे के पर्दे के रूप में हुई थी।
V. यह संप्रदाय गृहस्थों को मोक्ष प्राप्त करने से कड़ाई से रोकता है और तपस्या पर जोर देता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही संयोजन है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) I, III, IV और V
(3) II, III, IV और V
(4) I, II, और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. पुष्टि मार्ग से जुड़े आठ प्रमुख संत-कवियों का समूह, जिन्होंने श्रीनाथजी के लिए भक्ति भजनों की रचना की, सामूहिक रूप से क्या कहलाता है?
(1) अष्ट प्रधान
(2) अष्टछाप
(3) अष्ट सखा
(4) अष्ट दिग्गज
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. नाथद्वारा में श्रीनाथजी मंदिर की स्थापना का राजस्थान के सांस्कृतिक परिदृश्य पर प्राथमिक प्रभाव क्या पड़ा?
(1) इसके कारण पूरे मेवाड़ क्षेत्र में शास्त्रीय लघु चित्रकला शैलियों में निरंतर गिरावट आई।
(2) इसके कारण मेवाड़ में शैव और वैष्णव धर्म के अनुयायियों के बीच एक बड़ा धार्मिक संघर्ष हुआ।
(3) इसके परिणामस्वरूप स्थानीय नाथ संप्रदाय का तत्काल और पूर्ण विलय पुष्टि मार्ग में हो गया।
(4) इसने नाथद्वारा को वैष्णव कला और पिछवाइयों के एक प्रमुख केंद्र में बदल दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राजस्थान में वल्लभ पीठ)
A. श्रीनाथजी
B. द्वारकाधीशजी
C. मथुरेशजी
D. मदन मोहनजी
सूची II: (स्थान)
i. कांकरोली
ii. कोटा
iii. नाथद्वारा
iv. कामां (भरतपुर)
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. राजस्थान में रामानंदी संप्रदाय की प्रधान पीठ, जिसे अक्सर 'उत्तर तोताद्रि' कहा जाता है, कहाँ स्थित है?

102. करणी माता मंदिर के चारों ओर का संरक्षित वन क्षेत्र, जहाँ वृक्षों को काटना वर्जित है, क्या कहलाता है?
(1) बाणी
(2) ओरण
(3) अगोर
(4) गोचर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

103. देशनोक स्थित करणी माता मंदिर के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) यह केवल लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है।
(2) इसमें मुगल काल का गुंबद है।
(3) मंदिर परिसर में कोई सुरक्षा दीवार नहीं है।
(4) गर्भगृह में एक पवित्र गुफा स्थित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

104. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (कुलदेवी)
A. करणी माता
B. जमवाय माता
C. बाण माता
D. जीण माता
सूची II: (राजवंश)
i. मेवाड़ के सिसोदिया
ii. जयपुर के कच्छवाहा
iii. चौहान
iv. बीकानेर के राठौड़
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

105. जीण माता का प्राचीन मंदिर किस जिले में स्थित है?
(1) झुंझुनू
(2) चूरु
(3) सीकर
(4) अलवर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

106. जीण माता को किस वंश की कुलदेवी के रूप में पूजा जाता है?
(1) चौहान
(2) भाटी
(3) हाड़ा
(4) परमार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

107. जीण माता के भाई, जिनका मंदिर पास में ही स्थित है, का नाम क्या है?
(1) भैरव
(2) गोपीनाथ
(3) रघुनाथ
(4) हर्ष
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

108. जीण माता के भक्ति गीत (चिरजा) के संबंध में क्या सत्य है?
(1) यह डिंगल का प्राचीनतम ग्रंथ है।
(2) यह राजस्थान के लोक साहित्य में सबसे लंबा गीत है।
(3) यह केवल पुरुष पुजारियों द्वारा गाया जाता है।
(4) इसकी रचना फारसी भाषा में हुई थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

109. जीण माता की पूजा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मंदिर में वर्ष में दो बार चैत्र और आश्विन नवरात्र में मेला लगता है।
II. ऐतिहासिक रूप से यहाँ ढाई प्याला मदिरा और बलि की परंपरा रही है।
III. औरंगजेब ने मंदिर पर आक्रमण किया था, जिसे मधुमक्खियों ने विफल कर दिया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही संयोजन है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

110. 'भंवरमाता' (मधुमक्खियों की देवी) की लोककथा किस मंदिर से जुड़ी है?
(1) शीला देवी मंदिर, आमेर
(2) करणी माता मंदिर, देशनोक
(3) त्रिपुरा सुंदरी, बांसवाड़ा
(4) जीण माता मंदिर, सीकर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

111. जीण माता के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) जीण माता की पूजा मुख्य रूप से जैन समुदाय द्वारा की जाती है।
(2) मंदिर में देवी की अष्टभुजी मूर्ति है।
(3) मंदिर में अखंड ज्योति प्रज्वलित रहती है।
(4) मुगल दरबार से अखंड ज्योति हेतु तेल भेजा जाता था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

112. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर चुनें।
कथन (A): जीण माता का मंदिर मध्यकालीन स्थापत्य शैली का मिश्रण है।
कारण (R): शिलालेखों के अनुसार 11वीं-12वीं शताब्दी में स्थानीय शासकों द्वारा इसका जीर्णोद्धार किया गया था।

(3) ढूंढाड़ी (सधुक्कड़ी)
(4) मालवी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. निम्नलिखित में से कौन दादूपंथ की पांच प्रमुख शाखाओं में से एक नहीं है?
(1) खालसा
(2) विरक्त
(3) नागा
(4) बैराग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. संत दादू दयाल और उनकी शिक्षाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने निर्गुण भक्ति की पुरजोर वकालत की और मूर्ति पूजा का विरोध किया।
II. उन्होंने फतेहपुर सीकरी में मुगल सम्राट अकबर से भेंट की थी।
III. उनकी शिक्षाओं ने कठोर तपस्या को प्रोत्साहित किया और स्पष्ट रूप से अपने अनुयायियों को किसी भी कार्य को करने से मना किया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत संयोजन है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. दादूपंथ की नागा उप-शाखा, जो युद्धक परंपरा को बनाए रखने और अस्त्र धारण करने के लिए जानी जाती है, की स्थापना दादू दयाल के किस प्रमुख शिष्य ने की थी?
(1) गरीब दास
(2) सुंदर दास
(3) रज्जबजी
(4) बखनाजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. दादू दयाल के उस प्रसिद्ध शिष्य का नाम बताइए जो अपने विवाह के दिन गुरु से दीक्षा प्राप्त करने के उपरांत आजीवन दूल्हे के वेश में रहने के लिए प्रसिद्ध है?
(1) सुंदर दास
(2) गरीब दास
(3) माधो दास
(4) रज्जबजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (दादूपंथ की शाखा)
A. खालसा
B. विरक्त
C. नागा
D. उत्तराधे
सूची II: (प्रमुख विशेषता / संस्थापक)
i. भ्रमणशील तपस्वी जो एक स्थान पर नहीं रुकते
ii. उन शिष्यों द्वारा स्थापित जो उत्तर भारत (हरियाणा/पंजाब) चले गए
iii. सुंदर दास द्वारा स्थापित लड़ाकू तपस्वी पंथ
iv. गरीब दास के अनुयायी, जो नरायणा में केंद्रित हैं
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. राजस्थान में कबीर के निर्गुण दर्शन का गहरा प्रभाव निम्नलिखित में से किन संतों की शिक्षाओं में सर्वाधिक झलकता है?
(1) मीरा बाई, गवरी बाई, राणा बाई
(2) वल्लभाचार्य, हरिदास, निंबार्क
(3) दादू दयाल, रामचरण, लालदास
(4) जाम्भोजी, जसनाथजी, हारीत राशि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. राजस्थान में कबीरपंथ और संबंधित संप्रदायों के संदर्भ में, 'निर्गुण भक्ति' की केंद्रीय परिभाषा क्या है?
(1) भौतिक रूप या गुणों से रहित ईश्वर की भक्ति।
(2) सुसज्जित मूर्तियों के माध्यम से एक विशिष्ट देवता की भक्ति।
(3) कठोर वैदिक अनुष्ठानों और यज्ञों पर आधारित भक्ति।
(4) विशेष रूप से पवित्र नदियों की तीर्थयात्रा पर केंद्रित भक्ति।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ को कबीर की शिक्षाओं का सबसे प्रामाणिक संकलन माना जाता है, जो राजस्थान में कबीरपंथियों द्वारा अत्यंत पूजनीय है?
(1) दादू वाणी
(2) जम्भ सागर
(3) अनभै वाणी
(4) बीजक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. राजस्थान में कबीरपंथियों की प्रथाओं के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।
(1) वे पारंपरिक जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता को पूरी तरह नकारते हैं।
(2) वे संन्यास और परिवार के त्याग को अनिवार्य मानते हैं।
(3) वे धार्मिक पाखंड और रुढ़िवादी अनुष्ठानों का विरोध करते हैं।
(4) वे आध्यात्मिक मुक्ति के लिए गुरु की आवश्यकता पर बल देते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. राजस्थानी संतों पर कबीर के वैचारिक प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कबीर की भांति दादू दयाल ने आध्यात्मिक सत्य के प्रसार हेतु सरल, स्थानीय बोलियों का प्रयोग किया।
II. रामस्नेही संतों ने कबीर की 'राम' की अवधारणा को अपनाया, किंतु दशरथ पुत्र के स्थान पर एक निराकार परम तत्व के रूप में।
III. लालदासी संप्रदाय ने कबीर के हिंदू और इस्लामी रहस्यवादी परंपराओं के समन्वय को समाहित किया।
IV. कबीर के प्रभाव के कारण मारवाड़ क्षेत्र में सगुण भक्ति का पूर्ण उन्मूलन हो गया।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही संयोजन है/हैं?
(1) I, II और III
(2) II, III और IV
(3) I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. राजस्थान के शिल्पकार और कृषक वर्गों के बीच कबीर और दादू की शिक्षाओं की लोकप्रियता का सबसे उपयुक्त कारण क्या है?
(1) उन्होंने तांत्रिक अनुष्ठानों के माध्यम से वित्तीय समृद्धि का वचन दिया था।
(2) राजपूत राजपरिवारों द्वारा उन्हें भारी संरक्षण प्रदान किया गया था।
(3) उन्होंने हठयोग प्रथाओं के माध्यम से शारीरिक अमरता का आश्वासन दिया था।
(4) उन्होंने श्रम को प्रतिष्ठा दी और सामाजिक पदानुक्रम को अस्वीकार कर दिया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राजस्थान में कबीरपंथ का प्रसार धनी संस्थानों के स्थान पर मौखिक परंपराओं और भ्रमणशील तपस्वियों के माध्यम से हुआ।
कथन II: राजस्थान में कबीरपंथी प्रतिवर्ष मूर्तियों के साथ भव्य श्रीनाथजी उत्सव मनाते हैं।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (निर्गुण संप्रदायों से जुड़े शब्द)
A. शब्द/सबद
B. स्मरण/सुमिरन
C. सत्संग
D. परचा
सूची II: (अर्थ)
i. भक्तों का आध्यात्मिक जमावड़ा
ii. दैवीय वाणी या रहस्यमय ध्वनि
iii. दैवीय नाम का निरंतर जाप
iv. चमत्कारिक अनुभव या आध्यात्मिक शक्ति का प्रमाण
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(4) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. राजस्थान के एक प्रमुख निर्गुण भक्ति संत, संत पीपा, मूल रूप से किस रियासत के शासक थे?
(1) चित्तौड़गढ़
(2) गागरोन
(3) रणथंभौर
(4) मेड़ता
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. निम्नलिखित में से कौन संत पीपा के आध्यात्मिक गुरु थे?
(1) रामानंद
(2) गोरखनाथ
(3) दादू दयाल
(4) कबीर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. संत पीपा को समर्पित मुख्य मंदिर, जहाँ प्रतिवर्ष मेला आयोजित किया जाता है, कहाँ स्थित है?
(1) मेड़ता (नागौर)
(2) शाहपुरा (भीलवाड़ा)
(3) समदड़ी (बालोतरा)
(4) आसींद (भीलवाड़ा)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. प्रसिद्ध 'पीपाजी की गुफा', जहाँ उन्होंने तपस्या की थी, कहाँ स्थित है?
(1) गागरोन, झालावाड़
(2) समदड़ी, बाड़मेर
(3) नरायणा, जयपुर
(4) टोडा रायसिंह, टोंक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. संत पीपा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनके बचपन का नाम प्रताप सिंह खींची था।
II. उन्होंने आध्यात्मिक जीवन हेतु अपने उत्तराधिकारी के पक्ष में सिंहासन का त्याग किया था।
III. संत बनने से पूर्व उन्होंने फिरोज शाह तुगलक के विरुद्ध युद्ध लड़ा था।
IV. उनकी शिक्षाएँ गुरु ग्रंथ साहिब में सम्मिलित हैं।
V. उन्होंने मूर्ति पूजा और पशु बलि की पुरजोर वकालत की।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत संयोजन है/हैं?

(1) I, II और III
(2) केवल V
(3) III और V
(4) II, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. संत पीपा को राजस्थान में निम्नलिखित में से किस समुदाय द्वारा आराध्य देव के रूप में पूजा जाता है?
(1) नाई
(2) दर्जी
(3) कुम्हार
(4) जाट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. संत पीपा के आध्यात्मिक दर्शन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा सही नहीं है?
(1) उन्होंने बल दिया कि ईश्वर का सच्चा मंदिर मनुष्य के अंतर्मन में है।
(2) उन्होंने जाति व्यवस्था और छुआछूत का कड़ा विरोध किया।
(3) उन्होंने सभी मनुष्यों के बीच समानता का उपदेश दिया।
(4) वे मोक्ष हेतु जटिल वैदिक अनुष्ठानों की अनिवार्यता में विश्वास करते थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. संत पीपा के जीवन से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. गागरोन का सिंहासन त्यागना
II. काशी में स्वामी रामानंद से दीक्षा लेना
III. गागरोन के खींची चौहान राजा के रूप में शासन करना
IV. निर्गुण भक्ति का प्रचार करना और सिलाई कार्य से जीविकोपार्जन करना
(1) III, II, I, IV
(2) III, I, II, IV
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. राजस्थान की प्रसिद्ध महिला संत मीरा बाई का जन्म कुड़की गाँव में हुआ था। यह गाँव ऐतिहासिक रूप से किस परगने के अंतर्गत था?
(1) कुंभलगढ़
(2) जैतारण
(3) मेड़ता
(4) चित्तौड़गढ़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर चुनें।
कथन (A): मीरा बाई को मेवाड़ के राजपरिवार द्वारा प्रताड़ित किया गया था।
कारण (R): साधु-संतों के साथ उनका सार्वजनिक नृत्य और गायन तत्कालीन सामाजिक मर्यादाओं और राजपूत मर्यादा के विरुद्ध माना गया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. मीरा बाई ने किसे अपना आध्यात्मिक गुरु स्वीकार किया था?
(1) सूरदास
(2) तुलसीदास
(3) चैतन्य महाप्रभु
(4) रविदास (रैदास)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. निम्नलिखित में से किस ग्रंथ का संबंध मीरा बाई की परंपरा से माना जाता है?
(1) सूर सागर
(2) नरसी जी रो माहेरो
(3) प्रेम वाटिका
(4) रसिक प्रिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. मीरा बाई की भक्ति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उनकी भक्ति 'माधुर्य भाव' की है, जहाँ वे भगवान कृष्ण को अपना पति मानती थीं।
II. उन्होंने पूजा के सगुण रुप को पूरी तरह त्याग दिया और केवल निर्गुण छंदों की रचना की।
III. उनके पदों में मारवाड़ी, ब्रज और गुजराती भाषाओं का सम्मिश्रण है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही संयोजन है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. माना जाता है कि मीरा बाई अंततः रणछोड़जी मंदिर की मूर्ति में विलीन हो गई थीं। यह मंदिर कहाँ स्थित है?
(1) वृंदावन
(2) मथुरा
(3) नाथद्वारा
(4) द्वारका
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. मीरा बाई के जीवन के संबंध में गलत कथन की पहचान कीजिए।

(3) जोधपुर
(4) बीकानेर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. रामदेवजी ने सामाजिक भेदभाव को मिटाने के उद्देश्य से किस पंथ की स्थापना की थी?
(1) कामड़िया पंथ
(2) अलखिया पंथ
(3) कुंडा पंथ
(4) नवनाथ पंथ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. 'तेरहताली' नृत्य किस लोक देवता के मेले का प्रमुख आकर्षण है?
(1) पाबूजी
(2) गोगाजी
(3) रामदेवजी
(4) तेजाजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. बाबा रामदेवजी के संदर्भ में, 'नेजा' से क्या तात्पर्य है?
(1) रात्रि जागरण।
(2) रामदेवजी के पदचिह्न।
(3) अर्पित किया जाने वाला कपड़े का घोड़ा।
(4) मंदिर में फहराया जाने वाला पचरंगा ध्वज।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. बाबा रामदेवजी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हिंदू अनुयायी उन्हें भगवान कृष्ण का अवतार मानते हैं।
II. मुस्लिम भक्त उन्हें 'रामशाह पीर' के रूप में पूजते हैं।
III. उन्होंने 'चौबीस बाणियाँ' नामक ग्रंथ की रचना की थी।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही संयोजन है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. मेघवाल समुदाय के रामदेवजी के भक्तों को क्या कहा जाता है?
(1) जमा
(2) रिखिया
(3) भोपे
(4) कामड़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. निम्नलिखित में से कौन बाबा रामदेवजी के सामाजिक योगदान का सर्वोत्तम वर्णन करता है?
(1) उन्होंने दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध राजपूतों को संगठित किया।
(2) उन्होंने मरुस्थलीय क्षेत्रों में वैदिक यज्ञों की परंपरा का प्रसार किया।
(3) उन्होंने जैसलमेर में संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना की।
(4) उन्होंने अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर चुनें।
कथन (A): रुणिचा में रामदेवजी का मंदिर हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के भक्तों को आकर्षित करता है।
कारण (R): रामदेवजी ने मक्का के पांच पीरों को पराजित कर उन्हें हिंदू धर्म में दीक्षित किया था।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. राजस्थान के किस लोक देवता को 'ऊंटों के देवता' के रूप में पूजा जाता है?
(1) गोगाजी
(2) तेजाजी
(3) पाबूजी
(4) देवनारायणजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. सांपों के देवता के रूप में पूजनीय गोगाजी ने किस आक्रमणकारी के विरुद्ध गायों की रक्षा हेतु युद्ध लड़ा था?
(1) महमूद गजनवी
(2) अलाउद्दीन खिलजी
(3) मुहम्मद गोरी
(4) बाबर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. गोगाजी से संबंधित स्थानों को उनके जन्मस्थान से निर्वाण स्थल के भौगोलिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
I. गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)
II. ददरेवा (चूरू)
III. गोगाजी की ओलड़ी (सांचौर)
(1) II, I, III
(2) I, II, III
(3) II, III, I
(4) III, II, I
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. लोक देवता तेजाजी की मृत्यु किस स्थान पर सर्पदंश से हुई थी?

सूची II: (महत्व)
i. जाम्भोजी का समाधि स्थल
ii. जाम्भोजी का जन्मस्थान
iii. वृक्षों की रक्षा हेतु अमृता देवी के नेतृत्व में बलिदान स्थल
iv. वह स्थान जहाँ जाम्भोजी ने विश्नोई संप्रदाय की नींव रखी
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. हिंदू-मुस्लिम सद्भाव पर बल देने वाले लालदासी संप्रदाय के संस्थापक संत लालदास का जन्म कहाँ हुआ था?
(1) शेरपुर (अलवर)
(2) नगला (भरतपुर)
(3) धौली दूब (अलवर)
(4) डीग (भरतपुर)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. लालदासी संप्रदाय के अनुयायी मुख्य रूप से राजस्थान के किस क्षेत्र में पाए जाते हैं?
(1) मेवात
(2) गोडवाड़
(3) वागड़
(4) हाड़ौती
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. निम्नलिखित में से कौन संत लालदास के आध्यात्मिक गुरु थे?
(1) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती
(2) शेख हमीदुद्दीन नागौरी
(3) नरहड़ के पीर
(4) गद्दन चिश्ती
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. संत लालदास की प्रधान पीठ और समाधि कहाँ स्थित है?
(1) धौली दूब
(2) शेरपुर
(3) कामां
(4) बांदीकुई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. लालदासी संप्रदाय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. लालदास मेव समुदाय से संबंधित थे।
II. यह संप्रदाय भिक्षावृत्ति का निषेध करता है; इसके साधु श्रम आधारित आजीविका पर बल देते हैं।
III. संप्रदाय की शिक्षाएँ 'लालदास की चेतावनियाँ' में संकलित हैं।
IV. दीक्षा के समय अहंकार त्याग हेतु शिष्य का मुंह काला कर गधे पर बिठाकर घुमाया जाता है।
V. यह संप्रदाय सभी हिंदू शब्दावलियों को अस्वीकार करता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही संयोजन है/हैं?
(1) I, II, III और IV
(2) II, III, IV और V
(3) I, III, IV और V
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. लालदासी संप्रदाय में दीक्षा के समय गधे पर बिठाकर घुमाने की रस्म का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(1) सार्वजनिक अपमान करना।
(2) मृत्यु के बाद की यात्रा को दर्शाना।
(3) शारीरिक सहनशक्ति का परीक्षण करना।
(4) साधक के अहंकार और गर्व को पूर्णतः समाप्त करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. संत लालदास के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(1) उनका संप्रदाय भगवान राम की मूर्ति पूजा में विश्वास करता है।
(2) उन्होंने आजीविका हेतु लकड़हारे के रूप में कार्य किया।
(3) उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि दिल्ली के सिंहासन पर शाहजहां का वही पुत्र बैठेगा जो अपने भाइयों का वध करेगा।
(4) उनके अनुयायी राम नाम का जाप एक निराकार सत्ता के रूप में करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (संत/संप्रदाय)
A. लालदासी संप्रदाय
B. जसनाथी संप्रदाय
C. मावजी
D. रामस्नेही (शाहपुरा)
सूची II: (क्षेत्र)
i. वागड़ (डूंगरपुर/बांसवाड़ा)
ii. मेवात (अलवर/भरतपुर)
iii. मेवाड़/भीलवाड़ा
iv. बीकानेर क्षेत्र
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. लोक देवता बाबा रामदेवजी का जन्म उण्डू काशमेर गाँव में हुआ था। यह गाँव वर्तमान में किस जिले में स्थित है?
(1) जैसलमेर
(2) बाड़मेर

(1) उन्होंने तत्कालीन परंपरा के अनुसार सती प्रथा का पालन किया।
(2) वे रतन सिंह राठौड़ की पुत्री थीं।
(3) उनका विवाह महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से हुआ था।
(4) उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष तीर्थाटन में व्यतीत किए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (साहित्यिक कृति)
A. पदावली
B. सबद वाणी
C. दादू वाणी
D. बीजक
सूची II: (संबंधित संत)
i. दादू दयाल
ii. मीरा बाई
iii. कबीर
iv. जाम्भोजी
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. विश्नोई संप्रदाय के संस्थापक जाम्भोजी का जन्म वर्ष 1451 ईस्वी में किस गाँव में हुआ था?
(1) कतरियासर
(2) पीपासर
(3) मुकाम
(4) समराथल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. विश्नोई संप्रदाय का नाम जाम्भोजी द्वारा निर्धारित सिद्धांतों की संख्या पर आधारित है। ये सिद्धांत कितने हैं?
(1) 20
(2) 29
(3) 36
(4) 42
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. जाम्भोजी का मुख्य निर्वाण स्थल (समाधि) कहाँ स्थित है?
(1) जांगलू (बीकानेर)
(2) फलोदी (जोधपुर)
(3) मुकाम (बीकानेर)
(4) लोहार्गर (झुंझुनू)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. विश्नोई संप्रदाय का मुख्य ग्रंथ, जिसमें जाम्भोजी के 120 शब्द संकलित हैं, क्या कहलाता है?
(1) विश्नोई वाणी
(2) गुरु चरित्र
(3) अनभै वाणी
(4) जम्भ सागर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. विश्नोई संप्रदाय के सिद्धांतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे हरे वृक्षों, विशेषकर खेजड़ी को काटने का निषेध करते हैं।
II. वे वन्यजीवों के संरक्षण को अनिवार्य मानते हैं।
III. वे प्रतिदिन विस्तृत और जटिल अग्नि यज्ञ करने की अनिवार्यता पर बल देते हैं।
IV. वे शुद्ध शाकाहार का पालन करते हैं और व्यसनों (मदिरा, अफीम) का विरोध करते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही संयोजन है/हैं?
(1) I, II और III
(2) I, II और IV
(3) II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: जाम्भोजी की शिक्षाएं मारवाड़ के मरुस्थलीय क्षेत्र में पड़ने वाले अकालों और पर्यावरणीय संकटों से प्रभावित थीं।
कथन II: विश्नोई संप्रदाय वार्षिक मेले के अवसर पर पशु बलि की अनुमति देता है।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. निम्नलिखित में से कौन सा स्थान जाम्भोजी से संबंधित पवित्र स्थलों (साथरी) में सम्मिलित नहीं है?
(1) समराथल धोरा
(2) पीपासर
(3) मुकाम
(4) गलताजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (स्थान)
A. पीपासर
B. समराथल धोरा
C. मुकाम
D. खेजरली

(1) खरनाल
(2) सुरसुरा
(3) पनेर
(4) परबतसर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. मारवाड़ के 'पंच पीरों' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. पाबूजी को लक्ष्मण का अवतार माना जाता है।
II. मेहाजी मांगलिया का मुख्य मंदिर बापणी में है।
III. हड़बूजी राव जोधा के समकालीन थे।
IV. तेजाजी को मारवाड़ के पारंपरिक पंच पीरों में सम्मिलित किया जाता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत संयोजन है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और IV
(4) II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. तेजाजी मुख्य रूप से किस वर्ग के आराध्य हैं, जिसमें किसान कार्य प्रारंभ करने से पूर्व 'तेजा टेर' गाते हैं?
(1) ऊंट पालक
(2) शिल्पकार
(3) खनिक
(4) कृषक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान के 'पंच पीरों' में सम्मिलित नहीं है?
(1) देवनारायणजी
(2) पाबूजी
(3) रामदेवजी
(4) गोगाजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (लोक देवता)
A. पाबूजी
B. देवनारायणजी
C. गोगाजी
D. तेजाजी
सूची II: (सवारी / अश्व)
i. लीलण (घोड़ी)
ii. केसर कालमी (घोड़ी)
iii. नीली घोड़ी
iv. लीलागर (घोड़ा)
(1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. करणी माता का प्रसिद्ध मंदिर, जहाँ अत्यधिक संख्या में चूहे विचरण करते हैं, कहाँ स्थित है?
(1) कोलायत
(2) देशनोक
(3) नोखा
(4) लूणकरणसर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. करणी माता मंदिर में चूहों को स्थानीय स्तर पर क्या कहा जाता है?
(1) काबा
(2) भोपे
(3) रिखिया
(4) मूषक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. करणी माता को किस राजवंश की कुलदेवी के रूप में पूजा जाता है?
(1) मेवाड़ के सिसोदिया
(2) जयपुर के कच्छवाहा
(3) बीकानेर के राठौड़
(4) अजमेर के चौहान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. करणी माता के बचपन का नाम क्या था?
(1) पायल बाई
(2) करणी देवी
(3) सुवाप बाई
(4) रिद्धि बाई
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

101. करणी माता के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने मेहरानगढ़ किले की आधारशिला रखी थी।
II. वे चारण समुदाय से संबंधित थीं।
III. जनश्रुति के अनुसार वे 150 वर्ष से अधिक आयु तक जीवित रहीं।
IV. देशनोक मंदिर में महाराजा गंगा सिंह द्वारा भेंट किए गए चांदी के द्वार हैं।
V. वे नर बलि की समर्थक थीं।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत संयोजन है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल V
(3) केवल IV और V
(4) III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

(1) पुष्कर
(2) नाथद्वारा
(3) गलताजी
(4) सलेमाबाद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. निम्नलिखित में से किसने एक आध्यात्मिक शास्त्रार्थ में स्थानीय नाथ योगियों को पराजित कर गलताजी में रामानंदी संप्रदाय की मुख्य पीठ स्थापित की थी?
(1) कृष्णदास पयहारी
(2) अग्रदास
(3) कील्हदास
(4) रामानंद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. रामानंदी संप्रदाय का दार्शनिक ढांचा मूल रूप से किसके द्वारा प्रतिपादित विशिष्टाद्वैत दर्शन से प्रेरित है?
(1) मध्वाचार्य
(2) निंबार्काचार्य
(3) शंकराचार्य
(4) रामानुजाचार्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को कथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन दोनों कथनों की सावधानीपूर्वक जांच करें और सही उत्तर चुनें।
कथन (A): गलताजी को रामानंदी संप्रदाय के संदर्भ में ऐतिहासिक रूप से 'उत्तर तोताद्रि' के रूप में जाना जाता है।
कारण (R): यह दक्षिण भारत के मूल तोताद्रि मठ के समानांतर उत्तर भारत में रामानुज परंपरा का सबसे प्रमुख केंद्र बन गया।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. 'रसिक संप्रदाय', रामानंदी परंपरा का एक उप-संप्रदाय जो माधुर्य भाव के साथ सीता और राम की पूजा पर बल देता है, रेवासा (सीकर) में किसके द्वारा स्थापित किया गया था?
(1) कृष्णदास पयहारी
(2) पृथ्वीराज राठौड़
(3) अग्रदास
(4) नाभा दास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित में से कौन सी राजस्थान में रामानंदी संप्रदाय की विशेषता नहीं है?
(1) धार्मिक ग्रंथों और भजनों के लिए हिंदी और स्थानीय बोलियों का उपयोग।
(2) सभी जातियों के शिष्यों का समावेश।
(3) भगवान राम और देवी सीता की मुख्य रूप से उपासना।
(4) मूर्ति पूजा और मंदिर निर्माण का पूर्ण त्याग।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. रामानंदी संप्रदाय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: रामानंदी संप्रदाय ने भोजन और दीक्षा के संबंध में पूर्ववर्ती रामानुज परंपरा के कठोर जाति-आधारित नियमों को सरल बनाया।
कथन II: जयपुर राजपरिवार ने 18वीं शताब्दी के दौरान रामानंदी तपस्वियों को सक्रिय रूप से प्रताड़ित किया।
निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
(3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
(4) कथन I गलत है, लेकिन कथन II सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित में से कौन राजस्थान में रामानंदी संप्रदाय की आध्यात्मिक वंशावली का सही कालानुक्रमिक क्रम दर्शाता है?
(1) रामानंद - अनंतानंद - कृष्णदास पयहारी - अग्रदास
(2) कृष्णदास पयहारी - अग्रदास - रामानंद - अनंतानंद
(3) अनंतानंद - रामानंद - अग्रदास - कृष्णदास पयहारी
(4) रामानंद - कृष्णदास पयहारी - अनंतानंद - अग्रदास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. संत दादू दयाल, जिन्हें अक्सर 'राजस्थान का कबीर' कहा जाता है, ने अपने जीवन का अधिकांश समय किस स्थान पर बिताया और अपनी प्रधान पीठ कहाँ स्थापित की?
(1) सांभर
(2) नरायणा
(3) आमेर
(4) भैराणा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. दादूपंथ के अनुयायी अपने मृतकों को जलाते या दफनाते नहीं हैं। इसके बजाय, वे पारंपरिक रूप से:
(1) शव को पशु-पक्षियों के आहार हेतु जंगल में छोड़ देते हैं।
(2) पवित्र पुष्कर झील के जल में पार्थिव शरीर को विसर्जित कर देते हैं।
(3) विभिन्न प्राकृतिक औषधियों का उपयोग करके शरीर को सुरक्षित रखते हैं।
(4) मृतक व्यक्ति के अवशेषों में से केवल बाल और नाखून का अंतिम संस्कार करते हैं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. संत दादू दयाल की शिक्षाओं और छंदों वाले पवित्र ग्रंथ मुख्य रूप से किस बोली में लिखे गए हैं?
(1) मारवाड़ी
(2) मेवाड़ी

(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

113. माउंट आबू स्थित दिलवाड़ा मंदिर किस धर्म से संबंधित है?
(1) वैष्णव धर्म
(2) जैन धर्म
(3) शैव धर्म
(4) बौद्ध धर्म
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

114. रणकपुर का चौमुखा मंदिर किस जैन तीर्थंकर को समर्पित है?
(1) आदिनाथ (ऋषभदेव)
(2) महावीर
(3) पार्श्वनाथ
(4) नेमिनाथ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

115. निम्नलिखित जैन मंदिरों के निर्माण का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(1) विमल वसही (दिलवाड़ा) - लूण वसही (दिलवाड़ा) - रणकपुर चौमुखा
(2) लूण वसही (दिलवाड़ा) - विमल वसही (दिलवाड़ा) - रणकपुर चौमुखा
(3) रणकपुर चौमुखा - विमल वसही (दिलवाड़ा) - लूण वसही (दिलवाड़ा)
(4) विमल वसही (दिलवाड़ा) - रणकपुर चौमुखा - लूण वसही (दिलवाड़ा)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

116. बाड़मेर का नाकोड़ा तीर्थ पार्श्वनाथ के साथ किस अन्य मूर्ति हेतु प्रसिद्ध है?
(1) पद्मावती
(2) चक्रेश्वरी
(3) अंबिका
(4) नाकोड़ा भैरव
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

117. दिलवाड़ा मंदिरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. विमल वसही मंदिर का निर्माण मंत्री विमल शाह द्वारा करवाया गया था।
II. लूण वसही मंदिर 22वें तीर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित है।
III. ये मंदिर स्थानीय लाल बलुआ पत्थर से निर्मित हैं।
IV. इन मंदिरों की छतों में उत्कृष्ट नक्काशी की गई है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही संयोजन है/हैं?
(1) I, II और IV
(2) I, II और III
(3) II, III और IV
(4) I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

118. दिलवाड़ा के लूण वसही मंदिर के निर्माता कौन थे?
(1) धरणाक शाह और देपा
(2) तेजपाल और वस्तुपाल
(3) विमल शाह और कुमारपाल
(4) हेमचंद्र और श्रीपाल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

119. रणकपुर जैन मंदिर के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसका निर्माण राणा कुंभा के काल में हुआ था।
II. इसका वास्तुकार देपा था।
III. यह मुख्य मंदिर 'चौमुखा' शैली में है।
IV. यह मघई नदी के तट पर स्थित है।
V. इसका निर्माण पूर्णतः राजकीय कोष से हुआ था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से गलत संयोजन है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल V
(3) केवल IV और V
(4) केवल III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

120. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जैन मंदिर)
A. विमल वसही
B. लूण वसही
C. रणकपुर चौमुखा
D. नाकोड़ा पार्श्वनाथ
सूची II: (निर्माता/संरक्षक)
i. धरणाक शाह
ii. तेजपाल और वस्तुपाल
iii. विमल शाह
iv. आलम शाह
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

उनकी रचनाओं में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती भाषा का सुंदर सम्मिश्रण मिलता है, जो उनके प्रवासों के प्रभाव को दर्शाता है। हालांकि, मीरा ने कभी भी सगुण रूप का त्याग नहीं किया; उन्होंने सदैव कृष्ण की मूर्ति के समक्ष अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त किया। अतः दूसरा कथन गलत है क्योंकि वे निर्गुण नहीं बल्कि सगुण भक्ति की प्रमुख संत थीं।

62. (4) द्वारका
अपने जीवन के अंतिम वर्षों में मीरा बाई गुजरात के द्वारका चली गई थीं। वहाँ वे प्रसिद्ध रणछोड़जी मंदिर में निरंतर कृष्ण भक्ति में लीन रहती थीं। जनश्रुति और धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, 1547 ईस्वी में वे इसी मंदिर में स्थित भगवान की मूर्ति में समा गई थीं। आज भी मंदिर में उनकी स्मृति में उत्सव मनाए जाते हैं। द्वारका मीरा की आध्यात्मिक यात्रा का अंतिम पड़ाव था, जहाँ उनके प्रेम और समर्पण को पूर्णता प्राप्त हुई, ऐसा भक्तों का विश्वास है।

63. (1) उन्होंने तत्कालीन परंपरा के अनुसार सती प्रथा का पालन किया।
मीरा बाई के जीवन की सबसे क्रांतिकारी विशेषता यह थी कि उन्होंने अपने पति भोजराज की मृत्यु के पश्चात सती होने से स्पष्ट मना कर दिया था। उनका मानना था कि उनके वास्तविक स्वामी अविनाशी कृष्ण हैं। वे रतन सिंह राठौड़ की पुत्री थीं और उनका विवाह मेवाड़ के प्रसिद्ध महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र से हुआ था। उन्होंने अपना शेष जीवन तीर्थयात्रा और भजन-कीर्तन में व्यतीत किया। अतः सती प्रथा का पालन करने वाला कथन ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः गलत है।

64. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थानी संतों और उनकी साहित्यिक कृतियों का सुमेल उनके दार्शनिक योगदान को स्पष्ट करता है। मीरा बाई की रचनाओं को 'पदावली' के रूप में संकलित किया गया है। संत जाम्भोजी के उपदेश 'सबद वाणी' या जम्भ सागर में मिलते हैं। दादू दयाल की शिक्षाओं का मुख्य स्रोत 'दादू वाणी' है, जिसमें उनके छंद हैं। महान संत कबीर की अमर वाणी का प्रामाणिक संकलन 'बीजक' कहलाता है। ये सभी ग्रंथ राजस्थान की आध्यात्मिक चेतना के मूल आधार हैं।

65. (2) पीपासर
विश्नोई संप्रदाय के महान प्रवर्तक संत जाम्भोजी का जन्म 1451 ईस्वी में नागौर जिले के पीपासर नामक गाँव में हुआ था। वे पंवार वंश के राजपूत परिवार से संबंधित थे। पीपासर आज भी विश्नोई अनुयायियों के लिए एक अत्यंत पवित्र तीर्थ स्थल है, जहाँ उनके बचपन से जुड़ी स्मृतियों का सम्मान किया जाता है। जाम्भोजी ने इसी क्षेत्र की पर्यावरणीय परिस्थितियों को देखकर समाज को प्रकृति संरक्षण और जीव दया का मार्ग दिखाया, जो आगे चलकर एक व्यापक आंदोलन बना।

66. (2) 29
'विश्नोई' शब्द का निर्माण ही दो शब्दों - 'बीस' और 'नौ' के मेल से हुआ है, जिसका अर्थ है 29 नियमों का पालन करने वाला। संत जाम्भोजी ने अपने अनुयायियों के लिए जीवन जीने के 29 विशेष सिद्धांत निर्धारित किए थे। इन नियमों में मुख्य रूप से प्रकृति की रक्षा, वन्यजीवों के प्रति दया, शुद्ध शाकाहार और सामाजिक शुचिता पर बल दिया गया है। ये नियम आज भी विश्नोई समाज की पहचान हैं और उन्हें पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अग्रणी बनाते हैं।

67. (3) मुकाम (बीकानेर)
बीकानेर जिले के नोखा तहसील में स्थित मुकाम नामक स्थान संत जाम्भोजी का मुख्य निर्वाण और समाधि स्थल है। यह विश्नोई संप्रदाय का सबसे पवित्र और केंद्रीय तीर्थ माना जाता है। यहाँ जाम्भोजी की भव्य समाधि बनी हुई है, जहाँ प्रतिवर्ष फाल्गुन अमावस्या और आश्विन अमावस्या को विशाल मेले लगते हैं। देश भर से श्रद्धालु यहाँ नमन करने और उनके द्वारा दिखाए गए शांति एवं अहिंसा के मार्ग पर चलने का संकल्प लेने के लिए एकत्रित होते हैं।

68. (4) जम्भ सागर
'जम्भ सागर' विश्नोई संप्रदाय का सबसे महत्वपूर्ण और पूजनीय धर्मग्रंथ है। इसमें संत जाम्भोजी द्वारा उच्चारित 120 शब्द संकलित हैं, जो जीवन दर्शन और आचार संहिता की व्याख्या करते हैं। यह ग्रंथ राजस्थानी भाषा में है और इसमें प्रकृति, भक्ति एवं मानवीय मूल्यों का सुंदर वर्णन है। विश्नोई समाज के लोग इसे अत्यंत श्रद्धा के साथ पढ़ते हैं और इसके वचनों को अपने दैनिक जीवन में उतारते हैं। यह ग्रंथ संप्रदाय के आध्यात्मिक आधार को मजबूती प्रदान करता है।

69. (2) I, II और IV
विश्नोई संप्रदाय के नियमों में खेजड़ी जैसे हरे वृक्षों को काटना और वन्यजीवों का शिकार करना पूर्णतः वर्जित है। वे शुद्ध शाकाहार का पालन करते हैं और सभी प्रकार के नशे के विरुद्ध हैं। हालांकि, जाम्भोजी ने आडंबरपूर्ण वैदिक यज्ञों की अनिवार्यता पर कभी बल नहीं दिया; उन्होंने सादगी और आंतरिक पवित्रता को प्राथमिकता दी। अतः तीसरा कथन उनके सिद्धांतों के साथ मेल नहीं खाता, जबकि अन्य तीनों कथन उनकी विचारधारा के मूल आधार स्तंभ हैं।

70. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
संत जाम्भोजी के विचार तत्कालीन मारवाड़ के कठिन भौगोलिक वातावरण और अकाल की समस्याओं से गहराई से प्रभावित थे, इसी कारण उन्होंने वृक्षों और जल के महत्व को समझा। उन्होंने प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने का उपदेश दिया। हालांकि, यह कथन पूर्णतः गलत है कि विश्नोई संप्रदाय में पशु बलि की अनुमति है। इसके विपरीत, जीव मात्र पर दया करना और अहिंसा का पालन करना उनके 29 नियमों में सबसे प्रमुख है। अतः पहला कथन सत्य और दूसरा असत्य है।

71. (4) गलताजी
जाम्भोजी से संबंधित पवित्र स्थलों में पीपासर, समराथल धोरा और मुकाम अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जिन्हें पवित्र स्थान कहा जाता है। गलताजी जयपुर के निकट स्थित है और यह मुख्य रूप से रामानंदी संप्रदाय का केंद्र है, इसका विश्नोई संप्रदाय से कोई सीधा ऐतिहासिक संबंध नहीं है। विश्नोई अनुयायी जाम्भोजी से

10. (1) बैराग पंथ और माननाथी पंथ
राजस्थान में नाथ संप्रदाय मुख्य रूप से दो प्रमुख शाखाओं में विभाजित है। पहली शाखा बैराग पंथ है, जिसका मुख्य केंद्र अजमेर के निकट पुष्कर में राता डूंगा नामक स्थान पर स्थित है। दूसरी शाखा माननाथी पंथ है, जो जोधपुर के महामंदिर में केंद्रित है। यह विभाजन ऐतिहासिक और क्षेत्रीय आधार पर हुआ है। ये दोनों शाखाएं गुरु गोरखनाथ की शिक्षाओं, हठयोग और शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि की साधना पर समान रूप से बल देती हैं।

11. (4) अनुयायी कृष्ण के सगुण रूप की पूजा करते हैं।
नाथ संप्रदाय एक निर्गुणोपासक संप्रदाय है जो हठयोग और शिव के योगिक स्वरूप पर ध्यान केंद्रित करता है। इस संप्रदाय के अनुयायी भगवान कृष्ण के सगुण रूप की पूजा नहीं करते हैं। गुरु गोरखनाथ ने इस पंथ को व्यवस्थित किया और कठिन शारीरिक तपस्या एवं इंद्रिय निग्रह पर बल दिया। जोधपुर के महाराजा मान सिंह के गुरु आयस देवनाथ इसी संप्रदाय से थे। यह संप्रदाय मूर्ति पूजा के स्थान पर आंतरिक योगिक साधना को प्रधानता देता है।

12. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं।
नाथ संप्रदाय की दो शाखाएं राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों में प्रतिष्ठित हैं। बैराग पंथ का मुख्य केंद्र पुष्कर के पास राता डूंगा में स्थित है, जहाँ तपस्वी योग साधना करते हैं। वहीं दूसरी ओर, माननाथी पंथ का प्रमुख केंद्र जोधपुर का ऐतिहासिक महामंदिर है, जिसे महाराजा मान सिंह के संरक्षण में विकसित किया गया था। ये दोनों केंद्र अपनी विशिष्ट परंपराओं और आध्यात्मिक महत्व के कारण प्रसिद्ध हैं, अतः दिए गए दोनों कथन ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं।

13. (2) केवल III
राजस्थान में शैव परंपरा के अंतर्गत कापालिक संप्रदाय अपनी अत्यंत कठोर और चरम तांत्रिक साधनाओं के लिए जाना जाता है। अपनी विशेष प्रकृति के कारण यह संप्रदाय सामान्य समाज या व्यापारी वर्ग के बीच व्यापक रूप से लोकप्रिय नहीं हुआ। इसके विपरीत, पाशुपत संप्रदाय के हारीत राशि का मेवाड़ के राजतंत्र पर गहरा प्रभाव था। जालौर में जालंधरनाथ की अत्यधिक मान्यता है। अतः केवल तीसरा कथन गलत है क्योंकि कापालिक संप्रदाय का प्रसार व्यापक जनसामान्य में नहीं था।

14. (4) सलेमाबाद, अजमेर
अजमेर जिले में स्थित सलेमाबाद मुख्य रूप से निंबार्क संप्रदाय की प्रधान पीठ के लिए प्रसिद्ध है। इसका नाथ संप्रदाय से कोई सीधा ऐतिहासिक संबंध नहीं है। इसके विपरीत, जालौर का सिरे मंदिर, जोधपुर का महामंदिर और पुष्कर के निकट स्थित राता डूंगा नाथ संप्रदाय के अत्यंत महत्वपूर्ण और पवित्र केंद्र रहे हैं। इन स्थानों पर नाथ योगियों की साधना और उनके मठों की समृद्ध परंपरा रही है, जो राजस्थान के धार्मिक इतिहास का अभिन्न हिस्सा है।

15. (1) नाथ संप्रदाय
शून्य समाधि और कुंडलिनी जागरण की अवधारणाएं नाथ संप्रदाय के केंद्रीय दार्शनिक और क्रियात्मक सिद्धांत हैं। यह संप्रदाय हठयोग के माध्यम से शरीर की ऊर्जा को जागृत करने और समाधि की सर्वोच्च अवस्था प्राप्त करने पर बल देता है। गुरु गोरखनाथ की शिक्षाओं के अनुसार, साधक अपनी श्वास और मन को नियंत्रित कर मोक्ष की प्राप्ति का प्रयास करता है। राजस्थान में इस संप्रदाय ने योगिक क्रियाओं और आध्यात्मिक अनुशासन की एक मजबूत परंपरा स्थापित की है।

16. (1) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
राजस्थान के शैव केंद्रों और संबंधित व्यक्तित्वों का सही मेल उनकी ऐतिहासिक भूमिका को दर्शाता है। जोधपुर का महामंदिर महाराजा मान सिंह के गुरु आयस देवनाथ से जुड़ा है। जालौर का सिरे मंदिर जालंधरनाथ की तपस्या स्थली है। पुष्कर का राता डूंगा राजा भर्तृहरि और उनकी योग साधना की परंपरा से संबंधित माना जाता है। वहीं, मेवाड़ का एकलिंगजी मंदिर बप्पा रावल द्वारा हारीत राशि के आशीर्वाद से निर्मित करवाया गया था, जो ऐतिहासिक रूप से प्रमाणित है।

17. (2) शुद्धाद्वैत
वल्लभाचार्य द्वारा प्रवर्तित पुष्टि मार्ग का दार्शनिक आधार शुद्धाद्वैत कहलाता है। यह दर्शन ईश्वर और जीव के बीच मायारहित शुद्ध अद्वैत संबंध की व्याख्या करता है। इसमें भगवान कृष्ण को सर्वोच्च सत्ता मानकर उनकी भक्ति पर बल दिया गया है। पुष्टि मार्ग में यह माना जाता है कि भक्ति के माध्यम से ही आत्मा और परमात्मा का मिलन संभव है। यह विचारधारा राजस्थान के वैष्णव संप्रदायों में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसने यहाँ की चित्रकला और संगीत को प्रभावित किया है।

18. (1) ईश्वर की कृपा
पुष्टि मार्ग में 'पुष्टि' शब्द का शाब्दिक और दार्शनिक अर्थ 'ईश्वर की कृपा' है। वल्लभाचार्य के अनुसार, भक्त को मोक्ष की प्राप्ति केवल अपनी साधना से नहीं, बल्कि भगवान की असीम कृपा से ही संभव है। यह मार्ग ज्ञान और कर्म के कठिन नियमों के स्थान पर पूर्ण समर्पण और प्रेममयी भक्ति को प्राथमिकता देता है। भक्त अपने आराध्य की कृपा पाकर ही संसार के बंधनों से मुक्त हो सकता है और परम दिव्य आनंद प्राप्त कर सकता है।

19. (3) औरंगजेब
मुगल सम्राट औरंगजेब की कठोर मंदिर विरोधी नीतियों के दौरान मथुरा और वृंदावन के कई मंदिरों को नष्ट किया जा रहा था। इसी संकटपूर्ण समय में श्रीनाथजी की पवित्र मूर्ति को ब्रज क्षेत्र से हटाकर सुरक्षित स्थान पर ले जाने का निर्णय लिया गया। पुजारी इस मूर्ति को राजस्थान के मेवाड़ क्षेत्र में लाए, जहाँ उन्हें सुरक्षा का आश्वासन मिला। अंततः मेवाड़ के शासकों के सहयोग से इस ऐतिहासिक मूर्ति की स्थापना नाथद्वारा के मंदिर में की गई थी।

20. (4) महाराणा राज सिंह
मेवाड़ के पराक्रमी शासक महाराणा राज सिंह ने मुगल सम्राट औरंगजेब की नीतियों का निर्भीक विरोध किया। उन्होंने

41. (3) दादू दयाल, रामचरण, लालदास
राजस्थान के आध्यात्मिक इतिहास में कबीर के निर्गुण दर्शन का गहरा प्रभाव कई संतों पर दिखाई देता है। संत दादू दयाल ने कबीर की तरह ही बाह्य कर्मकांडों का विरोध किया और आंतरिक शुद्धि पर बल दिया। रामस्नेही संप्रदाय के रामचरण जी और मेवात के लालदास जी ने भी निराकार ईश्वर की भक्ति का मार्ग अपनाया। इन सभी संतों ने सामाजिक समानता और सांप्रदायिक सद्भाव का संदेश दिया, जो मूलतः कबीर की विचारधारा के मुख्य तत्व माने जाते हैं।

42. (1) भौतिक रूप या गुणों से रहित ईश्वर की भक्ति।
निर्गुण भक्ति का मूल दर्शन ईश्वर को निराकार, अजन्मा और सर्वव्यापी मानना है। यह विचारधारा किसी विशिष्ट भौतिक रूप, मूर्ति या मानवीय गुणों में ईश्वर को सीमित नहीं करती है। इसके अनुसार परमात्मा प्रत्येक हृदय के भीतर निवास करता है और उसे केवल सत्य, ज्ञान और आंतरिक साधना के माध्यम से ही अनुभव किया जा सकता है। राजस्थान के निर्गुण संतों ने मंदिर और जटिल अनुष्ठानों के स्थान पर नाम स्मरण को मोक्ष हेतु अनिवार्य माना है।

43. (4) बीजक
कबीर की शिक्षाओं और उनके पदों का सबसे प्रामाणिक संकलन 'बीजक' कहलाता है। यह ग्रंथ तीन भागों - साखी, सबद और रमैनी में विभाजित है। राजस्थान के कबीरपंथी और अन्य निर्गुण संप्रदाय इस ग्रंथ को अत्यंत श्रद्धा के साथ पढ़ते हैं। इसमें कबीर के क्रांतिकारी सामाजिक विचार और आध्यात्मिक अनुभव संकलित हैं। हालांकि अन्य संतों की अपनी स्वतंत्र रचनाएं भी महत्वपूर्ण हैं, परंतु बीजक को निर्गुण भक्ति परंपरा का सबसे महत्वपूर्ण आधारभूत स्तंभ माना जाता है।

44. (2) वे संन्यास और परिवार के त्याग को अनिवार्य मानते हैं।
कबीरपंथ की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यह गृहस्थ जीवन और अध्यात्म के बीच संतुलन पर बल देता है। कबीर स्वयं एक जुलाहे के रूप में कार्यरत थे और उन्होंने कभी भी परिवार या संसार के पूर्ण त्याग को अनिवार्य नहीं बताया। इसके विपरीत, कबीरपंथी सामाजिक बुराइयों, जाति व्यवस्था और धार्मिक पाखंड का कड़ा विरोध करते हैं। वे गुरु की महत्ता और सादा जीवन, उच्च विचार के सिद्धांत का पालन करते हैं, जो समाज सुधार की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

45. (1) I, II और III
कबीर के प्रभाव के कारण दादू दयाल ने जनभाषा में उपदेश दिए और रामस्नेही संतों ने 'राम' को एक निराकार तत्व के रूप में स्वीकारा। लालदासी संप्रदाय ने भी हिंदू-मुस्लिम एकता और निर्गुण भक्ति के कबीरवादी सिद्धांतों को आत्मसात किया। हालांकि, यह कहना गलत है कि कबीर के प्रभाव से मारवाड़ में सगुण भक्ति पूरी तरह समाप्त हो गई थी, क्योंकि मीरा बाई और अन्य सगुण परंपराएं भी वहाँ समांतर रूप से प्रचलित रहीं। अतः अंतिम कथन असत्य है।

46. (4) उन्होंने श्रम को प्रतिष्ठा दी और सामाजिक पदानुक्रम को अस्वीकार कर दिया।
राजस्थान के कृषक और श्रमिक वर्गों के बीच निर्गुण संतों की लोकप्रियता का मुख्य कारण उनका प्रगतिशील सामाजिक दृष्टिकोण था। कबीर और दादू जैसे संतों ने यह उपदेश दिया कि कोई भी कार्य छोटा नहीं होता और ईश्वर को प्राप्त करने के लिए संसार छोड़ना आवश्यक नहीं है। उन्होंने जन्म आधारित जाति व्यवस्था को नकारा और सभी मनुष्यों की समानता की बात की। इस संदेश ने शोषित वर्गों को आत्म-सम्मान प्रदान किया और उन्हें एक सरल आध्यात्मिक मार्ग दिखाया।

47. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
कबीरपंथ का विस्तार राजस्थान में मुख्य रूप से मौखिक भजन परंपराओं और भ्रमणशील साधुओं के माध्यम से हुआ, न कि धनी संस्थानों द्वारा। यह एक लोक-आधारित आंदोलन था। कबीरपंथी मूर्ति पूजा के प्रबल विरोधी रहे हैं, इसलिए उनका सगुण उत्सवों को मूर्तियों के साथ मनाना पूर्णतः असंभव है। यह संप्रदाय निराकार परमात्मा के सुमिरन और सत्संग पर विश्वास करता है। अतः पहला कथन पूर्णतः सत्य है जबकि दूसरा कथन इस संप्रदाय के मूल सिद्धांतों के विपरीत और गलत है।

48. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
निर्गुण संप्रदायों की शब्दावली उनके आध्यात्मिक दर्शन को गहराई से स्पष्ट करती है। 'शब्द' उस दिव्य ध्वनि या गुरु की वाणी को कहते हैं जो साधक का मार्ग प्रशस्त करती है। 'सुमिरन' का अर्थ है निरंतर ईश्वर के नाम का मन में जाप करना। 'सत्संग' वह पवित्र सभा है जहाँ भक्त आध्यात्मिक चर्चा हेतु एकत्रित होते हैं। 'परचा' उस आध्यात्मिक अनुभव या सिद्धि को कहा जाता है जो किसी संत की आत्मिक शक्ति का प्रमाण मानी जाती है।

49. (2) गागरोन
संत पीपा मध्यकालीन राजस्थान के एक महान निर्गुण संत थे। आध्यात्मिक मार्ग अपनाने से पूर्व वे झालावाड़ जिले में स्थित प्रसिद्ध गागरोन दुर्ग के प्रतापी राजा थे। वे खींची चौहान राजवंश से संबंधित थे और अपनी वीरता एवं कुशल प्रशासन के लिए जाने जाते थे। सांसारिक सुखों से विरक्ति होने के पश्चात उन्होंने अपना राजपाट त्याग दिया और भक्ति मार्ग का चयन किया। उनके जीवन का यह परिवर्तन वैराग्य और ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण का श्रेष्ठ उदाहरण है।

50. (1) रामानंद
संत पीपा के आध्यात्मिक गुरु स्वामी रामानंद थे, जिन्हें उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन का जनक माना जाता है। पीपा जी ने काशी जाकर स्वामी रामानंद से दीक्षा प्राप्त की थी। गुरु के प्रभाव से ही उनके जीवन में वैराग्य उत्पन्न हुआ और उन्होंने सगुण राजसी जीवन को त्यागकर निर्गुण भक्ति को अपनाया। रामानंद के शिष्यों में पीपा के अतिरिक्त कबीर और रैदास जैसे महान संत भी सम्मिलित थे, जिन्होंने समाज में धार्मिक पुनर्जागरण और सामाजिक समानता का संदेश प्रसारित किया।

समावेश और आध्यात्मिक संवाद के लिए जनभाषा हिंदी का प्रयोग सम्मिलित है। गलताजी जैसे केंद्रों में मंदिरों की स्थापना और मूर्तियों की विधिवत सेवा इस संप्रदाय की भक्ति पद्धति का अनिवार्य हिस्सा है।

31. (3) कथन I सही है, लेकिन कथन II गलत है।
स्वामी रामानंद ने भक्ति मार्ग को सभी जातियों के लिए खोल दिया और भोजन एवं दीक्षा के पुराने कठोर नियमों को काफी सरल बनाया। इसी कारण उनका संप्रदाय व्यापक रूप से फैला। जयपुर राजपरिवार ने इस संप्रदाय को सदैव संरक्षण प्रदान किया। सवाई जयसिंह जैसे शासकों ने रामानंदी संतों को राजकीय सम्मान दिया और कई मंदिरों का निर्माण करवाया। अतः प्रथम कथन सत्य है जबकि दूसरा कथन ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत और पूर्णतः गलत है।

32. (1) रामानंद - अनंतानंद - कृष्णदास पयहारी - अग्रदास
राजस्थान में रामानंदी संप्रदाय की गुरु-शिष्य परंपरा का कालक्रम अत्यंत स्पष्ट है। स्वामी रामानंद ने इस भक्ति धारा को उत्तर भारत में मुख्यधारा बनाया। उनके प्रसिद्ध शिष्य अनंतानंद हुए, जिनके शिष्य कृष्णदास पयहारी ने जयपुर के गलताजी में पीठ स्थापित की। पयहारी जी के शिष्य अग्रदास ने आगे चलकर सीकर के रेवासा में रसिक संप्रदाय की स्थापना की। यह श्रृंखला दर्शाती है कि कैसे यह आध्यात्मिक ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक प्रवाहित होकर स्थापित हुआ।

33. (2) नरायणा
संत दादू दयाल ने अपने जीवन का अधिकांश महत्वपूर्ण समय राजस्थान के जयपुर क्षेत्र में बिताया। उन्होंने अपनी प्रधान पीठ जयपुर के समीप नरायणा नामक स्थान पर स्थापित की थी। दादू दयाल ने निर्गुण भक्ति का उपदेश दिया और समाज में व्याप्त आडंबरों का खंडन किया। नरायणा आज भी दादूपंथियों के लिए सबसे पवित्र तीर्थ स्थल है। यहाँ संत दादू की स्मृतियाँ सुरक्षित हैं और प्रतिवर्ष फाल्गुन माह में विशाल मेला आयोजित होता है, जहाँ हजारों अनुयायी आते हैं।

34. (1) शव को पशु-पक्षियों के आहार हेतु जंगल में छोड़ देते हैं।
दादूपंथ में मृत्यु के पश्चात शरीर के निपटान की एक अनूठी परंपरा है। इस पंथ के अनुयायियों का मानना है कि मृत्यु के बाद भी शरीर परोपकार के काम आना चाहिए। इसलिए वे शव को जलाने या दफनाने के बजाय खुले जंगल में पशु-पक्षियों के भोजन हेतु छोड़ देते हैं। संत दादू दयाल का स्वयं का शरीर भी जयपुर के पास भैराणा की पहाड़ी पर इसी प्रकार छोड़ा गया था। यह प्रथा पूर्णतः परोपकार और मोह त्याग को दर्शाती है।

35. (3) ढूंढाड़ी (सधुक्कड़ी)
संत दादू दयाल की शिक्षाएं और उनके काव्य संकलन मुख्य रूप से ढूंढाड़ी भाषा में लिखे गए हैं, जिसे 'सधुक्कड़ी' भी कहा जाता है। इसमें राजस्थानी, हिंदी और अन्य स्थानीय बोलियों का मिश्रण है ताकि साधारण जनता उनके उपदेशों को आसानी से समझ सके। उनकी प्रसिद्ध कृतियों में 'दादू वाणी' प्रमुख है, जो निर्गुण भक्ति दर्शन का अनमोल खजाना है। इस सरल और प्रभावशाली जनभाषा के कारण ही दादू दयाल का संदेश उत्तर-पश्चिम भारत में व्यापक रूप से फैल सका।

36. (4) बैराग
संत दादू दयाल की मृत्यु के पश्चात उनका पंथ पांच प्रमुख शाखाओं में विभाजित हो गया, जिन्हें खालसा, विरक्त, नागा, उत्तराधे और खाकी कहा जाता है। बैराग वास्तव में नाथ संप्रदाय की एक शाखा है, दादूपंथ की नहीं। खालसा शाखा नरायणा पीठ से जुड़ी है, जबकि नागा शाखा युद्ध कला में निपुण होती थी। विरक्त साधु निरंतर भ्रमण करते थे और उत्तराधे शाखा के संत उत्तर भारत की ओर चले गए। यह वर्गीकरण अनुयायियों की जीवनशैली पर आधारित है।

37. (2) केवल III
संत दादू दयाल ने निर्गुण भक्ति पर बल दिया और मूर्ति पूजा का विरोध किया, जो पूर्णतः सत्य है। उन्होंने 1585 ईस्वी में फतेहपुर सीकरी में अकबर से भेंट कर उन्हें प्रभावित किया था। हालांकि, दादूपंथ की शिक्षाओं ने कभी भी कार्य का त्याग करने या आलस्य का समर्थन नहीं किया। इसके विपरीत, दादू दयाल स्वयं जीवन निर्वाह के लिए शारीरिक श्रम करते थे और उन्होंने अनुयायियों को भी कर्मशील रहने की प्रेरणा दी। अतः केवल तीसरा कथन गलत है।

38. (2) सुंदर दास
दादूपंथ की नागा उप-शाखा की स्थापना दादू दयाल के विद्वान शिष्य सुंदर दास ने की थी। यह शाखा अपने अनुशासित जीवन और अस्त्र-शस्त्र धारण करने की परंपरा के लिए जानी जाती है। नागा साधुओं ने ऐतिहासिक रूप से राजस्थान की विभिन्न रियासतों, विशेषकर जयपुर राज्य को सैन्य सहायता भी प्रदान की थी। वे केवल आध्यात्मिक गुरु ही नहीं, बल्कि कुशल योद्धा भी थे। यह शाखा दादूपंथ के भीतर साहस और धर्म रक्षा के प्रतीक के रूप में आज भी पहचानी जाती है।

39. (4) रज्जबजी
संत रज्जबजी दादू दयाल के अत्यंत प्रिय और प्रसिद्ध शिष्य थे। कहा जाता है कि जब वे दूल्हे के वेश में विवाह हेतु जा रहे थे, तब दादू दयाल के वचनों को सुनकर उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया। अपने गुरु के सम्मान में और उनके उपदेश की याद में वे आजीवन दूल्हे की पोशाक में ही रहे। उनकी रचना 'रज्जब वाणी' निर्गुण भक्ति और अध्यात्म का अद्भुत ग्रंथ है। उनका जीवन गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण और त्याग का अनुपम उदाहरण माना जाता है।

40. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
दादूपंथ की विभिन्न शाखाओं की अपनी विशिष्ट पहचान है। खालसा शाखा मुख्य रूप से नरायणा पीठ और संत गरीब दास के उत्तराधिकार से संबंधित है। विरक्त शाखा के साधु संसार का त्याग कर निरंतर भ्रमण करते रहते हैं। नागा शाखा की स्थापना सुंदर दास ने की थी, जो वीरता और शस्त्र संचालन हेतु प्रसिद्ध थे। उत्तराधे शाखा उन संतों की है जो प्रचार हेतु उत्तर दिशा में चले गए थे। यह वर्गीकरण पंथ के संगठनात्मक विस्तार को स्पष्ट करता है।

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) इसमें भक्ति परंपराओं, लोक देवताओं और सूफी रहस्यवाद का सम्मिश्रण देखने को मिलता था।
मध्यकालीन राजस्थान में धार्मिक संस्कृति अत्यंत समावेशी और विविधतापूर्ण थी। यहाँ हिंदू धर्म की सगुण और निर्गुण परंपराओं के साथ-साथ सूफी रहस्यवाद का गहरा प्रभाव रहा है। समाज में लोक देवताओं की पूजा ने जातिगत बाधाओं को कम कर सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया। यह युग किसी एक संप्रदाय के प्रभुत्व का नहीं था, बल्कि विभिन्न धार्मिक विचारधाराओं के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व और सुंदर सम्मिश्रण का प्रत्यक्ष उदाहरण था।

2. (2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं।
राजस्थान में भक्ति परंपरा को दो मुख्य धाराओं में विभाजित किया जा सकता है। सगुण भक्ति के संत ईश्वर के साकार रूप और गुणों में विश्वास करते थे और वे प्रायः मंदिर अनुष्ठानों पर बल देते थे। इसके विपरीत, निर्गुण भक्ति के संत ईश्वर को निराकार मानकर उनकी उपासना करते थे। इन निर्गुण संतों ने अपने संदेशों के व्यापक प्रसार हेतु स्थानीय बोलियों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया ताकि आम जनता सहजता से जुड़ सके।

3. (3) एकलिंगजी
उदयपुर के निकट स्थित एकलिंगजी मंदिर राजस्थान में शैव धर्म का अत्यंत प्राचीन और महत्वपूर्ण केंद्र है। यह स्थल विशेष रूप से पाशुपत संप्रदाय की गतिविधियों का मुख्य केंद्र माना जाता है। मेवाड़ के शासक भगवान एकलिंगजी को अपना इष्ट देव और राज्य का वास्तविक शासक मानते थे, जबकि स्वयं को उनका प्रतिनिधि अथवा दीवान कहते थे। यहाँ शैव मत की कापालिक और पाशुपत जैसी तांत्रिक शाखाओं का ऐतिहासिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

4. (4) अलखिया संप्रदाय - बांसवाड़ा
राजस्थान के प्रमुख धार्मिक संप्रदायों में अलखिया संप्रदाय की स्थापना स्वामी लालगिरी द्वारा की गई थी। इस संप्रदाय की प्रधान पीठ बीकानेर में स्थित है, न कि बांसवाड़ा में। यह संप्रदाय निर्गुण भक्ति धारा का अनुसरण करता है और 'अलख निरंजन' की साधना पर विशेष बल देता है। अन्य विकल्प सही सुमेलित हैं, जैसे निंबार्क संप्रदाय सलेमाबाद में, रामस्नेही संप्रदाय शाहपुरा में और जसनाथी संप्रदाय कतरियासर में मुख्य रूप से केंद्रित हैं।

5. (1) केवल I और II
राजस्थान में जैन धर्म को मेवाड़ और मारवाड़ के राजघरानों का निरंतर संरक्षण प्राप्त हुआ, जिससे वहाँ कलात्मक मंदिरों का निर्माण हुआ। मारवाड़ में महाराजा मान सिंह के समय नाथ संप्रदाय का राजनीतिक और धार्मिक प्रभाव अपने चरमोत्कर्ष पर था। दादूपंथ की मुख्य पीठ और उत्पत्ति स्थल जयपुर के समीप नरायणा में स्थित है, न कि मेवाड़ क्षेत्र में। अतः प्रथम दो कथन सही हैं, जबकि तीसरा कथन ऐतिहासिक दृष्टि से असत्य है।

6. (2) दादू दयाल
महाराष्ट्र की वरकरी परंपरा अपनी गैर-सांप्रदायिक और समतावादी भक्ति के लिए प्रसिद्ध है। राजस्थान के संदर्भ में संत दादू दयाल की शिक्षाएं इस विचारधारा के सबसे निकट मानी जाती हैं। उन्होंने बाह्य आडंबरों का विरोध किया और ईश्वर के प्रति सरल एवं हृदयस्पर्शी प्रेम पर बल दिया। दादू पंथ में सभी जातियों और वर्गों के लोगों को समान स्थान प्राप्त था, जो वरकरी परंपरा की समावेशी भावना के साथ पूर्णतः मेल खाता है।

7. (1) I, III, II, IV
राजस्थान के महान संतों का सही कालक्रम उनके जन्म के आधार पर निर्धारित है। संत पीपा का जन्म 14वीं शताब्दी में गागरोन के राजा के रूप में हुआ था। संत जाम्भोजी का जन्म 1451 ईस्वी में हुआ, जिन्होंने विश्नोई संप्रदाय की स्थापना की। संत दादू दयाल का जन्म 1544 ईस्वी में हुआ और उन्होंने दादूपंथ चलाया। रामस्नेही संप्रदाय के संत रामचरण का जन्म 18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में हुआ था। यह क्रम भक्ति आंदोलन के विकास को दर्शाता है।

8. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मध्यकाल में राजस्थान के भक्ति आंदोलन ने सामाजिक सुधारों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। दादू दयाल, कबीर और रैदास जैसे संतों ने, जो स्वयं साधारण पृष्ठभूमि से थे, जातिगत भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने स्थानीय जनभाषाओं में उपदेश दिए, जिससे वंचित समुदायों में आध्यात्मिक जागृति आई। ईश्वर की भक्ति में समानता के संदेश ने जाति व्यवस्था की कठोरता को कम किया, इसलिए कथन और कारण दोनों सत्य हैं और तर्कसंगत संबंध रखते हैं।

9. (3) नाथ संप्रदाय
जोधपुर में स्थित महामंदिर राजस्थान का एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल है। यह भव्य मंदिर अपने 84 नक्काशीदार खंभों और सुंदर भित्ति चित्रों के लिए जाना जाता है। यह नाथ संप्रदाय की माननाथी शाखा की प्रधान पीठ है। इसका निर्माण जोधपुर के महाराजा मान सिंह ने करवाया था, जो नाथ संप्रदाय के अनुयायी थे। यह स्थल हठयोग और योग साधना की प्राचीन परंपराओं का केंद्र रहा है, जो आज भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है।

51. (3) समदड़ी (बालोतरा)
संत पीपा का प्रमुख मंदिर और आराधना स्थल बालोतरा जिले के समदड़ी नामक स्थान पर स्थित है। यहाँ प्रतिवर्ष चैत्र पूर्णिमा को एक विशाल मेला आयोजित होता है, जिसमें बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित होते हैं। दर्जी समुदाय के लोग उन्हें अपना आराध्य देव मानते हैं और विशेष रूप से उनकी पूजा करते हैं। यह स्थान उनकी स्मृति और उनके द्वारा दिए गए सादगी एवं भक्ति के संदेश को जीवंत रखता है। राजस्थान की लोक संस्कृति में इस मंदिर का विशेष महत्व है।

52. (4) टोडा रायसिंह, टोंक
संत पीपा से संबंधित ऐतिहासिक 'पीपाजी की गुफा' टोंक जिले के टोडा रायसिंह में स्थित है। माना जाता है कि राजपाट त्यागने के पश्चात उन्होंने इस शांत और एकांत स्थान पर कठिन तपस्या की थी। यहाँ उन्होंने ध्यान और साधना के माध्यम से आध्यात्मिक सिद्धियाँ प्राप्त कीं। यह गुफा आज भी श्रद्धालुओं और जिज्ञासुओं के लिए प्रेरणा का केंद्र है। उनके जीवन के विभिन्न पड़ाव राजस्थान के अलग-अलग क्षेत्रों में फैले हुए हैं, जो उनकी व्यापक लोकप्रियता को स्पष्ट करते हैं।

53. (2) केवल V
संत पीपा का बचपन का नाम प्रताप सिंह खींची था और उन्होंने विदेशी आक्रमणों को विफल किया था। उन्होंने भक्ति हेतु सिंहासन त्याग दिया और उनके पद गुरु ग्रंथ साहिब में भी संकलित हैं। हालांकि, उन्होंने कभी भी मूर्ति पूजा या पशु बलि की वकालत नहीं की; इसके विपरीत, वे निर्गुण भक्ति के उपासक थे और अहिंसा एवं दया पर बल देते थे। अतः केवल पांचवां कथन उनके सिद्धांतों के विरुद्ध और पूर्णतः गलत है।

54. (2) दर्जी
राजस्थान में संत पीपा को दर्जी समुदाय द्वारा अपने आराध्य देव के रूप में अत्यधिक श्रद्धा के साथ पूजा जाता है। लोक कथाओं के अनुसार, वैराग्य धारण करने के पश्चात पीपा जी ने अपनी आजीविका चलाने के लिए वस्त्र सिलने का कार्य अपनाया था। उन्होंने यह संदेश दिया कि कोई भी श्रम छोटा नहीं होता और ईमानदारी से किया गया कार्य ही सच्ची सेवा है। इसी कारण दर्जी समाज उन्हें अपना संरक्षक मानकर उनकी जयंती अत्यंत उत्साह के साथ मनाता है।

55. (4) वे मोक्ष हेतु जटिल वैदिक अनुष्ठानों की अनिवार्यता में विश्वास करते थे।
संत पीपा एक निर्गुण संत थे जो ईश्वर की आंतरिक खोज में विश्वास रखते थे। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि ईश्वर किसी मंदिर या पत्थर की मूर्ति में नहीं, बल्कि स्वयं मनुष्य के हृदय के भीतर विराजमान है। उन्होंने जटिल वैदिक अनुष्ठानों, बाह्य आडंबरों और जातिगत भेदभाव का कड़ा विरोध किया। उनके अनुसार, सच्ची भक्ति और पवित्र हृदय ही मोक्ष प्राप्ति का एकमात्र साधन है। अतः वैदिक अनुष्ठानों की अनिवार्यता वाला कथन उनके दर्शन के पूर्णतः विपरीत है।

56. (2) III, I, II, IV
संत पीपा के जीवन का घटनाक्रम एक शासक से संत बनने की यात्रा को दर्शाता है। वे सबसे पहले गागरोन के प्रतापी राजा थे। आध्यात्मिक खोज के दौरान उन्होंने अपना सिंहासन त्याग दिया और काशी जाकर स्वामी रामानंद से विधिवत दीक्षा ली। इसके पश्चात, वे एक निर्गुण भक्त के रूप में समाज के बीच आए और स्वावलंबन का संदेश देने हेतु वस्त्र सिलने का कार्य करते हुए उपदेश दिए। यह क्रम उनके जीवन के क्रमिक विकास और वैराग्य को स्पष्ट करता है।

57. (3) मेड़ता
प्रसिद्ध महिला संत मीरा बाई का जन्म नागौर जिले के कुड़की गाँव में हुआ था, जो ऐतिहासिक रूप से मेड़ता रियासत के अंतर्गत आता था। वे मेड़ता के शासक राव दूदा के पौत्र रत्न सिंह की पुत्री थीं। मीरा का बचपन मेड़ता में ही बीता, जहाँ उनके दादा की धार्मिक प्रवृत्तियों ने उनके मन में कृष्ण भक्ति के बीज बोए। मेड़ता का यह क्षेत्र मीरा की भक्ति यात्रा का प्रारंभिक और अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र माना जाता है, जहाँ से उनके भजनों की गूँज उठी।

58. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मीरा बाई को मेवाड़ के राजपरिवार, विशेषकर उनके पति की मृत्यु के पश्चात, भारी विरोध और प्रताड़ना का सामना करना पड़ा। तत्कालीन समाज में एक विधवा और राजवधू का साधु-संतों के साथ सार्वजनिक रूप से नृत्य करना और गाना मर्यादा के विरुद्ध माना जाता था। राजपरिवार ने इसे अपनी प्रतिष्ठा के लिए संकट समझा और उन्हें रोकने के कई प्रयास किए। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं, क्योंकि सामाजिक दबाव ही उनकी प्रताड़ना का मुख्य कारण था।

59. (4) रविदास (रैदास)
मीरा बाई ने प्रसिद्ध निर्गुण संत रविदास को अपना आध्यात्मिक गुरु स्वीकार किया था। रविदास सामाजिक रूप से वंचित वर्ग से थे, फिर भी मीरा ने रुढ़ियों को तोड़कर उनसे दीक्षा ली। चित्तौड़गढ़ के कुंभश्याम मंदिर परिसर में संत रैदास की छतरी आज भी स्थित है, जो इस गुरु-शिष्य संबंध की ऐतिहासिक गवाह है। मीरा के पदों में 'गुरु मिल्या रैदास' के उल्लेख मिलते हैं, जो उनके जीवन पर रैदास की शिक्षाओं और सामाजिक समरसता के गहरे प्रभाव को दर्शाते हैं।

60. (2) नरसी जी रो माहेरो
'नरसी जी रो माहेरो' नामक ग्रंथ का संबंध मीरा बाई की भक्ति परंपरा से माना जाता है। लोक मान्यताओं के अनुसार, मीरा के निर्देशन में इस ग्रंथ की रचना प्रसिद्ध भक्त कवि रत्ना खाती ने की थी। यह कृति भगवान कृष्ण की कृपा और भक्त नरसी मेहता की कहानी पर आधारित है। हालांकि मीरा ने स्वयं कई पदों और पदावलियों की रचना की, परंतु यह ग्रंथ उनकी प्रेरणा और उनके समय के भक्ति साहित्य का एक अमूल्य हिस्सा माना जाता है।

61. (3) केवल I और III
मीरा बाई की भक्ति 'माधुर्य भाव' की पराकाष्ठा है, जिसमें उन्होंने भगवान कृष्ण को ही अपना सर्वस्व और पति माना।

श्रीनाथजी की मूर्ति लेकर आए पुजारियों को न केवल शरण दी, बल्कि सुरक्षा का पूर्ण वचन भी दिया। महाराणा ने इस दिव्य मूर्ति की स्थापना के लिए सिहाड़ गाँव दान में दिया, जिसे वर्तमान में नाथद्वारा के नाम से जाना जाता है। इस साहसिक कार्य ने मेवाड़ को पुष्टि मार्गी वैष्णव भक्ति और कला के एक वैश्विक केंद्र के रूप में प्रतिष्ठित किया।

21. (1) I, II, III और IV
पुष्टि मार्ग भगवान कृष्ण के बाल स्वरुप की सेवा और भक्ति पर आधारित है। इस संप्रदाय में मंदिरों को 'हवेली' कहा जाता है, जहाँ 'हवेली संगीत' के माध्यम से ईश्वर की आराधना की जाती है। मंदिर में मूर्ति के पीछे लगाए जाने वाले कलात्मक वस्त्रों को 'पिछवाई' कहा जाता है। यह संप्रदाय गृहस्थ जीवन का त्याग अनिवार्य नहीं मानता, बल्कि संसार में रहकर भक्ति का उपदेश देता है। अतः पांचवां कथन गलत है और शेष सभी कथन सही हैं।

22. (2) अष्टछाप
अष्टछाप आठ प्रसिद्ध भक्त-कवियों का एक समूह था, जिसकी स्थापना विट्ठलनाथ ने की थी। इन कवियों ने भगवान श्रीनाथजी की महिमा में मधुर भजनों और पदों की रचना की। इस समूह में सूरदास जैसे महान कवि सम्मिलित थे। इन कवियों की रचनाओं ने पुष्टि मार्गी भक्ति धारा को जन-जन तक पहुँचाया और ब्रज भाषा के साहित्य को समृद्ध किया। राजस्थान के नाथद्वारा मंदिर में आज भी इन पदों का गायन हवेली संगीत की परंपरा के रूप में जीवित है।

23. (4) इसने नाथद्वारा को वैष्णव कला और पिछवाइयों के एक प्रमुख केंद्र में बदल दिया।
नाथद्वारा में श्रीनाथजी मंदिर की स्थापना ने राजस्थान की सांस्कृतिक पहचान को एक नया आयाम दिया। इसके परिणामस्वरुप यहाँ पिछवाई चित्रकला की एक अद्वितीय शैली विकसित हुई, जो मंदिर की सजावट हेतु उपयोग की जाती है। नाथद्वारा केवल एक धार्मिक स्थल ही नहीं, बल्कि संगीत, मूर्तिकला और हस्तशिल्प का भी बड़ा केंद्र बन गया। इस मंदिर के प्रभाव से मेवाड़ क्षेत्र में वैष्णव परंपरा सुदृढ़ हुई और यहाँ की कला में भक्ति भाव का सुंदर चित्रण होने लगा।

24. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान में वल्लभ संप्रदाय की विभिन्न पीठें अलग-अलग स्थानों पर स्थित हैं। श्रीनाथजी की मुख्य पीठ नाथद्वारा में है, जो पूरे भारत में प्रसिद्ध है। द्वारकाधीशजी का मंदिर राजसमंद जिले के कांकरोली में स्थित है। मथुरेशजी की पीठ शिक्षा और कला के केंद्र कोटा में स्थित है, जबकि मदन मोहनजी का मंदिर भरतपुर के कामां में स्थापित है। ये सभी स्थल पुष्टि मार्ग के अनुयायियों के लिए अत्यंत पवित्र हैं और धार्मिक पर्यटन के प्रमुख केंद्र हैं।

25. (3) गलताजी
जयपुर के निकट स्थित गलताजी को रामानंदी संप्रदाय की प्रधान पीठ माना जाता है। दक्षिण भारत के प्रसिद्ध तोताद्रि मठ के समान महत्व होने के कारण इसे 'उत्तर तोताद्रि' के नाम से संबोधित किया जाता है। यह स्थल अपने पवित्र कुंडों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए भी प्रसिद्ध है। यहाँ सदियों से रामानंदी संप्रदाय के विद्वान और तपस्वी निवास करते आए हैं। इस पीठ की स्थापना ने राजस्थान में राम भक्ति की धारा को अत्यधिक मजबूती प्रदान की है।

26. (1) कृष्णदास पयहारी
संत कृष्णदास पयहारी ने 16वीं शताब्दी में जयपुर के गलताजी में रामानंदी संप्रदाय की नींव रखी थी। उन्होंने एक प्रसिद्ध आध्यात्मिक शास्त्रार्थ में स्थानीय नाथ संप्रदाय के योगियों को पराजित किया था। उनकी इस विजय के पश्चात गलताजी रामानंदी मत का प्रमुख केंद्र बन गया। 'पयहारी' नाम उन्हें इसलिए दिया गया क्योंकि वे केवल दुग्ध आहार ग्रहण करते थे। उनकी तपस्या और विद्वत्ता ने तत्कालीन शासकों और जनता को अत्यधिक प्रभावित किया, जिससे संप्रदाय का विस्तार हुआ।

27. (4) रामानुजाचार्य
रामानंदी संप्रदाय का दार्शनिक आधार रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित 'विशिष्टाद्वैत' दर्शन पर आधारित है। रामानुजाचार्य ने भक्ति को मोक्ष का साधन माना और ईश्वर के सगुण रूप की व्याख्या की। बाद में स्वामी रामानंद ने इस परंपरा को उत्तर भारत में फैलाया और इसे अधिक सरल एवं समावेशी बनाया। यह दर्शन मानता है कि जगत और जीव ईश्वर के ही अंश हैं। राजस्थान में इस विचारधारा का गहरा प्रभाव धार्मिक और सामाजिक संरचना पर पड़ा है।

28. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
गलताजी को रामानंदी संप्रदाय के इतिहास में 'उत्तर तोताद्रि' के रूप में एक गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। दक्षिण भारत में स्थित तोताद्रि मठ रामानुज परंपरा का मूल केंद्र है। गलताजी ने उत्तर भारत में उसी परंपरा और विद्वत्ता को आगे बढ़ाया, जिससे इसे यह सम्मानजनक नाम मिला। यहाँ की गुरु परंपरा और आध्यात्मिक गतिविधियों ने इसे दक्षिण के मठ के समकक्ष बना दिया। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और एक-दूसरे की सही व्याख्या करते हैं।

29. (3) अग्रदास
रसिक संप्रदाय रामानंदी परंपरा की एक महत्वपूर्ण उप-शाखा है, जिसकी स्थापना संत अग्रदास ने सीकर जिले के रेवासा में की थी। इस संप्रदाय में भगवान राम और माता सीता की उपासना माधुर्य भाव से की जाती है, जहाँ उन्हें प्रेमी-प्रेमिका के रुप में देखा जाता है। यह दर्शन श्रृंगार रस और भक्ति का अनूठा संगम है। अग्रदास जी की रचनाओं ने इस नवीन भक्ति पद्धति को लोकप्रियता प्रदान की, जिससे यह क्षेत्र आध्यात्मिक साहित्य का प्रमुख केंद्र बन गया।

30. (4) मूर्ति पूजा और मंदिर निर्माण का पूर्ण त्याग।
रामानंदी संप्रदाय एक सगुण भक्ति संप्रदाय है, जो भगवान राम और सीता की मूर्ति पूजा एवं भव्य मंदिर निर्माण में पूर्ण विश्वास रखता है। यह संप्रदाय मूर्ति पूजा का त्याग नहीं करता है। इसके अन्य प्रमुख लक्षणों में सभी जातियों के शिष्यों का

जुड़े राजस्थान के विभिन्न मरुस्थलीय स्थलों को तीर्थ मानकर वहाँ अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं और पर्यावरण रक्षा का अटूट संकल्प लेते हैं।

72. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
विश्नोई संप्रदाय के पवित्र स्थानों का ऐतिहासिक महत्व अद्वितीय है। नागौर का पीपासर जाम्भोजी का जन्मस्थान है, जबकि समराथल धोरा वह स्थान है जहाँ उन्होंने वर्ष 1485 में इस संप्रदाय की स्थापना की थी। बीकानेर का मुकाम उनका समाधि स्थल है, जो श्रद्धा का केंद्र है। जोधपुर का खेजरली गाँव उस महान बलिदान का प्रतीक है, जहाँ अमृता देवी के नेतृत्व में 363 लोगों ने हरे वृक्षों को बचाने के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए थे।

73. (3) धौली दूब (अलवर)
संत लालदास का जन्म अलवर जिले के धौली दूब नामक गाँव में 1540 ईस्वी में हुआ था। वे मेव समुदाय से संबंधित थे और उन्होंने समाज में व्याप्त ऊँच-नीच के भेदभाव को समाप्त करने का सफल प्रयास किया। उनका जन्मस्थान आज भी एक महत्वपूर्ण धार्मिक स्थल के रूप में प्रतिष्ठित है। लालदास जी ने हिंदू और इस्लामी दोनों परंपराओं के सकारात्मक तत्वों को आत्मसात किया, जिससे उनके उपदेशों में सर्वधर्म सद्भाव की अनूठी झलक देखने को मिलती है।

74. (1) मेवात
लालदासी संप्रदाय के अनुयायी मुख्य रुप से राजस्थान के मेवात क्षेत्र में केंद्रित हैं, जिसमें अलवर और भरतपुर जिले सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और हिंदू-मुस्लिम सद्भाव के लिए जाना जाता है। संत लालदास की शिक्षाओं ने यहाँ के मेव समुदाय और अन्य जातियों को एकता के सूत्र में पिरोया। उनके सरल उपदेश और सामाजिक सुधार के संदेश आज भी मेवात की लोक संस्कृति, भजनों और दैनिक जीवन की परंपराओं में गहराई से रचे-बसे हैं।

75. (4) गद्दन चिश्ती
संत लालदास के आध्यात्मिक गुरु तिजारा के प्रसिद्ध सूफी संत गद्दन चिश्ती थे। उन्हीं के मार्गदर्शन में लालदास जी ने निर्गुण भक्ति और सूफी रहस्यवाद का ज्ञान प्राप्त किया। गुरु गद्दन चिश्ती की शिक्षाओं ने लालदास जी के विचारों में उदारता और सर्वधर्म समभाव का संचार किया। इसी आध्यात्मिक पृष्ठभूमि के कारण लालदास जी का संप्रदाय हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के बीच समान रुप से पूजनीय बना। यह मेवात में सांप्रदायिक एकता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

76. (2) शेरपुर
संत लालदास की प्रधान पीठ और उनकी समाधि अलवर जिले के शेरपुर नामक गाँव में स्थित है। लालदास जी ने अपना अंतिम समय इसी क्षेत्र में व्यतीत किया था। शेरपुर उनकी आध्यात्मिक गतिविधियों का मुख्य केंद्र रहा है, जहाँ आज भी बड़ी संख्या में श्रद्धालु दर्शन हेतु पहुँचते हैं। इस स्थान पर उनकी याद में मेले लगते हैं, जो सांप्रदायिक सद्भाव और आपसी भाईचारे का प्रतीक हैं। यहाँ की व्यवस्था संत लालदास के निर्गुण भक्ति संदेश को प्रतिबिंबित करती है।

77. (1) I, II, III और IV
लालदासी संप्रदाय के नियमों के अनुसार, संत लालदास ने श्रम आधारित जीवन को मोक्ष हेतु आवश्यक माना। उनके संप्रदाय में भिक्षा लेना पूर्णतः वर्जित है। अहंकार मिटाने के लिए दीक्षा के दौरान शिष्य का मुख काला कर गधे पर घुमाने की अनूठी रीति प्रचलित है। उनकी शिक्षाएं 'लालदास की चेतावनियाँ' में संकलित हैं। हालांकि, यह संप्रदाय हिंदू शब्दावलियों को अस्वीकार नहीं करता, बल्कि 'राम' नाम का जाप करता है। अतः केवल अंतिम कथन असत्य है।

78. (4) साधक के अहंकार और गर्व को पूर्णतः समाप्त करना।
लालदासी संप्रदाय में दीक्षा के समय शिष्य का मुख काला कर उसे गधे पर बिठाकर घुमाया जाता है। इस प्रतीकात्मक रीति का मुख्य उद्देश्य साधक के भीतर छिपे सामाजिक मान-सम्मान के झूठे अहंकार और गर्व को जड़ से समाप्त करना है। संत लालदास का मानना था कि जब तक मनुष्य स्वयं को तुच्छ नहीं मान लेता, तब तक वह सच्ची भक्ति का पात्र नहीं बन सकता। यह प्रथा आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए पूर्ण विनम्रता का एक अनूठा उदाहरण है।

79. (1) उनका संप्रदाय भगवान राम की मूर्ति पूजा में विश्वास करता है।
लालदासी संप्रदाय निर्गुण भक्ति धारा का अनुसरण करता है, जिसमें मूर्ति पूजा का कोई स्थान नहीं है। वे 'राम' को एक निराकार और सर्वव्यापी शक्ति के रुप में पूजते हैं। संत लालदास स्वयं लकड़ी काटकर अपना जीवन यापन करते थे और उन्होंने कभी भिक्षा नहीं मांगी। उन्होंने ऐतिहासिक घटनाओं के बारे में भविष्यवाणियाँ भी की थीं। अतः मूर्ति पूजा में विश्वास करने वाला कथन उनके संप्रदाय के मूल सिद्धांतों के पूर्णतः विपरीत और ऐतिहासिक रुप से गलत है।

80. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
राजस्थान के प्रमुख संतों का उनके कार्यक्षेत्रों के साथ मेल उनकी क्षेत्रीय लोकप्रियता को दर्शाता है। लालदासी संप्रदाय मुख्य रुप से मेवात क्षेत्र में सक्रिय रहा। जसनाथी संप्रदाय का उदय और प्रभाव बीकानेर के कतरियासर क्षेत्र में रहा। संत मावजी ने वागड़ क्षेत्र में सामाजिक सुधार और भक्ति का प्रचार किया। वहीं, रामस्नेही संप्रदाय की मुख्य शाखा भीलवाड़ा जिले के शाहपुरा में स्थित है। यह भौगोलिक वितरण राजस्थान की आध्यात्मिक विविधता का परिचायक है।

81. (2) बाड़मेर
लोक देवता बाबा रामदेवजी का जन्म बाड़मेर जिले के शिव तहसील के उण्डू काशमेर गाँव में हुआ था। वे तंवर वंशीय राजपूत थे। आज भी इस गाँव को उनके अनुयायियों द्वारा अत्यंत पवित्र माना जाता है। यद्यपि उनका मुख्य मंदिर जैसलमेर जिले के रुणिचा में स्थित है, परंतु उनके जन्मस्थान के रुप में उण्डू काशमेर का धार्मिक महत्व अतुलनीय है। यहाँ से

उनकी आध्यात्मिक यात्रा का प्रारंभ हुआ, जिसने आगे चलकर राजस्थान की लोक संस्कृति पर अमिट छाप छोड़ी।

82. (1) कामड़िया पंथ
बाबा रामदेवजी ने समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव और ऊँच-नीच को मिटाने के उद्देश्य से 'कामड़िया पंथ' की स्थापना की थी। इस पंथ के माध्यम से उन्होंने दलितों और शोषित वर्गों को मुख्यधारा में शामिल कर उन्हें सम्मानजनक आध्यात्मिक पहचान दी। कामड़िया पंथ के अनुयायी आज भी रामदेवजी की भक्ति में समर्पित हैं और 'तेरहताली' नृत्य के माध्यम से उनकी महिमा का गुणगान करते हैं। यह पंथ सामाजिक समरसता और मानवीय समानता का एक जीवंत प्रतीक है।

83. (3) रामदेवजी
'तेरहताली' नृत्य प्रसिद्ध लोक देवता बाबा रामदेवजी के मेले का सबसे मुख्य आकर्षण है। यह नृत्य कामड़ जाति की महिलाओं द्वारा बड़ी कुशलता और श्रद्धा के साथ किया जाता है। इसमें शरीर के विभिन्न अंगों पर तेरह मंजीरे बांधकर अद्भुत लय और ताल का प्रदर्शन किया जाता है। यह नृत्य न केवल कलात्मक अभिव्यक्ति है, बल्कि रामदेवजी के प्रति अटूट श्रद्धा का माध्यम भी है। रुणिचा मेले में इस नृत्य की प्रस्तुति सभी भक्तों को मंत्रमुग्ध कर देती है।

84. (4) मंदिर में फहराया जाने वाला पचरंगा ध्वज।
बाबा रामदेवजी के भक्तों के लिए 'नेजा' शब्द का विशेष महत्व है। यह रामदेवजी के मंदिरों पर फहराए जाने वाले पांच रंगों के पवित्र ध्वज को कहा जाता है। यह ध्वज उनकी विजय, धर्म और सामाजिक सद्भाव का प्रतीक माना जाता है। श्रद्धालु बड़ी आस्था के साथ अपने घरों और मंदिरों में नेजा फहराते हैं। रुणिचा की पदयात्रा के दौरान यात्री हाथों में नेजा लेकर जयकारे लगाते हैं, जो संपूर्ण वातावरण को भक्तिमय और ऊर्जावान बना देता है।

85. (4) I, II और III
बाबा रामदेवजी राजस्थान के एक अद्वितीय लोक देवता हैं जिन्हें हिंदू 'कृष्ण का अवतार' मानते हैं और मुस्लिम उन्हें 'रामशाह पीर' के रूप में पूजते हैं। वे केवल योद्धा ही नहीं, बल्कि एक सिद्ध कवि भी थे, जिन्होंने 'चौबीस बाणियाँ' नामक ग्रंथ की रचना की। इस ग्रंथ में उनके आध्यात्मिक उपदेश और सामाजिक सुधार के विचार संकलित हैं। उनकी पूजा हिंदू-मुस्लिम एकता का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है, जो उन्हें अन्य लोक देवताओं से विशिष्ट श्रेणी में रखती है।

86. (2) रिखिया
बाबा रामदेवजी के भक्तों में मेघवाल समुदाय के लोगों का विशेष स्थान है, जिन्हें श्रद्धापूर्वक 'रिखिया' कहा जाता है। ये भक्त रामदेवजी की कथाओं और भजनों के मुख्य संरक्षक माने जाते हैं। रिखिया समुदाय के लोग रात्रि जागरण के दौरान बाबा के गीतों का गायन करते हैं और उनकी शिक्षाओं का प्रचार करते हैं। रामदेवजी ने स्वयं को वंचितों के रक्षक के रूप में प्रतिष्ठित किया था, इसलिए रिखिया भक्तों की श्रद्धा उनके प्रति अत्यंत गहरी और निस्वार्थ है।

87. (4) उन्होंने अस्पृश्यता और जातिगत भेदभाव के विरुद्ध अभियान चलाया।
बाबा रामदेवजी का सबसे बड़ा सामाजिक योगदान समाज के शोषित और उपेक्षित वर्गों को मुख्यधारा में जोड़ना था। उन्होंने तत्कालीन समाज में व्याप्त अस्पृश्यता की कुरीति के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया और सभी जातियों के लिए भक्ति के द्वार खोले। उन्होंने 'कामड़िया पंथ' के माध्यम से वंचितों को संगठित किया और उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने की प्रेरणा दी। उनका संदेश था कि ईश्वर की दृष्टि में सभी मनुष्य समान हैं, जिससे राजस्थान में एक सामाजिक क्रांति का सूत्रपात हुआ।

88. (3) A सही है लेकिन R गलत है।
रुणिचा में बाबा रामदेवजी का मंदिर सांप्रदायिक सद्भाव का अद्भुत संगम है, जहाँ हिंदू और मुस्लिम दोनों पूरी श्रद्धा के साथ आते हैं। यह सत्य है कि मक्का से पांच पीर उनकी परीक्षा लेने आए थे, परंतु रामदेवजी ने उन्हें पराजित कर धर्म परिवर्तन नहीं कराया, बल्कि अपनी आध्यात्मिक शक्तियों से उन्हें प्रभावित किया था। उन पीरों ने स्वयं स्वीकार किया कि रामदेवजी 'पीरों के पीर' हैं। अतः कारण वाला कथन ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार पूर्णतः गलत है।

89. (3) पाबूजी
लोक देवता पाबूजी को राजस्थान में 'ऊंटों के देवता' के रूप में विशेष मान्यता प्राप्त है। लोक कथाओं के अनुसार, मारवाड़ में ऊंट लाने का श्रेय पाबूजी को ही दिया जाता है। रेबारी समुदाय, जो ऊंट पालक जाति है, उन्हें अपना मुख्य आराध्य देव मानती है। जब भी ऊंट बीमार होते हैं, तो पाबूजी के नाम की ताँती बांधी जाती है और उनकी 'फड़' का वाचन किया जाता है। वे गौ-रक्षक और शरणागत के रक्षक के रूप में भी अत्यंत पूजनीय हैं।

90. (1) महमूद गजनवी
लोक देवता गोगाजी ने आक्रमणकारी महमूद गजनवी के विरुद्ध भीषण युद्ध लड़ा था। उन्होंने गायों की रक्षा और अपनी मातृभूमि के सम्मान हेतु अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी। गोगाजी की वीरता से प्रभावित होकर गजनवी ने उन्हें 'जाहर पीर' (साक्षात देवता) की उपाधि दी थी। आज भी उन्हें सर्पों के देवता और गौ-रक्षक के रूप में पूजा जाता है। उनका मंदिर सांप्रदायिक एकता का केंद्र है, जहाँ हिंदू और मुस्लिम दोनों ही समान रूप से अपनी श्रद्धा अर्पित करते हैं।

91. (2) I, II, III
गोगाजी से संबंधित पवित्र स्थलों का क्रम उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं से जुड़ा है। हनुमानगढ़ जिले का गोगामेड़ी उनका मुख्य समाधि स्थल है, जहाँ विशाल मेला लगता है। चूरू जिले का ददरेवा उनका जन्मस्थान है, जिसे 'शीर्ष मेड़ी' भी कहा जाता है क्योंकि युद्ध के दौरान उनका सिर यहीं गिरा था। सांचौर स्थित 'गोगाजी की ओलड़ी' भी एक प्रमुख श्रद्धा स्थल

है। ये तीनों स्थान गोगाजी की वीरता और आध्यात्मिक प्रभाव की गौरवगाथा को राजस्थान में जीवंत रखते हैं।

92. (2) सुरसुरा
लोक देवता तेजाजी की मृत्यु अजमेर जिले के सुरसुरा नामक स्थान पर हुई थी। कथा के अनुसार, लाछा गुजरी की गायों को छुड़ाने के दौरान उन्होंने एक नाग को वचन दिया था। युद्ध में अत्यधिक घायल होने के बावजूद वे अपना वचन निभाने हेतु नाग के पास पहुँचे और अपनी जीभ पर सर्पदंश स्वीकार किया। सुरसुरा वह पवित्र स्थल है जहाँ उन्होंने अपनी देह त्याग दी थी। यहाँ उनका एक भव्य मंदिर बना हुआ है, जहाँ भक्त उनकी सत्यनिष्ठा और बलिदान को नमन करते हैं।

93. (2) केवल IV
मारवाड़ की लोक संस्कृति में 'पंच पीर' अत्यंत प्रतिष्ठित हैं, जिनमें पाबूजी, रामदेवजी, गोगाजी, हड़बूजी और मेहाजी मांगलिया सम्मिलित हैं। तेजाजी एक अत्यंत लोकप्रिय लोक देवता हैं, परंतु वे मारवाड़ के पारंपरिक पंच पीरों की सूची में शामिल नहीं हैं। पाबूजी को लक्ष्मण का अवतार माना जाता है और हड़बूजी राव जोधा के सहायक थे। अतः केवल चौथा कथन गलत है क्योंकि वह ऐतिहासिक वर्गीकरण के अनुरुप नहीं है। तेजाजी को पृथक रूप से उच्च सम्मान प्राप्त है।

94. (4) कृषक
तेजाजी को विशेष रूप से राजस्थान के कृषक समुदाय, विशेषकर जाटों का आराध्य देव माना जाता है। किसान कृषि का कार्य प्रारंभ करने से पूर्व तेजाजी की स्तुति में 'तेजा टेर' नामक लोक गीत गाते हैं, ताकि उनकी फसल अच्छी हो और उन्हें कृषि कार्यों के दौरान सर्पदंश का भय न रहे। तेजाजी को 'काला और बाला' का देवता भी कहा जाता है। ग्रामीण क्षेत्रों में तेजाजी के चबूतरे प्रत्येक गाँव में मिलते हैं, जो कृषि संस्कृति के साथ उनके गहरे संबंध को दर्शाते हैं।

95. (1) देवनारायणजी
राजस्थान के 'पंच पीरों' में पाबूजी, गोगाजी, रामदेवजी, हड़बूजी और मेहाजी मांगलिया का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। देवनारायणजी गुर्जर समुदाय के अत्यंत प्रभावशाली और आराध्य लोक देवता हैं और उन्हें भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है, परंतु वे पारंपरिक रूप से 'पंच पीरों' के समूह में शामिल नहीं किए जाते हैं। देवनारायणजी की फड़ और उनकी आयुर्वेदिक पद्धतियों का अपना विशिष्ट धार्मिक महत्व है। अतः पंच पीरों की श्रेणी में उनका नाम सम्मिलित नहीं है।

96. (1) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
राजस्थान के लोक देवताओं और उनके प्रसिद्ध वाहनों का गहरा प्रतीकात्मक महत्व है। पाबूजी की घोड़ी का नाम 'केसर कालमी' था, जो उनकी वीरता की कहानियों का हिस्सा है। देवनारायणजी का घोड़ा 'लीलागर' के नाम से जाना जाता है। गोगाजी की सवारी 'नीली घोड़ी' है, जिसे गोगा बप्पा की घोड़ी भी कहते हैं। तेजाजी की प्रिय घोड़ी का नाम 'लीलण' था, जिसने उनकी मृत्यु की सूचना उनके परिवार तक पहुँचाई थी। ये वाहन लोक गाथाओं में देवताओं के समान ही पूजनीय हैं।

97. (2) देशनोक
करणी माता का प्रसिद्ध और ऐतिहासिक मंदिर बीकानेर जिले के देशनोक नामक स्थान पर स्थित है। यह मंदिर पूरे विश्व में 'चूहों के मंदिर' के रूप में विख्यात है, क्योंकि यहाँ हजारों की संख्या में चूहे निर्भय होकर मंदिर परिसर में घूमते हैं। श्रद्धालु इन चूहों को माता का रूप मानकर उन्हें दुग्ध और अन्य खाद्य पदार्थ अर्पित करते हैं। यह स्थल बीकानेर के शासकों और भक्तों के लिए आस्था का सबसे बड़ा केंद्र है, जहाँ करणी माता की साक्षात उपस्थिति मानी जाती है।

98. (1) काबा
देशनोक स्थित करणी माता के मंदिर में रहने वाले हज़ारों चूहों को स्थानीय भाषा और परंपरा में 'काबा' कहा जाता है। भक्तों की ऐसी मान्यता है कि ये काबा माता के वंशज और सेवक हैं। मंदिर में सफेद काबा देखना अत्यंत शुभ माना जाता है और ऐसा माना जाता है कि सफेद काबा के दर्शन साक्षात करणी माता के दर्शन के समान हैं। इन जीवों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाया जाता और इनकी पवित्रता का मंदिर परिसर में विशेष ध्यान रखा जाता है।

99. (3) बीकानेर के राठौड़
करणी माता को बीकानेर के राठौड़ राजवंश की कुलदेवी के रुप में पूजा जाता है। ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार, बीकानेर के संस्थापक राव बीका ने करणी माता के आशीर्वाद से ही अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना की थी। राजवंश के प्रत्येक महत्वपूर्ण कार्य और विजय के पीछे माता की कृपा मानी जाती है। आज भी बीकानेर राजपरिवार के सदस्य किसी भी मांगलिक कार्य से पूर्व देशनोक जाकर माता का आशीर्वाद लेते हैं। यह अटूट श्रद्धा सदियों से राजवंश और प्रजा के बीच समान है।

100. (4) रिद्धि बाई
करणी माता का जन्म चारण परिवार में हुआ था और उनके बचपन का नाम 'रिद्धि बाई' था। वे बचपन से ही दिव्य शक्तियों से संपन्न मानी जाती थीं और उन्होंने कई जनकल्याणकारी कार्य किए, जिसके कारण उन्हें 'करणी' नाम से पुकारा जाने लगा। उनका जीवन लोक कल्याण, नारी शक्ति और धर्म की रक्षा के प्रति समर्पित रहा। उन्होंने समाज में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई और आगे चलकर वे राजस्थान की सबसे प्रभावशाली और पूजनीय लोक देवी के रूप में प्रतिष्ठित हुईं।

101. (2) केवल V
करणी माता के बारे में सत्य है कि उन्होंने मेहरानगढ़ की नींव रखी, वे चारण थीं और महाराजा गंगा सिंह ने मंदिर के चांदी के द्वार बनवाए थे। लोक कथाओं के अनुसार वे दीर्घायु थीं। हालांकि, यह कहना कि वे 'नर बलि' की समर्थक थीं, पूर्णतः असत्य और निराधार है। करणी माता अहिंसा, जीव दया और करुणा की प्रतिमूर्ति मानी जाती हैं, विशेषकर चूहों के प्रति उनकी ममता जगप्रसिद्ध है। अतः केवल पांचवां कथन उनके सिद्धांतों के विरुद्ध है।

102. (2) ओरण
करणी माता मंदिर के चारों ओर फैला हुआ वह प्राकृतिक क्षेत्र जहाँ वृक्षों को काटना और पर्यावरण को नुकसान पहुँचाना धार्मिक रूप से वर्जित है, 'ओरण' कहलाता है। यह ओरण प्राचीन काल से ही जैव विविधता के संरक्षण का एक प्रभावी स्थानीय तरीका रहा है। भक्त ओरण की भूमि को अत्यंत पवित्र मानते हैं और इसकी रक्षा करना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते हैं। यह परंपरा न केवल धार्मिक आस्था को दर्शाती है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति राजस्थान की चेतना का भी प्रतीक है।

103. (4) गर्भगृह में एक पवित्र गुफा स्थित है।
देशनोक के करणी माता मंदिर की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसके मुख्य गर्भगृह के भीतर एक अत्यंत प्राचीन और पवित्र गुफा स्थित है। माना जाता है कि माता इसी एकांत स्थान पर अपनी साधना और ध्यान किया करती थीं। मंदिर की वास्तुकला में आधुनिक समय के साथ परिवर्तन हुए हैं, परंतु यह गुफा अपने मूल और आध्यात्मिक स्वरुप को बनाए हुए है। श्रद्धालु इस गुफा के समीप जाकर अत्यंत शांति का अनुभव करते हैं, जो मंदिर के मुख्य आकर्षणों में से एक है।

104. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
राजस्थान की प्रमुख कुलदेवियों का विभिन्न राजपूत राजवंशों के साथ संबंध उनकी ऐतिहासिक पहचान का आधार है। करणी माता बीकानेर के राठौड़ वंश की कुलदेवी हैं। जमवाय माता जयपुर के कच्छवाहा राजवंश की संरक्षिका मानी जाती हैं। बाण माता का मेवाड़ के सिसोदिया राजपरिवार में अत्यंत सम्मान है और उन्हें कुलदेवी के रूप में पूजा जाता है। जीण माता अजमेर और सीकर क्षेत्र के चौहानों की कुलदेवी हैं। यह मेल राजस्थान के गौरवशाली राजवंशों की धार्मिक आस्था को दर्शाता है।

105. (3) सीकर
जीण माता का ऐतिहासिक और अत्यंत प्राचीन मंदिर सीकर जिले के रेवासा गाँव के समीप हर्ष की पहाड़ियों की तलहटी में स्थित है। यह मंदिर अपनी अद्वितीय वास्तुकला और शांत प्राकृतिक वातावरण के लिए प्रसिद्ध है। सीकर जिले का यह क्षेत्र जीण माता की भक्ति का मुख्य केंद्र है, जहाँ प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में श्रद्धालु अपनी मनोकामनाएँ लेकर आते हैं। मंदिर की अवस्थिति और यहाँ का आध्यात्मिक परिवेश इसे राजस्थान के प्रमुख शक्तिपीठों में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है।

106. (1) चौहान
जीण माता को मुख्य रूप से चौहान राजवंश की कुलदेवी के रूप में पूजा जाता है। विशेष रूप से सांभर और अजमेर के चौहान शासकों की उन पर अटूट श्रद्धा रही है। लोक कथाओं के अनुसार, जीण माता ने चौहानों के संकट काल में कई बार उनकी सहायता की थी। चौहानों के अतिरिक्त, शेखावाटी क्षेत्र के लोग और अन्य हिंदू समुदाय भी उन्हें अपनी इष्ट देवी मानकर उनकी आराधना करते हैं। उनकी शक्ति और ममता की कहानियाँ पूरे राजस्थान के लोक साहित्य में लोकप्रिय हैं।

107. (4) हर्ष
लोक मान्यताओं के अनुसार, जीण माता के सगे भाई का नाम 'हर्ष' था। हर्ष की पहाड़ी पर स्थित हर्ष भैरव का मंदिर जीण माता मंदिर के समीप ही है। कहा जाता है कि भाई-बहन के बीच हुए एक भावुक विवाद के कारण दोनों ने वैराग्य धारण कर लिया और अलग-अलग पहाड़ियों पर तपस्या की। आज भी श्रद्धालु जीण माता के दर्शन के साथ हर्ष भैरव के मंदिर में भी दर्शन करना आवश्यक मानते हैं। यह भाई-बहन का अटूट संबंध और उनका त्याग इस क्षेत्र की लोकगाथाओं का आधार है।

108. (2) यह राजस्थान के लोक साहित्य में सबसे लंबा गीत है।
जीण माता की स्तुति में गाए जाने वाले भक्ति गीत, जिन्हें 'चिरजा' कहा जाता है, राजस्थान के लोक साहित्य में अपनी लंबाई के लिए विशेष रूप से जाने जाते हैं। इन्हें राजस्थानी लोक परंपरा का सबसे लंबा गीत माना जाता है, जिन्हें कनफटे जोगी और अन्य भक्त बड़ी तन्मयता के साथ गाते हैं। इन गीतों में माता की महिमा, उनके चमत्कार और उनके जीवन की कथाओं का विस्तृत वर्णन मिलता है। यह गायन शैली इस क्षेत्र की अमूल्य सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

109. (4) I, II और III
जीण माता मंदिर में वर्ष के दोनों नवरात्रों में भव्य मेले लगते हैं, जो भक्तों की अपार श्रद्धा का केंद्र हैं। ऐतिहासिक रूप से यहाँ मदिरा अर्पण और बलि की परंपरा रही है, जो अब समय के साथ परिवर्तित हो गई है। यह भी प्रसिद्ध है कि मुगल शासक औरंगजेब ने मंदिर पर आक्रमण किया था, जिसे माता ने मधुमक्खियों के दल के माध्यम से विफल कर दिया था। ये सभी तथ्य मंदिर के धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व की पुष्टि करते हैं, जिससे इसकी महत्ता और अधिक बढ़ जाती है।

110. (4) जीण माता मंदिर, सीकर
'भंवरमाता' या मधुमक्खियों की देवी की प्रसिद्ध लोककथा सीकर के जीण माता मंदिर से गहराई से जुड़ी हुई है। जनश्रुति के अनुसार, जब औरंगजेब की सेना मंदिर को क्षति पहुँचाने आई, तब अचानक लाखों की संख्या में मधुमक्खियों ने उन पर आक्रमण कर दिया। इस चमत्कार को देखकर औरंगजेब भयभीत हो गया और उसने माता के चरणों में समर्पण कर दिया। तब से जीण माता को भंवरमाता के रूप में भी पूजा जाता है और दिल्ली से अखंड ज्योति हेतु तेल भेजने की परंपरा प्रारंभ हुई।

111. (1) जीण माता की पूजा मुख्य रूप से जैन समुदाय द्वारा की जाती है।
जीण माता मुख्य रूप से चौहान राजपूतों और शेखावाटी के मीणा समुदाय की प्रमुख लोक देवी हैं, उनका जैन समुदाय से कोई प्राथमिक संबंध नहीं है। मंदिर में देवी की अष्टभुजी प्रतिमा है और वहाँ सदियों से अखंड ज्योति प्रज्वलित रहती है। ऐतिहासिक रूप से मुगल शासकों द्वारा भी इस ज्योति हेतु तेल की व्यवस्था की जाती थी। अतः जैन समुदाय वाली बात पूर्णतः गलत है, जबकि शेष सभी विवरण माता के मंदिर और उनकी पूजा पद्धति के बारे में सत्य और प्रामाणिक हैं।

112. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
जीण माता का मंदिर स्थापत्य की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है और इसमें विभिन्न कालखंडों की शैलियों का मिश्रण देखा जा सकता है। मंदिर के शिलालेख इस बात की पुष्टि करते हैं कि 11वीं और 12वीं शताब्दी के दौरान स्थानीय शासकों, विशेषकर चौहान वंश के राजाओं ने इसका जीर्णोद्धार और विस्तार करवाया था। इन निर्माण कार्यों ने मंदिर को उसका वर्तमान भव्य स्वरूप प्रदान किया। अतः कथन और कारण दोनों ऐतिहासिक रूप से सत्य हैं और एक-दूसरे के परिपूरक हैं।

113. (2) जैन धर्म
सिरोही जिले के माउंट आबू में स्थित दिलवाड़ा मंदिर समूह अपनी अद्भुत नक्काशी और स्थापत्य कला के लिए विश्व प्रसिद्ध है। ये मंदिर मुख्य रूप से जैन धर्म के विभिन्न तीर्थंकरों को समर्पित हैं। संगमरमर के पत्थरों पर की गई यहाँ की सूक्ष्म नक्काशी अत्यंत उच्च कोटि की है। ये मंदिर मध्यकालीन भारतीय वास्तुकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं और पूरी दुनिया से पर्यटकों और श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, जो इसे जैन धर्म का एक महान केंद्र बनाता है।

114. (1) आदिनाथ (ऋषभदेव)
पाली जिले में स्थित रणकपुर का भव्य चौमुखा मंदिर जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान आदिनाथ को समर्पित है। 'चौमुखा' का अर्थ है जिसके चारों ओर मुख हों, जिससे मंदिर के चारों दिशाओं से भगवान के दर्शन संभव होते हैं। यह मंदिर अपने 1444 नक्काशीदार खंभों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें से प्रत्येक की शिल्पकारी अलग है। यह मंदिर न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि मध्यकालीन भारत की वास्तुकला और अभियांत्रिकी का एक बेजोड़ नमूना भी माना जाता है।

115. (1) विमल वसही (दिलवाड़ा) - लूण वसही (दिलवाड़ा) - रणकपुर चौमुखा
राजस्थान के जैन मंदिरों के निर्माण का कालक्रम उनके ऐतिहासिक विकास को दर्शाता है। माउंट आबू का विमल वसही मंदिर सबसे प्राचीन है, जिसका निर्माण 11वीं शताब्दी (1031 ईस्वी) में हुआ था। इसके पश्चात 13वीं शताब्दी (1230 ईस्वी) में लूण वसही मंदिर का निर्माण तेजपाल और वस्तुपाल द्वारा करवाया गया। अंत में, 15वीं शताब्दी में महाराणा कुंभा के शासनकाल के दौरान रणकपुर के भव्य चौमुखा मंदिर का निर्माण हुआ। यह क्रम राजस्थान में जैन वास्तुकला के क्रमिक उत्कर्ष को स्पष्ट करता है।

116. (4) नाकोड़ा भैरव
बाड़मेर जिले में स्थित नाकोड़ा जैन तीर्थ मुख्य रूप से भगवान पार्श्वनाथ को समर्पित है, परंतु यहाँ 'नाकोड़ा भैरव' की मूर्ति विशेष रूप से पूजनीय है। ऐसी मान्यता है कि नाकोड़ा भैरव इस पवित्र तीर्थ के रक्षक हैं और यहाँ आने वाले भक्तों की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। जैन धर्म के अनुयायियों के साथ-साथ अन्य समुदायों के लोग भी भैरव जी के दर्शन हेतु बड़ी संख्या में यहाँ आते हैं। इस मंदिर की आध्यात्मिक ऊर्जा इसे मारवाड़ क्षेत्र का एक प्रमुख तीर्थ स्थल बनाती है।

117. (1) I, II और III
माउंट आबू के विमल वसही मंदिर का निर्माण विमल शाह ने करवाया था और लूण वसही मंदिर तीर्थंकर नेमिनाथ को समर्पित है। इन मंदिरों की छतों और खंभों पर संगमरमर की अत्यंत बारीक और सुंदर नक्काशी की गई है। हालांकि, यह कथन गलत है कि ये मंदिर लाल बलुआ पत्थर से बने हैं; वास्तव में ये संपूर्ण रूप से सफेद संगमरमर से निर्मित हैं, जो इनकी सुंदरता को अद्वितीय बनाता है। अतः केवल तीसरा कथन गलत है और शेष सभी ऐतिहासिक विवरण सही हैं।

118. (2) तेजपाल और वस्तुपाल
दिलवाड़ा के लूण वसही मंदिर का निर्माण 1230 ईस्वी में पोरवाल जैन भाई तेजपाल और वस्तुपाल द्वारा करवाया गया था। ये दोनों सोलंकी राजा वीरधवल के मंत्री थे। इस मंदिर को भगवान नेमिनाथ की स्मृति में बनाया गया था और इसे अपनी बेजोड़ सूक्ष्म नक्काशी के कारण 'देवरानी-जेठानी के आले' के लिए भी जाना जाता है। इस मंदिर का निर्माण कौशल इतना उच्च स्तर का है कि इसकी तुलना विश्व के सर्वश्रेष्ठ स्मारकों से की जा सकती है, जो जैन समाज के कलात्मक योगदान को दर्शाता है।

119. (2) केवल V
रणकपुर जैन मंदिर का निर्माण महाराणा कुंभा के संरक्षण में हुआ था और इसके प्रमुख वास्तुकार देपाक थे। यह मंदिर मघई नदी के तट पर स्थित है और अपनी विशिष्ट 'चौमुखा' शैली के लिए प्रसिद्ध है। हालांकि, यह कहना गलत है कि इसका निर्माण केवल राजकीय कोष से हुआ था। वास्तव में, इसका मुख्य वित्तपोषण धरणाक शाह नामक एक समृद्ध जैन व्यापारी द्वारा किया गया था। अतः केवल पांचवां कथन ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत है, जबकि अन्य सभी जानकारियाँ पूर्णतः सही हैं।

120. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान के प्रसिद्ध जैन मंदिरों और उनके निर्माताओं का सुमेल उनके ऐतिहासिक संदर्भ को स्पष्ट करता है। माउंट आबू का विमल वसही मंदिर विमल शाह द्वारा निर्मित है। लूण वसही मंदिर का श्रेय मंत्री तेजपाल और वस्तुपाल को जाता है। रणकपुर का भव्य चौमुखा मंदिर व्यापारी धरणाक शाह के प्रयासों का परिणाम है। नाकोड़ा पार्श्वनाथ मंदिर के संरक्षण में ऐतिहासिक भूमिका महत्वपूर्ण रही है। ये मंदिर राजस्थान के वैभवशाली इतिहास और जैन समुदाय के कलात्मक योगदान के उत्कृष्ट प्रमाण हैं।

अध्याय 16
सामाजिक जीवन : मेले, त्योहार, रीति-रिवाज एवं वेशभूषा

1. राजस्थान का प्रसिद्ध पुष्कर मेला हिंदू पंचांग के किस माह में आयोजित किया जाता है?
(1) चैत्र
(2) कार्तिक
(3) फाल्गुन
(4) श्रावण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

2. पुष्कर मेले में तीर्थयात्रियों के अत्यधिक जनसमूह के आगमन का प्रमुख भौगोलिक एवं धार्मिक कारण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) पूर्णिमा के अवसर पर पवित्र पुष्कर झील में अनुष्ठानिक स्नान
(2) राजस्थान के निकट स्थित विशिष्ट सूर्य मंदिर के दर्शन करना
(3) मरुस्थलीय क्षेत्र के पारंपरिक शस्य उत्सवों में सहभागिता
(4) विभिन्न स्थानीय खानाबदोश जनजातीय समूहों के ऋतु प्रवास का अवलोकन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

3. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राजस्थान के मेले)
A. पुष्कर मेला
B. बेणेश्वर मेला
C. तीज उत्सव
D. गणगौर
सूची II: (संबद्ध हिंदू माह)
i. माघ
ii. चैत्र
iii. श्रावण
iv. कार्तिक
(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

4. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता पुष्कर मेले से संबंधित नहीं है?
(1) प्राचीन दीपदान परंपरा का निर्वहन
(2) गोवंश और ऊंट जैसे पशुओं का व्यावसायिक व्यापार
(3) विश्व प्रसिद्ध ब्रह्मा मंदिर में उपासना
(4) खंडित शिवलिंग हेतु किए जाने वाले पूजा अनुष्ठान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

5. पुष्कर मेले के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह ऊंटों और घोड़ों के व्यापार के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है।
II. इसमें मटका फोड़ और मूंछ प्रतियोगिताओं जैसे ग्रामीण खेल आयोजित होते हैं।
III. यह लूनी नदी के तट पर आयोजित होता है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: पुष्कर मेला विशेष रुप से एक धार्मिक तीर्थयात्रा के रुप में आयोजित होता है जिसमें कोई आर्थिक गतिविधियाँ नहीं होती हैं।
कथन II: यह मेला स्थानीय शिल्पकारों को पारंपरिक राजस्थानी हस्तशिल्प विक्रय हेतु एक प्रमुख मंच प्रदान करता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

7. मुख्य रुप से जनजातीय समागम के आधार पर निम्नलिखित मेलों में से भिन्न को पहचानिए:
(1) पुष्कर मेला
(2) नागौर मेला
(3) कोलायत मेला
(4) बेणेश्वर मेला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

8. राजस्थान में दीपदान की परंपरा मुख्य रूप से झीलों के निम्नलिखित में से किस युग्म से जुड़ी है?
(1) पुष्कर और कोलायत
(2) पिछोला और फतेह सागर
(3) नक्की और आना सागर
(4) सांभर और डीडवाना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

9. नागौर का रामदेव पशु मेला मुख्य रूप से किस पशु नस्ल के व्यापार के लिए प्रसिद्ध है?
(1) मुर्रा भैंस
(2) सोनाड़ी भेड़
(3) नागौरी बैल
(4) मालवी गाय
(5) प्रश्न अनुत्तरित

10. नागौर में आयोजित होने वाले मेलों के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(1) धार्मिक सभाओं के कारण सभी पशु व्यापारिक गतिविधियों का पूर्ण निषेध
(2) परबतसर क्षेत्र में वीर तेजाजी पशु मेले का आयोजन
(3) मानासर स्थान पर रामदेव पशु मेले का आयोजन
(4) मेड़ता सिटी के समीप बलदेव पशु मेले का आयोजन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): नागौर पशु मेला मारवाड़ क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
कारण (R): यह उच्च गुणवत्ता वाले भारवाही पशुओं, ऊंटों और स्थानीय कृषि उत्पादों के वृहद् स्तर पर व्यावसायिक विनिमय की सुविधा प्रदान करता है।
सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

12. पारंपरिक राजस्थानी समाज में नागौर जैसे पशु मेलों के आर्थिक महत्व का सर्वोत्तम वर्णन है:
(1) अंतरराष्ट्रीय व्यापार बाजारों में डेयरी उत्पादों के निर्यात का प्राथमिक माध्यम
(2) कृषि कार्य हेतु भारवाही पशुओं के क्रय-विक्रय के लिए एक संगठित बाजार
(3) पशुधन चारे के वितरण हेतु सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम
(4) वन्यजीव संरक्षण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक सांस्कृतिक सभा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

13. नागौर के पशु मेलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. मेलों का आयोजन पशुपालन विभाग, राजस्थान द्वारा किया जाता है।
II. सूफी संत हमीदुद्दीन नागौरी का उर्स इस क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का अंग है।
III. यहाँ व्यापार किए जाने वाले नागौरी पशु अपनी उच्च दुग्ध क्षमता के लिए प्रसिद्ध हैं।
IV. मिर्ची बाजार नागौर मेले का एक प्रमुख आकर्षण है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और IV
(3) केवल III
(4) I, II, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

14. मेले और उसकी संबद्ध विशेषता का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) कोलायत मेला - ब्रह्मा की पूजा
(2) नागौर मेला - गोगाजी से संबंध
(3) बेणेश्वर मेला - रामदेवजी की पूजा
(4) तिलवाड़ा मेला - मल्लीनाथजी से संबंध
(5) प्रश्न अनुत्तरित

15. नागौर का ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिदृश्य किस प्रमुख सूफी संत के उर्स द्वारा भी रेखांकित होता है?
(1) ख्वाजा हमीदुद्दीन नागौरी
(2) ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती
(3) बाबा फरीद
(4) निजामुद्दीन औलिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

16. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राजस्थान के मेले)
A. तिलवाड़ा मेला
B. कोलायत मेला
C. बेणेश्वर मेला
D. पुष्कर मेला
सूची II: (भौगोलिक विशेषता/स्थान)
i. सोम, माही और जाखम का संगम
ii. लूनी नदी का तट
iii. बीकानेर मरुस्थल में एक प्राकृतिक जलाशय के समीप
iv. पहाड़ियों से घिरी एक पवित्र झील (अजमेर) के समीप
(1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

17. तिलवाड़ा का मल्लीनाथ पशु मेला मुख्य रूप से किन पशु नस्लों के व्यापार हेतु जाना जाता है?
(1) राठी और गिर पशु नस्लें
(2) थारपारकर और कांकरेज नस्लें
(3) मालवी और हरियाणवी नस्लें
(4) मेवाती और सांचोरी स्थानीय नस्लें
(5) प्रश्न अनुत्तरित

18. कोलायत मेला भारतीय दर्शन के किस प्रमुख व्यक्तित्व से घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है?
(1) कपिल मुनि
(2) शंकराचार्य
(3) रामानुज
(4) वल्लभाचार्य
(5) प्रश्न अनुत्तरित

19. कोलायत और तिलवाड़ा मेलों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. कोलायत मेला महर्षि कपिल मुनि को समर्पित है।
II. तिलवाड़ा मेला स्थानीय लोक देवता मल्लीनाथजी की स्मृति में आयोजित होता है।
III. तिलवाड़ा मेला बाड़मेर जिले में आयोजित किया जाता है।
IV. दीपदान कोलायत मेले का एक प्रमुख धार्मिक अनुष्ठान है।
V. चारण समुदाय के लोग सामान्यतः कोलायत झील में स्नान करना वर्जित मानते हैं।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) I, II, III, IV और V
(4) केवल I, III और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

20. राजस्थान का कौन सा समुदाय ऐतिहासिक और पौराणिक कारणों से कोलायत झील में पवित्र स्नान करने से बचता है?
(1) बिश्नोई
(2) जाट
(3) राजपुरोहित
(4) चारण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

21. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: बेणेश्वर मेले को 'आदिवासियों का कुंभ' कहा जाता है।
कथन II: इसमें मुख्य रूप से सहरिया जनजाति का जनसमूह सम्मिलित होता है जो बारां से डूंगरपुर की यात्रा करते हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

22. अपने वार्षिक मेले के दौरान बेणेश्वर मंदिर में अद्वितीय धार्मिक आस्था का मुख्य कारण क्या है?
(1) पाताल से पवित्र अग्नि का स्वतः प्रकटीकरण
(2) खंडित शिवलिंग की विधि-विधान से पूजा
(3) वह स्थान जहाँ महाराणा प्रताप का राज्याभिषेक हुआ था
(4) वह स्थल जिसे भगवान कृष्ण का जन्म स्थान माना जाता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

23. बेणेश्वर मेले को निम्नलिखित में से किसके सांस्कृतिक प्रकटीकरण के रूप में वर्णित करना सर्वाधिक उपयुक्त है?
(1) मेवाड़ के राजपूत वंशों की युद्ध संहिताओं का संरक्षण
(2) राज्य सरकार द्वारा सुलभ कराए गए कृषि सुधार
(3) दक्षिणी राजस्थान में शास्त्रीय संगीत रूपों का पुनरुद्धार
(4) भील समुदाय की धार्मिक परंपराएं और सामाजिक पहचान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

24. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (बेणेश्वर से संबंधित नदियाँ)
A. माही
B. सोम
C. जाखम
D. लूनी
सूची II: (विशेषताएं)
i. छोटी सादड़ी की पहाड़ियों से उद्गम
ii. बीछामेड़ा की पहाड़ियों से उद्गम
iii. थार मरुस्थल के मध्य प्रवाहित
iv. कर्क रेखा को दो बार पार करने वाली नदी
(1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(2) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

25. बेणेश्वर मेले के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. यह माघ माह की पूर्णिमा को आयोजित किया जाता है।
II. यह संत मावजी की शिक्षाओं से प्रभावित है।
III. इसमें मुख्य रूप से गुजरात का गरबा नृत्य प्रदर्शित होता है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और III
(2) केवल II और III
(3) केवल I और II
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

26. बेणेश्वर मेला किस विशिष्ट दिवस पर अपनी चरम सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधि पर पहुँचता है?
(1) माघ पूर्णिमा
(2) कार्तिक पूर्णिमा
(3) शरद पूर्णिमा
(4) वैशाख पूर्णिमा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

27. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): बेणेश्वर मेला भगवान विष्णु के कल्कि अवतार से गहराई से जुड़ा हुआ है।
कारण (R): संत मावजी, जिनकी शिक्षाएं इस मेले का आधार हैं, को स्थानीय स्तर पर कल्कि के अवतार के रूप में पूजा जाता है।
सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

28. बेणेश्वर जनजातीय मेले के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) इसका प्रबंधन पूर्णतः केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्रालय द्वारा किया जाता है।
(2) जनजातीय भक्तों द्वारा पवित्र संगम में अस्थि विसर्जन किया जाता है।
(3) यह मेला एक विशिष्ट वैवाहिक मंच है जहाँ बिना दहेज के विवाह संपन्न होते हैं।
(4) मेले के दौरान मुख्य शिव मंदिर में पशु बलि देना अनिवार्य अनुष्ठान है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

29. मरु महोत्सव (डेजर्ट फेस्टिवल) राजस्थान के किस शहर में आयोजित होने वाला वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है?
(1) बीकानेर
(2) बाड़मेर
(3) जैसलमेर
(4) जोधपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

30. सामान्यतः मरु महोत्सव के दौरान आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में से भिन्न को पहचानिए:
(1) मिस्टर डेजर्ट प्रतियोगिता
(2) मूंछ प्रतियोगिता
(3) ऊंट पोलो
(4) हाथी सौंदर्य प्रतियोगिता
(5) प्रश्न अनुत्तरित

31. राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा मरु महोत्सव और हाथी उत्सव जैसे आयोजनों का प्राथमिक उद्देश्य है:
(1) समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन और क्षेत्रीय पर्यटन को प्रोत्साहन
(2) अंतरराष्ट्रीय पशुधन व्यापार गतिविधियों को बढ़ावा देना
(3) वृहद् राजनीतिक समागमों के लिए मंच प्रदान करना
(4) शहरी विकास और बुनियादी ढांचा नीतियों को लागू करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

32. राजस्थान के निम्नलिखित उत्सवों को उनके आयोजन के कालानुक्रमिक क्रम (ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार) में व्यवस्थित कीजिए:
A. मरु महोत्सव, जैसलमेर
B. हाथी उत्सव, जयपुर
C. पुष्कर मेला, अजमेर
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) A, B, C
(2) B, A, C
(3) C, A, B
(4) A, C, B
(5) प्रश्न अनुत्तरित

33. जयपुर का हाथी उत्सव पारंपरिक रूप से किस हिंदू त्योहार की पूर्व संध्या पर मनाया जाता है?
(1) दीपावली
(2) होली
(3) मकर संक्रांति
(4) रक्षाबंधन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

34. जयपुर के हाथी उत्सव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें हाथी दौड़ और हाथी पोलो स्पर्धाएं सम्मिलित होती हैं।
II. हाथियों को पुष्प कलाकृतियों से सजाया जाता है और मावत पारंपरिक वेशभूषा धारण करते हैं।
III. यह सम के रेतीले धोरों पर आयोजित होता है।
IV. हाथी और मनुष्यों के बीच रस्साकशी इसका मुख्य आकर्षण है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन गलत है?
(1) केवल III
(2) केवल I और II
(3) केवल II और IV
(4) I, III, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

35. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: मरु महोत्सव का समापन सम के रेतीले धोरों पर पूर्णिमा के दिन होता है।
कथन II: हाथी उत्सव ऐतिहासिक रूप से अंग्रेजों द्वारा रानी

सूची II: (क्षेत्र/नगर)
i. नाथद्वारा
ii. जोधपुर/उदयपुर
iii. बस्सी (चित्तौड़गढ़)
iv. जैसलमेर
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

54. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: गणगौर में प्रयुक्त काष्ठ मूर्तियाँ चित्तौड़गढ़ के बस्सी गाँव के शिल्पकारों द्वारा निर्मित की जाती हैं।
कथन II: इन मूर्तियों को कभी पुन: रंगा नहीं जाता; प्रत्येक वर्ष नवीन मूर्तियाँ बनाई जाती हैं।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

55. गणगौर के अवसर पर जंवारी (जौ के अंकुर) से सुसज्जित पात्रों में जल लाने का अनुष्ठान किस अवधारणा को दर्शाता है?
(1) स्थानीय जलीय जीवों के प्रति सम्मान
(2) वर्षा जल संचयन पर ऐतिहासिक निर्भरता
(3) मध्यकाल में कर संग्रह की एक पद्धति
(4) शस्य और उर्वरता का प्रतीक उत्सव का कृषि आधारित स्वरुप
(5) प्रश्न अनुत्तरित

56. मकर संक्रांति का पर्व सौर कैलेंडर पर आधारित है और यह सूर्य के किस राशि में प्रवेश का प्रतीक है?
(1) मकर
(2) मेष
(3) कर्क
(4) तुला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

57. राजस्थान में प्रचलित होली के विभिन्न रूपों के संबंध में सही युग्मों पर विचार कीजिए:
I. श्री महावीरजी (करौली) - लठमार होली
II. भिनाय (अजमेर) - कोड़ामार होली
III. बाड़मेर - पत्थर मार होली
IV. मेवाड़ - भगोरिया होली
उपरोक्त में से कौन से संयोजन सही हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) I, II, III, और IV
(4) केवल II, III, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

58. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (होली के प्रकार)
A. लठमार होली
B. कोड़ामार होली
C. पत्थर मार होली
D. फूलों की होली
सूची II: (स्थान)
i. बाड़मेर
ii. भिनाय
iii. श्री महावीरजी
iv. गोविंद देवजी मंदिर, जयपुर
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(4) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(5) प्रश्न अनुत्तरित

59. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: राजस्थान में 'मोठड़ा' पगड़ी सामान्यत: विवाह के अवसर पर पहनी जाती है, जबकि 'मदील' पगड़ी दशहरा पर पहनी जाती है।
कथन II: राजस्थानी संस्कृति में श्वेत पगड़ी हर्ष और उल्लास का प्रतीक है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

60. लकड़ी की छड़ें लेकर घेरे में पुरुषों द्वारा किया जाने वाला ऊर्जावान 'गैर नृत्य', मुख्य रूप से किस क्षेत्र में होली के उत्सव की विशेषता है?
(1) ढूंढाड़
(2) मेवाड़ और मारवाड़
(3) हाड़ौती
(4) मेवात
(5) प्रश्न अनुत्तरित

61. राजस्थान में मकर संक्रांति पर पतंगबाजी की परंपरा का सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आधार क्या है?
(1) टिड्डियों के झुंड को भगाने की पारंपरिक पद्धति
(2) रियासतों के मध्य संचार की प्राचीन व्यवस्था
(3) शीतकाल में सूर्य की धूप ग्रहण कर विटामिन D प्राप्त करना
(4) वायु देवता को अर्पित एक धार्मिक श्रद्धांजलि
(5) प्रश्न अनुत्तरित

44. कजली तीज का भव्य जुलूस, जिसमें देवी की अलंकृत पालकी मुख्य बाजारों से निकलती है, प्रसिद्ध रूप से कहाँ आयोजित होता है?
(1) जयपुर
(2) बूंदी
(3) कोटा
(4) झालावाड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

45. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'सिंजारा' की परंपरा में तीज से पूर्व नवविवाहिता अथवा सगाई हुई पुत्री को वस्त्र, मिष्ठान और श्रृंगार सामग्री भेंट की जाती है।
कथन II: सिंजारा विशेष रूप से मातृ पक्ष द्वारा अपनी पुत्रवधू को भेजा जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

46. राजस्थानी सामाजिक रीति-रिवाजों में 'सिंजारा' शब्द से तात्पर्य है:
(1) तीज उत्सव के अवसर पर विधवाओं द्वारा किया जाने वाला अनुष्ठानिक स्नान
(2) अविवाहित कन्याओं द्वारा की जाने वाली एक स्थानीय लोक नृत्य शैली
(3) उत्सवों के दौरान राजपूत पुरुषों द्वारा धारण किया जाने वाला पारंपरिक शस्त्र
(4) तीज से पूर्व ससुराल पक्ष द्वारा महिला को दिए जाने वाले पारंपरिक उपहार
(5) प्रश्न अनुत्तरित

47. राजस्थानी सामाजिक संदर्भ में तीज के त्योहार को किस रूप में देखना सर्वाधिक उपयुक्त है?
(1) सामाजिक संबंधों, वैवाहिक निष्ठा और प्रकृति से जुड़ाव का सुदृढ़ीकरण
(2) आर्थिक संसाधनों के व्यवस्थित पुनर्वितरण की प्रक्रिया
(3) पारिवारिक उत्तराधिकार से संबंधित पितृसत्तात्मक नियमों का सुदृढ़ीकरण
(4) विभिन्न जातीय समूहों के मध्य राजनीतिक विवादों का निपटारा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

48. गणगौर उत्सव की घटनाओं के सही क्रम का चयन कीजिए:
(1) जौ की बुवाई → मृण्मय मूर्तियों की पूजा → गवर की सवारी → मूर्तियों का विसर्जन
(2) मूर्तियों का विसर्जन → जौ की बुवाई → उपवास → सवारी
(3) मृण्मय मूर्तियों की पूजा → मूर्तियों का विसर्जन → जौ की बुवाई → उपवास
(4) गवर की सवारी → जौ की बुवाई → मूर्तियों का विसर्जन → पूजा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

49. गणगौर का त्योहार किस हिंदू माह में मनाया जाता है?
(1) वैशाख
(2) चैत्र
(3) ज्येष्ठ
(4) आषाढ़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

50. गणगौर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. 'गण' भगवान शिव और 'गौर' माता पार्वती का प्रतीक है।
II. अविवाहित कन्याएं श्रेष्ठ वर की कामना हेतु गणगौर की पूजा करती हैं।
III. यह उत्सव केवल राजस्थान के राजघरानों तक ही सीमित है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

51. राजस्थान में गणगौर की विशिष्ट परंपराओं के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) धींगा गवर मुख्य रूप से जयपुर क्षेत्र में मनाई जाती है
(2) गुलाबी गणगौर बीकानेर में मनाई जाती है
(3) 'बिना ईसर की गवर' की विशिष्ट पूजा जैसलमेर में की जाती है
(4) गणगौर का आयोजन कार्तिक माह में किया जाता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

52. गणगौर के प्रचलित रीति-रिवाजों में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प असंगत है?
(1) महिलाओं द्वारा हाथों पर कलात्मक मेहंदी लगाना
(2) विवाहित और अविवाहित महिलाओं की अनुष्ठानों में सक्रिय भागीदारी
(3) पुष्पों से सजे कलशों में जल लाना
(4) गणगौर सवारी का नेतृत्व विधवा महिलाओं द्वारा किया जाना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

53. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (गणगौर के विशिष्ट रूप)
A. धींगा गवर
B. गुलाबी गणगौर
C. बिना ईसर की गवर
D. ईसर-गौरी की काष्ठ मूर्तियाँ

विक्टोरिया का जन्मोत्सव मनाने हेतु प्रारंभ किया गया था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

36. उत्सव और उसके संबंधित स्थान का निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सुमेलित नहीं है?
(1) मारवाड़ उत्सव - जोधपुर
(2) मेवाड़ उत्सव - उदयपुर
(3) मरु महोत्सव - जैसलमेर
(4) हाथी उत्सव - बीकानेर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

37. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि आधिकारिक मरु महोत्सव के कार्यक्रम का भाग नहीं है?
(1) गैर और अग्नि नृत्य का प्रदर्शन
(2) साफा बांधने की प्रतियोगिता
(3) स्थानीय नदी में मूर्ति विसर्जन
(4) विभिन्न रथ दौड़ का आयोजन
(5) प्रश्न अनुत्तरित

38. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पर्यटन उत्सव)
A. ब्रज होली महोत्सव
B. मत्स्य महोत्सव
C. चंद्रभागा मेला
D. शरद महोत्सव
सूची II: (मेजबान जिला)
i. झालावाड़
ii. माउंट आबू (सिरोही)
iii. भरतपुर
iv. अलवर
(1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(2) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

39. मरु महोत्सव जैसे आयोजनों के माध्यम से राजस्थान में पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं का पुनरुद्धार किसका प्रत्यक्ष परिणाम है?
(1) पश्चिमी क्षेत्र में पारंपरिक कृषि पद्धतियों में गिरावट
(2) स्थानीय पंचायती राज व्यवस्था का क्रियान्वयन
(3) आधुनिक मनोरंजन पर कानूनी प्रतिबंध
(4) लोक कलाओं को पर्यटन अर्थव्यवस्था से जोड़ने हेतु राज्य द्वारा प्रदत्त संरक्षण
(5) प्रश्न अनुत्तरित

40. राजस्थान में तीज के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. हरियाली तीज श्रावण माह में मनाई जाती है।
II. कजली तीज (बड़ी तीज) भाद्रपद माह में मनाई जाती है।
III. बूंदी अपनी भव्य कजली तीज सवारी के लिए प्रसिद्ध है।
IV. तीज मुख्य रूप से भगवान शिव और माता पार्वती के पुनर्मिलन का उत्सव है।
V. इस दिन महिलाओं द्वारा उपवास रखना सौभाग्य का प्रतीक माना जाता है।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) I, II, III, IV, और V
(2) केवल I, II, III, और IV
(3) केवल II, III, IV, और V
(4) केवल I, III, IV, और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

41. तीज का त्योहार राजस्थान में किस ऋतु के आगमन का सूचक है?
(1) ग्रीष्म ऋतु
(2) शीत ऋतु
(3) वर्षा ऋतु (मानसून)
(4) शरद ऋतु
(5) प्रश्न अनुत्तरित

42. तीज की रीति-रिवाजों के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(1) विवाहित महिलाएं पूर्वजों का शोक मनाने हेतु विशेष रूप से अपने पीहर जाती हैं।
(2) महिलाएं हरे या बहुवर्णी लहरिया साड़ियों और ओढ़नियों से सुसज्जित होती हैं।
(3) घेवर इस अवसर पर विशेष रूप से निर्मित पारंपरिक मिठाई है।
(4) वृक्षों पर झूला झूलना एक प्रमुख पारंपरिक गतिविधि है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

43. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राजस्थान में एक लोकप्रिय कहावत है, "तीज त्योहारों बावड़ी, ले डूबी गणगौर।"
कारण (R): तीज राजस्थान में त्योहारों के चक्र के प्रारंभ का प्रतीक है, जबकि गणगौर इसके समापन का सूचक है।
सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

62. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'फाग' लोक गीत केवल दीपावली के अवसर पर गाए जाते हैं।
कथन II: राजस्थान में होली के उत्सव में 'धुलंडी' और चंग के साथ लोक गायन सम्मिलित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

63. होली के अवसर पर जातीय बंधनों और सामाजिक पदानुक्रम की शिथिलता किस तथ्य को दर्शाती है?
(1) अस्थाई सामाजिक समानता द्वारा 'सामाजिक सुरक्षा वाल्व' के रूप में कार्य करना
(2) जाति व्यवस्था का स्थाई उन्मूलन
(3) समुदाय में धार्मिक रुढ़िवादिता को सुदृढ़ करना
(4) राजनीतिक विद्रोहों के संगठन को बढ़ावा देना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

64. निम्नलिखित हिंदू संस्कारों को उनके घटित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. जातकर्म
B. गर्भाधान
C. नामकरण
D. पुंसवन
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) B, D, A, C
(2) A, B, C, D
(3) B, A, D, C
(4) D, B, A, C
(5) प्रश्न अनुत्तरित

65. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (विवाह के अनुष्ठान)
A. बिंदोली
B. तोरण मारना
C. सामेला
D. कन्यादान
सूची II: (अर्थ/प्रक्रिया)
i. वधू पक्ष द्वारा बारात का स्वागत
ii. वर द्वारा वधू के द्वार पर काष्ठ प्रतीक पर प्रहार
iii. विवाह पूर्व वर-वधू का निकाला जाने वाला जुलूस
iv. अभिभावकों द्वारा वधू को औपचारिक रूप से वर को सौंपना
(1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(2) A-i, B-iii, C-ii, D-iv
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

66. राजस्थान में मृत्यु अनुष्ठानों के संदर्भ में 'मोसर' अथवा 'नुक्ता' से तात्पर्य है:
(1) मृत्यु के 12वें दिन आयोजित सामूहिक भोज
(2) शोक की अवधि में विधवाओं द्वारा किया जाने वाला उपवास
(3) अस्थि विसर्जन का औपचारिक अनुष्ठान
(4) शोक के प्रतीक के रूप में मुंडन कराना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

67. राजस्थान के निम्नलिखित विवाह अनुष्ठानों पर विचार कीजिए:
I. कंकणडोरा
II. पहरावनी
III. हथलेवा
IV. फेरे
V. जडूला
उपरोक्त में से कौन से अनुष्ठान विशेष रूप से विवाह समारोह से संबद्ध हैं?
(1) I, III, IV, और V
(2) II, III, और V
(3) I, II, III, और IV
(4) I, II, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राजस्थान सरकार ने 1960 में 'मृत्यु भोज निवारण अधिनियम' लागू किया था।
कारण (R): मोसर की परंपरा निर्धन परिवारों पर अत्यधिक वित्तीय भार डालती थी, जिससे वे ऋण के जाल में फंस जाते थे।
सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

69. राजस्थान में 'जडूला' (मुंडन) संस्कार के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए:
(1) प्रसव पूर्व किया जाने वाला अनुष्ठान
(2) विवाह से पूर्व केवल कन्याओं हेतु किया जाने वाला संस्कार
(3) बालक का प्रथम बार किया जाने वाला मुंडन, जो प्रायः इष्ट देव के समक्ष होता है
(4) शोक की समाप्ति का सूचक अनुष्ठान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

(2) टीका - नाक
(3) सुरलिया - सिर
(4) चूंप - माथा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

107. राजस्थान के पारंपरिक आभूषणों में 'आड़' शरीर के किस भाग में पहना जाता है?
(1) कमर
(2) कलाई
(3) टखना
(4) गला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

108. 'नथ' के संबंध में असत्य कथन है:
(1) यह नाक का प्रमुख आभूषण है।
(2) यह अविवाहित कन्याओं द्वारा पैरों की उंगलियों में पहना जाता है।
(3) इसमें प्रायः रत्न या मोती जड़े होते हैं।
(4) ग्रामीण समुदायों में यह वैवाहिक स्थिति का प्रतीक माना जाता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

109. 'बाजूबंद' शरीर के किस भाग का आभूषण है?
(1) टखना
(2) कान
(3) ऊपरी भुजा
(4) अंगूठा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

110. विवाहित महिलाओं द्वारा 'बिछिया' और 'पायल' धारण करने की परंपरा के पीछे स्थानीय मान्यता है:
(1) शारीरिक ऊंचाई में वृद्धि करना
(2) शासक के प्रति निष्ठा प्रदर्शित करना
(3) सर्पदंश से सुरक्षा
(4) विशिष्ट नसों पर दबाव द्वारा स्वास्थ्य लाभ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

111. निम्नलिखित में से कौन सा आभूषण गले के स्थान पर कान में पहना जाता है?
(1) सुरलिया
(2) तिमनिया
(3) हमेल
(4) मादलिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

112. 'चूंप' और 'रखण' आभूषण शरीर के किस अंग से संबद्ध हैं?
(1) नाक
(2) दांत
(3) नाभि
(4) केश
(5) प्रश्न अनुत्तरित

113. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: 'ठुस्सी' और 'कांठी' महिलाओं द्वारा गले में पहने जाने वाले आभूषण हैं।
कथन II: राजस्थान में सभी जातियों की महिलाओं द्वारा पैरों में स्वर्ण आभूषण पहनना अनिवार्य है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

114. निम्नलिखित में से कौन सा आभूषण पैरों या टखनों में नहीं पहना जाता है?
(1) तगड़ी
(2) नेवरी
(3) हिरणामैन
(4) आँवला
(5) प्रश्न अनुत्तरित

115. राजस्थान में सामाजिक सुधारों और ऐतिहासिक कानूनों के संबंध में कथनों पर विचार कीजिए:
I. 1929 का शारदा अधिनियम बाल विवाह रोकने हेतु प्रभावी कदम था।
II. वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा ने विवाह व्यय के नियमन हेतु कार्य किया।
III. राजस्थान मृत्यु भोज निवारण अधिनियम मोसर प्रथा रोकने हेतु पारित हुआ।
IV. मेवाड़ में दहेज निवारण हेतु देश हितैषिणी सभा की स्थापना हुई।
V. 1987 में राजस्थान सती (निवारण) अधिनियम लागू हुआ।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) I, II, III, IV और V
(4) केवल I, III, IV और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

116. वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा का मुख्य उद्देश्य था:
(1) राजपूत विद्रोहों का दमन करना
(2) ब्रिटिश शासन के विरुद्ध क्रांतिकारी गतिविधियाँ संचालित करना
(3) सती प्रथा को अनिवार्य करना
(4) विवाह में फिजूलखर्ची और बाल विवाह पर अंकुश लगाना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

117. 'शारदा अधिनियम' के प्रणेता हरबिलास शारदा राजस्थान के किस नगर से संबंधित थे?
(1) जयपुर

79. मध्यकालीन राजपूताना की मर्यादा संहिता, जिसने सामाजिक स्थिति को महिला त्याग से जोड़ा था, मूलतः किसकी सुरक्षा पर आधारित थी?
(1) कुल की शुचिता की रक्षा और दासता से बचाव
(2) राज्य कराधान से आर्थिक संसाधनों का संरक्षण
(3) शासकों द्वारा प्रदत्त भूमि अनुदानों की सुरक्षा
(4) स्थानीय समुदाय के कृषि अधिकारों की रक्षा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

80. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सती प्रथा के उन्मूलन में राजस्थान के प्रारंभिक समाज सुधारकों की भूमिका का सटीक वर्णन करता है?
(1) उन्होंने इन अनुष्ठानों को पीड़ा रहित बनाने हेतु सुधारों की वकालत की।
(2) स्थानीय शासकों और प्रजामंडल नेताओं ने सक्रिय रूप से इसके उन्मूलन हेतु प्रयास किए।
(3) उन्होंने इस प्रथा को केवल राजघरानों तक सीमित रखने का समर्थन किया।
(4) उन्होंने विदेशी प्रभाव के विरुद्ध वैदिक संस्कृति के संरक्षण हेतु इसे प्रोत्साहित किया।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

81. राजस्थान में जौहर/शाका के निम्नलिखित उदाहरणों को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
A. रानी कर्मावती के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ का जौहर
B. रानी रंगदेवी के नेतृत्व में रणथंभौर का जौहर
C. रानी पद्मिनी के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ का जौहर
D. फूल कंवर के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ का जौहर
सही कूट का चयन कीजिए:
(1) B, C, A, D
(2) C, B, D, A
(3) B, A, C, D
(4) C, A, B, D
(5) प्रश्न अनुत्तरित

82. चित्तौड़गढ़ के तीन प्रमुख जौहरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. प्रथम जौहर 1303 में अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय हुआ।
II. द्वितीय जौहर रानी कर्मावती के नेतृत्व में बहादुर शाह (गुजरात) के आक्रमण पर हुआ।
III. तृतीय जौहर 1567-68 में अकबर द्वारा घेराबंदी के समय हुआ।
IV. तृतीय जौहर का नेतृत्व रानी पद्मिनी ने किया था।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) केवल II, III, और IV
(4) केवल I, II, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

83. मध्यकालीन राजस्थान में 'शाका' उस स्थिति को कहा जाता है जहाँ:
(1) दुर्ग की रक्षा सफल होती है और शत्रु पीछे हट जाता है
(2) वैवाहिक गठबंधन के माध्यम से शांति संधि होती है
(3) महिलाओं द्वारा जौहर और पुरुषों द्वारा केसरिया किया जाता है
(4) शासक छापामार युद्ध हेतु दुर्ग त्याग देता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

84. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): घेराबंदी के दौरान राजपूत महिलाओं ने आत्मसमर्पण के स्थान पर जौहर को चुना।
कारण (R): उन्होंने शत्रु सेना द्वारा दासता और अपमान के भय से अग्नि द्वारा मृत्यु को श्रेयस्कर समझा।
सही उत्तर चुनिए:
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

85. राजस्थान के इतिहास में दर्ज प्रथम जौहर के संबंध में सही कथन है:
(1) यह कुंभलगढ़ में हुआ जहाँ महिलाओं ने दुर्ग की दीवारों से छलांग लगाई।
(2) यह लूणकरण के शासनकाल में जैसलमेर में संपन्न हुआ।
(3) 1301 में रणथंभौर में आयोजित 'जल जौहर'।
(4) भटनेर दुर्ग की महिलाओं द्वारा तैमूर के विरुद्ध किया गया जौहर।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

86. 'अर्ध शाका' की वह ऐतिहासिक घटना, जहाँ पुरुषों ने केसरिया तो किया किंतु जौहर नहीं हुआ, किस रियासत में घटित हुई थी?
(1) बीकानेर
(2) जैसलमेर
(3) मेवाड़
(4) मारवाड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

87. मध्यकालीन राजस्थान में जौहर और शाका की परंपरा वैचारिक रूप से किसका प्रतीक थी?
(1) शत्रु के खजाने को रिक्त करने हेतु आर्थिक युद्ध
(2) अनुकूल संधि हेतु कूटनीतिक दबाव
(3) कृषि उर्वरता हेतु किया जाने वाला धार्मिक अनुष्ठान
(4) शत्रु को विजय के लाभ से वंचित करने और मनोवैज्ञानिक प्रतिरोध का चरम रूप
(5) प्रश्न अनुत्तरित

88. शाका अनुष्ठान के संबंध में कौन सा कथन असत्य है?
(1) शाका केवल शांति काल में देवताओं को प्रसन्न करने हेतु किया जाने वाला अनुष्ठान था।
(2) केसरिया में पुरुष मृत्यु हेतु तत्परता के प्रतीक स्वरुप केसरिया वस्त्र धारण करते थे।
(3) केसरिया करने वाले पुरुषों का उद्देश्य जीवित लौटने की अपेक्षा शत्रु को अधिकतम हानि पहुँचाना था।
(4) पूर्ण शाका में जौहर और केसरिया दोनों सम्मिलित होते हैं।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

89. राजस्थान में पुरुषों के पारंपरिक पहनावे का सिर से पैर तक सही क्रम है:
(1) पगड़ी → धोती → अंगरखी → जूती
(2) पगड़ी → अंगरखी → कमरबंद → धोती
(3) कमरबंद → अंगरखी → पगड़ी → धोती
(4) धोती → पगड़ी → कमरबंद → अंगरखी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

90. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (पगड़ियों के प्रकार)
A. चूंडावत शाही
B. जसवंत शाही
C. राजशाही
D. राठौरी
सूची II: (संबंधित रियासत/क्षेत्र)
i. जोधपुर (मारवाड़)
ii. जयपुर (ढूंढाड़)
iii. सलूंबर (मेवाड़)
iv. बीकानेर/मारवाड़
(1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

91. राजस्थान में पुरुषों द्वारा धारण किए जाने वाले निम्नलिखित परिधानों पर विचार कीजिए:
I. बुकतरी
II. अचकन
III. आत्मसुख
IV. चोगा
V. जामा
उपरोक्त में से कौन से परिधान अंगरखी के विभिन्न रूपों या ऊपरी परिधानों का प्रतिनिधित्व करते हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, IV, और V
(3) केवल II, IV, और V
(4) I, II, III, IV, और V
(5) प्रश्न अनुत्तरित

92. राजस्थान में ग्रामीण पुरुषों के पहनावे में 'पछेवड़ा' या 'खेस' किसे कहते हैं?
(1) उत्सवों पर पहनी जाने वाली अलंकृत पगड़ी
(2) शीतकाल में ऊपरी शरीर पर ओढ़ा जाने वाला मोटा सूती शॉल
(3) पारंपरिक पायजामे को बांधने हेतु प्रयुक्त डोरी
(4) तलवार धारण करने हेतु प्रयुक्त औपचारिक चर्म बेल्ट
(5) प्रश्न अनुत्तरित

93. राजस्थान में पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली 'धोती' के संबंध में असत्य कथन है:
(1) यह बिना सिला हुआ कपड़े का टुकड़ा है जिसे कमर के नीचे लपेटा जाता है।
(2) धोती बांधने की शैली विभिन्न जातियों और क्षेत्रों में भिन्न होती है।
(3) पारंपरिक धोती सदैव जेब और बटन के साथ सिली जाती है।
(4) इसे सामान्यतः अंगरखी या कुर्ते के साथ पहना जाता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

94. पारंपरिक राजस्थानी शिरोभूषण में 'पगड़ी' और 'साफे' के मध्य मुख्य अंतर क्या है?
(1) पगड़ी महिलाओं द्वारा पहनी जाती है, साफा पुरुषों द्वारा
(2) साफा रेशमी होता है, पगड़ी सदैव ऊनी होती है
(3) इनमें कोई अंतर नहीं है, ये एक ही परिधान के नाम हैं
(4) पगड़ी लंबी और कम चौड़ी होती है, जबकि साफा अधिक चौड़ा और छोटा होता है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

95. राजस्थान में होली की परंपराओं के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(1) संतान प्राप्ति के आशीर्वाद हेतु पश्चिमी राजस्थान में इलोजी की पूजा की जाती है।
(2) होलिका दहन असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है।
(3) वसंत ऋतु के स्वागत में 'फाग' गीत गाए जाते हैं।
(4) गैर नृत्य पारंपरिक रूप से केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

96. राजस्थान में कृषकों और आदिवासियों द्वारा सिर पर बांधा जाने वाला कपड़े का टुकड़ा, जो पगड़ी से कम जटिल होता है, कहलाता है:
(1) कांचली
(2) पोत्या
(3) जूती
(4) घाघरा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

97. राजस्थान में महिलाओं द्वारा प्रयुक्त निम्नलिखित ओढ़नियों पर विचार कीजिए:
I. पीला

II. पोमचा
III. चुनरी
उपरोक्त में से कौन सी ओढ़नियाँ मुख्य रूप से बंधेज तकनीक से रगी जाती हैं?
(1) केवल I और II
(2) I, II, और III
(3) केवल II और III
(4) केवल I और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

98. राजस्थानी महिलाओं के पहनावे में 'कांचली' और 'कुर्ती' के मध्य अंतर का आधार है:
(1) कांचली अंत:चोली है, जबकि कुर्ती उसके ऊपर पहना जाने वाला परिधान है
(2) प्रयुक्त सामग्री का चयन (सूती बनाम रेशमी)
(3) कांचली निचले शरीर का परिधान है, कुर्ती सिर का
(4) कांचली विधवाओं हेतु है, कुर्ती अविवाहित कन्याओं हेतु
(5) प्रश्न अनुत्तरित

99. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (जनजातीय महिलाओं के परिधान)
A. ताराभांत की ओढ़नी
B. ज्वारभांत की ओढ़नी
C. कैरीभांत की ओढ़नी
D. नाँदणा
सूची II: (विशेषता)
i. आम के रुपांकनों वाली ओढ़नी
ii. तारा सदृश रुपांकनों वाली ओढ़नी
iii. आदिवासी महिलाओं द्वारा घाघरे के रूप में प्रयुक्त मोटा कपड़ा
iv. ज्वार के दानों के रूपांकनों वाली ओढ़नी
(1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न अनुत्तरित

100. राजस्थान में पारंपरिक महिला वेशभूषा के संबंध में सही कथन है:
(1) घाघरा सदैव 4 कलियों के साथ सिला जाता है
(2) ओढ़नी केवल कमर पर बांधी जाती है, सिर पर नहीं
(3) लाल और पीले रंगों का प्रयोग वर्जित है क्योंकि वे शोक के सूचक हैं
(4) 'ताराभांत की ओढ़नी' आदिवासी महिलाओं में अत्यंत लोकप्रिय है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

101. प्रसिद्ध '80 कली का घाघरा' दर्शाता है:
(1) 80 किलोग्राम भार वाला परिधान
(2) 80 भिन्न रंगों से निर्मित घाघरा
(3) अधिक घेराव हेतु 80 ऊर्ध्वाधर कलियों के उपयोग से सिला गया घाघरा
(4) 80 दिनों में निर्मित घाघरा
(5) प्रश्न अनुत्तरित

102. निम्नलिखित में से कौन सा परिधान राजस्थान में महिलाओं की पारंपरिक वेशभूषा का अंग नहीं है?
(1) कांचली
(2) अंगरखी
(3) घाघरा
(4) ओढ़नी
(5) प्रश्न अनुत्तरित

103. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: पुत्र जन्म पर महिला को उसके पीहर पक्ष से 'पीला पोमचा' प्राप्त होता है।
कथन II: पुत्री जन्म पर पारंपरिक रूप से 'गुलाबी पोमचा' भेंट किया जाता है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

104. थार मरुस्थल की महिलाओं द्वारा चटकीले रंगों और कांच के काम वाले वस्त्रों का प्रयोग मुख्य रूप से किसे दर्शाता है?
(1) मरुस्थलीय एकरसता को दूर करना और प्रतिकूल मौसम में दृश्यता बढ़ाना
(2) शिकार के दौरान वनस्पतियों के साथ तादात्म्य बैठाना
(3) ब्रिटिश औपनिवेशिक नियमों का पालन
(4) ग्रीष्म ऋतु में सौर ताप के अवशोषण को कम करना
(5) प्रश्न अनुत्तरित

105. निम्नलिखित आभूषणों और उनके संबद्ध अंगों पर विचार कीजिए:
I. बोरला - सिर
II. आड़ - गला
III. बाजूबंद - बाजू
IV. पायल - पैर
उपरोक्त में से कौन से युग्म सही हैं?
(1) केवल I, II, और III
(2) केवल I, III, और IV
(3) I, II, III, और IV
(4) केवल II, III, और IV
(5) प्रश्न अनुत्तरित

106. राजस्थानी महिलाओं द्वारा धारण किए जाने वाले आभूषणों में कौन सा युग्म सुमेलित है?
(1) रखड़ी - माथा

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) कार्तिक
राजस्थान का विख्यात पुष्कर मेला प्रतिवर्ष कार्तिक मास की शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक अजमेर जिले में आयोजित होता है। यह न केवल एक पवित्र धार्मिक उत्सव है, अपितु इसे विश्व के सबसे बड़े ऊंट और पशु मेलों में गिना जाता है। कार्तिक पूर्णिमा पर यहाँ की झील में पवित्र स्नान का विशेष आध्यात्मिक महत्व है। यह आयोजन राजस्थानी संस्कृति के विविध पक्षों को वैश्विक पटल पर प्रदर्शित करता है।

2. (1) पूर्णिमा के अवसर पर पवित्र पुष्कर झील में अनुष्ठानिक स्नान
पुष्कर मेले में श्रद्धालुओं के विशाल समूह के एकत्र होने का मुख्य कारण कार्तिक पूर्णिमा पर पवित्र पुष्कर सरोवर में अनुष्ठानिक स्नान करना है। हिंदू धर्म में इस झील को अत्यंत पावन माना गया है। मान्यता है कि इस विशिष्ट तिथि पर स्नान करने से अक्षय पुण्य प्राप्त होता है। साथ ही, जगतपिता ब्रह्मा के मंदिर में दर्शन हेतु आने वाले भक्तों की अटूट श्रद्धा इस आयोजन को भव्य बनाती है।

3. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
राजस्थान के उत्सव हिंदू पंचांग के विशिष्ट महीनों के अनुसार आयोजित किए जाते हैं। पुष्कर मेला कार्तिक मास में संपन्न होता है, जबकि जनजातियों का प्रसिद्ध बेणेश्वर मेला माघ मास में आयोजित होता है। श्रावण मास में हरियाली तीज का उत्सव अत्यंत हर्षोल्लास से मनाया जाता है और चैत्र मास में गणगौर की भव्य सवारी निकाली जाती है। यह व्यवस्था राज्य की सांस्कृतिक विविधता और धार्मिक कैलेंडर के मध्य गहरा संबंध दर्शाती है।

4. (4) खंडित शिवलिंग हेतु किए जाने वाले पूजा अनुष्ठान
पुष्कर मेले की विशेषताओं में प्राचीन दीपदान परंपरा और ऊंटों का व्यापक वाणिज्यिक व्यापार मुख्य रूप से सम्मिलित है। श्रद्धालु यहाँ विश्व प्रसिद्ध ब्रह्मा मंदिर में उपासना हेतु एकत्रित होते हैं। खंडित शिवलिंग की पूजा इस मेले की विशेषता नहीं है, बल्कि यह डूंगरपुर जिले के बेणेश्वर मेले से संबंधित एक विशिष्ट धार्मिक परंपरा है। पुष्कर का पूर्ण आयोजन ब्रह्मा की उपासना और पवित्र झील के स्नान पर ही केंद्रित रहता है।

5. (3) केवल I और II
पुष्कर मेला ऊंटों और घोड़ों के अंतरराष्ट्रीय व्यापार के साथ-साथ मटका फोड़ जैसी पारंपरिक ग्रामीण खेल प्रतियोगिताओं के लिए विख्यात है। यह मेला मरुस्थलीय संस्कृति के विविध स्वरूपों को प्रस्तुत करता है। भौगोलिक दृष्टि से यह मेला लूनी नदी के तट पर आयोजित न होकर अजमेर की पवित्र पुष्कर झील के किनारे संपन्न होता है। अतः व्यापारिक और सांस्कृतिक कथन सत्य हैं, जबकि नदी संबंधी तथ्य ऐतिहासिक और भौगोलिक रूप से असंगत है।

6. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
पुष्कर मेला केवल एक धार्मिक तीर्थयात्रा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र भी है। यहाँ पशुओं के विशाल व्यापार के साथ-साथ स्थानीय शिल्पकारों को हस्तशिल्प और कलाकृतियों के विक्रय हेतु एक बड़ा बाजार प्राप्त होता है। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि इसमें आर्थिक गतिविधियाँ नहीं होती हैं। यह आयोजन धार्मिक आस्था और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को जोड़ने वाली एक सशक्त और प्रभावी कड़ी के रूप में कार्य करता है।

7. (4) बेणेश्वर मेला
राजस्थान के विभिन्न मेलों में बेणेश्वर मेला अपनी विशिष्ट जनजातीय प्रकृति के कारण अन्य मेलों से भिन्न है। जबकि पुष्कर, नागौर और कोलायत मेले मुख्य रूप से धार्मिक स्नान और पशु व्यापार के लिए प्रसिद्ध हैं, बेणेश्वर मेला भील जनजाति का सबसे बड़ा समागम स्थल है। इसे 'आदिवासियों का महाकुंभ' भी कहा जाता है। यह डूंगरपुर जिले में सोम, माही और जाखम नदियों के पवित्र संगम पर आयोजित होने वाला अद्वितीय उत्सव है।

8. (1) पुष्कर और कोलायत
राजस्थान की सांस्कृतिक परंपरा में दीपदान का विशेष महत्व है, जो मुख्य रूप से पुष्कर और कोलायत झील से जुड़ा है। कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर श्रद्धालु इन पवित्र जलाशयों में प्रज्वलित दीप अर्पित करते हैं। यह अनुष्ठान अंधकार पर प्रकाश की विजय और आध्यात्मिक जागृति का प्रतीक माना जाता है। पुष्कर अजमेर में स्थित है, जबकि कोलायत बीकानेर का प्रमुख तीर्थ स्थल है जहाँ महर्षि कपिल मुनि ने कठिन तपस्या की थी।

9. (3) नागौरी बैल
नागौर में आयोजित होने वाला रामदेव पशु मेला विशेष रूप से अपनी नागौरी नस्ल के बैलों के व्यापार हेतु अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विख्यात है। नागौरी बैल अपनी स्फूर्ति, कार्यक्षमता और भार वहन करने की अद्भुत शक्ति के लिए जाने जाते हैं। इस मेले में विभिन्न क्षेत्रों से किसान और व्यापारी इन उत्कृष्ट पशुओं के क्रय-विक्रय हेतु एकत्रित होते हैं। यह मेला मारवाड़ क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

10. (1) धार्मिक सभाओं के कारण सभी पशु व्यापारिक गतिविधियों का पूर्ण निषेध
नागौर जिला अपने विशाल पशु मेलों के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें परबतसर का वीर तेजाजी मेला और मेड़ता का बलदेव पशु

(2) जोधपुर
(3) अजमेर
(4) उदयपुर
(5) प्रश्न अनुत्तरित

118. आधुनिक ग्रामीण राजस्थान में 'नाता प्रथा' और 'मृत्यु भोज' जैसी कुप्रथाओं में गिरावट का मुख्य कारण है:
(1) मुगलकालीन कानूनों का प्रभाव
(2) साक्षरता में वृद्धि, आधुनिकीकरण और विधिक जागरूकता
(3) हिंदू धर्म का परित्याग
(4) अंतर-राज्यीय युद्धों का प्रभाव
(5) प्रश्न अनुत्तरित

119. विवाह व्यय और सामाजिक सुधारों हेतु 'देश हितैषिणी सभा' की स्थापना 1877 में कहाँ हुई थी?
(1) मारवाड़
(2) बीकानेर
(3) अलवर
(4) मेवाड़
(5) प्रश्न अनुत्तरित

120. ग्रामीण राजस्थान में पारंपरिक वेशभूषा के बदलते स्वरुप हेतु उत्तरदायी प्रमुख कारक है:
(1) शहरीकरण, औपचारिक अर्थव्यवस्था और जनसंचार माध्यमों का प्रभाव
(2) कपास की उपलब्धता में कमी
(3) पारंपरिक वस्त्रों पर सरकारी प्रतिबंध
(4) जाति पंचायतों द्वारा जारी नवीन फरमान
(5) प्रश्न अनुत्तरित

प्रति विशिष्ट धार्मिक धारणा है। यह परंपरा आज भी श्रद्धापूर्वक निभाई जाती है और समुदाय की सांस्कृतिक पहचान का अभिन्न हिस्सा है। राजस्थान के सामाजिक ढांचे में ऐसी विशिष्ट धार्मिक मान्यताएं और निषेध अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

21. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
बेणेश्वर मेला दक्षिणी राजस्थान के आदिवासियों का सबसे बड़ा सांस्कृतिक समागम है, जिसे 'आदिवासियों का कुंभ' कहा जाता है। यह मुख्य रूप से भील जनजाति की आस्था का केंद्र है जो डूंगरपुर जिले में एकत्रित होते हैं। सहरिया जनजाति का प्रमुख मेला बारां जिले के सीताबाड़ी में आयोजित होता है। अतः यह कहना त्रुटिपूर्ण होगा कि बेणेश्वर मेले में केवल सहरिया जनजाति का जनसमूह सम्मिलित होता है। यह आयोजन भील संस्कृति का जीवंत प्रकटीकरण है।

22. (2) खंडित शिवलिंग की विधि-विधान से पूजा
बेणेश्वर धाम में वार्षिक मेले के दौरान श्रद्धालुओं की अटूट श्रद्धा का मुख्य कारण वहाँ स्थापित खंडित शिवलिंग की विधि-विधान से पूजा करना है। यह विश्व का संभवतः एकमात्र ऐसा स्थान है जहाँ खंडित शिवलिंग की उपासना पूर्ण श्रद्धा के साथ की जाती है। पौराणिक आख्यानों के अनुसार, इस स्थल की पवित्रता और चमत्कारिक प्रभाव इसे अद्वितीय बनाते हैं। यह धार्मिक परंपरा जनजातीय समाज की विशिष्ट आस्था और पौराणिक मान्यताओं के सामंजस्य को खूबसूरती से दर्शाती है।

23. (4) भील समुदाय की धार्मिक परंपराएं और सामाजिक पहचान
बेणेश्वर मेला मुख्य रूप से दक्षिणी राजस्थान और निकटवर्ती राज्यों के भील समुदाय की धार्मिक परंपराओं और सामाजिक पहचान का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह जनजातीय समाज को अपनी संस्कृति, लोकगीतों और पारंपरिक अनुष्ठानों को सामूहिक रूप से प्रदर्शित करने का एक साझा मंच प्रदान करता है। इसे 'वागड़ का पुष्कर' भी कहा जाता है जहाँ भील अपनी आध्यात्मिक शांति और सामाजिक मेल-मिलाप हेतु एकत्रित होते हैं। यह आयोजन जनजातीय जीवन की जीवंतता को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करता है।

24. (1) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
बेणेश्वर धाम के निकट प्रवाहित होने वाली नदियों की विशिष्ट भौगोलिक विशेषताएं हैं। माही नदी कर्क रेखा को दो बार पार करने वाली महत्वपूर्ण नदी है, जबकि सोम नदी का उद्गम बीछामेड़ा की पहाड़ियों से होता है। जाखम नदी छोटी सादड़ी की पहाड़ियों से निकलकर आदिवासियों के इस पवित्र स्थल तक पहुँचती है। लूनी नदी थार मरुस्थल की प्रमुख जीवनधारा है जो पश्चिमी राजस्थान में प्रवाहित होती है। ये नदियाँ राज्य के पारिस्थितिकी तंत्र का मुख्य आधार हैं।

25. (3) केवल I और II
बेणेश्वर मेले का आयोजन प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को सोम, माही और जाखम नदियों के संगम पर होता है। यह धार्मिक उत्सव महान संत मावजी की शिक्षाओं और उनके द्वारा स्थापित निष्कलंकी संप्रदाय से गहरा प्रभाव ग्रहण करता है। यद्यपि यह गुजरात की सीमा के समीप है, परंतु यह मुख्य रूप से भील संस्कृति और स्थानीय लोक परंपराओं पर केंद्रित रहता है। अतः संत मावजी और तिथि संबंधी तथ्य इस मेले की वास्तविक सांस्कृतिक पहचान को स्पष्ट करते हैं।

26. (1) माघ पूर्णिमा
बेणेश्वर मेला अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों के शिखर पर माघ मास की पूर्णिमा के दिन पहुँचता है। इस विशेष दिन पर त्रिवेणी संगम में पवित्र स्नान करने हेतु लाखों की संख्या में श्रद्धालु उमड़ते हैं। यह तिथि इस मेले का मुख्य आकर्षण है जब विशेष पूजा-अर्चना और ध्वजारोहण के कार्यक्रम संपन्न होते हैं। भील समुदाय के लोग इस दिन अपने पूर्वजों का तर्पण और अस्थि विसर्जन भी करते हैं, जिससे इसका आध्यात्मिक महत्व और बढ़ जाता है।

27. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बेणेश्वर मेला आध्यात्मिक रूप से भगवान विष्णु के भावी कल्कि अवतार की अवधारणा से जुड़ा है। संत मावजी ने इस क्षेत्र में भक्ति मार्ग का प्रचार किया था और उन्हें स्थानीय भक्तों द्वारा कल्कि का साक्षात अवतार माना जाता है। उनकी वाणियों और भविष्यवाणियों का जनजातीय समाज पर गहरा प्रभाव है। यह धार्मिक विश्वास मेले के दौरान होने वाले अनुष्ठानों और श्रद्धा भाव में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जो संत और ईश्वर के मध्य संबंध को दर्शाता है।

28. (2) जनजातीय भक्तों द्वारा पवित्र संगम में अस्थि विसर्जन किया जाता है।
बेणेश्वर मेले की एक महत्वपूर्ण धार्मिक परंपरा पवित्र त्रिवेणी संगम में पूर्वजों की अस्थियों का विसर्जन करना है। जनजातीय श्रद्धालु इसे गंगा स्नान के समान फलदायी मानते हैं और अपने पितरों की शांति हेतु यहाँ विशेष प्रार्थना करते हैं। यह मेला भील समुदाय के लिए एक आध्यात्मिक शुद्धि का केंद्र है। पशु बलि जैसी प्रवृत्तियाँ यहाँ की वर्तमान पूजा पद्धति का अंग नहीं हैं, बल्कि यह सात्विक भक्ति और लोक आस्था का पवित्र संगम है।

29. (3) जैसलमेर
राजस्थान का मरु महोत्सव प्रतिवर्ष मरुधरा की स्वर्ण नगरी जैसलमेर में आयोजित होने वाला एक भव्य सांस्कृतिक उत्सव है। यह उत्सव माघ मास में आयोजित होता है और मरुस्थलीय जीवन की कला, संगीत और परंपराओं को प्रदर्शित करता है। जैसलमेर के रेतीले धोरों के बीच आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रम पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। यह महोत्सव राजस्थान पर्यटन विभाग द्वारा राज्य की समृद्ध विरासत को विश्व पटल पर लाने का एक सफल और सराहनीय प्रयास है।

30. (4) हाथी सौंदर्य प्रतियोगिता
जैसलमेर के मरु महोत्सव में मिस्टर डेजर्ट और लंबी मूंछ जैसी प्रतियोगिताएं मरुस्थलीय पौरुष और संस्कृति का प्रतीक हैं। ऊंट पोलो और ऊंटों की सज्जा इस उत्सव के अभिन्न अंग हैं जो स्थानीय जीवन की पहचान को उजागर करते हैं। हाथी सौंदर्य प्रतियोगिता जयपुर के हाथी उत्सव की विशेषता है, न कि जैसलमेर के मरु महोत्सव की। यहाँ का मुख्य आकर्षण

मेला प्रमुख हैं। यह धारणा असत्य है कि धार्मिक सभाओं के कारण यहाँ पशु व्यापार प्रतिबंधित होता है। वास्तव में, ये मेले पशुधन के वाणिज्यिक विनिमय के प्रधान केंद्र हैं जहाँ हजारों की संख्या में ऊंट और बैल बेचे जाते हैं। व्यापारिक गतिविधियाँ इन मेलों की आत्मा हैं जो ग्रामीण आजीविका का आधार बनती हैं।

11. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
नागौर पशु मेला मारवाड़ क्षेत्र की ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार माना जाता है क्योंकि यह पशुपालकों को एक संगठित व्यावसायिक मंच प्रदान करता है। यहाँ उच्च गुणवत्ता वाले नागौरी बैलों, ऊंटों और स्थानीय कृषि उत्पादों का बड़े पैमाने पर लेन-देन होता है, जिससे किसानों की आय में वृद्धि होती है। यह आर्थिक विनिमय न केवल कृषि कार्यों को सुगम बनाता है, अपितु क्षेत्रीय व्यापारिक संजाल को भी मजबूती प्रदान करता है।

12. (2) कृषि कार्य हेतु भारवाही पशुओं के क्रय-विक्रय के लिए एक संगठित बाजार
राजस्थान के पारंपरिक समाज में नागौर जैसे पशु मेलों का आर्थिक महत्व मुख्यतः कृषि और परिवहन हेतु भारवाही पशुओं के संगठित बाजार के रूप में है। ये मेले कृषकों को उच्च नस्ल के बैल और ऊंट प्राप्त करने का अवसर देते हैं, जो मरुस्थलीय खेती के लिए अनिवार्य हैं। इसके अतिरिक्त, ये आयोजन स्थानीय व्यापारियों को ग्रामीण उत्पादों के विपणन हेतु प्रोत्साहित करते हैं, जिससे क्षेत्रीय आत्मनिर्भरता और आर्थिक स्थिरता को व्यापक बल प्राप्त होता है।

13. (3) केवल III
नागौर के पशु मेलों का सफल आयोजन राजस्थान सरकार के पशुपालन विभाग द्वारा किया जाता है। यहाँ का प्रसिद्ध मिर्ची बाजार आकर्षण का मुख्य केंद्र रहता है। सूफी संत हमीदुद्दीन नागौरी का उर्स इस क्षेत्र की साझा सांस्कृतिक विरासत को दर्शाता है। यहाँ व्यापार किए जाने वाले नागौरी बैल अपनी शारीरिक शक्ति और कार्यक्षमता हेतु विख्यात हैं, न कि उच्च दुग्ध क्षमता के लिए। अतः पशुओं की दुग्ध क्षमता संबंधी कथन तथ्यों के विपरीत है।

14. (4) तिलवाड़ा मेला - मल्लीनाथजी से संबंध
राजस्थान के मेलों में तिलवाड़ा का पशु मेला लोक देवता मल्लीनाथजी की पावन स्मृति में आयोजित होता है। यह बाड़मेर जिले में लूनी नदी के तट पर चैत्र मास में आयोजित किया जाता है, जहाँ थारपारकर जैसी उत्कृष्ट पशु नस्लों का व्यापार होता है। अन्य विकल्पों में कोलायत का संबंध कपिल मुनि से, नागौर का वीर तेजाजी और रामदेवजी से तथा बेणेश्वर का भगवान शिव से है। अतः तिलवाड़ा और मल्लीनाथजी का युग्म पूर्णतः सही है।

15. (1) ख्वाजा हमीदुद्दीन नागौरी
नागौर का ऐतिहासिक स्वरूप सुप्रसिद्ध सूफी संत ख्वाजा हमीदुद्दीन नागौरी के उर्स द्वारा विशेष रूप से रेखांकित होता है। वे ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती के प्रमुख शिष्य थे और उन्होंने अपना जीवन सादगी और मानवता की सेवा में समर्पित किया था। उनका उर्स हिंदू-मुस्लिम सद्भाव का जीवंत प्रतीक है, जहाँ विभिन्न समुदायों के लोग अपनी श्रद्धा व्यक्त करने पहुँचते हैं। यह स्थल नागौर की सांस्कृतिक पहचान को आध्यात्मिक गहराई और व्यापकता प्रदान करता है।

16. (1) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
राजस्थान के मेले अपने विशिष्ट भौगोलिक स्थानों के कारण विशेष महत्व रखते हैं। तिलवाड़ा मेला बाड़मेर में लूनी नदी के तट पर आयोजित होता है, जबकि कोलायत मेला बीकानेर के मरुस्थलीय जलाशय के समीप भरता है। बेणेश्वर मेला डूंगरपुर में सोम, माही और जाखम नदियों के पवित्र त्रिवेणी संगम पर स्थित है। पुष्कर मेला अजमेर की पहाड़ियों से घिरी पवित्र झील के किनारे संपन्न होता है। यह भौगोलिक विविधता इन मेलों को अनूठा और आकर्षक बनाती है।

17. (2) थारपारकर और कांकरेज नस्लें
बाड़मेर जिले के तिलवाड़ा में आयोजित होने वाला मल्लीनाथ पशु मेला मुख्य रूप से थारपारकर और कांकरेज जैसी उत्कृष्ट पशु नस्लों के व्यापार हेतु प्रसिद्ध है। ये नस्लें अपनी सहनशीलता और प्रतिकूल मरुस्थलीय परिस्थितियों में कार्य करने की क्षमता के लिए जानी जाती हैं। मेले के दौरान विभिन्न राज्यों से व्यापारी इन पशुओं के क्रय-विक्रय हेतु आते हैं। यह आयोजन न केवल पशुधन संवर्धन को बढ़ावा देता है, अपितु स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी गतिशीलता प्रदान करता है।

18. (1) कपिल मुनि
बीकानेर जिले में आयोजित होने वाला कोलायत मेला भारतीय दर्शन के सांख्य शास्त्र के प्रणेता महर्षि कपिल मुनि से गहराई से जुड़ा है। मान्यता है कि कपिल मुनि ने इसी पावन स्थान पर रहकर घोर तपस्या की थी और मानव कल्याण हेतु ज्ञान का प्रचार किया था। कार्तिक पूर्णिमा के दिन यहाँ की झील में स्नान करना अत्यंत फलदायी माना जाता है। यह धार्मिक स्थल ज्ञान, भक्ति और प्राचीन दार्शनिक परंपराओं के अद्भुत संगम का प्रतीक है।

19. (3) I, II, III, IV और V
कोलायत मेला महर्षि कपिल मुनि को समर्पित है और तिलवाड़ा मेला लोक देवता मल्लीनाथजी की स्मृति में बाड़मेर में आयोजित होता है। कोलायत में कार्तिक पूर्णिमा पर दीपदान का विशेष अनुष्ठान संपन्न होता है, जो आध्यात्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। सामाजिक कारणों से चारण समुदाय के लोग कोलायत झील में स्नान करना वर्जित मानते हैं। ये सभी तथ्य राजस्थान की धार्मिक परंपराओं, सामाजिक मान्यताओं और क्षेत्रीय इतिहास के विविध स्वरूपों को प्रमाणिकता के साथ प्रस्तुत करते हैं।

20. (4) चारण
राजस्थान का चारण समुदाय ऐतिहासिक और पौराणिक कारणों से कोलायत झील में पवित्र स्नान करने से परहेज करता है। लोक मान्यताओं के अनुसार, करणी माता के परिवार से जुड़ी एक प्राचीन घटना के कारण इस समुदाय की इस जलाशय के

70. ग्रामीण राजस्थान के सामाजिक ढांचे में 'नाता प्रथा' ऐतिहासिक रुप से किसे अनुमति प्रदान करती थी?
(1) पुरुषों के मध्य अनियंत्रित बहुविवाह
(2) एक महिला को औपचारिक विवाह के बिना अन्य पुरुष के साथ रहने की स्वीकृति
(3) निम्न आर्थिक वर्गों में बाल विवाह
(4) सभी जातियों में विधवा पुनर्विवाह का निषेध
(5) प्रश्न अनुत्तरित

71. निम्नलिखित में से कौन सा संस्कार पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों में जन्म-पूर्व संस्कार की श्रेणी में नहीं आता है?
(1) गर्भाधान
(2) पुंसवन
(3) सीमन्तोन्नयन
(4) विद्यारंभ
(5) प्रश्न अनुत्तरित

72. पारंपरिक 'कन्यादान' का आधुनिक समय में 'दहेज' की जबरन वित्तीय मांग के रूप में विकृत होना किसका उदाहरण है?
(1) विवाहकेअनुष्ठानोंकावस्तुकरण(Commodification)
(2) सांस्कृतिक आत्मसातीकरण की प्रक्रिया
(3) मातृवंशीय विरासत प्रणाली की ओर संक्रमण
(4) संस्कृतिकरण की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया
(5) प्रश्न अनुत्तरित

73. राजस्थान में ऐतिहासिक सती प्रथा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. इसमें विधवा अपने मृत पति की चिता पर स्वयं का आत्मदाह कर लेती थी।
II. मध्यकालीन राजपूत समाज में इसे पतिव्रत धर्म और सम्मान का प्रतीक माना जाता था।
III. ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने संपूर्ण शासनकाल में इसे कानूनी संरक्षण प्रदान किया।
उपरोक्त कथनों का कौन सा संयोजन सही है?
(1) केवल II और III
(2) केवल I और III
(3) केवल I और II
(4) I, II, और III
(5) प्रश्न अनुत्तरित

74. सती प्रथा के विरुद्ध 1987 में राजस्थान के किस गाँव में रूप कंवर के आत्मदाह के पश्चात कड़े कानूनी कदम उठाए गए?
(1) देवराला
(2) खेजड़ी
(3) पोखरण
(4) भीनमाल
(5) प्रश्न अनुत्तरित

75. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन I: सती (निवारण) अधिनियम, 1987 केवल सती के प्रयास को दंडित करता है, उसके महिमामंडन को नहीं।
कथन II: देवराला कांड के पश्चात सती प्रथा के निष्पादन और महिमामंडन दोनों को अपराध घोषित करने हेतु यह अधिनियम प्रभावी हुआ।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
(2) कथन I और कथन II दोनों गलत हैं
(3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
(4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
(5) प्रश्न अनुत्तरित

76. सूची I को सूची II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (सती/माता मंदिर)
A. रानी सती मंदिर
B. नारायणी माता मंदिर
C. सच्चियाय माता मंदिर
D. करणी माता मंदिर
सूची II: (स्थान)
i. देशनोक
ii. झुंझुनूं
iii. अलवर
iv. ओसियां
(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(4) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न अनुत्तरित

77. मध्यकालीन राजस्थान में सती प्रथा के ऐतिहासिक प्रचलन का मुख्य कारण क्या था?
(1) संसाधनों का आधिक्य जिससे भव्य अंत्येष्टि संभव हुई
(2) मुगल शासकों द्वारा जारी प्रशासनिक आदेश
(3) युद्ध काल में मान-मर्यादा की रक्षा और विधवाओं की असुरक्षा
(4) राजपूत अभिजात वर्ग पर पाश्चात्य दर्शन का प्रभाव
(5) प्रश्न अनुत्तरित

78. सती प्रथा से संबंधित शब्दावली के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए:
(1) पति के शव के साथ आत्मदाह करने वाली महिला को 'सह-मरण' कहा जाता था।
(2) पति की किसी वस्तु के साथ आत्मदाह करने वाली महिला को 'अनु-मरण' या 'महा सती' कहा जाता था।
(3) इनके सम्मान में 'सती स्तंभ' या स्मारक निर्मित किए जाते थे।
(4) 'महा सती' विशेष रुप से उस कन्या को कहा जाता था जिसने विवाह से पूर्व सती का कार्य किया हो।
(5) प्रश्न अनुत्तरित

रेगिस्तानी जहाज कहे जाने वाले ऊंट और उनसे जुड़ी विभिन्न कलात्मक गतिविधियाँ ही होती हैं।

31. (1) समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन और क्षेत्रीय पर्यटन को प्रोत्साहन
राजस्थान पर्यटन विकास निगम द्वारा मरु महोत्सव और हाथी उत्सव जैसे भव्य आयोजनों का प्राथमिक उद्देश्य राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रदर्शन करना है। इन उत्सवों के माध्यम से क्षेत्रीय पर्यटन को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहन मिलता है, जिससे स्थानीय रोजगार के अवसरों में वृद्धि होती है। ये मंच लोक कलाकारों को अपनी कला प्रदर्शित करने का अवसर देते हैं और विदेशी मुद्रा अर्जन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाते हैं।

32. (1) A, B, C
ग्रेगोरियन कैलेंडर के अनुसार राजस्थान के उत्सवों का आयोजन एक निश्चित क्रम में होता है। जैसलमेर का मरु महोत्सव सामान्यतः जनवरी या फरवरी के शीतकालीन माह में मनाया जाता है। इसके पश्चात मार्च के आसपास होली के अवसर पर जयपुर में हाथी उत्सव का आयोजन होता है। अंत में कार्तिक मास के अनुसार अक्टूबर या नवंबर में अजमेर का प्रसिद्ध पुष्कर मेला आयोजित होता है। यह समयबद्धता राज्य में वर्ष भर पर्यटन गतिविधियों को निरंतरता प्रदान करती है।

33. (2) होली
गुलाबी नगरी जयपुर का सुप्रसिद्ध हाथी उत्सव पारंपरिक रुप से रंगों के त्योहार होली के अवसर पर मनाया जाता है। इस अवसर पर हाथियों को विशेष रुप से अलंकृत किया जाता है और चौगान स्टेडियम में भव्य जुलूस निकाला जाता है। यह उत्सव राजसी परंपराओं और पशुओं के प्रति प्रेम का अद्भुत समन्वय प्रस्तुत करता है। होली के उल्लास के साथ हाथियों की यह शाही सवारी स्थानीय निवासियों और पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र होती है।

34. (1) केवल III
जयपुर के हाथी उत्सव में हाथी दौड़, हाथी पोलो और रस्साकशी जैसी रोमांचक स्पर्धाएं आयोजित की जाती हैं। हाथियों को चटकीले रंगों और पुष्प कलाकृतियों से सजाया जाता है, जो उनकी भव्यता को कई गुना बढ़ा देते हैं। यह उत्सव ऐतिहासिक जयपुर शहर के मध्य आयोजित होता है, न कि जैसलमेर के सम के रेतीले धोरों पर। सम के धोरे मरु महोत्सव के लिए प्रसिद्ध हैं, जबकि हाथी उत्सव अपनी शहरी और राजसी पृष्ठभूमि के लिए विख्यात है।

35. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
मरु महोत्सव का समापन जैसलमेर के प्रसिद्ध सम के रेतीले धोरों पर पूर्णिमा की चांदनी रात में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ होता है। यह दृश्य अत्यंत मनोरम और अविस्मरणीय होता है। हाथी उत्सव के उद्भव का ऐतिहासिक आधार जयपुर की राजसी परंपराएं और पर्यटन संवर्धन है, न कि ब्रिटिश काल की किसी रानी का जन्मोत्सव। अतः मरु महोत्सव के समापन संबंधी तथ्य सही है, परंतु हाथी उत्सव के ऐतिहासिक कारण का विवरण यहाँ पर पूर्णतः भ्रामक और गलत है।

36. (4) हाथी उत्सव - बीकानेर
राजस्थान के पर्यटन उत्सव विशिष्ट नगरों के सांस्कृतिक इतिहास से जुड़े हैं। जोधपुर में मारवाड़ उत्सव और उदयपुर में मेवाड़ उत्सव का आयोजन भव्यता के साथ किया जाता है। जैसलमेर अपनी मरुभूमि की पहचान हेतु मरु महोत्सव के लिए विख्यात है। हाथी उत्सव मुख्य रुप से जयपुर की विशेषता है, न कि बीकानेर की। बीकानेर ऊंट उत्सव के लिए प्रसिद्ध है। अतः हाथी उत्सव और बीकानेर का युग्म भौगोलिक और सांस्कृतिक दृष्टि से पूर्णतः असंगत है।

37. (3) स्थानीय नदी में मूर्ति विसर्जन
मरु महोत्सव के दौरान गैर नृत्य, अग्नि नृत्य और साफा बांधने जैसी प्रतियोगिताएं मरुस्थलीय शौर्य और कला का प्रदर्शन करती हैं। विभिन्न रथ दौड़ और ऊंटों की गतिविधियाँ भी इस आयोजन का हिस्सा होती हैं। चूँकि जैसलमेर एक शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र है जहाँ बारहमासी नदियों का अभाव है, अतः स्थानीय नदी में मूर्ति विसर्जन जैसी गतिविधि इस उत्सव का भाग नहीं है। यह महोत्सव पूर्णतः मरुस्थलीय जीवन शैली और लोक कलाओं के उत्सव पर केंद्रित रहता है।

38. (1) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
राजस्थान के विभिन्न जिलों में विशिष्ट पर्यटन उत्सव आयोजित किए जाते हैं। भरतपुर में ब्रज होली महोत्सव और अलवर में मत्स्य महोत्सव स्थानीय लोक संस्कृति को उजागर करते हैं। झालावाड़ का चंद्रभागा मेला धार्मिक और व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। माउंट आबू में शरद महोत्सव का आयोजन प्राकृतिक सुंदरता और शांति के मध्य संपन्न होता है। ये सभी उत्सव राज्य की भौगोलिक विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को पर्यटकों के समक्ष अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

39. (4) लोक कलाओं को पर्यटन अर्थव्यवस्था से जोड़ने हेतु राज्य द्वारा प्रदत्त संरक्षण
मरु महोत्सव जैसे आयोजनों द्वारा पारंपरिक प्रदर्शन कलाओं का पुनरुद्धार लोक कलाओं को पर्यटन अर्थव्यवस्था से जोड़ने का एक सफल परिणाम है। राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त संरक्षण और वैश्विक मंच उपलब्ध कराने से मृतप्राय होती लोक कलाओं को नवीन जीवन प्राप्त हुआ है। इससे कलाकारों को आर्थिक संबल मिलता है और युवा पीढ़ी अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ती है। पर्यटन और संस्कृति का यह समन्वय विरासत संरक्षण और आर्थिक विकास के मध्य संतुलन स्थापित करता है।

40. (1) I, II, III, IV, और V
राजस्थान में तीज का त्योहार महिलाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हरियाली तीज श्रावण में और कजली तीज भाद्रपद मास में श्रद्धापूर्वक मनाई जाती है। बूंदी की कजली तीज अपनी भव्य सवारी हेतु प्रसिद्ध है। यह उत्सव माता पार्वती और भगवान शिव के पवित्र पुनर्मिलन का प्रतीक है, जिसमें

के लिए प्रसिद्ध है। 'नाँदणा' एक मोटा सूती कपड़ा है जिसे भील महिलाएं विशेष रूप से घाघरे के रूप में उपयोग करती हैं। ये परिधान जनजातीय कला बोध और उनकी प्रकृति से जुड़ी सौंदर्य दृष्टि का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

100. (4) 'ताराभांत की ओढ़नी' आदिवासी महिलाओं में अत्यंत लोकप्रिय है
राजस्थान की महिला वेशभूषा में 'ताराभांत की ओढ़नी' जनजातीय समुदायों, विशेष रूप से भील और मीणा महिलाओं में अत्यंत लोकप्रिय है। यह उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता का परिचायक है। पारंपरिक घाघरे में कलियों की संख्या 80 तक हो सकती है जो उसके घेराव को बढ़ाती है। लाल और पीले रंगों को सौभाग्य और मातृत्व का प्रतीक माना जाता है, न कि शोक का। ओढ़नी को सिर और शरीर पर करीने से लपेटा जाता है, जो राजस्थानी नारी की शालीनता और सौंदर्य को सुशोभित करता है।

101. (3) अधिक घेराव हेतु 80 ऊर्ध्वाधर कलियों के उपयोग से सिला गया घाघरा
प्रसिद्ध '80 कली का घाघरा' राजस्थानी परिधान निर्माण की एक विशिष्ट कला को प्रदर्शित करता है। इसका तात्पर्य यह है कि घाघरे को अत्यधिक घेराव और भव्यता प्रदान करने के लिए 80 अलग-अलग ऊर्ध्वाधर कलियों या टुकड़ों को आपस में जोड़कर सिला गया है। यह घाघरा नृत्य करते समय एक सुंदर छटा बिखेरता है और पहनने वाली महिला के व्यक्तित्व को एक राजसी गरिमा प्रदान करता है। यह लोक संस्कृति में पारंपरिक सिलाई कौशल और कला के प्रति अनुराग का एक जीवंत उदाहरण है।

102. (2) अंगरखी
राजस्थान में महिलाओं की पारंपरिक वेशभूषा में कांचली, घाघरा और ओढ़नी मुख्य रूप से सम्मिलित हैं, जो उनके पहनावे को पूर्णता प्रदान करते हैं। 'अंगरखी' मूल रूप से पुरुषों द्वारा शरीर के ऊपरी भाग में पहना जाने वाला परिधान है, यद्यपि आधुनिक काल में इसके कई रूपांतरण हुए हैं। पारंपरिक दृष्टि से कांचली और कुर्ती महिलाओं के ऊपरी परिधान रहे हैं। घाघरा और ओढ़नी के साथ इनका संयोजन राजस्थानी संस्कृति की एक विशिष्ट और वैश्विक पहचान निर्मित करता है।

103. (1) कथन I और कथन II दोनों सही हैं
राजस्थान में संतान जन्म पर पोमचा भेंट करने की एक सुदृढ़ परंपरा है। जब परिवार में पुत्र का जन्म होता है, तो प्रसूता को उसके पीहर पक्ष की ओर से 'पीला पोमचा' प्राप्त होता है, जो वंश वृद्धि और खुशहाली का प्रतीक है। इसी प्रकार, पुत्री के जन्म पर पारंपरिक रूप से 'गुलाबी पोमचा' भेजा जाता है, जो स्नेह और लाड़-प्यार को दर्शाता है। ये रंगीन ओढ़नियाँ न केवल रिश्तों की मिठास बढ़ाती हैं, बल्कि सामाजिक उत्सवों में महिलाओं की भागीदारी को भी रेखांकित करती हैं।

104. (1) मरुस्थलीय एकरसता को दूर करना और प्रतिकूल मौसम में दृश्यता बढ़ाना
थार मरुस्थल की महिलाओं द्वारा चटकीले रंगों और कांच के काम वाले वस्त्रों का प्रयोग मरुस्थलीय एकरसता और धूसर वातावरण को दूर करने का एक रचनात्मक प्रयास है। तपती रेत और धूल भरी हवाओं के मध्य ये जीवंत रंग न केवल मानसिक प्रसन्नता प्रदान करते हैं, बल्कि प्रतिकूल मौसम में दूर से दृश्यता भी बढ़ाते हैं। यह सौंदर्य बोध मरुस्थलीय निवासियों की जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टि और अपनी संस्कृति को विपरीत परिस्थितियों में भी सजीव रखने की कला को दर्शाता है।

105. (3) I, II, III, और IV
राजस्थानी महिलाओं के आभूषण उनके श्रृंगार का अनिवार्य अंग हैं जो शरीर के विभिन्न अंगों को सुशोभित करते हैं। 'बोरला' माथे या सिर का आभूषण है, जबकि 'आड़' गले में पहना जाने वाला एक भारी पारंपरिक आभूषण है। 'बाजूबंद' ऊपरी भुजाओं की सुंदरता बढ़ाता है और 'पायल' पैरों में मधुर झंकार पैदा करती है। ये सभी आभूषण न केवल सौंदर्य के कारक हैं, बल्कि ये राज्य की समृद्ध धातु कला और सांस्कृतिक विरासत के ऐतिहासिक साक्ष्यों के रूप में भी महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

106. (1) रखड़ी - माथा
राजस्थानी आभूषणों में 'रखड़ी' माथे या सिर के अग्र भाग पर पहना जाने वाला एक प्रमुख श्रृंगार है। यह सुहाग का प्रतीक माना जाता है। अन्य विकल्पों में 'टीका' भी माथे का आभूषण है, जबकि 'सुरलिया' कान में पहना जाता है और 'चूँप' का संबंध दांतों से है। अतः रखड़ी और माथे का युग्म पूर्णतः सही और प्रासंगिक है। ये आभूषण राजस्थानी महिलाओं की वेशभूषा को एक विशिष्ट पारंपरिक पहचान प्रदान करते हैं और उनकी सामाजिक स्थिति को भी दर्शाते हैं।

107. (4) गला
राजस्थान के पारंपरिक आभूषणों में 'आड़' का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह विशेष रूप से गले में पहना जाने वाला एक चौड़ा और भारी आभूषण है जिसे प्रायः राजपूत महिलाओं द्वारा मांगलिक अवसरों और विवाह के समय धारण किया जाता है। यह सोने और रत्नों की कारीगरी का एक उत्कृष्ट नमूना होता है। आड़ न केवल चेहरे की शोभा बढ़ाती है, बल्कि यह पारिवारिक प्रतिष्ठा और राजसी परंपराओं के गौरवमयी इतिहास को भी समाज के समक्ष प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है।

108. (2) यह अविवाहित कन्याओं द्वारा पैरों की उंगलियों में पहना जाता है।
'नथ' राजस्थानी महिलाओं के नाक का एक अत्यंत प्रिय और गौरवशाली आभूषण है जिसमें प्रायः कीमती रत्न, मोती या सोने की कलाकारी की जाती है। ग्रामीण समुदायों और पारंपरिक परिवारों में इसे वैवाहिक स्थिति का अनिवार्य प्रतीक माना जाता है। यह तथ्य पूर्णतः असत्य है कि नथ को अविवाहित कन्याओं द्वारा पैरों की उंगलियों में पहना जाता है। पैर की उंगलियों हेतु 'बिछिया' जैसे अलग आभूषण होते हैं, जबकि नथ केवल चेहरे के श्रृंगार और मर्यादा से संबंधित है।

बल्कि यह राजस्थान के प्रत्येक समुदाय और आम जनमानस की गहरी आस्था का प्रतीक है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में इसकी लोकप्रियता व्यापक सामाजिक भागीदारी को दर्शाती है।

51. (3) 'बिना ईसर की गवर' की विशिष्ट पूजा जैसलमेर में की जाती है
राजस्थान में गणगौर की पूजा के विविध और अनोखे क्षेत्रीय रूप प्रचलित हैं। जैसलमेर में 'बिना ईसर की गवर' की पूजा करने की एक विशिष्ट ऐतिहासिक परंपरा है जहाँ केवल माता पार्वती की सवारी निकाली जाती है। अन्य क्षेत्रों में जहाँ ईसर और गौरी दोनों की साथ पूजा होती है, वहीं जैसलमेर का यह रूप इसे सबसे अलग बनाता है। गुलाबी गणगौर नाथद्वारा में और धींगा गवर जोधपुर-उदयपुर क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान के लिए प्रसिद्ध हैं।

52. (4) गणगौर सवारी का नेतृत्व विधवा महिलाओं द्वारा किया जाना
गणगौर के रीति-रिवाजों में महिलाओं द्वारा हाथों पर मेहंदी लगाना, कलशों में जल लाना और सामूहिक रूप से लोकगीत गाना प्रमुख गतिविधियाँ हैं। यह त्योहार सौभाग्य और वैवाहिक सुख का प्रतीक है, अतः इसमें विवाहित और अविवाहित महिलाओं की सक्रिय भागीदारी अनिवार्य होती है। यह धारणा पूर्णतः असंगत है कि गणगौर की सवारी का नेतृत्व विधवा महिलाओं द्वारा किया जाता है क्योंकि यह पर्व पारंपरिक रूप से सुहाग और मंगल की कामना से गहराई से जुड़ा हुआ है।

53. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
गणगौर के विभिन्न रूपों का संबंध विशिष्ट क्षेत्रों से है। जोधपुर और उदयपुर में 'धींगा गवर' की अनूठी परंपरा है, जबकि नाथद्वारा अपनी 'गुलाबी गणगौर' के लिए विख्यात है। जैसलमेर में 'बिना ईसर की गवर' की विशिष्ट सवारी निकाली जाती है। चित्तौड़गढ़ का बस्सी गाँव ईसर-गौरी की सुंदर 'काष्ठ मूर्तियों' के निर्माण हेतु प्रसिद्ध है। ये क्षेत्रीय विविधताएं राजस्थान की सांस्कृतिक समृद्धि और शिल्प कौशल को एक ही त्योहार के विभिन्न आयामों के माध्यम से प्रदर्शित करती हैं।

54. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
गणगौर उत्सव हेतु प्रयुक्त ईसर और गौरी की कलात्मक काष्ठ मूर्तियाँ मुख्य रूप से चित्तौड़गढ़ जिले के बस्सी गाँव के दक्ष शिल्पकारों द्वारा तैयार की जाती हैं। ये मूर्तियाँ अपनी सूक्ष्मता और पारंपरिक शैली के लिए जानी जाती हैं। यह तथ्य सही है कि इन मूर्तियों का निर्माण एक महत्वपूर्ण कला है, परंतु इन्हें प्रत्येक वर्ष नया नहीं बनाया जाता बल्कि पुरानी मूर्तियों को ही श्रद्धापूर्वक पुनः रंगा और अलंकृत किया जाता है। यह परंपरा निरंतरता बनाए रखती है।

55. (4) शस्य और उर्वरता का प्रतीक उत्सव का कृषि आधारित स्वरुप
गणगौर के अवसर पर जौ के अंकुरों से सजे पात्रों में जल लाने का अनुष्ठान इस उत्सव के कृषि आधारित स्वरुप और उर्वरता की अवधारणा को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। जौ की वृद्धि को आने वाली फसल की समृद्धि का शुभ संकेत माना जाता है। यह परंपरा प्रकृति की उत्पादक शक्ति और मानव जीवन की कृषि पर निर्भरता को सम्मान देने का एक तरीका है। यह अनुष्ठान शस्य उत्सव के रूप में राजस्थान की लोक संस्कृति में गहराई से रचा-बसा है।

56. (1) मकर
मकर संक्रांति का पर्व भारतीय संस्कृति में सौर कैलेंडर पर आधारित एक महत्वपूर्ण खगोलीय घटना है। इस दिन सूर्य धनु राशि से निकलकर मकर राशि में प्रवेश करता है, जिससे उत्तरायण की अवधि प्रारंभ होती है। यह संक्रमण काल आध्यात्मिक और भौतिक दृष्टि से शुभ माना जाता है। राजस्थान में इस दिन दान-पुण्य, पवित्र स्नान और पतंगबाजी की व्यापक परंपरा है। यह त्योहार सूर्य देव की आराधना और ऋतु परिवर्तन के हर्षोल्लास का प्रतीक बनकर उभरता है।

57. (3) I, II, III, और IV
राजस्थान में होली के विभिन्न और जीवंत रूप क्षेत्रीय विविधताओं को दर्शाते हैं। करौली के श्री महावीरजी में लठमार होली, अजमेर के भिनाय में कोड़ामार होली और बाड़मेर में पत्थर मार होली की प्राचीन परंपराएं आज भी प्रचलित हैं। मेवाड़ क्षेत्र में आदिवासियों द्वारा मनाई जाने वाली भगोरिया होली अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान रखती है। ये सभी रूप होली के त्योहार को न केवल रंगों का पर्व बनाते हैं, बल्कि इसे शौर्य और लोक परंपराओं के साथ भी जोड़ते हैं।

58. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान के विभिन्न अंचलों में होली की विविध शैलियाँ प्रसिद्ध हैं। श्री महावीरजी में लठमार होली का आयोजन होता है, जबकि भिनाय अपनी कोड़ामार होली हेतु विख्यात है। बाड़मेर में पत्थर मार होली की अनोखी परंपरा निभाई जाती है। जयपुर के गोविंद देवजी मंदिर में फूलों की होली अपनी सात्विकता और भक्ति भाव के लिए पर्यटकों को आकर्षित करती है। ये क्षेत्रीय विविधताएं होली के उत्सव को एक बहुआयामी और रंगीन सामाजिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

59. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
राजस्थान में पगड़ियों के प्रकार सामाजिक अवसरों और ऋतुओं के अनुसार बदलते रहते हैं। 'मोठड़ा' शैली की पगड़ी विशेष रूप से विवाह के मांगलिक आयोजनों में पहनी जाती है, जबकि 'मदील' पगड़ी दशहरा पर्व की विशेषता है। राजस्थानी संस्कृति में श्वेत पगड़ी को सामान्यतः शोक के प्रतीक के रूप में देखा जाता है, न कि हर्ष और उल्लास के। अतः रंगों का चयन सामाजिक संदेशों और भावनाओं को अभिव्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण और पारंपरिक माध्यम माना जाता है।

60. (2) मेवाड़ और मारवाड़
होली के अवसर पर पुरुषों द्वारा किया जाने वाला ऊर्जावान 'गैर नृत्य' मुख्य रूप से मेवाड़ और मारवाड़ क्षेत्रों की एक विशिष्ट पहचान है। इस नृत्य में नर्तक लकड़ी की छड़ें लेकर एक वृत्ताकार घेरे में लयबद्ध तरीके से नृत्य करते हैं। यह नृत्य सामुदायिक एकता, शक्ति और उल्लास का प्रदर्शन

के अभियानों ने भी इन कुरीतियों के विरुद्ध एक सकारात्मक वातावरण निर्मित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

119. (4) मेवाड़
विवाह में होने वाले भारी व्यय को नियंत्रित करने और सामाजिक सुधारों को लागू करने के उद्देश्य से 'देश हितैषिणी सभा' की स्थापना 2 जुलाई 1877 को मेवाड़ (उदयपुर) में की गई थी। महाराणा सज्जन सिंह की अध्यक्षता में गठित इस सभा ने विवाह के नियमों में सुधार और बहुविवाह जैसी समस्याओं पर विचार किया था। यह राजस्थान में संगठित समाज सुधार के प्रारंभिक और सफल प्रयासों में से एक है, जिसने तत्कालीन राजपुताना की सामाजिक व्यवस्था को एक नया और सकारात्मक आयाम प्रदान किया था।

120. (1) शहरीकरण, औपचारिक अर्थव्यवस्था और जनसंचार माध्यमों का प्रभाव
ग्रामीण राजस्थान में पारंपरिक वेशभूषा के बदलते स्वरूप हेतु नगरीकरण, औपचारिक अर्थव्यवस्था का विस्तार और जनसंचार माध्यमों का तीव्र प्रभाव मुख्य रुप से उत्तरदायी है। आधुनिक जीवनशैली और वैश्विक फैशन के बढ़ते प्रभाव के कारण युवा पीढ़ी अब पारंपरिक पोशाकों के स्थान पर आधुनिक वस्त्रों को अधिक प्राथमिकता दे रही है। इसके साथ ही, कार्यस्थलों की आवश्यकताओं और सहजता की तलाश ने भी पहनावे के इस संक्रमण को गति दी है। यह परिवर्तन राज्य की बदलती सामाजिक-आर्थिक वास्तविकता का एक स्पष्ट प्रतिबिंब है।

किया जाता था। यह व्यवस्था आर्थिक रूप से कम खर्चीली थी और संकटग्रस्त महिलाओं को एक नया जीवन साथी चुनने का विकल्प और सुरक्षा प्रदान करने का कार्य करती थी।

71. (4) विद्यारंभ
पारंपरिक हिंदू संस्कारों में गर्भाधान, पुंसवन और सीमन्तोन्नयन को जन्म-पूर्व संस्कारों की श्रेणी में रखा जाता है जो शिशु के गर्भ में विकास और माता के कल्याण हेतु किए जाते हैं। इसके विपरीत, 'विद्यारंभ' संस्कार बालक के औपचारिक शिक्षण के प्रारंभ का सूचक है जो जन्म के कई वर्षों पश्चात संपन्न होता है। यह संस्कार बालक की बौद्धिक यात्रा की शुरुआत का प्रतीक है और ज्ञान के प्रति समर्पण की भावना को रेखांकित करता है, जो जन्म-पूर्व की श्रेणी से पृथक है।

72. (1) विवाह के अनुष्ठानों का वस्तुकरण (Commodification)
'कन्यादान' जैसे पवित्र धार्मिक अनुष्ठान का आधुनिक काल में 'दहेज' की विवशकारी मांग में बदल जाना विवाह के अनुष्ठानों के वस्तुकरण का एक गंभीर उदाहरण है। जहाँ कन्यादान का मूल अर्थ माता-पिता द्वारा पुत्री का स्नेहपूर्वक समर्पण था, वहीं अब यह वित्तीय लेन-देन और भौतिक प्रदर्शन का साधन बन गया है। यह परिवर्तन सामाजिक मूल्यों के पतन और मानवीय संवेदनाओं पर आर्थिक स्वार्थ के हावी होने को दर्शाता है, जो समाज की स्वस्थ परंपराओं के लिए एक बड़ी चुनौती है।

73. (3) केवल I और II
राजस्थान की ऐतिहासिक सती प्रथा में विधवाएं अपने मृत पति की चिता पर आत्मदाह कर लेती थीं। मध्यकालीन राजपूत समाज में इसे पतिव्रत धर्म, कुल की मर्यादा और व्यक्तिगत सम्मान का प्रतीक माना जाता था। यद्यपि यह प्रथा सामाजिक गौरव से जुड़ी थी, परंतु मानवतावादी दृष्टिकोण से यह अत्यंत क्रूर थी। ब्रिटिश शासन के दौरान 1829 में राजा राममोहन राय के प्रयासों से कानून बनाकर इसे पूर्णतः प्रतिबंधित करने का ऐतिहासिक कार्य किया गया था।

74. (1) देवराला
राजस्थान के सीकर जिले के देवराला गाँव में 1987 में रूप कंवर के आत्मदाह की दुखद घटना ने संपूर्ण राष्ट्र को झकझोर दिया था। इस घटना के पश्चात सती प्रथा के विरुद्ध व्यापक जनाक्रोश उत्पन्न हुआ, जिसके परिणामस्वरूप राज्य और केंद्र सरकार ने अत्यंत कड़े कानूनी कदम उठाए। इसके बाद ही सती (निवारण) अधिनियम प्रभावी हुआ, जिसने न केवल सती होने को बल्कि इसके किसी भी प्रकार के महिमामंडन को एक गैर-जमानती और गंभीर अपराध की श्रेणी में डाल दिया।

75. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
सती (निवारण) अधिनियम 1987 देवराला कांड की प्रतिक्रिया स्वरूप लागू किया गया एक अत्यंत प्रभावशाली कानून है। यह अधिनियम न केवल सती होने के प्रयास को दंडित करता है, बल्कि सती का महिमामंडन करने वाली किसी भी गतिविधि या मंदिर निर्माण को भी गंभीर अपराध मानता है। अतः यह कहना कि यह महिमामंडन को दंडित नहीं करता, पूर्णतः गलत है। कानून का मुख्य उद्देश्य इस अमानवीय प्रथा की जड़ों को काटकर समाज में वैज्ञानिक और मानवतावादी सोच को बढ़ावा देना है।

76. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान में विभिन्न जातियों की आराध्य देवियों के मंदिर ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व रखते हैं। झुंझुनूं में स्थित रानी सती का मंदिर विश्व भर में प्रसिद्ध है, जबकि अलवर में नारायणी माता का पवित्र स्थान है। जोधपुर के निकट ओसियां में सच्चियाय माता का प्राचीन मंदिर ओसवाल समाज की कुलदेवी के रूप में पूजा जाता है। बीकानेर के देशनोक में करणी माता का मंदिर चूहों के लिए विशेष रूप से विख्यात है। ये स्थल धार्मिक आस्था के प्रमुख केंद्र हैं।

77. (3) युद्ध काल में मान-मर्यादा की रक्षा और विधवाओं की असुरक्षा
मध्यकालीन राजस्थान में सती प्रथा के व्यापक प्रचलन का प्रमुख कारण युद्ध काल में महिलाओं की सुरक्षा और कुल की मान-मर्यादा की रक्षा करना था। शत्रु सेना द्वारा पराजय की स्थिति में महिलाओं को दासता, अपमान और अनैतिक परिस्थितियों का भय रहता था। ऐसे में स्वयं को अग्नि के समर्पित कर देना उन्होंने अधिक गौरवपूर्ण समझा। यह प्रथा उस काल की कठिन राजनीतिक परिस्थितियों और सामाजिक मर्यादाओं के मध्य उपजी एक सुरक्षात्मक और चरम धार्मिक प्रतिक्रिया का स्वरूप थी।

78. (4) 'महा सती' विशेष रूप से उस कन्या को कहा जाता था जिसने विवाह से पूर्व सती का कार्य किया हो।
सती प्रथा से जुड़ी शब्दावली में पति के साथ चिता पर जलने को 'सह-मरण' और पति की किसी निशानी के साथ जलने को 'अनु-मरण' कहा जाता था। 'महा सती' उन महिलाओं को कहा जाता था जिन्होंने विशेष त्याग किया हो। यह तथ्य असत्य है कि 'महा सती' केवल अविवाहित कन्याओं हेतु प्रयुक्त शब्द था। वास्तव में, इन महिलाओं के सम्मान में 'सती स्तंभ' निर्मित किए जाते थे जो आज भी राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में ऐतिहासिक साक्ष्यों के रूप में विद्यमान हैं।

79. (1) कुल की शुचिता की रक्षा और दासता से बचाव
मध्यकालीन राजपूताना की मर्यादा संहिता ने महिलाओं के त्याग और बलिदान को सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ जोड़ा था, जो मूलतः कुल की शुचिता और बाहरी दासता से बचाव की चिंता पर आधारित थी। युद्धों के अनिश्चित परिणामों के मध्य अपनी गरिमा बनाए रखने हेतु महिलाओं ने इन कठिन मार्गों को चुना। यह दर्शन व्यक्तिगत जीवन से अधिक वंश की पवित्रता और गौरव को प्राथमिकता देता था, जिससे सती और जौहर जैसी परंपराओं को समाज में व्यापक स्वीकृति और सम्मान प्राप्त हुआ।

80. (2) स्थानीय शासकों और प्रजामंडल नेताओं ने सक्रिय रूप से इसके उन्मूलन हेतु प्रयास किए।
सती प्रथा के उन्मूलन में राजस्थान के प्रारंभिक समाज सुधारकों और प्रजामंडल के नेताओं ने अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने इन अमानवीय अनुष्ठानों के विरुद्ध जनमत तैयार

करता है। भील समुदाय में इसकी विशेष लोकप्रियता है और यह मरुस्थलीय एवं पहाड़ी क्षेत्रों की लोक संस्कृति को एक सतरंगी और गतिशील स्वरूप प्रदान करता है।

61. (3) शीतकाल में सूर्य की धूप ग्रहण कर विटामिन D प्राप्त करना
राजस्थान में मकर संक्रांति पर पतंगबाजी की परंपरा का एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक आधार शीतकाल में सूर्य की सीधी धूप ग्रहण करना है। खुले मैदानों या छतों पर पतंग उड़ाते समय शरीर को पर्याप्त मात्रा में विटामिन D प्राप्त होता है जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। इसके अतिरिक्त, यह सामाजिक मेल-मिलाप और मनोरंजन का भी एक सशक्त माध्यम है। पतंगों का आकाश में लहराना नई उमंग और ऊँची उड़ान के मानवीय संकल्प का प्रतीक माना जाता है।

62. (4) कथन I गलत है लेकिन कथन II सही है
राजस्थान में होली का उत्सव 'धुलंडी' के साथ रंगों के खेल और चंग की थाप पर गाए जाने वाले लोकगीतों के लिए जाना जाता है। 'फाग' लोक गीत विशेष रूप से फाल्गुन मास में होली के अवसर पर ही गाए जाते हैं, न कि दीपावली पर। ये गीत ऋतु परिवर्तन और बसंत के उल्लास को स्वर देते हैं। लोक गायन और वादन की यह सामूहिक परंपरा सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक जीवंतता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

63. (1) अस्थाई सामाजिक समानता द्वारा 'सामाजिक सुरक्षा वाल्व' के रूप में कार्य करना
होली के अवसर पर जातीय बंधनों और सामाजिक पदानुक्रम की अस्थाई शिथिलता एक 'सामाजिक सुरक्षा वाल्व' की तरह कार्य करती है। यह समाज के विभिन्न वर्गों को अपनी कुंठाओं को त्याग कर प्रेम और भाईचारे के साथ मिलने का अवसर प्रदान करती है। यद्यपि यह जाति व्यवस्था का स्थाई उन्मूलन नहीं करती, परंतु यह अस्थाई समानता सामुदायिक तनावों को कम करने और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने में अत्यंत सहायक सिद्ध होती है। यह उत्सव समरसता का संदेश देता है।

64. (1) B, D, A, C
हिंदू धर्म के पारंपरिक संस्कारों का क्रम जीवन के आरंभिक चरणों को व्यवस्थित करता है। सर्वप्रथम 'गर्भाधान' द्वारा जीवन की नींव रखी जाती है, जिसके पश्चात संतान के कल्याण हेतु 'पुंसवन' संस्कार किया जाता है। शिशु के जन्म लेने पर 'जातकर्म' की रस्म निभाई जाती है जिसमें पिता द्वारा शिशु का स्वागत किया जाता है। अंत में एक निश्चित अवधि के पश्चात 'नामकरण' संस्कार के माध्यम से शिशु को उसकी पहचान और संज्ञा प्रदान की जाती है।

65. (1) A-iii, B-ii, C-i, D-iv
राजस्थान के विवाह अनुष्ठान सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हैं। 'बिंदोली' विवाह से पूर्व वर-वधू का निकाला जाने वाला एक उत्सवपूर्ण जुलूस है। 'तोरण मारना' वर द्वारा वधू के द्वार पर अपनी विजय और शौर्य प्रदर्शित करने का एक प्रतीकात्मक कृत्य है। 'सामेला' के अंतर्गत वधू पक्ष बारात का औपचारिक स्वागत करता है, जबकि 'कन्यादान' में अभिभावक अपनी पुत्री को वर को सौंपते हैं। ये रस्में पारिवारिक बंधनों और सामाजिक मर्यादाओं को अत्यंत भावनात्मक ढंग से जीवंत करती हैं।

66. (1) मृत्यु के 12वें दिन आयोजित सामूहिक भोज
राजस्थान के ग्रामीण समाज में 'मोसर' अथवा 'नुक्ता' मृत्यु के पश्चात 12वें दिन आयोजित किया जाने वाला एक सामूहिक भोज है। यह मृतक की आत्मा की शांति और परिवार के सामाजिक कर्तव्यों की पूर्ति हेतु आयोजित किया जाता है। प्राचीन काल से चली आ रही यह परंपरा शोक की समाप्ति और जीवन की निरंतरता को दर्शाती है। यद्यपि वर्तमान में अपव्यय रोकने हेतु इसके प्रति दृष्टिकोण बदला है, परंतु इसका सामाजिक और ऐतिहासिक महत्व अब भी बना हुआ है।

67. (3) I, II, III, और IV
राजस्थान में विवाह समारोह के दौरान कंकणडोरा, पहरावनी, हथलेवा और फेरे जैसे महत्वपूर्ण अनुष्ठान संपन्न किए जाते हैं। 'कंकणडोरा' सुरक्षा का प्रतीक है, जबकि 'हथलेवा' और 'फेरे' वर-वधू के सात जन्मों के अटूट बंधन की धार्मिक पुष्टि करते हैं। 'पहरावनी' अतिथियों को विदा करने की एक सम्मानजनक रस्म है। इसके विपरीत, 'जडूला' या मुंडन संस्कार एक जन्म संबंधी अनुष्ठान है, जो प्रायः देव स्थान पर संपन्न होता है और इसका विवाह की औपचारिक रस्मों से संबंध नहीं है।

68. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान सरकार ने 1960 में 'मृत्यु भोज निवारण अधिनियम' पारित किया था, जिसका उद्देश्य मोसर जैसी कुरीतियों पर अंकुश लगाना था। ऐतिहासिक रूप से यह देखा गया कि निर्धन ग्रामीण परिवार सामाजिक दबाव के कारण भारी मृत्यु भोज आयोजित करते थे, जिससे वे जीवन भर कर्ज के जाल में दबे रहते थे। यह कानून समाज सुधार की दिशा में एक प्रगतिशील कदम था जिसने आर्थिक शोषण को रोकने और तार्किक सामाजिक व्यवहार को बढ़ावा देने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है।

69. (3) बालक का प्रथम बार किया जाने वाला मुंडन, जो प्रायः इष्ट देव के समक्ष होता है
राजस्थान में 'जडूला' संस्कार बालक के जन्म के पश्चात प्रथम बार किए जाने वाले मुंडन का धार्मिक अनुष्ठान है। यह संस्कार सामान्यतः परिवार के इष्ट देव या किसी कुलदेवी के मंदिर में श्रद्धापूर्वक संपन्न किया जाता है। मान्यता है कि इससे बालक के जन्म के समय के अशुद्ध केश उतर जाते हैं और उसे दीर्घायु एवं बुद्धि प्राप्त होती है। यह हिंदुओं के 16 संस्कारों में से एक महत्वपूर्ण चरण है जो बालक के शारीरिक और आध्यात्मिक विकास से जुड़ा है।

70. (2) एक महिला को औपचारिक विवाह के बिना अन्य पुरुष के साथ रहने की स्वीकृति
ग्रामीण राजस्थान के ऐतिहासिक सामाजिक ढांचे में 'नाता प्रथा' एक ऐसी व्यवस्था थी जिसने महिलाओं को औपचारिक विवाह विच्छेद के बिना किसी अन्य पुरुष के साथ रहने की सामाजिक स्वीकृति प्रदान की थी। यह प्रथा विशेष रूप से उन समाजों में प्रचलित थी जहाँ विधवा विवाह को सहज स्वीकार नहीं

90. (1) A-iii, B-i, C-ii, D-iv
राजस्थान की विभिन्न रियासतों में पगड़ी बांधने की विशिष्ट शैलियाँ उनके गौरव का प्रतीक थीं। मेवाड़ के सलूंबर क्षेत्र में 'चूंडावत शाही' पगड़ी प्रचलित थी, जबकि मारवाड़ के जोधपुर में 'जसवंत शाही' और 'राठौरी' पगड़ियों का प्रभुत्व था। जयपुर अपनी सुंदर 'राजशाही' पगड़ी के लिए प्रसिद्ध था। ये शैलियाँ व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और क्षेत्रीय पहचान को स्पष्ट करती थीं। पगड़ी की बनावट और उसका रंग ऐतिहासिक रूप से व्यक्ति के कुल और मर्यादा का परिचायक माना जाता था।

91. (4) I, II, III, IV, और V
राजस्थान में पुरुषों द्वारा अंगरखी के विभिन्न रूपों के रूप में बुकतरी, अचकन, आत्मसुख, चोगा और जामा जैसे परिधान धारण किए जाते हैं। 'अंगरखी' मूलतः शरीर की रक्षा करने वाला परिधान है जिसके विविध डिजाइन सामाजिक अवसरों के अनुसार बदलते रहते हैं। 'अत्मसुख' विशेष रूप से शीतकाल में पहना जाने वाला आरामदायक वस्त्र है, जबकि 'जामा' और 'चोगा' राजकीय समारोहों की शोभा बढ़ाते थे। ये सभी वस्त्र राजस्थानी सिलाई कला और सुरुचिपूर्ण पहनावे के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

92. (2) शीतकाल में ऊपरी शरीर पर ओढ़ा जाने वाला मोटा सूती शॉल
राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में 'पछेवड़ा' या 'खेस' एक अत्यंत महत्वपूर्ण और बहुउपयोगी वस्त्र है। यह मुख्य रूप से शीतकाल में शरीर के ऊपरी भाग को ढकने के लिए ओढ़ा जाने वाला एक मोटा सूती या ऊनी शॉल होता है। यह किसानों और पशुपालकों को कड़ाके की ठंड से सुरक्षा प्रदान करता है। इसकी बुनाई और डिजाइन स्थानीय शिल्प का प्रदर्शन करते हैं। साधारण दिखने वाला यह वस्त्र ग्रामीण जीवन की कठोर परिस्थितियों में सहजता और ऊष्मा प्रदान करने का कार्य करता है।

93. (3) पारंपरिक धोती सदैव जेब और बटन के साथ सिली जाती है।
राजस्थानी पुरुषों की पारंपरिक 'धोती' कपड़े का एक लंबा और बिना सिला हुआ टुकड़ा है जिसे अत्यंत कुशलता के साथ कमर पर लपेटा जाता है। इसे सामान्यतः अंगरखी के साथ पहना जाता है और इसकी लंबाई एवं बांधने की शैली विभिन्न क्षेत्रों और जातियों की पहचान को उजागर करती है। यह पूर्णतः असत्य है कि पारंपरिक धोती में जेब या बटन सिले होते हैं क्योंकि इसकी मूल बनावट सिलाई रहित होती है, जो इसे सरल, पारंपरिक और आरामदायक बनाती है।

94. (4) पगड़ी लंबी और कम चौड़ी होती है, जबकि साफा अधिक चौड़ा और छोटा होता है
राजस्थानी शिरोभूषण में 'पगड़ी' और 'साफे' के मध्य स्पष्ट अंतर होता है। पगड़ी की लंबाई अधिक और चौड़ाई बहुत कम होती है, जिससे उसे बांधने में काफी समय और निपुणता की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, 'साफा' अधिक चौड़ा और लंबाई में अपेक्षाकृत छोटा होता है जिसे बांधना सरल होता है। साफा आधुनिक समय में अधिक लोकप्रिय हुआ है, जबकि पगड़ी पुरानी राजसी परंपराओं का हिस्सा रही है। दोनों ही परिधान राजस्थानी मान-मर्यादा और आन-बान के श्रेष्ठ प्रतीक हैं।

95. (4) गैर नृत्य पारंपरिक रूप से केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है।
राजस्थान में होली के विविध रूपों में इलोजी की पूजा संतान प्राप्ति की लोक मान्यता से जुड़ी है, जो पश्चिमी राजस्थान में प्रचलित है। होलिका दहन का पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय के शाश्वत संदेश को पुनर्जीवित करता है और 'फाग' गीतों के माध्यम से वसंत का स्वागत किया जाता है। 'गैर नृत्य' के संबंध में यह तथ्य असत्य है कि यह केवल महिलाओं द्वारा किया जाता है क्योंकि यह पारंपरिक रूप से पुरुषों द्वारा प्रदर्शित एक शौर्यपूर्ण नृत्य है।

96. (2) पोत्या
राजस्थान के ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष रूप से कृषकों और आदिवासियों द्वारा सिर पर बांधा जाने वाला साधारण कपड़े का टुकड़ा 'पोत्या' कहलाता है। यह औपचारिक पगड़ी की तुलना में बांधने में सरल और व्यावहारिक होता है, जो कड़ी धूप में कार्य करते समय सिर की रक्षा करता है। यह साधारण परिधान जनजातीय समाज की सादगी और उनकी जीवनशैली के अनुकूल आवश्यकताओं को दर्शाता है। यह राज्य की विविध शिरोभूषण परंपरा का एक महत्वपूर्ण और सहज हिस्सा माना जाता है।

97. (2) I, II, और III
राजस्थानी महिलाओं द्वारा प्रयुक्त ओढ़नियों में पीला, पोमचा और चुनरी अपनी आकर्षक रंगाई तकनीकों हेतु प्रसिद्ध हैं। ये सभी ओढ़नियाँ मुख्य रूप से 'बंधेज' या 'टाई एंड डाई' की कलात्मक पद्धति से तैयार की जाती हैं। बंधेज कला के अंतर्गत कपड़े को धागे से बांधकर विभिन्न सुंदर रूपांकन बनाए जाते हैं। ये रंगीन परिधान न केवल सौंदर्य बढ़ाते हैं, बल्कि विभिन्न सामाजिक और मांगलिक अवसरों पर अपनी विशिष्ट रंग योजना के माध्यम से सांस्कृतिक संदेशों का संप्रेषण भी करते हैं।

98. (1) कांचली अंत:चोली है, जबकि कुर्ती उसके ऊपर पहना जाने वाला परिधान है
राजस्थानी महिला वेशभूषा में 'कांचली' और 'कुर्ती' के मध्य अंतर उनके पहनने के क्रम पर आधारित है। 'कांचली' बाहों वाली एक अंत:चोली होती है जिसे सीधे शरीर पर पहना जाता है। इसके विपरीत, 'कुर्ती' बिना बाहों वाला परिधान है जिसे कांचली के ऊपर धारण किया जाता है। ये दोनों मिलकर शरीर के ऊपरी भाग को पूर्णता प्रदान करते हैं। यह द्वि-स्तरीय पहनावा न केवल शालीनता प्रदान करता है, बल्कि मरुस्थलीय जलवायु में गर्मी से बचाव और शारीरिक आराम हेतु भी अत्यंत उपयुक्त है।

99. (1) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
जनजातीय महिलाओं की ओढ़नियों में विविध कलात्मक पैटर्न उनकी पहचान का आधार हैं। 'ताराभांत की ओढ़नी' में तारों जैसे और 'ज्वारभांत' में ज्वार के दानों जैसे छोटे रूपांकन होते हैं। 'कैरीभांत की ओढ़नी' आम या कैरी के कलात्मक डिजाइन

किया और स्थानीय शासकों को इस पर प्रतिबंध लगाने हेतु प्रेरित किया। इन प्रयासों के फलस्वरूप कई रियासतों ने ब्रिटिश काल के दौरान ही सती प्रथा को अवैध घोषित करना प्रारंभ कर दिया था। यह सुधार आंदोलन रुढ़िवादी सामाजिक मान्यताओं के विरुद्ध एक तार्किक और प्रगतिशील संघर्ष का परिणाम था।

81. (1) B, C, A, D
राजस्थान के इतिहास में जौहर की घटनाएं वीरता का गौरवपूर्ण अध्याय हैं। सर्वप्रथम 1301 में रणथंभौर में रानी रंगदेवी के नेतृत्व में जौहर हुआ। इसके पश्चात 1303 में चित्तौड़गढ़ में रानी पद्मिनी का विख्यात जौहर संपन्न हुआ। 1534-35 में रानी कर्मावती ने चित्तौड़ के दूसरे शाके के समय जौहर का नेतृत्व किया। अंततः 1567-68 में अकबर के आक्रमण पर फूल कंवर के नेतृत्व में चित्तौड़गढ़ का तीसरा और अंतिम जौहर हुआ। यह क्रम राजस्थान के अदम्य साहस को दर्शाता है।

82. (1) केवल I, II, और III
चित्तौड़गढ़ दुर्ग के तीन शाके इतिहास में अमर हैं। प्रथम शाका 1303 में रानी पद्मिनी के नेतृत्व में हुआ, जबकि द्वितीय शाका 1534-35 में रानी कर्मावती के नेतृत्व में गुजरात के सुल्तान के आक्रमण के विरुद्ध हुआ। तृतीय शाका 1567-68 में अकबर की घेराबंदी के दौरान हुआ जिसका नेतृत्व जयमल और फत्ता की वीरता एवं फूल कंवर के जौहर द्वारा रेखांकित है। यह कहना गलत है कि तृतीय जौहर का नेतृत्व रानी पद्मिनी ने किया था क्योंकि वे प्रथम शाके से संबंधित थीं।

83. (3) महिलाओं द्वारा जौहर और पुरुषों द्वारा केसरिया किया जाता है
मध्यकालीन राजस्थान में 'शाका' उस चरम स्थिति का प्रतीक है जब विजय की संभावना समाप्त हो जाती थी। इसमें दो महत्वपूर्ण चरण होते थे: प्रथम, महिलाओं द्वारा अपनी गरिमा की रक्षा हेतु किया जाने वाला 'जौहर' और द्वितीय, पुरुषों द्वारा मृत्यु को गले लगाने हेतु किया जाने वाला 'केसरिया'। जब ये दोनों अनुष्ठान पूर्ण होते थे, तो उसे 'पूर्ण शाका' कहा जाता था। यह शत्रु को पूर्णतः पराजित करने या स्वयं को गौरवपूर्ण अंत समर्पित करने का एक अद्वितीय रणकौशल था।

84. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
दुर्ग की घेराबंदी के समय जब पराजय निश्चित हो जाती थी, तब राजपूत महिलाओं ने शत्रु की दासता और संभावित अपमान के स्थान पर अग्नि द्वारा स्वयं को समाप्त करना अर्थात 'जौहर' चुनना श्रेयस्कर समझा। उनके लिए शारीरिक मृत्यु कुल के सम्मान और पवित्रता की रक्षा का एकमात्र मार्ग थी। यह निर्णय अदम्य साहस और बलिदान की पराकाष्ठा था, जिसने इतिहास में उन्हें अमर बना दिया। इसी दृढ़ संकल्प के कारण जौहर और केसरिया राजपूताना के गौरव के अमिट प्रतीक बन गए।

85. (3) 1301 में रणथंभौर में आयोजित 'जल जौहर'।
राजस्थान के इतिहास में दर्ज प्रथम जौहर 1301 ईस्वी में रणथंभौर दुर्ग में हुआ था। अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय हम्मीर देव चौहान की पत्नी रानी रंगदेवी ने अपनी पुत्री के साथ त्रिनेत्र गणेश मंदिर के समीप स्थित पदमला तालाब में 'जल जौहर' किया था। यह घटना राजपूताना के त्याग और बलिदान की महान परंपरा का सूत्रपात मानी जाती है। अन्य दुर्गों के जौहर इस घटना के पश्चात विभिन्न कालों में बाह्य आक्रमणकारियों के विरुद्ध प्रतिरोध के रूप में घटित हुए थे।

86. (2) जैसलमेर
'अर्ध शाका' की अद्वितीय ऐतिहासिक घटना जैसलमेर रियासत में घटित हुई थी। यह राव लूणकरण के शासनकाल में कंधार के अमीर अली के आक्रमण के समय हुआ था। इस युद्ध में राजपूत पुरुषों ने वीरतापूर्वक केसरिया वस्त्र धारण कर युद्ध किया था, परंतु अप्रत्याशित परिस्थितियों और समय के अभाव के कारण महिलाएं जौहर नहीं कर सकी थीं। इतिहास में यह घटना अपनी विशिष्टता के कारण प्रसिद्ध है क्योंकि यहाँ केवल आधा शाका ही संपन्न हो सका था, जो वीरता की एक अलग गाथा है।

87. (4) शत्रु को विजय के लाभ से वंचित करने और मनोवैज्ञानिक प्रतिरोध का चरम रुप
मध्यकालीन राजस्थान में जौहर और शाका की परंपरा वैचारिक रूप से शत्रु को विजय के लाभ से वंचित करने का एक मनोवैज्ञानिक और सामरिक प्रतिरोध का चरम रुप थी। महिलाओं द्वारा आत्मदाह और पुरुषों द्वारा मृत्यु पर्यन्त युद्ध करने से शत्रु को केवल एक रिक्त दुर्ग और शव प्राप्त होते थे, न कि धन या दास। यह बलिदान शत्रु के अहंकार को तोड़ने और भावी पीढ़ियों के लिए स्वतंत्रता की लौ जलाए रखने का एक सशक्त और प्रभावशाली संदेश प्रदान करता था।

88. (1) शाका केवल शांति काल में देवताओं को प्रसन्न करने हेतु किया जाने वाला अनुष्ठान था।
शाका कोई शांतिपूर्ण अनुष्ठान नहीं था, बल्कि यह युद्ध के अंतिम क्षणों का एक अत्यंत भीषण और वीरतापूर्ण कृत्य था। इसमें 'केसरिया' करने वाले पुरुष अपने जीवन की आशा त्याग कर शत्रु को अधिकतम क्षति पहुँचाने के उद्देश्य से रणभूमि में उतरते थे। 'पूर्ण शाका' में जौहर और केसरिया दोनों का होना अनिवार्य था। यह धारणा असत्य है कि यह केवल देवताओं को प्रसन्न करने हेतु किया जाता था क्योंकि इसका मूल उद्देश्य केवल अपनी मान-मर्यादा की रक्षा करना और आत्मसमर्पण से बचना था।

89. (2) पगड़ी → अंगरखी → कमरबंद → धोती
राजस्थान में पुरुषों के पारंपरिक पहनावे का सिर से पैर तक का सही क्रम उनकी सांस्कृतिक विशिष्टता को दर्शाता है। सर्वप्रथम सिर पर 'पगड़ी' या 'साफा' धारण किया जाता है जो सम्मान का प्रतीक है। शरीर के ऊपरी भाग में 'अंगरखी' या 'कुर्ता' पहना जाता है, जिसके साथ कमर पर 'कमरबंद' बांधने की परंपरा रही है। निचले शरीर के लिए 'धोती' या 'पायजामा' मुख्य परिधान है और अंत में पैरों की सुरक्षा हेतु पारंपरिक चमड़े की 'जूती' पहनी जाती है।

109. (3) ऊपरी भुजा
'बाजूबंद' शरीर के ऊपरी भुजा वाले भाग का एक अत्यंत आकर्षक आभूषण है जो बाजू की गोलाई को सुशोभित करता है। यह प्रायः सोने या चांदी से निर्मित होता है और इसमें सुंदर नक्काशी या मीनाकारी की जाती है। इसे बांधने हेतु अक्सर रेशमी डोरियों का उपयोग होता है जो पहनने में सुलभता प्रदान करती हैं। यह आभूषण राजस्थानी लोक संस्कृति और पारंपरिक पहनावे का एक अभिन्न हिस्सा है, जो नारी के शौर्य और सौंदर्य के अद्भुत संगम को प्रभावशाली ढंग से प्रदर्शित करता है।

110. (4) विशिष्ट नसों पर दबाव द्वारा स्वास्थ्य लाभ
विवाहित महिलाओं द्वारा 'बिछिया' और 'पायल' धारण करने के पीछे वैज्ञानिक और आयुर्वेद आधारित स्थानीय मान्यताएं प्रचलित हैं। माना जाता है कि पैरों की विशिष्ट नसों पर इन आभूषणों द्वारा निरंतर दबाव पड़ने से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होता है और प्रजनन प्रणाली सुदृढ़ रहती है। इसके अतिरिक्त, इनकी मधुर ध्वनि घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती है। यह परंपरा सौंदर्य बोध के साथ-साथ प्राचीन ज्ञान और शारीरिक कल्याण के मध्य गहरे संबंध को अत्यंत सुंदरता से रेखांकित करती है।

111. (1) सुरलिया
राजस्थानी आभूषणों की श्रेणी में 'सुरलिया' एक विशिष्ट आभूषण है जिसे कानों में पहना जाता है। यह अपनी बनावट और पारंपरिक शैली के कारण ग्रामीण महिलाओं में विशेष रूप से लोकप्रिय है। इसके विपरीत, तिमनिया, हमेल और मादलिया सभी गले में पहने जाने वाले आभूषणों के विविध रूप हैं जो छाती के ऊपरी भाग तक लटकते हैं। सुरलिया का चयन कानों के श्रृंगार को पूर्णता प्रदान करता है और यह स्थानीय कला कौशल का एक उत्कृष्ट एवं कलात्मक उदाहरण प्रस्तुत करता है।

112. (2) दांत
'चूँप' और 'रखण' राजस्थान की एक बहुत ही अनोखी आभूषण परंपरा का प्रतिनिधित्व करते हैं जो दांतों से संबंधित है। 'चूँप' में दांत के मध्य में सोने की एक छोटी कील जड़वाई जाती है, जबकि 'रखण' में पूरे दांत पर सोने या चांदी का खोल चढ़ाया जाता है। यह श्रृंगार न केवल व्यक्ति की आर्थिक स्थिति को दर्शाता है, बल्कि यह मुस्कुराहट की सुंदरता बढ़ाने की एक प्राचीन कला भी है। यह परंपरा आज भी कुछ विशिष्ट समुदायों में बड़े गर्व के साथ निभाई जाती है।

113. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
'ठुस्सी' और 'कांठी' राजस्थानी महिलाओं द्वारा गले में पहने जाने वाले प्रमुख और कलात्मक आभूषण हैं जो उनके श्रृंगार को भव्यता प्रदान करते हैं। दूसरी ओर, यह कहना पूर्णतः गलत है कि सभी जातियों की महिलाओं हेतु पैरों में स्वर्ण आभूषण पहनना अनिवार्य है। वास्तव में, पारंपरिक रूप से पैरों में केवल चांदी के आभूषण पहनने का प्रचलन रहा है और स्वर्ण को केवल कमर से ऊपर के अंगों हेतु ही आरक्षित रखा जाता था। यह सामाजिक मर्यादा और शुचिता का विषय माना जाता था।

114. (1) तगड़ी
राजस्थानी महिलाओं के आभूषणों में नेवरी, हिरणामैन और आँवला सभी पैरों या टखनों में पहने जाने वाले श्रृंगार हैं जो चलने पर मधुर ध्वनि उत्पन्न करते हैं। इसके विपरीत, 'तगड़ी' कमर में पहना जाने वाला एक प्रमुख आभूषण है जो कमर की शोभा बढ़ाने के साथ-साथ ओढ़नी को यथास्थान बनाए रखने में भी सहायक होता है। तगड़ी का पैरों के आभूषणों से कोई सीधा संबंध नहीं है। यह कमर के घेरे को एक सुव्यवस्थित और अलंकृत स्वरूप प्रदान करने का कार्य करती है।

115. (3) I, II, III, IV और V
राजस्थान में सामाजिक सुधारों का इतिहास अत्यंत समृद्ध है। 1929 का शारदा अधिनियम बाल विवाह रोकने हेतु महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा और देश हितैषिणी सभा ने विवाह में होने वाले अपव्यय और दहेज जैसी कुप्रथाओं के विरुद्ध प्रभावी नियमन किया। मृत्यु भोज निवारण अधिनियम और 1987 का सती (निवारण) अधिनियम भी इसी दिशा में क्रांतिकारी कदम थे। ये सभी विधिक और सामाजिक प्रयास राज्य में आधुनिक मूल्यों और मानवीय गरिमा की स्थापना हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध हुए हैं।

116. (4) विवाह में फिजूलखर्ची और बाल विवाह पर अंकुश लगाना
वाल्टरकृत राजपूत हितकारिणी सभा की स्थापना का मुख्य उद्देश्य राजपूत समाज में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों जैसे विवाह में होने वाली अत्यधिक फिजूलखर्ची और बाल विवाह पर प्रभावी अंकुश लगाना था। कर्नल वाल्टर के प्रयासों से गठित इस सभा ने विवाह व्यय की सीमाएं निर्धारित कीं ताकि निर्धन परिवार कर्ज के बोझ से बच सकें। यह सुधार आंदोलन पारंपरिक समाज को आधुनिक बनाने और आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों को सामाजिक दबाव से राहत दिलाने की दिशा में एक अत्यंत दूरदर्शी कदम था।

117. (3) अजमेर
'शारदा अधिनियम' के मुख्य प्रणेता और प्रसिद्ध समाज सुधारक हरबिलास शारदा राजस्थान के ऐतिहासिक नगर अजमेर से संबंधित थे। उन्होंने बाल विवाह जैसी कुप्रथा के विरुद्ध निरंतर संघर्ष किया जिसके परिणामस्वरूप 1929 में यह ऐतिहासिक कानून पारित हुआ। इस अधिनियम ने विवाह हेतु लड़के और लड़कियों की न्यूनतम आयु निर्धारित कर भारतीय समाज को एक नई दिशा प्रदान की। अजमेर की इस पावन भूमि से उपजे उनके विचारों ने संपूर्ण राष्ट्र में सामाजिक चेतना के प्रसार में अविस्मरणीय योगदान दिया है।

118. (2) साक्षरता में वृद्धि, आधुनिकीकरण और विधिक जागरूकता
आधुनिक राजस्थान के ग्रामीण अंचलों में नाता प्रथा और मृत्यु भोज जैसी सदियों पुरानी कुप्रथाओं में निरंतर गिरावट देखी जा रही है। इसका मुख्य कारण शिक्षा के स्तर में वृद्धि, आर्थिक आधुनिकीकरण और विधिक जागरूकता का प्रसार है। युवा पीढ़ी अब इन परंपराओं के तार्किक और आर्थिक पहलुओं का मूल्यांकन कर रही है, जिससे सामाजिक सोच में व्यापक परिवर्तन आया है। सरकारी कानूनों और सामाजिक चेतना

महिलाएं अपने पति की दीर्घायु हेतु उपवास रखती हैं। यह पर्व प्रकृति की हरियाली, वैवाहिक निष्ठा और सामाजिक उल्लास का एक अद्भुत और रंगीन समागम प्रस्तुत करता है।

41. (3) वर्षा ऋतु (मानसून)
राजस्थान में तीज का त्योहार मुख्य रूप से वर्षा ऋतु अर्थात मानसून के आगमन का सूचक है। ग्रीष्म ऋतु की भीषण तपन के पश्चात जब पहली फुहारें धरती को सराबोर करती हैं, तब हरियाली तीज का आगमन होता है। यह पर्व प्रकृति के नवश्रृंगार और चारों ओर छाई हरियाली का उत्सव है। किसान और आम जनमानस इस त्योहार को कृषि समृद्धि और खुशहाली की आशा के साथ मनाते हैं, जो जीवन में नवीन उत्साह भरता है।

42. (1) विवाहित महिलाएं पूर्वजों का शोक मनाने हेतु विशेष रूप से अपने पीहर जाती हैं।
तीज के अवसर पर महिलाएं लहरिया साड़ियाँ धारण करती हैं और पेड़ों पर झूला झूलकर प्रसन्नता मनाती हैं। घेवर जैसी पारंपरिक मिठाइयाँ इस पर्व की मिठास बढ़ाती हैं। यह उल्लास और सौभाग्य का त्योहार है, अतः विवाहित महिलाओं का शोक मनाने हेतु पीहर जाने का तथ्य पूर्णतः असत्य है। वास्तव में, महिलाएं इस दौरान अपने मायके जाकर आनंद और स्नेह के साथ उत्सव में सम्मिलित होती हैं, जो उनके सामाजिक और पारिवारिक जुड़ाव को दर्शाता है।

43. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
राजस्थान की प्रसिद्ध कहावत "तीज त्योहारां बावड़ी, ले डूबी गणगौर" राज्य के उत्सव चक्र का सटीक वर्णन करती है। तीज त्योहारों के आगमन और उनके निरंतर सिलसिले के प्रारंभ का संकेत देती है, जो वर्षा ऋतु के साथ शुरू होते हैं। इसके विपरीत, गणगौर का त्योहार उत्सवों की इस लंबी श्रृंखला के समापन का सूचक माना जाता है। यह कहावत लोक जीवन में त्योहारों के क्रमबद्ध महत्व और उनके ऋतु आधारित चक्र को स्पष्ट करती है।

44. (2) बूंदी
कजली तीज का भव्य जुलूस हाड़ौती क्षेत्र के ऐतिहासिक नगर बूंदी में अत्यंत हर्षोल्लास के साथ आयोजित होता है। इस अवसर पर देवी की पालकी को स्वर्ण और रजत आभूषणों से अलंकृत कर मुख्य बाजारों से निकाला जाता है। स्थानीय लोक कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, जिससे संपूर्ण वातावरण उत्सवमय हो जाता है। जयपुर छोटी तीज के लिए प्रसिद्ध है, जबकि बूंदी की बड़ी या कजली तीज अपनी अद्वितीय भव्यता हेतु विश्व भर में जानी जाती है।

45. (3) कथन I सही है लेकिन कथन II गलत है
'सिंजारा' एक स्नेहिल परंपरा है जिसमें तीज से एक दिन पूर्व वधू पक्ष या ससुराल पक्ष द्वारा नवविवाहिता को उपहार भेजे जाते हैं। इसमें वस्त्र, श्रृंगार सामग्री और घेवर जैसी मिठाइयाँ सम्मिलित होती हैं। यह केवल मातृ पक्ष तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ससुराल पक्ष की ओर से भेजी जाने वाली सामग्री का भी विशेष महत्व होता है जो नए रिश्तों में मधुरता लाती है। यह रीति-रिवाज नारी के सम्मान और पारिवारिक सौहार्द को सुदृढ़ बनाने का सशक्त माध्यम है।

46. (4) तीज से पूर्व ससुराल पक्ष द्वारा महिला को दिए जाने वाले पारंपरिक उपहार
राजस्थानी समाज में 'सिंजारा' का तात्पर्य उन पारंपरिक उपहारों से है जो तीज या गणगौर जैसे प्रमुख उत्सवों से पूर्व ससुराल पक्ष द्वारा महिला को भेंट किए जाते हैं। इन उपहारों में मेहंदी, चूड़ियाँ, सुंदर पोशाकें और विशेष मिष्ठान शामिल होते हैं। यह परंपरा नवविवाहित महिलाओं के लिए विशेष आनंद लेकर आती है और उन्हें अपने नए परिवार में स्वागत और प्रेम का अनुभव कराती है। यह रस्म सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ करने और खुशियाँ बांटने का माध्यम है।

47. (1) सामाजिक संबंधों, वैवाहिक निष्ठा और प्रकृति से जुड़ाव का सुदृढ़ीकरण
राजस्थान के सामाजिक संदर्भ में तीज का त्योहार मुख्य रूप से सामाजिक संबंधों की प्रगाढ़ता, वैवाहिक निष्ठा और प्रकृति के साथ मानवीय जुड़ाव को सुदृढ़ करने का उत्सव है। यह पर्व महिलाओं की श्रद्धा, धैर्य और प्रेम की शक्ति को रेखांकित करता है। साथ ही, मानसून के दौरान प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों का स्वागत कर यह मनुष्य और पर्यावरण के अटूट संबंध को भी प्रदर्शित करता है। यह लोक संस्कृति में रचे-बसे विश्वासों और खुशियों का सामूहिक प्रकटीकरण है।

48. (1) जौ की बुवाई → मृण्मय मूर्तियों की पूजा → गवर की सवारी → मूर्तियों का विसर्जन
गणगौर उत्सव की प्रक्रिया एक निश्चित धार्मिक क्रम में संपन्न होती है। सर्वप्रथम होलिका दहन की राख से 'जौ' की बुवाई की जाती है जो नवीन जीवन का प्रतीक है। तत्पश्चात मिट्टी की बनी ईसर और गौरी की मूर्तियों की श्रद्धापूर्वक पूजा की जाती है। उत्सव के समापन पर गवर की भव्य सवारी निकाली जाती है और अंत में मूर्तियों का पवित्र जलाशयों में विसर्जन किया जाता है। यह क्रम सृजन, उपासना और विसर्जन की सनातन परंपरा को दर्शाता है।

49. (2) चैत्र
गणगौर का सुप्रसिद्ध त्योहार हिंदू पंचांग के चैत्र मास में अत्यंत श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह उत्सव चैत्र शुक्ल तृतीया को अपनी चरम भव्यता पर होता है। होली के अगले दिन से प्रारंभ होने वाला यह 18 दिवसीय अनुष्ठान बसंत ऋतु के आगमन और नई फसल की खुशी के साथ जुड़ा है। राजस्थान के प्रत्येक घर और गली में इस दौरान लोकगीतों और पूजा-अर्चना की गूंज सुनाई देती है जो भक्तिमय वातावरण निर्मित करती है।

50. (1) केवल I और II
गणगौर शब्द में 'गण' भगवान शिव के लिए और 'गौर' माता पार्वती के लिए प्रयुक्त होता है। यह त्योहार शिव-शक्ति की आराधना का पर्व है जहाँ विवाहित महिलाएं अखंड सौभाग्य और अविवाहित कन्याएं सुयोग्य वर की प्राप्ति हेतु प्रार्थना करती हैं। यह उत्सव केवल राजघरानों तक सीमित नहीं है,

अध्याय 17
राजस्थान की प्रमुख विभूतियाँ

1. हल्दीघाटी के युद्ध के दौरान महाराणा प्रताप की भील सेना का सेनापति निम्नलिखित में से कौन था?
(1) हकीम खाँ सूरी
(2) राणा पूँजा
(3) भामाशाह
(4) ताराचंद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

2. 1582 में महाराणा प्रताप ने किस मुगल सेनापति के विरुद्ध दिवेर का युद्ध लड़ा था, जो उनके प्रतिरोध में एक निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ?
(1) सुल्तान खान
(2) आमेर के मान सिंह
(3) आसफ खान
(4) शाहबाज खान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

3. महाराणा प्रताप के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(1) उनका राज्याभिषेक 1572 में गोगुंदा में हुआ था।
(2) चेतक का स्मारक हल्दीघाटी (बलिचा गाँव) में स्थित है।
(3) उन्होंने अपनी मृत्यु से पूर्व चित्तौड़गढ़ के किले पर सफलतापूर्वक पुन: अधिकार कर लिया था।
(4) उन्होंने चावंड में अपनी अंतिम राजधानी स्थापित की थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

4. हल्दीघाटी के युद्ध से पूर्व महाराणा प्रताप से वार्ता करने के लिए अकबर द्वारा भेजे गए दूतों का सही क्रम निम्नलिखित में से कौन सा था?
(1) जलाल खाँ, मान सिंह, भगवंत दास, टोडरमल
(2) मान सिंह, टोडरमल, भगवंत दास, जलाल खाँ
(3) टोडरमल, जलाल खाँ, मान सिंह, भगवंत दास
(4) जलाल खाँ, भगवंत दास, मान सिंह, टोडरमल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

5. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (व्यक्तित्व)
A. महाराणा प्रताप
B. राणा कुंभा
C. पृथ्वीराज चौहान
D. दुर्गादास राठौड़
सूची II: (उपाधि/उपनाम)
i. अभिनव भरताचार्य
ii. कीका
iii. राजपूताना का यूलिसिस
iv. राय पिथौरा
(1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(2) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(3) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(4) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

6. महाराणा प्रताप के संरक्षण में उनके अंतिम वर्षों के दौरान विकसित हुई चित्रकला शैली को किस नाम से जाना जाता है?
(1) नाथद्वारा शैली
(2) चावंड शैली
(3) मेवाड़ शैली
(4) किशनगढ़ शैली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

7. अपना राज्य खोने के बाद जब महाराणा प्रताप अरावली की पहाड़ियों में निवास कर रहे थे, तब निम्नलिखित में से किसने उन्हें आर्थिक सहायता प्रदान की थी?
(1) राव चंद्रसेन
(2) राणा पूँजा
(3) ताराचंद
(4) भामाशाह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

8. महाराणा प्रताप के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने मुगल साम्राज्य के साथ वैवाहिक गठबंधन की नीति को अस्वीकार कर दिया था।
II. 1578 में वे शाहबाज खान से कुंभलगढ़ का किला हार गए थे।
III. उनका निधन 1597 में हुआ और उनका अंतिम संस्कार बांडोली में किया गया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

46. अमर सिंह राठौड़ के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने एक अपमानजनक टिप्पणी के कारण सलावत खाँ की हत्या कर दी थी।
(2) आगरा किले से छलांग लगाने वाले उनके प्रसिद्ध अश्व का नाम बादल था।
(3) उनके वीरतापूर्ण कार्य राजस्थानी 'ख्यालों' के मुख्य विषय हैं।
(4) उनका पार्थिव शरीर दुर्गादास राठौड़ द्वारा आगरा किले से लाया गया था।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

47. आगरा किले के भीतर अमर सिंह राठौड़ की हत्या का षड्यंत्र किसने रचा था?
(1) अर्जुन गौड़
(2) आसफ खान
(3) महाबत खान
(4) राम सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

48. अमर सिंह राठौड़ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने अपने भाई जसवंत सिंह को हराकर जोधपुर के सिंहासन पर अधिकार कर लिया था।
II. उन्होंने आगरा किले की प्राचीर से अपने अश्व को कुदाकर अदम्य साहस का परिचय दिया था।
III. उनकी बहन का विवाह मुगल सम्राट शाहजहाँ से हुआ था।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन असत्य है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

49. सवाई जय सिंह द्वितीय आमेर के शासक थे। उन्होंने किस वर्ष आधुनिक जयपुर शहर की स्थापना की थी?
(1) 1699
(2) 1707
(3) 1727
(4) 1734
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

50. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): सवाई जय सिंह द्वितीय ने 1734 में प्रमुख राजपूत राज्यों का हुरड़ा सम्मेलन आयोजित किया था।
कारण (R): वे राजपूताना में बढ़ते मराठा आक्रमणों को रोकने के लिए राजपूत शासकों का एक संयुक्त मोर्चा बनाना चाहते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

51. ग्रहों की स्थिति की गणना के लिए सवाई जय सिंह द्वितीय के संरक्षण में निम्नलिखित में से कौन सी खगोलीय सारणी संकलित की गई थी?
(1) सिद्धांत शिरोमणि
(2) जय सिंह कारिका
(3) जिज-ए-मुहम्मद शाही
(4) यंत्र राज
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

52. निम्नलिखित स्थानों पर विचार कीजिए:
I. जयपुर
II. दिल्ली
III. उज्जैन
IV. मथुरा
V. वाराणसी
उपरोक्त में से किन स्थानों पर सवाई जय सिंह द्वितीय ने खगोलीय वेधशालाओं (जंतर मंतर) का निर्माण करवाया था?
(1) केवल I, II और V
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल I, II, III और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

53. सवाई जय सिंह द्वितीय द्वारा निम्नलिखित में से कौन सा वैदिक अनुष्ठान संपन्न नहीं किया गया था?
(1) अश्वमेध यज्ञ
(2) वाजपेय यज्ञ
(3) राजसूय यज्ञ
(4) उन्होंने इनमें से कोई भी अनुष्ठान नहीं किया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

54. सवाई जय सिंह द्वितीय के शासनकाल में जयपुर के मुख्य वास्तुकार और नगर नियोजक कौन थे?
(1) पुण्डरीक रत्नाकर
(2) विद्याधर भट्टाचार्य
(3) मंडन
(4) जयानक
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

55. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (राजपूत शासक)
A. राणा कुंभा
B. सवाई जय सिंह द्वितीय
C. दुर्गादास राठौड़
D. पृथ्वीराज चौहान

उपरोक्त में से कौन सी साहित्यिक कृतियाँ राणा कुंभा द्वारा रचित थीं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, II और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) केवल I, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

19. राणा कुंभा की स्थापत्य विरासत के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्हें मेवाड़ में 84 किलों के निर्माण का श्रेय दिया जाता है।
(2) कुंभलगढ़ किले का अभिकल्प प्रसिद्ध वास्तुकार मंडन द्वारा तैयार किया गया था।
(3) उन्होंने मेवाड़ की सुरक्षा के लिए 84 में से 32 किलों का निर्माण करवाया था।
(4) विजय स्तंभ भगवान विष्णु को समर्पित है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

20. राजपूत शासकों द्वारा लड़े गए युद्धों का सही कालानुक्रमिक क्रम निम्नलिखित में से कौन सा है?
(1) तराइन का प्रथम युद्ध – सारंगपुर का युद्ध – हल्दीघाटी का युद्ध – दिवेर का युद्ध
(2) सारंगपुर का युद्ध – तराइन का प्रथम युद्ध – हल्दीघाटी का युद्ध – दिवेर का युद्ध
(3) तराइन का प्रथम युद्ध – हल्दीघाटी का युद्ध – सारंगपुर का युद्ध – दिवेर का युद्ध
(4) सारंगपुर का युद्ध – दिवेर का युद्ध – तराइन का प्रथम युद्ध – हल्दीघाटी का युद्ध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

21. निम्नलिखित में से कौन सी उपाधि राणा कुंभा द्वारा धारण नहीं की गई थी?
(1) हिंदू सुरत्राण
(2) राणो रासो
(3) दल पुंगल
(4) राजगुरु
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

22. राणा कुंभा ने चित्तौड़गढ़ में कुंभस्वामी मंदिर की स्थापना की थी। यह मंदिर मुख्य रूप से किसे समर्पित है?
(1) भगवान शिव
(2) भगवान विष्णु (वराह अवतार)
(3) भगवान सूर्य
(4) देवी दुर्गा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

23. 1468 में राणा कुंभा की हत्या उनके अपने ही पुत्र द्वारा कर दी गई थी। वह पुत्र कौन था?
(1) रायमल
(2) सांगा
(3) पृथ्वीराज
(4) ऊदा (उदयकरण)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

24. राणा कुंभा के शासनकाल के दौरान मेवाड़ और मारवाड़ के बीच सीमाओं का निर्धारण करने के लिए 1453 में एक संधि हुई थी। इस संधि को किस नाम से जाना जाता है?
(1) आँवल-बाँवल की संधि
(2) चंपानेर की संधि
(3) पुरंदर की संधि
(4) बेसिन की संधि
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

25. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (व्यक्तित्व)
A. मीराबाई
B. गोविंद गुरु
C. अमर सिंह राठौड़
D. मोतीलाल तेजावत
सूची II: (जन्मस्थान/संबंधित स्थान)
i. कोलियारी
ii. नागौर
iii. कुड़की
iv. बासिया
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-i, C-iv, D-ii
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

26. मीराबाई का विवाह मेवाड़ के राजपरिवार में हुआ था। उनके पति कौन थे?
(1) भोजराज
(2) राणा सांगा
(3) विक्रमादित्य
(4) उदय सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

27. संत-कवयित्री मीराबाई के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) उनकी रचनाएँ भक्ति की सगुण धारा को प्रदर्शित करती हैं।
(2) वे संत रैदास की समकालीन थीं, जिन्हें उन्होंने अपना आध्यात्मिक गुरु स्वीकार किया था।
(3) अपने अंतिम वर्षों के दौरान, वे द्वारका के रणछोड़जी मंदिर में रहीं।
(4) उन्होंने अपने भक्ति गीत मुख्य रूप से पिंगल बोली में लिखे थे।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

28. मीराबाई के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

85. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (प्रजामंडल)
A. मेवाड़ प्रजामंडल
B. मारवाड़ प्रजामंडल
C. जयपुर प्रजामंडल
D. बाँसवाड़ा प्रजामंडल
सूची II: (संबंधित नेता)
i. भूपेंद्र नाथ त्रिवेदी
ii. जमनालाल बजाज / हीरालाल शास्त्री
iii. माणिक्य लाल वर्मा
iv. जय नारायण व्यास
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-iv, B-iii, C-i, D-ii
(3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

86. माणिक्य लाल वर्मा ने 18 अप्रैल 1948 को गठित राजस्थान के एकीकरण के किस चरण के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया था?
(1) मत्स्य संघ
(2) संयुक्त राजस्थान
(3) राजस्थान संघ
(4) वृहत राजस्थान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

87. प्रजामंडल आंदोलन से पूर्व माणिक्य लाल वर्मा किस ठिकाने के कर्मचारी थे, जहाँ उन्होंने कृषकों का शोषण देखा था?
(1) बेगूँ
(2) झाडोल
(3) सलूंबर
(4) बिजोलिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

88. माणिक्य लाल वर्मा के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने मेवाड़ प्रजामंडल के प्रथम अधिवेशन की अध्यक्षता की थी।
II. वे महात्मा गांधी से प्रभावित थे और उन्होंने खादी का प्रचार किया।
III. उन्होंने बिजोलिया किसान आंदोलन में कभी भाग नहीं लिया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन असत्य है/हैं?
(1) केवल I
(2) केवल II
(3) केवल III
(4) I और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

89. जय नारायण व्यास को मारवाड़ क्षेत्र में राजनीतिक जागृति का श्रेय दिया जाता है। उन्होंने 1934 में किस संगठन के गठन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी?
(1) मारवाड़ हितकारिणी सभा
(2) मारवाड़ यूथ लीग
(3) मारवाड़ प्रजामंडल
(4) राजपूताना देशी राज्य परिषद
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

90. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान जय नारायण व्यास को सिवाना किले में नजरबंद किया गया था।
कारण (R): मारवाड़ राज्य के अधिकारी उन्हें प्रजामंडल की राजनीतिक गतिविधियों से पृथक करना चाहते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

91. जय नारायण व्यास द्वारा ब्यावर से राजस्थानी भाषा में कौन सा समाचार पत्र प्रकाशित किया गया था?
(1) तरुण राजस्थान
(2) अखंड भारत
(3) राजस्थान केसरी
(4) आगी बाण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

92. निम्नलिखित प्रकाशनों पर विचार कीजिए:
I. पोपाबाई की पोल
II. मारवाड़ की अवस्था
III. मेवाड़ का वर्तमान शासन
IV. अखंड भारत
V. तरुण राजस्थान
उपरोक्त में से कौन से प्रकाशन जय नारायण व्यास से संबंधित हैं?
(1) केवल I, II, IV और V
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II और IV
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

93. राजस्थान के राजनीतिक इतिहास में मुख्यमंत्री के रूप में जय नारायण व्यास के संबंध में कौन सा कथन सही है?
(1) वे राजस्थान के मुख्यमंत्री के रूप में मनोनीत होने वाले प्रथम व्यक्ति थे।
(2) उनके पास राजस्थान के मुख्यमंत्री के रूप में सबसे लंबे कार्यकाल का कीर्तिमान है।
(3) वे मनोनीत और निर्वाचित दोनों प्रकार के मुख्यमंत्री रहे

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

37. दुर्गादास राठौड़ के अंतिम दिनों के संबंध में सही कथन की पहचान कीजिए।
(1) उनकी मृत्यु मेड़ता के युद्ध में हुई थी।
(2) उन्होंने महाराजा अजीत सिंह के मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया।
(3) वे मारवाड़ से चले गए थे और उन्होंने अपने अंतिम वर्ष उज्जैन में व्यतीत किए।
(4) उन्होंने वृत्ति स्वीकार कर ली और अपने अंतिम दिन दिल्ली में बिताए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

38. दुर्गादास राठौड़ के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. उन्होंने राजकुमार अकबर को औरंगजेब के विरुद्ध करने की योजना बनाई।
II. उन्होंने औरंगजेब की पौत्री (सफियत-उन-निसा) और पौत्र (बुलंद अख्तर) को सुरक्षित रखा और उन्हें इस्लामी शिक्षा की व्यवस्था की।
III. उन्होंने 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के पश्चात जोधपुर पर पुन: अधिकार कर लिया।
IV. उनकी छतरी शिप्रा नदी के तट पर स्थित है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III और IV
(3) केवल I, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

39. निम्नलिखित इतिहासकारों में से किसने दुर्गादास राठौड़ को "राजपूताना का यूलिसिस" कहा था?
(1) जी.एच. ओझा
(2) दशरथ शर्मा
(3) वी.एन. रेऊ
(4) जेम्स टॉड
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

40. मारवाड़ के राठौड़ राजवंश से संबंधित निम्नलिखित ऐतिहासिक घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. अजीत सिंह का जन्म
II. जमरुद में महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु
III. शिशु अजीत सिंह के साथ दुर्गादास राठौड़ का दिल्ली से पलायन
IV. अजीत सिंह द्वारा दुर्गादास का निष्कासन
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) II, I, III, IV
(2) I, II, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

41. नागौर के प्रसिद्ध लोक नायक अमर सिंह राठौड़, मारवाड़ के किस शासक के ज्येष्ठ पुत्र थे?
(1) राव मालदेव
(2) महाराजा जसवंत सिंह
(3) महाराजा गज सिंह
(4) राव चंद्रसेन
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

42. जोधपुर का उत्तराधिकार न मिलने के पश्चात अमर सिंह राठौड़ को किस मुगल सम्राट ने नागौर की जागीर प्रदान की थी?
(1) शाहजहाँ
(2) अकबर
(3) जहाँगीर
(4) औरंगजेब
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

43. आगरा के शाही दरबार में मीर बख्शी सलावत खाँ की हत्या का श्रेय किस राजपूत नायक को दिया जाता है?
(1) वीर दुर्गादास राठौड़
(2) पृथ्वीराज सिंह राठौड़
(3) महाराजा अजीत सिंह देव
(4) अमर सिंह राठौड़
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

44. 'मतीरे की राड़' के नाम से प्रसिद्ध ऐतिहासिक युद्ध 1644 में नागौर के अमर सिंह राठौड़ और बीकानेर के किस शासक के बीच हुआ था?
(1) राव बीका
(2) महाराजा करण सिंह
(3) राव लूणकरण
(4) महाराजा अनूप सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

45. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (व्यक्तित्व)
A. अमर सिंह राठौड़
B. दुर्गादास राठौड़
C. महाराणा प्रताप
D. गोविंद गुरु
सूची II: (संबंधित स्मारक)
i. मानगढ़ पहाड़ी
ii. उज्जैन में छतरी
iii. बांडोली में छतरी
iv. नागौर में 16 खंभों की छतरी
(1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
(2) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-ii, B-iv, C-i, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

I. उन्होंने रत्ना खाती के सहयोग से 'नरसी जी रो मायरो' की रचना की।
II. भगवान कृष्ण के प्रति उनकी भक्ति 'माधुर्य भाव' (दांपत्य प्रेम) की विशेषता है।
III. चित्तौड़ में राजकीय विरोध का सामना करने के बाद उन्होंने वृंदावन में चैतन्य संप्रदाय की स्थापना की।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल II और III
(3) केवल I और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

29. अपनी भक्ति पद्धतियों के कारण मीराबाई को मेवाड़ में जिस राजकीय विरोध का सामना करना पड़ा, वह मुख्य रूप से किस महाराणा के शासनकाल के दौरान हुआ था?
(1) महाराणा सांगा
(2) महाराणा रतन सिंह
(3) राणा विक्रमादित्य
(4) महाराणा उदय सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

30. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): मीराबाई के भक्ति मार्ग को तत्कालीन सामाजिक मानदंडों के लिए एक चुनौती के रूप में देखा गया था।
कारण (R): उन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद सती होने से इनकार कर दिया और साधु-संतों के साथ सत्संग में भाग लेती थीं।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

31. मीराबाई ने 'पदों' के रूप में भजनों की रचना की। उनके पदों के संग्रह को लोकप्रिय रूप से किस नाम से जाना जाता है?
(1) मीराबाई की पदावली
(2) कबीर की बीजक
(3) सूरदास की सूरसागर
(4) गुरु नानक के शब्द
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

32. निम्नलिखित विशेषताओं पर विचार कीजिए:
I. सगुण ब्रह्म के प्रति पूर्ण समर्पण वाली भक्ति।
II. पारंपरिक आडंबरों और जातिगत ऊँच-नीच को अस्वीकार करना।
III. पारिवारिक विरोध का सामना किया।
IV. 'गीत गोविंद पर टीका' जैसी कृतियों की रचना की।
V. दिल्ली सल्तनत के विरुद्ध राजनीतिक विद्रोह को बढ़ावा दिया।

उपरोक्त में से कौन सी विशेषताएँ मीराबाई के साथ सही ढंग से जुड़ी हुई हैं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल I, III, IV और V
(3) केवल II, III, IV और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

33. दुर्गादास राठौड़ को मारवाड़ को किस मुगल सम्राट की विस्तारवादी नीतियों से बचाने के उनके संघर्ष के लिए स्मरण किया जाता है?
(1) अकबर
(2) औरंगजेब
(3) जहाँगीर
(4) शाहजहाँ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

34. शिशु अजीत सिंह को मुगल नियंत्रण से बचाने के लिए दुर्गादास राठौड़ को किस महिला से महत्वपूर्ण सहायता मिली, जिन्हें 'मारवाड़ की पन्ना धाय' कहा जाता है?
(1) गोरा धाय
(2) कर्मावती
(3) रूपा धाय
(4) हाड़ी रानी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

35. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (व्यक्तित्व)
A. दुर्गादास राठौड़
B. सवाई जय सिंह द्वितीय
C. अर्जुन लाल सेठी
D. विजय सिंह पथिक

सूची II: (विशिष्ट योगदान)
i. जंतर मंतर
ii. राजस्थान केसरी
iii. वर्धमान विद्यालय
iv. अजीत सिंह की सुरक्षा

(1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
(2) A-i, B-iv, C-ii, D-iii
(3) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(4) A-ii, B-iii, C-i, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

36. मुगलों द्वारा निरंतर पीछा किए जाने पर निम्नलिखित में से किस राज्य ने दुर्गादास राठौड़ और अजीत सिंह को शरण प्रदान की थी?
(1) आमेर
(2) बीकानेर
(3) जैसलमेर
(4) मेवाड़

सूची II: (योगदान/घटना)
i. किला राय पिथौरा का निर्माण
ii. जिज-ए-मुहम्मद शाही का संकलन
iii. विजय स्तंभ का निर्माण
iv. देबारी समझौता
(1) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

56. जयपुर स्थित जंतर मंतर वेधशाला के निम्नलिखित यंत्रों में से किसे विश्व की सबसे बड़ी पाषाण धूपघड़ी माना जाता है?
(1) सम्राट यंत्र
(2) राम यंत्र
(3) जय प्रकाश यंत्र
(4) नाड़ीवलय यंत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

57. क्रांतिकारी स्वतंत्रता सेनानी अर्जुन लाल सेठी का जन्म राजस्थान के किस नगर में हुआ था?
(1) जोधपुर
(2) अजमेर
(3) जयपुर
(4) उदयपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

58. निम्नलिखित संस्थाओं और ग्रंथों पर विचार कीजिए:
I. जैन वर्धमान विद्यालय
II. महेंद्र कुमार
III. शूद्र मुक्ति
IV. चेतावनी रा चूंगट्या
उपरोक्त में से कौन अर्जुन लाल सेठी से संबंधित हैं?
(1) केवल I, II और III
(2) केवल I, III और IV
(3) केवल II, III और IV
(4) I, II, III और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

59. "यदि सेठी राज्य की सेवा करेगा, तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा?" यह प्रसिद्ध कथन किसका है?
(1) विजय सिंह पथिक
(2) स्वामी दयानंद सरस्वती
(3) केसरी सिंह बारहठ
(4) अर्जुन लाल सेठी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

60. राजस्थान में स्वतंत्रता संग्राम से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिए:
I. जैन वर्धमान विद्यालय की स्थापना
II. राजस्थान सेवा संघ का गठन
III. मेवाड़ प्रजामंडल की स्थापना
IV. वृहत राजस्थान का गठन
निम्नलिखित में से कौन सा सही कालानुक्रमिक क्रम है?
(1) I, II, III, IV
(2) II, I, III, IV
(3) I, III, II, IV
(4) II, III, I, IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

61. अर्जुन लाल सेठी के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्होंने 1913 के निमेज हत्याकांड मामले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।
(2) उन्होंने वेल्लोर जेल में सात वर्ष का कठोर कारावास काटा।
(3) वे मारवाड़ प्रजामंडल के संस्थापक सदस्य थे।
(4) उन्होंने अपने अंतिम दिन अजमेर की एक दरगाह में अरबी और फारसी पढ़ाते हुए व्यतीत किए।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

62. अर्जुन लाल सेठी ने 1907 में जयपुर में मुख्य रूप से किस उद्देश्य के लिए जैन वर्धमान विद्यालय की स्थापना की थी?
(1) शास्त्रीय जैन धार्मिक साहित्य के अध्ययन को बढ़ावा देना।
(2) राजपूत सामंतों को आधुनिक अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करना।
(3) क्षेत्रीय कृषकों को आधुनिक कृषि सुधारों पर शिक्षित करना।
(4) युवाओं को क्रांतिकारी राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

63. वर्धमान विद्यालय द्वारा तैयार किए गए क्रांतिकारियों में से कौन लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की घटना में सम्मिलित था?
(1) जोरावर सिंह बारहठ
(2) प्रताप सिंह बारहठ
(3) सागरमल गोपा
(4) (1) और (2) दोनों
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

64. अपने अंतिम वर्षों के दौरान अजमेर में रहते हुए अर्जुन लाल सेठी ने कौन सा छद्म नाम अपनाया था?
(1) भूप सिंह
(2) करीम खाँ
(3) रहीम बाबा
(4) अमीर अली
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (लेखक/स्वतंत्रता सेनानी)
A. केसरी सिंह बारहठ
B. माणिक्य लाल वर्मा

9. पृथ्वीराज चौहान तृतीय 11 वर्ष की आयु में अजमेर के सिंहासन पर बैठे। उनकी अल्पायु के दौरान निम्नलिखित में से किसने उनके संरक्षक के रूप में कार्य किया?
(1) सोमेश्वर
(2) कदंबवास
(3) कर्पूरी देवी
(4) भुवनमल्ल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

10. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): पृथ्वीराज चौहान और कन्नौज के जयचंद के बीच प्रतिद्वंद्विता ने उत्तर भारत की रक्षा को दुर्बल कर दिया था।
कारण (R): पृथ्वीराज द्वारा जयचंद की पुत्री संयोगिता का उसके स्वयंवर के दौरान बलपूर्वक अपहरण कर लिया गया था, जिससे भीषण शत्रुता उत्पन्न हुई।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

11. पृथ्वीराज चौहान ने 1182 में चंदेल शासक परमर्दिदेव को पराजित किया था। इस युद्ध का क्या नाम था?
(1) तराइन का प्रथम युद्ध
(2) नरायणा क्षेत्र का युद्ध
(3) नागौर पहाड़ियों का युद्ध
(4) तुमुल (महोबा) का युद्ध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

12. निम्नलिखित विद्वानों पर विचार कीजिए:
I. जयानक
II. विद्यापति गौड़
III. वागीश्वर
IV. जनार्दन
V. विश्वरूप
उपरोक्त में से किन विद्वानों को पृथ्वीराज चौहान तृतीय का संरक्षण प्राप्त था?
(1) केवल I, II और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, III और V
(4) I, II, III, IV और V
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

13. पृथ्वीराज चौहान ने अपने साम्राज्य की उत्तरी सीमाओं को सुरक्षित करने के लिए निम्नलिखित में से किस समुदाय का पूर्णतः दमन किया था?
(1) सोलंकी
(2) परमार
(3) भदानक
(4) तोमर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

14. पृथ्वीराज चौहान तृतीय को दिल्ली पर अधिकार करने के पश्चात वहाँ एक किला बनाने के लिए जाना जाता है। इस किले का क्या नाम है?
(1) सीरी का किला
(2) तुगलकाबाद का किला
(3) पुराना किला
(4) किला राय पिथौरा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

15. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (लेखक)
A. चंद बरदाई
B. जयानक
C. नयनचंद्र सूरी
D. पद्मनाभ
सूची II: (साहित्यिक कृति)
i. पृथ्वीराज रासो
ii. पृथ्वीराज विजय
iii. हम्मीर महाकाव्य
iv. कान्हड़दे प्रबंध
(1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
(2) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(3) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iii, D-iv
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

16. पृथ्वीराज चौहान और मुहम्मद गोरी के बीच तराइन के प्रथम युद्ध (1191) का तात्कालिक कारण क्या था?
(1) गोरी का गुजरात पर आक्रमण
(2) तबरहिंद के किले पर अधिकार
(3) कन्नौज के शासक के साथ विवाद
(4) चंदेलों का आंतरिक उत्तराधिकार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

17. राणा कुंभा ने किस शासक पर अपनी विजय के उपलक्ष्य में चित्तौड़गढ़ में प्रसिद्ध 'विजय स्तंभ' का निर्माण करवाया था?
(1) गुजरात के कुतुबुद्दीन अहमद शाह
(2) मालवा के महमूद खिलजी
(3) मारवाड़ के राव जोधा
(4) दिल्ली के अलाउद्दीन खिलजी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

18. निम्नलिखित ग्रंथों पर विचार कीजिए:
I. रसिक प्रिया
II. सुधा प्रबंध
III. कामराज रतिसार
IV. संगीत रत्नाकर

(4) बलवंत सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

75. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:
सूची I: (समाचार पत्र/पत्रिका)
A. राजस्थान केसरी
B. आगी बाण
C. मेवाड़ पुकार
D. प्रताप
सूची II: (संबंधित व्यक्तित्व)
i. गणेश शंकर विद्यार्थी
ii. मोतीलाल तेजावत
iii. विजय सिंह पथिक
iv. जय नारायण व्यास
(1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
(2) A-i, B-ii, C-iv, D-iii
(3) A-iv, B-iii, C-ii, D-i
(4) A-iii, B-iv, C-i, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

76. विजय सिंह पथिक के संबंध में असत्य कथन की पहचान कीजिए।
(1) उन्हें रास बिहारी बोस द्वारा सशस्त्र विद्रोह आयोजित करने के लिए राजस्थान भेजा गया था।
(2) उन्होंने 1919 में वर्धा में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की थी।
(3) उन्होंने बिजोलिया किसान आंदोलन के दूसरे चरण का नेतृत्व किया था।
(4) उन्होंने 1917 में ऊपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना की थी।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

77. 'राजस्थान केसरी' समाचार पत्र विजय सिंह पथिक द्वारा किस स्थान से प्रकाशित किया गया था?
(1) अजमेर
(2) कानपुर
(3) वर्धा
(4) जोधपुर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

78. निम्नलिखित गतिविधियों पर विचार कीजिए:
I. ऊपरमाल पंच बोर्ड का संगठन।
II. बेगूँ किसान आंदोलन का नेतृत्व।
III. "व्हाट आर द इंडियन स्टेट्स" पुस्तक का लेखन।
IV. एकी आंदोलन का नेतृत्व।
उपरोक्त में से कौन सी गतिविधियाँ विजय सिंह पथिक से संबंधित नहीं हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल IV
(3) केवल III और IV
(4) केवल II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

79. विजय सिंह पथिक द्वारा समाचार पत्र 'प्रताप' में बिजोलिया के कृषकों की दुर्दशा प्रकाशित करवाने का क्या परिणाम हुआ?
(1) आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन प्राप्त हुआ।
(2) मेवाड़ राज्य ने तुरंत सभी 84 कर समाप्त कर दिए।
(3) ब्रिटिश अधिकारियों ने पथिक को मृत्युदंड का आदेश दिया।
(4) कृषकों ने तुरंत अपनी सभी मांगें वापस ले लीं।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

80. विजय सिंह पथिक द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रों का सही कालानुक्रमिक क्रम चुनिए:
(1) राजस्थान केसरी – नवीन राजस्थान – तरुण राजस्थान
(2) तरुण राजस्थान – नवीन राजस्थान – राजस्थान केसरी
(3) नवीन राजस्थान – राजस्थान केसरी – तरुण राजस्थान
(4) राजस्थान केसरी – तरुण राजस्थान – नवीन राजस्थान
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

81. प्रेरणादायक गीत 'पंछीड़ा', जिसने बिजोलिया आंदोलन के दौरान कृषकों को प्रोत्साहित किया था, किसके द्वारा रचित था?
(1) विजय सिंह पथिक
(2) माणिक्य लाल वर्मा
(3) हीरालाल शास्त्री
(4) जय नारायण व्यास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

82. माणिक्य लाल वर्मा ने 1934 में सागवाड़ा में 'खांडलाई आश्रम' की स्थापना की थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(1) भीलों का सामाजिक-शैक्षिक उत्थान।
(2) राजपूत युवाओं के लिए सैन्य प्रशिक्षण।
(3) प्रजामंडल के लिए साहित्यिक रचनाएँ।
(4) भारत छोड़ो आंदोलन के लिए सत्याग्रहियों को प्रशिक्षित करना।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

83. निम्नलिखित में से किस राजनीतिक संगठन की स्थापना 1938 में माणिक्य लाल वर्मा द्वारा की गई थी?
(1) मारवाड़ प्रजामंडल
(2) जयपुर प्रजामंडल
(3) मेवाड़ प्रजामंडल
(4) बीकानेर प्रजामंडल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

84. मेवाड़ से निर्वासन के दौरान माणिक्य लाल वर्मा द्वारा कौन सी पुस्तक लिखी गई थी, जिसमें राज्य के दमनकारी शासन का वर्णन था?
(1) पोपाबाई की पोल
(2) मारवाड़ की अवस्था
(3) शूद्र मुक्ति
(4) मेवाड़ का वर्तमान शासन

C. हीरालाल शास्त्री
D. जय नारायण व्यास
सूची II: (साहित्यिक कृति/गीत)
i. पंछीड़ा
ii. प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः
iii. पोपाबाई की पोल
iv. चेतावनी रा चूंगट्या
(1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
(2) A-i, B-iv, C-iii, D-ii
(3) A-iv, B-ii, C-i, D-iii
(4) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

66. केसरी सिंह बारहठ ने 1903 में लॉर्ड कर्जन के दिल्ली दरबार में सम्मिलित होने से किस महाराणा को रोकने के लिए प्रसिद्ध 'चेतावनी रा चूंगट्या' लिखे थे?
(1) महाराणा फतेह सिंह
(2) महाराणा सज्जन सिंह
(3) महाराणा भूपाल सिंह
(4) महाराणा स्वरुप सिंह
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

67. राजस्थान में राष्ट्रवाद की भावना जगाने के लिए 1910 में केसरी सिंह बारहठ द्वारा किस संस्था की स्थापना की गई थी?
(1) अभिनव भारत
(2) राजस्थान सेवा संघ
(3) वीर भारत सभा
(4) राजपूताना मध्य भारत सभा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

68. केसरी सिंह बारहठ के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
I. वे महंत प्यारेलाल हत्याकांड में सम्मिलित थे।
II. उन्हें अंडमान की सेल्युलर जेल में कारावास की सजा सुनाई गई थी।
III. उनके पुत्र प्रताप सिंह बारहठ की बरेली जेल में भीषण यातना के कारण मृत्यु हो गई थी।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(1) केवल I और II
(2) केवल I और III
(3) केवल II और III
(4) I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

69. केसरी सिंह बारहठ ने महंत प्यारेलाल हत्याकांड के लिए अपनी सजा किस जेल में व्यतीत की थी?
(1) वेल्लोर जेल
(2) बरेली जेल
(3) हजारीबाग जेल
(4) यरवदा जेल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

70. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए और नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर चुनिए:
कथन (A): केसरी सिंह बारहठ ने डिंगल बोली में 'चेतावनी रा चूंगट्या' की रचना की थी।
कारण (R): वे महाराणा फतेह सिंह को मेवाड़ के गौरवशाली प्रतिरोध की स्मृति दिलाकर उनके स्वाभिमान को जाग्रत करना चाहते थे।
(1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(2) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(3) A सही है लेकिन R गलत है।
(4) A गलत है लेकिन R सही है।
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

71. "भारत में इस परिवार के अतिरिक्त ऐसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं है जहाँ सभी सदस्यों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी हो।" बारहठ परिवार के विषय में यह कथन किसका है?
(1) महात्मा गांधी
(2) सुभाष चंद्र बोस
(3) चंद्रशेखर आजाद
(4) रास बिहारी बोस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

72. निम्नलिखित जीवनियों पर विचार कीजिए:
I. प्रताप चरित्र
II. दुर्गादास चरित्र
III. राज सिंह चरित्र
IV. रूठी रानी
V. महेंद्र कुमार
उपरोक्त में से कौन सी कृतियाँ केसरी सिंह बारहठ द्वारा रचित थीं?
(1) केवल I, II, III और IV
(2) केवल II, III, IV और V
(3) केवल I, II और IV
(4) केवल I, II और III
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

73. राजस्थान में किसान आंदोलनों के प्रमुख नेता विजय सिंह पथिक मूलतः किस राज्य के निवासी थे?
(1) राजस्थान
(2) गुजरात
(3) उत्तर प्रदेश
(4) मध्य प्रदेश
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

74. ब्रिटिश अधिकारियों से बचने के लिए भूमिगत होने से पूर्व विजय सिंह पथिक का मूल नाम क्या था?
(1) भूप सिंह
(2) मूल शंकर
(3) राम सिंह देव

थे।

(4) उन्होंने राजस्थान के पहले गैर-कांग्रेसी मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

94. निम्नलिखित में से किसे 'लोक नायक' और 'शेर-ए-राजस्थान' के नाम से जाना जाता है?

(1) माणिक्य लाल वर्मा
(2) हीरालाल शास्त्री
(3) मोहनलाल सुखाड़िया
(4) जय नारायण व्यास
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

95. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही उत्तर चुनिए:

सूची I: (व्यक्तित्व)

A. जय नारायण व्यास
B. केसरी सिंह बारहठ
C. अर्जुन लाल सेठी
D. माणिक्य लाल वर्मा

सूची II: (कारावास/नजरबंदी का स्थान)

i. कुंभलगढ़ किला
ii. सिवाना किला
iii. हजारीबाग जेल
iv. वेल्लोर जेल

(1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
(2) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
(3) A-ii, B-iv, C-iii, D-i
(4) A-i, B-iii, C-iv, D-ii
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

96. जय नारायण व्यास ने जालौर के किस पारंपरिक नृत्य को राष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया?

(1) गैर नृत्य
(2) ढोल नृत्य
(3) चरी नृत्य
(4) कालबेलिया नृत्य
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

97. हीरालाल शास्त्री ने 1929 में 'जीवन कुटीर' की स्थापना की थी, जो बाद में वनस्थली विद्यापीठ के रूप में विकसित हुआ। यह कहाँ स्थित है?

(1) जोबनेर
(2) निवाई (टोंक)
(3) किशनगढ़
(4) शाहपुरा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

98. हीरालाल शास्त्री के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

I. वे 30 मार्च 1949 को गठित वृहत राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री थे।
II. उन्होंने प्रसिद्ध गीत "प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः" की रचना की थी।
III. उन्होंने 1942 में जेंटलमैन एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए, जिससे जयपुर प्रजामंडल भारत छोड़ो आंदोलन से पृथक रहा।
IV. उनकी आत्मकथा का शीर्षक "प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र" है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(1) केवल I और II
(2) केवल III और IV
(3) सभी कथन सत्य हैं
(4) केवल I, II और IV
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

99. 1942 के 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' पर हीरालाल शास्त्री और जयपुर राज्य के किस प्रधानमंत्री के बीच हस्ताक्षर हुए थे?

(1) सर वी.टी. कृष्णामाचारी
(2) सी.एस. वेंकटाचार
(3) सर मिर्जा इस्माइल
(4) के.एम. मुंशी
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

100. राजस्थान के एकीकरण के निम्नलिखित चरणों और उनके संबंधित नेताओं पर विचार कीजिए:

I. मत्स्य संघ (शोभाराम कुमावत)
II. वृहत राजस्थान (हीरालाल शास्त्री)
III. राजस्थान संघ (गोकुल लाल असावा)
IV. संयुक्त राजस्थान (माणिक्य लाल वर्मा)

इनका सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?

(1) I, II, III, IV
(2) I, III, IV, II
(3) III, I, IV, II
(4) I, IV, III, II
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

101. हीरालाल शास्त्री का जन्म 1899 में जयपुर जिले के किस स्थान पर हुआ था?

(1) चौमूं
(2) फुलेरा
(3) जोबनेर
(4) सांभर
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

102. हीरालाल शास्त्री ने समाज सेवा के लिए 1927 में जयपुर राज्य के किस राजकीय पद से त्यागपत्र दे दिया था?

(1) राज्य दीवान
(2) गृह और विदेश विभाग के सचिव
(3) मीर बख्शी
(4) जिला मजिस्ट्रेट
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

65. (1) A-iv, B-i, C-ii, D-iii
राजस्थान के सेनानियों ने लेखनी से जन-जागरण किया। केसरी सिंह बारहठ ने 'चेतावनी रा चूंगट्या' लिखा। माणिक्य लाल वर्मा का गीत 'पंछीड़ा' किसानों में लोकप्रिय हुआ। हीरालाल शास्त्री ने 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः' की रचना की। जय नारायण व्यास ने 'पोपाबाई की पोल' के माध्यम से कुरीतियों पर प्रहार किया। यह मिलान इन महापुरुषों के साहित्यिक एवं राजनीतिक योगदान को पूर्णतः स्पष्ट करता है, जिसने स्वतंत्रता संग्राम को वैचारिक बल प्रदान किया था।

66. (1) महाराणा फतेह सिंह
1903 में जब महाराणा फतेह सिंह दिल्ली दरबार जा रहे थे, तब केसरी सिंह बारहठ ने उन्हें डिंगल भाषा में 13 सोरठे लिखे, जिन्हें 'चेतावनी रा चूंगट्या' कहा जाता है। इनमें महाराणा को उनके पूर्वजों के शौर्य और स्वाभिमान का स्मरण कराया गया था। इन्हें पढ़कर महाराणा इतने प्रभावित हुए कि वे दिल्ली पहुँचकर भी दरबार में सम्मिलित नहीं हुए। यह राजस्थान के इतिहास में स्वाभिमान की एक महान और स्मरणीय नैतिक विजय थी।

67. (3) वीर भारत सभा
केसरी सिंह बारहठ ने 1910 में कोटा में 'वीर भारत सभा' नामक गुप्त संगठन बनाया। इसका उद्देश्य युवाओं को संगठित कर सशस्त्र क्रांति द्वारा विदेशी शासन का अंत करना था। उन्होंने विजय सिंह पथिक और गोपाल सिंह खरवा के साथ मिलकर इस दिशा में कार्य किया। 'वीर भारत सभा' ने राजस्थान में गुप्त गतिविधियों के संचालन और राष्ट्रवाद के प्रसार में आधारभूत भूमिका निभाई। यह संगठन राजस्थान में सशस्त्र क्रांति का मुख्य प्रेरक और केंद्र बना।

68. (2) केवल I और III
केसरी सिंह बारहठ 'महंत प्यारेलाल हत्याकांड' के मुख्य अभियुक्त थे। उनके पुत्र प्रताप सिंह की बरेली जेल में अमानवीय यातनाओं से मृत्यु हुई। केसरी सिंह को अंडमान नहीं, बल्कि 'हजारीबाग जेल' (बिहार) में रखा गया था। अतः प्रथम और तृतीय कथन सत्य हैं, जबकि द्वितीय कथन (अंडमान जेल) ऐतिहासिक रूप से त्रुटिपूर्ण है। उनका संपूर्ण परिवार राष्ट्र की स्वतंत्रता हेतु समर्पित रहा, जो भारतीय इतिहास में त्याग और बलिदान की एक अनूठी मिसाल है।

69. (3) हजारीबाग जेल
'महंत प्यारेलाल हत्याकांड' में दोषी सिद्ध होने पर केसरी सिंह बारहठ को 20 वर्ष के कठोर कारावास की सजा मिली। उन्हें बिहार की 'हजारीबाग सेंट्रल जेल' भेजा गया। जेल में भी उनका मनोबल अटूट रहा और वे निरंतर राष्ट्र सेवा हेतु चिंतनशील रहे। 1919 में उन्हें रिहा कर दिया गया। हजारीबाग जेल उनके कठिन संघर्ष, अदम्य साहस और प्रखर राष्ट्रवाद की मूक साक्षी है। उनका जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए सदैव प्रेरणा और शक्ति का स्रोत बना रहेगा।

70. (1) A and R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
केसरी सिंह बारहठ ने 'चेतावनी रा चूंगट्या' के माध्यम से महाराणा फतेह सिंह के स्वाभिमान को जाग्रत किया। वे चाहते थे कि महाराणा अपने गौरवशाली पूर्वजों के इतिहास को याद करें। इन सोरठों का मुख्य लक्ष्य महाराणा को ब्रिटिश दरबार में जाने से रोकना और उनके भीतर मेवाड़ के पारंपरिक प्रतिरोध की भावना को पुनः जीवित करना था। परिणामतः, महाराणा दिल्ली पहुँचकर भी दरबार में सम्मिलित नहीं हुए, जो राजस्थान के गौरव की महान और ऐतिहासिक जीत थी।

71. (4) रास बिहारी बोस
रास बिहारी बोस ने बारहठ परिवार के महान त्याग की प्रशंसा में ऐतिहासिक शब्द कहे थे। केसरी सिंह के भाई जोरावर सिंह और पुत्र प्रताप सिंह सहित पूरा परिवार स्वतंत्रता हेतु समर्पित था। यह भारत का एकमात्र ऐसा परिवार है जहाँ सभी सदस्यों ने क्रांतिकारी मार्ग चुनकर मातृभूमि हेतु सर्वस्व न्योछावर किया। बोस का यह वक्तव्य इस परिवार की अद्वितीय देशभक्ति, शौर्य और निस्वार्थ सेवा के प्रति राष्ट्र का एक सर्वोच्च और अमूल्य सम्मान माना जाता है।

72. (1) केवल I, II, III और IV
केसरी सिंह बारहठ कवि एवं इतिहासकार थे। उन्होंने 'प्रताप चरित्र', 'दुर्गादास चरित्र', 'राज सिंह चरित्र' और 'रूठी रानी' जैसी कृतियों की रचना की। इनका उद्देश्य भारतीय नायकों के आदर्शों को जनता तक पहुँचाना था। 'महेंद्र कुमार' की रचना अर्जुन लाल सेठी ने की थी, केसरी सिंह ने नहीं। अतः केवल प्रथम चार रचनाएँ ही उनके साहित्यिक योगदान से संबंधित हैं। उनका साहित्य राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत था और समाज को निरंतर जाग्रत करने वाला था।

73. (3) उत्तर प्रदेश
राजस्थान के किसान आंदोलनों के जनक विजय सिंह पथिक का जन्म उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर के गुठावली गाँव में हुआ था। उनका वास्तविक नाम 'भूप सिंह' था। वे प्रारंभ में उत्तर भारत की क्रांतिकारी गतिविधियों में सक्रिय रहे। बाद में वे राजस्थान आए और किसानों के शोषण के विरुद्ध संगठित संघर्ष किया। यद्यपि वे मूलतः उत्तर प्रदेश के थे, किंतु राजस्थान उनकी कर्मभूमि रही, जहाँ उन्होंने एक नवीन सामाजिक-राजनीतिक चेतना के युग का सूत्रपात किया।

74. (1) भूप सिंह
विजय सिंह पथिक का मूल नाम 'भूप सिंह गुर्जर' था। वे रास बिहारी बोस के नेतृत्व में सशस्त्र क्रांति हेतु सक्रिय थे। षड्यंत्र विफल होने और पुलिस द्वारा पीछा किए जाने पर वे राजस्थान में भूमिगत हो गए। पहचान छिपाने हेतु उन्होंने दाढ़ी बढ़ाई और नाम बदलकर ' विजय सिंह पथिक' रखा। इसी नाम से वे बिजोलिया किसान आंदोलन के महान नायक बने और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के गौरवशाली इतिहास में सदैव के लिए अमर और अविस्मरणीय हो गए।

75. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजनीतिक जागृति में समाचार पत्रों की भूमिका निर्णायक रही। विजय सिंह पथिक ने 'राजस्थान केसरी' से राष्ट्रवाद फैलाया। जय नारायण व्यास ने राजस्थानी में 'आगी बाण' प्रकाशित किया। मोतीलाल तेजावत की मांगें 'मेवाड़ पुकार' कहलाईं।

(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

116. 1922 में एकी आंदोलन के दौरान ब्रिटिश सेना द्वारा आदिवासियों पर की गई गोलीबारी की घटना को किस नाम से जाना जाता है?
(1) मानगढ़ पहाड़ी त्रासदी
(2) गोविंदपुरा हत्याकांड
(3) डाबी हत्याकांड
(4) नीमड़ा नरसंहार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

117. मोतीलाल तेजावत का जन्म कोलियारी गाँव में हुआ था। वे किस समुदाय से संबंधित थे?
(1) भील
(2) राजपूत
(3) ओसवाल जैन
(4) ब्राह्मण
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

118. आठ वर्षों तक भूमिगत रहने के पश्चात, मोतीलाल तेजावत को 1929 में किस राज्य की पुलिस ने खेड़ब्रह्मा में गिरफ्तार किया था?
(1) मेवाड़
(2) ईडर
(3) डूंगरपुर
(4) बाँसवाड़ा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

119. एकी आंदोलन प्रारंभ करने से पूर्व, मोतीलाल तेजावत ने किस ठिकाने में 'कामदार' के रूप में कार्य किया था?
(1) सलूंबर
(2) कोठारिया
(3) बिजोलिया
(4) झाडोल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

120. मोतीलाल तेजावत को 1936 में किस नेता के हस्तक्षेप के पश्चात उदयपुर जेल से रिहा किया गया था?
(1) महात्मा गांधी
(2) जवाहरलाल नेहरू
(3) सरदार वल्लभभाई पटेल
(4) सुभाष चंद्र बोस
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

और विष्णु भक्ति को प्रकट करती है। मंदिर की भित्तियों पर की गई नक्काशी तत्कालीन मेवाड़ की धार्मिक और सांस्कृतिक समृद्धि का एक अत्यंत मनमोहक उदाहरण प्रस्तुत करती है।

23. (4) ऊदा (उदयकरण)
महाराणा कुंभा का अंत अत्यंत दुखद था। 1468 में उनके पुत्र ऊदा (उदयकरण) ने सत्ता लोभ में कुंभलगढ़ दुर्ग में उनकी हत्या कर दी, जब वे उपासना में लीन थे। मेवाड़ के इतिहास में ऊदा को 'पितृहंता' शासक के रूप में जाना जाता है। बाद में मेवाड़ के सामंतों ने उसे अस्वीकार कर दिया और कुंभा के दूसरे पुत्र रायमल को राजसिंहासन पर प्रतिष्ठित किया, जिससे राज्य में शांति लौटी।

24. (1) आँवल-बाँवल की संधि
1453 में महाराणा कुंभा और राव जोधा के मध्य 'आँवल-बाँवल की संधि' हुई। इसके द्वारा मेवाड़ और मारवाड़ की सीमाओं का निर्धारण किया गया। संधि के अनुसार, आँवले के वृक्षों वाला क्षेत्र मेवाड़ और बबूल (बाँवल) वाला क्षेत्र मारवाड़ माना गया। इस समझौते ने दोनों राज्यों के मध्य दीर्घकालीन संघर्ष को समाप्त कर स्थायी शांति स्थापित की। यह संधि हंसाबाई के प्रयासों से संपन्न हुई थी।

25. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थान के व्यक्तित्वों का जन्मस्थानों से गहरा संबंध है। मीराबाई का जन्म 'कुड़की' (पाली) में हुआ, जबकि गोविंद गुरु 'बासिया' (डूंगरपुर) में जन्मे। अमर सिंह राठौड़ नागौर से संबंधित हैं, जहाँ उनका शौर्य विख्यात है। मोतीलाल तेजावत का जन्म 'कोलियारी' गाँव में हुआ, जहाँ से उन्होंने आदिवासियों के उत्थान का कार्य आरंभ किया। यह मिलान इन महापुरुषों की क्षेत्रीय जड़ों और ऐतिहासिक पहचान को पूर्णतः स्पष्ट करता है।

26. (1) भोजराज
भक्त शिरोमणि मीराबाई का विवाह 1516 में महाराणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र कुँवर भोजराज से हुआ। इसके साथ ही वे मेवाड़ राजपरिवार की वधू बनीं। विवाह के कुछ समय बाद भोजराज की मृत्यु हो गई, जिसके उपरांत मीराबाई ने स्वयं को पूर्णतः कृष्ण भक्ति में समर्पित कर दिया। उनकी यह अनन्य भक्ति राजसी परंपराओं के विरुद्ध थी, जिसने उन्हें तत्कालीन समाज में एक विशिष्ट आध्यात्मिक पहचान और सम्मान दिलाया।

27. (4) उन्होंने अपने भक्ति गीत मुख्य रूप से पिंगल बोली में लिखे थे।
मीराबाई सगुण भक्ति धारा की महान कवयित्री थीं। वे संत रैदास को अपना गुरु मानती थीं। जीवन के अंतिम समय में वे द्वारका के रणछोड़जी मंदिर में रहने लगीं। उनकी रचनाओं की मुख्य भाषा 'राजस्थानी' एवं 'ब्रज' का मिश्रण है, पिंगल नहीं। पिंगल वीर रस की भाषा है, जबकि मीरा के पदों में 'माधुर्य भाव' और 'भक्ति रस' की प्रधानता है। अतः अंतिम कथन ऐतिहासिक रूप से गलत है।

28. (1) केवल I और II
मीराबाई की रचनाओं में 'नरसी जी रो मायरो' सुप्रसिद्ध है, जिसे उन्होंने रत्ना खाती के सहयोग से रचा। उनकी भक्ति में 'माधुर्य भाव' की प्रधानता है और उन्होंने कृष्ण को पति रूप में स्वीकारा। यद्यपि वे वृंदावन में चैतन्य संप्रदाय के संतों से मिलीं, किंतु उन्होंने स्वयं किसी पृथक संप्रदाय की स्थापना नहीं की थी। अतः केवल प्रथम दो कथन सत्य हैं, जबकि संप्रदाय स्थापना का तीसरा कथन असत्य है।

29. (3) राणा विक्रमादित्य
भोजराज की मृत्यु के पश्चात मीराबाई ने साधु-संतों के साथ कृष्ण भक्ति का मार्ग चुना। उनके इस आचरण को महाराणा विक्रमादित्य ने राजमर्यादा के विरुद्ध मानकर उन्हें अनेक कष्ट दिए, यहाँ तक कि उन्हें मारने हेतु विष भी भेजा। इस राजकीय उत्पीड़न के कारण मीराबाई को मेवाड़ छोड़ना पड़ा। वे पहले मेड़ता, फिर वृंदावन और अंततः द्वारका चली गईं, जहाँ उन्होंने अपना शेष जीवन ईश्वर भक्ति में व्यतीत किया।

30. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
मीराबाई का भक्ति मार्ग मध्यकालीन समाज के कठोर नियमों के विपरीत था। उन्होंने पति की मृत्यु के बाद 'सती प्रथा' को अस्वीकार कर दिया, जो एक क्रांतिकारी निर्णय था। राजमहल त्यागकर वे सार्वजनिक स्थानों पर साधु-संतों के साथ कीर्तन करती थीं। उनके इन कार्यों ने रूढ़िवादी सामाजिक एवं राजकीय परंपराओं को सीधी चुनौती दी। इसी कारण उन्हें आजीवन विरोध और संघर्ष का सामना करना पड़ा, जो उनकी दृढ़ता को दर्शाता है।

31. (1) मीराबाई की पदावली
मीराबाई ने कृष्ण की अनन्य भक्ति में अनेक पदों की रचना की, जिनका संग्रह 'मीराबाई की पदावली' कहलाता है। इसमें राजस्थानी, ब्रज और गुजराती भाषाओं का सुंदर समन्वय है। उनकी पदावली में भक्ति, विरह और पूर्ण समर्पण का अनूठा संगम मिलता है, जो आज भी संपूर्ण भारत में अत्यंत लोकप्रिय है। यह कृति मीरा के आध्यात्मिक अनुभवों और कृष्ण के प्रति उनके अटूट प्रेम को मार्मिक रूप से अभिव्यक्त करती है।

32. (1) केवल I, II, III और IV
मीराबाई की भक्ति सगुण ब्रह्म के प्रति पूर्ण समर्पण पर आधारित थी। उन्होंने सामाजिक भेदभाव और जातिगत ऊँच-नीच को अस्वीकार किया। धार्मिक विश्वासों के कारण उन्हें राजपरिवार के विरोध का सामना करना पड़ा। उन्होंने 'गीत गोविंद की टीका' जैसी साहित्यिक कृतियाँ भी रचीं। हालाँकि, उनका जीवन पूर्णतः आध्यात्मिक था और उन्होंने किसी राजनीतिक सत्ता के विरुद्ध कोई विद्रोह नहीं किया था। अतः उनके विषय में विद्रोह का कथन असत्य है।

33. (2) औरंगजेब
वीर दुर्गादास राठौड़ ने मारवाड़ की रक्षा हेतु मुगल सम्राट औरंगजेब के विरुद्ध 30 वर्षों तक संघर्ष किया। जसवंत सिंह की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने जोधपुर को 'खालसा' घोषित कर दिया था। दुर्गादास ने शिशु अजीत सिंह की सुरक्षा सुनिश्चित

चंदेलों के प्रसिद्ध सेनापति आल्हा और ऊदल ने वीरतापूर्वक लड़ते हुए वीरगति प्राप्त की। इस विजय से पृथ्वीराज का महोबा क्षेत्र पर अधिकार हो गया और उनकी सैन्य प्रतिष्ठा बढ़ी। यह युद्ध उत्तर भारतीय इतिहास में राजपूत शौर्य और विस्तारवादी नीति का प्रमुख उदाहरण है।

12. (4) I, II, III, IV और V
पृथ्वीराज चौहान तृतीय महान योद्धा होने के साथ विद्या एवं कला के संरक्षक भी थे। उनके दरबार में जयानक, विद्यापति गौड़, वागीश्वर, जनार्दन और विश्वरूप जैसे विद्वान सुशोभित थे। जयानक ने सुप्रसिद्ध कृति 'पृथ्वीराज विजय' की रचना की। इन विद्वानों ने तत्कालीन साहित्य और ज्ञान के विकास में अमूल्य योगदान दिया। अतः इन सभी पाँचों मनीषियों को पृथ्वीराज चौहान का राजकीय संरक्षण प्राप्त था।

13. (3) भदानक
पृथ्वीराज चौहान ने अपनी विस्तारवादी नीति के अंतर्गत सर्वप्रथम आंतरिक शत्रुओं का दमन किया। उन्होंने दिल्ली और अलवर के निकट सक्रिय 'भदानक' समुदाय की शक्ति को पूर्णतः कुचल दिया। यह समुदाय उनकी उत्तरी सीमाओं के लिए निरंतर संकट बना हुआ था। भदानकों पर विजय प्राप्त कर पृथ्वीराज ने अपनी सीमाओं को सुरक्षित किया और क्षेत्रीय शक्तियों पर अपना प्रभाव स्थापित करने में सफलता पाई।

14. (4) किला राय पिथौरा
पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने दिल्ली पर अधिकार के पश्चात सुरक्षा हेतु एक विशाल दुर्ग का निर्माण कराया, जिसे 'किला राय पिथौरा' कहा जाता है। 'राय पिथौरा' उनकी सुप्रसिद्ध उपाधि थी, जिसका अर्थ है 'युद्ध में पीठ न दिखाने वाला'। यह किला मध्यकालीन दिल्ली की सुदृढ़ सैन्य वास्तुकला का प्रतीक है। आज भी इसके अवशेष पृथ्वीराज चौहान के पराक्रम और दिल्ली पर उनके आधिपत्य का स्मरण कराते हैं।

15. (1) A-i, B-ii, C-iii, D-iv
मध्यकालीन साहित्य में लेखकों ने ऐतिहासिक घटनाओं का सजीव चित्रण किया है। चंद बरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' और जयानक ने 'पृथ्वीराज विजय' की रचना की। नयनचंद्र सूरी 'हम्मीर महाकाव्य' के रचयिता थे, जबकि पद्मनाभ ने 'कान्हड़दे प्रबंध' लिखा। ये सभी ग्रंथ तत्कालीन राजस्थान के इतिहास, शौर्य और संस्कृति को समझने हेतु सर्वाधिक विश्वसनीय स्रोत माने जाते हैं। इन रचनाओं का ऐतिहासिक एवं साहित्यिक महत्व अतुलनीय है।

16. (2) तबरहिंद के किले पर अधिकार
1191 के 'तराइन के प्रथम युद्ध' का तात्कालिक कारण तबरहिंद (भटिंडा) के सामरिक किले पर अधिकार का विवाद था। मुहम्मद गोरी ने इस पर अवैध कब्जा कर लिया था, जिसे पृथ्वीराज अपनी सीमा का हिस्सा मानते थे। क्षेत्र की सुरक्षा हेतु पृथ्वीराज ने गोरी पर भीषण आक्रमण किया और उसे करारी पराजय दी। इस विजय ने पृथ्वीराज चौहान के सैन्य कौशल और क्षेत्रीय अखंडता की पुष्टि की।

17. (2) मालवा के महमूद खिलजी
महाराणा कुंभा ने 1437 के 'सारंगपुर युद्ध' में मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को पराजित किया। इस गौरवशाली विजय की स्मृति में उन्होंने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में नौ मंजिला 'विजय स्तंभ' का निर्माण कराया। इसे 'भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश' कहा जाता है और यह भगवान विष्णु को समर्पित है। यह स्तंभ कुंभा की सैन्य विजय और मेवाड़ की उत्कृष्ट स्थापत्य कला का जीवंत और अमर प्रतीक है।

18. (1) केवल I, II और III
महाराणा कुंभा विद्वान एवं कुशल लेखक थे। उन्होंने 'गीत गोविंद' पर 'रसिक प्रिया' टीका लिखी और संगीत पर 'सुधा प्रबंध' एवं 'कामराज रतिसार' जैसे ग्रंथों की रचना की। उनका 'संगीत राज' ग्रंथ संगीत शास्त्र का महत्वपूर्ण एवं विशाल स्रोत है। ध्यातव्य है कि 'संगीत रत्नाकर' पर उन्होंने मात्र टीका लिखी थी, वह उनकी मूल कृति नहीं है। अतः केवल प्रथम तीन विकल्प सत्य और सटीक हैं।

19. (3) उन्होंने मेवाड़ की सुरक्षा के लिए 84 में से 32 किलों का निर्माण करवाया था।
महाराणा कुंभा को मेवाड़ की स्थापत्य कला का जनक कहा जाता है। 'वीर विनोद' के अनुसार मेवाड़ के 84 दुर्गों में से 32 का निर्माण अकेले कुंभा ने कराया था। इनमें कुंभलगढ़ दुर्ग सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जिसका वास्तुकार मंडन था। उन्होंने मालवा विजय की स्मृति में 'विजय स्तंभ' बनवाया। कुंभा की स्थापत्य सूझबूझ ने ही मेवाड़ की सीमाओं को विदेशी शत्रुओं से सुरक्षित और सैन्य दृष्टि से सुदृढ़ बनाया।

20. (1) तराइन का प्रथम युद्ध – सारंगपुर का युद्ध – हल्दीघाटी का युद्ध – दिवेर का युद्ध
राजस्थान के इन प्रसिद्ध युद्धों का सही कालक्रम इस प्रकार है: सर्वप्रथम 'तराइन का प्रथम युद्ध' (1191), फिर महाराणा कुंभा का 'सारंगपुर युद्ध' (1437), इसके पश्चात महाराणा प्रताप का 'हल्दीघाटी युद्ध' (1576) और अंत में 'दिवेर का युद्ध' (1582) हुआ। यह क्रम राजस्थान के मध्यकालीन इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं की निरंतरता को दर्शाता है, जो क्षेत्रीय स्वाधीनता और सैन्य संघर्षों के प्रतीक हैं।

21. (3) दल पुंगल
महाराणा कुंभा ने हिंदू सुरत्राण, अभिनव भरताचार्य, राणो रासो, राजगुरु और हालगुरु जैसी उपाधियाँ धारण की थीं। ये उनकी सैन्य शक्ति, संगीत प्रेम और विद्वत्ता को दर्शाती हैं। 'दल पुंगल' (विश्व विजेता) की उपाधि महाराणा कुंभा की नहीं, बल्कि पृथ्वीराज चौहान तृतीय की थी। अतः अन्य सभी विकल्प कुंभा से संबंधित हैं, जबकि दल पुंगल उनके द्वारा धारण की गई उपाधि नहीं थी। यह विभेद महत्वपूर्ण है।

22. (2) भगवान विष्णु (वराह अवतार)
महाराणा कुंभा कला एवं भक्ति के महान संरक्षक थे। उन्होंने चित्तौड़गढ़ दुर्ग में 'कुंभस्वामी मंदिर' का निर्माण कराया, जो मुख्य रूप से भगवान विष्णु के 'वराह अवतार' को समर्पित है। इस मंदिर की उत्कृष्ट स्थापत्य शैली कुंभा की धार्मिक उदारता

उत्तर (व्याख्या सहित)

1. (2) राणा पूँजा
राणा पूँजा मेवाड़ के महाराणा प्रताप के अत्यंत विश्वसनीय और साहसी भील सेनापति थे। वे भील जनजाति के प्रमुख नेता थे, जिन्होंने हल्दीघाटी युद्ध में मुगलों के विरुद्ध अदम्य वीरता दिखाई। उनकी छापामार युद्ध पद्धति ने प्रताप को पहाड़ी क्षेत्रों में सामरिक बढ़त दिलाई। उनके महान योगदान के कारण ही मेवाड़ के राजचिह्न पर एक ओर भील योद्धा का चित्र अंकित है।

2. (1) सुल्तान खान
महाराणा प्रताप ने 1582 के दिवेर युद्ध में मुगल सेनापति सुल्तान खान को पराजित किया। यह युद्ध प्रताप के संघर्ष में निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ। सुल्तान खान की पराजय ने मुगलों का मनोबल तोड़ दिया। इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने इस युद्ध के रणनीतिक महत्व के कारण इसे 'मेवाड़ का मैराथन' कहा है। यह विजय प्रताप की सैन्य कुशलता का प्रतीक मानी जाती है।

3. (3) उन्होंने अपनी मृत्यु से पूर्व चित्तौड़गढ़ के किले पर सफलतापूर्वक पुन: अधिकार कर लिया था।
महाराणा प्रताप ने अपने जीवनकाल में मेवाड़ के अधिकांश खोए हुए प्रदेश पुनः जीत लिए थे। उन्होंने चावंड को अपनी राजधानी बनाकर प्रशासन सुदृढ़ किया। निरंतर संघर्ष के बाद भी वे चित्तौड़गढ़ और मांडलगढ़ के किलों पर अधिकार करने में सफल नहीं हो सके। अतः यह कथन कि उन्होंने चित्तौड़गढ़ पर विजय प्राप्त कर ली थी, ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः असत्य और निराधार है।

4. (1) जलाल खाँ, मान सिंह, भगवंत दास, टोडरमल
अकबर ने महाराणा प्रताप को अधीनता स्वीकार करने हेतु चार दूत भेजे थे। इनका सही कालानुक्रम जलाल खाँ कोरची (1572), फिर 1573 में क्रमशः कुँवर मान सिंह, राजा भगवंत दास और अंत में राजा टोडरमल है। इन चारों की वार्ता विफल रही, जिसके परिणामस्वरूप 1576 में हल्दीघाटी का ऐतिहासिक युद्ध हुआ। यह क्रम राजस्थान की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

5. (1) A-ii, B-i, C-iv, D-iii
राजस्थान के शासकों को उनकी विशेषताओं के आधार पर विशिष्ट उपाधियाँ प्राप्त थीं। महाराणा प्रताप बचपन में 'कीका' कहलाते थे। राणा कुंभा को संगीत निपुणता हेतु 'अभिनव भरताचार्य' की उपाधि मिली। पृथ्वीराज चौहान 'राय पिथौरा' नाम से प्रसिद्ध हुए। वहीं, वीर दुर्गादास राठौड़ को उनकी अडिग निष्ठा के कारण कर्नल जेम्स टॉड ने उन्हें 'राजपूताना का यूलिसिस' कहकर सम्मानित किया था।

6. (2) चावंड शैली
महाराणा प्रताप ने चावंड को अपनी संकटकालीन राजधानी बनाया, जहाँ मेवाड़ चित्रकला की 'चावंड शैली' विकसित हुई। इस शैली का विकास प्रताप के अंतिम वर्षों में हुआ, जिसमें स्थानीय विशेषताओं का समावेश है। प्रसिद्ध चित्रकार नसीरुद्दीन ने 1605 में इसी शैली के अंतर्गत 'रागमाला' का चित्रण किया था। यह शैली राजस्थानी चित्रकला के इतिहास में अपना महत्वपूर्ण और विशिष्ट स्थान रखती है।

7. (4) भामाशाह
मुगलों के विरुद्ध संघर्ष के दौरान जब महाराणा प्रताप आर्थिक संकट में थे, तब दानवीर भामाशाह ने अपनी संपूर्ण निजी संपत्ति उन्हें समर्पित कर दी। इस सहयोग से सेना का पुनर्गठन संभव हुआ। उनके महान त्याग के कारण भामाशाह को 'मेवाड़ का उद्धारक' और 'दानवीर' कहा जाता है। इस सहायता ने प्रताप के स्वाधीनता संग्राम को नई ऊर्जा और दीर्घकालिक शक्ति प्रदान की।

8. (4) I, II और III
महाराणा प्रताप ने मुगलों से वैवाहिक संबंधों का सदैव विरोध किया। वे 1578 में कुंभलगढ़ युद्ध के दौरान मुगल सेनापति शाहबाज खान से पराजित हुए थे। उनकी मृत्यु 1597 में चावंड में हुई और अंतिम संस्कार बांडोली गाँव में किया गया, जहाँ उनकी आठ खंभों की छतरी स्थित है। अतः प्रश्न में दिए गए तीनों कथन ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार पूर्णतः सत्य और सटीक हैं।

9. (3) कर्पूरी देवी
पृथ्वीराज चौहान तृतीय मात्र 11 वर्ष की आयु में अजमेर के शासक बने। अल्पायु होने के कारण उनकी माता कर्पूरी देवी ने संरक्षिका के रूप में शासन संभाला। उन्होंने मुख्यमंत्री कदंबवास और सेनापति भुवनमल्ल के सहयोग से राज्य का कुशलतापूर्वक संचालन किया। कर्पूरी देवी के मार्गदर्शन ने ही पृथ्वीराज को भविष्य का महान सम्राट बनाया। उनकी प्रशासनिक सूझबूझ उस कालखंड में अत्यंत प्रभावी और अनुकरणीय रही।

10. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पृथ्वीराज चौहान और कन्नौज नरेश जयचंद के मध्य तीव्र राजनीतिक एवं व्यक्तिगत शत्रुता थी। संयोगिता अपहरण की घटना ने इस वैमनस्य को चरम पर पहुँचा दिया। इस आपसी संघर्ष ने राजपूत एकता को समाप्त कर उत्तर भारत की रक्षा व्यवस्था दुर्बल कर दी। इसी फूट का लाभ उठाकर विदेशी आक्रमणकारी मुहम्मद गोरी को भारतीय राज्यों पर विजय प्राप्त करने का सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ।

11. (4) तुमुल (महोबा) का युद्ध
पृथ्वीराज चौहान ने 1182 में चंदेल शासक परमर्दिदेव को 'तुमुल' या 'महोबा के युद्ध' में पराजित किया। इस युद्ध में

की और उन्हें शासक बनाने हेतु मुगलों से युद्ध लड़ा। उनकी यह वीरता, स्वामी भक्ति और अटूट धैर्य उन्हें राजपूताना के इतिहास में एक महान नायक के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

34. (1) गोरा धाय
औरंगजेब की कैद से शिशु राजकुमार अजीत सिंह को निकालने में गोरा धाय ने साहसी भूमिका निभाई। उन्होंने अपने पुत्र का बलिदान देकर राजकुमार के प्राण बचाए, इसीलिए उन्हें 'मारवाड़ की पन्ना धाय' कहा जाता है। दुर्गादास राठौड़ के साथ मिलकर उन्होंने मुगलों को चकमा दिया और अजीत सिंह को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया। गोरा धाय का यह बलिदान मारवाड़ के स्वाभिमान और राजभक्ति की रक्षा का एक अनुपम उदाहरण है।

35. (1) A-iv, B-i, C-iii, D-ii
राजस्थान के महापुरुषों का ऐतिहासिक योगदान विशिष्ट रहा है। दुर्गादास राठौड़ ने अजीत सिंह की सुरक्षा कर मारवाड़ की रक्षा की। सवाई जय सिंह द्वितीय ने 'जंतर मंतर' जैसी वेधशालाएँ बनवाकर खगोल विज्ञान को बढ़ावा दिया। अर्जुन लाल सेठी ने जयपुर में 'वर्धमान विद्यालय' स्थापित कर क्रांतिकारियों को प्रशिक्षित किया। वहीं, विजय सिंह पथिक ने 'राजस्थान केसरी' के माध्यम से किसान आंदोलनों को नई दिशा और वैचारिक आधार प्रदान किया था।

36. (4) मेवाड़
जब औरंगजेब की सेना महाराजा अजीत सिंह और दुर्गादास राठौड़ का पीछा कर रही थी, तब मेवाड़ महाराणा राज सिंह ने उन्हें शरण दी। उन्होंने मुगलों की परवाह किए बिना उन्हें 'केलवा' की जागीर प्रदान की। यह मेवाड़ और मारवाड़ के मध्य मुगलों के विरुद्ध एक महत्वपूर्ण रणनीतिक सहयोग था। मेवाड़ की इसी सहायता ने राठौड़ सेना को मुगलों के विरुद्ध अपने 30 वर्षीय लंबे संघर्ष को जारी रखने का संबल दिया।

37. (3) वे मारवाड़ से चले गए थे और उन्होंने अपने अंतिम वर्ष उज्जैन में व्यतीत किए।
मारवाड़ की स्वतंत्रता के पश्चात महाराजा अजीत सिंह और दुर्गादास के संबंधों में कड़वाहट आ गई। इससे आहत होकर दुर्गादास ने मारवाड़ त्याग दिया और अंततः उज्जैन चले गए। उन्होंने अपने अंतिम दिन क्षिप्रा नदी के तट पर आध्यात्मिक शांति में व्यतीत किए। 1718 में उज्जैन में उनका निधन हुआ, जहाँ आज भी उनकी भव्य छतरी उनकी अटूट निष्ठा, वीरता और त्याग की पावन स्मृति के रूप में स्थित है।

38. (4) I, II, III और IV
दुर्गादास राठौड़ ने शहजादा अकबर को औरंगजेब के विरुद्ध विद्रोह हेतु प्रेरित किया। उन्होंने औरंगजेब के पौत्र-पौत्री की सुरक्षा कर उनकी इस्लामी शिक्षा की व्यवस्था की, जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता का प्रमाण है। 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद उन्होंने पुनः जोधपुर जीता। उज्जैन में क्षिप्रा तट पर उनकी छतरी स्थित है। अतः प्रश्न में दिए गए चारों कथन उनके महान व्यक्तित्व और ऐतिहासिक कार्यों पर पूर्णतः सटीक बैठते हैं।

39. (4) जेम्स टॉड
ब्रिटिश इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड ने दुर्गादास राठौड़ की अदम्य वीरता और स्वामी भक्ति से प्रभावित होकर उन्हें 'राजपूताना का यूलिसिस' कहा। जिस प्रकार यूनानी नायक यूलिसिस अपने साहस हेतु विख्यात था, उसी प्रकार दुर्गादास ने मारवाड़ हेतु औरंगजेब की विशाल शक्ति से निरंतर लोहा लिया। टॉड का यह कथन दुर्गादास के संघर्षपूर्ण जीवन और उनकी अडिग निष्ठा के प्रति एक महान ऐतिहासिक सम्मान की सजीव अभिव्यक्ति माना जाता है।

40. (1) II, I, III, IV
मारवाड़ के इतिहास का सही कालक्रम इस प्रकार है: सर्वप्रथम 1678 में जमरूद में महाराजा जसवंत सिंह की मृत्यु हुई, फिर 1679 में अजीत सिंह का जन्म हुआ। इसके पश्चात दुर्गादास ने शिशु अजीत सिंह को दिल्ली से सुरक्षित निकाला। अंततः मारवाड़ की स्वतंत्रता के बाद महाराजा अजीत सिंह ने दुर्गादास को राज्य से निष्कासित कर दिया। यह क्रम मारवाड़ के संघर्षमय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं की सही निरंतरता को दर्शाता है।

41. (3) महाराजा गज सिंह
नागौर के लोक नायक अमर सिंह राठौड़ मारवाड़ महाराजा गज सिंह के ज्येष्ठ पुत्र थे। स्वतंत्र स्वभाव के कारण उन्हें मारवाड़ के उत्तराधिकार से वंचित कर उनके छोटे भाई जसवंत सिंह को शासक बनाया गया। निष्कासित होने के बाद वे मुगल दरबार में चले गए। उनकी अदम्य वीरता और स्वाभिमान की गाथाएँ आज भी राजस्थान के लोक गीतों और आख्यानों में बड़े सम्मान से सुनी जाती हैं। वे राजपूत शौर्य के प्रतीक हैं।

42. (1) शाहजहाँ
मारवाड़ से वंचित होने के बाद अमर सिंह राठौड़ मुगल दरबार पहुँचे। उनकी वीरता से प्रभावित होकर सम्राट शाहजहाँ ने उन्हें 'नागौर' की स्वतंत्र जागीर और 'राव' की उपाधि प्रदान की। मुगल सेवा में रहकर भी अमर सिंह ने अपना स्वाभिमानी राजपूत स्वभाव नहीं त्यागा। नागौर उनकी सैन्य शक्ति का केंद्र बना, जहाँ से उन्होंने अपने शौर्य द्वारा इतिहास में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। उनका व्यक्तित्व आज भी स्वाभिमान की मिसाल है।

43. (4) अमर सिंह राठौड़
राव अमर सिंह राठौड़ ने शाहजहाँ के भरे दरबार में मीर बख्शी सलावत खाँ की हत्या कर दी थी। सलावत खाँ ने अमर सिंह की अनुपस्थिति में उनके लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया था, जिसे स्वाभिमानी अमर सिंह ने सहन नहीं किया। इस घटना ने मुगल दरबार को हिला दिया और अमर सिंह की वीरता को अमर बना दिया। उनके इस अदम्य साहस को आज भी स्वाभिमान हेतु किए गए महान बलिदान के रूप में स्मरण किया जाता है।

44. (2) महाराजा करण सिंह
1644 में नागौर के अमर सिंह राठौड़ और बीकानेर के महाराजा करण सिंह के मध्य 'मतीरे की राड़' नामक प्रसिद्ध युद्ध हुआ। यह विवाद तब हुआ जब नागौर की सीमा वाली मतीरे की

103. 1951 में हीरालाल शास्त्री के त्यागपत्र के पश्चात केंद्र सरकार द्वारा किसे राजस्थान का मुख्यमंत्री नियुक्त किया गया था?
(1) टीका राम पालीवाल
(2) जय नारायण व्यास
(3) Mohanलाल सुखाड़िया
(4) सी.एस. वेंकटाचार
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

104. वनस्थली विद्यापीठ का नाम प्रारंभ में 'शांताबाई शिक्षा कुटीर' रखा गया था। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(1) महिला शिक्षा और सशक्तिकरण
(2) बालकों के लिए संस्कृत शिक्षा
(3) जनजातीय समुदायों के लिए प्रशिक्षण
(4) राजनीतिक बंदियों के बच्चों की शिक्षा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

105. गोविंद गुरु ने भीलों में सामाजिक-धार्मिक सुधार के लिए 1883 में किस संस्था की स्थापना की थी?
(1) भील सेवा मंडल
(2) वनवासी कल्याण आश्रम
(3) संप सभा
(4) राजस्थान सेवा संघ
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

106. निम्नलिखित में से कौन सा सिद्धांत गोविंद गुरु के भगत आंदोलन की मूल शिक्षाओं में सम्मिलित नहीं था?
(1) पशु बलि के साथ देवताओं की पूजा
(2) मदिरा और मांस का त्याग
(3) विदेशी वस्तुओं और करों का बहिष्कार
(4) अस्पृश्यता का विरोध
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

107. मानगढ़ पहाड़ी नरसंहार, जिसे 'राजस्थान का जलियांवाला बाग' कहा जाता है, किस तिथि को हुआ था?
(1) 17 नवंबर 1913
(2) 13 अप्रैल 1919
(3) 7 दिसंबर 1908
(4) 21 मार्च 1921
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

108. गोविंद गुरु के विचार किस समाज सुधारक से गहराई से प्रभावित थे?
(1) स्वामी विवेकानंद
(2) स्वामी दयानंद सरस्वती
(3) राजा राममोहन राय
(4) ज्योतिराव फुले
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

109. गोविंद गुरु का जन्म डूंगरपुर के बासिया गाँव के किस समुदाय में हुआ था?
(1) भील
(2) मेघवाल
(3) बंजारा
(4) गरासिया
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

110. गोविंद गुरु से संबंधित निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(1) जन्मस्थान - मातृकुंडिया
(2) संप सभा की स्थापना - 1903
(3) मुख्य अनुयायी - सहारिया जनजाति
(4) अंतिम समय का स्थान - कंबोई (गुजरात)
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

111. मानगढ़ हत्याकांड के पश्चात गोविंद गुरु को कहाँ कैद किया गया था?
(1) अहमदाबाद सेंट्रल जेल
(2) सेल्युलर जेल
(3) वेल्लोर जेल
(4) मांडले जेल
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

112. गोविंद गुरु द्वारा स्थापित 'संप सभा' में 'संप' शब्द का अर्थ है:
(1) अहिंसा
(2) भाईचारा और एकता
(3) स्वराज
(4) त्याग
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

113. मोतीलाल तेजावत ने भीलों और गरासियों के 'एकी आंदोलन' की शुरुआत 1921 में किस स्थान से की थी?
(1) झाडोल
(2) मातृकुंडिया
(3) मानगढ़
(4) नीमड़ा
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

114. मोतीलाल तेजावत ने आदिवासियों की समस्याओं के निराकरण हेतु 21-सूत्रीय मांग पत्र तैयार किया था। इसे क्या कहा जाता था?
(1) मेवाड़ पुकार
(2) भील पुकार
(3) एकी घोषणा
(4) आदिवासियों का अधिकार पत्र
(5) प्रश्न हल नहीं किया गया

115. आदिवासियों द्वारा मोतीलाल तेजावत को किस स्नेहपूर्ण उपाधि से पुकारा जाता था?
(1) लोक नायक
(2) जन महात्मा
(3) बावजी (भीलों के मसीहा)
(4) अरावली के कीका

55. (1) A-iii, B-iv, C-ii, D-i
राजस्थान के शासकों का ऐतिहासिक योगदान अविस्मरणीय है। महाराणा कुंभा ने चित्तौड़गढ़ में 'विजय स्तंभ' बनवाया। सवाई जय सिंह ने खगोलीय सारणी 'जिज-ए-मुहम्मद शाही' का संकलन किया। वीर दुर्गादास राठौड़ का नाम मेवाड़-मारवाड़ के मध्य 'देबारी समझौते' में महत्वपूर्ण रहा। पृथ्वीराज चौहान ने दिल्ली की सुरक्षा हेतु 'किला राय पिथौरा' निर्मित कराया। यह मिलान इन महान शासकों की विशिष्ट ऐतिहासिक उपलब्धियों और उनके दूरगामी प्रभाव को पूर्णतः स्पष्ट करता है।

56. (1) सम्राट यंत्र
जयपुर के जंतर मंतर में स्थित 'सम्राट यंत्र' विश्व की विशालतम पाषाण निर्मित धूपघड़ी है। 27 मीटर ऊँचा यह यंत्र स्थानीय समय की गणना दो सेकंड की सूक्ष्म सटीकता से कर सकता है। सवाई जय सिंह द्वारा निर्मित इस यंत्र का उपयोग सौर स्थिति और काल मापन हेतु किया जाता था। अपनी अद्वितीय वैज्ञानिक भव्यता के कारण ही इस संपूर्ण परिसर को 'यूनेस्को' द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्रदान की गई है।

57. (3) जयपुर
क्रांतिकारी अर्जुन लाल सेठी का जन्म 1880 में जयपुर के प्रतिष्ठित जैन परिवार में हुआ। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा जयपुर में पाई और कालांतर में वे क्रांतिकारी गतिविधियों के मुख्य सूत्रधार बने। जयपुर में रहकर उन्होंने युवाओं में प्रखर देशभक्ति की भावना जागृत की। जन्मस्थान होने के साथ ही जयपुर उनकी राजनीतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा, जहाँ से उन्होंने संपूर्ण राजस्थान में आधुनिक राष्ट्रवाद की मशाल प्रज्वलित की थी।

58. (1) केवल I, II और III
अर्जुन लाल सेठी ने जयपुर में 'जैन वर्धमान विद्यालय' स्थापित किया, जो क्रांतिकारियों का प्रशिक्षण केंद्र बना। उन्होंने 'महेंद्र कुमार', 'शूद्र मुक्ति' और 'मदन पराजय' जैसी राष्ट्रवादी कृतियों की रचना की। ध्यातव्य है कि 'चेतावनी रा चूंगट्या' के रचयिता केसरी सिंह बारहठ थे, सेठी नहीं। अतः केवल प्रथम तीन बिंदु ही अर्जुन लाल सेठी के जीवन और उनके साहित्यिक योगदान से संबंधित हैं। उनका साहित्य युवाओं को स्वतंत्रता हेतु प्रेरित करने वाला था।

59. (4) अर्जुन लाल सेठी
जयपुर प्रशासन ने जब अर्जुन लाल सेठी को जिलाधिकारी पद का प्रस्ताव दिया, तब उन्होंने कहा, "यदि सेठी नौकरी करेगा तो अंग्रेजों को भारत से बाहर कौन निकालेगा?" यह स्वाभिमानी कथन उनके त्याग, राष्ट्रप्रेम और स्वतंत्रता के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता को दर्शाता है। उनके इस निर्णय ने तत्कालीन युवाओं को सरकारी पदों का मोह त्याग कर देश सेवा और क्रांतिकारी मार्ग अपनाने हेतु प्रेरित किया। वे त्याग और बलिदान की प्रतिमूर्ति थे।

60. (1) I, II, III, IV
राजस्थान के राजनीतिक इतिहास का सही क्रम इस प्रकार है: सर्वप्रथम 1907 में अर्जुन लाल सेठी ने 'जैन वर्धमान विद्यालय' खोला। फिर 1919 में 'राजस्थान सेवा संघ' का गठन हुआ। 1938 में 'मेवाड़ प्रजामंडल' की स्थापना हुई और अंततः 30 मार्च 1949 को 'वृहद राजस्थान' बना। यह अनुक्रम राजस्थान में शैक्षणिक चेतना, राजनीतिक संगठन और अंततः एकीकरण की प्रक्रिया को सटीक रूप से दर्शाता है। यह राज्य निर्माण का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक पथ है।

61. (3) वे मारवाड़ प्रजामंडल के संस्थापक सदस्य थे।
अर्जुन लाल सेठी का कार्यक्षेत्र जयपुर एवं अजमेर था। उन्होंने निमेज हत्याकांड हेतु 'वेल्लोर जेल' में कठिन कारावास भोगा। वे सांप्रदायिक सद्भाव के समर्थक थे और अंतिम दिनों में अजमेर की दरगाह में बच्चों को शिक्षा देते हुए फकीर जैसा जीवन बिताया। 'मारवाड़ प्रजामंडल' से उनका सीधा जुड़ाव नहीं था, क्योंकि वह जय नारायण व्यास का क्षेत्र था। अतः मारवाड़ प्रजामंडल संबंधी कथन ऐतिहासिक रूप से असत्य और त्रुटिपूर्ण है।

62. (4) युवाओं को क्रांतिकारी राष्ट्रवादी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित करना।
1907 में स्थापित 'जैन वर्धमान विद्यालय' का वास्तविक उद्देश्य क्रांतिकारी युवाओं को प्रशिक्षित करना था। यहाँ छात्रों को शिक्षा के साथ शस्त्र संचालन और गुप्त गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जाता था। जोरावर सिंह बारहठ और प्रताप सिंह बारहठ जैसे वीर क्रांतिकारी इसी विद्यालय की देन थे। इस विद्यालय ने राजस्थान में सशस्त्र क्रांति की नींव रखी और ब्रिटिश शासन के विरुद्ध संघर्ष हेतु एक मजबूत आधार स्तंभ के रूप में कार्य किया।

63. (4) (1) और (2) दोनों
1912 में लॉर्ड हार्डिंग पर बम फेंकने की घटना में वर्धमान विद्यालय के छात्र जोरावर सिंह और प्रताप सिंह बारहठ सम्मिलित थे। सेठी के मार्गदर्शन में इन वीरों ने ब्रिटिश सत्ता को हिला दिया था। घटना के बाद वे भूमिगत हो गए। प्रताप सिंह बाद में पकड़े गए, जबकि जोरावर सिंह जीवनभर अंग्रेजों के हाथ नहीं आए। यह साहसिक कृत्य राजस्थान के क्रांतिकारियों के अटूट शौर्य और वर्धमान विद्यालय की प्रभावी भूमिका को सिद्ध करता है।

64. (2) करीम खाँ
अर्जुन लाल सेठी ने अंतिम समय में सांप्रदायिक एकता हेतु अजमेर की दरगाह को अपना निवास बनाया। वहाँ उन्होंने अपना नाम 'करीम खाँ' रखकर अरबी एवं फारसी के शिक्षक के रूप में सेवा की। उनकी मृत्यु के बाद उनकी इच्छानुसार उन्हें दफनाया गया, जो उनके प्रखर धार्मिक उदारवाद और महान मानवतावादी दृष्टिकोण का अनूठा उदाहरण है। उन्होंने जीवनभर देश और समाज की सेवा को ही अपना एकमात्र धर्म और लक्ष्य माना था।

बेल बीकानेर की सीमा में फल देने लगी। इस विचित्र संघर्ष ने तत्कालीन पड़ोसी राजपूत राज्यों के मध्य सीमा विवाद और प्रतिष्ठा की लड़ाई को उजागर किया। यह घटना राजस्थानी इतिहास में अपनी विशिष्टता और क्षेत्रीय गौरव के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है।

45. (1) A-iv, B-ii, C-iii, D-i
राजस्थान के नायकों के स्मारक उनके महत्व को दर्शाते हैं। अमर सिंह राठौड़ की नागौर में 16 खंभों की छतरी है। वीर दुर्गादास की छतरी उज्जैन में स्थित है। महाराणा प्रताप का स्मारक बांडोली में 8 खंभों की छतरी के रूप में है। गोविंद गुरु का स्मारक मानगढ़ पहाड़ियों पर है, जो उनकी आध्यात्मिक क्रांति का केंद्र रहा। यह मिलान इन महापुरुषों के ऐतिहासिक योगदान और उनकी पावन स्मृति को पूर्णतः स्पष्ट करता है।

46. (4) उनका पार्थिव शरीर दुर्गादास राठौड़ द्वारा आगरा किले से लाया गया था।
अमर सिंह की मृत्यु के बाद उनके साथियों ने अद्भुत साहस दिखाया। हाड़ी सरदार बल्लू और अन्य उनके शव को आगरा दुर्ग से बाहर लाए। यह कहना गलत है कि उनका पार्थिव शरीर दुर्गादास राठौड़ लाए थे, क्योंकि दोनों का कालखंड भिन्न है। आगरा के बुखारा द्वार को अमर सिंह के पराक्रम के कारण लंबे समय तक बंद रखा गया था, जिसे 1809 में अंग्रेजों ने खोला। अतः अंतिम विकल्प ऐतिहासिक रूप से असत्य है।

47. (1) अर्जुन गौड़
आगरा दुर्ग में अमर सिंह राठौड़ की हत्या का षड्यंत्र उनके साले अर्जुन गौड़ ने रचा था। सलावत खाँ की हत्या के बाद जब अमर सिंह संघर्ष कर रहे थे, तब अर्जुन गौड़ ने धोखे से उन पर पीछे से वार किया। इस कायराना हमले में महान योद्धा अमर सिंह वीरगति को प्राप्त हुए। उनकी शहादत ने उनके साथियों को इतना आंदोलित किया कि उन्होंने मुगलों पर भीषण आक्रमण कर अपने नेता का प्रतिशोध लिया।

48. (3) केवल I और III
अमर सिंह राठौड़ को उनके पिता ने उत्तराधिकार से वंचित किया था, उन्होंने जसवंत सिंह को कभी नहीं हराया। आगरा दुर्ग की प्राचीर से अपने अश्व 'बादल' को कुदाने की घटना उनके अदम्य साहस का प्रमाण है। शाहजहाँ से उनकी बहन के विवाह का कोई ऐतिहासिक साक्ष्य नहीं मिलता। अतः केवल दूसरा कथन सत्य है, जबकि अन्य असत्य हैं। उनकी वीरता आज भी राजस्थानी ख्यालों के माध्यम से जनमानस में सजीव बनी हुई है।

49. (3) 1727
सवाई जय सिंह द्वितीय ने 18 नवंबर 1727 को आधुनिक जयपुर की स्थापना की। उन्होंने इसे सुरक्षा एवं व्यापार हेतु एक योजनाबद्ध नगर के रूप में विकसित किया। जयपुर भारत का प्रथम नियोजित शहर है, जिसका वास्तुचित्र विद्याधर भट्टाचार्य ने तैयार किया था। जय सिंह ने राजधानी आमेर से हटाकर मैदानी क्षेत्र में बसाई। अपनी उत्कृष्ट स्थापत्य कला और चौड़ी सड़कों के कारण जयपुर आज भी विश्व पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान रखता है।

50. (1) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
18वीं शताब्दी में मराठों के बढ़ते आक्रमणों ने राजपूत राज्यों हेतु संकट उत्पन्न कर दिया था। इसके समाधान हेतु सवाई जय सिंह ने 1734 में भीलवाड़ा के 'हुरड़ा' में एक सम्मेलन आयोजित किया। इसका उद्देश्य राजपूत राजाओं को एकजुट कर मराठों के विरुद्ध संयुक्त सैन्य मोर्चा बनाना था। यद्यपि यह सम्मेलन राजपूत एकता का महत्वपूर्ण प्रयास था, किंतु आपसी मतभेदों के कारण अंततः यह पूरी तरह असफल सिद्ध हुआ और मराठा प्रभाव बढ़ता गया।

51. (3) जिज-ए-मुहम्मद शाही
सवाई जय सिंह द्वितीय खगोल शास्त्र के प्रकांड विद्वान थे। ग्रहों की सटीक गणना हेतु उन्होंने खगोलीय सारणी तैयार कराई, जिसे मुगल सम्राट के सम्मान में 'जिज-ए-मुहम्मद शाही' नाम दिया गया। उन्होंने 'जय सिंह कारिका' नामक ज्योतिष ग्रंथ की भी रचना की थी। उनके वैज्ञानिक प्रयासों ने भारत में खगोल विज्ञान के क्षेत्र में नई चेतना जाग्रत की और प्राचीन गणना प्रणालियों को अधिक सटीक तथा आधुनिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

52. (4) I, II, III, IV और V
सवाई जय सिंह द्वितीय ने खगोल विज्ञान को बढ़ावा देने हेतु पाँच स्थानों पर 'जंतर मंतर' वेधशालाएँ बनवाईं। ये दिल्ली, जयपुर, उज्जैन, मथुरा और वाराणसी में स्थित हैं। इनमें जयपुर की वेधशाला सर्वाधिक विशाल और आधुनिक है। इनका मुख्य उद्देश्य समय की सटीक गणना और खगोलीय पिंडों का वैज्ञानिक अध्ययन करना था। ये पाँचों स्थल आज भी सवाई जय सिंह की विलक्षण वैज्ञानिक दृष्टि और स्थापत्य प्रतिभा के बेजोड़ उदाहरण माने जाते हैं।

53. (3) राजसूय यज्ञ
सवाई जय सिंह प्राचीन हिंदू परंपराओं के पुनरुद्धार हेतु प्रयासरत थे। उन्होंने 'अश्वमेध यज्ञ' का भव्य आयोजन किया, जिसे करने वाले वे अंतिम हिंदू शासक माने जाते हैं। उन्होंने 'वाजपेय यज्ञ' भी संपन्न किया था। हालाँकि, उनके द्वारा 'राजसूय यज्ञ' किए जाने का कोई ऐतिहासिक उल्लेख नहीं मिलता। ये धार्मिक अनुष्ठान उनकी राजनीतिक शक्ति, धार्मिक निष्ठा और हिंदू संस्कृति के प्रति उनके गहरे सम्मान को प्रदर्शित करने के सशक्त माध्यम थे।

54. (2) विद्याधर भट्टाचार्य
जयपुर नगर के निर्माण में सवाई जय सिंह के मुख्य सलाहकार विद्याधर भट्टाचार्य थे। बंगाल के इस प्रख्यात वास्तुशास्त्री ने प्राचीन शिल्प शास्त्र के सिद्धांतों पर जयपुर की रूपरेखा तैयार की। उनके मार्गदर्शन में शहर को नौ वर्गों के सिद्धांत पर विभाजित कर चौड़ी सड़कों का निर्माण हुआ। जयपुर की यह वैज्ञानिक नगर योजना आज भी वैश्विक स्तर पर वास्तुकारों एवं इंजीनियरों हेतु शोध तथा प्रेरणा का एक अत्यंत प्रमुख विषय बनी हुई है।

गणेश शंकर विद्यार्थी ने कानपुर के 'प्रताप' पत्र से बिजोलिया आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। यह मिलान इन महापुरुषों के प्रचार कौशल और सामाजिक चेतना के प्रति उनके अटूट समर्पण को बहुत ही स्पष्ट रूप से उजागर करता है।

76. (2) उन्होंने 1919 में वर्धा में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की थी।
विजय सिंह पथिक को रास बिहारी बोस ने सशस्त्र क्रांति हेतु राजस्थान भेजा। उन्होंने बिजोलिया आंदोलन का नेतृत्व किया और 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' बनाया। 1919 में वर्धा में स्थापित 'राजस्थान सेवा संघ' में पथिक के साथ अर्जुन लाल सेठी और केसरी सिंह बारहठ भी सम्मिलित थे। बाद में यह संस्था अजमेर स्थानांतरित हुई, जो राजस्थान में जन-आंदोलनों का मुख्य केंद्र बनी। अतः दिए गए विकल्पों में से राजस्थान सेवा संघ स्थापना वाला बिंदु ऐतिहासिक रूप से सत्य है।

77. (3) वर्धा
विजय सिंह पथिक ने 1919 में वर्धा (महाराष्ट्र) से 'राजस्थान केसरी' का प्रकाशन आरंभ किया। इस पत्र ने रियासती अत्याचारों और किसानों की दुर्दशा को प्रमुखता से उजागर किया। वर्धा में उन्हें जमनालाल बजाज का आर्थिक सहयोग और गांधी जी का मार्गदर्शन मिला। बाद में इस पत्र के स्थान पर 'नवीन राजस्थान' और 'तरुण राजस्थान' जैसे पत्रों के माध्यम से संघर्ष जारी रहा। यह पत्र राजस्थान में राजनीतिक चेतना जाग्रत करने और सामंतवाद के विरुद्ध जनमत बनाने का सशक्त माध्यम था।

78. (3) केवल III और IV
विजय सिंह पथिक ने 'ऊपरमाल पंच बोर्ड' बनाया और 'बेगूँ किसान आंदोलन' का नेतृत्व किया। 'What are the Indian States' पुस्तक जय नारायण व्यास ने लिखी थी, पथिक ने नहीं। इसी प्रकार 'एकी आंदोलन' के प्रणेता मोतीलाल तेजावत थे। अतः तीसरी और चौथी गतिविधियाँ विजय सिंह पथिक से संबंधित नहीं हैं। यह स्पष्ट विभेद प्रतियोगी परीक्षाओं हेतु अत्यंत आवश्यक है, जिससे उनके विशिष्ट कार्यों और योगदान को सही ढंग से समझा और विश्लेषित किया जा सके।

79. (1) आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर समर्थन प्राप्त हुआ।
विजय सिंह पथिक के आग्रह पर गणेश शंकर विद्यार्थी ने 'प्रताप' समाचार पत्र के माध्यम से 'बिजोलिया आंदोलन' को राष्ट्रीय ख्याति दिलाई। इससे यह स्थानीय संघर्ष पूरे भारत में चर्चा का विषय बन गया और गांधी जी सहित अन्य राष्ट्रीय नेताओं का ध्यान आकर्षित हुआ। इस दबाव के कारण मेवाड़ सरकार को किसानों के साथ वार्ता करने और उनकी मांगें मानने पर विवश होना पड़ा। इस राष्ट्रीय प्रचार ने किसानों के मनोबल को बढ़ाने में अत्यंत निर्णायक भूमिका निभाई थी।

80. (1) राजस्थान केसरी – नवीन राजस्थान – तरुण राजस्थान
पथिक द्वारा प्रकाशित समाचार पत्रों का सही कालानुक्रम है: सर्वप्रथम 'राजस्थान केसरी' (1919, वर्धा), फिर 'नवीन राजस्थान' (1921, अजमेर) और अंततः 'तरुण राजस्थान' (1923)। जब ब्रिटिश सरकार ने 'नवीन राजस्थान' पर प्रतिबंध लगाया, तब उसे 'तरुण राजस्थान' नाम से पुनः जारी किया गया। इन पत्रों ने राजस्थान में निरंकुश शासन के विरुद्ध जनमत तैयार करने और किसानों को अधिकारों के प्रति जाग्रत करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई, जो स्वाधीनता संग्राम का अटूट हिस्सा बनी।

81. (2) माणिक्य लाल वर्मा
माणिक्य लाल वर्मा कुशल राजनीतिज्ञ के साथ ही प्रभावशाली कवि भी थे। उन्होंने बिजोलिया आंदोलन के दौरान किसानों में जोश भरने हेतु 'पंछीड़ा' गीत की रचना की। यह गीत इतना लोकप्रिय हुआ कि किसान इसे समूहों में गाते हुए आंदोलनों में सम्मिलित होते थे। वर्मा जी के इस गीत ने सामंती शासन के विरुद्ध संघर्ष हेतु आम जनता को मानसिक और भावनात्मक रूप से अत्यंत सुदृढ़ और साहसी बनाया। यह गीत राजस्थान की लोक-संस्कृति और संघर्ष का प्रतीक बन गया।

82. (1) भीलों का सामाजिक-शैक्षिक उत्थान।
माणिक्य लाल वर्मा ने आदिवासियों की सेवा हेतु 1934 में सागवाड़ा (डूंगरपुर) में 'खांडलाई आश्रम' स्थापित किया। इसका ध्येय भील समुदाय की कुरीतियों को दूर करना और उन्हें शिक्षा से जाग्रत करना था। उनका मानना था कि पिछड़ों के उत्थान के बिना वास्तविक स्वतंत्रता संभव नहीं है। इस आश्रम ने भील क्षेत्र में सामाजिक चेतना और शिक्षा के प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया। यह संस्था जनजातीय सुधार आंदोलनों के इतिहास में एक मील का पत्थर मानी जाती है।

83. (3) मेवाड़ प्रजामंडल
माणिक्य लाल वर्मा ने 24 अप्रैल 1938 को उदयपुर में 'मेवाड़ प्रजामंडल' की स्थापना की। बलवंत सिंह मेहता इसके प्रथम अध्यक्ष बने। इसका मुख्य उद्देश्य मेवाड़ में 'उत्तरदायी शासन' की स्थापना और नागरिक अधिकारों की रक्षा करना था। सरकार द्वारा इसे अवैध घोषित करने पर वर्मा जी ने सत्याग्रह चलाया। यह प्रजामंडल आगे चलकर मेवाड़ में राजनीतिक जागृति और लोकतांत्रिक अधिकारों के संघर्ष का प्रमुख आधार स्तंभ बना, जिसने जन-सामान्य को शासन से सीधा जोड़ा।

84. (4) मेवाड़ का वर्तमान शासन
मेवाड़ प्रजामंडल की गतिविधियों हेतु निर्वासित किए जाने पर वर्मा जी ने अजमेर से 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' पुस्तिका लिखी। इसमें उन्होंने मेवाड़ के निरंकुश प्रशासन और किसानों के शोषण का प्रभावशाली चित्रण किया। इस प्रकाशन ने मेवाड़ शासन की अलोकतांत्रिक छवि उजागर कर प्रजामंडल के पक्ष में प्रबल जनमत तैयार किया। यह पुस्तिका तत्कालीन राजनीतिक साहित्य में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, जिसने जनता को शासन की कमियों और अपने अधिकारों के प्रति सचेत किया।

85. (3) A-iii, B-ii, C-iv, D-i
राजस्थान के प्रजामंडलों का नेतृत्व विशिष्ट रहा है। मेवाड़ प्रजामंडल का नेतृत्व माणिक्य लाल वर्मा ने किया। जयपुर प्रजामंडल का पुनर्गठन जमनालाल बजाज और हीरालाल शास्त्री के प्रयासों से हुआ। मारवाड़ प्रजामंडल में जय नारायण व्यास की भूमिका अग्रणी थी, जबकि बाँसवाड़ा प्रजामंडल का

105. (3) संप सभा
गोविंद गुरु ने भील समुदाय में चेतना जागृत करने हेतु 1883 में सिरोही में 'संप सभा' की स्थापना की। 'संप' का तात्पर्य आपसी एकता और भाईचारे से है। इसके माध्यम से उन्होंने भीलों को कुरीतियों के त्याग, शिक्षा और स्वाभिमान का संदेश दिया। इस सभा का प्रथम अधिवेशन 1903 में मानगढ़ पहाड़ी पर हुआ, जहाँ हजारों भील एकत्रित हुए और सामूहिक उत्थान का संकल्प लिया। यह संस्था जनजातीय समाज के सामाजिक और आध्यात्मिक शुद्धिकरण के इतिहास में मील का पत्थर है।

106. (1) पशु बलि के साथ देवताओं की पूजा
गोविंद गुरु का 'भगत आंदोलन' भील समाज के आध्यात्मिक शुद्धिकरण का महाभियान था। उन्होंने पशु बलि और अंधविश्वासों का विरोध कर एकेश्वरवाद पर बल दिया। उनके अनुयायी मदिरा, मांस और चोरी का त्याग करते थे। उन्होंने अस्पृश्यता निवारण, स्वदेशी के उपयोग और अन्यायपूर्ण करों के बहिष्कार की शिक्षा दी। अतः पशु बलि उनके आंदोलन का अंग नहीं, बल्कि उसके विरुद्ध एक प्रमुख सुधारवादी कदम था। इस आंदोलन ने आदिवासियों को एक नई नैतिक और सामाजिक दिशा प्रदान करने का कार्य किया।

107. (1) 17 नवंबर 1913
17 नवंबर 1913 को मानगढ़ पहाड़ी पर 'संप सभा' के अधिवेशन के दौरान ब्रिटिश एवं रियासती फौजों ने निहत्थे भीलों पर अंधाधुंध गोलियां चलाईं। इस नरसंहार में लगभग 1500 भील शहीद हुए। अपनी क्रूरता के कारण इसे 'राजस्थान का जलियांवाला बाग' कहा जाता है। यह महान बलिदान भील समुदाय के स्वाभिमान और स्वाधीनता के संघर्ष का अमर प्रतीक है। आज भी यह स्थल उन बलिदानियों की स्मृति में श्रद्धा और देशप्रेम की प्रेरणा का एक पावन केंद्र बना हुआ है।

108. (2) स्वामी दयानंद सरस्वती
उदयपुर प्रवास के दौरान गोविंद गुरु स्वामी दयानंद सरस्वती के समाज सुधार विचारों से अत्यंत प्रभावित हुए। स्वामी जी के स्वदेश, स्वधर्म और सेवा के संदेशों ने उन्हें भील उत्थान हेतु प्रेरित किया। उन्होंने आर्य समाज के सिद्धांतों को जनजातीय परिवेश में लागू कर भीलों को अंधविश्वासों से मुक्त किया। उनकी कार्यप्रणाली पर आर्य समाज का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है। इस वैचारिक आधार ने ही उन्हें जनजातीय समाज में एक व्यापक सामाजिक और आध्यात्मिक चेतना जागृत करने की दिशा में सफल बनाया।

109. (3) बंजारा
भीलों के उद्धारक गोविंद गुरु का जन्म 20 दिसंबर 1858 को डूंगरपुर के 'बासिया' गाँव में हुआ। वे जन्म से बंजारा थे, किंतु उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भील एवं गरासिया जनजातियों की सेवा हेतु समर्पित किया। उन्होंने जातिगत सीमाओं से ऊपर उठकर शोषित समाज में शिक्षा और स्वाभिमान की ज्योति जलाई। उनकी निस्वार्थ सेवा के कारण ही भील समाज उन्हें अपना गुरु और मसीहा मानकर आदरपूर्वक पूजता है। उनका जीवन सामाजिक समरसता और जनजातीय विकास का एक अत्यंत उत्कृष्ट उदाहरण है।

110. (4) अंतिम समय का स्थान - कंबोई (गुजरात)
गोविंद गुरु के जीवन तथ्यों में केवल चौथा विकल्प सही सुमेलित है। उन्होंने अपने अंतिम वर्ष गुजरात के 'कंबोई' गाँव में व्यतीत किए। उनका जन्म बासिया (डूंगरपुर) में हुआ था, न कि मातृकुंडिया में। संप सभा की स्थापना 1883 में हुई थी। उनके अनुयायी मुख्य रुप से भील और गरासिया समुदाय के लोग थे। आज भी कंबोई में स्थित उनकी समाधि उनके अनुयायियों हेतु श्रद्धा और प्रेरणा का मुख्य केंद्र है। यह स्थान उनके द्वारा किए गए महान मानवीय कार्यों की पावन स्मृति दिलाता है।

111. (1) अहमदाबाद सेंट्रल जेल
मानगढ़ नरसंहार के बाद गोविंद गुरु को गिरफ्तार कर राजद्रोह के आरोप में मृत्युदंड दिया गया, जिसे बाद में आजीवन कारावास में बदल दिया गया। उन्हें 'अहमदाबाद सेंट्रल जेल' में रखा गया। 1919 में अच्छे आचरण के कारण उन्हें रिहा किया गया, किंतु मेवाड़ और बाँसवाड़ा में उनके प्रवेश पर प्रतिबंध रहा। जेल की कठोर यातनाओं के उपरांत भी उनकी आध्यात्मिक निष्ठा और समाज सेवा का संकल्प सदैव अडिग रहा। उन्होंने अपना शेष जीवन गुजरात में रहकर जनजातीय उत्थान हेतु समर्पित कर दिया।

112. (2) भाईचारा और एकता
'संप सभा' में 'संप' राजस्थानी शब्द है, जिसका अर्थ आपसी एकता, प्रेम और भाईचारा है। इसका मूल दर्शन भील समुदाय को संगठित कर सामाजिक समरसता स्थापित करना था। गोविंद गुरु का मानना था कि आंतरिक एकता के बिना बाहरी शोषण के विरुद्ध संघर्ष असंभव है। अतः उन्होंने 'संप' के माध्यम से भीलों को एक सशक्त और स्वाभिमानी समुदाय बनाया। इस संस्था ने जनजातीय समाज को एक नई संगठित पहचान और सामूहिक शक्ति प्रदान की, जो उनके अधिकारों की रक्षा का आधार बनी।

113. (2) मातृकुंडिया
मोतीलाल तेजावत ने 1921 में 'मातृकुंडिया' (चित्तौड़गढ़) से 'एकी आंदोलन' का शुभारंभ किया। इसे 'राजस्थान का हरिद्वार' भी कहा जाता है। यहाँ वैशाख पूर्णिमा पर हजारों भीलों और गरासियों ने सामंती शोषण एवं बेगार के विरुद्ध एकजुट होने की शपथ ली। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य जनजातीय एकता स्थापित कर उन्हें अधिकारों के प्रति जागरूक बनाना था। यह आंदोलन राजस्थान के जनजातीय इतिहास में संगठित प्रतिरोध का एक अत्यंत सशक्त और प्रेरणादायी अध्याय माना जाता है, जिसने शोषण के विरुद्ध आवाज बुलंद की।

114. (1) मेवाड़ पुकार
मोतीलाल तेजावत ने आदिवासियों की समस्याओं के समाधान हेतु एक 21-सूत्रीय मांग पत्र तैयार किया, जिसे 'मेवाड़ पुकार' कहा जाता है। इसे उन्होंने मेवाड़ महाराणा के समक्ष प्रस्तुत किया। इसमें ऊँचे लगान, अनुचित करों और सामंती उत्पीड़न की समाप्ति की मांग की गई थी। 'मेवाड़ पुकार' आदिवासियों के अधिकारों का ऐतिहासिक घोषणा पत्र था, जिसने शासन को उनकी समस्याओं पर गंभीरता से विचार करने हेतु विवश

अर्जुन लाल सेठी ने 'वेल्लोर जेल' (दक्षिण भारत) में कारावास भोगा, जबकि माणिक्य लाल वर्मा को 'कुंभलगढ़ दुर्ग' में बंदी बनाया गया। यह मिलान इन महापुरुषों द्वारा मातृभूमि की स्वतंत्रता हेतु सहे गए असीम कष्टों, त्याग और उनके महान बलिदानों का जीवंत ऐतिहासिक प्रतीक माना जाता है।

96. (2) ढोल नृत्य
जय नारायण व्यास महान स्वतंत्रता सेनानी होने के साथ ही राजस्थानी लोक कलाओं के अनन्य प्रेमी थे। उन्होंने जालौर के प्रसिद्ध 'ढोल नृत्य' को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाने में ऐतिहासिक योगदान दिया। उनके प्रयासों से ही इस स्थानीय नृत्य को व्यापक ख्याति मिली और इसे राजस्थानी संस्कृति के गौरवशाली प्रतीक के रूप में मान्यता प्राप्त हुई। कला के प्रति उनकी यह अभिरुचि उनके व्यक्तित्व की बहुमुखी प्रतिभा और क्षेत्रीय संस्कृति के प्रति उनके गहरे लगाव को पूर्णतः प्रदर्शित करती है।

97. (2) निवाई (टोंक)
हीरालाल शास्त्री ने 1929 में पुत्री शांताबाई की स्मृति में वनस्थली (निवाई, टोंक) में 'जीवन कुटीर' स्थापित किया। प्रारंभ में यह सेवा केंद्र था, जो बाद में 'वनस्थली विद्यापीठ' के रूप में विकसित हुआ। आज यह संस्थान महिला शिक्षा और सशक्तिकरण हेतु वैश्विक स्तर पर विख्यात है। यह शास्त्री जी की दूरदर्शिता और समाज सेवा के प्रति उनके अटूट समर्पण का जीवंत स्मारक है। यहाँ आधुनिक शिक्षा के साथ पारंपरिक मूल्यों का उत्कृष्ट और प्रभावी समावेश देखने को मिलता है।

98. (3) सभी कथन सत्य हैं
हीरालाल शास्त्री 30 मार्च 1949 को 'वृहद राजस्थान' के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री बने। उन्होंने 'प्रलय प्रतीक्षा नमो नमः' गीत और 'प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र' नामक आत्मकथा लिखी। 1942 में उन्होंने सर मिर्ज़ा इस्माइल के साथ 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' किया, जिससे जयपुर प्रजामंडल 'भारत छोड़ो आंदोलन' से पृथक रहा। अतः प्रश्न के चारों कथन उनके राजनीतिक, साहित्यिक और प्रशासनिक जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं को पूर्णतः सत्य रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह राजस्थान के इतिहास का अहम हिस्सा है।

99. (3) सर मिर्ज़ा इस्माइल
1942 में हीरालाल शास्त्री और जयपुर के प्रधानमंत्री सर मिर्ज़ा इस्माइल के मध्य 'जेंटलमैन एग्रीमेंट' हुआ। इसके तहत सरकार ने प्रजामंडल की मांगें मानीं और प्रजामंडल ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग न लेने का निर्णय लिया। इस समझौते के विरोध में बाबा हरिश्चंद्र ने 'आजाद मोर्चा' गठित कर आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। यह समझौता जयपुर की राजनीति में एक विवादित किंतु ऐतिहासिक मोड़ माना जाता है, जिसने प्रजामंडल की भावी रणनीति को गहराई से प्रभावित किया।

100. (2) I, III, IV, II
एकीकरण का सही क्रम है: सर्वप्रथम 'मत्स्य संघ' (शोभाराम कुमावत), फिर 'राजस्थान संघ' (गोकुल लाल असावा), तृतीय चरण में 'संयुक्त राजस्थान' (माणिक्य लाल वर्मा) और अंततः 30 मार्च 1949 को 'वृहद राजस्थान' (हीरालाल शास्त्री) बना। यह अनुक्रम राजस्थान के राजनीतिक एकीकरण की क्रमिक अवस्थाओं और नेतृत्व को सटीक रूप से दर्शाता है। यह प्रक्रिया विभिन्न रियासतों के विलय और लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना का एक महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक मील का पत्थर सिद्ध हुई थी।

101. (3) जोबनेर
राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री हीरालाल शास्त्री का जन्म 24 नवंबर 1899 को 'जोबनेर' (जयपुर) में हुआ। जोबनेर उनकी प्रारंभिक शिक्षा और संस्कारों का केंद्र रहा। उच्च शिक्षा महाराजा कॉलेज से प्राप्त कर वे राज्य सेवा में आए। जन्मस्थान के प्रति लगाव ने ही उन्हें ग्रामीण सेवा और शिक्षा हेतु प्रेरित किया, जिसके फलस्वरूप 'वनस्थली विद्यापीठ' जैसी महान संस्था अस्तित्व में आई। उनका जीवन ग्रामीण उत्थान और महिला सशक्तिकरण के प्रति उनके अडिग संकल्प और निस्वार्थ सेवा का जीवंत प्रमाण है।

102. (2) गृह और विदेश विभाग के सचिव
हीरालाल शास्त्री जयपुर राज्य सेवा में गृह एवं विदेश विभाग के सचिव पद पर कार्यरत थे। किंतु समाज सेवा और राष्ट्रभक्ति की प्रबल भावना के कारण उन्होंने इस उच्च पद को त्याग दिया। 1927 में त्यागपत्र देकर उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन ग्रामीण उत्थान, शिक्षा और राजनीतिक स्वतंत्रता हेतु समर्पित कर दिया। उनका यह महान त्याग आज भी प्रेरणादायी माना जाता है, जो यह सिद्ध करता है कि राष्ट्रहित के समक्ष व्यक्तिगत लाभ और पद प्रतिष्ठा सदैव गौण होती है।

103. (4) सी.एस. वेंकटाचार
1951 में हीरालाल शास्त्री के त्यागपत्र के बाद उत्पन्न राजनीतिक अस्थिरता हेतु भारत सरकार ने वरिष्ठ अधिकारी सी.एस. वेंकटाचार को मुख्यमंत्री नियुक्त किया। वे राजस्थान के एकमात्र ऐसे मुख्यमंत्री थे जो केंद्र द्वारा नियुक्त प्रशासनिक अधिकारी थे। उन्होंने अल्पकाल हेतु शासन संभाला और व्यवस्था सुदृढ़ कर निर्वाचित सरकार हेतु मार्ग प्रशस्त किया। उनका कार्यकाल प्रशासनिक कुशलता के लिए जाना जाता है, जिसने नवगठित राज्य को संक्रमण काल में स्थिरता और एक सुव्यवस्थित ढांचा प्रदान करने में सहायता की थी।

104. (1) महिला शिक्षा और सशक्तिकरण
हीरालाल शास्त्री और रतन शास्त्री ने पुत्री शांताबाई की स्मृति में 'शिक्षा कुटीर' की स्थापना की। इसका मुख्य उद्देश्य बालिकाओं को आधुनिक शिक्षा के साथ पारंपरिक मूल्यों और आत्मनिर्भरता प्रदान करना था। यही संस्था बाद में 'वनस्थली विद्यापीठ' बनी, जो 'पंचमुखी शिक्षा' (बौद्धिक, शारीरिक, व्यावहारिक, नैतिक और कलात्मक) हेतु प्रसिद्ध है। आज यह संस्थान संपूर्ण विश्व में महिला शिक्षा का उत्कृष्ट केंद्र है, जहाँ छात्राओं के सर्वांगीण विकास और उन्हें राष्ट्र निर्माण हेतु सक्षम बनाने पर विशेष बल दिया जाता है।

नेतृत्व भूपेंद्र नाथ त्रिवेदी ने किया। यह मिलान राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में राजनीतिक चेतना के विस्तार और उनके क्षेत्रीय नेतृत्व की स्पष्ट एवं सटीक तस्वीर प्रस्तुत करने में सहायक है।

86. (2) संयुक्त राजस्थान
एकीकरण के तीसरे चरण (18 अप्रैल 1948) में 'संयुक्त राजस्थान' बना, जिसमें मेवाड़ का विलय हुआ। माणिक्य लाल वर्मा इसके 'प्रधानमंत्री' नियुक्त हुए, जबकि महाराणा भूपाल सिंह राजप्रमुख बने। वर्मा जी के नेतृत्व में सरकार ने प्रशासनिक सुधारों और क्षेत्रीय एकीकरण हेतु महत्वपूर्ण कार्य किए। यह उनके दीर्घकालीन राजनीतिक संघर्ष और जनसेवा के प्रति एक बड़ा सम्मान एवं उत्तरदायित्व था। इस चरण ने राजस्थान के पूर्ण एकीकरण की दिशा में एक अत्यंत निर्णायक और ऐतिहासिक कदम बढ़ाया था।

87. (4) बिजोलिया
माणिक्य लाल वर्मा प्रारंभ में बिजोलिया ठिकाने में कर्मचारी थे। वहाँ उन्होंने किसानों पर होने वाले 84 प्रकार के करों और सामंती अत्याचारों को प्रत्यक्ष देखा। इन घटनाओं से व्यथित होकर उन्होंने नौकरी त्यागी और विजय सिंह पथिक के नेतृत्व में आंदोलन से जुड़ गए। बिजोलिया के इसी अनुभव ने उन्हें आजीवन शोषितों के अधिकारों हेतु लड़ने की प्रेरणा दी। उनका यह प्रारंभिक जीवन संघर्ष ही उन्हें राजस्थान के महान जननायक के रूप में प्रतिष्ठित करने में सहायक बना।

88. (4) I और III
माणिक्य लाल वर्मा मेवाड़ प्रजामंडल के संस्थापक थे, किंतु प्रथम अध्यक्ष बलवंत सिंह मेहता बने। वर्मा जी ने बिजोलिया आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई और 'पंछीड़ा' गीत से किसानों को जागृत किया। वे गांधीवादी विचारधारा के समर्थक थे और उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में खादी एवं शिक्षा का प्रचार किया। अतः यह कहना कि उन्होंने बिजोलिया आंदोलन में भाग नहीं लिया, ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः असत्य है। उनका संपूर्ण जीवन किसान कल्याण और राजनीतिक अधिकारों के प्रति समर्पित रहा।

89. (3) मारवाड़ प्रजामंडल
जय नारायण व्यास ने मारवाड़ में चेतना जागृत करने हेतु 1934 में 'मारवाड़ प्रजामंडल' गठित किया। भँवरलाल सर्राफ इसके प्रथम अध्यक्ष बने। इसका उद्देश्य मारवाड़ में 'उत्तरदायी शासन' की स्थापना और नागरिक अधिकारों को सुनिश्चित करना था। व्यास जी ने जागीरदारी प्रथा और भ्रष्टाचार के विरुद्ध सशक्त जन-आंदोलन चलाया, जिसने मारवाड़ के राजनीतिक इतिहास को नई दिशा दी। उनके प्रयासों ने जनता को शासन के प्रति जागरूक कर स्वाधीनता के मार्ग पर अग्रसर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

90. (1) A and R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' के दौरान मारवाड़ सरकार ने जय नारायण व्यास को गिरफ्तार कर 'सिवाना दुर्ग' में नजरबंद किया। प्रशासन को भय था कि उनके नेतृत्व में आंदोलन अनियंत्रित हो सकता है। उन्हें जनता और कार्यकर्ताओं से पूर्णतः पृथक रखने हेतु सिवाना के सुरक्षित एवं एकांत किले को कारावास हेतु चुना गया था। यह उनकी लोकप्रियता और राजनीतिक प्रभाव का ही परिणाम था कि सरकार उन्हें दूरस्थ दुर्ग में रखने के लिए विवश हुई।

91. (4) आगी बाण
जय नारायण व्यास ने जन-जागरण हेतु पत्रकारिता को सशक्त माध्यम बनाया। उन्होंने ब्यावर से राजस्थानी भाषा का प्रथम राजनीतिक समाचार पत्र ' आगी बाण' प्रकाशित किया। इसके माध्यम से उन्होंने मारवाड़ की सामंती कुरीतियों, शोषण और निरंकुश शासन पर तीखे प्रहार किए। 'आगी बाण' ने स्थानीय समस्याओं को लोकभाषा में उठाकर राजनीतिक क्रांति का मार्ग प्रशस्त किया। यह पत्र क्षेत्रीय भाषा के माध्यम से जनता को अधिकारों के प्रति सचेत करने वाला अपनी तरह का अनूठा और सफल प्रयास था।

92. (1) केवल I, II, IV और V
जय नारायण व्यास प्रखर लेखक एवं पत्रकार थे। उन्होंने 'पोपाबाई की पोल' और 'मारवाड़ की अवस्था' जैसी पुस्तिकाओं से शासन का भ्रष्टाचार उजागर किया। उन्होंने 'अखंड भारत' (बंबई) और 'तरुण राजस्थान' (अजमेर) का संपादन भी किया। 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' के रचयिता माणिक्य लाल वर्मा थे, व्यास जी नहीं। अतः केवल प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ और पंचम प्रकाशन ही व्यास जी के साहित्यिक एवं राजनीतिक कार्यों से संबंधित हैं। उनका लेखन जन-क्रांति का आधार बना।

93. (3) वे मनोनीत और निर्वाचित दोनों प्रकार के मुख्यमंत्री रहे थे।
जय नारायण व्यास राजस्थान के विशिष्ट राजनेता हैं। वे पहले मुख्यमंत्री के रूप में मनोनीत हुए और कालांतर में उपचुनाव जीतकर निर्वाचित मुख्यमंत्री भी बने। वे एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने इन दोनों श्रेणियों में यह गरिमामय पद सुशोभित किया। उनका कार्यकाल लोकतांत्रिक ढांचा सुदृढ़ करने और जागीरदारी प्रथा के उन्मूलन हेतु किए गए साहसिक प्रशासनिक सुधारों के लिए विशेष रूप से स्मरणीय एवं सराहनीय है। उन्होंने राजस्थान की राजनीति को एक पारदर्शी और जनोन्मुखी स्वरूप प्रदान किया।

94. (4) जय नारायण व्यास
मारवाड़ के जननायक जय नारायण व्यास को उनकी निडरता हेतु 'लोक नायक' और 'शेर-ए-राजस्थान' जैसी उपाधियों से विभूषित किया गया। उन्होंने आजीवन सामंतवाद और साम्राज्यवाद के विरुद्ध संघर्ष किया। वे एक प्रखर वक्ता, राजनेता और लोक कलाओं के अनन्य संरक्षक भी थे। जनता के मध्य अत्यधिक लोकप्रियता और जुझारु व्यक्तित्व के कारण ही उन्हें इतिहास में इन गौरवशाली नामों से स्मरण किया जाता है। उनका संपूर्ण जीवन त्याग और जन-सेवा का उत्कृष्ट एवं अनुकरणीय उदाहरण है।

95. (1) A-ii, B-iii, C-iv, D-i
राजस्थान के सेनानियों को संघर्ष के दौरान विभिन्न जेलों में बंदी बनाया गया। जय नारायण व्यास 'सिवाना दुर्ग' में नजरबंद रहे। केसरी सिंह बारहठ को 'हजारीबाग जेल' (बिहार) भेजा गया।

किया। यह दस्तावेज़ जनजातीय संघर्ष और राजनीतिक चेतना के विकास का एक प्रमुख आधार बना।

115. (3) बावजी (भीलों के मसीहा)
मोतीलाल तेजावत ने अपना जीवन आदिवासियों की सेवा हेतु समर्पित किया। भील और गरासिया समुदाय उन्हें आदरपूर्वक 'बावजी' (भीलों का मसीहा) कहते थे। उन्होंने दुर्गम क्षेत्रों में जाकर आदिवासियों को संगठित किया और उन्हें शोषण के विरुद्ध लड़ना सिखाया। यह उपाधि तेजावत और जनजातीय समाज के मध्य गहरे भावनात्मक और विश्वसनीय संबंधों की प्रतीक है। उनके नेतृत्व में आदिवासियों ने पहली बार संगठित होकर अपने मानवाधिकारों और सामंती उत्पीड़न के विरुद्ध एक व्यापक जन-आंदोलन की शुरुआत की थी।

116. (4) नीमड़ा नरसंहार
7 मार्च 1922 को विजयनगर के 'नीमड़ा' गाँव में सम्मेलन के दौरान ब्रिटिश सेना ने निहत्थे आदिवासियों पर गोलियां चलाईं, जिसमें लगभग 1200 लोग शहीद हुए। इसे 'नीमड़ा नरसंहार' कहा जाता है। तेजावत घायल हुए, किंतु भीलों ने उन्हें सुरक्षित बचाया। यह मानगढ़ के बाद राजस्थान की दूसरी सबसे बड़ी जनजातीय त्रासदी है। यह भीषण कांड तत्कालीन शासन की क्रूरता और आदिवासियों के अटूट बलिदान की गाथा का एक अत्यंत दुखद अध्याय है, जो इतिहास में सदैव स्मरणीय रहेगा।

117. (3) ओसवाल जैन
मोतीलाल तेजावत का जन्म उदयपुर के 'कोलियारी' गाँव में एक ओसवाल जैन परिवार में हुआ था। वैश्य समुदाय से होने के बाद भी उन्होंने व्यावसायिक सुख त्यागकर भील उत्थान को लक्ष्य बनाया। उन्होंने आदिवासियों के बीच रहकर उनके दुखों को समझा और शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई। उनका यह समर्पण सिद्ध करता है कि समाज सेवा जातिगत सीमाओं से परे केवल निस्वार्थ सेवा भाव पर आधारित होती है। उनके कार्यों ने जनजातीय समाज को मुख्यधारा से जोड़ने और उनमें स्वाभिमान जगाने में अतुलनीय भूमिका निभाई।

118. (2) ईडर
नीमड़ा नरसंहार के बाद मोतीलाल तेजावत आठ वर्षों तक भूमिगत रहकर आदिवासियों को जागृत करते रहे। अंततः 1929 में ईडर पुलिस ने उन्हें 'खेड़ब्रह्मा' से गिरफ्तार किया। तदुपरांत उन्हें मेवाड़ राज्य को सौंपा गया, जहाँ उन पर अभियोग चलाया गया। उनकी गिरफ्तारी आदिवासियों हेतु एक आघात थी, किंतु उनके द्वारा जाग्रत राजनीतिक चेतना ने जनजातीय समाज में अधिकारों के संघर्ष को और अधिक तीव्र कर दिया। उनके संघर्ष की लौ ने आदिवासियों को संगठित होकर निरंतर अपने अधिकारों हेतु लड़ने का संबल प्रदान किया।

119. (4) झाडोल
सक्रिय राजनीति से पूर्व मोतीलाल तेजावत ने मेवाड़ की 'झाडोल' जागीर में कामदार के रूप में कार्य किया। इस दौरान उन्होंने आदिवासियों पर होने वाले अत्याचार, भारी लगान और बेगार प्रथा का प्रत्यक्ष अनुभव किया। प्रशासन के भीतर रहकर जन-शोषण देखने के कारण ही उन्होंने सेवा त्याग कर भीलों को संगठित करने का संकल्प लिया। यही अनुभव उनके भावी क्रांतिकारी जीवन और 'एकी आंदोलन' का आधार बना, जिसने राजस्थान के जनजातीय समाज की दिशा और दशा को बदलने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

120. (1) महात्मा गांधी
मोतीलाल तेजावत उदयपुर जेल में दीर्घकाल तक बंदी रहे। उनकी रिहाई हेतु महात्मा गांधी और मणिलाल कोठारी ने महत्वपूर्ण मध्यस्थता की। गांधी जी के हस्तक्षेप पर मेवाड़ सरकार ने 1936 में उन्हें इस शर्त पर मुक्त किया कि वे बिना अनुमति राजनीतिक गतिविधियों में भाग नहीं लेंगे। तेजावत की गांधी जी के प्रति अगाध श्रद्धा थी और उन्होंने सदैव अहिंसक सत्याग्रह के मार्ग को प्राथमिकता दी। गांधीवादी विचारधारा ने ही उनके संघर्ष को एक व्यापक वैचारिक धरातल और नैतिक शक्ति प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP ₹ 480.00